CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिन्दी शब्दकोष

Kirtti Kant Sharma

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पं० [illegible]
[illegible] ४
[illegible] (उ०प्र०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भार्गव

आदर्श हिन्दी शब्दकोश

का

संक्षिप्त संस्करण

संस्कृत, हिन्दी, तथा भिन्न विषयों के नवीन शब्द, साहित्य, अलंकार, भूगोल आदि के शब्दों का संग्रह

अनेक अनुक्रमणिका सहित

पं० [illegible]
जहांगीराबाद २०२
बुलन्दशहर (उ०प्र

सम्पादक
पण्डित रामचन्द्र पाठक बी० ए०, एल्० टी०
संकलनकर्ता—भार्गव सचित्र स्टेन्डर्ड अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी, कान्साइस् अंग्रेजी हिन्दी डिक्शनरी, सचित्र हिन्दी अंग्रेजी डिक्शनरी इत्यादि।

प्रकाशक व मुद्रक
पं० पृथ्वीनाथ भार्गव
भार्गव भूषण प्रेस, गायघाट, बनारस

प्रधान वितरक
श्रीगंगा पुस्तकालय, गायघाट, बनारस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमिका

हिन्दी भाषा का प्रचार भारतवर्ष के सभी प्रान्तों में दिन दिन बढ़ता जाता है तथा भिन्न भिन्न विषयों की पुस्तकों के निर्माण होने के कारण इस जीवित भाषा की शब्दसंख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। हिन्दी को राष्ट्र-भाषा बनाने का भी पूरा प्रयत्न किया गया और अन्त में सफल भी हो गया।

विद्यार्थियों की सहायता के लिये बड़े कोश का यह संक्षिप्त संस्करण निर्माण हुआ है, इसमें बालकोपयोगी सभी प्रचलित शब्दों का समावेश यथा संभव किया गया है।

आशा है कि इस कोश से सामान्य विद्यार्थी तथा पाठक गण पूरा लाभ उठावेंगे। इस कोश के अन्त में अनेक उपयोगी अनुक्रमणिकायें भी दी गई हैं।

सम्पादक

पं० [illegible] शर्मा
जहांगीराबाद २ २ ३४
बुलन्दशहर (उ०प्र०)

सांकेतिक अक्षरों का विवरण

अव्य०—अव्यय।
उप०—उपसर्ग।
क्रि०—क्रिया।
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
ग्रा०—ग्रामीण।
दे०—देशी।
नपुं०—नपुंसक लिङ्ग।
पा०—पाली भाषा।
पुं०—पुल्लिङ्ग।
प्रत्य०—प्रत्यय।
बहु०—बहुवचन।
यौ०—यौगिक।
वि०—विशेषण।
व्या०—व्याकरण।
सं०—संस्कृत।
सर्व०—सर्वनाम।
स्त्री०—स्त्रीलिङ्ग।
हिं०—हिन्दी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भार्गव

संक्षिप्त हिन्दी शब्दकोश

अ

अ-हिन्दी तथा संस्कृत के स्वर वर्ण का पहिला अक्षर; निषेध, अभाव तथा अल्प अर्थ में अव्यय की तरह इसका प्रयोग होता है, यथा—अकाल, अपापी। प्रणव का प्रथम अक्षर। (सं०पुं०) ब्रह्मा, सृष्टि।

अऊत-(हिं०वि०) निःसन्तान, अपुत्र।

अऊलना-(हिं० क्रि०) उष्ण होना, जलना।

अऋण-, अऋणी-(हिं०वि०) जिसने ऋण न लिया हो, जो ऋण मुक्त हो।

अएरना-(हिं०क्रि०) स्वीकार करना।

अउघड़-(औघड़)—(हिं०पुं०) किनारामी पन्थ।

अंक-(सं०पुं०) चिह्न, नाटक का परिच्छेद, अक्षर, गोद, १ से ९ तक की संख्या।

अँकक-(सं०पुं०) गणित करनेवाला।

अँकगणित (सं०पुं०) गणित जिसमें संख्याओं का प्रयोग होता है।

अँकटा-(हिं०पुं०) कंकड़ का चिकना टुकड़ा। **अँकटी**-(हिं०स्त्री०) छोटी कंकड़ी।

अँकड़ा-(हिं०पुं०) पत्थर का टुकड़ा, कंकड़। **अँकड़ी**-(हिं०स्त्री०) काँटी,

अँकना-(हिं०क्रि०) आँकना, कूतना।

अँकरोरी, अँकरौरी-(हिं०स्त्री०) अँकटी।

अँकवार-(हिं०स्त्री०) गोद, छाती। **अँकवारना**-(हिं०क्रि०) आलिंगन करना। **अँकवारी**-(हिं०स्त्री०) गोद।

अंकविद्या-(सं०पुं०) अंकगणित।

अँकाई-(हिं०स्त्री०) कूत, अटकल, कृषिफल के बँटवारे का ठहराव।

अँकवाना-(हिं०क्रि०) जँचवाना, कूत करवाना।

अँकाना-(हिं०क्रि०) अँकवाना।

अँकाव-(हिं०पुं०) अँकाई, कुताई।

अंकित-(सं०वि०) चिह्न लगाया हुआ

अंकिल-(हिं०पुं०) दाग कर छोड़ा हुआ सांड़।

अँकुड़ा-(हिं०पुं०) मोड़ कर गोल किया हुआ काँटा।

अँकुड़ी-(हिं०स्त्री०) मुड़ी हुई काँटी, हल की लकड़ी का वह भाग जिसमें फार जड़ा होता है।

अंकुर-(सं०पुं०) अँखुआ, किल्ला।

अँकुरना, अँकुराना-(हिं०क्रि०) अँखुवा फूटना, बीज जमना, उत्पन्न होना।

अंकुश-(सं०पुं०) हाथी हाँकने का लोहे का डंडा; **अँकुशग्राही**-महावत।

अँकुसी-(हिं०स्त्री०) लोहे की झुकी हुई कील जो किसी पदार्थ के लटकाने या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फँसाने के काम में आती है।

अँकोट-(हिं०पुं०) मुड़ी हुई कड़ी जिसमें रस्सी फँसाकर पानी में नाव खींची जाती है।

अँकोर-(हिं०पुं०) गोद, अंक, भेंट, घूसा

अँकोरना-(हिं०क्रि०) भूँजना, घूस देना।

अँकोड़ा-(हिं०पुं०) बड़ा काँटा।

अँकोरी-(हिं०स्त्री०) गोद, आलिंगन।

अँखड़ी-(हिं०स्त्री०) चक्षु, नेत्र, आँख।

अँखमिचौनी-(हिं०स्त्री०) देखो आँखमिचौनी।

अँखिया-(हिं०पुं०) आँख, बीज का महीन अंकुर, कसेरे का ठप्पा।

अँखुआ-(हिं०पुं०) बीज में से निकला हुआ महीन अंकुर। **अँखुआना**-(हिं० क्रि०) अंकुर फूटना, बीज जमना।

अंग-(सं०नपुं०) शरीर, अवयव।

अंगज-(सं०पुं०) पुत्र, रोग, मद।

अंगड़, खंगड़-(हिं०पुं०) टूटा फूटा, गिरा पड़ा हुआ अंश।

अंगड़ाई-(हिं०स्त्री०) आलस्य में जँभाई लेते हुए देह टूटना। **अंगड़ाना**-(हिं० क्रि०) अंगड़ाई लेना।

अंगत्राण-(सं० नपुं०) शरीर ढापने का वस्त्र, कवच।

अंगद-(सं०पुं०) बाजूबन्द।

अँगना-(हिं०पुं०) अंगण, आँगन।

अँगनाई-(हिं०स्त्री०) अंगण, अंगना।

अँगभंग-(सं०नपुं०) शरीर के किसी अवयव का टूटना। **अंगभंगी**-(सं० नपुं०) स्त्रियों का हावभाव। **अंगभूत**-(सं०वि०) अन्तर्गत।

अँगरखा-(हिं०पुं०) घुटने तक का लंबा अंगा।

अँगरा-(हिं०पुं०) अंगार, अंगारा।

अंगराई-(हिं०स्त्री०) देखो अंगड़ाई

अंगराना-(हिं०क्रि०) अंगड़ाई लेना।

अंगराग-(हिं०पुं०) उबटन।

अंगलेट-(हिं०पुं०) अँगेठ, शरीर की गठन।

अंगवना-(हिं०क्रि०) स्वीकार करना।

अंगवारा-(हिं० पु०) गाँव के किसी अंश का स्वामी।

अंगविक्षेप-(सं०पुं०) चमकना, मटकना।

अंगसिहारी-(हिं०स्त्री०) कँपकँपी, जूड़ी।

अंगहीन-(सं०वि०) जिसमें कोई अंग न हो।

अंगांगिभाव-(सं०पुं०) गौण और मुख्य भाव का संबंध।

अंगा-(हिं०पुं०) अंगरखा, चपकन।

अंगाकड़ी-(हिं०स्त्री०) लिट्टी, बाटी।

अंगार-(हिं०पुं०) जलता हुआ कोयला।

अंगारा-(हिं०पुं०) देखो अंगार।

अँगारी-(हिं०स्त्री०) ऊख का ऊपर का भाग जो काटकर पशुओं को खिलाया जाता है।

अँगिया-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की केवल स्तनों को ढाँपने की कुरती जो बन्दों से पीठ की ओर बाँधी जाती है।

अंगी-(सं०वि०) शरीरधारी।

अंगीकार-(सं०पुं०) स्वीकार।

अँगीठा-(हिं०पुं०) बड़ी अंगीठी।

अँगीठी-(हिं०स्त्री०) अग्नि रखने का छोटा पात्र।

अंगुर-(हिं०पुं०) अंगुल।

अँगुरिया-(हिं०वि०) अंगूर की लता या रंग के समान।

अँगुरी-(हिं०स्त्री०) अंगुली, उँगली।

अंगुल-(सं०पुं०) आठ जव की नाप।

अंगुली-(सं०स्त्री०) अंगुली, उँगली।

अंगुष्ठ-(सं०पुं०) अंगूठा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंगुसा-(हिं०पु०) अंखुआ, अङ्कुर, मोटी अंगुली।
अंगूठा-(हिं०स्त्री०) मुद्रिका, मुँदरी।
अंगेजना-(हिं०क्रि०) अपने ऊपर भार ले लेना।
अंगेठ-(हिं०पुं०) आकृति, शरीर रचना।
अंगेरना(हिं०क्रि०) देखो अंगेजना।
अंगोछा-(हिं०पुं०) अंग पोछने का वस्त्र
अंगोछी-(हिं०स्त्री०) छोटा अंगोछा।
अँगूठा-(हिं०पु०) हाथ या पैर की छोटी अंगुली।
अँघस-(हिं०पुं०) पाप, पातक।
अँघिया-(हिं०स्त्री०) महीन आँटा चालने की चलनी।
अँचरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों की धोती का अंचल।
अँचवन-(हिं०पुं०) आचमन। **अंचवना**-(हिं०क्रि०) आचमन करना।
अँजनसार-(हिं०वि०) आँखों में अंजन लगाया हुआ।
अंजरपंजर-(हिं०पुं०) शरीर की ठठरी।
अंजवाना-(हिं०क्रि०) आँख में काजल लगवाना।
अंजहा-(हिं०वि०) अन्न से बना हुआ,
अंजही-(हिं०स्त्री०) अन्न से बना हुआ अनाजी।
अंजाना-(हिं०क्रि०) देखो अंजवाना।
अँजुरी, अँजुली--(हिं०स्त्री०) अँजुली।
अँजोर-(हिं०पुं०) प्रकाश; **अंजोरना**-(हिं०क्रि०) प्रकाश करना। **अँजोरा**-(हिं०पुं०) प्रकाश। **अँजोरी**-(हिं० स्त्री०) प्रकाश, चाँदनी।
अंझा-(ह०क्रि०) अनाध्याय, नागा।
अंटा-(हिं०पुं०) सूत लपेटने की गँड़ारी; **अंटाचित**-(हिं०वि०) पीठ के बल पड़ा हुआ।
अँटिया-(हिं०स्त्री०) छोटा पुलिन्दा, गँठिया; **अँटियाना**-(हिं०क्रि०), छिपा लेना, गठिया बनाना,
अंटी-(हिं०स्त्री०) लच्छी, गाँठ, अँगुली के बीच का स्थान।
अंड-(हिं०पुं०) अण्डा, अण्डकोष।
अंडस-(हिं०स्त्री०) असुविधा, अड़चन।
अंडा-(हिं०पुं०) अण्ड, कोई गोलाकार पदार्थ।
अंडी-(हिं०स्त्री०) रेड़ी, रेशमी वस्त्र।
अँडुआ-(हिं०पुं०) बिना बधिया किया हुआ पशु।
अंडैल-(हिं०वि०) अंडेवाली।
अँतड़ी-(हिं०स्त्री०) अन्त्र, आँत।
अंतरा-(हिं०पुं०) अन्तर, गीत का दूसरा पद।
अंत्री-(हिं०वि०) आँतवाला।
अंदरसा-(हिं० पुं०) पीसे हुए चावल की मिठाई।
अँदुआ-(हिं०पुं०) हाथी के पिछले पैर में फँसाने की काँटेदार अँकुसी।
अंदोर-(हिं०पुं०) कोलाहल।
अंधकार-(सं०पुं०) अँधियारा।
अंधड़-(हिं०पुं०) धूलिपूर्ण तीव्र वायु, आँधी।
अँधरा-(हिं०वि०) नेत्रहीन, अन्धा।
अंधा-(हिं०वि०) नेत्रहीन, अँधरा।
अंधाधूंध-(हिं०वि०) बड़ा अँधेरा, विचारहीनता; (क्रि०वि०) अतिशय, बहुत।
अंधार-(हिं०पुं०) अंधकार।
अंधियारा-अंधियारा-(हिं०पुं०) अंधेरा, अन्धकार।
अंधेर-(हिं०पुं०) अत्याचार, अन्याय।
अंधेरा-(हिं०पुं०) अन्धकार, अँधियारा
अंधेरिया-(हिं०स्त्री०) अन्धेरी रात,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंबर-(हिं०स्त्री०) देखो अम्बर
अंबारी-(फा०पुं०) हाथी की पीठ पर रखने का मंडपदार हौदा।
अंबिया-(हिं०स्त्री०) टिकोरा।
अंश-(सं०पुं०) भाग, खण्ड, अवयव।
अंशु-(सं०पुं०) सूर्य, किरण, ज्योति, वेग, अल्प मात्रा।
अंशुक-(सं०पुं०) ओढ़ने का वस्त्र, डुपट्टा।
अंस-(सं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा।
अंसुआ, अंसुवा-(हिं०पुं०) अश्रु, आँसू।
अकच-(सं०पुं०) खल्वाट, केतु ग्रह।
अकच्छ-(सं०वि०) नंगा, व्यभिचारी।
अकड़-(हिं०स्त्री०) ऐंठन, मरोड़। **अकड़ना**-(हिं०क्रि०) सूख कर कड़ा हो जाना, हठ करना; **अकड़वाई**-(हिं०स्त्री०) शरीर की ऐंठन।
अकड़ाव-(हिं०पुं०) खिचाव, ऐंठन।
अकड़ैत-(हिं०पुं०) घमंडी, गर्वी।
अकथ-(हिं०वि०) अवर्णनीय। **अकथनीय**-(सं०वि०) न कहने योग्य।
अकधक-(हिं०पुं०) आगा-पीछा, शंका।
अकबक-(हिं०पुं०) बकझक; (वि०) भौचक्का।
अकर-(सं०वि०) न किये जाने योग्य, बिना हाथ का।
अकरण-(सं०पुं०) कर्म का अभाव; **अकरणीय**-(सं०वि०) न करने योग्य।
अकराल-(सं०वि०) सौम्य, रम्य, सुन्दर
अकरी-(हिं०स्त्री०) हलमें बँधा हुआ वह पोला बाँस जिसमें से बोते समय बीज गिराया जाता है।
अकरुण-(सं०वि०) करुणाहीन, कठोर।
अकर्तव्य-(सं०वि०) न करने योग्य।
अकर्ता-(सं०वि०) कार्य न करने वाला।
अकर्तृक-(सं०पुं०) बिना कर्ता का।
अकर्म-(सं०पुं०) बुरा काम, कुकर्म, पाप, अपराध, अधर्म। **अकर्मक**-(सं०पुं०) व्याकरण में जिस क्रिया का कर्म न हो। **अकर्मण्य**-(सं०वि०) आलसी।
अकर्मा-(हिं०वि०) काम न करनेवाला, **अकर्मी**-(हिं०पुं०) पापी।
अकलङ्क-(सं०वि०) दोष रहित, पापरहित। **अकलंकित**-(सं०वि०) कलंकरहित, निर्दोष।
अकल-(सं०वि०) अवयव रहित, व्यर्थ, निष्फल; (हिं० वि०) अखण्ड,
अकल्पित-(सं० वि०) अकृत्रिम, सहज।
अकल्मष-(सं०वि०) पापरहित, निर्दोष
अकल्याण-(हिं०पुं०) अशुभ, अमंगल।
अकस-(हिं०पुं०) शत्रुता, द्वेष, विरोध। **अकसना**-(हिं०क्रि०) द्वेष करना।
अकस्मात्-(सं०क्रि०वि०) अचानक, अनायास।
अकह-(हिं०वि०) न कहने योग्य, बुरा।
अकांड-(सं०-अकाण्ड) विना शाखा या डालीका; (क्रि०वि०) अकस्मात्, हाठात्
अकाज-(हिं०वि०) दुष्कर्म, कार्य की हानि, विघ्न। **अकाजी**-(हिं०वि०) विघ्न करनेवाला, बाधक।
अकाण्ड-(सं०वि०) अवयव रहित, बिना डाल और शाखा का, अनवसर; (क्रि०वि०) सहसा, हठात्; **अकाण्ड-ताण्डव**-(सं०नपुं०) वृथा की उछल कूद।
अकाथ-(हिं०क्रि०वि०) व्यर्थ, अकारथ।
अकाम-(हिं०वि०) कामना रहित, निस्पृह (क्रि०वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन
अकामी-(सं०वि०) कामनारहित, निस्पृह।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अकाय-(सं०पुं०)देहशून्य, निराकार।
अकार-(सं०पुं०) आकृति, स्वरूप, रचना। चिह्न, 'अ'-अक्षर।
अकारज-(हिं०पुं०) कार्य की हानि।
अकारण-(सं०वि०)कारणहीन, व्यर्थ।
अकारथ-(हिं०वि०) वृथा, निष्प्रयोजन
अकारन-(हिं०वि०) बिना कारण के,
अकार्थ-(सं०नपुं०) हानि, दुष्कर्म।
अकाल-(सं०पुं०) कुसमय, दुर्भिक्ष; (वि०) अनवसर।
अकाली-(सं०पुं०) सिक्खों का एक सम्प्रदाय,
अकास-(हिं०पुं०) आकाश, गगन।
अकिञ्चन-(सं० वि०) जिसके पास कुछ भी न हो, अति दरिद्र, कंगाल।
अकिंचित्कर-(सं०वि०)असमर्थ,अशक्त।
अकिल्विष-(सं० वि०) पापरहित।
अकीरति, अकीर्ति-(सं०स्त्री०)अपयश, दुर्नाम।
अकुटिल-(सं०वि०) जो टेढ़ा न हो, निष्कपट।
अकुताना-(हिं०क्रि०) घबड़ाना, ऊबना
अकुल-(सं० वि०) परिवार हीन, जो अच्छे वंश का न हो।
अकुलाना-(हिं०क्रि०) घबड़ाना, व्याकुल होना।
अकुलीन-(सं०वि०)नीच वंश का, क्षुद्र।
अकुशल-(सं०पुं०) अमंगल, अशुभ; (वि०) अनिपुण।
अकूत-(हिं०वि०)जो कूता न जा सके।
अकृच्छ-(सं०पुं०) संकोच रहित, सुगम।
अकृत-(सं०वि०) बिना किया हुआ, बिगाड़ा हुआ,
अकृतार्थ-(सं०वि०) असफल।
अकृति, अकृती-(सं०स्त्री०) निकम्मा, पापी, अयोग्य।
अकृत्रिम-(सं०वि) जो काल्पनिक न हो, स्वाभाविक।
अकृपण-(सं०वि०) मुक्तहस्त, उदार।
अकृपा-(सं०स्त्री०) क्रोध, अप्रसन्नता, रोष।
अकेल, अकेला-(हिं०वि०)एकाकी, अद्वितीय, अनुपम। **अकेले**-(हिं०क्रि०वि०) बिना साथी के।
अकेहरा-(हिं०वि०) जो दोहरा न हो, एक परत का।
अकैया-(हिं०पुं०)खुरजी, गोन, कवाजा।
अकोतरसो-(हिं० वि०) एकसौ-एक की संख्या।
अकोप-(हिं०पुं०) कोप का अभाव।
अकोरना-(हिं०क्रि०) भूनना, तलना।
अकोविद-(सं० वि०) मूर्ख, अज्ञानी।
अक्खड़-(हिं०वि०) हठी, उद्धत, मूर्ख, स्पष्ट वक्ता।
अक्खर-(हिं०पुं०) अक्षर, वर्ण।
अक्खा-(हिं०पुं०) खुरजी, पाखड़ी।
अक्त-(सं०वि०) संयुक्त सफल, रंगा हुआ, गीला, भरा हुआ। यह शब्द प्रत्यय की तरह शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है यथा-रक्ताक्त, विषाक्त, इत्यादि।
अक्रम-सं० वि०) विपरीत, क्रम रहित।
अक्रव्याद-(सं० स्त्री०) मांस न खानेवाला।
अक्रिय-(सं०वि०) क्रिया रहित, निश्चेष्ट।
अक्रूर-(सं०वि०) जो क्रूरनहो, कोमल।
अक्रोध-(सं०पुं०)दया, क्षमा, सहिष्णुता
अक्लान्त-(सं०वि०) ग्लानि रहित।
अक्लिष्ट-(सं०वि०) सरल, सुगम।
अक्लेष-(सं०पुं०) क्लेष का अभाव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अक्ष (सं०पुं०) आँख, जुआ खेलने का पासा, पासे का खेल, छकड़ा, गाड़ी का धुरा, पृथ्वीके भीतर की वह कल्पित रेखा जिस पर पृथ्वी घूमती है, रुद्राक्ष, आत्मा, सर्प, ग्रहों के भ्रमणकरने का मार्ग।

अक्षक्रीड़ा-(सं०स्त्री०) पासे का खेल।

अक्षत-(सं० वि०) अखण्डित, जिसको घाव न लगे हों; (पुं०) गणित में पूर्णांक, बिना टूटे हुए चावल, लावा।

अक्षधूर्त-(सं०पुं०) पासके खेल में चतुर।

अक्षपटल-(सं०नपुं०) आँख की पलक,

अक्षम-(सं०वि०) क्षमारहित, असमर्थ।

अक्षय-(सं०पुं०) जिसका क्षय न हो।

अक्षर-(सं०पुं०, नपुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु, मोक्ष, जल, धर्म, तपस्या, आकारादि वर्ण; (वि०) अविनाशी, नित्य। **अक्षरजीवी**-(सं०पुं०) लेखक, **अक्षरमाला**-(सं०स्त्री०) वर्णमाला।

अक्षरमुख-(सं० पुं०) शिष्य, छात्र,

अक्षरशः-(सं०क्रि०वि०) अक्षर अक्षर करके; **अक्षरौंरी**-(हिं०स्त्री०) वर्णमाला, अक्षरों के लिखने कीं रीति।

अक्षवार-(हिं०वि०) अखाड़ा, द्यूतगृह।

अक्षांश-(सं०पुं०) पृथ्वी की धुरी, जिस अक्षपर पृथ्वी घूमती है।

अक्षि-(सं०स्त्री०) नयन, नेत्र, आँख।

अक्षुण्ण-(सं०वि०) सम्पूर्ण, अविकृत।

अक्षौहिणी-(सं०स्त्री०) चतुरंगिणी सेना

अखण्ड-(सं०वि०) विना खण्ड या टुकड़े का, पूर्ण, पूरा।

अखड़-(हिं०वि०) अशिष्ट, असभ्य।

अखड़ैत-(हिं०पुं०) बलवान मनुष्य,

अखय-(हिं०वि०) क्षय न होने वाला,

अखरना-(हिं०क्रि०) बुरा लगना, अनुचित जान पड़ना, कष्ट होना।

अखाड़ा-(हिं०पुं०) मल्लयुद्ध करने का स्थान, साधुओं की मण्डली।

अखाद्य-(सं०वि०) जों खाने योग्य न हो

अखिल-(सं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा, सब।

अखूट-(हिं०वि०) अखण्ड, अक्षय।

अखेट-(हिं०पुं०) आखेट, मृगया; **अखेटक**-(हिं०पुं०) आखेट करनेवाला,

अख्याति-(सं०स्त्री०) अपकीर्ति, अयश।

अग-(सं०वि०) न चलनेवाला, स्थावर, (पुं०) सर्प, वृक्ष, पर्वत, सूर्य।

अगड़धत, अगड़धत्ता-(हिं०वि०) लंबा चौड़ा, विशालकाय।

अगणित-(सं०वि०) असंख्य, अनगिनती

अगण्य-(सं०वि०) न गिनने योग्य।

अगति-(सं०स्त्री०) अव्यवस्था, दुर्दशा, अकालमृत्यु।

अगत्या-(सं०क्रि०वि०) अगस्मात्।

अगद-(सं०पुं०) औषधि।

अगनित-(हिं०वि०) अगणित, अनगिनती

अगम-(हिं०पुं०) दुर्गम, दुर्घट, अपार,

अगमानी-(हिं०स्त्री०) अतिथि आदि का आगे जाकर स्वागत करना (पुं०) नेता, सरदार।

अगम्य-(सं०वि०) विकट, दुर्बोध, अज्ञेय असंख्य।

अगम्या-(सं०स्त्री०) गमन न करने योग्य स्त्री; **अगम्या गमन**-अगम्या स्त्री के साथ सहवास।

अगर-(हिं०पुं०) एक तुगन्धित क्षुप।

अगरबत्ती-(हिं०स्त्री०) धूपबत्ती।

अगरी--(हिं०स्त्री०) अर्गला, सिटकिनी

अगर्व-(सं०त्रि०) गर्वरहित।

अगर्हित-(सं०त्रि०) निन्दा न किया हुआ

अगला-(हिं०वि०) आगे का, पहिला।

अगवाई-(हिं०स्त्री०) स्वागत करने के लिये आगे जाना, अगवानी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगवाड़ा-(हिं०पुं०) घर के सामने का स्थान।

अगवान-(हिं०पुं०) अगवानी करने-वाला। **अगवानी**-(हिं०स्त्री०) आगे जाकर स्वागत, विवाह के समय कन्या पक्ष वालों का वर पक्ष वालों की अभ्यर्थना। (पुं०) अग्रसर, अगुआ।

अगवार-(हिं०पुं०) घर के सामने का स्थान, ओसाती समय जो हलका अन्न भूसे के साथ उड़कर आगे को चला जाता है।

अगवासी-(हि०स्त्री०) हल की वह लकड़ी जिसमें फार जड़ा जाता है।

अगसारी-(हिं०वि०) अग्रसर, आगेका।

अगस्त्य-(सं०पुं०) वक वृक्ष।

अगह-(हि०वि०) जो ग्रहण न किया जा सके।

अगहन-(हिं०पुं०) अग्रहायण, मार्ग-शीर्ष,। **अगहनियाँ**-(हिं०वि०) अग-हन संबन्धी।

अगहर-(हिं०वि०,क्रि०वि०) पहिला, आगे का।

अगहाट-(हि०पुं०) वह भूमि जो बहुत दिनों से किसी के अधिकार में रही हो।

अगहुँण-(हि०वि०) मुख्य, अगुआ, अग्र-गामी।

अगाऊ-(हिं०वि०) अग्रिम, (क्रि०वि०) पहिले से।

अगाड़-(हिं०पुं०) आगे का भाग।

आगाड़ा-(हिं०पुं०) यात्री की पहिले से भेजी हुई सामग्री, कछार।

अगाड़ी, अगाड़-(हिं०क्रि०वि०) भविष्य में, सामने, पहिले (स्त्री०) पदार्थ का अग्रभाग, घोड़े की गर्दन में बाँधने की रस्सी।

अगात्र-(सं०वि०) बिना शरीर का।

अगाध-(सं०वि०) अथाह, असीम, बहुत गहरा, गंभीर।

अगार-(सं०नपुं०) आगार, घर।

अगाव-(हि०पुं०) ऊख के पौधे का ऊपर का भाग।

अगास-(हि०पुं०) आकाश, द्वार पर का चबूतरा।

अगासी-(हि०स्त्री०) पगड़ी।

अगिआना-(हिं०क्रि०) गरम होना।

अगिन-(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग।

अगिनित-(हिं०वि०) अनगिनती।

अगिया-(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग।

अगिरों-(हिं०स्त्री०) घर के सामने का खुला स्थान।

अगिला-(हिं०वि०) पहिलेका, सामनेका।

अगिहाना-(हि०पुं०) अग्नि रखने का स्थान, अँगीठी, भट्ठी।

अगीत पछीत-(हि०क्रि०वि०) आगे पीछे, इधर उधर।

अँगीठा-(हिं०पुं०) बड़ी अँगीठी, भट्ठा।

अगुआ-(हिं०पुं०) आगे जाने वाला।

अगुआई-(हिं०स्त्री०) पथप्रदर्शन का कार्य।

अगुआना-मार्ग दिखलाना, नेता या मुखिया बनना।

अगुण-(सं०पुं०वि०) गुणरहित।

अगुणी-(हिं०वि०) गुणहीन, गँवार।

अगुरु-(सं०नपुं०) अगुरुचन्दन (वि०) जो गुरु न हो, गौरवहीन।

अगुवा-(हिं०पुं०) मुखिया, नेता।

अगूढ़-(सं० वि०) अगुप्त, प्रगट, सरल।

अगृह्य (सं०वि०) न ग्रहण करने योग्य।

अगेन्द्र-(सं० पुं०) हिमालय, सुमेरु।

अगेला-(हिं०पुं०) हाथ में सबसे आगे पहरने का आभूषण, भूसे के साथ उड़ने वाला हलका अन्न।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अगेह-(सं०त्रि०) जिसके पास घरबार न हो।
अगैरा-(हिं०पुं०) कृषि का पहिला अन्न
अगोचर-(सं० त्रि०) अज्ञात, अप्रगट, अबोध्य, जो इन्द्रियों से न ज्ञात हो।
अगोट-(हि० स्त्री०) रोक, भीत, नीव।
अगोटना-(हिं०क्रि०) रोकना, अटकाना
अगोरदार-(हिं० पुं०) पहरुआ, रक्षक,
अगोरना-(हिं०क्रि०) पहरा देना, रखवाली करना, प्रतीक्षा करना। **अगोरिया**-(हिं०पुं०) खेत की रखवाली करने वाला मनुष्य।
अगौढ-(हि०पुं०) अग्रिम (पहिले) दिया जाने वाला द्रव्य।
अगौनी-(हिं०स्त्री०) अगवानी, अभ्यर्थना
अग्नि-(सं०पुं०) वह्नि, अनल, आग
अग्निकण-(सं०पुं०) चिनगारी। **अग्निकर्म**-(सं० नपुं०) होम, चिता में आग लगाने का कार्य। **अग्निकोण**-(सं०पुं०) पूर्व और दक्षिण का कोण। **अग्नि क्रिया**-(सं०स्त्री०) अन्तेष्टि क्रिया,। **अग्नि क्रीड़ा**-(सं०स्त्री०) आग का खेल। **अग्निमान्द्य**-(सं० नपुं०) पाचन शक्ति में न्यूनता। **अग्निमुख**-(सं०पुं०) देवता, ब्राह्मण, भिलावाँ। **अग्निवर्धक**-(सिं० व०) भूख बढ़ाने वाली (दवा) **अग्निशाला**-(सं०नपुं०) अग्नि रखने का स्थान।
अग्निशिखा-(सं० स्त्री०) अग्नि की ज्वाला। **अग्निशुद्धि**-(सं० स्त्री०) अग्नि द्वारा शुद्ध करने की विधि।
अग्निशेखर-(सं०पुं०) कुंकम का वृक्ष, केसर का पौधा। **अग्निसंस्कार**-(सं० पुं०) दाह क्रिया, शव दाह।
अग्न्यस्त्र-(सं०नपुं०) अग्निबाण, तोप, बन्दूक, बमगोला, तमञ्चा इत्यादि जो बारूद से चलाये जाते हैं।
अग्र-(सं०नपुं०) ऊपरी भाग शिखर, चोटी, नोक, अवलम्बन, (वि०) प्रधान प्रथम, अगला। **अग्रकर**-(सं० पुं०) दहिना हाथ। **अग्रकाय**--(सं०पुं०) शरीर का अगला भाग। **अग्रगण्य**-(सं०क्रि०) प्रथम, अगुआ, नेता, श्रेष्ठ।
अग्रगामी-(सं०त्रि०) आगे जानेवाला।
अग्रज-(सं०पुं०) बड़ा (जेठा) भाई,
अग्रजन्मा-(सं०पुं०) ज्येष्ठ भ्राता, ब्राह्मण। **अग्रजात**-(सं०पुं०) जेठा भाई, बड़ा भाई, ब्राह्मण।
अग्रयोधा-(सं०पुं०) सेना के आगे लड़ने वाला योद्धा। **अग्रवर्ती**-(सं०पुं०) आगे रहनेवाला, नेता, अगुआ।
अग्रवीर-(सं०पुं०) सेना का प्रधान योद्धा
अग्रशोची-(सं० पुं०) दूरदर्शी।
अग्रसर-(सं०वि०) अग्रगामी, नेता।
अग्रहार-(सं०पुं०) खेत की उत्पत्ति का वह अन्न जो देवता या ब्राह्मण को अर्पण करने के लिये अलग कर दिया जावे।
अग्रांश-(सं०पुं०) अग्रभाग।
अग्राशन-(सं०नपुं०) अग्राहार।
अग्राह्य-(सं०वि०) न ग्रहण करने योग्य।
अग्रिम-(सं०पुं०) श्रेष्ठ, प्रधान, पहिलेका
अग्रे-(सं०अव्य०) आदि में, सामने, पहिले
अघ-(सं०नपुं०) अधर्म, पाप, दुःख।
अघट-(हिं०वि०) अयोग्य, अनुपयुक्त।
अघटित-(हिं०वि०) न होनेवाला।
अघन-(सं०वि०) जो गाढ़ा न हो।
अघमय-(सं०वि०) पाप पूर्ण।
अघर्म-(सं०पुं०) शीतकाल, जिसमें शरीर में पसीना न हो।
अघवाना-(हिं०क्रि०) पेटभर खिलाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अघाई-(हिं०स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष, पेटभर खाने की अवस्था।
अघाना-(हिं०स्त्री०) प्रसन्न होना, मनभर जाना, पेट भरना।
अघारि-(सं०पुं०) पाप नाशक, श्रीकृष्ण
अघी-(हिं०वि०) कुकर्मी, पापी।
अघृण-(सं०वि०) दयारहित, क्रूर।
अघेरन-(हिं०पुं०) जव का मोटा आँटा
अघोर-(वि०) जो भयानक न हो, प्रिय; (पुं०) महादेव, शिव; **अघोर-पन्थी**-(हिं०पुं०) अघोर मत को मानने वाले, अघोरी। **अघोरी**-(सं०पुं०) अघोर मतावलम्बी।
अचक-(हिं०वि०) पूर्ण, पूरा, (पुं०) आश्चर्य, विस्मय; (अव्य०) अचानक, अकस्मात्।
अचका-(हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्, बिना समझे बूझे।
अचकित-(सं०वि०) भयहीन, अतृप्त, स्थिर।
अचक्का-(हिं०पुं०) अपरिचित व्यक्ति।
अचक्षु-(सं०वि०) बिना आँख का।
अचञ्चल-(सं०वि०) जो चंचल न हो, स्थिर, गंभीर।
अचण्ड-(सं०वि०) शान्त, सुशील, सौम्य।
अचना-(हिं०क्रि०) आचमन करना, कुल्ला करना।
अचमन-(हिं०पुं०) देखो आचमन।
अचम्भा-(हिं०पुं०) अचरज, विस्मय
अचम्भो-(हिं०पुं०) आश्चर्य, विस्मय।
अचर-(हिं०पुं०) स्थिर, अटल, स्थावर
अचरज-(सं०पुं०) आश्चर्य, विस्मय।
अचरा-(हिं०स्त्री०) साड़ी का छोर, अंचल।
अचल-(सं०वि०) निश्चल, स्थिर, दृढ़; (पुं०) वृक्ष, पर्वत।
अचला-(सं०स्त्री०) न चलने वाली, स्थिर।
अचवन-(हिं०पुं०) आचमन, भोजन के बाद हाथ मुँह धोना तथा कुल्ली करना। **अचवना**-(हिं०क्रि०) आचमन करना। **अचवाना**-(हिं०क्रि०) भोजन के बाद हाथ मुँह धुलवाना।
अचांचक-, **अचानक**-(हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्।
अचार-(हिं०पुं०) फल या तरकारियों में मसाला मिला कर बना हुआ खाने का खट्टा पदार्थ, आचरण, व्यवहार।
अचारज-(हिं०पुं०) आचार्य।
अचारी-(हिं०वि०) आचार करनेवाला
अचालू-(हिं०पुं०) न चलने वाला।
अचिक्कण-(सं०वि०) रूखा, मैला।
अचिकित्स्य-(सं०वि०) जिसकी चिकित्सा न हो सके, असाध्य (रोगी)।
अचित्-(सं०नपुं०) निर्जीव पदार्थ।
अचित्त-(सं०वि०) चेतनाहीन, बेसुध
अचिन्त-(हिं०वि०) बिना चिन्ता का निश्चिन्त।
अचिन्तित-(सं०वि०) बिना चिन्ता किया हुआ।
अचिर-(सं०वि०) थोड़े काल तक ठहरने वाला; (क्रि०वि०) शीघ्र, तुरंत,
अचिराभा-(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली
अचीता-(हिं०वि०) आकस्मिक।
अचूक-(हिं०वि०) न चूकने वाला; (क्रि०वि०) बिना भूल किये हुए।
अचेत-(सं०वि०) चेतनाशून्य, मूर्छित, निर्बुद्धि, (नपुं०) निर्जीव पदार्थ।
अचेतन-(सं०वि०) चेतना रहित।
अचेष्ट-(सं० त्रि०) ज्ञानशून्य।
अचैतन्य-(सं०वि०) चेतनाहीन, जड़।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अचेना-(हिं०पुं०) नेसुआ।
अचोना-(हिं०पुं०) आचमनी।
अच्छ-(सं०) स्वच्छ,निर्मल(पुं०)भालू
अच्छत-(हिं०पुं०) देखो अक्षत।
अच्छर-(हिं०पुं०) वर्ण, अक्षर।
अच्छरा-(हिं०स्त्री०) अप्सरा,देवाङ्गना
अच्छा-(हिं०वि०) उत्तम, भला, रोगरहित,स्वस्थ; (पुं०)श्रेष्ठ मनुष्य; (क्रि०वि०)भलीभांति; (अव्यय)अस्तु
अच्छाई, अच्छापन-(हिं०) उत्तमता।
अच्छोहिनी- (हिं०स्त्री०) देखो अक्षौहिणी
अछत्र-(हिं०पुं०) राज्यहीन,बिना छत्र का।
अछना-(हिं०क्रि०) रहना।
अछय-(हिं०पुं०) अक्षय।
अछरा-(हिं०स्त्री०) अप्सरा,देवाङ्गना
अछरौटी-(हिं०स्त्री०) वर्णमाला।
अछल-(हिं०वि०) निष्कपट,निश्छल।
अछवाना-(हिं०क्रि०) सुशोभित करना
अछवानी-(सं०स्त्री०) प्रसूता स्त्रियों को दिया जानेवाला एक पाक विशेष।
अछूत-(हिं०वि०) अस्पृश्य; (पुं०) अन्त्यज जाति। **अछूता**-(हिं०वि०) बिना छुआ हुआ, नया।
अछेव-(हिं०वि०) बिना छिद्र का।
अछेह-(हिं०वि०) अखण्डित, बहुत।
अछोभ-(हिं०वि०) क्षोभरहित शान्त।
अज-(सं०पुं०) जिसका जन्म न हो, ईश्वर।
अजगुत-(हिं० पुं०) अद्भुत घटना।
अजटा-(सं०स्त्री०) बिना जटा का।
अजड़-(सं०वि०) सजीव वस्तु, चेतन व्यक्ति।
अजदहा-(फा०पुं०) बड़ा अजगर।
अजन्म,अजन्मा-(सं०पुं०) जिसका जन्म न हो, मोक्ष।
अजपाल-(सं०त्रि०) गड़ेरिया।
अजमोद, अजमोदा-(सं०स्त्री०) अजवाइन।
अजय-(सं०पुं०) पराजय, हार।
अजसी-(हिं०वि०) अख्यात, यशहीन।
अजहूं-(हिं०अव्य०) अबभी,आजतक भी
अजागर-(हिं०वि०) न जागने वाला।
अजाचक-(हिं०वि०) न माँगनेवाला।
अजाची-(हिं०पुं०) जो मनुष्य किसीसे कुछ न माँगे।
अजात-(सं०वि०) जिसका जन्म न हुआ हो।
अजाति, अजाती-(सं०स्त्री०) जाति शून्य, पतित, त्याज्य।
अजान-(हिं०वि०) अज्ञात, अपरिचित; (पुं०) अज्ञानता।
अजापालक-(सं०वि०) गडेरिया।
अजाय-(हिं०वि०) अनुचित, अयोग्य।
अजिऔरा-(हिं०पुं०)आजी या दादी के पिता का घर।
अजित-(सं० वि०) अपराजित, (पु०) शिव, विष्णु।
अजिन-(सं०नपुं०) मृगचर्म,मृगछाला
अजिर-(सं०नपुं०) टीला, आँगन।
अजी-(हिं०अव्य०)सम्बोधनार्थक शब्द, अरे!
अजीरन-(हिं०पुं०) अपच, बहुतायत।
अजीर्ण-(हिं० नपुं०) अपाक, अपच, बहुतायत।
अजीव-(सं०वि०)अचेतन, निर्जीव।
अजेय-(सं०वि०) न जीतने योग्य।
अजै-देखो अजय।
अजो-(हिं०क्रि०वि०) आजतक,अभीतक
अजोग-(हिं०वि०) अयोग्य।
अजौं-(हिं०क्रि०वि०)अभीतक,आज भी
अज्झल-(हिं० नपुं०) ढाल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अज्ञ-(सं०वि०) ज्ञानशून्य, मूर्ख; (पुं०) मूर्ख मनुष्य। अज्ञता, अज्ञत्व-(सं०) मूर्खता।
अज्ञात-(सं०वि०) अपरिचित, अविदित
अज्ञाति-(सं०पुं०) असम्बन्धी पुरुष।
अज्ञान-(सं०वि०) बिना ज्ञान का; (पुं०) अविद्या, मोह, जड़ता।
अज्ञानी-(सं०वि०) अबोध, मूर्ख।
अज्येष्ठ-(सं०वि०) जो बड़ा या जेठा न
अझर-(हिं०वि०) न झरने या बरसने वाला।
अझोरी-(हिं०स्त्री०) थैली।
अटक, अटकन-(हिं०स्त्री०) प्रतिबन्ध, अवरोध, बाधा।
अटकना-(हिं०क्रि०) ठहरना, फँसना, उलझना, झगड़ा करना, प्रेम करना।
अटकर, अटकल-(हिं०स्त्री०) अनुमान,
अटका-(हिं०पुं०) जगन्नाथपुरी में नैवेद्य लगाया हुआ भोग जो सुखाकर अन्य देशों में प्रसाद रूपमें भेजा जाता है।
अटकाना-(हिं०क्रि०) ठहराना, लगाना फँसाना, उलझाना, **अटकाव**-(हिं०पुं०) अवरोध, रुकावट।
अटखेली-(हिं०स्त्री०) खेलकूद, चंचलता।
अटट-टू-(हिं०वि०) पुष्ट, पोढ़ा, दृढ़।
अटन-(सं०पुं०) भ्रमण, घूमना फिरना
अटना-(हिं०क्रि०) घूमना, भरजाना, पूर्ण होना, समाना।
अटनि, अटनी-(सं०स्त्री०) धनुष का वह भाग जहाँ रोदा चढ़ाया जाता है।
अटपट-(हिं० वि०) टेढामेढ़ा, विकट, भयंकर; **अटपटाना**-(हिं०क्रि०) सकुचाना। **अटपटी**-(हिं०स्त्री०) तिरछी, बेढंगी।
अटब्बर-(हिं०पुं०) आडंबर, अभिमान बंश, कुटुम्ब।
अटम-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, समुदाय।
अटल-(हिं०वि०) निश्चल, स्थिर, अवश्य होनेवाला।
अटवि-अटवी, (सं०स्त्री०) वन, जंगल।
अटहर-(हिं०पुं०) राशि, ढेर।
अटा-(सं०स्त्री०) पर्यटन, भ्रमण,।
अटारी-(हिं०स्त्री०) छत, घर के सबसे ऊपर के खण्ड की कोठरी।
अटाउ, अटाव-(हिं०पुं०) लगाव, विद्वेष
अटाटुट, अटाटूट-(हिं०वि०) दृढ़, पुष्ट, बहुत भारी।
अटाल-(हिं०पुं०) बहुत, ऊंचा घर,
अटाला-(हिं०पुं०) ढेर, राशि।
अटिया-(हिं०स्त्री०) झोपड़ी, घास इत्यादि का बँधा हुआ मुट्ठा।
अटूट-(हिं०वि०) न टूटने वाला, दृढ़
अटेक-(हिं०वि०) उद्देश्य रहित, बिना सहारे का।
अटेरन-(हिं०पुं०) सूत की आँटी बनाने का एक यन्त्र, ओयना।
अटोक-(हिं०वि०) बिना रोकटोक का।
अटम्बर-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, समुदाय।
अट्ट-(सं०पुं०) अट्टालिका, हाट; (वि०) अधिक, बहुत ऊंचा।
अट्टहास-(सं०पुं०) ठहाके की हँसी,
अट्टा-(हिं०पुं०) अट्टालिका, अटारी,
अट्टाट्टहास-देखो अट्टहास।
अट्टाल-(सं०पुं०) घर में सब से ऊपर की छत पर का कमरा।
अट्टालिका-(सं०स्त्री०) अटारी, राजगृह।
अट्टी-(हिं०स्त्री०) लच्छी, अटेरन में लिपटा हुआ धागा।
अट्ठा-(हिं०पुं०) ताश का वह पत्ता जिसमें किसी रंग की आठ बूटियांहों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अट्ठाइस-, अट्ठाईस-(हिं० वि०) बीस और आठ से बनी हुई संख्या २८।
अट्ठानवे-(हिं० वि०) नव्वे और आठ से बनी हुई संख्या ९८।
अट्ठावन-(हिं० वि०) पचास और आठ से बनी हुई संख्या ५८।
अट्ठासी-(हिं०वि०) अस्सी और आठ से बनी हुई संख्या ८८।
अठ-(हिं०वि०) आठ की संख्या ८।
अठइसी-(हिं०स्त्री०) एक सौ चालीस
अठकौंसल-(हिं०स्त्री०) सभा, पंचायत।
अठखेली-(हिं०स्त्री०) खेलकूद, उछल-कूद।
अठत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और आठ से बनी हुई संख्य ७८।
अठन्नी-(हिं०स्त्री०) आठ आने का चाँदी की मुद्रा।
अठपहला, अठपहलू-(हिं० क्रि०) आठ पहलका।
अठमासा-(हिं०वि०) आठ महीने का,
अठलाना-(हिं० क्रि०) क्रीड़ा, कौतुक करना, ऐंठन दिखलाना, चोचला दिखाना।
अठवाँस-(हिं०पुं०) आठ कोने का टुकड़ा; (वि०) अठपहल,। **अठवासाँ-**(हिं०वि०) आठ महीने में जन्म लेने वाला।
अठवारा-(हिं०पुं०) आठ दिनका काल
अठहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और आठ से बनी संख्या ७८।
अठान-(हिं०पुं०) अनुचित कार्य, द्रोह,
अठारह, अट्ठारह-(हिं० वि०) दस और आठ से बनी हुई संख्या १८।
अठासी-(हिं०स्त्री०) अस्सी और आठ से बनी हुई संख्या।
अठिलाना-(हिं०क्रि०) देखो अठलाना।
अठे-(हिं०क्रि०वि०) यहाँ, इस स्थानपर
अठोतरसो-(हिं०वि०) एक सौ आठ की संख्या १०८।
अठोतरी-(हिं०स्त्री०) एक सौ आठ दाने की जप करने की माला।
अड़-(हिं०स्त्री०) हठ, टेक।
अड़काना-(हिं०क्रि०) रोकना।
अड़ग-(हिं०वि०) दृढ़, पुष्ट, अचल।
अड़गोड़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी का टुकड़ा जो नटखट पशु के गले में बाँध दिया जाता है, प्रतिबंध।
अड़ङ्गा-(हिं०पुं०) अवरोध, रुकावट,
अड़च-(हिं०स्त्री०) शत्रुता।
अड़चन-(हिं०स्त्री०) विघ्न, बाधा।
अडण्ड-(हिं०वि०) जिसको दण्ड न दिया गया हो, निर्भय।
अड़तल-(हिं०स्त्री०) आड़, ओट, अवरोध।
अड़तालीस, अड़तालीस-(हिं० वि०) चालीस और आठ से बनी हुई संख्या ४८।
अड़तिस, अड़तीस-(हिं०वि०) तीस और आठ से बनी हुई संख्या।
अड़दार-(हिं०वि०) अड़नेवाला, अड़ियल।
अड़ना-(हिं० क्रि०) रुकना, अटकना, हठ करना।
अड़बंग-(हिं०वि०) टेढा, ऊँचा नीचा।
अड़बल-(हिं०वि०) अड़नेवाला,
अड़सठ, अरसठ-(हिं०वि०) साठ और आठ से बनी हुई संख्या ६८।
अड़ाड़-(हिं०पुं०) पशुओं को बाँधने का वाड़ा, ढेर, राशि।
अड़ान-(हिं०स्त्री०) विश्राम स्थान, पड़ाव।
अड़ाना-(हिं०क्रि०) रोकना, टिकाना,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

टेक लगाना, फँसाना; (पुं०) टेक, रोक।
अड़ानी-(हिं०पुं०) रोकने का साधन,
अड़ार-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, लकड़ी की दूकान।
अड़ियल-(हिं०वि०) अड़कर जानेवाला, हठी।
अड़िया-(हिं०पुं०) साधुओं की टेककर बैठने की कुबड़ी।
अड़ी-(हिं०स्त्री०) रोक, हठ; (वि०) ठहरी हुई, रुकी हुई।
अडोल-(हिं०वि०) न डोलने वाला,
अड़ोसपड़ोस-(हिं०पुं०) आस पास, समीप।
अड्डन-(सं०नपुं०) ढाल।
अड्डा-(हिं०पुं०) डेरा, दुष्टों के इकट्ठा होने का स्थान, पक्षियों के बैठने का स्थान।
अढ़तिया-(हिं०पुं०) आढ़त का काम करनेवाला व्यापारी।
अढ़न-(हिं०स्त्री०) शिक्षा, उपदेश, वार्ता।
अढ़ाई-(हिं०वि०) पाँच का आधा।
अढ़िया-(हिं०स्त्री०) गारा ढोने की कढैया।
अढ़ुक-(हिं०पुं०) चोट, ठोंकर।
अढ़ूकना-(हिं०क्रि०) ठोंकर लगाना, टेकना।
अढ़ूकि-(हिं०क्रि०वि०) आश्रय लेता हुआ।
अढ़ैया-(हिं०पुं०) अढ़ाई सेर की तौल,
अणि-(सं०पुं०,स्त्री०) पहिये की धुरी की कील, आरा, अग्रभाग, सीमा, किनारा।
अणिमा-(सं०पुं०) अति सूक्ष्म परिमाण
अणी-(हिं०अव्य०) एजी, अरी, ओजी।
अणीय-(सं०वि०) अति सूक्ष्म,
अणु-(सं०वि०) सूक्ष्म, छोटा, थोड़ा; (पुं०) अतिसूक्ष्म कण; (वि०) अल्प परिमाण का।
अणुवीक्षण-(सं० नपुं०) सूक्ष्म दर्शक
अतंक-(सं०पुं०) आतंक, कष्ट।
अतंत-देखो अत्यन्त।
अतः-(सं०अव्य०) इस कारण से, इसलिये।
अतएव-(सं०अव्य०) इस कारण से।
अतट-(सं०पुं०) टीला, ऊँचा स्थान,
अतथ्य-(सं०वि०) झूठा, मिथ्या, अन्यथा, असमान।
अतनु-(सं०पुं०) विना देह का, अशरीर
अतन्त्र-(सं०वि०) बिना कारण का।
अतन्द्र-(सं०वि०) निद्रा रहित, सचेत,
अतप-(सं०वि०) शान्त, ठंढा।
अतप्त-(सं०वि०) विना तपाया हुआ, ठंढा।
अतबान-(हिं०वि०) अत्यधिक, अत्यन्त
अतर-(हिं०पुं०) पुष्पनिर्यास, फूलों का सुगन्धित सत्व।
अतरसों-(हिं०क्रि०वि०) परसों के आगे का या बाद का दिन,
अतरिख-(हिं०पुं०) अन्तरिक्ष, वायुमण्डल।
अतर्क-(सं०वि०) अहेतुक, बिना तर्क का।
अतल-(सं०वि०) बिना तल का, बहुत गंहरा, अतलस्पर्श, अतलस्पर्शी-(सं० वि०) बहुत गहरा, अगाध।
अतस्-(अतः)-(सं०अव्य०) इस कारणसे
अतसी-(सं०स्त्री०) अलसी, तीसी।
अति-(सं०अव्य०) अतिशय, अधिक, प्रकर्षता, असम्भावना, अर्थ में यह शब्द प्रयोग होता है।
अतिकथा-(सं०स्त्री०) व्यर्थ का प्रलाप,
अतिकान्त-(सं०वि०) अति प्रिय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतिकाय-(सं०वि०) दीर्घकाय, स्थूल,
अतिकारक-(सं०वि०) निर्दयी ।
अतिकाल-(सं०पुं०) कुसमय, विलम्ब,
अतिकृत-(सं०वि०) मर्यादा को उल्लंघन करके किया हुआ ।
अतिक्रम, अतिक्रमण-(सं० नपुं०) उल्लंघन ।
अतिक्रान्त-(सं०वि०) लाँघा हुआ,
अतिग्राह-(सं०पुं०) मगर, घड़ियाल,
अतिघ-(सं०पुं०) शस्त्र अस्त्र, क्रोध ।
अतिचमू-(सं०वि०) सेनाको जीतनेवाला
अतिचार-(सं०पुं०) व्यतिक्रम ।
अतिजन-(सं०वि०) निर्जन, जनशून्य ।
अतिजव-(सं०वि०) बहुत तीव्र चलने वाला, (नपुं०) वेगयुक्त गति।
अतिजीर्ण-(सं०वि०) बहुत पुराना ।
अतितत-(सं०वि०) बहुत फैला हुआ।
अतितपस्वी-(सं०पुं०) बड़ी तपस्या करनेवाला ।
अतितृष्णा-(सं०स्त्री०) बड़ी प्यास ।
अतिथि-(सं०पुं०) अभ्यागत, पाहुन, **अतिथिपरिचर्या-अतिथिपूजा**- अतिथि सत्कार, अतिथि का आदर ।
अतिबरबै-(हिं०पुं०) हिन्दी का एक छन्द ।
अतिबल-(सं०वि०) बड़ा बलवान् ।
अतिबालक-(सं०पुं०) छोटा सा बच्चा।
अतिबाहु-(सं०पुं०) अद्वितीय बाहुबल का मनुष्य ।
अतिमर्याद-(सं० अव्य०) मर्यादा से बाहर; (वि०) अतिशय ।
अतिमात्र-(सं०वि०) प्रमाण से अधिक,
अतिमान-(सं०पुं०) वृथा का अभिमान; (वि०) आवश्यकता से अधिक ।
अतिमुक्त-(सं०वि०) मुक्ति प्राप्त किया हुआ ।
अतिमृत्यु-(सं०पुं०) महामारी ।
अतिरक्त-(सं०वि०) तीव्र लालरंग का।
अतिरथ-(सं०पुं०) बड़ा योद्धा,।
अतिरिक्त-सं०वि०) अधिक, श्रेष्ठ, भिन्न ।
अतिरेक-(सं०पुं०) विशेषता, अधिकता,
अतिरो (लो) मश-(सं०वि०) अत्यन्त रोवों से युक्त ।
अतिवेला-(सं०स्त्री०) विलम्ब, असमय
अतिव्याप्त-(सं०वि०) सब स्थान में व्याप्त ।
अतिशय-(सं०पुं०) अधिकता, बहुतायत
अतिशयोक्ति-(सं०स्त्री०) बहुत बढ़ाकर कही हुई बात ।
अतिशूद्र-(सं०पुं०) अन्त्यज ।
अतिशोभन-(सं०वि०) बहुत सुन्दर ।
अतिसन्धान-(सं०नपुं०) विश्वासघात,
अतिसन्धित-सं०वि०) ठगा हुआ ।
अतिसर्ग-(सं०पुं०) उत्सर्ग, दान ।
अतिसार-(सं०पुं०) उदर का एक रोग जिसमें आँव तथा रुधिर मिला हुआ शौच होता है ।
अतिस्वप्न-(सं०पुं०) अधिक नींद आना
अतीक्ष्ण-(सं०वि०) जो तीव्र न हो ।
अतीत-(सं०वि०) अतिक्रान्त, बीता हुआ, **अतीतना**-(हिं०क्रि०) बीतना,
अतीथ-(हिं०पुं०) पाहुन, अतिथि ।
अतीन्द्रिय-(सं०वि०) अगोचर, जिसका ज्ञान इन्द्रियों के द्वारा न हो सके ।
अतीव-(सं० अव्य०) अतिशय, अत्यन्त
अतीव्र-(सं०वि०) जो तीव्र न हो ।
अतुंग-(सं० वि०) जो ऊँचा न हो, बौना ।
अतुराई-(हिं०स्त्री०) चंचलता ।
अतुल-(वि०) अनुपम, बहुत अधिक, असीम । **अतुलनीय**-(सं०वि०) अद्वितीय, अपरिमित,। **अतुलित**-(सं०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वि०) अपरिमित, तुलना रहित, असंख्य
अतुल्य-(सं०वि०) अनुपम, असदृश।
अतुष-(सं० वि०) बिना भूसे या छिलके का।
अतुष्टि-(सं० स्त्री०) असन्तोष, लालच
अतूथ-(हिं०वि०) बहुत ऊँचा, अपूर्व।
अतूल-(हिं० वि०) अतुल्य, अनुपम।
अतृप्त-(सं०वि०) असन्तुष्ट।
अतृष्ण-(सं०वि०) बिना तृष्णा या लालसा का; **अतृष्णा**-(सं०स्त्री०) लालसा का अभाव।
अतेज-(सं०वि०) बिना चमका का, धूंधला।
अतोल-(हिं०वि०) बिना तौल का, अनोखा।
अतोषणीय-(सं०वि०) सन्तुष्ट न होने योग्य।
अतौल-(हिं०वि०) बेतौल, बिना तौलका
अत्यग्नि(सं०पुं०) क्षुधा का अधिक लगना।
अत्यद्भुत-(सं०वि०) बड़ा अनोखा।
अत्यन्त-(सं०नपुं०) बहुतायत; (वि०) अधिक, बहुत;
अत्यय-(सं०पुं०) अभाव, नाश, दोष।
अत्यर्थ-(सं०नपुं०) अतिशय, बहुतायत; (अव्य०) बहुतायत से।
अत्यल्प-(सं०पुं०) बहुत थोड़ा, बहुत कम
अत्याचार-(सं०पुं०) अन्याय, बुरा आचरण।
अत्युक्त-(सं० वि०) बहुत बढ़कर कहा हुआ। **अत्युक्ति**-(सं०स्त्री०) बहुत बढ़कर वर्णन करने की रीति।
अत्र-(सं०अव्य०) इस विषय में, इस स्थान में, यहाँ पर, यहां।
अत्रप-(सं०वि०) निर्लज्ज।
अत्वरा-(सं०स्त्री०) शीघ्रता का अभाव।
अथ-(सं० अव्य०) अब, इस समय, आरम्भ में।
अथऊ-(हिं०पुं०) वह भोजन जो सन्ध्या होने से पहिले किया जाय।
अथक-(हिं०वि०) नथकनेवाला, परिश्रमी
अथच-(सं०अव्य०) फिर, और भी।
अथमना-(हिं०क्रि०) न रुकना, न ठहरना
अथरा-(हिं०पुं०) मिट्टी की चौड़ी नाँद।
अथरी-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का खुले मुँह का छोटा पात्र।
अथर्ववेद-(सं०पुं०) चतुर्थ वेद जो ब्रह्मा के उत्तर मुख से निकला था।
अथवना-(हिं०क्रि०) अस्त होना, डूबना
अथवा-(सं०अव्य०) किंवा, या, पक्षान्तरमें
अथाना-(हिं०क्रि०) अस्त होना, डूबना, गहराई नापना।
अथापि-(सं०अव्य०) अब भी, इस तरह
अथाह-(हिं०वि०) अपार, अनन्त, अतिगूढ़, अगाध।
अथिर-(हिं०वि०) अस्थिर, चलायमान
अथोर-(हिं०वि०) थोड़ा नहीं, अधिक।
अदंक-(हिं०पुं०) आतंक, भय, डर।
अदंड-(हिं०वि०) जो दण्ड के योग्य न हो।
अदक्ष-(सं०वि०) जो निपुण न हो।
अदक्षिण-(सं०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, वायां, अचतुर, गँवार।
अदग-(हिं०वि०) निरपराध, स्वच्छ।
अदग्ध-(सं०वि०) बिना जलाया हुआ,
अदण्ड्य-(सं०वि०) जो दण्ड के योग्य न हो।
अदन-(सं०नपुं०) भोजन, भक्षणीय पदार्थ।
अदनीय-(सं०वि०) भोजन करने योग्य
अदबदाकर-(हिं०क्रि०वि०) हठ से टेक करके।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अदभ्र-(सं०वि०) प्रचुर, अपार ।
अदय-(सं०वि०)दया रहित, निष्ठुर ।
अदरक-(हिं०पुं०) आर्द्रक, अदरख ।
अदराना-(हिं०क्रि०)इतराना, अभिमानी बनना ।
अदर्शन-(सं०नपुं०)लोप,असावधानी; (वि०) अगोचर ।
अदलबदल-(हिं०पुं०) उलटफेर, हेरफेर
अदली-(हिं०वि०) न्यायी, पत्रहीन ।
अदवाइन, अदवान-(हिं०स्त्री०) खाटकी ओनचन, ।
अदहन-(हिं०पुं०) पानी जो चावल या दाल उबालने के लिये आँच पर रक्खा जाता है ।
अदाक्षिण्य-(सं०नपुं०) अकृपा, दयाहीनता ।
अदान्त-(सं०त्रि०) जिसकी इन्द्रियां वश में न हों, लम्पट ।
अदाय-(सं०त्रि०) पैतृक सम्पत्ति का अंश न पाने योग्य ।
अदार-(सं०पुं०) पत्नी रहित ।
अदावें-(हिं० पुं०) कठिनता, धोखा ।
अदिन-(हिं०पुं०) कुसमय, बुरा दिन
अदीक्षित-(सं०वि०) जिसको दीक्षा न मिली हो ।
अदीठ-(हिं०वि०) अदृष्ट, गुप्त ।
अदीन-(सं०वि०) धनी, उदार, अनम्र, दीनता रहित, निडर ।
अदीपित-(सं०वि०) न जलाया हुआ ।
अदुंद-(हिं०वि०) बिना बाधा का, शान्त ।
अदुर्ग-(सं०वि०) जहाँ पहुँचना कठिन न हो ।
अदुर्वृत्त-(सं०वि०) शुद्ध आचरण का
अदूर-(सं०वि०) समीप का; (सं० नपुं०) सामीप्य ।
अदृढ,(सं०वि०) अस्थिर, ढीला ।
अदृश्य-(सं०वि०) अगोचर, लुप्त ।
अदृष्ट-(सं०वि०) अवीक्षित, लुप्त; (पुं०) भाग्य,
अदृष्टाक्षर-(सं०पुं०) अक्षर लिखे हुए देख न पड़े ।
अदेख-(हिं०वि०) न देखा हुआ, छिपा हुआ ।
अदेय-(सं०वि०) दान न देने योग्य,
अदेव-(सं०पुं०) निशाचर, राक्षस ।
अदेश-(सं०पुं०) अयोग्य स्थान ।
अदेस-(हिं०पुं०) आज्ञा, आदेश ।
अदेह-(सं०वि०) शरीर रहित ।
अदैव-(सं०वि०) दुर्भाग्य युक्त ।
अदोख-(हिं०पुं०) अदोष, निरपराध ।
अदोस-(हिं०पुं०) देखो अदोष ।
अद्ध-(हिं०वि०) आधा-देखो अर्ध ।
अद्धा-(हिं०वि०) आधा टुकड़ा, आधे परिमाण का । **अद्धी**-(हिं०स्त्री०) आधी दमड़ी, महीन तन्जेब ।
अद्भुत-(सं०वि०) विचित्र, विलक्षण, अनूठा ।
अद्य-(सं० अव्य०) आज, अभी, अब । **अद्यतन**-आज का, नया, **अनद्यतनभूत**-आज दिन से पहिले का काल; **अद्यापि**-(सं०अव्य०) अब भी, आज तक । **अद्यावधि**-(सं०नपुं०) आज से आरंभ होने का काल ।
अद्रव-(सं०वि०) घना, गाढ़ा
अद्रव्य-(सं०नपुं०) अयोग्य पात्र ।
अद्रि-(सं०पुं०) पर्वत, सूर्य ।
अद्विज-(सं०वि०) जो ब्राह्मण न हो ।
अद्वितीय-(सं०वि०) अकेला, अनुपम, प्रधान, विलक्षण ।
अद्वैत-(सं०नपुं०) अतुल्य, अद्वितीय ।
अधः-(सं०अव्य०)नीचे का; अधःपतन-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवनति, दुर्गति, दुर्दशा; **अधःस्थित**-नीचे खड़ा हुआ।

अध-(हिं० अव्य०) अर्ध, आधा, अनेक शब्दों में उपसर्ग की तरह प्रयोग है, यथा-अधखिला, अधमरा, इत्यादि।

अधघट-(हिं०वि०) जिसका अर्थ पूर्ण रूप से प्रगट न हो।

अधजर-(हिं०वि०) आधा जला हुआ।

अधन-(सं०वि०) धनहीन, निर्धन, कंगाल

अधनिया-(हिं० वि०) आध आने या दो पैसे का।

अधन्ना-(हिं०पुं०) आध आने की मुद्रा।

अधन्य-(सं०पुं०) हतभाग्य, अभागा।

अधपई-(हिं०स्त्री०) दो छटाँक या आधे पाव की बाँट।

अधम-(सं०वि०) खोंटा, नीच। **अधमई**-(हिं०स्त्री०) बुराई, नीचता।

अधमर्मा-(सं०वि०) ऋणी।

अधमाचार-(सं०वि०) बुरा व्यवहार।

अधमाधम-(सं०त्रि०) बुरे से बुरा।

अधमुआ-(हिं०वि०) अधमरा।

अधमुख-(हिं०वि०) अधोमुख, औंधा।

अधर-(हिं०पुं०) नीचे का ओष्ठ; (वि०) नीचे को झुका हुआ, नीच, बुरा,

अधरज-(हिं०स्त्री०) ओंठों पर चढ़ी हुई पान की लाली।

अधरम-(हिं०पुं०) देखो अधर्म।

अधरीकृत, अधरीभूत-(सं० वि०) हराया हुआ।

अधरोंधा-(हिं०वि०) आधा खाया हुआ

अधरोष्ठ-(सं०पुं०) नीचे का होंठ।

अधर्म-(सं०पुं०) श्रुति स्मृति विरूद्ध आचरण, अन्याय, पातक।

अधर्मिष्ठ-(सं०वि०) महपापी, अधर्मशील। **अधर्मी**-(हिं०पुं०) अधर्मात्मा

अधसेरा, असेरा-(हिं०पुं०) आध सेर का बटखरा।

अधस्तल-(सं० नपुं०) किसी वस्तु के नीचे का स्थान।

अधार-(हिं०पुं०) देखो आधार।

अधारिया-(हिं०पुं०) बैलगाड़ी का वह स्थान जहाँ पर हाँकने वाला बैठता है।

अधारी-(हिं०स्त्री०) आधार, आश्रय, साधुओं का टेकने का पतला पीढ़ा जो डंडे के ऊपर जड़ा होता है, यात्रा की सामग्री रखने का झोला; (वि०) आश्रय देनेवाली।

अधार्य-(सं०त्रि०) जो धारण न किया जा सके।

अधावट, अधवट-(हिं०वि०) जो (दूध) खौलाकर आधा गाढा हो जावे।

अधि-संस्कृत का शब्द जो "ऊपर, उस और, अधिक तथा प्रधान"-अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयोग होता है।

अधिक-(सं०वि०) अतिरिक्त, प्रधान, विशेष, अनेक; **अधिकतम**-(सं० वि०) सबसे अधिक। **अधिकतर**-(सं० वि०) दो पदार्थों में से एक से अधिक।

अधिकदन्त-(सं० पुं०) एकके ऊपर दूसरा चढ़ा हूआ दाँत।

अधिक मास-(सं०पुं०) मलमास, लवन का महीना।

अधिकरण-(सं०नपुं०) आधार, सहारा, व्याकारण में कर्म और क्रिया का आधार जो अधिकरण कारक कहलाता है।

अधिकर्म-(सं०अव्य०) बड़ा काम।

अधिकांग-(हिं०वि०) किसी अङ्ग का अधिक होना।

अध्धकांश-(सं०पुं०) अधिक भाग या हिस्सा; (क्रि०वि०) प्रायः, बहुधा।

अधिकाई-(हिं०स्त्री०) अधिकता, महिमा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिकाधिक-(सं०वि०) अधिकसे अधिक
अधिकार-(सं०पुं०) आधिपत्य, कार्य का भार, पद, विषय, प्रमाण, चेष्टा, प्राप्ति योग्यता। **अधिकारी**-(सं० पुं०) प्रभु, स्वामी, उपयुक्त पात्र।
अधिकार्थ-(सं०वि०) एक से अधिक अर्थ वाला।
अधिकृत-(सं०पुं०) अध्यक्ष; (वि०) नियुक्त, अधिकार दिया हुआ।
अधिगत-(सं०वि०) विदित, स्वीकृत।
अधिगम-(सं०पुं०) ज्ञान, प्राप्ति, लाभ,
अधिजनन-(सं०नपुं०) उत्पत्ति।
अधित्यका-(सं०स्त्री०) पर्वत के ऊपर की समतल भूमि।
अधिदेव-(सं०पुं०) परमेश्वर।
अधिनाथ, अधिनायक-(सं०पुं०) प्रभु, मुखिया।
अधिप-(सं०पुं०) राजा, स्वामी, ईश्वर
अधिपति-(सं०पुं०) प्रभु, स्वामी, पति, नायक; **-अधिभौतिक, आधिभौतिक**, (सं०वि०) प्राकृतिक। **अधिमांस**-(सं०वि०) वह रोग जिसमें शरीर में कहीं पर का मांस बढ़ जाता है।
अधियार-(हिं०पुं०) किसी सम्पत्ति का आधा भाग।
अधिरथ-(सं०पुं०) रथ पर चढ़ा हुआ योद्धा, सारथी।
अधिराज-(सं०पुं०) सम्राट्।
अधिराज्य-(सं०नपुं०) साम्राज्य।
अधिरूढ-(सं०वि०) चढ़ा हुआ,
अधिरोपण-(सं० नपुं०) ऊपर को चढ़ाना या उठाना।
अधिलोक-(सं०पुं०) संसार।
अधिवाचन-(सं०पुं०) निर्वाचन, चुनाव
अधिवास-(सं०पुं०) ठहरने का स्थान निवास, सुगन्ध, दूसरे के घर में रहना।
अधिवासित-(सं०वि०) सुगन्धित।
अधिवेशन-(सं०नपुं०) संघटन।
अधिश्रित-(सं०वि०) आग पर चढ़ाया हुआ।
अधिश्री-(सं० वि०) अत्यन्त शोभा
अधिष्ठाता-(सं० वि०) अध्यक्ष, मुखिया, रक्षक, राजा।
अधिष्ठान-(सं०नपुं०) रहने का स्थान, नगर, आश्रय, आधार, अधिकार।
अधिष्ठित-(सं०वि०) नियुक्त, स्थापित, निर्वाचित।
अधीत-(सं०वि०) अध्ययन किया हुआ।
अधीन-(सं०वि०) वशीभूत, आश्रित।
अधीर-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल, असन्तुष्ट, व्याकुल।
अधीश, अधीश्वर-(सं०पुं०) अधिपति, प्रभु, अध्यक्ष, राजाधिराज।
अधुत, अधूत-(सं०वि०) बिना हिलाया हुआ।
अधुना-(सं०अव्य०) अभी, आजकल, इन दोनों।
अधूत-(देखो अधुत) निडर, धृष्ट, ढीठ।
अधूरा-(हिं०वि०) अपूर्ण, असमाप्त, आधा, अशिक्षित।
अधेड़-(हिं०वि०) उतरतीयुवावस्थाका।
अधेला-(हिं०पुं०) आधे पैसे की मुद्रा।
अधेली-(हिं०स्त्री०) आठ आने मूल्य की चाँदी की मुद्रा, अठन्नी।
अधैर्य-(सं०वि०) चंचलता, व्याकुलता,
अधोगत-(सं०वि०) नीचे की ओर पहुँचा हुआ। **अधोगति**-दुर्दशा। **अधोगमन**-(सं०नपुं०) अवनति, पतन, दुर्दशा। **अधोगामी**-(सं०वि०) नीचे की जाने वाला, नरकगामी।
अधोरध-(हिं०क्रि०वि०) ऊपर नीचे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधालम्ब-(सं०पुं०) साहुल, पानी की गहराई नापने का यन्त्र।
अधोलोक-(सं० पुं०) पाताल। **अधोवायु**-(सं०पुं०) अपानवायु।
अधोविन्दु-(सं०पुं०) आकाश मे का वह स्थान जो हमारे पैर के ठीक नीचे है
अध्यक्ष-(सं० त्रि०) प्रधान कार्यकर्ता, अधिष्टाता, अधिकारी, सम्पादक।
अध्ययन-(सं नपुं०) पाठन, पाठन।
अध्ययनीय-(सं०वि०) पढ़ने योग्य।
अध्यवसाय-(सं०नपुं०) उत्साह, निश्चय
अध्यवसायी-(सं० वि०) उद्यमशील, उत्साही।
अध्यात्म-(सं०नपुं०) परब्रह्म, परमेश्वर; (वि०) आत्मा या ब्रह्म सम्बन्धी।
अध्यापक-(सं०पुं०) शिक्षक, गुरु, आचार्य पढ़ाने वाला। **अध्यापकी**-(हिं०स्त्री०) अध्यापक का कार्य, पढ़ाने लिखाने का काम। **अध्यापन**-(सं०नपुं०) पढ़ाने लिखाने का कार्य।
अध्यापिका-(सं०स्त्री०) पढ़ाने लिखाने वाली स्त्री। **अध्यापित**-(सं० वि०) पढ़ाया लिखाया हुआ।
अध्याय-(सं०पुं०) ग्रन्थ विभग, सर्ग, अङ्क, परिच्छेद।
अध्यारूढ़-(सं०वि०) समारूढ़, चढ़ा हुआ
अध्यासीन-(सं०वि०) बैठा हुआ।
अध्याहार-(सं०पुं०) तर्क वितर्क, असम्पूर्ण वाक्य को संपूर्ण करनेके लिये कुछ शब्द जोड़ना।
अध्रुव-(सं०वि०) अनिश्चित, चंचल,
अध्वग-(सं०पुं०) यात्री, पथिक, ऊँट,
अध्वगामी-(सं०त्रि०) यात्रा करने वाला।
अध्वन्, अध्व-(सं० स्त्री०) पथ, भूमि, स्थान।
अध्वर-(सं०पुं०) यज्ञ।
अन्-(सं०अव्य०) निषेधार्थक अव्यय, नहीं।
अनंश-(सं०वि०) बिना टूकड़े का,
अनहिबात-(हिं०पुं०) वैधव्य, रड़ापा।
अनइस-(हिं०त्रि०) निकृष्ट, अधम।
अनकनना-(हिं०क्रि०) सुनना, छिपकर सुनना।
अनक्षर-(सं०) निन्दा, गाली; (वि०) मूर्ख।
अनख-(हिं०पुं०) क्रोध, ईर्ष्या, अन्याय।
अनखी-(हिं०वि०) कोपान्वित, क्रोधी।
अनगढ़-(हिं०वि०) भद्दा, बेडौल।
अनगन-(हिं०वि०) अगणित, बहुत।
अनगवना-(हिं०क्रि०) जानबूझ कर देर करना।
अनगिन, अनगिनत-(हिं०वि०) अनगिनतिन, असंख्य।
अनगैरी-(हिं०वि०) अपरिचित, पराया।
अनघ-(सं०त्रि०) पापशून्य, निर्मल; शुद्ध
अनघरी-(हिं०स्त्री०) कुसमय, बुरासमय
अनङ्ग-(सं०वि०पुं०) बिना शरीर का, कामदेव, मन।
अनङ्गी-(हिं०वि०) बिना शरीर का।
अनचीन्हा-(हिं०वि०) अपरिचित।
अनच्छ-(सं०वि०) जो स्वच्छ न हो।
अनजान-(हिं०वि०) अनभिज्ञ, अज्ञान।
अनजोखा-(हिं०वि०) बिना तौला हुआ
अनट-(हिं०पुं०) उपद्रव, अत्याचार,
अनडीठ-(हिं०वि०) अदृष्ट, बिना देखा हुआ।
अनत-(सं०त्रि०) सीधा, खड़ा, अभिमानी।
अनत-(हिं०क्रि०वि०) अन्यत्र।
अनतिक्रम-(सं०पुं०) सीमा से बाहर न जाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनद्यतन-(सं०वि०) जो आज का न हो, **अनद्यतन भविष्य**-आगामी आधीरात के बाद का समय। **अनद्यतनभूत**-आधीरात के पहिले का काल।

अनधिकार-(सं०पुं०) अयोग्यता, (वि०) अयोग्य, अधिकार रहित।

अनधिग-(सं०वि०) अधिकार न दिया हुआ।

अनधिगत-(सं०वि०) अज्ञात, बिना समझा बूझा हुआ।

अनधिगम्य-(सं०वि०) प्राप्त न होने योग्य।

अनध्याय(सं०पुं०) छुट्टी का दिन, जिस दिन शास्त्र के अनुसार लिखना पढ़ना निषिद्ध हो।

अनुज्ञात-(सं०वि०) असम्मत, बिना आज्ञा का।

अनुभूत-(सं०वि०) अनुभवहीन, अज्ञात

अनन्त-(सं०पुं०) नारायण, (वि०) असीम।

अनन्तर-(सं०त्रि०) बिना अवकाश का, पिछला, पीछे, उपरान्त, (क्रि०वि०) सतत।

अनन्तराशि-(सं०पुं०) वह संख्या जिसका अन्त न हो। **अनन्तरूप**-(सं०पुं०) असंख्य रूपवाला, परमेश्वर।

अनन्द-(हिं०पुं०) आनन्द।

अनन्दी-(हिं०वि०) आनन्दी।

अनन्नास-(हिं०पुं०) एक फल जो खाने में खटमीठा होता है।

अनन्य-(सं०वि०) दूसरे से सम्बन्ध न रखनेवाला, समूचा, स्वतंत्र। **अनन्यचित्त**-अपना चित्त एक ही विषय में लगाने वाला।

अनन्यभाव-(सं०वि०) केवल ईश्वर में ध्यान लगानेवाला। **अनन्यमनस्क** (सं०त्रि०) अपना ध्यान किसी एक विषय में स्थिर करने वाला। **अनन्याश्रित**-जो दूसरे के आश्रित न हो, स्वतंत्र।

अनन्वित-(सं०वि०) असम्बद्ध, पृथक्।

अनप-(सं०वि०) जल से शून्य।

अनपकार-(सं०पुं०) अपकार न करना, सीधापन, भोलापन।

अनपच-(हिं०पुं०) अपच, अजीर्ण।

अनपढ़-(हिं०वि०) अशिक्षित, बेपढ़ा।

अनपत्य-(सं० वि०) सन्तान हीन।

अनपायी-(सं०वि०) स्थिर, निश्चय।

अनपेक्ष-(सं०वि०) अपेक्षा न करने वाला, पक्षपात रहित।

अनबेध-अनबिधा-(हिं० वि०) बिना बेधा या छेद किया हुआ।

अनबोल-(हि०वि०) न बोलने वाला, मौन।

अन-भल(हिं०पुं०) बुराई, अहित।

अनभाया, अनभावता-(हिं०वि०) अप्रिय।

अनभिज्ञ-(सं०त्रि०) अपरिचित।

अनहित-(सं०वि०) बिना सम्बन्धका।

अनभीष्ट-(सं०वि०) अनिष्टकर, बुराई करनेवाला।

अनभो-(हिं०पुं०) आश्चर्य, अचम्भा, अनुभव, (वि०) अद्भुत, विचित्र।

अनमन, अनमना-(हिं०वि०) खिन्न, उदास, अस्वस्थ।

अनमापा-(हिं०वि०) बिना नपा हुआ।

अनिमिख-(हिं०पुं० बिना पलक गिराये, टकटकी बाँधे हुए।

अनमिल, अनमिलत,-(हिं०वि०) संबन्ध रहित, पृथक्।

अनमेल,-(हिं०वि०) बिना मिलावट का, विशुद्ध।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनमोल-(हिं०वि०) अमुल्य, अत्युत्तम सुन्दर।
अनयस-(हिं०वि०) अनुत्तम, बुरा।
अनयास-(हिं०क्रि०वि०) देखो अनायास।
अनरथ-(हिं०वि०) देखो अनर्थ।
अनरना-(हिं०क्रि०) अनादर करना।
अनरस-(हिं०पु०) रसहीनता, रुखाई, वैर, दुःख, कष्ट।
अनराता-(हिं०वि०) बिना किसी रंगसे रंगा हुआ।
अनरीति-(हिं०स्त्री०) बुरीचाल, कुरीति
अनरुचि-(हिं०स्त्री०) अरुचि, अग्निमान्द्य।
अनरूप-(हिं०वि०) कुरूप, भद्दा।
अनर्गल-(सं०वि०) प्रतिबन्ध रहित, व्यर्थ।
अनर्घ-(सं०वि०) बहुमूल्य; (पुं०) कम मूल्य का।
अनर्थ-(सं०नपुं०) प्रतिकूलता, आपत्ति, **अनर्थक**-(सं०पुं०) निरर्थक, व्यर्थ, निष्प्रयोजन।
अनर्ह-(सं०वि०) अनुपयुक्त, भद्दा, अयोग्य।
अनल-(सं०पुं०) अग्नि, वायु; **अनलचूर्ण**-बारूद।
अनलस-(सं०वि०) आलस्य रहित।
अनलेख-(हिं० वि०) जिसका वर्णन लिखा न जा सके।
अनल्प-(सं०वि०) प्रचुर, अधिक।
अनवकाश-(सं०पु०) अवकाश न होना
अनवगाह-(सं०वि०) बहुत गहरा, अथाह।
अनवच्छिन्न-(सं०वि०) संयुक्त, जुटा हुआ, **अनवच्छिन्नसंख्या**-अखण्ड राशि।
अनवट-(हिं०पुं०) चाँदी का छल्ला जिसको स्त्रियाँ पैर के अँगूठे में पहिरती हैं।
अनवधान-(सं०पुं०) असावधानी।
अनवय-(हिं०) देखो अन्वय।
अनवरत-(सं०वि०) निरन्तर, (अव्य०) सर्वदा।
अनवलम्ब-(सं० वि०) निराश्रय। **अनवलम्बन**-(सं०नपुं०) आश्रय का अभाव।
अनवसर-(सं०त्रि०) कुसमय।
अनवस्था-(सं०स्त्री०) चंचलता, आतुरता। **अनवस्थित**-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल, अशान्त।
अनवाँसना-(हिं०क्रि०) किसी नये पात्र को पहले पहिल काम में लाना।
अनवाँसा-(हिं०वि०) पहिले पहिल काम में लाया हुआ।
अनवाँसी-(हिं०स्त्री०) विस्वांसी का बीसवाँ भाग।
अनवाद-(हिं०पु०) कटु वचन।
अनशन-(सं०नपुं०) उपवास, लंघन,
अनश्वर-(सं०वि०) नष्ट न होने वाला, स्थायी, स्थिर, अटल।
अनसखरी-(हिं०वि०) केवल दूध तथा घी से संयोग से बना हुआ पक्वान्न।
अनसढ-(हिं०वि०) नीच, अधम।
अनसन-(हिं०पुं०) उपवास, अनशन।
अनसमझा-(हिं०वि०) न समझा हुआ,
अनसाना-(हिं०क्रि०) चिढ़ाना।
अनसुना-(हिं०वि०) बिना सुना हुआ।
अनसुनी करना-आनाकानी करना।
अनसूया-(सं०स्त्री०) ईर्ष्या न करना,
अनहित-(हिं०पुं०) बुराई, अपकार।
अनहितू-(हिं०वि०) हित न चाहने वाला
अनहोता-(हिं०वि०) न होनेवाला।
अनहोनी-(हिं०स्त्री०) न होने वाली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बात, (पुं०) अद्भुत घटना।
अनाकानी-(हिं०स्त्री०) जानबूझ कर टालना।
अनाकुल-(हिं०वि०) न घबड़ाया हुआ।
अनाखर-(हिं०वि०) अक्षर न पहिचाननेवाला, मूर्ख।
अनागत-(सं०वि०) न आया हुआ, अविदित, अप्राप्त।
अनाचारी-(हिं०वि०) कुकर्मी।
अनाज-(हिं०पुं०) अन्न, धान्य।
अनाजी-(हिं०वि०) अन्न का, अन्न निर्मित।
अनाड़ी-(हिं०वि०) अज्ञानी, असभ्य, मूर्ख।
अनाथ-(सं०वि०) प्रभुहीन, अशरण।
अनाथालय,अनाथाश्रम-(सं०पुं०) दीन दुखियों को रखने का स्थान पितृहीन बच्चों की रक्षा का स्थान।
अनादर-(सं०पुं०) अपमान, अप्रतिष्ठा
अनादि-(सं० पुं०) जिसका आदि न हो, ब्रह्म, परमेश्वर।
अनादृत-(सं०वि०) तिरस्कृत, अपमानित।
अनाम-(सं०वि०) बिना नाम का, अविख्यात। **अनामक**-(सं० वि०) अप्रसिद्ध, बेनाम।
अनामय-(सं०वि०) रोगरहित, आरोग्य
अनामा, अनामिका-(सं० स्त्री०) बिचली और कानी अंगुली के बीचवाली अंगुली।
अनामिष-(सं०वि०) माँसरहित, निरर्थक।
अनायास-(सं०वि०) बिना क्लेश या परिश्रम का, (अव्य०) सहज में।
अनारी-(हिं०वि०) अनारके रंग का, अनाड़ी, मूर्ख।
अनार्य-(सं०वि०) जो आर्य न हो, म्लेच्छ, असच्चरित्र, दुष्ट।
अनावश्यक-(सं०वि०) बिनाप्रयोजन का
अनावृष्टि-(सं०स्त्री०) वृष्टि का अभाव
अनाश्रय-(सं०वि०) निरवलम्ब, अनाथ, असहाय, दीन। **अनाश्रित**-(सं०वि०) आश्रयहीन, निरवलम्ब।
अनास्था-(सं०स्त्री०) अपमान, अनादर, अश्रद्धा।
अनाहत-(सं०वि०) चोट न लगा हुआ।
अनाहार-(सं०पुं०) अनशन, उपवास; (वि०) भोजन न किया हुआ, निराहार।
अनिच्छा-(सं०स्त्री०) अनभिलाष अरुचि
अनित-(हिं०वि०) अनित्य, शून्य।
अनित्य-(सं०वि०) सदा न रहनेवाला, क्षणभंगुर।
अनिन्दनीय-(सं०वि०) अनिन्द्य, निर्दोष
अनिन्दित-(सं०वि०) निन्दा न किया हुआ।
अनिप-(हिं०पु०) सेनापति, सेनानायक
अनिमिख-(हिं०वि०) टकटकी लगाया हुआ, (क्रि०वि०) बिना पलक गिराये
अनियत-(सं०वि०) अनित्य, असीम।
अनियन्त्रित-(सं०वि०) प्रतिबन्धहीन, अनिवारित, उच्छृंखल।
अनियाउ-(हिं०पुं०) देखो अन्याय।
अनियारा-(हिं०वि०) धारदार, तीक्ष्ण
अनिर्धारित-(सं०वि०) स्थिर न किया हुआ, अनिश्चित।
अनिर्भर-(सं०वि०) थोड़ा छोटा।
अनिर्वचनीय-(सं०वि०) जिसका वर्णन न किया जा सके।
अनिल-(सं०पुं०) वायु, हवा।
अनिवारित-(सं०वि०) बिना रोक का, हटाया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनिवार्य-(सं०वि०) न हटाने योग्य।
अनिवेदित-(सं०वि०) अवर्णित, अकथित।
अनिश-(सं०वि०) निरन्तर, अविरत।
अनिष्ट-(सं०नपुं०) अहित, अपकार, हानि, अमङ्गल।
अनी-(हिं०स्त्री०) नोक, कोर, खेद, ग्लानि।
अनीक-(सं०पुं०नपुं०) सेना, युद्ध, कलह (हिं०वि०) अनुत्तम, बुरा।
अनीठ-(हिं०वि०) अनिष्ट, अधम, बुरा
अनीत, अनीति-(हिं०स्त्री०) अनीति, अन्याय।
अनीश-(सं०वि०) प्रभूशून्य, अनाथ।
अनीस-(हिं०पुं०) अनीश, अनाथ।
अनु-संस्कृत का एक उपसर्ग जो 'पीछे साथ साथ, इधर उधर, सदृश, पास, साथ, तथा प्रत्येक' अर्थ में शब्दों के पहिले लगाया जाता है। **अनुकथन**-(सं०पुं०) वार्त्तालाप।
अनुकम्पा-(सं०स्त्री०) दया, कृपा, अनुग्रह।
अनुकरण-(सं०नपुं०) सदृश करना।
अनुकूल-(सं०वि०) पक्षपाती, आश्रय देनेवाला।
अनुकृति-(सं०स्त्री०) अनुकरण।
अनुक्त-(सं०वि०) न कहा हुआ।
अनुक्ति-(सं०वि०) बिना कही हुई बात
अनुक्रम-(सं०पुं०) पिछला क्रम।
अनुक्रमण-(सं०नपुं०) पीछे को चलना
अनुक्रमणिका-(सं०स्त्री०) सूचीपत्र।
अनुग-(सं० त्रि०) सेवक, अनुयायी
अनुगत-(सं०वि०) आश्रित, अधीन।
अनुगति-(सं०स्त्री०) अनुसरण।
अनुगृहीत-(सं०वि०) अनुग्रह किया हुआ कृतज्ञ।
अनुग्रह-(सं०पुं०) दया, कृपा।
अनुचर-(सं०पुं०) सहचर, भृत्य, दास।
अनुचित-(सं०वि०) अयुक्त, अकर्त्तव्य।
अनुज-(सं०पुं०) छोटा भाई। **अनुजन्मा, अनुजा**--(सं० स्त्री०) छोटी बहिन।
अनुजीवी-(सं०त्रि०) आश्रित, सेवक।
अनुकृति-(सं०स्त्री०) अनुकरण।
अनुक्त-(सं०वि०) न कहा हुआ।
अनुज्ञा-(सं०स्त्री०) आज्ञा, अनुमति।
अनुत्तर-(सं०वि०) उत्तर रहित, चुप, मौन।
अनुदिन, अनुदिवस-(सं०अव्य०) प्रतिदिन।
अनुद्यत-(सं०वि०) उद्यम हीन, आलसी
अनुद्यम-(हिं०पुं०) उद्यमहीनता।
अनुध्यान-(सं०नपुं०) पिछली चिन्ता।
अनुनय-(सं०पुं०) प्रार्थना, विनय।
अनुनासिक-(सं०वि०) नाक से बोला जानेवाला वर्ण यथा-ञ, म, ङ, ण, न।
अनुपतन-(सं० त्रि०) गिराव, अंश, टुकड़ा।
अनुपपत्ति-(सं०स्त्री०) असङ्गति, असिद्धि, अयुक्ति।
अनुपपन्न-(सं०त्रि०) अप्रबाधित, असम्भव।
अनुपम-(सं०वि०) उपमाविहीन, बहुत अच्छा।
अनुपस्थित-(सं० वि०) अविद्यमान, दूरस्थ।
अनुपात-(सं०पुं०) गणित की अनेक राशियों में सम्बन्ध दिखलाने की क्रिया, त्रैराशिक की वह क्रिया जिससे यह ज्ञात होता है कि एक राशि दूसरे से कितनी गुनी या कितने अंश की है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुपान-(सं०पुं०) औषध के साथ मिलाकर अथवा पीछे से जो वस्तु खाई या पी जावे।
अनुप्रास-(सं०पुं०)एक अलंकार जिसमें किसी वाक्य में एक ही पद अथवा एक ही अक्षर का बारंबार प्रयोग किया जाता है।
अनुभव-(सं०पुं०) प्रयोगों से प्राप्त किया हुआ ज्ञान।
अनुभवी-(सं०पुं०वि०)अनुभव प्राप्त।
अनुभूत-(सं०वि०) अनुभव द्वारा ज्ञात, उपलब्ध।
अनुमत-(सं०वि०) प्रशंसा किया हुआ, प्रिय। **अनुमति**-(सं०स्त्री०)सम्मति, आज्ञा।
अनुमान-(सं०नपुं०) न्याय में प्रत्यक्ष ज्ञान द्वारा अप्रत्यक्ष विषय का निश्चय **अनुमोदक**-(सं०वि०) स्वीकार करने वाला। **अनुमोदन**-(सं०नपुं०) स्वीकृति, समर्थन। **अनुमोदित**-(सं० वि०) सम्मति दिया हुआ, स्वीकार करने योग्य।
अनुयोग-(सं०पुं०)जिज्ञासा, पूछताछ।
अनुरक्त-(सं०वि०) प्रेमयुक्त, आसक्त।
अनुरंजक-(सं०वि०) प्रेम उत्पन्न करने वाला।
अनुरंजन-(सं०नपुं०) राग, प्रेम, प्यार।
अनुराग-(सं०पुं०)आसक्ति, प्रेम, प्रीति
अनुरूप-(सं०वि०)समान रूप का, सदृश
अनुरोध-(सं०नपुं०)अभीष्ट साधन की इच्छा, प्रेरणा, आग्रह।
अनुलोम-(सं०पुं०) अनुक्रम, ऊँचे से नीचे का क्रम, (अव्य०) क्रमानुसार
अनुवा-(हिं०पुं०)जिस स्थान पर खड़े होकर कुवें से जल निकाला जाता है।
अनुवाद-(सं०पुं०)निन्दा, भाषान्तर उल्था
अनुवृत्ति-(सं०स्त्री०) पीछे की गति, व्याकरण में किसी पूर्व सूत्र के पद का आगे के सूत्र में नियोग।
अनुशासक-(सं०पुं०)नियोजक, शिक्षक, राज्य का प्रबन्धकर्ता। **अनुशासन**-(सं०नपुं०) आदेश, शिक्षा, आज्ञा, कर्तव्यविधान।
अनुशीलन-(सं०नपुं०) मनन, विचार, चिन्तन।
अनुषंग-(सं०पुं०) संबंध, दया, पहिले वाक्य में से आगे के वाक्य में कुछ शब्द जोड़ा जाना।
अनुष्टुप्-(सं०पुं०) आठ आठ अक्षर के चार पाद का छन्द।
अनुष्ठान-(सं०नपुं०) कार्यारम्भ, शास्त्र विहित कर्म का आचरण, वांछित फल की आकांक्षा से देवता की आराधना।
अनुसन्धान-(सं०नपुं०) चिन्ता, अन्वेषण, प्रयत्न।
अनुसरण-(सं०नपुं०) अनुकरण।
अनुसार-(हिं०क्रि०वि०) समान, सदृश, अनुकूल।
अनुस्मरण-(सं०नपुं०) पुनःस्मरण।
अनुस्वार-(सं०पुं०) अनुनासिक वर्ण जो दूसरे वर्ण के साथ मिलकर उच्चारण होता है, यह अक्षर के माथे पर विन्दु लगाकर लिखा जाता है।
अनुहार-(सं०पुं०) सादृश्य, समानता, **अनुहारि, अनुहारी**-(हिं-वि०) अनुकरण करने वाला।
अनूठा-(हिं०वि०) अपूर्व, विलक्षण,।
अनूढ़-(सं०वि०) बिना व्याहा हुआ, कुवारा। **अनूढ़ा**-(सं०स्त्री०) अविवाहिता स्त्री।
अनूप-(सं०वि०) जल से परिपूर्ण;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(पुं०) वह स्थान जहाँ जल प्रचुर हो।
अनृत-(सं०नपुं०) असत्य, मिथ्या, झूठ; (वि०) जूठ, अन्यथा।
अनृशंस-(सं०वि०) दयावान्।
अनेक-(सं०वि०) एक से अधिक, बहुसंख्यक।
अनेकधा-(सं०अव्य०) प्रायः, बहुधा।
अनेकबार-(सं० अव्य०) कई बार, बारंबार।
अनेकविध-(सं० वि०) कई प्रकार का। अनेकशः-(सं०अव्य०)अनेकबार।
अनेकाक्षर-(सं० वि०) जिसमें कई एक अक्षर मिले हों।
अनेकार्थ-(सं०वि०) एक से अधिक अर्थ वाला।
अनेरा-(हिं०वि०) असत्य, झूठ, दुष्ट, क्रूर।
अनैहा-(हिं०पुं०) उपद्रव, उत्पात।
अनोकह-(सं०पुं०) वृक्ष, पादप, पेड़।
अनोखा-(हिं०वि०) अपूर्व, नया, विचित्र, सुन्दर।
अन्त-(सं०पुं०, नपुं०) नाश, मृत्यु, सीमा, समाप्ति, प्रलय।
अन्तःकरण-(सं०नपुं०) मन, विचार, बुद्धि, विवेक।
अन्तःकोष-(सं०नपुं०) भण्डार घर का भीतरी कमरा। अन्तःपट-(सं०पुं०) वस्त्र विशेष जो विवाह के समय वर तथा कन्या के बीच में रखा जाता है। अन्तःपुर-(सं०नपुं०)अन्तर्भवन
अन्तः-मलिला-(सं०स्त्री०) वह नदी जिसका जल बालू के भीतर भरा रहता है।
अन्तस्थ-(सं०वि०) अन्त का; संस्कृत व्याकरण—में य, र, ल, व, ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं।
अन्तक-(हिं०पुं०) मृत्यु, अन्त, यम; (वि०)अन्त या नाश करने वाला।
अन्तकर्म-(सं०नपुं०) नाश, अन्त्येष्टि क्रिया।
अन्तकाल-(सं०पुं०) मृत्यु, मरण।
अन्तपाल-(सं०पुं०) द्वारपाल।
अन्तर-(सं०नपुं०) भेद, व्यवधान; (वि०) अन्य, दूसरा; (क्रि०वि०) भीतर।
अन्तरङ्ग-(सं०वि०)आत्मीय, घनिष्ठ, रहस्य जानने वाला।
अन्तरजामी-(हिं०स्त्री०)देखो अंतर्यामी
अन्तरज्ञ-(सं०वि०)मर्मज्ञ, विशेषज्ञ।
अन्तरदिशा-(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच की दिशा।
अन्तरपट-(सं०पुं०) परदा, ओट।
अन्तरस्थ-(सं०पुं०)बीच में रहने वाला
अन्तरा-(सं०पुं०)अन्तर, कोना, एक दिन का अन्तर देकर आने वाला ज्वर, गीत का दूसरा पद।
अन्तरात्मा-(सं०पुं०) अन्तःकरण, जीवात्मा।
अन्तराय-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, विघ्न, बाधा।
अन्तराल-(सं०नपुं०) मध्य भाग, घेरा, रिक्त स्थान।
अन्तरिक्ष, अन्तरीक्ष-(सं०नपुं०) आकाश, शून्य स्थान, स्वर्गलोक; (वि०) अप्रगट, गुप्त।
अन्तरिख, अन्तरिछ-(हिं०पुं०) देखो अन्तरिक्ष।
अन्तरीप-(सं०पुं०) भूमि का वह नोकीला भाग जो समुद्र के जल में घुसा हो, द्वीप, टापू।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्तरे-(सं०अव्य०) मध्य में, बीच में।
अन्तर्गत-(सं०वि०) बीचवाला, गुप्त, सम्मिलित।
अन्तर्गृह-(सं०नपुं०) घर के मध्य का स्थान।
अन्तर्गृही-(सं०स्त्री०) तीर्थ स्थान के भीतर के प्रधान स्थानों की यात्रा।
अन्तर्जात-(सं०वि०) शरीर के भीतर उत्पन्न।
अन्तर्द्वार-(सं०नपुं०) घर का गुप्त द्वार।
अन्तर्धान-(सं०वि०) छिपा हुआ, अदृश्य, गुप्त।
अन्तर्भाव-(सं०पुं०) चित्त की भावना, अभिप्राय।
अन्तर्भूत-(सं०वि०) मध्यस्थित।
अन्तर्यामी-(सं०पुं०) सबके अन्तःकरण में व्याप्त परमेश्वर; (वि०) भीतर प्रवेश करने वाला।
अन्तर्लापिका-(सं०स्त्री०) वह पहेली जिसका उत्तर उसी में वर्तमान हो।
अन्तर्लीन-(सं०वि०) निमग्न, डूबा हुआ।
अन्तर्हित-(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
अन्तवासी-(सं०पुं०) शिष्य, चेला।
अन्तवेला-(सं०स्त्री०) मरण काल।
अन्तस्थ-(सं०वि०) अन्त का; (पुं०) य, र, ल, व, ये चार वर्ण अन्तस्थ कहलाते हैं।
अन्तस्सलिल-(सं०वि०) जिसके जल का प्रवाह गुप्त हो।
अन्तिम-(सं०वि०) अन्त का, पीछे का
अन्तेवासी-(सं०पुं०) शिक्षा के निमित्त गुरु के पास रहने वाला शिष्य, चांडाल।
अन्त्य-(सं०वि०) अन्तिम, छोटा।
अन्त्यकर्म-अन्त्येष्टि क्रिया। **अन्त्यज**-(सं०पुं०) शूद्र, चाण्डाल।
अन्त्याक्षर-(सं०पुं०) किसी पद या शब्द का अन्तिम अक्षर। **अन्त्याक्षरी**-(सं०स्त्री०) किसी कहे हुए श्लोक या पद्य के अन्तिम अक्षर से आरम्भ होने वाला दूसरा श्लोक।
अन्त्यानुप्रास-(सं०पुं०) एक शब्दालंकार जिसमें आदि स्वर के साथ-स्वर अनुस्वार अथवा विसर्ग संयुक्त व्यञ्जन कई बार दोहराया जावे।
अन्त्येष्टि-(सं०स्त्री०) मृत्यु के बाद दाह कर्म हो जाने पर के संस्कारों की क्रिया।
अन्त्र-(सं०पुं०) आँत, अँतड़ी।
अन्दरसा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई।
अन्दोर-(हिं०पुं०) आन्दोलन।
अन्दोलन-(सं०स्त्री०) लहरका उठना और उतार।
अन्ध-(सं०वि०) बिना आँख का, नेत्रहीन, असावधान।
अन्धकार-(सं०पुं०) तिमिर, अन्धेरा।
अन्धड़-(हिं०पुं०) आँधी, धूर से भरी हुई प्रचण्ड वायु।
अन्धपरंपरा-(हिं०स्त्री०) बिना बिचारे पुरानी प्रथा का अनुसरण करने वाला
अन्धविश्वास-(सं०पुं०) विवेक रहित विश्वास।
अन्न-(सं०पुं०) अनाज, धान्य, खाद्य पदार्थ। **अन्नकाल**-भोजन का समय।
अन्नछत्र-(सं०पुं०) भूखे कंगालों को भोजन बाँटने का स्थान। **अन्नजल**-(सं०पुं०) जीविका, खानपान।
अन्नदान-(हिं०पुं०) भोजन देना।
अन्नसत्र-(सं०नपुं०) वह स्थान जहाँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूखों और कंगालों को भोजन बाँटा जाता है, अन्नक्षेत्र ।

अन्ना-(हिं०स्त्री०) दूध पिलानेवाली धाय, दाई ।

अन्य-(सं०वि०) भिन्न, दूसरा ।

अन्यच्च-(सं०त्रि०वि०) और भी ।

अन्यचित्त-(सं०नपुं०) जिसका चित्त दूसरी ओर लगा हो ।

अन्यजात-(सं०वि०) दूसरे कुल में उत्पन्न ।

अन्यतः-(सं०क्रि०वि०) किसी दूसरे स्थान में ।

अन्यत्र-(सं०अव्य०) अन्य स्थान में ।

अन्यथा-(सं०अव्य०) अन्य प्रकार, विपरीत, उलटा ।

अन्यभृत्-(सं०स्त्री०) जिसका पालन पोषण दूसरा कोई करे, कोकिल ।

अन्यमनस्क-(सं०वि०) चंचल चित्त, उदास ।

अन्याय-(सं०पुं०) अनीति, न्याय विरुद्ध आचरण, अत्याचार ।

अन्यारा-(हिं०वि०) निराला, अनोखा ।

अन्योक्ति-(सं०स्त्री०) वह बात जिसका अर्थ साधर्म्य के विचार से दूसरे पर घटाया जावे ।

अन्योन्य-(सं०वि०) परस्पर ।

अन्वय-(सं०पुं०) वंश, संबंध, सन्तान, पद्य के शब्दों को वाक्य रचना के नियमानुसार अर्थात् कर्ता, कर्म और क्रिया के क्रम में रखना, अनुकलता ।

अन्वीक्षण-(सं०नपुं०) खोज, विचार ।

अन्वेषित-(सं०वि०) अनुसन्धान किया हुआ, खोजा हुआ ।

अन्हवाना-(हिं०क्रि०) स्नान कराना ।

अन्हाना-(हिं०क्रि०) स्नान करना ।

अप्-(सं०स्त्री०) जल, पानी, अन्तरिक्ष ।

अप-(सं०अव्य०) उपसर्ग की तरह यह शब्द "निषेध, अनादर, त्याग, वियोग, बुरा, अधिक, तथा विरोध" अर्थ में व्यवहार होता है (हिं०सर्व०) 'आप' शब्द का संक्षेप रूप यथा-अपस्वारथी इ० । अपकरण-(सं०नपुं०) दुराचार ।

अपकर्ष-(सं०पुं०) घटाव, अपमान, निरादर, नीचे को खींचना ।

अपकाजी-(हिं०वि०) अपस्वार्थी ।

अपकार-(सं०पुं०) अनिष्ट, अहित ।

अपकीरति-(हिं०स्त्री०), अपकीर्ति-(सं०स्त्री०) अपयश, निन्दा, अयश ।

अपक्रम-(सं०पुं०) व्यतिक्रम ।

अपगत-(सं०वि०) भागा हुआ, मृत ।

अपगमन-(सं०नपुं०) अपसरण, भाग जाना ।

अपघात-(सं०पुं०) धोखा, अपमृत्यु आत्महत्या ।

अपच-(सं०पुं०) अजीर्ण ।

अपचरित-(सं०नपुं०) बुरा आचरण ।

अपचाल-(हिं०पुं०) कुचाल, खोटाई ।

अपजस-(हिं०पुं०) अपयश, दुर्नाम ।

अपटन-(हिं०पुं०) उपटन ।

अपटु-(सं०वि०) जो कार्यकुशल न हो ।

अपठ-(हिं०वि०) निरक्षर, अपढ़,

अपडर-(हिं०पुं०) भय, शंका ।

अपड़ाना-(हिं०क्रि०) राढ करना, झगड़ना ।

अपढ-(हिं०वि०) अशिक्षित ।

अपण्डित-(सं०वि०) जो पण्डित न हो, मूर्ख ।

अपत-(हिं०वि०) पत्रहीन, अधम, नीच, निर्लज्ज ।

अपत्र-(सं०पुं०) बिना पंख का, बिना पत्तेका ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपथ-(सं०नपुं०) कुमार्ग, कुपथ।
अपथ्य-(सं०नपुं०) अहितकर, स्वास्थ्य का नाश करने वाला।
अपदिष्ट-(सं०वि०) प्रयुक्त, कहा हुआ।
अपदेखा-(हिं०वि०) स्वार्थी, घमण्डी।
अपदेश-(सं०पुं०) निमित्त, लक्ष्य, बहाना।
अपन-(हिं०सर्व०) अपना, हम।
अपनयौ-(हिं०पुं०) आत्मीयता, अपकार, अहंकार।
अपनय-(सं०पुं०) बुरी नीति, खण्डन।
अपना-(हिं०सर्व०) आत्मीय, स्वकीय।
अपनाना-(हिं०क्रि०) अपने पक्ष में लाना, अपने अनुकूल करना।
अपनाम-(हिं०पुं०) दुर्नाम, अपयश।
अपनायत-(हिं०स्त्री०) आत्मीयता।
अपभ्रंश-(सं०पुं०) बिगाड़, विकृति, बिगड़ा हुआ शब्द; (वि०) बिगड़ा हुआ।
अपमान-(सं०पुं०) अनादर, तिरस्कार, अवज्ञा।
अपमार्ग-(सं०पुं०) कुपथ, कुमार्ग।
अपमृत्यु-(सं०पुं०) अस्वाभाविक मृत्यु।
अपयश-(सं०नपुं०) अपकीर्ति, लाञ्छन।
अपरंच-(सं०अव्य०) फिर भी, तौभी।
अपरम्पार-(हिं०वि०) अपार, असीम।
अपर-(सं०वि०) पहिला, दूसरा, पिछला; **अपरछन**-(हिं०वि०) जो ढपा या छिपा न हो, गुप्त।
अपरबल-(सं०वि०) बलवान्।
अपरलोक-(सं०पुं०) स्वर्ग।
अपरवश-(हिं०वि०) पराधीन।
अपरस-(हिं०वि०) अस्पृश्य, जो छूने योग्य न हो।
अपराजिता-(सं०स्त्री०) दुर्गा, कोयल, कौवाठोठी का फूल, एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चौदह अक्षर होते हैं।
अपराध-(सं०पुं०) पाप, भूल, दोष।
अपराह्न-(सं०पुं०) तीसरा पहर।
अपरिचित-(सं०वि०) अज्ञात, बिना जान पहिचान का।
अपरिमित-(सं०वि०) अगणित, असीम।
अपरिष्कृत-(सं०वि०) स्वच्छ न किया हुआ, मैला कुचैला।
अपरोक्ष-(सं०अव्य०) प्रत्यक्ष।
अपर्याप्त-(सं०वि०) अपूर्व, असमर्थ।
अपवर्ग-(सं०पुं०) मोक्ष, मुक्ति, निर्वाण त्याग।
अपवर्तक-(सं०त्रि०) गणित में वह संख्या जिससे अन्य दो या अधिक संख्या को भाग देने पर कुछ शेष न रहे।
अपवर्त्य-(सं०त्रि०) जिस संख्या को दूसरी किसी संख्या से भाग देने पर कुछ शेष न बचे;—वह उस संख्या का अपवर्त्य कहलाता है।
अपवाद-(सं०पुं०) निन्दा, विरोध, अपकीर्ति, मिथ्या वार्ता।
अपवादी-(सं०पुं०) विरोधी, बुराई करने वाला।
अपवित्र-(सं०वि०) अशुद्ध, दूषित, मलिन।
अपव्यय-(सं०पुं०) अपरिमित व्यय, दुष्कर्म में व्यय।
अपशकुन-(सं०पुं०) बुरा सगुन, कुसगुन
अपशब्द-(सं०पुं०) अपभ्रंश शब्द, अर्थ हीन शब्द, कुवाच्य, अपान वायु।
अपसगुन-(हिं०पुं०) अपशकुन, असगुन
अपसना-(हिं० क्रि०) भाग जाना, चल देना।
अपसव्य-(सं०नपुं०) देह का दहिना भाग, दक्षिण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपसौन-(हिं० पुं०) अपशकुन, बुरा सगुन।
अपस्मार-(सं० पुं०) मिरगी रोग।
अपस्वार्थी-(हिं०वि०) अपना स्वार्थ साधने वाला।
अपहरना-(हिं०क्रि०) चोराना, लूटना।
अपहर्ता-(सं०पु०) चोर, लुटेरा, छिपाने वाला।
अपहृत-(सं०वि०) चुराया हुआ, छीना हुआ।
अपह्नुति-(सं०स्त्री०) छिपाव, बहाना, वह अर्थालङ्कार जिसमें प्रकृत पदार्थ का निषेध करके उस स्थान में वैसा ही दूसरा कोई पदार्थ स्थापित किया जाता है।
अपा-(हिं०स्त्री०) अभिमान, अहङ्कार।
अपाङ्ग-(सं०पुं०) आँख का कोना, कटाक्ष; (वि०) अङ्गहीन।
अपांग-(सं०पुं०) नेत्र का कोना, **अपाङ्ग दर्शन**-कटाक्ष।
अपात्र-(सं०वि०) असमर्थ, कुपात्र, मूर्ख।
अपादान-(सं०नपुं०) विभाग, अलगाव, व्याकरण में वह कारक जिसमें विभागादि सूचित होता है, इस कारक में पञ्चमी विभक्ति लगती है।
अपान-(सं०पुं०) गुदस्थ वायु, अधोवायु।
अपार-(सं०वि०) असीम, असंख्य, अतिशय।
अपाव-(हिं०पुं०) अन्याय, अत्याचार।
अपाहिज-(हिं०वि०) अङ्गहीन, आलसी, काम करने के अयोग्य।
अपि-(सं०अव्य०) भी, ही, अवश्य, निश्चय। **अपिच**-(सं०वि०) और भी तौभी, परंच।
अपीच-(हिं०वि०) सुन्दर, सुहावना।
अपुत्र, अपुत्रक-(सं०पुं०) पुत्रहीन, विना बेटे का, निःसन्तान।
अपुनपो-(हिं० पुं०) आत्मीयता, मेल-जोल।
अपुनीत-(सं०वि०) अपवित्र।
अपूठना-(हिं०क्रि०) नाश करना, तोड़ना, मिटाना।
अपूठा-(हिं०वि०) अपुष्ट, कच्चा, अनभिज्ञ।
अपूत-(सं०वि०) अपवित्र, अशुद्ध; (हिं० वि०) पुत्रहीन; (हिं०पुं०) अयोग्य पुत्र, कपूत।
अपूप-(सं०पुं०) गेहूँ या चावल के आटे की लिट्टी।
अपूर्ण-(सं०वि०) असमाप्त, अधरा, न्यून कम; **अपूर्ण काल**-जो उचित समय में समाप्त न हो, अधूरा; **अपूर्णभूत**-(सं० पुं०) व्याकरण में क्रिया का वह भूतकाल जिसमें क्रिया की समाप्ति नहीं दिखलाई जाती।
अपूर्व-(सं०वि०) विचित्र, निराला उत्तम, श्रेष्ठ।
अपृष्ठ-(सं०वि०) बिना पूछा हुआ।
अपेक्षा-(सं० स्त्री०) आकांक्षा, इच्छा, किसी पद का दूसरे पद से अन्वय।
अपेच्छा-(हिं०स्त्री०) अपेक्षा, आकांक्षा।
अपेय-(सं०वि०) पीने के अयोग्य।
अपेठ-(हिं० वि०) पहुँच के बाहर, जहाँ पहुँच न सके।
अप्रकट, अप्रकटित-(सं०वि०) अप्रकाशित, गुप्त।
अप्रकृत-(सं०वि०) अस्वाभाविक, कृत्रिम।
अप्रचलित-(सं०वि०) जो व्यवहार में न आवे, अप्रयुक्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अप्रच्छन्न-(सं०वि०) न छिपा हुआ,स्पष्ट
अपेच्छा-(हिं०स्त्री०) अपेक्षा,आकांक्षा।
अप्रतियोगी-(सं०वि०)अनुपम,अनोखा, जिसका कोई शत्रु न हो।
अप्रतिरूप-(सं०वि०) जिसकी आकृति का और कोई न मिले।
अप्रतिष्ठ-(सं०वि०) निष्फल,गौरवहीन
अप्रतिष्ठा-(सं०स्त्री०) अनादर, अपयश। **अप्रतिष्ठित**-(सं०वि०) अपमानित।
अप्रत्यक्ष-(सं०अव्य०) अदृश्य, अज्ञात, परोक्ष, गुप्त।
अप्रधान-(सं०वि०) गौण, सामान्य।
अप्रमत्त-(सं०वि०) सावधान।
अप्रमाण-(सं०नपुं०) विना प्रमाण का तथा असम्भव कथन।
अप्रयुक्त-(सं०वि०) व्यवहार में न लाया हुआ, अनियुक्त।
अप्रवर्तक-(सं०वि०) काम में न लगने वाला।
अप्रवीण-(सं० वि०) अज्ञान, मूर्ख।
अप्रवृत्त-(सं०वि०) काम में न लगा हुआ।
अप्रसिद्ध-(सं०वि०) जो प्रसिद्ध न हो, अज्ञात।
अप्राकृत-(सं० वि०) अस्वाभाविक, असाधारण।
अप्राचीन-(सं०वि०) जो पुराना न हो, नया, नवीन।
अप्राज्ञ-(सं०वि०) अशिक्षित, जो पढ़ा लिखा न हो।
अप्राण-(सं० वि०) प्राणहीन, मृत; **अप्राणी**-(सं० वि०) जिसमें प्राण न हो, निर्जीव।
अप्राप्त-(सं०वि०)अनुपस्थित, अलब्ध, परोक्ष।
अप्रामाणिक-(सं०वि०) प्रमाण रहित, विश्वास न करने योग्य।
अप्रिय-(सं०वि०) अनभीष्ट, अरूचिकर, अच्छा न लगने वाला।
अप्सरा-(सं०स्त्री०) स्वर्ग की वेश्या, परी, विद्याधरी, अलौकिक सुन्दरता की स्त्री।
अफरना,-(हिं०क्रि०)खूब पेट भर कर खाना, पेट फूलना, ऊब जाना।
अफल-(सं०वि०) निष्फल, व्यर्थ, शक्तिहीन।
अब-(हिं०क्रि०वि०) इस समय, अभी इस घड़ी।
अबटन-(हिं०पुं०) देखो उबटन।
अबद्ध-(सं०वि०) न बंधा हुआ।
अबर, अब्बर-(हिं० वि०) निर्बल।
अबरक-(ख)-(हिं०पुं०) एक धातु जिसमें तहें होती हैं।
अबरन-(हिं० वि०) न वर्णन करने योग्य।
अबल-(सं०वि०) दुर्बल।
अबलग-(हिं०क्रि०वि०) इस समय तक।
अबला-(सं०स्त्री०) स्त्री।
अबाधा-(सं० स्त्री०) रेखागणित में त्रिकोण के आधार का अंश; (हिं० वि०) बाधारहित।
अबाध्य-(सं०वि०) अनिवार्य, जो रोका न जा सके।
अबार-(हिं०स्त्री०) विलम्ब, देर।
अबाल-(सं०वि०) जो बालक न हो, तरुण।
अबालेन्दु-(सं०पुं०) पूर्ण चन्द्र, पूरा चन्द्रमा।
अबिरल-(हिं०वि०) देखो अविरल।
अबुद्धि-(सं० स्त्री०) ज्ञानका अभाव; (वि०) बुद्धिहीन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अबुध-(सं०पुं०) मूर्ख, गवाँर।
अबूझ-(हिं०वि०) अबोध।
अबे-(हिं० अव्य०) ओ, अरे, क्योंरे—
अबेध-(हिं०वि०)अबिद्ध, न छेदा हुआ।
अबेर-(सं०स्त्री०) विलम्ब, देर।
अबोध-(सं०वि०)अज्ञान, मूर्ख, (पुं०) मूर्खता।
अबोल-(हिं०वि०) मौन, अवाक्, चुप
अब्ज-(सं०नपुं०) जल में उत्पन्न वस्तु, पद्म, कमल; (पुं०) शंख, कपूर, चन्द्रमा।
अब्द-(सं०पुं०) मेघ, दावल, आकाश, वर्ष।
अब्धि-(सं०पुं०) सरोवर, तालाब, समुद्र।
अब्राह्मण्य-(सं०नपुं०) ब्राह्मण विरुद्ध, जो कार्य ब्राह्मण के करने योग्य न हो।
अभक्त-(सं०वि०) श्रद्धाहीन, विभाग-रहित,समूचा। अभक्ति-(सं०स्त्री०) भक्ति का अभाव, अविश्वास।
अभगत,-(हिं०पव०) अभक्त, श्रद्धाहीन
अभय-(सं०नपुं०)शांति, रक्षा; (वि०) भयशून्य, निर्भय।
अभर-(हिं०वि०) न उठाने योग्य, न ले चलने योग्य।
अभरन(हिं०पुं०) आभरण; (वि०) तिरस्कृत, अपमानित।
अभरम-(हिं०वि०) भ्रमरहित, शंकाशून्य भ्रम न करनेवाला, निडर।
अभव्य-(सं०नपुं०) अमंगल, दुर्भाग्य; (वि०)अद्भुत, अशुभ, असभ्य, नीच।
अभाऊ-(हिं०वि०) न भानेवाला, जो सुहावना न हो।
अभाग-(सं०पुं०) अंश का अभाव, भाग रहित, समूचा; (हिं० पुं०) अभाग्य, । अभागा-(हिं० वि०) जिसका भाग्य बुरा हो। अभागी-(हिं०वि०स्त्री०) भाग्यहीन।
अभाग्य-(सं०नपुं०) मन्दभाग्य।
अभाव-(सं० पुं०) सत्ता की शून्यता, अनवस्था, विरोध, दुर्भाव।
अभि-(सं०अव्य०) यह शब्द उपसर्ग की तरह नीचे लिखे अर्थों में प्रयोग होता है "और भीतर, वास्ते, लिये, से, पर, पास, सामने, समीप, अच्छी तरह।"
अभिजित् (सं०वि०) सामने होकर शत्रु को जीतने वाला।
अभिज्ञ-(सं०वि०) निपुण, कुशल, बुद्धिमान।
अभितोमुख-(सं०वि०) जिसका मुख चारो ओर रहे।
अभिद्रोह-(सं०पुं०)अपकार, अत्याचार
अभिधा-(सं०स्त्री०) कथन, नाम।
अभिधान-(सं०नपुं०) कथन, बातचीत, नाम, शब्दार्थ प्रकाशक ग्रन्थ।
अभिधावक-(सं०वि०)आक्रमण करने-वाला।
अभिधावन-(सं०नपुं०) आक्रमण,आखेट
अभिधेय-(सं०वि०) वाच्य, जिसके विषय में संकेत किया गया हो।
अभिनत-(सं०वि०) झुका हुआ।
अभिनन्दन-(सं०नपुं०) आनन्द, सन्तोष, संतुष्ट करने के लिये प्रशंसा; अभिनन्दनपत्र-किसी महान् व्यक्ति के आगमन पर सन्तोष तथा आनन्द प्रकट करने के निमित्त अर्पण किया हुआ मानपत्र।
अभिनय-(सं०पुं०) मन के भावों को प्रकाशित करनेवाली अंगों की चेष्टा, बनावटी हावभाव से किसी विषय का बनावटी यथार्थ अनुकरण करके दिखाना, सवाँग, नाटक का खेल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिनव-(सं०वि०) नवीन, नया, अनुभवहीन। अभिनव यौवन-नई जवानी।

अभिनिविष्ट-(सं०वि०) गड़ा हुआ चित्त लगाये हुए; चिन्ता से व्याकुल

अभिनिवेश-(सं०पुं०) मनोयोग, दृढ़-संकल्प, तत्परता, मृत्यु।

अभिनीत-(सं० वि०) समीप लाया हुआ, अलंकृत, उचित।

अभिनेता-(सं० पुं०) अभिनय करने वाला पुरुष। **अभिनेत्री**-(सं०स्त्री०) अभिनय दिखलाने वाली स्त्री।

अभिन्न-(सं०वि०) अपृथक, जो भिन्न न हो, सम्बद्ध, मिला हुआ, गणित में पूर्णाङ्क।

अभिप्राय-(सं०पुं०) आशय, तप्पर्य, अर्थ।

अभिप्रेत-(सं०वि०) अभिलषित, इच्छा करने योग्य।

अभिभव(सं०) पराजय,अनादर, तिरस्कार।

अभिभाषण-(सं०नपुं०)सन्मुख बोलना।

अभिभाषित-(सं०वि०) निवेदित, कहा हुआ।

अभिमत(सं०वि०) सम्मत, अभीष्ट, अभिलाषा, सम्मति।

अभिमान-(सं०पुं०) अहंकार, गर्व। **अभिमानी**-(सं० वि०) गर्व युक्त, अहंकारी।

अभिमुख-(सं० क्रि० वि०) समक्ष, सन्मुख, सामने।

अभियुक्त-(सं०वि०) आक्रमण किया हुआ, जिस पर अभियोग चलाया गया हो, प्रतिवादी। **अभियोक्ता**-(सं० पुं०) अभियोगकर्ता, वादी।

अभियोग-(सं०पुं०) किसी के किये हुए अपकार के निवारण के लिये न्यायालय में प्रार्थना, दोषारोपण। **अभियोगी**-(सं०पुं०) अभियोगकर्ता, आक्रमण करनेवाला, आग्रही।

अभिराम-(सं०वि०)सुन्दर, प्रिय, प्रसन्न, करने वाला।

अभिरुचि, अभिरुची-(सं०स्त्री०) अत्यन्त रुचि।

अभिलषित-(सं०वि०)इच्छित,वांछित।

अभिलाख-(हिं० स्त्री०) अभिलाषा, वांछा। **अभिलाखा(-षा)**-(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।

अभिलाषा-(सं०पुं०)इच्छा, मनोकामना, लोभ।

अभिवन्दन-(सं०नपुं०)प्रणाम,नमस्कार।

अभिवन्दना-(सं०स्त्री०) अभिनन्दन।

अभिवांछित-(सं०वि०)अभिलाषा किया हुआ।

अभिवाद-(सं०पुं०) प्रणाम, नमस्कार।

अभिवादक-प्रणाम करने वाला।

अभिव्यक्त-(सं०वि०) प्रकाशित, बतलाया हुआ। **अभिव्यक्ति**-(सं०स्त्री०) प्रकाशन, घोषणा।

अभिशंका-(सं०स्त्री०) भ्रम, संशय।

अभिशप्त-(सं० वि०) शाप दिया हुआ, निन्दित, अभियोग लगाया हुआ।

अभिशाप-(सं०पुं०) मिथ्यापवाद, झूठा दोष।

अभषङ्ग-(सं० पुं०) शपथ, अभिशाप, पराजय, आसक्ति, आलिङ्गन,।

अभिषिक्त-(सं०वि०) अभिषेक किया हुआ।

अभिषेक-(सं०पुं०) विधि पूर्वक सिंचन, मन्त्र से मार्जन।

अभिष्यन्दी, अभिस्यन्द-(सं०पुं०) अति वृद्धि, बहाव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अभिसंधि-(सं०स्त्री०) बंचना, षड़यन्त्र।
अभिसन्धान-(सं०नपुं०) अन्तिम आशय।
अभिसन्धि-(सं०पुं०) देखो अभिसन्धान।
अभिसर (हिं०पुं०) अनुचर, भृत्य।
अभिसरण-(सं० नपुं०) सन्मुख गमन,
अभिसरना-(हिं०क्रि०) गमन करना, जाना, निर्दिष्ट स्थान में पहुँचना।
अभिसार-(हिं०पुं०) युद्ध, आक्रमण, बल, सहाय।
अभिहत-(हिं०वि०) मारा पीटा हुआ, गणित में गुणन किया हुआ।
अभिहित-(हिं०वि०) भाषित, कहा हुआ
अभी-(हिं०क्रि०वि०) इसी समय, तुरत।
अभीक-(हिं०वि०) निर्भीक, निडर।
अभीत-(हिं०वि०) निर्भय, भय रहित।
अभीप्सित-(हिं०वि०) वांछित, इच्छा किया हुआ।
अभीर-(हिं०पुं०) ग्वाला, अहीर।
अभीरु-(हिं०वि०) निर्भय, निडर।
अभीष्ट-(हिं०वि०) वांछित, ईप्सित; (पुं०) मनोरथ।
अभुवाना-(हिं० क्रि०) अधीर होना, हाथ पैर पटकना, और सिर को धुनना
अभुक्त-(हिं०वि०) अभक्षित, व्यवहार हार में न लाया हुआ।
अभूखन-(हिं०पुं०) आभूषण।
अभूत-(सं०वि०) अविद्यमान, विलक्षण, अपूर्व, वर्तमान, प्राणहीन।
अभूतपूर्व-(हिं०वि०) पहिले न होने वाला, जो पहिले न हुआ हो।
अभेद्य-(सं०वि०) जो तोड़ा या छेदा न किया जा सके, जिसका विभाग न हो सके।
अभेरना-(हिं०क्रि०) भिड़ाना, मिलाना
अभेरा-(हिं०पुं०) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई, मुठभेड़।
अभेव-(हिं०पुं०) अभेद।
अभोग्य-(सं०वि०) न भोगने योग्य।
अभौतिक-(सं०वि०) पंचभूत से सम्बद्ध न रखने वाला।
अभ्यङ्ग-(सं०पुं०) शरीर में तेल का मर्दन, लीपना पोतना।
अभ्यंजन-(सं०नपुं०) तेल का मर्दन, आँखों में सुरमा या काजल लगाना, आभूषण।
अभ्यन्तर-(सं०नपुं०) बीच का स्थान, अन्तःकरण, हृदय; (वि०) भीतरी, मध्य का।
अभ्यर्थना-(सं०स्त्री०) सन्मुख प्रार्थना, अगवानी।
अभ्यसन-(सं०नपुं०) अभ्यास, व्यायाम।
अभ्यसनीय-(सं०वि०) अभ्यास करने योग्य।
अभ्यसित, अभ्यस्त-(सं०वि०) अभ्यास किया हुआ, निपुण, शिक्षित।
अभ्यागम-(सं०वि०) सन्मुख आया हुआ; (पुं०) अतिथि, पाहुन।
अभ्याश-(सं०पुं०) निकट, पड़ोस।
अभ्यास-(सं०पुं०) पुनरावृत्ति, साधन, अनुशीलन, स्वभाव, आवृत्ति।
अभ्युत्थान-(सं०नपुं०) किसी का आदर करने के लिये उठकर खड़े हो जाना, उठना, उद्भव, उच्चपद की प्राप्ति।
अभ्युदय-(सं०पुं०) मनोरथ की सिद्धि उन्नति, बढ़ती, आनन्द, शुभ फल, आरम्भ, दैवगति, शुभ अवसर।
अभ्र-(सं०नपुं०) अभ्रक धातु, बादल, आकाश।
अभ्रक-अबरख धातु।
अभ्रम-(सं०पुं०) सन्देह या भ्रम का न होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमङ्गल-(वि०) अशुभ,अकुशल, (पुं०) अकल्याण ।
अमन्द-(सं०वि०) तीव्र, उद्योगी, श्रेष्ठ, उत्तम ।
अमका-(हिं०पुं०) अमुक, ऐसा ।
अमचूर-(हिं०पुं०) सूखे आम की बुकनी
अमड़ा-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसमें बेर के बराबर फल लगते हैं जो खट्टे होते हैं ।
अमनिया-(हिं०वि०) शुद्ध, स्वच्छ, अछूता ।
अमनोगत-(सं०वि०) ध्यान में न लाया हुआ ।
अमनोज्ञ-(सं०वि०) चित्त को न प्रसन्न करने वाला ।
अमन्द-(सं०वि०) तीव्र,उत्तम,अधिक ।
अमर-(सं०वि०) न मरने वाला, चिर-स्थायी; (पुं०) देवता,
अमरख-(हिं०पुं०)क्रोध, रोष, अमर्ष ।
अमरपख-(हिं०पुं०) पितृपक्ष ।
अमरपद-(सं०पुं०) स्वर्ग,मोक्ष,मुक्ति ।
अमरबेल-(हि०पुं०) एक लता जो वृक्ष पर फैलती है ।
अमरलोक-(सं०पुं०) देवलोक, स्वर्ग ।
अमरवल्ली-(सं० स्त्री०) अमरबेल, आकाश बँवर ।
अमरस-(हिं०पुं०) अमावट ।
अमरसरित-(सं०स्त्री०)जाह्नवी,गङ्गा ।
अमरांगना-(सं०स्त्री०) इन्द्रपुरी की अप्सरा ।
अमरी-(हिं०स्त्री०) देवपत्नी, देवता की स्त्री ।
अमरूत, अमरूद-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसका गोल गाल फल मीठा होता है ।
अमर्ष-(सं०पुं०)क्रोध-रोष, सहनशीलता, साहस ।
अमल-(सं०वि०) निर्मल,स्वच्छ, दोष रहित ।
अमलपट्टा-(हिं०पुं०) वह अधिकारपत्र जो किसी कार्य में नियुक्त करने के लिये दिया जाता है ।
अमलबेत-(हिं०पुं०) चूक, पालक ।
अमलिन-(सं०वि०)निष्कलङ्क, निर्मल, स्वच्छ ।
अमली-(हिं०स्त्री०) इमली ।
अमहर-(हिं०पुं०) छीले हुए कच्चे आम की सुखाई हुई फांक ।
अमांस-(सं०वि०) मांसहीन, दुर्बल ।
अमांतना-(हिं०क्रि०) निमन्त्रण देना, बुला भेजना ।
अमात्य-(सं०पुं०) मन्त्री, सचिव ।
अमाननीय-(सं०वि०) जो माननीय न हो ।
अमाना-(हिं०क्रि०) पूरी तरह से भरा जाना, समाना, अटाना ।
अमानी-(हिं०वि०) अभिमान रहित, बिना गर्व का ।
अमारग-(हिं०पुं०) देखो अमार्ग ।
अमार्ग-(सं०पुं०) मार्ग का अभाव, कुमार्ग; (वि०) मार्ग रहित ।
अमार्जित-(सं०वि०) स्वच्छ न किया हुआ ।
अमावट-(हिं०स्त्री०) आम का सूखा हुआ रस जो अनेक तहों में जमाया रहता है, अमरस ।
अमावस-(हिं०स्त्री०) अमावस्या ।
अमावस्या, अमावास्या-(सं० स्त्री०) किसी महीने की कृष्णपक्ष की पंद्रहवीं तिथि ।
अमिट-(हिं०वि०) न मिटने वाला, अटल ।
अमित-(सं०वि०) असीम, अपरिमिति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमित्र-(सं०नपुं०) वैरी,शत्रु; (वि०) जिसका कोई शत्रु न हो ।
अमिय-(हिं०पुं०) अमृत । अमिय मूरि (हिं०स्त्री०) संजीवनी बूटी ।
अमिरती-(हिं०स्त्री०) देखो इमरती
अमिली-(हिं०स्त्री०) देखो इमली
अमिश्र राशि-(सं०पुं०)गणित में एक से नव तक की संख्या ।
अमिश्रित-(सं०वि०)बिना मिलावट का।
अमिष-(सं०नपुं०) संसारी सुख, अकपट, सत्य; (वि०) निश्छल ।
अमी-(हिं०पुं०) अमृत । अमीकर-(हिं०पुं०) अमृत बरसानेवाला चन्द्रमा
अमीत-(हिं०पुं०) जो मित्र न हो, शत्रु
अमुक-(सं०वि०) जब किसी व्यक्ति या पदार्थ का नाम नहीं लिया जाता तब उसके स्थान में 'अमुक' शब्द का प्रयोग होता है, कोई ।
अमुक्त-(सं०वि०) सम्बद्ध, बँधा हुआ ।
अमूढ़-(सं०वि०) बुद्धिमान् ।
अमूर्त-(सं०वि०) आकार रहित; (पुं०) परमेश्वर, आत्मा, आकाश, काल, वायु, दिशा । अमूर्ति (सं०वि०) मूर्त्तिरहित, निराकार ।
अमूल-(सं०वि०) मूल रहित, बिना जड़ का ।
अमूल्य-(सं०वि०) मूल्य रहित, बहुमूल्य, अनमोल ।
अमृत-(सं०वि०) मरणशून्य, जो मरता न हो, प्रिय; (पुं०)इन्द्र, जल, सुवर्ण, घी, दूध, अन्न, अति स्वादिष्ट पदार्थ, रोगनाशक औषधि ।
अमृताशन-(सं०पुं०) देवता ।
अमृषा-(सं०अव्य०) सचमुच, वस्तुतः ।
अमृष्य-(सं०वि०)न सहन करने योग्य ।
अमेघ-(सं०वि०) मेघ रहित ।
अमेजना-(हिं०क्रि०) मिलावट होना, मिला देना ।
अमेंठना-(हिं०क्रि०) देखो उमेठना ।
अमेध्य-(हिं०वि०) अपवित्र, अशुद्ध ।
अमोघ-(सं०वि०) अव्यर्थ, सफल ।
अमोद-(हिं०) देखो आमोद ।
अमोल-(हिं०वि०) देखो अमूल्य ।
अमोल्य-(हिं०पुं०) आम का भूमि से निकला हुआ नया पौधा ।
अमोही-(हिं०वि०) कठोर हृदय, दयाहीन ।
अमौलिक-(सं०वि०) निर्मूल, मिथ्या, झूठा ।
अम्बर-(सं०नपुं०) आकाश, वस्त्र, अभ्रक ।
अम्बा,अम्बालिका-(सं०स्त्री०) माता, मा ।
अम्बु-(सं०नपुं०) जल, पानी ।
अम्बुवाह-(सं०पुं०) पानीभरने वाला ।
अम्बुद (सं० पुं०) मेघ, बादल ।
अम्बुधर-(सं०पुं०) बादल, मेघ ।
अम्बुधि, अम्बुनिधि-(सं०पुं०) समुद्र ।
अम्भ-(सं०पुं०) जल, पानी, आकाश ।
अम्भोज-(सं०पुं०) पद्म, कमल,चन्द्रमा ।
अम्भोद-(सं०पुं०) बादल,मेघ । अम्भोधर-(सं०पुं०) मेघ, बादल, समुद्र ।
अम्मा-(हिं०स्त्री०)माँ, माता, महतारी
अम्मारी-(हिं०) देखो अम्बारी ।
अम्ल-(सं०वि०)खट्टा; (पुं०)खटाई ।
अम्लाक्त-(सं०वि०)खट्टा कियाहुआ ।
अम्लान-(सं०वि०) जो कुम्हलाया न हो, प्रफुल्ल ।
अम्हौरी-(हिं०स्त्री०)छोटी छोटी फुन्सी जो ग्रीष्म ऋतु में से शरीर में सर्वत्र होती हैं, घमौरी ।
अय-(सं०पुं०) पासा, लोहा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अय-(सं०सर्व०) यह, इसका।
अयन-(सं०नपु०) गमन, गति, सूर्य तथा चन्द्रमा का दक्षिण से उत्तर तथा दक्षिण से उत्तर की ओर गमन।
अयश-(सं०नपुं०) अपयश, अपवाद, अकीर्ति।
अयशस्कर-(सं०वि०) अपवाद जनक।
अयशस्वी, अयशी-(सं०वि०) अपवादित, दुर्नाम।
अयस्काण्ड-(सं०पुं०) लोहे की तीर।
अयस्कान्त-(सं०पुं०) चुम्बक लोहा।
अयाचक-(सं०वि०) न माँगने वाला।
अयाची-(सं०वि०) न माँगने वाला, सन्तुष्ट।
अयान-(सं०नपुं०) प्रकृति, स्वभाव।
अयि-(सं०अव्य०) क्यों! अरे! यह शब्द सम्बोधन में प्रयोग होता है।
अयुक्त-(सं०वि०) अनुचित, अयोग्य।
अयुग्म-(सं०नपुं०) विषम, ताक, (वि०) जो पूरा न हो।
अयुत-(सं०वि०) असम्बद्ध, मिला हुआ; (नपुं०) दस हजार की संख्या।
अयोगू-(सं०वि०) लोहे का काम करने वाला लोहार।
अयोग्य-(सं०वि०) जो योग्य न हो, अनुचित, अनुपयुक्त, निष्प्रयोजन।
अयोजन-(सं०नपुं०) वियोग।
अरंड-(हिं०पुं०) एरंड, रेंड, रेंडी।
अरम्भ-(हिं०पुं०) आरम्भ, कोलाहल।
अर-(हिं०पुं०) हठ, जिद।
अरइल-(हिं०वि०) ठिठकन वाला।
अरकना-(हिं०क्रि०) टक्कर खाना।
अरकला-(हिं०पुं०) अर्गला, रोक, सिकड़ी।
अरकासार-(हिं०पुं०) तालाब, सरोवर,
अरगट-(हिं०वि०) पृथक्, भिन्न, अलग।
अरघट्ट-(सं०पुं०) पानी खींचने का यन्त्र, रहट।
अरगनी-(हिं०स्त्री०) वस्त्र इत्यादि टाँगने की रस्सी या लकड़ी।
अरगल-(हिं०पुं०) देखो अर्गल।
अरघ-(हिं०पुं०) देखो अर्घ।
अरघा-(हिं०पुं०) अर्घ देने का पात्र।
अरचन-(हि०पु०) देखो अर्चन। **अचरना**-(हि०क्रि०) पूजा करना।
अरचल-(हिं०स्त्री०) अड़चन, झमेला।
अरचा-(हिं०स्त्री०) पूजा।
अरझना-(हिं०क्रि०) लिपटना, फँसना।
अरण्य-(सं०नपुं०) वन, जंगल।
अरण्यरोदन-(सं०नपु०) निरर्थक रुलाई, निष्फल बात।
अरत-(सं०वि०) मन्द, धीमा।
अरति-(सं०स्त्री०) चिन्ता, अनिच्छा।
अरतिस, अरतीस-(हि०वि०) अड़तीस ३८ की संख्या।
अरथ-(सं०वि०) रथरहित, बिना रथ का; (हिं०) अर्थ, अभिप्राय।
अरथाना-(हिं०क्रि०) अर्थ लगाना, व्याख्या करना।
अरथी-(हिं०स्त्री०) शव ले जाने की टिकठी।
अरद-(सं०वि०) दन्तहीन, पोपला।
अरदना-(हिं०क्रि०) पैर से कुचलना, रौदना।
अरदास-(हिं०स्त्री०) प्रार्थनापत्र, निवेदन
अरध-(हिं०) देखो अर्ध।
अरधंग-(हिं०पुं०) देखो अर्धाङ्ग।
अरन-(हिं०पुं०) देखो अरण्य।
अरपन-(हिं०पुं०) देखो अर्पण।
अरपना-(हिं०क्रि०) अर्पण करना।
अरब-(हिं०वि०) अर्बुद, सौ करोड़ की संख्या।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरभक-(हिं०पुं०) देखो अर्भक।
अरमणीयता-(सं०स्त्री०) अप्रियता।
अरर-(हिं०अव्य०) आश्चर्य सूचक शब्द।
अरराना-(हिं०क्रि०) शब्द के साथ गिर पड़ना, एकाएक गिर जाना, भहराना।
अरवा-(हिं०पुं०) बिना उबाले धान से निकाला हुआ चावल।
अरविन्द-(सं०स्त्री०) पद्म, कमल।
अरवी-(हिं०स्त्री०) एक कन्द विशेष जिसकी तरकारी बनाकर खाई जाती है
अरस-(सं०वि०) बिना स्वाद का, नीरस।
अरसठ-(हिं०) देखो अड़सठ।
अरसाना-(हिं०क्रि०) अलसाना, नींद लगना।
अरसीला-(हिं०वि०) आलस्य से भरा हुआ।
अरहट-(हिं०पुं०) देखो रहट।
अरहन-(हिं०पुं०) बेसन या आँटा जो तरकारी इत्यादि में डाला जाता है।
अरहर-(हिं०स्त्री०) एक द्विदल अन्न जिसकी दाल खाई जाती है।
अराजक-(सं०वि०) बिना राजा का, राजशून्य। **अराजकता**-(सं०स्त्री०) शासन का अभाव, विप्लव, अशान्ति।
अराधन-(हिं०) देखो आराधन।
अरि-(सं० पुं०) शत्रु, वैरी। **अरिघ्न**-शत्रु को नाश करनेवाला।
अरिमर्दन-(सं०वि०) शत्रु को दमन करनेवाला।
अरियाना-(हिं०क्रि०) अरे, तू, तू, कहकर बोलना।
अरिष्ट-(सं०नपुं०) अशुभ चिह्न, विपत्ति; (वि०) अशुभ, अविनाशी,
अरिहा-(सं०वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
अरी-(हिं०अव्य०) स्त्रियों के लिये सम्बोधन का शब्द।
अरीत-(हिं०स्त्री०) कुरीति, बुरी चाल।
अरु-(हिं०अव्य०) और।
अरुई-(हिं०स्त्री०) देखो अरवी।
अरुचि-(सं०स्त्री०) भोजन की अनिच्छा, घृणा।
अरुज-(सं०वि०) रोगशून्य, स्वस्थ।
अरुझना-(हिं०क्रि०) उलझना, झगड़ना।
अरुण-(सं०पुं०) लाल रंग, प्रातःकाल, तड़का।
अरुणशिखा-(सं०पुं०) कुक्कुट, मुर्गा।
अरुणिमा-(सं०स्त्री०) लाली, रक्तता।
अरुणोदय-(सं०पुं०) सूर्योदय से चार दण्ड पहिले का समय, तड़का।
अरुन-(हिं०) देखो अरुण। **अरुनचूड़**-(हिं०पुं०) कुक्कुट।
अरुनाई-(हिं०स्त्री०) अरुणाई, लालिमा।
अरुनोदय-(हिं०पुं०) देखो अरुणोदय।
अरुन्तुद-(सं०वि०) दुःखकर, मर्मवेधी।
अरूढ़-(हिं०वि०) देखो आरूढ़।
अरूझना-(हिं०क्रि०) झगड़ना।
अरूपक-(सं०वि०) अलंकार रहित।
अरे-(सं० अव्य०) ए! ओ! देख! आश्चर्य सूचक अव्यय, नीच व्यक्ति के लिये संबोधन होता है।
अरेरना-(हिं०क्रि०) रगड़ना, घिसना।
अरेरे-(सं०अव्य०) आश्चर्य सूचक अव्यय।
अरोचक-(सं०वि०) अरुचिकर।
अरोहना-(हिं०क्रि०) चढ़ना। **अरोही** (हिं०पुं०) सवार।
अर्क-(सं०पुं०) सूर्य, क्वाथ, काढा, रविवार, (हिं०) अरक, रस।
अर्गल-(सं०नपुं०) किवाड़ के पीछे लगाने का डंडा, अगरी, व्योंड़ा।
अर्गला-(सं०स्त्री०) किवाड़ बन्द करके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसके पीछे अड़ाने की लकड़ी, ब्योंड़ा, अगरी।

अर्घ-(सं०पुं०) जलदान, भेंट, हाथ धोने के लिये जल देना।

अर्घा-(हिं०पुं०) अर्घ देने का पात्र, जलधरी।

अर्घ्य-(सं०वि०) पूजनीय, मूल्यवान्, उपहार देने योग्य; (पुं०) पूजा करने के लिये उपकरण।

अर्चक-(सं०वि०) पूजक, पूजा करनेवाला

अर्चन-(सं०नपुं०) पूजन, पूजा, सत्कार।

अर्चि-(सं०स्त्री०) अग्नि की लपट, चमक

अर्चित-(सं०वि०) पूजित, आदर किया हुआ।

अर्जन-(सं०नपुं०) उपार्जन, धरोहर।

अर्थ-(सं०पुं०) अभिप्राय, प्रयोजन, धन, निमित्त, फल, अभिलाषा, वस्तु; **अर्थ-दण्ड** (सं०पुं०) वह धन जो अपराधी से दण्ड के रुप में लिया जावे।

अर्थना-(सं०स्त्री०) भिक्षा, भीख।

अर्थपति-(सं०पुं०) अधीश्वर, कुबेर, **अर्थपिशाच**-(सं०पुं०) बहुत बड़ा कृपण। **अर्थभावना- अर्थमन्त्री**-(सं० पुं०) देखो अर्थसचिव। **अर्थलोभ**-(सं०पुं०) धन की अभिलाषा।

अर्थशास्त्र-(सं०नपुं०) अर्थनीति विषयक शास्त्र। **अर्थसचिव**-(सं० पुं०) राज्य के आर्थिक विषयों का देखभाल करनेवाला मन्त्री।

अर्थात्-(सं०अव्य०) यह आशय है, वस्तुतः।

अर्थाना-(हिं० क्रि०) अर्थ लगाना, समझाना।

अर्थानुवाद-(सं०पुं०) अर्थ का अनुवाद

अर्थान्तर-(सं०नपुं०) दूसरा अर्थ या आशय। **अर्थान्तरन्यास**-(सं०पुं०) वह अलंकार जिसमें एक प्रकार के अर्थ द्वारा अन्य प्रकार का अर्थ समर्थन करने का प्रयत्न होता है।

अर्थापत्ति-(सं०स्त्री०) वह अलङ्कार जिसमें एक बात के कथन से दूसरी बात सिद्ध की जाती है।

अर्थालङ्कार-(सं० पुं०) वह अलंकार जिसमें अर्थ का गौरव दिखलाया जाता है।

अर्थी-(सं०वि०) याचक, माँगनेवाला,

अर्ध-(सं०वि०) दो समान टकड़ों में से एक "आधा" अर्ध का उपसर्ग। **अर्धमागधी**-(सं०स्त्री०) प्राकृत भाषा जो प्राचीन समय में मथुरा और पटना के बीच में बोली जाती थी। **अर्ध-व्यास**-(सं०पुं०) वृत्त की त्रिज्या।

अर्धसमवृत्ति-(सं०वि०) सोरठा।

अर्धांश-(सं०पुं०) अर्धभाग।

अर्धाकार-(सं०पुं०) 'अ' अक्षर का आधा भाग (ऽ)

अर्धाङ्गिनी-(सं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।

अर्धार्ध-(सं०पुं०) चौथाई भाग।

अर्पण-(सं०नपुं०) दान, भेंट, स्थापन, त्याग।

अर्पित-(सं०वि०) दिया हुआ, स्थापित।

अर्बुद-(सं०पुं०) दस करोड़ की संख्या,

अर्भक-(सं०पुं०) बालक, बच्चा।,

अर्वाचीन-(सं०वि०) आधुनिक, नूतन, नया।

अर्श-(सं०वि०) अश्लील; (नपुं०) बवासीर रोग।

अर्ह-(वि०) योग्य, पूजनीय, मूल्यवान्। **अर्हण**-(सं०नपुं०) पूजा। **अर्हत्**-(सं०वि०) पूजनीय, प्रसिद्ध, जिनदेव, जैनियों के देवता।

अर्हा-(सं०वि०) पूजा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अलंग-(हिं०पुं०) पार्श्व, ओर, बगलमें।
अलक-(सं०पुं०) मस्तक के लटकते हुए बाल, लट।
अलक्षता-(हिं०स्त्री०) उद्देश्यहीनता।
अलक्षित-(सं०वि०) अप्रगट, अदृश्य।
अलख-(हिं०वि०) अलक्ष्य, अदृश्य, अगोचर।
अलखित-(हिं०वि०) देखो अलक्षित।
अलग-(हिं०वि०) पृथक्।
अलगनी(हिं०स्त्री०) कपड़ा टाँगने की डोरी।
अलगाना-(हिं०क्रि०) पृथक् करना।
अलगाव, अलगावा-(हिं०पुं०) वियोग।
अलङ्कार-(सं०पुं०) आभरण, भूषण, वाक्य का वह विशेष गुण जो सुनने में अच्छा लगे और हृदय को पुलकित करे
अलता-(हिं०पुं०) लाल रंग जिसको स्त्रियां पैर में लगाती हैं।
अलप-(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा।
अलबेला-(हिं०वि०) अनुपम, अनोखा।
अलभ्य-(सं०वि०) अप्राप्य, दुर्लभ, अमूल्य।
अललाना-(हिं०क्रि०) चिल्लाना।
अलवाँती-(हिं०स्त्री०) जिस स्त्री ने बच्चा जना हो।
अलस-(सं०वि०) दीर्घसूत्री, आलसी।
अलसान-(हिं०स्त्री०) आलस्य, शिथिलता
अलसी-(हिं०स्त्री०) अतसी, तीसी।
अलसेट-(हिं०स्त्री०) विलम्ब, धोखा-धड़ी।
अलहन-(हिं०पुं०) बुरा समय।
अलान-(हिं०पुं०) हाथी बाँधने का खूंटा या सिक्कड़। **अलाप**-(हिं० पुं०) देखो आलाप।
अलि-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा, सखी, सहेली।
अलिजिह्वा, अलिजिह्विका-(सं०स्त्री०) गले के भीतर की घंटी, कौवा।
अलिन्द-(सं०पुं०) घर के बाहरी द्वार का चबूतरा।
अली-(हिं०स्त्री०) सखी सहेली, पंक्ति, भौंरा
अलीक-(सं०नपुं०) मिथ्या, झूठ।
अलुक् समास-(सं०पुं०) व्याकरण में वह समास जिसमें विभक्ति बनी रहती है।
अलूना-(हिं०वि०) बिनानमक मिला हुआ
अलोकना-(हिं०क्रि०) देखना, ताकना।
अलोना-(हिं०वि०) अलवण, बिना नमक का।
अलौकिक-(सं०वि०) विलक्षण।
अल्प-(सं०वि०) छोटा, कम, थोड़ा।
अल्पक्रीत-सस्ता; **अल्पजीवी**-अल्पायु
अल्पज्ञ-(सं०वि०) थोड़े ज्ञान वाला,
अल्पतनु-(सं०वि०) वामन, बौना;
अल्पप्राण-(सं०पुं०) व्याकरण में व्यंजन वर्ण के प्रत्येक वर्ग का पहिला तीसरा तथा पाँचवाँ अक्षर और य, र, ल, व, तथा स्वर।
अल्ल-(हिं०पुं०) वंश का नाम, उपगोत्र।
अल्लाना-(हिं०क्रि०) गला फाड़कर चिल्लाना।
अव-(हिं०अव्य०) और; (सं०अव्य०) यह शब्द "अवश्य, तिरस्कार, बराबर तथा मेल" अर्थ में प्रयोग होता है।
अवकलन-(सं०नपुं०) ज्ञान, समझ, दृष्टि।
अवकाश-(सं०पुं०) अवसर, समय।
अवक्रम-(सं०पुं०) निम्नगति, नीचे जाना
अवगारना-(हिं०क्रि०) जताना, समझाना, बुझाना।
अवगाह-(सं०पुं०) स्नान, अन्तः प्रवेश; (वि०) गहन, अथाह।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवगाहन-(सं०पुं०) पानी में घुस कर स्नान, प्रवेश ।
अवगुण-(सं०पुं०)दोष,अपराध,बुराई
अवघट-(सं०पुं०) पीसने का यन्त्र, जाँता; (वि०) कठिन, विकट,।
अवचट-(हिं०पुं०) अंडस, कठिनाई, (क्रि०वि०) अकस्मात् ।
अवच्छिन्न-(सं०पुं०)पृथक् किया हुआ, विशिष्ट अर्थ का ।
अवच्छेद-(सं०पुं०) अलगाव, व्याप्ति, अन्वेषण, विभाग ।
अवज्ञा-(सं०स्त्री०) अनादर, अपमान,
अवटना-(हिं०क्रि०) मथना, किसी द्रव पदार्थ को जलाकर गाढ़ा करना ।
अवतंस-(सं०पुं०) किरीट, मुकुट,हार, माला, ।
अवतरना-(हिं०क्रि०) उपजना, प्रगट होना, जन्म लेना ।
अवतार-(सं०पुं०) उतरना, जन्म, देवताओं का मनुष्यादि का शरीर धारण करना ।
अवधारण-(सं०नपुं०)निरूपण, निश्चय,
अवधारणीय-(सं०वि०) निरूपण करने योग्य ।
अवधि-(सं०पुं०) सीमा, निर्धारित काल; (अव्य०) पर्यन्त, तक ।
अवधूत-(सं०वि०)कम्पित,हिलाया हुआ
अवनूत-(सं०वि०) नीचा, झुका हुआ, नमस्कार किया हुआ ।
अवनति-(सं०स्त्री०) विनय, न्यूनता, घाटा; अधोगति ।
अवनि,अवनी-(सं०स्त्री०) भूमि,पृथ्वी
अवयव-(सं०पुं०) अंश, भाग,टुकड़ा, शरीर का कोई भाग, वावय विशेष;
अवर-(सं०वि०) अधम, नया, पीछे रहनेवाला, दूसरा ।
अवरज-(सं०पुं०) छोटा भाई,शूद्र ।
अवरूढ-(सं०वि०) उखाड़ा हुआ ।
अवरेखना-(हिं०क्रि०) देखना भालना; अनुमान करना ।
अवरेब-(हिं० पुं०) वक्रचलन, तिरछी चाल, फन्दा ।
अवरोध-(सं० पुं०) रोक, रुकावट, झगड़ा, घेरा ।
अवरोह-(सं०पुं०) अवतरण, उतार, शाखा का अग्र भाग, वृक्ष के ऊपर चढ़ने वाली बेल ।
अवर्ण-(सं०वि०) वर्ण रहित, बना रंग का, कुरुप, वर्णधर्म से रहित, ।
अवर्त-(सं०पुं०)पानी का भँवर, चक्कर
अवलम्ब, अवलम्बन-(सं०नपुं०) आश्रय, सहारा ।
अवली-(हिं०स्त्री०) पंक्ति,समूह,झुण्ड
अवलेप-(सं०पुं०) उपटन,भूषण,लेप, गर्व ।
अवलेह-(सं०पुं०)चाटकर खाने वाली औषधि,चटनी ।
अवलोकित-(सं०वि०) देखा हुआ ।
अवश-(सं०पुं०) पराधीन, विवश ।
अवशिष्ट-(सं०वि०) अतिरिक्त, परिशिष्ट ।
अवशेष-(सं०वि०) बचा हुआ, शेष; (पुं०) बची हुई वस्तु ।
अवश्य-(सं०वि०) अनधीन, स्वतन्त्र रहनेवाला; (अव्य०) निश्चय, निःसन्देह ।
अवस-(हिं०क्रि०वि०) अवश्य ।
अवसर-(सं०पुं०) समय, काल ।
अवसाद-(सं०पुं०) विषाद,क्षय,नाश, समाप्ति, थकावट ।
अवसान-(सं०नपुं०)विराम,समाप्ति ।
अवसि-(हिं०क्रि०वि०) अवश्य, निश्चय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अवसेचन-(सं०नपुं०) सब दिशाओं में सिंचाई, पसीजना, पसीना निकलना,
अवसेर-(हिं०स्त्री०) विलम्ब, चिन्ता।
अवस्कन्द-(सं०पुं०) सेना के लड़ने का स्थान, शिविर,।
अवस्था-(सं०स्त्री०) दशा, स्थिति, आयु, आकार।
अवस्थान-(सं०नपुं०) स्थान, स्थिति, ठिकना।
अवहेलना, अवहेला-(सं०स्त्री०) अनादर, अपमान, तिरस्कार। (हिं०क्रि०) बात न मानना, तिरस्कार करना।
अवाँ-(हिं०पुं०) देखो आवाँ।
अवाई-(हिं०स्त्री०) आगमन।
अवाक्-(सं०वि०) मौन, चुप, चकित।
अवान्तर-(सं०वि०) प्रसङ्ग के बीच का। **अवान्तर देश**-प्रान्त के बीच का प्रदेश।
अवाम-(सं०वि०) दक्षिण, दाहिना।
अवारण-(सं०वि०) बिना निषेध का
अविकट-(सं०वि०) जो भयंकर न हो, अविस्तृत।
अविकच-(हिं०वि०) बिना खिला हुआ
अविकल-(सं०वि०) चिन्ताशून्य, निश्चल, शान्त।
अविकल्प-(सं०पुं०) असन्दिग्ध।
अविगत-(सं०वि०) अज्ञात, अनिर्वचनीय, नित्य, जिसका नाश न हो।
अविचार-(सं०पुं०) अज्ञान, अन्याय, अत्याचार।
अविछिन्न-(सं०वि०) निरन्तर, सतत।
अविजित-(सं०वि०) अजेय।
अविज्ञ-(सं०वि०) अनिपुण।
अविद्ध-(सं०वि०) न बेधा हुआ, न छेदा हुआ।
अविद्य-(सं०पुं०) मूर्ख, लंठ।
अविद्यमान-(सं०पुं०) अनुपस्थित, असत्, मिथ्या।
अविद्या-(सं०पुं०) ज्ञान का अभाव, मिथ्या ज्ञान, मोह।
अविद्वान्-(हिं०पुं०) मूर्ख, अपण्डित।
अविनिर्मोक-(सं०वि०) बिना छूट का,
अविनीत-(सं०वि०) दुष्ट, उद्धत, धृष्ट, ढीठ।
अविपश्चित्-(सं०वि०) अविवेकी, मूर्ख
अविरति-(सं०स्त्री०) लीनता, विषयासक्ति; (वि०) विराम शून्य।
अविरल-(सं०वि०) सघन, निबिड़।
अविवक्षित-(सं०वि०) असंबद्ध विषयका
अविवर-(सं०वि०) घाना, बिना छिद्र का
अविवेक-(सं०पुं०) अविचार, अज्ञान, मूर्खता, अन्याय। **अविवेकत्व**-अज्ञानता, मूर्खता। **अविवेकी**-(सं०वि०) अज्ञानी, मूर्ख।
अविशेष-(सं०पुं०) भेद का अभाव; (वि०) तुल्य, समान, बराबर।
अविस्तर-(सं०वि०) संकुचित, न फैला हुआ।
अविस्तार-(सं०पुं०) विस्तार का अभाव
अविस्तृत-(सं०वि०) संलग्न, मिला हुआ।
अविहित-(सं०वि०) निषिद्ध, न किया हुआ।
अविह्वल-(सं०वि०) जो व्याकुल नहो।
अवीक्षित-(सं०वि०) अदृष्ट, न देखा हुआ।
अवेज-(हिं०पुं०) प्रतीकार, बदला।
अवेस-(हिं०पुं०) देखो आवेश।
अवैतनिक-(सं०वि०) बिना वेतन का।
अवैध-(सं०वि०) विधि विहीन, निषिद्ध
अव्यक्त-(सं०वि०) अज्ञात, अस्पष्ट; **अव्यक्तगणित**-बीजगणित; **अव्यक्तराशि**-बीजगणित में अज्ञात परिमाण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अव्यय-(सं०नपुं०) व्याकरण में वह शब्द जिसका रूप विभक्ति और वचनों में समान ही रहता है; (वि०) विकार शून्य, नित्य, बिना आदि अन्त का, व्ययहीन, अक्षय।

अव्ययीभाव-(सं०पुं०) व्याकरण में समास का एक भेद।

अव्यर्थ-(सं०पुं०) सार्थक, सफल; (वि०) अवश्य प्रभाव डालने वाला।

अव्यलीक-(सं०वि०) प्रिय, सत्य, सच्चा

अव्यवस्था-(सं०स्त्री०) शास्त्रादि के विरुद्ध व्यवस्था, मर्यादा न होना, **अव्यवस्थित** (वि०) अस्थिर, चञ्चल।

अव्याज-(सं०पुं०) छल या कपट का अभाव।

अव्युत्पन्न-(सं०वि०) अनुभव शून्य, व्याकरण न जानने वाला।

अशक्त-(सं०वि०) अयोग्य, असमर्थ।

अशङ्क-(सं०वि०) निर्भय, निडर।

अशठ-(सं०वि०) जो दुष्ट न हो, सज्जन

अशन-(सं०नपुं०) भोजन, आहार,

अशना-(सं०स्त्री०) भोजन की इच्छा।

अशनीय-(सं०वि०) भोजन करने योग्य

अशिक्षित-(सं०वि०) बिना पढ़ा लिखा, अनाड़ी, गँवार, मूर्ख।

अशित-(सं०वि०) भक्षित, खाया हुआ।

अशिष्ट-(सं०वि०) अविनीत,

अशुचि-(सं०वि०) अपवित्र, मैला कुचैला

अशुद्ध-(सं०वि०) दोषयुक्त, अपवित्र।

अशुद्धि-(सं०स्त्री०) दोष।

अशुभ-(सं०पुं०) अमंगल, पाप, अपराध; (वि०) बुरा।

अशुभ्र-(सं०पुं०) कृष्ण, काला।

अशुष्क-(सं०वि०) जो सूखा न हो, हरा।

अशून्य-(सं०वि०) पूर्ण, भरा हुआ।

अशृङ्ग-(सं०वि०) बिना सींग का।

अशेष-(सं०वि०) समूचा, दोषरहित, पूरा, समाप्त।

अशोक-(सं०पुं०) एक प्रसिद्ध वृक्ष; (वि०) शोक रहित।

अशोच-(सं०पुं०) शोक का न होना।

अशौच-(सं०नपुं०) अशुद्धता, अपवित्रता

अश्म-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, पत्थर।

अश्मरी-(सं०स्त्री०) मूत्र कृच्छ, पथरी नामक रोग।

अश्रु-(सं०नपुं०) नेत्र जल, आँसू।

अश्लील-(सं०वि०) भद्दा, कुत्सित।

अश्व-(सं० पुं०) घोटक, घोड़ा; **अश्वचिकित्सक**-(सं०पुं०) अश्ववैद्य, सलोतरी। **अश्वतर**-(सं०पुं०) खच्चर

अश्वत्थ-(सं०पुं०) पीपल का वृक्ष।

अश्वमेध-(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक प्रधान यज्ञ। **अश्वयान**-(सं०-नपुं०) घोड़े की सवारी।

अश्वशाला-(सं०स्त्री०) घुड़साल।

अश्वारूढ़-(सं०पुं०) घोड़े पर चढ़ा हुआ, घोड़सवार।

अष्ट-(सं०वि०) आठ की संख्या।

अष्टक-(सं०पुं०) आठ पदार्थों का संग्रह, आठ श्लोक का स्तोत्र या काव्य

अष्टकोण-(सं०नपुं०) आठ कोने का यन्त्र।

अष्टधातु-(सं०पुं०) आठ धातु यथा-सोना, चाँदी, तांबा, रांगा, जस्ता सीसा, लोहा, पारा।

अष्टपदी-(सं०स्त्री०) आठ पदवाली गीत

अष्टपाद-(सं०पुं०) शरभ, टिड्डी, मकड़ी

अष्टम-(सं०वि०) आठवाँ।

अष्टमी-(सं०स्त्री०) किसी महीने के कृष्ण पक्ष अथवा शुक्ल पक्ष की आठवीं तिथि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टसिद्धि-(सं०स्त्री०) आठ प्रकार की सिद्धि।
अष्टाङ्ग-(सं०पुं०) योग की क्रिया के आठ भेद; (वि०) आठ भाग का, अठपहल।
अष्टाध्यायी-(सं०स्त्री०) पाणिनीय का बनाया हुआ व्याकरण का ग्रन्थ जिसमें आठ अध्याय हैं।
अस-(हिं०सर्व०) ऐसा, यह; (वि०) इस प्रकार का।
असंक-(हिं०वि०) अशंक, निडर।
असंस्कृत-(सं०वि०) संस्कार न किया हुआ, परिष्कार न किया हुआ।
असंस्तुत-(सं०वि०) स्तुति न किया हुआ।
असकताना-(हिं०क्रि०) आलस्य में पड़े रहना, ऊँघना, जंभाई लेना।
असकृत्-(सं०अव्य०) अनेकबार, बारंबार
असगोत्र-(सं०वि०) भिन्न गोत्र का, जो एक ही गोत्र का न हो।
असगुन-(हिं०पुं०) देखो अशकुन।
असंकीर्ण-(सं०वि०) विशुद्ध, बेमेल।
असंकुल-(सं०वि०) विस्तीर्ण, खुलाहुआ
असङ्ख्य-(सं०वि०) अगणनीय, अनगिनतिन। असङ्ख्यता- (सं० स्त्री०) अगणनीयता,।
असंग-(सं०पुं०) संबन्धशून्यता; (वि०) न्यारा; असंगत-(सं०वि०) असम्बद्ध, अनुचित। असंगति-(सं०स्त्री०) अनुपयुक्तता। असंगम-(सं०पुं०) सङ्गम का अभाव; (वि०) बिना मेल का।
असज्जन-(सं०वि०) दुर्जन, दुष्ट, खल।
असत्य-(सं०वि०) मिथ्या, झूठ, (नपुं०) झूठी बात।
असनान-(हिं०पुं०) स्नान, नहाना।
असन्दिग्ध-(सं०वि०) सन्देह रहित' प्रकट, स्पष्ट।
असभई-(हिं०वि०) अशिष्टता।
असभ्य-(सं०वि०) अशिष्ट, गँवार।
असम-(सं०वि०) अतुल्य, असदृश।
असमंजस-(सं०पुं०) अनुपयुक्त विषय; (वि०) असदृश, अतुल्य, (पुं०) अड़चन, कठिनाई।
असमर्थ-(सं०वि०) अशक्त, दुर्बल, अयोग्य, सामर्थ्यहीन।
असमवायिकारण-(सं०नपुं०) आकस्मिक हेतु।
असमीक्ष्य-(सं०अव्य०) बिना सोचे विचारे।
असमीचीन-(सं०वि०) अनुचित, अयुक्त
असम्पूर्ण-(सं०वि०) अधूरा।
असम-(सं०वि०) अतुल्य।
असम्भव-(सं०वि०) असङ्गत।
असम्मत-(सं०वि०) अस्वीकृत, विरुद्ध।
असरन-(हिं०पुं०) देखो अशरण।
असलील-(हिं०वि०) देखो अश्लील।
असलेउ-(हिं०वि०) असह्य।
असलोक-(हिं०पुं०) देखो श्लोक।
असवर्ण-(सं०वि०) विभिन्न वर्ण का।
असवार-(हिं०पुं०) देखो सवार।
असवारी(हिं०स्त्री०) देखो सवारी।
असह-(सं०वि०) अक्षम, न सहनेयोग्य।
असहयोग-(सं०पुं०) मिलकर काम न करने का सिद्धान्त।
असहाय-(सं०वि०) निरवलम्ब, निःसहाय,
असहिष्णु-(सं०वि०) असहनशील,।
असही-(हिं०वि०) ईर्षालु;।
असाँच-(हिं०वि०) असत्य, झूठा।
असा-(अ०पुं०) सोंटा, चाँदी या सोने के पत्र से मढा हुआ डंडा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असाढ़-(हिं०पुं०) आषाढ़ मास ।
असाढ़ा-(हिं०पुं०) बटे हुए रेशम का तागा ।
असाढ़ू-(हिं०पुं०) मोटी चट्टान, मोटा पत्थर ।
असाध-(हिं०वि०) असाध्य ।
असाधारण-(सं०वि०) असामान्य, विशेष
असाधु-(सं०वि०) दुर्जन, अशिष्ट, असाधुता, असाधुत्व-(सं०) दुष्टता ।
असाध्य-(सं०वि०) कठिन, दुष्कर ।
असामान्य-(सं०वि०) असाधारण, विशेष
असामी (हिं०पुं०) कृषक, ऋणी, अपराधी, देनदार ।
असार-(सं०वि०) निःसार, तुच्छ ।
असि-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार ।
असिधारा-(सं०स्त्री०) तलवार की धार
असीम-(सं०वि०) अनन्त, अगाध, अपार
असीस-(हिं०स्त्री०) देखो आशिस् ।
असु-(सं०पुं०) प्राणवायु ।
असुख (सं०नपुं०) दुःख, कष्ट ।
असुखी-(सं०वि०) सुखरहित, दुःखी ।
असुविधा-(सं०स्त्री०) कठिनाई, अड़चन
असुभ-(हिं०वि०) देखो अशुभ ।
असुर-(सं०पुं०) राक्षस, दैत्य, प्रेत ।
असुराई-(हिं०स्त्री०) नीचता, दुष्टता ।
असूया-(सं०स्त्री०) ईर्ष्या, शत्रुता, डाह ।
अस्टक्-(सं०नपुं०) रक्त, लोहू ।
असेग-(हिं०वि०) असह्य, न सहने योग्य
असो, असों-(हिं०क्रि०वि०) इस साल, वर्तमान वर्ष में ।
असोक-(हिं०वि०) देखो अशोक ।
असौच-(हिं०पुं०) देखो अशौच ।
असौम्य-(सं०वि०) अप्रिय, डरवना ।
अस्खलित-(सं०वि०) स्थायी, टिकाऊ ।
अस्त-(सं०वि०) नष्ट, अदृश्य, डूबा हुआ, छिपा हुआ ।
अस्तन-(हिं०पुं०) देखो स्तन ।
अस्तव्यस्त-(सं०वि०) अव्यवस्थित ।
अस्ताचल-(सं०पुं०) पश्चिमाचल पर्वत
अस्तु-(सं०अव्य०) ऐसा ही हो, अच्छा, भला ।
अस्तुति-(सं०पुं०) अपकीर्ति, निन्दा, (हिं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा ।
अस्तेय-(सं०नपुं०) चोरी का न करना
अस्त्र-(सं०नपुं०) आयुध, तलवार, चिकित्सक का शस्त्र; अस्त्रशाला-(सं०स्त्री०) अस्त्रागार ।
अस्थान-(सं०नपुं०) बुरा स्थान, (हिं० पुं०) स्थान ।
अस्थायी-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल ।
अस्थावर-(सं०वि०) जंगम ।
अस्थि-(सं०नपुं०) हाड़, हड्डी ।
अस्थिति-(सं०स्त्री०) अस्थिरता ।
अस्थिपंजर-(सं०पुं०) हड्डी की ठठरी ।
अस्थिर-(सं०वि०) चंचल, अनिश्चित ।
अस्थूल-(सं०वि०) सूक्ष्म, पतला (हिं०) स्थूल ।
अस्थैर्य-(सं०नपुं०) चपलता, चंचलता ।
अस्नान-(हिं०) देखो स्नान ।
अस्निग्ध-(सं०वि०) कर्कश, निर्दय ।
अस्पृह-(सं०वि०) विरक्त ।
अस्फुट-(सं०वि०) अव्यक्त ।
अस्रज-(सं०नपुं०) मांस ।
अस्रु-(सं०नपुं०) चक्षुजल, आँसू ।
अस्लील-(हिं०) देखो अश्लील ।
अस्लोक-(हिं०) देखो श्लोक ।
अस्वच्छ-(सं०वि०) कलुष, धुँधला ।
अस्वतन्त्र-(सं०वि०) पराधीन ।
अस्वस्थ-(सं०वि०) रुग्ण, रोगी ।
अस्वीकार-(सं०पुं०) स्वीकार का अभाव । अस्वीकृत-(सं०पुं०) स्वीकार न किया हुआ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अस्सी-(हिं०पुं०) सत्तर और दश की संख्या ।
अहं-(सं०सर्व०)मैं; (पुं०) अभिमान, अहंकार ।
अहंता-(हिं०स्त्री०) अभिमान, गर्व ।
अहंवाद-(सं०पुं०) धृष्टता ।
अहक-(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।
अहकना-(हिं०क्रि०) लालसा करना।
अहङ्कार-(सं०पुं०) गर्व, घमंड।
अहटाना-(हिं०क्रि०) आहट लेना, पता लगाना, ढूंढना, खोजना ।
अहनिसि-(हिं०अव्य०) देखो अहर्निश।
अहम्मति-(सं०स्त्री०) अहंकार, गर्व ।
अहर-(सं०पुं०) गणित में वह राशि जो बँट न सकती हो।
अहरन-(हिं०स्त्री०) निहाई ।
अहरना-(हिं०क्रि०) लकड़ी को गढ़ना,
अहरहः-(सं०क्रि०वि०) प्रतिदिन।
अहरा-(हिं०पुं०) सुलगाये जाने वाले कण्डों का ढेर, ठहरने का स्थान, ।
अहर्निश-(सं०अव्य०) दिनरात, सर्वदा।
अहर्मुख-(सं०नपुं०)प्रातःकाल, सबेरा।
अहलाद-(हिं०पुं०)देखो आहलाद ।
अहवात-(हिं०पुं०) सौभाग्य, सोहाग।
अहह-(सं०अव्य०)क्लेश, शोक, आश्चर्य इत्यादि सूचक अव्यय; हाय ! अरे !
अहा-(हिं०अव्य०)प्रसन्नता सूचक अव्यय-
अहान-(हिं०पुं०) आह्वान, पुकार ।
अहार-(हिं०) देखो आहार ।
अहाहा-(हिं०अव्य०) हर्ष सूचक अव्यय।
अहि-(सं०पुं०) सर्प, सूर्य, जल, बादल, पृथ्वी ।
अहिंसा-(सं०स्त्री०)अद्रोह, किसी प्राणि को किसी प्रकार का कष्ट न देना ।
अहित-(सं०पुं०) शत्रु, बैरी; (वि०) हानिकारक, प्रतिकूल ।
अहिनाह-(हिं०पुं०) शेषनाग।
अहिर-(हिं०) देखो अहीर ।
अहिलव-(हिं०पुं०) अधिकता, बढ़ती।
अहुठना-(हिं०क्रि०) निवृत्त होना, हट जाना, भागना ।
अहे-(हिं०अव्य०) अरे ! अहो !
अहेर-(हिं०पुं०) आखेट, मृगया ।
अहो-(सं०अव्य०)हाय, धिक्कार, अरे, वाहवाह, क्यों ।
अहोरात्र-(सं०पुं०)दिनरात, (अव्य०) सर्वदा, निरन्तर, ।

आ

आ-हिन्दी वर्णमालाका दूसरा अक्षर। यह 'अ'-का दीर्घ रूप है।
आं-(हिं०पुं०) आश्चर्य सूचक अव्यय।
आँक-(हिं०पुं०)अंक, चिह्न, वर्ण, अक्षर,
आँकड़ा-(हिं०पुं०) अंक, संख्या ।
आंकु-आंकुस-(हिं०पुं०) देखो अंकुश।
आँकू-(हिं०पुं०) कूतने वाला।
आँख-(हिं०स्त्री०) चक्षु, नेत्र, दृष्टि, ध्यान, विवेक, कृपा, सूई का छिद्र, ईख आलू इत्यादि में वह स्थान जहाँ से अंखुआ निकलता है ।
आंखड़ी-(हिं०स्त्री०) आंख, नेत्र ।
आँख मिचौली-आँख मीचली, आँख मुचाई (मुंदाई)-(हिं०स्त्री०)लड़कों का एक खेल ।
आँखी-(हिं०स्त्री०) देखो आँख ।
आँगन-(हिं०पुं०)आङ्गन, घरके भीतर का चौक ।
आँगी-(हिं०स्त्री०)अङ्गिका, अंगिया ।
आंगुर-(हिं०पुं०) देखो अङ्गुल ।
आँच-(हिं०स्त्री०) अग्नि, ताप, तेज, संकट, विपत्ति, प्रेम।
आँचर(-ल)-(हिं०पुं०) अञ्चल ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आँजन-(हिं०पुं०) देखो अञ्जन ।
आँजना-(हिं०क्रि०) आंखों में अञ्जन लगाना ।
आँट-(हिं०स्त्री०) हथेलीमें तर्जनी और अंगूठे के मध्य का स्थान, दाँव, गांठ
आँटी-(हिं०स्त्री०) लंबी घास इत्यादि का छोटा गट्ठा, सूत का लच्छा, धोती की ऐंठन, टेंट ।
आँठी-(हिं०स्त्री०) गांठ, बीज, गुठली ।
आँड़ू-(हिं०पुं०) अण्डकोशयुक्त (पशु)।
आँत-(हिं०स्त्री०) अन्त्र, अँतड़ी ।
आँतर-(हिं०पुं०) अन्तर ।
आँदू-(हिं०पुं०) बेड़ी, सिकड़ी ।
आँधर, आँधरा-(हिं०वि०) अन्धा, नेत्र हीन ।
आँधी-(हिं०स्त्री०) धूलिपूर्ण प्रचण्ड-वायु ।
आँयबाँय-(हिं०पुं०) असम्बन्ध प्रलाप ।
आँव-(हिं०पुं०) अन्न न पचने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का चिकना लसदार मल ।
आँवठ-(हिं०पुं०) किनारा, कपड़े का छोर ।
आँवन-(हिं०पुं०) पहिये के मध्य भाग में जड़ी हुई लोहे की सामी जिसमें धुरे का डंडा घूमता है ।
आँवल-(हिं०स्त्री०) खेंड़ी, जिस गर्भ में बच्चा लपेटा रहता है ।
आँवला-(हिं०पुं०) एक वृक्ष, जिसके गोल फल कसैलापन किये कुछ खट्टे होते हैं ।
आँवाँ-(हिं०पुं०) गड्ढा जिसमें कुम्हार लोग मिट्टी के पात्र पकाते हैं ।
आँस-(हिं०स्त्री०) सुतली, डोरी, रेशा ।
आँसू-(हिं०पुं०) अश्रु, नेत्र से निकालने वाला जल ।
आँहाँ-(हिं०अव्य०) नहीं ।
आ-(सं०अव्य०) जो, ईषद (–थोड़ा), मर्यादा, अभिव्याप्ति तथा अतिक्रमण अर्थ में प्रयोग होता है—यथा, आरक्त–थोड़ा लाल, आमरण—जीवन पर्यन्त ।
आइ-(हिं०) देखो आयु ।
आई-(हिं०स्त्री०) मृत्यु, आयुष्य ।
आउ-(हिं०पुं०) आयुष्य, जीवन ।
आकड़ा-(हिं०) देखो आंक ।
आकम्प, आकम्पन-(सं०) थोड़ा कम्प, कँपकँपी ।
आकर-(सं०पुं०) समूह, भण्डार, ।
आकर्ष-(सं०पुं०) वितान, खिचाव, तनाव, चुंबक ।
आकर्षण-(सं०नपुं०) खिचाव ।
आकर्षणशक्ति-(सं०स्त्री०) भौतिक पदार्थों की वह शक्ति जिसके द्वारा वे अन्य पदार्थों को अपनी ओर खींच लेते हैं ।
आकर्षन-(हिं०पुं०) देखो आकर्षण ।
आकलन-(सं०नपुं०) आशंका, सन्देह, संचय, गणना, अनुसन्धान, खोज ।
आकस्मिक-(सं०वि०) अचानक होनेवाला ।
आका-(हिं०पुं०) आकाय, भट्ठी, पैजावा, आंवाँ ।
आकांक्षा-(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा, अभिप्राय ।
आकार-(सं०पुं०) स्वरूप, आकृति, चेष्टा अक्षर 'आ' ।
आकाश-(सं०पुं०) नभ, गगन, बहुत ऊँचा स्थान । **आकाशकक्षा**-(सं स्त्री०) क्षितिज । **आकाशकुसुम**-(सं०नपुं०) असम्भव वार्ता । **आकाशगंगा**-(सं० स्त्री०) मन्दाकिनी, अनेक छोटे छोटे तारों का मण्डल जो आकाश में उत्तर से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दक्षिण तक विस्तृत है। **आकाश-चोटी**-(हिं०स्त्री०) शीर्ष विन्दु, सिर के ठीक ऊपर पड़नेवाला कल्पित विन्दु।

आकाशमण्डल-(सं०नपुं०)गगन मण्डल, खगोल। **आकाशवृत्ति**-(सं०स्त्री०) सन्दिग्ध जीविका,।

आकाशी-(हिं०स्त्री०) वह चाँदनी जो आतप इत्यादि से बचने के लिये तानी जाती है।

आकाशीय-(सं०वि०)आकाश सम्बन्धी

आकीर्ण-(सं०वि०) व्याप्त,फैला हुआ।

आकुंचन-(सं०नपुं०) संकोचन सञ्चय।

आकुंचित-(सं०वि०) सिकोड़ा, हुआ वक्र, टेढा।

आकुण्ठन(सं०नपुं०) लज्जा।

आकुल-(सं०वि०) व्यग्र, विह्वल, उद्विग्न, व्याप्त,

आकूति-(हिं०स्त्री०) अभिप्राय, आशय।

आकृति-(सं०स्त्री०) आकार, लक्षण, मूर्ति, रूप, चेष्टा, व्यवहार,

आकृष्ट-(सं०वि०) खींचा हुआ।

आक्रन्द, आक्रन्दन-(सं०) चिल्लाहट सहित रुलाई, पुकार ललकार,

आक्रमण-(सं०नपुं०) चढ़ाई, धावा।

आक्रान्त-(सं०वि०) विह्वल, व्याप्त।

आक्रान्ति-विवशता।

आक्रोश-(सं०पुं०) शाप, निन्दा, अपवाद।

आक्षिप्त-(सं०वि०) फेंका या उछाला हुआ।

आक्षेप-(सं०पुं०) अपमान, अपवाद, भर्त्सना, गाली,

आखत-(हिं०पुं०) विवाहादि शुभ कार्य के समय परिजनों को दिया जाने का अन्न।

आखन-(हिं०क्रि०वि०) क्षणक्षण, बारबार,

आखना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना।

आखर-(हिं०पुं०) अक्षर।

आखु-(सं०पुं०) मूषक, चूहा, चोर।

आखेट-(सं०पुं०)मृगया, अहेर।

आख्या-(सं०स्त्री०) नाम, संज्ञा।

आख्यात-(सं०वि०) कथित, प्रसिद्ध, प्रकाशित।

आख्याति-(सं०स्त्री०)कीर्ति, यश, कथन

आख्यान-(सं०नपुं०) कथन, वर्णन, बोली, कथा; **आख्यानक**-(सं० नपुं०) कथा, छोटा किस्सा।

आख्यायिका-(सं०स्त्री०) गल्प, सच्ची कहानी।

आग-(हिं०स्त्री०)अग्नि, दाह, जलन।

आगत-(सं०वि०) उपस्थित, आया हुआ। (पुं०) आगमन

आगन्तु, आगन्तुक-(सं०पुं०) अतिथि, पाहुन।

आगम-(सं०पुं०) आगमन, आय, उपपत्ति, उपस्थिति, योग, जोड़, मार्ग, व्याकरण के शब्द साधन में जो वर्ण बाहर से लाया जाय, वेद, शास्त्र, निकट जानेवाला; **आगमजानी**-भविष्य जानने वाला।

आगमन-(सं०नपुं०) अवाई, प्राप्ति।

आगमी-(सं०वि०)भविष्यवक्ता, ज्योतिषी।

आगर-(हिं०पुं०) आकर, खान, ढेर, कोष, निधि; (वि०) श्रेष्ठ, कुशल, चतुर।

आगल-(हिं०पुं०) अर्गल, ब्योंड़ा; (वि०) अगला।

आगवन-(हिं०पुं०) आगमन, आना।

आगा-(हिं०पुं०) अग्र भाग, सेनाका अगला भाग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आगापीछा-(हिं०पुं०) सोच, विचार द्विविधा ।
आगामी-(सं०वि०) आगे आने वाला
आगार-(सं०नपुं०) घर, स्थान, कोष ।
आगिल-(हिं०वि०) अगला, आगे होने वाला ।
आगी-(हिं०स्त्री०) अग्नि, आग ।
आगू-(हिं०क्रि०वि०) आगे, आगेकी ओर ।
आगे-(हिं०क्रि०वि०)अग्रभाग में, बढ़कर, सन्मुख, भविष्य में, पीछे, जीवित अवस्था में ।
आगौन-(हिं०पुं०) देखो आगमन ।
आग्नेय-(सं०वि०) अग्नि से निकाला हुआ, आग लगने से शीघ्र जलने वाला, अग्नि के समान ।
आग्नेयी-(सं०स्त्री०) पूर्व और दक्षिण के बीच की दिशा ।
आग्रह-(सं०पुं०) अनुरोध, अनुग्रह, हठ ।
आग्रही-(सं०वि०) आग्रह करने वाला, हठी ।
आँघात-(सं०पुं०) ठोंकर, धक्का, क्षत, प्रहार, चोट, मार-पीट, आक्रमण,
आचमन-(सं०नपुं०) भोजन के बाद मुंह धोना, पूजाके पूर्व दहिनें हाथ में जल लेकर मन्त्र पढ़ कर पीना ।
आचमनी-(हिं०स्त्री०) छोटे चम्मच के आकार का पात्र जिससे आचमन किया जाता है ।
आचरण-(सं०नपुं०) आचार, व्यवहार, लक्षण, आचार के नियम ।
आचरन-(हिं०पुं०) देखो आचरण ।
आचार-(सं०पुं०) आचरण, अनुष्ठान, नियम, ।
आचारज-(हिं०पुं०) देखो आचार्य ।
आचारवान्-(सं०वि०) शुद्ध आचरण का ।
आचारविचार-(सं०नपुं०) शुद्ध आचरण, पवित्रता ।
आचार्य-(सं०पुं०) गायत्री मन्त्र का उपदेश देनेवाला, वेद पढ़ाने वाला, यज्ञादि के क्रम का उपदेशक, अध्यापक, गुरु, पुरोहित, वेद का भाष्यकार
आच्छन्न-(सं०वि०) ढपा, छिपा हुआ
आच्छादन-(सं०वि०) वस्त्र, ओहार,
आच्छादित-(सं०वि०) आवृत, ढपा हुआ ।
आछत-(हिं०क्रि०वि०) रहते, होते हुए, सामने अतिरिक्त, सिवाय ।
आज-(हिं०क्रि०वि०) इस समय, वर्तमान काल में; आजकल-इन दिनों
आजन्म-(सं०अव्य०) जन्मभर ।
आजा-(हिं०पुं०) पिता, दादा ।
आजीवन-(सं०नपुं०) वृत्ति का उपाय; (अव्य०) जीवन पर्यन्त ।
आजु-(हिं०) देखो आज ।
आज्ञप्त-(सं०वि०) आज्ञा दिया हुआ ।
आज्ञप्ति-(सं०स्त्री०) आज्ञा ।
आज्ञा-(सं०स्त्री०) आदेश, अनुमति ।
आज्य-(सं०नपुं०) घृत, घी ।
आटना-(हिं०क्रि०) मूंदना, छिपाना ।
आटा-(हिं०पुं०) अन्न का चूर्ण, पिसान ।
आटी-(हिं०स्त्री०) रोक, अटक, पच्चड़ ।
आटोत-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव ।
आठ-(हिं०वि०) अष्ट, चार की दूनी संख्या । **आठो पहर**-दिन रात ।
आठवाँ-(हिं०वि०) अष्टम ।
आड़-(हिं०स्त्री०) परदा, रोक, रक्षा, अड़ान, थूनी ।
आड़ना-(हिं०क्रि०) रोकना, छेंकना, बांधना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आडम्बर-(सं०पुं०) हर्ष, दर्प, युद्ध की घोषणा, आरम्भ, मेघ का शब्द, हाथी की चिग्घाड़ ।
आड़ा-(हिं०पुं०) धारीदार वस्त्र, (वि०) तिरछा ।
आड़ू-(हिं०पुं०) सतालू ।
आढ़-(हिं०पुं०) आढक, चार सेर की तौल ।
आढ़त-(हिं०स्त्री०) किसी व्यापारी का माल बिक्री कराने का व्यापार'; जो धन किसी के माल की बिक्री करा देने पर मिलता है । **आढ़तिया**-(हिं० पुं०) आढ़त का व्यवसाय करने वाला ।
अढ्य-(सं०वि०) विशिष्ट, धनी, सम्पन्न ।
आणक-(सं०पुं०) एक रुपये का सोलहवाँ अंश, आना ।
आतङ्क-(सं०पुं०) रोग, सन्ताप, कष्ट, भय, ज्वर, वेग, उपद्रव ।
आततायी-(सं०वि०) जान मारने को उद्यत ।
आतप-(सं०पुं०) घाम, उष्णता ।
आतपत्र-(सं०नपुं०) धूप से बचने का छाता ।
आतम-(हिं०) देखो आत्म ।
आतमा-(हिं०) देखो आत्मा ।
आतिथेय-(सं०नपुं०) अतिथि की सेवा, जिसके यहां अतिथि आवे ।
आतिथ्य-(सं०नपुं०) अतिथि की परिचर्या, पहुनई ।
आतुर-(सं०वि०) आहत, पीड़ित, व्याकुल, रोगी, अधीर, दुःखी, उत्सुक,
आतुरी-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट
आत्त-(सं०वि०) गृहीत, स्वीकृत ।
आत्म-(सं०वि०) अपना, निजी, स्वकीय
आत्मगत-(सं०पुं०) स्वगत, आप ही आप । **आत्मघात**-(सं० पुं०) आत्महत्या ।
आत्मज-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा । **आत्मजा**-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्री ।
आत्मज्ञ-(सं०पुं०) ब्रह्मज्ञ, सिद्ध ।
आत्मज्ञान-(सं०नपुं०) आत्मा का यथार्थ रूप से ज्ञान ।
आत्मत्याग-(सं०पुं०) स्वार्थत्याग ।
आत्मवत्-(सं०अव्य०) अपनी तरह ।
आत्मवध-(सं०) देखो आत्मघात ।
आत्मवश-(सं०वि०) स्वाधीन, जितेन्द्रिय ।
आत्मविक्रय-(सं०पुं०) स्वदेह विक्रय; **आत्मविक्रयी, आत्मविक्रेता**-(सं०) अपने आपको बेंच कर दास बननेवाला । **आत्मविज्ञान**-(सं०नपुं०) योगाभ्यास द्वारा परमात्मा के स्वरूप का ज्ञान । **आत्मविद्या**-(सं०स्त्री०) ब्रह्मविद्या, योगशास्त्र ।
आत्मसात्-(सं०अव्य०) सब प्रकार से अपने आधीन ।
आत्मा-(सं०पुं०) जीवात्मा, चित्त, मन, ब्रह्म ।
आत्मीय-(सं०वि०) आत्मा संबंधी, निजी; (पुं०) सम्बन्धी ।
आत्मेश्वर-(सं०वि०) अपने मन पर अरधिकार रखने वाला ।
आथना-(हिं०क्रि०) होना, रहना ।
आथि-(हिं०स्त्री०) पूंजी ।
आदरस-(हिं०) आदर्श ।
आदर्य-(सं०वि०) आदरणीय ।
आदर्श-(सं०पुं०) दर्पण, प्रतिलिपि, टीका, अनुकरण करने योग्य पदार्थ ।
आदान-(सं०नपुं०) ग्रहण, पकड़ ।
आदान प्रदान-(सं०नपुं०) लेनदेन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि-(सं०नपुं०) आरम्भ, प्रथम। मूल कारण; (वि०) पहले का, आरंभ का (अव्य०) आदिक।
आदित-(हिं०पुं०) देखो आदित्य।
आदित्य-(सं०पुं०) देवता, सूर्य; **आदित्यवार**-(सं०नपुं०) रविवार।
आदिदेव-(सं०पुं०) नारायण शिव, सूर्य।
आदिम-(सं०वि०) आदि में उत्पन्न, पहिला, अगला।
आदिविपुला-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का आर्या छन्द।
आदिशक्ति-(सं०स्त्री०) परमेश्वर की माया रूप शक्ति।
आदिष्ट-(सं०वि०) उपदेश किया हुआ।
आदी-(हिं०स्त्री०) अदरख।
आदृत-(सं०वि०) सम्मानित, पूजित।
आदेस-(हिं०पुं०) उपदेश, आज्ञा।
आद्य-(सं०वि०) आदि में उत्पन्न, प्रधान
आद्यन्त-आदि से अन्त तक।
आद्योपान्त-(सं०अव्य०) प्रथम से शेष तक
आध-(हिं०वि०) दो बराबर भागों में से एक, आधा, यौगिक शब्दों के आदि में प्रयोग होता है, यथा--आध सेर, आध मन; **एकाध**--थोड़ी संख्या में।
आधा-(हिं०वि०) अर्ध, दो बराबर भागों में से एक। **आधेआध**-दो बराबर भागों में से एक।
आधार-(सं०पुं०) आश्रय, अवलम्ब, थाला, सम्बन्ध।
आधारी-(सं०वि०) सहारा लेने वाला, (हिं० स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी।
आधासीसी-(हिं०स्त्री०) अर्ध कपाली,
आधि-(सं०स्त्री०) मानसिक व्यथा, चिन्ता, अधिष्ठान।
आधिक्य-(सं०नपुं०) अधिकता, बहुतायत।
आधिपत्य-(सं०नपुं०) स्वामित्व, प्रभुत्व
आधिराज्य-(सं०नपुं०) आधिपत्य।
आधी-(हिं०स्त्री०) देखो आधा।
आधीकृत-(सं०वि०) बन्धक रक्खा हुआ
आधुनिक-(सं०वि०) वर्तमान समय का।
आधृष्ट-(सं०वि०) निवारित, रोका हुआ।
आधेक-(हिं०वि०) आधे के बराबर, आधे से अधिक नहीं।
आधेय-(सं०वि०) दिया जाने वाला, रक्खा जाने वाला।
आध्यात्मिक-(सं०वि०) आत्मा या परमात्मा सम्बन्धी।
आन-(हिं०स्त्री०) सीमा, शपथ, भय।
आनक-दुन्दुभि-बड़ा नगाड़ा।
आनत-(सं०वि०) अधोमुख, मुख नीचा किये हुए।
आनद्ध--(सं०वि०) बद्ध, बँधा हुआ।
आनन-(सं०नपुं०) मुह, मुख, मुखड़ा।
आनना-(हि०क्रि०) लाना, लिवा जाना
आनन्द-(सं०नपुं०) हर्ष, सुख, प्रसन्नता।
आनन्दाना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना।
आनन्दित-(सं०वि०) हर्षयुक्त, प्रसन्न।
आनन्दी-(सं०वि०) प्रसन्न रहने वाला।
अनवान-(हिं० स्त्री०) चमक दमक, सजधज।
आनमन-(सं०नपुं०) विनय, झुकाव।
आना-(हिं०पुं०) एक रूपये का सोलहवाँ भाग, (हिं०क्रि०) आगमन करना, होना, बीतना, लौटना, आरंभ होना, पकना, पहुँचना, मिलना, फलफूल लगना।
आनीत-(सं०वि०) गृहीत, लाया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आनुपूर्वी-(सं०वि०) क्रमानुसार।
आनुषङ्गिक-(सं०वि०) अनुरूप,बराबर का, प्रासङ्गिक।
आन्त्रिक-(सं०वि०) अन्त्र सम्बन्धी।
आन्दोलक-(सं०पुं०) झुलाने वाला।
आन्दोलन-(सं० नपुं०) झोंका, कम्प, अनुसन्धान, विप्लव, उपद्रव।
आप-(सं०पुं०) जल का समूह, समास के अन्त में इस शब्द का अर्थ, 'पाने वाला' होता है, यथा—दुराप, (हिं० सर्व०) स्वयं।
आपगा-(सं०स्त्री०) नदी।
आपण-(सं० पु०) हाट।
आपत्-देखा आपद्।
आपतन-(सं०नपुं०) अवतरण,उतार।
आपत्ति-(सं०स्त्री०) क्लेश, विपत्ति, संकट।
आपत्ति-(सं० स्त्री०) विपत्ति, दुःख, कष्ट, दुर्घटना।
आपदा-(हिं०स्त्री०) क्लेश, कष्ट का समय। **आपद्ग्रस्त**-(सं०वि०) विपत्ति से पीड़ित।
आपद्धर्म-(सं०पुं०) विपत्ति के समय विधान- करने का धर्म।
आपन,आपना-(हिं०सर्व०) अपना,निजी
आपनिधि-(हिं०पुं०) समुद्र,जलनिधि।
आपरूप-(हिं०वि०) अपने रूप रंग का; (सर्व०) स्वयं आप; (वि०) मूर्तिमान्, साक्षात्।
आपस-(हिं०स्त्री०) आत्मीयता, मेल जोल; **आपसी**-(हिं०वि०) आत्मीय, सम्बन्धी।
आपा—(हिं० पुं०) अपना अस्तित्व, दर्प, घमंड; **आपे में न रहना**-अधिकार के बाहर होना, अति क्रोध दिखलाना।
आपाधापी-(हिं०स्त्री०) अपने अपने कार्य की चिन्ता,।
आपान-(क)-(सं०नपुं०) मद्य पीने का स्थान या दूकान।
आपूप-(सं०पुं०) टिकिया, रोटी, मालपूआ।
आपूर-(सं०वि०) व्याप्त, भरा, पूरा।
आपेक्षिक-(सं०वि०) तुलना द्वारा प्राप्त, निर्भर होने वाला।
आप्त-(सं० वि०) प्राप्त, विश्वस्त, सामान्य रूप से प्रयोग में आनेवाला; (पुं०) योग्य पुरुष, मित्र।
आफुक-(सं०नपुं०) अहिफेन,अफीम।
आबद्ध-(सं०वि०) प्रतिबद्ध,बँधा हुआ।
आभरण-(सं०नपुं०) अलंकार, **आभूषण**- पालन पोषण।
आभरन-(हिं०पुं०) आभरण।
आभा-(हिं० स्त्री०) दीप्ति, चमक, कान्ति, प्रतिबिम्ब, छाया।
आभास-(सं०पुं०) संकेत,झूठा दिखावा, मिथ्या ज्ञान।
आभूखन(हिं०पुं०) अलंकार।
आम-(सं०वि०) अपक्व, कच्चा, जो पचा न हो। **आम**(हिं०पुं०) आम्र, रसाल,वृक्ष तथा फल दोनों के लिये व्यवहार होता है।
आमक-(सं०पुं०) कूष्माण्ड, कुम्हड़ा।
आमड़ा-(हिं०पुं०) आम्रतक, एक बड़ा आम के बराबर का वृक्ष जिसके बेर के बराबर खट्टे फल होते हैं।
आमन्त्रण-(सं०नपुं०) निमन्त्रण।
आमन्त्रित,-(सं०वि०) न्योता पाया हुआ
आमय-(सं०पुं०) आघात, चोट,रोग।
आमरख-(हिं०पुं०) देखो आमर्ष।
आमरण, आमरणान्त-(सं० वि०) मृत्युपर्यन्त।
आमर्द-(सं०पुं०) संकोचन, दबाव,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आमला-(हिं०पुं०) आँवला ।
आमाशय-(सं०पुं०) जठर, कोष्ठ, पेट
आमिख-(हिं०पुं०) देखो आमिष ।
आमिष-(सं०नपुं०) मांस,
आमिष-(सं०नपुं०) मांस, भोजन, तृष्णा ।
आमी-(हिं०स्त्री०) छोटा कच्चा आम, गेहूँ, जव की भूनी हुई बाल ।
आमीलन-(सं०नपुं०) नेत्रों का बन्द करना ।
आमुक्त-(सं०वि०) आबद्ध, विमुक्त ।
आमुख-(सं०नपुं०) आरम्भ, प्रस्तावना
आमूल-(सं०अव्य०) मूल पर्यन्त ।
आमोद-(सं०पुं०) प्रसन्नता; आमोद-
प्रमोद-(सं०पुं०) भोगविलास, राग-रंग ।
आम्र-(सं०पुं०) आम का वृक्ष या फल ।
आम्रेडित-(सं०वि०) बारबार कहा हुआ ।
आय-(सं०पुं०) लाभ, धनागम ।
आयत-(सं०वि०) विस्तृत, दीर्घ, विशाल; (पुं०) ज्यामिति का दीर्घ चतुरस्त्र आकार ।
आयतन-(सं०नपुं०) आश्रय, विश्राम स्थान ।
आयन्ती, पायन्ती-(हिं० स्त्री०) सिर-हाना, पैताना; (क्रि०वि०) ऊपर नीचे
आयस-(सं०वि०) मोहमय; (पुं०) लोहा,
आयसु-(हिं०पुं०) आज्ञा ।
आया-(हिं०क्रि०) उपस्थित हुआ, आ पहुँचा ।
आयात-(सं०वि०) आगत, आया हुआ ।
आयान-(सं०नपुं०) आगमन, स्वभाव ।
आयाम-(सं० पुं०) विस्तार, लंबाई, नियम ।
आयास-(सं०पुं०) अति यत्न, परिश्रम ।
आयी, आई-(हिं०क्रि०) उपस्थित हुई, आ पहुँची ।
आयु-(सं०नपुं०) आयुष्य ।
आयुत-(सं०वि०) आर्द्रीभूत, पिघला हुआ
आयुध-(सं०पुं०) शस्त्र; **आयुध-जीवी**-(सं० पुं०) भट, योद्धा । **आयु-धागार**-(सं०नपुं०) शस्त्रालय ।
आयुर्दा-(हिं०स्त्री०) आयुष्य ।
आयुष्मान्-(सं०वि०) दीर्घजीवी, चिर-जीवी ।
आयुष्य-(सं०नपुं०) आयु ।
आयोजन-(सं०नपुं०) प्रबंध, नियुक्ति, उद्योग ।
आयोधन-(सं०पुं०) रणक्षेत्र ।
आर-(सं०पुं०) प्रान्त भाग, गमन, पीतल, कोना, पहिये का आरा; (स्त्री०) लोहे की कील, डंक, टेकुवा,
आरक्त-(सं०वि०) कुछ लाल रङ्ग का ।
आरज-(हिं०पुं०) देखो आर्य ।
आरण्य-(सं०वि०) वनजात, जंगली ।
आरत-(सं०वि०) शान्त, सीधा, (हिं०) देखो आर्त ।
आरति-(सं०स्त्री०) निवृत्ति, ठहराव, देवता की प्रतिमा के चारों ओर दीपक घुमाना, आरती उतारने का पात्र, आरती के समय पढ़ने का स्तोत्र ।
आरती-(हिं०स्त्री०) देखो आरति ।
आरब्ध-(सं०वि०) आरंभ किया हुआ ।
आरम्भ-(सं०पुं०) उपक्रम, प्रस्तावना ।
आरसी-(हिं०स्त्री०) दर्पण, जड़ी हुई अंगूठी जिसको स्त्रियां अंगूठे में पहिरती हैं ।
आरा-(हिं०पुं०) लकड़ी काटने की दांतेदार लोहे की चौड़ी पट्टी, पहिये में बेलन से पुट्ठी तक जड़ी हुई लकड़ी की पटरी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आराधक-(सं०वि०) उपासना करने वाला। **आराधन**-(सं०नपुं०) उपासना, सेवा, पूजा।
आराम-(सं०पुं०) उपवन, फुलवाड़ी।
आरी-(हिं०स्त्री०) छोटा आरा।
आरूढ-(सं०वि०) चढ़नेवाला, चढ़ा हुआ, स्थिर, तत्पर।
आरोग-(हिं०) देखो आरोग्य।
आरोग्य-(सं० नपुं०) रोग शून्यता, (वि०) स्वस्थ।
आरोप-(सं०पुं०) निवेशन, स्थापन।
आरोपण-(सं० नपुं०) पौधे को एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में बैठाना, स्थापित करना।
आरोह-(सं०पुं०) आक्रमण, नीचे से ऊपर को उठान।
आर्जव-(सं०नपुं०) सरलता, सदाचार, सचाई।
आर्त-(सं०वि०)पीड़ित, दुःखित, अस्वस्थ
आर्ति-(सं०स्त्री०) पीड़ा, मनोव्यथा।
आर्द्र-(सं०वि०) भीग हुआ, ओदा।
आर्य-(सं०पुं०) कुलीन, सभ्य, सज्जन, पूज्य, श्रेष्ठ, वेदोक्त प्राचीन सभ्य जाति। **आर्यता**-(सं०स्त्री०) माननीय आचरण। **आर्यपुत्र**-(सं०पुं०) उपाध्याय का पुत्र, नाटच भाषा में पति को पुकारने का शब्द।
आर्या-(सं०स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, सास, एक अर्ध मात्रिक छन्द का नाम। **आर्यावर्त**-(सं०पुं०) भारतवर्ष का उत्तरी भाग।
आर्ष-(सं०वि०) ऋषि सम्बन्धी।
आल-(सं०नपुं०) मछली या मेढ़क का अंडा; (वि०) अधिक, भीगा,
आलकस-(हिं०पुं०) देखो आलस्य।
आलकसी-(हिं०वि०) आलसी।
आलन-(हिं०पुं०) पलाल, बिचाली।
आलना-(हिं०पुं०)पक्षिका स्थान, घोंसला
आलपीन-(हिं०स्त्री०) पत्र आदि में लगाने की घुंडीदार सूई।
आलम्ब-(सं०पुं०) आश्रय, आधार।
आलय-(सं०पुं०) घर, आधार, स्थान।
आलवाल-(सं०पुं०) वृक्ष के चारो ओर का थाला।
आलस-(हिं०पुं०) आलस्य।
आलसी-(हिं०वि०) आलस्य युक्त।
आलस्य-(सं० नपुं०) काम करने में अनुत्साह।
आला-(हिं०पुं०) ताखा, मोखा, अरवा
आलान-(सं०नपुं०) हाथी को बाँधने का, खूँटा, गाँठ, बन्धन।
आलाप-(सं०पुं०) संभाषण, कथन, गणित के प्रश्न का निर्देश, संगीत में सातों स्वरों का राग सहित उच्चारण।
आलि-(सं०स्त्री०)सखी, सहेली, पंक्ति, सन्तति, नाला; (पुं०) बिच्छू, भौरा
आलिङ्ग, आलिङ्गन-(सं०नपुं०) गले से गला लगाना, अँकवारी।
आलिञ्जर-(सं०पुं०) मिट्टी का जल रखने का बड़ा घड़ा।
आलिन्द-(सं०पुं०) घर के सामने का मञ्च।
आली-(सं०स्त्री०)सखी, सहेली, पंक्ति।
आलीन-(सं०वि०)गलाहुआ, पिघलाहुआ
आलू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कन्द जो तरकारी बनाकर खाया जाता है।
आलेख-(सं०पुं०) लिखावट, लेख;
आलेख्य-(सं०नपुं०) चित्र।
आलोक-(सं०पुं०) प्रकाश, चमक।
आलोचक-(सं०नपुं०) दर्शन, विवेक।
आल्हा-(हिं०पुं०) एक विख्यात वीर जो पृथ्वीराज के समय महोबे में थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आव-(हिं०पुं०) आयुष्य ।
आवआदर-(हिं०पुं०) आदर, सत्कार।
आवभाव-(हिं०क्रि०) आदर सत्कार ।
आवरण-(सं०नपुं०) वेष्टन, आवृत्ति ।
आवरणपत्र-पुस्तक इत्यादि की रक्षा के लिये इसपर लपेटा हुआ पत्र ।
आवर्जित-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ
आवर्त-(सं०पुं०) जल का भँवर; चक्कर, संशय; (वि०) घूमा हुआ, मुड़ा हुआ । **आवर्तन**-(सं०नपुं०) चक्कर, घुमाव, वेष्टन, गुणन ।
आवर्तनीय-(सं०वि०) गुणन करने योग्य दोहराने योग्य। **आवर्तित**-(सं०वि०) अभ्यस्त, गुणा किया हुआ ।
आवश्यक-(सं०वि०) नियत। **आवश्यकता**-(सं०स्त्री०) प्रयोजन, अपेक्षा ।
आवाँ-(हिं०पुं०) वह गड्ढा जिसमें कोंहार बर्तन पकाते हैं, पजावा ।
आवागमन-(सं०नपुं०) आना जाना, बारबार जन्म लेना और मरना ।
आवाजाही-(हिं०स्त्री०) आवागमन ।
आवाल-(सं०नपुं०) देखो आलवाल ।
आवास-(सं०पुं०) वास स्थान ।
आवाहन-(सं०नपुं०) मन्त्र द्वारा देवता को बुलाना, निमन्त्रण ।
आविद्ध-(सं०वि०) छेदा हुआ, फेंका हुआ ।
आविर्भाव-(सं०पुं०) प्रकाश, संचार, उत्पत्ति। **आविर्भूत**-(सं०वि०) प्रकाशित, उत्पन्न ।
आविष्कर्ता-(सं०वि०) प्रकाशक; **आविष्कार**-(सं०पुं०) प्रकाश, नई विधि ।
आवृत-(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ, घिरा हुआ, फैला हुआ, व्याप्त ।
आवृत्ति-(सं०स्त्री०) बारंबार अभ्यास करना, दोहराना ।
आवेग-(सं०पुं०) उत्कण्ठा सहित मन का वेग, घबड़ाहट ।
आवेश-(सं०पुं०) मनकी प्रेरणा, अहंकार क्रोध, गर्व, पहुँच ।
आवेष्ट-(सं०पुं०) घेरा । **आवेष्टन**-(सं०नपुं०) आवरण, लपेटने या ढांपने की वस्तु ।
आश-(सं०पुं०) भोजन, खाना खाने वाला
आशंका-(सं०स्त्री०) भय, सन्देह, त्रास ।
आशय-(सं०पुं०) अभिप्राय, आधार, इच्छा, तात्पर्य, आश्रय, गड्ढा ।
आशा-(सं०स्त्री०) दिशा, किसी पदार्थ के मिलने की इच्छा ।
आशीर्वाद-(सं०पुं०) मंगल कामना सूचक वाक्य ।
आशीविष-(हिं०पुं०) सर्प, साँप ।
आशु-(सं०वि०) शीघ्र । **आशुकवि**-(सं०पुं०) वह कवि जो तत्क्षण कविता बनाता हो। **आशुगामी**-(सं०वि०) शीघ्र चलनेवाला, **आशुतोष**-(सं०पुं०) शिव; (वि०) शीघ्र प्रसन्न होनेवाला ।
आश्चर्य-(सं०नपुं०) विस्मय, अचंभा।
आश्रम-(सं०पुं०) ऋषिमुनि का वासस्थान, तपोवन, मठ, विश्राम-स्थान, शास्त्रोक्त चार प्रकार का धर्म विशेष **आश्रमी**-(सं०वि०) आश्रम में रहनेवाला
आश्रय-(सं०पुं०) अवलम्बन, सहारा। शरण, गृह, संबंध, संयोग, मूल, जीवनोपाय का हेतु ।
आश्रित-(सं०वि०) आश्रय प्राप्त, शरणागत, सेवक, आधीन, अवलंबित
आश्वास-(सं०पुं०) निवृत्ति, सान्त्वना; **आश्वासक**-(सं०वि०) सान्त्वना देनेवाला
आश्विन-(सं०पुं०) क्वार का महीना,
आषाढ़-(सं०पुं०) आषाढ़ का महीना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आषाढ़ी-(सं०स्त्री०) आषाढ़ मास की पूर्णिमा, गुरुपूर्णिमा।
आस-(सं०पुं०) आसन, बैठक; (हिं० स्त्री०) आशा, भरोसा।
आसकत-(हिं०पुं०) आलस्य।
आसक्त-(सं०वि०) लिप्त, लीन।
आसथा-(हिं०पुं०) देखो आस्था।
आसन-(सं०नपुं०) स्थिति, बैठने का ढंग, बैठक, बैठने की वस्तु।
आसनी-(सं०स्त्री०) छोटा आसन।
आसन्न-(सं०स्त्री०) निकटस्थ, समीप लगा हुआ।
आसपास-(हिं०क्रि०वि०) समीप, इधर उधर; (पुं०) पड़ोसी।
आसमुद्र-(सं०अव्य०) समुद्र पर्यन्त।
आसय-(हिं०पुं०) देखो आशय।
आसरा-(हिं० पुं०) आशा, भरोसा, अवलम्ब।
आसव-(सं०पुं०) फलों का मद्य, अरिष्ट
आसा-(हिं०स्त्री०) आशा, सोना चाँदी मढ़ा हुवा डंडा, जिसको चोबदार उत्सव में लेकर आगे आगे चलते हैं।
आसादन-(सं०नपुं०) प्राप्ति, स्थापन।
आसिक्त-(सं०वि०) भिगाया हुआ, सींचा हुआ।
आसीन-(सं०वि०) उपविष्ट, विराजमान
आसीस-(हिं०पुं०) आशीर्वाद।
आसीसा-(हिं०पुं०) तकिया।
आसु-(हिं०सर्व०) इसका; (क्रि०वि०) शीघ्र, जल्दी।
आसुर-(सं०वि०) असुर संबंधी, पैशाची
आसुरीय-(सं० वि०) असुर संबंधी, राक्षसी।
आसुरीय-(सं०वि०) राक्षस संबंधी।
आसेक-(सं० पुं०) वृक्षों को जल से थोड़ा सींचना।
आसेध-(सं०पुं०) रोक रखना।
आसेवित-(सं०वि०) बारंबार सेवा किया हुआ।
आसौं-(हिं०क्रि०वि०) इस वर्ष, इस साल
आस्तिक-(सं०वि०) ईश्वर और परलोक का अस्तित्व माननेवाला, धार्मिक।
आस्तीर्ण-(सं०वि०) विस्तीर्ण, फैला हुआ
आस्था-(सं०स्त्री०) अवलम्बन, सहारा, श्रद्धा।
आस्थायिका-(सं०स्त्री०) सभा।
आस्थित-(सं०वि०) प्राप्त, आश्रित।
आस्पद-(सं०नपुं०) स्थान, पद, काम, प्रतिष्ठा, अवलम्बन।
आस्य-(सं०नपुं०) मुख, मुंह, आकृति।
आस्वाद-(सं०पुं०) रस, स्वाद, रस का अनुभव।
आह-(हिं०अव्य०) हाय, (स्त्री०) शोक, पीड़ा, दुःख, खेद।
आहट-(हिं०स्त्री०) पैर की खटक, खटका, टोह, पता।
आहत-(सं०वि०) चोट खाया हुआ।
आहन-(हिं०पुं०) भीत उठाने के लिये मिट्टी और तृण का मिश्रण।
आहरन-(हिं०स्त्री०) स्थूणी, लोहार या सोनार की निहाई।
आहव-(सं०पुं०) युद्ध, लड़ाई, ललकार।
आहा-(हिं०अव्य०) हर्ष तथा आश्चर्य सूचक शब्द।
आहार-(सं०पुं०) भोजन द्रव्य, अन्न।
आहुत-(सं०नपुं०) आतिथ्य सत्कार।
आहुति-(सं०स्त्री०) मन्त्र द्वारा अग्नि में घृतादि फेंकना।
आहूत-(सं०वि०) बुलाया हूआ, पुकारा हुआ।
आहै-(सं०स्त्री०) पुकार, बुलाहट, घृत, तिल इत्यादि से हवन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आहे-(हिं०क्रि०) है।
आहूत-(सं०वि०) लाया हुआ।
आह्निक-(सं०वि०) दैनिक, प्रतिदिनका
आह्लाद-(संपुं०) आनन्द, प्रसन्नता।
आह्लादित-(सं०वि०) आनन्दयुक्त
आह्व-(सं०पुं०) नाम, संज्ञा, पुकारने का नाम; आह्वान-(सं०नपुं०) पुकार, बुलावा।

इ

इ-हिन्दी वर्णमाला का तीसरा स्वर वर्ण, इसका स्थान तालु है इसका दीर्घ रूप "ई" होता है। इन्द्र।
इंगुरोटी-(हिं०स्त्री०) इंगुर रखने की डिबिया।
इंचना-(हिं०क्रि०) आकर्षित होना, खिचना।
इंडुरी-(हिं०स्त्री०) गेंडुरी, कुण्डली।
इंडुवा-(हिं०पुं०) कपड़ा लपेट कर बनाई हुई गेंडुरी जिसको माथे पर रखकर इसपर लोग बोझ ले जाते हैं।
इंदारा (इनारा)-(हिं०पुं०) कूप, कुवां
इक-(हिं०पुं०) एक संख्या, एक।
इकंग-(हिं०वि०) एक ओर का।
इकंगा-(हिं०वि०) अकेला, निर्जन।
इकटक-(हिं०वि०) स्थिर, टकटकी लगाया हुआ।
इकट्ठा-(हिं०वि०) एकत्र, मिला हुआ; (क्रि०वि०) एक साथ मिल कर।
इकता-(हिं०स्त्री०) देखो एकता।
इकताई-(हिं०स्त्री०) अकेलापन।
इकतान-(हिं०वि०) सदृश, अभिन्न।
इकतार-(हिं०वि०) समान, बराबर।
इकतालीस-(हिं०वि०) चालीस और एक (की संख्या)।
इकतीस (इकत्तिस)-(हिं०वि०) तीस और एक (की संख्या)।
इकलड़ा-(हिं०वि०) एक ही डोरी में बँधा हुआ; (पुं०) एक लर का हार।
इकला-(हिं०वि०) देखो अकेला।
इकलाई-(हिं०स्त्री०) एक पाट की बनी हुई महीन वस्त्र की चादर।
इकलौता-(हिं०वि०) अपने माँ बाप का एक ही (पुत्र), अकेला।
इकल्ला-(हिं०वि०) अकेला, एकहरा।
इकसठ-(हिं०वि०) साठ और एक।
इकसार-(हिं०वि०) समान, सदृश।
इकहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और एक।
इकहरा-(हिं०वि०) एक ही टुकड़ेका
इकाई-(हिं०स्त्री०) एकाङ्क।
इकान्त-(हिं०) देखो एकान्त।
इकेला-(हिं०वि०) देखो अकेला।
इकोतर-(हिं०वि०) एक अधिक।
इकौता-(हिं०पुं०) अंगुलियों में होने वाला फोड़ा।
इक्कस-(हिं०पुं०) ईर्षा, डाह।
इक्का-(हिं०वि०) अकेला, अनोखा, निराला; (पुं०) दुपहिया गाड़ी जिसमें एक घोड़ा जुता रहता है, ताश का पत्ता जिसमें एक ही बूटी होतीहै।
इक्कावन-(हिं०वि०) देखो इक्यावन।
इक्कासी-(हिं०वि०) देखो इक्यासी।
इक्की-(हिं०स्त्री०) एक बूटी का ताश।
इक्कीस-(हिं०वि०) बीस और एक; (पुं०) बीस और एक की संख्या।
इक्यानबे-(हिं०वि०) नब्बे और एक।
इक्यावन-(हिं०वि०) पचास और एक।
इक्यासी-(हिं०वि०) अस्सी और एक; (पुं०) अस्सी और एक की संख्या।
इक्षु-(सं०पुं०) ईख, गन्ना।
इखु-(हिं०पु०) देखो इक्षु।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इखट्ठा-(हिं०क्रि०वि०) एकत्र होकर, मिलकर।

इङ्गित-(सं० नपुं०) अभिप्राय का प्रकाशन, अन्वेषण, खोज; (वि०) संकेत किया हुआ।

इच्छक-(सं०वि०) अभिलाषी।

इच्छा-(सं०स्त्री०) वाँछा, लालसा, अभिलाषा।

इच्छाफल-(सं० नपुं०) गणित में फल की उपपत्ति।

इच्छित-(सं०वि०) वांछित।

इच्छु-(हिं०पुं०) इक्षु, ईख।

इज्य-(सं०पुं०) पूजनीय व्यक्ति।

इठलाना-(हिं०क्रि०) इतराना, गर्व के साथ चलना, मटकना।

इड़ा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, गाय, स्तुति, सन्तोष।

इत-(हिं०क्रि०वि०) इस ओर, इधर, यहाँ।

इत उत-(हिं०क्रि०वि०) इधर उधर।

इतना-(हिं०वि०) एतावत।

इतर-(सं०वि०) अन्य, दूसरा, अवशेष; (हिं०पुं०) अतर।

इतराना-(हिं०क्रि०) अभिमान दिखलाना, इठलाना।

इतरेतर-(सं०वि०) अन्योन्य, परस्पर।

इतवार-(हिं०पुं०) आदित्यवार, रविवार।

इति-(सं०अव्य०) समाप्ति सूचक अव्यय; (स्त्री०) पूर्णता, समाप्ति। **इतिकर्तव्य**-नियमानुसार। **इतिकर्तव्यता**-धर्म।

इतिमात्र-(सं०वि०) केवल, इतना ही।

इतिवृत्त-(सं०नपुं०) कथा, कहानी।

इतिहास-(सं०पुं०) घटनाओं का कालक्रम के अनुसार वर्णन, प्राचीन आख्यान

इतेक-(हिं०वि०) इतना ही।

इतो-(हिं०वि०) इतना, इस मात्रा में।

इत्ता-(हिं०वि०) देखो इतना।

इत्यादि-(सं० अव्य०) इसी प्रकार, यही, सब, अन्य। **इत्यादिक**-(सं०) इसी प्रकार से दूसरा।

इत्युक्त-(सं०वि०) ऐसा कहा हुआ।

इदं-(सं०सर्व०) यह।

इदानीं-(सं० अव्य०) अधुना, अभी, अब।

इद्ध-(सं०वि०) दग्ध, जला हुआ।

इधर-(हिं०क्रि०वि०) यहाँ, इस ओर, में, वहाँ, चारों ओर।

इन-(हिं०सर्व०) 'इस' का बहुवचन।

इनारा-(हिं०पुं०) कूप, कुवाँ।

इनेगिने-(हिं०क्रि०वि०) अल्प, थोड़े।

इंदिया-(हिं०पुं०) मत, अभिप्राय।

इन्दु-(सं०पुं०) चन्द्रमा, कर्पूर।

इन्द्र-(सं०पुं०) देवताओं के राजा **इन्द्रगोप**-(सं०पुं०) बीरबहूटी नाम का कीड़ा। **इन्द्रचाप**-(सं०पुं०) इन्द्र धनुष। **इन्द्रजाल**-(सं०नपुं०) छल, धोखा, माया, बाजीगरी। **इन्द्रदमन**-(सं०नपुं०) नदी में बाढ़ आने पर इसका किसी निर्धारित स्थान पर पहुँचना। **इन्द्रधनुष**-(सं०नपुं०) देखो इन्द्रचाप। **इंद्रवज्रा**-(सं०स्त्री०) एक छन्द जिसमें चार पद होते हैं और प्रत्येक पद में ग्यारह अक्षर होते हैं।

इन्द्रवधू-(सं०स्त्री०) बीरबहूटी नाम का कीड़ा।

इन्द्रिय-(सं०पुं०) शारीरिक, बल, शरीर के अवयव।

इंद्री-(हिं०पुं०) देखो इंद्रिय।

इन्धन-(सं०नपुं०) आग जलाने की लकड़ी, तृण इत्यादि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इभ-(सं०नपुं०) हाथी।
इमरती-(हिं०स्त्री०) उड़द की पीठी की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई।
इमली-(हिं०स्त्री०) एक बड़ा वृक्ष जिसका फल और पत्तियाँ खट्टी होती हैं।
इमि-(हिं०क्रि०वि०) इस प्रकार से
इरषा-(हिं०स्त्री०) देखो ईर्षा।
इरा-(हिं०स्त्री०) भूमि, रात्रि, जल।
इला-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, वाक्य, गाय
इलाची-(हिं०स्त्री०) देखो इलायची।
इल्ला-(हिं०पुं०) त्वचा के ऊपर निकला हुआ मसा।
इव-(सं०अव्य०) सदृश, तरह, समान।
इषण-(हिं०स्त्री०) प्रबल इच्छा।
इषिका-(सं०स्त्री०) रंगसाज की बाल की बनी हुई कूंची।
इषु-(सं०पुं०) बाण, तीर।
इष्ट-(सं०वि०) अभिलषित, वांछित, (पुं०) इष्ट देवता, कुल देवता, पति
इष्टक-(सं०पुं०) ईंट। **इष्टका**-(सं० स्त्री०) छोटी ईंट।
इष्ट जन-(सं०पुं०) प्रिय व्यक्ति,
इष्टि-(सं०स्त्री०) यज्ञ, अभिलाषा, इच्छा, संग्रह। **इष्टिका**-(सं०स्त्री०) ईंट।
इस-(हिं०वि०) 'यह' शब्द का रूप विशेष जो विभक्ति जुटने पर 'इस' होजाता है।
इसीका-(हि०सर्व०) 'यह' का संबंध कारक।
इसे-(हिं०वि०) इसको, इसके लिये।
इस्तिरी-(हिं०स्त्री०) कपड़े की तह जमाने का साधन। (हिं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
इहकाल-(सं०पुं०) वर्तमान समय।
इह लोक-(सं०पुं०) यह संसार।
इहाँ-(हिं०क्रि०) यहाँ, इस स्थानमें।
इहागत-(सं०पुं०) यहाँ पर आया हुआ

ई

ई-हिन्दी वर्णमाला का चौथा स्वर वर्ण, यह इकार का दीर्घ रूप है
ईंगुर-(हिं०पुं०) सिन्दूर।
ईधे-(हिं०क्रि०वि०) इस ओर।
ईंचना-(हिं०क्रि०) खींचना, ऐंठ लेना।
ईंट-(हिं०स्त्री०) साँचे में गीली मिट्टी को दबाकर बनाया हुआ टुकड़ा जो भीत इत्यादि बनाने के काम में आता है, ताश का एक रंग।
ईंटा-(हिं०पुं०) देखो ईंट।
ईंडवा-(हिं०पुं०) गेंडुरी जिसको सर पर रखकर लोग बोझ उठाते हैं।
ईंडवी-(हिं०स्त्री०) पगड़ी।
ईंडरी, ईंडुरी-(हिं०स्त्री०) गेंडुरी।
ईंढ़-(हिं०वि०) सदृश, बराबर।
ईंदूर-(हिं०पुं०) चूहा, मूसा।
ईंधन-(हिं०पुं०) ईंधन, जलाने की लकड़ी
ईकार-(सं०पुं०) चतुर्थ वर्ण "ई"।
ईक्षक-(सं०पुं०) देखने वाला मनुष्य।
ईक्षण-(सं०नपुं०) दर्शन, देखना, आँख, जाँच, विचार।
ईख-(हिं०स्त्री०) इक्षु, गन्ना, ऊख।
ईखना-(हिं०क्रि०) देखना।
ईछना-(हिं०क्रि०) इच्छा करना
ईछा-(हिं०स्त्री०) देखो इच्छा।
ईजति-(हिं०स्त्री०) मर्यादा, मान।
ईठ-(हिं०पुं०) इष्ट, मित्र। **ईठना**-(हिं०क्रि०) इच्छा करना।
ईठि-(हिं० स्त्री०) देखो इष्टि, प्रीति, चेष्टा, यत्न।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ईड़ा-(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
ईढ़, ईढ़ा-(हिं०पुं०) हठ।
ईढ़ी-(हिं०वि०) हठी।
ईतर-(हिं०पुं०) इतराने वाला।
ईति-(सं०स्त्री०) झगड़ा, छूत का रोग खेती को हानि पहुँचाने वाली आपत्ति। पीड़ा, कष्ट, दुःख।
ईप्सा-(सं०स्त्री०) अभिलाषा, वांछा, इच्छा।
ईप्सित-(सं०वि०) वांछित।
ईरषा-(हिं०स्त्री०) देखो ईर्षा।
ईरित-(सं०वि०) प्रेरित, कहा हुआ।
ईर्षा-(सं०स्त्री०) क्रोध, डाह। ईर्षालु-(सं०वि०) ईर्षा करनेवाला, डाह करनेवाला।
ईर्षी-(सं०वि०) डाह रखने वाला।
ईश-(सं०वि०) अधिकारयुक्त, प्रधान, बड़ा; (पुं०) स्वामी, नेता, राजा।
ईशान-(सं० पुं०) प्रभु, पूरब और उत्तर के बीच की दिशा।
ईश्वर-(सं०पुं०) शिव, ब्रह्मा, स्वामी, मालिक।
ईश्वरी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती। (वि०) दैवी।
ईर्षणा-(सं०स्त्री) त्वरा, शीघ्रता।
ईषत्-(सं०अव्य०) अल्प, किंचित्, थोड़ा।
ईषत्स्पृष्ट-(सं०वि०) थोड़ा छुआ हुआ; अर्धस्वर 'य, र, ल, व' के लिये प्रयोग होता है।
ईषदुष्ण-(सं०वि०) थाड़ा गरम, मन्दोष्ण
ईषद्धास-(सं०पुं०) मुसकुराहट।
ईषना-(हिं०स्त्री०) प्रबल इच्छा, एषणा
ईस-(हिं०पुं०) ईश, ईश्वर।
ईसन-(हिं०) ईशान कोण।
ईसर-(सं०पुं०) ऐश्वर्य, महत्व।
ईहग-(सं०वि०) इच्छानुसार चलनेवाला।
ईहा-(सं०स्त्री०) उद्यम, व्यवसाय, वांछा, चेष्टा।
ईहित-(सं०वि०) अपेक्षित।

उ

उ-हिन्दी वर्णमाला का पाँचवा स्वर वर्ण, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है; (अव्य०) हाँ, ठीक भी; (पुं०) शिव, ब्रह्मा, मनुष्य।
उँ-(हिं०अव्य०) एक अव्यक्त उच्चारण जो मुख बन्द रहते ही किया जाता है, क्या, नहीं अरे।
उँकोत-(हिं०वि०) वर्षाकाल में पैर के सड़ने का रोग।
उँगनी-(हिं०स्त्री०) गाड़ी के पहिये में तेल देने का काम।
उँगली-(हिं०स्त्री०) अंगुलि।
उँघाई-(हिं०स्त्री०) निद्रा, झपकी।
उँचन-(हिं०पुं०) उदच्चन, खाट की विनाबट कसने की डोरी, अंदवाइन
उँचना-(हिं० क्रि०) उंचन कसना, अदवाइन कसना।
उँचाई-(हिं०स्त्री०) उच्चता, विशिष्टता
उँचान-(हिं०पुं०) देखो उँचाई।
उँछ-(हिं० स्त्री०) कृषिफल काट लेने पर गिरे हुए दानों को बीन कर इकट्ठा करना।
उजरिया-(हिं०स्त्री०) उंजेली, ऊँजियार, (हिं०पुं०) प्रकाश, उँजेला।
उँदर-(हिं०पुं०) चूहा।
उँह-(हिं० अव्य०) हाय, नहीं।
उअना-(हिं०क्रि०) उदय होना, निकलना।
उआना-(हिं०क्रि०) उठाना, जगाना,
उऋण-(हिं०वि०) ऋण-निर्मुक्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उचकना-(हिं०क्रि०) निकल जाना, अलग होना, दूर होना।
उटकना-(हिं०क्रि) उखाड़ना, तोड़ना, ढूंढ़ना, भेद लेना।
उकटा-(हिं०वि०) बारम्बार उपकार को याद दिलाने वाला।
उकठना-(हिं०क्रि०) शुष्क होना, सूखना, । **उकठा**-(हिं०वि०) शुष्क, सूखा हुआ।
उकड़ूं-(हिं०पुं०) बैठने की एक मुद्रा।
उकताना-(हिं०क्रि०) उगताना, घबड़ाना।
उकति-(हिं०स्त्री०) देखो उक्ति।
उकलाना-(हिं०क्रि०) तह अलग होना, उचड़ना, उधड़ना।
उकवथ-(हिं०पुं०) उंकौत, एक प्रकार का चर्मरोग।
उकसना-(हिं०क्रि०) उछलना, फूलना, उभड़ना, निकलना।
उकसनि-(हिं०स्त्री०) उत्तेजना, घबड़ाहट।
उकसवाना-(हिं०क्रि०) निकलवा देना।
उकसाई-(हिं०क्रि०) निकसवाई, हटवाई।
उकसाना-(हिं०क्रि०) उभाड़ना, चढ़ाना, आगे बढ़ाना, सुलगाना, छेंड़ना।
उकारान्त-(सं० वि०) जिस शब्द के अन्त में उकार हो।
उकारना-(हिं०क्रि०) देखो उकेलना।
उकासना-(हिं०क्रि०) उभाड़ना, खोलना।
उकीरना-(हिं०क्रि०) खोदना, उखाड़ना।
उकुति-(हिं० स्त्री०) देखो उक्ति।
उकुसना-(हिं०क्रि०) उजाड़ना, उघेड़ना।
उकेलना-(हिं०क्रि०) परत अलगाना। उघेड़ना।
उकेला-(हिं०पुं०) रस्से की ऐंठन, परत।
उकौना-(हिं०पुं०) गर्भिणी स्त्री की लालसा, दोहद।
उक्त-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
उक्ति-(सं०स्त्री०) कथन, वचन, निर्देश
उखड़ना-(हिं०क्रि०) निर्मूल होना, गिरना, रुकना, लड़खड़ाना, लुप्त होना, भागना, बेसुरा हो जाना।
उखम-(हिं०पुं०) उष्म, गरमी, ताप।
उखमज-(हिं०वि०) उष्मज, गरमी से उत्पन्न; (पुं०) उपद्रव।
उखली-(हिं०स्त्री०) पत्थर या लकड़ी का वह पात्र जिसमें अन्न डालकर मूसल से कूट कर इसकी भूसी अलगाई जाती है।
उखाड़-(हिं०पुं०) उखाड़ने का काम, छिन्न भिन्न करना, अलग करना, भगाना, हटाना, नष्ट करना, भड़काना, असन्तुष्ट करना।
उगटना-(हिं०क्रि०) उधेड़ना, उपहास करना।
उगदना-(हिं०क्रि०) बोलना, कहना।
उगना-(हिं०क्रि०) प्रगट होना, देख पड़ना, जमना, उपजना।
उगलना-(हिं०क्रि०) गुप्त बात को प्रकट करना, वान्ति करना।
उगलाना-(हिं०क्रि०) मुंह से बाहर निकलवाना, दोष स्वीकार करवाना।
उगवाना-(हिं०क्रि०) उत्पन्न कराना।
उगाना-(हिं०क्रि०) उपजाना, प्रकट कराना।
उगार, उगाल-(हिं०पुं०) थूक, खखार।
उगाहना-(हिं० क्रि०) किसानों से अन्न कर इत्यादि अलग अलग लेकर इकट्ठा करना।
उगिलना, उगिलवाना-देखो उगालना, उगलवाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उग्र-(सं०वि०) उत्कंट, प्रचण्ड, गरम।
उग्रह-(सं०पुं०) उद्धार।
उघटना-(हिं०क्रि०) उद्घाटन करना, खोलना।
उघटा-(हिं० वि०) उद्घाटन करने वाला, उपकार को बारंबार कहने वाला।
उघड़ना-(हिं०क्रि०) खुलना, नंगा हो जाना, प्रकाशित होना।
उघाड़ना-(हिं०क्रि०) खोलना, कपड़ा उतार देना।
उघाड़ी-(हिं०वि०) प्रकट, प्रकाशित।
उघाना-(हिं०क्रि०) कर संग्रह करना।
उघाई-(हिं०स्त्री०) कर का संग्रह।
उघारना-(हिं०क्रि०) देखो उघाड़ना।
उघारा-(हिं०वि०) खुला हुआ, नंगा।
उङ्गल-(हिं०पुं०) देखो अंगुल।
उचकन-(हिं०पुं०) आड़, टेक, उठगन।
उचकना-(हिं० क्रि०) छीनना, ले भागना, कूदना, उछलना।
उचकाना-(हिं०क्रि०) पंजों के बल खड़ा करना, भागना, ऊपर की ओर करना।
उचक्का-(हिं०पुं०) धूर्त, वंचक, ठग।
उचटना-(हिं० क्रि०) अलग होना, गिरना, भड़कना, विरक्त होना।
उचटाना-(हिं०क्रि०) अलग करना, घुमाना, हताश, करना, भड़काना।
उचड़ना-(हिं०क्रि०) सटी हुई वस्तु का अलग होना।
उचरना-(हिं०क्रि०) उच्चारण करना बोलना।
उचराना-(हिं०क्रि०) कहलाना, उचड़वाना।
उचाट-(हिं०वि०) विरक्त, श्रान्त, खिन्न, हताश।
उचाटन-(हिं०पुं०) देखो उच्चाटन।
उचाटना-(हिं०क्रि०) उच्चाटन करना।
उचाड़ना-(हिं०क्रि०) उखाड़ना, नोचना।
उचारक-(हिं०क्रि०) उच्चारण करने वाला।
उचारन-(हिं०पुं०) देखो उच्चारण।
उचावा-(हि०पुं०) स्वप्न में बकझक।
उचित-(सं०वि०) योग्य, कर्त्तव्य व्यवस्थित।
उचेड़ना, उचेलना-देखो उचाटना।
उचौहाँ-(हिं०वि०) उभड़ा हुआ।
उच्च-(सं०वि०) उन्नत, ऊँचा, श्रेष्ठ।
उच्चण्ड-(सं०वि०) तीव्र।
उच्चतम-(सं०वि०) सबसे ऊँचा।
उच्चतर-(सं०वि०) दो पदार्थों में ऊँचा
उच्चरण-(सं०नपुं०) बाहर आने का कार्य, कथन।
उच्चलित-(सं०वि०) ऊपर पहुँचा हुआ।
उच्चाट-(सं०वि०) देखो उच्चाटन।
उच्चाटन-(सं०नपुं०) उखाड़, नोचखसोट।
उच्चार-(सं०पुं०) उच्चारण, कथन।
उच्चारण-(सं०पुं०) कथन, शब्द प्रयोग
उच्चावच-(सं०वि०) ऊँचनीच, भला बुरा।
उच्छन्न-(सं०वि०) नष्ट, उजाड़ा हुआ।
उच्छलन-(सं०नपुं०) उछाल।
उच्छव-(हिं०पुं०) देखो उत्सव, उत्साह।
उच्छास-(हिं०पुं०) देखो उच्छ्वास।
उच्छाह-(हिं०पुं०) देखो उत्साह।
उच्छिन्न-(सं०वि०) जड़ सहित उखाड़ा हुआ।
उच्छिष्ट-(सं०वि०) जूठा, दूसरे के व्यवहार में लाया हुआ; (पुं०) जूठा पदार्थ।
उच्छृंखल-(सं०वि०) निरंकुश, उद्दण्ड।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उच्छेद, उच्छेदन-(सं०) उत्पाटन, उखाड़ ।
उवच्छ्सित-(सं०वि०) विकसित, कम्पित, हाँफता हुआ ।
उच्छ्वास-(सं०पुं०) ऊपर को खींची हुई श्वास, विकाश, अध्याय ।
उछंग-(हिं०पुं०) उत्सङ्ग, गोद, हृदय ।
उछलना-(हिं०क्रि०) फलांग मारना, फांदना ।
उछार, उछाल-(हिं०स्त्री०) कूद फांद, उत्तेजना, क्रोध, उलटी, वमन ।
उछालना-(हिं०क्रि०) ऊपर की ओर फेंकना ।
उछाव-(हिं०पुं०) देखो उत्साह ।
उछास-(हिं०पुं०) देखो उच्छ्वास ।
उछाह-(हिं०पुं०) देखो उत्साह ।
उजड़-(हिं०वि०) देखो उजड्ड ।
उजड़ना-(हिं०क्रि०) जड़ से उखड़ना, सूख जाना, नष्ट हो जाना, जनशून्य होना ।
उजड़ा-(हिं०वि०) नष्ट, अधम ।
उजड्ड-(हिं०वि०) असभ्य, अशिष्ट,
उजला-(हिं० वि०) उज्वल, दीप्तिमान ।
उजागर-(हिं०वि०) दीप्तिमान, प्रकाशित, विख्यात ।
उजाड़-(हिं०वि०) निर्जन, जंगली, (पुं०) उजड़ा हुआ स्थान,
उजाड़ना-(हिं० क्रि०) उखाड़ना, नाश करना ।
उजाला-(हिं०पुं०) प्रकाश, दिन ।
उजेरा, उजेला-(हिं०पुं०) प्रकाश ।
उज्जर, उज्जल-(हिं०वि०) उज्वल, श्वेत ।
उज्ज्वल-(सं०वि०) चमकीला, विमल ।
उज्झड़-(हिं०वि०) नितान्त मूढ़ ।
उझलना-(हिं०क्रि०) एक पात्र से दूसरे पात्र में ऊपर से गिराना, बढ़ाना, उमड़ उठना ।
उटकनाटक-(हिं०वि०) अद्भुत, अनोखा।
उठंग-(हिं०वि०) बुरी तरह से काटा छांटा हुआ ।
उटज-(सं०पुं०) पर्णशाला, झोपड़ी।
उठंगन-(हिं०पुं०) आड़, टेक, थूनी ।
उठंगना-(हिं०क्रि०) आश्रय लेना टेकना ।
उठंगल-(हिं०वि०) मन्द, मूर्ख ।
उठती-(हिं०वि०) चढ़ती, बढ़ती, जोतने बोने योग्य ।
उठना-(हिं०क्रि०) आरम्भ होना, निकलना, उगना, उभड़ आना, जागना, उबलना, देख पड़ना, फैलना, किराये पर दिया जाना, स्थापित होना, पूर्ण होना, छोड़ना, किसी प्रथा का दूर होना, व्यय होना, बिकना ।
उठल्लू-(हिं०वि०) एक स्थान पर न रहने वाला, बिना प्रयोजन इधर से उधर घूमने वाला ।
उठान-(हिं०पुं०) उभाड़, चढ़ाव, बृद्धि, यौवन की अवस्था, बनावट, आरंभ ।
उठाना-(हिं०क्रि०) ऊँचा करना, स्थापित करना, चुनना, खोलना, सहना, लगाना, बन्द करना, भड़काना; **उठा न रखना**-कसर न छोड़ना।
उठाव-(हिं०पुं०) देखो उठान ।
उठौवा-(हिं०वि०) उठाने योग्य ।
उड़-(हिं०पुं०) तारा ।
उड़द-(हिं०पुं०) माष, एक अन्न जिसकी दाल खाई जाती है ।
उड़न-(हिं०स्त्री०) उड़ान, उड़ने का कार्य । **उड़नखटोला**-(हिं०पुं०) वायुयान । **उड़नगोला**-(हिं०पुं०) उड़ने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला गोला, । उड़नछू-(हिं०वि०) देख न पड़ने वाला ।

उड़ना-(हिं०क्रि०) आकाश में पर की सहायता से चलना, हवा में ऊपर की ओर उठना, शीघ्र दौड़ना, भागना, समाप्त होना, बहाना करना, व्यय होना ।

उड़वाना-(हिं०क्रि०) उड़ाने का काम दूसरे से कराना ।

उड़सना-(हिं०क्रि०) ठूंसना, भरना,

उड़ांक-(हिं०) देखो उड़ाकू ।

उड़ाऊ-(हिं०वि०) उड़ने वाला, अधिक व्यय करने वाला ।

उड़ाकू, उड़ाका-(हिं०वि०) उड़नेवाला; (पुं०) वायुयान चलाने वाला ।

उड़ान-(हिं०पुं०) उड़ने का कार्य, छलांग ।

उड़ाना-(हिं०क्रि०) उड़ने में प्रवृत्त करना, हवा में फैलना, भगा ले जाना, व्यय कर देना, हटाना, चोराना ।

उडु-(सं०स्त्री०) नक्षत्र, तारा पक्षी; उडुपति-(सं०पुं०) चन्द्रमा, झगड़ा । उडुस-(हिं०पुं०) मत्कुण, खटमल ।

उढकन-(हिं०स्त्री०) आश्रय, सहारा ।

उढरी-(हिं० स्त्री०) उपपत्नी, रखनी ।

उत-(हिं०क्रि०वि०) उधर, उस ओर, वहाँ ।

उतंग-(हिं०वि०) ऊँचा, बड़ा,

उतन-(हिं०क्रि०वि०) उस ओर, उधर

उतपन्न-(हिं०वि०) देखो उत्पन्न ।

उतपात-(हिं०पुं०) उत्पात ।

उतरंग-(हिं०पुं०) द्वार के ऊपरी ढांचे पर रक्खी जाने वाली लकड़ी ।

उतरन-(हिं०स्त्री०) वस्त्र जो पहिरते पहिरते जीर्ण हो गया हो ।

उतरना-(हिं०क्रि०) ऊँचे स्थान से नीचे को आना, नदी, नाला, पार करना, निगल जाना, घटना, कुम्हलाना, वृद्ध, होना, समाप्त होना, शरीर के जोड़ का हटना, अवतार लेना ।

उतरहा-(हिं०वि०) उत्तर संबंधी, उत्तरी

उतरिन-(हिं० वि०) उतृण, ऋणमुक्त ।

उतसाह-(हिं०पुं०) देखो उत्साह ।

उतान-(हिं०वि०) औंधा, चित्त ।

उतायल-(हिं०पुं०) त्वरा, शीघ्रता ।

उतार-(हिं०पुं०) ऊपर से नीचे आने का कार्य, घटाव, मूल्य का कम होना, समुद्र की भाटा, पानी में हलकर पार करने का स्थान । उतारन-(हिं०पुं०) पहिरा हुआ वस्त्र जो पुराना हो गया हो । उतारना-(हिं० क्रि०) ऊपर से नीचे को लाना, लिखना, अर्क खींचना, नदी पार ले जाना । उतारा-(हिं०पुं०) प्रेत बाधा या ग्रह शांति के लिये कुछ पदार्थ किसी के शरीर के चारों ओर घुमाकर चौराहे या नदी किनारे ले जाकर रखना ।

उतारू-(हिं०वि०) उतरनेवाला, उद्यत ।

उतावल-(हिं० स्त्री०) व्यग्रता, (क्रि० वि०) शीघ्रता से । उतावला-(हिं० वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ। उतावली-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता, व्यग्रता ।

उतृण-(हिं०वि०) ऋण मुक्त ।

उत-(हिं०क्रि०वि०) उधर, वहाँ पर ।

उत्कट-(सं०वि०) तीव्र, व्यग्र, अधिक, विकट ।

उत्कण्ठा-(सं० स्त्री०) उत्सुकता, तीव्र अभिलाषा ।

उत्कर्ष-(सं० पुं०) श्रेष्ठता, वृद्धि, प्रशंसा, अधिकता ।

उत्कीर्ण-(सं०वि०) लिखा हुआ, खोदा हुआ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्कृष्ट-(सं०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम ।
उत्कोच-(सं०पुं०) उपायन, घूस ।
उत्क्रम-(सं०पुं०) व्यतिक्रम, विपरीत भाव ।
उत्क्रान्त-(सं०वि०) उभड़ा हुआ, लाँघा हुआ ।
उत्क्षिप्त-(सं०वि०) उछाला हुआ ।
उत्तंस-(सं०पुं०) कान का एक आभूषण
उत्तप्त-(सं०वि०) तपा हुआ, गरम ।
उत्तम-(सं०वि०) उत्कृष्ट, श्रेष्ठ; **उत्तम पद**-(सं०पुं०) ऊँचा स्थान या पद । **उत्तम पुरुष**-(सं०पुं०) श्रेष्ठ मनुष्य, व्याकरण में वह सर्वनाम जो बोलने वाले पुरुष के लिये प्रयोग होता है ।
उत्तमर्ण-(सं०पुं०) ऋणदाता, महाजन ।
उत्तमाङ्ग-(सं० नपुं०) मस्तक, सिर ।
उत्तमोत्तम-(सं०वि०) अच्छा से अच्छा।
उत्तर-(सं०नपुं०) प्रतिवाक्य; (वि०) ऊँचा, बड़ा; (क्रि०वि०) पीछे, बाद में; (सं०स्त्री०) दक्षिण के सामने की दिशा ।
उत्तरदाता-(सं०पुं०) जिसको किसी कार्य के बिगड़ने पर भले बुरे का उत्तर देना पड़े । **उत्तरदायित्व**-(सं०नपुं०) भारवाहिता; **उत्तरदायी**-(स०वि०) भारवाहक ।
उत्तराधिकार-(सं०पुं०) सम्पत्ति का क्रमिक सत्व, बपौती । **उत्तरायण**-(सं०नपुं०) सूर्य का उत्तर दिशा में गमन, **उत्तरार्ध**-(सं०नपुं०) पीछे का आधा । **उत्तरीय**-(सं०नपुं०) उपरना, ओढ़नी, चद्दर (वि०) उत्तर दिशा संबंधी ।
उत्तरोत्तर-(सं०वि०) एक के बाद दूसरा, (अव्य०) क्रमक्रम से ।
उत्ता-(हिं०वि०) देखो उतना ।
उत्तान-(सं०वि०) मुंह ऊपर किया हुआ
उत्ताप-(सं० पुं०) उष्णता, गरमी, तपन, उत्तेजना ।
उत्तीर्ण-(सं०वि०) पार गया हुआ, लाँघा हुआ, निकला हुआ, परीक्षा में सफल ।
उत्तू-(हिं०पुं०) चुम्बन ।
उत्तेजक-(सं०वि०) प्रोत्साहक, उसकानेवाला । **उत्तेजन, उत्तेजना**-(सं०) प्रोत्साहन, भड़काव, बढ़ाव; **उत्तेजित**-(सं०पुं०) प्रेरित, उभाड़ा हुआ ।
उत्तोलन-(सं०नप०) उठाव, चढ़ाव, तौलना ।
उत्थान-(सं०नपुं०) उन्नति, उठाव, निकास ।
उत्थित-(सं०वि०) निकला हुआ, फैला हुआ ।
उत्पत्ति-(सं० स्त्री०) जन्म, उपज, आरम्भ ।
उत्पन्न-(सं०वि०) जन्मा हुआ, प्राप्त ।
उत्पल-(सं०नपुं०) पद्म, कमल ।
उत्पात-(सं०पुं०) अशुभ सूचक दैवी दुर्घटना, उपद्रव ।
उत्पादन-(सं०नपुं०) उत्पन्न करना ।
उत्प्रेक्षा-(सं०स्त्री०) उपेक्षा, आरोप, उलटा विचार, एक काव्यालङ्कार जिसमें प्रस्तुत वस्तु में अन्य प्रकार की संभावना की जाती है ।
उत्सङ्ग-(सं०पुं०) अङ्क, गोद, पहाड़ की चोटी, ऊपरी भाग, संगम, आलिंगन ।
उत्सव-(सं०पुं०) आनन्दजनक व्यापार, पर्व, त्यौहार ।
उत्साह-(सं०पुं०) हर्ष, कल्याण, उमंग ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्सुक-(सं०वि०) उत्कठित !
उत्सृष्ट-(सं०वि०) छोड़ा हुआ, त्यागा हुआ।
उत्सेक-(सं०पुं०) अहंकार, वृद्धि।
उथल-(हिं०वि०) तुच्छ, छिछोरा; उथल पुथल -(हिं०स्त्री०) उलट-पुलट।
उद-(सं०अव्य०) यह शब्द "ऊपर, अभाव, दोष, उत्कर्ष, आश्चर्य, प्रकाश, शक्ति, प्राधान्यादि" अर्थ में उपसर्ग की तरह संज्ञा या क्रिया के पहिले लगता है।
उदंत-(हिं०पुं०) वृत्तान्त।
उदउ-(हिं०पुं०) देखो उदय।
उदक-(सं०नपुं०) जल, पानी, हाथी।
उदकना-(हिं०क्रि०) निकलना, कूदना।
उदग्र-(हिं०वि०) उदग्र, उन्नत।
उदग्र-(सं०वि०) विशाल, ऊँचा, उद्धत।
उदजन-अंग्रेजी हाइड्रोजन के लिये पर्याय
उदधि-(सं०पुं०) समुद्र, झील।
उदबस-(हिं०वि०) शून्य, सूना, उजाड़; उदबसना-(हिं०वि०) उजाड़ देना, भगा देना।
उदभट-(हिं०वि०) प्रवल, श्रेष्ठ।
उदभव-(हिं०पुं०) देखो उद्भव।
उदमाद-(हिं०पुं०) देखो उन्माद।
उदय-(सं०पुं०) मंगल, लाभ, उन्नति, वृद्धि।
उदर-(सं०नपुं०) जठर, पेट; उदर-ज्वाला-जठराग्नि, भूख।
उदरना-(हिं०क्रि०) ओदरना, टुकड़े टुकड़े होना। उदर परायण-(सं०वि०) पेटू, भुक्खड़। उदर पिशाच-(सं०वि०) सर्वान्न भक्षक।
उदवासना-(हिं० क्रि०) उजाड़ना, भगादेना।
उदवेग-(हिं०पुं०) देखो उद्वेग।
उदात्त-(सं०वि०) ऊँचे स्वर से उच्चारण किया हुआ, दाता; (पुं०) मुख के अर्धभाग से उच्चारण किया हुआ स्वर।
उदायन-(हिं०पुं०) उद्यान, बगीचा।
उदार-(सं०वि०) दाता, श्रेष्ठ, सरल, सीधा, महात्मा, शिष्ट, अनोखा।
उदारना-(हिं०क्रि०) ओदारना, गिराना
उदास-(सं०वि०) उदासीन, दुःखी, निरपेक्ष, तटस्थ।
उदासी-(सं०पुं०) विरक्त पुरुष, सन्यासी, त्यागी; (सं०वि०) वैरागी, तटस्थ, निष्पक्ष।
उदाहरण-(सं०नपुं०) दृष्टान्त।
उदित-(सं०वि०) उन्नत, उठा हुआ।
उदीची-(सं०स्त्री०) उत्तर दिशा।
उदुम्बर-(सं०पुं०) गूलर, देहली, चौखटा।
उदै, उदो-(हिं०पुं०) देखो उदय।
उद्गत-(सं० वि०) उत्पन्न, उदित, निकला हुआ।
उद्गम-(सं०पुं०) उत्थान, उत्पत्ति का स्थान, ऊर्ध्वगति।
उद्गार-(सं०पुं०) वमन, डेकार, टपकाव, थूक, उच्चारण, बढ़ती।
उद्घटन-(सं०नपुं०) आघात, रगड़। उद्घटित-(सं०वि०) उन्मुक्त, खुला हुआ। उद्घाट-(सं०पुं०) पहरा, चौकी, चुंगीघर। उद्घाटन-(सं० नपुं०) प्रकाशन, खोलाई। उद्घाटित--(सं०वि०) प्रकाशित, खोला हुआ।
उद्दण्ड-(सं०वि०) प्रचण्ड, बखेड़िया, उद्धत।
उद्दाम-(सं०वि०) निरंकुश, उद्दण्ड, स्वतंत्र, बड़ा, असीम।
उद्दिष्ट-(सं०वि०) लक्ष्य किया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्दीपक-(सं०वि०) उत्तेजक ।
उद्दीपन-(सं०नपुं०) उत्तेजन, बढ़ावा ।
उद्देश-(सं०पुं०) लक्ष्य, अनुसन्धान, हेतु ।
उद्देश्य-(सं०पुं०) उत्पत्ति, वृद्धि, जन्म ।
उद्भास-(सं०वि०) प्रकाश, चमक, शोभा ।
उद्भिज्, उद्भिज्ज-(सं०वि०) भूमि को भेद कर जन्म लेनेवाली, वनस्पति वृक्ष, लता, इत्यादि ।
उद्भूत-(सं०वि०) ऊँचादेख पड़ने वाला
उद्भ्रान्त-(सं० वि०) व्याकुल, भौचक्का, हतबुद्धि ।
उद्यत-(सं०वि०) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ
उद्यम-(सं०पुं०) उद्योग, प्रयत्न, उत्साह, व्यवसाय; उद्यमी-(सं०वि०) उद्योगी, तत्पर ।
उद्यान-(सं०नपुं०) बगीचा, उपवन ।
उद्यापन-(सं०नपुं०) आरंभ, किसी व्रत के समाप्त होने पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य ।
उद्योग-(सं०पुं०) प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, उद्यम ।
उद्वर्तन-(सं०नपुं०) विलेपन, उपटन ।
उद्वाह-(सं०पुं०) विवाह ।
उद्विग्न-(सं०वि०) व्याकुल, चिन्तित, व्यग्र ।
उद्वेग-(सं०पुं०) चित्त की व्याकुलता, चिन्ता, भय ।
उधड़ना-(हिं०क्रि०) उचड़ना, खुलना, उजड़ना, छूट जाना, नष्ट होना ।
उधर-(हिं०क्रि०वि०) वहाँ, उस ओर ।
उधरना-(हिं०क्रि०) छूटना, अलग होना ।
उधार-(हिं०पुं०) ऋण, देन, मंगनी ।
उधेड़ना-(हिं० क्रि०) खोलना, परत अलगाना ।
उन-(हिं०सर्व०) 'उस' का बहुवचन । उनका-'उन' की षष्ठी का रूप ।
उनचास-(हिं०वि०) चालीस और नव (पुं०) चालीस और नव की संख्या ४९ ।
उनतीस-(हिं०वि०) एक कम तीस (पुं०) बीस और नव की संख्या २९ ।
उनदा, उनदौंहाँ-(हिं० वि०) निंदाता हुआ
उनमद-(हिं०वि०) देखो उन्मत ।
उनमाद-(हिं०पुं०) देखो उन्माद ।
उनमान-(हिं०वि०) अटकल, सदृश, बराबर; (पुं०) नाप, तौल, बल, सामर्थ्य ।
उनमेख-(हिं०पुं०) उन्मेष, आँखखुलना, फूल का खिलना ।
उनसठ-(हिं०वि०) पचास और नव; (पुं०) पचास और नव की संख्या ५९
उनहत्तर-(हिं०वि०) साठ और नव, (पुं०) साठ और नव की संख्या ६९
उनहार-(हिं०वि०) सदृश, समान, बराबर ।
उनहारि-(हिं०स्त्री०) समानता, सादृश्य
उनाना-(हिं०क्रि०) झुकाना, मोड़ना ।
उनींदा-(हिं०वि०) उन्निद्र, ऊंघता हुआ ।
उन्नइस-(हिं०वि०) देखो उन्नीस ।
उन्नत-(सं०वि०) ऊँचा, उठा हुआ, बड़ा, उठायाहुआ; उन्नति-(सं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, ऊँचाई, उभाड़, प्रतिष्ठा, सौभाग्य ।
उन्नतोदर-(सं०पुं०) चाप या वृत्तखण्ड का ऊपरी तल, वह वस्तु जिसका ऊपरी भाग उभड़ा हो ।
उन्नमन-(सं०पुं०) उन्नति, उठाव
उन्नासी-(हिं०वि०) सत्तर और नव; (पुं०) एक कम अस्सी की संख्या ७९
उन्निद्र-(सं०वि०) निद्रारहित, जागता हुआ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्नीस-(हिं०वि०) दस और नव; (पुं०) एक कम बीस की संख्या १९ ।
उन्मत्त-(सं०वि०) मदान्ध, मतवाला ।
उन्माद-(सं०पुं०) उन्मत्तता, पागलपन
उन्मान-(सं०नपुं०) परिमाण, मूल्य।
उन्मीलन-(सं०नपुं०) विकसित होना, खिलना।
उन्मूलन-(सं०वि०) जड़से उखाड़ा हुआ
उप-(सं० अव्य०) संज्ञा तथा क्रिया में लगाने से अधिकता समीप, सादृश्य सामर्थ्य, व्याप्ति, शक्ति, पूजा, मरण तथा उद्योगके अर्थ को प्रकाशित करता है
उपकण्ठ-(सं०वि०) निकट, पास; (नपुं०)। **उपकथा**-(सं० स्त्री०) आख्यायिका, कहानी ।
उपकरण-(सं०नपुं०) सामग्री, सामान ।
उपकार-(सं०पुं०) साहाय्य, अनुग्रह, लाभ।
उपक्रम-(सं०पुं०) कार्य का आरंभ, वृद्धि, भूमिका, उद्यम, परिस्थिति; **उपक्रमणिका**-(सं० स्त्री०) किसी पुस्तक की भूमिका।
उपचय-(सं०पुं०) वृद्धि, उन्नति, अधिकता, पुष्टि, संग्रह, समूह।
उपचर्या-(सं०स्त्री०) चिकित्सा, परिचर्या, सेवा।
उपचार-(सं०पुं०) चिकित्सा, सेवा, व्यवहार, प्रयोग ।
उपज-(हिं०स्त्री०) उत्पत्ति, नई उक्ति ।
उपजाऊ-(हिं०वि०) जिसमें अधिक उपज हो, उर्वरा।
उपजीवक-(सं०वि०) जीविका चलाने वाला, आश्रय देनेवाला।
उपटन-(हिं०पुं०) चिह्न, साट; देखो उवटन। **उपटना**-(हिं०क्रि०) उभड़ आना, बनना, हटना, नष्ट होना।
उपटा-(हिं० वि०) नष्टभ्रष्ट; (पुं०) ठोंकर, धक्का।
उपत्यका-(सं०स्त्री०) पहाड़ के नीचे की भूमि, घाटी ।
उपदिशा-(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच की दिशा ।
उपदिष्ट-(सं०वि०) कहा हुआ, प्रदर्शित।
उपदेश-(सं०पुं०) परामर्श, आदेश, दीक्षा, शिक्षा, हित की बात, सीख, मन्त्र, कथन। **उपदेशक**-(सं०पुं०) उपदेश देनेवाला, शिक्षक ।
उपद्रव-(सं०पुं०) उत्पात, अत्याचार, उधम, आपत्ति ।
उपद्वीप-(सं०पुं०) छोटा टापू, प्रायद्वीप।
उपधा-(सं०स्त्री०) छल, धोखा, उपाय, उपाधि, व्याकरण के अनुसार, अन्त्य वर्ण के पूर्व का वर्ण।
उपधातु-(सं०पुं०) आठ प्रधान धातुओं के समान अन्य धातु।
उपधान-(सं०नपुं०) शिरोधान, तकिया।
उप नक्षत्र-(सं०नपुं०) सत्ताइस नक्षत्रों के छोटे छोटे तारे ।
उपनत-(सं०वि०) नम्र, झुका हुआ। **उपनीति**-(सं०स्त्री०) झुकाव, उपस्थिति।
उपनना-(हिं०क्रि०) उपजना, पैदा होना ।
उपनय-(सं०पुं०) समीप पहुँचाने का कार्य, बालक को गुरू के पास ले जाने का कार्य, उपनयन संस्कार ।
उपनाम-(सं०नपुं०) उपाधि, पदवी, प्यार का नाम।
उपनिबन्ध-(सं०पुं०) रचना, बनावट, गूथन ।
उपनिविष्ट-(सं०वि०) नई आबादी में आकर बसा हुआ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उद्दीपक-(सं०वि०) उत्तेजक ।
उद्दीपन-(सं०नपुं०) उत्तेजन, बढ़ावा ।
उद्देश-(सं०पुं०) लक्ष्य, अनुसन्धान, हेतु ।
उद्देश्य-(सं०पुं०) उत्पत्ति, वृद्धि, जन्म ।
उद्भास-(सं०वि०) प्रकाश, चमक, शोभा ।
उद्भिज्, उद्भिज्ज-(सं०वि०) भूमि को भेद कर जन्म लेनेवाली, वनस्पति वृक्ष, लता, इत्यादि ।
उद्भूत-(सं०वि०) ऊँचादेख पड़ने वाला
उद्भ्रान्त-(सं० वि०) व्याकुल, भौचक्का, हतबुद्धि ।
उद्यत-(सं०वि०) प्रवृत्त, तत्पर, लगा हुआ
उद्यम-(सं०पुं०) उद्योग, प्रयत्न, उत्साह, व्यवसाय; उद्यमी-(सं०वि०) उद्योगी, तत्पर ।
उद्यान-(सं०नपुं०) बगीचा, उपवन ।
उद्यापन-(सं०नपुं०) आरंभ, किसी व्रत के समाप्त होने पर किया जाने वाला धार्मिक कृत्य ।
उद्योग-(सं०पुं०) प्रयत्न, चेष्टा, परिश्रम, उद्यम ।
उद्वर्तन-(सं०नपुं०) विलेपन, उपटन ।
उद्वाह-(सं०पुं०) विवाह ।
उद्विग्न-(सं०वि०) व्याकुल, चिन्तित, व्यग्र ।
उद्वेग-(सं०पुं०) चित्त की व्याकुलता, चिन्ता, भय ।
उधड़ना-(हिं०क्रि०) उचड़ना, खुलना, उजड़ना, छूट जाना, नष्ट होना ।
उधर-(हिं०क्रि०वि०) वहाँ, उस ओर ।
उधरना-(हिं०क्रि०) छूटना, अलग होना ।
उधार-(हिं०पुं०) ऋण, देन, मंगनी ।
उधेड़ना-(हिं० क्रि०) खोलना, परत अलगाना ।
उन-(हिं०सर्व०) 'उस' का बहुवचन । उनका-'उन' की षष्ठी का रूप ।
उनचास-(हिं०वि०) चालीस और नव (पुं०) चालीस और नव की संख्या ४९ ।
उनतीस-(हिं०वि०) एक कम तीस (पुं०) बीस और नव की संख्या २९ ।
उनदा, उनदौंहाँ-(हिं० वि०) निंदाता हुआ
उनमद-(हिं०वि०) देखो उन्मत ।
उनमाद-(हिं०पुं०) देखो उन्माद ।
उनमान-(हिं०वि०) अटकल, सदृश, बराबर; (पुं०) नाप, तौल, बल, सामर्थ्य ।
उनमेख-(हिं०पुं०) उन्मेष, आँखखुलना, फूल का खिलना ।
उनसठ-(हिं०वि०) पचास और नव; (पुं०) पचास और नव की संख्या ५९
उनहत्तर-(हिं०वि०) साठ और नव, (पुं०) साठ और नव की संख्या ६९
उनहार-(हिं०वि०) सदृश, समान, बराबर ।
उनहारि-(हिं०स्त्री०) समानता, सादृश्य
उनाना-(हिं०क्रि०) झुकाना, मोड़ना ।
उनींदा-(हिं०वि०) उन्निद्र, ऊंघता हुआ ।
उन्नइस-(हिं०वि०) देखो उन्नीस ।
उन्नत-(सं०वि०) ऊँचा, उठा हुआ, बड़ा, उठायाहुआ; उन्नति-(सं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती, ऊँचाई, उभाड़, प्रतिष्ठा, सौभाग्य ।
उन्नतोदर-(सं०पुं०) चाप या वृत्तखण्ड का ऊपरी तल, वह वस्तु जिसका ऊपरी भाग उभड़ा हो ।
उन्नमन-(सं०पुं०) उन्नति, उठाव
उन्नासी-(हिं०वि०) सत्तर और नव; (पुं०) एक कम अस्सी की संख्या ७९
उन्निद्र-(सं०वि०) निद्रारहित, जागता हुआ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्नीस-(हिं०वि०) दस और नव; (पुं०) एक कम बीस की संख्या १९ ।
उन्मत्त-(सं०वि०) मदान्ध, मतवाला ।
उन्माद-(सं०पुं०) उन्मत्तता, पागलपन
उन्मान-(सं०नपुं०) परिमाण, मूल्य।
उन्मीलन-(सं०नपुं०) विकसित होना, खिलना।
उन्मूलन-(सं०वि०) जड़से उखाड़ा हुआ
उप-(सं० अव्य०) संज्ञा तथा क्रिया में लगाने से अधिकता समीप, सादृश्य सामर्थ्य, व्याप्ति, शक्ति, पूजा, मरण तथा उद्योगके अर्थ को प्रकाशित करता है
उपकण्ठ-(सं०वि०) निकट, पास; (नपुं०)। **उपकथा**-(सं० स्त्री०) आख्यायिका, कहानी ।
उपकरण-(सं०नपुं०) सामग्री, सामान ।
उपकार-(सं०पुं०) साहाय्य, अनुग्रह, लाभ ।
उपक्रम-(सं०पुं०) कार्य का आरंभ, वृद्धि, भूमिका, उद्यम, परिस्थिति; **उपक्रमणिका**-(सं० स्त्री०) किसी पुस्तक की भूमिका।
उपचय-(सं०पुं०) वृद्धि, उन्नति, अधिकता, पुष्टि, संग्रह, समूह।
उपचर्या-(सं०स्त्री०) चिकित्सा, परिचर्या, सेवा।
उपचार-(सं०पुं०) चिकित्सा, सेवा, व्यवहार, प्रयोग ।
उपज-(हिं०स्त्री०) उत्पत्ति, नई उक्ति ।
उपजाऊ-(हिं०वि०) जिसमें अधिक उपज हो, उर्वरा।
उपजीवक-(सं०वि०) जीविका चलाने वाला, आश्रय देनेवाला।
उपटन-(हिं०पुं०) चिह्न, साट; देखो उबटन। **उपटना**-(हिं०क्रि०) उभड़ आना, बनना, हटना, नष्ट होना।
उपटा-(हिं० वि०) नष्टभ्रष्ट; (पुं०) ठोंकर, धक्का।
उपत्यका-(सं०स्त्री०) पहाड़ के नीचे की भूमि, घाटी ।
उपदिशा-(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच की दिशा ।
उपदिष्ट-(सं०वि०) कहा हुआ, प्रदर्शित।
उपदेश-(सं०पुं०) परामर्श, आदेश, दीक्षा, शिक्षा, हित की बात, सीख, मन्त्र, कथन। **उपदेशक**-(सं०पुं०) उपदेश देनेवाला, शिक्षक ।
उपद्रव-(सं०पुं०) उत्पात, अत्याचार, उधम, आपत्ति ।
उपद्वीप-(सं०पुं०) छोटा टापू, प्रायद्वीप।
उपधा-(सं०स्त्री०) छल, धोखा, उपाय, उपाधि, व्याकरण के अनुसार, अन्त्य वर्ण के पूर्व का वर्ण।
उपधातु-(सं०पुं०) आठ प्रधान धातुओं के समान अन्य धातु।
उपधान-(सं०नपुं०) शिरोधान, तकिया।
उप नक्षत्र-(सं०नपुं०) सत्ताइस नक्षत्रों के छोटे छोटे तारे ।
उपनत-(सं०वि०) नम्र, झुका हुआ। **उपनीति**-(सं०स्त्री०) झुकाव, उपस्थिति।
उपनना-(हिं०क्रि०) उपजना, पैदा होना ।
उपनय-(सं०पुं०) समीप पहुँचाने का कार्य, बालक को गुरू के पास ले जाने का कार्य, उपनयन संस्कार ।
उपनाम-(सं०नपुं०) उपाधि, पदवी, प्यार का नाम।
उपनिबन्ध-(सं०पुं०) रचना, बनावट, गूथन ।
उपनिविष्ट-(सं०वि०) नई आबादी में आकर बसा हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपनिवेश-(सं०पुं०) दूर देश से आँकर नये स्थान में बसना, नगर के पास की छोटी बस्ती।

उपनीत-(सं०वि०) पास लाया हुआ, प्राप्त, उपस्थित, पहुँचा हुआ।

उपनेत्र-(सं०नपुं०) आँख में लगाने का चश्मा।

उपन्यास-(सं०पुं०) वाक्य का प्रयोग, वाक्य को आरंभ करना, प्रस्ताव, विचार, धरोहर, रोचक कहानी, किस्सा।

उपपति-(सं०पुं०) दूसरे की स्त्री से प्रेम किया जानेवाला पुरुष, जार, यार।

उपपत्ति-(सं०स्त्री०) युक्ति, संगति, उपाय, सिद्धि प्राप्ति, गणित शास्त्र के अनुसार प्रमाण कारण।

उपपद-(सं०नपुं०) लेश, समीप में उच्चारण किया हुआ पद, उपाधि।

उपपन्न-(सं०वि०) संस्कार युक्त, सम्पन्न, उत्पन्न, प्राप्त।

उपपादन-(सं०नपुं०) सिद्ध करना ठहराना, सम्पादन।

उपप्लव-(सं०पुं०) आकाश से तारा टूटना, विप्लव, विपत्ति।

उपभुक्त-(सं०वि०) व्यवहार में लाया हुआ, जूठा, उच्छिष्ट।

उपभोग-(सं०पुं०) व्यवहार, सुख की सामग्री, किसी पदार्थ के व्यवहार का सुख।

उपमा-(सं०स्त्री०) तुलना, अर्थालंकार का एक भेद जिसमें साधारण धर्म विशिष्ट भिन्न जाति की तुलना दो वस्तुओं में दिखाई जात है।

उपमाता-(सं०स्त्री०) धाय, बच्चे को दूध पिलानेवाली स्त्री।

उपमान-(सं०नपुं०) सादृश्य, बराबरी।

उपमित-(सं०वि०) जिसकी उपमा दी गई हो। **उपमेय**-(सं०वि०) जिसकी उपमा दी जावे।

उपयुक्त-(सं०वि०) योग्य, उचित।

उपयोग-(सं०पुं०) व्यवहार, काम, योग्यता, आवश्यकता, प्रयोजन। **उपयोगी**-(सं०वि०) योग्य, अनुकूल, उपकारी, लाभकारी।

उपरति-(सं०स्त्री०) विरति, त्याग, संन्यास, मृत्यु।

उपरत्न-(सं०नपुं०) कम मूल्य के रत्न

उपरना-(हिं० पुं०) ऊपरी वस्त्र, डुपट्टा, चादर; (क्रि०) उखड़ना।

उपरवार-(हिं०स्त्री०) उच्च भूमि।

उपराँठा-(हिं०पुं०) पराँठा, घी लगा कर तवे पर सेंकी हुई रोटी।

उपरा-(हिं०पुं०) गोल उत्पल, उपला।

उपरान्त-(सं०अव्य०) अनन्तर, बाद, पीछे।

उपरी-(हिं०स्त्री०) छोटी, गोल गोहरी उपली; (वि०) उपरी।

उपरूपक-(सं०नपुं०) एक छोटा नाटक।

उपरुक्त-(हिं०वि०) पहिले कहा हुआ।

उपरोध-(सं०पुं०) आवरण, ढपना, प्रतिबन्ध, रोक, अनुरोध।

उपरौंछां-(हिं०क्रि०वि०) उपरकी ओर

उपरौंटा-(हिं०पुं०) ऊपरी भाग, उपरी पल्ला।

उपरौठा-(हिं०वि०) ऊपर का, ऊपरी

उपर्युक्त-(हिं०वि०) ऊपर कहा हुआ।

उपल-(सं०नपुं०) पत्थर, रत्न।

उपलब्ध-(सं०वि०) प्राप्त, मिला हुआ।

उपलब्धि-(सं०स्त्री०) ज्ञान, प्राप्ति, अनुमान।

उपला-(हिं०पुं०) गोंहरा, कण्डा।

उपल्ला-(हिं०पुं०) ऊपरी भाग या तह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपवन-(सं०पुं०) छोटा जंगल, उद्यान, बगीचा।
उपवसथ-(सं०पुं०) ग्राम, गाँव।
उपवास-(सं०पु०) भोजन का अभाव, अनशन, वह व्रत जिसमें भोजन नहीं किया जाता।
उपविष-(सं०नपुं०) हल्का विष।
उपविष्ट-(सं०वि०) बैठा हुआ।
उपवीत-(सं०नपुं०) बायें कन्धे पर रक्खा हुआ यज्ञ सूत्र, जनेऊ।
उपवेश-(सं०पुं०) स्थिति, बैठक।
उपशम-(सं०पुं०) निवृत्ति, छुटकारा।
उपशिष्य-(सं०पुं०) शिष्य का शिष्य।
उपस-(हिं०स्त्री०) दुर्गन्ध; उपासना-(हिं०क्रि०) दुर्गन्धि होना, सड़ जाना
उपसागर-(सं०पुं०) छोटा समुद्र, खाड़ी
उपसाना-(हिं०क्रि०) बासी बनाना, सड़ाना।
उपस्थ-(सं०पुं०) नीचे का भाग, मेढ़, योनि, मलद्वार, अङ्क, गोद, पेड़ू, स्थिति
उपस्थिति-(सं०नपुं०) उपस्थान-आगमन, उपासना, पूजा के निमित्त निकट आना।
उपस्थित-(सं०वि०) समीप का, पास आया हुआ, प्राप्त, वर्तमान, याद किया हुआ।
उपस्थिति-(सं०स्त्री०) उपस्थान, उपासना, स्मृति, पहुँच।
उपहार-(सं०पु०) भेंट, आहुति, सम्मान।
उपहास-(सं०पुं०) निन्दा सूचक हास, हंसी, ठट्ठा।
उपही-(हिं०पुं०) अन्य देश का पुरुष, अपरिचित मनुष्य।
उपाय, उपाइ-(हिं०पुं०) देखो उपाय।
उपाकर्म-(सं०नपुं०) संस्कार पूर्वक वेद ग्रहण।
उपाख्यान-(सं०नपुं०) पुरानी कथा, पूर्व वृत्तान्त, वर्णन, उपन्यास।
उपागत-(सं०वि०) उपस्थिति, स्वीकृत
उपाङ्ग-(सं०नपुं०) तिलक, टीका,
उपाटना, उपाड़ना-देखो उखाड़ना।
उपादान-(सं०नपुं०) प्राप्ति, वर्णन, इन्द्रियों का निग्रह, अभिप्राय, बोध।
उपाधि-(सं०पुं०) विशेषण, जातिवंश इत्यादि को बतलाने वाले शब्द, उपद्रव, उत्पात।
उपाधी-(सं० वि०) उत्पाती, उधम मचानेवाला।
उपाध्याय-(सं०पुं०) वेदवेदाङ्ग पढ़ाने वाला, अध्यापक, ब्राह्मण की एक उपाधि।
उपान्त-(सं०नपुं०) प्रान्त, भाग तीर, किनारा, कोना, अन्तिम अक्षर के पहिले का अक्षर।
उपाय-(सं०पुं०) समीप पहुँचना, निकट आना, साधन, युक्ति।
उपारना-(हिं०क्रि०) देखो उपाड़ना।
उपार्जन-(सं० नपुं०) कमाई, लाभ, वाणिज्यादि से लाभ।
उपालम्भ-(सं०नपुं०) निंदापूर्वक तिरस्कार, ओरहना।
उपाव-(हिं०पुं०) देखो उपाय।
उपास-(हिं०पुं०) देखो उपवास।
उपासक-(सं०वि०) सेवक, भक्त।
उपासना-(सं०स्त्री०) परिचर्या, आराधना।
उपासा-(हिं०पुं०) अन्न जल न ग्रहण करने वाला।
उपेक्षक-(सं०वि०) उपेक्षा करनेवाला।
उपेक्षा-(सं०स्त्री०) उदासीनता, घृणा तिरस्कार, अनादर।
उपेखना-(हिं०क्रि०) उपेक्षा करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपेन्द्रवज्रा-(सं०स्त्री०) ग्यारह अक्षरों के चार पद का एक छन्द।
उपैना-(हिं०वि०) नङ्गा, उघाड़ा, खुला हुआ।
उपोद्घात-(सं०पुं०) उपक्रम, भूमिका,
उपोष, उपोषण-(सं०) उपवास।
उफनना-(हिं०क्रि०) फेन देना, झगड़ने के लिये उद्यत होना।
उफान-(हिं०पुं०) फेन, उबाल, झाग।
उफाल-(हिं०पुं०) लंबी डग।
उबकना-(हिं०क्रि०) वमन करना, उगलना।
उबकाई-(हिं०स्त्री०) ओकाई, मचली।
उबट-(हिं०पुं०) कुमार्ग, ऊँची नीची भूमि।
उबटन-(हिं०पुं०) अभ्यंग, अंगराग।
उबरना-(हिं०क्रि०) निस्तार पाना,
उबराऊ-(हिं०पुं०) तल।
उबलना-(हिं०क्रि०) उफनना, उमड़ना।
उबहन-(हिं०स्त्री०) पानी खींचने का रस्सा।
उबाहना-(हिं०क्रि०) शस्त्र उठाना, उभड़ना, ऊपर की ओर उठना।
उबहनी-(हिं०स्त्री०) रस्सी।
उबाँत-(हिं०स्त्री०) वमन, कय, उलटी।
उबाई-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता।
उबार-(हिं०पुं०) मोक्ष, उद्धार, निस्तार
उबाल-(हिं०पुं०) आँच लगने पर फेन के साथ ऊपर को उठना।
उबासी-(हिं०स्त्री०) जृम्भा, जंभाई।
उबाहना-(हिं०क्रि०) देखो उबहना।
उबेना-(हिं०वि०) जूता न पहिरे हुए, नंगे पैर का।
उभय-(सं०वि०) हर दो, दोनों।
उभयचर-(सं०वि०) जल तथा स्थल दोनों में रहने वाला।
उभयतः-(सं०अव्य०) दोनों ओर दोनों तरफ। उभयतोमुख-(सं०वि०) दो मुख वाला।
उभरना-(हिं० क्रि०) उठना, बढ़ना, चले जाना, प्रकाशित होना, उतरना, खुलना, उत्पन्न होना।
उभाड़-(हिं०क्रि०) उठान, ऊँचाई, वृद्धि; उभाड़ना-(हिं०क्रि०) उत्तेजित करना, उसकाना, बहकाना।
उभाना-(हिं०क्रि०) सिर हिलाते हुए हाथ पैर पटकना।
उभार-(हिं०पुं०) उठान, ऊँचाई, वृद्धि
उमंग-(हिं०स्त्री०) आह्लाद, इच्छा, लहर, मौज, पूर्णता, अधिकता,
उमड़-(हिं०स्त्री०) चढ़ाव, उठान।
उमड़ना-(हिं०क्रि०) चढ़ना, बह चलना
उमड़-(हिं०स्त्री०) उभाड़, धावा, बढ़ाव, बाढ़, घिराव। उमड़ना-(हिं०क्रि०) उठकर फैल जाना, चक्कर देना, फैलना, घेरना, आवेश में आ जाना।
उमस-(हिं०स्त्री०) आन्तरिक उत्ताप।
उमाह-(हिं०पुं०) उत्सुकता, उमंग।
उमेठन-(हिं०स्त्री०) ऐंठन, बल, मरोड़।
उमेठवाँ-(हिं०वि०) ऐंठा हुआ।
उर-(सं०नपुं०) वक्षःस्थल, हृदय, छाती मन, चित्त।
उरक्षत-(सं०नपुं०) छाती का घाव, क्षयरोग। उरस्थल-(सं०नपुं०) हृदय, छाती।
उरग-(सं०पुं०) सर्प, साँप।
उरझना-(हिं०क्रि०) उलझना, फंसना, गाँठ डालना।
उरद-(हिं० पुं०) एक पौधा जिसकी फलियाँ दाल बनाने के काम में आती हैं। उरदी-(हिं०स्त्री०) माष, छोटी उड़द, सिपाहियों की पोशाक (वर्दी)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उरला-(हिं०वि०) पिछला, जो आगे का न हो।
उरच्छद-(सं०पुं०) कवच।
उरसना-(हिं०क्रि०) चंचल होना, हिलना, डोलना।
उरसिज-(सं०पुं०) स्तन, छाती।
उरहना-(हिं०पुं०) ओलहना।
उरा-(हिं०स्त्री०) उर्वी, पृथ्वी।
उराउ, उराऊ-(हिं०पुं०) उत्साह।
उराना-(हिं०क्रि०) चूक जाना।
उरिण,उरिन-(हिं०वि०) देखो उऋण।
उरुवा-(हिं०पुं०) उलूक, उल्लू।
उरे-(हिं०क्रि०वि०) उस ओर, आगे; दूर।
उलट-(हिं०पुं०) परिवर्तन। उलटना-(हिं०क्रि०) ऊपर का नीचे होना, पलटना, फेर देना, चित्त करना, बदल जाना, दुर्दिन आना, लौट जाना, बात काटना, आज्ञा भंग करना, विपरीत करना, टूट पड़ना।
उलटा-(हिं०वि०) विपरीत, नीचे का ऊपर किया हुआ।
उलटी-(हिं०स्त्री०) वमन, कलैया।
उलटे-(हिं०क्रि०वि०) विरुद्ध क्रम से।
उलथना-(हिं०क्रि०) ऊपर नीचे करना
उलथा-(हिं०पुं०) अनुवाद।
उलद-(हिं०स्त्री०) वर्षा की झड़ी, उडेंल, गिराव।
उलरना-(हिं०क्रि०) फांदना, कूदना।
उललना-(हिं०क्रि०) गिरना, पड़ना।
उलहना-(हिं०क्रि०) अंकुरित होना, निकलना; (पुं०) निन्दा।
उलार-(हिं०वि०) पीछे की ओर भार से दबी हुई (गाड़ी, इक्का, इत्यादि)
उलिचना, उलीचना-(हिं०क्रि०) हाथ सेजल फेंकना।
उलूक-(सं०पुं०) उल्लू चिड़िया।
उलूखल-(सं०नपुं०) ओखली।
उल्का-(सं०स्त्री०) ज्वाला, मसाल, आकाश से गिरी हुई अग्नि, टूटता तारा।
उल्था-(हिं०पुं०) भाषान्तर, अनुवाद।
उल्लङ्घन-(सं० नपुं०) अतिक्रमण, लाँघना डाकना।
उल्लसित-(सं०वि०) फड़कने वाला, उठा हुआ, आनन्दित।
उल्लास-(सं०पुं०) आनन्द, हर्ष, प्रकाश।
उल्लिखित-(सं० वि०) खोदा हुआ, छीला हुआ, चित्र बनाया हुआ, रंगा हुआ।
उल्लू-(हिं०पुं०) उलूक; (वि०) मूर्ख।
उल्लेख-(सं०पुं०) लिखना, कथन, लेख, वर्णन; उल्लेखनीय, उल्लेख्य-(सं० वि०) लिखने योग्य।
उवना-(हिं०क्रि०) उदित होना, निकल आना।
उवनि-(हिं०स्त्री०) उदय, निकास, उठाव।
उशीर-(सं०पुं०) शीत मूलक, खस।
उष्ट्र-(सं०पुं०) ऊँट।
उष्ण-(सं०वि०) तप्त, गरम, तीव्र; (पुं०) आतप, धूप, गरमी का ऋतु
उष्ण कटिबन्ध-(सं०पुं०) पृथ्वी का वह भाग जो कर्क और मकर रेखाओं के बीच में पड़ता है।
उष्णीश-(सं०पुं०) पगड़ी, मुकुट।
उष्म-(सं०पुं०) ग्रीष्मकाल, उत्ताप, तीव्रता, क्रोध; श, क्ष, ष, स, ह—येचार वर्ण।
उष्मज-(सं०वि०) गरमी में उत्पन्न होने वाला।
उस-(हिं०सर्व०) 'वह' का रूप जो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभक्ति लगने पर यह रूप धारण कर लेता है।

उसकन-(हिं० पुं०) उबसन, पात्र माँजने का घास पात का मुट्ठा, उभाड़।

उसनना-(हिं०क्रि०) उबालना, पकाना

उसमा-(हिं०पुं०) वसमा, उबटन।

उसरना-(हिं०क्रि०) सरकना, अलग होना।

उसारना-(हिं० क्रि०) नाश करना, मिटाना।

उसारा-(हिं०पुं०) छत्ता, ओसारा।

उसालना-(हिं०क्रि०) उखाड़ना, मिटाना

उसांस-(हिं०स्त्री०) उच्छ्वास, साँस।

उसीसा-(हिं०पुं०) सिरहाना, तकिया।

उहवाँ, उहाँ-(हिं०क्रि०वि०) देखो वहाँ।

उहार-(हिं०पुं०) देखो ओहार।

उहि-(हिं०पुं०) देखो वह।

उहै-(हिं०स०) देखो वही।

ऊ

ऊ-संस्कृत तथा हिन्दी स्वर वर्ण का छठा अक्षर। यह 'उ' का दीर्घ रूप है, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है; (पुं०) महादेव, इन्द्र, रक्षक (अव्य०) ए; अरे, भी; (सर्व०) वह।

ऊअना-(हिं०क्रि०) उदय होना, उगना

ऊंघ-(हिं०स्त्री०) ऊंघाई, झपकी।

ऊंच, ऊंचा-(हिं०वि०) उच्च, ऊँचा;

ऊंचा-(हिं०वि०) उच्च, श्रेष्ठ, उन्नत, हानिलाभ। **ऊँचा सुनना**-कुछ बहिरा होना। **ऊंचाई**-(हिं०स्त्री०) उच्चता, गौरव, बड़ाई।

ऊंचे-(हिं०क्रि०वि०) ऊपर को, ऊंची ओर। **ऊँचे नीचे पैर पड़ना**-बुरे काम में प्रवृत्त होना।

ऊंछना-(हिं०क्रि०) कंघी करना।

ऊट-(हिं०पुं०) उष्ट्र।

ऊंहूँ-(हिं० अव्य०) नहीं, कभी नहीं, यह नहीं हो सकता।

ऊख-(हिं०स्त्री०) इक्षु, ईख, गन्ना; (पुं०) गरमी, गुमस; (वि०) गरमी से व्याकुल।

ऊखम-(हिं०वि०) देखो ऊष्म।

ऊखल-(हिं०पुं०) उदूखल, ओखली।

ऊगना-(हिं०क्रि०) जमना, अँखुआ निकलना।

ऊज-(हिं०पुं०) उत्पात, उपद्रव, बखेड़ा।

ऊजड़-(हिं०वि०) जनशून्य, न बसा हुआ।

ऊजर, ऊजरा-(हिं०वि०) उजला, स्वच्छ।

ऊटकनाटक-(हिं०पुं०) वृथा का कार्य,

ऊटपटांग-(हिं०वि०) बेढंगा, व्यर्थ, निरर्थक।

ऊड़ा-(हिं०पुं०) न्यूनता, कमी, घाटा, अकाल, विनाश।

ऊतला-(हिं०वि०) उतावला, चंचल।

ऊताताई-(हिं०वि०) उजड्ड, अव्यवस्थित।

ऊतिम-(हिं०वि०) देखो उत्तिम।

ऊदबत्ती-(हिं०स्त्री०) धूपबत्ती।

ऊदबिलाव-(हिं०पुं०) जल, स्थल दोनों में रहनेवाला नेवले के आकार का एक जन्तु।

ऊदा-(हिं०वि०) लाली मिला हुआ काले रंगा का, बैंगनी।

ऊधम-(हिं०पुं०) उत्पात, उपद्रव।

ऊन-(हिं०पुं०) भेड़ बकरी का कोमल रोवाँ, जिसके कम्बल औरपहिरने के गरम कपड़े बीने जाते हैं।

ऊनी-(हिं०वि०) ऊन का बना हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊप-(हिं०पुं०) अनाज का सूद, जो किसान महाजन से बोने के लिये अन्न लेने पर उसका सवाई देता है। ऊपना-(हिं०क्रि०) सूद पर (सवाई) अन्न का ऋण देना।

ऊपर-(हिं०वि०) उपरि; (क्रि०वि०) ऊँचे स्थान में, आगे, अधिक, अतिरिक्त, किनारे पर, । ऊपरी-(हिं०वि०) बाहरी, बनावटी, दिखौवा।

ऊब-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, उद्वेग।

ऊबट-(हिं०पुं०) कठिन मार्ग; (वि०) ऊंचा नीचा।

ऊबड़खाबड़,-(हिं०वि०) ऊंचा नीचा असमतल।

ऊबना-(हिं०क्रि०) उद्विग्न होना, अकुलाना।

ऊबर-(हिं०वि०) अधिक।

ऊबरना-(हिं०क्रि०) देखो उबरना।

ऊभ-(हिं०वि०) ऊंचा नीचा, उठा हुआ, उभड़ा हुआ, (स्त्री०) व्याकुलता।

ऊरध-(हिं०) देखो ऊर्ध्व।

ऊरु-(सं०पुं०) जानु, जाँघ।

ऊर्णपट-(सं०पुं०) लूता, मकड़ी।

ऊर्ण-(सं०स्त्री०) भेड़ या बकरी का बाल, ऊन।

ऊर्ध्व-(सं०वि०) उच्च, ऊंचा, ऊपरी। ऊर्ध्वग-(सं०वि०) स्वर्गगामी, ऊंचा जानेवाला। ऊर्ध्वगत-(सं०वि०) ऊपर गया हुआ। ऊर्ध्वगति-(सं० स्त्री०) चढ़ाई, स्वर्गारोहण, मुक्ति, ऊर्ध्वगामी-(सं०वि०) ऊपर जानेवाला ऊर्ध्वलोक-(सं०पु०) स्वर्ग, बैकुण्ठ, आकाश। ऊर्ध्वशायी-(सं०वि०) उताना सोने वाला। ऊर्ध्वश्वास-(सं०पुं०) लंबी साँस मरते समय की श्वास।

ऊर्ध्वाङ्ग-(सं०नपुं०) मस्तक, सिर।

ऊर्मि-(सं०पुं०) तरंग, लहर।

ऊर्वस्थि-(सं०नपुं०) जाँघ की हड्डी।

ऊषर-(सं०पुं०) नोनी भूमि, रेह की भूमि, ऊसर।

ऊषा-(सं०स्त्री०) अरुणोदय, सवेरा।

ऊष्म-(सं०वि०) गरमी, ग्रीष्मकाल। ऊष्मवर्ण-(सं०पुं०) श, ष, स और ह—ये चार अक्षर व्याकरण में ऊष्म कहलाते हैं।

ऊष्मा-(सं०स्त्री०) गरमी, ग्रीष्मकाल।

ऊसर-(हिं०पुं०) वह भूमि जो नोनी हो

ऊह-(हिं०अव्य०) क्लेश, विस्मय आदि सूचक शब्द।

ऊहित-(सं०वि०) अनुमान किया हुआ

ऊहापोह-(सं०वि०) तर्क द्वारा संशय मिटाया हुआ।

ऋ

ऋ-स्वर वर्ण का सातवाँ अक्षर, मूर्धा स्थान से इसका उच्चारण होता है, (सं०स्त्री०) देवमाता, अदिति।

ऋक्-(सं०स्त्री०) ऋग्वेद, स्तुति, पूजा।

ऋक्ष-(सं०पुं०) नक्षत्र, तारा, राशि, भालू।

ऋग्वेद-(सं०पुं०) चारों वेदों में से पहिला वेद। ऋग्वेदी-(सं०वि०) ऋग्वेद का पढ़नेवाला या जानने वाला

ऋचा-(सं०स्त्री०) वेद मन्त्र, स्तुति, पूजा

ऋजु-(सं०वि०) सीधा, सरल, अनुकूल, सुगम।

ऋण-(सं०वि०) उधार, गणित में क्षय राशि।

ऋत-(सं० नपुं०) सत्य, सच्चाई; (वि०) सत्य, पूजित।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋति-(सं०स्त्री०) कल्याण, भलाई ।
ऋतु-(सं०पुं०) कालविशेष, गरमी, बरसात या जाड़े का दिन । **ऋतुचर्या**-(सं०स्त्री०) ऋतुओं के अनुसार आहार विहार का आचरण ।
ऋत्विक-(सं०पुं०) पुरोहित, वेदके मंत्रों से यज्ञ में कर्मकाण्ड करनेवाला ।
ऋद्ध-(सं०वि०) सम्पन्न, समृद्ध ।
ऋद्धि-(सं०पुं०) वृद्धि, बढ़ती, समृद्धि
ऋनियाँ, ऋनी-(हिं०वि०) देखो ऋणी
ऋषभ-(सं०पुं०) वृषभ, बैल, यह शब्द के पीछे लगने से श्रेष्ठता सूचित करता है ।
ऋषि-(सं०पुं०) शास्त्रप्रणेता, वेद मंत्रों का प्रकाशक, ज्ञान द्वारा संसार पार करने वाला ।

ॠ

ॠ-हिंदी तथा संस्कृत का आठवाँ अक्षर जो मूर्धा से उच्चारण होता है; (नपुं०) वक्षःस्थल, छाती (स्त्री०) देवमाता, स्मृति; (पुं०) भैरव, महादेव ।

ऌ

ऌ-हिंदी तथा संस्कृत स्वर का नवाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्त है; (स्त्री०) देवमाता, भूमि

ॡ

ॡ-स्वर वर्ण का दसवाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्त है पाणिनि के अनुसार लृकार का दीर्घ नहीं होता; (स्त्री०) देवनारी, माता, कामधेनु-(पुं०) शङ्कर, महादेव

ए

ए-स्वर वर्ण का ग्यारहवाँ अक्षर, इनका उच्चारण स्थान कण्ठ और तालु है; (पुं०) विष्णु (हिं०सं० अव्य०) यह संबोधन या बुलाने में प्रयोग होता है ।
एँच-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, विलम्ब ।
एँचना-(हिं०क्रि०) लिखना, लकीर खींचना, निकालना, सुखाना ।
एँचातानी-(हिं०वि०) तिरछा देखने वाला, **एँचातानी**-(हिं० वि०) कठिनता, खींच खांच, कलह, युद्ध ।
एँड़ाबेंड़ा-(हिं०वि०) उलटपुलट, अंडबंड, ऊँचानीचा ।
एँडुआ-(हिं०पुं०) सिर पर बोझ के नीचे रखने की कपड़े की गद्दी, बिडुआ,
एक-(सं०वि०) प्रधान, अद्वितीय, समान, अकेला, अन्य, थोड़ा, कोई, अनुपम, **एकाध**-थोड़ासा; **एक आँख से देखना**-पक्षपात रखना; **एक एक**-प्रत्येक, हरएक, **एकटक**-टकटकी बाँधकर; **एकतार**-सदृश, समान, तुल्य; **एकतो**-पहिली बात तो यह है कि । **एकदम**-तुरत ।
एकंग-(हिं०वि०) एकाकी, अकेला ।
एकँत-(हिं०वि०) देखो एकान्त ।
एकक-(सं०वि०) असहाय, अकेला ।
एककालीन-(सं०वि०) समकालीन, एक ही समय उत्पन्न होनेवाला ।
एकचित-(सं०वि०) अनन्यचेता, एक ही ओर ध्यान लगानेवाला ।
एकछत्र-(सं०वि०) अभिन्न शासन का; (पुं०) अन्य शासन ।
एकज-(सं०वि०) अकेला उत्पन्न होने वाला, निराला ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकजात-(सं०वि०) सहोदर, एक ही मां बाप से उत्पन्न।
एकज्या-(सं०स्त्री०) किसी वृत्त के व्यासार्ध का चिह्न।
एकटंगा-(हिं०वि०) एक पैर का, लंगड़ा
एकटकी-(हिं०स्त्री०) निश्चल दृष्टि, टकटकी।
एकट्ठा-(हिं०वि०) एकत्र, जमा किया हुआ।
एकत-(हिं०क्रि०वि०) देखो एकत्र।
एकता-(सं०स्त्री०) मेलजोल।
एकतान-(हिं०वि०) एकाग्रचित्त
एकतालीस-(हिं०वि०) चालीस और एक; (पुं०) चालीस और एक की संख्या ४१।
एकतीस-(हिं०वि०) तीस और एक; (पुं०) तीस और एक की संख्या ३१।
एकत्र-(सं०अव्य०) एक ही स्थान में, एक साथ।
एकत्रित-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ
एकदा-(सं०अव्य०) एक बार, किसी दिन।
एकधा-(सं०अव्य०) साधारण रूप से, एक बार, अकेले।
एकनिष्ठ-(सं०वि०) एकासक्त, एक ही में लीन।
एकपक्ष-(सं०वि०) पक्षपाती।
एकपत्नी-(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री।
एकपदी-(सं०स्त्री०) पगडंडी।
एकपिण्ड-(सं०वि०) सपिण्ड, नातेदार।
एकभाव-(सं०पुं०) समभाव, एकरूप।
एकमत-(सं०वि०) समान मत का।
एकरंग-(हिं०वि०) तुल्य, बराबर।
एकरस-(हिं०वि०) एक ढंग का, समान।
एकरूप-(सं०वि०) समान आकृति का, एक ही ढंग का।
एकला-(हिं०वि०) अकेला, एकाकी।
एकलौता-(हिं०वि०) अपने माता पिता का एक (पुत्र)।
एकवचन-(सं०नपुं०) एक व्यक्ति का बोध करने वाला व्याकरण का वचन।
एकवाक्य-(सं०नपुं०) एक अर्थ बोधक बातचीत।
एकविध-(सं०वि०) एक ही प्रकार का, साधारण।
एकसठ-(हिं०वि०) साठ और एक; (पुं०) साठ और एक की संख्या।
एकसर-(हिं०वि०) अकेला, एकहरा।
एकहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और एक; (वि०) सत्तर और एक की संख्या।
एकहत्था-(हिं० वि०) एक ही हाथ से काम करने वाला।
एकहरा-(हिं०वि०) एक परत का।
एका-(हिं०पुं०) ऐक्य, मेलजोल।
एकाई-(हिं०स्त्री०) एकत्व, एक का मान, नियमित मान, गणना में प्रथम स्थान या अंक।
एकाएक, एकाएकी-(हिं०क्रि०वि०) अकस्मात्, अचानक।
एकांश-(सं०पु०) एक भाग या हिस्सा।
एकाकार-(सं०वि०) एकही आकृति का।
एकाकी-(सं०वि०) असहाय, अकेला।
एकाक्ष-(सं०वि०) एक नेत्रवाला, काना।
एकाक्षर-(सं०नपुं०) एक स्वर वर्ण, ओंकार।
एकाग्र-(सं०वि०) अनन्य चित्त, एक ही ओर मन लगाया हुआ।
एकाग्रचित्त-(सं०वि०) स्थिरचित्त।
एकादश-(सं०वि०) ग्यारह, ग्यारहवाँ।
एकादशाह-(सं०पुं०) मरने के दिन से ग्यारहवें दिन पर किया जानेवाला कृत्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकादशी-(सं०स्त्री०) प्रत्येक चान्द्र मास के शुक्ल तथा कृष्ण पक्ष की ग्यारहवीं तिथि ।

एकादेश-(सं०पुं०)एकआज्ञा,व्याकरण में दो शब्दों या स्थान में एक ही आदेश ।

एकाधिपति-(सं०पुं०) सम्राट्, बड़ा राजा ।

एकान्त-(सं०नपुं०)छिपा हुआ स्थान, अकेलापन; (वि०)अकेला, अत्यन्त ।

एकार-(सं०पुं०)स्वर वर्ण का ग्यारहवाँ अक्षर 'ए' ।

एकार्थ, एकार्थक-(सं०वि०) समानार्थक, एक ही अर्थ का ।

एकाहार-(सं०पुं०) दिन में केवल एक बार भोजन ।

एकीकरण-(सं०नपुं०) इकट्ठा करने का काम ।

एकीकृत(सं०वि०)इकट्ठा किया हुआ ।

एकोत्तरसो-(हिं०वि०)एक सौ एक ।

एकैक-(सं०वि०) एकाकी, अकेला ।

एकोदर-(सं०पुं०) सहोदर ।

एकोद्दिष्ट-(सं०नपुं०)किसी एक मृत व्यक्ति के उद्देश्य से किया जाने वाला श्राद्ध ।

एकौझा-(हिं०वि०) अकेला ।

एक्का-(हिं०वि०)अकेला,एक से संबंध रखने वाला (पुं०) दुपहिया गाड़ी जिसको एक बैल या घोड़ा खींचता है, तास का पत्ता जिसमें एक बूटी रहती है ।

एक्की-(हिं०स्त्री०)एक बैल से खींची जाने वाली गाड़ी,ताश का वह पत्ता एक ही बूटी हो ।

एक्यानवे-(हिं०वि०)नब्बे और एक; (पुं०)नब्बे और एक की संख्या ९१ ।

एक्यावन-(हिं०वि०)पचास और एक; (पुं०) पचास और एक की संख्या ५१

एक्यासी-(हिं०वि०)अस्सी और एक; (पुं०)अस्सी और एक की संख्या ८१

एड़ी-(हिं०स्त्री०) पार्ष्णि,पैर के पंजे के पीछे का उभड़ा हुआ भाग ।

एतदर्थ-(सं०अव्य०) इस निमित्त ।

एतदवधि-(सं०अव्य०) यहां तक ।

एतना-(हिं०क्रि०वि०) देखो इतना ।

एतवार-देखो इतवार ।

एता-(हिं०वि०)इस परिमाणका,इतना

एतादृश-(सं०वि०) ऐसा,इसके सदृश।

एतावत-(सं०वि०)इस परिमाण का।

एतीक-(हिं०वि०)इसपरिमाणकी,इतनी

एरण्ड-(सं०पुं०) रेंड़, रेंड़ी ।

एला-(सं०स्त्री०) इलायची ।

एव-(सं०अव्य०)इसी प्रकार से, ऐसे, ही, भी ।

एवं-(सं०क्रि०वि०)इसी प्रकारसे,ऐसे ही

एवमस्तु-ऐसा हीहो; (अव्य०)ऐसेही,और

एषणा-(हिं०स्त्री०) इच्छा ।

एहो-(हिं०अव्य०) संबोधन का शब्द अरे, हे, ओ ।

ऐ

ऐ-संस्कृत और हिन्दी की वर्णमाला का बारहवाँ अक्षर इसका उच्चारण कण्ठ और तालु है; (अव्य०)पुष्कर; (पुं०) महादेव ।

ऐं-(हिं०अव्य०) भली भाँति समझी हुई बात के लिये प्रयोग होता है,एक आश्चर्य सूचक अव्यय ।

ऐंचना-(हिं०क्रि०) खींचना,तानना।

ऐंचाताना-(हिं०वि०) भेंगा देखने वाला। **ऐंचातानी**-(हिं०स्त्री०)खींचा, खाँची ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐंचीला-(हिं०वि०) लचीला ।
ऐंछना-(हिं०क्रि०) झाड़ना, बालों में कंघी करना ।
ऐंठ-(हिं०स्त्री०) लपेट, मरोड़, अभिमान, अकड़ ।
ऐंठन-(हिं०स्त्री०) पेंच, घुमाव, लपेट, खिंचाव, तनाव ।
ऐंड़-(हिं०स्त्री०) अभिमान, तनाव, अकड़, पानी का भँवर; (वि०) घूमा हुआ, निकम्मा।
ऐंड़वार-(हिं०वि०) अभिमानी, गर्वीला।
ऐंड़ना-(हिं०क्रि०) अभिमान करना, इतराना, घुमाना ।
ऐंड़बैंड़-(हिं०वि०) तिरछा बाँका, बल खाया हुआ ।
ऐंड़ा-(हिं०वि०) ऐंठा हुआ, घुमौवा,
ऐंड़ना-(हिं० क्रि०) अकड़ दिखलाना, नाक भौंह चढ़ाना, शरीर तोड़ना, इठलाना ।
ऐकमत्य-(सं०नपुं०) सम्मान, सम्मति ।
ऐकाहिक-(सं०वि०) एक दिन में होने वाला ।
ऐक्य-(सं०नपुं०) एकता, सादृश्य, बराबरी
ऐगुन-(हिं०पुं०) देखो अवगुण ।
ऐच्छिक (सं०वि०) इच्छा के अनुसार ।
ऐतिहासिक-(सं०वि०) इतिहाससंबंधी ।
ऐन्द्रजालिक-(सं०पुं०) इन्द्रजाल करने वाला, मायावी ।
ऐन्द्रिय-(सं०वि०) इन्द्रिय संबंधी ।
ऐपन-(हिं०पुं०) हल्दी के साथ चावल को पीस कर बनाया हुआ लेप ।
ऐश्वर-(सं०वि०) शक्तिशाली, शिवसम्बन्धी ।
ऐश्वर्य-(सं०नपुं०) धन, सम्पत्ति, आधिपत्य । ऐश्वर्यवान-सम्पन्न, वैभवयुक्त ।
ऐसा-(हिं०क्रि०वि०) इस प्रकार से, इस तरह से; (वि०) इस ढंग का, इस प्रकार का; ऐसा तैसा-तुच्छ, निकृष्ट ।
ऐसे-(हिं०क्रि०वि०) इस रीति या प्रकार से ।
ऐहिक-(सं०वि०) इस लोक से संबंध रखने वाला, संसारी ।

ओ

ओ-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेरहवाँ, अक्षर, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ तथा ओष्ठ है (सं०पुं०) ब्रह्मा; (अव्य०) विस्मय तथा आश्चर्य सूचक शब्द ।
ओं-(सं०अव्य०) ॐकार, प्रणव, तथास्तु बहुत अच्छा ।
ओइंछना-(हिं०क्रि०) वारना, न्योछावर करना ।
ओंकार-(सं०अव्य०) देखो ओं ।
ओंगना-(हिं०क्रि०) गाड़ी की पहये के धुरे में चिकना लगाना जिसमें पहिया सहज में घूम सके ।
ओआ-(हिं०पुं०) हाथी फँसानेका गड्ढा
ओकना-(हिं०क्रि०) वमन करना ।
ओकाई-(हिं०स्त्री०) वमन की इच्छा ।
ओकार-(सं०पुं०) 'ओ' अक्षर ।
ओकारान्त-(सं०वि०) जिस शब्द के अन्त में 'ओ' रहे ।
ओखद-(हिं०स्त्री०) औषधि, दवा ।
ओखरी, ओखली-देखो ओखली ।
ओखा-(हिं०पुं०) बहाना, मिस (वि०) सूखा, टेढ़ा, दूषित, खोटा, विरल ।
ओग-(हिं०पुं०) कर, चंदा, लगान ।
ओगरना-(हिं०क्रि०) चूना, पसीजना ।
ओगल-(हिं०पुं०) ऊसरभूमि, परतीभूमि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओग-(सं०पुं०) समूह, ढेर, घनत्व, बाढ़, परम्परा ।
ओङ्कार-(सं०पुं०) प्रणव, ॐ ।
ओछा-(हिं०वि०) क्षुद्र, तुच्छ, छोटा, हलका, छिछला, शक्तिहीन ।
ओछाई-(हिं०स्त्री०), **ओछापन**-(हिं० पुं०) क्षुद्रता, नीचता, हलकापन ।
ओज-(सं०नपुं०) बल, प्रताप, तेज;
ओजना-(हिं०क्रि०) रोकना, भार लेना
ओजस्विता-(सं०स्त्री०) प्रकाश, चमक ।
ओजस्वी-(सं०वि०) प्रतापी, प्रभावशाली
ओझ-(हिं०पुं०) उदर, पेट, आँत ।
ओझर-(हिं०पुं०) उदर, पेट, पेट की थैली
ओझल-(हिं०स्त्री०) ओट, परदा, आड़; (वि०) छिपा हुआ ।
ओझा-(हिं०पुं०) भूत प्रेत उतारनेवाला
ओझाई-(हिं०स्त्री०) ओझा की वृत्ति, झाड़फूँक ।
ओट-(हिं०स्त्री०) अवरोध, रोक, आड़, घूंघट ।
ओटन-(हिं०स्त्री०) कपास के बिनौले अलग करने की चर्खी ।
ओटना-(हिं०क्रि०) कपास के बिनौले अलगाना, बीच बीच में रोकना, अपनी ही बात कहते रहना ।
ओठंगन-(हिं०पुं०) आधार ।
ओठंगना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के सहारे बैठना या लेटना ।
ओड़न-(हिं०स्त्री०) अवरोध, रुकाव ।
ओड़ना-(हिं०क्रि०) रोकना, फैलाना ।
ओड़ा-(हिं०पुं०) टोकरा, खांचा ।
ओढ़न-(हिं०स्त्री०) ओढ़नेका वस्त्र ।
ओढ़ना-(हिं०क्रि०) लपेटना, वस्त्र से शरीरको ढापना, अपने ऊपर किसी कार्य का भार ले लेना; (पुं०) शरीर ढापने का वस्त्र, चादर ।
ओढ़नी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के ओढने का वस्त्र, छोटी चादर ।
ओढ़र-(हिं०पुं०) छल, धोखा, बहाना ।
ओढ़ाना-(हिं०क्रि०) दूसरे के शरीर को वस्त्र से ढांपना ।
ओढ़ौनी-(हिं०स्त्री०) देखो ओढनी ।
ओत-(सं०वि०) भरा हुआ, बुना हुआ; (हिं०स्त्री०) सुख, विश्राम ।
ओता-(हिं०वि०) उस परिमाण का, उतना ।
ओद-(हिं०पुं०) तरी, गीलापन; (वि०) गीला, तर ।
ओदन-(सं०नपुं०) पगा हुआ चावल, भात ।
ओदरना-(हि०क्रि०) छिन्न भिन्न होना, फटना ।
ओदा-(हिं०वि०) तर, गीला ।
ओदारना-(हिं० क्रि०) छिन्न भिन्न करना, फाड़ डालना ।
ओनचन-(हिं०स्त्री०) खटिये के पायताने में कसने की रस्सी, अदवायन ।
ओनचना-(हिं०क्रि०) अनवायन कसना
ओना-(हिं०पुं०) गड्ढे तालाब आदि का पानी निकालने का मार्ग ।
ओनामासी-(हिं०स्त्री०) ओंनमः सिद्धम्—विद्यारम्भ समय का मांगलिक वाक्य आरंभ ।
ओप-(हिं०स्त्री०) चमक, शोभा, रंग ।
ओपना-(हिं०क्रि०) चमकाना ।
ओम्-(सं०अव्य०) ईश्वर वाचक शब्द, प्रणव ।
ओबरी-(हिं०स्त्री०) छोटी कोठरी ।
ओर-(हिं०स्त्री०) दिशा, पक्ष, अलंग; (पुं०) छोर, किनारा, अन्त, आरम्भ ।
ओरमना-(हिं०क्रि०) सहारा लेना, लटकना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओरहना-(हिं०पुं०) देखो ओलहना।
ओरा-(हिं०पुं०) देखो ओला।
ओराना-(हिं०क्रि०) चुक जाना, अन्त होना।
ओरी-(हिं०स्त्री०) ओलती (अव्य०) संबोधन का शब्द जो स्त्रियों के लिये प्रयोग होता है।
ओरौता-(हिं०वि०) अन्त का, चुकौता
ओरौती-(हिं०स्त्री०) ओलती, छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान।
ओल-(सं०पुं०) सूरन; (हिं०स्त्री०) गोद, आड़, रक्षा बहाना, शरण।
ओलती-(हिं०स्त्री०) छप्पर से बरसाती पानी गिरने का स्थान, ओरी।
ओलना-(हिं०क्रि०) छिपाना, आड़ लगाना, सहन करना, ऊपर लेना, भोंकना।
ओलरना-(हिं०क्रि०) लेट जाना।
ओलहना-(हिं०पुं०) देखो उरहना।
ओला-(हिं०पुं०) वर्षा के साथ गिरा हुआ हिमका टुंकड़ा, मिश्री का बना हुआ लड्डू।
ओलाना-(हिं०क्रि०) भूनना, सेकना।
ओली-(हिं०स्त्री०) क्रोड़, गोदी, अंचल।
ओल्यो-(हिं०पुं०) बहाना।
ओषध-(सं०नपु०) औषधि, वनस्पति।
ओषधि-(सं०स्त्री०) देखो औषधि।
ओष्ठ-(सं०पुं०) दन्तच्छद, होंठ।
ओष्ठ्य-(सं०वि०) ओष्ठ संबंधी, होंठ से उच्चारण किया जाने वाला।
ओस-(हिं०स्त्री०) रात्रि में आकाश से भूमि पर गिरने वाला बाष्पीय जल।
ओसरा-(हिं०पुं०) अवसर, समय।
ओसाई-(हिं०स्त्री०) ओसाने का काम,
ओसाना-(हिं०क्रि०) दायें हुए गल्ले को हवा में उड़ाकर भूसा और अन्न अलग करना।
ओसार-(हिं०पुं०) विस्तार, चौड़ाई,
ओसारा-(हिं०पुं०) दालान, छप्पर।
ओह-(हिं०अव्य०) दुःखअथवा आश्चर्य सूचक अव्यय, अरे! हाय!
ओहका (हिं०अव्य०) उसका (हिं०सर्व०)
ओहर-(हिं०अव्य०) उस ओर।
ओहरना-(हिं०क्रि०) ऊपर से नीचे की ओर आना, घट जाना।
ओहार-(हिं०पुं०) गाड़ी, पालकी, इत्यादि के ऊपर ढापने का वस्त्र, परदा।
ओहो-(हिं०अव्य०) विस्मय तथा आनन्द प्रकट करने के लिये इस शब्द का प्रयोग होता है, अरे! अहो! आहा!

औ

औ-संस्कृत स्वर वर्ण का चौदहवाँ अक्षर, इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और कण्ठ है; अन्त पृथ्वी। (हिं०अव्य०) और।
औंगना-(हिं०क्रि०) पहिये के धुरे में तेल देना।
औंगा-(हिं०वि०) मौन, गूंगा, चुपचाप।
औंघ-(हिं०स्त्री०) औंघाई, झपकी।
औंघना-(हिं०क्रि०) झपकी लेना।
औंघाई-(हिं०स्त्री०) ऊंघ, झपकी।
औंजना-(हिं०क्रि०) घबड़ाना, अकुलाना,
औंटन-(हिं०पुं०) पकाकर गाढा होना।
औंटना-(हिं०क्रि०) उबलना।
औंटाना-(हिं०क्रि०) उबालना, पकाना।
औंधना-(हिं०क्रि०) उलट जाना, मुंह के बल पड़ना, उलटा कर देना।
औंधा-(हिं०वि०) उलटा, मुह के बल पड़ा हुआ, टेढ़ा, (क्रि०वि०) उलटकर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(पुं०) मूर्ख । औंधाना-(हिं०क्रि०) उलटाना ।
औंनापौंना-(हिं०वि०) चौथा हिस्सा कम
औकास-(हिं०पुं०) देखो अवकाश ।
औखद-(हिं०पुं०) देखो औषध ।
औगढ़-(हिं०वि०) बेढंगी रीति से बनाया हुआ ।
औगत-(हिं०स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा ।
औगुन-(हिं०पुं०) देखो अवगुण ।
औघट-(हिं०वि०) दुस्तर, कठिन, ढालूवाँ
औघड़-(हिं०वि०) फूहड़, अनाड़ी, उलटा पुलटा ।
औघर-(हिं०वि०) विपरीत, अद्भुत,
औचक-(हिं०क्रि०वि०) अचानक, धोखे से; (हिं०स्त्री०) कठिनता, संकट, संकुचित स्थान, फँसाव ।
औचित्य-(सं०नपुं०) उपयुक्तता, सत्य ।
औझड़-(हिं०स्त्री०) प्रहार, धक्का, (क्रि० वि०) झटके के साथ, उछल कर ।
औटन-(हिं०स्त्री०) गरम करने की स्थिति, उबाल । औटना-(हिं०क्रि०) उबालना, गरम करके गाढ़ा करना ।
औटा-(हिं०वि०) खौलाया हुआ, उबाला हुआ । औटाई-(हिं०स्त्री०) औटाने का काम । औंटाना-(हिं०क्रि०) पका कर गाढ़ा करना ।
औतार-(हिं०पुं०) देखो अवतार ।
औत्सुक्य-(सं०नपुं०) उत्कण्ठा, उत्सुकता चिन्ता, ।
औदसा-(हिं०स्त्री०) अवदशा, दुर्भाग्य ।
औदार्य-(सं०नपुं०) उदारता, ।
औदुम्बर-(सं०वि०) गूलर का बना हुआ ।
औद्धत्य-(सं०नपुं०) धृष्टता ।
औद्योगिक-(सं०वि०) उद्योग से संबंध रखने वाला ।
औधारना-(हिं०क्रि०) देखो अवधारना ।
औधि-(हिं०स्त्री०) देखो अवधि ।
औनत-(हिं०वि०) देखो अवनत ।
औनि-(हिं०स्त्री०) देखो अवनि ।
औपचारिक-(सं०वि०) उपचार संबंधी
औपटी-(हिं०वि०) विकट ।
औपदेशिक-(सं०वि०) उपदेशसे मिला हुआ ।
औपन्यासिक-(सं०वि०) उपन्याससंबंधी
औपनिवेशिक-(सं०वि०) उपनिवेश संबंधी ।
औपसर्गिक-(सं०वि०) उपसर्ग संबंधी ।
औपाधिक-(सं०वि०) उपाधि संबंधी ।
और-(हिं०वि०) अन्य, दूसरा, केवल, अधिक, किन्तु ।
औरस-(सं०पुं०) समान जाति की विवाहित भार्या से उत्पन्न पुत्र ।
औरेब-(हिं०पुं०) वक्रगति, उलटी चाल, फँसाव ।
औशि-(हिं०अव्य०) देखो अवश्य ।
औषध-(सं०नपुं०) रोगनाशक द्रव्य ।
औषधि-(सं०स्त्री०) दवा ।
औसन-(हिं०स्त्री०) उष्णता, गरमी ।
औसर-(हिं०पुं०) अवसर ।
औहत-(हिं०स्त्री०) दुर्दशा, बुरा हाल ।

क

क-हिन्दी वर्णमाला का प्रथम व्यंजन वर्ण, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है (सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, सूर्य, किरण, मन, शरीर, काल, धन, प्रकाश, शब्द, अग्नि, वायु, मोर ।
कइत-(हिं०स्त्री०) किनारा, कपित्थ ।
कई-(हिं०वि०) कतिपय, अनेक, कितने ही
कउर-(हिं०पुं०) देखो कवर ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कंकड़-र-(हिं०पुं०) मिट्टी और चूने के योग से बने हुए रोड़े जिनको फूंक कर चूना बनता है, किसी वस्तु का पिसने योग्य छोटा टुकड़ा, पीनेकी सूखी तमाखू,। **कंकड़ी**-(हिं०स्त्री०) छोटा कंकड़, छोटा टुकड़ा।

कंकड़ीला-(हिं०वि०) कंकड़ मिला हुआ

कंकाल-(हिं०पुं०) अस्थिपंजर।

कंखवारी,कंखौरी-(हिं०स्त्री०) काँख, काँख की फोड़िया।

कंगण-(हिं०पुं०) लोहे का चक्र जिसको अकाली सिर पर बाँधते हैं, कङ्कण।

कंगन-(हिं०पुं०) कङ्कण।

कंगला-(हिं०वि०) देखो कंगाल।

कंघही-(हिं०स्त्री०) देखो कंघी।

कंगाल-(हिं०वि०) निर्धन,दरिद्र, भुक्खड़

कंगुरिया-(हिं०स्त्री०) सबसे छोटी अंगुली

कंगूरा-(हिं०पुं०) प्रासाद की चोटी, शिखर, मुकुटमणि।

कंघा-(हिं०पुं०) बाल झारने की बड़ी कंघी; **कंघी**-(हिं०स्त्री०) छोटा कंघा, जुलाहे का एक यंत्र।

कंघेरा-(हिं०पुं०) कंघा बनाने वाला।

कंचुक-(हिं०पुं०) कवच,चोली,**कंचुकी**; (हिं०स्त्री०) चोली, केचुली।

कंचेरा-(हिं०पुं०) कांच का काम करने वाला।

कंजड़, कजड़ा--(हिं०पुं०) एक घूमने वाली जाति, डरपोक मनुष्य, भड़ुवा,

कंजा-(हिं०वि०) कंजई, (पुं०) कंजी आँख वाला मनुष्य।

कंजियाना-(हिं०क्रि०) धीमा पड़ना, मन्द होना।

कंजूस-(हिं०वि०) कृपण, सूम।

कंट, कंटक-कांटा, तीव्र वेदना, विघ्न।

कंटर-(हिं०पुं०) काँच का सुन्दर बोतल

कँटिया-(हिं०स्त्री०) काँटी, छोटी कील, मछली फंसाने की अंकुसी, लोहे की अंकुसियों का गुच्छा जिससे कुवें में गिरे हुए गगरे लोटे इत्यादि निकाले जातेहैं,सिर पर पहिरने का एक आभूषण

कँटीला-(हिं०वि०) कांटेदार।

कंटोप-(हिं०पुं०) सिर तथा कानों को ढापने की एक प्रकार की टोपी।

कंठ-(हिं०पुं०) नरेटी, टेटुआ, ध्वनि, शब्द।

कंठला-(हिं०पुं०) बच्चों के गले में पहराने का एक आभूषण।

कंठा-(हिं०पुं०) गले का चिह्न जो तोते के कंठ के चारो ओर पड़ जाता है, गले का एक आभूषण; **कंठी**-(हिं०स्त्री०) छोटे दाने का कंठा, तुलसी आदि की माला।

कंडा-(हिं०पुं०) गोवर का थापा हुआ लंबा टुकड़ा।

कंडाल-(हिं०पुं०) सिंघा, तुरुही, पानी रखने का बड़ा पात्र जिसका मुँह खुला होता है।

कंडी-(हिं०स्त्री०) छोटा कड़ा, गोहरी, टोकरी, एक प्रकार की टोकरी जिसमें पहाड़ी लोग बोझ ले जाते हैं

कंडील-(हिं०स्त्री०) कन्दील, लालटेन।

कंडु-(हिं०पुं०) खजुली।

कडेरा-(हिं०पुं०) धुनियां।

कंडौर, कंडौरा(हिं०पुं०) कंडा पाथने का स्थान, कंडों का ढेर, गोहरौर।

कंत,कंथ-(हिं०पुं०) कान्त, प्रभु,मालिक पति।

कंद-(हिं०पुं०) गूदेदार जड़।

कंदन-(हिं०पुं०) नाश, विध्वंस करना।

कंदरा-(हिं०स्त्री०) गुहा, गुफा।

कंदा-(हिं०पुं०) शकरकन्द,घुइयां,अरुई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कंदला,कंदैला-(हिं०वि०) मैलाकुचैला।
कंदुक-(सं०पुं०) गेंद ।
कंध-(हिं०पुं०)स्कन्ध, कन्धा ।
कंघनी-(हिं०स्त्री०) किंकिणी, कमरमें पहिरने का आभूषण ।
कंधर,कंधा-(हिं०पुं०) स्कंध, मोढ़ा ।
कंधियाना-(हिं०क्रि०)कन्धा देना, कंधे पर रखना ।
कंधेला-(हिं०पुं०) स्त्रियों के कन्धे पर रहने वाला ।
कँपकँपी-(हिं०स्त्री०)कम्प,थरथराकट।
कंपना-(हिं०क्रि०)थरथराना,कंपित-होना।
कंपा-(हिं०पुं०)लासा लगी हुई बाँसकी लग्गी जिससे चिड़ीमार पक्षियों को फंसा कर पकड़ते हैं।
कँपाना-(हिं०क्रि०)इधर उधर चलना, हिलना, डराना, भय दिखाना ।
कंपू-(हिं०पुं०) शिविर, डेरा ।
कँवलगट्टा-(हिं०पुं०) कमल का बीज।
कंस-(सं०पुं०)कांसा,प्याला,कसोरा।
कंसकार-(सं०पुं०) कसेरा ।
कंसताल-(सं०पुं०) झांझ, मजीरा।
ककड़ी-री-(हिं०स्त्री०)भूमि पर फैलने वाली एक लता जिसका लंबा फल खाया जाता है।
ककनी-(हिं०स्त्री०)छोटा कंगन,इमली का छोटा फल ।
ककराली-(हिं०स्त्री०)कांख का फोड़ा।
ककहरा-(हिं०पुं०) वर्ण समूह, 'क' से 'ह' तक अक्षर।
ककही-(हिं०स्त्री०) कंघी ।
ककुद-(सं०पुं०) बैल के कंधे पर का कूबड़, शिखर ।
ककुभ-(सं०स्त्री०) दिशा ।
कक्ष-(सं०पुं०) बाहुमूल, कांख।
कक्षा-(सं०स्त्री०) काछ, लांग ।
कखौरी-(हिं०स्त्री०) काँखकी फ़ोड़िया।
कगर-(हिं०पुं०)ऊँचा किनारा,सीमा मेड़,(क्रि०वि०)किनारे पर,अलग,से
कगार-(हिं०पुं०)कगरी-(स्त्री०) ऊँचा किनारा नदी का करारा, टीला।
कङ्क-(सं०पुं०)बकुला,यमराज,पाखंडी, ब्राह्मण,चन्दन,क्षत्रिय,एकप्रकार का बड़ा आम,अज्ञानवास में युधिष्ठिर ने अपना नाम कङ्क रक्खा था।
कङ्कण-(सं०नपुं०)हाथ में पहिरने की चूड़ी, कंगन ।
कङ्कपत्र-(सं०नपुं०)बाण,तीर कङ्क-मुख-(सं०नपुं०) संड़सी ।
कच-(सं०पुं०) केश, बाल, बन्धन, झुंड, शोभा; (हिं०वि०) कच्चा,
कचक-(हिं०स्त्री०)दबने या कुचल जाने से उत्पन्न चोट।
कचकच-(हिं०पुं०)बकझक। **कचक-चाना**-(हिं०क्रि०)दाँत पीसना ।
कचकड़-(-ड़ा) (हिं०पुं०)कछुवे की खोपड़ी
कचकना-(हिं०क्रि०)दबना,कुचलना।
कचकोल-(हिं०पुं०) कपाल,खोपड़ी, खप्पर।
कचट-(हिं०पुं०) टक्कर, ठेस ।
कचड़ा-रा-(हिं०पुं०) झाड़न, भूसी युक्त अन्न ।
कचपच-(हिं०पुं०) भीड़भाड़ ।
कचर पचर-(हिं०पुं०) कच्चा फल खाने पर मुख से निकलने वाला शब्द
कचरकूट-(हिं०स्त्री०) मारपीट,पेट भर कर भोजन। **कचरघान**-(हिं०पुं०) भीड़भाड़, मारपीट ।
कचरना-(हिं०क्रि०)पैर से कुचलता, रौंदना, खूब पेट भर भोजन करना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कचलोन-(हिं०पुं०) कांच की भट्ठियों में जमा हुए क्षार से बना हुआ नमक
कचवाँसी-(हिं०स्त्री०) एक विश्वे का बीसवाँ भाग।
कचाई-(हिं०स्त्री०) कच्चापन, अनभव हीनता।
कचाकची-(हिं०स्त्री०) विवाद, झगड़ा।
कचाना-(हिं०क्रि०) साहस हारना।
कचायँध-(हिं०स्त्री०) कच्चेपन की गन्ध
कचायन-(हिं०स्त्री०) बकझक, कहासुनी
कचार-(हिं०पुं०) तदी के किनारे का छिछला पानी।
कचारना-(हिं०क्रि०) कपड़ा धोना।
कचालू-(हिं०पुं०) घुइयाँ, अरुई, बंडा, एक प्रकार की चाट।
कचास-(हिं०स्त्री०) देखो कचाई।
कचियाना-(हिं०क्रि०) सकुचाना, लज्जा मानना।
कचूमर-(हिं०पुं०) कुचला, कुचली हुई वस्तु।
कचोटना-(हिं०क्रि०) गड़ता, चुभना।
कचोड़ी, कचौड़ी, कचौरी-(हिं०स्त्री०) उड़द की पीठी आदि में मसाला मिलाकर आँटे की लोई के भीतर भरकर घी या तेल में पकाई हुई पूरी
कच्चा-(हिं०वि०) अपक्व, हरा, बिना रस का, अप्रस्तुत, अस्थायी, अयुक्त, न्यून, अपूर्ण, नियम रहित, अनभ्यस्त, अदृढ़, (पुं०) दूर दूर की सियन, ढाँचा, दाढ, तांबे का छोटा सिक्का, सच्चा वृत्तान्त जिसको कच्चा चिट्ठा कहते हैं; **कच्चा करना** झूठा साबित करना, डराना; **कच्चा टांका**-रांगे का जोड़; **कच्चा तागा**-बिना बटा हुआ धागा; **कच्चा पड़ना**-झूठा ठहरना; **कच्चा बाना या माल**-झूठे गोटे का माल; **कच्ची पक्की**-दुर्वचन, गाली; **कच्ची जबान**-अश्लील वार्ता; **कच्चा चिट्ठा**-(हिं०पुं०) रहस्य, गुप्त भेद, सच्ची वार्ता।
कच्ची-(हिं०स्त्री०) न पकी हुई, घी या दूध में न पकी हुई रसोई,। **कच्ची घड़ी**-(हिं०स्त्री०) चौबीस मिनट का काल। **कच्ची चीनी**-(हिं०स्त्री०) गलाकर स्वच्छ न की हुई चीनी। **कच्ची बही**-(हिं०स्त्री०) पूर्ण रूपसे निश्चित न किये हुए हिसाब लिखने की व्यापारी की बही। **कच्ची मिती**-(हिं०स्त्री०) पक्की मिती से पहिले की या रुपया मिलने या चुकाने का दिन। **कच्ची रोकड़**-(हिं०स्त्री०) प्रतिदिन के आय व्यय लिखने की बही जिसमें ऐसा हिसाब लिखा जाता है, जो पूर्ण रूप से स्थिर त हो। **कच्ची सड़क**-(हिं०स्त्री०) कंकड़ पत्थर से न पिटी हुई सड़क। **कच्ची सिलाई**-(हिं०स्त्री०) दूर दूर पर टाँका लगाई हुई सिलाई।
कच्चे बच्चे-(हिं०पुं०) छोटे बच्चे,
कच्छ-(सं०पुं०) जलके पास की भूमि, कछार, अनूपदेश, वस्त्र का अञ्चल,
कच्छप-(सं०पुं०) कूर्म, कछुआ,
कच्छा-(हिं०स्त्री०) कई नावों को मिला कर बना हुआ बेड़ा।
कच्छी-(हिं०वि०) कच्छ देशीय।
कच्छू-(ह०पुं०) कच्छप, कछुवा, खुजली
कछना-(हिं०पुं०) घुटने तक चढ़ा कर पहिरी हुई धोती। **कछनी**-(हिं०स्त्री०) छोटी धोती।
कछरा-(हिं०पुं०) चौड़े मुँह का घड़ा।
कछरी-(हिं० स्त्री०) छोटा कछरा, गगरी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कछार-(हिं०पुं०) नदी या समुद्र के किनारे की नीची भूमि।
कछु-(हिं०वि०) देखो कुछ ।
कछुआ-(हिं०पुं०) देखो कच्छप ।
कछुक-(हिं०वि०) कुछ, थोड़ा सा।
कछुवा-(हिं०पुं०) देखो कच्छप ।
कछू-(हिं०वि०) देखो कुछ ।
कछोंटा, कछौटा-(हिं०पुं०) काछ, कछनी, लांग ।
कजरा-(हिं०पुं०) काजल, काली आँख का बैल, (वि०) जिसकी आँखें काजल लगी हुई देख पड़ें। कजराई-(हिं० स्त्री०) श्यामता, कालापन। कजरारा-(हिं०वि०) कज्जलयुक्त ।
कजरी-(हिं०स्त्री०) बरसातमें गाने की एक रागिनी ।
कजरौटा-(हिं०पुं०) काजल रखने की डंडी लगी हुई डिबिया ।
कजली-(हिं०क्रि०) श्यामता, कालिख।
कजलौटा-(हिं०पुं०) देखो कजरौटा।
कञ्चुक-(सं०पुं०) साँप की केचुली, चोली, अंगिया, कवच ।
कञ्चुकी-(सं०पुं०) राजा के अन्तःपुर का रक्षक, सर्प, (स्त्री०) चोली, अंगिया ।
कट-(सं०पुं०) नरकट की चटाई, घासफूस, टट्टी, अरथी, श्मशान।
कटक-(सं०पुं०) पहाड़ के बीच का स्थान, चक्र, चूड़ी, सेना, शिविर, डेरा।
कटकई-(हिं०स्त्री०) सेना ।
कटकट-(हिं०स्त्री०) दाँतों के कड़-कड़ानेका शब्द ।
कटकार-(सं०पुं०) शिल्पकार, चटाई वाला ।
कटकुटी-(सं०स्त्री०) पर्णशाला, झोपड़ी।
कटखना-(हिं०वि०) दाँत काटनेवाला।
कटघरा-(हिं०पुं०) जंगले का बना हुआ काठ का घर, बड़ा पींजड़ा ।
कटती-(हिं०स्त्री०) बिक्री, मांग ।
कटना-(हिं०क्रि०) दो टुकड़े होना, घुसना, महीन चूर्ण होना, बीतना, समाप्त होना, छीजना, खपना, मिटना, नष्ट होना ।
कटनास-(हिं०पुं०) नीलकंठ पक्षी ।
कटनि-(हिं०स्त्री०) काटछांट ।
कटनी-(हिं०स्त्री०) कतरनी, कटाई, दौड़ ।
कटरा-(हिं०पुं०) छोटा चौकोर हाट।
कटवां-(हिं०वि०) कटा हुआ, काट कर बना हुआ ।
कटहर-(हिं०पुं०) देखो कटहल ।
कटहरा-(हिं०पुं०) कटघरा ।
कटहल-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसमें हाथ भर लंबे कांटेदार मोटे फल लगते हैं, पनस ।
कटहा-(हिं०वि०) दाँत काटनेवाला।
कटा-(हिं०वि०) टूटा फूटा, कटा हुआ।
कटाई-(हिं०स्त्री०) प्रहार, काटने का काम, अन्न का काटा जाना, काटने की शुल्क ।
कटाऊ-(हिं० वि०) काटछांट किया हुआ।
कटाक्ष-(सं० पुं०) तिरछी चितवन, आक्षेप ।
कटान-(हिं०स्त्री०) काटने का कार्य ।
कटाना-(हिं०क्रि०) छेद कराना, काटने का काम दूसरेसे कराना ।
कटार-(हिं०पुं०) दोनों ओर के धार का छोटा अस्त्र।
कटारी-(हिं०स्त्री०) कटार, एक प्रकार का छोटा अस्त्र।
कटाव-(हिं०पुं०) काटछांट, बनावटी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेलबूटे जो कपड़ा काटकर बनाये जाते हैं ।

कटाह-(सं०पुं०) कछुवे की खोपड़ी, तेल या घी रखने का पात्र

कटि-(सं०स्त्री०) कमर ।।

कटिबद्ध-(सं०वि०) उद्यत, तत्पर, तैयार

कटिबन्ध-(सं०पुं०) कमरबन्द, पृथ्वी का वह भाग जो शीतलता और उष्णता के अनुसार निर्धारित होता है ।

कटिया-(हिं०स्त्री०) पशुओं का चारा जो ज्वार, मकई इत्यादि के डंठलों को काटकर बनाया जाता है ।

कटिसूत्र-(सं०नपुं०) करधनी ।

कटीला-(हिं०वि०) तीक्ष्ण, पैना, प्रभावशाली, हृदयग्राही, नोकदार ।

कटु-(सं०वि०) कड़ुवा, अप्रिय, तीक्ष्ण, कुत्सित ।

कटूक्ति-(सं० स्त्री०) अप्रिय वार्ता ।

कटैया-(हिं०वि०) काटने वाला ।

कटोरा-(हि०पुं०) चौड़ी पेंदी तथा खुले मुँह का बड़ा प्याला ।

कटोरी-(हिं०स्त्री०) छोटा कटोरा ।

कटौवा-(हिं०स्त्री०) कटनेवाला ।

कटौती-(हिं०स्त्री०) काटकर निकाली जाने वाली वस्तु ।

कटौनी-(हिं०स्त्री०) अन्न काटने का काम

कट्टर-(हि०वि०) हठी, अन्ध विश्वासी ।

कट्टहा-(हिं०पुं०) महाब्राह्मण, महापात्र

कट्ठा-(हि०वि०) स्थूल, मोटा, पुष्ट ।

कट्ठा-(हिं०पुं०) भूमि की एक नाप जो पांच हाथ चार अंगुल होती है ।

कठ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का प्राचीन बाजा, समासादि में आने से इस शब्द का अर्थ 'काठ का बना हुआ' होता है जैसे कठपुतली ।

कठफोड़वा-(हिं०पुं०) भूरे रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच लंबी होती है यह पेड़ों की छाल को छेदती और इसमें के कीड़े मकोड़े खाती है ।

कठबाप-(हिं०पुं०) सौतेला पिता ।

कठबेल-(हिं०पुं०) कपित्थ, कैथ ।

कठमस्त-(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट, हट्टा-कट्टा । **कठमस्ती**-(हिं०स्त्री०) गुण्डई ।

कठमाटी-(हिं०स्त्री०) कीचड़ की मिट्टी जो सूखने पर बहुत कड़ी हो जाती है ।

कठरा-(हिं०पुं०) काठ का बड़ा सन्दूक, काठ का पात्र, कठौता कठघरा ।

कठला-(हिं०पुं०) बच्चों के पहिराने का गले का एक आभूषण ।

कठवत-(हिं०पुं०) देखो कठौता ।

कठारा-(हिं०पुं०) कछार ।

कठारी-(हिं०स्त्री०) कमण्डलू ।

कठिका-(सं०स्त्री०) खटिका, खड़िया ।

कठिन-(सं०वि०) दृढ़, कड़ा, कठोर, निष्ठुर, तीक्ष्ण, दुःसह ।

कठिनता, कठिनताई-(सं०स्त्री०) कठोरता, तीक्ष्णता, कड़ापन, निर्दयता ।

कठिनाई-(हिं०स्त्री०) दृढ़ता, कड़ापन, असुविधा ।

कठिनी-(सं०स्त्री०) खटिका, खड़िया ।

कठिया-(हिं०वि०) कड़े छिलके वाला गेहूँ ।

कठियाना-(हिं०क्रि०) कड़ा होता, सूखना ।

कठुला-(सं०स्त्री०) बच्चों के गले में पहिरने की माला ।

कठुवाना-(हिं०क्रि०) सूखकर कड़ा हो जाना, ठंढक से हाथ पैर ठिठुरना ।

कठोर-(सं०वि०) कठिन, कड़ा, निर्दय, दारुण, तीक्ष्ण ।

कठौता-(हिं०पुं०) लकड़ी का बड़ा पात्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कड़क-(हिं०स्त्री०) कठोर शब्द, तड़प, इन्द्रियों में दाह होने का एक रोग, कड़ापन ।

कड़कड़-(हिं०पुं०) दो वस्तुओंके परस्पर टकराने का शब्द, कठोर शब्द । **कड़कड़ाना**-(हिं०क्रि०) कड़कड़ शब्द होना । **कड़कड़ाहट**-(हिं०स्त्री०) कर्कश शब्द, गरज ।

कड़कना-(हिं०क्रि०) तड़पना, कड़कड़ाना, कड़ा शब्द बोलना, टूटना, फूटना, डाटना ।

कड़कनाल-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुंहकी तोप ।

कड़खा-(हिं०पुं०) युद्ध संगीत ।

कड़वा-(हिं०वि०) देखो कटु ।

कड़हन-(हिं०पुं०) जंगली धान ।

कड़ा-(हिं०पुं०) हाथ या पैर में पहिरने का कंगन; (वि०) रूखा, उग्र, दृढ़, तीक्ष्ण, दुष्कर, दुःसाध्य, प्रचण्ड, तीव्र, असह्य, कर्कश ।

कड़ाका-(हिं०पुं०) किसी कड़े पदार्थ के टूटने का शब्द, उपवास, लंघन ।

कड़ाबीन-(हिं०स्त्री०) छोटी बन्दूक, तमंचा ।

कड़ाहा-(हिं०पुं०) लोहे की बड़ी कड़ाही । **कड़ाही**-(हिं०स्त्री०) छोटा कड़ाहा ।

कड़ियाली-(हिं०स्त्री०) घोड़े की लगाम।

कड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा छल्ला, अड़चन, संकट, दुःख, गीतका एक भाग, (वि०) कठोर ।

कड़ुआ-(हिं०वि०) स्वाद में तीखा, तीक्ष्ण प्रकृति का, क्रोधी, अप्रिय, कठिन, टेढ़ा ।

कड़ुवा तेल-(हिं०पुं०) सरसों का तेल,

कड़ुआना-(हिं० क्रि०) कड़ुवा लगना, क्रोध करना, किरकिराना, **कड़ुआहट**-(हिं० पुं०) कटुता ।

कड़ुई-(हिं०स्त्री०) कटु, चरपरी ।

कड़ू-(हिं०वि०) देखो कटु ।

कढ़ना-(हिं०क्रि०) निकलना, उदय होना, देख पड़ना, बढ़ जाना ।

कढ़नी-(हिं०स्त्री०) मथानी की रस्सी ।

कढ़ाई-(हिं०स्त्री०) निकालने का काम, सूई का काम, कसीदा, कड़ाही ।

कढ़ाना, कढ़वाना-(हिं० क्रि०) बाहर कराना, बाहर निकालना । **कढ़ाव**-(हिं०पुं०) कसीदे का काम ।

कढ़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका सालन

कढ़ैया-(हिं०वि०) निकालने वाला, (स्त्री०) कड़ाही ।

कण-(सं०पुं०) किनका, लेश, रवा, छोटा टुकड़ा, जलबिन्दु, चिनगारी, चावल का महीन टुकड़ा, परमाणु ।

कणिका-(सं० स्त्री०) अत्यन्त सूक्ष्म वस्तु, कण, टुकड़ा, किनका ।

कण्ठ-(सं०पुं०) गरदन के सामने का भाग, नरेटी; **कण्ठगत**-(सं०वि०) गले तक पहुँचा हुआ । **कण्ठमाला**-(सं० स्त्री०) गले में पहिरने का आभूषण । कण्ठ में का बाहरी फोड़ा । **कण्ठस्थ**-(सं०वि०) याद किया हुआ ।

कत-(हिं०अव्य०) किस कारण से, किस लिये ।

कतना-(हिं०क्रि०) काता जाना, (क्रि०वि०) कितना ।

कतनी-(हिं०स्त्री०) सूत कातने की टेकुरी ।

कतरन-(हिं० स्त्री०) कपड़े कागज इत्यादि का कटा हुआ रद्दी टुकड़ा ।

कतरना-(हिं०क्रि०) कैंची से काटना, छाँटना, टुकड़े करना । **कतरनी**-(हिं०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री०) बाल, कपड़े आदि काटने की कैंची ।
कतरब्योंत-(हिं०पुं०) काटछाँट, उलट पलट, युक्ति ।
कतरा-(हिं०पुं०) खण्ड, अंश, टुकड़ा,
कतराई-(हिं०स्त्री०) कतरने का काम,
कतराना-(हिं०क्रि०) बचकर निकल जाना ।
कतला-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का पतला टुकड़ा ।
कतली-(हिं०स्त्री०) चौकोर कटी हुई मिठाई ।
कतवार-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट ।
कतहूँ, कतहूँ-(हि०अव्य०) किस ओर
कताई-(हि० स्त्री०)कातने का काम, कतौनी ।
कति-(सं०वि०) कौन सी संख्या का, कितना, बहुत से अनगिनतिन ,
कतिक-(हिं०वि०) किस परिमाण का, कितना, बहुत सा, अनेक । **कतिपय**-(सं०वि०) कुछ, कई एक ।
कतेक-(हिं०वि०) कितने, कतिक ।
कतौनी-(हिं०स्त्री०)कातने की क्रिया, प्रतीक्षा ।
कत्थ-(हिं०पुं०) देखो कत्था ।
कत्थई-(हिं०वि०) खैर के रंग का ।
कत्थक-(हिं०पुं०) एक जाति विशेष, ये लोग नाचते गाते हैं ।
कत्था-(हिं०पुं०) खैर की लकड़ियों को उबाल कर निकाला हुआ सत्व ।
कथं-(सं०अव्य०) किस रीति से, किस प्रकार से, क्यों, कहां से ।
कथक्कड़-(हिं०पुं०) किस्से कहानी कहने वाला ।
कथञ्चन-(सं०अव्य०)किसी प्रकारसे,
कथञ्चित्-(सं०अव्य०)किसी प्रकार से
कथन-(सं० नपुं०) कथा, वाक्य । **कथना**-(हिं०क्रि०) बोलना, कहना, निन्दा करना । **कथनी**-(हिं० पुं०) बात चीत, बकवाद ।
कथमपि-(सं०अव्य०) किसी प्रकार से,
कथरी-(हिं०स्त्री०) पुराने चिथड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछौना,गुदड़ी ।
कथा-(सं०स्त्री०)किस्सा कहानी,वार्ता, प्रसंग, चर्चा, उपन्यास ।
कथित-(सं०वि०)उच्चारित,कहा हुआ
कथोद्घात-(सं०पुं०) नाटककी प्रस्तावना । **कथोपकथन**-(सं०पुं०) कथा पर कथा, विविध वार्ता, बात चीत ।
कद-(हिं०स्त्री०) ईर्ष्या,द्वेष,हठ,अनबन, (अव्य०) कब, किस समय ।
कदन-(सं०नपुं०) पाप,युद्ध, लड़ाई ।
कदन्न-(सं०नपुं०) कुत्सित अन्न, मोटा अनाज ।
कदम-(हिं०पुं०) कदम्ब वृक्ष ।
कदरई-(हिं०स्त्री०) भीरुता,कायरता ।
कदरज-(हिं०पुं०)कदर्य,कंजूस व्यक्ति ।
कदरमस-(हिं०स्त्री०) मारपीट ।
कदराना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना ।
कदर्थ-(सं०पुं०)कूड़ाकरकट, (वि०) निरर्थक ।
कदली-(सं०स्त्री०)केला,रंभाफल, एक प्रकार का हिरन ।
कदा-(सं०अव्य०) किस समय, किस वख्तपर ।
कदाचन-(हिं०अव्य०)कदाचित्,कभी
कदाचार-(सं०पुं०)कुत्सित व्यवहार ।
कदाचित्-(सं०अव्य०) एक बार,कभी ।
कदापि-(सं०अव्य०)कभी कभी,जबतक ।
कदुष्ण-(सं०वि०) थोड़ा गरम ।
कधी-(हिं०क्रि०वि०)कभी,किसी समय ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कनक-(हिं०पुं०) सुवर्ण, सोना ।
कन-(हिं०पुं०) कण, बहुत छोटा टुकड़ा, अन्न के दाने का टुकड़ा, बूंद, चावल की धूल, कन्ना, यौगिक शब्दों में 'कन' से 'कर्ण' शब्द का बोध होता है यथा, कनटोप, कनफटा इत्यादि ।
कनई-(हिं०स्त्री०) कनखा, कोपल, कीचड़, गीली मिट्टी ।
कनउंगली-(हिं०स्त्री०) कानी अंगुली ।
कनऊड़ी-(हिं०स्त्री०) दासी ।
कनऊड़-(हिं०वि०) कनौड़ा, काना, कृतज्ञ
कनक-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना ।
कनकटा-(हिं०वि०) जिसका कान कटा हो, बूचा, कान काटने वाला ।
कनकना-(हिं०वि०) भंगुर, चुनचुनाहट लानेवाला, असह्य, खाने में बुरा लगनेवाला, असहनशील ।
कनकी-(हिं०स्त्री०) चावल का महीन टुकड़ा ।
कनकैया-(हिं०स्त्री०) गुड्डी, पलंग ।
कनखजूरा-(हि०पुं०) शतपदी, गोजर ।
कनखना-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना ।
कनखिया-(हिं०स्त्री०) कनखी, कटाक्ष ।
कनखी-(हिं०स्त्री०) कटाक्ष ।
कनटोप-(हिं०पुं०) दोनों कान को ढांपने की बड़ी टोपी । **कनपट**-(हिं० पुं०) कनपटी, थप्पड़ । **कनपटी**-(हि० स्त्री०) कान और आंख के बीच का स्थान । **कनफुसकी**-(हिं०स्त्री०) कान में धीरे धीरे बोलना, **कनफूल**-(हि० पुं०) करनफूल,
कनमनाना-(हिं०क्रि०) सोये हुए प्राणि का धीरे धीरे सचेत होना और हिलना डोलना, ।
कनवई, कनवा-(हिं०स्त्री०) एक छटांक का परिमाण ।
कनहार-(हिं०पुं०) कर्णधार, केवट ।
कनाई-(हिं० स्त्री०) कोपल, शाखा, पतली डाल, टहनी ।
कनागत-(हिं०पुं०) पितृपक्ष ।
कनियाँ-(हिं०स्त्री०) क्रोड़, गोद, उत्सङ्ग ।
कनियाना-(हिं०क्रि०) साथ छोड़ना, आंख बचाकर भाग जाना ।
कनिष्ठ-(सं०वि०) अत्यन्त लघुवय का,
कनिष्ठा, कनिष्ठिका-(सं०स्त्री०) कानी अंगुली ।
कनी-(हिं०स्त्री०) छोटा टुकड़ा, किनकी, हीरे का छोटा कण, चावल का मध्य भाग, बिन्दु ।
कनीनिका-(सं०स्त्री०) आंख की पुतली, कन्या, गुड़िया, कठपुतली, कानी, अंगुली ।
कने-(हिं०क्रि०वि०) निकट, पास, ओर ।
कनेठी-(हिं०स्त्री०) कान उमेठने का दण्ड ।
कनौड़ा-(हिं०वि०) काना, कलंकित, निन्दित, लज्जित ।
कनौती-(हिं०स्त्री०) पशुओं के दोनों कानों का छोर, इनका घूमना फिरना,
कन्त-(हिं०पुं०) पति, स्वामी, मालिक ।
कन्था-(हिं०स्त्री०) कथरी, गुदड़ी ।
कन्द-(सं०पुं०) लाल मूली, गाजर, अनाज की जड़, फल न देने वाले पौधे की जड़ ।
कन्दर-(सं०पुं०) हाथी का अंकुश, गुहा ।
कन्दरा-(सं०स्त्री०) गुहा, गुफा, खोह ।
कन्दर्प-(सं०पुं०) कामदेव, मन्मथ ।
कन्दली-(सं०स्त्री०) कन्दली, केला,
कन्दुक-(सं०पुं०) गेंद ।
कन्ना-(हिं०पुं०) पतंग की डोरी का वह भाग जो इसके बीचमें बंधा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होता है, किनारा, चावल की कनी।
कन्नी-(हिं०स्त्री०) पतंग को सीधी रखने के लिये इस के एक ओर बाँधी हुई वस्तु।
कन्यका-(सं०स्त्री०) कुमारी कन्या,
कन्या-(सं०स्त्री०) दश वर्ष की लड़की अविवाहिता स्त्री, पुत्री, बेटी।
कन्हाई-(हिं०पुं०)श्री कृष्ण, कन्हैया, बड़ा सुन्दर लड़का।
कन्हैया-(हिं०पुं०) श्री कृष्ण, प्रिय व्यक्ति, सुन्दर बालक।
कपट-(सं०पुं०)मिथ्या व्यवहार, धोखा।
कपटी-(सं०वि०) वञ्चक, धूर्त, छली।
कपड़कोट-(हिं०पुं०) शिविर। **कपड़छान**-(हिं०पुं०) किसी चूर्ण को कपड़े में छानने का काम। **कपड़मिट्टी**-(हिं० स्त्री०) कपड़ौटी।
कपड़ा-(हिं०पुं०) रूई, ऊन, रेशम या सन का बना हुआ वस्त्र।
कपर्द,कपर्दक-(सं०पुं०) कौड़ी।
कपर्दा, कपर्दि,कपर्दिका-(सं०) कौड़ी
कपसा-(हिं०स्त्री०)चिकनी गीली मिट्टी
कपाट-(सं०नपुं०) किवाड़, द्वार।
कपार-(हिं०पुं०) देखो कपाल।
कपाल-(सं०पुं०) मस्तक, माथा, खप्पर, घड़े का टुकड़ा, भिक्षापात्र।
कपास-(हिं०पुं०) देखो कर्पास। **कपासी**-(हिं०वि०) कपास के फूल के रंगका, हलके पीले रंग का।
कपि-(सं०पुं०) बन्दर, हाथी, सूर्य।
कपिञ्जल-(सं०पुं०) चातक, पपीहा, तीतर।
कपिल-(सं०वि०) भूरा, तामड़ा, मटमैला।
कपिला-(सं०स्त्री०)शुभ्र वर्ण की गाय, (वि०) भूरे रंग का, मटमैला।
कपिश-(सं० पुं०) मटमैला रंग, (वि०)मटमैला, भूरे रंग का।
कपिस-(हिं०पुं०) रेशमी वस्त्र।
कपूर-(सं०पुं०) एक सफेद रंग का सुगन्धित द्रव्य जो हवा लगने से उड़ जाता है।
कपूरी-(हिं०वि०) कपूर के रंग का, हलके पीले रंगका,।
कपोत-(सं०पुं०)पक्षी,चिड़िया,कबूतर; **कपोतव्रत**-(सं०वि०) दूसरे के अत्याचारों को चुपचाप सहन करने वाला, (पुं०) मौन व्रत।
कपोती-(सं०स्त्री०) कबूतरी, पेडुकी।
कपोल-(सं०पुं०) गण्डस्थल, गाल **कपोलकल्पना**-(सं०स्त्री०) अमूलक कल्पना, मनगढ़ंत। **कपोलकल्पित**-(सं०वि०) असत्य, झूठ।
कफ-(सं०पुं०) श्लेष्मा,शरीर के भीतर की एक धातु।
कफनखसोट-(हिं०वि०) कृपण, दरिद्र का धन हरनेवाला।
कफनी-(हिं०स्त्री०) साधु के पहिरने का बिना सिला हुआ वस्त्र जिसमें गला डालने के लिये एक छिद्र होता है।
कब-(हिं०क्रि०वि०) किस समय।
कबड्डी-(हिं०स्त्री०) बालकों का एक खेल जिसमें वे दो दल बना कर खेलते हैं, काँपा, कम्पा।
कबन्ध-(सं०नपुं०) जल,पानी,(पुं०) उदर पेट, मेघ, बिना मस्तक का धड़,
कबरा-(हिं०वि०) कर्बुर, श्वेत वर्ण पर काले, लाल, पीले या दूसरे रंग के धब्बे।
कबाड़-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट।
कबाड़ा-(हिं०पुं०) निरर्थक व्यापार, झगड़ा,झंझट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कबीला-(अ०स्त्री०) पत्नी, जोड़ू ।
कबुलवाना, कबुलाना-(हिं०क्रि०) स्वीकार करवाना ।
कभी-(हिं०क्रि०वि०) किसी समय ।
कभू-(हिं०क्रि०वि०) देखो कभी ।
कम-कम-(हिं०क्रि०वि०) थोड़ा-थोड़ा ।
कमङ्गर-(हिं०पुं०) कमान बनाने वाला, हड्डी बैठानेवाला, चित्रकार
कमचा-(हिं०पुं०) छोटी कमान, सारंगी, लचीली डाल। **कमची**-(हिं०स्त्री०) बाँस की पतली डाल जिसकी टोकरियां बनती हैं ।
कमंचा-(हिं०पुं०) बढई का बरमा चलाने का डंडा ।
कमठ-(सं०पुं०) कछुवा, बाँस, तुम्बी या नारियल का पात्र ।
कमठा-(हिं०पुं०) चाप, कमान। **कमठी**-(सं० स्त्री०) कछुई, (हिं०स्त्री०) बाँस या लकड़ी की लम्बी पतली पट्टी, फट्टी ।
कमण्डल-(हिं०पुं०) देखो कमण्डलु ।
कमण्डलु-(सं०नपुं०) काठ या नारियल का बना हुआ सन्यासियों का पात्र, तुम्बा ।
कमती-(हिं०स्त्री०) कम, अल्प, घटी, (वि०) अल्प, थोड़ा ।
कमनीय-(सं०वि०) मनोहर, रुचिर, सुन्दर, प्रिय ।
कमनैत-(हिं०पुं०) धनुर्धारी ।
कमरकोट, कमरकोठा-(हिं०पुं०) गढ के चारों ओर बनी हुई कंगूरेदार भीत जिसमें लक्ष्य लगाने के लिये छेद होते हैं, प्राकार ।
कमरख-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसके फाँक वाले लम्बे फल होते हैं। **कमरखी**-(हिं०वि०) फाँकदार ।
कमरटूटा-(हिं०वि०) ढीलीकमर वाला।
कमरा-(हिं०पुं०) कोष्ठ कोठा, कोठरी।
कमरिया-(हिं०स्त्री०) छोटा कम्बल, कटि, कमर। **कमरी**-(हिं० स्त्री०) छोटा कम्बल।
कमल-(सं०नपुं०) पद्म। **कमलगट्टा**-(हिं०पुं०) कमल का बीज।
कमला-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, सुन्दर स्त्री, नारंगी। **कमलाकर**-(सं०पुं०) पद्म समूह। **कमलाकान्त**-(सं०पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु।
कमलासन-(सं०पुं०) ब्रह्मा, हठयोग का पद्मासन।
कमलिनी-(सं०स्त्री०) छोटाकमल, कोई।
कमली-(हिं०स्त्री०) छोटा कम्बल, कमरी।
कमवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से कमाने का काम कराना ।
कमहा-(हिं०वि०) काम करने वाला, श्रमी ।
कमाई-(हिं०स्त्री०) कमाया हुआ धन, कमाने का काम, उद्यम, व्यवसाय।
कमाऊ-(सं०वि०) कमाने वाला ।
कमाची-(हिं०स्त्री०) कमान की तरह झुकी हुई तीली ।
कमाना-(हिं०क्रि०) उपार्जन करना, परिश्रम करना, सुधारना, मल मूत्र उठाना, बोने के लिये भूमि तैयार करना परिश्रम करना ।
कमासुत-(हिं०वि०) धन कमानेवाला, उद्यमी ।
कमेरा-(हिं०पुं०) कर्मकार, खेत में काम करने वाला ।
कमोरा-(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का मिट्टी का घड़ा, कछरा। **कमोरी**-(हिं०स्त्री०) छोटा कमोरा, कछरी ।
कम्प-(सं०पुं०) स्फुरण, थरथरी कँपकँपी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कम्पन-(सं०नपुं०) कंपकंपी, हिलना।
कम्पा-(सं०स्त्री०) कम्पन, कँपकपी; कम्पा मारना-छल द्वारा फँसाना।
कम्पित, कम्पी-(सं०वि०) काँपने वाला,
कम्बल-(सं०पुं०) भेड़ के ऊन की बनी ऊनी चादर।
कम्बु-(सं०पुं०) शंख, घोंघा, कौड़ी,
कम्बुक-(सं०पुं०) नीच पुरुष।
कम्बू-(सं०पुं०) तस्कर, चोर; (स्त्री०) शंख।
कम्मल-(हिं०पुं०) देखो कम्बल।
कर-(सं०पुं०) हाथ, हाथी का सूंड, काम, महसूल, छल, युक्ति, चौबीस अंगुल की नाप, संबंध कारक का चिह्न, प्रत्यय की तरह शब्द में प्रयोग होने से इसका अर्थ "करने-वला" होता है यथा कष्टकर, सुख-कर इत्यादि।
करइत-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, एक प्रकार का सर्प।
करंजा-(हिं०पुं०) कंजा, (वि०) भूरी आँख वाला।
करंड-(हिं०पुं०) पिटारा, कोष।
करंडी-(हिं०स्त्री०) कच्चे रेशम की चादर, अंडी।
करक-(सं०पुं०) कमण्डल, करवा।
करक-(हिं०स्त्री०) देखो कड़क।
करकट-(हिं०पुं०) असार वस्तु, कूड़ा कतवार।
करकण्टक-(सं०पुं०) नख।
करकना-(हिं०क्रि०) चटचटाना, पीड़ा होना।
करकरा-(हिं०वि०) खुरखुरा, गड़ने वाला, कठोर।
करकस-(हिं०वि०) कर्कश, कड़ा।
करखा-(हिं०पुं०) कलंक, काजल।
करगह-(हिं०पुं०) कपड़ा बीनने का यन्त्र।
करगहना-(हिं०पुं०) पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा जिसको द्वार या खिड़की के चौखट पर रखकर जोड़ाई करते हैं
करग्रह-(सं०पुं०) विवाह, कर लेने का काम।
करघा-(हिं०पुं०) देखो करगह।
करट-(सं०पुं०) कौवा, दुष्ट मनुष्य।
करटक-(सं०पुं०) कौवा।
करटा-(सं०स्त्री०) दूध दुहाने में छट-कने वाली गाय।
करण-(सं०नपुं०) व्याकरण में वह कारक जिसके द्वारा कर्ता क्रिया को सिद्ध करता है, तृतीया विभक्ति, इन्द्रिय, शरीर, कार्य, क्रिया, गणित में वह संख्या जिसका वर्गमूल पूरा पूरा न निकल सके।
करण-(सं०स्त्री०) गणित में जिस संख्या का अति सूक्ष्म रूप से वर्गमूल नहीं निकाला जा सकता।
करणीय-(सं०वि०) करने योग्य।
करतब-(हिं०पुं०) कर्तव्य, काम, कला।
करतल-(हिं०पुं०) हथेली।
करता-(हिं०पुं०) कर्ता, करनेवाला।
करतार-(हिं०पुं०) कर्तार, विधाता।
करतारी-(हि०स्त्री०) हथेलियों से ताली बजाने का शब्द।
करताल-(सं०नपुं०) झांझ, मजीरा।
करती-(हिं०स्त्री०) मरे बछवे का चमड़ा जिसमें भूसा भरकर गाय को देखाकर दूध दूहा जाता है।
करतूत, करतूति-(हिं०स्त्री०) कर्तव्य, करनी, करतब।
करदा-(हिं०पुं०) गर्द, कूड़ा, करकट, अन्न में मिली हुई मिट्टी इत्यादि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करधनी-(हिं०स्त्री०) कमर में पहिरने का आभूषण ।
करधर-(हिं०पुं०) मेघ, बादल ।
करधृत-(सं०वि०) हाथ से पकड़ा हुआ ।
करन-(हिं०पुं०) देखो कर्ण । करनधार-(हिं०पुं०) देखो कर्णधार । करनफूल-(हिं०पुं०) कान का एक गहना ।
करना-(हि०क्रि०) समाप्ति पर लाना, निबटाना, बनाना, व्यवसाय चलाना, पति या पत्नी बनाना, भाड़े पर सवारी लेना, इस शब्द को किसी संज्ञाके अन्त में लगा देनेसे उस संज्ञा के अर्थ की क्रिया बन जाती है ।
करनाल-(हिं०पुं०) नरसिंघा, भोंपा ।
करनी-(हिं०स्त्री०) कर्म, कार्य, करतब, अन्त्येष्टि क्रिया, राजगीर का वह अस्त्र जिससे वे मसाला उठाते और भीत पर लगाकर इसको चिकनाते हैं ।
करपर-(हिं०पुं०) खोपड़ी, (वि०) कृपण ।
करपल्लव-(सं०पुं०) अंगुली, हाथ ।
करपल्लवी-(सं०स्त्री०) हाथ के संकेत की बातचीत ।
करपाल-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार ।
करपुट-(सं०पुं०) श्रद्धांजलि, अंजलि ।
करप्रद-(सं०पुं०) कर देनेवाला ।
करप्राप्त-(सं०वि०) हाथ में आया हुआ
करबाल-(सं०पुं०) नख, तलवार ।
करबी-(हि०स्त्री०) चौपायों का खाना, चरी ।
करभ करभक-(सं० पुं०) करपृष्ठ, हथेली के पीछे का भाग, हाथी का बच्चा ।
करभीर-(सं०पुं०) सिंह ।
करम-(हिं०पुं०) कर्म, काम, भाग्य ।
करमकल्ला-(हिं०पुं०) बन्दगोभी, पातगोभी ।
करमठ-(हि०वि०) कर्मनिष्ठ ।
करमाल-(हिं०पुं०) कर्म, भाग्य ।
करमाली-(सं०पुं०) सूर्य ।
करमी-(हिं०वि०) कर्मकार, कर्मठ ।
करमुंहा-(हिं०वि०) कलंक युक्त ।
करमूल-(सं०नपुं०) कलाई ।
करराना, करराना-(हिं०क्रि०) कर्कश, शब्द करना, चरचराना ।
करी-(हिं०स्त्री०) बनतुलसी ।
करवह-(सं०पुं०) नख, अंगुली, तलवार ।
करवट-(हिं०स्त्री०) दहिने या बाये बल लेटने की स्थिति ।
करवत-(हिं०पुं०) करपत्र, आरा ।
करवा-(हिं०पुं०) धातु या मिट्टी का टोंटीदार लोटा, गड़ुवा ।
करवाना-(हिं०क्रि०) कोई काम करने के लिये दूसरे को प्रवृत्त करना ।
करवारि, करवाल-(सं०पुं०) कृपाण, तलवार ।
करवाली-(हिं०स्त्री०) छोटी तलवार, करौली ।
करवीर-(सं०पुं०) कृपाण, तरवार ।
करवैया-(हिं०वि०) कर्ता, करनेवाला ।
करशाखा-(हिं०स्त्री०) अंगुली ।
करष-(हिं०पुं०) कर्ष, खिंचाव, तनाव ।
करषना-(हिं०क्रि०) घसीटना, तानना ।
करसना-(हिं०क्रि०) खींचना, घसीटना
करसान-(हिं०पुं०) कृषाण, किसान ।
करसायर, करसायल-(सं०पुं०) कृष्णसार, काला हिरन ।
करसी-(हि०स्त्री०) कंडे का चूरचार, उपला, उपरी, गोहरी ।
करस्वन-(सं०पुं०) हस्तध्वनि, ताली ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करहनी-(हिं०पुं०) एक अगहनी धान।
कराई-(हिं०स्त्री०) दालका छिलका, श्यामता, कालापन।
करात-(हिं०पुं०) चार जव की तौल जो सोना चांदी तथा दवा तौलने में प्रयोग होती है।
कराना-(हिं०क्रि०) करवाना।
करारा-(हिं०पुं०) नदीका ऊंचा तट जो जल से काटे जाने पर बनता है, मिठाई; (वि०)कठोर, कड़ा, तीक्ष्ण।
कराल-(सं०वि०) भयंकर, डरावना, प्रशस्त।
कराह-(सं०पुं०) पीड़ा का शब्द, कड़ाह।
करि-(हिं०पुं०) करी, हाथी।
करिखा-(हिं०पुं०) कालिख, कलंक।
करिणी-(सं०स्त्री०)हस्तिनी, हथिनी।
करिन्द-(हिं०पुं०) देखो करीन्द्र।
करिल-(हिं०पुं०) कोंपल, कोमल पत्ता; (वि०) काला।
करिवर-(सं०पुं०)श्रेष्ठ(उत्तम) हाथी
करिया-(हिं०पुं०)पतवार, कर्णधार।
करियाई-(हिं०स्त्री०) नीलता, कालापन
करियाद-(सं०नपुं०) दरयायी घोड़ा।
करिष्णु-(सं०पुं०) करनेवाला, करणशील।
करिष्यमाण-(सं०वि०) करने के लिये उद्यत।
करिहांव-(हिं०पुं०) कटि, कमर।
करीष-(सं०पुं०)सूखा गोबर, जंगल में सूखा हुआ गोबर, कण्डा, अरना।
करुआ-(हि०वि०) देखो कड़ुवा।
करुखी-(हिं०स्त्री०) कनखी।
करुणा-(सं०स्त्री०) दूसरे के दुःख हटाने की इच्छा, कृपा, । करुणाकर-(सं०वि०) अत्यन्त दयालु; करुणानिधान, करुणानिधि-(सं०वि०)बड़ा दयालु।
करुना-(हिं०स्त्री०) देखो करुणा।
करुर, करुवा-(हिं०वि०) कटु, कड़ुवा।
करू-(हिं०वि०) कटु, कड़ुवा।
करेजा-(हिं०पुं०) यकृत्, कलेजा।
करेर-(हिं०वि०) कठोर, कड़ा।
करेला-(हिं०पुं०) कारवेल्ल, एक प्रकार की लता जिसमें हरे कड़वे फल लगते हैं जो तरकारी बनाने के काममें आते हैं,।
करैत-(हिं०पुं०) एक काले जातका बहुत विषैला सर्प।
करैल-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की काली मिट्टी जो गरमी के दिनों से तालाब के पानी सूखने पर निकलती है,
करैला-(हिं०पुं०) देखो करेला।
करोंट-(हिं०पुं०) करवट।
करोड़-(हिं०वि०) एक कोटि, सौ लाख की संख्या।
करोदना-(हिं०क्रि०)खुरचना, करोना।
करोध-(हिं०पुं०) देखो क्रोध।
करौंदा-(हिं०पुं०) करमर्द वृक्ष, एक कंटीला पौधा जिसके छोटे खट्टे फल आचार, चटनी इ० में उपयोग होते हैं। करौंदिया-(हिं०वि०) करौंदे के रंग का।
करौली-(हिं०स्त्री०) नोकदार भोंकने की छुरी।
ककट-(सं०पुं०)केकड़ा, कमल की जड़, तुम्बी, लौकी।
कर्कर-(सं० पुं०) कंकड़, हथौड़ा, कुरुन पत्थर; (वि०) दृढ़, कड़ा,पुष्ट।
कर्कश-(सं०वि०) निर्दय, अठोर, कड़ा, काँटेदार, क्रूर। कर्कशा-(सं०स्त्री०) झगड़ालू स्त्री; (वि०) लड़ाकी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्ण-(सं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान, समकोण त्रिभुज में समकोण के सामने की रेखा, नाव का डाँड़ा; **कर्णक**-(सं०पुं०) वृक्ष को फोंड़ कर निकलने वाला पत्ता, सन्निपात रोग का एक भेद, कर्णधार, माँझी। **कर्णकटु**-(सं०वि०) अप्रिय, कान में कर्कश लगने वाला।

कर्णकिट्ट-(सं०नपुं०) कान का खूंट। **कर्णकुहर**-(सं०नपुं०) कान का छेद। **कर्णगोचर**-(सं०वि०) कान से सुन पड़ने वाला। **कर्णग्राह**-(सं०पुं०) कर्णधार, मल्लाह, माँझी। **कर्णधार**-(सं०पुं०) नाविक, मल्लाह।

कर्णपूर-(सं०पुं०) कान का आभूषण, करनफूल।

कर्णिका-(सं०स्त्री०) कान का एक आभूषण, हाथ की बीच की अंगुली,

कर्तन-(सं०नपुं०) छेदन, काट छांट, सूत कातने का काम। **कर्तनी**-(सं० स्त्री०) कतरनी, कैंची।

कर्तरी-(सं०स्त्री०) कतरनी, कैंची, कटारी।

कर्तव्य-(सं०वि०) करने योग्य, किये जाये योग्य; (नपुं०) करने योग्य कार्य, धर्म, उचित काम।

कर्ता-(सं०पुं०) ब्रह्मा, काम करने वाला, बनाने वाला, ईश्वर, व्याकरण में वह कारक जो क्रिया को करता है। **कर्तार**-(हिं०पुं०) विधाता, परमेश्वर

कर्तित-(सं०वि०) काटा छांटा हुआ।

कर्तृक-(सं०वि०) करनेवाला, प्रतिनिधि

कर्तृका-(सं०स्त्री०) छोटी तलवार, कटारी।

कर्तृत्व-(सं०नपुं०) कर्ता का धर्म। **कर्तृवाचक**-(सं०वि०) व्याकरण में कर्ता का बोध करने वाला। **कर्तृवाच्य**-(सं०पुं०) क्रिया पद द्वारा कर्ता का सूचित करने वाला वाक्य। **कर्तृवाच्य क्रिया**--वह क्रिया जिससे कर्ता का बोध स्पष्ट रूप से विदित हो।

कर्द-(सं०पुं०) कर्दम, कीचड़, चहला।

कर्पट-(सं०पुं०) पुराना कपड़ा, गूदड़

कर्पटी-(सं०वि०) फटा पुराना वस्त्र पहिरने वाला भिक्षुक।

कर्पर-(सं०पुं०) कपाल, खोपड़ी, कपोल, गाल, शर्करा।

कर्पूर-(सं०पुं०) कपूर।

कर्बुर-(वि०) अनेक वर्ण का, चितकबरा

कर्म-(सं०पुं०) कार्य, काम, प्रारब्ध, भाग्य, व्याकरण में वह शब्द जिस पर कर्ता की क्रिया का फल ठहरता है, **कर्मकाण्ड**-(सं०नपुं०) धर्म संबंधी कर्म। **कर्मकार**-(सं० वि०) काम करने वाला; (पुं०) लोहार। **कर्मचारी**-(सं०वि०) कार्य करनेवाला,

कर्मठ-(सं०वि०) काम करने में निपुण।

कर्मधारय-(सं०पुं०) संस्कृत व्याकरण में वह समास जिसमें विशेषण और विशेष्य का समान अधिकरण होता है।

कर्मपाक, कर्मफल(सं०पुं०) धर्म या अधर्म करने से सुख दुःख मिलने का परिणाम।

कर्मरेखा-(सं०स्त्री०) भाग्य का लिखना।

कर्मवाच्य, क्रिया-(सं०स्त्री०) जिस क्रिया में कर्म प्रधान होकर मुख्य रूप से कर्ताकी तरह प्रयोग किया गया हो।

कर्मवान्-(सं०वि०) कर्मनिष्ठ।

कर्मशील-(सं०वि०) यत्न करनेवाला, परिश्रमी।

कर्मशूर-(सं०वि०) कार्यदक्ष, चतुर।

कर्महीन-(सं०वि०) मन्दभाग्य, अभागा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्मिष्ठ-(सं०वि०) काम में लगा रहने वाला, काम करने में चतुर ।
कर्मेन्द्रिय-(सं०नपुं०)कर्म करने वाली पांच इन्द्रियाँ यथा-हाथ, पैर, वाणी, गुदा, और उपस्थ ।
कलगी-(हिं०स्त्री०) मुकुट में लगाने का पर ।
कर्ष-(सं०पुं०) सोलह माशे का परिमाण,अस्सी रत्ती की तौल, खेती का काम ।
कबक-हल जोतने वाला, ।
कर्षन-(सं०नपुं०)खिचान, आकर्षण ।
कर्षना-(हिं०क्रि०) खींचना ।
कर्हिचित्-(सं०अव्य०) कभी न कभी ।
कल-(हिं०स्त्री०) सुख, चैन, आने वाला या बीता हुआ दिन,बल, अंग, युक्ति, यन्त्र, विशेष्य की तरह इसका प्रयोग "काला" अर्द्ध में होता है यथा-कलमुहा; (क्रि०वि०) भविष्यमें, आजसे पहिले के दिन, बीता हुआ दिन;
कलइया-(हिं०स्त्री०)कलाबाजी,कलैया
कलकण्ठ-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल; (वि०) मीठा शब्द निकालने वाला ।
कलकना-(हिं०क्रि०) चिल्लाना, ।
कलकल-(सं०पु०) कोलाहल, पानी के झरने का शब्द, झगड़ा ।
कलकान,कलकानि-(हिं०स्त्री०) कोलाहल, कष्ट, दुःख ।
कलंक-(सं०पुं०) चिह्न, धब्बा, दोष, लांछन ।
कलछा-(हिं०पुं०) बड़ा चम्मच, बड़ी डंडी की करछुल ।
कलछी-(हिं०स्त्री०)बड़ी डंडीका चम्मच
कलजिब्भा-(हिं०वि०) काली जीभ वाला, जिसकी कहीं हुई अशुभ बात सत्य हो ।
कलझँवा-(हिं०वि०) श्याम वर्ण का, साँवला ।
कलत्र-(सं०नपुं०) भार्या, पत्नी,स्त्री ।
कलदार-(हिं०वि०) पेंचदार; (पुं०) अंग्रेजी टेकसाल का बना हुआ रुपया
कलधौत-(सं०नपुं०) सोना, चाँदी, मीठी बोली ।
कलन-(सं०नपुं०) चिह्न, दोष, ग्रहण, ग्रास, कवर, ज्ञान, आचरण, संबंध, गणित की एक क्रिया ।
कलप-(हिं०पुं०) देखो कल्प ।
कलपना-(हिं०क्रि०) विलाप करना, दुःख करना ।
कलपाना-(हिं०क्रि०) तरसाना,रुलाना।
कलफ-(हिं०पुं०) माडी ।
कलबल-(हिं०पुं०) उद्योग, उपाय; (स्त्री०) कोलाहल ।
कलबूत-(हिं०पुं०) सांचा, ढांचा ।
कलभ-(सं०पुं०) हाथी, ऊंट ।
कलमख-(हिं०पुं०) देखो कल्मष ।
कलमना-(हिं०क्रि०) टुकड़े करना ।
कलमस-(हिं०पुं०) देखो कल्मष ।
कलमलना-(हिं०क्रि०) कुलबुलाना ।
कलमुंहा-(हिं०वि०) काले मुंह वाला, कलंकित ।
कलरव-(हिं०पुं०)कूजन,मधुर ध्वनि ।
कलल-(सं०पुं०नपुं०) गर्भ में लिपटी हुई झिल्ली, जरायु ।
कलवरिया-(हिं०स्त्री०) मद्यशाला ।
कलवार-(हिं०पुं०) वह जाति जो मद्य बनाती और बेंचती है ।
कलश-(सं०पुं०) घड़ा, गगरा, घरों के शिखर पर का कंगूरा ।
कलशा-(सं०स्त्री०)छोटा घड़ा, गगरी ।
कलस-(सं०पुं०) देखो कलश । कलसा-(हिं०पुं०) पानी रखने का घड़ा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गगरा, । कलसी-(हिं०स्त्री०) छोटी गगरी, छोटा कंगूरा ।

कलह-(सं०पुं०) विवाद, झगड़ा, लड़ाई ।

कलहंस-(सं०पुं०) राजहंस, जलकुक्कुट,

कलहकार, कलहकारक, कलहकारी-(सं०वि०) झगड़ालू, विवाद प्रिय ।

कलहप्रिय-(सं०पुं०) जिसको कलह बहुत अच्छा लगता हो; (वि०) झगड़े से प्रसन्न रहने वाला ।

कला-(सं०स्त्री०) सूद, व्याज, शिल्प, अंश, तीन काष्ठा का समय, वृत्त का १८०० वां भाग, लेश, अल्प समय, संख्या, सूर्य का बारहवाँ भाग, छटा, शोभा, युक्ति ढंग ।

कलाई-(हिं०स्त्री०) हथेली का ऊपरी जोड़, मणिवन्ध, गट्टा, पूला ।

कलाधर-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा, शिव ।

कलाप-(सं०पुं०) समूह, ढेर मेखला, व्याकरण ।

कलापिनी-(सं०स्त्री०) रात्रि, मयूरी,

कलापी-(सं०पुं०) मोरके पर फैलाकर नाचने का समय ।

कलाबत्तू-(हिं०पुं०) रेशम पर लपेटा हुआ सोने चाँदी का तार जो धागे के समान पतला होता है ।

कलाबाज-(हिं०वि०) नट क्रिया करनेवाला ।

कलालाप-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा ।

कलावती-(सं०स्त्री०) गंगा; (वि०) शोभा युक्त ।

कलासी-(हिं०स्त्री०) पत्थर या लकड़ी के जोड़ में की रेखा ।

कलिका-(सं०स्त्री०) विना खिला हुआ फूल, कली ।

कलिकाल-(सं०पुं०) कलियुग ।

कलित-(सं०वि०) गिना हुआ, समझा हुआ, कहा हुआ ।

कलिमल-(सं०नपुं०) पाप ।

कलियाना-(हिं०क्रि०) कली निकलना ।

कलियुग-(सं०पुं०) चौथायुग, वर्तमान युग ।

कलिल-(स०वि०) मिश्रित, मिला हुआ ।

कली-(हिं०स्त्री०) विना खिला हुआ फूल, कुरते इत्यादि में लगाने का तिकोना कटा हुआ कपड़ा ।

कलुख-(हिं०पुं०) देखो कलुष ।

कलुखाई-(हिं०स्त्री०) देखो कलुषता ।

कलुखी-(हिं०) देखो कलुषी ।

कलुष-(सं०नपुं०) मलिनता, पाप; (वि०) मलिन, निन्दित ।

कलुषता, कलुषाई-(सं०स्त्री०) मलिनता ।

कलूटा-(हिं०वि०) बहुत काले रंगका ।

कलेउ-(हिं०पुं०) कलेवा ।

कलेजा-(हिं०पुं०) छाती के भीतर का भाग, वक्षःस्थल, छाती ।

कलेवर-(सं०नपुं०) शरीर, देह, चोला ।

कलेवा-(हिं०पुं०) प्रतराश, प्रातःकाल का लघु भोजन, जलपान ।

कलेश-(स)-(हिं०पुं०) देखो क्लेश ।

कलैया-(हिं०स्त्री०) नीचे सिर और ऊपर पैर करके उलट जाने की क्रिया ।

कलोर-(हिं०वि०) जवान बछिया जो ब्याई या गाभिन न हुई हो ।

कलोल-(हिं०पुं०) क्रीड़ा, आमोद प्रमोद ।

कलौजी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की तरकारी जो परवल, करैला इत्यादि के फल को फाड़ कर इसमें मसाला भरकर तैयार की जाती है ।

कलौस-(हिं०वि०) कालापन, कलंक ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कल्क-(सं०पुं०) चूर्ण, वुकनी, पीठी।
कल्प-(सं०पुं०) विधान, विधि, रीति, चौदह मन्वन्तर का काल।
कल्पक-(सं०पुं०) ग्रन्थकर्ता; (वि०) बनानेवाला, लगानेवाला।
कल्पकार-(सं०पुं०) नापित; (वि०) वेश बनाने वाला।
कल्पतरु, कल्पद्रुम-(सं०पुं०) मुँहमाँगी वस्तु देनेवाला।
कल्पना-(सं०स्त्री०) अनुमान, अटकल,
कल्पवास-(सं०पुं०) माघ मास में गंगा तट पर संगम के समीप झोपड़ी में रहना।
कल्पान्त-(सं०पुं०) प्रलय, उत्पत्ति।
कल्पित-(सं० पुं०) रचित, कल्पना किया हुआ, माना हुआ, ठीक किया हुआ, कृत्रिम।
कल्मष-(सं० नपुं०) मलिनता, पाप।
कल्माष-(सं०वि०) काला, चितकवरा
कल्याण-(सं०पुं०) शुभ, मंगल, भलाई।
कल्यान-(हिं०स्त्री०) देखो कल्याण।
कल्लर-(हिं०पुं०) काली मिट्टी, रेह।
कल्ला-(हिं०पुं०) अंकुर, जबड़े के नीचे का गले का भाग।
कल्लांच-(हिं०वि०) दुष्ट, दरिद्र, कंगाल
कल्लोल-(सं०पुं०) बड़ी लहर, हर्ष, आनंद।
कल्ह-(हिं०) देखो कल।
कल्हर-(हिं० पुं०) वेग; कल्हरना-(हिं०क्रि०) पीड़ा का शब्द करना।
कल्हारना (हिं०क्रि०) कड़ाही में थोड़ा तेल या घी डालकर भूनना।
कवच-(सं०पुं०) उरच्छद, आवरण।
कवन-(हिं०सर्व०) देखो कौन।
कवर-(हिं०पुं०) ग्रास, कौर।
कवरना-(हिं०क्रि०) देखो कौरना।
कवरा, कवरी-(हिं०स्त्री०) चोटी, जूड़ा।
कवर्ग-(सं०नपुं०) ककारादि पाँच वर्णों का समूह।
कवल-(हिं०पुं०) ग्रास, कौर, किनारा।
कवाट-(सं०नपुं०) कपाट, किवाड़ा।
कवि-(सं०पुं०) कविता गान इत्यादि का रचयिता, छन्द बनानेवाला, पण्डित, सूर्य, ब्रह्मा।
कविता-(सं०स्त्री०) पद्यमय वर्णन, कवित्व।
कवित्त-(हिं०पुं०) दण्डक के अन्तर्गत चार पद का काव्य जिसके प्रत्येक चरण में इकतीस, इकतीस अक्षर होते हैं।
कवित्व-(सं०नपुं०) कविता रचना की शक्ति।
कविराज-(सं०पुं०) श्रेष्ठ कवि, वंग-देशीय वैद्य की उपाधि। कविराय-(हिं० पुं०) देखो कविराज, भाट, श्रेष्ठ कवि।
कविलास-(हिं०पुं०) कैलास, स्वर्ग।
कविवर-(सं०पुं०) श्रेष्ठ कवि।
कवोष्ण-(सं०वि०) थोड़ा गरम, गुनगुना।
कव्य-(सं०पुं०) जो अन्न पितरों के निमित्त दियाजावे।
कशिक-(सं०पुं०) नकुल, नेवला।
कशेरु-(सं०पुं०) पीठ की रीढ की हड्डी, एक प्रकार की घास की जड़ जिसका ठोस भाग खाया जाता है।
कश्चित्-(सं०अव्य०) कोई, एक न एक।
कश्मल-(सं०वि०) मलिन, पापी।
कष-(सं०पुं०) कसौटी, सान।
कषा-(सं०स्त्री०) कशा, चाबुक।
कषाय-(सं०पुं०) कसैलापन, कल्क, काढ़ा, निर्यास।
कष्ट-(सं०नपुं०) पीड़ा, व्यथा, क्लेश।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कष्टसह-(सं०वि०) कष्ट या दुःख सहन करने वाला । **कष्टसाध्य**-(सं०वि०) कष्ट से आरोग्य होनेवाला, कठिनाई से होने वाला ।

कस-(सं०पुं०) कसौटी, जाँच, परीक्षा, अवरोध, सार, कसाव ।

कसक-(हिं०स्त्री०) पीड़ा जो आघात पड़ने पर हलकीसी उठाती है, पुराना वैर ।

कसकुट-(हिं०पुं०) एक मिश्र धातु जो तांबा और जस्ता बराबर भाग में मिलाकर बनता है, कांसा ।

कसन-(हिं०स्त्री०) कसने की रस्सी, कसने की विधि ।

कसना-(हिं०क्रि०) बाँधते समय रस्सी इत्यादि को कसकर खींचना, जकड़ना, दबाना, बंधन बैठाना, रगड़ना, लचकना, परीक्षा करना, कष्ट देना, भर जाना,

कसनि-(हिं०स्त्री०) बँधन, बँधाई ।

कसनी-(हिं०स्त्री०) रस्सी, चोली, बेठन, कसौटी, परीक्षा ।

कसबिन, कसबी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।

कसमसाना-(हि०क्रि०) ऊबना, हिचकना

कसमसाहट, कसमसी-(हिं० स्त्री०) व्यग्रता ।

कसरती-(हिं०वि०) व्यायामकरनेवाला

कसाई-(हिं०पुं०) बधिक, घातक; (वि०) निष्ठुर, निर्दय, क्रूरहृदय ।

कसाना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ में कसैलापन आ जाना, कसवाना ।

कसार-(हिं०पुं०) घीमें भुना हुआ तथा चीनी मिला हुआ आँटा ।

कसाला-(हिं०पुं०) क्लेश, कष्ट, परिश्रम

कसाव-(हि०पुं०) कसैलापन, खिचाव ।

कसीस-(हिं०पुं०) लोहे का एक प्रकार का मुरचा ।

कसेरा-(हिं०पुं०) काँसे, फूल इत्यादि के पात्र बनानेवाला तथा बेचनेवाला बनियाँ ।

कसेरू-(हिं०पुं०) एक प्रकार के मोथे की गठीली जड़ जो खाने में मीठी होती है ।

कसोरा-(हिं०पुं०) मिट्टी का कटोरा ।

कसौटी-(हिं० स्त्री०) काला पत्थर जिसपर सोना रगड़कर इसके रंगसे सोने की परीक्षा की जाती है, परीक्षा, जाँच, परख ।

कस्तूरा-(हिं०पुं०) कस्तूरी मृग ।

कस्तूरी-(सं०स्त्री०) मृग नाभि से निकलनेवाला एक सुगन्धित द्रव्य ।

कहँ-(हिं०पुं०) को; (क्रि०वि०) कहाँ

कहगिल-(हि०स्त्री०) भीत में लगाने की मिट्टी या गारा ।

कहता-(हिं०वि०) कहनेवाला ।

कहतूत-(हिं०स्त्री०) प्रसिद्ध वार्ता ।

कहन-(हिं०पुं०) कथन, भाषण ।

कहना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना, उच्चारण करना, संवाद सुनाना, सूचना देना; (पुं०) अनुरोध, आज्ञा, कथन ।

कहनूत-(हिं०स्त्री०) कहावत, दृष्टान्त ।

कहरना-(हिं०क्रि०) देखो कराहना ।

कहल-(हिं०पुं०) गरमी, उमस, ताप ।

कहलाना-(हिं०क्रि०) पुकारा जाना, संदेश भेजना ।

कहवाँ-(हिं०क्रि०वि०) कहाँ, किस स्थान पर ।

कहवया-(हिं०वि०) कहने वाला ।

कहा-(हिं०पुं०) कथन, बातचीत; (क्रि०वि०) कैसे, किस प्रकार से; (सर्व०) क्या; (वि०) कौन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कहाँ-(हिं०क्रि०वि०) किस स्थान पर।
कहाना-(हिं०क्रि०) कहलाना, कहा जाना।
कहानी-(हिं०स्त्री०) कथा, मिथ्या वचन।
कहावत-(हिं०स्त्री०) लोकोक्ति।
कहिया-(हिं०क्रि०वि०) किससमय, कब।
कहीं-(हिं०क्रि०वि०)किसी अनिश्चित स्थान में, यदि, कदाचित् अधिक।
काँइयाँ-(हिं०वि०) धूर्त, वंचक।
कहूं-(हिं०क्रि०वि०) कहीं।
का-(हिं०प्रत्य०) षष्ठी का चिह्न।
काई-(हिं० स्त्री०) जल तथा तरी में होने वाली एक घास, मल।
काई-(हिं०अव्य०) क्यों, किसलिये; (सर्व०) किसका।
कांकर-(हिं०पुं०) कर्कर, कंकड़।
काँकरी-(हिं०स्त्री०) छोटा कंकड़।
कांक्षा-(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।
काँख-(हिं०स्त्री०) बाहुमूल के नीचे का गड्ढा, बगल।
कांखना-(हिं०क्रि०) पीड़ा की अवस्था में दुःखसूचक शब्द उच्चारण करना।
कांच-(हिं०स्त्री०) गुदा का भीतरी भाग जो कभी कभी काँखने पर बाहर निकल आता है।
काँचरी-(हिं०स्त्री०) साँप की केंचुली।
काँचा-(हिं०वि०) देखो कच्चा।
कांछना-(हिं०क्रि०) लाँग बाँधना।
कांछा-(हिं०पुं०) कमर के पीछे खोंसने का धोती का भाग, लंगोट; (स्त्री०) आकांक्षा।
कांजी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खट्टा किया हुआ जल, मट्ठा।
काँटा-(हिं०पुं०) कण्टक, लोहेकी कील; लोहे की झुकी हुई कीलों का गुच्छा, कोई नुकीली वस्तु, सोना चाँदी तौलने की छोटी तुला, नाक या कान का एक आभूषण, गणित में गुणनफल जाँचने की एक विधि, दुःखदायी मनुष्य।
काँटी-(हिं०स्त्री०)छोटा महीन काँटा।
काँडना-(हिं०क्रि०)रौंदना, लतियाना।
काँड़ी-(हिं०स्त्री०) ओखली का गड्ढा, बाँस या लकड़ी का लट्ठा।
कांत,कांता,कांति-(हिं०) देखो कान्त, कान्ता, कान्ति।
काँदना-(हिं०स्त्री०) चीख मारकर रोना।
काँदो-(हिं०पुं०) कर्दम, कीचड़।
काँध-(हिं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा, कोल्हू।
काँधना-(हिं०क्रि०) कन्धे पर रखना, उठाना, मानना, बोझ उठाना।
काँधा-(हिं०पुं०)स्कन्ध, कन्धा, कृष्ण।
काँप-(हिं०स्त्री०)तीली, पतली छड़।
काँपना-(हिं०क्रि०) कम्पित होना।
काँवर-(हिं०स्त्री०) बहंगी।
काँवरा-(हिं०वि०) व्याकुल, उद्विग्न।
काँसा-(हिं०पुं०) काँस्य, ताँबे और जस्ते को मिलाकर बना हुआ धातु।
काक-(सं०पुं०) वायस, कौवा।
काकतालीय-(सं०नपुं०) संयोगवश होनेवाला कार्य; (वि०) आकस्मिक।
काकपक्ष-(सं०पुं०) मस्तक के दोनों ओर के बालों की रचना, पट्टा।
काकपद-(सं०नपुं०) एक चिह्नविशेष जो छूटे हुए शब्द का स्थान सूचित करने के लिये पंक्ति के नीचे लगाया जाता है।
काकबन्ध्या-(सं०स्त्री०)वह स्त्री जिसको एक ही सन्तान उत्पन्न हुआ हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काकरेजा-(हिं०पुं०)लाल काला मिले रंग का वस्त्र ।
काका-(हिं०पुं०)पिता का भाई, चाचा।
काकाकौवा-(हिं०पुं०) बड़ा तोता।
काकी-(सं०स्त्री०) चाची ।
काकु-(सं०स्त्री०) विरुद्ध अर्थ बोधक स्वर, व्यंग, ताना।
काग-(हिं०पुं०) देखो काक, (कार्क) बोतल में लगाने का डट्टा ।
कागद-(हिं०पुं०) पत्र, कागज ।
कागरी-(हिं०वि०) तुच्छ, ओछा ।
कागारोल-(हिं०पुं०)काकरव, कोलाहल
काच-(सं०नपुं०)काला नमक, शीशा ।
काचा-(हिं०वि०) कच्चा, भीरु, मृदु ।
काछ-(हिं०पुं०) धोती की लांग ।
काछना-(हिं०क्रि०) धोती को कमर में खोंसना, तरल पदार्थ को हाथ से किसी पात्र के किनारे पर धरना ।
काछनी-(हिं०स्त्री०) जाँघिये के ऊपर पहिरने का वस्त्र ।
काज-(हिं०पुं०)कार्य, काम, व्यवसाय ।
काजर, काजल-(हिं०पुं०) कज्जल ।
काञ्चन--(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना, केशर, धन, चमक ।
काञ्ची-(सं०स्त्री०) मेखला, करधनी।
काट,काटन-(हिं०स्त्री०) छेदन, कटाई, छल, मल, कपट, घाव ।
काटना-(हिं०क्रि०) तीखे शस्त्र से टुकड़े करना, पीसना, रगड़ना, बनाना, डँस लेना, तोड़ना, बिताना, नष्ट करना, गणित में एक संख्या से दूसरी संख्या को ऐसा भाग देना जिसमें शेष न बचे, कारावास में समय बिताना
काठ-(हिं०पुं०) काष्ठ, लकड़ी, इन्धन,
काठडा-(हिं०पुं०) काठ की बनी हुई बड़ी परात, कठौता ।
काठिन्य-(सं०नपुं०)कठिनता, कड़ापन।
काठी-(हिं०स्त्री०) घोड़े या ऊँट की पीठ पर रखने की खोगीर(गद्दी) ।
काढ़ना-(हिं०क्रि०)खींचना, निकालना। सुई से बेल-बूटे बनाना, ऋण लेना।
काढ़ा-(हिं०पुं०)उबाली हुई औषधि।
काण्ड-(सं०पुं०) टुकड़ा, बाण, तीर, परिच्छेद, प्रस्ताव, विभाग ।
कातना-(हिं०क्रि०) रूई को बट कर ताग बनाना, चरखा चलाना ।
कातर-(सं०वि०)भयभीत, डरा हुआ ।
कातरता-(सं०स्त्री०)व्याकुलता, भीरुता
कातिक-(हिं०पुं०)कार्तिक का महीना ।
कादम्बिनी-(सं०स्त्री०) मेघमाला, घटा
कादर-(हिं०वि०) देखो कातर ।
कान-(हिं०पुं०)सुनने की इन्द्रिय, कर्ण।
कानन-(सं०नपुं०) वन, जंगल ।
काना-(हिं०वि०)काण, एक आँखवाला, कन्ना, टेढ़ा, तिरछा ।
काना-(फुसकी)-फूसी-(हिं०स्त्री०) गुप्त बात, कान में धीरे से कही हुई बात ।
कानी-(हिं०स्त्री०) एक आँखवाली स्त्री, सबसे छोटी हाथ की अंगुली ।
कान्त-(सं०पुं०) स्वामी, पति ।
कान्ता-(सं०स्त्री०) पत्नी, सुन्दर स्त्री, मोथा, रेणुका, बालू ।
कान्ति-(सं०स्त्री०) दीप्ति, चमक, शोभा, कला ।
कान्दू-एक हिन्दू जाति, भूँजा ।
कान्ह-(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण ।
कापड़-(हिं०पुं०) देखो कपड़ा ।
कापथ-(सं०पुं०)विपथ, कुपथ, कुमार्ग।
कापर-(हिं०पुं०) कपड़ा, वस्त्र ।
कापुरुष-(सं०पुं०) निन्दित पुरुष ।
काबिस-(हिं०पुं०) एक रंग जिससे रंग कर मिट्टी के बर्तन पकाये जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काम-(सं०नपुं०) यथेष्ट वार्ता, वाञ्छा, कामदेव, तृष्णा, सहवास की इच्छा, चार वर्गों में से एक।
काम-(हिं०पुं०) कार्य, कर्म, उद्देश्य, व्यवहार, व्यवसाय, रचना, प्रयोजन, नक्काशी।
कामचोर-(हिं०वि०) आलसी, सुस्त।
कामदानी-(हिं०स्त्री०) वादलेके तार या सलमे सितारे का कपड़ों पर काम।
कामदार-(हिं०पुं०) राज्य का प्रवन्ध करने वाला कारिन्दा, (वि०) कामदानी या कलावत्तू के वेलवूटे बना हुआ।
कामदुधा, कामदुहा-(सं०स्त्री०) कामधेनु।
कामदेव-(सं०पुं०) मदन, अनंग।
कामधाम-(हिं०पुं०) कामकाज, धंधा।
कामना-(हिं०स्त्री०) मनोरथ, इच्छा।
कामरि, कामरी-(हिं०स्त्री०) कम्बल, कमरी, कांवर।
कामला-(सं०स्त्री०) पाण्डुरोग।
कामली-(सं०वि०) कामला रोग से पीड़ित।
कामातुर-(सं०वि०) काम के वेग से व्याकुल।
कामान्ध-(सं०वि०) काम के वेग से हिताहित का ध्यान न रखनेवाला।
कामिनी-(सं०स्त्री०) सुन्दरी, भीरु स्त्री।
कामी-(सं०पुं०) चकवा, कपोत, चन्द्रमा; (वि०) इच्छुक, अभिलाषी, प्रेमी; (हिं०स्त्री०) काँसे या अन्य धातु की ढली हुई छड़।
कामुक-(सं०वि०) कामी, इच्छुक, विषयी। कामुकता-(सं०स्त्री०) विषय वासना।
काम्य-(सं०वि०) कमनीय, सुन्दर।
काय-(सं०नपुं०) शरीर, देह, स्वभाव।
कायर-(हिं०वि०) भीरु, कातर, डरपोक। कायरता-(हिं०स्त्री०) भीरुता।
कायस्थ-(सं०पुं०) शरीर में रहनेवाला, एक जाति विशेष।
कायस्था-(सं०स्त्री०) वड़ी इलायची, तुलसी, आमला, हर्रे।
काया-(सं०स्त्री०) तनु; शरीर। कायाकल्प-(हिं०पुं०) औषधियों के प्रभाव से वृद्ध शरीर को युवा बनाने की विधि। कायापलट-(हिं०स्त्री०) बहुत बड़ा हेरफेर।
कायिक-(सं०वि०) शरीर संबंधी।
कार-(सं०पुं०) कार्य, क्रिया, करने या बनानेवाला, कोई कर्मपद पूर्व में रहने से 'कार' शब्द कर्ता के अर्थ में आता है यथा कर्मकार, सुवर्णकार। वर्णमाला के अक्षर के वाद जोड़ने से उस अक्षर का स्वतंत्र बोध करता है यथा—अकार, ककार इत्यादि।
कारक-(सं० वि०) करनेवाला,—यथा आनन्दकारक, हितकारक इत्यादि) व्याकरण में क्रिया के साथ संबंध प्रकट करनेवाले को कारक कहते हैं।
कारकर-(हिं०वि०) काम करनेवाला।
कारज-(हिं०पुं०) कार्य, काम।
कारण-(सं० नपुं०) हेतु, निमित्त, जड़, आदि, कर्म, काम।
कारतूस-(हिं०पुं०) मोटे कागजकी एक नली जिसमें गोली छर्रा तथा बारूद भरी रहती है।
कारबारी-(हिं०वि०) कार्यकर्ता।
कारा-(सं०स्त्री०) कारागार, बन्धन। (हिं०वि०) काला।
कारागार, कारागृह-(सं०नपुं०) बन्धन गृह।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारावास-(सं०पुं०) कारावास में बन्द रहने की स्थिति ।

कारिका-(सं०स्त्री०) अभिनेत्री, विवरण, विशिष्ट कविता, सीमा, किसी सूत्र की श्लोकबद्ध व्याख्या ।

कारिख-(हिं०स्त्री०) कालिमा, कालापन, काजल, कलंक, धब्बा ।

कारित-(सं०वि०) दूसरे के द्वारा कराया हुआ ।

कारी-(हिं०वि०) करने वाला, बनाने वाला ।

कारु-(सं०पुं०) शिल्पी, शिल्पकार ।

कारुण्य-(सं०पुं०) करुणा, दया ।

कारो-(हिं०वि०) देखो काला ।

कारोंछ-(हिं०स्त्री०) कालिमा, धुएँ की कारिख ।

कार्तिक-(सं०पुं० आश्विन और अगहन के बीच)का महीना;

कार्पट-(सं०पुं०) पुराने वस्त्र का टुकड़ा, चिथड़ा ।

कार्पण्य-(सं०नपुं०)कृपणता, कंजूसी ।

कार्पास-(सं०पुं०) रुई का पौधा ।

कार्मार-(सं०पुं०) कर्मकार, लोहार ।

कार्मिक-(सं०वि०) कर्म में नियुक्त, काम में लगा हुआ, निर्मित, बनाया हुआ ।

कार्मुक-(सं०नपुं०) धनुष, चाप ।

कार्य-(सं०नपुं०) कर्म, काम, कर्तव्य, व्यापार, धन्धा, हेतु, फल, प्रयोजन; (वि०) करने योग्य, लगाया जाने वाला । **कार्यकर**-काम चलाने वाला । **कार्यकर्ता**-(सं०पुं०) कार्यकारक, काम करने वाला, कर्मचारी । **कार्य कारण**-(सं०नपुं०) मिला हुआ कार्य और कारण ।

कार्याध्यक्ष-(सं०पुं०) देखो कार्याधिकारी । **कार्यार्थ**-(सं०वि०) कार्य के लिये, काम के लिये ।

काल-(सं०नपुं०) समय, अवसर, दुर्भिक्ष, अन्तिम काल; (हिं०क्रि०वि०) कल ।

कालकोठरी-(हिं०स्त्री०) बन्दीगृह की एक संकुचित और अन्धेरी कोठरी ।

कालक्रम-(सं०पुं०) समय का प्रवाह ।

कालचक्र-(सं०नपुं०) समय का उलटफेर ।

कालज्ञ-(सं०पुं०) कुक्कुर, मुर्गा; (वि०) उचित समय को जाननेवाला; (पुं०) ज्योतिषी ।

कालत्रय-(सं०नपुं०) भूत, भविष्य तथा वर्तमान काल ।

कालदण्ड-(सं०पुं०) मृत्युदण्ड ।

कालधर्म-(सं०पुं०) समय का स्वभाव, मृत्यु ।

कालनाग-(सं०पुं०) काला सर्प जिसके काटने से अवश्य मृत्यु होती है ।

कालबूत-(हिं०पुं०) काठ का साँचा, जूता सीने का मोची का फर्मा ।

कालयापन-(सं०नपुं०) कालक्षेप, निर्वाह ।

कालरात्रि-(सं०स्त्री०) प्रलयरात्रि ।

कालरूप-(सं०वि०) मृत्यु के समान ।

कालवाचक, कालवाची-(सं०वि०) समय बतलाने वाला ।

कालसार-(सं०नपुं०) काला हरिन ।

कालसिर-(हिं०पुं०)नाव के मस्तूल का सिरा ।

कालसूत्र-(सं०नपुं०) फांसी की रस्सी

कालहानि-(सं०स्त्री०)समय को व्यर्थ बिताना ।

काला-(हिं०वि०) कृष्ण, कोयले के रंग का, कलुषित, ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

काला कलूटा-(हिं०वि०) बहुत काले रंग का।
कालाग्नि-(सं०पुं०) प्रलय काल की अग्नि।
कालां चोर-(हिं०पुं०) चतुर चोर, कापुरुष।
कालातिक्रम-(सं०पुं०) समय का उलंघन
कालातीत-(सं०नपुं०) कालातिक्रम, समय का टल जाना।
कालाध्यक्ष-(सं०पुं०) सूर्य।
कालान्तक-(सं०पुं०) यम।
कालान्तर-(सं०नपुं०) दूसरा समय।
कालाप-(सं०पुं०)सर्प का फन, राक्षस।
काला पानी-(हिं०पुं०) देश से निकाले जाने का दण्ड।
कालाभुजङ्ग-(हि०वि०) अत्यन्त काले रंग का।
कालाभ्र-(सं० नपुं०) बरसने वाला काला बादल।
कालि-(हिं०क्रि०वि०) आगामी दिन, कल।
कालिक-(सं०वि०) समयोचित।
कालिका-(सं०स्त्री०)काली, चण्डिका।
कालिख-(हिं०स्त्री०) कालिमा, कलौंछ
कालिदास-(सं०पुं०) भारत के अति प्रसिद्ध महाकवि का नाम।
कालिन्द-(सं०नपुं०)कालिङ्ग,तरबूज।
कालिन्दी-(सं०स्त्री०) यमुना नदी।
कालिमा-(सं०स्त्री०) कालापन, मैल, कलंक, दोष, लांछन।
कालिय-(सं०पुं०) एक सर्प जिसको श्रीकृष्ण ने अपने वश में किया था। (वि०) काल संबंधी।
काली-(सं० स्त्री०) दुर्गा, पार्वती, कालिका।
कालीन-(सं०वि०) काल संबंधी, यह शब्द प्रत्ययकी तरह इस अर्थ में प्रयोग होता है, यथा—पूर्वकालीन, उत्तरकालीन, बहुकालीन इत्यादि।
कालौंछ-(हिं०स्त्री०)कृष्ण वर्ण, कालापन, धुवें की कारिख, काला जाला।
काल्पनिक-(सं०वि०) कल्पना से उत्पन्न, कल्पित, माना हुआ।
काल्ह, कल्हि-(हि०) देखो काल।
कावर-(हिं०पुं०) छोटा बरछा।
कावरी(हिं०स्त्री०) रस्से का फन्दा, मुद्धी।
काव्य-(सं०नपुं०) कविता, ग्रन्थ, रसयुक्त वाक्य; (वि०) कवि। काव्यचौर-(सं०पुं०)दूसरेके रचेहुए काव्य को अपना बतलानेवाला। काव्यलिंग-(सं०नपुं०) एक अर्थालङ्कार।
काश-(सं०स्त्री०)एक प्रकार की घास, कास, खांसी का रोग।
काशी-(सं०स्त्री०) वाराणसी, बनारस।
काश्मीर-(हिं०पुं०) मोटे ऊन से तैयार किया हुआ वस्त्र। काश्मीरी-(हिं० वि०) कश्मीर देशवासी, इस देश की भाषा, काश्मीर देश संबंधी।
काष्ठ-(सं०नपुं०) लकड़ी, काठ, इंधन
काष्ठा-(सं०स्त्री०) स्थिति, अवधि, सीमा, उत्कर्ष, बड़ाई,
कास-(सं०पुं०) खांसी, कफ, काँस।
कासा-(हिं०पुं०) दरियाई नारियल का पात्र जो भिक्षुक रखते हैं, कटोरा, प्याला।
कासार-(सं०पुं०) बड़ा तालाब।
काह-(हिं०क्रि०वि०) क्या, कौन सी वस्तु।
काहि-(हिं०सर्व०) किसको, किसे।
काही-(हिं०वि०) घास के रंग का, काले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरे रंग का। काहीं-(हिं०अव्य०) पास, द्वारा।
काहु, काहू-(हिं०सर्व०) किसी।
काहे-(हिं०क्रि०वि०) क्यों, किसी लिये, किस निमित्त।
कि-(हिं०क्रि०वि०) कैसे, किस प्रकार, क्या, एक संयोजक शब्द जो क्रियाओं के बाद प्रयोग होता है, अथवा, या, तत्क्षण।
किं-(सं०अव्य०) क्या।
किंपुरुष-(सं०पुं०) किन्नर, नीच मनुष्य।
किंवदन्ती-(हिं०स्त्री०) जनप्रवाद।
किंवा-(सं०अव्य०) अर्थात्, अथवा।
किंशुक-(सं०पुं०) पलास का वृक्ष, ढाक।
किकियाना-(हिं० क्रि०) कोलाहल करना।
किङ्किणी-(सं०स्त्री०) छोटा घुंघरू।
किङ्कर-(सं०पुं०) दास, नौकर, भृत्य।
किङ्करी-(सं० स्त्री०) दासी, नौकरानी।
किङ्कर्तव्यता-(सं०स्त्री०) यह चिन्ता कि क्या करना होगा। किङ्कर्तव्यविमूढ़-(सं०वि०) कर्तव्य निश्चय करने में असमर्थ, व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
किङ्किणी-(सं०स्त्री०) कमर का आभूषण, करधनी।
किङ्किर-(सं०नपुं०) भौंरा, कोयल।
किकियाना-(हिं०क्रि०) रोना, चिल्लाना
किचकिच-(हिं०स्त्री०) झूठा झगड़ा।
किचपिच-(हिं०वि०) क्रम रहित, अस्पष्ट।
किचड़ाना-(हिं०क्रि०) आँखों में कीचड़ आना।
किछु-(हि०वि०) कुछ।
किञ्चन-(सं०अव्य०) अल्प, थोड़ा।
किञ्चित् (सं०अव्य०) अल्प, कम थोड़ा सा। किञ्चित्मात्र-(सं०वि०) अल्प, परिमित, थोड़ा सा।
किटकिट-(हिं०पुं०) वादविवाद, झंझट।
किटकिना-(हिं०पुं०) वह लिखित पत्र जिसके द्वारा ठीकेदार अपना ठेका दूसरे के नाम पर कर देता है।
किट्ट-(सं०नपुं०) धातु की मैल, मोरचा, तेल की काइट, कान का खूंट।
किस-(हिं०क्रि०वि०) कहाँ, किस ओर, किधर।
कितक-(हिं०क्रि०वि०) कितना, किसका।
कितना-(हिं०वि०) किस मात्रा का, किस परिमाण या संख्या का; (क्रि०वि०) कहाँ तक, बहुत अधिक।
कितव-(सं०पुं०) दुष्ट, वंचक, धूर्त।
कितिक, कितेक,-(हिं०वि०) बहुत, असंख्य।
कितै-(हिं०क्रि०वि०) कहाँ।
कितो-(हिं०वि०) देखो कितना।
कित्ता-(हिं०वि०) कितना।
कित्ति-(हिं० स्त्री०) कीर्त्ति, बड़ाई, यश।
किधर-(हिं०क्रि०वि०) कहाँ, किस ओर
किधौ-(हिं०अव्य०) अथवा, या, न जाने।
किन-(हिं०सर्व०) 'किस' शब्द का बहुवचन; (क्रि०वि०) क्या नहीं, अवश्य।
किनका-(हिं०पुं०) कण, अनाज का टुकड़ा।
किनहा-(हिं०वि०) कृमियुक्त।
किनारी-(हिं०स्त्री०) सुनहला या रुपहला गोटा, गोट।
किनारे-(हिं०क्रि०वि०) कोर, सीमा या तट पर, पृथक् अवस्था में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किन्तु-(सं०अव्य०) परन्तु, वरन् ।
किन्नर-(सं०पुं०) देवयोनि विशेष ।
किन्निमित्त-(सं०वि०) किस कारण से, किसलिये ।
किम्-(सं०अव्य०) क्या, कौन सा ।
किमपि-कोई भी ।
किमरिक-(हिं०पुं०) एक प्रकार का महीन चिकना वस्त्र ।
किमर्थम्-(सं०अव्य०) किस कारण, क्यों ।
किमि-(हिं०क्रि०वि०) किस ढंग से, कैसे ।
किमु-(सं०अव्य०) क्यों, किसलिये ।
किमुत-(सं०अव्य०) क्यों, अथवा, या, बहुत ।
किम्मत-(हिं०स्त्री०) चातुरी ।
किम्पुरुष-(सं० पुं०) किन्नर, बुरा आदमी ।
कियत्-(सं०क्रि०वि०) कितना ।
कियारी-(हिं०स्त्री०) खेतों या बगीचों में थोड़ी थोड़ी दूरी पर दो छोटी छोटी मेड़ों के बीच की भूमि जिसमें बीज या पौधे बोये जाते हैं ।
किरंटा-(हिं०पुं०) केरानी ।
किरका-(हिं०पुं०) कंकड़, किरकिरी ।
किरकिरा-(हिं०वि०) कंकरीरला ।
किरकिराना-(हिं०क्रि०) पीड़ा देना, दुखाना ।
करकिरी-(हिं०स्त्री०) धूल या तिनके का छोटा टुकड़ा, अपमान, हेठी ।
किरच-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पतली तलवार ।
किरची-(हिं०स्त्री०) रेशम का लच्छा ।
किरण-(सं०पुं०) सूर्य की रश्मि ।
किरन-(हिं०स्त्री०) किरण, प्रकाश की रेखा, झालर, ज्योति ।
किरपा-(हिं०स्त्री०) देखो कृपा ।
किरपान-(हिं०स्त्री०) देखो कृपाण ।
किरम-(हिं०पुं०) कृमि, कीड़ा ।
किरमई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की लाह ।
किरमाल-(हिं०पुं०) खड्ग, तलवार ।
किरमिच-(हिं०पुं०) एक प्रकार का महीन टाट या मोटा कपड़ा ।
किरांची-(हिं०स्त्री०) अनाज, भूसा इत्यादि लादने की गाड़ी, रेलगाड़ी का माल लादने का पूरा डब्बा ।
किरात-(सं०पुं०) एक प्राचीन जंगली जाति, व्याध, बहेलिया ।
किरात-(हिं०स्त्री०) रत्न इत्यादि तौलने का एक परिमाण जो चार जव के बराबर होता है ।
किराना-(हिं०पुं०)प्रतिदिन के उपयोग में आनेवाले मसाले जो पसारियों की दूकान पर बिकते हैं ।
किरानी-(हिं०पुं०) करंटा, दोगला युरोपियन ।
किराव-(हिं०पुं०) मटर ।
किरिच-(हिं०स्त्री०)नोकदार टुकड़ा ।
किरिन-(हिं०स्त्री०) देखो किरण ।
किरिम-(हिं०स्त्री०) देखो कृमि ।
किरिया-(हिं०स्त्री०) शपथ, सौगन्ध, कर्तव्य, काम, मृतकर्म ।
किरीट-(सं०पुं०)एक प्रकार का सिर का आभूषण, मुकुट ।
किरोलना-(हिं०क्रि०) कतरना, खुरचना ।
किरोना-(हिं०पुं०) कृमि, कीड़ा ।
किर्च-(हिं०पुं०) देखो किरच ।
किलका-(हिं०स्त्री०) हर्षध्वनि ।
किलकना-(हिं०क्रि०) हर्षध्वनि करना
किलकार-(हिं०स्त्री०) हर्षध्वनि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किलकिल-(हिं०स्त्री०) विवाद, झगड़ा।
किलकिलाना-(हिं०क्रि०) कोलाहल करना, खुजलाना।
किलना-(हिं०क्रि०) वशमें लायाजाना, गति में रुकावट होना।
किलनी-(हिं०स्त्री०) एक कीड़ा जो पशुओं के शरीर पर चिपका रहता है और इनका लोहू चूसता है।
किलबिलाना-(हिं०क्रि०) कुलबुलाना।
किलवारी-(हिं०स्त्री०) पतवार, छोटा डाड़ा।
किलविष-(हिं०पुं०) किल्विष, पाप।
किलोल-(हिं०पुं०) देखो कल्लोल।
किलौनी-(हिं०स्त्री०) देखो किलनी।
किल्ला-(हिं०पुं०) मेख, खूंटा, अंकुर।
किल्लाना-(हिं०क्रि०) देखो किलकिलाना।
किल्ली-(हिं०स्त्री०) कील, मेख, खूंटी।
किल्विष-(सं०नपुं०) पाप, अपराध, रोग।
किवाड़-(हिं०पुं०) कपाट, द्वारका पल्ला।
किशल, किशलय-(सं०पुं०) कोमल पत्ता।
किशोर-(सं०पुं०) तरुण अवस्था, शिशु, लड़का, (वि०) छोटे वयका।
किस-(हिं०सर्व०) "कौन" का रूपान्तर जो विभक्ति लगने पर यह रूप धारण करता है।
किसनई-(हिं०स्त्री०) कृषि, खेती का काम।
किसल, किसलय-(हिं०स्त्री०) देखो किशल।
किसानी-(हिं०स्त्री०) खेती का काम (वि०) कृषि संबंधी।
किसी-(हिं०सर्व०वि०) "कोई" का वह रूपान्तर जो विभक्ति लगने से इसको प्राप्त होता है।
किसू-(हिं०पुं०) देखो किसी।
की-(हिं०प्रत्य०) 'का' का स्त्रीलिङ्ग का रूप (क्रि०) 'किया' का स्त्रीलिङ्ग का रूप; (अव्य०) क्या, अथवा।
कीक-(हिं०स्त्री०) चीत्कार, चीख।
कीकना-(हिं०क्रि०) किकियाना।
कीच-(हिं०स्त्री०) कर्दम, कीचड़।
कीचड़-((हिं०पुं०) कर्दम, पंक, आँख की मैल।
कीट-(सं०पुं०) कीड़ा, मकोड़ा, लोहे की मैल; (वि०) निष्ठुर (हिं०पुं०) तेल घी, इत्यादि के नीचे बैठा हुआ तलछट। **कीटाणु**-(सं०पुं०) अति सूक्ष्म कीड़ा जो आंख से देख नहीं पड़ता।
कीड़ा-(हिं०पुं०) उड़ने या रेंगनेवाला कीट, कृमि, मकोड़ा।
कीदृश-(सं०वि०) किस प्रकार का, कैसा।
कीनना-(हिं०क्रि०) मोल लेना।
कीप-(हिं०स्त्री०) छोटे मुंह के पात्र में तरल पदार्थ भरने की छुच्छी, टीप।
कीर-(सं०नपुं०) मास, (पुं०) शुक तोता।
कीरति-(सं०स्त्री०) देखो कीर्ति।
कीर्ण-(सं०वि०) ढँका हुआ, फैला हुआ, छिपा हुआ, भरा हुआ।
कीर्तक-(सं०वि०) वर्णन करनेवाला।
कीर्तन-(सं०नपुं०) प्रकाशन, गुण कथन, भजन। **कीर्तनिया**-(हिं० पुं०) भजन गानेवाला, कीर्तन करने वाला। **कीर्तनीय**-(सं०वि०) वर्णन करने योग्य।
कीर्ति-(सं०स्त्री०) पुण्य, ख्याति, यश।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कीर्तिकर-(सं०वि०) यशकारक ।
कीर्तित-(सं०वि०) कहा हुआ, प्रसिद्ध
कीर्तिधर-(सं० वि०) कीर्तिमान, प्रसिद्ध । कीर्तिस्तम्भ-(सं०पुं०) किसी की कीर्ति स्मरण कराने के लिये बनाया हुआ स्तम्भ ।
कील-(सं०पुं०) खूंटी, परेग, स्तम्भ, खंभा, बहुत छोटा टुकड़ा (हिं०स्त्री०); कुम्हार के चाक की खूंटी, नाक में पहिरने का एक आभूषण, फोड़े के ऊपर का भाग ।
कीलन-(सं०नपुं०) बन्धन, रुकावट ।
कीलना-(हिं०क्रि०) कील लगाना, मेख ठोंकना ।
कीला-(सं०स्त्री०) कील, मेख, बड़ी कील ।
कीलित-(सं०वि०) मन्त्र से बंधा हुआ
कीली-(हिं०स्त्री०) किसी चक्र के बीच में लगी हुई खूंटी, कील, किल्ली ।
कीश, कीस-(हिं०पुं०) बन्दर, पक्षी, सूर्य
कु-(सं०अव्य०) एक अव्यय जो संज्ञा के पूर्व जोड़ने से निन्दनीय, कुत्सित, नीच आदि का बोध करता है। (सं०स्त्री०) पृथ्वी । कुआशा-(हिं०स्त्री०) दुराशा
कुँअर-(हिं०पुं०) राजकुमार, राजपुत्र ।
कुँआरा-(हिं०वि०) अविवाहित ।
कुंइयां-(हिं०स्त्री०) छोटा कुवां ।
कुई-(हिं०स्त्री०) कुमुदनी, कोई ।
कुंकुम-(हिं०पुं०) लाख का बना हुआ पोला गोला जिसके भीतर गुलाल भर कर होली पर लोग एक दूसरे पर फेंकते हैं ।
कुंज-(हिं०पुं०) पौधों या लताओं से ढंपा हुआ स्थान ।
कुँजगली-(हिं०स्त्री०) पोधों या लताओं से ढपा हुआ मार्ग, पतली, सकरी गली
कुंजड़ा-(हिं०पुं०) एक जाति जो फल और तरकारी बेचती है ।
कुंड़-(हिं०पुं०) हल चलाने से पड़ने वाली खेत की गहरी लकीर ।
कुंड़रा-(हिं०पुं०) कुंडा, बड़ा मटका ।
कुंडलिया-(हिं०स्त्री०) एक छन्द विशेष जो दोहा और रौला छन्द के योग से बनता है ।
कुंडा-(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का जल इत्यादि रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र, द्वार में लगाने का कोहड़ा ।
कुंडी-(हिं०स्त्री०) पत्थर या लकड़ी का छोटा पात्र, जंजीर की कड़ी ।
कुंदन-(हिं०पुं०) परिष्कृत किये हुए सोने का महीन पत्र जो नगीना जड़ने के उपयोग में आता है ।
कुंदरू-(हिं०स्त्री०) परवल के समान एक एक फल ।
कुंदा-(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा टुकड़ा, बन्दूक का पिछला भाग, मूठ, बड़ी मुंगरी (पुं०) रद्दा, घस्सा ।
कुंदी-(हिं०स्त्री०) कपड़े की कुटाई जो इसके फूलन, सिकुड़न तथा रुखाई दूर करने के लिये की जाती है, कड़ी मार ।
कुंदेरना-(हिं०क्रि०) खुरचना, छीलना, खरादना ।
कुंभिलाना-(हिं०क्रि०) मुरझाना ।
कुंवर-(हिं०पुं०) देखो कुमार ।
कुंआ-(हिं० पुं०) देखो कूप, इन्दारा ।
कुआर-(हिं०पुं०) आश्विन मास ।
कुइयां-(हिं०पुं०) कूप, कुवां ।
कुकड़ना-(हिं०क्रि०) संकुचित होना ।
कुकड़ी-(हिं०स्त्री०) अंटी, मुट्ठा, खुखड़ी
कुकर्म-(सं०नपुं०) बुरा, काम; कुकर्मी-(सं०वि०) कुत्सित काम करनेवाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुकीर्ति-(सं०स्त्री०) अपमान, निन्दा।
कुक्कुर-(सं०पुं०) कुत्ता। कुक्कुर-खांसी-(हिं०वि०) सूखी खांसी जिसमें कफ नहीं निकलता। कुकुरमुत्ता-(हिं०पुं०) छत्रक, एक प्रकार का तीव्र गन्ध का पौधा।
कुक्कुरी-(सं०स्त्री०) कुतिया।
कुक्कुट-(सं०पुं०) मुर्गा।
कुक्कुरी-(सं०स्त्री०) श्वानी, कुतिया
कुक्रिय-(सं०वि०) कुकर्म करनेवाला।
कुक्रिया-(सं०स्त्री०) दुष्कार्य, बुरा काम
कुक्षि-(सं०स्त्री०) जठर, पेट, कोख।
कुखेत-(हिं०पुं०) बुरा स्थान, कुठांव।
कुख्यात-(सं०वि०) निन्दित,।
कुगति-(सं०स्त्री०) दुर्दशा, बुरी अवस्था।
कुगहनि-(हिं०स्त्री०) अनुचित आग्रह, बुरी अड़।
कुघात-(हिं०स्त्री०) अशुभ अवसर, छल, कपट।
कुंकुम-(सं०नपुं०) केशर, रक्तचन्दन, रोली।
कुच-(सं०पुं०) स्तन, स्त्री की छाती।
कुचना-(हिं०क्रि०) सिकुड़ना, छिदना।
कुचर-(सं०वि०) नीच कर्म करनेवाला
कुचरा-(हिं०पुं०) झाड़ू, बढ़नी।
कुचर्या-(सं०स्त्री०) निन्दनीय आचरण।
कुचलना-(हिं०क्रि०) पैर से रौंदना, दबाना।
कुचाल-(हिं०स्त्री०) बुरा अभ्यास। कुचाली-(हिं०वि०) कुमार्गी, दुष्ट।
कुचाह-(हिं०स्त्री०) अशुभ विषय।
कुचेष्ट-(सं०वि०) निन्दित कार्य करने वाला।
कुचैला-(हिं०वि०) मलिन वस्त्र वाला
कुच्छित-(हिं०वि०) ,देखो कुत्सित।
कुछ-(हिं०वि०) किंचित्, थोड़ा, (सर्व०) किंचित् कोई; (क्रि०वि०) थोड़े परिमाण में, थोड़ा सा।
कुजाति-(सं०स्त्री०) नीच जाति।
कुजिया-(हिं०स्त्री०) छोटा पात्र, घोरिया।
कुजून-(हिं०स्त्री०) बुरा काल, अति काल।
कुञ्चित-(सं०वि०) सिकुड़ा हुआ, टेढ़ा।
कुञ्ज-(सं०पुं०) पेड़ पौधों से ढपा हुआ पहाड़ी स्थान, हाथी का दांत।
कुञ्जा-(हिं०पुं०) मिट्टी का पुरवा, जमी हुई मिश्री की गोल डली।
कुट-(सं०पुं०) कलश, गगरा, कोट।
कुटका-(हिं०स्त्री०) छोटा टुकड़ा।
कुटज-(सं०पुं०) कमल; कुटजगति-(सं०स्त्री०) तेरह अक्षर का एक छन्द
कुटनई-(हिं०स्त्री०) कुटनपन। कुटनपन-(हिं० पुं०) दूती कर्म, झगड़ा लगाने का काम।
कुटनहारी-(हिं०स्त्री०) धान कूटने वाली स्त्री।
कुटना-(हिं०पुं०) वंचक; (पुं०) कूटने पीटने का यन्त्र; (क्रि०) कूटा जाना, मारा जाना।
कुटाई-(हिं०स्त्री०) कूटने का काम, कूटने का वेतन।
कुटिया-(हिं०स्त्री०) छोटा घर या झोपड़ी
कुटिल-(सं०वि०) वक्र, टेढ़ा, दुष्ट, छली; कपटी।
कुटिहा-(हिं०वि०) कटूक्ति बोलनेवाला
कुटी--(हिं०स्त्री०) घास फूस की बनी हुई झोपड़ी, पर्णशाला,
कुटीचर-(सं०पुं०) एक प्रकार का सन्यासी; (हिं०वि०) छली, कपटी, दुष्ट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुटीर- (सं०पुं०) देखो कुटी।
कुटुम्ब-(सं०पुं०) कुल, परिवार।
कुटुम्बी-(सं०वि०) गृही, परिवार वाला; (पुं०) परिवार के लोग।
कुटुम-(हिं०पुं०) देखो कुटुम्ब।
कुटेक-(हिं०स्त्री०) बुरा हठ।
कुटेव-(हिं०स्त्री०) कुत्सित स्वभाव।
कुटौनी-(हिं०स्त्री०) कूटने का काम।
कुट्टा-(हिं०स्त्री०) परकटा कबूतर।
कुट्टित-(सं०वि०)चूर्ण किया हुआ।
कुट्टी-(हि०स्त्री०) कटाई, कागद जिसके अनेक पादार्थ बनते हैं, मैत्री-भङ्ग (बालक इस अर्थ में प्रयोग करते हैं।
कुठला-(हिं०पुं०)अन्न रखने की मिट्टी का बड़ा पात्र।
कुठांव-(हिं०पुं०) बुना स्थान।
कुठार-(सं०पुं०) कुल्हाड़ी, फरसा, नाश करने वाली वस्तु।
कुठारी-(सं०स्त्री०) कुल्हाड़ी, टांगी; (वि०) नाश करने वाली।
कुठौर-(हिं०पुं०) बुरा स्थान, बुरा अवसर।
कुड़कुड़-(हिं०पुं०) अव्यक्त शब्द।
कुड़कुड़ाना-(हिं०क्रि०) कुढ़ना, कुड़बुड़ाना।
कुड़री-(हिं०स्त्री०) गेंडुरी।
कुड़ाली-(हिं०स्त्री०)कुठारी, कुल्हाड़ी।
कुडौल-(हिं०वि०) कुढंगा, भद्दा।
कुढंग-(हिं०पुं०)बुरा आचरण, कुचाल; (वि०) बेढंगा, भद्दा। कुढंगी-(हिं० वि०) कुमार्गी।
कुढ़न-(हि०स्त्री०) मनही मन रहने वाला क्रोध या दुःख, जिद।
कुढाना-(हिं०क्रि०) कोध दिलाना, चिढ़ाना।
कुण्ठ-(सं०पुं०) अकर्मण्य, मूर्ख।
कुण्ठित-(सं०वि०) लज्जित, सकुचाया हुआ, अयोग्य।
कुण्ड-(सं०नपुं०) जलाशय, जलपात्र, होम करने के लिये बनाया हुआ गड्ढा।
कुण्डल-(सं०पुं०) कान का एक अलंकार, मेखला, बदली में सूर्य या चन्द्रमा के चारों ओर देख पड़ने वाला प्रकाश का घेरा। कुण्डलिका-(सं०स्त्री०) मात्रा छन्द विशेष, हिन्दी की कुण्डलिया।
कुण्डलाकार-(सं०वि०)वर्तुल,मण्डलाकार।
कुण्डली-(सं०पुं०)जन्मपत्रिका, सर्पिणी, सर्पवत् बैठने की मुद्रा।
कुण्डिका-(सं०स्त्री०) कमण्डलु, तांबे का कुण्ड, स्थाली, हांडी।
कुतना-(हिं०क्रि०)कुता जाना, आँका जाना।
कुतनु-(सं०वि०) बुरे शरीरवाला।
कुतप-(सं०पुं०)सूर्य, अतिथि, ब्राह्मण।
कुतरन-(हिं०पुं०) देखो कतरन।
कुतार-(हिं०पुं०)असुविधा, अड़चन।
कुतिया-(हि०स्त्री०) कुक्कुरी, कुत्ते की मादा, कुत्सित स्त्री, बुरी स्त्री।
कुतूहल-(सं०स्त्री०)कौतुक, क्रीड़ा, खेल आश्चर्य, अचम्भा।
कुत्ता-(हिं०पुं०) कुक्कुर, श्वान, यन्त्र में किसी घूमनेवाले भाग को रोकना का लगाया हुआ अवरोध, बंदूक का घोड़ा, तुच्छ नीच, मनुष्य।
कुत्र-(सं०अव्य०)कहाँ, किस अवस्था में। कुत्रचित्-(सं०अव्य०) किसी स्थान में। कुत्सित-(सं०वि०)निन्दित गर्हित, अधम, नीच।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुदक्का-(हिं०पुं०) उछलकूद, कूद-फांद।
कुदांव-(हिं०पुं०) धोखा, विश्वासघात, भयंकर स्थान, मर्मस्थान।
कुदान-(सं०नपुं०) अयोग्य पुरुष को दिया जानेवाला दान, (हिं०स्त्री०) उछलकूद, कुदाई, छलांग।
कुदार-(सं०पुं०) भूमि खोदने का एक साधन, कुदाली।
कुदिन-(सं०नपुं०) बुरा दिन, आपत्ति
कुद्रव-(सं०पुं०) कोद्रव अन्न, कोदो।
कुधान्य-(सं०पुं०) क्षुद्र धान्य, घास।
कुधी-(सं०वि०) निर्बुद्धि, निर्लज्ज।
कुनकुना-(हिं०वि०) मन्दोष्ण, गुन-गुना।
कुनाई-(हिं०स्त्री०) बुरादा, बुकनी।
कुनाम-(सं०नपुं०) अपनाम, दुर्नाम।
कुन्तल-(सं०पुं०) केश, बाल।
कुपढ़-(हिं०वि०) अशिक्षित, अनपढ़ा।
कुपथ-(सं० पुं०) बुरा मार्ग, बुरा आचरण।
कुपथ्य-(सं०नपुं०) स्वास्थ्य बिगाड़ने वाला आहार विहार।
कुपना-(हिं०क्रि०) क्रोध करना।
कुपात्र-(सं०वि०) अयोग्य, अनाधि-कारी।
कुपित-(सं०वि०) क्रुद्ध, अप्रसन्न।
कुपुत्र-(सं०पुं०) माता पिता की आज्ञा न माननेवाला बेटा।
कुप्पा-(हिं०पुं०) चमड़े का घी, तेल इत्यादि रखने का बड़ा पात्र।
कुप्पी-(हिं०स्त्री०) तेल, फुलेल रखने का चमड़े का छोटा पात्र।
कुप्रिय-(सं०वि०) अप्रिय।
कुबजा-(हिं०वि०) देखो कुब्जा।
कुबड़ा-(हिं०पुं०) वह मनुष्य जिस
कुबड़ी-(हिं०पुं०) कुब्ज, वह मनुष्य जिसकी पीठ टेढ़ी हो गई हो, (हिं० वि०) कुब्जा, (स्त्री०) झुकी हुई मूठ की।
कुबरी-(हिं०स्त्री०) कुब्जा, झुकी मूठ की छड़ी।
कुबानि-(हिं०स्त्री०) बुरा अभ्यास।
कुबुद्धि-(सं०वि०) मन्द बुद्धि, मूर्ख
कुबेला-(हिं०स्त्री०) बुरा अवसर, बुरा समय।
कुबोलनी-(हिं०वि०) बुरी बात कहने वाली।
कुब्ज-(सं०वि०) टेढ़ी पीठ वाला, कुबड़ा।
कुमंठी-(हिं०स्त्री०) पतली लचने वाली टहनी।
कुमकुम-(हिं०पुं०) देखो कुंकुम। कुम-कुमा-(हिं०पुं०) लाह का पोला गोला जिसमें गुलाल भरकर होली के त्योहार पर लोग एक दूसरे के ऊपर फेंकते हैं।
कुमति-(सं०स्त्री०) मूर्खता, (वि०) बुद्धिहीन।
कुमार-(सं०पुं०) पाँच वर्ष का बालक, पुत्र, युवराज।
कुमारग-(हिं०पुं०) देखो कुमार्ग।
कुमार लतिका-(सं०स्त्री०) सात मात्रा का एक छन्द।
कुमारसम्भव-(सं०नपुं०) महाकवि कालिदास कृत एक काव्य का नाम।
कुमारिका-(सं० स्त्री०) अविवाहिता कन्या, कुमारी, लड़की।
कुमारी-(सं०स्त्री०) बारह वर्ष की कन्या।
कुमार्ग-(सं०पुं०) नीति विरुद्ध कार्य, कुपथ, अधर्म, बुरी चाल। कुमार्ग-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गामी, कुमार्गी-(सं०वि०) अधर्मी, धर्मभ्रष्ट ।
कुमुद-(सं०पुं०) कोई, पद्म, कमल,
कुमुदिनी-(सं०स्त्री०) चाँदनी । कुमुदिनी नायक-चन्द्रमा ।
कुमैड़िया-(हिं०वि०) वंचक, छली ।
कुम्भ-(सं०पुं०) मिट्टी का घड़ा, हाथी के माथे का बिचला भाग । कुम्भकार-(सं०पुं०) कोहार जाति ।
कुम्भीर-(सं०पुं०) घड़ियाल, नक्र ।
कुम्मैत, कुम्मैद-(हिं० पुं०) कालापन
कुम्हड़ा-(हिं०पुं०) एक फैलनेवाली लता जिसका फल बड़ा होता है और तरकारी के काम में आता है ।
कुम्हलाना-(हिं० क्रि०) मुरझाना ।
कुम्हार-(हिं०स्त्री०) कुम्भकार, मिट्टी के पात्र बनाने वाला ।
कुरकुट-(हिं०पुं०) छोटा टुकड़ा ।
कुरकुर-(हिं०पुं०) किसी खरी वस्तु के दबकर टूटने से उत्पन्न शब्द ।
कुरकुरा-(हिं० वि०) कुरकुर शब्द करनेवाला, खरा और करारा ।
कुरङ्ग-(सं०पुं०) हरिन, मृग, वरवै छन्द, (हिं० पुं०) अशुभ लक्षण, (वि०) बुरे रंग का ।
कुरङ्गी-(सं०स्त्री०) हिरनी ।
कुरती-(हिं०स्त्री०) पहिरने का एक वस्त्र ।
कुररी-(सं०स्त्री०) मादा टिटिहरी ।
कुरल-(सं०पुं०) कुन्तल, काकुल ।
कुरवना-(हिं०क्रि०) ढेर लगाना ।
कुरस-(सं०पुं०) बुरा रस, आसव । मदिरा ।
कुराज्य-(सं०नपुं०) निन्द्य राज्य ।
कुराह-(हिं०स्त्री०) कुमार्ग, बुरामार्ग
कुराहर-(हिं०पुं०) देखो कोलहल ।
कुराही-(हिं०वि०) कुमार्गी ।
कुरिया-(हिं० स्त्री०) मड़ई, झोपड़ी
कुरियाल-(हिं०स्त्री०) पक्षियों का आनन्द से बैठकर पर खुजलाना ।
कुरिल-(हिं०पुं०) चर्मकार, चमार ।
कुरीति-(सं०स्त्री०) कुप्रथा, कुचाल ।
कुरुई-(हिं०स्त्री०) मूंज की डलिया ।
कुरुख-(हिं०वि०) क्रुद्ध, कुपित ।
कुरूप-(सं०वि०) निन्द्यरूप, भद्दा ।
कुरेदना-(हिं०क्रि०) खुरचना, खोदना ।
कुरैत-(हिं०पुं०) साझी, हिस्सेदार ।
कुरैया-(हिं०पुं०) राशि, ढेर ।
कुरौना-(हिं०क्रि०) राशि, ढेरी ।
कुर्मी-(हिं०पुं०) देखो कुनबी ।
कुल-(सं०नपुं०) वंश, जाति, समूह, झुण्ड
कुलकना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना ।
कुलकर्ता-(सं०पुं०) वंश संस्थापक ।
कुलक्षण-(सं०नपुं०) बुरा लक्षण, कुरीति ।
कुलक्षय-(सं०पुं०) वंश का ध्वंस ।
कुलगरिमा-(सं०स्त्री०) वंशगौरव ।
कुलघ्न-(सं०वि०) वंश नाशक ।
कुलच्छन-(हिं०स्त्री०) देखो कुलक्षण ।
कुलटा-(सं०स्त्री०) व्यभिचारिणी स्त्री, पुंश्चली ।
कुलतारन-(हिं०वि०) वंश को पवित्र करने वाला ।
कुलतिलक-(सं०पुं०) वंश में सबसे श्रेष्ठ व्यक्ति ।
कुलथी-(हिं०स्त्री०) उड़द के प्रकार का एक मोटा अन्न ।
कुलदीप-(सं०वि०) कुलश्रेष्ठ ।
कुलदूषण-(सं०वि०) वंश में दोष लगाने वाला ।
कुलना-(हिं० क्रि०) पीड़ित होना, टीसना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुलपति-(सं०पुं०) वंश का स्वामी, विद्यार्थियों का भरण पोषण करने वाला तथा उनको शिक्षा देनेवाला गुरु।

कुलपूज्य-(सं०वि०) जो परंपरा से वंश में पूजा चला आया हो।

कुलफी-(हिं०स्त्री०) धातु का बना हुआ चोंगा जिसमें दूध आदि भरकर बरफ जमाया जाता है, पैंच।

कुलवधू-(सं०स्त्री०) भले घराने की स्त्री।

कुलबुल-(हिं०पुं०) छोटे छोटे कीड़ों की गति का शब्द। कुलबुलाना-(हिं० क्रि०) धीरे धीरे हिलना डोलना।

कुलबोरन-(हिं०वि०) कुलकलङ्क।

कुलवन्त-(सं०पुं०) कुलीन।

कलवान्-(सं०वि०) कुलीन, अच्छे कुल का।

कुलवधू-(सं०स्त्री०) अच्छे वंश की स्त्री।

कुलह-(हिं०स्त्री०) कुलाह, टोपी।

कुलांच-(हिं०स्त्री०) उछाल, छलांग।

कुलाचार-(सं०पुं०) वंश का उचित धर्म।

कुलाचार्य-(सं०पुं०) कुलगुरु।

कुलाल-(सं०पुं०) कुम्भकार, कोंहार।

कुलाहल-(हिं०पुं०) देखो कोलाहल।

कुलि-(हिं०क्रि०वि०) सम्पूर्ण, सब।

कुलिक-(सं०वि०) शिल्पकार।

कुलिज-(सं०पुं०) नख, नहँ।

कुलिश-(सं०पुं०) वज्र, बिजली, कुठार

कुली-(सं० पुं०) बोझ उठाने वाला मनुष्य, मुटिया।

कुलीन-(सं०वि०) अच्छे वंश का।

कुलीरक-(सं०पुं०) छोटा केंकड़ा।

कुलल-(हिं०स्त्री०) कल्लोल, खेलकूद

कुल्माष-(सं०पुं०) कुलथी, उड़द, बाँस।

कुल्या-(सं०स्त्री०) नहर, परनाला, कुलस्त्री।

कुल्ला-(हिं०पुं०) मुख में पानी भरकर तथा चारों ओर घुमाकर बाहर फेंकने का कार्य।

कुल्हड़-(हिं०पुं०) पुरवा, चुक्कड़।

कुल्हाड़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी चीरने फाड़ने का एक अस्त्र, कुठार।

कुल्हाड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा कुल्हाड़ा, टाँगी।

कुल्हिया-(हिं०स्त्री०) छोटा पुरवा या कुल्हड़।

कुवाँ-(हिं०पुं०) कूप, कुआं।

कुवाद-(सं०पुं०) परिवाद, बुरी बात।

कुवार-(हिं० पुं०) आश्विन का महीना।

कुश-(सं०पुं०) काँस जाति की एक घास।

कुशल-(सं०नपुं०) कल्याण, मंगल, शिव; (वि०) चतुर, शिक्षित, प्रवीण

कुशलक्षेम-(सं०नपुं०) राजीखुशी।

कुशा-(हिं०पुं०) देखो कुश।।

कुशील-(सं०वि०) असभ्य।

कुष्ठ-(सं०पुं०) कोढ़ रोग।

कुष्माण्ड-(सं०पुं०) कुम्हड़ा।

कुसङ्ग-(सं०पुं०) कुत्सित संग।

कुसमय-(सं०पुं०) संकट का समय।

कुसलई-(हिं०स्त्री०) क्षेम, निपुणता।

कुसलछेम-(हिं०स्त्री०) देखो कुशल-क्षेम।

कुसली-(हिं०स्त्री०) आम की गुठली

कुसहाय-(सं०पुं०) बुरा साथी।

कुसाइत-(हिं०स्त्री०) कुसमय, कुमुहूर्त।

कुसिया-(हिं०स्त्री०) बेल बूटा बनाने की सूई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुसुम-(सं०पुं०) पुष्प, फूल। कुसुम-रेणु-(सं०पुं०) फूल का पराग।
कुसुमाकर-(सं०पुं०) बगीचा, कुंज।
कुसुमागम-(सं०पुं०) वसन्त काल।
कुसुमांजलि-(सं०पुं०) पुष्पांजलि।
कुसुमायुध-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव।
कुसुमावली-(सं०स्त्री०) फूलों का गुच्छा
कुसुमित-(सं०वि०) पुष्पित, फूला हुआ।
कुसुम्भी-(हिं०वि०) लाल रंग का।
कुस्सा-(सं०पुं०) कुदाल, कुदाली।
कुहक-(सं०वि०) प्रतारक, एन्द्रजालिक
कुहकना-(हिं०क्रि०) मीठा बोलना, पिहिकना। कुहकी-(हिं० वि०) मायावी।
कुहना (हिं०क्रि०) मार मार कर कचूमर निकालना।
कुहनी-(हिं०स्त्री०) हाथ और बाँह के जोड़ की हड्डी, टेढ़ी बनी हुई नली।
कुहप-(हिं०पुं०) रात्रिचर, राक्षस।
कुहर-(सं०पुं०) छिद्र, गड्ढा।
कुहरा-(हिं०पुं०) जल का अत्यन्त सूक्ष्म कण जो ठंढक पाकर वायु की भाफ में जम जाता है और धीरे धीरे भूमि पर उतरता है।
कुहराम-(हिं०पुं०) कोलाहल, उपद्रव।
कुहाना-(हिं०क्रि०) मन ही मन क्रुद्ध होना, रुठना।
कुहु-(सं०स्त्री०) कोयल की बोली।
कुहुक-(हिं० पुं०) पक्षियों का मधुर कूजन।
कुहू-(सं०स्त्री०) कोयल की ध्वनि। कुहूक; कुहुकण्ठ-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
कुंख-(हिं०स्त्री०) कुक्षि, काँख।
कूंखना-(हिं०क्रि०) पीड़ित अवस्था में करुणाजनक शब्द निकालना, काँखना
कूंचना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, कुचलना, मारना, पीटना।
कूंचा-(हिं०पुं०) झाड़ू, बोहारी। कूंची-(हिं०स्त्री०) छोटा कूंचा, छोटी झाड़ू चित्रकार की रंग पोतने की कलम।
कूंड़-(हिं०पुं०) युद्ध में पहिरने की लोहे की टोपी, पानी भरने का लोहे या मिट्टी का गगरा, पात्र, कठौता, मोमबत्ती जलाने की घड़े के आकार की काँच की बड़ी हाड़ी।
कुंड़ा-(हिं०पुं०) गहरा तथा चौड़े मुंह का मिट्टी का पात्र।
कूंडी-(हिं०स्त्री०) पथरी, छोटी नाँद।
कूंथना-(हिं०क्रि०) कराहना, कांखना।
कूंई-(हिं०स्त्री०) कुमुदिनी, कोईं।
कूकर-(हिं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
कूचिका-(सं०स्त्री०) छोटी चाभी, चित्रकार की कूंची।
कूची-(सं०स्त्री०)) चित्र बनाने की लेखनी (हिं०स्त्री०) छोटी झाड़ू।
कूज-(हिं०स्त्री०) ध्वनि, बोली।
कूजन-(सं०नपुं०) चिड़ियों की बोली
कूजना-(हिं०क्रि०) चहकना।
कूजित-(सं०वि०) शब्द किया हुआ।
कूट-(सं०पुं०) पहाड़ का शिखर, कंगूरा, मुकुट, अग्रभाग, समूह, मिथ्या, झूठ, छल, गूढ़ार्थ, व्यंग, (वि०) कृत्रिम, बनावटी,। कूटकर्मा-(सं०पुं०) छली, कपटी। कूटकार-(सं०वि०) झूठी, साक्षी देने वाला। कूटता-(सं०स्त्री०) छल, कपट, झूठापन।
कूटना-(हिं०क्रि०) ठोंकना, मारना, पीटना, टांकी से छोटे छोटे गड्ढे बनाना
कूटनीति-(सं०स्त्री०) कपटनीति, धोखे की चाल। कूटशासन-(सं० नपुं०) मिथ्या शासन, धोखे का राज्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कूटसाक्षी-(सं०पुं०) झूठ बोलनेवाला साक्षी ।
कूट-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसके फल के बीजों का आटा पीसकर फलाहार में व्रत के दिन खाया जाता है ।
कूड़ा-(हिं०पुं०) झाड़न, मल,कतवार ।
कूढ़-(हिं०वि०) अज्ञान, मूर्ख ।
कूत-(हिं०स्त्री०) अनुमान, अटकल ।
कूतन-(हिं०क्रि०) अटकल से किसी वस्तु का मूल संख्या, परिमाण इत्यादि बतलाना ।
कूद-(हिं०स्त्री०) कूदने की क्रिया, कुदाई। कूदना-(हिं०क्रि०) उछलना, फांदना ।
कूप-(सं०पुं०) कुआं, इनारा, गर्त, छेद
कूपकार(सं०पुं०) कुआं खोदनेवाला।
कूपज-(सं०पुं०) लोम, केश, बाल ।
कूपदर्दुर-(सं० पुं०) कुवें का मेढक, अनुभवहीन मनुष्य ।
कूपी-(सं०स्त्री०) नाभि, छोटा पात्र ।
कूबड़-(हिं०पुं०) पीठ का टेढ़ापन ।
कूबर-(हिं०पु०) कूबड़ ।
कूबा-(हिं० पुं०) बड़ेरा रखने की टेढ़ी लकड़ी ।
कूरा-(हिं०पुं०) राशि, ढेर, भाग, अंश।
कूर्च-(सं०पुं०) दोनों भौंह के बीच का स्थान, दाढ़ीमूंछ ।
कूर्चिका-(सं०स्त्री०) चाभी, सूई, फूल की कली, चित्रकार की कलम ।
कूर्म-(सं०पुं०) कच्छप, कछुवा, पृथ्वी।
कूल-(सं०नपुं०) नदी का किनारा,
कूलिनी-(सं०स्त्री०) नदी ।
कूली-(हिं०पुं०) देखो कुली ।
कूल्हना-(हिं०क्रि०) काँखना, कराहना
कूल्हा-(हिं०पुं०) पेट के दोनों ओर की। उभरी हुई हड्डी ।
कूष्माण्ड-(सं०पुं०) कुम्हड़े की लता ।
कूह-(हिं०स्त्री०) हाथी की चिग्घाड़।
कृकलास-(सं०पुं०) गिरगिट ।
कृच्छ्र-(सं०पुं०) दुःख, कष्ट, पाप ।
कृत-(सं०वि०)सम्पादित, किया हुआ, प्रस्तुत, प्राप्त, अभ्यस्त, पर्याप्त ।
कृतकार्य-(सं०वि०) कार्य साधन करने वाला ।
कृतघ्न-(सं०वि०) पहिले किये हुए उपकार को भूल जानेवाला ।
कृतज्ञ-(सं०वि०) किये हुए उपकार को माननेवाला । कृतज्ञता-(सं०स्त्री०) उपकार मानना ।
कृतापराध-(सं०वि०)दोषी, अपराधी ।
कृतार्थ-(सं०वि०) जिसका कार्य सिद्ध हो चुका हो, सन्तुष्ट ।
कृति-(सं०स्त्री०) क्रिया, कार्य, करनी।
कृत्य-(सं०वि०) किया जाने वाला, कर्तव्य, वेदविहित आवश्यक कर्म ।
कृत्या-(सं०स्त्री०) अभिचारादि कार्य, जादू टोना ।
कृत्रिम-(सं०वि०)बनावटी,मिथ्याभूत ।
कृत्स्न-(सं०वि०) सम्पूर्ण, सब ।
कृदन्त-(सं०पुं०) धातु में 'कृत्' प्रत्यय लगाकर बना हुआ शब्द ।
कृन्तन-(सं०नपुं०) छेदन, काटछांट ।
कृपण-(सं०वि०) कंजूस, सूम,अदाता।
कृपनाई-((हिं०स्त्री०) कृपणता ।
कृपया-(सं०अव्य०) कृपापूर्वक ।
कृपा-(सं०स्त्री०) दया, अनुग्रह, क्षमा ।
कृपाकर-(सं०वि०) दयालु ।
कृपाण-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार ।
कृपानिधि-(सं०पुं०) अति दयावान ।
कृपापात्र-(सं०नपुं०) दयाभाजन ।
कृपायतन-(स०नपुं०) कृपानिधि ।
कृपाल-(हिं०वि०) देखो कृपालु ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृपालु-(सं०वि०) दयालु।
कृपावान्-(सं०वि०) दया करनेवाला।
कृपासिन्धु-(सं०पुं०) दयासागर।
कृमि-(सं०पुं०) कीट, उड़नेवाला कोई कीड़ा।
कृश-(सं०वि०) दुबला, पतला, दरिद्र, अधूरा।
कृशरा-(सं०स्त्री०) खिचड़ी।
कृशानु-(सं०पुं०) अग्नि, आग।
कृशित-(सं०वि०) दुर्बल, दुबला पतला
कृशोदरी-(सं०स्त्री०) पतली कमर-वाली स्त्री।
कृषक-(सं०पुं०) किसान, खेतिहर।
कृषि-(सं०स्त्री०) खेती, किसानी।
कृषीवल-(सं०पुं०) किसान।
कृष्ट-(सं०वि०) कर्षित, जोता हुआ।
कृष्ण-(सं०वि०) काला, नीले रंग का; (पुं०) भगवान का एक अवतार
कृष्णकाय-(सं०पुं०) भैसा, (वि०) काले शरीर का।
कृष्णपक्ष-(सं०पुं०) चन्द्रक्षय का पक्ष, अँधियारा पाख।
कृष्णसार-(सं०पुं०) काला हरिन।
कृष्णायस-((सं०नपुं०) इस्पात लोहा।
कें कें-(हिं०स्त्री०) चिड़ियों का दुःख-सूचक शब्द, झगड़े की बोली।
केंचुल-(हिं०स्त्री०) साँप की अपने आप गिर जाने वाली खाल।
केंचुली-(हिं०स्त्री०) देखो केंचुल।
केंचुवा-(हिं०पुं०) वर्षा ऋतु का एक कीड़ा, पेट में पड़ जान वाला कीड़ा, जो केंचुवे के आकार का होता है।
केउ-(हिं०सर्व०) कोई।
केकड़ा-(हिं०पुं०) कर्कट, पानी में रहनेवाला आठ टाँग और दो पंजे वाला एक कीड़ा।
केका-(सं०स्त्री०) मोर की बोली।
केकी-(सं०पुं०) मयूर, मोर।
केचित्-(सं०अव्य०) कोई कोई।
केड़वारी-(हिं०स्त्री०) शाक, फल आदि बोने का बागीचा।
केड़ा-(हिं०पुं०) कोंपल, कल्ला, नया पौधा
केत-(सं०पुं०) घर, स्थान, बस्ती, ध्वजा।
केतक-(सं०नपुं०) केवड़ा, (हिं०वि०) कितने, बहुत, बहुत कुछ।
केतकी-(सं०स्त्री०) केवड़ा।
केतिक-(हिं०वि०) कितना।
केतक-(हिं०वि०) कितना।
केती-(हिं०वि०) कितना।
केन्द्र-(सं०नपुं०) वृत्त का मध्य स्थान; केन्द्राभिकर्षिणी शक्ति-वह शक्ति जिसके प्रभाव से द्रव्य केन्द्र की ओर आकर्षित होता है।
केयूर-(सं० नपुं०) बाँह में पहिरने का आभूषण, भुजबन्ध, अंगद।
केर-(हिं०प्रत्य०) संबध सूचक विभक्ति का प्रत्यय, का।
केरा-(हिं०पुं०) देखो केला।
केराना-(हिं०क्रि०) अन्न का छोटा बड़ा दाना सूप से अलगाना; (पुं०) हलदी मिरचा, धनिया आदि मसाला।
केरानी-(हिं०पुं०) युरेशियन, दोगला युरोपियन।
केराव-(हिं०पुं०) मटर।
केरी-(हिं०प्रत्य०)-'के' विभक्ति का स्त्रीलिंग का रूप।
केला-(हिं०पुं०) कदली वृक्ष।
केलि-(सं०स्त्री०) परिहास, हँसी ठट्ठा क्रीड़ा,।
केवट-(हिं०पुं०) मल्लाह।
केवटीदाल-(हिं०स्त्री०) दो या अधिक प्रकार की एकमें मिली हुई दाल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केवड़ई-(हिं०वि०) हलके पीले हरे रंगका
केवड़ा-(हिं०पुं०) श्वेत केतकी का पौधा, इस पौधे का फूल ।
केवल-(सं०वि०) एकमात्र, अकेला, श्रेष्ठ, उत्तम, उत्कृष्ट (नपुं०) भ्रान्ति-शून्य ज्ञान, (क्रि०वि०) सिर्फ, मात्र,
केवाड़-(हिं०पुं०) किवाड़, कपाट ।
केश-(स०पुं०) कुन्तल, सिर का बाल, किरण, रश्मि। केशकर्म-(सं०नपुं०) बालों को संवारने की कला, केशान्त कर्म संस्कार। केशकलाप-(सं०पुं०) बालों का गुच्छा । केशग्रह-(सं०पुं०) बलपूर्वक झोंटा खींचना । केशपाश-(सं०पुं०) बालों की लट। केशमार्जनी-(सं०स्त्री०) कंघी
केशर-(सं०पुं०) फूलों के बीच के महीन रेशे, सिंह या घोड़े का गरदन पर का बाल, कङ्कुम, केसर ।
केशरी-(सं०पुं०) सिंह, घोड़ा ।
केशव-(सं०पुं०) परमात्मा, विष्णु ।
केशिनी-(सं०स्त्री०) बड़े बड़े बालों वाली स्त्री ।
केशी-(सं०पुं०) घोड़ा, सिंह, (वि०) बालदार, किरण युक्त ।
केस-(हिं०पुं०) देखो केश ।
केसर-(सं०पुं०) फूलों के बीच के महीन तन्तु, कुङ्कुम, घोड़े या सिंह के गरदन पर के बाल; केसरिया-(हिं०वि०) पीला, जिसमें केसर मिली हो।
केसरी-(सं०पुं०) सिंह, घोड़ा, ।
केसारी-(हिं०स्त्री०) मटर की जाति का एक अन्न, लेतरी, खेसारी ।
केसू-(हिं०पुं०) देखो टेसू ।
केहरी-(हिं०पुं०) केसरी, सिंह, घोड़ा।
केहा-(हिं०पुं०) मयूर, मोर ।
केहि-(हिं०वि०) किस, किसको ।
केहूँ-(हिं०क्रि०वि०) किस प्रकार, कैसे।
केहू-(हिं०सर्व०) कोई ।
कैंचा-(हिं०वि०) टेढी आंख वाला, भेंगा, ऐंचा, (पुं०) बड़ी कैंची ।
कैंड़ा-(हिं०पुं०) ढंग, बनावट, चतुराई
कैं-(हिं०वि०) कितने, कितना, (अव्य०) अथवा, वा-(अ०स्त्री०) वमन, उलटी
कैतव-(सं०पुं०) शठता, छल, धोखा, (वि०) जुआरी, शठ, दुष्ट ।
कैथ, कैथा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वृक्ष जिसमें गोल फल खट्टे हैं, कपित्थ ।
कैथी-(हिं०स्त्री०) एक प्राचीन लिपि जो नागरी से बहुत मिलती जुलती है, इसमें अक्षरों पर माथा नहीं बांधा जाता, बिहार प्रान्त में इसका व्यवहार होता है ।
कैधौं-(हिं०अव्य०) वा, अथवा ।
कैवर-(हिं०पुं०) तीर का फल ।
कैया-(हिं०पुं०) रांगे से झलने का हथौड़ी के आकार का एक अस्त्र, आध पाव की नाप ।
कैरव-(सं०पुं०) शत्रु, जुआरी ।
कैलास-(सं०पुं०) हिमालय की एक चोटी का नाम, ।
कैवर्त-(सं०पुं०) केवट जाति, मल्लाह।
कैवल्य-(सं०नपुं०) मुक्ति, निर्वाण, एकता, शुद्धता ।
कैसे-(हिं०क्रि०वि०) किस प्रकार से, किस कारण से, क्यों, किस लिये ।
कैसो-(हिं०) देखो कैसा ।
कोई-(हिं०स्त्री०) देखो कुई ।
कोंचना-(हिं०क्रि०) छेदना, गड़ाना, चुभाना ।
कोंछ-(हिं०पुं०) स्त्रियों की ओढ़नी का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोना। कोंछना-(हिं०क्रि०) साड़ी के अगले भाग को चुनना।
कोंथ-(हिं०पुं०) पुरानी भीत के छेदों में मिट्टी इत्यादि का भराव; कोंथना-(हिं०क्रि०) भीत की छेदों में सनी हुई मिट्टी भरना।
कोंपर, कोंपल-(हिं०स्त्री०) डाल का पका हुआ आम, बांस का कोमल अंकुर।
कोंवर-(हिं०वि०) नरम, मोलायम, मृदु, कोमल।
कोंहड़ा-(हिं०पुं०) देखो कुम्हड़ा।
कोंहड़ौरी-(हिं०स्त्री०) पेठे को मिलाकर उड़द की बनी हुई बरी।
को-(हिं०सर्व०) कौन, कर्म तथा सम्प्रदान कारक का चिह्न।
कोआ-(हिं०पुं०) कोष, रेशम के कीड़े का घर, टसर का कीड़ा, महुवे का पका हुआ फल, कटहल के पके हुए फल का बीजकोष, आंख का ढेला।
कोइना-(हिं०पुं०) महुवेके फलकी गुठली
कोइरौ-(हिं०पुं०) काछी, कुरमी।
कोइली-(हिं०स्त्री०) आम की गुठली,
कोई-(हिं०सर्व०) अज्ञात, वस्तु विशेष अविशेष, एक भी;
कोऊ, कोउ, कोऊक-(हिं०सर्व०) कोई एक, कुछ।
कोंक-(सं०पुं०) चक्रवाक्, चकवा, भेंडा
कोकई-(हिं०वि०) गुलाबी, नीला रंग, कौड़ियाला।
कोकनद-(सं०नपुं०) लाल पद्म।
कोकना-(हिं० क्रि०) कच्चा करना, बखिया करने के लिये सूई से दूर-दूर पर तागा डालना।
कोकाह-(सं०पुं०) श्वेत घोड़ा।
कोसिल-(सं०पुं०) कोयल, भृत, जलत हुआ, अंगारा, बेर का फल।
कोको-(हिं०स्त्री०) मादा कौवा, (पुं०) कौवे का शब्द।
कोख-(हिं०स्त्री०) पेट, उदर, पेट के दोनों ओर का स्थान, गर्भाशय;
कोचना-(हिं०क्रि०) चुभाना, गड़ाना, (पुं०) चुभाने का कोई साधन।
कोचवान-(हिं०पुं०) बग्घी हाँकनेवाला।
कोचा-(हिं०पुं०) तलवार इत्यादि का गड़ाव, चुभाव।
कोजागर-(सं०पुं०) आश्विन मास की पूर्णिमा, शरदपूर्णिमा, सरदपूनो।
कोट (सं०पुं०) दुर्ग, गढ़, (हिं०पुं०) कोटि, अनेक।
कोटर-(सं०पुं०) पेड़ का खोखला भाग।
कोटि-(सं०स्त्री०) तलवार की धार, धनुष का, अगला भाग, सौ लाख की संख्या, श्रेणी, समूह, जत्था।
कोटिक-(हिं०वि०) करोड़ों, अनगिनतिन।
कोचिज्या-(सं०स्त्री०) धनुष के आकार का क्षेत्र।
कोटिश-(सं०अव्य०) करोड़ों, अनेक प्रकार से।
कोठरी-(हिं०स्त्री०) भीत से चारो ओर घेरा हुआ छोटा कमरा।
कोठा-(हिं०पुं०) लंबी चौड़ी कोठरी, भण्डार घर, अटारी। कोठार-(हिं० पुं०) भण्डारघर। कोठारी-(हिं० पुं०) भण्डारी।
कोठिला-(हिं०पुं०) देखो कुठला।
कोठी-(हिं०पुं०) पक्का बड़ा घर, बंगला, कारबार का स्थान, थोक बिक्री की दूकान, कुवें की दीवार, या पुल के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खंभे पर की ईंट या पत्थर की जोड़ाई जो पानी के भीतर चली जाती है, बांस का मण्डलाकार समूह। **कोठीवाल**-(हिं०पुं०) महाजन, साहूकार; **कोठीवाली**-(हिं०स्त्री०) महाजनी, मुड़िया लिपि।

कोड़ना-(हिं०क्रि०) खेत की मिट्टी को गहरी खोदकर उलटना, गोड़ना।

कोड़ा-(हिं०पुं०) साटा, चाबुक।

कोड़ी-(हिं०स्त्री०) बीस वस्तुओंका समूह

कोढ-(हिं०पुं०) कुष्ट।

कोढी-(हिं०वि०) कुष्ट रोग ग्रस्त।

कोण-(सं०पुं०) नोक, कोना, दिशाओंके मध्य की दिशा, दो सीधी रेखाओं के परस्पर मिलने का स्थान।

कोतवाल-(हिं०पुं०) नगरपाल, प्रबन्ध कारक, पंचायत सभा इत्यादि का निमन्त्रण देने वाला। **कोतवाली**-(हिं०स्त्री०) कोतवाल के रहने का स्थान, कोतवाल का पद।

कोथला-(हिं०पुं०) थैला, उदर, पेट।

कोथली-(हिं०स्त्री०) लंबी थैली जिसमें रुपये पैसे भरकर कमर में बाँध लेते हैं

कोद-(हिं०स्त्री०) दिशा, ओर, कोना।

कोदई-(हिं०पुं०) देखो कोद्रव।

कोदण्ड-(सं०पुं०) धनुष, कमान भौंह।

कोदो-(हिं०पुं०) कोद्रव, कदन्न।

कोन-(हिं०पुं०) कोण, कोना।

कोना-(हिं०पुं०) कोण, नोकीला किनारा, खूँट, पल्ला, लंबाई चौड़ाई मिलने का स्थान।

कोनिया-(हिं०स्त्री०) लकड़ी या पत्थर की पटिया जो वस्तु रखने के लिये भीत के कोने पर बैठाई होती है।

कोप-(सं०पुं०) क्रोध, रोष; **कोपना**-(हिं०क्रि०) क्रोध करना, रोष करना।

कोपनीय-(सं०वि०) जिसपर क्रोध किया जावे। **कोपभवन**-(सं०नपुं०) वह कोठरी जिसमें क्रोध में आकर कोई मनुष्य बैठता है।

कोपर-(हिं०पुं०) टपका, डाल का पका आम। **कोपल**-(हिं०स्त्री०) नई पत्ती जो किसी पौधे में से निकलती है।

कोपित-(सं०वि०) कुपित, क्रुद्ध।

कोपित-(हिं०वि०) कोप करने वाला, क्रोधी।

कोपीन-(हिं०स्त्री०) देखो कौपीन।

कोबी-(हिं०स्त्री०) गोभी का फूल।

कोमल-(सं०वि०) सुकुमार, सुन्दर, मनोहर।

कोय-(हिं०सर्व०) कोई।

कोयर-(हिं०पुं०) पशुओं को खिलाने का हरा चारा।

कोयल-(हिं०स्त्री०) कोकिल।

कोयला-(हिं०पुं०) जली हुई लकड़ी का वह भाग जो पूरी तरह से राख न हुआ हो परन्तु काला पड़ गया हो।

कोया-(हिं०पुं०) आंख का ढेला, आंख का कोवा, कटहल का गूदे से भरा हुआ बीज कोष जो खाया जाता है।

कोर-(हिं०स्त्री०) प्रान्त भाग, किनारा, द्वेष, नोक, धार, श्रेणी, वैमनस्य।

कोरंजा-(हिं०पुं०) वेनत में दिया जाने वाला अन्न।

कोरहा-(हिं०वि०) किनारदार, नुकिला

कोरा-(हिं०वि०) व्यवहार में न लाया हुआ, चिह्न रहित, निरक्षर, नया, बिना धुला हुआ,

कोरि-(हिं०) देखो कोटि।

कोल-(सं०पुं०) बेड़ा, क्रोड़, गोद, आलिंगन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोलना-(हिं०क्रि०) छेदना, बीच में खोदकर पोला करना।
कोलाहल-(सं०पुं०) कलकल ध्वनि, चिल्लाहट।
कोलियाना-(हिं०क्रि०)छाती से लगाना
कोल्हू-(हिं०पुं०) तेल या ऊख पेरने का यन्त्र।
कोविद-(सं०पुं०) पण्डित, विद्वान्।
कोविदार-(सं०पुं०) कचनार का वृक्ष
कोश-(सं०पुं०) अण्ड, अंडा, फूल की बंधी हुई कली, तलवार की मियान, समूह, ढेर, आवरण, खोल, संचित धन, रेशम का कोया, अकारादि क्रम से लिखी हुई पुस्तक जिसमें शब्दों के अर्थ दिये हों। कोशकार-(सं०पुं०) शब्दकोश बनाने वाला।
कोशपाल-(सं०पुं०) कोषाध्यक्ष।
कोशवान्-(सं०वि०) कोशयुक्त।
कोशवृद्धि-(सं०स्त्री०) अण्डकोष की वृद्धि।
कोशागर-(सं०नपुं०) धनागार।
कोष-(सं०पुं०) कुड्मल,कली,तलवार की म्यान, अण्टा, पात्र भाण्डार,।
कोष्ठक-(सं०पुं०) घिरा हुआ स्थान, एक चिह्न जो लिखने में प्रयोग होना है जिसके भीतर अंक या वाक्य लिखे जाते हैं। कोष्ठबद्ध-(सं०नपुं०) मल की रुकावट।
कोस-(हिं०पुं०) क्रोश, दो मील की दूरी।
कोसना-(हिं०क्रि०) अभिशाप देना, गाली देना।
कोसिया-(हिं०स्त्री०)मिट्टीका छोटापात्र
कोसू-(हिं०पुं०) कोसने वाला।
कोसों-(हिं०क्रि०वि०) कई कोस की दूरी पर।
कोहड़ौरी-(हिं०स्त्री०) कोहड़े और उड़द की बरी।
कोह-(हिं०पुं०) क्रोध।
कोहना-(हिं०क्रि०) रिसियाना।
कोहनी-(हिं०स्त्री०) देखो कुहनी।
कोहबर-(हिं०पुं०) वह स्थात जहां विवाह के समय कुल देवना का स्थापना होता है।
कोहरा-(हिं०पुं०) धुवें के रूप में प्रातःकाल गिरने वाली ओस।
कोहा-(हिं०पुं०) चौड़े मुँह का मिट्टी का बड़ा पात्र जो खप्पर के आकार का होता है।
कोहाना-(हिं० क्रि०)क्रुद्ध होना,रिसाना
कोही-(हिं०वि०) क्रोधी।
कौंध-(हिं०स्त्री०) बिजली की दूर की चमक। कौंधना-(हिं०क्रि०) दूर से बिजली चमकता।
कौआना-(हिं०क्रि०) अंडबंड बकना, भौचक्का होना।
कौट-(सं०पुं०) कपट साक्षी।
कौटिल्य-(सं०पुं०) कुटिलता,क्रूरता।
कौड़ा-(हिं०पुं०)बड़ी कौड़ी, जाड़े के दिनों में गड्ढे में जलाई हुई आग, अलावा।
कौड़िया-(हिं०वि०)कौड़ी के रंग का।
कौड़ियाला-(हिं०वि०) कोकई, हलका नीला जिसमें गुलाबी की कुछ आभा हो; (वि०) कृपण, कंजूस।
कौड़ियाही-(हिं०स्त्री०) कौड़ियों में चुकाई जाने वाली।
कौड़ी-(हिं०स्त्री०) कपर्दिका, द्रव्य, रूपया पैसा, कर, आँखका ढेला, गिलटी जो कांख या जाँघ में होती है, छोटी हड्डी जो छाती के नीचे बीच में होती है, कटार की नोक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कौंतिग-(हिं०पुं०) देखो कौतुक ।
कौतुक-(सं०नपुं०) आश्चर्य, अचंभा, आनन्द, विनोद, कौतूहल-(सं०पुं०) किसी नये या अपरिज्ञात विषय के जानने सुनने या देखने का आग्रह ।
कौथ-(हिं०स्त्री०) कौनसी तिथि, यह शब्द प्रश्न बाचक सर्वनाम की तरह प्रयोग होता है ।
कौथा-(हिं०वि०) किस संख्याका, किस स्थान का ।
कौन-(हिं०सर्व०) प्रश्न वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा अभिप्रेत व्यक्ति या वस्तु पूछी जाती है, विभक्ति लगने से "कौत" का रूप "किस" हो जाता है; कैसा, किस प्रकारका ।
कौपीन-(सं०नपुं०) काछा, कफनी ।
कौमार-(सं०पुं०) बचपन ।
कौमुदी-(सं०स्त्री०) ज्योत्स्ना, चांदनी
कौर-(हिं०पुं०) कवल, ग्रास, कोना, चक्कीमें एकबार पीसने के लिये डाला जाने वाला अन्न ।
कौराना(हिं०क्रि०) थोड़ा भूनना ।
कौरा-(हिं०पुं०) द्वार का दोनों ओरका पाख ।
कौरियाना-(हिं०क्रि०) दोनों हाथों से पकड़ कर छाती में लगाता ।
कौरी-(हिं०स्त्री०) क्रोड़, गोद, अंकवार
कौल-(सं०वि०) उत्तम कुल में उत्पन्न ।
कौलिक-(सं०पुं०) जुलाहा ।
कौवा-(हिं०पुं०) वायस, काक, कण्ठ के भीतर का लटकता हुआ मांस का खण्ड, घांटी; कौवारोर-बहुत कोलाहल ।
कौशल-(सं०नपुं०) कुशलता, चातुरी ।
कौशेय-(सं०नपुं०) रेशमी वस्त्र ।
कौसुम्भ-(सं०पुं०) जंगली कुसुम, कुसुम्भी
कौहा-(हिं०पुं०) वडेरकी आड़में लगाई जाने वाली लकड़ी ।
क्या-(हिं०सर्व०) प्रश्न वाचक शब्द, कौन वस्तु, इस शब्द द्वारा किसी विषयमें प्रश्न किया जाता है, इसमें कोई विभक्ति नहीं लगती, किनता, ऐसा, कैसा, इनता, अनोखा, निराला, अच्छा, (क्रि०वि०) क्यों नहीं, काहेको
क्यारी-(हिं०स्त्री०) कियारी ।
क्यों-(हिं०क्रि०) किस कारण, किसलिये, इस शब्द से किसी व्यापार या घटना का कारण वक्तव्य होता है, कैसे, किस प्रकार; क्योंकि-(हिं०अव्य०) इसलिये कि; क्योंकर-किस प्रकार से; क्यों नहीं-ऐसा ही ठीकहै ।
क्रकच-(सं०पुं०) आरा, केवड़ा ।
क्रकराट-(सं०पुं०) भरद्वाज पक्षी ।
क्रतु-(सं०पुं०) अश्वमेध यज्ञ ।
क्रन्द-(सं०पुं०) घोड़े की हिनहिनाहट, चीख । क्रन्दन-(सं०नपुं०) रुलाई,
क्रम-(सं०पुं०) अनुक्रम, शक्ति, प्रणाली आक्रमण, पैर रखने का काम, आगे पीछे रहने की स्थिति, चाल, परिपाटी, क्रमज्या-(सं०स्त्री०) गणित ज्योतिष में क्रान्तिज्या । क्रमशः-(सं०अव्य०) क्रम क्रम से, धीरे-धीरे ।
क्रमागत-(सं०वि०) क्रम से प्राप्त, वंश-परंपरा क्रमसे प्राप्त । क्रमानुसार-(सं०क्रि०वि०) क्रमानुकूल, क्रमसे ।
क्रमिक-(सं०वि०) क्रमयुक्त, परंपरा प्राप्त ।
क्रय-(सं०पुं०) मोल लेने का काम । क्रयविक्रय-(सं०पुं०) मोल लेने और बेचने का काम, वाणिज्य ।
क्रयी-(सं०वि०) क्रेता ।
क्रव्य-(सं०नपुं०) मांस ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रव्याद-(सं०पुं०) मांस खानेवाला जीव, राक्षस, सिंह, श्येन पक्षी, अग्नि
क्रान्त-(सं०वि०) आक्रान्त, दबा हुआ।
क्रान्ति-(सं०स्त्री०) पाद विक्षेप, नक्षत्र की गति, राशिचक्र की मध्य-रेखा, विषुवत रेखा से उत्तर कर्कट क्रान्ति तक अथवा दक्षिणमें मकर क्रांन्ति तक सूर्य की दूरी, परिवर्तन, उलट फेर। क्रान्तिक्षेत्र-(सं०नपुं०) नक्षत्र की गति जानने के लिये खींचा हुआ क्षेत्र। क्रान्तिज्या-(सं०स्त्री०) क्रान्तिवृत्त क्षेत्र स्थित अक्षक्षेत्र का एक अवयव। क्रान्तिपात-(सं०पुं०) विषुवत रेखा तथा अयन मण्डल के मिलाप का स्थान जहाँ पर पृथ्वी के आने से दिन रात बराबर होते हैं।
क्रान्तिमण्डल-(सं०नपुं०) वह कल्पित वृत्त जिस पर पृथ्वी के चारो ओर घूमता हुआ सूर्य देख पड़ता है।
क्रान्तिवृत्त-(सं०नपुं०) सूर्यका मार्ग।
क्रिमि-(सं०पुं०) घुन, कीड़ा; क्रिमिजा-(सं०स्त्री०) लाख, लाक्षा।
क्रियमाण-(सं०वि०) प्रस्तुत, किया जानेवाला।
क्रिया-(सं०स्त्री०) अनुष्ठान, चिकित्सा, प्रयोग, श्राद्ध, प्रयत्न, गति, चेष्टा, हिलना, डोलना, व्याकरण में किसी व्यापार के होने या करने का अर्थ सूचक शब्द; क्रियातिपत्ति-(सं०स्त्री०) काव्यालंकारमें अतिशयोक्तिका एक भेद
क्रियानिष्ठ-(सं०वि०) सन्ध्या, तर्पण आदि नित्यकर्म करने वाला। क्रियावान्-(सं०वि०) क्रिया युक्त, कामकाजी
क्रियाविशेषण-(सं०नपुं०) क्रिया का विशेषण, क्रिया का भाव प्रकाशित करनेवाला शब्द।

क्रिस्तान-ईसाई धर्मानुयायी।
क्रिस्तानी-(हिं०वि०) ईसाइयों का।
क्रीट-(हिं०पुं०) किरीट, मुकुट।
क्रीड़क-(सं०वि०) क्रीड़ा करनेवाला।
क्रीड़न-(सं०पुं०) क्रीड़ा।
क्रीड़ा-(सं०स्त्री०) आमोद प्रमोद, खेल-कूद; क्रीड़ाकानन-उपवन, बगीचा; क्रीड़ाकौतुक-खेल तमाशा।
क्रीत-(सं०वि०) मोल लिया हुआ।
क्रीतक-(सं०पुं०) क्रीत पुत्र।
क्रुद्ध-(सं०वि०) कोपयुक्त, कुपित।
क्रुष्ट-(सं०वि०) शाप दिया हुआ।
क्रूर-(सं०वि०) निर्दय, नृशंस, कठिन, कड़ा, क्रूरता-(सं०स्त्री०) निर्दयता, तिष्ठुरता।
क्रूरात्मा-(सं०पुं०) निर्दय प्रकृति वाला मनुष्य।
क्रेता-(सं०वि०) खरीदनेवाला।
क्रेय-(सं०वि०) मोल लेने योग्य।
क्रोड़-(सं०पुं०) दोनों बाहु के बीच का भाग, अंकवार, गोद।
क्रोड़पत्र-(सं०नपुं०) अतिरिक्त पत्र, पुस्तक या समाचार पत्र का वह अंश जो छूटे हुए भाग की पूर्ति के लिये जोड़ दिया जाता है, परिशिष्ट।
क्रोध-(सं०पुं०) कोप, रोष; क्रोधवश-(हिं०क्रि०वि०) क्रोध के कारण से।
क्रोधान्वित-(सं०वि०) क्रोधयुक्त।
क्रोधालु-(सं०वि०) क्रोधी।
क्रोधित-(सं०वि०) क्रुद्ध। क्रोधी-(सं०वि०) थोड़े में क्रुद्ध होनेवाला।
क्रोश-(सं०पुं०) रुलाई, कोस, ढोल।
क्लन्द-(सं०पुं०) रोदन, रुलाई।
क्लान्त-(सं०वि०) थका हुआ, मुरझाया हुआ। क्लान्ति-(सं०स्त्री०) परिश्रम, थकावट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्लिन्न-(सं०वि०) आर्द्र, तर, भीगा हुआ।
क्लिशित-(सं०वि०) क्लेशयुक्त।
क्लिष्ट-(सं०वि०) क्लेश युक्त, दुखी, कठिन, कड़ा, कठिनाई से समझमें आनेवाला। **क्लिष्टता**-(सं०स्त्री०) कठिनाई।
क्लीब-(सं०पुं०) पुरुष तथा स्त्री से भिन्न, नपुंसक, षण्ड।
क्लेद-(सं० पुं०) पसीना, गीलापन, कफ, मैल, सड़ाव।
क्लेश-(सं०पुं०) दुःख, कष्ट, पीड़ा, वेदना, कलह। **क्लेशकारी**-(सं०वि०) कष्ट देने वाला।
क्लैव्य-(सं०नपुं०) क्लीवता, नपुंसकता
क्लोम-(सं०पुं०) पुस्फुस, दाहिना फेफड़ा।
क्वण-(सं०पुं०) वीणा का शब्द, कल-कल शब्द।
क्वचित्-(सं०अव्य०) कोईभी।
क्वथित-(सं०वि०) पकाया हुआ।
क्वाथ-(सं०पुं०) कषाय, काढा।
क्वारपन-(हिं०पुं०) क्वाँरापना।
क्वारा-(हिं०वि०) अविवाहित।
क्षण-(सं०पुं०) बहुत छोटा समय, अवसर. प्रशस्त मुहूर्त।
क्षणभंगुर-(सं०वि०) अनित्य, क्षणभर में नष्ट होजाने वाला।
क्षणिक-(सं०वि०) क्षणमात्र ठहरने वाला, अनित्य, क्षणभंगुर।
क्षणिका-(सं०स्त्री०) विद्युत्, बिजली।
क्षत-(सं०वि०) पीड़ित, घाव लगा हुआ; (नपुं०) दुःख, पीड़ा, घाव, व्रण, फोड़ा
क्षति-(सं०स्त्री०) हानि, घाटा, नाश।
क्षत्र-(सं०पुं०) क्षत्रिय, राष्ट्र, राज्य।
क्षत्रिय-(सं०पुं०) द्विजातियों के अन्तर्गत दूसरा वर्ण।
क्षत्रिया, क्षत्रियाणी-(सं०स्त्री०) क्षत्री की स्त्री।
क्षन्तव्य-(सं०वि०) क्षमा करने योग्य।
क्षन्ता-(सं०वि०) क्षमा करनेवाला।
क्षपा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात। **क्षपाकर**-(सं०पुं०) चन्द्रमा, कर्पूर।
क्षपाचर-(सं०पुं०) निशाचर, राक्षस।
क्षपाचरी-(सं०स्त्री०) राक्षसी, डाइन।
क्षम-(सं०वि०) उपयुक्त योग्य, समर्थ।
क्षमा-(सं०स्त्री०) क्षान्ति, सहिष्णुता,
क्षमाई-(हिं०स्त्री०) क्षमा करनेकी क्रिया।
क्षमानत-(हिं० पुं०) क्षमा करने का अभ्यास।
क्षमावान्-(सं०वि०) क्षमायुक्त, सहिष्णु।
क्षमितव्य-(सं०वि०) क्षमाकरने योग्य।
क्षमाशील-(सं०वि०) क्षमावान्।
क्षमी-(सं०वि०) क्षमाशील, सहिष्णु,
क्षम्य-(सं०वि०) क्षमा किया जाने-योग्य।
क्षय-(सं०पुं०) प्रलय, कल्पान्त, नाश, राजक्ष्मा रोग, समाप्ति, अन्त।
क्षयित-(सं०वि०) बिगाड़ा या नाश किया हुआ।
क्षयी-(सं०वि०) नष्ट होने वाला, यक्ष्मा का रोगी।
क्षर-(सं०वि०) नाश होने वाला।
क्षरण-(सं०नपुं०) टपकाव, चुआव, नाश।
क्षरित-(सं०वि०) चुवाया हुआ, टपकाया हुआ।
क्षात्र-(सं०नपुं०) क्षत्रियों का कर्म।
क्षान्त-(सं०वि०) क्षमाशील, सहिष्णु।
क्षान्ति-(सं०स्त्री०) तितिक्षा, सहनशीलता, क्षमा। **क्षान्तिमान्**-(सं० पुं०) सहनशील पुरुष।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षाम-(सं०वि०) कृश, क्षीण ।
क्षाम्य-(सं०वि०) क्षमा करने योग्य।
क्षार-(सं०पुं०) लवणरस ।
क्षारित-(सं०वि०) दूषित, दुर्नाम।
क्षालन-(सं०नपुं०) शुद्ध करने या धोने का कार्य ।
क्षिति-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रहनेका ठौर।
क्षितिकम्प-(सं० पुं०) भूकम्प, भुई-डोल ।
क्षितिज-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर पृथ्वी और आकाश मिले हुए देख पड़ते हैं ।
क्षितिदेव-(सं०पुं०) भूदेव, ब्राह्मण ।
क्षितिधर-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़।
क्षितिरुह-(सं०पुं०) वृक्ष ।
क्षितीश-(सं०पुं०) भूभिपति, विष्णु।
क्षिपक-(सं०वि०) फेंकने वाला, क्षेपक।
क्षिप्त-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, अपमानित, उगला हुआ, पतित ।
क्षिप्र-(सं०वि०) द्रुत, फेंकनेवाला; **क्षिप्रकारी**-शीघ्र काम करनेवाला; **क्षिप्रहस्त**-शीघ्र हाथ चलाने वाला।
क्षीण-(सं०वि०) निर्बल, क्षयप्राप्त, घटा हुआ, दुबला पतला ।
क्षीर-(सं०पुं०) दूध, जल, पानी **क्षीरकण्ठ**-दूध पीने वाला बच्चा ।
क्षीरोद-(सं०पुं०) दुग्धसमुद्र, ।
क्षीरोदधि-(सं०पुं०) क्षीरसमुद्र ।
क्षीव-(सं०वि०) उन्मत्त, मतवाला ।
क्षुण्ण-(सं०वि०) दलित, चोट खाया हुआ, टुकड़ा किया हुआ ।
क्षुत्-(सं०स्त्री०) क्षुधा, भूख ।
क्षुत्क्षाम-(सं०वि०) क्षुधा से पीड़ित।
क्षुद्र-(सं०वि०) कृपण, अधम, तुच्छ, अल्प, क्रूर, दरिद्र, खोंटा, छोटा ।
क्षुधा-(सं०स्त्री०) बुभुक्षा, भूख ।
क्षुधातुर-(सं०वि०) क्षुधार्त, भूखा ।
क्षुप-(सं०पुं०) छोटा वृक्ष, पौधा, झाड़ी।
क्षुब्ध-(सं०वि०) अधीर, व्याकुल, भय-भीत ।
क्षुभित-(सं०वि०) देखो क्षुब्ध।
क्षुर-(सं०पुं०) नापित का छूरा, पशु का खुर ।
क्षुरिका-(सं०स्त्री०) पालकी, छुरी, क्षुरी-(सं०स्त्री०) छुरी, चाकू ।
क्षेत्र-(सं०नपुं०) खेत, शरीर, अन्तः-करण, भूतल भूमि, पत्नी, तीर्थ, रेखाओं से घिरा हुआ स्थान, ।
क्षेत्रकर-(सं०वि०) खेत तैयार करने वाला । **क्षेत्रकर्म**-(सं०नपुं०) खेत क काम । **क्षेत्रगणित**-(सं०नपुं०) वह गणित जिसके द्वारा क्षेत्रों की नाप इत्यादि की जाती है, क्षेत्रमिति ।
क्षेत्रफल-(सं०नपुं०) क्षेत्रान्तर्गत स्थान का परिमाण,; **क्षेत्रभूमि**-(सं-स्त्री०) खेत; **क्षेत्रवित्**-(सं०वि०) मर्म को जानने वाला ।
क्षेत्राधिप-(सं०पुं०) खेत का स्वामी,
क्षेत्री-(सं०पुं०) स्वामी, पति, कृषक ।
क्षेप-(सं०पुं०) निन्दा, बुराई, ठोकर, पर्व, विलम्ब; **क्षेपक**-(सं०वि०) फेंकने वाला, मिश्रित, निन्दनीय (पुं०) किसी ग्रन्थ में ऊपर से मिलाया हुआ अंश, गुच्छा ।
क्षेपण-(सं०नपुं०) लंघन, अपवाद, विक्षेप, फेंकान, मारण, रस्सी का बना हुआ सिकहर, परित्याग, फन्दा।
क्षेपणी-(सं०स्त्री०) बन्दूक की गोली ।
क्षेपणीय-(सं०वि०) फेंकने योग्य ।
क्षेम-(सं०पुं०) कुशल मंगल, आनन्द,
क्षेमकर-(सं० वि०) मंगलकारक, भलाई करनेवाला ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षैण्य-(सं०नपुं०) क्षीणता ।
क्षोणि-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।
क्षोणिप-(सं०पुं०) पृथ्वीपति, राजा ।
क्षोणी-(सं०) देखो क्षोणि ।
क्षोदित-(सं०वि०) खोदा हुआ, चूर्णित
क्षोभ-(सं०पुं०) चित्त की चंचलता ।
क्षोभित-(सं०वि०) व्याकुल, ।
क्षोभी-(सं०वि०) चंचल, उद्विग्न व्याकुल ।
क्षौणि-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।
क्षौर-(सं०नपुं०) मुण्डन कर्म। क्षौरिक-(सं०पुं०) नापित, नाऊ।
क्ष्मा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, धरती ।

ख

ख-व्यञ्जन वर्ण का दूसरा अक्षर इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है; सूर्य, आकाश, शून्य, विन्दु, सुख, कर्म, कुवां, गड्ढा, स्वर्ग ।
खंक-खंख-(हिं०वि०) खाली, पोला।
खंग-(हिं०पुं०) तलवार, खड्ग,
खंगड़-(हिं०वि०) झगड़ालू, गंवार; (पुं०) कूड़ाकरकट ।
खंगना-(हिं०क्रि०) अड़ना, कम होना।
खंगालना-(हिं०क्रि०) केवल जल डाल कर किसी पात्र को धोना, खाली करना
खंगी (हिं०स्त्री०) त्रुटि, कमी, घटी ।
खंचना-(हिं०क्रि०) चिह्न पड़ना, खिच जाना, बनना।
खंजरी-(हिं०स्त्री०) डफलीकी तरहका एक छोटा बाजा ।
खंडना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, काटना, ।
खँडरा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का बड़ा टुकड़ा ।
खंडसार-(हिं०स्त्री०) शक्कर बनाने का स्थान ।
खंडहर-(हिं०पुं०) टूटा फूट घर ।
खंडौरा-(हिं०पुं०) शक्कर का बना हुआ लड्डू ।
खंतरा-(हिं०पुं०) छेद, दरार, कोना ।
खंदा-(हिं०पुं०) देखो खंदक ।
खंभ-(हिं०पुं०) स्तम्भ, खंभा, सहारा।
खंभा-(हिं० पुं०) स्तम्भ, खड़े बल आधार के लिये लगाया हुआ पत्थर या लकड़ी का टुकड़ा।
खंभार-(हिं०पुं०) चिन्ता, व्याकुलता।
खंभिया-(हिं०स्त्री०) छोटा पतला खंभा
खई-(हिं०स्त्री०) क्षय, नाश ।
खकक्षा-(सं०स्त्री०) आकाश मण्डलकी परिधि ।
खक्खा-(हिं०पुं०) अट्टहास ।
खखरा-(हिं०वि०) छिद्रमय, सूखा ।
खखरिया-(हिं०स्त्री०) बेसन या मैदे की पतली पूरी ।
खखार-(हिं०पुं०) गाढा कफ या थूक जो खखारने से मुखके बाहर निकलता है
खखारना-(हिं०क्रि०) वेग से थूकना, या खांसना ।
खखोरना-(हिं०क्रि०) खुरचना, भली भांति ढूंढना ।
खग-(सं०पुं०) सूर्य, ग्रह, चन्द्रमा, देवता, वाण, पक्षी, वायु; (वि०) आकाश में चलने वाला ।
खगङ्गा-(सं०स्त्री०) आकाशगङ्गा, मन्दाकिनी ।
खगना-(हिं०क्रि०) धँसना, चुभना ।
खगोल-(सं० पुं०) आकाशमण्डल, खगोल विद्या।
खग्ग-(हिं०पुं०) खड्ग, तलवार ।
खगोलविद्या-(सं०स्त्री०) गणित ज्योतिष
खग्रास-(सं०पुं०) सूर्य या चन्द्र का सम्पूर्ण ग्रहण ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खचन-(हिं०पुं०) अंकित करने, जोड़ने या बाँधने की क्रिया। खचना-(हिं०क्रि०) जड़ना, अंकित होना,
खचर-(सं०पुं०) मेघ,, वायु, सूर्य, राक्षस, ग्रह, नक्षत्र, बाण, पक्षी; (वि०) आकाश में चलने वाला।
खचरा-(हिं०वि०) दुष्ट, वर्णसंकर, दोगला। खचाखच-(हिं०क्रि०वि०) ठसाठस, बिलकुल भरा हुआ, वेग के साथ। खचाना-(हिं०क्रि०) खींचना, बनाना, लिखना।
खचारी-(सं० वि०) आकाशगामी।
खचावट-(हिं०स्त्री०) खींचने की क्रिया
खचित-(सं०वि०) खींचा हुआ, चित्रित
खचिया-(हिं०स्त्री०) छोटी टोकरी, दौरी।
खच्चर-(हिं०पुं०) गदहे और घोड़ी के संयोग से उत्पन्न पशु।
खजल-(सं०नपुं०) तुषार, पाला।
खजुरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों की चोटीमें बाँधने की डोरी।
खुजुलाना-(हिं०क्रि०) खुजलाना।
खजुली-(हिं०स्त्री०) खाज, खुजली,
खजूर-(हिं० पुं०)ताड़ की जाति का एक वृक्ष जिसके फल छोहारे के आकार के होते हैं, एक प्रकार की मिठाई।
खज्योति-(सं०पुं०) खद्योप, जुगुनू।
खञ्ज-(सं०पुं०) लंगड़ा; (वि०) खण्डित, टूटा हुआ।
खञ्जन-(सं०पुं०) खंजन पक्षी, खेड़रिच।
खट-(हिं०पुं०) दो पदार्थों के टकराने का शब्द; (हिं०वि०) अम्ल, खट्टा,
खटक-(हिं०स्त्री०) खटके का शब्द;
खटकना-(हिं०क्रि०) खटखट शब्द होना; खटका-(हिं०पुं०) आशंका, चिन्ता, सिटकनी, कोई पेंच जिसके दबानेसे 'खड़' शब्द होता है,
खटकीड़ा-(हिं०स्त्री०) खटमल।
खटखट-(हिं०स्त्री०) ठोंकने पीटने से उत्पन्न शब्द, झंझट, उलझन, बखेड़ा झगड़ा। खटखटाना-(हिं० क्रि०) खटखट करना, खड़खड़ाना, चेताना।
खटना-(हिं०क्रि०)धन व्यय करना।
खटपट-(हिं०स्त्री०) लड़ाई झगड़ा, वादाविवाद। खटपटिया-(हिं०वि०) झगड़ालू, लड़ाका।
कटपदी-(हिं०पुं०) देखो षट्पद।
खटपाटी-(हिं०स्त्री०)खटिये की पाटी।
खुटबुना-(हिं०वि०)चारपाई बीननेवाला
खटमल-(हिं०पुं०) एक चिपटा कीड़ा जो खाट इत्यादि में उत्पन्न हो जाता है।
खटमिट्ठा-(हिं०वि०)मधुराम्ल, खटाई और मिठाई दोनों का स्वाद रखने वाला।
खटमुख-(हिं०पुं०) देखो षट्मुख।
खटबोग-(हिं०पुं०) झगड़ा, झंझट।
खटाई-(हिं०स्त्री०)अम्लता, खट्टापन।
खटाका-(हिं०पुं०) वेग का शब्द; (क्रि०वि०) खटके से।
खटाखट-(हिं० स्त्री०) ठोंकने पीटने का निरन्तर शब्द; (हिं०क्रि०) खटखट करके, झटपट।
खटाना-(हिं०क्रि०) खटाई आना, निभना, ठहरना, निर्वाह होना।
खटापट,खटापटी-(हिं०स्त्री०) खटपट
खटास-(हिं०स्त्री०) खटाई, खट्टापन,
खटिक-(हिं०पुं०) एक छोटी हिन्दू जाति जो प्रायः फल और तरकारी बेंचते हैं। (स्त्री०) खटकिन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खटिका-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खटिया-(हिं०स्त्री०) चारपाई, छोटा खाट, खटोला।
खटोलना, खटोला-(हिं०पुं०) छोटी चारपाई या खटिया।
खट्टा-(सं०स्त्री०) पलंग, चारपाई, खटोला।
खट्वा(सं०स्त्री०)तृण, खर कतवार।
खड़ंजा-(हिं०पुं०)खड़े ईंटों की जोड़ाई जो भूमि पर की जाती है।
खड़क-(हिं०स्त्री०)खटक, धीमा शब्द
खड़का-(हिं०पुं०) देखो खटका।
खड़काना-(हिं०क्रि०)खटकाना, लड़ाना।
खड़किका-(सं०स्त्री०) खिड़की।
खड़खड़िया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पालकी, पीनस।
खड़क-(हिं०पुं०) देखो खड़ग।
खड़गी-(हिं०वि०)तलवार लिये हुए।
खड़बड़-(हिं०स्त्री०) खटपट, उत्तेजना
खड़बड़ाना(हिं०क्रि०) व्याकुल होना। उलट पलट होना, खटकाना।
खड़बिड़ा-(हिं०वि०) ऊंचा नीचा, जो समतल न हो।
खड़मंडल-(हिं०पुं०) व्यतिक्रम, गड़बड़ी।
खड़ा-(हिं०वि०) सीधा उठा हुआ, टिका हुआ, तैयार, रक्खा हुआ, उपस्थित, समूचा, अचल, जो टूटा न हो, उद्यत।
खड़ाऊं-(हिं०वि०)पादुका।
खड़ाका-(हिं०पुं०) खटका।
खड़िका-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खड़िया-(ह०स्त्री०)एक प्रकार की श्वेत मिट्टी, खरिया।
खड़ी-(ह०स्त्री०) खड़िया, खरी मिट्टी।
खड़ीबोली-(हिं०स्त्री०)पश्चिमी हिन्दी जो दिल्ली के आसपास बोली जाती है, जिस भाषा में आधुनिक गद्य लिखा जाता है।
खड्ग-(सं०पुं०) एक प्रकार की तलवार; खड्गपात्र-(सं०पुं०) तलवार की धार; खड्गपाणि-(सं०वि०) हाथ में तलवार लिये हुए।
खड्ड-(हिं०पुं०) खात, गड्ढा।
खड्ढा-(हिं०पुं०)खात, गड्ढा,शरीर में अधिक रगड़ से बना हुआ चिह्न।
खण्ड-(सं०पुं०,नपुं०)खांड़,अंश, टुकड़ा, शर्करा; (वि०) टुकड़ा किया हुआ
खण्डन-(सं०नपुं०) काटछांट, किसी सिद्धान्त को अप्रमाणित करने का काम, छेदन, चीर फाड़ करना।
खण्डित-(सं०वि०) छिन्न, कटा हुआ।
खतखोट-(हिं०स्त्री०) घाव के ऊपर की पपड़ी।
खतरानी-(हिं०स्त्री०)खत्री जातिकी स्त्री
खतरेटा-(हिं०पुं०) खत्री जाति का युवा पुरुष।
खति-(हिं०स्त्री०) देखो क्षति।
खतियाना-(ह०क्रि०)प्रतिदिन के आय-व्यय या क्रय विक्रय के खातेको अलग अलग लिखना। खतियौनी-(हिं०स्त्री०) खाता, वह बही जिसमें धन संख्या खतियाकर लिखी गई हो।
खत्ता-(हिं०पुं०) गर्त, गड्ढा।
खत्री-(हिं०पुं०)भारत की एक जाति, ये लोग अपने को क्षत्रिय वर्ण बतलाते हैं।
खदन-(सं०नपुं०) भोजन, खाना।
खदबदाना-(हिं०क्रि०)उबलना, चुरना
खदरा-(हिं०पुं०) गड्ढा; (वि०) व्यर्थ का।
खदान-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खोदकर निकालने के लिये बना हुआ गड्ढा।
खदिर-(सं०पुं०) खैर का वृक्ष, कत्था।
खदुहा-(हिं०पुं०) खोटा मनुष्य।
खदेरना-(हिं०क्रि०) भगाना, हटाना।
खद्दड़, खद्दर-(हिं०पुं०) हाथ के कते हुए सूतका बिना हुआ कपड़ा, खादी।
खद्योत-(सं०पुं०) जुगनू नामक कीड़ा, सूर्य।
खन-(हिं०पुं०) क्षण, खण्ड (घरका) रुपये का शब्द।
खनक-(हिं०पुं०) रुपये का शब्द।
खनकना-(हिं०क्रि०) खनखन करना,
खनकाना-(हिं०क्रि०) खनखन करना, बजाना।
खनखना-(हिं०वि०) खनखन शब्द करने वाला।
खनखनाना-(हिं०क्रि०) खनखन होना, बजना।
खनना-(हिं०क्रि०) खोदना, गोड़ना।
खनि-(सं०स्त्री०) खान, । खनिज-(सं०वि०) खान से उपन्न।
खनित्र-(सं०नपुं०) खन्ता, गैता।
खनिहाना-(हिं०क्रि०) खाली करना।
खन्न-(हिं०पुं०) खनखन का शब्द।
खपची-(हिं०स्त्री०) बाँसकी पतली तीली
खपटा-(हिं०वि०) वृद्ध, बुड्ढा, कुरूप।
खपड़ा-(हिं०पुं०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मकान छाने के काम में आता है, खप्पर, ठिकड़ा।
खपड़ी-(हिं०स्त्री०) खोपड़ी।
खपड़ैल-(हिं०पुं०) खपड़े की छत या छाजन।
खपत, खपती-(हिं०स्त्री०) समाई, विक्रय
खपना-(हिं०क्रि०) लगना, व्यय होना।
खपरा-(हिं०पुं०) देखो खपड़ा।
खपरैल-(हिं०पुं०) खपड़ेसे छाई हुई छत
खपाची-(हिं०स्त्री०) देखो खपची।
खपाना-(हिं०क्रि०) व्यय करना, किसी काम में लाना, निर्वाह करना।
खपुआ-(हिं०वि०) भीरु, डरपोक।
खपुर-(सं०पुं०) गन्धर्व नगर।
खपुष्प-(सं०नपुं०) आकाश कुसुम, असम्भव बात।
खप्पर-(हिं०पुं०) भीख लेने का पात्र।
खब्भड़-(हिं०वि०) रूखा, जीर्ण।
खभरना-(हिं०क्रि०) क्रम बिगाड़ना।
खमा-(हिं०स्त्री०) देखो क्षमा।
खय-(हिं०पुं०) देखो क्षय।
खर-(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा, खच्चर; (वि०) कठिन, कड़ा, तीक्ष्ण।
खरकना-(हिं०क्रि०) खुरखुराना, दुखना
खरका-(हिं०पुं०) सींक या लकड़ी या पतला छोटा टुकड़ा।
खरखरा-(हिं०वि०) खुरखुरा।
खरग-(हिं०पुं०) देखो खड्ग।
खरच-(हिं०पुं०) व्यय।
खरतल-(हिं०वि०) उग्र, प्रचण्ड।
खरब-(हिं०पुं०) सौ अरब की संख्या।
खरबूजा-(हिं०पुं०) ककड़ी की जात की एक लता जिसमें गोल मीठे फल गरमी के दिनों में फलते हैं, इसके फल का नाम।
खरभर-(हिं०पुं०) खड़खड़ाहट,
खरमिटाव-(हिं०पुं०) प्रातराश, कलेवा
खरल-(हिं०पुं०) औषधि इत्यादि घोंटने की पत्थर या लोहे की कूंडी।
खरशब्द-(सं०पुं०) कर्कश शब्द।
खरहरा-(हिं०पुं०) एक दाँतेदार कंघी जिससे घोड़े के रोवें स्वच्छ किये जाते हैं।
खरहा-(हिं०पुं०) शशक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खटिका-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खटिया-(हिं०स्त्री०) चारपाई, छोटा खाट, खटोला।
खटोलना, खटोला-(हिं०पुं०) छोटी चारपाई या खटिया।
खट्टा-(सं०स्त्री०) पलंग, चारपाई, खटोला।
खट्वा(सं०स्त्री०)तृण, खर कतवार।
खड़ंजा-(हिं०पुं०)खड़े ईंटों की जोड़ाई जो भूमि पर की जाती है।
खड़क-(हिं०स्त्री०)खटक, धीमा शब्द
खड़का-(हिं०पुं०) देखो खटका।
खड़काना-(हिं०क्रि०)खटकाना, लड़ाना।
खड़किका-(सं०स्त्री०) खिड़की।
खड़खड़िया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की पालकी, पीनस।
खड़क-(हिं०पुं०) देखो खड़ग।
खड़गी-(हिं०वि०)तलवार लिये हुए।
खड़बड़-(हिं०स्त्री०) खटपट, उत्तेजना
खड़बड़ाना(हिं०क्रि०) व्याकुल होना। उलट पलट होना, खटकाना।
खड़बिड़ा-(हिं०वि०) ऊंचा नीचा, जो समतल न हो।
खड़मंडल-(हिं०पुं०) व्यतिक्रम, गड़बड़ी।
खड़ा-(हिं०वि०) सीधा उठा हुआ, टिका हुआ, तैयार, रक्खा हुआ, उपस्थित, समूचा, अचल, जो टूटा न हो, उद्यत।
खड़ाऊं-(हिं०वि०)पादुका।
खड़ाका-(हिं०पुं०) खटका।
खड़िका-(सं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
खड़िया-(ह०स्त्री०)एक प्रकार की श्वेत मिट्टी, खरिया।
खड़ी-(ह०स्त्री०) खड़िया, खरी मिट्टी।
खड़ीबोली-(हिं०स्त्री०)पश्चिमी हिन्दी जो दिल्ली के आसपास बोली जाती है, जिस भाषा में आधुनिक गद्य लिखा जाता है।
खड्ग-(सं०पुं०) एक प्रकार की तलवार; **खड्गपात्र**-(सं०पुं०) तलवार की धार; **खड्गपाणि**-(सं०वि०) हाथ में तलवार लिये हुए।
खड्ड-(हिं०पुं०) खात, गड्ढा।
खड्ढा-(हिं०पुं०)खात, गड्ढा, शरीर में अधिक रगड़ से बना हुआ चिह्न।
खण्ड-(सं०पुं०,नपुं०)खांड़, अंश, टुकड़ा, शर्करा; (वि०) टुकड़ा किया हुआ
खण्डन-(सं०नपुं०) काटछांट, किसी सिद्धान्त को अप्रमाणित करने का काम, छेदन, चीर फाड़ करना।
खण्डित-(सं०वि०) छिन्न, कटा हुआ।
खतखोट-(हिं०स्त्री०) बाद के ऊपर की पपड़ी।
खतरानी-(हिं०स्त्री०)खत्री जातिकी स्त्री
खतरेटा-(हिं०पुं०) खत्री जाति का युवा पुरुष।
खति-(हिं०स्त्री०) देखो क्षति।
खतियाना-(ह०क्रि०)प्रतिदिन के आय-व्यय या क्रय विक्रय के खातेको अलग अलग लिखना। **खतियौनी**-(हिं०स्त्री०) खाता, वह बही जिसमें धन संख्या खतियाकर लिखी गई हो।
खत्ता-(हिं०पुं०) गर्त, गड्ढा।
खत्री-(हिं०पुं०)भारत की एक जाति, ये लोग अपने को क्षत्रिय वर्ण बतलाते हैं।
खदन-(सं०नपुं०) भोजन, खाना।
खदबदाना-(हिं०क्रि०)उबलना, चुरना
खदरा-(हिं०पुं०) गड्ढा; (वि०) व्यर्थ का।
खदान-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खोदकर निकालने के लिये बना हुआ गड्ढा।
खदिर-(सं०पुं०) खैर का वृक्ष, कत्था।
खदुहा-(हिं०पुं०) खोटा मनुष्य।
खदेरना-(हिं०क्रि०) भगाना, हटाना।
खद्दड़, खद्दर-(हिं०पुं०) हाथ के कते हुए सूतका बिना हुआ कपड़ा, खादी।
खद्योत-(सं०पुं०) जुगनू नामक कीड़ा, सूर्य।
खन-(हिं०पुं०) क्षण, खण्ड (घरका) रुपये का शब्द।
खनक-(हिं०पुं०) रुपये का शब्द।
खनकना-(हिं०क्रि०) खनखन करना,
खनकाना-(हिं०क्रि०) खनखन करना, बजाना।
खनखना-(हिं०वि०) खनखन शब्द करने वाला।
खनखनाना-(हिं०क्रि०) खनखन होना, बजना।
खनना-(हिं०क्रि०) खोदना, गोड़ना।
खनि-(सं०स्त्री०) खान, । खनिज-(सं०वि०) खान से उपन्न।
खनित्र-(सं०नपुं०) खन्ता, गैता।
खनिहाना-(हिं०क्रि०) खाली करना।
खन्न-(हिं०पुं०) खनखन का शब्द।
खपची-(हिं०स्त्री०) बाँसकी पतली तीली
खपटा-(हिं०वि०) वृद्ध, बुड्ढा, कुरूप।
खपड़ा-(हिं०पुं०) मिट्टी का पका हुआ टुकड़ा जो मकान छाने के काम में आता है, खप्पर, ठिकड़ा।
खपड़ी-(हिं०स्त्री०) खोपड़ी।
खपड़ैल-(हिं०पुं०) खपड़े की छत या छाजन।
खपत, खपती-(हिं०स्त्री०) समाई, विक्रय
खपना-(हिं०क्रि०) लगना, व्यय होना।
खपरा-(हिं०पुं०) देखो खपड़ा।
खपरैल-(हिं०पुं०) खपड़ेसे छाई हुई छत
खपाची-(हिं०स्त्री०) देखो खपची।
खपाना-(हिं०क्रि०) व्यय करना, किसी काम में लाना, निर्वाह करना।
खपुआ-(हिं०वि०) भीरु, डरपोक।
खपुर-(सं०पुं०) गन्धर्व नगर।
खपुष्प-(सं०नपुं०) आकाश कुसुम, असम्भव बात।
खप्पर-(हिं०पुं०) भीख लेने का पात्र।
खब्भड़-(हिं०वि०) रूखा, जीर्ण।
खभरना-(हिं०क्रि०) क्रम बिगाड़ना।
खमा-(हिं०स्त्री०) देखो क्षमा।
खय-(हिं०पुं०) देखो क्षय।
खर-(सं०पुं०) गर्दभ, गदहा, खच्चर; (वि०) कठिन, कड़ा, तीक्ष्ण।
खरकना-(हिं०क्रि०) खुरखुराना, दुखना
खरका-(हिं०पुं०) सींक या लकड़ी या पतला छोटा टुकड़ा।
खरखरा-(हिं०वि०) खुरखुरा।
खरग-(हिं०पुं०) देखो खड्ग।
खरच-(हिं०पुं०) व्यय।
खरतल-(हिं०वि०) उग्र, प्रचण्ड।
खरब-(हिं०पुं०) सौ अरब की संख्या।
खरबूजा-(हिं०पुं०) ककड़ी की जात की एक लता जिसमें गोल मीठे फल गरमी के दिनों में फलते हैं, इसके फल का नाम।
खरभर-(हिं०पुं०) खड़खड़ाहट,
खरमिटाव-(हिं०पुं०) प्रातराश, कलेवा
खरल-(हिं०पुं०) औषधि इत्यादि घोंटने की पत्थर या लोहे की कूंड़ी।
खरशब्द-(सं०पुं०) कर्कश शब्द।
खरहरा-(हिं०पुं०) एक दाँतेदार कंघी जिससे घोड़े के रोवें स्वच्छ किये जाते हैं।
खरहा-(हिं०पुं०) शशक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खरा-(हिं० वि०) तीखा, विशुद्ध, कुरकुरा, बिना मिलावट का, चिमड़ा, निश्छल ।
खरांशु-(सं०पुं०) सूर्य, सूरज ।
खराई-(हिं०स्त्री०) खरापन, प्रातः-काल, देर तक कुछ भोजन न करने से अस्वस्थ होना (पित्त बिगड़ना)
खराद-(हिं०पुं०) एक गोलाई में घूमने वाला यन्त्र जिसपर चढ़ाकर काठ या धातु की वस्तु सुडौल और चिकनी बनाई जाती है, खराँदने का काम गढ़न, बनावट ।
खरादी-(हिं०वि०) खरादने वाला।
खरापन-(हिं०पुं०) सचाई, सत्यता ।
खरांयँध-(हिं०स्त्री०) मूत्र या क्षार के समान दुर्गन्ध ।
खरिया-(हिं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी ।
खरियना-(हिं०स्त्री०) झोली या थैली में रखना, अपने अधिकार में ले लेना ।
खरिहान-(हिं०पुं०) कटे हुए अनाज की ढेर।
खरी-(हिं०स्त्री०) खली, खड़िया मिट्टी (वि०) खूब सिकी हुई, विशुद्ध स्पष्ट,
खरोंच-(हिं०स्त्री०) छिल जाने या रगड़ का चिह्न ।
खरोंचना-(हिं०क्रि०) छीलना, खुरचना
खरोंष्ट्री, खरोष्ठी-(हिं०स्त्री०) फारसी की तरह लिखी जानेवाली एक लिपि जो प्राचीन काल में पश्चि-मोत्तर प्रदेश में चलती थी।
खर्च-(हिं०पुं०) व्यय, खपत, किसी काम में होने वाला व्यय ।
खर्जूर-(सं०पुं०) खजूर का वृक्ष या फल ।
खर्पर-(सं०पुं०) भिक्षा माँगने का खप्पड़ मिट्टी के पात्र का टूटा हुआ भाग ।
खर्व-(सं०पुं०) सौ अरब की संख्या; (वि०) छोटा, बौना ।
खर्बित-(सं०वि०) ह्रस्व, कटा हुआ ।
खर्राच-(हिं०पुं०) अमितव्ययी ।
खर्रा-(हिं०पुं०) लम्बा चिट्ठा ।
खर्राटा-(हिं०पुं०) निन्द्रा की अवस्था में नाक से निकलनेवाला शब्द ।
खलखलाना-(हिं० क्रि०) उबलना, खौलना ।
खलड़ी-(हिं०स्त्री०) त्वचा, छाल, चमड़ा
खलता-(सं०स्त्री०) दुष्टता, दुर्जनता ।
खलना-(हिं०क्रि०) चुभना, बुरा लगना।
खलबल-(हिं०पुं०) हलचल, गड़बड़ी, कोलाहल । खलबलाना-(हिं०क्रि०) उबलना, खौलना ।
खलबली-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, हलचल, उबाल ।
खलाना-(हिं० क्रि०) खाली करना, खोदना ।
खलार-(हिं०वि०) गहरा, नीचा, खाली
खलासी-(हिं०पुं०) नाव या पोत पर काम करने वाला मनुष्य ।
खलित-(सं०वि०) चंचल, चलायमान
खलियान-(हिं०पुं०) अन्न काटकर रखने का स्थान, राशि, ढेर ।
खलियाना-(हिं०क्रि०) खाल खींचना।
खली-(हिं०स्त्री०) तेल निकाल कर बची हुई सीठी।
खलीता-(हि० पुं०) खरीता, जेब ।
खलु-(सं०अव्य०) निश्चय करके, अब।
खल्लड़-(हिं०पुं०) वह पुरुष जिसकी खाल लटक गई हो ।
खल्व-(सं०पुं०) गंजापन ।
खल्वाट-(हिं०पुं०) गंजा ।
खवाई-(हिं०स्त्री०) खाने पीने का काम
खवाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खवैया-(हिं०पुं०) भोजन करनेवाला
खसकंत-(हिं०स्त्री०) या भाग जानें का कार्य ।
खसकना-(हिं०क्रि०) सरकना, हटना।
खसखसा-(हि०वि०) भुरभुरा।
खस-खास-(हि०पुं०)देखो खसखस ।
खसरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की गीली खुजली।
खसी-(हिं०पुं०) बकरा।
खसोट, खसोटी-(हिं०स्त्री०) झटके से तोड़ना। खसोटना-(हिं०क्रि०) नोचना, उखाड़ना ।
खस्सी-(हिं०पुं०)बकरा,(वि०)बधिया,
खह-(सं०पुं०) गणित में वह संख्या जिसका हर शून्य हो यथा ४/०
खाई-(हिं०स्त्री०) किसी स्थान के चारो ओर खोदा हुआ गड्ढा ।
खांखर-(हिं०वि०) छिद्रयुक्त, पोला ।
खांग-(हिं०स्त्री०)तीतर आदि के पैर का काँटे के समान नख ।
खांगड़, खांगड़ा-(हिं०वि०) खांग रखने वाला।
खांगना-(हिं०क्रि०) लंगड़ाना, घटना।
खांगी-(हिं०स्त्री०)त्रुटि, न्यूनता, कमी, घटी ।
खांच-(हिं०स्त्री०) गठन, बनावट।
खांचा-(हिं०पुं०) झाबा, बड़ा टोकरा,
खांचना-(हिं०क्रि०) अंकित करना, खींचना ।
खांड़-(हिं०स्त्री०) कच्ची शक्कर ।
खांड़ा-(हिं०पुं०)खड्ग,तलवार, छुरा,
खांड़ना-(हिं०क्रि०)कूंचना,तोड़ना,चबाना
खाँपना(हिं०क्रि०)खोंसना, अटकाना।
खांभना-(हिं०क्रि०) लिफाफे में बन्द करना ।
खांवां-(हिं०पुं०) खेत की चौड़ी मेड़।
खांसना-(हिं०क्रि०) कफ निकालना, खखारना, खोंखना।
खांसी-(हिं०स्त्री०) खांसने का रोग या शब्द, कास रोग ।
खाई-(हिं०स्त्री०) किसी स्थान की रक्षा के लिये इसके चारों ओर खोदा हुआ गड्ढा ।
खाऊ-(हिं०वि०) मरभुख, पेटू ।
खागना-(हिं०क्रि०) खांगना, चुभना, गड़ना ।
खाज-(हिं०स्त्री०) खुजली ।
खाजा-(हिं०पुं०)एक प्रकार की मिठाई
खाट-(सं०पुं०) चारपाई, खटिया।
खाड़ी-(हिं०स्त्री०) तीन ओर भूमि से घिरा हुआ समुद्र का भाग ।
खात-(सं०पुं०)खोदाई, तालाब,कुंवा, गर्त, गड्ढा; (वि०)खोदा हुआ।
खाता-(हिं०पुं०) हिसाब किताब की वही, अन्न रखने का गड्ढा, मद, विभाग ।
खाद-(हिं०स्त्री०)खेतों में उसकी उपज बढ़ाने के लिये डाली हुई वस्तु, पांस।
खादक(सं०वि०) खानेवाला ।
खादित-(सं०वि०)भक्षित,खाया हुआ ।
खादी-(सं०वि०) भक्षक, खाने वाला, शत्रुओं की हिंसा करने वाला, (हिं० स्त्री०)एक प्रकार का देशी मोटा वस्त्र
खादुक(सं०वि०) हिंसालु ।
खाद्य-(सं०वि०) भक्षणीय, खाया जाने वाला (नपुं०)आहार,खानेकी वस्तु।
खान-(सं०नपुं०) भोजन, खाना,
खान-(हिं०स्त्री०) आकर, जिस स्थान को खोद कर पत्थर, धातु इत्यादि निकाले जाते हैं ।
खानपान-(सं०नपुं०) खाना पीना, खाने पीने की रीति ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खाना-(हिं० क्रि०) भोजन करना, काटना, कुतरना, चबाना, बिगाड़ना उड़ाना, व्यय करना, घूस लेना।
खानि-(हिं०स्त्री०) खान, और ,प्रकार
खापट-(हिं०स्त्री०) वह भूमि जिसमें रेह का भाग अधिक रहता है।
खाभा-(हिं०पुं०) चौड़े मुँह का मिट्टी का पात्र।
खामना-(हिं०क्रि०) लिफाफे में डालकर बन्द करना, गीली मिट्टी या आँटे से किसी पात्र का मुंह बन्द करना।
खार-(हिं०पुं०) क्षार,नमक, सज्जी।
खारा-(हिं०पुं०) नमकीन, कड़ुवा, स्वाद में बुरा लगने वाला।
खारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का नोन; (वि०) खारा, नमकीन।
खारुवां-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लाल रंग; जो मोटे कपड़ों के रंगने में प्रयोग होता है, इस रंग से रंगा हुआ मोटा कपड़ा।
खाल-(हिं०स्त्री०) त्वचा, चमड़ा, भाथी की धौंकनी, नीची भूमि, खाड़ी गहराई, नाला।
खाला-(हिं०वि०) निम्न, नीचा।
खाव-(हिं०स्त्री०) शून्य स्थान, पोत में माल रखने की कोठरी।
खिचना-(हिं०स्त्री०) घसीटना, निकलना, तनना, चढ़ना, रुकना, अर्क निकलना, प्रवृत्त होना, चूसना।
खिचड़वार-(हिं०पुं०) खिचड़ी दान करने का दिन, मकर संक्रांति।
खिचड़ी-(हिं०स्त्री०) दाल और चावल मिलाकर पकाया हुआ भोजन।
खिच्चड़-(हिं०पुं०) देखो खिचड़ी।
खिजलाना-(हिं० क्रि०) चिढ़ाना, छेड़ना।
खिझना-(हिं०क्रि०) खीझना, चिढ़ना; (वि०) चिढ़ने वाला।
खिझाना-(हिं०क्रि०) चिढ़ाना, तंग करना
खिड़कना-(हिं०क्रि०) खिसकना, सरकना
खिड़की-(हिं०स्त्री०) छोटा गुप्त द्वार, झरोखा।
खिन्न-(सं०वि०) उदासीन, खेदयुक्त, अप्रसन्न, चिन्तित, असहाय।
खिपना-(हिं०क्रि०) लीन होना,खपना।
खियाना(हिं०क्रि०) रगड़ खाना, मिटना
खिरनी-(हिं०स्त्री०) क्षीरिणी वृक्ष,
खिलखिलाना-(हिं०क्रि०) सशब्द हँसन
खिलना-(हिं०क्रि०) फूलना, विकसिता होना, शोभित होना।
खिलवाड़-(हिं०पुं०) हंसी खेल,ठट्ठा।
खिलवाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना
खिलाई-(हिं०स्त्री०) भोजन की क्रिया।
खिलाड़ी-(हिं०पुं०) खेल करने वाला।
खिलाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना, विकसित करना, खेल में लगाना।
खिलौना-(हिं०पुं०) क्रीड़ा द्रव्य, लड़कों के खेलने का पदार्थ।
खिल्ली-(हिं०स्त्री०) हँसी, ठिठोली, पान का बीड़ा,।
खिसकाना-(हिं०क्रि०) खसकना,हटजाना
खिसियाना-(हिं०क्रि०) लजाना; (वि०) लज्जित।
खिसी-(हिं०स्त्री०) लज्जा, ढिठाई।
खिसौहा-(हिं०वि०) लज्जित के सदृश।
खीच-(हिं०स्त्री०) आकर्षण, खिंचाव।
खीचतान-(हिं०स्त्री०) उलट पलट।
खींचना-(हिं०क्री०) घसीटना, निकालना, खोलना।
खीज-(हिं०स्त्री०) चिढ़, झुल्लाहट।
खीजना(हिं०क्रि०) चिढ़ना,झुझलाना।
खीझ-(हिं०स्त्री०) देखो खीज।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खीझना-(हिं०क्रि०) चिढ़ना, खिजलाना।
खीन-(हिं०वि०) देखो क्षीण।
खीर-(हिं०स्त्री०) एक खाद्य पदार्थ को दूध में चावल पका कर तथा चीनी डालकर बनता है।
खीरा-(हिं०पुं०) ककड़ी की जात का एक फल।
खील-(सं०पुं०) कील, कांटा (हिं०-स्त्री०) लाई, लावा, एक प्रकारका गहना जो कान या नाक में पहिरा जाता है।
खीलना-(हिं०क्रि०) खील लगाना, गांठना
खीला-(हिं०पुं०) बड़ा कांटा या कीला
खीली-(हिं० स्त्री०) पानका बीड़ा, गिलौरी।
खीवन-(हिं०स्त्री०) उन्मत्तता, पागलपन
खीवर-(हिं०पुं०) वीर पुरुष।
खीस-(हिं०वि०) नष्ट, उजाड़, (स्त्री०) चिढ़, क्रोध, बिगाड़, लज्जा।
खुक्ख-(हिं०वि०) खाली, छूछा।
खुखड़ी-(हिं०स्त्री०) कुकड़ीनैपाली, कटार
खचुर-(हिं०स्त्री०) व्यर्थका दोष लगाना।
खुजलाना-(हिं०क्रि०) रगड़ना, नख से घिसना, खजुली उठना।
खुटक-(हिं०स्त्री०) खटका, चिन्ता, आशंका।
खुटकना-(हिं०क्रि०) खटका होना।
खुटका-(हिं०पुं०) देखो खटका।
खुरचाल-(हिं०स्त्री०) बुरी चाल।
खुरचाली-(हिं०वि०) दुष्ट, उपद्रवी।
खुटना-(हिं०क्रि०) खुलना, अलग रहना, साथ छोड़ना।
खुटपन, खुटपना-(हिं०पुं०) खोटापन।
खुटाना-(हिं०क्रि०) समाप्त होना।
खुट्टी-(हिं०स्त्री०) रेवड़ी नामक मिठाई
खुट्टी-(हिं०स्त्री०) घावपर जमी हुई पपड़ी।
खुड़क-(हिं०स्त्री०) खटक, खटका।
खुत्था-(हिं०पुं०) ठूंठ, बोटा, पेड़ को काट डालने पर इसका भूमिके ऊपर का भाग। खुत्थी-(हिं०स्त्री०) ज्वार अरहर इत्यादि के पौधे का वह अंश जो पौंधा कट जाने पर खेत में रह जाता है, खूंटी, रुपया रखनेकी थैली, सम्पत्ति, धन।
खुदना-(हिं०क्रि०) खोदा जाना।
खुदरा-(हिं०पुं०) क्षुद्र वस्तु, फुटकर पदार्थ।
खुदवाना-(हिं०क्रि०) खोदने का काम दूसरे से कराना। खुदवाई-(हिं०स्त्री०) खोदवाने का काम, खोदवानेका वेतन
खुदाई-(हिं०स्त्री०) खोदनेका काम या वेतन।
खुद्दी-(हिं०स्त्री०) अन्नके छोटे टुकड़े।
खुनखुना-(हिं०पुं०) बालकों का बजने वाला खिलौना, झुनझुना, घुनघुना।
खुनस-(हिं०स्त्री०) क्रोध, बिगाड़, अनबन।
खुनसाना-(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना।
खुभना-(हिं०क्रि०) चुभना, धसना।
खुर-(सं०पुं०) सीधवाले चौपायों के पैरकी कड़ी टाप।
खुरक-(हिं०स्त्री०) खटका, सोचविचार।
खुरखुरा-(हिं०वि०) ऊंचानीचा।
खुराना-(हिं०क्रि०) खुरखुर करना,
खुरचन-(हिं०पुं०) खुरच कर निकाली हुई वस्तु, । खुरचना-(हिं०क्रि०) किसी सूखी वस्तु को छुरी इत्यादि से अलगाना, । खुरचनी-(हिं०स्त्री०) खुरचने का अस्त्र।
खुरचाल-(हिं०स्त्री०) बुरा आचरण।
खुरचाली-(हिं०वि०) उपद्रवी, बखेड़िया
खुरजी-(हिं०स्त्री०) घोड़े, बैल, आदिकी पीठपर सामग्री लादने का थैला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खुरपा-(हिं०पुं०) घास छीलने की बड़ी खुरपी।
खुरिया-(हिं०स्त्री०) कटोरी, छोटा प्याला।
खुलना-(हिं०क्रि०) उद्घाटित होना, उधड़ना, फटना, चिरना, कटना, निकलना, अच्छा लगना, भेद कहना, कार्य आरम्भ होना।
खुला-(हिं०वि०) अवरोध हीन, स्पष्ट, प्रगट।
खुल्लमखुल्ला-(हिं०क्रि०वि०) प्रकाश रूप से, सबके सामने।
खूँट-(हिं०पुं०) प्रान्त भाग, कान की मैल, (स्त्री०) रोकटोक।
खूँटपा-(हिं०क्रि०) टोकना, छेड़ना,
खूँटा-(हिं०पुं०) मेख, पशु बाँधने के लिये भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी या बांस का टुकड़ा। **खूँटी**-(हिं०स्त्री०) छोटा खूँटा, मेख, डंठल, गुल्ली।
खूँदना-(हिं०क्रि०) पैर उठा उठा कर उसी जगह पटकना।
खूँझा-(हिं०पुं०) फल के भीतर का रेशेदार भाग।
खूद, खूदड़, खूदर-(हिं०पुं०) मैल, तलछट
खृष्टान-(हिं०वि०) क्रिस्तान, ईसाई।
खृष्टीय-(हिं०वि०) ईसाई संबंधी।
खेचर-(सं०पुं०) सूर्य, पक्षी, वायु, देवता, बादल. राक्षस; (वि०) आकाशगामी।
खेड़ा-(हिं०पुं०) छोटा गांव।
खड़ी-(हिं०स्त्री०) मांस का टुकड़ा जो जरायुज शिशुओं की नाल के दूसरे छोर में लगा रहता है।
खेत-(हिं०स्त्री०) क्षेत्र, जोतने बोने की भूमि, स्थान, कृषि फल, तलवार का फल।
खेतिहर-(हिं०पुं०) कृषक, किसान।
खेती-(हिं०स्त्री०) कृषि, किसानी।
खेतीबारी-(हिं०स्त्री०) कृषिकार्य। किसानी।
खेद-(सं०पुं०) अप्रसन्नता, शोक।
खेदना-(हिं०क्रि०) खदेरना, भगाना,
खेना-(हिं०क्रि०) नाव चलाने के लिये डाँड़ों को पानी में चलाना, निर्वाह करना।
खेप-(हिं०स्त्री०) उतनी वस्तु जो एक बार लेजाई जाती है, दौड़, पहुंच।
खेपना-(हिं०क्रि०) काटना, बिताना।
खेल--(हिं०पुं०) क्रीड़ा, उछल कूद, खिलवाड़, सवाँग, अभिनय।
खेलवाड़-(हिं०पुं०) हँसी, खेलकूद, **खेलवाड़ी**-(हिं०वि०) बहुत खेलकूद करने वाला। **खेलाई**-(हिं०स्त्री०) क्रीड़ा, खेलकूद। **खेलाड़ी**-(हिं०वि०) खेलने वाला, जुआरी,। **खेलाना**-(हिं०क्रि०) खेल में लगाना।
खेवट-(हिं०पुं०) पटवारी का एक कागद जिसमें हर एक पट्टीदार की भूमि का हिसाब लिखा रहता है।
खेवा-(हिं०पुं०) नाव का किराया, भरी हुई नाव।
खेवाई-(हिं०स्त्री०) नाव चलाने का काम।
खेसारी-(हिं०स्त्री०) दुविया मटर, लतरी
खैंचना-(हिं०क्रि०) खींचना।
खैर-(हिं०पुं०) खदिर वृक्ष।
खैरा-(हिं०वि०) खैर के रंग का, कत्थई।
खोंगा-(हिं०पुं०) अवरोध, रुकावट।
खोंचा-(हिं०स्त्री०) खरोंच।
खोंची-(हिं०पुं०) खुरचन, फटन।
खोंट-(हिं०स्त्री०) खरोंच।
खोंटना-(हिं०क्रि०) फुनगी तोड़ लेना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खोंड़र-(हिं०पुं०) वृक्ष के भीतर का पोला भाग।
खोड़ा-(हिं०वि०) जिसके आगे के दो चार दांत टूट गये हों।
खोंता-(हिं०पुं०) नीड़, चिड़िये का घोसला।
खोंप-(हिं०स्त्री०) पसूजन, सिलाई का लंबा टाका, फटन।
खोंपा-(हिं०पुं०) नारियलका आधा टुकड़ा।
खोंसना-(हिं०क्रि०) अटकाना, लगाना।
खोंआ-(हिं०पुं०) देखो खोया।
खोई-(हिं०स्त्री०) रस निकाले हुए ऊख के छोटे छोटे टुकड़े, धान का लावा
खोखर-(हिं०वि०) खोखला, पोला।
खोखला-(हिं०वि०) पोला।
खोखा-(हिं०पुं०) हुण्डी लिखा हुआ कागद, बालक।
खोगीर-(हिं०स्त्री०) देखो खुगीर।
खोज-(हिं०स्त्री०) अनुसन्धान, पता; खोजना-(हिं०क्रि०) पता लगाना।
खोजी-(हिं०वि०) अनुसन्धान करनेवाला
खोट-(हिं०स्त्री०) दूषण, बुराई।
खोटा-(हिं०वि०) दूषित।
खोंटाई-(हिं०स्त्री०) दुष्टता, छल कपट
खोटापन-(हिं०पुं०) ओछापन।
खोड़रा-(हिं०पुं०) पुराने वृक्ष का खोखला भाग।
खोदना-(हिं०क्रि०) गड्ढा करना, खनना, उसकाना, नकाशी करना, छेड़ना। खोदनी-(हिं०स्त्री०) खोदने का छोटा अस्त्र।
खोदविनोद-(हिं०स्त्री०) छानबीन।
खोनचा-(हिं०पुं०) थाल या परात जिसमें फेरीवालें मिठाई आदि रखकर बेंचते हैं।
खोपा-(हिं०क्रि०) पास की वस्तु गँवाना
खोपड़ा-(हिं०पुं०) कपाल, सिर, नारियल की गरी,। खोपड़ी-(हिं०-स्त्री०) कपाल, सिर, मस्तक की हड्डी।
खोपा-(हिं०पुं०) छप्पर या घर का कोना, नारियल की गरी का गोला।
खोभ-(हिं०पुं०) देखो क्षोभ।
खोभार-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट फेंकने का गड्ढा।
खोय-(हिं०स्त्री०) स्वभाव, टेव।
खोया-(हिं०पुं०) खूब औटाया हुआ दूध जो पिण्ड सा हो जाता है।
खोर-(हिं०स्त्री०) सकरी गली।
खोरा-(हिं०पुं०) कटोरा, पानी पीने का पात्र।
खोरिया-(हिं०स्त्री०) कटोरिया, प्याली।
खोल-(हिं०स्त्री०) आवरण, झूल, मोटे कपड़े की चादर।
खोलना-(हिं०क्रि०) उघाड़ना, स्थापन करना, मुक्त करना, प्रकाशित करना, गूढ़ बात को प्रगट करना।
खोली-(हिं०स्त्री०) आवरण।
खोवा-(हिं०पुं०) देखो खोया।
खोह-(हिं०स्त्री०) गुफा, कन्दरा।
खौर-(हिं०स्त्री०) त्रिपुण्ड, चन्दन का टीका।
खौरहा-(हिं०वि०) गंजा, जिसके सिर के बाल उड़ गये हों।
खौरा-(हिं०वि०) एक प्रकार की खुजली
खौलना-(हिं०क्रि०) उबलना। खौलाना-(हिं०क्रि०) उबालना।
खौहा-(हिं० वि०) पेटू, भुक्खड़, मरभुख।
ख्यात-(सं०वि०) प्रसिद्ध; ख्याति-(सं०स्त्री०) प्रसिद्धि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग

ग-कवर्ग का तीसरा व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

ग-(सं०नपुं०) गीत, गणेश, गन्धर्व, गुरु; (वि०) गानेवाला, जाने वाला।

गंगबरार-(हिं०पुं०) गंगा या अन्य नदी की धारा या बाढ़ के हटने से निकली हुई भूमि।

गंजिया-(हिं०स्त्री०) घसियारे का घास भरने की जालीदार थैली।

गंजेड़ी-(हिं०वि०) गांजा पीने वाला।

गंठकटा-(हिं०पुं०) गिरहकट।

गंठबन्धन-(हिं०पुं०) ग्रन्थिबन्धन, विवाह की एक रीति।

गंडासा-(हिं०पुं०) चारा काटने का अस्त्र

गंडेरी-(हिं०स्त्री०) ऊख के छोटे २ टुकड़े

गंदला-(हिं०वि०) मलिन, अपवित्र।

गंधाना-(हिं०क्रि०) दुर्गन्ध निकलना।

गवँ-(हिं०स्त्री०) अवसर, प्रयोजन।

गंवई-(हिं०पुं०) छोटा गांव।

गंवाना-(हिं०क्रि०) खोना, बिसारना।

गंवार-(हिं०वि०) ग्रामीण, देहाती;

गंवारी-(हिं०स्त्री०) गंवारपन, अज्ञानता, मूर्खता।

गंवारू-(हिं०वि०) ग्रामीण, देहाती, बेढंगा।

गँस-(हिं०स्त्री०) द्वेष, तीर की नोक।

गंसना-(हिं०क्रि०) कसकर बाधना।

गंसीला-(हिं०वि०) नोकदार, चुभनेवाला।

गइया-(हिं०स्त्री०) गौ, गाय।

गऊ-(हिं०स्त्री०) गाय, गौ, गइया।

गकार-(सं०पुं०) 'ग' वर्ण; 'ग' अक्षर

गगन-(सं०नपुं०) आकाश, शून्य स्थान अभ्रक धातु, मेघ; **गगनगति**-हवा में उड़नेवाला, देवता; **गगनचर**-आकाशगामी; **गगनधूल**-एक प्रकार का कुकुरमुत्ता, केवड़े के फूल की धूलि; **गगनबिहारी**-आकाश में घूमनेवाला, पक्षी।

गगनाङ्गना-(सं० स्त्री०) दिवाङ्गना, अप्सरा।

गगनाम्बु-(सं०नपुं०) बरसाती पानी।

गगनेचर-(सं०पुं०) देवता, सूर्यादि ग्रह।

गगरा-(हिं०पुं०) कलश, कलसा, घड़ा,

गगरी-(हिं०स्त्री०) कलसी, छोटा घड़ा।

गङ्गा-(सं०स्त्री०) भारतवर्षकी प्रसिद्ध नदी, भागीरथी, जाह्नवी, सुरनदी; **गङ्गाजमुनी** (हिं०वि०) दोरंगा, मिला हुआ, सोने चांदी अथवा पीतल तांबे इन दो धातुओं का बना हुआ, काला तथा सफेद; **गङ्गाजली**-(स्त्री०) वह धातुकी सुराही या पात्र जिसमें यात्री लोग गंगाजल भर कर ले जाते हैं। **गङ्गापुत्र**-(हिं०पुं०) घाटों पर दान लेनेवाले ब्राह्मण।

गङ्गाल-(हिं०पुं०) पानी रखनेका खुले मुंह का पड़ा पात्र। **गङ्गासागर**-(सं० पुं०) वह स्थान जहां गंगा समुद्र से मिलती हैं, यह तीर्थमाना जाता है।

गङ्गोदक-(सं०नपुं०) गङ्गाजी कापानी

गचना-(हिं०वि०) किसी पात्र में कोई वस्तु कस कर भरना।

गचाका-(हिं०पुं०) गिरने का शब्द।

गछना-(हिं०वि०) चलना, चलाना।

गज-(सं०पुं०) हस्ति, हाथी।

गजकुम्भ-(हिं०पुं०) हाथीके मस्तक पर का दोनों ओर का उभड़ा हुआ भाग। **गजगमन**-(सं०नपुं०) हाथी की तरह मन्दगति। **गजगामिनी**-(सं०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्त्री०) हाथी के समान मन्द गति से चलने वाली स्त्री। **गजगाह**-(हिं० पुं०) हाथी की झूल, पाखर। **गजदान**-(सं०नपुं०) हाथी का मद। **गजना**-(हि०क्रि०) गरजना। **गजपाल**-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी तोप जो प्राचीन काल में हाथी से खींची जाती थी।

गजपुट-(सं०पुं०) एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा तथा एक हाथ गहरा गड्ढा जिसमें कंडा जला कर वैद्य लोग धातु का भस्म बनाते हैं। **गजमणि**-(सं०स्त्री०) गजमुक्ता, गजमोती। **गजमुक्ता**-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का मोती जो हाथी के मतक में पाया जाता है। **गजमोती**-(हिं० पुं०) देखो गजमुक्ता।

गजर-(हिं०पुं०) पहर पहर पर घंटा बजने का शब्द, पारी; **गजरदम**-बड़े सवेरे, तड़के।

गजरबजर-(हिं०पुं०) अंड बंड, गोलमाल।

गजरा-(हिं०पुं०) फूलों की माला।

गजराज-(हिं०पुं०) बड़ा हाथी।

गजा-(हिं०पुं०) नगाड़ा बजानेका डंडा

गज्जूह-(हिं०पुं०) हाथी का झुण्ड।

गञ्जन-(सं०नपुं०) निन्दा, तिरस्कार।

गझिन-(हिं०वि०) सघन, घना।

गटकना-(हिं०क्रि०) खाना, निगलना,

गटपट-(हिं०स्त्री०) मेल, मिलावट, संयोग

गटरमाला-(हिं०स्त्री०) बड़े बड़े दानों की माला।

गट्टा-(हिं०पुं०) कलाई, गांठ, ग्रन्थि, एक प्रकार की मिठाई।

गटठर, गटठा-(हिं०पुं०) बड़ी गठरी, बोझा।

गठकटा-(हिं०पुं०) गांठ काटकर रुपया चोराने वाला।

गठन-(हिं०स्त्री०) बनावट।

गठना-(हिं०क्रि०) जुड़ना, सटना।

गठबन्धन-(हिं०पुं०) विवाह में दुलहा दुलहिन के वस्त्र के सिरे को मिला कर बाँध देना।

गठरी-(हिं०स्त्री०) बड़ी पोटरी, बुगची

गठवाना-(हिं०क्रि०) जुड़वाना, सिलवाना।

गठिया-(हिं०स्त्री०) बोरा जिसमें अन्न भरकर व्यापारी लोग बैल या घोड़े पर लादते हैं, पोटली, छोटी गठरी, वायुरोग जिसमें घुटने में सूजन और पीड़ा होता है।

गठियाना-(हिं०क्रि०) गाँठ बाँधना।

गठीला-(हिं०वि०) गाँठदार, सुडौल, गठा हुआ।

गठुरा-(हिं०पुं०) भूसेकी गाँठ।

गठैत-, गठौत-(हिं०स्त्री०) मित्रता, घनिष्ठता, मेलजोल।

गंडन-(हिं०स्त्री०) गाड़ने का काम।

गड़बड़-(हिं०स्त्री०) बादल गरजने या गाड़ी के चलने का शब्द।

गड़गड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का हुक्का।

गड़ना-(हिं०क्रि०) चुभना, धंसना, धुसना

गड़पना-(हिं०क्रि०) निगलना, खाजाना

गड़प्पा-(हिं०पुं०) गड्ढा।

गड़बड़-(हिं०स्त्री०) ऊंचा नीचा, आपत्ति, उपद्रव, दंगा, (पुं०) अव्यवस्था।

गड़बड़ाना-(हिं०क्रि०) भूल या भ्रम में पड़ना, भ्रम में डालना, क्रम भ्रष्ट होना।

गड़बड़िया-(हिं०वि०) उपद्रव करनेवाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गड़बड़ी-(हिं०स्त्री०) अव्यवस्था, गोलमाल, **गड़रिया**-(हिं०पुं०) एक जाति जो भेड़ पालती और उनके बाल के कम्बल आदि बनाती है।
गड़हा-(हिं०पुं०) गर्त, गड्ढा।
गड़ही-(हिं०स्त्री०) छोटा गड़हा।
गड़ा-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, समुदाय।
गड़ाना-(हिं०क्रि०) धँसाना, चुभाना,
गडारी-(हिं०स्त्री०) वृत्त, घेरा, पास पास बनी हुई धारियां, घिरनी, कुवें में से पानी खींचने की चरखी।
गड़ुई-(हिं०क्रि०) टोंटी लगा हुआ पानी पीने का छोटा पात्र, झारी।
गड़ुवा-(हिं०पुं०)टोंटीलगाहुआ लोटा।
मड़ेरिया-(हिं०पुं०) देखो गड़रिया।
गड्ड-(हिं०पुं०) वस्तुओं का ढेर जो एक के ऊपर दूसरा रक्खा हो।
गड्डी-(हिं०स्त्री०) ढेर, पुंज, राशि।
गड्ढा-(हिं०पुं०) गर्त, गड़हा।
गढ़ंत-(हिं०स्त्री०) कल्पित वार्ता।
गढ़-(हिं०पुं०) खोई, कोट।
गढ़न-(हिं०स्त्री०)आकृति,गठन,वनावट।
गढ़ना-(हिं०क्रि०) सुडौल करना, बातें बनाना, ठोंकना, मारना, पीटना, कल्पना करना।
गढपति,गढव-(हिं०पुं०) कोटाध्यक्ष, राजा।
गढाई-(हिं०स्त्री०) गढ़ने का काम, गढ़ने का वेतन।
गढाना-(हिं०क्रि०) गढनेका काम दूसरे से कराना।
गढिया-(हिं०पुं०)किसी वस्तु को गढ़ कर बनाने वाला।
गढी-(हिं०स्त्री०) छोटा गढ।
गढैया-(हिं०वि०) गढने वाला।
गण-(सं०पुं०) समूह,ढेर, श्रेणी, कोटि,
गणक-(सं०पुं०) ज्योतिषी। **गणकार**-(सं०वि०) गणना करने वाला।
गणन-(सं०नपुं०) गणना, गिनती, निश्चय **गणना**-(सं०स्त्री०) गिनती, हिसाव, संख्या।
गणनीय-(सं०वि०) गिनने योग्य, प्रसिद्ध।
गणपति-(सं०पुं०) गणेश, शिव।
गणमुख-(सं०पुं०) गांव के मुखिया।
गणराज्य-(सं०पुं०) चुने हुए मुखियों के द्वारा चालाया जाने वाला राज्य।
गणिका-(सं०स्त्री०) वेश्या, रण्डी।
गणित-(सं०नपुं०) गणन, गणना, अङ्कशास्त्र।
गणेश-(सं०पुं०) पार्वतिनन्दन जिनका सिर हाथी का है।
गण्ड-(सं० पुं०) कपोल, गाल, हाथी की कनपटी, गैंड़ा। **गण्डक**-(सं०पु०) गैंड़ा, ग्रन्थि, स्फोटक रोग,
गण्य-(सं०वि०) गिनने योग्य,माननीय।
गत-(सं०वि०) गया हुआ, बीता हुआ, समाप्त, पाया हुआ, मरा हुआ, (स्त्री०) अवस्था, दशा,।
गतका-(हिं०पुं०) लकड़ी खेलने का डंडा।
गति-(सं०स्त्री०)गमन, चाल, परिणाम, ज्ञान, मुक्ति, मोक्ष, दशा, स्थान,
गतिया-(हिं०स्त्री०) बच्चों के गले में बाँधने का रूमाल।
गत्ता-(हिं०पुं०) कागद के कई परतों को साटकर बनी हुई दफ्ती, कुट।
गत्तालखाता-(हिं०पुं०) अप्राप्य ऋण, बट्टाखाता।
गद-(हि०पुं०) रोग, मेघ का शब्द।
गदका-(हिं०पुं०) देखो गर्तका।
गदगद-(सं०नपुं०) पुलकित वचन।
गदना-(हिं०क्रि०) बोलना, कहना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गदराना-(हिं०क्रि०) पकने के समीप पहुंचना, जवानी में अंगों का भरना।
गदला-(फा०वि०) मटमैला, गन्दा।
गदहपचीसी-(हिं०पुं०) सोलह वर्ष से पचीस वर्ष तक की अवस्था जब मनुष्य की बुद्धि अपरिपक्व रहती है।
गदहपन-(हिं०स्त्री०) मूर्खता।
गदहा-(हिं०पुं०) गर्दभ।
गदा-(सं०स्त्री०) एक प्राचीन अस्त्र जिसमें लोहे के डंडे के छोर पर एक लट्टू लगा होता था,।
गदाधर-(सं०पुं०) विष्णु, भगवान्
गदाला-(हिं०पुं०) मोटा ओढना या बिछौना।
गदेला-(हिं०पुं०) रूई आदि से भरा हुआ बहुत मोटा बिछौना।
गदोरी-(हिं०स्त्री०) हाथ की हथेली।
गदगद-(सं०पुं०) अस्पष्ट शब्द, (वि०) प्रसन्न, आनन्दित, पुलकित।
गद्द-(हिं०पुं०) कोमल वस्तु पर किसी पदार्थ के गिरने का शब्द, अजीर्ण।
गद्दर-(हिं०वि०) अपक्व, अधपका।
गद्दा-(हिं०पुं०) रूई आदि भरा हुआ मोटा बिछौना, गद्दी-(हिं० स्त्री०) छोटा गद्दा, हाथ या पैर की हथेली, व्यवसायी आदि की बैठने का स्थान, किसी बड़े अधिकारी का पद, किसी राजवंश की पीढी या आचार्य की शिष्य परम्परा।
गद्य-(सं०वि०) कथनीय, कहने योग्य, (नपुं०) छन्द रहित वाक्य। गद्यात्मक-(सं०वि०) गद्य में रचा हुआ।
गधा-(हिं०पुं०) गर्दभ, गदहा।
गन-(हिं०पुं०) देखो गण।
गनगनाना-(हिं०क्रि०) शीत से शरीर का काँपना या थरथराना।
गनती-(हिं०स्त्री०) देखो गिनती।
गनना-(हिं० क्रि०) गिनना।
गनिका-(हिं०स्त्री०) गणिका, वेश्या।
गन्ध-(सं०पुं०) घ्राणेन्द्रिय गुण, वास, सुगन्ध, लेश, कण, सम्बन्ध।
गन्धक-(सं०पुं०) पीले रंग का एक उपधातु। गन्धकी-(हिं०वि०) गन्धक के रंग का।
गन्धमृग-(सं०पुं०) कस्तूरी मृग। गन्धराज-(सं० पुं०) मोगरा, बेला, चन्दन, धुना।
गन्धर्व-(सं०पुं०) देवयोनि विशेष, जो देवताओं की सभा में गाते बजाते और नाचते हैं।
गन्धवती-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, वसुन्धरा।
गन्धी-(हिं०पुं०) इत्र और सुगन्धित तेल बेचनेवाला, अत्तार।
गन्ना-(हिं०पुं०) ईख, ऊख।
गप-(हिं० स्त्री०) झूठी सच्ची इधर उधर की बात, बकवाद, झूठा समाचार।
गपकना-(हिं०क्रि०) चटपट निगलना।
गपिया-(हिं०वि०) गप मारने वाला।
गपोड़, गपोड़ा-(हिं०पुं०) झूठी बात।
गप्प-(हिं०पुं०) देखो गप।
गप्पी-(हिं०वि०) बकवादी।
गप्फा-(हिं०पुं०) बहुत बड़ा ग्रास, लाभ।
गबदी-(हिं०वि०) सुस्त, मूर्ख, बुद्धिहीन
गभस्ति-(सं०पुं०) किरण, प्रकाश,।
गभीर-(सं०वि०) गहरा, गहन, घना।
गभुआर-(हिं०वि०) जिस बालक का मुण्डन न हुआ हो।
गम-(सं०पुं०) गमन, यात्रा, पहुँच।
गमक-(हिं०स्त्री०) सुगन्ध। गमकना-(हिं०क्रि०) सुगंध निकलना, (हिं० वि०) सुगन्धित।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गमन-(सं०नपुं०) प्रस्थान, प्रयाण, यात्रा, **गमनपत्र**-वह पत्र जिसके द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने का अधिकार मिलता हो।

गमाना-(हिं०क्रि०) गँवाना, खोना।

गमार-(हिं०पुं०) गँवार, देहाती।

गम्भीर-(सं०वि०) गहरा, घना, गूढ़, जटिल, कठिन, भारी, सौम्य प्रकृति का।

गम्य-(सं०वि०) गमनीय, जाने योग्य।

गयाल-(हिं०पुं०) वह सम्पत्ति जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

गर-(सं०नपुं०) विष; (हिं०पुं०) गरदन, गला; (प्रत्य०) बनाने वाला यथा-बाजीगर, ई हवाईगर इत्यादि।

गरगज-(हिं० पुं०) गढ़ की भीत, तोप रखने का शिखर जो गढ़की भीत पर बना रहता है,टीला, फांसी की टिकठी

गरज-(हिं०स्त्री०) बहुत गंभीर शब्द

गरजना-(हिं०क्रि०) तड़पना, फूटना,

गरदना-(हिं० पुं०) मोटी गरदन, झटका या धौल जो गरदन परपड़े।

गरदनियां-(हिं० स्त्री०) गरदन पकड़ कर किसी मनुष्य को बाहर निकालने की क्रिया।

गरनाल-(हिं०स्त्री०) बहुत चौड़े मुंह की तोप।

गरब-(हिं०पुं०) देखो गर्व।

गरबित-(हिं०वि०) देखो गर्वित।

गरभ-(हिं०पुं०) गर्भ।

गरमाना-(हिं०क्रि०) गरम होना, आवेश में आना।

गरमाहट-(हिं०क्रि०) उष्णता, गरमी।

गररा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का भूरे रंग का घोड़ा।

गरराना-(हिं०क्रि०) गरजना।

गरल-(सं०नपुं०) विष।

गरवा-(हिं०वि०) भारी, विशाल।

गरसना-(हिं०क्रि०) देखो ग्रसना।

गरहन-(हिं०पुं०) ग्रहण।

गरांव-(हिं०पुं०) चौपायों के गले में बाँधने का रस्सी का फन्दा।

गराड़ी-(हिं०स्त्री०) घिरनी, चरखी।

गरारा-(हिं० वि०) गर्वयुक्त, प्रबल, प्रचंड; (पुं०) कुल्ली।

गरास-(हिं०पुं०) देखो ग्रास, कवर।

गरासना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना।

गरिमा-(सं०स्त्री०) गुरुता, गौरव, भारीपन, महिमा, भार, अहंकार।

गरियाना-(हिं०क्रि०) दुर्वचन कहना।

गरियार-(हिं०वि०) मट्ठर, आलसी।

गरिष्ठ-(सं०वि०) बहुत भारी, बहुत बड़ा, प्रतिष्ठित।

गरी-(हिं०स्त्री०) नारियल के फल के भीतर का गूदा, बीज के भीतर का कोमल भाग, मींगी।

गरीयस-(सं०वि०) अत्यन्त भारी प्रबल।

गरुआई-(हिं०स्त्री०) गरुता, भारीपन।

गरुआना-(हिं०क्रि०) भारी होना।

गरु-(हिं०वि०) गुरू, भारी।

गरेरना-(हिं०क्रि०) घेरना, रोकना।

गरेरा-(हिं०पुं०) घेरा।

गर्जन-(सं०नपुं०) गरज, क्रोध, रोष।

गर्त-(सं०पुं०) भूमिका छिद्र,दरार,गड्ढा

गर्दन-(हिं०पु०) गरदन, ग्रीवा।

गर्दभ-(सं०पुं०) रासभ, खर, गदहा।

गर्भ-(सं०पुं०) पेटके भीतर का बच्चा, भ्रूण, गर्भाशय, उदर, पेट, भीतरी भाग। **गर्भकेसर**-(पुं०) फूलों में के बाल सरीखे पतले सूत; **गर्भकोष**-(सं० गर्भाशय, बच्चेदानी,**गर्भवती**-(स्त्री०) वह स्त्री जिसके पेट में बच्चा हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्भित-(सं०वि०)पूर्ण, पूरित, भरा हुआ
गर्भिणी-(हिं०वि०) गर्भवती, गाभिन।
गर्व-(सं०पुं०)अहंकार, अभिमान।
गर्विष्ट-(सं०वि०)गर्वयुक्त, अहंकारी।
गर्वी-(हिं०वि०) अहंकारी, घमण्डी;
गर्वीला-(हिं०वि०) अभिमान से भरा हुआ; घमंडी।
गर्हण-(सं०नपुं०) निन्दा।
गर्हणीय-(सं०वि०) निन्दनीय।
गर्हा-(सं०स्त्री०) निन्दा।
गर्ही-(सं०वि०) निन्दा करने वाला।
गल-(सं०पुं०) गला, कण्ठ। **गलकंबल**-(सं०पुं०)गाय के गलेपर की लटकती हुई झालर।
गलंश-(हिं०स्त्री०)वह सम्पत्ति जिसका स्वामी मर गया हो और उसका कोई उत्तराधिकारी न हो।
गलका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का फोड़ा जो हाथ की अंगुलियों के अग्रभाग में होता है।
गलगंजना-(हिं०क्रि०)कोलाहल करना।
गलगला-(हिं०वि०)आर्द्र, भींगा हुआ। **गलगलाना**-(हिं०क्रि०) भिगाना।
गलगाजना-(हिं०क्रि०) आनन्द से गरजना।
गलगुच्छा-(हिं०पुं०)देखो गलमुच्छा। **गलग्राह**-(सं०पुं०) मगर।
गलछट-(हिं०स्त्री०) गलफड़ा।
गलतंग-(हिं०वि०) अचेत, बेसुध।
गलतंस-(हिं०पुं०)ऐसा मनुष्य जो बिना सन्तति छोड़े मर गया हो।
गलतकिया-(हिं०पुं०) गालों के नीचे रखने की कोमल गोल तकिया।
गलतान-(हिं० वि०) जर्जर, फटा पुराना।
गलथना-(हिं०पुं०)बकरियों के गरदन की दोनों ओर लटकती हुई थैलियाँ।
गलथली-(हिं०स्त्री०)बन्दरों के गाल के नीचे की थैली जिसमें वे खाने की वस्तु भर लेते हैं।
गलदेश-(सं०पुं०)ग्रीवा, गला, गरदन।
गलन-(सं०नपुं०)गलकर गिरना,पतन।
गलना-(हिं०क्रि०) जीर्ण होना, शरीर का दुर्बल होना, ठंढक से हाथ पैर ठिठुरना।
गलफड़ा-(हिं०पुं०) जल जन्तुओं में पानी के भीतर सांस लेने का अवयव, गालों के दोनों जवड़े के बीच का मांस।
गलबल-(हिं०पुं०)कोलाहल, गड़बड़ी।
गलबांही, गलबहियां-(हिं०स्त्री०)गले में प्रेम से बाँह डालना।
गलमुच्छा-(हिं०पुं०)दोनों गालों पर बढाये हुए बाल।
गलवाना-(हिं०क्रि०) गलाने का काम दूसरेसे कराना।
गललग्न-(सं०वि०)गले में लिपटा हुआ
गलसुअन-(हिं०पुं०)गाल के नीचे का भाग सूजने का एक रोग।
गला-(हिं०स्त्री०) गरदन, कंठ, गले के भीतर की नाली जिसमें से शब्द निकलता है और आहार पेट के भीतर जाता है, गले का शब्द, पात्र का ऊपरी पतला भाग।
गलाऊ-(हिं०वि०) गलाने वाला।
गलाना-(हिं०क्रि०) द्रवित करना, कोमल करना, धन व्यय करना, धीरे धीरे लुप्त करना।
गलानि-(हिं०स्त्री०)खिन्नता,खेद,दुःख।
गलावट-(हिं०स्त्री०) गलनेका भाव या क्रिया।
गलित-(सं०वि०)भ्रष्ट, पतित, द्रवित, जीर्ण, खंडित।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गलियारा-(हिं०पुं०) घर का संकीर्ण मार्ग।
गली-(हिं०स्त्री०) पतला मार्ग जो दो घरों की पंक्तियों के बीच में रहता है।
गल्प-(हिं०स्त्री०) छोटी कहानी, डींग।
गल्ल-(हिं०पुं०) गाल।
गल्ला-(हिं०पुं०) कोलाहल, अन्न।
गव-(हिं०स्त्री०) आशय, घात, अवसर
गवन-(सं०पुं०) प्रस्थान, चलना, जाना,
गवय-(सं०पुं०) नीलगाय।
गवाक्ष-(सं०पुं०) झरोखा, छोटी खिड़की
गवाँना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, खोना।
गवेषणा-(सं०स्त्री०) अन्वेषण, खोज।
गवैया-(हिं०वि०) गायक, गाने वाला।
गवैहां-(हिं०वि०) ग्रामीण, देहाती।
गव्य-(सं०वि०) गौ से प्राप्त, यथा-दूध, दही, घी, गोबर, गोमूत्र आदि।
गसना-(हिं०क्रि०) जकड़ना, गाँठना।
गसीला-(हिं०वि०) गुथा हुआ।
गह-(हिं०स्त्री०) पकड़।
गहना-(हिं०क्रि०) लालसा से पूर्ण होना, ललकना।
गहगड्ड-(हिं०वि०) गहरा, भारी, घोर।
गहन-(सं०नपुं०) बन, जंगल, (पुं०) गहराई, (वि०) दुर्गम, गहरा, घना, अथाह, (हिं०पुं०) ग्रहण, दोष, कलंक, कष्ट, विपत्ति।
गहना-(हिं०पुं०) आभूषण, बंधक, (क्रि०) पकड़ना, धरना।
गहनि-(हिं०स्त्री०) टेक, हठ, पकड़।
गहवर-(हिं०वि०) विषम, उद्विग्न, व्याकुल।
गहरना-(हिं०क्रि०) विलंब करना।
गहरा-(हिं०वि०) अधिक भारी, निम्न, दृढ़; गाढा, कठिन।
गहराई-(हिं०स्त्री०) गंभीरपन, गहरापन। **गहराना**-(हिं०क्रि०) गहरा होना या करना।
गहराव-(हिं०पुं०) गहराई, गहरापन।
गहवा-(हिं०पुं०) संडसी। **गहवाना**-(हिं०क्रि०) पकड़ने का काम दूसरे से कराना।
गहाई-(हिं०स्त्री०) पकड़ने का काम,।
गहाना-(हिं०क्रि०) पकड़ाना, धराना।
गहिराव-(हिं०पुं०) देखो गहराव।
गहिरी-(हिं०वि०) गहरा, गंभीर।
गहिला-(हिं०वि०) उन्मत्त, पागल।
गहौर-(हिं०वि०) गहरा।
गहोला-(हिं०वि०) अभिमानी।
गहुआ-(हिं०पुं०) छोटे मुखकी संडसी।
गहेला-(हिं०वि०) हठी, अहंकारी।
गहैया-(हिं०वि०) पकड़ने वाला।
गह्वर-(सं०नपुं०) बिल, कन्दरा, (वि.) दुर्गम, गुप्त, विषम।
गांछना-(हिं०क्रि०) गाँथना, गूँथना।
गाँजना-(हिं०क्रि०) ढेर लगाना।
गाँजा-(ह०पुं०) एक पौधा जिसकी कली चिलम पर पी जाती है।
गांठ-(हिं०स्त्री०) ग्रन्थि, गिरह, गठरी। शरीर के अंग का जोड़, पर्व, गट्ठा।
गांठना-(हिं०क्रि०) गांठ देना, मिलाना, जोड़ना, वश में लाना।
गाँठी-(हिं०स्त्री०) देखो गाँठ।
गाँड़ा-(हिं०पुं०) ऊख की कटी हुई गड़ेरीं जो कोल्हू में पेरने के लिये डाली जाती है।
गाँथना-(हिं०क्रि०) गूंथना, मिलाना।
गाँव-(हिं०पुं०) ग्राम, छोटी बस्ती।
गाँस-(हिं० स्त्री०) ग्रन्थन, बन्धन, बैर, ईर्षा।
गाँसना-(हिं०क्रि०) गूथना, ठूसना, भरना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गाँसी-(हिं० स्त्री०) किसी अस्त्र का अगला भाग, गाँठ, छल, कपट।
गाँहक-(हिं०पुं०) देखो ग्राहक।
गाइ,गाई-(हिं०स्त्री०) गाय।
गाउघप्प-(हिं०वि०) दूसरे की वस्तु को अपनाने वाला।
गागर-(हिं०स्त्री०) गगरी, छोटा घड़ा।
गागरी-(हिं०स्त्री०) घड़ा, गगरी।
गाच-(हिं०पुं०) महीन जालीदार कपड़ा।
गाछ-(हिं०पुं०) छोटा वृक्ष, पौधा।
गाज-(हिं०स्त्री०) गरज, बिजली।
गाजना--(हिं०क्रि०) गरजना, चिल्लाना।
गाजर-(हिं०पुं०) एक मीठे कन्द का पौधा।
गाड़-(हिं०स्त्री०) गड्ढा। गाड़ना-(हिं०क्रि०) पृथ्वी में ढांपना, धँसाना। छिपाना।
गाडी-(हिं०स्त्री०) यान, शकट; गाड़ीवान-(पुं०) गाड़ी हाँकने वाला।
गाढ-(सं०नपुं०) अतिशय, दृढ़रूप, (वि०) घना, गाढ़ा, गहरा।
गाढा-(हिं०वि०) गहरा, विकट, कठिन (पुं०) खद्दर।
गाता-(हिं० पुं०) गाने वाला, गवैया।
गाती-(हिं०स्त्री०) गले में लपेटने का वस्त्र।
गात्र-(सं० नपुं०) शरीर, देह, अंग,।
गाथक-(सं०पुं०) गायक, गाने वाला।
गाथा-(सं० स्त्री०) स्तुति, गीत, प्राकृत भाषा।
गाद-(हिं० पुं०) तछट।
गादड़-(हिं० वि०) डरपोक, (पुं०) गीदड़, सियार।
गादर-(हिं०वि०) आलसी, भीरु, डरपोक।
गादा-(हिं०पुं०) खेत का कच्चा या अधपका अन्न।
गादी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का पक्वान्न; देखो गद्दी।
गादुर-(हिं०पुं०) चमगादड़।
गाध-(सं०पुं०) लोभ, थाह, (वि०) अल्प, थोड़ा, छिछला।
गान-(सं०स्त्री०) गाने की क्रिया, संगीत
गाना-(हिं० क्रि०) ताल सुर में मुखसे मधुर ध्वनि निकालना, स्तुति करना, (पुं०) गाने की क्रिया, गान।
गाभ-(हिं० पुं०) पशुओं का गर्भ।
गाभा-(हिं०पुं०) हलके रंग का नया निकला हुआ पत्ता, कोंपल।
गाभिन, गाभिनी-(हिं० वि०) गर्भिणी,
गाम-(हिं० पुं०) गाँव, ग्राम।
गामी-(सं०वि०) चलनेवाला जानेवाला।
गाय-(हिं० स्त्री०) गौ, बहुत सीधा सादा मनुष्य।
गायक-(सं० वि०) गबैया, गानेवाला।
गायन-(सं०वि०) गाने का व्यवसाय।
गारना-(हिं०क्रि०) निचोड़ना, निकालना।
गारा-(हिं०पुं०) मिट्टी या चूना सुर्खी आदि में जल मिलाकर बनाया हुआ मसाला।
गारी-(हिं०स्त्री०) दुर्वचन, गाली।
गारुड़-(सं०नपुं०) सर्पका विष उतारने का मन्त्र। गारुड़िक, गारुड़ी-(सं० पुं०) सर्प का विष उतारनेवाला।
गारो-(हिं०पुं०) गर्व, अहंकार।
गाहस्थ्य-(सं०नपुं०) गृहस्थाश्रम।
गाल-(हिं०पुं०) कपोल, गण्ड। गालन-(सं०नपुं०) कपड़े में छानने का काम।
गाला-(हिं०पुं०) धूनी हुई रूई का गोला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गालित-(सं०वि०) गलाया हुआ ।
गाली-(हिं०स्त्री०) दुर्वचन, निन्दा, कलंक सूचक वाक्य ।
गालना-(हिं०क्रि०) बोलना, बातकरना
गावदी-(हिं०वि०) अबोध ।
गावली-(हिं०स्त्री०) दलाली ।
गाह-(सं०पुं०) घात, पकड़ ।
गाहक-(हिं०पुं०) मोल लेने वाला, आदर करने वाला ।
गाहन-(सं०नपुं०) स्नान ।
गाहना-(हिं०क्रि०) डुबकी लगाकर थाह लेना, मथना, हलचल मचाना ।
गाहा-(हिं०स्त्री०) कथा, वर्णन ।
गाही-(हिं०स्त्री०) पांच वस्तुओंकासमूह
गिजना-(हिं०क्रि०) हाथ लगने या उलट जाने केकारण किसीवस्तु (कपड़े इ०) का नष्ट हो जाना या करना ।
गिजाई-(हिं०स्त्री०) गिज जाने की क्रिया ।
गिदौड़ा,गिदौरा-(हिं०पुं०) चीनी को ढालकर जमाई हुई मोटी रोटी ।
गियान-(हिं०पुं०) ज्ञान ।
गिटकिरी-(हिं०स्त्री०) तान लगाने में स्वर का कांपना ।
गिट्टक-(हिं०स्त्री०) कंकड़ जो चिलम में छिद्र के ऊपर रक्खा जाता है ।
गिट्टी-(हिं०स्त्री०) पत्थर या ईंट के छोटे टुकड़े जो छत पर फैलाकर पीटे जाते हैं ।
गिड़गिड़ाहट-(हिं०स्त्री०) प्रार्थना, विनती ।
गिद्ध-(हिं०पुं०) गृद्ध ।
गिनगिनाना-(हिं०क्रि०) रोमांच होना ।
गिनती-(हिं०स्त्री०) गणना, संख्या,
गिनना-(हिं०क्रि०) गणना करना, संख्या निश्चित करना ।
गिर-(हिं०पुं०) गिरि, पर्वत, पहाड़ ।
गिरगिट-(हिं०पुं०) छिपकली के आकार का एक बित्ता लम्बा एक जन्तु जो अपना रङ्ग अनेक बार बदलता है ।
गिरगिटान-(हिं०पुं०) देखो गिरगिट ।
गिरजा-(बर) ईसाइयोंका प्रार्थना गृह ।
गिरधर-गिरधारी-(सं०पुं०) कृष्ण, वासुदेव ।
गिरना-(हिं०क्रि०) नीचे उतरना, पतित होना, स्थिरता न रखना, अवनति पर होना,
गिरबर-(हिं०पुं०) श्रेष्ठ पर्वत ।
गिरबान-(हिं०पुं०) देवता, देव, सुर ।
गिरवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे के द्वारा गिरने का काम कराना ।
गिरहर गिरहरा-(हिं०वि०) गिरनेवाला
गिरही-(हिं०पुं०) गृहस्थ, घर, मकान ।
गिरा-(सं०स्त्री०) वाणी, जिह्वा, वचन ।
गिराना-(हिं०क्रि०) पृथ्वी पर डाल देना, घटाना ।
गिराव-(हिं०पुं०) गिरने का कार्य ।
गिरास-(हिं०पुं०) देखो ग्रास, कौर ।
गिरासना-(हिं०क्रि०) ग्रसना, कष्ट देना ।
गिरि-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़ ।
गिरी-(हिं०स्त्री०) किसी बीज के भीतर का गूदा ।
गिरेवान-(हिं०पुं०) गले में लपेटने का वस्त्र
गिरेवा-(हिं०पुं०) छोटी पहाड़ी,
गिलट-(हिं०स्त्री०) किसी धातु पर सोना चढ़ानेका काम, एक सफेद चमकीला हलका कम मूल्य का धातु ।
गिलटी-(हिं०स्त्री०) शरीर में सन्धि-स्थान की ग्रन्थि ।
गिलना-(हिं०क्रि०) निगलना, मनमें रखना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गिलहरी-(हिं०स्त्री०) चूहे के आकार का एक चंचल जन्तु जो वृक्ष पर रहता है, चेखुरी ।
गिलान-(हिं०स्त्री०) ग्लानि, घृणा ।
गिलास-(हिं०पुं०) पानी पीने का गोल लंबा पात्र ।
गिलौरी-(हिं०स्त्री०) पान का बीड़ा ।
गिल्ली-(हिं०स्त्री०) देखो गुल्ली ।
गींजना-(हिं०क्रि०) किसी कोमल पदार्थ को हाथों से इस प्रकार मलना कि वह भ्रष्ट हो जावे ।
गी-(सं०स्त्री०) वाणी, बोलने की शक्ति ।
गीत-(सं०नपुं०) गान, गाना, प्रशंसा ।
गीता-(सं०स्त्री०) गुरु तथा शिष्य की कल्पना करके कहा हुआ उपदेशात्मक ज्ञान, भगवद्गीता, वृत्तान्त ।
गीति-(सं०स्त्री०) गान, गीत ।
गीदड़-(हिं०पु०) शृगाल, सियार, (वि०) भीरु, डरपोक ।
गीध-(हिं०पुं०) गृध्र, गिद्ध ।
गीर-(सं०स्त्री०) गिरा, वाणी ।
गीवाण-(हिं०पुं०) देवता ।
गीला-(हिं०वि०) भींगा हुआ, तर ।
गुंगुआना-(हिं०क्रि०) अस्पष्ट बोलना, गुगू करना ।
गुंज-(हिं०स्त्री०) भौंरों की भनभनाहट ।
गुंजना-(हिं०क्रि०) भनभनाना, गुनगुनाना, गुंजार-(हिं०वि०) गूंजता हुआ ।
गुंडई-(हिं०स्त्री०) गुडापन, नीचता ।
गुंडली-(हिं०स्त्री०) कुण्डली, गेंडुरी ।
गुंडा-(हिं०वि०) कुमार्गी, पापी, छैला
गुंधना-(हिं०स्त्री०) जल मिलाकर आटा सानना ।
गुंथना-(हिं०क्रि०) लड़ी बनाकर बांधना ।
गुंधाई-(हिं०स्त्री०) गूंधने का काम या गूंधने का शुल्क ।
गुंभी-(हिं०स्त्री०) अंकुर, गाभ ।
गुइयाँ, (हिं०पुं०) साथी, सहचर, स्त्री ।
गुच्ची-(हिं०स्त्री०) लड़कों के गुल्ली डंडा खेलती समय भूमि में खोदा हुआ छोटा गड्ढा, (वि०) बहुत छोटी, नन्ही ।
गुच्छ, गुच्छक-(सं०पुं०) एक में बंधे हुए फूल या पत्तों का समुदाय, गुच्छा,
गुजरी-(हिं०स्त्री०) कलाई में पहिरने की एक प्रकार की पहुँची, । गुंज-(सं०पुं०) ध्वनि, शब्द ।
गुञ्जा-(सं०स्त्री०) घुमची, एक रत्ती का परिमाण ।
गुञ्जित-(सं०वि०) कलकल शब्द युक्त
गुञ्झा-(हिं०पुं०) बाँस की कील, रेशेदार गुद्दा ।
गुझिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पक्वान्न ।
गुटकना-(हिं०क्रि०) कबूतर की तरह शब्द करना, निगल जाना ।
गुटका-(हिं०पुं०) छोटे आकार की पुस्तक ।
गुटुरंग-(हिं०स्त्री०) कबूतर की बोली ।
गुटिका-(सं०स्त्री०) वटिका, गोली ।
गुट्ट-(हिं०पुं०) समूह, झुंड, दल, जत्था ।
गुड़ंबा-(हिं०पुं०) चीनी में पकाया हुआ आम का गूदा ।
गुड़-(हिं०पुं०) कड़ाहे में उबाल कर गाढा किया हुआ तथा जमाया हुआ ऊख का रस ।
गुड़गुड़-(हिं०पुं०) जल में नली आदि द्वारा वायु प्रवेश होने का शब्द ।
गुड़गुड़ी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार का हुक्का ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुड़िया-(हिं०स्त्री०) कपड़े की बनी हुई लड़कियों के खेलने की पुतली।
गुड्डा-(हिं०पुं०) कपड़े का बना हुआ पुतला।
गुड्डा-(हिं०पुं०) बड़ा पतंग।
गुड्डी-(हिं०स्त्री०) पतंग, कनकैया।
गुण-(सं०पुं०) धनुष की प्रत्यंचा, रस्सी, धर्म, प्रकृति के सत्व, प्रवीणता, सद्वृत्ति, शील, बड़ाई, विशेषण, कला, विशेषता, 'गुना' अर्थ का प्रत्यय यथा त्रिगुण इत्यादि; **गुणक**-(पुं०) वह अंक जिससे कोई अंक गुणा किया जावे।
गुणकर-(वि०) लाभदायक; **गुणकार**-(वि०) रसोई बनाने वाला; **गुणकारक, गुणकारी**-(वि०) लाभदायक, **गुणन**-(नपुं०) मन्त्रणा, अभ्यास, एक अंक को दूसरे से गुणा करना, गुणा सोचना, **गुणफल**-(पुं०) वह संख्या जो दो अंकों के गुणा करने से प्राप्त हो; **गुणवाचक**-(वि०) गुण को प्रगट ग्रनेवाला; गुणवान-(वि०) गुणी; **गुणा**-(हिं०पुं०) गणितकी एक क्रिया, **गुणाङ्क**-(पुं०) वह अंक जिसको गुणा करना हो; **गुणाढ्य**-(वि०) गुणयुक्त, **गुणानुवाद**-(पुं०) प्रशंसा, बड़ाई।
गुणित-(सं०वि०) गुणन किया हुआ।
गुणी-(सं०वि०) गुणवान्, निपुण।
गुण्ठन-(सं०पुं०) आवरण, परदा, घेरा।
गुण्ठित-(सं०पुं०) छिपा हुआ, घेरा हुआ
गुण्य-(सं०वि०) गुणयुक्त; वह अंक जिसको गुणा करना हो।
गुण्याङ्क-(सं०पुं०) वह अङ्क जो गुणा किया जावे।
गुत्थम, गुत्था-(हिं० पुं०) उलझाव, फँसाव।
गुत्थी-(हिं० स्त्री०) गिरह, उलझन।
गुथना-(हिं०क्रि०) गुथा जाना, टांका लगाना।
गुदकार-(हिं०वि०) गुद्देदारा, गुदारा।
गुदगुदा-(हिं०वि०) गुद्देदार कोमल।
गुदगुदाना-(हिं० क्रि०) बच्चों को प्रसन्न करने के लिये उनके कांख या पेर के तलवे पेट आदि को सोहराना; गुदगुदाहट-गुदगुदी।
गुदड़िया-(हिं०पुं०) गुदड़ी पहिरने ओढ़ने वाला।
गुदड़ी-(हिं०पुं०) फटे पुराने वस्त्र का बना हुआ ओढ़ना या बिछौना।
गुदना-(हिं०) देखो गोदना।
गुदरना-(हिं०क्रि०) निवेदन करना।
गुदराना-(हिं०क्रि०) सूचित करना।
गुदरी-(हिं०स्त्री०) देखो गुदड़ी।
गुदा-(सं०स्त्री०) मलद्वार।
गुदाना-(हिं०क्रि०) गोदनेकीक्रिया करना
गुदाम-(हिं०पुं०) अनेक पदार्थों के रखने का स्थान।
गुदार-(हिं०वि०) गुद्देदार।
गुद्दा-(हिं०पुं०) फल आदि के भीतर का गूदा।
गुन-(हिं०पुं०) देखो गुण।
गुनकारी-(हिं०वि०) गुणकारक।
गुनगुना-(हिं०वि०) थोड़ा गरम।
गुनगुनाना-(हिं०क्रि०) नाक से बोलना, अस्पष्ट स्वर से गाना।
गुनना-(हिं०क्रि०) मनन करना, सोचना विचारना।
गुनवन्त-(हि०वि०) जिसमें कोई गुण हो।
गुना-(हिं०पुं०) संख्या सूचित करने के लिये शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है जिसका अर्थ "उतनी वार" होता है,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यथा दसगुना, बीस गुना इत्यादि, गणित में गुणा करने की क्रिया।
गुनावन-(हिं०पुं०) विचार।
गुनिया-(हिं० वि०) गुणी, गुणवान (स्त्री०) कारीगर का समकोण नापने का यन्त्र।
गुनियाला-(हिं०वि०) गुणी।
गुनी-(हिं०वि०) देखो गुणी।
गुपचुप-(हिं०स्त्री०) एक तरहकी मिठाई
गुपुत-(हिं०वि०) देखो गुप्त।
गुप्त-(सं०वि०) गूढ़, रक्षित, छिपाहुआ
गुप्ति-(सं०स्त्री०) रक्षण, आच्छादन, कन्दरा, गड्ढा।
गुप्ती-(हिं०स्त्री०) एक तरहकी किरिच या तलवार जो छड़ी के भीतर बैठाई रहती है।
गुफा-(हिं०स्त्री०) गुहा, कन्दरा।
गुबरैला-(हिं०पुं०) गोबरमें उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।
गुब्बाड़ा, गुब्बारा-(हिं०पुं०) वह गोल या लम्बी थैली जिसमें गरम वायु या किसी प्रकार की भाफ भरकर आकाश में उड़ाई जाती है।
गुमना-(हिं०क्रि०) लुप्त हो जाना।
गुमाना-(हिं०क्रि०) देखो गँवाना।
गुमानी-(हिं०वि०) अहंकारी, घमण्डी।
गुमटी-(हिं०स्त्री०) घरकी सबसे ऊपर की छत या सीढी।
गुम्फ-(सं०पुं०) ग्रन्थ, गांठ।
गुम्फित-(सं०वि०) ग्रन्थित, गुथा हुआ।
गुम्मा-(हिं०वि०) कमबोलने वाला, चुप्पा।
गुर-(हिं०पुं०) मूलमन्त्र, युक्ति, भेद।
गुरगा-(हिं०पुं०) अनुचर, भेदिया, जासूस।
गुरची-(हिं०स्त्री०) सिकुड़ना, बल, बटन
गुरचों-(हिं०स्त्री०) कानाफूसी।
गुरमुख--(हिं०वि०) गुरु से मन्त्र की दीक्षा लिया हुआ।
गुरवी-(हिं०वि०) अहंकारी, घमण्डी।
गुरिया-(हिं०स्त्री०) माला या लड़ी का एक दाना, मनका
गुरु-(सं०पुं०) देवताओं के गुरु वृहस्पति, (वि०) अधिक, भारी, पूजनीय, गंभीर, बलवान् (पुं०) मंत्र का उपदेश देनेवाला, आचार्य, विद्या अथवा कला सिखलाने वाला अध्यापक।
गुरुआइन-गुरुआनी-(हिं० स्त्री०) गुरु की स्त्री, शिक्षा देने वाली स्त्री।
गुरुआई-(हिं०स्त्री०) गुरु का धर्म या कार्य, धूर्तता; गुरुकुल- (सं०नपुं०) गुरु का कुल, गुरु का वह स्थान जहां पर वे विद्यार्थियों को अपने साथ रखकर शिक्षा देते हैं; गुरुजन-(पुं०) आदरणीय मनुष्य; गुरुतम-(वि०) अधिक भारी; गुरुता-(स्त्री०) गुरुत्व, भारीपन, महत्व।
गुरुत्व केन्द्र-(सं०पुं०) किसी पदार्थ के बीच का वह विन्दु जिस पर यदि उस पदार्थ का सम्पूर्ण भार सिमट कर आ जावे तो आकर्षण में भेद न हो; गुरुत्वलम्ब-(सं०पुं०) किसी पदार्थ के गुरुत्व केन्द्र से सीधे नीचे की ओर खींची हुई रेखा; गुरुत्वकर्षण-(सं०पुं०) पृथ्वी की आकर्षण शक्ति। गुरुदक्षिणा-(सं०स्त्री०) वह भेंट जो अध्ययन समाप्त होने पर गुरु को सन्तुष्ट करने के लिये चेला देता है। गुरुद्वारा-(हिं०पुं०) गुरु के रहने का स्थान, सिक्खों का मन्दिर; गुरुभाई (हिं०स्त्री०) एक ही गुरु के चेले।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुलाबी-(हिं०वि०) गुलाब के रंग का, थोड़ा हलका।
गुलिका-(सं०स्त्री०) गुटिका, गोली।
गुल्फ-(सं०पुं०) एँड़ीके उपरकी गांठ।
गुल्म-(सं०पुं०) प्लीहा रोग, वृक्ष जिसमें तना न हो।
गुल्लक-(हिं०पुं०) प्रतिदिन की आय रखने की थैली।
गुल्लर-(हिं०पुं०) देखो गूलर।
गुल्ली-(हिं०स्त्री०) गुठली, लंबोतरा छोटा टुकड़ा, लड़को के डंडे से खेलने का काठका छोटा टुकड़ा।
गुसाई-(हिं०पुं०) गोसाईं, गोस्वामी।
गुस्सैल-(हिं०वि०) चिड़चिड़ा।
गुह-(हिं०पुं०) विष्ठा।
गुहना-(हिं०क्रि०) गुथना।
गुहराना-(हिं०क्रि०) चिल्लाकर बुलाना
गुहा-(सं०स्त्री०) गड्ढा, गुफा, कन्दरा
गुहाई-(हिं०स्त्री०) गुथने की क्रिया, या वेतन।
गुहामुख-(सं०नपुं०) कन्दराका द्वार।
गुहार-(हिं०स्त्री०) रक्षा के लिये पुकार
गुहाल-(हिं०पुं०) गोशाला।
गुह्य-(सं०वि०) गोपनीय, गूढ़।
गूँगा-(फा०वि०) जो बोल न सके, मूक।
गूँज-(हिं०स्त्री०) भौंरोंके गूंजने का शब्द, प्रतिध्वनि, लट्टू की कील जिस पर वह घूमता है, बाली का पतला भाग जो इसमें लपेटा रहता है।
गूंजना-(हिं०क्रि०) भनभनाना, प्रतिध्वनित होना।
गू-(हिं०स्त्री०) विष्ठा, मल।
गूझा-(हिं०पुं०) फंल के भीतर का तन्तु।
गूढ़-(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ जटिल, कठिन।
गूढ़चारी (सं०वि०) गुप्तचारी, भेदिया।
गूढोत्तर-(सं०नपुं०) किसी गूढ़ अभिप्राय का उत्तर।
गूथना-(हिं०क्रि०) कई वस्तुओं को एक डोरे में पिरोना, गाँथना, भद्दी सिलाई करना।
गूदड़-(हिं०पुं०) फटा पुराना वस्त्र।
गूदा-(हिं०पुं०) किसी फल के छिलके के नीचेका सार भाग, गरी, मींगी
गून-(हिं०स्त्री०) नाव खींचनेकी रस्सी।
गूना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न।
गूलर-(हिं०पुं०) वटवृक्ष, पीपल और बरगद की जाति का एक बड़ा वृक्ष,
गूह-(हिं०पुं०) विष्टा, मल।
गृध्रसी-(सं०स्त्री०) एक वातरोग जिसमें कमर पीठ तथा जांघमें पीड़ा रहती है
गृह-(सं०नपुं०) मिट्टी या ईट का बना हुआ वासस्थान, घर, कुटुम्ब, वंश।
गृहयुद्ध-(सं०पुं०) देश के भीतर आपस में युद्ध होना।
गृहलक्ष्मी-(सं०स्त्री०) सच्चरित्र स्त्री।
गृहस्थी-(सं०पुं०) गृही, खेतिहर, किसान।
गृहस्थी-(हिं०स्त्री०) गृहस्थ का कर्तव्य घरबार, कुटुम्ब, परिवार, खेती बारी।
गृहिणी-(सं०स्त्री०) घर की मालकिन, भार्या, पत्नी।
गृही-(सं०पुं०) गृहस्थाश्रमी, गृहस्थ।
गृहीत-(सं०वि०) प्राप्त किया हुआ।
गेंड़-(हिं०पुं०) ऊख के ऊपर का पत्ता।
गेंड़ना-(हिं०क्रि०) खावें से खेत घेरना।
गेंडली-(हिं०स्त्री०) कुण्डली, फेंटा, गेंड़री।
गेंडुरी-(हिं०स्त्री०) घड़ा रखने का मेंड़रा, बड़वा।
गेंद-(हिं०पुं०) कपड़े, रबर आदि का बना हुआ खेलने का गोला, कन्दुक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गेंदा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पीले रङ्गके फूल का पौधा, इसका फूल।
गेंडुर-(हिं०पुं०) चमगादड़।
गेंडुवा-(हिं०पुं०) गेंडुवा, तकिया।
गेंड़ना-(हिं०क्रि०) लकीर से घेरना, परिक्रमा करना, चारो ओर घूमना।
गेंदा-(हिं०पुं०) चिड़ियाका छोटा बच्चा जिसको पर न निकले हों।
गेरना-(हिं०क्रि०) गिराना, डालना।
गेरुआ-(हिं०वि०) गेरूके रङ्ग का।
गेरुई-(हिं०स्त्री०) कृषिफल एक रोग।
गेरू-(हिं०स्त्री०) खान से निकलने वाली एक प्रकार की लाल मिट्टी।
गेह-(सं०नपुं०) गृह, घर।
गेहनी-(हिं०स्त्री०) गृहणी, घरनी, भार्या।
गेहिनी-(सं०स्त्री०) गृहिणी, भार्या।
गेही-(हिं०पुं०) गृहस्थ।
गेहुअन-(हिं०पुं०) एक बड़ा विषैला भूरे रंग का सर्प, कृष्ण सर्प।
गेहुआ-(हिं०वि०) गेहूँ के रंगका, बदामी
गेहू-(हिं०पुं०) गोधूम, एक प्रसिद्ध अन्न जिसका आंटा खाया जाता है।
गैड़ा-(हिं०पुं०) भैंसे के आकार का एक पशु जिसकी नाक पर सींध होतीहै,
गैता-(हिं०स्त्री०) भूमि खोदने का एक अस्त्र, कुदाल।
गैन-(हिं०पुं०) गैल, मार्ग।
गैया-(हिं०स्त्री०) गो, गाय, गऊ।
गैल-(हिं०स्त्री०) मार्ग, गली।
गोइंठा-(हिं०पुं०) उपला, गोहरा।
गोइंड़-(हिं०पुं०) गाँव की बस्ती के आसपास की भूमि, गाँव की सीमा।
गोइयां-(हिं०पुं०) साथी, सहचर।
गोंठ-(हिं०स्त्री०) गोष्ठ, कमर पर की धोती की लपेट। गोंठना-(क्रि०) मोड़ना।
गोंड़रा-(हिं०पुं०) परिधि, घेरा।
गोंड़ा-(हिं०पुं०) घेरा हुआ स्थान बाड़ा।
गोंद-(हिं०पुं०) वृक्षों से निकलने वाला लसदार पसेव।
गोंदरा-(हिं०पुं०) कोमल घास या पुआल की बनाई हुई मोटी चटाई।
गोंदा-(हिं०पुं०) गारा मिट्टी का खपसा
गो-(सं०पुं०) गाय, पृथ्वी, जल, स्वर्ग, सूर्य, आँख, बाण, दिशा, किरण, इन्द्रिय, घोड़ा, आकाश, बिजली, जीभ, बैल, वज्र। गोकर्ण-(सं०पुं०) सर्प, खच्चर,। गोकुल-(सं०नपुं०) गो-समूह, गोशाला।
गोखरू-(हिं०पुं०) एक पौधा, गोंटे तथा बादले गूथकर बनाया हुआ साज, पैर या हाथ के तलवे में निकलने वाला एक रोग जिसमें रूखे कड़े दाने पड़ जाते हैं।
गोखा-(हिं०पुं०) मोखा, झरोखा।
गोगा-(हिं०पुं०) छोटा कांटा या मेख।
गोचना-(हिं०क्रि०) रोकना, छेंकना।
गोचनी-(हिं०स्त्री०) महीन छेद करने का यंत्र।
गोचर-(सं०पुं०) इन्द्रियों द्वारा ज्ञात विषय, ज्ञान विषय,।
गोजई-(हिं०स्त्री०) गेंहू जव मिश्रित अन्न
गोजर-(हिं०पुं०) कनखजूरा।
गोजी-(हिं०स्त्री०) बड़ी लाठी, लट्ठ।
गोटना-(हिं०स्त्री०) कपड़े के किनारे शोभा के लिये लगाई जानेवाली पट्टी, किनारी।
गोटा-(हिं०पुं०) बादले की बिनी हुई सोनहली या रुपैली पट्टी, सूखा हुआ मल
गोटी-(हिं०स्त्री०) लड़कों के खेलने का गोल टुकड़ा या कंकड़, चौपड़ का मोहरा, उपाय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोठ-(हिं.स्त्री.)गोष्ठ, गोशाला ।
गोड़-(हिं०पुं०) पैर, पाँव ।
गोड़इत-(हिं०पुं०) गाँवका पहरेदार।
गोड़ा-(हिं०पुं०)पलंग आदि का पाया।
गोड़ाई-(हिं०स्त्री०) गोड़ने की क्रिया या शुल्क।
गोड़ाना-(हिं०क्रि०) गोड़ने का काम दूसरे से कराना।
गोड़ारी-(हिं०स्त्री०) पलंग का वह सिला जिधर पैर रहता है ।
गोड़ी-(हिं०स्त्री०) लाभ ।
गोत-(हिं०पुं०) गोत्र, कुल ।
गोता-(हिं०पुं०) जल आदि में डूबने की क्रिया, डुब्बी ।
गोतिया, गोती-(हिं०वि०) अपने गोत्र का भाई, बन्धु ।
गोतीत-(सं०वि०) जो इन्द्रियों से जाना जा सके।
गोत्र-(सं०नपुं०) नाम, जंगल, क्षेत्र, मार्ग, समूह, धन, बन्धु, वंश, सन्तति, कुल ।
गोद-(हिं०स्त्री०) उत्संग वक्षस्थल ।
गोदनहार-(हिं०पुं०)शीतला का टीका लगाने वाला । **गोदनहारी**-(हिं० स्त्री०) गोदन गोदने वाली स्त्री ।
गोदना-(हिं०क्रि०) गड़ाना, चुभाना।
गोदनी-(हिं०स्त्री०) गोदना गोदनेकी सूई ।
गोदन्ती-(हिं०स्त्री०) एक रत्न ।
गोदा-(हिं०पुं०) बड़, पीपलया पाकर का पका फल।
गोदाम-(हिं०पुं०) सामग्री सुरक्षित रखने का स्थान ।
गोदी-(हिं०स्त्री०) देखो गोद ।
गोधूम-(सं०पुं०) गेहूँ ।
गोधूलि-(सं०स्त्री०) संन्ध्या का समय।
गोन-(हिं०स्त्री०) बैलों के पीठ पर लादने के लिये अन्न भरने का बोरा।
गोनिया-(हिं०स्त्री०) भीत की सिधाई अथवा कोना नापने का एक यंत्र।
गोप-(सं०पुं०) ग्वाला, अहीर, गले में पहिरने का एक आभूषण ।
गोपन-(सं० नपुं०) छिपाव, रक्षा।
गोपाल-(सं० पुं०) गोरक्षक, श्रीकृष्ण, ग्वाला ।
गोपी-(सं०स्त्री०) गोपपत्नी, अहिरिन।
गोपीचन्दन-(हिं० पुं०) एक प्रकारकी पीली मिट्टी।
गोपुर-(सं० नपुं०) गढ या नगर का फाटक, स्वर्ग ।
गोफा-(हिं० पुं०) नया निकला हुआ पत्ता, गाभा ।
गोबर-(हिं० पुं०) गौ की विष्टा, गौ का मल; **गोबरगणेश**-(हिं० वि०) भद्दा, मूर्ख; **गोबरी**-(हिं० स्त्री०) गोबर का लेप ।
गोभी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की तरकारी ।
गोमण्डल-(सं०नपुं०) भूमण्डल, किरण समूह।
गोमय-(सं०नपुं०) गोविष्ठा, गोबर ।
गोमुखी-(सं०स्त्री०) माला रखकर, जप करने की थैली ।
गोमेध-(सं०पुं०) गोयज्ञ, एक यज्ञ जिसमें गो मांस का हवन होता था।
गोरखधंधा-(हिं० पुं०) अनेक तारों कड़ियों या काठ के टुकड़ों का समूह, झगड़े या उलझन का कार्य ।
गोरस-(सं० पुं०) गाय का दूध, दही, मठा, छाछ ।
गोरसी-(हिं० स्त्री०) दूध गरम करने की अंगीठी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गोरा-(हिं० वि०) गौर वर्ण, श्वेत और स्वच्छ रंग का (मनुष्य), युरोप अमेरिका आदि का निवासी।
गोराई-(हिं०स्त्री०) गोरापन, सुन्दरता।
गोरू-(हिं०पुं०) सींघ वाले पशु, चौपाया।
गोरोचन-(सं० पुं०) एक प्रकार का पीला द्रव्य जो गौ के पित्त में से निकलता है।
गोलंबर-(हिं० पुं०) गुंबद, गोलाई।
गोल-(सं० नपुं०) वर्तुलाकार पदार्थ गोलाध्याय नामक ग्रन्थ, वृत्त, (नपुं०), गोलाकार पिण्ड, सब ओर वर्तुल,
गोलक-(सं०पुं०) गोल पिण्ड, आँख का ढेला, प्रतिदिन के आय का धन रखने की थैली, गुल्लक; गोलगप्पा-(हिं०पुं०) एक तरह का खाने का पदार्थ जो खटाई के रस में डूबा कर खाया जाता है।
गोलमाल-(हिं०पुं०) अव्यवस्था, गड़बड़ी
गोलयन्त्र-(सं०नपुं०) ग्रह नक्षत्र आदि गति जानने का यन्त्र विशेष।
गोला-(हिं०पुं०) किसी पदार्थका वर्तुलाकार पिण्ड, तोप का गोला, नारियल की गरी, अन्न आदि रखने का गोदाम, घास का गट्ठर, किराने की मण्डी, छाजन करने का लंबा लट्ठा, सूत आदि की लपेटी हुई पिण्डी;
गोलार्ध-(सं०पुं०) पृथ्वी का आधा भाग जो उसकी एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक बीचो बीच काटने से बनता है।
गोली-(हिं० स्त्री०) वटिका, बटिया, लड़कों के खेलने का कांच या मिट्टीका छोटा गोलाकार पिण्ड, बंदूक के भरकर छोड़ने का सीसे का ढला हुआ छोटा गोल पिण्ड।
गोलोक-(सं०पुं०) परमधाम।
गोलोचन-(हिं० पुं०) देखो गोरोचन।
गोविन्द-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
गोशाला-(सं०स्त्री०) गौ के रहने का स्थान।
गोष्ठ-(सं० पुं०) गोशाला, गोष्ठी, परामर्श, मण्डली।
गोष्ठी-(सं०स्त्री०) सभा, वार्तालाप, परामर्श, मण्डली।
गोसाई-(हिं०पुं०) गोस्वामी, जिसने इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो, साधु, मालिक, प्रभु।
गोसैयां-(हिं०पुं०) मालिक, प्रभु, ईश्वर।
गोह-(हिं० स्त्री०) छिपकली के जाति का एक जंगली जन्तु।
गोहरा-(हिं०पुं०) सुखाया हुआ गोबर जो जलानेके काम में आता है।
गोहराना-(हिं०क्रि०) पुकारना, बुलाना।
गोहरौर-(हिं०पुं०) पये हुए कंडोंका ढेर।
गोहार-(हिं० स्त्री०) पुकार, दोहाई।
गोहुवन-(हिं० पुं०) एक प्रकार का विषधर सर्प, कृष्णसर्प।
गौ-(हिं० स्त्री०) सुयोग, दाँव, घात, प्रयोजन, ढंग, पक्ष।
गौ-(सं०स्त्री०) गाय, गैया।
गौख-(हिं०स्त्री०) खिड़की, झरोखा।
गौखा-(हिं० पुं०) झरोखा, अरवा, आला।
गौखी-(हिं० स्त्री०) जूता।
गौण-(सं०वि०) अप्रधान, अमुख्य।
गौदुमा-(हिं० वि०) गाय की पोंछ के आकार का।
गौन-(हिं० पुं०) देखो गमन।
गौनहारिन, गौनहारी-(हिं० स्त्री०) वह स्त्री जिसका गानेका व्यवसाय हो
गौना-(हिं०पुं०) द्विरागमन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गौर-(सं० वि०) उज्वल, (वि०) स्वच्छ, निर्मल ।
गौरता-(सं०स्त्री०) गोराई, गोरापन ।
गौरव-(सं०नपुं०) सम्मान, आदर ।
गौरवित-(सं०वि०) पूज्य, आदरणीय ।
गौरांग-(सं०वि०) गोरे शरीर वाला ।
गौरिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का बना हुआ छोटा हुक्का, ।
गौरी-(सं०स्त्री०) गोरी स्त्री, पार्वती, आठ वर्ष की कन्या ।
गौरैया-(हिं०स्त्री०) गौरिया, चटक ।
ग्यान-(हिं०पुं०) देखो ज्ञान ।
ग्यारस-(हिं०स्त्री०) एकादशी तिथि ।
ग्यारह-(हिं०वि) दश और एक (पुं०) दस और एक की संख्या, ११ ।
ग्रन्थ-(सं०पुं०) शास्त्र, पुस्तक, सिक्खों का धर्मशास्त्र ।
ग्रन्थालय-(सं०पुं०) पुस्तकालय ।
ग्रन्थि-(सं०स्त्री०) गांठ, बन्धन ।
ग्रस-(हिं०पुं०) छल, छिद्र ।
ग्रसन-(सं०नपुं०) भक्षण, निगलना, पकड़, । **ग्रसना**-(हिं० क्रि०) कष्ट-देना, पकड़ना । **ग्रस्त**-(सं० वि०) भक्षित, पीड़ित, पकड़ा हुआ, **ग्रस्तास्त**-(सं०पुं०) ग्रहण लगने पर सूर्य या चन्द्रमा का बिना मोक्ष हुए अस्त होना । **ग्रस्तोदय**-(सं० पुं०) चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण लगा हुआ उदय होना ।
ग्रह-(सं०पुं०) सूर्य की परिक्रमा करने-वाला तारा; **ग्रहकक्षा**-(स्त्री०) वह वृत्ताकार पथ जिस पर ग्रह भ्रमण करता है ।
ग्रहण-(सं०नपुं०) स्वीकार, मंजूरी, ज्ञान, समझ, आदर, राहु द्वारा सूर्य या चन्द्र का आच्छादन ।
ग्रहणी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का रोग जिसमें खाया हुआ अन्न नहीं पचता, ज्यों का त्यों निकल जाता है ।
ग्रहदशा-(सं०पुं०) ग्रहों की स्थिति के अनुसार किसी मनुष्य की भली या बुरी अवस्था, अभाग्य ।
ग्राम-(सं०पुं०) गांव, छोटी बस्ती, ढेर, समूह, संगीत में सातों स्वरों का समूह, सप्तक, **ग्रामीण**-(हिं०वि०) देहाती, गँवार ।
ग्राम्य-(सं०वि०) ग्राम संबंधी, प्राकृत ।
ग्रास-(सं०पुं०) कौर, पकड़, सूर्य या चन्द्र ग्रहण लगना, तृण, घास ।
ग्रासना-(हिं०क्रि०) पकड़ना, घेरना, निगलना, कष्ट देना ।
ग्राह-(सं०पुं०) ग्रहण, पकड़, मगर, घड़ियाल, आग्रह ।
ग्राहक-(सं०वि०) ग्रहण करने वाला, मोल लेने वाला, चाहने वाला ।
ग्रीखम-(हिं०पुं०) देखो ग्रीष्म ।
ग्रीवा-(सं०स्त्री०) कन्धा, गरदन, गला ।
ग्रीष्म-(सं०पुं०) गरमी का ऋतु, गरम ।
ग्रैवेयक-(सं० नपुं०) हार, माला, हँसुली ।
ग्लपित-(सं०वि०) लज्जित, दग्ध ।
ग्लानि-(सं०स्त्री०) खिन्नता, अरुचि ।
ग्वाल-(हिं०पुं०) गोप, ग्वाल, अहीर ।

घ

घ-हिन्दी वर्णमाला के व्यजनों में से कवर्ग का चतुर्थ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है ।
घ-(सं०पुं०) घण्टा, घर्घर शब्द, वर्ष, साल ।
घंटा-(हिं०पुं०) अढ़ाई घड़ी का समय, बड़ी घंटी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घघोरना, घघोलना-(हिं०क्रि०) हिलाकर घोलना।

घंट-(हिं०पुं०) घड़ा, घंटा, मृतक क्रिया संबंध में जो घड़ा पीपलके वृक्ष में बाँधा जाता है।

घंटाघर-(हिं०पुं०) वह ऊंचा घर जिस पर चारों ओर से देख पड़ने वाली धरम घड़ी लगी हो जिसका घंटा दूरतक सुनाई पड़ता हो। घंटी-(हिं० स्त्री०) छोटा घंटा, लोटिया, जीभकी जड़के पास लटकती हुई मांस की छोटी ग्रन्थि, कौवा।

घई-(हिं०स्त्री०) चक्कर; (वि०) अथाह

घकार-(सं०पुं०) "घ" अक्षर।

घघरा-(हिं०पुं०) स्त्रियोंका लँहगा।

घट-(सं०पुं०) मिट्टीका पात्र, घड़ा।

घटक-(सं०पुं०) मध्यस्थ, बिचवई।

घटकार-(सं०पुं०) कुम्भकार, कोंहार।

घटती-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, कमी।

घटन-(सं०नपुं०) योजना, सम्मेलन।

घटना-(हिं० क्रि०) उपस्थित होना, ठीक से बैठना, मेलमें होना, मेल में मिल जाना, कम होना, पर्याप्त न होना; (स्त्री०) अकस्मात् किसी बातका होना, दैवगति।

घटवाई-(हिं० स्त्री०) कम करवाई।

घटवार-(हिं०पुं०) घाटका कर लेने वाला, मल्लाह।

घटहा-(हिं०पुं०) घाटका ठेकेदार, एक पारसे दूसरे पार जाने वाली नाव।

घटा-(सं०स्त्री०) समूह, झुण्ड, उमड़ते हुए मेघों क समूह।

घाटई-(हिं०स्त्री०) हीनता, अप्रतिष्ठा।

घटाटोप-(सं०पुं०) आडंबर, पाखण्ड, ओहार, चारों ओर से घिरी हुई बादलों की घटा।

घटाना-(हिं०क्रि०) न्यून करना, कम करना; घटाव-(हिं० पुं०) न्यूनता, कमी।

घटिका यन्त्र-(सं०नपुं०) समय बतलाने का यन्त्र।

घटित-(सं०वि०) रचित, निर्मित।

घटिया-(हिं०वि०) कम मूल्य का, सस्ता, तुच्छ, नीच, अधम।

घटी-(सं०स्त्री०) घड़ी, चौबीस मिनट का काल, समय सूचक यन्त्र, छोटा घड़ा, गगरी, (हिं० स्त्री०) न्यूनता, कमी, घाटा, हानि।

घट्ठा-(हिं०पुं०) शरीर पर का उभड़ा हुआ चिह्न जो रगड़ लगने से पड़ जाता है।

घड़घड़-(हिं०पुं०) घड़घड़ाहट, बादल गरजने या गाड़ी चलने का शब्द।

घड़घड़ाना-(हिं० क्रि०) घड़घड़ शब्द होना।

घड़नैल-(हिं० पुं०) बाँस में घड़े बाँध कर बनाया हुआ ढांचा जिसपर चढ़कर छोटी नदी पार हो सकती है।

घड़ा-(हिं०पुं०) मिट्टी का गगरा, गगरी।

घड़िया-(हिं० स्त्री०) सोना चाँदी गलाने का सोनार का पात्र, मिट्टी का छोटा पात्र।

घड़ियाल-(हिं०पुं०) घण्टा, एक हिंस्रक जलजन्तु, ग्राह।

घड़ी-(हिं०स्त्री०) समय बतलाने वाला यन्त्र, समय, काल, अवसर, चौबीस मिनट का समय।

घड़ौंची-(हिं० स्त्री०) भरा हुआ जल का घड़ा रखने की तिपाई।

घतिया-(हिं०वि०) धोखा देनेवाला।

घतियाना-(हिं०क्रि०) अपनी दांव या घात में लाना, चुराना, छिपाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घन-(सं०पुं०) मेघ, समूह, विस्तार, लोहार का गरम लोहा पीटने का बड़ा हथौड़ा, काँसे का बाजा, पिण्ड, शरीर, तीन अंकों का गुणनफल, लम्बाई, चौड़ाई, और मोटाई का विस्तार (वि०) ठोस, घना, गझिन, अधिक,

घनकोदण्ड-(सं०पुं०) इन्द्रधनुष।

घनकारा-(वि०) गरजने वाला।

घनक्षेत्र-(पुं०) वह क्षेत्र जिसकी लम्बाई चौड़ाई तथा ऊँचाई बराबर हो;

घनघनाना-(हिं०क्रि०) घंटे के समान शब्द करना या होना।

घनघनाहट-(हिं०स्त्री०) घनघनका शब्द

घनघोर-(हिं०पुं०) घनघनाहट, (वि०) बहुत घना; **घनघोरघटा**-काली काली घटा।

घनचक्कर-(हिं०पुं०) चंचल बुद्धि का मनुष्य, मूढ़, मूर्ख।

घनतिमिर-(सं०नपुं०) गहरा अन्धकार

घननाद-(सं०पुं०) गरज।

घनप्रिय-(सं०पुं०) मयूर, मोर।

घनफल-(सं०नपुं०) लंबाईचौड़ाई और मोटाई गहराई या ऊंचाई तीनों का गुणनफल, वह गुणनफल जो किसी संख्या को उसी संख्या से दो बार गुणा करने से प्राप्त हो।

घनमूल-(सं०पुं०) गणित में जिसी धन राशि का मूल अङ्क यथा ६४ का घन मूल ४ है।

घनवाही-(हिं०स्त्री०) घन से तपे हुए लोहे को पीटने का काम।

घनश्याम-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण, (वि०) मेघके समान काला।

घना-(हिं० वि०) सघन, गझिन, घनिष्ठ, अधिक।

घनात्मक-(सं०वि०) जिसकी लंबाई, चौड़ाई तथा मोटाई, ऊंचाई या गहराई समान हो।

घनिष्ठ-(सं०वि०) घना, गाढ़ा, बहुत अधिक।

घने-(हिं०वि०) अनेक, बहुत; **घनेरा**-अतिशय, बहुत, अगणित, अत्यन्त।

घनोपल-(सं०पुं०) ओला, विनौला।

घपला-(हिं०पुं०) गड़बड़, गोलमाल।

घबड़ाना, घबराना-(हिं० क्रि०) व्यग्र होना, उद्विग्न होना।

घबराहट-(हिं०स्त्री०) अशान्ति, उद्विग्नता।

घमंका-(हिं०पुं०) घूंसा, मुक्का।

घमंड-(हिं० पुं०) गर्व, अहंकार,। **घमंडी**-(हिं० वि०, स्त्री० घमंडिन) अहंकारी, अभिमानी।

घम-(हिं०पुं०) कोमल वस्तु पर कड़ा आघात पड़ने का शब्द; **घमकना** (हिं०क्रि०) गभीर शब्द होना, घूसा मारना, गरजना।

घमरौल-(हिं०स्त्री०) उधम, उपद्रव।

घमासान-(हिं० पुं०) गहरी लड़ाई, भयंकर युद्ध, (वि०) प्रचण्ड, भयंकर।

घर-(हिं०पुं०) गृह, स्वदेश, जन्मभूमि, वंश, कार्यालय, छिद्र, छेंद, गृहस्थी, उत्पादक।

घरउ-(हिं० वि०) निजका, अपना।

घरघराना-(हिं० क्रि०) घरघर शब्द करना, (पुं०) परिवार, कुटुम्ब, वंश। **घरघराहट**-घरघर शब्द।

घरघाल, घरघालन-(हिं०वि०) परिवार का नाश करने वाला।

घरजाया-(हिं०स्त्री०) घर का दास।

घरदासी-(हिं०स्त्री०) गृहिणी, भार्या, पत्नी।

घरद्वार-(हिं०पुं०) ठौर, ठिकाना, गृहस्थी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घरनी-(हिं०स्त्री०) घरवाली, गृहिणी ।
घरपत्ती-(हिं०स्त्री०) बेहरी, अंशदान ।
घरबारी-(हिं०पुं०) गृहस्थ, कुटुम्बी ।
घराऊ-(हिं०वि०) गृहसंबंधी, निजी ।
घराती-(हिं०पुं०) विवाह में कन्या के पक्ष के मनुष्य ।
घराना-(हिं०पुं०) वंश, कुल ।
घरिया-(हिं०स्त्री०) देखो घड़िया ।
घरी-(हिं०स्त्री०) घड़ी, तह, परत ।
घरीक-(हिं० क्रि०वि०) घड़ी भर, थोड़ी देर तक ।
घरू-(हिं०वि०) गृहस्थी, संबंधी, घरका
घरेलू-(हिं०वि०) घरमें रहनेवाला, पलुआ, पालतू, घरका, निजका ।
घरौंदा, घरौंघा-(हिं०पुं०) छोटे बच्चों के खेलने का कागज, मिट्टी, लकड़ी आदि का बना हुआ छोटा घर ।
घर्घर-(सं०पुं०) घड़घड़ाहट का शब्द ।
घर्म-(सं०पुं०) आतप, धूप, घाम,
घर्मबिन्दु-पसीना; घर्मांशु-सूर्य ।
घर्राटा-(हिं०पुं०) गहरी नींद में सांस लेने का शब्द;
घर्षण-(सं०पुं०) रगड़, घिस्सा ।
घलना-(हिं०क्रि०) फेंकाजाना, गिरपड़ना।
घलुआ-(हिं०पुं०) परिमाण से अधिक वस्तु जो ग्राहक को (तौल से अधिक) दी जाय ।
घसकना-(हिं०क्रि०) देखो खिसकना ।
घसना-(हिं० क्रि०) रगड़ना, घिसना ।
घसिटना-(हिं०क्रि०) रगड़ते हुए खींचना
घसियारा-(हिं०पुं०) (स्त्री० घसियारिन) घास छीलनेवाला, घास बेंचनेवाला ।
घसीट-(हिं०स्त्री०) जल्दी लिखने का काम, जल्दी में लिखा हुआ लेख ।
घसीटना-(हिं०क्रि०) रगड़ खाते हुए खींचना, जल्दी से लिखकर काम चालू करना ।
घस्सा-(हिं०पुं०) घिस्सा, रगड़ ।
घांघरा-(हिं०पुं०) घाघरा, लहंगा ।
घांटी-(हिं०स्त्री०) गले के भीतर की घंटी, (कौआ) ।
घांइँ-(हिं०स्त्री०) ओर, सन्धि, बार ।
घाइ-(हिं०स्त्री०) चोट, छल, धोखा, आघात ।
घाऊघप-(हिं०वि०) गुप्त रूप से किसी का धन हरण करने वाला ।
घाए-(हिं०अव्य०) ओर ।
घाघ-(हिं०पुं०) अति चतुर मनुष्य ।
घाघरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों का लहंगा,
घाट-(हिं०पुं०) नदी आदि का वह स्थान जहां लोग नहाते धोते या नाव पर चढ़ते है, पहाड़ी स्थान, दिशा, डीलडौल, रीति, तलवारकी धार, बुराई, छल, कपट, (वि०) कम, थोड़ा ।
घाटा-(हिं०पुं०) हानि, घटी ।
घाटिया-(हिं०पुं०) घाटों पर बैठ कर दान लेनेवाला, ब्राह्मण, गंगापुत्र ।
घाटी-(हिं०स्त्री०) पर्वतों के बीच की भूमि, पहाड़ का ढालुआ स्थान, दर्रा ।
घात-(हिं०पुं०) धक्का, प्रहार, चोट, गणित में गुणन फल, दाँव, ताक,
घातक-(सं०वि०) हत्यारा, शत्रु ।
घातिक-(हिं०पुं०) घातक, हत्यारा ।
घाती-(सं०पुं०) मारने वाला, घातक, हत्यारा, संहारक ।
घान-(हिं०पुं०) जितनी वस्तु एक बार कोल्हू या चक्की में डाली जाती है, अथवा पकाई जाती है ।
घाना-(हिं०क्रि०) मारना, नाश करना, पकड़ना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घानी-(हिं०स्त्री०) देखो घान, समूह ढेर।
घाम-(हिं०पुं०) आतप, धूप।
घामड़-(हिं० वि०) मूर्ख, आलसी।
घाय-(हिं०पुं०) देखो घाव।
घायक-(हिं०वि०) नाश करने वाला।
घालक-(हिं०पुं०) नाश करने वाला।
घालना-(हिं०क्रि०) गिराना, डालना, रखना, फेंकना, बिगाड़ना,।
घालमेल-(हिं०पुं०) अनेक प्रकार की वस्तुओंकी एक साथ मिलावट।
घाव-(हिं०पुं०) शरीर का वह स्थान जहां पर चोट लगी हो या कट गया हो, क्षत।
घास-(सं०स्त्री०) भूमि पर उगने वाला छोटा तृण, पशुओं का चारा।

घिग्घी-(हिं०स्त्री०) रोते रोते सांस लेनेमें रुकावट होना, हिचकी; **घिघियाना**-(हिं० क्रि०) गिड़गिड़ाना,।
घिचपिच-(हिं०स्त्री०) स्थानकी संकीर्णता; (वि०) अस्पष्ट।
घिन-(हिं०स्त्री०) घृणा, अरुचि।
घिनाना-(हिं०क्रि०) घृणा करना।
घिनावना, घिनौना-(हिं० वि०) घृणित, घिनौना।
घिरत-(हिं०पुं०) देखो घृत, घी।
घिरना-(हिं०क्रि०) चारो ओर से घेरा जाना।
घिरनी-(हिं०स्त्री०) गराड़ी, चक्कर।
घिराई-(हिं०स्त्री०) घेरनेकी क्रिया।
घिराव-(हिं०पुं०) घेरने का काम, घेरा
घिरौंची-(हिं०स्त्री०) देखो घिड़ौंची।
घिराना-(हिं०क्रि०) घिसना, रगड़ना।
घिर्राना-(हिं०क्रि०) घसीटना।
घिर्री-(हिं०स्त्री०) देखो घिरनी।
घिसकना-(हिं०क्रि०) सरकना, खसकना
घिसबिस-(हिं०स्त्री०) गड़वड़ी।
घिसटना-(हिं०क्रि०) घसीटा जाना।
घिसन-(हिं०स्त्री०) रगड़,। **घिसना**-(हि०क्रि०) रगड़ना,।
घिसपिस-(हिं०स्त्री०) मेलजोल।
घिसवाना-(हिं०क्रि०) रगड़वाना।
घिसाई-(हिं०स्त्री०) घिसने की क्रिया।
घिस्सा-(हिं०पुं०) रगड़, धक्का, ठोकर।
घींच-(हि०स्त्री०) घींचने का कार्य।
घी-(हिं०पुं०) घृत, तपाया हुआ मक्खन
घीकुवार-(हिं०वि०) खारपाठा।
घीसा-(हिं०पुं०) देखो घिस्सा।
घुंघची-(हिं०स्त्री०) गुञ्जा, गुँजिका,
घुंघनी-(हिं०स्त्री०) तेल या घी में तला हुआ भिगाया हुआ अन्न।
घुंघरारे, घुघराले-(हिं०वि०) घुंघरुवा, छल्लेदार (बल खाये हुए) बाल।
घुंघरू-(हिं०पुं०) धातु की बनी हुई पीली गुरिया जिसके परस्पर टकराने से घुनघुन शब्द होता है,
घुंडी-(हिं०स्त्री०) कपड़े का बना हुआ मटर के समान गोल बटन, बाजू।
घुग्घी-(हिं०स्त्री०) तिकोना लपेटा हुआ कम्बल जिसको किसान लोग जाड़े से बचने के लिये सिर से ओढ़ते हैं, घोघी।
घुग्घू-घुघुआ-(हिं०पुं०) उल्लू, घुग्घू।
घुघुआना-उल्लू की तरह बोलना।
घुघुरी-(हिं०स्त्री०) देखो घुघुनी।
घुटकना-(हिं०क्रि०) निगल जाना।
घुटकी-(हिं०स्त्री०) गले की वह नली जिसके द्वारा पेट में खाना पानी जाता है।
घुटना-(हिं०पुं०) टांग और जांघ के बीच की गांठ, फँसना, रुकना, कड़ा पड़ना, रगड़ कर चिकना करना,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मित्रता होना ।

घुटन्ना-(हिं०पुं०) घुटने तक का पायजामा।

घुटवाना-(हिं०क्रि०) बाल मुड़वाना

घुटाई-(हिं०स्त्री०) घोटने या रगड़ने का काम, ।

घुट्टी-(हिं०स्त्री०) छोटे बच्चों को पाचन के लिये पिलाने वाली औषधि।

घुड़कना-(हिं०क्रि०) डांटना, डपटना।

घुड़की-(हिं०स्त्री०) डांट डपट ।

घुड़चढ़ा-अश्वारोही, । घुड़दौड़-(हिं० स्त्री०) घोड़ों की दौड़, घोड़ा दौड़ने का स्थान । घुड़मुंहाँ-(हिं०पुं०) लम्बे भद्दे मुख वाला मनुष्य; घुड़साल-(हिं०स्त्री०) घोड़ों को बांधने का स्थान ।

घुड़िया-(हिं०स्त्री०) देखो घोड़िया ।

घुड़ुकना-(हिं०क्रि०) देखो घुड़कना ।

घुण-(सं०पुं०) घुन ।

घुन-(हिं०पुं०) छोटा कीड़ा जो अन्न, लकड़ी आदि में लगता है ।

घुनघुना-(हिं०पुं०) देखो झुनझुना ।

घुनना-(हिं०क्रि०) घुन से लकड़ी आदि का खाया जाना, भीतर ही भीतर क्षय होना ।

घुन्ना-(हिं०वि०) मन में बुरा मानने वाला ।

घुन्नी-(हिं०वि०) नन्हीं, छोटी ।

घुप-(हिं०वि०) गहरा (अन्धकार) ।

घुमना-(हिं०क्रि०) बादलों का मेड़राना ।

घुमंडना-(हिं०वि०) बहुत घूमनेवाला।

घुमची-(हिं०स्त्री०) गुञ्जा, घूंघची ।

घुमटा-(हिं०पुं०) सिरमें चक्कर आना,

घुमड़-(हिं०स्त्री०) बरसने वाले बादलों का घेरना ।

घुमना-(हिं०वि०) अधिक घूमने वाला ।

घुमरी-(हिं०स्त्री०) भँवर, चक्कर, घुमड़ी।

घुमाना-(हिं०क्रि०) चक्कर देना, टहलना ।

घुमाव-(हिं०पुं०) घूमनेका कार्य, ।

घुरकना-(हिं०क्रि०) देखो घुड़कना ।

घुरघुरा-(हिं०पुं०) झींगुर ।

घुरघुराना-(हिं०क्रि०) कण्ठ से घुरघुर शब्द निकालना ।

घुर्मित-(हिं०वि०) घूमता या चक्कर खाता हुआ ।

घुलना-(हिं०क्रि०) तरल पदार्थ का किसी वस्तु से मिल जाना, गलना ।

घुलाना-(हिं०क्रि०) गलाना, शरीर दुर्बल करना, मुख में रखकर रस चुभलाना, कोमल करना ।

घुवा-(हिं०पुं०) देखो घूआ ।

घुसना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, चुभना, धँसना ।

घूंघट-(हिं०पुं०) वस्त्र का वह भाग जिससे स्त्रियां अपना मुख ढांप लेती हैं ।

घूंघर-(हिं०पुं०) बालोंमें पड़े हुए मरोड़ या छल्ले ।

घूंट-(हिं०पुं०) पानी दूध इत्यादि द्रव पदार्थ का उतना अंश जो एक बार गले से नीचे उतारा जाय ।

घूंटी-(हिं० स्त्री०) बच्चोंकी पाचन सुधारने की औषधि ।

घूस-(हिं०स्त्री०) उत्कोच, घूस ।

घूसा-(हिं०पुं०) बंधी हुई मुट्ठी, डुक।

घूआ-(हिं०पुं०) मूंज सरकंडे आदि का रूईकी तरहका फूल, एक प्रकार का कीड़ा, रोवां ।

घूक-(हिं०पुं०) उल्लू पक्षी, रुरुआ ।

घूघू-(हिं०पुं०) देखो घुग्घू ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घूटना-(हिं०क्रि०) सांस रोकना ।
घूमना-(हिं०क्रि०) उधर उधर फिरना चक्कर लगाना ।
घूर-(हिं०पुं०) कूड़ा करकट ।
घूरना-(हिं०क्रि०) आँख गड़ाकर बारंबार बुरी दृष्टिसे देखना ।
घूस-(हिं०पुं०) उत्कोच ।
घृत-(सं०पुं०) घी, घीव ।
घेंट-(हिं०पुं०) ग्रीवा, गरदन ।
घेंटा-(हिं०पुं०) सुअर का छोटा बच्चा
घेतल,घेतला-(हिं०पुं०) महाराष्ट्री जूता
घेर-(हिं०पुं०) चारो ओर का फैलाव ।
घेरघार-(हिं०पुं०) विस्तार,अनुरोध ।
घेरना-(हिं०क्रि०) चारो ओर से छेंकना, बांधना, रोकना, विनय करना।
घेरा-(हिं०पुं०) चारो ओर की सीमा, फैलाव, मण्डल, घिरा हुआ स्थान।
घेंवर-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई
घोंघा-(हिं०पुं०) शंख के आकार का एक कीड़ा जो जलाशयों में पाया जाता है ।
घोंचवा, घोंचा-(हिं०पुं०) स्तवक, गुच्छा
घोंट-(हिं०पुं०) घोंटने का काम ।
घोंटना-(हिं०क्रि०) पानी दूध इत्यादि को थोड़ा थोड़ा कर के गले के नीचे उतारना ।
घोंपना-(हिं०क्रि०) गड़ाना, घसाना।
घोंसला-(हिं०पुं०) नीड़, खोंता ।
घोंकना-(हिं०क्रि०) पाठ को याद करने के लिये उसको बारंबार दोहराना ।
घोट, घोटक-(सं०पुं०) अश्व, घोड़ा।
घोटना-(हिं०क्रि०) सिलपर बट्टे से रगड़ देना, चमकाना, अभ्यास करना, रटना, मूड़ना, गला मरोड़ना, (पुं०) घोंटने का औंजार । घोटनी-(हिं०-स्त्री०) घटने की कोई छोटी वस्तु ।
घोटवाना-(हिं०क्रि०) रगड़वाना, सिर या दाढ़ी के बाल मुड़वाना ।
घोटाई-(हिं०स्त्री०) घोंटने की क्रिया या शुल्क ।
घोटाला-(हिं०पुं०) गड़बड़, उपद्रव।
घोटू-(हिं०वि०) घोटने वाला ।
घोड़ चढ़ा, घोड़दौड़-देखो घुड़चढ़ा, घुड़दौड़ ।
घोड़ा-(हिं०पुं०) घोटक, अश्व, बंदूकमें गोली चलाने का खटका, शतरंज का एक मोहरा ।
घोड़िया (हिं०पुं०) भीतमें लगाई हुई खूँटी, विराकट ।
घोड़ी-(हिं०स्त्री०) मादा घोड़ा ।
घोर-(सं०वि०) भयंकर, घना, कठिन, दुर्गम, अत्यन्त, (स्त्री०) गरज,
घोरी-(हिं०स्त्री०) घोड़ी ।
घोल-(हिं०पुं०) घोलकर बनाया हुआ पदार्थ, मट्ठा । घोलना-(हिं०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ में कोई वस्तु हिलाकर मिलाना ।
घोष-(सं०पुं०) अहिरों की बस्ती, गोशाला । घोषणा-(स्त्री०) ऊंचे स्वर से सूचना, मुनादी, डुग्गी, ध्वनि, आवाज ।
घोसी-(हिं०पुं०) अहीर, ग्वाला ।
घौर,घौद-(हिं०पुह०) फलोंका गुच्छा ।
घ्राण-(सं०स्त्री०) सूंघने की शक्ति, सुगन्ध, नाक ।

ङ

ङ-व्यजन वर्ण का पाँचवां तथा कवर्ग का अन्तिम वर्ण, इसका उच्चारण कण्ठ और नासिका से होता है ।
ङ-(सं०पुं०) घ्राण शक्ति, सुगन्ध, गौरव, महत्व, गन्ध ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

च

च-हिन्दी वर्णमाला का बाइसवां अक्षर तथा छठवाँ व्यंजन, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

च-(सं०पुं०) कछुवा, चन्द्रमा।

चंक-(हिं०वि०) पूर्ण, पूरा, समस्त, समूचा

चंक्रमण-(सं०पुं०) टहलना।

चंग-(फा०स्त्री०) एक छोटा बाजा जो डफ के आकार का होता है।

चंगना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना।

चंगा-(हिं०वि०) आरोग्य, स्वस्थ।

चंगु, चंगुल-(हिं०पुं०) पकड़, पशुओं या पक्षियों का पंजा, अंगुलियों की पकड़।

चंगेर, चंगेरी-(हिं०स्त्री०) बाँस की बनी हुई छिछली चौड़ी टोकरी।

चंचरी-(हिं०स्त्री०) पानी का भँवर, होली में गाने की एक गीत।

चंचलताई, चंचलाई-(हिं०स्त्री०) चपलता, चंचलता।

चंचा-(हिं०स्त्री०) पक्षियों के डराने के लिये खेतों में रक्खा हुआ पुतला।

चचोरना-(हिं०क्रि०) चूसना।

चंट-(हिं०वि०) धूर्त, चतुर।

चंटाई-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता, अत्याचार।

चंडाई-(हिं०स्त्री०) उतावलापन।

चंडाल-(हिं०पुं०) श्वपच, डोम।

चंडावल-(हिं०पुं०) सेना के पीछे का भाग, वीर योधा, पहरेदार, चौकीदर।

चंडाह-(हिं० पुं०) एक प्रकार का मोटा वस्त्र।

चंडू-(हिं०पुं०) एक मादक पदार्थ जो तमाखू की तरह चिलम पर रख कर पिया जाता है।

चंदक-(हिं० पुं०) चन्द्रमा, चाँद, अर्ध चन्द्राकार गहना जो माथे पर पहिरा जाता है।

चंदला-(हिं०वि०) खल्वाट, गंजा।

चंदवा-(हिं०पुं०) सिंहासन या गद्दी के ऊपर लगाया हुआ छोटा मण्डप, गोलाकार चकती।

चंदिया-(हिं०स्त्री०) कपाल का मध्य भाग, खोपड़ी।

चंपई-(वि०) चंपा के रंग का, पीला।

चंपत-(हिं०वि०) अन्तर्धान।

चपना-(हिं०क्रि०) भार से दबना, लज्जित होना।

चंपाकली-(हिं०स्त्री०) गले का एक आभूषण।

चंबू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान, टोटीदार छोटा गडुआ, झारी।

चवर-(हिं०पुं०) चामर, घोड़े हाथी के सिर पर लगाने की कलंगी, फुन्दना, झालर।

चउ-(हिं०) उपसर्ग जो "चौ" के बदले अनेक शब्दों में प्रयोग होता है।

चउहट (हिं०पुं०) चौहट्टा, चौरहा।

चउतरा-(हिं०पुं०) देखो चबूतरा।

चक-(हिं०पुं०) चकई नाम का लड़कों का खिलौना, चकवा पक्षी, भूमि का बड़ा टुकड़ा, पट्टी, गांव, अधिकार, (वि०) अधिक व्यग्र, (पुं०) चोटी में बाँधने का सोने का चक्र।

चकई-(हिं०स्त्री०) घिरनी के आकार का एक खिलौना।

चकचकाना-(हिं०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ का रस कर बाहर निकलना।

चकचाल-(हिं०पुं०) चक्कर, भ्रमण,

चकचून-(हिं० वि०) चूर्ण किया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चकचूरना-(हिं०क्रि०) चूरचूरकरना
चकचौंध-(हिं०पुं०) देखो चकाचौंध ।
चकती-(हिं०स्त्री०) पट्टी, धज्जी।
चकत्ता-(हिं०पुं०) चमड़े के ऊपर पड़ी हुई चिपटी सूजन ।
चकनाचूर-(हिं०वि०) टुकड़े टुकड़े किया हुआ, अति श्रान्त ।
चकपक, चकबक-(हिं०वि०) चकित ।
चकपकाना-(हिं०क्रि०) भौंचक्क होना,
चकरा-(हिं०वि०) फैला हुआ ।
चकराना-(हिं०क्रि०) घूमना, चकित होना, भूलना, व्यग्र होना, घबड़ाना,
चकरानी-(हिं०स्त्री०) दासी ।
चकरी-(हिं०स्त्री०) दाल दरने या आँटा पीसने की चक्की ।
चकला-(हिं०पुं०) पत्थर या काठका गोल चिकना पटरा जिसपर रोटी बेली जाती है, चौका, जिला।
चकलेदार-(हिं०पुं०) किसी प्रान्त का अधिकारी ।
चकवा-(हिं०पुं०) चक्रवाक पक्षी ।
चका-(हिं०पुं०) चाक, पहिया, चक्का।
चकाचक-(हिं०स्त्री०) निरन्तर प्रहार का शब्द (क्रि०वि०) भरपूर, पेट भर ।
चकाचौंध-(हिं०स्त्री०) तीव्र प्रकाश के कारण आँखों का झिपना, तिलमिलाहट
चकाना-(हिं०क्रि०) चकराना, चकपकाना ।
चकार-(सं०पुं०) वर्णमाला का 'च' अक्षर ।
चकित-(सं०वि०) विस्मित, आश्चर्य युक्त ।
चकोटना-(हिं०क्रि०) चुटकी से काटना।
चकोतरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का खटमीठा जंभीरी नींबू ।
चकोता-(हिं०पुं०) देखो चकता ।
चकोर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा पहाड़ी तीतर ।
चकोरी-(हिं०स्त्री०) मादा चकोर ।
चकोह-(हिं०पुं०) पानी में का भँवर ।
चकौंध-(हिं०स्त्री०) देखो चकाचौंध ।
चक्कर-(हिं०पुं०) गोल घेरा, पहिये का भ्रमण, घुमाव, पहिये का केन्द्र पर घूमना, जटिलता, सिर घूमना, पानी का भँवर, व्यग्रता ।
चक्कव-(हिं०वि०) चक्रवर्ती (राजा)
चक्का-(हिं०पुं०) पहिये की आकार की कोई वस्तु, ईंट या पत्थर का बड़ा चिपटा टुकड़ा; **चक्की**-(हिं०स्त्री०) दाल दरने या आटा पीसने का यन्त्र, जाँता, पैर के घुटने की गोल हड्डी ।
चक्कू-(हिं०पुं०) देखो चाकू ।
चक्र-(सं०पुं०) पहिया, जाँता, चाक वर्तुलाकार कोई वस्तु, पहिये के आकार का लोहे का एक अस्त्र, जल का भँवर बवंडर, मंडली, समूह, प्रदेश, राज्य, घेरा, घुमाव, चक्कर, **चक्रगोसा**-(हिं०पुं०) राज्यरक्षक, सेनापति ।
चक्रदंष्ट्र-(सं०पुं०) शूकर, सुअर ।
चक्रपाद-(सं०पुं०) गाड़ी, रथ ।
चक्रपाल-(सं०पुं०) सूबेदार, चकलेदार।
चक्रवर्ती-(सं०वि०) सार्वभौम राजा ।
चक्रवात-(सं०पुं०) चकवा पक्षी ।
चक्रवाक-(सं०पुं०) चक्कर खानेवाली वेग की हवा, बवंडर ।
चक्रवृद्धि-(सं०स्त्री०) व्याज को मूल में जोड़कर उसपर सूद लगाना; **चक्रव्यूह**-(सं०पुं०) युद्ध के समय किसी व्यक्ति या वस्तु को सुरक्षित रखने के लिये उसके चारों ओर मण्डलाकार सेना स्थापित करना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्रांश-(स०पुं०) राशि चक्र का ३६० वाँ अंश।
चक्राकार-(सं० वि०) मण्डलाकार, गोल।
चकित-(हिं०वि०) देखो चकित।
चक्षण-(सं०पुं०) कृपादृष्टि, अनुग्रह।
चक्षु-(सं०पुं०) देखने की इन्द्रिय, आँख
चखचख-(हिं०पुं०) झगड़ा, कहासुनी।
चखचौंध-(हिं०स्त्री०) देखो चकचौंध।
चखना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेते हुए खाना।
चखाचखी-(हिं०स्त्री०) झगड़ा, विरोध वैर।
चखाना-(हिं०क्रि०) स्वाद दिलाना।
चखु-(हिं०पुं०) चक्षु, आँख, नेत्र।
चगड़-(हिं०वि०) धूर्त, चतुर।
चचा-(हिं०पुं०) पिता का भाई, पितृव्य।
चचिवा-(हिं०वि०) चचा से संबंध रखने वाला।
चाची-(हिं०स्त्री०) चाचा की स्त्री।
चचेरा-(हिं०वि०) चचा संबंधी।
चचोड़ना-(हिं०क्रि०) दाँतों से दब कर चूसना।
चञ्चरीक-(सं०पुं०) भँवरा, भ्रमर।
चञ्चल-(सं०वि०) अस्थिर, अधीर, उद्विग्न, चुलबुला। **चञ्चलता**-(स्त्री०) चपलता।
चञ्चला-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, बिजली।
चञ्चु-(सं०पुं०) पक्षी की चोंच।
चट-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्र, झटपट, तुरंत, (पुं०) धब्बा, कलंक, चटचट का शब्द, (वि०) चाट पोंछ कर कुल खाया हुआ।
चटक-(सं०पुं०) गौरैया पक्षी, चमक, **चटकीलापन**-(वि०) चमकीला, (स्त्री०) शीघ्रता, (हिं० वि०) झटपट, (वि०) चरपरा।
चटकीलापन-(हिं० स्त्री०) शीघ्रता, तीव्रता।
चटकदार-(हिं०वि०) चटकीला, भड़कीला।
चटकन-(हिं०पुं०) टूटने फूटने का शब्द
चटकना-(हिं०क्रि०) हलकी चोट से टूट जाना, तड़कना, चिड़चिड़ाना, गरमी से लकड़ी आदि में दरार पड़ना, खटकना, (पुं०) थप्पड़।
चटकनी-(हिं० स्त्री०) किवाड़ बन्द करने की सिटकिनी।
चटकमटक-(हिं०स्त्री०) आडम्बर, ठसक,
चटकबाही-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता।
चटका-(हिं०पुं०) शीघ्रता, स्वाद।
चटकाना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, अलग करना, चिढ़ाना।
चटकारा-(हिं०वि०) चमकीला, चटकीला।
चटकी-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुँह की गगरी,
चटकीला-(हिं०वि०) भड़कीला, चमकीला, चरपरा, (पुं०) आभा।
चटखनी-(हिं०स्त्री०) चटकिनी, सिटकिनी।
चटचट-(हिं०पुं०) चटकने या टूटने का शब्द, (क्रि०वि०) जल्दी से।
चटचटाना-(हिं०क्रि०) चटचट शब्द करते हुए टूटना।
चटनी-(हिं०स्त्री०) चाटने की वस्तु, अवलेह,
चटपट-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्र, झटपट, तुरत। **चटपटा**-(हिं०वि०) तीक्ष्ण स्वाद का, **चटपटाना**-(हिं० क्रि०) शीघ्रता करना। **चटपटी**-(हिं०स्त्री०) आतुरता, शीघ्रता, व्यग्रता, बेचैनी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चटशाला,चटसार-(हिं० स्त्री०) बच्चों को पढ़ाने की पाठशाला।
चटाई-(हिं०स्त्री०) बाँस की फट्टी, ताड़ के पत्ते आदि का बना हुआ बिछावन, चाटने की क्रिया।
चटाका-(हिं०पुं०) लकड़ी या किसी कड़ी वस्तु के टूटने का शब्द।
चटाचट-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के टूटने का शब्द।
चटाना-(हिं०क्रि०) चाटने का काम कराना, तलवार छूरी आदि पर सान देना।
चटापटी-(हिं०स्त्री०) जल्दी, शीघ्रता।
चटावन-(हिं०पुं०) अन्नप्राशन।
चटु-(हिं०पुं०) प्रिय वाक्य।
चटुक-(हिं०वि०) चपल, चंचल।
चटुल-(हिं०वि०) चंचल।
चटुला-(सं०स्त्री०) बिजली।
चटोरा-(हिं०वि०) लोभी, लोलुप।
चट्ट-(हिं०वि०) समाप्त, लुप्त।
चट्टा-(हिं०पुं०) शिष्य, चेला, बाँस की चटाई, खुला मैदान जिसमें वृक्ष न हों, राशि, ढेर।
चट्टान-(हिं०स्त्री०) पत्थर का लंबा-चौड़ा, टुकड़ा, शिला खण्ड।
चट्टा बट्टा-(हिं०पुं०)लड़कों के खेलने का खिलौने का समूह।
चट्टी-(हिं०स्त्री०) पड़ाव, बिना एड़ी का स्लीपर
चट्टू-(हिं०वि०) चटोरा।
चड्डा-(हिं०वि०)मूर्ख,(पुं०) जाँघ का ऊपरी भाग।
चढत-(हिं०स्त्री०)किसी देवता की भेंट।
चढता-(हिं०वि०) आगे को बढ़ता हुआ।
चढन-(हिं०स्त्री०) चढ़ने की क्रिया
चढना-(हिं०क्रि०) ऊपर उठना, बढ़ना, उन्नति करना, नदी में बाढ़ आना, दल बाँधकर जाना, देवता या महात्मा को भेंट देना, सवार होना, वर्ष, मास, आदि का आरम्भ होना, बही खाते में लिखना, बुरा भाव होना,पकाने के लिये आँच पर रखना, लेप होना।
चढाई-(हिं०स्त्री०) चढ़ने की क्रिया, ऊपर का चढ़ाव, आक्रमण।
चढाचढी-(हिं०स्त्री०) चढ़ा उपरी।
चढाना-(हिं०क्रि०) ऊँचाई पर पहुँचाना, मूल्य बढ़ाना, देवता को अर्पण करना, पुस्तक में लिखना, पकने के लिये आँच पर रखना, मढ़ना।
चढाव-(हिं०पुं०) चढ़ने की क्रिया या भाव-वृद्धि; चढाव उतार-ऊँचा नीचा स्थान।
चढ़ावा--(हिं०पुं०) वर की ओर से कन्या को विवाह के दिन पहिराया हुआ गहना।
चढत-(हिं०पुं०) चढ़नेवाला, सवार होने वाला।
चण्ड-(सं०वि०) तीक्ष्ण, प्रबल, (पुं०) ताप, गरमी। **चण्डता**-(स्त्री०) उग्रता, प्रबलता, प्रताप।
चण्डांशु-(सं०वि०) तीक्ष्ण किरण वाला, (पुं०) सूर्य।
चण्डा-(सं०वि०) कर्कशा।
चण्डाल-(सं०वि०) श्वपच।
चण्डी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, कर्कशा स्त्री।
चण्डीपति-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
चण्डीश-(सं०पुं०) चण्डीपति, शिव।
चतुरङ्ग-(सं०वि०) चार अंगवाला-(वि०) शतरंज का खेल।
चतुरङ्गिणी-(सं०वि०) जिस सेना में हाथी घोड़े रथ और पैदल सवार हों।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चतुर-(सं०वि०) प्रवीण, निपुण, धूर्त।
चतुरई-(हिं०स्त्री०) चतुरता।
चतुरभुज-(हिं०पुं०) रखो चतुर्भुज।
चतुरमास-(हिं०पुं०) देखो चातुर्मास।
चतुरमुख-(हिं०वि०) देखो चतुर्मुख।
चतुराई-(हिं०स्त्री०) निपुणता, धूर्तता।
चतुर्गुण-(सं०वि०) चौगुना, चार गुण का।
चतुर्थ-(सं०वि०) चौथा, चौथी संख्या का
चतुर्थांश-(सं०वि०) चौथाई भाग।
चतुर्थाश्रम-(सं०पुं०) सन्यास।
चतुर्थी-(सं०स्त्री०) महीने के किसी पक्ष की चौथी तिथि।
चतुर्दश-(सं०पुं०) चौदह, (वि०) चौहवाँ। चतुर्दशी-(सं०स्त्री०) महीने के किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि चौदस।
चतुर्दिक्-(सं० पुं०) चारों दिशायें, (क्रि०वि०) चारों ओर।
चतुर्भुज-(सं०वि०) चार भुजाओं वाला (पुं०) वह क्षेत्र या आकृति जिसमें चार भुजायें और चार कोण हों।
चतुर्मास-(सं०वि०) वरसात के चार महीने।
चतुर्मुख-(सं०वि०) चार मुख वाला, (क्रि०वि०) चारों ओर।
चतुर्वर्ग-(सं० पुं०) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष।
चतुर्वर्ण-(सं०पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र।
चतुष्क-(सं०वि०) चौपहल, (पुं०) एक प्रकार का गृह, चौक।
चतुश्कर-(सं०पुं०) पंजे वाला पशु।
चतुष्कोण-(सं०वि०) चार कोण वाला, चौकोना, (हिं०पुं०) जिस आकृति में चार कोण हों।
चतुष्पथ-(सं०पुं०) चौरहा, चौमुहानी,
चतुष्पद-(सं०पुं०) चार पैरवाला पशु, चौपाया (हिं०वि०) चारपैर वाला। चतुष्पदी (सं०स्त्री०) चौपाई छन्द, चार पद की एक गीत।
चत्वर-(सं०पुं०) चौमुहानी, चौरस्ता, आँगन।
चदरा-(हिं०पुं०) देखो चादर।
चद्दर-(हिं०स्त्री०) चादर, किसी धातु की लंबी चौड़ी पत्तर।
चनक-(हिं०पुं०) चणक, चना।
चनकट-(हिं०स्त्री०) तमाचा, थप्पड़।
चनकना-(हिं०क्रि०) देखो चटकना।
चनखना-(हिं०क्रि०) रुष्ट होना, चिढ़ना
चनन-(हिं०पुं०) देखो चन्दन।
चनवर-(हिं०पुं०) ग्रास, कवर।
चना-(हिं०पुं०) चणक, बूट, रहिला।
चन्दन-(सं०पुं०) एक वृक्ष जिसके हीर की लकड़ी अति सुगन्धिन होती है।
चन्द्र-(सं०पुं०) चन्द्रमा; चन्द्रक-(पुं०) चन्द्रमा का मण्डल, चाँदनी; चन्द्रकला-(स्त्री०) चन्द्रमण्डल का सौलहवाँ अंश, चन्द्रमा की किरण; चन्द्रकान्त-(पुं०) एक रत्न।
चन्द्रकान्ता-(सं०स्त्री०) चन्द्रमा की स्त्री, रात्रि। चन्द्रक्षय-(पुं०) अमावस्या। चन्द्रप्रभा-(स्त्री०) चाँदनी।
चन्द्रवाण-(सं०पुं०) अर्धचन्द्र के आकार का बाण। चन्द्रविन्दु-(सं०पुं०) अर्ध अनुस्वार का विन्दु जो अक्षर के ऊपर लगाया जाता है। चन्द्रभाग-(सं०पुं०) चन्द्रमा की कला।
चन्द्रमा-(सं०पुं०) सुधांशु, शशि।
चन्द्रहार-(सं०पुं०) गले में पहिरने का एक आभूषण। चन्द्रहास-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार, चाँदी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चन्द्रालोक-(सं०पुं०) चन्द्रमा का प्रकाश
चन्द्रिका-(सं०स्त्री०) कौमुदी, चन्द्रमा का प्रकाश, माथे का एक आभूषण।
चन्द्रोदय-(सं०पुं०) चन्द्रमा का उदय।
चन्द्रोपल-(सं०पुं०) चन्द्रकान्त मणि।
चपकन(हिं०स्त्री०) अंगा, अंगरखा, किवाड़ या संदूक में ताला बन्द करने की कड़ी।
चपकना-(हिं०क्रि०) देखो चिपकना।
चपकाना-(हिं०क्रि०) देखो चिपकाना
चपटा-(हिं०वि०) चेखो चिपटा।
चपटाना-(हिं०क्रि०) चिपकाना।
चपटी-(हिं०वि०) चिपटी, ताली।
चपड़गट्ट-(हिं०वि०) आपद्ग्रस्त।
चपड़चपड़-(हिं०स्त्री०) जीभ से चट चट करने का शब्द।
चपड़ा-(हिं०पुं०) शोधी हुई लाह का पत्तर,। **चपड़ी**-(हिं०स्त्री०) पटिया
चपत-(हिं०पुं०) थप्पड़, तमाचा, धक्का।
चपना-(हिं०क्रि०) लज्जित होना, चौपट होना।
चपरगट्टू-(हिं०वि०) दुर्भाग्य, अभागा।
चपरना-(हिं०क्रि०) चुपड़ना, सानना।
चपरा-(हिं०अव्य०) तुरत, झटपट, (वि०) झूठा, **चपराना**-(हिं०क्रि०) झूठा बनाना।
चपरास-(हिं० स्त्री०) पेटी या परतलेमें लगाने की पट्टी, आरी का दाहिने बायें झुकाव।
चपरासी-(हिं०पुं०) सिपाही, अर्दली।
चपरी-(हिं०स्त्री०) एक कदन्न, खेसारी।
चपल-(सं०वि०) चंचल, चुलबुला,।
चपलता-(सं०स्त्री०) चंचलता। उतावलापन।

चपला-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, बिजली, चंचला, जीभ।
चपली-(हिं०स्त्री०) जूती, चट्टी।
चपाती-(हिं०स्त्री०) हाथ से बढ़ाकर बनाई हुई रोटी।
चपाना-(हिं०क्रि०) दबवाना, फँसाना।
चपेट-(हिं०स्त्री०) रगड़, घिस्सा, आघात। **चपेटना**-(क्रि०) दबाना, रगड़ देना।
चप्पड़-(हिं०पुं०) देखो चिप्पड़।
चप्पल-(हिं०पुं०) चिपटी एड़ी का जूता
चबकी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के बाल बाँधने की गुथी हुई डोरी, परांदा।
चबवाना-(हिं०क्रि०) चबाने का काम दूसरे से कराना।
चबाना-(हिं०क्रि०) दाँतों से कुचलना।
चबूतरा-(हिं०पुं०) चौरस ऊँचा स्थान।
चबेना-(हिं०पुं०) सूखा भुना हुआ अन्न, चर्वण, भूँजा।
चबेनी-(हिं०स्त्री०) कर्मकारों का दोपहर का कलेवा।
चब्बू, चब्भू-(हिं०वि०) अधिक भोजन करने वाला।
चम्भो-(हिं०पुं०) डुबकी।
चभक-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का पानी में गिरने का शब्द।
चभकना-(हिं०क्रि०) दबाया जाना।
चभाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना।
चभोकना, चभोरना-(हिं०क्रि०) गोता देना।
चमक-(हिं०स्त्री०) प्रकाश, ज्योति, आभा, दीप्ति, कान्ति, झलक, लचक, शरीर के किसी अंग की पेशियों का एकाएक तनना। **चमकदमक**-(हिं० स्त्री०) तड़क भड़क। **चमकदार**-(हिं०वि०) ला, भड़कीला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चमकना-(हिं०क्रि०) कान्ति युक्त होना, जगमगाना. प्रकाशित होना, भड़क उठना, एकाएक पीड़ा उत्पन्न होना, लचकना।

चमकीला-(हिं०वि०) चमकदार, भड़कीला।

चमकौवल-(हिं०स्त्री०) चमकने मटकने की क्रिया।

चमगादड़-(हिं०पुं०) एक उड़नेवाला जन्तु जिसकी बनावट चूहे के समान होती है, इसको कान होते हैं, और यह बच्चा देता है, इसका पर झिल्ली का बना होता है।

चमचम-(हिं०स्त्री०) छेने की एकप्रकार की बंगला मिठाई; (क्रि०वि०) चमाचम।

चमची-(हिं०स्त्री०) छोटा चम्मच। आचमनी।

चमटा-(हिं०पुं०) देखो चिमटा।

चमड़ा-(हिं०पुं०) चर्म, त्वचा, खाल, छिलका।

चमड़ी-(हिं० स्त्री०) त्वचा, चमड़ा खाल।

चमत्कार-(सं०पुं०) अद्भुत व्यापार, विचित्र घटना, विचित्रता।

चमर-(सं०पुं०) सुरा गाय की पोंछ का बना हुआ चँवर।

चमरी-(हिं०स्त्री०) सुरागाय।

चमरशिखा-(हिं०स्त्री०) घोड़े की कलँगी।

चमरी-(सं०स्त्री०) सुरागाय, चूवरी।

चमाचम-(हिं०वि०) झलकता हुआ।

चमार-(हिं०पुं०) चर्मकार, चमड़े का काम करने वाला, झाड़ू देनेवाला, अन्त्यज।

चमारनी, चमारिन-(हिं० स्त्री०) चमार की स्त्री।

चमारी-(हिं०स्त्री०) चमार का व्यवसाय

चमीकर-(सं०पुं०) वह खान जिसमें से सोना निकलता है।

चमेलिया-(हिं०वि०) चमेली के रंगका

चमेली-(हिं०स्त्री०) एक लता जिसमें सुगन्धित श्वेत पुष्प होता है।

चमोटा-(हिं०पुं०) मोटे चमड़े का छोटा टुकड़ा जिसपर नाई छुरे की धार तेज करते हैं।

चमोटी-(हिं०स्त्री०) कोड़ा, चाबुक।

चय-(सं०पुं०) ढेर, समूह, गढ़, कोट।

चयन-(सं०पुं०) संग्रह, संचय।

चर-(सं०पुं०) भेडिया, चलने वाला। (वि०) अस्थिर, आप से आप चलनेवाला, खाने वाला।

चरई-(हिं०स्त्री०) चौपायों को चारा पानी देने का गड्ढा।

चरकटा-(हिं०पुं०) तुच्छ मनुष्य।

चरकना-((हिं०क्रि०) टूटना, फूटना।

चरखा-(हिं०पुं०) गोल घूमने वाला चक्कर, ऊन, कपास या रेशम कातकर सूत निकालने का यन्त्र; कुवें से पानी निकालने का रहट। **चरखी**-(हिं० स्त्री०) छोटा चरखा, सूत लपेटने की फिरकी, एक प्रकार की घूमने वाली अग्निकीड़ा।

चरचराना-(हिं०क्रि०) चरचर शब्द करते हुए टूटना, घाव का सूख कर पीड़ा उत्पन्न करना,।

चरचा-(हिं०स्त्री०) देखो चर्चा।

चरचरी-(हिं०वि०) निन्दक, निन्दा करने वाला।

चरजना-(हिं०क्रि०) भुलावा देना।

चरण-(सं०पुं०) पग, पाँव, पैर, किसी पदार्थ का चौथा भाग, क्रम, गोत्र, गमन, आचार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चरणामृत-(सं०पुं०) वह जल जिसमें किसी महात्मा के चरण धोये गये हों, पादोदक, एक में मिला हुआ दूध, दही, घृत, मधु और शक्कर जिसमें देवमूर्ति स्नान कराई जाती है।

चरणोदक-(सं०पुं०) चरणामृत।

चरती-(हिं०पुं०) वह जो व्रत के दिन उपवास न करता हो।

चरन-(हिं०पुं०) देखो चरण।

चरनदासी-(हिं०स्त्री०) जूता, पनही, पत्नी।

चरना-(हिं०क्रि०) पशुओं का घूम घूम कर चारा खाना, इधर उधर घूमना।

चरनि-(हिं०स्त्री०) चाल, गति।

चरनी-(हिं०स्त्री०) पशुओं के चरने का स्थान, जिस नाँद में चौपायों को खाने के लिये चारा दिया जाता है।

चरन्नी-(हिं०स्त्री०) चवन्नी।

चरपरा-(हिं०वि०) स्वाद में तीखा, चटपटा। **चरपराना**-(क्रि०) घाव सूखकर इसमें पीड़ा होना। **चरपराहट**-(हि०स्त्री०) स्वाद की तीक्ष्णता

चरबन-(हिं०पुं०) भूना हुआ अन्न, चबैना।

चरबाँक-(हिं०वि०) चतुर, निर्भय, ढीठ

चरम-(सं०वि०) अन्तिम, सबसे बढा हुआ, (पुं०) पश्चिम।

चरमर-(हिं०पुं०) किसी तनी वस्तु के दबने से उत्पन्न शब्द।

चरवाई-(हिं०स्त्री०) चराने का कार्य।

चरवाना-(हिं०क्रि०) चराने का काम दूसरे से कराना, **चरवाहा**-(पुं०)-चौपायोंको चराने वाला; **चरवाही**-(स्त्री०) पशुओं को चराने का काम, चराने का शुल्क। **चरवैया**-(हिं०पुं०) चरने या चराने वाला।

चरस-(हिं०पुं०) गांजे के पेड़ से निकाला हुआ गोंद जिसको लोग गांजे की तरह पीते हैं, वन-मयूर, एक प्रकार का पक्षी।

चरसा-(हिं०पुं०) मोट, पुरवट।

चरसी-(हिं०पुं०) चरस पीने वाला।

चराई-(हिं०स्त्री०) चराने का काम।

चराचर-(सं०वि०) स्थावर और जंगम (पुं०) संसार, जगत।

चराना-(हिं०क्रि०) छलना, धोखा देना, बहकाना।

चरित-(हिं०पुं०) आचरण, कृत्य, करतूत, चरित्र, किसी मनुष्य की जीवनी की विशेष घटनाओं का वर्णन।

चरितार्थ-(सं०वि०) कृतार्थ, कृतकृत्य

चरित्तर-(हिं०पुं०) धूर्तता, बहाना।

चरित्र-(सं०पुं०) स्वभाव, करनी, करतूत। **चरितवान्**-(वि०) अच्छे चरित्र का, सदाचारी।

चरित्रवान्-(सं० वि०) अच्छे चरित्र का, सदाचारी।

चरी-(हिं०स्त्री०) पशुओं के चरने की भूमि, पौधे जो चौपायों को काट कर खिलाये जाते हैं।

चरु-(सं०पुं०) हवन के लिये पकाया हुआ अन्न। **चरुआ**-(हिं०पुं०) चौड़े मुख का मिट्टी का पात्र।

चरेर, चरेरा-(हिं०वि०) कर्कश, कड़ा।

चरैया-(हिं०वि०) चराने वाला।

चर्चर-(सं०वि०) गमनशील, चलने वाला।

चर्चरी-(सं०स्त्री०) वह गान जो वसन्त में गाया जाता है, फाग।

चर्चा-(सं०स्त्री०) वर्णन, वार्तालाप, जनश्रुति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चर्चित-(सं०वि०) लगाया या पोता हुआ, जिसकी चर्चा की जाती है।
चर्पट-(सं०पुं०) थप्पड़, खुली हुई हथेली, (वि०) अधिक।
चर्परा-(हिं०वि०) देखो चरपरा।
चर्भुट-(सं०पुं०) ककड़ी।
चर्म-(सं०पुं०) चमड़ा, ढाल। चर्मकार-(सं०पुं०) चमार, रयदास।
चर्मचटका-(सं०स्त्री०) चमगादड़।
चर्मपादुका-(सं०स्त्री०) चमड़े का जूता। चर्मपुट, चर्मपुटक-(सं०पुं०) चमड़े का बड़ा कुप्पा।
चर्या-(सं०स्त्री०) आचरण, वृत्ति, व्यवसाय, सेवा, भक्षण, गमन, जीविका
चर्राना-(हिं०क्रि०) लकड़ी के टूटते समय चरचर शब्द करना, शरीर में हलकी पीड़ा होना।
चर्री-(हिं०स्त्री०) व्यंग पूर्ण बात।
चर्वण-(सं०पुं०) दाँतों से चबाने का कार्य, भूना हुआ अन्न, बहुरी।
चर्वित-(सं०वि०) दाँतों से चबाया हुआ
चर्वितचर्वण-(सं०पु०) किये हुए काम को दुबारा करना।
चलंता-(हिं०वि०) चलता हुआ, चलने वाला।
चल-(सं०वि०) चलायमान, अस्थिर, चंचल (पुं०) चलचलाव-(हिं० पुं०) यात्रा, प्रस्थान, मृत्यु।
चलता-(हिं०वि०) गतिमान, चलता हुआ, काम करने योग्य, व्यवहार में निपुण, (स्त्री०) चंचलता।
चलन-(हिं०पुं०) गति, चाल, व्यवहार, रीति, गति, भ्रमण, कम्पन; चलन-कलन-(सं०पुं०) ज्योति की वह गणित, जिसके द्वारा पृथ्वी की गतिके अनुसार दिन के बढ़ने घटने का हिसाब किया जाता है। चलन समीकरण-(सं०पु०) गणित की एक विशेष क्रिया। चलनसार-(हिं० वि०) व्यवहार में प्रचलित।
चलना-(हिं०क्रि०) गमन करना, जाना, व्यवहार में आना, प्रयुक्त होना, अच्छी तरह काम देना, तीर, गोला आदि का छूटना, सफल होना, निर्वाह होना।
चलनी-(हिं०स्त्री०) आटा आदि को महीन छानने की चलनी।
चलनौस-(हिं०पुं०) चोकर, चालन।
चलबांक-(हिं०वि०) शीघ्रगामी।
चलविचल-(हिं० वि०) अव्यवस्थित, अंडबंड, (स्त्री०) व्यतिक्रम।
चलवैया-(हिं०पुं०) चलनेवाला।
चलाऊ-(हिं०वि०) बहुत दिनों तक टिकने वाला, पुष्ट, टिकाऊ।
चलाँक-(हिं०वि०) दक्ष, पटु। चलकी-(हिं०स्त्री०) दक्षता।
चलाचल-(हिं०वि०) चंचल।
चलाचली-((हिं० स्त्री०) बहुत से लोगों का प्रस्थान, चलने की तैयारी
चलान-(हिं०स्त्री०) अपराधी का पकड़ा जाकर न्यायालय में न्याय के लिये भेजा जाना, सामग्री का एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजा जाना, एक स्थान से दूसरे स्थान को भजी हुई सामग्री।
चलाना-(हिं०क्रि०) चलने में लगाना, व्यवहार करना, व्यापार में वृद्धि होना किसी अस्त्र से मारना, प्रेरित करना, आरम्भ करना, प्रचलित करना।
चलायमान-(सं० वि०) चंचल, विचलित।
चलित-(सं०वि०) चलायमान, अस्थिर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलैया-(हिं०वि०) चलने वाला।
चवन्नी-(हिं०स्त्री०) चार आने के मूल्य का सिक्का।
चवर्ग-(सं०पुं०) 'च' से 'ञ' तकके पाँच अक्षरों का समूह।
चवा-(हिं०स्त्री०) चारों ओर से बहने वाली हवा।
चवाव-(हिं०पुं०) प्रवाद, निन्दा की चर्चा, पीठ पीछे की निन्दा।
चशमा(हिं०पुं०) उपनेत्र।
चष-(हिं०पुं०) चक्षु, नेत्र, आँख।
चषक-(स०पुं०) मदिरा पीने का पात्र
चषण-(सं०पुं०) भोजन, वध करना, क्षय, नाश।
चस-(हिं०स्त्री०) वस्त्र के किनारे पर सिली हुई गोंट।
चसक-(हिं०पुं०) प्रवाद, निन्दा, की चर्चा, पीठ पीछे की निन्दा।
चलकना-(हिं०क्रि०) मन्द पीड़ा होना, टीसना।
चसका-(हिं०पुं०) दुर्व्यसन, लत, चाट।
चसना-(हिं०क्रि०) प्राण त्यागना, मरना।
चह-(हिं०पुं०) नदी के कच्चे घाट पर बल्ले गाड़ कर उस पर बनाया हुआ मचान जिस पर से मनुष्य नावपर चढ़ते हैं।
चहक-(हिं०स्त्री०) पक्षियोंका मधुर कलरव। **चहकना**-(हिं० क्रि०) उमंग में बकवाद करना।
चहका-(हिं० पुं०) पत्थर या ईंट का बना हुआ स्थान, चहला, कीचड़।
चहकारना-(हिं० क्रि०) देखो चहकना।
चहचहा-(हिं०पुं०) चहक, हँसी, ठट्ठा (वि०) आनन्द उत्पन्न करने वाला।
चहटा-(हिं०पुं०) पंक, कीचड़, चहला।
चहनि-(हिं०स्त्री०) चाह, अभिलाषा, इच्छा।
चहबच्चा-(हिं०पुं०) मैले पानी का गड्ढा।
चहर-(हिं०स्त्री०) आनन्द का उत्सव।
चहल-(हिं०स्त्री०) कीच, कीचड़, आनन्द का उत्सव।
चहल पहल-(हिं०स्त्री०) आनन्द की धूम।
चहला-(हिं०पुं०) पंक, कीचड़।
चहुं-(हिं०वि०) चार, चारों।
चहुंक-(हिं०स्त्री०) देखो चिहुंक।
चहुंघा-(हिं०क्रि०वि०) चारों ओर।
चहूँटना-(हिं०क्रि०) सटना, मिलना, लगना।
चहेटना-(हिं०क्रि०) रस निचोड़ना, चपेटना।
चांइयां, चाईं-(हिं०पुं०) ठग, उचक्का, (वि०) कपटी, छली।
चांगला-(हिं०वि०) आरोग्य, चतुर।
चांचर, चांचरी-(हिं०स्त्री०) एक राग जो वसन्त ऋतु में गाया जाता है।
चांटा-(हिं०पुं०) थप्पड़, तमाचा।
चांड़-(हिं०स्त्री०) भार संभालने की थूनी, टेक, व्याकुलता, संकट, दबाव, प्रबल इच्छा, अधिकता।
चाण्डाल-(सं०पुं०) श्वपच, डोम।
चांद-(हिं०पुं०) चन्द्रमा, कमरखी, घोड़े के सिर पर की भँवरी, (स्त्री०) मस्तक के बीच का भाग।
चांदनी-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका, चन्द्रमा का प्रकाश, बिछावन की उज्वल चादर,
चाँदमारी-(हिं०स्त्री०) पटरे इत्यादि पर बने हुए चिह्नों को लक्ष्य करके गोली चलाने का अभ्यास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चाँदी-(हिं०स्त्री०) रजत, रौप्य, आर्थिक लाभ, खोपड़ी का मध्य भाग।
चाँप-(हिं०पुं०) दबाव, भूमि पर पैर पड़ने का शब्द, धक्का।
चायँचायँ-(हिं०पुं०) व्यर्थ की बकबक।
चाउर-(हिं०पुं०) देखो चावल।
चाक-(हिं०पुं०) कुम्हार का गोल पत्थर जिसको घुमाकर तथा मिट्टी का लोंदा रखकर वह पात्र आदि बनाता है, गाड़ी या रथ की पहिया।
चाकना-(हिं०क्रि०) सीमाबद्ध करने के लिये चारों ओर रेखा खींचना,।
चाकरनी, चाकरानी-(हिं० स्त्री०) नौकरानी, दासी।
चाका-(हिं०पुं०) चीनी का बड़ा बताशा
चाकी-(हिं०स्त्री०) आटा पीसने की चक्की।
चाचर, चाचरि-(हिं०स्त्री०) होली में गाने की गीत, होली के खेल और स्वांग
चाचा-(हिं० पुं०) पितृव्य, पिता का भाई। चाची-(हिं०स्त्री०) चाचा की स्त्री।
चाट-(हिं०स्त्री०) स्वाद लेन की इच्छा, चसका, लालसा।
चाटना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेन के लिये किसी वस्तु को जीभ से उठाना।
चाटु-(सं०पुं०) मीठी बात, प्रियवार्ता, झूठी प्रशंसा; चाटुकार-झूठी प्रशंसा करने वाला।
चाड़-(हिं०स्त्री०) तीव्र अभिलाषा, प्रेम, चाह।
चाण्डाल-(सं०पुं०) श्वपच, डोम; (वि०) कुकर्मी, दुरात्मा।
चातक-(सं०पुं०) पपीहा।
चातुर-(सं०वि०) चतुर, धूर्त, (पुं०) चार पहिये की गाड़ी;
चातुरी-(हिं०स्त्री०) चतुराई, धूर्तता।
चातुर्मास-(सं०पुं०) वर्षा के चार मास; (वि०) चार मास में होने वाला।
चातुर्य-(सं०नपुं०) चतुराई, दक्षता।
चादरा-(हिं०पुं०) बड़ी चादर।
चानस-(हिं०पुं०) ताश का एक खेल।
चान्द्र-(सं०वि०) चन्द्रमा संबंधी।
चान्द्रमास-(सं०पुं०) वह मास जो चन्द्रमा की गति के अनुसार विभक्त किया गया हो।
चान्द्रायण-(सं०पुं०) महीने भर में समाप्त होने वाला एक व्रत।
चाप-(सं०पुं०) धनुष, कमान, रेखा-गणित में अर्धवृत्त क्षत्र।
चापट-(हिं०स्त्री०) देखो चापड़, चोकर।
चापड़-(हिं०वि०) समतल, बराबर, चौपट (पुं०) उजाड़; (हिं०स्त्री०) चोकर, भूसी।
चापना-(हिं०क्रि०) दबाना, ढकेलना।
चापर-(हिं०वि०) देखो चापड़।
चाबना-(हिं०क्रि०) दाँतों से कुचल कर खाना, चबाना।
चाबी-(हिं०स्त्री०) कुंजी, ताली।
चाभी-(हिं०स्त्री०) ताली, कुंजी।
चाम-(हिं०पुं०) चर्म, चमड़ा, खाल।
चामर-(सं०पुं०) चँवर, मुरछल।
चामीकर-(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना।
चाय-((हिं०स्त्री०) एक पौधा, जिसकी पत्तियों को उबालकर इसमें दूध और चीनी मिलाकर सर्वत्र लोग पीते हैं
चायक-(हिं०वि०) चाहनेवाला, प्रेमी।
चार-(हिं०वि०) तीन और एक की संख्या का, अनेक, कई एक, थोड़ा सा थोड़ा बहुत (पुं०) सेवक, दास, रीति।
चारक-(सं०पुं०) चरवाहा, सहचर, भेदिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चारखाना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कपड़ा जिसमें ताने और बाने के रंगीन डोरों से चौखूट खाने बने होते हैं।
चारण-(सं०पुं०) भाट, बन्दी।
चारन-(हिं०पुं०) देखो चारण।
चारपाई-(हिं०स्त्री०) छोटी पलंग खटिया, खाट।
चारयारी-(हिं०स्त्री०) चार मित्रों की मण्डली।
चारा-(हिं०पुं०) पशुओं के खाने की घास पात, जिस वस्तु को बंसी में लगाकर मछली फंसाई जाती है।
चारि-(हिं०वि०) देखो चार।
चारित-(सं०वि०) चलाया हुआ।
चारित्र-(सं०पुं०) परम्परा का आचार व्यवहार, स्वभाव, चारित्र विनय-(सं०पुं०) शिष्टाचार, नम्रता।
चारित्र्य-(सं०पुं०) चरित्र।
चारी-(हिं०वि०) आचरण या व्यवहार करने वाला।
चारु-(हिं०वि०) सुन्दर, रुचिर, मनोहर
चाल-(हिं०स्त्री०) गति, गमन, चलने का ढंग, आचरण, रीति, ढंग, कपट।
चालक-(हिं०वि०) संचालक, धूर्त, चतुर।
चालचलन-(हिं०पुं०) शील, चरित्र।
चालढाल-(हिं०स्त्री०) व्यवहार, ढंग।
चालन-(हिं०पुं०) चलने या चलाने की क्रिया।
चालना-(हिं० क्रि०) चलाना, चलनी में आँटा हिलाकर चोकर अलगाना।
चालनी-(हिं०वि०) आटा चालने की चलनी, छलनी।
चाला-(हिं०पुं०) प्रस्थान,
चालान-(हिं०पुं०) भेजे हुए माल की सूची, बीजक, अपराधी का विचार के लिये न्यायालय में भेजा जाना।
चालिया-(हिं०वि०) धूर्त, छली।
चालिस-(हिं०वि०) देखो चालीस।
चाली-(हिं०वि०) धूर्त, उपद्रवी।
चालीस-(हिं०वि०) तीस और दस की संख्या का। चालीसवाँ-(हिं०वि०) उनतालीस वस्तु के बाद का।
चाव-(हिं०पुं०) अभिलाषा, लालसा, प्रेम, चाह।
चावड़ी-(हिं०स्त्री०) चट्टी, पड़ाव।
चावर, चावल-(हिं०पुं०) तण्डुल, धान के भीतर से निकला हुआ अन्न, रत्ती के आठवें भाग के बराबर का परिमाण।
चाशनी-(हिं०स्त्री०) मिश्री, चीनी अथवा गुड़ का अग्नि पर पकाकर गाढ़ा किया हुआ रस।
चासनी-(हिं०स्त्री०) देखो चाशनी।
चाह-(हिं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।
चाहक-(हिं०वि०) चाहनेवाला।
चाहना-(हिं०क्रि०) अभिलाषा करना, प्यार करना।
चाहि-(हिं०अव्य०) अपेक्षा, से।
चाहिए-(हिं०अव्य०) उचित है, ठीक है।
चाहे-(हिं०अव्य०) इच्छा हो या न होने वाला, हो तो।
चिआँ-(हिं०पुं०) इमली का बीज।
चिऊँटा-(हिं०पुं०) एक काले रंग का कीड़ा जो मीठ के पास बहुत जाता है और उसको जल्दी नहीं छोड़ता।
चिउँटी-(हिं०स्त्री०) चींटी, पिपीलिका
चिनगा-(हिं०पुं०) पक्षी का छोटा बच्चा, छोटा बालक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिंगुरना-(हिं०क्रि०) अंग के किसी भाग का संकुचित होना।
चिंदी-(हिं०स्त्री०) टुकड़ा।
चिउड़ा,चिउरा-(हिं०पुं०) हरे धानको कूट कर बनाया हुआ चिपटा चावल।
चिकट-(हिं०वि०) चिपचिपा, लसलसा।
चिकना-(हिं०वि०) चिक्कण अनुरागी, प्रेमी (पुं०) स्निग्धतापूर्ण पदार्थ, **चिकनाई**-(हिं०स्त्री०) स्निग्धता, चिकनापन; **चिकनाना**-(हिं०क्रि०) चिकना करना, मोटा होना।
चिकनिया-(हिं०वि०) छैला, बाँका,
चिकरना-(हिं०क्रि०) चिग्घाड़ना।
चिकवा-(हिं०पुं०) मांस बचनेवाला, कस्साई।
चिकार-(हिं०पुं०) चिग्घाड़, चीख।
चिकारा-(हिं०पुं०) सारंगी की तरह का एक बाजा।
चिकित्सक-(सं०पुं०) रोग हटाने का उपाय करने वाला, वैद्य, हकीम, डाक्तर।
चिकित्सा-(सं०स्त्री०) रोग दूर करने तथा शरीर नीरोग करने की विधि; **चिकित्सालय**-रोगियों की भली भांति चिकित्सा करने का स्थान; **चिकित्सित**-(सं०वि०) चिकित्सा किया हुआ।
चिकिल-(सं०वि०) कीचड़, पंक।
चिकीर्षा-(सं०स्त्री०) करनेकी इच्छा।
चिकुटी-(हिं०स्त्री०) देखो चुटकी।
चिकुर-(सं०वि०) सिर के बाल, केश, पर्वत।
चिकोटी-(हिं०स्त्री०) देखो चुटकी।
चिक्कट-(हिं०वि०) मैला कुचैला।
चिक्कण-(सं०वि०) चिकना।
चिक्कन-(हिं०वि०) चिक्कण, चिकना।
चिखुरी-(हिं०स्त्री०) गिलहरी।
चिखौनी-(हिं०स्त्री०) स्वाद की थोड़ी सी वस्तु।
चिचिड़ी-(हिं०स्त्री०) किलनी, किल्ली।
चिचियाना-(हिं०क्रि०) चिल्लाना।
चिचकना-(हिं०क्रि०) देखो चुचुकाना।
चिजारा-(हिं०पुं०) राजगीर, मेमार।
चिञ्चा-(सं०स्त्री०) इमली, इमली का चिआं।
चिञ्ची-(सं०स्त्री०) गुंजा, घुमची।
चिटकना-(हिं०क्रि०) रुक्षता या गरमी से फट जाना।
चिकटाना-(हिं०क्रि०) किसी सूखे पदार्थ को तड़काना, चिढ़ाना।
चिटचबीस-(हिं०पुं०) चिट्ठी पत्री हिसाब किताब लिखने वाला लेखक।
चिट्टा-(हिं०पुं०) झूठा बढ़ावा।
चिट्ठा-(हिं०पुं०) हिसाब का वही-खाता, व्यौरा।
चिट्ठी-(हिं०स्त्री०) कागज की वह टुकड़ी जिसमें कहीं भेजने के लिये समाचार इत्यादि लिखा हो, माल का दाम लिखा हुआ पुरजा, आज्ञापत्र, निमन्त्रणपत्र। **चिट्ठी-पत्री**-(हिं० स्त्री०) पत्र व्यवहार।
चिड़चिड़ा--(हिं०पुं०) चिचिड़ा, अपामार्ग, जल्दी चिड़नेवाला।
चिड़ाना-(हिं०क्रि०) चिढ़ना।
चिवड़ा-(हिं०पुं०) हरे धान को कूटकर चिपटा किया हुआ दाना।
चिड़िया-(हिं०स्त्री०) पक्षी, पंछी, पखेरू, ताश में चिड़ी का पत्ता, **चिडियाखाना**-(हिं०पुं०) वह स्थान जिसमें नाना प्रकार के पशु पक्षी देखने के लिये पाले जाते है। **चिड़िंहार**(हिं०पुं०) (हिं०पुं०) बहेलिया, व्याध।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिड़ी-(हिं०स्त्री०) चिड़िया, ताश का एक रंग। **चिड़ीमार**-(हिं०पुं०) व्याध, बहेलिया।

चिढ़-(हिं०स्त्री०) क्रोध सहित अप्रसन्नता, कुढ़न; **चिढ़ना**-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना, कुढ़ना। **चिढ़ाना**-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न करना, कुढ़ाना,

चित्-(सं०स्त्री०) चेतना, ज्ञान, चित्तवृत्ति, (पुं०) अग्नि, संस्कृत का अनिश्चय सूचक शब्द।

चित-(हिं०पुं०) चित्त, चितवन, (हिं०वि०) पीठ के बल पड़ा हुआ।

चितचोर-(हिं०पुं०) मन को लुभानेवाला, प्रिय, मनोहर।

चितभंग-(हिं०पुं०) ध्यान न लगना, चित्त ठिकाने न रहना।

चितरनहार-(हिं०पुं०) चित्रण करने वाला।

चितरना-(हिं०क्रि०) चित्र बनाना।

चितला-(हिं०वि०) चितकबरा, रंगबिरंगा।

चितवन-(हिं०स्त्री०) दृष्टि, कटाक्ष, भौं चढ़ाना। **चितवना**-(हिं०क्रि०) दृष्टि डालना, देखना। **चितवनि**-(हिं०स्त्री०) देखो चितवन। **चितवाना**-(हिं०स्त्री०) दिखाना, तकाना

चिता-(सं०स्त्री०) लकड़ी का ढेर जिस पर शव जलाया जाता है।

चिताना-(हिं०क्रि०) सावधान करना, याद दिलाना।

चिताभूमि-(सं०स्त्री०) श्मशान।

चितावनी-(हिं०स्त्री०) सावधान करने की क्रिया।

चिति-(सं०स्त्री०) एकत्र करने का कार्य

चितेरा-(हिं०पुं०) चित्रकार, चित्र बनाने वाला।

चित्त-(सं०पुं०) अन्तःकरण की एक वृत्ति, जी, मन। **चित्तवान्**-(सं०वि०) उदार चित्त का। **चित्तविक्षेप**-(सं०पुं०) मन की चंचलता। **चित्तविप्लव**-(सं०पुं०) उन्माद। **चित्तविभ्रम**-(सं०पुं०) भ्रम, भ्रान्ति। **चित्तवृत्ति**-(सं०स्त्री०) चित्त की अवस्था।

चित्ति-(सं०स्त्री०) ख्याति, वृद्धि।

चित्ती-(हिं०स्त्री०) छोटा धब्बा या चिह्न, बुंदकी।

चित्र-(सं०पुं०) कागज कपड़े आदि पर अनेक रंगों के मेल से बनी हुई; आकृति; चित्र उतारना-चित्र बनाना; **चित्रकण्ठ**-(सं०पुं०)कपोत, कबूतर।

चित्रक, चित्रकार-(सं०पुं०) चित्रकार; **चित्रकारी**-(हिं०स्त्री०) चित्र बनाने की कला-। **चित्रना**-(हिं०क्रि०) चित्रित करना, चित्र बनाना।

चित्रपट-(सं०पुं०) वह कागज या कपड़े का टुकड़ा जिस पर चित्र बनाया जाता है, छीट। **चित्रमृग**-(सं०पु०) चितकबरा मृग।

चिन्तित-(सं०वि०) चिन्तायुक्त।

चिन्त्य-(सं०वि०) विचारणीय, भावनीय

चिन्मय-(सं०वि०) ज्ञानमय (पुं०) परमेश्वर।

चिन्हवाना-चिन्हाना-(हिं०क्रि०) पहिचनवाना। **चिन्हानी, चिन्हाटी**-(हिं०स्त्री०) पहिचान स्मारक, चिह्न

चिन्हार-(हिं०वि०) परिचित, जान पहिचान का। **चिन्हारी**-(हिं०स्त्री०) परिचय।

चिन्हित-(हिं०वि०) देखो चिह्नित।

चिपकना-(हिं०क्रि०) दो पदार्थों का परस्पर जुटना या सटना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिपकाना-(हिं०क्रि०) चिमटाना, लिपटाना, आलिङ्गन करना ।
चिपचिप-(हिं० पुं०) लसदार वस्तु के छूने से चिपकने का शब्द । **चिपचिपा**-(हिं०वि०) चिपकन वाला ।
चिपटना-(हिं०क्रि०) चिपकना, सटना ।
चिपटा-(हिं०क्रि०) जिसका तल दबा हुआ तथा बराबर फैला हो। **चिपटाना**-(हिं०क्रि०) चिपकाना, सटाना ।
चिपड़ी, चिपरी-(हिं०स्त्री०) उपली, गोहरी ।
चिपिट, चिपिटकू-(हिं०वि०) चिपटा; (पुं०) चिवड़ा ।
चिप्पड़-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का छोटा चिपटा टुकड़ा, पपड़ी ।
चिप्पी (हिं०स्त्री०) देखो चिप्पड़ ।
चिबिल्ला-(हिं०वि०) देखो चिलबिल।
चिबुक-(सं०पुं०) ठुड्ढी, ठोड़ी।
चिमटना-(हिं०क्रि०) चिपकना, सटना
चिमटा-(हिं०पुं०) धातु की दो पट्टियों से बना हुआ अस्त्र जो चलते हुए अंगारे इत्यादि को उठाने के काम में आता है । **चिमटाना**-(हिं०क्रि०) सटाना, लिपटाना । **चिमटी**-(हिं० स्त्री०) छोटा चिमटा ।
चिमोटा-(हिं०पुं०) देखो चमोटा ।
चिरंजीव-(सं०वि०) अनेक वर्षों तक जीवित रहनेवाला; (पुं०) आशीर्वाद का शब्द । **चिरजीवी**-(हिं०वि०) देखो चिरंजीवी ।
चिरन्तन-(सं०वि०) पुरातन, बहुत पुराना
चिर-(सं०वि०) दीर्घायु, चिरायु ।
चिरई-(हिं०स्त्री०) चिड़िया, पक्षी ।
चिरकारी-(सं०वि०) दीर्घसूत्री ।
चिरकाल-(सं०पुं०) दीर्घकाल, बहुत समय ।
चिरकुट-(हिं०पुं०) गूदड़, चिथड़ा ।
चिरजीवी-(सं०वि०) दीर्घजीवी, अमर ।
चिरना-(हिं०क्रि०) फटना, एक सीधी लकीर में कटना ।
चिरबत्ती-(हिं०वि०) टुकड़ा टुकड़ा ।
चिरवाई-(हिं०स्त्री०) चिरवाने का कार्य या परिश्रमिक । **चिरवाना**-(हिं०क्रि०) फड़वाना ।
चिरस्थायी-(सं० वि०) बहुत दिनों तक ठहरने वाला । **चिरस्मरणीय**; (सं०वि०) बहुत दिनो तक स्मरण रखने योग्य ।
चिरहँटा-(हिं०पुं०) चिड़ीमार, व्याध ।
चिराई-(हिं०स्त्री०) चीरने का कार्य ।
चिरायँध-(हिं०स्त्री०) चमड़े बाल आदि के जलने से उत्पन्न दुर्गन्ध ।
चिरायु-(सं०वि०) दीर्घायु ।
चिराव-(हिं०पुं०) चीरने के भाव या क्रिया ।
चिरिया-(हिं०स्त्री०) चिड़िया, पक्षी ।
चिरिहार-(हिं०पुं०) व्याधा, बहेलिया ।
चिरी-(हिं०स्त्री०) देखो चिड़िया ।
चिरु-(सं०पुं०) कन्धे और बाँह का जोड़ ।
चिरैया-(हिं०स्त्री०) देखो चिड़िया ।
चिलका-(हिं०पुं०) चमकता हुआ चाँदी आ रुपया ।
चिलकाना-(हिं०क्रि०) चमकाना ।
चिलड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पक्वान्न, उलटा ।
चिलबिल्ला-(हिं०वि०) चपल, चंचल ।
चिल्लड़-(हिं०पुं०) जूं की तरह, का एक सफेद कीड़ा ।
चिल्लपों-(हिं०स्त्री०) चिल्लाने का शब्द ।
चिल्लवाना-(हिं०क्रि०) चिल्लाने में प्रवृत्त करना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चिल्लाना-(हिं०क्रि०) हल्ला मचाना।
चिल्लाहट-(हिं०स्त्री०) कोलाहल।
चिबुक-(सं०पुं०) ठुड्ढी, ढोंढी।
चिहुँटना-(हिं०क्रि०) चिमटना।
चिहुँटी-(हिं०स्त्री०) चुटकी, चिकोटी
चिन्ह-(सं०पुं०) किसी वस्तु को पहिचानने का लक्षण।
चींचीं-(हिं०स्त्री०) पक्षियों के बच्चों का धीमा शब्द।
चोंचपड़-(हिं०स्त्री०) किसी बड़े के विरोध में कुछ करना या कहना।
चींटा-(हिं०पुं०) देखो चिउटा।
चींटी-(हिं०स्त्री०) पिपीलिका, चिउटी
चीतना-(हिं०क्रि०) चित्रित करना।
चीथना-(हिं०क्रि०) फाड़ना।
चीक-(हिं०स्त्री०) चीत्कार, (पुं०) कसाई।
चीकट-(हिं०क्रि०) तेल की मैल, तलछट।
चीकना (हिं० वि०) पीड़ा के कारण चिल्लाना।
चीखना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये किसी पदार्थ की थोड़ा सा खाना या पीना।
चीखुर-(हिं०स्त्री०) चिखुरी, गिलहरी।
चितकार-(हिं०पु०) देखो चीत्कार।
चितना-(हिं०क्रि०) सोच विचार करना, चैतन्य होना।
चीता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बाघ।
चितावना-(हिं०स्त्री०) स्मारक।
चीत्कार-(सं०पुं०) चिल्लाहट।
चीथड़ा-(हिं०पुं०) फटे पुराने वस्त्र का छोटा टुकड़ा।
चीथना-(हिं०क्रि०) फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना।
चीथरा-(हिं०पुं०) देखो चीथड़ा।
चीनना-(हिं०क्रि०) चीन्हना, पहचानना।
चीनी-(हिं०स्त्री०) शक्कर, चीन देश का (वि०) चीन देश या चाइना संबंधी।
चीन्हना-(हिं०क्रि०) पहचानना।
चीप-(हिं०स्त्री०) छोटी फन्नी।
चीमड़-(हिं०वि०) चिमड़ा, लचीला।
चीया-(हिं०पुं०) इमली का बीज।
चीर-(हिं०पुं०) पुराने कपड़े का टुकड़ा, लत्ता, चिथड़ा। चीरफाड़-चीरने फाड़ने का काम।
चीर, चरम-(हिं०पुं०) मृगछाला, बाघंबर।
चीरना-(हिं०क्रि०) विदीर्ण करना, फाड़ना।
चीरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का लहरिया रंगीन वस्त्र जिसकी पगड़ी बनती है।
चीर्ण-(सं०वि०) फाटा या चिरा हुआ।
चील-(हिं०स्त्री०) बाज के जाति की एक चिड़िया; चीलझपट्टा-किसी वस्तु को झपट कर ले जाना।
चीलड़, चीलर-(हिं०पुं०) जूं की तरह का एक छोटा कीड़ा।
चील्ह-(हिं०स्त्री०) देखो चील।
चीवर-(सं०पुं०) सन्यासियों या भिक्षुकों का फटा वस्त्र।
चुंगना-(हिं०क्रि०) देखो चुगना।
चुंगल-(हिं०पुं०) पक्षियों का टेढ़ा झुका हुआ पंजा, बटोरा हुआ मनुष्य का पंजा।
चूंगी-(हिं०स्त्री०) नगर के भीतर आने वाली सामग्री पर का कर।
चूंडी-(हिं०स्त्री०) चुटिया।
चुंदरी-(हिं०स्त्री०) देखो चूनरी।
चुंदी-(हिं०स्त्री०) शिखा, चुटैया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चुअना-(हिं०क्रि०)चूना, रसकर बहना
चुआई-(हिं०स्त्री०) चुआने या टपकाने का काम। चुआना-(हिं०क्रि०) टपकाना, बूंद बूंद करके गिराना।
चुआव-(हिं०स्त्री०)चुआने की क्रिया।
चुकन्दर-(हिं०पुं०) शलजम के प्रकार की एक तरकारी।
चुकचुकाना-(हिं०क्रि०) पसीजना।
चुकता-(हिं०वि०) ऋण मुक्त किया हुआ।
चुकना-(हिं०क्रि०) समाप्त होना।
चुकवाना-(हिं०क्रि०) निबटवाना।
चुकाई-(हिं०स्त्री०) चुकता होने का भाव।
चुकाना-(हिं०क्रि०)ऋण निःशेष करना।
चुक्कड़-(हिं०पुं०)मिट्टी का छोटा पात्र
चुगना-(हिं०क्रि०) पक्षी का चोंच से दाना उठाकर खाना।
चुचकारना-(हिं०क्रि०) चुमकारना।
चुचकारी-(स्त्री०) चुमकारने की क्रिया।
चुगाना-(हिं०क्रि०) बूंदबूंद करके टपकाना।
चुचुक-(सं०वि०) स्तनका अग्रभाग या घुंडी।
चुचुकना-(सं०पुं०) संकुचित होना।
चुटकना-(हिं०क्रि०) कोड़े से मारना, चुटकी से तोड़ना।
चुटकला(हिं०पुं०) देखो चुटुकुला।
चुटकी-(हिं०स्त्री०) अंगूठे और बीच की अंगुली के मिलने की स्थिति।
चुटुकुला-(हिं०पुं०) कोई विलक्षण वार्ता, कोई विनोदपूर्ण बात, अधिक गुण करने वाली विशिष्ट औषधि
चुटिया-(हिं०स्त्री०)लट, शिखा, चुन्दी।
चुटीला-(हिं०वि०)चोट खाया हुआ, भड़कीला।
चुटैल-(हिं०वि०)जिसको चोट लगी हो।
चुड़िहारा-(हिं०पुं०)चूड़ी बनाने और बेचने वाला।
चुड़ल-(हिं०स्त्री०) प्रेतनी, भूतनी, डायन।
चुन-(हिं०पुं०)आटा, चूर्ण, बुकनी, पिसान।
चुनचुना-(हिं०वि०) जिसके स्पर्श से चुनचुनाहट उत्पन्न हो।
चुप-(हिं०वि०) मूक, मौन; चुपकी-(हिं०स्त्री०) मौनभाव। चुपचाप-(हिं०क्रि०वि०) मौन रहकर, गुप्त रूप से।
चुपड़ना-(हिं०क्रि०) किसी गीली वस्तु को फैलाना, दोष छिपाना।
चुपाना-(हिं०क्रि०) चुप हो रहना, न बोलना।
चुप्पा-(हिं०वि०) कम बोलने वाला, जो किसी बात का उत्तर जल्दी से न देता हो।
चुप्पी-(हिं०स्त्री०) मौन।
चुबलाना,चुभलाना-(हिं०क्रि०) स्वाद लेने के लिये किसी वस्तु को मुख में रखकर जीभ से इधर उधर डोलाना
चुभकना-(हिं०क्रि०) पानी में डूबना।
चुभकाना-(हिं०क्रि०) पानी में गोते देना। चुभकी-(हिं०स्त्री०) डुबकी, गोता।
चुभना-(हिं०क्रि०) गड़ना, धँसना।
चुभाना-(हिं०क्रि०)धँसाना, गड़ाना।
चुभोना-(हिं०क्रि०)चुभाना, गड़ाना।
चुमकार-(हिं०स्त्री०) चूमने के समय उच्चारित शब्द, पुचकार।
चुम्मक-(हिं०पुं०) देखो चुम्बक।
चुम्मा-((हिं०पुं०) चुम्बन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चुम्बक-(सं०पुं०) पत्थर या धातु का वह टुकड़ा जो लोहे को खींच कर पकड़ लेता है।

चुम्बन-(सं०पुं०) प्रेम में किसी के होठों से गाल इत्यादि को स्पर्श करने या दबाने की क्रिया। **चुम्बित**-(सं०वि०) प्रेम किया हुआ, चूमा हुआ, स्पर्श किया हुआ।

चुरकना-(हिं०क्रि०) बोलना, चहचहाना; टूटना, फूटना।

चुरकी-(हिं०स्त्री०) चोटी, चुटिया, शिखा

चुरचुरा-(हिं०वि०) थोड़े से दबाव में चूरचूर कर के टूटनेवाला। **चुरचुराना**-(हिं०क्रि०) चुरचुर शब्द करना

चुरना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का पानी में खौलना, परस्पर गुप्त मन्त्रणा करना।

चुरवाना-(हिं०क्रि०) पकाने का काम दूसरे से कराना।

चुराई-(हिं०स्त्री०) चुराने की क्रिया या भाव, पकने का काम। **चुराना**-(हिं०क्रि०) चोरी करना, लोगों की दृष्टि से छिपाना।

चुरिसारा-(हिं०पुं०) देखो चुड़ीहारा

चुल-(हिं०स्त्री०) खुजलाहट।

चुलचुलाना- चुलबुली-(हिं०स्त्री०) खुजलाहट, चुल।

चुलबुल-(हिं०स्त्री०) चंचलता, चपलता। **चुलबुला**-(हिं०वि०) चपल, चंचल। **चुलबुलाना**-(हिं०क्रि०) चंचल होना, चपलता करना।

चुल्लू-(हिं०पुं०) एक हाथ की हथेली का गड्ढा।

चुवना-(हिं०क्रि०) चूना, रसकर बहना।

चुवाना-(हिं०क्रि०) बूंदबूंद करके गिराना, टपकाना।

चुसकी-(हिं०स्त्री०) ओंठ से किसी वस्तु के पीने की क्रिया, घूंट। **चुसाना**-(हिं०क्रि०) चूसा जाना,। **चुसनी**-(हिं०स्त्री०) बच्चोंको चूसने का खिलौना। **चुसवाना**-(हिं०क्रि०) चूसने का काम दूसरे से कराना। **चुसाई**-(हिं०स्त्री०) चूसने का काम करना, चूसने देना।

चुहँटी-(हिं०स्त्री०) चुटकी।

चुहचुहा, चुहचुहाता-(हिं०वि०) चटकीला, रसीला। **चुहचुहाना**-(हिं०क्रि०) चटकीला जान पड़ना।

चुहटाना-(हिं०क्रि०) पैरों से कुचलना,

चुहड़ा-(हिं०पुं०) चाण्डाल, भंगी।

चुहना-(हिं०क्रि०) दातों से दबाकर रस चूसना।

चुहल-(हिं०स्त्री०) हँसी ठट्ठा, ठिठोली

चुहिया-(हिं०स्त्री०) मादा चूहा, छोटा चूहा।

चूं-(हिं० पुं०) छोटी चिड़िया के बोलने का शब्द।

चूंकरना-(हिं०क्रि०) कुछ कहना।

चूंचूं-(हिं०पुं०) चिड़ियों के बोलने का शब्द।

चूंनी-(हिं०स्त्री०) अन्न का कण।

चूक-(हिं०स्त्री०) भूल, दरार, फटन, धोखा,। **चूकना**-(हिं०क्रि०) अशुद्धि करना, भूल करना।

चूड़, चूड़क-(सं०पुं०) शिखा, चोटी।

चूड़ान्त-(सं०वि०) पराकाष्ठा, अन्तिम सीमा तक का।

चूड़ा-(सं०स्त्री०) शिखा, चोटी, चुरकी,

चूड़ाकरण-(सं०पुं०) बालक का पहिली बार शिर मुण्डन करने का संस्कार।

चूड़ामणि-(सं०पुं०) सिर में पहिरने का एक आभूषण, शीशफूल, अग्रगण्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूड़ी-(हिं०स्त्री०) कोई वृत्ताकार पदार्थ, हाथ में पहिरने का कोई गहना,

चूतड़, चूतर-(हिं०पुं०) कमर के नीचे तथा जांघ के ऊपर का मांसल भाग, नितम्ब ।

चून-(हिं०पुं०) चूर्ण, आंटा, पिसान ।

चूनर, चूनरी-(हिं०स्त्री०) देखो चुनरी

चूना-(हिं० पुं०) पत्थर, ककड़ आदि को फूंककर बनाया हुआ तीक्ष्ण भस्म, किसी वस्तु का ऊपर से नीचे अचानक गिराना, छिद्र से रसकर बहना; (वि०) छिद्र द्वारा टपकने वाला;

चूनी-(हिं०स्त्री०) अन्न का कण या छोटा टुकड़ा, माणिक रत्न का छोटा टुकड़ा, ।

चूमना-(हिं०क्रि०) ओठों से शरीर के किसी अंग को या किसी पदार्थ को दबाना का स्पर्श करना ।

चूर-(हिं०पुं०) टुकड़े, महीन कण, चूर्ण; (वि०) निमग्म, लीन, उत्मत्त,

चूरण, चूरन-(हिं०पुं०) चूर्ण, महीन पिसी हुई औषधि ।

चूरना-(हिं०क्रि०) चूर चूर करना,

चूरमा-(हिं०पुं०) एक पक्वान जो रोटी वा पूरी को चूरचूर करके घी में भून कर चीनी मिलाकर बनाई जाती है ।

चूरा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का पीसा हुआ भाग ।

चूर्ण-(सं०पुं०) महीन पिसा हुआ पदार्थ

चूर्णित-(सं०वि०) चूर्ण किया हुआ ।

चूर्मा-(हिं०पुं०) देखो चूरमा ।

चूल-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का वह पतला सिरा जिसपर कोई पदार्थ घूमता है ।

चूल्हा-(हिं०पुं०) मिट्टी का अथवा लोहे का बना हुआ वह पात्र जिसमें आंच रख कर पकाने का काम होता है ।

चूषण-(सं०पुं०) चूसने की क्रिया ।

चूषणीय-(सं०वि०) चूसने योग्य ।

चूसना-(हिं०क्रि०) ओंठ और जीभ को मिला कर किसी पदार्थ का रस खींचना ।

चूहड़, चहड़ा-(हिं०पुं०) श्वपच, भंगी, मेहतर ।

चूहा-(हिं०पुं०) मूषक, मूसा । **चूहा-दान, चूहेदानी**-(हिं०पुं०) चूहों को फंसाने का पिंजड़ा ।

चें-(हिं०स्त्री०) पक्षी के बोलने का शब्द । **चेंचें करना**-वृथा की बकवाद करना ।

चेगड़ा-(हिं०पुं०) छोटा बालक, बच्चा

चेंगी-(हिं०स्त्री०) चमड़े की गोल छेद की हुई चकती जो गाड़ी के धूरे पर पहिराई रहती है ।

चेंचर-(हिं०वि०) बकवाद करनेवाला।

चेंचे-(हिं०स्त्री०) चिड़ियों को बोलने का शब्द ।

चेटुआ-(हिं०पुं०) चिड़िया का बच्चा।

चुपं-(हिं०स्त्री०) चेंचपड़, व्यर्थ की बकवाद ।

चेफ-(हिं०पुं०) ऊख का छिलका ।

चेट, चेटक-(सं०पुं०) सेवक, दास, पति, विदूषक, भाड़, दूत ।

चेटिका चेटकी-(हिं०स्त्री०) दासी ।

चेटी-(सं०स्त्री०) दासी, लौंडी ।

चेटुआ-(हिं०पुं०) चिड़िये का बच्चा ।

चेत-(हिं०पुं०) चित्तवृत्ति, चेतना, ज्ञान

चेतन-(सं०पुं०) जीव, आत्मा ।

चेतना-(सं०स्त्री०) मनोवृत्ति, बुद्धि ।

चेतनीय-(सं०वि०) जानने योग्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चेतन्य-(हिं०पुं०) देखो चैतन्य ।
चेंतवनि-(हिं०स्त्री०) चितवन ।
चेतावनी-(हिं०स्त्री०) सावधान होने की सूचना ।
चेतौनी-(हिं०स्त्री०) देखो चेतावनी ।
चेप-(हिं०पुं०) कोई गाढा चिपचिपा रस, या लासा, उत्साह ।
चेर-(हिं०पुं०) दास, सेवक ।
चेरा-(हिं०पुं०) नौकर, दास, चेला ।
चेरि, चेरी-(हिं०स्त्री०) दासी, नौकरनी ।
चेला-(हिं०पुं०) शिष्य, छात्र, विद्यार्थी
चेष्टा-(सं०स्त्री०) इच्छा, कामना, प्रयत्न, उद्योग ।
चै-(हिं०पुं०) जन, समूह, ढेर ।
चैत-(हिं०पुं०) चैत्र, महीना ।
चैतन्य-(सं०पुं०) चित् स्वरूप आत्मा; ज्ञान (वि०) सचेत, सावधान ।
चैती-(हिं०स्त्री०) चैत में कटनेवाला अन्न, (वि०) चैत्र संबंधी ।
चैत्य-(सं०पुं०) मन्दिर, देवालय ।
चैत्र-(सं०पुं०) चैत का महीना ।
चैन-(हिं०पुं०) आनन्द, सुख ।
चैल-(सं०पुं०) वस्त्र, कपड़ा, पहिरावा ।
चैला-(हिं०पुं०) कुल्हाड़ी से चीरी हुई लकड़ी का टुकड़ा ।
चैली-(हिं०स्त्री०) चीरी हुई लकड़ी का छोटा चैला ।
चोंकर-(हिं०पुं०) देखो चोकर ।
चोंगा-(हिं०पुं०) बांस कागद आदि की एक ओर बन्द तथा दूसरी ओर खुली हुई पोली नली ।
चोंच-(हिं०स्त्री०) पक्षी के मुख का नोकीला अगला भाग, चञ्चु ।
चोंटना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, खोंटना,
चोंथ-(हिं०पुं०) गाय भैंस आदि का उतना गोबर जितना एक बार गिरे
चोंथना-(हिं०क्रि०) नोचना, चोथना ।
चोंधर, चोंधरा--(हिं०वि०) बहुत छोटी आंख वाला, मूर्ख ।
चोआ-(हिं०पुं०) तौलने में किसी बाँट की कमी पूरी करने लिये जो कंकड़ पत्थर का टुकड़ा प्रयोग किया जाता है ।
चोकर-(हिं०पुं०) पीसे हुए अन्न की भूसी या छिलका जो आटे के चालने पर निकलता है ।
चोखा-(हिं०पुं०) शुद्ध, बिना मिलावट का, पैनी धार का, चतुर, बैंगन, अरुई आदि का भुरता ।
चोचला-(हिं०पुं०) मोहित करने के के लिये अंगों की गति या चेष्टा, हावभाव ।
चोज-(हिं०पुं०) हँसी ठट्ठा, व्यंग, पूर्ण उपहास ।
चोट-(हिं०स्त्री०) टक्कर, मार, घाव, आक्रमण, सन्ताप, दुःख ; **चौटइल**-(वि०) चोट खाया हुआ; **चोटहा**-(वि०) जिसके अंग पर आघात का चिह्न हो ।
चोटा-(हिं०पुं०) राब का पसेव ।
चोटार-(हिं०वि०) चोट पहुँजाने वाला
चोटियाना-(हिं०क्रि०) चोट मारना, चोटी पकड़ना ।
चोटी-(हिं०स्त्री०) शिखा, चुन्दी, स्त्रियों के एक में एक गुथे बाल; **चोटीपोटी**-(स्त्री०) झूठी बात ।
चोट्टा-(हिं०पुं०) तस्कर, चोरी करनेवाला
चोप-(हिं०पुं०) इच्छा, चाह, उमंग ।
चोपदार-(हिं०पुं०) देखो चोबदार ।
चोपना-(हिं०क्रि०) मोहित करना ।
चोपी-(हिं०स्त्री०) देखो चोप ।
चोभाना-(हिं०क्रि०) देखो चुभाना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चोभा-(हिं०पुं०) वह पोटली जिसमें दवा बांध कर शरीर के कोई अंग सेके जाते हैं ।

चोर-(सं०पुं०) तस्कर, अनिष्टकारक पदार्थ,(वि०) छिपाया हुआ, गुप्त

चोरकट-(हिं०पुं०)चोर, उचक्का ।

चोरखाना-(हिं०पुं०) सन्दूक आदिमें लगा हुआ गुप्त स्थान ।

चोराना-(हिं०क्रि०) देखो चुराना ।

चोरी-(हिं०स्त्री०) चुराने का काम।

चोला-(हिं०पुं०) साधु का पहिरने का ढीला लंबा कुरता ।

चोली-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की एक प्रकारकी अँगिया ।

चोषक-(सं०वि०) चूसने वाला ।

चोषण-(सं०पुं०)चूसने की क्रिया ।

चोष्य-(सं०वि०) चूसने योग्य ।

चोसा-(हिं०पुं०) लकड़ी रेतने की रेती

चौवालिस-(हिं०) देखो चौवालिस ।

चौंक-(हिं०स्त्री०) पीड़ा या भय के कारण शरीर का झटके से हिल उठना तथा जी घबड़ाना, भड़क, झिझक।

चौंकना-(हिं०क्रि०)आश्चर्य,भय, पीड़ा आदिके कारण शरीर कँप जाना, भड़कना, चकित होना।

चौंकाना-(हिं०क्रि०)भड़काना, ।

चौतरा-(हिं०पुं०)देखो चबूतरा ।

चौंतीस-(हिं०वि०) तीस और चार की संख्या ३४; चौंतिसवाँ-तेंतीस संख्या के बाद का ।

चौंध-(हिं०स्त्री०) दृष्टि की अस्थिरता तिलमिलाहट; चौंधना-चमकना ।

चौंधियाना-(हिं०क्रि०) दृष्टि स्थिर न कर सकना ।

चौर-(हिं०पुं०) चँवर, झालर, फुन्दना।

चौरा-(हिं०पुं०) अन्नरखने का गड्ढा ।

चौंरी-(हिं०स्त्री०) मक्खी हाँकने का छड़ी में बंधा हुआ घोड़े के पूंछ के बालों का गुच्छा ।

चौसठ-(हिं०वि०) साठ और चार की संख्या ६४ । **चौंसठवाँ**-(हिं०वि०) संख्या में तिरसठ के बाद का ।

चौ-(हिं०वि०) चार, (पुं०)जौहरियों की मोती तौलने का एक परिमाण ।

चौंआ-(हिं०पुं०) चौपाया; (पुं०) चार अंगुल की नाप, ताशका वह पत्ता जिसमें चार बूटियां हों । **चौआना**-(हिं०क्रि०) विस्मित होना,चकपकाना

चौक-(हिं०पुं०) चौकोर भूमि, घरके बीच का चौखूटा स्थान, नगर का चौड़ा मैदान जहां बड़ी बड़ी दूकानें हों।

चौकठ,चौकठा-(हिं०पुं०)देखो चौखटा।

चौकड़-(हिं०वि०)उत्तम, बढ़िया, अच्छा

चौकड़ा-(हिं०पुं०)कान में पहिरने की बाली ।

चौकड़ी-(हिं०स्त्री०) हरिन की वह गति जिसमें वह चारो पैर एक साथ फेकता हुआ दौड़ता है, चार मनुष्य की गुट्ट, पलथी, चार युगों का समूह चार घोड़े की गाड़ी ।

चौकन्ना-(हिं०वि०) सावधान, सजग ।

चौकरी-(हिं०स्त्री०) देखो चौकड़ी ।

चौकल-(हिं०वि०) सावधान, सचेत ।

चौका-(हिं०पुं०) पत्थर का चौकोर टुकड़ा, रोटी बेलने का काठ या पत्थर का गोल टुकड़ा, चकला, हिन्दुओं के रसोई बनाने का स्थान, स्वच्छता के लिये मिट्टी गोबर का लेप, चार बूटियों का ताश का पत्ता, एक प्रकार का ठस बिना हुआ वस्त्र।

चौकी-(हिं०स्त्री०) काठ या पत्थर का चार पावे लगा हुआ आसन, कुरसी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुलीस का छोटा थाना, । **चौकीदार**-(हिं०पुं०) पहरा देनेवाला, गोड़ैत ।

चौकीदारी-(हिं० स्त्री०) रखवाली, वह धन जो चौकीदार रखने के लिये दिया जावे ।

चौकोन, चौकोना, चौकोर-(हिं० वि०) चतुष्कोण, चौखूटा ।

चौखट-(हिं०स्त्री०) चार लकड़ियोंसे बना हुआ ढांचा जिसमें किवाड़ के पल्ले लगे होते हैं, देहली ।

चौखानि-(हिं०स्त्री०) चार प्रकार के जीव यथा अण्डच, पिण्डच, स्वेदच और उद्भिन्न ।

चौखूंट-(हिं०पुं०) चारो दिशा, भूमण्डल

चौखूंटा-(हिं०वि०) चौकोर ।

चौकुन-(हिं०वि०) चौगुना, चतुर्गुण।

चौगुना, चौगून-(हिं०वि०) चतुर्गुण।

चौगोडिया-(हिं०स्त्री०) चार पावकी ऊंची चौकी ।

चौघड़-(हिं०पुं०) दाढ़ का चौडा दांत जो चिपटा होता है ।

चौघड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चार खाने का डिब्बा ।

चौघोड़ी-(हिं० स्त्री०) चार घोड़े की गाड़ी या रथ ।

चौचन्द-(हिं०पुं०) अपवाद ।

चौजुगी-(हिं०स्त्री०) चार युगोंका काल ।

चौड़ा-(हिं०वि०) लंबाई से भिन्न दिशा में विस्तृत ।

चौतरा-(हिं०पुं०) देखो चबूतरा ।

चौतही-(हिं०स्त्री०) चार तह करके बिछाने की मोटी चांदनी ।

चौतारा-(हिं०पुं०) एक बाजा जिसमें चार तार लगे होते हैं ।

चौथ-(हिं०स्त्री०) महीने के प्रत्येक पक्ष का चौथा दिन, मराठों का लगाया हुआ एक कर जिसमें आय का चौथाई अंश राजा को मिलता था ।

चौथिया-(हिं०पुं०) चौथे दिन आने वाला ज्वर ।

चौदस-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की चौदहवीं तिथि ।

चौदह-(हिं०वि०) जो गिनती में दस और चार हो । **चौदहवाँ**-(हिं०वि०) क्रममें तेरह के बाद का ।

चौधराई-(हिं०स्त्री०) चौधरीका काम या पद । **चौधराना**-(हिं०स्त्री०) वह धन जो चौधरी को उसके काम के लिये दिया जाय ।

चौधरी-(हिं०पुं०) किसी जाति या समाज का मुखिया ।

चौपग-(हिं०पुं०) चार पैरका प्राणी ।

चौपट-(हिं०वि०) चारो ओर से खुला हुआ, नष्ट भ्रष्ट ।

चौपटहा-(हिं०वि०) सर्वनाशी ।

चौपड़-(हिं०स्त्री०) चौसर का खेल ।

चौपथ-(हिं०पुं०) चौरा, चौमुहानी ।

चौपद-(हिं०पुं०) चौपाया, पशु ।

चौपरतना-(हिं०क्रि०) कपड़े की तह लगाना ।

चौपहरा-(हिं०वि०) चार पहर का ।

चौपहल-(हिं०वि०) जिसमें चार पहल हों । **चौपहला, चौपहलू**-(हिं०वि०) वर्गात्मक, चार पहल का ।

चौपहिया-(हिं०वि०) जिसमें चार पहिये हों ।

चौपहलू-(हिं०पुं०) देखो चौपहला ।

चौपाई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरणमें सोलह मात्रा होती हैं ।

चौपाया-(हिं०पुं०) चार पैर वाला पशु ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौपाल-(हिं०पुं०) बैठने उठने का स्थान जो ऊपर से ढपा तथा चारो ओर से खुला हो, एक प्रकार की खुली पालकी ।

चौफला-(हिं०वि०)जिसमें चार फल या धार हों ।

चौफेर-(हिं०क्रि०वि०) चारो ओर ।

चौफेरी-(हिं० स्त्री०) चारो ओर घूमना ।

चौबन्दी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिरजई ।

चौबगला-(हिं०पुं०) कुरता, फतुही आदि में बगल के नीचे तथा कली के ऊपर का भाग, (वि०) चारो ओर का; **चौबगली**-(हिं०स्त्री०) बगलबन्दी

चौबाइन-(हिं०स्त्री०) चौबे की स्त्री ।

चौबाई-(हिं०स्त्री०) चारो ओर बहने वाली हवा, किंवदन्ती ।

चौबारा-(हिं०पुं०) घर के ऊपर की वह कोठरी जिसमें चारो ओर खिड़कियां हो, (वि०) चौथी बार ।

चौबिस,चौबीस-(हिं०वि०) बीस और चारकी संख्या का, यह संख्या २४ ।

चौबीसवाँ-(हिं०वि०) संख्या में तेईस के बाद का ।

चौबे-(हिं०पुं०) ब्राह्मणों की एक शाखा, चतुर्वेदी ।

चौमसिया-(हिं०वि०) वर्षा ऋतु के चार महीने में होने वाली (पुं०) चार माशे की बाँट ।

चौमासा-(हिं०पुं०) चातुर्मास, वर्षाके चार महीने ।

चौमुख-(हिं०क्रि०वि०) चारो ओर ।

चौमुखा-(हिं०वि०) चारो ओर मुख वाला ।

चौमुहानी-(हिं०स्त्री०)चतुष्पथ, चौरहा

चौरंगा-(हिं०वि०) चार रंग का ।

चौरस-(हिं०वि०) जो ऊँचा नीचा न हो, समतल, बराबर ।

चौरस्ता-(हिं०पुं०) चौरहा, चौमुहानी । **चौरहा**-(हिं०पुं०) चतुष्पथ ।

चौरा-(हिं०पुं०)चबूतरा, वेदी ।

चौरानवे-(हिं०वि०) नब्बे और चार की संख्या का ९४ ।

चौरासी-(हिं०वि०) अस्सी और चार की संख्या ८४, एक प्रकार का घूंघुरू ।

चौराहा-(हिं०पुं०) देखो चौरहा ।

चौरी-(हिं०स्त्री०) छोटा चबूतरा या वेदी ।

चौरेठा-(हिं०पुं०) पानी के साथ पीसा हुआ चावल ।

चौर्य-(सं०पुं०) स्तेय, चोरी ।

चौलकर्म-(हिं०वि०)चूड़ासंस्कार,मुण्डन

चौलड़ा-(हिं०वि०) जिस माला में चार लड़ी हों ।

चौवन-(हिं०वि०)पचास और चारकी संख्या का ५४ ।

चौवा-(हिं०पुं०) हाथ की चार अंगुलियों का समूह, चार अंगुलियों में लपेटा हुआ तागा, ताश का पत्ता चिसमें चार बूटियां हों, ।

चौवालीस-(हिं०वि०) चालिस और चार की संख्या ४४ ।

चौसर-(हिं०पुं०) एक खेल जो बिसात पर चार रंग की चार चार गोटियाँ से दो मनुष्यों में खेला जाता है ।

चौहट, चौहट्ट-(हिं०पुं०) वह स्थान चहां चारो ओर दूकान हों, चौक, चौरास्ता, चौमुहानी ।

चौहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और चार की संख्या ७४ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौहद्दी-(हिं.स्त्री.)चारोओर की सीमा
चौहरा-(हिं०वि०) चार तह या परत का, चौगुना।
चौह-(हिं०क्रि० वि०) चारो ओर।
च्यवन-(सं०पुं०)टपकना, चूना, रसना

छ

छ-हिन्दी वर्णमाला में चवर्ग का दूसरा व्यंजन जिसका उच्चारण तालु से होता है; (सं० पुं०) आच्छादन, घर, खण्ड, टुकड़ा (वि०) स्वच्छ तरल, निर्मल, (हिं०वि०) पांचसे एक अधिक संख्या का, गिनती में पांच से एक अधिक।
छंग-(हिं०पुं०) उत्संग, गोद, अंक।
छंगा-(हिं०वि०)छ अंगुलियों वाला।
छँटना-(हिं०क्रि०) कटकर अलग होना,
छँटवाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का अनावश्यक भाग कटवा देना; **छँटाई**-(हिं०स्त्री०) छाँटने या अलग करने का काम, चुनने का काम; **छँटान**-(हिं०पुं०) छांटने का काम।
छँडना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
छँड़ुवा-(हिं०वि०)छोड़ा हुआ, मुक्त।
छंद-(हिं०पुं०)युक्ति, चाल, अभिप्राय, ढकना, स्त्रियों का हाथ में पहिरने का एक आभूषण।
छंदना-(हिं०क्रि०)पैरोंमें रस्सी लगाकर बांधा जाना।
छई-(हिं०स्त्री०) देखो क्षयी।
छक-(हिं०स्त्री०) तृप्ति।
छकड़ा-(हिं०पुं०) बोझ लादने की दुपहिया गाड़ी।
छकड़िया-(हिं०स्त्री०) छ कहारों से उठाने की पालकी।
छकड़ी-(हिं०स्त्री०) छ का समूह,
छकना-(हिं०क्रि०) चकराना।
छकाछक--(हिं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ।
छकाना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना, परास्त करना; **छकीला**-(हिं० वि०) छका हुआ।
छक्का-(हिं० पुं०) छ का समूह, वह ताश जिसमें छ बूटियां हों, छक्का पंचा-दावपेंच; । छक्के छूटना-साहस छूटना।
छगन-(हिं०पुं०)छोटा बालक, प्रिय बालक।
छगरी(हिं०स्त्री०) छोटी बकरी।
छगल-(सं०पुं०) छाग, बकरा।
छगुनी-(हिं०स्त्री०) हाथ की सबसे छोटी अँगुली।
छछूंदर, छछुंदर-(हिं०पुं०) चूहे की जाति का जन्तु जिसका थूथन अधिक नुकीला होता है, एक प्रकार की अग्नित्रीड़ा।
छजना-(हिं०क्रि०)शोभा देना, अच्छा लगना, ठीक जँचना।
छज्जा-(हिं०पुं०) ओलती, भीत के बाहर निकला हुआ भाग।
छटंकी-(हिं०स्त्री०) एक छटांक का बटखरा, बहुत छोटी वस्तु।
छटकना-(हिं०स्त्री०) वेग के साथ निकल जाना, अलग अलग रहना, उछलना कूदना।
छटकाना-(हिं०क्रि०) बलपूर्वक अलग करना।
छटपट-(हिं०पुं०) पीड़ा के कारण पैर पटकने का क्रिया; (वि०) चंचल, चपल। **छटपटाना**-(हिं०क्रि०) तड़फड़ाना, घबड़ाना।
छटपटी-(हिं०स्त्री०) व्याकुलता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छटाँक-(हिं०स्त्री०) एक सेर का सोलहवां भाग ।
छटा-(सं० स्त्री०) प्रकाश, शोभा, सौन्दर्य, छवि, बिजली ।
छटाभा-(सं०स्त्री०) बिजली की चमक
छटैल-(हि०वि०) छटा हुआ, चतुर
छठवां, छठा-(हिं०वि०) क्रम में पांच वस्तु के बाद का; छठे छमासे-कभी कभी ।
छठी-(हिं०स्त्री०) जन्म से छठे दिन अथवा छठें मास का पूजन ।
छड़-(हिं०स्त्री०) धातु या लकड़ी का लंबा पतला टकड़ा या गज ।
छड़ा-(हिं०पुं०) स्त्रियों की पैर में पहिरने की चूड़ी ।
छड़ी-(हिं०स्त्री०) पतली लकड़ी या लाठी; (वि०) अकेली; छड़ी सवारी-अकेला, बिना सामग्री के यात्रा ।
छण-(हिं०पुं०) देखो क्षण ।
छत-(सं०स्त्री०) चूना कंकड़ आदि डालकर बनाई हुई घर की भूमि, पाटन ।
छतना-(हिं०पुं०) पत्तेंका बना हुआ छाता
छतनार-(हिं०वि०) छत्ते की तरह फैला हुआ ।
छतवंत-(हिं०वि०) क्षतयुक्त ।
छतरी-(हिं०स्त्री०) छाती, मण्डप, इक्के के ऊपर की छाजन, कुकुरमुत्ता।
छतिया-(हिं०स्त्री०) वक्षःस्थल, छाती।
छतीसा-(हिं०वि०) चतुर, सयाना धूर्त; छतीसापन-धूर्तता ।
छत्ता-(हिं०पुं०) छाता, छतर, पटाव जिसके नीचे से मनुष्य के चलने का मार्ग हो, मधुमक्खियों क रहने का मोम का बना हुआ घर ।
छत्तीस-(हिं०पुं०) तीस और छ की संख्या ३६ । छत्तीसवाँ-(हिं०वि०) पैंतीस के बाद का संख्या का।
छत्तीसा-(हिं०पुं०) नाई, हज्जाम, (वि०) धूर्त, चतुर ।
छत्तीसी-(हिं०वि०) छलछंद वाली, छिनाल।
छत्तर-(हिं०पुं०)छाता।
छत्र-(सं०पुं०) छाता, छतरी।
छत्रक-(सं०पुं०) कुकुरमुत्ता ।
छत्रपती-(सं०पुं०) छत्र का अधिपति राजा। छत्रपत-(सं०नपुं०)भोजपत्र का वृक्ष । छत्रभंग-(सं०पुं०) अराजकता ।
छंद-(सं०पुं०) आवरण, छाल ।
छदाम-(हिं०पुं०) पैसे का चतुर्थांश ।
छद्म-(सं०पुं०)बहाना,मिस, कपट; छद्मवेश-दूसरों को ठगने के लिये धारण किया हुआ वेश; छद्मी-(हिं० वि०) कपटी, छली ।
छन-(हिं०पुं०) दखो क्षण ।
छनक-(हिं०स्त्री०)झनझनाहट,झनकार, भड़क (पुं०) एक क्षण । छनकना-(हिं०क्रि०) भड़कना ।
छनछनाना-(हिं०क्रि०) झनझनाना ।
छनछवि-(हिं०स्त्री०)क्षणप्रभा,बिजली ।
छनना-(हि०क्रि०) महीन छिद्रों में से किसी पदार्थ का नीचे गिरना; छोटे छोटे छेदों में से होकर आना, छानबीनहोना; (पुं०) छानने का महीन वस्त्र ।
छन भंगु-(हिं०वि०) क्षणभर में नष्ट होने वाला ।
छनाका-(हिं०पुं०)झनकार,ठनाका ।
छनिकि-(हिं०वि०) क्षणिक,अल्प काल का; (पुं०) एक क्षण ।
छन्न-(सं०वि०) ढपा हुआ, लुप्त,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छन्नमति-(हिं०वि०) मूर्ख,अज्ञान ।
छना-(हिं०पुं०) देखो छनना ।
छन्द-(सं०पुं०) वेद, वह वाक्य जिसमें वर्ण या मात्रा की गणना के अनुसार विराम आदि के नियम हों ।
छंदोभंग-(सं०पुं०) छन्द रचना का एक दोष ।
छप-(हिं०स्त्री०) पानी में किसी वस्तुके गिरने का शब्द ।
छपका-(हिं०पुं०) सिर में पहिरने का एक आभूषण, पानी में हाथ पांव मारने का काम ।
छपटना-(हिं०क्रि०) चिपकना । **छप-छाना**-(हिं०क्रि०) छाती से लगाना ।
छपद-(हिं०पुं०) भ्रमर, भौंरा ।
छपन--(हिं०वि०) गुप्त, (पुं०) विनाश संहार ।
छपना-(हिं०क्रि०) छापा जाना, अंकित होना ।
छपरखट, छपरखाट-(हिं०पुं०) मसहरीदार पलंग ।
छपवया-(ह०वि०) छपाने या छपवाने वाला ।
छपहीं-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के हाथ की अंगुलियों में पहिरने का एक गहना ।
छपा-(हिं०स्त्री०) क्षपा, रात्रि ।
छपाई-(हिं०स्त्री०) छापने का काम या ढंग, मुद्रण, छापने की मजदूरी ।
छपाकर-(हिं०पुं०) क्षपाकर, चन्द्रमा ।
छपाका-(हिं०पुं०) पानी में किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।
छपाना-(हिं०क्रि०) छापने का काम कराना, छापेखाने में मुद्रित कराना ।
छपानाथ, (हिं०पुं०) देखो क्षपानाथ ।
छपाव-(हिं०पुं०) देखो छिपाव ।
छप्पन-(हिं०वि०) पचास और छ की संख्या ५६ ।
छप्पय-(हिं०पुं०) एक मात्रिक छन्द जिसमें छ चरण होते हैं ।
छप्पर-(हिं०स्त्री०) लकड़ी फूस आदि की बनाई हुई छाजन ।
छब-(हिं०स्त्री०) देखो छवि ।
छबड़ा-(हिं० पुं०) छितना, झावा, खाचा ।
छबि-(हिं०स्त्री०) शोभा, सुन्दरता ।
छबीला-(हिं०वि०) सुन्दर, सोहावना ।
छब्बीस-(हिं०वि०) बीस और छ की संख्या २६ । **छब्बीसवाँ**-(हिं०वि०) संख्या में पचीस के बाद का ।
छब्बीसी-(हिं०स्त्री०) छब्बीस वस्तुओं का समूह ।
छम-(हिं०स्त्री०) घूंघरू बजने का शब्द
छमक-(हिं०स्त्री०) ठसक, ठाटबाट ।
छमकना-(हिं०क्रि०) ठसक दिखलाना ।
छमछम-(हिं०स्त्री०) घूंघरू, पायल आदि के बजने का शब्द; (क्रि०वि०) ऐसे शब्द के साथ ।
छमा-(हिं०स्त्री०) देखो क्षमा ।
छमाछम-(हिं०स्त्री०) गहनेके बजने या पानी बरसने का शब्द ।
छमावान-(हिं०वि०) देखो क्षमवान ।
छमिच्छा-(हिं०स्त्री०) समस्या, संकेत ।
छय-(हिं०पुं०) क्षय, नाश, विनाश । **छयना**-(हिं०क्रि०) नष्ट होना ।
छर-(हिं०पुं०) देखो क्षर ।
छरकना-(हिं०क्रि०) छिटकना, बिखरना
छरछंद, छरछंदी-देखो छलछंद, छरछंदी,
छरछर-(हिं०पुं०) कणों के वेग से निकलने का शब्द । **छरछराना**-(हिं० क्रि०) घाव पर नमक लगने से पीड़ा होना, । **छरछराहट**-(हिं०स्त्री०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरीर के कटे भाग पर क्षार लगकर पीड़ा होना।

छरना-(हिं०क्रि०) टपकना, चूना, झरना

छरछरा-(हिं०वि०) क्षीण अंग का, हलका।

छरा-(हिं०पुं०) छड़ा, लड़ी, रस्सी।

छरीदा-(हिं०वि०) बिना संग साथ का, अकेला।

छर्रा-(हिं०पुं०) कंकड़ आदि का छोटा टुकड़ा, बन्दूक में भरने के सीसे के छोटे छोटे टुकड़े।

छल-(सं०पुं०) धूर्तता, बहाना, कपट।

छलक-(हिं०स्त्री०) छलकने का भाव या क्रिया। छलकन-(हिं०स्त्री०) उछाल। छलकना-(हिं०क्रि०) किसी द्रव पदार्थ का बरतन से उछल कर बाहर गिरना।

छलछंदी-(हिं०वि०) धूर्त, कपटी।

छलछापा-(हिं०स्त्री०) कपटजाल।

छलिछिद्र-(सं०पुं०) कपट व्यवहार।

छलन-(हिं०पुं०) छल करने का कार्य। छलना-(हिं०क्रि०) धोखा देना।

छलनी-(हिं०स्त्री०) आंटा चालने का बरतन, चलनी।

छलाँग-(हिं०स्त्री०) फलांग, कुदान, चौकड़ी।

छला-(हिं०पुं०) छल्ला या अंगूठी;

छलित-(सं०वि०) वंचित, धोखा दिया हुआ। छलिया-(हिं०वि०) छल करने वाला, कपटी। छली-(हिं०वि०) कपटी

छल्ला-(हिं०पुं०) अंगूठी, मुंदरी, कोई मण्डलाकार वस्तु। छल्ली-(हिं०स्त्री०) छाल, छोटा छल्ला।

छवना-(हिं०पुं०) बच्चा, सूअरका बच्चा

छवाई-(हिं०स्त्री०) छाने का काम या पारिश्रमिक।

छवि-(सं०स्त्री०) शोभा, कान्ति, सौन्दर्य

छवैया-(हिं०पुं०) छप्पर छानेवाला।

छह-(हिं०वि०) छ।

छहरना-(हिं०क्रि०) बिखरना, फैलना।

छहराना-(हिं०क्रि०) छितराना।

छहरीला-(हिं०वि०) छरहरा।

छहियाँ-(हिं०स्त्री०) छाहँ, छाया।

छिगुरा-(हिं०पुं०) छ अंगुलियों वाला।

छाँछ-(हिं०स्त्री०) देखो छाछ।

छाँट-(हिं०स्त्री०) काटने छांटने की क्रिया, छाटने का ढंग, कतरन, अन्न की भूसी। छाँटन-(हिं०स्त्री०) अलग की हुई बेकार वस्तु, कतरन।

छाँटना-(हिं०स्त्री०) टुकड़ा अलगाना, स्वच्छ करने के लिये अन्न का कूटना, चुन लेना, हटाना, संक्षिप्त करना, गड़गड़ कर बातें करना।

छाँड़ना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।

छाँद--(हिं०स्त्री०) पशुओंके पैर बांधने की छोटी रस्सी,। छाँदना-(हिं०क्रि०) रस्सी से बांधना,।

छाँवड़ा-(हिं०पुं०) पशु का छोटा बच्चा।

छाँह-(हिं०स्त्री०) छाया, परछाहीं, प्रतिबिम्ब।

छाँहीं-(हिं०स्त्री०) देखो छांह।

छाई-(हिं०स्त्री०) राख, खाद।

छाग-(हिं०पुं०) बकरा।

छागर-(सं०स्त्री०) छगल, बकरी।

छागल-(सं०पुं०) बकरा, स्त्रियों के पैर में पहिरने का एक गहना।

छाछ-(हिं०स्त्री०) मक्खन निकाला हुआ दूध या दही।

छाछठ-(हिं०वि०) देखल छासट।

छाज-(न)-(हिं०स्त्री०) छप्पर।

छाड़ना-(हिं०क्रि०) वमन करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छाता-(हिं० पुं०) छड़ी, छतरी, छत्ता।
छाती-(हिं०स्त्री०) वक्षःस्थल, कलेजा, हृदय, मन, तन, कुच, साहस, दृढ़ता,
छात्र, छात्रक-(सं०पुं०) विद्यार्थी, शिष्य, चेला।
छात्रवृत्ति-(सं०स्त्री०) विद्यार्थियों को विद्याभ्यास की दशा में आर्थिक सहायता। **छात्रालय**-(सं०पुं०) विद्यार्थियों के रहने का स्थान।
छादन-(सं०पुं०) आवरण, ढाकने का काम।
छादित-(सं०वि०) आच्छादित, ढपा हुआ
छाद्मिक-(सं०स्त्री०) पाखंडी, वहुरूपिया
छान-(हिं०स्त्री०) घास फूसकी छाजन, खपरैल।
छानना-(हिं०पुं०) मिली हुई वस्तु को अलगाना, जांचना, पड़ताल करना, रस्सी से बाँधना।
छानबीन-(हिं० स्त्री०) अनुसन्धान, जांच पड़ताल, पूर्ण विवेचना।
छाना-(हिं०वि०) ऊपर से आच्छादित करना।
छानबे-(हिं०वि०) नब्बे और छ की संख्या का, नब्बे से छ अधिक ९६।
छानी-(हिं०स्त्री०) छप्पर।
छाप-(हिं०स्त्री०) किसी उभड़े या खुदे हुए ठप्पे का चिह्न।
छापना-(हिं०क्रि०) चिह्नित करना; मुद्रित करना।
छापा-(हिं०पुं०) ठप्पा, मुद्रा, मुद्रायन्त्र, प्रतिकृति असावधान शत्रु पर रात्रि में आक्रमण।
छापाखाना-(हिं०पुं०) मुद्रालय, प्रेस।
छाम-(हिं०पुं०) क्षाम, दुर्बल, कृश।
छामोदरी-(हिं०वि०) कृशोदरी, छोटे पेट वाली।
छाय-(हिं०स्त्री०) छाया।
छाया-(सं०स्त्री०) प्रकाश का अभाव, परछाई, प्रतिबिम्ब, अनुहार, अन्धकार भूत प्रेत का प्रभाव।
छायादान-(सं०नपुं०) घी या तेल में अपने मुख की छाया देखकर इसमें कुछ दक्षिणा डालकर दान करने की विधि।
छायायन्त्र-(सं०नपुं०) धूपघड़ी।
छायालोक-(सं०पुं०) अदृश्य जगत।
छार-(हिं०पु०) वनस्पतियों को जलाकर इनका निकाला हुआ नमक, क्षार।
छाल-(हिं०स्त्री०) वृक्षों के ऊपर का आवरण, वल्कल, वाकला।
छालटी-(हिं०स्त्री०) सन या पटुवे का बना हुआ कपड़ा।
छालना-(हिं०क्रि०) छलनी में रखकर आटा आदि छानना, चालना,।
छाला-(हिं०पुं०) छाल या चमड़े के ऊपर की झिल्ली का उभड़ आना,
छालिया-(हिं०पुं०) कांसे का प्याला जिसमें घी या तेल भर कर छायादान किया जाता है, सुपारी।
छावँ-(हिं०स्त्री०) प्रतिबिम्ब, छाया, शरण। **छावना**-(हिं०क्रि०) देखोछाना
छावनी-(हिं०स्त्री०) पड़ाव, डेरा, सेना के ठहरने का स्थान।
छावरा-(हिं०पुं०) पशुका बच्चा, छौना
छावा-(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा, बच्चा।
छाछठ-(हिं०वि०) गिनती में साठ और छ की संख्या ६६।
छिउँका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा चींटा। **छिउकी**-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चींटी।
छिंकाना-(हिं०क्रि०) छींक लाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छिगुनिया छिगुनी-(हिं०स्त्री०) कानी अँगुली ।
छिड़ाना-(हिं०क्रि०) छीनना ।
छिः-(हिं०अव्य०) घृणा, तिरस्कार अथवा अरुचि सूचक शब्द ।
छिगुनी-(हिं०स्त्री०) हाथ की सबसे छोटी अँगुली ।
छिच्छ-(हिं०स्त्री०) छींटा, बूंद ।
छिछकारना-(हिं०क्रि०) छिड़कना ।
छिछड़ा-(हिं०पुं०) देखो छीछड़ा ।
छिछला-(हिं०वि०) पानी का तल जो गहरा न हो ।
छिछोरपन, छिछोरापन-(हिं० पुं०) क्षुद्रता, ओछापन, नीचता ।
छिछोरा-(ह०वि०) क्षुद्र, ओछा ।
छिटकना-(हिं०स्त्री०) चारो ओर बिखरना, चारो ओर प्रकाश फैलना
छिटकाना-(हिं०स्त्री०) बिखराना ।
छिटकी-(हिं०स्त्री०) छींट, छींटा ।
छिट्टी-(हिं०स्त्री०) सूक्ष्म जलकण, महीन छींटा ।
छिड़कना-(हिं०क्रि०) पानी के छीटे फेंकना
छिड़ना-(हिं०स्त्री०)आरंभ होना ।
छिण-(हिं०पुं०) देखो क्षीण ।
छितनी-(हिं०स्त्री०) बांसकी छिछली टोकरी ।
छितराना-(हिं०क्रि०)बिखराना, इधर उधर डालना ।
छिति-(हिं०स्त्री०)भूमि, पृथ्वी; छितिपाल (हिं०पुं०) राजा । छितिरुह-(हिं०पुं०) वृक्ष। छितीस-(हिं०पुं०) क्षितीश, भूपति, राजा ।
छित्वर-(हिं०वि०)धूर्त, छिदक, वैरी।
छिदना-(हिं० क्रि०) छिद्र युक्त होना ।
छिदरा-(हिं०वि०)छितराया हुआ,विरल
छिदवाना, छिदाना-(हिं०क्रि०) देखो छेदाना ।
छिद्र-(सं०पुं०) छेद, गड्ढा बिल, दोष, त्रुटि । छिद्रान्वेषण-(सं०पुं०) दोष ढूंढ़ना, खुचुर निकालना ।
छिद्रित-(सं०वि०) दूषित, छेदा हुआ।
छिन-(हिं०पुं०) देखो क्षण ।
छिनक-(हिं०क्रि०वि०) क्षण भर, दम-भर। छिनकना-(हिं०क्रि०) नाक का मल बाहर फेंकते हुए निकालना ।
छिनछवि-(हिं०स्त्री०) विद्युत,बिजली
छिनना-(हिं०क्रि०) छीन लिया जाना,
छिनार, छिनाल-(हिं०स्त्री०) व्यभिजारिणी, कुलटा ।
छिन्न-(सं०वि०) खण्डित, कांट कर अलग किया हुआ । छिन्न भिन्न-(सं०वि०) टूटाफूटा, नष्ट भ्रष्ट,
छिपकली-(हिं०स्त्री०) गोह जाति का एक जन्तु जो घरों में रहता है ।
छिपना-(हिं०क्रि०) देख न पड़ना, अदृश्य होना, गुप्त रहना; । छिपाना-(हिं०क्रि०) ढाँकना, गुप्त रखना, प्रगटन करना ।
छिप्र-(हिं०वि०)देखो क्षिप्र ।
छिया-(हिं०स्त्री०)घृणित वस्तु, मल ।
छियानबे-(हिं०वि०) देखो छानवे ।
छियालिस, छियालीस-(हिं० वि०) चालिस और छ की संख्या ४६ ।
छियासी-(हिं०वि०) अस्सी और छ की संख्या ८६ ।
छिरकना-(हिं०क्रि०) देखो छिड़कना।
छिरहा-(हिं०वि०) हठी ।
छिलका-(हिं०पुं०) फल कन्द आदि के ऊपरका आवरण, फलों की त्वचा ।
छिलना-(हिं०क्रि०) छिलके या चमड़े

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का कटकर अलग होना, उघड़ना,
छिहत्तर-(हिं०वि०)सतर और छ की संख्या ७६।
छिहरना-(हिं०वि०) छितराना, फैलाना
छींक-(हिं०स्त्री०) वेग के साथ नांक से वायु का झोंका निकलना।
छींट-(हिं०स्त्री०) रंग विरंगे बूटे का छपा हुआ वस्त्र।
छींटना-(हिं०क्रि०) बिखराना, छितराना
छींटा-(हिं०पुं०) बूंद, जलकण, बूँद का चिह्न।
छी-(हिं० अव्य०) घृणा सूचक शब्द।
छीका-(हिं०पुं०) रस्सियोंका बना हुआ गोल जाल जो वस्तुओं को रखने के लिये छत में लटका दिया जाता है, सिकहर।
छीछड़ा-(हिं०पुं०) मांस का बेकाम लच्छा।
छीछल-(हिं०वि०) देखो छिछला।
छीज-(हिं०स्त्री०)कमी, घाटा, टोटा;
छीजना-(हिं०क्रि०) घटना।
छीति-(हिं०स्त्री०)क्षति,हानि,बुराई।
छीदा-(हिं०वि०)झंझरा, अनेक छिद्र-वाला।
छीन-(हिं०पुं०) क्षीण, कृश, दुबला पतला। छीनता-(हिं०स्त्री०) देखो क्षीणता।
छीनना-(हिं०क्रि०) छिन्न करना, बल पूर्वक किसी की वस्तु हर लेना, पुरवटका पानी गिराना।
छीप-(हिं०वि०)क्षिप्र, वेगवान् (स्त्री०) छाप, चिह्न, शरीर परके छोटे चिह्न।
छीपी-(हिं०पुं०) वस्त्र पर छींट छापने वाला।
ीवर-(हिं०स्त्री०) वह वस्त्र जिस पर बेलबूटे छपे हों।
छीमी-(हिं०स्त्री०) मटर आदिकी फली।
छीर-(हिं०स्त्री०) कपड़े का छोर, कपड़े के फटने का चिह्न।
छीरज-(हिं०पुं०) क्षीरज, दधि, दही।
छीरधि-(हिं०पुं०) क्षीरसागर।
छीरसार-(हिं०पुं०)देखो क्षीरसागर।
छीलक-(हिं०पुं०) छिलका।
छीलना-(हिं०क्रि०) छिलका उतारना।
छुआना-(हिं०क्रि०) देखो छुलान;
छुआना-(हिं०क्रि०) स्पर्श कराना।
छुईमुई-(हिं०स्त्री०)लजाधुर नामकपौधा।
छुगुन-(हिं०पुं०) घूंघरू।
छुच्छा-(हिं०वि०) देखो छूछा।
छुच्छी-(हिं०स्त्री०)पोली पतली नली।
छुछुकारना-(हिं०क्रि०)कुत्ते को आखेट के पीछे लगाना, ललकारना।
छुछंदर-(हिं०पुं०) देखो छछूंदर।
छुछुआना-(हिं०क्रि०)वृथा का बनावटी प्रेम दिखलाना।
छुट-(हिं०अव्य०)अतिरिक्त, सिवाय।
छुटकाना-(हिं०क्रि०) छोड़ना, छुटकारा देना।
छुटकारा-(हिं०पुं०)बन्धन से मुक्ति।
छुटपन-(हिं०पुं०) लघुता, छोटाई।
छुटवाना-(हिं०क्रि०) देखो छोड़वाना।
छुटाई-(हिं०स्त्री०) देखो छोटाई।
छुटाना-(हिं०क्रि०) बंधन से मुक्त करना।
छुट्टा-(हिं०वि०)जो लंबा न हो,अकेला।
छुट्टी-(हिं०स्त्री०) मुक्ति,छुटकारा,अवकाश, कार्यालयके बन्द रहने का दिन।
छुड़वाना-(हिं०क्रि०) छोड़ने का काम कराना।
छुड़ाई-(हिं०स्त्री०)छोड़ने की क्रिया।
छुड़ाना-(हिं०क्रि०) पकड़ से अलग करना, उलझी हुई वस्तुको पृथक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करना, दूसरे के अधिकार से मुक्त करना, नौकरी से हटाना, छड़ौती-(हिं०स्त्री०) बंधन से मुक्त करने के लिये दिया हुआ धन, ऋणशेष जो छोड़ दिया जाय ।
छुत्-(हिं०स्त्री०) क्षुधा, भूख ।
छुतिहर-(हिं०पुं०) वह पात्र जो अशुचि वस्तु के संसर्ग से अशुद्ध हो गया हो,
छुतिहा-(हिं०वि०) अस्पृश्य, कलंकित,
छुद्र-(हिं०पुं०) देखो क्षुद्र ।
छुधा-(हिं०स्त्री०) क्षुधा, भूख ।
छुधित-(हिं०वि०) क्षुधित, भूखा ।
छुनछुनाना-(हिं०वि०) झनझन करना।
छुनमुन, छुननमुनन-(हिं०पुं०) बच्चों के पैर के आभूषण का शब्द ।
छुप-(हिं०पुं०) क्षुप, झाड़ी ।
छुपना, छुपाना-देखो छिपना, छिपाना ।
छुबुक-(हिं०पुं०) चिबुक, ठुड्ढी ।
छूभित-(हिं०वि०) घबड़ाया हुआ ।
छुरा-(हिं०पुं०) नाई का उस्तरा, बेंट लगा हुआ एक धारदार आक्रमण करने का अस्त्र ।
छुरी-(हिं०स्त्री०) फल तरकारी आदि काटने का बेंटदार, चाकू ।
छुलछुलाना-(हिं०क्रि०) थोड़ा थोड़ा करके पानी डालना ।
छुलाना-(हिं०क्रि०) स्पर्श कराना ।
छुवाना-(हिं०क्रि०) स्पर्श कराना ।
छुवाव-(हिं०पुं०) संसर्ग, संबन्ध ।
छुहना-(हिं०क्रि०) रंगा जाना, लीपा पोता जाना।
छूंछा-(हिं०वि०) रिक्त, पोला, निःसार
छू-(हिं०पुं०) मन्त्र पढ़कर मुख से हवा फेंकने का शब्द, मन्त्रकी फूंक; छूहोना-चले जाना। छूमंतर होना-जल्दी से लुप्त होना ।
छूछू-(हिं०वि०) मूर्ख ।
छूट-(हिं०स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा ।
छूटना-(हिं०क्रि०) अलग होना, दूर होना, छुटकारा होना, प्रस्थान करना, बन्द होना, किसी वस्तु का वेगसे निकलना, शेष रहना, किसी काम का भूल से न किया जाना, नौकरी से हटाया जाना ।
छूत-(हिं०स्त्री०) स्पर्श संसर्ग, अस्पृश्य का संसर्ग, ।
छूना-(हिं०क्रि०) स्पर्श होना, थोड़ा व्यवहार करना, लीपना, पोतना,
छूरा-(हिं०पुं०) देखो छुरा; छूरी-देखो छुरी ।
छेंकना-(हिं०क्रि०) घेरना, रोकना रेखाओं से घेरना, लिखे हुए अक्षर या वाक्य को लकीर खींचकर काटना ।
छेक-(हिं०पुं०) छिद्र, कटाव ।
छेटा-(हिं०स्त्री०) बाधा, अवरोध, रुकावट ।
छेड़-(हिं०स्त्री०) चिढ़ानेवाली बात, विरोध, आपस का झगड़ा ।
छेड़ना-(हिं०क्रि०) भड़कना, व्यग्र करना, कुढाना, कोई कार्य आरंभ करना ।
छेड़ा-(हिं०पुं०) रस्सी, की साँट ।
छेत्र-(हिं०पुं०) देखो क्षेत्र ।
छेद-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश, गणित में भाजक, खण्ड टुकड़ा छिद्र, छेद, दोष, विल । छेदक-(सं०वि०) छेद करने, वाला, विभाजक ।
छेदन-(सं०पुं०) काटने या चुभाने की क्रिया, नाश, । छेदना-(हिं०क्रि०) छिद्र करना, बेधना, भेदना, काटना ।
छेना-(हिं०पुं०) फटे दूधका खोया, पनीर, कंडा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छेनी-(हिं०स्त्री०) पत्थर, धातु आदि काटने का अस्त्र, टांकी ।
छेम-(हिं०पुं०) देखो क्षेम ।
छेरना-(हिं०क्रि०) अपच के कारण बारंबार शौच होना ।
छेव-(हिं०पुं०) चोट, घाव, आने वाली आपत्ति, अनिष्ट ।
छेवना-(हिं०स्त्री०) ताड़ी, (क्रि०) छिन्न करना, चिह्नित करना, काटना ।
छेवर-(हिं०पुं०) छाला, चमड़ा ।
छेवा-(हिं०पुं०) छीलने या काटनेका काम
छेह-(हिं०पुं०) देखो छेव, खण्डन, नाश; (वि०) टुकड़ा किया हुआ ।
छेहर-(हिं०वि०) छाया, साया ।
छै-(हिं०वि०) देखो छः (वि.) देखो क्षय
छैना-(हिं०वि०) क्षीण होना, नष्ट होना
छैया-(हिं०पुं०) बच्चों के लिये प्यार का शब्द ।
छैल-(हिं०पुं०) बना ठना सुन्दर मनुष्य, बाँका, । छैला-(हिं०पुं०) सुन्दर वेष पहिरा हुआ मनुष्य ।
छो-(हिं०पुं०) छोह, प्रीति, दया, क्षोभ
छोकड़ा-(हिं०पुं०) बालक, लड़का, छोकड़िया, छोकड़ी-(हिं०स्त्री०) लड़की, बेटी ।
छोटका-(हिं०वि०) देखो छोटा ।
छोटपन-(हिं०पुं०) देखो छोटापन ।
छोटा-(हिं०वि०) विस्तार या आकार में न्यून, अल्पवय का, पद या प्रतिष्ठा में कम, जिसमें गम्भीरता तथा शिष्टता का अभाव हो; छोटा मोटा-छोटासा, सामान्य । छोटाई-(हिं०स्त्री०) लघुता, छोटापन, नीचता । छोटापन-(हिं०पुं०) लड़कपन ।
छोड़छुट्टी-(हिं०स्त्री०) नाता या संबंध का त्याग ।
छोड़ना-(हिं०क्रि०) पास न रखना, ग्रहण न करना, छूट देना, छुटकारा देना, प्रस्थान करना, दूर तक जाने वाले अस्त्र को फेंकना, भीतर से वेग सहित बाहर आना, बन्द करना ।
छोड़वाना-(हिं०क्रि०) छोड़ने का काम दूसरे से कराना । छोड़ाना-(हिं० क्रि०) देखो छुड़ाना ।
छोनिप-(हिं०पुं०) भूपति, राजा ।
छोनी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि ।
छोप-(हिं०पुं०) मोटा लेप चढ़ाने का काम, प्रहार, आघात, छिपाव; छोपना-(हिं०क्रि०) मोटी तह चढ़ाना, लेप करना, किसी बात को छिपाना, आक्रमण से रक्षा करना ।
छोपाई-(हिं०स्त्री०) छोपने की क्रिया या पारिश्रमिक ।
छोभ-(हिं०पुं०) क्षोभ । छोभना, (हिं०क्रि०) क्षुब्ध होना ।
छोर-(हिं०पुं०) किसी वस्तुका किनारा, विस्तार की सीमा, नोक ।
छोरना-(हिं०क्रि०) बंधन मुक्त करना, हरण करना ।
छोरा-(हिं०पुं०) बालक, लड़का, छोकड़ा
छोरा छोरी-(हिं०स्त्री०) नोच खासोट ।
छोल-(हिं०स्त्री०) छिल जाने का चिह्न; छोलना-(हिं०क्रि०) छीलना ।
छोलदारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा खेमा ।
छोलना-(हिं०क्रि०) छीलना ।
छोलनी-(हिं० स्त्री०) हलवाई की खुरुचनी ।
छोह-(हिं०पुं०) स्नेह, प्रेम, दया, कृपा । छोहना-(हिं०क्रि०) प्रेम दिखलाना ।
छोहरा-(हिं०पुं०) बालक, लड़का,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छोकड़ा । छोहरी-(हिं० स्त्री०) बालिका, लड़की ।
छोहाना-(हिं०क्रि०) प्रेम दिखलाना।
छोही-(हिंवि०) प्रेमी,स्नेही, अनुरागी
छौंक-(हिं०स्त्री०) तड़का, बघार ।
छौंकना-(हिं०क्रि०) बघार देना ।
छौना-(हिं०पुं०) पशु का बच्चा ।
छौर-(हिं०पुं०) देखो क्षौर ।
छौलदारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका छोटा तंबू ।

ज

ज-हिन्दी भाषा का एक व्यञ्जन वर्ण, जो चवर्ग का तीसरा अक्षर है, इसका उच्चारण स्थान तालु है, (सं०पुं०) पिता, जन्म, वेग, मुक्ति, (वि०) वेग युक्त, जीतने वाला उत्पन्न करनेवाला ।
जँगरा-(हिं०पुं०) मूंग, मटर उर्द इत्यादि के डंठल, जँगरा ।
जँगरैत-(हिं०व०) परिश्रमी ।
जंगल-(हिं०पुं०) वन ।
जंगला-(हिं०पुं०) छड़ों की पंक्ति, कटघरा ।
जंगली-(हिं०वि०) जंगल संबंधी,आपसे आप उगने वाले पौधे ।
जंगारी-ली-(हिं०वि०) नीले रंग का, नीला ।
जंघा-(हिं०स्त्री०) जांघ ।
जंघिया-(हिं०स्त्री०) जांघ तक का पायजामा ।
जँचना-(हिं० क्रि०) देखाभाला जाना, प्रतीत होना ।
जँचा-(हिं०वि०) सुपरीक्षित ।
जंजाल-(हिं०पुं०) झंझट, प्रपंच, बखेड़ा बड़े मुंह की तोप, जंजालिया,, जंजाली-(हिं०वि०) उपद्रवी, झगड़ालू बखेड़िया ।
जंड-(हिं०पुं०) विवाह के अन्त में समधियों का भोज ।
जंतर-(हिं०पुं०) यन्त्र, गले में पहिरने का एक गहना, कठुला ।
जंतरी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का तार महीन करने का यंत्र,तिथि पत्र,पंजिका
जंतु-(हिं०पु०) देखो जन्तु ।
जंत्र-(हिं०पु०) कल, यंत्र, तालाब ।
जंत्रित-(हिं०वि०) बंद किया हुआ ।
जंबाल-(हिं०पुं०)पंक, कीचड़, सेवार ।
जंबीर-(हिं०पुं०) जंबारी नीबू ।
जंबूरा-(हिं०पुं०)जिस चरखे पर तोप चढ़ाई जाती है, भँवरकली,, बांक ।
जंत्र-(हिं०पुं०) जबड़ा, दाढ, ।
जंभाई-(हिं०स्त्री०) उबासी ।
जंभाना-(हिं०क्रि०) जंभाई लेना ।
जई-(हिं०पुं०) जव की जाति का एक अन्न ।
जऊ-(हिं०क्रि०वि०) यद्यपि ।
जकंदना-(हिं०क्रि०)उछाल मारना ।
जक-(हिं०पुं०)भूत,प्रेत,कंजूस (स्त्री०) हठ ।
जकड़-(हिं०स्त्री०)जकड़ने का भाव ।
जकड़ना-(हिं०क्रि०) कसकर बांधना ।
जकना-(हिं०क्रि०) भौचक्का होना ।
जकित-(हिं०वि०)विस्मित, चकित,व्यग्र
जक्ष-(हिं०पुं०) देखो यक्ष ।
जक्षण-(सं०पुं०) भक्षण, भोजन ।
जक्ष्मा-(हिं०स्त्री०) देखो यक्ष्मा ।
जखेड़ा-(हिं०पुं०) समूह, जमाव ।
जग-(हिं०पुं०) जगत्, संसार, संसार के लोग; देखो यज्ञ ।
जगजगा-(हिं०वि०) जगमगाता हुआ चमकीला; जगजगाना-चमकना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जगजोनि-(हिं०पुं०) जगयोनि, ब्रह्मा।
जगत्-(सं०पुं०) संसार, भुवन।
जगत-(हिं०स्त्री०) कुवेंके ऊपर का चारो ओर का चबूतरा।
जगतसेठ-(हिं०पुं०) बहुत बड़ा धनवान
जगती-(सं०स्त्री०) संसार, पृथ्वी।
जगतीतल-(सं०पुं०) भूमि, पृथ्वी।
जगत्साक्षी-(सं०पुं०) सूर्य।
जगदन्तक-(सं०पुं०) मृत्यु, यम।
जगद-(हिं०पुं०) रक्षक, पालक।
जगदाधार-(सं०पुं०) परमेश्वर, वायु, जगदीश, जगदीश्वर (सं०पुं०) परमेश्वर।
जगद्गुरु-(सं०पुं०) परमेश्वर, अत्यन्त पूजनीय पुरुष।
जगद्धाता-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, महादेव
जगद्धात्री-(सं०पुं०) दुर्गा, सरस्वती।
जगद्बल-(सं०पुं०) वायु, हवा।
जगद्योनि-(सं०पुं०) शिव, ब्रह्मा, विष्णु, पृथ्वी।
जगद्विनाश-(सं०पुं०) प्रलय काल।
जगना-(हिं०क्रि०) नींद से उठना, सचेत होना, जगमगाना।
जगन्नाथ-(सं०पुं०) संसार का स्वामी विष्णु की प्रसिद्ध मूर्ति।
जगमग-(हिं०वि०) प्रकाशित, चमकीला,
जगमगाना-चमकना, झलकना; **जगमगाहट**-चमक।
जगरनाथ-(हिं०पुं०) देखो जगन्नाथ।
जगरमगर-(हिं०वि०) देखो जगमग।
जगवाना-(हिं०क्रि०) सोते से उठवाना
जगहर-(हिं०स्त्री०) जागने की अवस्था।
जगात-(हिं०पुं०) दान कर।
जगाना-(हिं०क्रि०) नींद छोड़नेके लिये किसी को प्रेरणा करना, चैतन्य करना।
जग्य-(हिं०पुं०) देखो यज्ञ।
जघन-(सं०नपुं०) नितंब, चूतड़।
जघन्य-(सं०वि०) अन्तिम, क्षुद्र, निकृष्ट, (पुं०) शूद्र जाति।
जंगम-(सं०वि०) चलने फिरने वाला।
जंगल-(सं०पुं०) अरण्य, मांस।
जंघा-(सं०स्त्री०) उरु, जांघ, पिंडली।
जचना-(हिं०क्रि०) देखो जँचना।
जच्छ-(हिं०पुं०) देखो यक्ष।
जजमान-(हिं०पुं०) देखो यजमान।
जटना-(हिं०क्रि०) ठगना।
जटल-(हिं०स्त्री०) झूठ मूठ की बात, बकवाद।
जटा-(सं०स्त्री०) एक में एक उलझे हुए सिर के बाल, जड़के पतले सूत्र, **जटाजूट**-(सं०पुं०) जटा का समूह,
जटाना-(हिं०क्रि०) ठगा जाना।
जटित-(सं०वि०) जड़ा हुआ, खचित।
जटिल-(सं०वि०) अत्यन्त कठिन।
जठर-(सं०पुं०) पेट, कुक्षि, (वि०) वृद्ध, बूढ़ा।
जठराग्नि-(हिं०स्त्री०) अन्न को पचाने की पेट में की अग्नि।
जठेरा-(हिं०वि०) जेठा, वय में बड़ा।
जड़-(सं०वि०) अचेनत, चेष्टाहीन, मन्दबुद्धि, गहरा, सरदी से ठिठुरा हुआ, (हिं०पुं०) कारण, हेतु, आधार, वृक्ष का वह भाग जो भूमि के भीतर रहता है, नीव; **जड़ता**-(सं०स्त्री०) मूर्खता, स्तब्धता।
जड़ना-(हिं०क्रि०) बैठाना, पिच्ची करना,।
जड़वाना-(हिं०क्रि०) जड़ने का काम दूसरे से कराना।
जड़हन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का धान
जड़ाई-(हिं०स्त्री०) जड़ने का काम।
जड़ाऊ-(हिं०वि०) जिसपर रत्न जड़े हों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जड़ान-(हिं०स्त्री०) जड़ाई। **जड़ाना**-(हिं०क्रि०) जड़ने काम दूसरे से कराना, शीत लगना।

जड़ाव-(हिं०पुं०) जड़ने का काम।

जड़ावर-(हिं०पुं०) जाड़े में पहिरने के कपड़े।

जड़ित-(हिं०वि०) जिसमें रत्न जड़े हों।

जड़िया-(हिं०पुं०) आभूषणों में नगीने जड़ने वाला।

जड़ी-(हिं०स्त्री०) औषधि की जड़ जो औषधियों में प्रयोग की जाती है, जड़ी बूटी-बनौषधि।

जड़ीला-(हिं०वि०) जड़दार, जिसमें जड़ हो।

जड़ैया-(हिं०स्त्री०) जूड़ी ज्वर।

जत-(हिं०वि०) जिस मात्रा का, जितना।

जतन-(हिं०पुं०) देखो यत्न।

जतलाना, जताना-(हिं०क्रि०) पहिलेसे सूचना देनेवाला, बतलाने वाला।

जति, जती-(हिं०पुं०) यति, सन्यासी।

जतु-(सं०पुं०) गोंद, लाह, शिलाजीत।

जतेक-(हिं०वि०) जितना।

जत्था-(हिं०पुं०) समूह, वर्ग।

जथा-(हिं०क्रि०वि०) यथा, जिस प्रकार से।

जद-(हिं०क्रि०वि०) जब, जब कभी।

जदपि-(हिं०क्रि०वि०) यद्यपि।

जदुपति, जदुपाल-(हिं०पुं०) यदुपति, **जदुराई**-(हिं०पुं०) यदुपति, श्रीकृष्ण। **जदुराज जदुराय, जदुवर, जदुवीर**-(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण।

जद्दपि-(हिं०क्रि०वि०) यद्यपि।

जद्दबद्द-(ह०पुं०) दुर्वचन।

जन-(सं० पुं०) लोग, समूह, समुदाय, प्रजा, अनुयायी, **जनक**-(सं० पुं०) जन्मदाता, पिता; **जनचर्चा**-(सं०स्त्री०) लोकप्रवाद। **जनता**-(सं०स्त्री०) जनसमूह, सर्वसाधारण लोग। **जनदेव**-(सं०पुं०) नरपति, राजा।

जनन-(सं०पुं०) उत्पत्ति, जन्म, आविर्भाव। **जनना**-(हिं०क्रि०) प्रसव करना।

जननी-(सं०स्त्री०) उत्पन्न करने वाली माता।

जनपद-(सं०पुं०) देश, देशवासी प्रजा,

जनप्रवाद-(सं० पुं०) लोकप्रवाद, किंवदन्ती।

जनप्रिय-(सं०वि०) सर्वप्रिय, सबका प्यारा।

जनम-(हिं०पुं०) उत्पत्ति, जन्म, आयु, जीवन; **जनमना**-(हिं०क्रि०) उत्पन्न होना, जन्म लेना।

जनमाना-(हिं०क्रि०) प्रसव कराना।

जनयिता-(सं०पुं०) पिता, बाप।

जनयित्री-(सं०स्त्री०) जन्म देनेवाली, माता।

जनरव-(सं०पुं०) जनश्रुति, लोकनिन्दा, कोलाहल।

जनवल्लभ-(सं०पुं०) जनप्रिय, लोकप्रिय।

जनवाई-(हिं०स्त्री०) देखो जनाई।

जनवाना-(हिं०क्रि०) प्रसव कराना, सूचित कराना।

जनवास-(सं०पुं०) बरातियों के ठहरने का घर। **जनवासा**-(हिं०पुं०) देखो जनवास।

जनश्रुत-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।

जनश्रुति-(सं०स्त्री०) किंवदन्ती।

जनसंख्या-(सं०स्त्री०) नगर देश आदि के निवासियों की गणना।

जना-(हिं०वि०) उत्पन्न हुआ।

जनाई-(हिं०स्त्री०) पैदा कराई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जनाचार-(सं०पुं०) देश या समाज की प्रचलित रीति।
जनाना-(हिं०क्रि०) जनाना, उत्पन्न कराना।
जनाव-(हिं०पुं०) सूचना।
जनावर-(हिं०पुं०) देखो जानवर।
जनाशन-(सं०पुं०) मनुष्य भक्षक।
जनाश्रय-(सं०पुं०) धर्मशाला।
जनि-(सं०स्त्री०) उत्पत्ति, जन्म दाता स्त्री, पुत्रवधू, भार्या, जन्मभूमि।
जनिका-(हिं०स्त्री०) पहेली, बुझौवल।
जनित-(सं०वि०) उत्पन्न, जन्मा हुआ।
जनिता-(हिं०पुं०) उत्पन्न करने वाला, पिता।
जनित्र-(सं०नपुं०) जन्मभूमि। **जनित्री**-(सं०स्त्री०) उत्पन्न करने वाली, माता।
जनियाँ-(हिं०स्त्री०) प्रियतमा, प्राणप्यारी
जनी-(सं०स्त्री०) उत्पन्न करने वाली माता, स्त्री।
जनु-(हिं०क्रि०वि०) मानो. (स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति।
जनेऊ-(हिं०पुं०) यज्ञोपवीत।
जनेत-(हिं०स्त्री०) वरयात्रा, बारात।
जनेता-(हिं०पुं०) पिता, बाप।
जनेव-(हिं०पुं०) देखो जनेऊ।
जनेश-(सं०पुं०) भूपति, नरेश, राजा
जनैया-(हिं०वि०) जाननेवाला, जानकार
जनो-(हिं०पुं०) जनेऊ (क्रि०वि०) मानो
जन्तु-(सं०पुं०) जन्म लेनेवाला, जीव, प्राणी जानवर।
जन्म-(सं.नपुं०) उत्पत्ति जीवन, आविर्भाव; **जन्मक्षेत्र** (सं०नपुं०) जन्मभूमि,
जन्मपत्री, जनमपत्री-(सं० स्त्री०) वह पत्र जिसमें किसी की उत्पत्ति के समय के ग्रहों की स्थिति, दशा, अन्तर्दशा आदि दिये हों। **जन्मभूमि**-(सं०स्त्री०) वह देश जहां किसी का जन्म हुआ हो; **जन्मरोगी**-(सं०पुं०) वह जो जन्म काल से ही रोगी हो;
जनमा-(हिं०पुं०) **जन्मवाला**-(वि०) उत्पन्न। **जन्माना**-(हिं०क्रि०) जन्म-देना, उत्पन्न करना। **जन्मान्तर**-(सं० नपुं०) अन्य जन्म, लोकान्तर। **जन्मान्ध**-(सं०वि०) जन्म का अन्धा।
जन्य-(सं०नपुं०) हाट, बाजार, निन्दा संग्राम, युद्ध।
जप-(सं०पुं०) पाठ, अध्ययन, मन्त्र आदि का बारंबार उच्चारण, किसी मन्त्र को संख्यानुसार धीरे धीरे बारंबार उच्चारण करना।
जपनी-(हिं०स्त्री०) जपने की माला,
जपनीय-(सं०वि०) जप करने योग्य।
जब-(हिं०क्रि०वि०) जिस समय।
जबड़ा-(हिं०पुं०) गलेके भीतर का भाग
जबरा-(हिं०वि०) शक्तिमान्, बली।
जम-(हिं०पुं०) देखो यम।
जमक-(हिं०पुं०) देखो यमक।
जमघट-(हिं०पुं०) मनुष्यों की भीड़-भाड़।
जमज-(हिं०वि०) देखो यमज, जुटुवा।
जमन-(सं०नपुं०) भोजन, खाद्य पदार्थ; (हिं०पुं०) देखो यवन।
जमना-(हिं०क्रि०) गाढ़ा होना, एकत्र होना, किसी काम करने में हाथ बैठना स्थिर होना, उत्पन्न होना, उगना।
जमनिका (हिं०स्त्री०) जवनिका, परदा।
जमवट-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का गोल चक्कर जो कुवें की पेंदी में रखकर इस पर ईटों की जोड़ाई की जाती है, जमोट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जमराज-(हिं०वि०) देखो यमराज।
जमाई-(हिं०पुं०) जामाता, दामाद, (स्त्री०) जमने की क्रिया,।
जमाना-(हिं०क्रि०) गाढ़ा करता, दृढ़ता पूर्वक बैठाना, चोट लगाना, उपत्न करना, उपजाना।
जमामार-(हिं०वि०) अनुचित रूप से दूसरे का धन दबा लेने वाला।
जमाव-(हिं०स्त्री०) जमने या जमाने का भाव; जमावट-जमने का भाव।
जमावड़ा-(हिं०पुं०) मनुष्यों की भीड़।
जमुनियाँ-(हिं०वि०) जामुन के रंग का।
जमुहाना-(हिं०क्रि०) देखो जँभाना।
जमोग-(हिं०पुं०) स्वीकार करने की क्रिया।
जम्बुक-(सं०पुं०) जामुन।
जम्बूक-(सं०पुं०) शृगाल, सियार।
जम्हाई-(हिं०स्त्री०) देखो जृम्भा।
जंभाना-(हिं०क्रि०) जंभाई लेना।
जय-(सं०पुं०) जीत।
जयजीव-(हिं०पुं०) अभिवादन का शब्द
जयद-(सं०वि०) जीतनेवाला।
जयना-(हिं०क्रि०) जीतना।
जयपत्र-(सं०पुं०) वह पत्र जिसपर किसी विवाद के बाद राजकीय मन्तव्य लिखा जाता है।
जयमंगल-(सं०पुं०) राजा के वारी की हाथी।
जयमाल-(हिं०स्त्री०) वह माला जिसको स्वयंवर के समय कन्या अपने चुने हुए वर के गले में डालती थी।
जययज्ञ-(सं०पुं०) अश्वमेध यज्ञ।
जयलेख-(सं०पुं०) वह पत्र जो हारा हु आ पुरुष अपने जीतने वाले को लिख देता है।
जयश्री-(सं०स्त्री०) विजयलक्ष्मी, विजय।
जयस्तम्भ-(सं०पुं०) जयसूचक स्तंभ।
जयी-(हिं०वि०) विजयी, जयशील।
जर-(सं०पुं०) जरा, वृद्धावस्था (हिं० पुं०) देखो ज्वर।
जरजर-(हिं०पुं०) देखो जर्जर।
जरन-(हिं०स्त्री०) देखो जलन।
जरना (हिं०क्रि०) देखो जलना।
जरा-(सं०स्त्री०) वृद्धावस्था, बुढ़ापा;
जरातुर-(सं०वि०) जीर्ण, पुराना।
जराना-(हिं०क्रि०) देखो जलाना।
जरायु-(सं०पुं०) कलल, खेंड़ी। जरायुज-(सं०पुं०) वह प्राणी जो खेंड़ी में लिपटा हुआ गर्भ से पैदा होता है।
जर्जर-(सं०वि०) जीर्ण, बहुत पुराना, टूटा फूटा,। जर्जरता-(हिं०स्त्री०) जीर्णता। जर्जरित-(सं०वि०) खंडित, टूटा फूटा।
जलंधर-(हिं०पुं०) पेट में पानी भर जाने का रोग।
जल-(सं०नपुं०) पानीय, पानी, अप।
जल अलि-(सं०पुं०) पानी का भँवर, जल के तल पर तैरने वाला एक प्रकार का काला कीड़ा।
जलकण्टक-(सं०पुं०) सिंघाड़ा, जल-कुंभी। जलकपि-(सं०पुं०) शिशुमार, सूंस नामक जलजन्तु। जलकर-(हिं०पुं०) जल से होने वाले आय पर कर। जलकुंभी-(हिं०स्त्री०) जल के तल पर होने वाली एक वनस्पति; जलक्रिया-(सं०स्त्री०) पित्रादि का तर्पण। जलक्रीड़ा-(सं०स्त्री०) जल-विहार। जलघड़ी-(सं० स्त्री०) समय जानने का एक प्राचीन यन्त्र जिसमें नाँद में भरे जल में एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महीन छिद्र की कटोरी डाल दी जाती है जो एक घंटे में जल से भर कर डूब जाती है। **जलचर**-(सं०पुं०) जलमें रहनेवाला जन्तु। **जरतरङ्ग**-(सं० पुं०) धातु की छोटी बड़ी कटोरियों में जल भर कर लकड़ी के डंडे से बजाने का एक बाजा। **जलज**-(सं०वि०) जो पानी में उत्पन्न हो, **जलडमरूमध्य**-(सं०पुं०) दो बड़े समुद्रोंको जोड़ने वाला समुद्र का पतला भाग।

जलद-(सं०वि०) जल देने वाला (पुं०) मेघ, बादल,

जलधर-(सं०पुं०) मेघ, बादल, समुद्र।

जलधि-(सं०पुं०) समुद्र, दस शंख की संख्या।।

जलन-(हिं०स्त्री०) बहुत अधिक ईर्ष्या, जलने का कष्ट या पीड़ा।

जलना-(हिं०क्रि०) दग्ध होना, जलना, झुलसना।

जलनिधि-(सं०पुं०) समूद्र।

जलपति-(सं०पुं०) समुद्र **जलपथ**-(सं०पुं०) जल बहने का मार्ग।

जलपान-(हिं०पुं०) प्रतराश, कलेवा।

जलप्रदान-(सं०नहें०) प्रेत पितर आदि को तर्पण।

जलप्रपा-(सं०स्त्री०) पौसरा, सबील।

जलप्रपात-(सं०पु०) किसी नदी के स्रोत का ऊंचे स्थान से नीचे को गिरना।

जलफल-(सं०नपुं०) शृङ्गाटक, सिंघाड़ा

जलभाजन-(सं०नपुं०) पानी रखनेका पात्र।

जलभू-(सं०पुं०) मेघ, बादल,।

जलभृत-(सं०पुं०) मेघ, बादल।

जलमय-(सं०वि०) पानी से भरा हुआ।

जलमानुष-(सं०पुं०) परारू नामक जलजन्तु जिसका नाभि के ऊपर का भाग मनुष्य के समान तथा नीचे का भाग मछली के ऐसा होता है।

जलमार्ग-(सं०पुं०) चलपथ, पानी बहने की नाली। **जलमुच्**-(सं०पुं०) मेघ, बादल, कपूर।

जलयन्त्र-(सं०नपुं०) जलघड़ी।

जलयान-(सं०नपुं०) पोत, नाव इ०।

जलराशि-(सं०पुं०) जलसमूह, समुद्र।

जलरुह-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।

जलवाद्य-(सं०नपुं०) चलतरंग।

जलवाना-(हिं०क्रि०) जलाने का काम दूसरे से कराना।

जलवाह-(सं०पुं०) मेघ, बादल।

जलवाहक-(सं०पुं०) पानी ढोने वाला।

जलशयन, जलशायी-(सं०पुं०) विष्णु।

जलसुत-(हिं०पुं०) कमल, मोती।

जलसेना-(सं०स्त्री०) समुद्र में पोतपर लड़ने वाली सेना।

जलस्थान-(सं०नपुं०) जलाशय।

जलाकर-(सं०पुं०) समुद्र, नदी आदि, जलाशय।

जलाञ्जलि-(सं०पुं०) प्रेत पितर आदि का जल से तर्पण।

जलाद-(हिं०पुं०) घातक।

जलाना-(हिं०क्रि०) प्रज्वलित करना, दहकाना, भस्म करना, झुलसना, सन्तप्त करना।

जलापा-(हिं०पुं०) डाह या ईर्ष्या के कारण उत्पन्न होने वाला दुःख।

जलायुका-(सं०स्त्री०) जलौका, जोंक।

जलावन-(हिं०पुं०) इन्धन, जलाने की लकड़ी।

जलावर्त-(सं०पुं०) पानी का भँवर।

जलाशय-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पानी जमा हो।
जलज,-जलेजात (सं०नपुं०) पद्म, कमल।
जलेबा-(हिं०पुं०) बड़ी जलेबी।
जलेबी-(हिं०स्त्री०) इमरती की तरह की एक प्रकार की कुण्डलाकार मिठाई, कुण्डली।
जलेश-(सं०पुं०) वरुण, समुद्र।
जलोका, जलौकिका-(सं०स्त्री०) जोंक।
जलोदर-(सं०पुं०) एक रोग जिसमें पेट में पानी भर जाता है।
जलोद्भव-(सं०वि०) जल में उत्पन्न होने वाला।
जलौकस, जलौका-(सं०नपुं०) जोंक।
जल्दी-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता।
जल्प--(सं०पुं०) प्रलाप, बकवाद।
जल्पक-(सं०पुं०) बकवादी।
जल्पन-(सं०नपुं०) वाचालता, प्रलाप।
जव-(सं०पुं०) वेग; (हिं०पुं०) यव,
जवन-(हिं०पुं०) अरब देश, देखो यवन।
जवनिका-(हिं०स्त्री०) देखो यवनिका।
जवाई-(हिं०स्त्री०) जाने की क्रिया।
जवारा-(हिं०पुं०) जौ के हरे अंकुर।
जवैया-(हिं०वि०) गमनशील, जानेवाला
जसद-(सं०पुं०) जस्ता नामक धातु।
जस-(हिं०पुं०) देखो यश; (हिं०क्रि०) जैसा।
जसवंत-(हिं०पुं०) एक प्रकार का फूल
जस्त-(हिं०पुं०) देखो जस्ता। जस्तई (हिं०वि०) जस्ते के रंग का।
जस्ता-(हिं०पु०) एक भारी धुसर वर्ण का धातु।
जहँ-(हिं०क्रि०वि०) जहाँ, जिस स्थान पर
जहँड़ना-(हिं०क्रि०) धोखे में पड़ना।
जहदा-(हिं०पुं०) कीचड़, दलदल।
जहना-(हिं०क्रि०) छोड़ना, त्यागना।
जहरीला-(हिं०वि०) विषैला।
जहला-(हिं०स्त्री०) ताप, गरमी।
जहाँ-(हिं०क्रि०वि०) जिस स्थान पर।
जहिया-(हिं०क्रि०वि०) जिस दिन, जब।
जहीं-(हिं०अव्य०) जिस स्थान पर।
जा-(सं०स्त्री०) माता, मा, देवर की स्त्री, देवरानी, (वि०) उत्पन्न, जायमान, संभूत।
जाँगड़ा-(हिं०पुं०) बन्दी, भाट।
जाँगर-(हिं०पुं०) शरीर, देह, बल।
जाँगरा--(हिं०पुं०) भाट, बन्दी, जाँगड़ा।
जाँगी-(हिं०पुं०) नगाड़ा।
जाँघ-(हिं०स्त्री०) उरु, जंघा।
जाँघिया-(हिं०पुं०) पैजामे की तरह का घुटने तक का नीचा पहिरावा,
जाँच-(हिं०स्त्री०) परीक्षा, परख, खोज।
जांचक-(हिं०पुं०) देखो याजक।
जाँचना-(हिं०क्रि०) सचाई झुठाई का पता लगाना।
जाँत, जाँता-(हिं०पुं०) आटा पीसने की चक्की।
जाँवल-(हिं०क्रि०वि०) जितना।
जाँवर-(हिं०पुं०) प्रस्थान।
जा-(हिं०सर्व०) जो, (वि०) यह।
जाइ-(हिं०स्त्री०) देखो जाय।
जाई-(हिं०स्त्री०) जाया, पुत्री, बेटी।
जाउर-(हिं०स्त्री०) खीर।
जाक-(हिं०पुं०) यक्ष।
जाखिनी-(हिं०स्त्री०) देखो यक्षिणी।
जाग-(हिं०पुं०) यज्ञ (हिं०स्त्री०) जागने की क्रिया, जागरण।
जागता-(हिं०वि०) प्रकाशित, प्रत्यक्ष।
जागना-(हिं०क्रि०) निद्रा त्यागना, उदित होना।
जागरण-(सं०पुं०) निद्रा का अभाव, जागना, किसी पर्व के उपलक्ष में रात भर जागते रहना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जागरूक-(हिं०वि०) जो जागृत अवस्था में हो।

जागृत-(सं०वि०) जागरण अवस्था का, ऐसी अवस्था जिसमें सब बातों का ज्ञान हो।

जाङ्गलिक-(सं०पुं०) विषवैद्य, सर्प का विष उतारने वाला।

जाङ्गुली-(सं०स्त्री०) सांप के विष उतारने की विद्या।

जाचक-(हिं०पु०) याचक, भिक्षुक।

जाचना-(हिं०क्रि०) याचना, माँगना।

जाज्वल्य-(सं०वि०) प्रकाशयुक्त।

जाज्वल्यमान-(सं०वि०) दीप्तिमान्, तेजस्वी।

जाठ-(हिं०पुं०) तालाब आदि के बीज में गड़ा हुआ लकड़ी का मोटा लट्ठा, कोल्हू की कूड़ी के बीज में लगाने का लट्ठा।

जाठर-(हिं०वि०) जठर संबंधी, जठर में उत्पन्न।

जाड़, जाड़ा-(हिं०पुं०) शीतकाल।

जाड्य-(सं०नपुं०) जड़ता, मूर्खता।

जात-(सं०वि०) उत्पन्न, जन्मा हुआ, प्रकट, प्रशस्त, देखो जाति।

जातना-(हिं०स्त्री०) देखो यातना।

जाँतपाँत-(हिं०स्त्री०) जाति।

जातवेधस-(सं०पुं०) अग्नि, सूर्य।

जाति-(सं०स्त्री०) जन्म, गोत्र, एक प्रकार का छन्द, मालती, चमेली, **जातिच्युत**-(वि०) जो जाति से अलग कर दिया गया हो, **जातिवैर**-स्वाभाविक शत्रुता।

जातीय-(सं०वि०) जातिसंबंधी।

जातुधान-(हिं०पुं०) राक्षस।

जात्रा-(हिं०स्त्री०) देखो यात्रा।

जात्यन्ध-(सं०वि०) जन्म का अन्धा।

जादव-(हिं०पुं०) देखो यादव।

जादौ-(हिं०) देखो यादव; **जादौराय**-(हिं०पुं०) श्रीकृष्ण।

जान-(हिं०स्त्री०) ज्ञान, अनुमान।

जानकार-(हिं०वि०) जानने वाला, चतुर, दक्ष। **जानकारी**-(हिं०स्त्री०) अनभिज्ञता, परिचय, विज्ञता, निपुणता

जाननहार-(हिं०वि०) जाननेवाला।

जानना-(हिं०क्रि०) सूचना पाना, परिचित होना, अनुमान करना, पता पाना।

जानपद-(सं०पुं०) जनपद संबंधी वस्तु, देशस्थ।

जानपना-(हिं०पुं०) जानकारी, बुद्धिमानी।

जानराय-(हिं०पुं०) अत्यन्त ज्ञानी पुरुष

जानहु-(हिं०अव्य०) मानो।

जाना-(हिं०क्रि०) प्रस्थान करना, गमन करना, दूर होना, खो जाना, व्यतीत होना, नष्ट होना।

जानि-(सं०स्त्री०) भार्या, पत्नी।

जानु-(सं०नपुं०) उरुसन्धि, घुटना।

जानी-(हिं०अव्य०) मानो, जैसे।

जाप-(सं०पुं०) मन्त्र की विधि पूर्वक आवृत्ति, जपने की माला या गोमुखी।

जापो-(हिं०पुं०) सूतिकागृह, सौरी।

जापी-(सं०वि०) जप करने वाला।

जाम-(हिं०पुं०) प्रहर, तीन घंटे, या साढ़े सात घड़ी का काल।

जामगी-(हिं०पुं०) तोप या बन्दूक का पलीता।

जामन-(हिं०पुं०) दूध को जमाने के लिये प्रयोग में आने वाला थोड़ा सा दही या अन्य खट्टा पदार्थ।

जामना-(हिं०क्रि०) देखो जमना।

जामनी-(हिं०स्त्री०) देखो यामिनी।

जामाता-(हिं०पुं०) दामाद, कन्या का पति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानि-(सं० स्त्री०) बहिन, दुहिता, कन्या, पुत्रवधू ।
जामिनी-(हिं०स्त्री०) देखो यामिनी ।
जामी-(हिं०स्त्री०) भूमि ।
जामुन-(हिं०पुं०) एक सदा बहार वृक्ष जिसके बैर के समान बैंगनी रंग के मीठे फल होते हैं। जामुनी-(हिं०वि०) जामुन के रंग का ।
जामेय-(सं०पुं०) भानजा, बहिन का बेटा ।
जामेवार-(हिं०पुं०) दुशाला जिसमें सर्वत्र बेलबूटे काढ़े होते हैं ।
जाँय-(हिं०वि०) उचित ।
जाया-(सं०स्त्री०) पत्नी, विवाहिता स्त्री
जार (सं०पुं०) उपपति, यार, परस्त्री-गामी; (वि०) नाश करने वाला ।
जारक (सं०वि०) पाचन करने वाला
जारज-(सं०पुं०) किसी की स्त्री की उसके उपपति से जन्मी हुई सन्तान ।
जारण-(सं०पुं०) धातु इत्यादि का भस्म बनाना, जलाना ।
जारना-(हिं०क्रि०) जलाना ।
जारित-(सं०वि०) शुद्ध किया हुआ ।
जारु-(सं०पुं०) आँवल, खेड़ी ।
जाल-(सं०पुं०) पशु पक्षी या मछली पकड़ने के लिये तार सूत आदि का दूर दूर पर बुना हुआ पट, गवाक्ष, झरोखा, फँसानेकी युक्ति, मकड़ी का जाला, झूठी काररवाई ।
जालक-(सं०नपुं०) गवाक्ष, झरोखा ।
जालकारक-(सं०पुं०) जाल बनाने वाला । जालकीट-(सं०पुं०) मकड़ा, मकड़ी की जाल में फँसा हुआ कीड़ा ।
जालजीवी-(सं०पुं०) धीवर, मछुआ ।
जालदार-(हिं०वि०) जिसमें जाल के समान बहुत से छेद हों ।
जाला-(हिं०पुं०) मकड़ी का बुना हुआ जाल, आँख का एक रोग जिसमें पुतली के ऊपर झिल्ली सी पड़ जाती है, माड़ा, पानी रखने का मिट्टी का बड़ा पात्र, झरोखा ।
जालिक-(सं०पुं०) धीवर, मछुआ ।
जालिका-(सं०स्त्री०) कवच ।
जालिया-(हिं०वि०) धोखा देने वाला, (पुं०) धीवर ।
जाली-(हिं०स्त्री०) पत्थर धातु आदि में बने हुए छोटे छोटे छिद्रों के समूह, एक प्रकार का कसीदे का काम, महीन छेदवाला वस्त्र, कच्चे आम की गुठली के ऊपर के रेशे ।
जाल्म-(सं०वि०) नीच, पामर, मूर्ख ।
जावंत-(हिं०अव्य०) देखो यावत् ।
जावन-(हिं०पुं०) देखो जामन ।
जापु-(हिं०वि०) जिसका ।
जासूसी-(हिं०स्त्री०) जासूसका काम ।
जाह्नवी-(सं०स्त्री०) जह्नु तनया, गंगा-नदी ।
जिवाना-(हिं०क्रि०) जिमाना, भोजन कराना ।
जिआना-(हिं०क्रि०) देखो जिलाना ।
जिउ-(हिं०पुं०) देखो जीव; जिउका-(हिं०स्त्री०) देखो जीविका ।
जिगमिषा-(सं०स्त्री०) गमन करने की इच्छा ।
जिगरा-(हिं०पुं०) साहस ।
जिगीषा-(सं०स्त्री०) विजय प्राप्त करने की इच्छा ।
जिगीषु-(सं०वि०) परिश्रमी, मेहनती ।
जिघत्सा-(सं०स्त्री०) भोजन करने की इच्छा, भूख ।
जिघांसक-(सं०वि०) हिंसक, हत्यारा ।
जिघांसु-(सं०वि०) मारने वाला ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिच, जिच्च-(हिं०स्त्री०) विवशता, शतरंज के खेल में वह स्थिति जब एक पक्ष के खिलाड़ी को कोई मोहरा चलने की जगह नहीं रहती ।

जिज्ञासन-(सं० नपुं०) पूछताछ । **जिज्ञासमान**-(सं० वि०) पूछताछ करने वाला । **जिज्ञासा**-(सं०स्त्री०) जानने की इच्छा । **जिज्ञासित**-(सं० वि०) जिससे पूछा गया हो । **जिज्ञासु**-(सं०वि०) जानने की इच्छा रखने वाला, खोजी । **जिज्ञास्यवान्**-(सं० वि०) जो विषय पूछा जाता हो ।

जिठानी-(हिं०स्त्री०) पति के बड़े भाई की स्त्री ।

जित्-(सं०वि०) पराजित, जीता हुआ ।

जितना-(हिं०वि०) जिस परिमाण का ।

जितनेमि-(सं०वि०) क्रोधशून्य, (पुं०) विष्णु ।

जितवाना-(हिं०क्रि०) जिताना ।

जितात्मा-(सं०वि०) जितेन्द्रिय ।

जिताना-(हिं०क्रि०) जीतने में सहायता देना ।

जितेन्द्रिय-(सं०वि०) जिसने अपनी इन्द्रियों को अपने वश में कर लिया हो,

जिते-(हिं०वि०) जिस संख्या में ।

जितै-(हिं०क्रि०वि०) जिधर, जिस ओर ।

जितैया-(हिं०वि०) जीतने वाला ।

जितो-(हिं०वि०) जितना (क्रि०वि०) जिस मात्रा में ।

जिधर-(हिं०क्रि०वि०) जहाँ, जिस ओर

जिन-(हिं०अव्य०) मत, नहीं ।

जिन्ह-(हिं०सर्व०) देखो जिन ।

जिब्भा, जिभ्या-(हिं० स्त्री०) देखो जिह्वा ।

जिमाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना ।

जिमि-(हिं०क्रि०वि०) ज्यों, जैसे ।

जिमींदार-(हिं०पुं०) भूस्वामी ।

जिम्भा-(सं०स्त्री०) जृम्भा, जंभाई, उबासी ।

जिय-(हिं०पुं०) चित्त, मन ।

जियन-(हिं०पुं०) जीवन ।

जियरा-(हिं०पुं०) जीव ।

जियाना-(हिं०क्रि०) जिलाना, रखना, पालना ।

जियारी-(हिं०स्त्री०) जीवन, जीविका

जिलाना-(हिं०क्रि०) जीवित करना, पालना, पोसना ।

जिलेबी-(हिं०स्त्री०) देखो जलेबी ।

जिव-(हिं०पुं०) देखो जीव ।

जिवाना-(हिं०क्रि०) देखो जिलाना ।

जिस-(हिं०वि०) 'जो' का वह रूप जो उसको विभक्ति युक्त विशेष्य के साथ आने से प्राप्त होता है ।

जिहान-(सं०वि०) जाने वाला ।

जिह्म-(सं०वि०) कुटिल, कपटी, दुष्ट। **जिह्मगति**-(सं०पुं०) सर्प; (वि०) टेढ़ी चाल चलने वाला, मन्दगति । **जिह्वल**-(सं०वि०) भोजनलोलुप, चटोरा । **जिह्वामूलीय**-(सं०पुं०) वह वर्ण जिसका उच्चारण जिह्वा के मूल से होता है यथा क, ख, ग, घ, ङ का उच्चारण । ᳵ क ᳵ ख- इसे जिह्वामूलीय कहते हैं ।

जिह्वालोल्य-(सं०स्त्री०) भुक्खड़पन ।

जी-(हिं०पुं०) चित्त, मन, दम, जीवट, इच्छा, संकल्प, (अव्य०) एक सम्मान सूचक शब्द जो किसी व्यक्ति के नाम के पीछे लगाया जाता है; यह शब्द हामी देखलाने में प्रयोग होता है ।

जीअ, जीउ-(हिं०पुं०) देखो जीव ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीजा-(हिं०पुं०) बड़ी बहिन का पति
जीजी-((हिं०स्त्री०) बड़ी बहिन।
जीत-(हिं०स्त्री०) जय, विजय, लाभ।
जीतना-(हिं०क्रि०) विजय प्राप्त करना
जीता-(हिं०वि०) जीवित, तौल या नाप नाप में कुछ अधिक। जीता लोहा-चुम्बक।
जीति-(सं०स्त्री०) जय, जीत।
जीन-(सं०वि०) जीर्ण, पुराना।
जीना-(हिं०क्रि०) जीवित रहना, प्रफुल्लित होना।
जीभ-(हिं०स्त्री०) रसना।
जीमना-(हिं०क्रि०) भोजन करना।
जीमूत-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, मेघ।
जीय-(हिं०पुं०) देखो जी।
जीयदान-(हिं०पुं०) प्राणदान, जीवन-दान।
जीरण-(हिं०वि०) देखो जीर्ण।
जीरना-(हिं०क्रि०) जीर्ण होना, मुर-झाना।
जीरा-(सं०वि०) पुराना, फटा पुराना,
जीर्णता-(सं०स्त्री०) बुढ़ापा।
जीव-(सं०पुं०) प्राणी, जीवधारी, जीवात्मा।
जीवग्राह-(सं०पुं०) बन्दी, कैदी।
जीवित-(हिं०स्त्री०) जीविका।
जीवज-(हिं०स्त्री०) साहस, जिगरा।
जीवद-(सं०पुं०) वैद्य; (वि०) जीवन-दाता। जीवनदाता (सं०वि०) जीवन-दायी, जीवन देनेवाला। जीवदान-(सं०नपुं०) प्राण रक्षा।
जीवदाता-(सं०पुं०) प्राणी, जानवर;
जीवन-(सं०नपुं०) वृत्ति, जीविका प्राण प्यारा, परमप्रिय।
जीवनचरित-(सं०नपुं०) जीवनवृत्तान्त ग्रंथ।
जीवनबूटी, जीवनमूरि-(हिं०स्त्री०) संजीवनी नामक पौधा। जीवनवृत्ति-(सं०नपुं०) जीवनचरित्र, जीवनी।
जीवनि-(हिं०स्त्री०) संजीवनी बूटी।
जीवनी-(हिं०स्त्री०) जीवन चरित्र।
जीवनीय-(सं०वि०) जीविका करने योग्य।
जीवनोपाय (सं०पुं०) जीविका।
जीवन्मुक्त-(सं० वि०) जो आत्मज्ञान से माया के बन्धन से छूट गया हो।
जीवमन्दिर((सं०नपुं०) शरीर, देह।
जीवरा-(हिं०पुं०) प्राण। जीवरि-(हिं०स्त्री०) प्राण धारण की शक्ति।
जीवलोक-(सं०पुं०) मर्त्य लोक।
जीववृत्ति-(सं०स्त्री०) पशु पालने का व्यवसाय।
जीवशून्य-(सं०वि०) जीव रहित।
जीविका-(सं० स्त्री०) जीवन का व्यापार।
जीवित-(सं०वि०) जीता हुआ।
जीवितघ्न-(सं०वि०) प्राण नाशक।
जीवी-(सं०वि०) प्राण धारक, जीने वाला।
जीह-(हिं०स्त्री०) देखो जीभ, जिह्वा।
जुअति-(हिं०स्त्री०) देखो, युवती।
जुआँ-(हिं०स्त्री०) देखो जूं।
जुआ-(हिं०पुं०) बाजी लगाकर हार जीत का खेल, लकड़ी का वह ढांचा जो बैल के कन्धे पर रक्खा जाता है, जाँते की मुठिया।
जुआरी-(हिं०पुं०) जुआ खेलने वाला।
जुग-(हिं०पुं०) देखो युग, जोड़ा, दल, पीढ़ी।
जुगजुगाना-(हिं०क्रि०) जगमगाना।
जुगत-(हिं० स्त्री०) युक्ति, उपाय, व्यवहार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जुगनू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बरसाती छोटा कीड़ा, जिसका पिछला भाग चिनगारी की तरह रह रहकर चमकता है, खद्योत, पान के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियाँ गले में पहनती हैं।

जुगम-(हिं०वि०) देखो युग्म।

जुगल-(हिं०वि०) देखो युगल।

जुगवाना-(हिं०क्रि०) संचित करना।

जुगार-(हिं०स्त्री०) जुगाली।

जुगाली-(हिं०स्त्री०) रोमन्थ, पागुर।

जुगूत-(हिं०स्त्री०) युक्ति, उपाय।

जुगुप्सक-(सं०वि०) दूसरे की व्यर्थ निन्दा करने वाला। जुगुप्सा-(सं० स्त्री०) निन्दा, बुराई, गर्हणा।

जुगुप्सित-(सं०वि०) घृणित, निन्दित।

जुगुप्सु-(सं०वि०) निन्दक।

जुगल-(हिं०वि०) युग्म, जोड़ा।

जुज्झ-(हिं०स्त्री०) देखो युद्ध।

जुझावना-(हिं०क्रि०) लड़ा देना।

जुझाऊ-(हिं०वि०) युद्ध संबंधी।

जुट-(हिं०स्त्री०) जोड़ी, मण्डली, जत्था, दल।

जुटना-(हिं०क्रि०) सटना, चिपटना, लगा रहना, एकत्र होना, प्रवृत्त होना,

जुटाना-(हिं०क्रि०) जोड़ना, सटाना, जमा करना।

जुट्टी-(हिं०स्त्री०) घास, पुआल आदि का मुट्ठा, अँटिया।

जुठारना-(हिं०क्रि०) उच्छिष्ट करना,

जुठिहावा-(हिं०पुं०) जूठा खाने वाला मनुष्य।

जुड़वाँ-(हिं०वि०) एक ही साथ उत्पन्न दो बच्चे, यमल, युग्म।

जुड़ाना-(हिं०क्रि०) ठंडा होना।

जुड़वाना-(हिं०क्रि०) शान्त करना।

जुत-(हिं०वि०) देखो युक्ति।

जुतवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से हल चलवाना। जुताई-(हिं० स्त्री०) जोतने का काम। जुताना (हिं०क्रि०) देखो जोताना।

जुतियाना (हिं०क्रि०) जूतों से मारना, निरादर करना। जुतियौवल-(हिं० स्त्री०) आपस में जूतों की मार।

जुत्थ-(हिं०पुं०) देखो यूथ।

जुद्ध-(हिं०स्त्री०) देखो यूथ।

जुध-(हिं०स्त्री०) देखो, युद्ध, लड़ाई।

जुन्हरी-(हिं०स्त्री०) ज्वार नामक अन्न

जुन्हाई-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका, चाँदनी।

जुरझुरी-(हिं०स्त्री०) ज्वार की कँपकँपी।

जुरना-(हिं०क्रि०) देखो जुड़ना।

जुराना-(हिं०क्रि०) देखो जुटाना।

जुल-(हिं०पुं०) धोखा, छल, दम, पट्टी।

जुलना-(हिं०क्रि०) भेंट करना।

जुलाहा-(हिं०पुं०) कपड़ा बिननेवाला मुसलमान, तन्तुकार।

जुलोक-(हिं०पुं०) द्युलोक, बैकुण्ठ।

जुवराज-(हिं०पुं०) देखो युवराज।

जुवा-(हिं०पुं०) देखो, युवा, द्यूत।

जुआरी-(हिं०पुं०) देखो जुआरी।

जुहाना-(हिं०क्रि०) एकत्रित करना।

जू-(हिं०अव्य०) एक आदरसूचक शब्द

जूं-(हिं०स्त्री०) बालों में पड़ने वाला एक छोटा स्वेदज कीड़ा।

जूट, जूंठन-देखो जूठ, जूठा।

जूआ-(हिं०पुं०) हार जीत का खेल, चक्की में लगी हुई वह लकड़ी। जिसको पकड़ कर यह चलाई जाती है

जूझ-(हिं०स्त्री०) युद्ध, झगड़ा, लड़ाई।

जूझना-(हिं०क्रि०) लड़ना।

जूट-(सं०पुं०) जूड़ा, लट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जूटि-(हिं०स्त्री०) जोड़ी।
जूठन-(हिं०स्त्री०) उच्छिष्ट भोजन।
जूड़-(हिं०वि०) ठंडा, प्रसन्न।
जूड़ा-(हिं०पुं०) सिर के बालों की ग्रन्थि, चोटी, कलंगी।
जूड़ी-(हिं०स्त्री०) जाड़ा देकर आने वाला ज्वर।
जूत, जूता-(हिं०पुं०) पदत्राण, उपानह, पनही, जोड़ा। जूताखोर-(हिं० वि०) जो जूता खाया करे, निर्लज्ज। जूती-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहिरने का जूता। जूतीकारी-(हिं० स्त्री०) जूतोंकीमार; जूतीपैजार-(हिं०स्त्री०) मारपीट, लड़ाई झगड़ा।
जूथ-(हिं०पुं०) देखो यूथ।
जून-(हिं०पुं०) समय, काल।
जूना-(हिं०पुं०) बोझ बाँधने की रस्सी, उसकन।
जूरा-(हिं०पुं०) देखो जूड़ा।
जूस-(हिं०पुं०) मूंग, अरहर आदि की पकी हुई दाल का पानी, उबाली हुई वस्तु का रस, युग्म संख्या।
जूसी-(हिं०स्त्री०) खांड़ का पसेव।
जूह-(हिं०पुं०) देखो यूथ।
जृम्भ-(सं०पुं०) जँभाई, उबासी, आलस्य, । जृम्भण-(सं०नपुं०) जभाई लेना; जृम्भा-(सं०स्त्री०) जंभाई, आलस्य।
जेंवना-(हिं०क्रि०) भक्षण करना, खाना। जेंवनार-(हिं०स्त्री०) देखो, जवनार। जेंवाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना।
जे-(हिं०सर्व०) 'जो' का बहुवचन।
जेइ, जेउ, जेऊ-(हिं०सर्व०) जो।
जेठ-(हिं०पुं०) वैशाख और आषाढ़ के बीच का चान्द्रमास, पति का बड़ा भाई; (वि०) अग्रज, वय में बड़ा। जेठरा-(हिं०वि०) जेठा, बड़ा।
जेठा-(हिं०वि०) अग्रज, बड़ा; जेठाई (हिं०स्त्री०) जेठापन।
जेठानी-(हिं०स्त्री०) पति के बड़े भाई (जेठ) की स्त्री।
जेठौत-जेठौता-(हिं०पुं०) पति के बड़े भाई (जेठ) का पुत्र।
जेतव्य-(सं०वि०) जेय, जो जीता जा सके।
जेता-(हिं०वि०) जयशील, विजयी।
जेतिक-(हिं०वि०) जितना। जेते-जतने।
जेतो-(हिं०क्रि०वि०) जितना।
जेमन-(सं०नपुं०) भक्षण, भोजन।
जेय-(सं०वि०) जीतने योग्य।
जेवड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो जेवरी।
जेवन-(हिं०क्रि०) देखो जीमना।
जेवनार-(हिं०स्त्री०) बहुत से मनुष्यों का साथ बैठकर भोजन करना।
जेवरा-(हिं०पुं०) रस्सा।
जेवरी-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी।
जेष्ठ-(स०वि०) जेठ का महीना, अग्रज, बड़ा।
जेहल, जेहलखाना-देखो, जेल, जेलखाना।
जेहि-(हिं०सर्व०) जिसको, जिससे।
जै-(हिं०स्त्री०) देखो जय। (वि०) जितना, जिस संख्या का।
जैजैकार-(हिं०स्त्री०) देखो जय जयकार
जैपत्र-(हिं०पुं०) देखो जयपत्र।
जैबो-(हिं०क्रि०) देखो जाना।
जैमाल-(हिं०स्त्री०) देखो जयमाल।
जैव-(सं०वि०) जीवन संबंधी।
जैसा-(हिं०वि०) जिस आकृति या गुण का, जिस प्रकार का, जितना, जिस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमाण का, सदृश, तुल्य, समान, बराबर (क्रि०वि०) जिस मात्रा में, जितना। जैसो-(हिं०क्रि०वि०) देखो जैसा।

जों-(हिं०क्रि०वि०) देखे ज्यों।

जोंक-(हिं०स्त्री०) एक पानी का कीड़ा, जो जीवों के शरीर में चिपक कर उनका रक्त चूसता है।

जोंकी-(हिं०स्त्री०) दोहरे मुंह का काँटा

जोंदरी, जोंधरी-(हिं०स्त्री०) छोटी ज्वार, बाजरा।

जो-(हि०सर्व०) एक संबंध वाचक सर्वनाम जिसके द्वारा निर्दिष्ट संज्ञा या सर्वनाम के वर्णन में कुछ अधिक वर्णन की योजना की जाती है (अव्य०) यदि।

जोइ-(हि०स्त्री०) जाया, पत्नी, स्त्री; (सर्व०) जो।

जोइसी-(हिं०पुं०) देखो ज्योतिषी।

जोइ-(हिं०सर्व०) देखो जो।

जोखना-(हिं०क्रि०) तौलना, जाँचना।

जोखा-(हिं०पुं०) लेखा, हिसाब किताब,

जोखिम-(हिं०स्त्री०) विपत्ति की आशंका।

जोखिता--(हिं०स्त्री०) पत्नी, स्त्री।

जोग-(हिं०पुं०) देखो जोग (हिं०अव्य०) के समीप, के वास्ते।

जोगड़ा-(हिं०पूं०) पाखंडी, बनावटी।

जोगता-(हिं०स्त्री०) योग्यता।

जोगवाना-(हिं०क्रि०) रक्षित रखना, संचित रखना।

जोगिन-(हिं०स्त्री०) साधुनी, विरक्त स्त्री

जोग्य-(हिं०वि०) देखो योग्य।

जोगिनी-(हिं०स्त्री०) देखो योगिनी।

जोगिया-(हिं०वि०) गेरू के रंग का।

जोगी-(हिं०पुं०) योग करने वाला, योगी

जोगीश्वर-(हिं० पुं०) देखो योगीश्वर।

जोगू-(सं०वि०) स्तुति करनेवाला।

जोगेश्वर-(हिं०पुं०) देखो योगेश्वर।

जोड़-(हिं०पुं०) बन्धन, युग्म, तुल्य, समधर्मी, गणित में कई संख्याओं का योग, जोड़ने की क्रिया, योग-फल, जोड़ने का टुकड़ा, शरीर का सन्धिस्थान, समानता, जोड़ा।

जोंड़ती-(हिं०स्त्री०) अनेक संख्याओं का योग, जोड़। जोड़न-(हिं०पुं०) जामन जो दही जमाने के लिये दूध में डाला जाता है।

जोड़ना-(हिं०क्रि०) टूटे हुए पदार्थ के टुकड़ों को मिलाकर एक करना, सामग्री को क्रम से रखना, एकत्र करना, संग्रह करना, संबंध स्थापित करना।

जोड़वाई-(हिं०पुं०) जोड़ने की क्रिया,

जोड़वाना-(हिं०क्रि०) जोड़ने का काम दूसरे से कराना।

जोड़ा-(हिं०पुं०) एक तरह के दो पदार्थ दोनों पैरों के जूते, एक साथ पहिरे जानेवाले दो कपड़े, एक आकार की वस्तु, स्त्री-पुरुष।

जोड़वा-(हिं०वि०) एक ही माता के दो बच्चे, यमज। जोड़ाई-(हिं० स्त्री०) दो या अधिक वस्तुओं को जोड़ने का शुल्क, दीवार बनाने में ईंटों या पत्थरों के टुकड़ों को जोड़ने की क्रिया।

जोड़ी-(हिं०स्त्री०) एक ही तरह के दो पदार्थ, स्त्री-पुरुष, नर-मादा, दो घोड़ों से खींची जानेवाली गाड़ी, ताल।

जोड़ू-(हिं०स्त्री०) देखो जोरू, पत्नी।

जोत (हिं०स्त्री०) ऊँट, घोड़े आदि जोते जानेवाले पशुओं के गले की रस्सी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तराजू के पलरे में बंधी हुई रस्सी, उतनी भूमि जितनी किसी असामी को जोतने बोने के लिये दो गई हो ।

जोतदार-(हिं०पुं०) वह असामी जिसको जोतने बोने के लिये कुछ भूमि मिली हो। **जोतना**-(हिं०क्रि०) रथ, गाड़ी, कोल्हू आदि चलानेके लिये उसमें बैल आदि बाँधना,हल चलाना, **जोताई**-(हिं०स्त्री०)जोतने का काम, जोतने का पारिश्रमिक ।

जोति-(हिं०स्त्री०) देखो ज्योति ।

जोतिक,जोतिसी-(हिं०पुं०)ज्योतिषी।

जोती-(हिं०स्त्री०) ज्योति, घोड़े की लगाम, तराजू के पल्ले की रस्सी ।

जोधा-(हिं०पुं०) देखो योद्धा, लड़ने वाला ।

जोंना-(हिं०क्रि०) देखना ।

जोनि-(हिं०स्त्री०) देखो योनि ।

जोह, जोहाई-(हिं०स्त्री०) चन्द्रिका ।

जोपै-(हिं०पुं०) यदि, यद्यपि ।

जोबना-(हिं०पुं०) यौवन ।

जोय-(हिं०स्त्री०) जोरू, पत्नी, (सर्व०) जो जिस ।

जोयसी-(हिं०क्रि०) देखो ज्योतिषी ।

जोरना-(हिं०क्रि०) जोड़ना, मिलाना **जोराजोरी**-(हिं०स्त्री०) विवशता, (क्रि०वि०) बल पूर्वक ।

जोरू-(हिं०स्त्री०)भार्या,पत्नी ।

जोशी-(हिं०पुं०) देखो ज्योतिषी ।

जोषी-(हिं०पुं०) ज्योतिषी ।

जोह-(हिं०स्त्री०) खोज, प्रतीक्षा,

जोहड़-(हिं० पुं०) कच्चा तालाब ।

जोहन-(हिं०स्त्री०) प्रतीक्षा, खोज ।

जोहना-(हिं०क्रि०) प्रतीक्षा करना, ढूंढ़ना ।

जोहार-(हिं०पुं०)अभिवादन, नमस्कार

जौं-(हिं०अव्य०) यदि, जो, (हिं०क्रि० वि०)ज्यों ।

जौ-(हिं०पुं०) गेहूँ की तरह का एक अन्न, यव, (क्रि०वि०) जब (अव्य०) यदि ।

जौख-(हिं०पुं०) सेना, झुण्ड, जत्था ।

जौचनी-(हिं०स्त्री०) चना मिला हुआ जव ।

जौतुक-(हिं०पुं०)यौतुक, दहेज ।

जौन-(हिं०सर्व०) जो (वि०) जो ।

जौ पै-(हिं०अव्य०) यदि ।

जौहरी-(हिं०पुं०) रत्न बेचनेवाला, रत्नोंकी परख करने वाला, गुणग्राहक

ज्ञ-यह संयुक्त, अक्षर 'ज' और 'ञ' के योग से बनता है । (सं०पुं०) ज्ञानी जानने वाला, पण्डित ।

ज्ञपित-(सं०वि०) जाना हुआ । **ज्ञप्त**-(सं०वि०) ज्ञापित, जाना हुआ ।

ज्ञप्ति-(सं०स्त्री०) बुद्धि, स्तुति, विज्ञापन ।

ज्ञा-(सं०स्त्री०) जानकारी, कविता की आज्ञा ।

ज्ञात-(सं०वि०) विदित, जाना हुआ ।

ज्ञातक-(सं०वि०)विदित,जाना हुआ ।

ज्ञाता-(हिं०पुं०)जानकार,जाननेवाला ।

ज्ञाति(सं०पुं०) एक ही गोत्र या वंश का मनुष्य, बान्धव, गोती ।

ज्ञान-(सं०नपुं०) बोध, प्रतीत, जानकारी । **ज्ञानचक्षु**-(सं०पुं०) पण्डित, विद्वान् । **ज्ञानवान्**-(सं०वि०) ज्ञानी, जिसको ज्ञान हो । **ज्ञानबुद्ध**-(सं०-वि०) जिसको अधिक ज्ञान हो ।

ज्ञानापन्न-(सं०वि०)ज्ञान प्राप्त, ज्ञानी, बुद्धिमान् ।

ज्ञानी-(सं०वि०) ब्रह्मज्ञानी, जिसको सच्चा ज्ञान हो ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञानेन्द्रिय (सं०नपुं०) वे इन्द्रियाँ जिनसे जीवों को विषयों का ज्ञान होता है।

ज्ञानोदय-(सं०पुं०) ज्ञान की उत्पत्ति।

ज्ञापक-(सं०वि०) बोधक, सूचक।

ज्ञापन-(सं०नपुं०) जताने या बतलाने का कार्य। **ज्ञापनीय**-(सं०वि०) निवेदनीय। **ज्ञापित**-(सं० वि०) सूचित, बतलाया हुआ।

ज्ञेय-(सं०वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।

ज्या-(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला, किसी चाप के एक सिरे से दूसरे सिरे तक की रेखा, पृथ्वी, वह लम्ब रेखा जो किसी चाप के एक छोर से दूसरे छोर तक गये हुए व्यास पर गिरती हो। **ज्याघोष**-(सं० पुं०) धनुष की टंकार।

ज्यामिति-(सं०स्त्री०) गणित शास्त्र का वह विभाग जिसके द्वारा भूमि के परिमाण तथा रेखा, कोण, समतल, घन परिमाण आदि विषय का निरूपण होता है।

ज्यायस्-(सं०वि०) वृद्ध, जीर्ण, पुराना।

ज्यारना-(हिं०क्रि०) देखो जिलाना।

ज्यूं-(हिं०अव्य०) देखो ज्यों।

ज्येष्ठ-(सं०वि०) अति वृद्ध, बड़ा बूढ़ा

ज्येष्ठतात-(सं०पुं०) पिता के बड़े भाई।

ज्येष्ठत्व-(सं०नपुं०) ज्येष्ठता, बड़ाई।

ज्यों-(हिं०क्रि०वि०) जिस प्रकार, ज्यों-त्यों-किसी न किसी प्रकार से।

ज्योति-(सं०स्त्री०) प्रकाश, ज्वाला।

ज्योतिक-(हिं०पुं०) देखो ज्योतिषी।

ज्योतित-(हिं०वि०) प्रकाशित।

ज्योतिर्मय-(सं०वि०) प्रकाशमय।

ज्योतिर्विद-(सं०पुं०) ज्योतिष जानने वाला, ज्योतिषी।

ज्योतिष-(सं०नपुं०) वह विद्या या शास्त्र जिससे आकाशस्थिति ग्रह, नक्षत्र आदि की गति, परिमाण, दूरी आदि का निश्चय किया जाता है;

ज्योतिषी-(हिं०पुं०) ज्योतिःशास्त्र जानने वाला मनुष्य, दैवज्ञ, गणक।

ज्योतिष्पथ-(सं०पुं०) आकाश।

ज्योतिष्मान्-(सं०वि०) प्रकाशयुक्त। (पुं०) सूर्य।

ज्योत्स्ना-(सं०स्त्री०) कौमुदी, चन्द्रमा का प्रकाश, चाँदनी रात।

ज्योनार (हिं०स्त्री०) पका हुआ भोजन रसोई, भोज।

ज्यौं-(हिं०अव्य०) यदि जो-यह शब्द बहुधा कविता में प्रयोग होता है।

ज्यौतिष-(सं०वि०) ज्योतिष संबंधी।

ज्यौतिषक-(सं०पुं०) ज्योतिष शास्त्र जानने वाला।

ज्वर-(सं०पुं०) शरीर की अस्वस्थता में उत्पन्न गरमी। **ज्वरघ्न**-(सं०वि०) ज्वर नाशक।

ज्वल-(सं०पुं०) दीप्ति, ज्वाला, प्रकाश।

ज्वलन्त-(सं०वि०) प्रकाशमान, जलता हुआ।

ज्वान-(हिं०पुं०) युवा पुरुष।

ज्वार-(हिं०स्त्री०) जुँधरी, समुद्र के जल का उभाड़।

ज्वारभाटा-(हिं०पुं०) समुद्र के जल का चढ़ाव उतार।

ज्वाल-(सं०पुं०) अग्नि शिखा, अग्नि की लौ, आँच।

ज्वाला-(सं०स्त्री०) आग की लपट।

ज्वालामुखी पर्वत-(सं०पुं०) वह पर्वत जिसकी चोटी में से धुआँ, राख तथा जले हुए और पिघले हुए पदार्थ समय समय पर अथवा निरन्तर निकलते रहते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झ

झ-संस्कृत और हिंदी व्यञ्जन वर्ण का नवाँ वर्ण तथा च वर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान तालु है।

झ-(सं०पुं०) वर्षा मिली हुई तीव्र आँधी, जल का गिरना, तीव्र वायु।

झउआ-(हिं० पुं०) टोकरा, खांचा, झावा।

झं-(हिं०पुं०) धातु खण्ड के परस्पर टकराने से उत्पन्न शब्द।

झंकना-(हिं०क्रि०) देखो झीखना।

झंकार-(हिं०स्त्री०) झनकार।

झंकारना (हिं०क्रि०) झनझन शब्द उत्पन्न करना या होना।

झंकृत-(हिं०वि०) ध्वनित।

झंखना-(हिं०क्रि०) पश्चात्ताप करना।

झंखाड़-(हिं० पुं०) बहुत निकृष्ट वस्तुओं की ढेर।

झंगरा-(हिं० पुं०) बाँसका गोल टोकरा।

झंगा-(हिं०पुं०) देखो झगा।

झंझ-(हिं०पुं०) झांझ।

झंझट-(हिं०स्त्री०) प्रपंच, टंटा, बखेड़ा

झंझनाना-(हिं०क्रि०) झंकारना।

झंझर-(हिं०पुं०) देखो झञ्झर।

झंझरा-(हिं०वि०) महीन छेंद वाला।

झंझरी-(हिं०स्त्री०) भीत में बनी हुई जालीदार खिड़की।

झंझा-(हिं०पुं०) वर्षा रहित तीव्र आँधी

झंझार-(हिं०पुं०) आग की लपट।

झंझावात-(हिं०पुं०) देखो झंझा।

झंझी-(हिं०स्त्री०) फूटी कौड़ी।

झंझोड़ना-(हिं० क्रि०) झकोरना, झटका देना।

झंडा-(हिं०पुं०) ध्वजा, पताका, फरहरा।

झंप-(हिं० पुं०) फलाँग, छलाँग।

झंपना-(हिं०क्रि०) ढांकना, छिपाना।

झपड़िया, झपरी-(हिं०स्त्री०) ओहार।

झंपान-(हिं०पुं०) एक प्रकार की खटोली जो पहाड़ पर सवारी के काम में आती है।

झंपित-(हिं०वि०) छिपा हुआ।

झंपोला-(हिं०पुं०) छोटा झांप, छबड़ा।

झंब-(हिं०पुं०) गुच्छा।

झंवरना-(हिं०क्रि०) कुछ काला पड़ जाना, फीका पड़ना।

झंवाँ-(हिं०पुं०) देखो झांवा।

झंवाना-(हिं०क्रि०) झवाँ के रंग का होना, अग्निका मन्द होना, घटना, कम होना, कुम्हलाना।

झंसना-(हिं०क्रि०) किसी को बहका कर उसका धन छीन लेना।

झंक-(हिं०स्त्री०) धुन, सनक।

झकझक-(हिं०स्त्री०) बकवाद।

झकझका-(हिं०स्त्री०) चमकीला।

झकझोर-(हिं०पुं०) झटका, झोंक।

झकझोर-(हिं०पुं०) झटका, झोंका।

झकझोरना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को पकड़ कर झटका देना। झकझोरा-(हिं०पुं०) धक्का।

झकना-(हिं०क्रि०) व्यर्थ की बात करना

झकाझक-(हिं०वि०) चमकता हुआ।

झगार-(सं०पुं०) 'झ' मात्र वर्ण।

झकोर-(हिं०पुं०) हवा का झटका।

झकोरना-(हिं०क्रि०) झोंका मारना।

झकोरा-(हिं०पुं०) वायु का वेग।

झक्क-(हिं०वि०) चमकीला, जगमगाता।

झक्कड़-(हिं०पुं०) तीव्र वायु, अन्धड़; (वि०) झक्की।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झक्की-(हिं०वि०) व्यर्थ की बकवाद करने वाला, सनकी।
झक्खना-(हिं०क्रि०) देखो झीखना।
झख-(हिं०स्त्री०) झीखने का भाव या क्रिया।
झखना-(हिं०क्रि०) देखो झीखना।
झखी-(हिं०स्त्री०) मत्स्य, मछली।
झगड़ना-(हिं० क्रि०) झगड़ा करना, लड़ना।
झगड़ा-(हिं०पुं०) लड़ाई-बखेड़ा टंटा।
झगड़ालू-(हिं०पुं०) कलहप्रिय।
झगराऊ-(हिं०वि०) झगड़ालू।
झगला, झगा-(हिं०पुं०) छोटे बच्चों के पहिरने का ढीला वस्त्र।
झङ्कार-(हिं०पुं०) गूँजन, झनझन शब्द।
झञ्झर-(हिं०पुं०) पानी रखने का चौड़े मूँह का मिट्टी का पात्र।
झञ्झी-(हिं०स्त्री०) फूटी कौड़ी।
झझक-(हिं०पुं०) भय की झुंझलाहट, दुर्गन्ध, सनक। **झझकना**-(हिं०वि०) झूँझलाना, खिजलाना। **झझकाना**-(हिं०वि०) खिजलाना भड़काना, रोक देना। **झझकार**-(हिं०स्त्री०) झझकारने का भाव या क्रिया।
झझकारना-(हिं०क्रि०) डाटना, डपटना
झञ्झन-(सं०नपुं०) झनकार।
झञ्झा-(सं०स्त्री०) अंधड़।
झञ्झा-वायु-(सं० पुं०) वह आँधी जिसके साथ पानी भी बरसता हो।
झट-(हिं०क्रि०वि०) तत्क्षण, तुरंत।
झटक-(हिं०पुं०) देखो झटका।
झटका-(हिं०पुं०) झोंका, झटकने की क्रिया, **झटकारना**-(हिं०वि०) झटकना।
झटपट-(हिं०अव्य०) अतिशीघ्र, जल्दी
झटाका-(हिं०वि०) देखो झड़ाका।
झटिका-(हिं०स्त्री०) झाड़ी।
झटिति-(सं०अव्य०) झटपट, तत्क्षण।
झड़-(हिं०स्त्री०) ताले के भीतर का खटका जो ताली से हटता और ताले को खोलता है।
झड़न-(हिं०स्त्री०) झड़ने की क्रिया या भाव, झड़ी हुई वस्तु। **झड़ना**-(हिं०क्रि०) कण या बिन्दु रूप में गिरना।
झड़प-(हिं०स्त्री०) आवेग, लड़ाई, मुठभेड़, क्रोध। **झड़पना**-(हिं०क्रि०) वेग से आक्रमण करना, लड़ना, झगड़ना।
झड़पाझड़पी-(हिं०स्त्री०) हाथापाई।
झड़वाना-(हिं०क्रि०) झाड़ने का काम दूसरे से कराना।
झड़ाई-(हिं०स्त्री०) झड़ने की क्रिया।
झड़ाक-(हिं०क्रि०वि०) तुरत।
झड़का-(हिं०पुं०) मुठभेड़, झटपट।
झड़ाझड़-(हिं०क्रि०वि०) अविरल, लगातार।
झड़ी-(हिं०स्त्री०) महीन महीन बूंदों की वर्षा, ताले के भीतर का अंश जो चाभी से हटाता बढ़ाता है, निरन्तर बहुत सी बातें कहते जाना।
झन-(हिं०स्त्री०) किसी धातुखण्ड के आघात से उत्पन्न शब्द।
झनक-(हिं०स्त्री०) धातु आदि के परस्पर टकराने का शब्द। **झनकना**-(हिं०क्रि०) झनकार का शब्द करना, चिड़चिड़ाना।
झनकमनक-(हिं०स्त्री०) आभूषण आदि का शब्द।
झनकार-(हिं०स्त्री०) देखो झंकार।
झनझन-(हिं०स्त्री०) झनकार, झनझन शब्द।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झन्नाहट-(हिं०स्त्री०) झनकार।
झप-(हिं०क्रि०वि०) तुरत, झटपट।
झपक-(हिं०स्त्री०) बहुत थोड़ा समय, पलक गिरना, लज्जा। **झपकाना**-(हिं० क्रि०) डरना, पलक गिराना, ढकेलना, वेग से आगे को बढ़ना, ऊँघना।
झपका-(हिं०पुं०) हवा का झोंका।
झपकाना-(हिं०क्रि०) पलकों का बन्द करना।
झपकी-(हिं०स्त्री०) अल्प निद्रा, आँख झपकने की क्रिया। **झपकौंहाँ**-(हिं०वि०) निद्रा में भरा हुआ।
झपट-(हिं०स्त्री०) झपटने की क्रिया या भाव। **झपटना**-(हिं०क्रि०) आक्रमण करना, ले लेना। **झपटाना**-(हिं०क्रि०) उसकाना।
झपना-(हिं०क्रि०) पलकों को बन्द करना
झपट्टा-(हिं०पुं०) देखो झपट।
झपस-(हिं०स्त्री०) गूंजान होने की क्रिया। **झपसना**-(हिं०क्रि०) वृक्ष या लता की शाखाओं का सघन होकर फैलना।
झपाका-(हिं०पुं०) शीघ्रता, जल्दी; (क्रि०वि०) शीघ्रता से।
झपाटा-(हिं०पुं०) आक्रमण, धावा।
झपाना-(हिं०क्रि०) बन्द करना, मूंदना
झपित-(हिं०वि०) मूंदा हुआ, लज्जित, नींद में भरा हुआ।
झपेट-(हिं०स्त्री०) देखो झपट।
झपेटना-(हिं०क्रि०) दबोचना, धावा करके ले लेना। **झपेटा**-(हिं०पुं०) चपेट।
झप्पड़-(हिं०पुं०) झापड़, थप्पड़।
झप्पान-(हिं०पुं०) चार आदमियों से उठाने की एक प्रकार की पहाड़ी सवारी।

झबरा, झबरीला-(हिं०वि०) जिसके बिखरे हुए लंबे बाल हों।
झबा-(हिं०पुं०) देखो झब्बा।
झबार-(हिं०स्त्री०) बखेड़ा, टंटा।
झबिया-(हिं०स्त्री०) छोटा झब्बा, फुंदना।
झब्बा-(हिं०पुं०) रेशम कलावत्तू, सूत आदि के तारों का गुच्छा।
झकक-(हिं०स्त्री०) चमक, प्रकाश, उजाला। **झमकना**-(हिं०क्रि०) चमक उत्पन्न करना।
झमझम-(हिं०स्त्री०) घूंघुरू आदि के बजने का शब्द, वर्षा होने का शब्द, चमक, दमक, (हि०) जगमगाता हुआ (हिं०क्रि०) चमक दमक के साथ। **झमझमाना**-(हिं०क्रि०) चमचमाना।
झमना-(हिं०स्त्री०) झुकना, दबना।
झमाका-(हिं०पुं०) पानी बरसने अथवा आभूषणों के बजने का शब्द।
झमाझम-(हिं०स्त्री०) घूंघुरू आदि के बजने का शब्द। (हिं०क्रि०वि०) झमाझम शब्द सहित।
झमाना-(हिं०क्रि०) झपकना, छाना, घेरना।
झमेल-(हिं०स्त्री०) देखो झमेला।
झमेला-(हिं०पुं०) झंझट, झगड़ा, बखेड़ा, भीड़भाड़। **झमेलिया**-(हिं० वि०) झगड़ालू।
झम्प-(सं०पुं०) उछाल, फलाँग, कुदान।
झर-(सं०पुं०) पहाड़ से निकला हुआ झरना, सोता, झुंड, समूह, लगातार वृष्टि, लपट, ताले के भीतर का भाग जिसको ताली हटा कर उसको खोलती है।
झरकना-(हिं०क्रि०) झिड़कना।
झरझर-(हिं०स्त्री०) वह शब्द जो पानी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरसने, वायु चलने या वर्षा होने से उत्पन्न होता है। झरझराना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ को किसी पात्र में झाड़ कर गिरा देना।

झरन-(हिं०स्त्री०) झरने की क्रिया, **झरना**-(हिं०पुं०) जल प्रवाह, सोता, बड़ी छलनी, सोते का ऊंचे स्थान से गिरना।

झरनि-(हिं०स्त्री०) देखो झरन।

झरप-(हिं०स्त्री०) झकोरा, झोंका।

झराझर (हिं०क्रि०वि) झरझर शब्द करते हुए।

झरित-(सं०वि०) गलित, गला हुआ।

झरी-(सं०स्त्री०) स्रोत, (हिं०स्त्री०) दरार, वह कर जो किसी स्थान में हाट लगाने के लिये दिया जाता है।

झरोखा-(हिं०पुं०) भीत में बनी हुई झझीरीदार छोटी खिड़की या मोखा, गवाक्ष।

झल-(हिं०पुं०) उत्कट इच्छा, क्रोध, रोष

झलक-(हिं०स्त्री०) आभा, द्युति, चमक, प्रतिबिम्ब।

झलकना-(हिं०क्रि०) चमकना।

झलका-(हिं०पुं०) शरीर पर पड़ा हुआ छाला, फफोला।

झलकाना-(हिं०क्रि०) चमकाना, आभास देना, दिखलाना।

झलकी-(हिं०स्त्री०) देखो झलक।

झलझल-(हिं०स्त्री०) चमक दमक।

झलझलाना-(हिं०क्रि०) चमकना, चमचमाना। **झलझलाहट**-(हिं०स्त्री०) चिड़चिड़ाहट।

झलना—(हिं० क्रि०) किसी पदार्थ से हवा लगाना, हवा करने के लिये कोई वस्तु का हिलाना, किसी वस्तु को रांगे से जोड़ना, देखो झेलना।

झलमल-(हिं०पुं०) अल्प प्रकाश।

झलमला-(हिं०वि०) चमकीला।

झलमलाना-(हिं०वि०) रह रह कर चमकना।

झलरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का पकवान।

झलराना-(हिं०क्रि०) फैल कर छा जाना।

झलवाना-(हिं०वि०) किसी दूसरे से झलने या झालने का काम कराना।

झलहाया-(हिं०पुं०) ईर्ष्या करनेवाला मनुष्य।

झींगुर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा।

झलाझल-(हिं०वि०) खूब चमकता हुआ।

झल्लकण्ठ-(सं०पुं०) पारावत, परेवा-पक्षी।

झल्लरा-(सं० स्त्री०) झाँझ, छोटे बच्चों के बाल, स्वेद, पसीना।

झल्वा-(हिं०पुं०) बड़ी टोकरी, खांचा, वर्षा, बौछार, (वि०) जो बहुत गाढ़ा न हो, सनकी, पागल।

झल्लाना-(हिं० क्रि०) खिजलाना, चिढ़ाना।

झवर-(हिं०पुं०) झगड़ा।

झष-(सं०पुं०) मत्स्य, मीन, मछली।

झसना-(हिं०क्रि०) देखो झँसना।

झहरना-(हिं०क्रि०) झरझर शब्द करना, शिथिल होना, ढीला पड़ना झिड़कना। **झहराना**-(हिं०क्रि०) खिजलाना, शिथिल होकर गिरना।

झा-(हिं०पुं०) मैथिल ब्राह्मणोंकी एक उपाधि।

झाई-(हिं०स्त्री०) प्रतिबिंब, परछाई, छल, अन्धकार, प्रतिबिंब।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झाँक-(हिं०स्त्री०) ताकने की क्रिया या भाव। झाँकना-(हिं०क्रि०) आड़ में से मुख निकाल कर देखना।
झाँकी-(हिं०स्त्री०) झांकने की क्रिया, दर्शन, दृश्य।
झाँगला-(हिं० वि०) ढीलाढीला (पोशाक)
झाँगा-(हिं०पुं०) देखो झगा।
झाँझ-(हिं०स्त्री०) कांसे के ढले हुए दो गोलाकार टुकड़ों का जोड़ा जो मजीरे से बड़ा होता है।
झाँझड़ी,झाँझन-(हिं०स्त्री०) घुघुरूदार पैजनी, पायल।
झाँझर-(हिं०वि०) जर्जर, पुराना, छिद्रमय (स्त्री०) पैजनी, झांझन।
झाँझरी-(हिं० स्त्री०) झांझ नामक आभूषण।
झाँझ-(हिं०पुं०) झंझट, बखेड़ा।
झाँझिया-(हिं०पुं०) झांझ बजाने वाला।
झाँप-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को ढांपने की वस्तु, नाद, झपकी। झाँपना-(हिं०वि०) ढाँकना।
झाँपी-(हिं०स्त्री०) ढाँपने की डलिया
झावर-(हिं०स्त्री०) नीची भूमि जहाँ पानी ठहरता हो; (वि०) मलिन, मुरझाया हुआ, शिथिल।
झाँवली-(हिं०स्त्री०) आँख की कनखी।
झाँवा-(हिं०पुं०) ईंट जो अधिक पकने के कारण काली हो गई हो।
झाँसना-(हिं०क्रि०) धोखा देना,ठगना।
झाँसा-(हिं०पुं०) छल, धोंखाधड़ी।
झाँसिया-(हिं०पुं०) धोखा देने वाला।
झाँसू-(हिं०पुं०) छल करनेवाला।
झाग-(हिं०पुं०) नल आदिका फेन, गाज।
झागड़-(हिं०पुं०) झगड़ा।
झागना-(हिं०क्रि०) फेन उत्पन्न होना।
झाड़-(हिं०पुं०) छोटा वृक्ष जिसकी डालियां भूमि के बहुत पाससे निकल कर चारो ओर फैली रहती है, प्रकाश करने का काँच का झाड़ जो छत में से लटकाया जाता है, गुच्छा, लच्छा, झाड़ने की क्रिया, डाट डपट, फटकार; झाड़फूंक-मत्रोपचार।
झाड़झंखाड़-(हिं०पुं०) व्यर्थ की वस्तुओं का समूह।
झाड़दार-(हिं०वि०) काँटेदार, कँटीला
झाड़न-(हिं०स्त्री०) धूर इत्यादि हटाने का कपड़ा, झाड़ू देने पर निकली हुई वस्तु।
झाड़ना-(हिं०क्रि०) धूल इत्यादि हटाना, झटकारना, फटकारना, झटके से किसी वस्तु को गिराना, भूत प्रेत दूर करने के लिये मन्त्र पढ़ कर फूँकना, डांटना, डपटना।
झाड़फूंक-(हिं०स्त्री०) मन्त्र पढ़ कर भूत प्रेत दूर करने की क्रिया।
झाड़बुहार (हिं० स्त्री०) परिष्कार, शुद्धता।
झाड़ा-(हिं०पुं०) विष्ठा, मैला, पुरीष।
झाड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा झाड़, अनेक छोटे पेड़ों का समुदाय।
झाड़ीदार-(हिं०वि०) झाड़ी के समान।
झाड़ू-(हिं०पुं०) कूंचा, बोहारी।
झापड़-(हिं०पुं०) थप्पड़, तमाचा।
झाबर-(हिं०पुं०) दलदली भूमि।
झाबा-(हिं०पुं०) टोकरा, खांचा,।
झामक-(सं०नपुं०) जली हुई ईंट, झाँबा
झाम-(हिं०पुं०) झब्बा, गुच्छा, डाँट डपट, घुड़की, छल, कपट, धोखा, कुवे की मिट्टी खोदने का यंत्र।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

झामर-(सं०पुं०) एक प्रकार का पैर का गहना, टेकुआ।
झामी-(हिं०पुं०) छली, कपटी।
झायँझायँ-(हिं०स्त्री०) झनझन शब्द, झनकार, सूनसान स्थान में वायु का शब्द।
झार-(हिं०वि०) एकमात्र, सम्पूर्ण, सब, (स्त्री०) ईर्ष्या, डाह, लपट, चरपराहट।
झारन-(हिं०पुं०) देखो झाड़न।
झारना--(हिं०क्रि०) बालों में, कंघी करना, अलग करना।
झारी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की टोंटी लगी हुई लोटिया।
झारू-(हिं०पुं०) देखो झाड़ू।
झाल-(हिं०पुं०) झांझ, खाँचा, टोकरी, तरंग, लहर।
झालना-(हिं०क्रि०) धातु की वस्तुओं को टाँका लगाकर जोड़ना।
झालर-(हिं०स्त्री०) लटकता हुआ किनारा जो शोभा के लिये लगाया जाता है, किनारा, छोर। **झालरदार**-(हिं०वि०) जिसमें झालर लगी हो।
झाला-(हिं०पुं०) मकड़ी का जाला।
झाँवझाँव-(हिं०स्त्री०) कलह, बकवाद।
झिगरना-(हिं०क्रि०)झगड़ना।
झिझकना(हिं०क्रि०) देखो झझकाना।
झिझकार-(हिं०स्त्री०)देखो झझकार।
झिटकारना-(हिं०क्रि०) झटकना।
झिटका-(हिं०पुं०) देखो झटका।
झिड़कना-(हिं०क्रि०) अवज्ञा पूर्वक बिगड़कर कोई बात कहना, वस्तुको दूर फेंक देना।
झिड़की-(हिं०स्त्री०) डाँट फटकार।
झिड़झिड़ाना-(हिं०क्रि०)चिड़चिड़ाना।
झिपना-(हिं०क्रि०) लज्जित होना।
झिपाना-(हिं०क्रि०) लज्जित करना।
झिरकना-(हिं०क्रि०)डपटना,फेंक देना।
झिरझिर-(हिं०क्रि०वि०) धीरे, धीरे।
झिरझिरा-झिरझिर-(हिं०वि०) बहुत पतला,, झंझरा, झीना।
झिरना-(हिं०क्रि०) देखो झुरना; (पुं०) छिद्र, छेद। **झिराना**- (हिं० क्रि०) देखो झुराना।
झिरी-(हिं०स्त्री०) छोटा छेद,।
झिलंगा-(हिं०पुं०) टूटी हुई खटिया का बाध।
झिलना-(हिं०क्रि०) बलपूर्वक प्रवेश करना, सन्तुष्ट होना।
झिलमिल-(हिं०स्त्री०) प्रकाश की चंचलता, एक प्रकार का सुन्दर महीन वस्त्र; (वि०) रह रह कर चमकने वाला।
झिलमिला-(हिं०वि०) झंझरा, झीना, ठहर ठहर कर हिलता प्रकाश देने वाला। **झिलमिलाना**-(हिं०क्रि०) रह रह कर चमकना।
झिलमिली-(हिं०स्त्री०) अनेक पतली आड़ी पटरियों का ढाँचा जो किवाड़ों में प्रकाश धूल आदि रोकने के लिये जड़ा रहता है।
झिल्लिका, झिल्ली-(सं०स्त्री०) कीट विशेष, झींगुर।
झिल्ली-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु की पतली तह, महीन छाल।
झिल्लीक(सं०पुं०) झिल्ली, झींगुर।
झिल्लीदार-(ह०वि०) जिसकी ऊपरी तह बहुत पतली हो, जिसपर झिल्ली हो।
झींकना-(हिं०क्रि०) देखो झींखना।
झींका-(हिं०पुं०) अन्न का वह परिमाण जो पीसने के लिये चक्की में एक बार डाला जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झींखना-(हिं०क्रि०) दुखी होकर पछताना और चिढ़ना, (पुं०) दुखड़ा।
झींगट-(हिं०पुं०) कर्णधार, मल्लाह, केवट, एक प्रकार का धान का नाम।
झींगुर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो अंधेरे में रहता है, बरसात में झन्-झन् शब्द करता है, झिल्ली
झींसी-(हिं०स्त्री०) छोटी बूंदों की वर्षा, फुही।
झीना-(हिं०वि०) छिद्रयुक्त, झंझरा, धीमा, मन्द।
झील-(हिं०स्त्री०) चारो ओर भूमि से घिरा हुआ एक प्राकृतिक जलाशय, बहुत बड़ा तालाब।
झींवर-(हिं०पुं०) कर्णधार, माझी।
झुंझलाना-(हिं०क्रि०) चिड़चिड़ाना,
झुंगना-(हिं०पुं०) जुगनू।
झुंड-(हिं०पुं०) समुदाय, यूथ।
झुकझोरनी-(हिं०क्रि०) देखो झकझोरना।
झुकना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ के ऊपरी भाग का नीचे को लटकना, नवना, निहुरना।
झुकमुक-(हिं०पुं०) ऐसा अन्धकार जब कोई वस्तु स्पष्ट न देख पड़े।
झुकरना-(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना, खिजलाना, चिढ़ना; झुकराना-(हिं०क्रि०) झोंका देना; झुकवाई-(हिं०स्त्री०) झुकवाने की क्रिया; झुकवाना-(हिं०क्रि०) झुकाने का काम दूसरे से कराना; झुकाई-(हिं०स्त्री०) झुकान का काम या पारिश्रमिक; झुआना-(हिं० क्रि०) निहुराना।
झुकार-(हिं०पुं०) हवा का झोंका या झकोरा।
झुकाव-(हिं०पुं०) किसी ओर नवने या झुकनेकी क्रिया, झुकनेका भाव, प्रवृत्ति।
झुटपुटा-(हिं०पुं०) ऐसा समय जब थोड़ा अन्धकार और कुछ प्रकाश हो
झुटुंग-(हिं०वि०) जटावाला, झोंटेवाला
झुठकाना-(हिं०क्रि०) झूठी बात द्वारा दूसरे को धोखा देना।
झुठलाना, झुठवाना-(हिं०क्रि०) झूठा ठहराना, झूठा बनाना।
झुठाई-(हिं०स्त्री०) असत्यता, झूठापन
झुठाना-(हिं०क्रि०) झूठा ठहराना।
झुठलना-(हिं०क्रि०) देखो झुठलाना।
झुनक-(हिं०पुं०) पैंजनी का शब्द।
झुनकना-(हिं०क्रि०) झुनझुन बजना
झुनझुन-(हिं०पुं०) नूपुर आदि के बजने का शब्द।
झुनझुना-(ह०पुं०) छोटे लड़कों के खेलने का झुनझुन शब्द करने वाला खिलौना; झुनझुनाना-(हिं०क्रि०) झुनझुन शब्द होना या उत्पन्न करना;
झुनझुनी-(हिं०स्त्री०) शरीर के किसी अंग में उत्पन्न एक प्रकार की सनसनाहट।
झुप्पा-(हिं०पुं०) झब्बा, गुच्छा, झुण्ड।
झुमका-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कान में पहिरने का गहना, एक पौधा।
झुमाना-(हिं०क्रि०) झूमने में किसी को प्रवृत्त करना।
झुरझुरी-(हिं०स्त्री०) कम्प, कँपकपी।
झुरना-(हिं०क्रि०) सूखना, दुःखाकुल होना, दुबला होना, अधिक पछतावा करना।
झुरमुट-(हिं०पुं०) घनी झाड़ी, मनुष्यों का समूह।
झुरवाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को सुखाने का काम दूसरे से कराना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झुमाऊ-(हिं०वि०) झूमने वाला ।
झुरकुट-(हिं०वि०) कुम्हलाया हुआ।
झुरकुटिया-(हिं०वि०) दुबला, पतला।
झुरवन-(हिं०स्त्री०) किसी सूखे पदार्थ से निकला हुआ अंश ।
झुरसना-(हिं०क्रि०) देखो झुलसना ।
झुरहुरी-(हिं०स्त्री०) देखो झुरझरी ।
झुराना-(हिं०क्रि०) सुखाना, दुबला होना ।
झुरावन-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु को सुखाने के कारण उसमें से निकला हुआ अंश।
झुर्री-(हिं०स्त्री०) सिकुड़न ।
झुलना-(हिं०पुं०) स्त्रियों के पहिरने का ढीला कुरता, पालना, झूला, (वि०) झूलनेवाला ।
झुलनीबीर-(हिं०पुं०) धान की बाल।
झुलमुला-(हिं०वि०)देखो झिलमिल।
झुलवा-(हिं०पुं०)देखो झूला, पालना।
झुलवाना-(हिं०क्रि०) झुलाने का काम दूसरे से कराना ।
झुलसना-(हिं०क्रि०) झौंसना, अधिक उष्णता के कारण ऊपरी भाग सूखकर काला पड़ना।
झुलसवाना-(हिं०क्रि०) झुलसने का काम दूसरे से कराना; झुलसना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ के ऊपरी अंशको आधा जला देना; झुलना-(हिं०क्रि०) हिलाना, आसरे में रखना।
झूंकटी-(हिं०स्त्री०) छोटी झाड़ी ।
झूझना-(हिं०क्रि०) देखो जूझना।
झूट-(हिं०पुं०) देखो झूठ, असत्य ।
झूठ-(हिं०पुं०) जो बात यथार्थ न हो, असत्य बात।
झूठन-(हिं०स्त्री०) देखो जूठन ।
झूठमूठ-(हिं०क्रि०वि०) असत्य रूप में, व्यर्थ।
झूठा-(हिं०वि०)असत्य, मिथ्या, झूठ बोलने वाला, कृत्रिम, बनावटी, (वि०) देखो 'जूठा'; झूटों-(हिं० क्रि०वि०) नाम मात्र के लिये; वृथा।
झूम-(हिं०स्त्री०) झूमने की क्रिया, झपकी ।
झूमक-(हिं०पुं०) होली में गाई जाने की एक गीत जिसको स्त्रियां झूमझूम कर गाती हैं, गुच्छा ।
झूमका-(हिं० पुं०) देखो झुमका।
झूमड़-(हिं०पुं०) देखो झूमर; झूमड़-झामड़-(हिं०पुं०) निरर्थक प्रपंच ।
झूमना-(हिं० क्रि०) किसी वस्तु का इधर उधर हिलना या झोंके खाना।
झूमर-(हिं०पुं०) सिर में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण जिसमें घुंघरू या झब्बे लटकते रहते हैं,
झूर-(हिं०स्त्री०)जलन, दुःख, (वि०) शुष्क, सूखा ।
झूरना-(हिं०क्रि०) सूचना देना ।
झूरा-(हिं०वि०) शुष्क, सूखा (पुं०) सूखा स्थान, पानी न बरसना ।
झूर-(हिं०क्रि०वि०) निरर्थक, व्यर्थ,
झूल-(हिं०स्त्री०) चौपायों के पीठ पर डालने का चौकोर वस्त्र ।
झूलना-(हिं०क्रि०)इधर उधल हिलना, झूले पर बैठकर पेंग लगाना, अस्थिर रहना, आसरे में देरतक पड़े रहना, (वि०) झूलने वाला ।
झूला-(हिं०सं०) हिंडोला, एक प्रकार का पुल जो पुष्ट रस्सों जंजीरों या तारों का बना होता है ।
झेपना-(हिं०क्रि०) लज्जित होना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

झेरना-(हिं०क्रि०) आरंभ करना।
झेरा-(हिं०पुं०)प्रपंच, झंझट, बखेड़ा।
झेल-(हिं०स्त्री०) हलका धक्का, हलोरा
झेलना-(हिं०क्रि०) सहन करना, ऊपर लेना।
झोंक-(हिं०स्त्री०) प्रवृत्ति, झुकाव, प्रचंड गति, बोझ, भार, किसी कार्य में सजावट, ठाटबाट, पानी का हलरा,
झोंकना-(हिं०क्रि०) वेग से आगे की ओर बढ़ाना, बिना सोचे विचारे अधिक व्यय करना, अधिक कार्यभार किसी पर डालना, किसी को आपत्ति में डालना, ठेलना, ढकेलना,।
झोंकवा-(हिं०पुं०) भट्टी या भाड़ में इन्धन फेकने वाला। झोंकवाई-(हिं०स्त्री०) झोंकने की क्रिया या वेतन; झोंकवाना-(हिं०क्रि०) झोंकने का काम किसी से कराना।
झोंका-(हिं०पुं०) आघात, हवा का झकोरा, पानी का हिलोरा, झोंकाई-(हिं०स्त्री०) झोंकने की क्रिया या पारिश्रमिक; झोंकिया-(हिं०पुं०) भाड़ में पत्ते झोंकने वाला।
झोंझ-(हिं०पुं०) घोंसला,खोंता,पक्षियों के गले की लटकती हुई मांस की थैली।
झोंझल-(हिं०पुं.) क्रोध, रोष, कुढन, गुस्सा।
झोंपड़ा-(हिं०पुं०) पर्णशाला कुटी।
झोपा-(हिं०पुं०) झब्बा, गुच्छा।
झोंटिग-(हिं०वि०) जिसके माथे पर बड़े खड़े बाल हों।
झोंपड़ा, झोंपड़ी-देखो झोंपड़ा, झोंपड़ी
झोरई-(हिं०वि०)झोलदार (रसदार) तरकारी।
झोंरना-(हिं०क्रि०)झटका देकर कँपाना या हिलाना।
झोरा-(हिं०पुं०) झब्बा, गुच्छा।
झोंरी-(हिं०स्त्री०) झोली।
झोर, झोल-(हिं०पुं०) तरकारी आदि का गाढा रसा, (हिं०वि०) ढीला, निकम्मा; झोलदार-(हिं०वि०) रस भरा हुआ, ढीला ढाला।
झोलना-(हिं०क्रि०)जलाना,दाह करना।
झोला-(हिं०पुं०)कपड़े की बड़ी थैली।
झौंलना-(हिं०क्रि०) जलाना।
झौंझट-(हिं०पुं०) देखो झंझट।
झौंरना-(हिं०क्रि०) गूँजना, गूजरना।
झौंराना-(हिं०क्रि०)झूमना,इधर उधर हिलना।
झौंसना-(हिं०क्रि०)देखो झुलसना।
झौर-(हिं०पुं०)प्रपंच, वादा-विवाद।
झौरना-(हिं०क्रि०)छोप लेना, दबा लेना
झौरा-(हिं०पुं०) झंझट, बखेड़ा।
झौरे-(हिं०क्रि०वि०)संग,साथ, समीप
झौवा-(ह०पुं०)रहठे की बनी हुई दौरी
झौहाना-(हिं०क्रि०) कुढना, चिड़-चिड़ाना।

ञ

ञ-हिन्दी और संस्कृत व्यंजनवर्ण का दसवां अक्षर, चवर्ग का पाँचवाँ अक्षर इसका उच्चारण स्थान तालु और नासिका है, ञ(सं०पुं०)गाने वाला, घरघर शब्द, बैल।
ञकार-(सं०पुं०) 'ञ' स्वरूप वर्ण।

ट

ट-संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का ग्यारहवाँ व्यंजन, तथा टवर्ग का पहिला अक्षर, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

-(सं०नपुं०) नारियल का वृक्ष, (पुं०) वामन, चतुर्थांश।

टँकना-(हिं०क्रि०) जोड़ा जाना, सिला जाना, लिखा जाना, कुटना, रेता जाना

टँकाई-(हिं०स्त्री०) टाँकने की क्रिया या वेतन; **टंकाना**-(हिं०क्रि०) टोंकों से सिलाना, खुरखुर करना, मुद्रा की जाँच करना।

टंकार-(हिं०स्त्री०) ठनाका, झनकार।

टंकारना-(हिं०क्रि०) धनुष की डोरी तानकर ध्वनि उत्पन्न करना।

टंकी-(हिं०स्त्री०) पानी रखने का कुण्ड, टाँका।

टंकोरना-(हिं०क्रि०) धनुष की डोरी खींच कर ध्वनि उत्पन्न करना।

टँगड़ी-(हिं०स्त्री०) घुटने से लेकर एँड़ी तक का भाग, टांग।

टँगना-(हिं०क्रि०) लटकना, चढ़ना या लटकाना।

टँगरी-(हिं०स्त्री०) देखो टँगड़ी।

टँगारी (हिं०स्त्री०) छोटा टांगा।

टंच-(हिं०वि०) कृपण, कंजूस, निष्ठुर।

टँटघंट-(हिं०पुं०) मिथ्या आड़म्बर, झूठा प्रपंच, काठ कबार।

टंटा-(हिं०पुं०) प्रपञ्च, उपद्रव, लड़ाई झगड़ा।

टंडिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बांह में पहिरने का आभूषण।

टई-(हिं०स्त्री०) युक्ति।

टक-(हिं०स्त्री०) स्थिर दृष्टि; **टकटका**-(हिं०पुं०) स्थिर दृष्टि, टकटकी। **टकटकाना**-(हिं०क्रि०) टकटक शब्द करना। **टकटकी**-(हिं०स्त्री०) स्थिर दृष्टि,।

टकटोना, टकटोरना, टकटोलना-(हिं०स्त्री०) टटोलना, ढूंढ़ना।

टोकटोहन-(हिं०पुं०) छूकर या टटोल कर देखनेकी क्रिया। **टकटोहना**-(हिं०क्रि०) टटोलना।

टकराना-(हिं०क्रि०) वेगसे ठोकर लगना, भिड़ना, धक्का खाना।

टकसाल-(र)-(हिं०स्त्री०) टंकशाला, मुद्रा ढालने का कार्यालय। **टकसाली**-(हिं०वि०) खरा, चोखा, जंचा हुआ, परीक्षित, प्रामाणिक।

टकाटकी-(हिं०स्त्री०) देखो टकटकी।

टकातोप-(हिं०स्त्री०) जहाज पर लगाने की तोप।

टकार-(सं०पुं०) 'ट' अक्षर का स्वरूप

टकासी-(हिं०स्त्री०) दो पैसे प्रति रूपये का ब्याज।

टकुआ-(हिं०पुं०) तकली जिसपर सूत काता और लपेटा जाता है।

टकुली-(हिं०स्त्री०) पत्थर काटने की टाँकी।

टकैत-(हिं०वि०) जिसके पास धन हो।

टकोर-(हिं०स्त्री०) आघात, ठेस, शब्द, धनुष की टंकार, तीक्ष्णता, चरपराहट। **टकोरना**-(हिं०क्रि०) ठोंकर लगाना।

टकोरा-(हिं०पुं०) डंके की चोट।

टकोरी-(हिं०स्त्री०) आघात, टक्कर।

टकौरी-(हिं०स्त्री०) वह छोटा तराजू (कांटा) जिससे सोना चांदी तौला जाता है।

टक्कर-(हिं०स्त्री०) ठोकर, भिड़न्त, क्षति, हानि।

टखना-(हिं०पुं०) एँड़ी के ऊपर निकली हुई हड्डी, पैर का गट्टा।

टगर-(सं०पुं०) टंकण, क्षार, सोहागा, विलास; (वि०) ऐंचा, भेंगा।

टगरा-(हिं०वि०) भेंगा, ऐंचाताना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टघरना-(हिं०क्रि०) द्रवित होना, पिघलना। **टघराना**-(हिं०क्रि०) पिघलाना।

टङ्क-(सं०पुं०) क्रोध, तलवार, टांकी जंघा, एक तोले चार माशे का परिमाण पत्थर का टुकड़ा।

टङ्कक-(सं०पुं०) चांदी की मुद्रा, रुपया

टङ्कण-(सं०पुं०) सोहागा।

टङ्कपति-(सं०पुं०) टकसाल का अधिकारी। **टङ्कशाला**-(सं० स्त्री०) टकसाल।

टङ्कार-(सं०पुं०) विस्मय, झनकार, ठनाके का शब्द।

टङ्किका-(सं०स्त्री०) टाँकी, छेनी।

टङ्कित-(सं०वि०) सिला हुआ,।

टचटच-(हिं०क्रि०वि०) धाँय-धाँय, धकधक।

टटका-(हिं०वि०) नया, कोरा, तुरत का तैयार किया हुआ।

टटिया (हिं०स्त्री०) देखो टट्टी।

टटियाना-(हिं०क्रि०) सूख कर कड़ा हो जाना।

टटुआ-(हिं०पुं०) देखो टट्टू।

टटुई-(हिं०स्त्री०) छोटी जात की घोड़ी।

टटोना, टटोरना-(हिं० क्रि०) देखो टटोलना।

टटोल-(हिं०स्त्री०) टटोलने का भाव, जाँच करना, परखना।

टट्टर-(हिं० पुं०) बाँस की पट्टियों का बना हुआ ढाँचा।

टट्टा-(हिं०पुं०) देखो टट्टर। **टट्टी**-(हिं० स्त्री०) देखो टट्टर, चिक, परदा।

टट्टू-(हिं०पुं०) छोटे आकार का घोड़ा टाँगन।

टठिया-(हिं०स्त्री०) देखो टाटी।

टड़िया-(हिं०स्त्री०) बांह में पहिरने का स्त्रियों का एक गहना।

टन-(हिं०स्त्री०) झनकार, टनकार।

टनकना-(हिं०क्रि०) टनटन बजाना, गरमी से मस्तक में पीड़ा होना।

टनटन-(हिं०स्त्री०) घंटा बजने का शब्द।

टनमन-(हिं०पुं०) तन्त्र मन्त्र।

टनमना-(हिं०वि०) स्वस्थ, चंगा,

टनाका-(हिं०पुं०) घंटा बजने का शब्द; (वि०) कड़ी धूप।

टनाटन-(हिं०स्त्री०) निरन्तर घंटा बजने का शब्द।

टप-(हिं०स्त्री०) ओहार, कलंदरा; (पुं०) कान में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण, ढिबरी की पेंच बनाने का यन्त्र।

टपक-(हिं०स्त्री०) बूंद बूंद करके गिरने का शब्द, रह रह कर होने वाली पीड़ा। **टपकना**-(हिं० क्रि०) रसकर बहना, चूना, टीस मारना, चिलकना, युद्ध में घायल हो कर गिर पड़ना। **टपका**-(हिं०पुं०) बूँद बूँद कर गिरने का भाव, पीड़ा, पक कर आप से आप गिरा हुआ फल, टपकी हुई वस्तु, रसाव।

टपकाटपकी-(हिं०स्त्री०) वर्षा की बूँदा बूँदी।

टपना-(हिं० क्रि०) निराहार रहना, व्यर्थ किसी के आसरे बैठे रहना।

टपाटप-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्रता से, झटपट।

टपाना-(हिं०क्रि०) निराहार पड़े रहने देना, निष्प्रयोजन आसरे में रखना।

टप्पर-(हिं० पुं०) छाजन, छप्पर।

टप्पा-(हिं०पुं०) दो स्थानों के बीच की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विस्तृत भूमि, भूमि का छोटा भाग, अन्तर, दूर दूर की सिलाई, बीच बीच में का टिकाव।

टमाटर-(हिं० पुं०) एक प्रकार का विलायती बैंगन जो खट्टा होता है।

टर-(हिं०पुं०) कर्कश, शब्द, अहंकार युक्त वचन, हठ, ऐंठन।

टरकना-(हिं०क्रि०) चले जाना, हट जाना।

टरकाना-(हिं०क्रि०) हटाना।

टरकुल-(हिं०वि०) सामान्य।

टरटराना-(हिं०क्रि०) बकबक करना।

टरटर करना; टरना-(हिं० क्रि०) देखो टलना।

टर्रा-(हिं०वि०) धृष्टता से बोलनेवाला।

टर्राना-(हिं०क्रि०) कठोर वचन बोलना।

टलना-(हिं०क्रि०) हटना, अनुपस्थित होना, दूर होना, समय बढ़ना, समय बीतना, अन्यथा होना।

टलहा(हिं०वि०) खोंटा (सिक्का इ०)

टवर्ग(सं०पुं०) ट, ठ, ड, ढ, ण, इन पांचवर्गों का समूह।

टसक(हिं०स्त्री०) ठहर ठहर कर होने वाली पीड़ा, टीस, चमक, पीड़ा।

टसकना-(हिं० क्रि०) हटना, टीस मारना, । **टसकाना**(हिं०क्रि०) खिसकाना।

टसर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा रेशम।

टसुआ-(हिं०पुं०) अश्रु, आँसू।

टहकना-(हिं०क्रि०) ठहर ठहर कर पीड़ा होना।

टहना-(हिं०पुं०) वृक्ष की शाखा, डाल।

टहनी-(हिं०स्त्री०) वृक्षकी पतली डाली।

टहल-(हिं०स्त्री०) सेवा, सुश्रूषा, चाकरी

टहलना-(हिं०क्रि०) धीरे धीरे चलना।

टहलनी-(हिं०क्रि०) दासी, नौकरनी।

टहलाना-(हिं०क्रि०) धीरे धीरे चलाना

टहलुआ--(हिं०पुं०) सेवक, चाकर।

टहलुई-(हिं०स्त्री०) दासी, लौंडी।

टहलू-(हिं०पुं०) नौकर, सेवक।

टही-(हिं०स्त्री०) प्रयोजन सिद्ध करने की युक्ति।

टहूका-(हिं०पुं०) पहेली, चुटकुला।

टहोका-(हिं०पुं०) धक्का, झटका।

टाँक-(हिं०स्त्री०) चार माशे की तौल लिखावट, लेखनी की नोक, जाँच।

टाँकना-(हिं० क्रि०) सिलाई करके जोड़ना, याद करने के लिये लिख लेना, चट कर जाना, उड़ जाना।

टका-(हिं०पुं०) जोड़ मिलाने का काँटा या कील, सिलाई का अलग अलग भाग, डोभ, वह मसाला जिससे धातु जोड़ा जाता हैं, पानी रखने का खुले मुंह का बड़ा पात्र,।

टाँकाटक-(हिं०वि०) जो तौलने में ठीक ठीक हो।

टाँकी-(हिं०स्त्री०) पत्थर गढ़नेकी छेनी

टाँग-(हिं०स्त्री०) जांघ से लेकर एँड़ी तक का अंग।

टाँगन-(हिं०पुं०) छोटा घोड़ा, टट्टू।

टाँगना-(हिं०क्रि०) लटकाना, फाँसी देना।

टाँगा-(हिं०पुं०) बड़ी कुल्हाड़ी, बैल या घोड़े से खींची जानेवाली एक प्रकार की दो पहिया वाली गाड़ी।

टाँगी-(हिं०स्त्री०) छोटा गंणासा, कुल्हाड़ी।

टाँच-(हिं०स्त्री०) दूसरे का काम बिगड़ने की बात। **टाँचना**-(हिं०क्रि०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टांकना, सीना, काटना, छांटना।
टाँठ, टाँठा-(हिं०वि०) हृष्ट पुष्ट।
टाँड़-(हिं०स्त्री०) सामग्री रखने की पाटन, स्त्रियों का बांह में पहिरने का एक आभूषण, ढेर, राशि।
टाँय-टाँय-(हिं०स्त्री०) अप्रिय शब्द, टें टें।
टाट-(हिं०पुं०) सन या पटुवे का बना हुआ मोटा कपड़ा, बिरादरी, साहूकार के बैठने की गद्दी।
टाटिक, टाटी-(हिं०स्त्री०) देखो टट्टी।
टान-(हिं०स्त्री०) फैलाव, तनाव।
तानना-(हिं०क्रि०) खींचना, तानना।
टाप-(हिं०पुं०) घोड़े के पैर का निचला भाग, वह शब्द जो चलते समय घोड़े के पैर से उत्पन्न होता है।
टापड़-(हिं०पुं०) ऊसर मैदान।
टापदार-(हिं०वि०) जिसका ऊपरी या नीचे का भाग फैला हुआ हो, निराहार पड़े रहना, पछताना।
टापा-(हिं०पुं०) टप्पा, उजाड़ मैदान।
टापू-(हिं०पुं०) वह भूमिखण्ड जो चारो ओर से पानी से घिरा हो, द्वीप।
टाबर-(हिं.पुं०) लड़का, बालक, छोकरा।
टामक-(हिं०पुं०) डिमडिम, डुगडुगी।
टाल-(हिं०स्त्री०) बड़ी राशि, ऊंचा ढेर, कुटना, दलाल। **टालटूल**-(हिं० स्त्री०) देखो टालमटूल।
टालना-(हिं०क्रि०) न मानना, समय व्यतीत करना, तरह देना, बचा जाना, हटाना, सरकाना, दूर करना, मिटाना,
टालमटूल-(हिं०पुं०) मिस, बहाना।
टाली-(हिं०स्त्री०) आधे रुपयेका सिक्का, अठन्नी।
टिकटिक-(हिं०स्त्री०) घोड़ा हाँकते समय मुख से किया हुआ शब्द, घड़ी के चलने से उत्पन्न शब्द।
टिकटी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का बना हुआ ढाँचा जिसमें बाँधकर अपराधी को बेंत लगाई जाती है, अथवा गले में फाँसी का फन्दा बाँधा जाता है।
टिकड़ा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का गोल चिपटा टुकड़ा, आँच पर सेंकी हुई मोटी रोटी, बाटी। **टिकड़ा**-(हिं० स्त्री०) छोटा गोल टुकड़ा।
टिकना-(हिं०क्रि०) डेरा देना।
टिकरी-(हिं०स्त्री०) टिकिया, एक प्रकार का नमकीन पकवान। **टिकली**- (हिं० स्त्री०) छोटी टिकिया, छोटी बिन्दी,
टिकस-(हिं०पुं०) कर, महसूल।
टिकाई-(हिं०स्त्री०) टिकने का भाव।
टिकाउ-(हिं०वि०) टिकने वाला।
टिकान-(हिं०पुं०) टिकने का स्थान, चट्टी, पड़ाव, **टिकाना**-(हिं०क्रि०) रहने के लिये स्थान देना,। **टिकानी**-(हिं०स्त्री०) टिकाव। **टिकाव**-(हिं० पुं०) पड़ाव।
टिकिया-(हिं०स्त्री०) छोटा गोल टुकड़ा, एक प्रकार की गोल चिपटी मिठाई।
टिकुली-(हिं०स्त्री०) देखो टिकली।
टिक्कड़-(हिं०पुं०) मोटी रोटी, लिट्टी
टिक्का-(हिं०पुं०) देखो टीका।
टिक्की-(हिं०स्त्री०) टिकिया, लिट्टी, बाटी, बिंदी, ताश की बूटी,
टिखटिख-(हिं०स्त्री०) देखो टिकटिक।
टिघलना-(हिं०क्रि०) गलना, पिघलना लाना।
टिचन-(हिं०वि०) प्रस्तुत, उद्यत।
टिटकारना-(हिं०क्रि०) टिकटिक करके किसी पशु को हाँकना।
टिड्डी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा जो दल बाँधकर चलता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, पेड़ पत्ती को खाता और कृषि को हानि पहुँचाता है।

टिढबिडंगा-टिझबिंगा-(हिं०वि०) टेढा मेढ़ा।

टिपका-(हिं०पुं०) पानी का बूंद।

टिपटिप-(हिं०स्त्री०) बूंद बूंद कर पानी गिरने का शब्द।

टिपवाना-(हिं०क्रि०) पिटवाना।

टिपुर-(हिं०पुं०) अभिमान, घमंड,

टिप्पणी-(हिं०स्त्री०) देखो टिप्पनी।

टिप्पन-(सं०पुं०) टीका, व्याख्या।

टिप्पनी-(सं०स्त्री०) व्याख्या, टीका।

टप्पी-(हिं०स्त्री०) वह चिह्न जो अंगुली में रंग पोत कर बनाया जाता है,

टिमटिमाना-(हिं०क्रि०) कम प्रकाश देना, मन्द मन्द जलना।

टिर-(हिं०स्त्री०) देखो टर।

टिरफिस-(हिं०स्त्री०) प्रतिवाद, विरोध

टिर्राना-(हिं०क्रि०) देखो टर्राना।

टिल्ला-(हिं०पुं०) धक्का, ठोकर, चोट

टिसुआ-(हिं०पुं०) अश्रु, आँसू।

टिहुक-(हिं०स्त्री०) चमक।

टिहुकना-(हिं०क्रि०) ठिठकना, चौंकना।

टिहुनी-(हिं०स्त्री०) घुठना, कोहनी।

टीक-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के गले में पहिरने का एक आभूषण।

टीक्का-(हिं०पुं०) टांड़, खंभा।

टीका-(सं०स्त्री०) व्याख्या ग्रन्थ।

टीका-(हिं०पुं०) तिलक, आधिपत्य का चिह्न, वह भेंट जो असामी राजा के देता है, धब्बा, चिह्न, किसी रोग से बचने के लिये उसी रोग का रस लेकर शरीर में सूई से प्रवेश करना, विवाह संबंध स्थिर करने के लिये वर के मस्तक पर तिलक लगाने तथा कुछ धन आदि देने की प्रथा।

टीकाकार-(सं०पुं०) व्याख्याकार,

टीप-(हिं०स्त्री०) हलका प्रहार, स्मरण रखनेके लिये किसी बात को टांकलेने की क्रिया। **टीपटाप-**(हिं०स्त्री०) आड़ंबर, ठाटबाट। **टीपना-**(हिं०क्रि०) अंकित करना, ऊंचे स्वर से गाना; प्रहार करना।

टीमटाम-(हिं०स्त्री०) शृंगार, सजावट, तड़क भड़क, पाखण्ड।

टीला-(हिं०पुं०) पृथ्वी का तल से ऊंचा भाग, भीटा, छोटी पहाड़ी।

टीस-(हिं०स्त्री०) ठहर ठहर कर होने वाली शरीर की पीड़ा, चमक;

टीसना-(हिं०क्रि०) ठहर ठहर कर पीड़ा होना।

टुँगना-(हिं०क्रि०) कोमल पत्तियों को दाँत से कुतरकर खाना, कुतरना।

टुंच-(हिं०वि०) क्षुद्र, नीच, तुच्छ।

टुंटा-(हिं०वि०) बिना हाथ वाला, लूला

टुंड-(हिं०पुं०) वह वृक्ष जिसकी शाखा कट गई हो, ठूंठ, लूला।

टुंडा-(हिं०वि०) ठूंठा, लूला, लूजा।

टुंडी-(हिं०स्त्री०) बाहुदण्ड, भुजा।

टुंइयाँ-(हिं०स्त्री०) छोटे जात का सुग्गा, सुग्गी; (वि०) नाटा, बौना।

टुक-(हिं०वि०) किञ्चित्, तनिक, थोड़ा

टुकड़गदा-(हिं०पुं०) भिखारी; (वि०) निर्धन, कंगाल।

टुकड़तोड़-(हिं०पुं०) पराश्रित मनुष्य,

टुकड़ा-(हिं०पुं०) काटा हुआ अंश, खण्ड, भाग, ग्रास।

टुघलाना-(हिं०क्रि०) चुभलाना।

टुच्चा-(हिं०वि०) तुच्छ, नीच, ओछा।

टुटका-(हिं०पुं०) देखो टोटका।

टुटपुंजिया-(हिं०वि०) थोड़ी पुंजी का

टुड़ी-(हिं०स्त्री०) नाभि, ढोंढी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टुनगा-(हिं० पुं०) डाल का आगे का भाग; टुनगी-(हिं०स्त्री०) टहनी का अगला भाग जिसकी पत्तियाँ छोटी होती हैं।

टुनहाया-(हिं० वि०) जादू टोना करनेवाला।

टुन्ना-(हिं० पुं०) वृक्ष की वह डाल जिसमें फल लगता है।

टुपकना-(हिं०क्रि०) धीरे से काटना या डंक मारना, चुगली खाना।

टुरी-(हिं०पुं०) कण, टुकड़ा।

टुसकना-(हिं०क्रि०) देखो टसकना।

टूंगना-(हिं०क्रि०) थोड़ा थोड़ा करके खाना।

टूंड-(हिं०पुं०)नुकीला अवयव, सींग।

टूंड़ी-(हिं०स्त्री०) नाभि, ढोंढी, नोक।

टूक-(हिं०पुं०)टुकड़ा, खण्ड।

टूकरा-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा।

टूका-(हिं०स्त्री०)खण्ड, टुकड़ा, भूल,

टूट-(हिं० पुं०) घाटा, टोटा; टूटना-(हिं० क्रि०) टुकड़े टुकड़े होना, आक्रमण करना, अलग होना, टोटा होना।

टूटा-(हिं०वि०)खण्डित, भग्न, निर्धन।

टूठना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना।

टूठनि-(हिं०स्त्री०) सन्तोष, तुष्टि।

टूम-(हिं० स्त्री०) आभूषण, गहना, व्यंग, ताना, टूमटाम-वस्त्र तथा गहना

टूमना-(हिं०क्रि०) ताना मारना।

टूसा-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा, कली।

टूसी-(हिं०स्त्री०) फूल की कली।

टें-(हिं०स्त्री०) सुग्गे की बोली; टेंटें करना-वृथा की बकवाद करना; टें बोलना-मर जाना।

टेंघुना-(हिं०पुं०) घुटना। टेंघुनी-(हिं०स्त्री०) घुटने पर की चक्की।

टेंट-(हिं०स्त्री०) कमर पर लपेटी हुई धोती की ऐंठन, कपास की ढोढ़ी।

टेंटड़, टेंटर-(हिं०पुं०) आँख के ढेले का उभड़ा हुआ भाग।

टेंटुआ-(हिं०पुं०) गला, घेंटू।

टेंटें-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ की बकवाद।

टेउकी-(हिं०स्त्री०) आड़, रोक, ओट।

टेक-(हिं०स्त्री०) खंभा, आश्रय, सहारा थूनी, चांड़, हठ, अभ्यास, ऊंचा टीला।

टेकन-(हिं०पुं०) अटक, रोक, चांड़।

टेकना-(हिं०क्रि०) सहारा लेना।

टेकान-(हिं०पुं०) टेक, चाड़, खंभा,

टेंकाना-(हिं० क्रि०) सहारा देने के लिये थांमना। टेकानी-(हिं० पुं०) वह लोहे की कील जो पहिये को रोकने के लिये लगाई रहती है।

टेकी-(हिं० पुं०) अपनी प्रतिज्ञा पर स्थिर रहने वाला मनुष्य; (वि०) हठी।

टेकुआ-(हिं०पुह०) कते हुए सूत को लपेटने का चरखे की तकली।

टेकुरी-(हिं०स्त्री०) सूत कातने की तकली।

टेघरना-(हिं०क्रि०) पिघलना, गलना।

टेड़-(हिं०पुं०)वक्रता, टेढ़ापन, ऐंठन।

टेढ़ बिड़ंगा-(हिं०वि०) टेढ़ा मेढ़ा।

टेढ़ा-(हिं०वि०) वक्र, कुटिल, तिरछा, पेचीला, कठिन; टेढ़ी खीर-कठिन कार्य।

टेड़ई, टेढ़ाई-(हिं०स्त्री०) टेढ़ापन

टेढ़ा-(हिं०क्रि०वि०) पेचीली तरह से

टेना-(हिं०क्रि०) शस्त्र को पैना करने के लिये पत्थर आदि पर रगड़ना, मूँछ के बालों को खड़ा करने के लिये ऐंठना।

टेनी-(हिं०स्त्री०) छोटी अंगुली।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टेम-(हिं०स्त्री०)दीपक की ज्योति, लौ
टेर-(हिं०स्त्री०) गाने में ऊँचा स्वर, तान, पुकारने का शब्द, बुलाहट।
टेरना-(हिं०क्रि०) तान लगाना, पूरा करना, निवाहना।
टेव-(हिं०स्त्री०) अभ्यास, बान।
टेवना-(हिं०क्रि०) देखो टेंना।
टेवा-(हिं०पुं०) वह लग्नपत्र जिसमें जिसमें विवाह की मिति, दिन घटी पल आदि लिखी रहती है।
टेसू-(हिं०पुं०) पलाश का फूल,
टोई-(हिं०स्त्री०) अंगुली का पोर।
टोंका-(हिं०पुं०) किनारा, नोक।
टोंगा-(हिं०पुं०) देखो टांगा।
टोंचना-(हिं०क्रि०) चुभाना, गड़ाना।
टोंटी-(हिं०स्त्री०) झारी मे लगी हुई नली, पशुओं का थूथुन।
टोक-(हिं०स्त्री०) प्रश्न करके किसी बात में बाधा डालना, बुरी दृष्टिका प्रभाव; टोकटाक-पूछताछ करके बाधा डालना; टोकना-(हिं० क्रि०) बीच में बोल उठना, बुरी दृष्टि डालना,
टोकना-(हिं०पुं०)खांचा,झावा,डला।
टोकरी-(हिं०स्त्री०)छोटा डला, झांपी।
टोकारा-(हिं०पु०)स्मरण दिलाने के लिये कही हुई कोई बात।
टोटका-(हिं० पुं०) तान्त्रिक प्रयोग, मन्त्र, टोना, लटका।
टोटा-(हिं०पुं०) बाँस का खण्ड घाटा हानि।
टोनहा-(हिं०वि०)जादू टोना करने वाला
टोनहाई-(हिं०स्त्री०)जादू टोना करने वाली स्त्री; टोना-(हिं० पुं०) मन्त्र तन्त्र का प्रयोग, (क्रि०) छूना, हाथ से टटोलना।
टोप-(हिं०पुं०) बड़ी टोपी।
टोपन-(हिं०पुं०) टोकरा, खांचा।
टोपा-(हिं०पुं०) बड़ी टोपी जो कान तक ढाँपने के लिये पहिरी जाती है, टोकरा।
टोपी-(हिं०स्त्री०)शिर पर का पहरावा
टोभ-(हिं०पुं०) टाँका।
टोरना-(हिं०क्रि०) अलगाना, तोड़ना, आँख टोरना-लज्जावश आँख छिपा लेना।
टोरा-(हिं०पुं०) तौलने का तराजू।
टोरी-(हिं०पुं०) छिलका सहित अरहर का खड़ा दाना जो दाल में रह जाता है।
टोरू-(हिं०पुं०) देखो टोरी।
टोल-(हिं० स्त्री०) समूह, मण्डली, जत्था, झुंड, चटसाल।
टोला-(हिं०पुं०) महल्ला,। टोलिया-(हिं०स्त्री०) छोटा मोहल्ला, टोली।
टोली-(हिं०स्त्री०) बस्ती का छोटा भाग, समूह, झुंड, मंडली, जत्था।
टोवना-(हिं०क्रि०) टोना, टटोलना।
टोवा-(हिं०पुं०) पानी की गहराई नापने वाला माँझी।
टोह-(हिं०स्त्री०)अन्वेषण, खोज, ढूँढ, टोहना-(हिं० क्रि०) खोजना, पता लगाना। टोहाटाई--(हिं०स्त्री०) अन्वेषण, छानबीन। टोहिया-(हिं० पुं०) भेदिया, जासूस।
टौरना-(हिं०क्रि०) पता लगाना।

ठ

ठ-संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का तेरहवां अक्षर, टवर्ग का द्वितीय वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।
ठ-(सं०पुं०) शिव, चन्द्रमण्डल, शून्य,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठंठ-(हिं०वि०) ठूंठा, सूखा, परिवार-शून्य।
ठंठनाना-(हिं०क्रि०) ठनठन शब्द होना या करना।
ठंठार-(हिं०वि०) रिक्त, छूंछा, खाली।
ठंठी-(हिं०स्त्री०) दाना पीटने के बाद बालों में लगा हुआ अनाज।
ठंठपाल-(हिं०वि०) निर्धन, धनहीन।
ठंड,ठंडक-(हिं०स्त्री०) देखो ठंढ, ठंढक।
ठंडा-(हिं०वि०) देखो ठंढा।
ठंढ-(हिं०स्त्री०) शीत, जाड़ा, ठंढक; ठंढई-(हिं०स्त्री०) शरीर में ठंढक पहुँचाने वाले पदार्थ, भांग। ठंढक-(हिं०स्त्री०) जाड़ा, तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता,। ठंढा-(हिं०वि०) शीतल, उत्साहहीन, नपुंसक,मन्द, उदासीन, धीमा, निश्चेष्ट, जड़, मरा हुआ
ठंढाई-(हिं०स्त्री०) देखो ठंढई।
ठंढी-(हिं०वि०) शीतल (स्त्री०) शीतला रोग, चेचक।
ठई-(हिं०वि०) स्थिर की हुई,ठहराई हुई।
ठक-(हिं०स्त्री०) दो वस्तुओं के परस्पर टकराने का शब्द, (वि०) स्तब्ध, ठकठक-(हिं०स्त्री०) प्रपंच, झंझट, झगड़ा। ठकठकाना-(हिं०क्रि०) ठोंकना, पीटना, खटखटाना।
ठकठकिया-(हिं०वि०) बखेड़िया, झगड़ालू।
ठकार-(सं०पुं०) "ठ" स्वरूप वर्ण।
ठकुरसुहाती-(हिं०स्त्री०) चाटूक्ति।
ठकुराइन-(हिं०स्त्री०) ठाकुर की स्त्री, स्वामिनी, मालकिन। ठकुराई-(हिं० स्त्री०) आधिपत्य, महत्व, श्रेष्ठता,
ठकुरानी-(हिं०स्त्री०) ठाकुर की स्त्री, सरदारिन, रानी, स्वामिनी।
ठकोरी-(हिं०स्त्री०) साधुओं की कमर टेकने की T के आकार की लकड़ी,
ठक्कर-(हिं०स्त्री०) टक्कर।
ठग-(हिं०पुं०) डाकू, छली, चंचल; ठगई-(हिं० स्त्री०) ठगों का कार्य, छल, धूर्तता।
ठगना-(हिं०क्रि०) धूर्तता करना, छलना,धोखा देना; ठगासा-भौंचक्का, ठगनी-(हिं०स्त्री०) ठग की स्त्री, धूर्त स्त्री। ठगपन, ठगपना (हिं०पुं) कपट, छल, धूर्तता। ठगमूरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की विषैली जड़ी बूटी जिसको खिलाकर ठग लोग पथिकों को अचेत करके लूटते थे; ठगाना-(हिं०क्रि०) धोखे में आजाना; ठगा जाना। ठगिन, ठगिनी-(हिं०-स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरे को धोखा देकर उसका धन लूटती है, लुटेरिन।
ठगिया-(हिं०पुं०) धूर्त, छली, वंचक।
ठगी-(हिं०स्त्री०) ठग का काम, धूर्तता।
ठगोरी-(हिं०स्त्री०) जादू टोना।
ठट-(हिं०पुं०) भीड़, झुंड, समूह, पंक्ति; ठटकीला-ठाठदार, तड़क भड़क वाला।
ठटना-(हिं०क्रि०) स्थिर करना, ठहराना, सुसज्जित करना।
ठटनि-(हिं०स्त्री०) आडंबर, सजावट।
ठटरी-(हिं०स्त्री०) अस्थिपंजर, किसी वस्तु का ढाँचा,।
ठटु-(हिं०पुं०) ठाटबाट,सजावट, शृंगार
ठट्ट-(हिं०पुं०) समुदाय, समूह, झुंड।
ठट्ठई-(हिं०स्त्री०) हँसी, उपहास।
ठट्ठा-(हिं०पुं०) उपहास।
ठठ-(हिं०पुं०) झुंड, जमावड़ा, समूह।
ठठई-(हिं०स्त्री०) उपहास।
ठठक-(हिं०स्त्री०) अवरोध, रुकावट,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठठकना-(हिं०क्रि०) सहसा रुकना या भौंचक रह जाना। **ठठकान**-(हिं० स्त्री०) रुकावट।
ठठरी-(हिं०स्त्री०) देखो ठटरी।
ठठरा-(हिं०पुं०) टट्टर, ओट।
ठठाई-(हिं०स्त्री०) मारपीट, ठोकाई।
ठठाना-(हिं०क्रि०) पीटना, ठोंकना,
ठठिरिन-(हिं०स्त्री०) देखो ठठेरिन,
ठठेरा-(हिं०पुं०) कसेरा।
ठठेरिन-(हिं०स्त्री०) ठठेरे की स्त्री।
ठठेरी-(हिं०पुं०) ठठेरे का काम।
ठठोल-(हिं०पुं०) हँसी, उपहास।
ठठोलिया-(हिं०पुं०) ठट्ठेबाज।
ठड़कना-(हिं०क्रि०) ठठकना।
ठड़ा-(हिं०वि०) खड़ा हुआ।
ठढा-(हिं०वि०) लंबमान, खड़ा हुआ,
ठढिया-(हिं०स्त्री०) काठ की ऊँची ओखरी जिसमें धान खड़े होकर कूटा जाता है। **ठढियाना**- (हिं०क्रि०) खड़ा होना।
ठन-(हिं०स्त्री०) धातु के किसी पदार्थ पर आघात का शब्द। **ठनक**-(हिं० स्त्री०) ढोल मृदंग आदि की ध्वनि, ठहर ठहरकर पीड़ा, टीस; **ठनकना**-(हिं०क्रि०) ठनठन शब्द होना, टीसना; । **ठनका**-(हिं०पुं०) धातुके टुकड़े पर चोट पड़ने का शब्द, आघात।
ठनकाना-(हिं०क्रि०) शब्द उत्पन्न करना, बजाना, रुपये को बजाकर परख करना। **ठनकार**-(हिं०पुं०) ध्वनि, शब्द।
ठनगन-(हिं०पुं०) अड़, हठ, मचलाहट।
ठनठन-(हिं०पुं०) धातु खण्ड के बजने का शब्द। **ठनठन गोपाल**-(हिं०पुं०) निर्धन मनुष्य, । **ठनठनाना**-(हिं०-क्रि०) ठनठन शब्द निकालना, ठनठन शब्द होना।
ठनना-(हिं०क्रि०) दृढ़ संकल्प से किसी कार्य को आरम्भ करना, पक्का होना उद्यत होना, लगना, निश्चित होना।
ठनाका-(हिं०पुं०) ठनकार, । **ठना**-**ठन**-(हिं०क्रि०वि०) ठनठन शब्द करते हुए।
ठपका-(हिं०पुं०) ठोकर, आघात, धक्का
ठपना-(हिं०क्रि०) प्रयुक्त करना, लगाना लगना, निश्चित करना, पक्का करना।
ठप्पा-(हिं०पुं०) साँचा, छापा।
ठमक-(हिं०स्त्री०) रुकावट, ठहराव, लचक की चाल। **ठमकना**-(हिं०-क्रि०) रुकना, ठहरना, ठिठकना। **ठमकाना, ठमकारना**-(हिं० क्रि०) ठहराना, रोंकना।
ठयना-(हिं०क्रि०) स्थिर करना, ठानना, स्थापित करना, नियुक्त करना, जमना, लगना।
ठरन-(हिं०स्त्री०) ठिठुरन, अधिक जाड़ा; **ठरना**-(हिं०क्रि०) ठिठुरना, अधिक ठंढ पड़ना।
ठरमराना-(हिं०क्रि०) ठंढ से सिकुड़जाना
ठर्रा-(हिं०पुं०) बटा हुआ मोटा सूत, अधपकी ईंट।
ठवना-(हिं०क्रि०) गिराना।
ठवनी-(हिं०स्त्री०) बैठने का ढंग, मुद्रा, स्थिति।
ठवर-(हिं०पुं०) ठौर, स्थान, जगह।
ठस-(हिं०वि०) कड़ा, ठोस, दृढ़, सुस्त, मट्ठर, कृपण, खोटा (रुपया)।
ठसक-(हिं०स्त्री०) गर्व, अहंकार, ऐंठन।
ठसकना-(हिं०क्रि०) टूटना, पटकना।
ठसका-(हिं०पुं०) सूखी खांसी, धक्का, ठोकर।
ठसनी-(हिं०स्त्री०) ठूसने का गज या छड़

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठसमस, ठसाठस-(हिं०वि०) ठूंस कर भरा हुआ।
ठस्सा-(हिं०पुं०) ठसक, अहंकार।
ठहक-(हिं०स्त्री०) नगाड़ेकी ध्वनि।
ठहना-(हिं०क्रि०)संवारना, बनाना।
ठहर-(हिं०पुं०) ठौर, थान।
ठहरना-(हिं०क्रि०) रुकना, टिकना, डेरा डालना, टिके रहना, प्रतीक्षा करना, थिराना, आसरा देखना।
ठहराई-(हिं०क्रि०) ठहरने की क्रिया या मजदूरी। ठहराऊ-(हिं०वि०) टिकाऊ। ठहराना-(हिं० क्रि०) टिकाना,डेरा देना, स्थिर करना,मूल्य स्थिर करना; ठहराई-(हिं०पुं०) स्थिरता, दृढ़ विचार।
ठहाका-(हिं०पुं०) अट्टहास,जोर की हंसी।
ठहियाँ-(हिं०स्त्री०) ठाँव, ठिकाना।
ठाँई-(हिं०पुं०) स्थान, (क्रि०वि०) निकट, पास, प्रति, तई।
ठाँउँ-(हिं०पुं०) ठिकाना, ठाँव, (क्रि० वि०) समीप, पास, निकट।
ठाँठ-(हिं०वि०) शुष्क,रसहीन,नीरस, दूध न देने वाली (गाय भैंस आदि)
ठाँठर-(हिं०पुं०) ठठरी।
ठाँयं-(हिं०स्त्री०) ठौर,स्थान, ठिकाना, बंदूक छूटने का शब्द।
ठाँयं-ठाँयं-(हिं०स्त्री०)वाक्युद्ध, कलह, झगड़ा।
ठाँव-(हिं०पुं०) ठिकाना, जगह।
ठांसना-(हिं०क्रि०)दबा दबाकर भरना मना करना, ठनठन शब्द करते हुए खाँसना।
ठाकुर-(हिं०पुं०) देवता की मूर्ति, परमेश्वर, पूज्य व्यक्ति, स्वामी, सरदार। ठाकुरद्वारा-(हिं०पुं०) देवस्थान। ठाकुरवाड़ी-(हिं०स्त्री०)देवालय,मन्दिर। ठाकुरसेवा-(हिं०स्त्री०) किसी देवताका पूजन।
ठाट-(हिं०पुं०) ढांचा, ठठरी, शृंगार, वेश,आडंबर, दिखावट, ढंग, सामग्री, उपाय, समूह, झूंड।
ठाटना-(हिं० क्रि०) निर्माण करना, बनाना, साजना।
ठाटबाट-(हिं०पुं०) शोभा, सजावट, शृंगार, तड़क भड़क, आड़म्बर।
ठाटर-(हिं०पुं०) टट्टी, ढांचा, टट्टर, शृंगार।
ठाठ-(हिं०पुं०) देखो ठाट।
ठाड़ा-(हिं०वि०) खड़ा, सीधा, खड़े बल का
ठाढ,ठाढा-(हिं० वि०) दंडायमान, सीधा, खड़ा, समूचा।
ठान-(हिं०स्त्री०)दृढ़संकल्प,आयोजन, हठ।
ठानना-(हिं० क्रि०) स्थिर करना, ठहराना,चित्त मेंकोई विचार स्थिर करना।
ठाना-(हिं० क्रि०) निश्चित करना, स्थापित करना।
ठाम-(हिं०पुं०स्त्री०) थान,ठाँव।
ठार-(हिं०पुं०) जाड़ा, पाला, हिम।
ठाला(हिं०पुं०)काम काज न रहना, (वि०) व्यवसायहीन।
ठाली-(हिं०वि०) रिक्त, निठल्ला।
ठावँ-(हिं०स्त्री०) स्थान, जगह।
ठाहर-(हिं०स्त्री०)स्थान, डेरा,टिकान
ठिंगना-(हिं०वि०) छोटे डील डौल का, नाटा।
ठिकड़ा-(हिं०पुं०) ठीकरा।
ठिकना-(हिं०क्रि०) रुकना, अड़ना।
ठिकरा-(हिं०पुं०) देखो ठीकड़ा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठिकरी-(हिं०स्त्री०) मिट्टी के पात्र का छोटा खंड।
ठिकना-(हिं०पुं०) ठिकाना, पता।
ठिकाना-(हिं०पुं०) निवास स्थान, आश्रय स्थान, ठौर, सीमा, निश्चय।
ठिठक-(हिं०पुं०) घबड़ाहट।
ठिठकना-(हिं०क्रि०) ठमकना, स्तब्ध होना।
ठिठरना-(हिं०क्रि०) ठंढ के कारण अकड़ना या सिकुड़ना।
ठिठुरन-(हिं०स्त्री०) अधिक ठंढे के कारण अकड़ या सिकुड़न।
ठिठुरा-(हिं०वि०) पाले से जकड़ा हुआ।
ठिठोलिया-(हिं०वि०) उपहासी।
ठिठोली-(हिं०स्त्री०) हंसी।
ठिनकना-(हिं०स्त्री०) छोटे बालकों का ठहर ठहर कर रोना।
ठिर-(हिं०स्त्री०) गहरी ठंढ।
ठिरना-(हिं०क्रि०) ठंढ पड़ना, ठिठुरना।
ठिलना-(हिं० क्रि०) ढकेला जाना, धँसना, जमना।
ठिलवा-(हिं०पुं०) मिट्टी का घड़ा।
ठिलिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी की छोटी गगरी, मटकी।
ठिलुया-(हिं०वि०) निकम्मा, निठल्ला।
ठिल्ला-(हिं०पुं०) घड़ा, गगरा।
ठिल्ली-(हिं०स्त्री०) छोटी गगरी।
ठीक-(हिं०वि०) युक्त, यथोचित, प्रामाणिक, उचित, निश्चित, शुद्ध, निर्दिष्ट, पक्का, स्थिर। **ठीकठीक**-(हिं०क्रि०वि०) उचित रीति से, अच्छी तरह से; (हिं०पुं०) व्यवस्था, उचित प्रबन्ध; (वि०) प्रस्तुत।
ठीकड़ा, ठीकरा-(हिं०पुं०) मिट्टी के पात्र का टूटा फूटा अंश; **ठीकरी**-(हिं० स्त्री०) टूटे हुए मिट्टी के बरतन का छोटा टुकड़ा।
ठीका-(हिं०पुं०) किसी व्यक्ति को किसी निर्धारित समय में कोई काम पूरा करने के लिये उत्तरदायी बनाना,
ठीकेदार-(हिं०पुं०) ठीका लेने वाला मनुष्य। **ठीकेदारिन**-(हिं०स्त्री०) ठीकेदार की स्त्री।
ठीठी-(हिं०स्त्री०) हँसी का शब्द।
ठीलना-(हिं०क्रि०) ठेलना, ढकेलना।
ठीवन-(हिं०पुं०) थूक, खखार।
ठीहा-(हिं०पुं०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिसपर रखकर कसेरा, बढ़ई, सोनार आदि पिटने से ठोंकने आदि का काम करते हैं, बैठने के लिये ऊँचा किया हुआ स्थान, सीमा, गद्दी हद।
ठुंठ-(हिं०पुं०) वृक्षस्तंभ।
ठुकना-(हिं०क्रि०) आघात सहना, पिटा जाना, गड़ना, दबना,।
ठुकराना-(हिं०क्रि०) ठोकर मारना, तिरस्कार करना, उपेक्षा करना।
ठुकवाना-(हिं०क्रि०) पिटवाना।
ठुड्डी, ठुड्ढी-(हिं०पुं०) चिबुक, निचले ओंठ की जड़, दाढ़ी, ठोरी।
ठुनकना-(हिं०क्रि०) ठुनुकना, अंगुली से ठोंक लगाना।
ठुनक-(हिं०स्त्री०) सुसकी; **ठुनकाना**-(हिं०क्रि०) अंगुली से धीरे धीरे चोट पहुँचाना।
ठुनठुन-(हिं०पुं०) बच्चोंके रोनेका शब्द
ठुमक-(ह०पुं०) बच्चे की उछल कूद की गति, ठसक; **ठुमकना**-(हिं०क्रि०) कूदते हुए चलना।
ठुमका-(हिं०वि०) नाटा, ठेंगना, (हिं० पुं०) पतंग (गुड्डी) की डोरमें झटका

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देना; **ठुमकारना**-(हिं०क्रि०) गुड्डी की डोरी में झटका देना; **ठुमकी**-(हिं०स्त्री०) थपका, झटका।

ठुमरी-(हिं०स्त्री०) दो बोलकी छोटी गीत

ठुर्री-(हिं०स्त्री०) बिना छिलका उतारा हुआ भूना दाना।

ठुरियाना-(हिं०क्रि०) सिकुड़ना।

ठुसकना-(हिं०क्रि०) ठिनक कर रोना।

ठुसना-(हिं०क्रि०) कसकर प्रवेश होना या भरा जाना; **ठुसवाना**-(हिं०क्रि०) कसकर घुसवाना; **ठुसाना**-(हिं०क्रि०) भरवाना, कसाना।

ठूंठ-(हिं०पुं०) शाखा तथा पत्रहीन वृक्ष, कटा हुआ हाथ।

ठूंठा-(हिं०वि०) बिना शाखा और पत्तियों का वृक्ष, लूला; **ठूंठिया**-(हिं०वि०) लूला, लंगड़ा।

ठूंठी-(हिं०स्त्री०) अरहर बाजरा आदि को जड़से काटने पर बची हुई खूंटी।

ठूंसना-(हिं०क्रि०) ठूसना, घुसाना।

ठंउना-(हिं०पुं०) ठेहुना, घुटना।

ठेंगना-(हिं०वि०) छोटे डीलका, नाटा।

ठेंगा-(हिं०पुं०) अंगूठा।

ठेंठी-(हिं०स्त्री०) कान की मैल।

ठेठी-(हिं०स्त्री०) ढपनी, ढेंपी।

ठेंक-(हिं०स्त्री०) सहारा, टेक, चाँड़,

ठेकना-(हिं०क्रि०) टेकना, सहारा लेना

ठेका-(हिं०पुं०) देखो ठीका, अड्डा, ठेक, बैठक, तबलेका बायाँ, पट्टा।

ठेकाना-(हिं०पुं०) निवास स्थान।

ठेगना-(हिं० क्रि०) सहारा लेना, सहारा लेने की लकड़ी।

ठेठ-(हिं०वि०) बिना मेल का, स्वाभाविक, (स्त्री०) सीधी सादी बोली जिसमें साहित्यिक शब्दों का प्रयोग न हो।

ठेपी-(हिं०स्त्री०) बोतल शीशी आदिका मुँह बन्द करने का डट्टा।

ठेलना-(हिं०क्रि०) ढकेलना, रेलना,

ठेला-(हिं०पुं०) टक्कर, धक्का, एक प्रकार की गाड़ी जिसको आदमी ठेलकर चलाते हैं; **ठेलाठेल, ठेलाठेली**-(हिं०पुं०स्त्री०) धक्कम धक्का।

ठेवकी-(हिं०स्त्री०) ओट।

ठेवना-(हिं०पुं०) जानु, घुठना।

ठेस-(हिं०स्त्री०) आघात, ठोंकर, चोट।

ठेसना-(हिं०क्रि०) ठूसना।

ठेसरा-(हिं०वि०) अभिमानी, घमंडी।

ठेहरी-(हिं०स्त्री०) आश्रय, सहारा।

ठेहुना-(हिं०पुं०) देखो घुठना।

ठैनि-(हिं०स्त्री०) जगह, स्थान।

ठयां-(हिं०स्त्री०) स्थान।

ठैरना, ठैराना-(हिं०क्रि०) देखो ठहरना, ठहराना।

ठैराई-(हिं०स्त्री०) देखो ठहराई।

ठैल-(हिं०स्त्री०) चोट, ठेंस।

ठोंक-(हिं०स्त्री०) आघात, प्रहार, चोट

ठोंकना-(हिं०क्रि०) मारना, पीटना, थपथपाना।

ठोंकवा-(हिं०पुं०) मोटी पूड़ी।

ठोंग-(हिं०स्त्री०) चोंच की मार, अंगुलियों के पीछकी हड्डी की मार।

ठोंगना-(हिं०क्रि०) चोंच से मारना।

ठोंठी-(हिं०स्त्री०) फली, बोड़ी, कोष।

ठो-(हिं०अव्य०) संख्या, यह शब्द संख्यावाचक शब्दों के बाद प्रयोग होता है।

ठोकना-(हिं०क्रि०) देखो ठोंकना।

ठोकर-(हिं०स्त्री०) चोट लगना, ठेस, जूते का नुकीला भाग।

ठोकरा-(हिं०वि०) कठिन, कड़ा।

ठोकराना-(हिं०क्रि०) जूते की नोक से प्रहार करना स्वयं ठोकर खा जाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठोकवा-(हिं०पुं०) देखो ठोंकवा ।
ठोट-(हिं०वि०) निःसत्व, नीरस, मूर्ख ।
ठोड़ी, ठोढी-(हिं०स्त्री०) चिबुक ,ठुड्ढी,
ठोप-(हिं०पुं०) बिन्दु, बूंद।
ठोर-(हिं०पुं०) चंचु, चोंच, एक प्रकार का मीठा पकवान ।
ठोस-(हिं०वि०) घन, पुष्ट, दृढ़ ।
ठोसा-(हिं०पुं०) हाथ का अंगूठा, ठेंगा,
ठोहना-(हिं०क्रि०) पता लगाना ।
ठौनि-(हिं०स्त्री०) स्थिति, स्थान, देखो "ठवनि" ।
ठौर-(हिं०पुं०) ठिकाना, स्थान, अवसर,एक प्रकार का मीठा का पकवान ।

ड

ड-संस्कृत तथा देवनागरी वर्णमाला का तेरहवां व्यंजन तथा टवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण मूर्धा से होता है ।
ड-(सं०पुं०) शिव, शब्द, त्रास ।
डंक-(हिं०पुं०) वह विषैला काँटा जो बिच्छू, मधुमक्खी, आदि कीड़ों के पीछ की ओर रहता है, लेखनी की जीभी ।
डंकना-(हिं०क्रि०) गरजना ।
डंका-(हिं०पुं०) एक प्रकारका नगाड़ा ।
डंकिनी-(हिं०स्त्री०) दखो डाकिनी ।
डंगर-(हिं०पुं०) चौपाया ।
डंटैया-(हिं०वि०) डाटनेवाला ।
डंठल-(हिं०पुं०) **डंठी**-(हिं०स्त्री०) पौधों की शाखा या पेड़ी ।
डंड-(हिं०पुं०) लाठी, सोंटा, दंड, एक प्रकार का व्यायाम जो हाथ पैर के पंजों के बल झुक कर किया जाता है ।
डंडक-(हिं०पुं०) देखो दण्डक ।
डँडवारा-(हिं०पुं०) खुली हुई नीची भीत ।
डँड़हारा-(हिं०स्त्री०) द्वार में ताला लगाने के लिये जड़ा हुआ लोहे या पीतल का सरकौवा डंडा ।
डंडा-(हिं०पुं०) सोंटा, लाठी, मोटी छड़ी ।
डंडाल-(हिं०पुं०) दुन्दुभी, नगाड़ा ।
डडिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की साड़ी ।
डंड़ियाना-(हिं०क्रि०) दो कपड़ों की लंबाई के किनारों को एक में मिलाना ।
डंडी-(हिं०स्त्री०) छोटी पतली लंबी लकड़ी, किसी अस्त्र की मुठिया, तराजू की वह लकड़ी जिसमें रस्सियां लटका कर पल्ले बँधे रहते हैं, डंठल, नाल, लंबा भाग, वह सन्यासी जो दण्ड धारण करता हो, (वि०) झगड़ा लगने वाला, चुगलखोर ।
डंडोरना-(हिं०क्रि०) ढूंढना ।
डंबर-(हिं०पुं०) ढकोसला, आड़म्बर; मेघडम्बर- बहुत बड़ा चँदवा, दल, बादल ।
डवाँडोल(-हिं०वि०) चंचल, घबड़ाया हुआ
डंस-(हिं०पुं०) जंगली मच्छड़, डाँस, वह स्थान जहाँ पर डंक अथवा विषैले कीड़े का दाँत चुभा हो ।
डंसना-(हिं०क्रि०) देखो डँसना ।
डकरना-(हिं०क्रि०) डकार लेना ।
डकराना-(हिं०क्रि०) बैल या भैंस का बोलना ।
डकार-(सं०पुं०) 'ड' स्वरूप अक्षर, 'ड' वर्ण । **डकार**-(हिं०पुं०) मुख से वायु का निकला हुआ उद्गार, सिंह, बाघ आदि की गरज ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डकारना-(हिं० क्रि०) डकार लेना।
डकैत-(हिं०पुं०) डाकू। **डकैती**-(हिं० स्त्री०) लूटमार।
डग-(हिं०पुं०) उतनी दूरी जितने पर एक पग से दूसरे पग पर पैर पड़े।
डगडोलना-(हिं०क्रि०) देखो डगमगाना
डगडोर-(हिं०क्रि०) देखो डावाँडोल।
डगना-(हिं०क्रि०) हिलना, घसकना, भूल चूक करना।
डगडगाना-(हिं० क्रि०) लड़खड़ाना, थरथराना। **डगमगाना**-(हिं०क्रि०) विचलित होना, स्थिर न रहना,।
डगर-(हिं०स्त्री०) मार्ग पथ। **डगरना**-(हिं० क्रि०) लुड़कना। **डगरा**-(हिं०पुं०) मार्ग, टोकरा, छवड़ा।
डगाना-(हिं०क्रि०) देखो डिगाना।
डटना-(हिं०क्रि०) स्थिर रहना, अड़ना, भिड़ना। **डटाना**-(हिं०क्रि०) खड़ा करना, सटाना। **डटाई**-(हिं०स्त्री०) डटाने का काम।
डट्टा-(हिं०पुं०) काग, ठप्पा, साँचा।
डड्ढार-(हिं०वि०) बड़ी दाढ़ी वाला।
डढ़न-(हिं०स्त्री०) देखो जलन।
डढार, डढारा-(हिं०वि०) जिसको दाढ़ी हो।
डढियल-(हिं०वि०) डाढ़ी वाला।
डड्ढना-(हिं०क्रि०) जलाना।
डपट-(हिं०स्त्री०) डाँट, झिड़की, घुड़की
डपटना-(हिं० क्रि०) डाँटना, वेग से दौड़ना।
डपोरसंख-(हिं०पुं०) अपनी झूठी बड़ाई करने वाला।
डफ-(हिं०पुं०) डफला, चंग बाजा।
डफला-(हिं०पुं०) डफ नाम का बाजा।
डफली-(हिं०स्त्री०) छोटा डफ, खंजड़ी
डफार-(हिं०स्त्री०) चिग्घाड़।
डफारना-(हिं०क्रि०) जोर से चिल्लाना या रोना।
डब्ब-(हिं०पुं०) थैला, जेब।
डबकना-(हिं०क्रि०) धातु की चद्दर को कटोरी के आकार का गहरा बनाना टीसना, लंगड़ाना। **डबकौहाँ**-(हिं०वि०) डबडबाया हुआ। **डबडबाना**-(हिं० क्रि०) अश्रुपूर्ण होना।
डबरा-(हिं०पुं०) छिछला गड्ढा, कुंड।
डबरी-(हिं०स्त्री०) छोटा गड़हा।
डबल-(हिं०पुं०) पैसा।
डबला-(हिं०पुं०) मिट्टी का छोटा पात्र।
डबी-(हिं०स्त्री०) देखो डिब्बी, डिबिया
डबोना-(हिं०क्रि०) डुबाना, बिगाड़ना।
डब्बा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु को रखने का ढपनेदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी की एक कोठरी।
डब्बू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कटोरा
डभकना-(हिं०क्रि०) पानी में डूबना उतराना।
डमका-(हिं०पुं०) कुवें में से निकाला हुआ तुरंत का पानी।
डभकौरी-(हिं०स्त्री०) उड़द की पीठी की बरी।
डमर-(सं०नपुं०) उपद्रव, हलचल।
डमरी-(सं०स्त्री०) छोटा डफ, खजड़ी।
डमरू-(हिं०पुं०) एक बाजा जो बीच में पतला तथा किनारों पर चौड़ा होता है।
डमरु मध्य-(सं०पुं०) भूमि का वह संकीर्ण भाग जो बड़े बड़े दो खण्डों को मिलाता हो; **जलडमरुमध्य**-जल का वह पतला भाग जो जल के दो बड़े बड़े भागों को मिलाता हो।
डमरु यन्त्र-(सं०पुं०) दो घड़ों के मुख

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिला कर बनाया हुआ यन्त्र जो अर्क खींचने के काम में आता है।

डर-(हिं०पुं०) भीति, भय, आशंका,

डरना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना।

डरपना-(हिं०क्रि०) डरना।

डरपोक-(हिं०वि०) भीरु, कायर।

डरवाना-(हिं०क्रि०) देखो डराना।

डराना-(हिं०क्रि०) भयभीत करना।

डरावना-(हिं०वि०) भयानक, भयंकर।

डरिया-(हिं० स्त्री०) देखो डाल, शख।

डरील, डरीला-(हिं०वि०) शाखायुक्त।

डरैला-(हिं०वि०) डरावना, भयंकर।

डल-(हिं०पुं०) खण्ड, अंश, टुकड़ा, (स्त्री०) झील।

डलई-(हिं०स्त्री०) देखो डलिया।

डलना-(हिं०क्रि०) डाला जाना, पड़ना।

डलवाना-(हिं०क्रि०) डालने का काम दूसरे से कराना।

डला-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा दौरा, टोकरा।

डलिया-(हिं०स्त्री०) छोटा टोकरा, दौरी

डली-(हिं०स्त्री०) खण्ड, छोटा टुकड़ा,

डवँरू-(हिं०पुं०) देखो डमरू।

डवँरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा कटोरा।

डसन-(हिं०स्त्री०) डसने की क्रिया या ढंग।

डवरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा कटोरा।

डसन-(हिं०स्त्री०) डसने की क्रिया।

डसना-(हिं०क्रि०) साँपका काटना, डंक मारना। **डसवाना, डसाना**-(हिं० क्रि०) दाँत से कटवाना।

डहकना-(हिं०क्रि०) ठगना, छितराना, ललचाना, गरजना; **डहकाना**-(हिं० क्रि०) नष्ट करना, गँवाना।

डहडहा-(हिं०वि०) हराभरा, प्रफुल्लित, टटका।

डहना-(हिं०क्रि०) भस्म होना, जलना, द्वेष करना, कुढना।

डहर-(हिं०स्त्री०) पथ, मार्ग।

डहरना-(हिं०क्रि०) चलना, घुमना, फिरना।

डहराना-(हिं०क्रि०) चलाना, फिराना।

डहार-(हिं०पुं०) कष्ट देने वाला।

डाइन-(हिं०स्त्री०) राक्षसी, चुड़ैल,

डांक-(हिं०स्त्री०) वमन।

डांकना-(हिं०क्रि०) कूद कर पार करना, वमन करना।

डाँगर-(हिं०पुं०) चौपाया, (वि०) कृश, दुबला पतला।

डाँट-(हिं०स्त्री०) घुड़की, डपट।

डाटना-(हिं०क्रि०) डपटना, घुडकना

डांठ-(हिं०पुं०) देखो डंठल।

डांड़-(हिं०पुं०) डंडा, भीटा, टीला, सीमा, अर्थदंड, बाँस, नाव खेने का पटरा लगा हुआ डंडा। **डांडना**-(हिं०क्रि०) अर्थ दण्ड देना

डाड़ा-(हिं०पुं०) नाव खेने का पटरा लगा हुआ बांस का डंडा, सीमा, कर।

डाड़ी-(हिं०स्त्री०) लंबा, पतला काठ, अस्त्र की मुठिया, तराजू की डंडी पतली शाखा, एक प्रकार की पहाड़ी सवारी।

डाँघरा-(हिं०स्त्री०) पुत्र, बेटा, लड़का।

डाँवरी-(हिं०स्त्री०) पुत्री, कन्या, बेटी।

डाँवरू-(हिं०पुं०) बाघ का बच्चा।

डाँवाडोल-(हिं०वि०) चंचल, विचलित।

डाँस-(हिं०पुं०) बड़ा मच्छड़।

डाइन-(हिं०स्त्री०) कुरूपा स्त्री।

डाक-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर घोड़े गाड़ी बदले जाते हैं, चिट्ठियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के जाने आने की राजकीय व्यवस्था, वमन, उलटी ।

डाकखाना-(हिं०पुं०) डाकघर ।

डाकगाड़ी-(हिं०स्त्री०) वह रेलगाड़ी जो डाक को ले जाती है । डाकघर-(हिं० पुं०) देखो डाकखाना ।

डाकना-(हिं०स्त्री०) लाँघना, फाँदना, वमन करना ।

डाका-(हिं०पुं०) किसी का धन छीनने के लिये आक्रमण या धावा ।

डाकिन, डाकिनी-(सं०स्त्री०) पिशाची, डाइन, चुड़ैल ।

डाकू-(हिं०पुं०) लुटेरा ।

डागा-(हिं०पुं०) वह डंडा जिससे नगाड़ा बजाया जाता है, चोब ।

डाट-(हिं०स्त्री०) टक, चाँड़, डट्टा, भाग, देखो डाँट । डाटना-(हिं०क्रि०) चांड़ लगाना, टेकना, ठेपी लगाना,

डाढ़-(हिं०स्त्री०) चबाने के चौड़ दांत, दाढ, वट आदि वृक्षोंकी जटा, वरोह ।

डाढ़ना-(हिं०क्रि०) जलाना ।

डाढ़ा-(हिं०स्त्री०) दावानल, जलन, दाह ।

डाढ़ी-(हिं०स्त्री०) दाढ़ी, चिबुक, ठुड्डी ।

डाब-(हिं०स्त्री०) कच्चा नारियल ।

डाबर-(हिं०पुं०) पोखरी, गड्ढा, ताल; (वि०) मटमैला जल ।

डाबा-(हिं०पुं०) देखो डब्बा ।

डाभ-(हिं०पुं०) कच्चा नारियल ।

डाभक-(हिं०व०) टटका ।

डामर-(सं०पुं०) आड़म्बर, चमत्कार गर्व ।

डामल-(हिं० स्त्री०) जीवन पर्यन्त कारागार ।

डामाडोल-(हिं० वि०) देखो डावाँडोल ।

डायन-(हिं०स्त्री०) डाकिनी, पिशाचिनी ।

डार-(हिं०स्त्री०) शाखा, डाल ।

डारना-(हिं०क्रि०) देखो डालना ।

डाल-(हिं०स्त्री०) शाखा, फानूस की खूँटी, डलिया ।

डालना-(हिं०क्रि०) नीचे गिराना, फेंकना, छोड़ना, रखना, मिलाना, भीतर घुसाना, धारण करना, सौंपना लगाना ।

डाली-(हिं०स्त्री०) फूल फल या खाने पीने की वस्तु, सजाकर किसी के यहाँ भेजने की टोकरी, छितनी ।

डावड़ा, (डावरा)-(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा

डावरी-(हिं०स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्री ।

डासन-(हिं०पुं०) बिस्तर, बिछावन,

डासना-(हिं०क्रि०) फैलाना, बिछाना ।

डासनी-(हिं०स्त्री०) चारपाई, पलंग,

डाह-(हिं०स्त्री०) ईर्ष्या, द्वेष, जलन ।

डाहना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना, जलाना

डाही, डाहुक-(हिं०पुं०) कष्ट देनेवाला ।

डिंगल-(हिं०वि०) दूषित, घृणित, नीच

डिंभिया-(हिं०वि०) पाखण्डी ।

डिंगना-(हिं०क्रि०) हिलना ।

डिंगाना-(हिं०क्रि०) घसकाना, विचलित करना ।

डिग्गी-(हिं०स्त्री०) तालाब, पोखरी ।

डिङ्गर-(सं०पुं०) मोटा आदमी, वन, धूर्त मनुष्य, ठग ।

डिठार, डिठिर-(हिं०वि०) आँख वाला, जिसको सुझाई दे ।

डिठौना-(हिं०पुं०) काजल का टीका जिसको स्त्रियां दृष्टि न लगने के लिये बच्चों के सिर पर लगाती है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डिण्डिभ-(सं०पुं०) डिमडिमी, डुगडुगिया ।
डिबिया-(हिं०स्त्री०) छोटा डिब्बा ।
डिब्बा-(हिं०पुं०) ढपनेदार छोटा पात्र, रेलगाड़ी का एक कमरा ।
डिभकना-(हिं०क्रि०) मोहित करना ।
डिमडिमी-(हिं०स्त्री०) डुगडुगिया, डुग्गी
डिम्ब-(सं०पुं०) भय, डर, गर्भाशय, फेफड़ा, भय से उत्पन्न, प्लीहा कीड़े का बच्चा, उपद्रव ।
डिम्बज-(सं०पुं०) जिसकी उत्पत्ति अंडे से हो।
डिम्बाहव-(सं० नपुं०) ऐसी लड़ाई जिसमें राजा सम्मिलित न हो।
डिम्भ, डिम्भक-(सं०पुं०) शिशु, बालक
डिल्ला-(हिं०पुं०) बैल के कैंधे पर का उठा हुआ कूबड़, ककुत्थ ।
डींग-(हिं०स्त्री०) अपनी बड़ाई की झूठी बात ।
डीठ-(हिं०स्त्री०) दृष्टि, देखने की शक्ति, ज्ञान, सूझ। **डीठना**-(हिं०क्रि०) देख पड़ना, दृष्टि लगाना ।
डीठबंध-(हिं०पुं०) इन्द्रजाल ।
डोटिमूटि-(हिं०स्त्री०) जादू, टोना।
डीबुआ-(हिं०पुं०) डबल, पैसा ।
डीमडाम-(हिं०पुं०) ठाटबाट, आडम्बर
डील-(हिं०पुं०) शरीर का विस्तार,
डीलडौल-शरीर का ढांचा, काठी ।
डुंग-(हिं०पुं०) ढेर, राशि, भीटा।
डुंड-(हिं०पुं०) ठूंठ
डुक-(हिं०पुं०) घूसा, मुक्का ।
डुकियाना-(हिं०क्रि०) घूसा मारना ।
डुगडुगी-(हिं०स्त्री०) डुग्गी, डम्मल।
डुग्गी-(हिं०स्त्री०) देखो डुगडुगी ।
डुगडुगाना-(हिं०क्रि०) नगाड़ा, ताशा आदि को लकड़ी से बजाना ।
डुपटना-(हिं०क्रि०) कपड़े को चुनना,
डुपट्टा-(हिं०पुं०) देखो दुपट्टा ।
डुबकी-(हिं०स्त्री०) जल में डूबने का कार्य, तली हुई बरी ।
डुबवाना-(हिं०क्रि०) डुबाने का काम दूसरे से कराना। **डुबाना**-(हिं०क्रि०) गोता देना, बोरना, नष्ट करना, **डुबाव**-(हिं०पुं०) डूबने भर की जल की गहराई।
डुबोना-(हिं०क्रि०) देखो डुबाना, बोरना
डुब्बी-(हिं०स्त्री०) देखो डुबकी ।
डुलना-(हिं०क्रि०) देखो डोलना ।
डुलाना-(हिं०क्रि०) चलाना, घुमाना, फिराना ।
डूंगर-(हिं०पुं०) खंडहर, टीला, भीटा,
डूंगरी-(हिं०स्त्री०) छोटा टीला ।
डूंगा-(हिं०पुं०) चम्मच, चमचा ।
डूबना-(हिं०क्रि०) गोता खाना, सूर्य, चन्द्रमा ग्रह आदि का अस्त होना, सत्यानाश होना, लीन होना,
डेड़हा-(हिं०पुं०) जल का सर्प ।
डेढ़-(हिं०वि०) एक पूरा और आधा।
डेढ़ा-(हिं०वि०) डेढ़गुना, एक प्रकार का पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या की डेढ़गुनी संख्या बतलाई जाती है ।
डेरा-(हिं० पुं०) पड़ाव, टिकान, छावनी, खेमा, निवासस्थान, मकान, नाचने या गानेवालों की मण्डली,
डेराना-(हिं०क्रि०) डरवाना ।
डेवढ़-(हिं०वि०) डेढ़गुना, डेवढ़, (स्त्री०) क्रम ।
डेवढ़ना-(हिं०क्रि०) हिसाब बन्द करना।
डेवढ़ा-(हिं०वि०) एक और आधा, डेढ़गुना ।
डेवढ़ी-(हिं०स्त्री०) देखो ड्योढ़ी ।
डेहरी-(हिं०स्त्री०) दहलीज, देहली।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डोंगर-(हिं०पुं०)पहाड़ी, टीला, भींटा
डोंगा-(हिं०पुं०) बड़ी नाव ।
डोंगी-(हिं०स्त्री०) छोटी नाव ।
डोंड़ी-(हिं०स्त्री०) पोस्ते का फल जिसके छिलके को चीर कर अफीम निकाली जाती हैं, ।
डोई-(हिं०स्त्री०) कटोरे में बेंट जड़ी हुई करछी ।
डोकर, डोकरा-(हिं०पुं०) अशक्त बुड्ढा आदमी ।
डोका-(हिं०पुं०) तेल घी आदि रखने का काठ का छोटा पात्र । **डोकिया, डोकी**-(हिं०स्त्री०) तेल आदि रखने का काठ का बरतन ।
डोड़हा-(हिं०पुं०)जलमें रहने वाला सर्प ।
डोड़ी-(हिं०स्त्री०) मटर सेम आदि की कच्ची फली ।
डोब, डोबा-(हिं०पुं०) गोता, डुबकी । **डोबना**-(हिं०क्रि०) डुबाना ।
डोम-(हिं०पुं०)भारतवर्षकी एक अस्पृश्य नीच जाति, । **डोमड़ा**-(हिं०पुं०) देखो डोम । **डोमनी**-(हिं०स्त्री०) डोम जाति की स्त्री ।
डोमिन-(हिं०स्त्री०)डोम जाति की स्त्री
डोर-(हिं०पुं०) डोरा, सूत;
डोरना-(हिं०क्रि०)हाथ पकड़कर चलना ।
डोरा-(हिं०पुं०) सूत, तागा, धारी, लकीर ।
डोरिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सूती कपड़ा जिसमें मोटे सूत की लम्बी धारियाँ बनी रहती है, । **डोरियाना**-(हिं०क्रि०) बन्धन लगाकर पशुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान को ले जाना ।
डोरी-(हिं०स्त्री०) रज्जु, पाश, रस्सी
डोरे-(हिं०वि०क्रि०)संग संग,साथ साथ,
डोल-(हिं०पुं०) कुवें से पानी खींचने का लोहे का गोल बरतन, हिंडोला, झूला, हलचल ।
डोलची-(हिं०स्त्री०) छोटा डोल ।
डोलना-(हिं०क्रि०) चलना, घूमना, फिरना, हटना ।
डोला-(हिं०पुं०) शिविका, पालकी, डोली ।
डोलाना-(हिं०क्रि०)हिलाना,चलाना ।
डोली-(हिं०स्त्री०) शिविका, पालकी, **डोली करना**-हटाना, दूर करना ।
डोड़ी-(हिं०स्त्री०) ढिंढोरा, घोषणा,
डोआ-(हिं०पुं०) काठ का बना हुआ बड़ा चम्मच ।
डौल-(हिं०पुं०) ढांचा, शैली, ढब, प्रकार, उपाय, । **डौलडाल**-(हिं०पुं०) युक्ति, उपाय । **डौलदार**-(हिं०वि०) सुन्दर ।
डौलियाना-(हिं०क्रि०)ढंग पर लाना ।
ड्योढ़ा-(हिं०वि०) पूरा और आधा, डेवढ़ा, (पुं०) डेढ़गुनी संख्या का पहाड़ा ।
ड्योढी-(हिं०स्त्री०) फाटक, चौखट, पौरी ।
ड्योढीदार, ड्योढीवान-(हिं० पुं०) दरवान, चौकीदार ।

ढ

ढ-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का चौदहवाँ व्यंजन वर्ण तथा टवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है ।
ढ-(सं०पुं०) बड़ा ढोल, नगाड़ा, ध्वनि,
ढंकन-(हिं०पुं०) देखो ढक्कन ।
ढँकना-(हिं०क्रि०) देखो ढकना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढंग-(हिं०पुं०) प्रणाली, पद्धति, शैली, बनावट, उपाय, मुक्ति, अवस्था, व्यवहार।
ढंगी-(हिं०वि०) चतुर, धूर्त, छली।
ढंढार-(हिं०वि०) बहुत बुड्ढा।
ढंढोर-(हिं०पुं०)आगकी लपट, लौ।
ढंढोरना-(हिं०वि०) इधर उधर ढूंढना
ढंढोरा-(हिं०पुं०)डुगडुग्गी, ढोल बजाकर दी हुई घोषणा। **ढंढोरिया**-(हिं० पुं०) डुग्गी बजाकर घोषणा करने वाला।
ढँपना-(हिं०क्रि०) ढँक जाना (पुं०) वह वस्तु जिससे कोई चीज ढाँकी जाती हैं।
ढकना-(हिं०पु०) ढापने की वस्तु, ठक्कन, (क्रि०)छिपना, ढाँकना।
ढकनिया, ढकनी-(हिं०स्त्री०) ढाँपने की वस्तु।
ढकेलना-(हिं०क्रि०)धक्का देकर आगे बढ़ाना।
ढकोसना-(हिं०क्रि०) बड़े बड़े घूंट पीना
ढकोसला-(हिं०स्त्री०) पाखंड।
ढक्का-(हिं०पुं०) बड़ा ढोल, नगाड़ा।
ढचर-(हिं०पुं०)प्रपंच, बखेड़ा, (वि०) अत्यन्त जीर्ण तथा दुर्बल।
ढटिंगड़-(हिं०वि०)बड़े डील डौल का।
ढट्टी-(हिं०स्त्री०) डाढी बाँधने की कपड़े की पट्टी।
ठड्ढा-(हिं०वि०)आवश्यकता से अधिक, बहुत बड़ा; (पुं०) ढाँचा,आड़म्बर,
ढनमनाना-(हिं०क्रि०) लुड़क जाना।
ढड्ढी-(हिं०स्त्री०) बुड्ढी स्त्री।
ढप-(हिं०पुं०) देखो ढब; रीति, युक्ति
ढपना-(हिं०पुं०) ढक्कन, (क्रि०) ढपा होना।
ढब-(हिं०पुं०) ढंग, युक्ति, रीति।
ढमढम-(हिं०पुं०)नगाड़ा या ढोल का शब्द।
ढयना-(हिं०क्रि०) घर मकान आदि का ध्वस्त होना या गिर पड़ना।
ढरकना-(हिं०क्रि०)छलना, गिर कर बह जाना।
ढरका-(हिं०पुं०) चौपायों को दवा पिलाने की बाँस की नुकीली नली।
ढरकी-(हिं०स्त्री०)बाने का सूत फेंकने का जुलाहे का एक साधन। **ढरकाना**-(हिं०क्रि०) नीचे तल में गिराना, बहाना।
ढरना-(हिं०क्रि०) देखो ढलना।
ढरनि-(हिं०स्त्री०) पतन, चित्तवृत्ति, झुकाव, दयाशीलता,
ढरहना-(हिं०क्रि०)झुकना, गिरना।
ढरहरा-(हिं०वि०) ढालुवाँ।
ढराना-(हिं०क्रि०) देखो ढराना, ढरकाना।
ढरारा-(हिं०वि०)गिरकर बह जाने वाला
ढर्रा-(हिं०पुं०) शैली, ढंग, उपाय।
ठसकना-(हिं०क्रि०) ढलना, सरकना।
ढलकाना-(हिं०क्रि०)बहाना,गिराना।
ढलमल-(हिं०वि०) शिथिल।
ढलना-(हिं०क्रि०) गिरकर बहना, बीतना, लुड़काना, साँचे में ढालकर बनाया जाना, प्रसन्न होना, प्रवृत्त, होना।
ढलवाँ-(हिं०वि०) साँचे में ढालकर बनाया हुआ। **ढलवाना**-(हिं०क्रि०) ढालने का काम दूसरे से कराना।
ढलाई-(हिं०स्त्री०) ढालने का काम, ढालने का शुल्क। **ढलाना**-(हिं०क्रि०) देखो ढलवाना।
ढलुवाँ-(हिं०वि०) ढाल कर बनाया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढहना-(हिं०क्रि०) घर आदि का गिरना, नष्ट होना, । **ढहरी**-(हिं०स्त्री०) देहली ।

ढहाना-(हिं०क्रि०) मकान आदि को ध्वस्त कराना ।

ढाँकना-(हि०क्रि०) छिपाना ।

ढाँचा-(हिं०पुं०) डौल, ठाट, ठठरी ।

ढाँपना-(हिं०क्रि०) देखो ढाकना ।

ढाँस-(हिं०स्त्री०) गले का वह शब्द जो सूखी खांसी के साथ निकलता है ।

ढाँसना-(हिं० क्रि०) सूखी खांसी खांसना ।

ढाई-(हिं०वि०) दो से आधा अधिक २॥

ढाड़-(हिं०स्त्री०) चिल्लाहट, गरज, चिग्घाड़ ।

ढाढ़ना-(हिं०क्रि०) देखो दाढ़ना

ढाढ़स-(हिं०पुं०) आश्वासन, धैर्य, सान्त्वना ।

ढाना-(हिं०क्रि०) ढहवाना, ध्वस्त करना ।

ढापना-(हिं०क्रि०) ढपना बन्द करना ।

ढाबर-(हिं०वि०) मटमैला ।

ढाबा-(हिं०पुं०) ओलती, जाल ।

ढामक-(हिं०पुं०) नगाड़े, ढोल आदि का शब्द ।

ढार-(हिं०पुं०) उतार, ढालवाँ भूमि,

ढारना-(हिं०क्रि०) ढालना, गिराना ।

ढारस-(हिं०पुं०) आश्वासन ।

ढाल-(हिं०पुं०) थाली के आकार का चमड़े का बना हुआ एक अस्त्र जो तलवार, भाले आदि के आक्रमण को रोकने के लिये धारण किया जाता है, उतार, तिरछी भूमि, ढार ।

ढालना-(हिं०क्रि०) उंडेलना, मदिरा-पीना, बिक्री करना, कम दाम पर माल बेचना, ताना मारना, पिघले हुए धातु आदि को साँचे में ढाल कर कोई वस्तु तैयार करना ।

ढालवाँ-(हिं०वि०) ढालू, ढालदार ।

ढालिया-(हिं०पुं०) कसेरा ।

ढालुआं, ढालू-(हिं०वि०) देखो ढालवाँ

ढासना-((हिं० पुं०) टेक, ओटकन, सहारा ।

ढाहना-(हिं०क्रि०) ढाना, ध्वस्त करना ।

ढिढोरना-(हिं०क्रि०') अनुसन्धान करना खोजना ।

ढिढोरा-(हिं०पुं०) डुगडुगी, ढोल बजाकर की हुई घोषणा ।

ढिग-(हिं०क्रि०वि०) समीप, निकट, (स्त्री०) तट, किनारा ।

ढिठाई-(हिं०स्त्री०) धृष्टता, चपलता ।

ढिबरी-(हिं०स्त्री०) वह मिट्टी की कुल्हिया जिसमें बत्ती लगाकर करासन तेल जलाया जाता है, लोहे का छेददार टुकड़ा जो पेंच पर कसा जाता है ।

ढिमका-(हिं०स्त्री०) अमुक, ठेकाना ।

ढिलढिला-(हिं०वि०) ढीलाढाला, तरल ।

ढिलाई-(हिं०स्त्री०) आलस्य, शिथिलता

ढिलाना-(हिं०क्रि०) ढीला करना ।

ढिल्लड़-(हिं०क्रि०) मट्ठर, आलसी ।

ढींगर-(हिं०पुं०) हृष्टपुष्ट मनुष्य ।

ढीठ-(हिं०वि०) धृष्ट, उद्दण्ड; **ढीठता**-(हिं०स्त्री०) धृष्टता, ढिठाई ।

ढील-(हिं०स्त्री०) शिथिलता, बालों में पड़नेवाली जुआँ । **ढीलना**-(हिं० क्रि०) छोड़ देना, कुवें में लटकाना ।

ढीला-(हिं० वि०) जो तना न हो, जो दृढ़ता से बंधा न हो ।

ढीलापन-(हिं०पुं०) शिथिलता ।

ढीह-(हिं०पुं०) ऊँचा टीला, भीटा ।

ढुंढ़-(हिं०पुं०) ठग, चोर, उचक्का ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढुँढ़वाना-(हिं०क्रि०) अन्वेषण कराना।
ढुँढो-(हिं०स्त्री०) बाहु, बाँह।
ढुकना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना। **ढुकास**-तीव्र प्यास।
ढुक्का-(हिं०पुं०) देखो ढूका।
ढुठौना-(हिं०पुं०) लड़का।
ढुरकना-(हिं०क्रि०) ढुलकना, झुकना।
ढुनमुनिया-(हिं०स्त्री०) ढुकने की क्रिया या भाव।
ढुरना-(हिं०क्रि०) ढलना, टपकना।
ढुरहुरी-(हिं०स्त्री०) पगडंडी।
ढुराना-(हिं०क्रि०) ढरकाना, टपकाना।
ढुर्री-(हिं०स्त्री०) पतला मार्ग, पगडंडी।
ढुलकना-(हिं०क्रि०) गिरना, लुढ़कना।
ढुलकाना-(हिं०क्रि०) लुढ़काना।
ढुलना-(हिं०क्रि०) लुड़कना, फिसलना, प्रसन्न होना, झुकना, प्रवृत्त होना।
ढुलवाई-(हिं०स्त्री०) ढोने का काम, ढोने का शुल्क। **ढुलवाना**-(हिं०क्रि०) ढोने का काम दूसरे से कराना।
ढुलाना-(हिं०क्रि०) ढालना, लुड़काना।
ढूँढ-(हिं०स्त्री०) अन्वेषण, खोज।
ढूढ़ना-अन्वेषण करना।
ढूह, ढुहा-(हिं०पुं०) अटाला, राशि, ढेर।
ढेंकली-(हिं० स्त्री०) कुवें से पानी निकालने का एक यन्त्र, धान कूटने का एक प्रकार का लकड़ी का यन्त्र।
ढेंकी, ढेंकुली-(हिं०स्त्री०) अनाज कूटने की ढेंकली।
ढेंढ़र-(हिं०पुं०) आँख का ढेला।
ढेंढ़ी-(हिं०स्त्री०) कपाल, पोस्ते आदि की फली।
ढेंप, ढेंपी-(हिं०स्त्री०) उभड़ा हुआ कोना।
ढेबुवा-(हिं०पुं०) पैसा।
ढेरी-(हिं०स्त्री०) ढेर, समूह, टाल, राशि
ढेल-(हिं०पुं०) देखो ढेला।
ढेलवांस-(हिं०स्त्री०) ढेला फेंकने का रस्सी का बना हुआ फन्दा।
ढेला-(हिं० पुं०) पत्थर, ईंट आदि का टुकड़ा।
ढैया-(हिं०स्त्री०) अढ़ाई सेर तौलने का बटखरा, अढ़ाई गुने का पहाड़ा।
ढोंकना-(हिं०क्रि०) पीना, पी जाना।
ढोंका-(हिं०पुं०) पत्थर आदि का अनगढ़ा टुकड़ा।
ढोंग-(हिं०पुं०) पाखंड, ढकोसला।
ढोंढ-(हिं०पुं०) कपास, पोस्ते आदि की डोंकली, डोडा।
ढोंढी-(हिं०स्त्री०) नाभि।
ढोका-(हिं०पुं०) देखो ढोंका।
ढोटा-(हिं०पुं०) पुत्र, लड़का, बेटा।
ढोटी-(हिं०स्त्री०) पुत्री, बेटी, लड़की।
ढोना-(हिं०क्रि०) बोझ ले चलना या पहुँचाना, निर्वाह करना।
ढोल-(सं०पुं०) कान का परदा, (हिं०पुं०) एक प्रकार का दोनों ओर चमड़ा मढ़ा हुआ मेंड़रा जो गले में लटका कर बजाया जाता है।
ढोलक-(हिं०स्त्री०) छोटा ढोल। **ढोलकिया**(हिं०पुं०) ढोल बजाने वाला मनुष्य। **ढोलकी**-(हिं०स्त्री०) छोटा ढोलक। **ढोरना**-(हिं०पुं०) ढोलक के आकार का गले में पहरने का यन्त्र, छोटा झूला, पालना, (क्रि०) ढरकाना, ढालना।
ढोला-(हिं०पुं०) गोल मेहराब बनाने का डाँट, लदाव।
ढोली-(सं०वि०) ढोल बजानेवाला, (हिं०स्त्री०) दो सौ पान की गड्डी, ठिठोली।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढोव-(सं०पुं०) डाली, भेंट ।
ढोहना-(हिं०क्रि०) खोजना ।
ढौंचा-(हिं०पुं०) वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक अंक की साढ़े चार गुनी संख्या दोहराई जाती है ।
ढौंसना-(हिं०क्रि०) आनन्द ध्वनि करना
ढौंकन-(सं०नपुं०) उत्कोच, घूंस ।

ण

ण-संस्कृत तथा हिन्दी के व्यंजन वर्णों का पन्द्रहवा अक्षर तथा टवर्ग का पाँचवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है ।
ण-(सं०पुं०) आभूषण, निर्णय, शिव का एक नाम, ज्ञान, दान, पानी का घर (हि०) गुणरहित, गुणशून्य ।
णकार-(सं०पुं०) 'ण' स्वरूप वर्ण ।

त

त-संस्कृत और हिन्दी वर्णमाला का सोलहवाँ अक्षर तथा तवर्ग का पहिला वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है ।
त–(सं०पुं०) चोर, अमृत, पोंछ, नाव झूठ, पुण्य ।
तइनात-(हिं०पुं०) देखो तैनात ।
तईं-(हिं०) (प्रत्य०) से, प्रति, को, (अव्य०) लिये, वास्ते ।
तई-(हिं०स्त्री०) कड़ा लगी हुई छिछली कड़ाही ।
तउ-(हिं०अव्य०) तब, त्यों, उसतरह ।
तऊ-(हिं०अव्य०) तथापि, तौभी, तिस पर भी ।
तंतुकीट-((हिं०पुं०) रेशम का कीड़ा ।
तंडुल-(हिं०पुं०) चावल ।
तंतमन्त-(हिं०पुं०) देखो तन्त्रमन्त्र ।
तन्तु-(हिं०पुं०) सूत, डोरा, तागा, ताँत ।
तंत्र-(हिं०पुं०) ताँत, सूत, कपड़ा, धन,
तंत्री-(हिं०स्त्री०) वीणा आदि तार के बाजे, नस, रस्सी, बाजा बजानेवाला,
तंदरा-(हिं०स्त्री०) देखो तन्द्रा ।
तंदुल-(हिं०पुं०) देखो तण्डुल, चावल ।
तंदूरी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का उत्तम महीन रेशम, (वि०) तंदूर में बनाया हुआ ।
तन्देही-(हिं०स्त्री०) प्रयत्न, प्रयास, आज्ञा ।
तंद्रा-(सं०स्त्री०) ऊँघ, ऊँघाई । तंद्रालु-(हि०वि०) ऊँघनेवाला ।
तंबाकू-(हिं०पुं०) देखो तमाखू ।
तँबिया (हिं०पुं०) ताँबे का छोटा तसला ।
तबियाना-(हिं०क्रि०) ताँबे के रंग का होना, ताँबे का स्वाद या गन्ध आ जाना ।
तंबू-(हिं०पुं०) डेरा, शिविर ।
तंबूल-(हिं०पुं०) पान; देखो ताम्बूल ।
तंबोलिन-(हिं०स्त्री०) पान बेंचनेवाली स्त्री, तमोलिन ।
तहबोली-(हिं० पुं०) पान बेंचनेवाला, मनुष्य, बरई ।
तँवार-(हिं०स्त्री०) चक्कर, घुमटा ।
तक-(हिं० अव्य०) किसी वस्तु या व्यापार की सीमा अथवा अवधि सूचित करने वाली एक विभाक्त, पर्यन्त ।
तकन-(हिं० स्त्री०) ताकने की क्रिया, दृष्टि ।
तकना-(हिं०क्रि०) निहारना, देखना ।
तकला-(हिं०पुं०) टेकुआ । तकली-(हिं०स्त्री०) छोटा तकला, टेकुरी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तकवाना-(हिं०क्रि०) देखने का काम दूसरे से कराना।
तकाई-(हिं०स्त्री०) देखने की क्रिया या भाव।
तकान-(हिं०स्त्री०) देखो थकान, थकावट।
तकाना-(हिं०क्रि०) दिखाना, बतलाना
तकार-(सं०नपुं०) 'त' स्वरूप अक्षर।
तक्र-(सं०नपुं०) मठा, छाछ।
तक्षण-(सं०नपुं०) बढ़ई, मूर्ति बनानेका काम।
तगड़ा-(हिं०वि०) बलवान, सबल, पुष्ट
तगना-(हिं०क्रि०) सिला जाना।
तगाई-(हिं०स्त्री०) सिलाई का काम।
तगाड़, (-र), तगाड़ा-(हिं०पुं०) वह कुण्ड जिसमें मसाला, चूना आदि जोड़ाई करने के लिये साना जाता है।
तगाना-(हिं०क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।
तगियाना-(हिं०क्रि०) देखो तागना।
तङ्क-(सं०पुं०) प्रिय के विरह से उत्पन्न सन्ताप, भय।
तंचना-(हिं०क्रि०) तपना, जलना।
तचाना-(हिं०क्रि०) जलाना, दुखी करना।
तचित-(हिं०वि०) दुःखित। **तच्छक**-(हिं०पुं०) देखो तक्षक।
तच्छिन-(हिं० क्रि० वि०) तत्क्षण, तत्काल।
तच्छील-(सं०वि०) स्वभाव से ही काम करनेवाला।
तजन-(हिं०पुं०) त्याग, परित्याग की क्रिया।
तजना-(हिं०क्रि०') त्यागना, छोड़ना।
तज्ञ-(सं०वि०) तत्व को जानन वाला। ज्ञानी।
तटंक-(हिं०पुं०) कर्णफूल।
तट-(सं०पु०, नपुं०) नदी आदि का किनारा, तीर, कूल।
तटका-(हिं०वि०) देखो टटका, ताजा
तटनी-(हिं०स्त्री०) नदी, सरिता।
तटस्थ-(सं०वि०) निरपेक्ष, उदासीन प्रकृति का।
तटाक-(सं०पुं०) सरोवर, तालाब।
तटिनी-(सं०स्त्री०) नदी, सरिता।
तटी-(सं०स्त्री०) तीर, किनारा, नदी।
तड़-(हिं०पुं०) स्थल, थप्पड़ आदि मारनें या किसी वस्तु के पटकने से उत्पन्न शब्द।
तड़क-(हिं०स्त्री०) तड़कने की क्रिया, स्वाद लेने की इच्छा, (पुं०) चमक दमक। **तड़कना**-(हिं०क्रि०) चटकना।
तड़का-(हिं०पु०) प्रभातकाल, बघार।
तड़काना-(हिं० क्रि०) तोड़ना, क्रोध दिखलाना।
तड़प-(हिं० स्त्री०) चमक, भड़क, कूदने का काम। **तड़पाना**-(हिं० क्रि०) अधिक पीड़ा के कारण तड़फड़ाना, गरजना।
तड़बंदी-(हिं० स्त्री०) जाति अथवा समाज में पृथक् पृथक् पक्षों का बनना।
तड़ाक-(सं०पुं०) तड़ाग, (क्रि०वि०) तड़ाक शब्द के साथ, चटपट।
तड़ाका-(सं० स्त्री०) आघात चोट, (क्रि० वि०) तुरत।
तड़ाग-(सं० पुं०) सरोवर, पुष्कल, ताल।
तड़ातड़-(हिं० क्रि० वि०) तड़ तड़ शब्द करते हुए। **तड़ाना**-(हि०क्रि०) ताड़ने के लिये किसी दूसरे को प्रवृत्त करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तड़ावा-(हिं० स्त्री०) आडम्बर, छल, कपट ।
तडित्-(सं० स्त्री०) विद्युत् बिजली;
तड़िया-(हिं०स्त्री०) समुद्र के तटकी वायु
तड़ी-(हि०स्त्री०) चपत, धौल, छल,
तत्-(सं०नपुं०)हेतु, के लिये, (सर्व०) उस, वह।
ततकाल--(हिं०क्रि०वि०) देखो तत्काल
ततताथेई-(हिं०स्त्री०)नाचने का शब्द या बोल ।
तताई-(हिं०स्त्री०) उष्णता, गरमी।
ततारना-(हिं०क्रि०) गरम पानी से धोना ।
तति-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति ।
ततैया-(हिं०स्त्री०) हड्डा, भिड़, बर्रे; (वि०) तीव्र कष्ट देनेवाला ।
तत्कालीन-(सं०वि०) उसी काल या समय का ।
तत्क्षण-(सं०पुं०) उसी समय, तत्काल।
तत्ता-(हिं०पुं०) उष्ण, गरम ।
तत्तुल्य-(सं०वि०) उसके समान ।
तत्तोथबो-(हिं०पुं०) बहलावा, बीच-बचाव ।
तत्व-(सं०नपुं०) यथार्थता, वास्तविक स्थिति, स्वरूप, सार वस्तु, साराँश, पंचभूत ।
तत्वज्ञ-(सं०वि०) तत्वज्ञानी, जिसको ईश्वर विषयक ज्ञान हो । तत्वज्ञान-(सं०नपुं०) ब्रह्मज्ञान, आत्मज्ञान, तत्वज्ञानी-(सं०पुं०) तत्वज्ञ, दार्शनिक
तत्वतः-(सं०अव्य०) वस्तुतः ।
तत्वविद्-(सं०पुं०) तत्ववेत्ता ।
तत्व-(हिं०वि०) मुख्य, प्रधान, (पुं०) शक्ति, बल ।
तत्वपद-(सं०नपुं०) परमपद, निर्वाण।
तत्पर-(सं०वि०) उद्यत, सन्नद्ध, तैयार, निपुण, दक्ष, चतुर । तत्परता-(सं० स्त्री०) निपुणता, दक्षता ।
तत्पुरुष-(सं०पु०) व्याकरण में एक प्रकार का समास जिसमें उत्तर पद की प्रधानता होती है ।
तत्पूर्व-(सं०वि०) सर्वप्रथम, सबसे पहला
तत्प्रकार-(सं०त्रि०) उसी तरह ।
तत्र-(सं०क्रि०वि०) उस स्थान पर, वहाँ । तत्रभवान्-(सं०वि०) पूज्य मान्य, प्रशंसनीय, श्रेष्ठ ।
तत्रापि-(सं०अव्य०) तथापि, तौभी ।
तत्सदृश-(सं०वि०) तथाविध, उसके समान । तत्सम-(सं०पुं०) हिन्दी प्राकृत आदि भाषा में प्रयोग होने वाली संस्कृत का शब्द ।
तथा-(सं०अव्य०) इसी तरह, ऐसे ही।
तथाच-((सं०अव्य०) तथापि, तौभी;
तथापि-(सं०अव्य०) तिस पर भी, तौभी ।
तथाभावी-(सं०वि०) उसी स्वभाव का
तथाभूत-(सं०वि०) उसी प्रकार से होता हुआ । तथास्तु-(सं०अव्य०) वैसा ही हो ।
तथ्य-(सं०नपुं०) यथार्थता, सत्य, सचाई । तदधिक-(सं० वि०) उसके अतिरिक्त ।
तदन्त-(सं०वि०) उसी प्रकार समाप्त होना ।
तदन्तर, तदनन्तर-(सं० नपुं०) उसके उपरान्त ।
तदनु-(सं०क्रि०वि०) तदन्तर । तदनुसार-(सं०वि०) उसके अनुकूल ।
तदपि-(सं०अव्य०) तथापि, तौभी ।
तदर्थ-(सं०क्रि०वि०) उसके लिये, उस प्रयोजन से ।
तदवधि-(सं०क्रि०वि०) तबतक ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदा-(सं०अव्य०) उस समय, तब।
तदाकार-(सं०वि०) उसी आकार का।
तदात्मा-(सं०वि०) उसी के सदृश।
तदानीं-(सं०अव्य०) उसी समय, तब
तदीय-(सं०वि०) उससे संबंध रखने वाला, तत्संबंधी, उसका।
तदुपरान्त-(सं०अव्य०) उसके पीछे।
तदुपरि-(सं०क्रि०वि०) उसके ऊपर
तद्गत-(सं०वि०) उससे संबंध रखने वाला, उसके अन्तर्गत।
तद्दिन-(सं०वि०) कृपण, कंजूस।
तद्धित-(सं०नपुं०) व्याकरण में एक प्रकार का प्रत्यय जिसको संज्ञा में जोड़कर नया शब्द बनाया जाता है—जैसे भिन्न से भिन्नता।
तद्भव-(सं०पुं०) संस्कृत शब्द का अपभ्रंश रूप जो भाषा में प्रयोग होता है जैसे चक्र—चक्कर।
तद्यपि-(हिं०अव्य०) तथापि, तौभी।
तद्वत्-(सं०अव्य०) ज्यों का त्यों, उसकी नाईं।
तद्व्यतिरिक्त-(सं०वि०) उसके सिवाय
तनत्राण-(हिं०पुं०) कवच।
तनतना-(हिं०पुं०) क्रोध, प्रभाव।
तनतनाना-(हिं०क्रि०) क्रोध करना।
तनदिही-(हिं०स्त्री०) उद्योग, प्रयत्न।
तनधर-(हिं०वि०) देखो तनुधारी।
तनना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ का फैलाना, वेग से खिंचना, अकड़कर खड़ा होना, गर्व से ऐंठना।
तनपात-(हिं०पुं०) देखो तनुपात।
तनपोषक-(हिं०वि०) स्वार्थी।
तनमय-(हिं०वि०) देखो तन्मय।
तनय-(सं०पु०) पुत्र, लड़का, बेटा।
तनया-(सं०स्त्री०) कन्या, पुत्री, बेटी।
तनराग-(हिं०पुं०) देखो तनुराग।
तनरुद्ध-(हिं०पुं०) रोवाँ, पंख।
तनवाना-(हिं०क्रि०) तानने का काम दूसरे से कराना।
तनाई, तनाउ-(हिं०स्त्री०) देखो तनाव।
तनाकु-(हिं०क्रि०वि०) तनिक, थोड़ा।
तनाना-(हिं०क्रि०) तानने का काम दूसरे से कराना।
तनाय, तनाव-(हिं०पुं०) तानने का भाव या क्रिया।
तनि, तनिक-(हिं०वि०) अल्पमात्र, थोड़ा, कम, (क्रि०वि०) थोड़ा।
तनियाँ-(हिं०स्त्री०) लँगोट, कौपीन,
तनी-(हिं०स्त्री०) अंगरखे आदि में पल्ला बाँधने के लिये लगा हुआ बन्द।
तनु-(सं०स्त्री०) शरीर, देह, चमड़ा, त्वचा, (स्त्री०) केंचुली (वि०) कृश, दुबला पतला, अल्प सुन्दर, कोमल।
तनुज-(सं०पुं०) पुत्र, लड़का, बेटा।
तनुजा-(सं०स्त्री०) पुत्री, बेटी, लड़की।
तनुता-(सं०स्त्री०) कृशता, दुर्बलता, छोटाई।
तनुत्याग-(सं०पुं०) देहत्याग।
तनुत्राण-(सं०नपुं०) वह वस्तु जिससे शरीर की रक्षा हो, कवच।
तनुभव-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा,
तनू-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा, शरीर,
तनुरुह-(सं०नपुं०) रोम, रोवाँ, पुत्र,
तनैना, तनैना-(हिं०वि०) तिरछा, खिंचा हुआ, टेढ़ा, क्रुद्ध।
तन्नै-(हिं०पुं०) देखो तनय, बेटा।
तनोज-(हिं०पुं०) रोंवाँ, पुत्र।
तनोरुह-(हिं०पुं०) देखो तनूरुह।
तन्तु-(सं०पुं०) सूत, तागा, सन्तान, ताँत, विस्तार, फैलाव।
तन्तुकीट-(सं०पुं०) रेशम का कीड़ा।
तन्तुनाभ-(सं०पुं०) लूता, मकड़ी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तन्तुशाला-(सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर कपड़ा बीना जाता है।
तन्त्र-(सं०नपुं०) सामग्री, राज्य, शासन आनन्द, घर, सम्पत्ति, दल, समुदाय, उद्देश्य, दृढ़ विचार, उपाय।
तन्द्रता-(सं०स्त्री०) ऊँचाई, ऊँघ, आलस्य।
तन्द्रालु-(सं०वि०) आलस्ययुक्त, आलसी।
तन्द्रिता-(सं०स्त्री०) निद्रालुता, आलस्य
तन्द्री-(सं०स्त्री०) तन्द्रा, ऊँघ।
तन्ना-(हिं०पुं०) बुनाई में लंबे बल का सूत जो ताना जाता है।
तन्ती-(हिं०स्त्री०) तराजू की रस्सी जिसमें पल्ला बंधा होता है।
तन्मय-(सं०वि०) दत्तचित्त, मन लगाये हुए, लवलीन।
तन्मनस्क-((वि०) तन्मय।
तप-(सं०पुं०) तपस्या, ग्रीष्मकाल,
तपकना-(हिं०क्रि०) टपकना, उछलना।
तपन-(सं०पुं०) सूर्य, ग्रीष्मकाल। जलन, दाह, ताप, आँच, धूप।
तपनमणि-(सं०पुं०) सूर्यकान्त मणि।
तपना-(हिं०क्रि०) गरम होना, गरमी फैलाना, तपस्या करना।
तपनी-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर बैठकर जाड़े के दिनों में लोग आग तापते हैं, कौड़ा।
तपभूमि-(हिं०स्त्री०) तपोभूमि।
तपवाना-(हिं०क्रि०) गरम करने का काम दूसरे से कराना।
तपश्चरण, तपश्चर्या-(सं०स्त्री०) तप, तपस्या।
तपसाली-(हिं०पुं०) तपस्वी।
तपसी-(हिं०पुं०) तपस्या करने वाला
तपस्या-(सं०स्त्री०) तप, व्रतचर्या,
तपस्विनी-(सं०स्त्री०) तपस्या करने वाली स्त्री।
तपस्वी-(सं०पु०) तपस्या करने वाला मनुष्य।
तपा-(सं०पुं०) ग्रीष्मऋतु।
तपाना-(हिं०क्रि०) तप्त करना।
तपान्त-(सं०पुं०) ग्रीष्म ऋतु का अन्त
तपाव-(हिं०पुं०) ताप, गरमाहट।
तपित-(सं०वि०) तप्त, उष्ण, गरम।
तपिया-(हिं०पुं०) तपस्वी।
तपी-(हिं०पुं०) तपस्वी, ऋषि, सूर्य।
तपेला-(हिं०पुं०) भट्ठी।
तपोड़ी-(हि०स्त्री०) काठ का बना हुआ पात्र।
तपोबल-(सं०पुं०) तप का प्रभाव या शक्ति। तपोवन-((सं०नपूं०) मुनियों का आश्रय स्थान। तपोवृद्ध-(सं०वि०) जो तपस्या द्वारा श्रेष्ठ हो।
तप्त-(सं०वि०) दग्ध, तपा हुआ, गरम, दुःखित, पीड़ित। तप्तमुद्रा-(सं०स्त्री०) शंख, चक्र आदि के लोहे या पीतल के छापे जिनको तपा कर वैष्णव लोग अपने शरीर पर दागते हैं।
तब-(हिं०अव्य०) उस समय, इसलिये
तबेला-(हिं०पुं०) घोड़साल।
तब्बर-(हिं०पुं०) पुत्र।
तभी-(हिं०पुं०) उसी समय, इस कारण से।
तम-(सं०नपुं०) अन्धकार, अंधेरा। (पु०) मोह, अविद्या।
तमक-(सं०पुं०) उद्वेग, तीव्रता, क्रोध,
तमकना-(हिं०क्रि०) क्रोध का आवेश दिलाना।
तमगुन-(हिं०पुं०) देखो तमोगुण।
तमङ्ग तमंगक-(सं०पुं०) मचान।
तमचर-(हिं०पुं०) राक्षस।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तमतमाना-(हिं०क्रि०) अधिक गरमी या क्रोध के कारण चेहरा लाल होना, चमकना।
तमता-(सं०स्त्री०) अंधकार, अंधेरा।
तमस-(सं०नपुं०) अन्धकार, अज्ञान।
तमलेट-(हिं०पुं०) एक प्रकार का टीन या लोहे का छोटा पात्र।
तमाँचा-(हिं०पुं०) देखो तमाचा।
तमाखू-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का प्रसिद्ध पौधा जिसके पत्ते तथा डंठल को लोग खाते और जलाकर धूम्रपान करते हैं।
तमाचारी-(सं०पुं०) निशाचर, राक्षस
तमारि-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
तमिस्र-(सं०पुं०) अन्धकार, क्रोध।
तमी-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात; **तमीचर**-(सं०पुं०) निशाचर, दैत्य।
तमीपति, तमीश-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
तमोघ्न-(सं०वि०) अन्धकार को नाश करने वाला, (पुं०) सूर्य, चन्द्रमा।
तमोभित्-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू; (वि०) अंधेरा दूर करने वाला।
तमोभूत-(सं०वि०) अंधेरा किया हुआ अज्ञानी, मूर्ख।
तमोमय-(सं०वि०) अन्धकारपूर्ण,
तमोर-(हिं०पुं०) ताम्बूल, पान।
तमोलिन-(हिं०स्त्री०) तमोली की स्त्री। **तमोली**-(हिं०पुं०) तंबोली, पान बेंचनेवाला।
तयना-(हिं०क्रि०) देखो तपना।
तयार-(हिं०वि०) बनाया हुआ।
तरंगा-(हिं०पुं०) लहर।
तर-(सं०प्रत्य०) जो गुण वाचक शब्दों में दो वस्तुओं में से एक का उत्कर्ष या अपकर्ष सूचित करने के लिये योग होता है यथा—श्रेष्टतर, कष्टतर
तरई-(हिं०स्त्री०) तारा, नक्षत्र।
तरक-(हिं०स्त्री०) देखो तड़क, (पुं०) शोच विचार, तर्क, वह अक्षर या शब्द जो पृष्ठ के समाप्त होने पर उसके नीचे किनारे की ओर लिखा जाता है।
तरकना-(हिं०क्रि०) तर्क करना, शोच विचार करना, उछलना, कूदना।
तरकस-(हिं०पुं०) तीर रखने का चोंगा।
तरकी-(हिं०स्त्री०) कान में पहिरने का एक प्रकार का गहना।
तरखा-(हिं०स्त्री०) जल का तीव्र प्रवाह,
तरङ्ग-(सं०पुं०) लहर, हिलोरा, मन की मौज।
तरङ्गिणी-(सं०स्त्री०) सरिता, नदी।
तरङ्गित-(सं०वि०) लहराता हुआ, चञ्चल, चपल, नीचे ऊपर उठता हुआ।
तरङ्गी-(सं०वि०) तरंग युक्त, मनमौजी।
तरजना-(हिं०क्रि०) डाँटना, डपटना।
तरजील-(हिं०वि०) क्रोध युक्त।
तरजनी-(हिं०स्त्री०) अंगूठे के पासकी अंगुली।
तरण-(सं०पुं०) पानी पर तैरने वाला पटरा, बेड़ा; (नपुं०) बेड़े पर बैठ कर दूर देश को जाना, नदी पार करने की क्रिया, निस्तार, उद्धार।
तरणि-(सं०पुं०) बेड़ा, किरण, नाव,
तरणी-(सं०स्त्री०) नौका, नाव।
तरतम-(सं०वि०) न्यूनाधिक, थोड़ा बहुत।
तरतराना-(हिं०क्रि०) तड़तड़ शब्द करना।
तरन-(हिं०पुं०) देखो तरण। **तरनतार**-(हिं०पुं०) निस्तार, मुक्ति, मोक्ष
तरनतारन-(हिं०पुं०) मोक्ष, निस्तार उद्धार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तरना-(हिं०क्रि०) पार करना, मुक्त होना, उद्धार होना।
तरनि-(हिं०स्त्री०) देखो तरणि।
तरनी-(हिं०स्त्री०) नौका, नाव, मिठाई का थाल या खोचमा रखने का छोटा मोढा।
तरन्ती-(सं०स्त्री०) नौका, नाव।
तरपन-(हिं०पुं०) देखो तर्पण।
तरपना-(क्रि०वि०) देखो तड़पना।
तरपर-(हिं०क्रि०वि०) नीचे ऊपर।
तरबूजिया-(हिं०वि०) तरबूज के छिलके के रंग का।
तरराना-(हिं०क्रि०) ऐंठना।
तरल-(सं०वि०) चंचल, हिलता हुआ, चपल, बहनेवाला, द्रव।
तरलाई-(हिं०स्त्री०) द्रवत्व, चंचलता।
तरलित-(सं०वि०) थरथराता हुआ।
तरवड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटी तराजूका पलड़ा।
तरवन-(हिं०पुं०) करनफूल।
तरवरिया-(हिं०पुं०) खड्ग चलानेवाला
तरवा-(हिं०पुं०) देखो तलवा।
तरवाई सिवाई-(हिं० स्त्री०) ऊँची नीची भूमि।
तरवार-(हिं०स्त्री०) करवाल, खड्ग।
तरस-(हिं०पुं०) दया, करुणा।
तरासाना-(हिं०क्रि०) ललचाना।
तरस्थान-(सं०नपुं०) नाव से उतरने चढ़ने का स्थान, घाट।
तरस्वी-(सं०वि०) शूरीर।
तरहर-(हिं०क्रि०वि०) नीचे की ओर, (वि०) नीचे का, निकृष्ट, अधम, बुरा
तराई-(हिं०स्त्री०) पहाड़ के नीचे की घाटी।
तराबोर-(हिं०वि०) भींगा हुआ।
तरायला-(हिं०वि०) चपल, तीव्र।
तरारा-(हिं०पुं०) उछाल, छलांग, किसी वस्तु पर निरन्तर गिरने वाली जल की धारा।
तरिका-(हिं०पुं०) कानमें पहिरने का एक गहना, तरकी।
तरित-(सं०वि०) पार किया हुआ।
तरियाना-(हिं०क्रि०) तल में बैठाना।
तरिवन-(हिं०पुं०) तरकी, करनफूल।
तरिवर-(हिं०पुं०) देखो तरुवर, श्रेष्ठ वृक्ष।
तरिहँत-(हिं०क्रि०वि०) तल में, नीचे।
तरु-(सं०पुं०) वृक्ष, गाछ, पेड़।
तरुज-(सं०वि०) वृक्ष से उत्पन्न।
तरुजीवन-(सं०नपुं०) पेड़ की जड़।
तरुणा-(सं०वि०) युवा, नूतन, नया।
तरुणाई-(हिं०पुं०) युवावस्था, जवानी,
तरुणी-(सं०स्त्री०) युवती।
तरुन-(हिं०पुं०) देखो तरुण।
तरुनाई-(हिं०स्त्री०) युववस्था, जवानी।
तरुनापा-(हिं०पुं०) युवावस्था, जवानी।
तरुबांही-(हिं०स्त्री०) वृक्ष की शाखा।
तरुमृग-(सं०पुं०) शाखामृग, बन्दर।
तरेंदा-(सं०पुं०) जलके तलपर तैंरता हुआ काठ, बेड़ा।
तरे-(हिं०क्रि० वि०) नीचे की ओर, नीचे।
तरेरना-(हिं० क्रि०) दृष्टि कुपित करना।
तरोवर-(हिं०पुं०) देखो तरुवर, श्रेष्ठ वृक्ष।
तरौंस-(हिं०पुं०) तट, किनारा।
तरौना-(हिं०पुं०) स्त्रियों के कान में पहिरने की तरकी, कर्णफूल, मिठाई का खोमचा रखने का मोढा।
तर्क-(सं०पुं०) आकांक्षा, परीक्षा, विचार मीमांसा शास्त्र, तर्कशास्त्र, व्यंग,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताना; तर्कवितर्क-(सं०पुं०) विवेचना, वादाविवाद; तर्क विद्या-(सं०स्त्री०) न्यायशास्त्र।

तर्कित-(सं०वि०) आलोचित, विचारा हुआ, अनुमान किया हुआ; तर्की-(हिं०वि०) तर्क करने वाला।

तर्कुट-(सं०नपुं०) कर्तन, कातना; तर्कुटी-(सं०स्त्री०) तकला, टेकुआ।

तर्जन-(सं०नपुं०) तिरस्कार, फटकार

तर्जनी-(सं० स्त्री०) अंगूठी के पास की हाथ की अंगुली।

तर्जित-(सं०वि०) अपमान किया हुआ।

तर्पण-(सं०पुं०) सन्तोष होने की क्रिया, देवर्षि, पितर आदि को सन्तुष्ट करने के लिये अंजुलि में पानी भर कर जलदान देनेकी क्रिया।

तर्पित-(सं०वि०) सन्तुष्ट किया हुआ।

तर्पी-(सं०वि०) सन्तुष्ट करने वाला।

तर्हि-(सं०अव्य०) उस समय, तब।

तल-(सं०पुं०) घर की छत, थप्पड़, तमाचा, अधोभाग, पेंदी, पाताल, हथेली, पैर का तलवा।

तलक-(हिं०अव्य०) तर्यन्त, तक।

तलकर-(हिं०पुं०) वह कर या लगान जो भूस्वामी सूखे तालाब की भूमि पर लगाता है।

तलगू-(हिं०स्त्री०) तैलंग दशकी भाषा

तलघरा-(हिं०पुं०) भूमिगृह।

तलछट-(हिं०स्त्री०) किसी द्रव पदार्थ के नीच बैठी हुई मैल, तलौंछ, गाद।

तलध्वनि-(सं०पुं०) हथेली (ताली) बजाने का शब्द।

तलना-(हिं०क्रि०) घी या तेल को गला कर इसमें किसी वस्तु को पकाना।

तलप-(हिं०पुं०) देखो तल्प।

तलपट-(हिं०वि०) नष्ट, चौपट।

तलप्रहार-(सं०पुं०) थप्पड़, तमाचा,

तलफना-(हिं०क्रि०) छटपटाना।

तलबेली-(हिं०स्त्री०) उत्कण्ठा, आतुरता।

तलमल-(सं०पुं०) तलछट, तरौंछ।

तलमलाना-(हिं०क्रि०) छटपटाना।

तलमलाहट-(हिं०स्त्री०) व्याकुलता।

तलयुद्ध-(सं०नपुं०) मुक्के से लड़ाई करने की क्रिया।

तलवा-(हिं०पुं०) पैर के नीचे का भाग।

तलवार-(हिं०स्त्री०) करवाल, असि, खड्ग, कृपाण।

तलहटी-(हिं०स्त्री०) पहाड़की तराई।

तला-(हिं०पुं०) किसी वस्तु के नीचेका तल, पेंदी, जूते के नीचे का चमड़ा।

तलाब-(हिं०पुं०) तालाव, ताल।

तलिन-(सं०नपुं०) शय्या, पलंग।

तलिया-(हिं०स्त्री०) समुद्र का थाह।

तली-(हिं०स्त्री०) तल, पेंदी, तलछट, तलौंछ।

तले-(हिं०क्रि०वि०) नीचे, नीचें की ओर

तलेटी-(हिं०स्त्री०) तराई, घाटी।

तलैया-(हिं०स्त्री०) छोटा ताल।

तलौंछ-(हिं०स्त्री०) तलछट।

तल्प-(सं०पुं०) पलंग, शय्या।

तल्ला-(हिं०पुं०) तले की परत, अस्तर।

तल्लिका-(सं०स्त्री०) कुञ्जिका, कुञ्जी।

तल्ली-(सं०स्त्री०) नौका, नाव, युवती।

तवनी-(हिं०स्त्री०) छोटा तवा।

तवना-(हिं०क्रि०) तपना, गरम होना, कुढ़ना।

तवर्ग-(सं०पुं०) त, थ, द, ध, न, न-ये पाँच अक्षर। तवर्गीय-(सं०वि०) तवर्ग से उत्पन्न वर्ण।

तवारा-(हिं०पुं०') दाह, ताप, जलन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस-(हिं०वि०) तैसा, वैसा ।
तसली-(हिं०स्त्री०) छोटा तसला ।
तसू-(हिं०पुं०) इमारती गज का चौबीसवाँ अंश जो प्रायः सवा इंच के बराबर होता है ।
तस्कर-(सं० पुं०) चोर, चोट्टा ।
तस्करी-(सं०स्त्री०) चोर की स्त्री, चोरी का काम ।
तस्मात्-(सं०अव्य०) इस कारण से, इस लिये ।
तस्सू-(हिं०पुं०) देखो तसू ।
तहँ, तहँवाँ-(हिं० क्रि० वि०) उस स्थान पर ।
तह-(हिं०स्त्री०) परत, तल, पेंदी, थाह, झिल्ली, महीन पटल ।
तहरी-(हिं०स्त्री०) बरी और चावल की खिचड़ी, मटर की खिचड़ी ।
तहां-(हिं०क्रि०वि०) वहाँ, उस स्थान पर ।
तहाना-(हिं०क्रि०) लपेटना, तह करना
तहियाँ-(हिं०क्रि०वि०) उस समय, तब ।
तहियाना-(हिं०क्रि०) तह लगाना ।
ताहीं-(हिं०क्रि०वि०) उसी स्थान पर, वहीं ।
ता-(सं०पुं०) विशेषण तथा संज्ञा शब्दों में लगाने का एक भाव वाचक प्रत्यय, (सर्व०) उस, (वि०) उसका ।
ताइ-(हिं०स्त्री०) ताप, जाड़ा, चाची ।
ताईं-(हिं०अव्य०) पर्यन्त, समीप, निकट, पास ।
ताऊ-(हिं०पुं०) बड़ा चाचा ।
ताँगा-(हिं०पुं०) देखो टाँगा ।
ताँत-(ह०स्त्री०) चमड़े या पशुओं की नसों से बनी हुई डोरी ।
तातड़ी-(हिं०स्त्री०) ताँत, तन्तु ।
ताँता-(हिं०पुं०) पंक्ति ।
ताँति-(हिं०स्त्री०) देखो तांत, तन्त्र ।
ताँतिया-(हिं०वि०) जो ताँत की तरह पतला हो ।
ताँती-(हिं०स्त्री०) पंक्ति, क्रम ।
ताँबा-(हिं०पुं०) ताम्र, लाल रंग का एक मुलायम धातु जो पीटने से बढ़ सकता है ।
ताँबुल-(हिं०पुं०) पान ।
ताँवर-(हिं०स्त्री०) ताप जूड़ी, मूर्छा ।
ताँसना-(हिं०क्रि०) डाटना, डपटना ।
ताक-(हिं०स्त्री०) अवलोकन, टकटकी, प्रतीक्षा ।
ताकमांक-(हिं०स्त्री०) देखभाल, छिपकर देखने की क्रिया, अन्वेषण, खोज ।
ताकना-(हिं०क्रि०) देखना, रखवाली करना, टकटकी लगाना ।
ताग-(हिं०पुं०) देखो तागा ।
तागड़ी-(हिं०स्त्री०) कटिसूत्र, करधनी ।
तागना-(हिं०क्रि०) सिलाई करना ।
तागा-(हिं०पुं०) सूत, डोरा, धागा,
ताजन, ताजना-(हिं०पुं०) चाबुक, कीड़ा ।
ताटंक-(सं०पुं०) तरकी, करनफूल ।
ताड़-(सं०पुं०) ताडन, प्रहार, आघात ।
ताड़क-(सं०वि०) प्रहार करनेवाला ।
ताडन-(सं०नपुं०) आघात, प्रहार, शासन, दण्ड, डाँटडपट, घुड़की ।
ताड़ना-(सं०स्त्री०) प्रहार, शासन, कष्ट, (हिं०क्रि०) डाँटना, डपटना, दण्ड देना, मारना, पीटना, छिपी हुई बात का पता लगा लना ।
ताड़नी-(हिं०स्त्री०) कोड़ा, चाबुक ।
ताड़नीय-(सं०वि०) शासन करने योग्य, दण्ड देने योग्य ।
ताड़पत्र-(सं०नपुं०) ताड़ का पत्ता ।
ताड़ित-(सं०वि०) दण्डित, दूरी कृत ।
ताड़ी-(हिं०स्त्री०) वह मादक रस जो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ताड़ के फूलते हुए डंठलों में से निकलता है।

ताड़्य-(सं०वि०) ताड़न योग्य।

ताण्डव-(सं०पुं०) नृत्य, नाच, पुरुष का नाच।

तात-(सं०पुं०) पिता, बाप,, प्यार का शब्द जो भाई बन्धु विशष कर अपने से छोटे के लिये व्यवहार किया जाता है, (हिं०वि०) गरम, उष्ण।

ताता-(हिं०वि०)तपा हुआ, उष्ण, गरम

तातथई-(हिं०स्त्री०) नाचने में पाद-विक्षेप का शब्द।

तात्पर्य-(सं०नपुं०)आशय, अभिप्राय।

तात्विक-(सं०वि०)तत्वज्ञान सम्बन्धी।

तादर्थिक-(सं०वि०)उसी अर्थका, उसी तरह का। **तादात्म्य**-(सं०नपुं०) तत्स्वरूपता।

तादृश-(सं०वि०) उसी तरह, उसी के समान, तत्तुल्य। **तादृशी**-(सं०स्त्री०) उसी के समान, वैसी।

ताधर्म्य-(सं० नपुं०) एक धर्म, एक नियमता।

तान-(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव,खींच, लय का विस्तार, आलाप।

तानना-(हिं०क्रि०) वेग से खींचना, बढ़ाना, प्रहार के लिये अस्त्र उठाना, परदा लगाना।

तानपूरा-(हिं०पुं०) तम्बूरा।

ताना-(हिं०पुं०) कपड़े की बुनावट में वह सूत जो लंबाई के बल में रहता है।

ताना-(हिं०क्रि०)तपाना, गरम करना, जाँचना।

तानारीरी-(हिं०स्त्री०) सामान्य गायन

तानी-(हिं०स्त्री०) कपड़े की बुनाव में वह सूत जो लंबाई के बल हो।

तान्तव-(सं०नपुं०) वस्त्र, कपड़ा।

तान्त्रिक-(सं०वि०) तन्त्र शास्त्र को जानने वाला।

ताप-(सं०पुं०) उष्णता, आँच की लपट, ज्वर, कष्ट, यातना।

तापतिल्ली-(हिं०स्त्री०)प्लीहा रोग।

तापना-(हिं०क्रि०) अग्नि की गरमी से अपने शरीर को गरम करना, फूँकना, नष्ट करना।

तापमान यन्त्र-(सं०पुं०) गरमी की मात्रा नापने का यन्त्र, जिसको अंग्रजी में थर्मामिटर कहत हैं।

तापस-(सं०पुं०) तपस्या करने वाला,

तापसी-(सं०स्त्री०)तपस्या करनेवाली स्त्री।

तापहर-(सं०वि०) ज्वर को दूर करने वाला।

तापित-(सं०वि०) जो तपाया गया हो, दुःखित, पीड़ित। **तापी**-(सं०वि०) ताप देने वाला।

ताबड़तोड़-(हिं०क्रि०वि०) लगातार, क्रम से, बराबर।

ताम-(सं०पुं०)क्लेश,व्याकुलता, पाप; (हिं०पुं०) क्रोध, अन्धकार, अँधेरा।

तामड़ा-(हिं०वि०) ताँबे के समान रंग का, (पुं०) ऊदे रंग का एक प्रकारका पत्थर।

तामरस-(सं०नपुं०) कमल, सोना, तांबा।

तामरसी-(सं०स्त्री०)पद्मिनी,कमलिनी।

तामस-(सं०पुं०) क्रोध, अज्ञान, मोह, अन्धकार, अँधेरा। **तामसी**-(सं० वि०) तमोगुण वाली।

ताम्बुली, ताम्बूल-(सं०)नागवल्ली,पान।

ताम्र-(सं०नपुं०) तांबा नामक धातु।

ताम्रकार-(सं०पुं०) कसेरा जाति।

ताम्रपट्ट, ताम्रपत्र-(सं० पुं०) तांबे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की चद्दर का टुकड़ा जिस पर प्राचीन समय में दानपत्र आदि खुदवाये जातेथे

ताँय-(हिं०अव्य०) तक।

ताय-(हिं०पुं०) ताप, गरमी, धूप, उष्णता, जलन, (सर्व०)देखो ताहि।

तायना-(हिं०क्रि०) तपाना, गरम करना

ताया-(हिं०पुं०)पिता का बड़ा भाई।

तार-(सं०नपुं०) रूपा, चाँदी, तारण, उद्धार, नक्षत्र, तारा, (वि०) निर्मल, स्वच्छ, (नपुं०) ऊंचा स्वर, धातु का खींच कर बनाया हुआ सूत, वह सूत जिसमें से बिजली की सहायता के एक स्थान से दूसरें स्थान को समाचार भेजा जाता है, सूत्र, तागा, परम्परा, क्रम, युक्ति, उपाय, व्यवस्था, सुविधा, संगीत का एक सप्तक, करताल, मजीरा।

तारक-(सं०नपुं०) आँख की पुतली, (पुं०) नक्षत्र, तारा।

तारका-(सं०स्त्री०)तारा, नक्षत्र, आँख की पुतली।

तारघर-(हिं०पुं०) वह घर जहां से तार द्वारा समाचार भेजाजाता और प्राप्त होता है।

तारघाट-(सं०पुं०) कार्यसिद्धि का योग, व्यवस्था।

तारण-(सं०पुं०) तेली, विष्णु, (वि०) उद्धार करनेवाला, (नपुं०) पार उतरने की क्रिया, उद्धरण।

तारणि-(सं०स्त्री०) नौका, नाव।

तारतम्य-(सं०नपुं०)न्यूनाधिक्य, कमी बढ़ती का हिसाब।

तारतार-(हिं०वि०) उधड़ा हुआ।

तारन-(हिं०पुं०) देखो तारण।

तारना-(हिं०क्रि०) पार लगाना, उद्धार करना।

तारपीन-(हिं०पुं०)एक प्रकार का तेल जो चीड़ के पेड़ से निकलता है।

तारबर्की-(हिं०पुं०)वह तार जिसके द्वारा बिजली की सहायता से समाचार पहुँचाया जाता है।

तारयिता-(सं०वि०) उद्धार करने वाला।

तारहार-(सं०पुं०) बड़े बड़े मोतियों का हार।

तारा-(सं०स्त्री०) आंख की पुतली, तारा टूटना-उल्कापात; तारा डूबना-शुक्रास्त होना।

ताराधिप, ताराधीश, तारानाथ-(सं० पुं०) चन्द्रमा।

तारापथ-(सं०पुं०) आकाश।

तारामण्डल-(सं०नपुं०) नक्षत्रों का समूह।

तारिणी-(सं०वि०)उद्धार करने वाली।

तारुण-(सं० वि०) तरुण, छोटी अवस्था का।

तारुण्य-(सं०नपुं०)युवावस्था,यौवन।

तारेश-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।

तार्किक-(सं०वि०) तर्कशास्त्र को जानने वाला।

ताल-(सं०पुं०) करतल, हथेली, ताली, ताड़ का पेड़, उपनेत्र (चश्मे) के पत्थर या काँच का एक पल्ला, मजीरा झाँझ,वह शब्द जो जाँघ या बाहु पर हथेली मारने से उत्पन्न होता है, नाचने गाने में उसके काल और क्रिया का परिमाण; ताल ठोंकना-लड़नेके लिये ललकारना।

तालपत्र-(सं०नपुं०)ताड़ का पत्ता।

तालबन्द-(हिं०पुं०) वह हिसाव जिसमें आय का प्रत्येक मद अलग अलग दिखलाया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तालमेल-(हिं०पुं०) मेलजोल, सुअवसर।

तालरस-(सं०पुं०) ताड़ का मद्य, ताड़ी।

तालव्य-(सं०वि०) तालु से उच्चारण किया जाने वाला वर्ण, इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, और श-ये वर्ण तालव्य हैं

ताला-(हिं०पुं०) किवाड़ सन्दूक आदि में बन्द करने का वह यन्त्र जो विशिष्ट ताली से ही खुलता है;

ताला कुञ्जी-(हिं०स्त्री०) वह यन्त्र जिससे किवाड़ सन्दूक आदि बन्द की जाती हैं लड़कों का एक खेल।

तालाब-(हिं०पुं०) जलाशय, सरोवर।

तालबेली-(हिं०स्त्री०) व्यकुलता।

तालिका-(सं०स्त्री०) तालपात्र अथवा कागज का पुलिन्दा, सूची, ताली, कुंजी।

ताली-(सं०स्त्री०) कुंजी, मेहराब के बीचोबीच का पत्थर या ईंट, हथेलियों को परस्पर पीटने की क्रिया।

तालु-(सं०नपुं०) मुख के भीतर ऊपर की ओर की पूरी छत।

तालू-(हिं०पुं०) मुख के भीतर की उपरी छत।

तालेवर-(हिं०वि०) धनाढ्य, धनी।

ताव-(हिं०पुं०) वह उष्णता जो किसी वस्तु को गरम करने या पकाने के लिये दी जावे, क्रोध का आवेश, अहङ्कार, कागज का एक तख्ता;

तावकीन-(सं०वि०) त्वदीय, तुम्हारा।

तावत्-(सं०अव्य०) उतने परिमाणका, उतना, उतनी देर तक, वहां तक।

तावना-(हिं०क्रि०) तपाना, गरम करना।

तावन्मात्र-(सं०वि०) उतने ही परिमाण का, उतना।

तावभाव-(हिं०पुं०) परिस्थिति, अवसर।

तावर-(सं०नपुं०) धनुष की डोरी, चिल्ला।

तावरी-(हिं०स्त्री०) दाह, ताप, गर्म, धूप

तावीष-(सं०पुं०) स्वर्ग, समुद्र, सोना।

ताश-(हिं०पुं०) खेलने के लिये मोटे कागज का आयत टुकड़ा जिसपर लाल या काले रंग की बूटियाँ या तस्वीरें बनी रहती हैं।

तासु-(हिं०सर्व०) उसका।

तासों-(हिं०सर्व०) उससे।

ताहि-(हिं०सर्व०) उसको, उसे।

ताहीं-(हिं०अव्य०) ता, तई।

तिआह-(हिं०पुं०) किसी पुरुष का तीसरा विवाह।

तिकड़ी-(हिं०स्त्री०) वह जिसमें तीन कड़ियाँ हों।

तिकोना-(हिं०वि०) तीन कोने वाला, एक प्रकार का नमकीन पवकान्न, समोसा। **तिकोनिया**-(हिं०वि०) तीन कोने का, त्रिकोन।

तिक्का-(हिं०स्त्री०) वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियां रहती हैं।

तिक्ख-(हिं०वि०) तीक्ष्ण, तीखा, चोखा

तिक्त-(सं०वि०) तीते रस वाला, तीता, कड़ुवा; **तिक्तता**-(सं०स्त्री०) तीतापन, कड़ुवापन।

तिक्ष-(हिं०वि०) तीक्ष्ण, तीता, चोखा।

तिक्षता-(हिं०स्त्री०) तीक्ष्णता, चोखापन, तेजी।

तिखटी-(हिं०स्त्री०) देखो टिकठी।

तिखाई-(हिं०स्त्री०) तीक्ष्णता, तीखापन।

तिखारना-(हिं०क्रि०) सहेजना।

तिखूंटा-(हिं०वि०) त्रिकोण, जिसमें तीन कोने हों, तिकोना।

तिगना-(हिं०क्रि०) दृष्टि डालना, देखना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिगुना-(हिं०वि०) तीन गुना।
तिग्म-(सं०वि०) तीक्ष्ण, तेज। **तिग्मकर**-(सं०पुं०) सूर्य, तेज, प्रकाश। **तिग्मता**-(सं०स्त्री०) तीक्ष्णता।
तिच्छ-(हिं०वि०) तीक्ष्ण। **तिच्छन**-(हिं०वि०) तीक्ष्ण।
तिजरा-(हिं०पुं०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर, तिजारी।
तिजोरी-(हिं०स्त्री०) लोहे की सन्दूक।
तिड़ी-(हिं०स्त्री०) ताश का वह पत्ता जिसमें तीन बूटियाँ हों; **तिड़ी करना**-(हिं०क्रि०) हटा देना।
तिड़ीबिड़ी-(हिं०वि०) छितराया हुआ
तित-(हिं०क्रि०वि०) तहाँ, वहाँ, इधर की ओर, उस ओर।
तितउ-(सं०पुं०) छलनी, चलनी, छाता
तितना-(हिं०क्रि०वि०) उतने परिमाण का।
तितर बितर-(हिं०वि०) अव्यवस्थित।
तिलली-(हिं०स्त्री०) एक उड़नेवाला रङ्गबिरङ्गे परका कीड़ा या फतिंगा
तितलौआ-(हिं०पुं०) कड़ुवा कद्दू, तितलौकी।
तितिक्ष-(सं०वि०) सहनशील।
तितिक्षा-(सं०स्त्री०) सरदी गरमी सहन करने का सामर्थ्य, क्षमा, शान्ति।
तितिक्षु-(सं०वि०) क्षमाशील, सहिष्णु।
तितिर-(सं०पुं०) तितर नामका पक्षी
तितीर्षा-(सं०स्त्री०) तैरने की अभिलाषा, तर जाने की इच्छा। (सं० वि०) तैरने की इच्छा करनेवाला, जो निस्तार प्राप्त करने की इच्छा करता हो।
तित्तिर-(सं०पुं०) तीतर नामक पक्षी।
तिते-(हिं०वि०) उतने, उतनी संख्याके
तितेक-(हिं०वि०) उतना। **तितै**-(हिं०क्रि०वि०) वहां, उधर, वहीं।
तितो-(हिं०क्रि०वि०) उतना।
तिथि-(सं०स्त्री०) चान्द्रमासके अलग अलग दिन।
तिदरी-(हिं०स्त्री०) वह कोठरी जिसमें तीन खिड़कियां हों।
तिधर-(हिं०क्रि०वि०) उस ओर, उधर।
तिन-(हिं०सर्व०) 'तिस' का बहुवचन; (पुं०) तृण, तिनका।
तिनकना-(हिं०क्रि०) चिढ़ना, क्रुद्ध होना
तिनका-(हिं०पुं०) तृण, सूखी घासका टुकड़ा।
तिनगना-(हिं०क्रि०) देखो तिनकना।
तिनधरा-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की तिकोनी रेती।
तिनपहल, तिनपहला-(हिं०वि०) जिसमें तीन पहल हों, तीन पहल वाला।
तिनूका-(हिं०पुं०) तृण, तिनका।
तिन्ना-(हिं०पुं०) तिन्नी नामक धान।
तिन्नी-(हिं०स्त्री०) तालों में होनेवाला एक प्रकार का छोटा धान।
तिन्ह-(हिं०सर्व०) देखो तिन।
तिपति-(हिं०स्त्री०) देखो तृप्ति।
तिपल्ला-(हिं०वि०) जिसमें तीन परतहों
तिपाई-(हिं०स्त्री०) तीन पावे की छोटी ऊँची चौकी, तीन पल्लेकी कोई वस्तु।
तिबारा-(हिं०वि०) तीसरीबार (पुं०) वह घर या कोठरी जिसमें तीन द्वार हों, तीन बार उतारा हुआ अर्क या मद्य।
तिबासी-(हिं०वि०) वह खाद्य पदार्थ जो तीन दिन का बासी हो।
तिम-(हिं०पुं०) ढक्का, नगाड़ा, डंका।
तिमि-(हिं०अव्य०) उसी प्रकार से।
तिमिंगिल-(सं०पुं०) व्हेल नामक मछली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिमिर-(सं०पुं०) अन्धकार, अँधेरा।
तिमिरारि-(सं०पुं०) सूर्य।
तिमुहानी-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहां तीन सड़कें मिली हों।
तिय-(हिं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
तिया-(हिं०पुं०) वह ताश का पत्ता जिसमें तीन बूटियां हों।
तिरकाना-(हिं० क्रि०) रस्सा ढीला करना।
तिरखा-(हिं०स्त्री०) तृषा, प्यास।
तिरखित-(हिं०वि०) देखो तृषित।
तिरखूंटा-(हिं०वि०) तिकोना।
तिरछाई-(हिं०स्त्री०) तिरछापन।
तिरछा-(हिं०वि०) तिर्यक्, तिरश्चीन, जो ठीक सामने न जाकर इधर उधर फिर गया हो; **तिरछाई**-(हिं०स्त्री०) तिरछापन; **तिरछाना**-(हिं०क्रि०) तिरछा होना।
तिरछी-(हिं०स्त्री०) रहर के तिरछे दाने **तिरछौंहा**(हिं०वि०) जो कुछ तिरछापन लिये हो; **तिरछौंहें**-(हिं०क्रि० वि०) बक्रता से, तिरछापन लिये हुए।
तिरना-(हिं०क्रि०) पानी के तल के ऊपर रहना, तराना, मुक्त होना।
तिरनी-(हिं०स्त्री०) घाघरा बाँधनेकी डोरी, नीवी।
तिरपट; तिरपटा-(हिं०वि०) तिरछा, टेढा, ऐंचा।
तिरपन-(हिं०वि०) पचास और तीन कीसंख्याका; (पुं०) यह संख्या ५३।
तिरपाई-(हिं०स्त्री०) तीन पावे की छोटी ऊंची चौकी।
तिरपाल-(हिं०पुं०) रंग चढा हुआ टाट।
तिरपित-(हिं०वि०) देखो तृप्त, सन्तुष्ट।
तिरपौलिया-(हिं०पुं०) वह बड़ा स्थान जिसमें तीन बड़े फाटक हों।
तिरबेनी-(हिं०स्त्री०) देखो त्रिवेणी।
तिरशूल-(हिं०पुं०) देखो त्रिशूल।
तिरश्चीन-(सं०वि०) तिरछा, टेढा;
तिरसठ-(हिं०वि०) साठ और तीस संख्या का; (पुं०) साथ और तीन की संख्या ६३।
तिरस्करिणी-(सं०स्त्री०) परदा, कनात चिक, ओट, आड़। **तिरस्करी**-(हिं०-स्त्री०) परदा, चिक।
तिरस्कार-(सं०पुं०) अनादर, अपमान। **तिरस्कारी**-(सं०वि०) अपमान करने वाला। **तिरस्कृत**-(सं०वि०) अपमान किया हुआ। **तिरस्क्रिया**-(सं० स्त्री०) तिरस्कार, अपमान।
तिरानबे-(हिं०वि०) नब्बे और तीन की संख्या का, (पुं०) नब्बे और तीन की संख्या ९३।
तिराना-(हिं०स्त्री०) पानी के तल पर ठहरना, उतराना।
तिरास-(हिं०पुं०) देखो त्रास। **तिरासना**-(हिं०क्रि०) कष्ट देना।
तिरासी-(हिं०वि०) अस्सी और तीन की संख्या का, (पुं०) अस्सी और तीन की संख्या ८३।
तिराहा-(हिं०पुं०) तिरमुहानी।
तिरिन-(हिं०पुं०) तृण, घास।
तिरिया-(हिं०स्त्री०) स्त्री।
तिरीछा-(हिं०वि०) देखो तिरछा।
तिरेंदा-(हिं०पुं०) समुद्र में तैरता हुआ पीपा जो संकेत के लिये रक्खा जाता है।
तिरोगत-(सं०वि०) अदृश्य। **तिरोध**-(हिं०स्त्री०) अन्तर्धान।।
तिरोधान-(सं०नपुं०) अन्तर्धान, अदर्शन।
तिरोधायक-(सं०पुं०) छिपानेवाला।
तिरीभाव-(सं०पुं०) अदर्शन, आ-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

च्छादन। **तिरोभूत**-(सं०वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
तिरोहित-(सं०वि०) अन्तर्हित, अदृष्ट।
तिरौंछा-(हिं०वि०) तिरछा, तिर्यक्।
तिर्यक्-(सं०वि०) वक्र, तिरछा, टेढ़ा,
तिर्यग्गति-(सं०स्त्री०) वक्रगति, तिरछी चाल, **तिर्यग्योनि**-(सं० स्त्री०) पशु पक्षी आदि जीव।
तिर्यज्जाति-(सं०स्त्री०) पशु पक्षियों की जाति।
तिर्यग्धार-(सं०पुं०) तीव्र धार वाला।
तिर्यग्नासा-(सं०वि०) टेढ़ी नाक वाला
तिर्यग्योनि-(सं०स्त्री०) पशु, पक्षी, सर्प आदि।
तिलंगा-(हिं०पुं०) अंग्रेज सेना का देशी सिपाही, एक प्रकार की बड़ी कनकैया या पतंग।
तिल-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसमें काले या सफेद दानेहोते हैं, इसको पैर कर तेल निकाला जाता है जो 'मीठा तेल" कहलाता है, शरीर पर का काले रंग का छोटा धब्बा, गोदना जो काली बिन्दी के आकार का होता है, आँख की पुतली के बीच की गोल बन्दी।
तिलक-(सं०नपुं०) ललाट आदि स्थानों में चन्दनादि द्वारा धारण करने का चिह्न, राज्याभिषेक, स्त्रियों के मस्तक पर धारण करने का एक आभूषण, विवाह संबंध स्थिर करने की एक रीति, किसी ग्रन्थ की अर्थबोधक व्याख्या, (वि०) श्रेष्ठ, शिरोमणि,
तिलकना-(हिं०क्रि०) ताल आदि की मिट्टी का सूख कर फट जाना।
तिलकमुद्रा-(सं०पुं०) चन्दन आदि का टीका और शंख चक्र आदि का छाप जिसको वैष्णव लोग लगाते हैं।
तिलका-(सं०स्त्री०) कण्ठ में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण। **तिलकालक**-(सं०पुं०) शरीर पर के तिल के आकार का काला चिह्न।
तिलकिट्ट-(सं०नपुं०) तिलकी खली।
तिलकित-(सं०वि०) अंकित, छापा हुआ
तिलकी-(सं०वि०) तिलक लगाये हुए
तिलकुट-(हिं०पुं०) तिल को कूट कर चीनी मिला कर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई।
तिलखलि-(सं०स्त्री०) तिल की खली।
तिलचावली-(हिं० स्त्री०) तिल और चावल की खिचड़ी।
तिलचूर्ण-(सं०नपुं०) तिलकुट।
तिलछना-(हिं० क्र०) व्यग्र होना।
तिलज-(सं०नपुं०) तिल का तेल।
तिलड़ा-(हिं०वि०) तीन लर वाला।
तिलड़ी-(हिं०स्त्री०) तीन लड़ियों की बनी हुई माला।
तिलपट्टी, तिलपपड़ी-(हिं०स्त्री०) खांड़ या गुड़ में पागे हुए तिलों की पपड़ी
तिलपिष्टक-(सं०नपुं०) तिलकी पीठी।
तिलमिल-(हिं०स्त्री०) चकाचौंध। **तिलमिलाना**-(हिं०क्रि०) चकाचौंध होना।
तिलमोदक-(हिं०पुं०) तिल का बना हुआ लड्डू।
तिलरस-(सं०पुं०) तिल का तैल।
तिलवट-(हिं० पुं०) तिलपट्टी, तिलपपड़ी।
तिलवा-(हिं०पुं०) तिल का लड्डू।
तिलशकरी-(हिं०स्त्री०) तिलपपड़ी।
तिलस्नेह-(सं०पुं०) तिल का तैल।
तिलहन-(हिं०पुं०) वे पौधे जिनके बीजों से तेल निकाला जाता है।
तिलाञ्जलि-(सं०स्त्री०) मृतक संस्कार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का एक अंग जो शव जल जाने के बाद स्नान करती समय किया जाता है, इसमें अंजुलीमेंपानी भर कर इसमें तिल डाल कर मृतक के नाम पर छोड़ा जात है ।

तिलान्न-(सं०नपुं०) तिल की खिचड़ी ।

तिलाम्बु-(सं०नपुं०) तिल मिला हुआ जल ।

तिलावा-(हिं०पुं०) बड़ा कुवां ।

तिलिया-(हिं०पुं०) सरपत, सरकंडा ।

तिली-(हिं०स्त्री०) तिल, तिल्ली ।

तिलोक-(हिं०पुं०) देखो त्रैलोक । **तिलोकपति**-(हिं०पुं०) त्रैलोक्यपति, विष्णु । **तिलोकी**-(हिं०पुं०) देखो त्रिलोकी; **तिलोचन**-(हिं० पुं०) महादेव ।

तिलोदक-(सं०नपुं०) तिल मिला हुआ जल, देखो तिलाञ्जलि ।

तिलौंछना-(हिं०क्रि०) तेल पोत कर चिकना करना । **तिलौंछा**-(हिं०वि०) जिसमें तेल लगा हो, जिसमें तेल का स्वाद हो ।

तिलौरी-(हिं०स्त्री०) तिल मिलाकर बनाई हुई बरी ।

तिल्ली-(हिं०स्त्री०) प्लीहा, पिलही, तिल नामक अन्न ।

तिवास-(हिं०पुं०)तीन दिन का काल ।

तिवासी-(हिं०वि०) देखो तिवासी ।

तिष्ठना-(हिं०क्रि०) ठहरना. ।

तिस-(हिं०सर्व०) का, ता, तिसपर-ऐसा होने पर, ऐसी स्थिति में ।

तिसना-(हिं०स्त्री०) देखो तृष्णा ।

तिसरायत-(हिं०स्त्री०) तीसरा होने का भाव । **तिसरैत**-(हिं०पुं०) एक तीसरा मनुष्य जो झगड़ा तय करता है, मध्यस्थ, तीसरे अंश का मालिक ।

तिसाना-(हिं०क्रि०) प्यास होना ।

तिहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और तीन की संख्या वाला, (पुं०) सत्तर और तीनकी संख्या ७३ ।

तिहरा-(हिं०वि०) देखो तेहरा ।

तिहराना-(हिं०क्रि०) तिवारा करना ।

तिहवार-(हिं०पुं०)त्योहार, पर्व का दिन; **तिहवारी**-(हिं०स्त्री०) मिष्ठान्न फल आदि जो उत्सव के दिन संबंधियों के घर भेजे जाते हैं ।

तिहाई-(हिं०पुं०) तृतीयांश ।

तिहायत-(हिं०पुं०)तिसरैत, मध्यस्थ ।

तिहारा, तिहारो-(हिं०सर्व०) तुम्हारा

तिहाव-(हिं०पुं०) रोष, क्रोध, झगड़ा ।

तिहि-(हिं०सर्व०) देखो तेहि ।

तिहूं-(हिं०वि०) तीन, तीनो ।

तिहैया-(हिं०पुं०) तृतीयांश, तीसरा भाग ।

ती-(हिं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी ।

तीक्षण, तीक्षन-(हिं०वि०) तीक्ष्ण ।

तीक्ष्ण-(सं०वि०) उग्र, प्रचण्ड, तीव्र, प्रखर, तीखा, तेज धार वाला, असह्य ।

तीक्ष्णदृष्टि-(सं० स्त्री०) सूक्ष्म दृष्टि जिसकी दृष्टि सूक्ष्म से सूक्ष्म बात पर पड़ती हो ।

तीक्ष्णधार-(सं०पुं०) खड्ग, तलवार; (वि०) पैनीधार वाला; **तीक्ष्णाग्र**-(सं०वि०) तीखी नोक वाला जिसकी नोक तेज हो । **तीक्ष्णायस**-(सं० नपुं०) पक्का लोहा, इस्पात ।

तीख-(हिं०वि०) देखो तीक्ष्ण, तीखा ।

तीखन-(हिं०वि०) देखो तीक्ष्ण ।

तीखा-(हिं०वि०) जिसकी नोक या धार पैनी हो, प्रचण्ड, उग्र स्वभाव का ।

तीखुर, तीखल-(हिं०पुं०) तवक्षीर, हलदी की जाति का एक प्रकार का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पौधा, इसकी जड़ से आरारूट तैयार किया जाता है।

तीछ(हिं०वि०) देखो तीक्ष्ण।

तीज-(हिं०स्त्री०)प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि।

तीतर-(हिं०पुं०) एक वेग से दौड़नेवाला छोटा पक्षी।

तीता-(हिं०वि०) तिक्त, तीखे चरपरे स्वाद का, कटु, कड़ुवा।

तीतुरी-(हिं०स्त्री०) देखो तितली।

तीतुल-(हिं०पुं०)देखो तितल, तित्तिर

तीन-(हिं०वि०)जो दोसे एक अधिक हो (पुं०) दो और एक के योग से बनी हुई संख्या।

तीनि-देखो तीन।

तीय, तीया-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत,

तीर-(सं०नपुं०)नदी आदि का किनारा तट।

तीरथ-(हिं०पुं०) देखो तीर्थ।

तीरवर्ती-(सं०वि०) तट पर रहनेवाला

तीरस्थ-(सं०वि०) तीरस्थिति, तीर पर रहनेवाला।

तीरा-(हिं०पुं०) देखो तीर।

तीरान्तर-(सं०नपुं०) दूसरे पार।

तीर्ण-(सं०वि०) जो पार हो गया हो, हराया हुआ।

तीर्थ-(सं०नपुं०) पुण्य स्थान, मन्त्री, गुरु, पात्र, शास्त्र, यज्ञ, क्षेत्र, राष्ट्र की अठारह सम्पत्तियां,तारक, मोक्ष, देनेवाला, सन्यासियों की एक उपाधि, अवसर,, **तीर्थपद**-(सं०पुं०) हरि, **तीर्थराज**-(सं०पुं०) प्रयाग तीर्थ; **तीर्थसेवा**-(सं०स्त्री०) तीर्थ यात्रा, **तीर्थसेवी**-(सं० वि०) तीर्थ यात्रा करने वाला।

तीर्थाटन-(सं०नपुं०)तीर्थयात्रा,तीर्थसेवा

तीवर-(सं०पुं०) मछुवा, बहेलिया।

तीवरी-(सं०स्त्री०)तीवर जाति की स्त्री।

तीव्र-(सं०वि०) अत्यन्त तीक्ष्ण, बहुत गरम, असह्य, तीखा,प्रचण्ड, कड़ुआ।

तीव्रता-(सं० स्त्री०) ऊष्णता, तीक्ष्णता।

तीव्रवेदना-(सं०स्त्री०)अत्यन्त पीड़ा।

तीस-(हिं० वि०) बीस और दसकी संख्या का,(पुं०) बीस और दस की संख्या ३०;

तीसरा-(हिं०वि०) जो दो के बाद आता हो।

तीसी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का तेलहन अनाज, अलसी।

तु-(सं०अव्य०)निरर्थकपादपूरकशब्द,तो

तुंदैला-(हिं०वि०) लम्बोदर,तोंद वाला

तुअ-(हिं०सर्व०) तुव, तव, तुम्हारा।

तुअना-(हिं०क्रि०)गिर पड़ना।

तुअर-(हिं०पुं०) अरहर, आढकी।

तुई-(हिं०स्त्री०) कपड़े पर बनी हुई एक प्रकार की बेल।

तुक-(हिं०स्त्री०)मैत्री, अन्त्यानुप्रास। पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षर का परस्पर मेल।

तुकान्त-(हिं०स्त्री०)पद्य के दोनों चरणों के अन्तिम अक्षरों का परस्पर मेल,

तुकार-(हिं०स्त्री०) अशिष्ट संबोधन, 'तू, तू' करके बोलने की रीति,

तुकारना-(हिं०क्रि०)तूतू करके पुकारना

तुक्कड़-(हिं०पुं०) वह जो भद्दी कविता बनाता हो।

तुख-(हिं०पुं०) छिलका, भूसा।

तुङ्ग-(सं०वि०) उन्नत, ऊंचा, उग्र, प्रचंड, प्रधान; **तुङ्गता**-(सं०स्त्री०) उच्चता, ऊंचाई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुङ्गत्व-(सं०नपुं०)तुङ्गता; तुङ्गमुख-(सं०पुं०) गण्डक, गेंड़ा।

तुच, तुचा-(हिं०स्त्री०) देखो त्वचा

तुचार-(हिं०वि०) तीखा, पैना।

तुच्छ-(सं०वि०) क्षुद्र, निःसार, खोखला, अल्प, थोड़ा; तुच्छता-(सं०स्त्री०)नीचता, अल्पता, ओछापन, तुच्छत्व-(सं०नपुं०) ओछापन

तुजह-(हिं०स्त्री०) धनुष, कमान।

तुझ-(हिं०सर्व०)'तू' शब्द का वह रूप जो प्रथमा और षष्ठी विभक्ति के सिवाय अन्य विभक्तियों के पहिले लगाया जाता है। तुझे-(हिं०सर्व०) "तू" का कर्म और सम्प्रदान का रूप

तुट-(हिं०वि०)अल्पमात्रा में, थोड़ासा

तुट्टना-(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट करना, प्रसन्न होना।

तुड़वाना-(हिं०क्रि०) तोड़ने का काम दूसरे से कराना। तुड़ाई-(हिं०स्त्री०) तोड़ने की क्रिया या भाव।

तुड़ाना-(हिं००क्रि०) तोड़ने का काम किसी दूसरे से कराना।

तुड़म-(हिं०पुं०) तुरुही, बिगुल।

तुण्ड-(सं०नपुं०) मुख, मुह, चोंच, थूथुन।

तुण्डिका-(सं०स्त्री०)नाभि,ढोढी।

तुण्डिल-(सं०वि०) तोंदीला।

तुण्डी (सं०वि०) चोंचवाला, मुखवाला थूथनवाला, (स्त्री०) नाभि, ढोढी।

तुतरा-(हिं०वि०) देखो तोतला।

तुतराना-(हिं०क्रि०) तोतलाकर बोलना। तुतरौहा-(हिं०वि०) देखो तोतला।

तुतलना-(हिं०क्रि०) शब्दों तथा अक्षरों का शुद्ध उच्चारण न करना, अस्पष्ट टूटे फूटे शब्द बोलना।

तुत्थ-(सं०पुं०) तूतिया नामक उपधातु, नीलाथोथा।

तुदना-(सं०पुं०) पीड़ा देनेकी क्रिया, व्यथा।

तुनीर- (हिं०पुं०) देखो तूणीर।

तुन्द-(सं०नपुं०) उदर, पेट; तुन्दी-(सं०स्त्री०) नाभि, ढोंढी।

तुन्दिक, तुन्दिकर-(सं०वि०)तोंदवाला, बड़े पेट वाला।

तुन्दिका-(सं०स्त्री०) नाभि, ढोंढी।

तुन्दिल-(सं०वि०)उभड़े हुए पेटवाला

तुन्दिभ, तुन्दिल-(सं०वि०) स्थूलोदर, तोंदीला।

तुन्न-(हिं०वि०) पीड़ित, दुःखित, फटा हुआ।

तुपक-(हिं०स्त्री०) छोटी तोप या बन्दूक, कड़ावीन।

तुभना-(हिं०क्रि०) स्तब्ध रहना।

तुम-(हिं०सर्व०) 'तू' शब्द का बहुवचन का रूप।

तुमड़ी-(हिं०स्त्री०)सूखे कद्दू का बना हुआ बाजा जिसको सँपेरे बजाते हैं, महुवर।

तुमरा-(हिं०सर्व०) देखो तुम्हारा।

तुमल-(हिं०वि०)देखो तुमुल, प्रचण्ड।

तुमाना-(हिं०क्रि०)रूई के तुमने का काम दूसरे से कराना।

तुमुर, मुमुल-(सं०नपुं०)सेना का कोलाहल, लड़ाई का शब्द; (वि०)प्रचण्ड उग्र।

तुम्बा-(सं०स्त्री०) कड़ुवा कद्दू, कद्दू का बना हुआ जलपात्र।

तुम्बी-(सं०स्त्री०) छोटा कद्दू।

तुम्ह-(हिं०सर्व०)देखो तुम। तुम्हारा-(हिं०सर्व०) 'तु' का सम्बन्ध कारक का रूप; तुम्हें-(हिं० सर्व०) तुमको

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुरंग-देखो तुरङ्ग ।
तुरंत-(हिं०क्रि०वि०)झटपट,जल्दी से।
तुर-(सं०वि०) वेगवान् ।
तुरग-(हिं०पुं०)घोड़ा, (वि०) शीघ्र-गामी ।
तुरगारोह-(सं०पुं०) अश्वारोही ।
तुरगीय-(सं०वि०) अश्व संबंधी ।
तुरगुला-(हिं०पुं०)लोलक, कर्णफूल ।
तुरङ्ग, तुरङ्गक-(सं० पुं०) घोड़ा, (वि०) शीघ्र चलनेवाला ।
तुरङ्गम-(सं०पुं०)घोड़ा,चित्त; (वि०) शीघ्र चलने वाला; तुरङ्गमशाला-अश्वशाला; तुरङ्गमेध-अश्वमेध;
तुरत-(हिं०अव्य०) तत्क्षण, शीघ्र ।
तुरपई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की कपड़ा मोड़ कर सीने की विधि । तुरपन-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सिलाई, । तुरपना-(हिं०क्रि०) तुरपन की सिलाई करना ।
तुरही-(हिं०स्त्री०) मुंह से फूल कर बजाने का एक बाजा ।
तुराई-(हिं०स्त्री०)रुई भरा हुआ गद्दा
तुराना-(हिं०क्रि०)व्यग्रहोना, घबड़ाना।
तुराय-(हिं०क्रि०वि०) आतुरता से ।
तुरास-(हिं०पुं०) वेग ।
तुरीय-(सं०वि०) गति युक्त, चतुर्थ, उद्धार करनेवाला, तुरुप-(हिं०पुं०) ताश का एक खेल जिसमें कोई एक रंग प्रधान मान लिया जाता है।
तुरुपना-(हिं०क्रि०) देखो तुरपना ।
तुरुही-(हिं०स्त्री०) देखो तुरही ।
तुर्य-(सं०वि०) चतुर्थ, चौथा; तुर्यगोल-समय जानने का एक प्राचीन यन्त्र ।
तुर्या-(सं०स्त्री०) वह ज्ञान जिससे मुक्ति प्राप्त होती है।
तुल-(हिं०वि०) देखो तुल्य, बराबर ।
तुलना-(हिं०क्रि०) तौला जाना, पूरित होना भरना, तुल्य होना, तौल में बराबर होना, गाड़ी की पहिये के धुरे में घी, चर्बी आदि भरना; (सं० स्त्री०) सादृश्य, उपमा, समता, बराबरी ।
तुलबुली-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता ।
तुलवाई-(हिं०स्त्री०)तौलने का पारिश्रमिक, पहिये को आँगने का शुल्क ।
तुलवाना-(हिं० क्रि०) तौल कराना, गाड़ी की पहिये को आँगवाना ।
तुलसी-(सं०स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसको हिन्दू लोग अति पवित्र मानते हैं; तुलसीदल-तुलसी की पत्ती; तुलसीदास-भारतवर्ष के एक सर्वप्रधान भक्त कवि जो सरयूपारीण ब्राह्मण थे ।
तुला-(सं०स्त्री०)सादृश्य,तुलना,तराजू; तुलाई-(हिं०स्त्री०) तौलने का भाव या काम, रूई भरा हुआ दोहरा कपड़ा, दुलाई ।
तुलाकूट-(सं०स्त्री०) तौलने में कसर करने वाला, डाँड़ी मारने वाला । तुलाकोटि-(सं०स्त्री०)तराजूकी डंडी जिसके दोनों ओर रस्सी में पलड़े बँधे होते हैं ।
तुलादण्ड-(सं०पुं०) मानदण्ड, नापने की डंडी । तुलादान-(सं०नपुं०) एक महादान जिसमें किसी मनुष्य के तौल के बराबर द्रव्य का दान होता है ।
तुलाना-(हिं०क्रि०) पूरा होना, गाड़ी की पहिये में चिकना देना ।
तुलाग्रह-(सं०पुं०) तुलादण्ड, तराजूमें बंधी हुई डोरी । तुलामान-(सं० नपुं०) तुलादण्ड, बाँट, बटखरा ।
तुलायन्त्र-तराजू ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तुलासूत्र-(सं०नपुं०) तराजू की रस्सी जिसमें पलड़े बँधे रहते हैं।
तुलि-(सं०स्त्री०) जुलाहे की कूँची, चित्रकार की कूँची।
तुलिका-(सं०स्त्री०) कूँची
तुलित-(सं०वि०) तुला हुआ।
तुल्य-(सं०वि०) सदृश, समान, बराबर
तुल्याकृति-(सं०वि०) जो देखने में समान आकृति हो:
तुव-(हिं०सर्व०) देखो तव।
तुवर-(सं०पुं०) कसैला रस; (वि०) कसैला, तीता।
तुष-(सं०पुं०) अन्नके ऊपरका छिलका, भूसी,।
तुषाग्नि, तुषानल-(सं०पुं०) भूसी या करसी की आँच।
तुषार-(सं०पुं०) हिम, हिमकण, पाला, (वि०) जो स्पर्श करने में अति शीत जान पड़े; **तुषारकाल**-शीतकाल; **तुषारकिरण**-चन्द्रमा; ; **तुषारपाषाण**-ओला।
तुष्ट-(सं०वि०) सन्तुष्ट, तृप्त, प्रसन्न, **तुष्टना**-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना, तृप्त होना।
तुष्टि-(सं०स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति।
तुस-(सं०पुं०) तूष, भूसी।
तुसार-(हिं०पुं०) देखो तुषार।
तुसी-(हिं०स्त्री०) छिलका, भूसी।
तुहार-(हिं०सर्व०) तुम्हारा।
तुहि-(हिं०सर्व०) तुझें, तुमको।
तुहिन-(सं०नपुं०) हिम, पाला, कुहिरा।
तू-(हिं०सर्व०) यह शब्द उस पुरुष के साथ प्रयोग होता है जिसको सम्बोध करके कुछ कहा जाता है, (स्त्री०) कुत्ते को पुकारने की शब्द।
तूं-(हिं०सर्व०) देखो तू।
तूंबना-(हिं०क्रि०) देखो तूमना।
तूंबा-(हिं०पुं०) गोल लौकी, तितलौकी, **तूंबी**-(हिं०स्त्री०) सूखे कद्दू का बनाया हुआ जलपात्र।
तूख-(हिं०पुं०) तिनके या सींक का टुकड़ा।
तूटना-(हिं०क्रि०) देखो टूटना।
तूठना-(हिं०क्रि०) तृप्त होना, प्रसन्न होना
तूण-(सं०पुं०) तूणीर, तरकश।
तूणी, तूणीक-(सं०पुं०) देखो तूण।
तूणी-(सं०स्त्री०) तरकश।
तूणीर-(सं०पुं०) तरकश।
तूतिया-(हिं०पुं०) नीलाथोथा।
तूनीर-(हिं०स्त्री०) देखो तूणीर।
तूबर-(सं०पुं०) विना सींग का बैल, विना डाढ़ी मोंछ का मनुष्य, कसैला रस; (वि०) जिसमें कसैलापन हो।
तूमड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो तुम्बी।
तूमना-(हिं०क्रि०) रूई के गोले के रेशों को अलग अलग करना।
तूय-(सं०नपुं०) जल, पानी, शीघ्रता।
तूर-(सं०नपुं०) नगाड़ा, तूरही नामक बाजा। (हिं०स्त्री०) जुलाहे के करगह की लंबी लकड़ी, अरहर का पौधा।
तूरण, तूरन-(हिंक्रि०वि०) देखो तूर्ण।
तूर्त-(हिं०पुं०) शीघ्रता, जल्दी।
तूल-(सं०नपुं०) आकाश, कपास सेम्हर आदि के डोंडे के भीतर का घुवा; (हिं० पु०) एक प्रकार का लाल रंग का कपड़ा, गहरा रंग (हिं०-वि०) तुल्य सदृश, समान; **तूलता**-(हिं०स्त्री०) समता, बराबरी; **तूलना**-(हिं०क्रि०) गाड़ी की पहियें के धुरे में चिकना पोतना, बराबर होना; **तूलनलिका, तूलनाली**-(सं० स्त्री०) पिंजिका, प्यूनी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तूला-(सं०स्त्री०) कपास, रूई।
तूली, तूलिका-(सं०स्त्री०) चित्रकार की रंग भरने की कूँची।
तूवर-(सं०पुं०) कसैला रस; (वि०) कसैले रस का।
तूष्णी-(हिं०वि०) मौन, चुप; तूष्णीक-(सं०वि०) मौन साधने वाला। तूष्णीं-(सं०अव्य०) मौन चुप। तूष्णीभूत-(सं०वि०) मौन, चुपचाप।
तूस-(हिं०पुं०) भूसी, भूसा, पहाड़ी बकरे का ऊन।
तूसना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट करना।
तृखा-(हिं०स्त्री०) देखो तृषा, प्यास।
तृजग-(हिं०वि०) देखो तिर्यक्, टेढा।
तृण-(सं०नपुं०) नरकट, सरपत, घास। तृणकुटी-(सं० स्त्री०) तृणसे छाई हुई मड़ई; तृणप्राय-(सं० वि०) निकृष्ट, निकम्मा, तृणराज-(सं०पुं०) नरियल या ताड़ का वृक्ष, बांस,
तृणाग्नि-(सं०पुं०) घासफूस की आग।
तृणान्न-(सं०नपुं०) तिन्नी का चावल।
तृणोका-(सं०स्त्री०) घास फूस की मसाल।
तृणमान-(स०वि०) तृण युक्त।
तृतीय-(सं०वि०) तीसरा। तृतीयक-(सं०पुं०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर, तिजरिया। तृतीयांश-(सं०पुं०) तीसरा भाग या हिस्सा। तृतीया-(सं० स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की तीसरी तिथि, तीज, व्याकरण में करण कारक। तृतीयाश्रम-(सं० पुं०) वानप्रस्थ आश्रम।
तृपति-(हिं०स्त्री०) देखो तृप्ति।
तृपित-(हिं०वि०) देखो तृप्त, सन्तुष्ट।
तृपिता-(हिं०स्त्री०) तृप्ति।
तृप्त-(सं०वि०) तृप्ति युक्त, अघाया हुआ।
तृप्ताना-(हिं०क्रि०) तृप्त होना।
तृप्ति-(सं०स्त्री०) सन्तोष।
तृफला-(हिं०स्त्री०) हर्रा, बहेड़ा, और आमला ये तीन फल।
तृषा-(सं०स्त्री०) आकांक्षा, अभिलाषा। इच्छा, लोभ, प्यास। तृषालु, तृषानु-(सं०वि०) पिपासित, प्यासा। तृषावंत-(हिं०वि०) प्यासा।
तृषित-(सं०वि०) प्यासा, लोभी, लालची।
तृष्णा-(सं०स्त्री०) प्यास, लोभ, लालच; (हिं०वि०) बीस और तीनकी संख्या का, (पुं०) बीस और तीन की संख्या २३। तेईसवां-(हिं०वि०) जो क्रम से तेईस के स्थान पर हो।
तें-(हिं०प्रत्य०) से, द्वारा।
तेंतालिस-(हिं०वि०) चालीस और तीन की संख्या का, (पुं०) चालीस और तीन की संख्या ४३।
तेंतालिसवां-(हिं०वि०) जो क्रम में तेंतालीस के स्थान पर हो।
तेंतीस-(हिं० वि०) तीस और तीन की संख्या ३३. तेंतीसवां-(हिं० वि.) जो क्रम से तेंतीसवें स्थान पर हो।
ते-(हिं०अव्य०) वे, (सर्व०) वे लोग।
तेखना-(हिं०क्रि०) रोष दिखलाना।
तेज, तेजस्-(सं०नपुं०) दीप्ति, चमक, प्रभाव, बल, पराक्रम, प्रताप, साहस, सामर्थ्य।
तेजःपुञ्ज-(सं०पुं०) आभाका समूह।
तेजधारी-(हिं०वि०) तेजस्वी प्रतापी।
तेजवन्त, तेजवान-(हिं०वि०) तेजस्वी, वीर्यवान, बली, चमकीला।
तेजस्-(सं०नपुं०) देखो तेज।
तेजसी-(हिं०वि०) तेज युक्त, तेजस्वी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेजस्कर-(सं०वि०) तेज की वृद्धि करने वाला।
तेजस्विता-(सं०वि०) तेज की वृद्धि।
तेजस्विता-(सं०स्त्री०) प्रभावशालिता।
तेजस्वी-(सं०वि०) तेज युक्त, प्रतापी।
तेजोधातु-(सं०पुं०) पित्त। **तेजोमय**-(सं०वि०) ज्योतिर्मय, **तेजोमूर्ति**-(सं०पुं०) सूर्य, (वि०) जिसमें अधिक तेज हों, तेज से परिपूर्ण। **तेजोराशि**-(सं०पुं०) तेज का समूह।
तेतना-(हिं०वि०) तितना, उतना।
तेता-(हिं०वि०) उस प्रमाण का, उतना,
तेतीस-(हिं०वि०) देखो तेतिस।
तेतालीस-(हिं०वि०) देखो तेंतालिस।
तेतिक-(हिं०वि०) उसका, उस प्रमाण का।
तेतो-(हिं०वि०) देखो तेता।
तेरस-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की तेरहवीं तिथि।
तेरह-(हिं०वि०) दस और तीन की संख्या का; (पुं०) दस और तीन की संख्या १३। **तेरहवां**-(हिं०वि०) जो क्रम में तेरह के स्थान में हो।
तेरा-(हिं०सर्व०) सबंध कारक सर्वनाम का मध्यम पुरुष एक वचन।
तेरो-(हिं०सर्व०) तेरा।
तेल-(हिं०पुं०) किसी बीज या वनस्पति आदि से निकाला हुआ स्निग्ध पदार्थ। **तेलहंडा**-(हिं०पुं०) तेल रखने का बड़ा पात्र। **तेलहंडी**-(हिं०स्त्री०) तेल रखने का छोटा पात्र। **तेलहन**-(हिं०पुं०) वे बीज जिनमें से तेल निकाला जाता है।
तेलहा-(हिं०वि०) तेल युक्त, जिसमें तेल पड़ा हो।
तेलिन-(हिं०स्त्री०) तेली की स्त्री।
तेलिया-(हिं०वि०) जो तेल की तरह चिकना और चमकीला हो, (पुं०) काला चमकीला रंग, काले चमकीले रंग का घोड़ा।
तेली-(हिं०पुं०) हिन्दुओं में एक शूद्र जाति जो सरसों, तीसी, तिल आदि पेर कर तेल निकालने का व्यवसाय करते हैं।
तेवरना-(हिं०क्रि०) भ्रम में पड़ना,
तेवहार-(हिं०पुं०) त्योहार, उत्सव।
तेवाना-(हिं०क्रि०) सोचना, विचारना।
तेवान-(हिं०पुं०) चिन्ता; **तेवाना**-चिन्ता करना।
तेह-(हिं०पुं०) क्रोध, अहंकार, घमंड।
तेहरा-(हिं०वि०) तीन परत किया हुआ, त्रिगुणित, तिगुना। **तेहराना**-(हिं०क्रि०) तीन बार करना।
तेहवार-(हिं०पुं०) देखो त्योहार।
तेहा-(हिं०पुं०) घमंड, अहंकार।
तेहि-(हिं०सर्व०) उसको, उसे।
तेही-(हिं०वि०) अभिमानी, घमंडी।
तैंतालिस-(हिं०वि०) देखो तैंतालिस।
तैंतीस-(हिं०वि०) देखो तैंतिस।
तैं-(हिं०क्रि०वि०) से, तें, (सर्व०) तू।
तै-(हिं०वि०) जिसका निर्णय हो चुका हो, समाप्त, जो पूरा हो चुका हो,
तैखाना-(हिं०पुं०) भूमिगृह।
तैतिक्ष-(सं०वि०) क्षमाशील।
तैतिर-(सं०पुं०) तीतर पक्षी।
तैतिल-(सं०पुं०) गण्डक, गैंड़ा।
तैत्तिर-(सं०नपुं०) तीतर पक्षी, गैंड़ा।
तैनाती-(हिं०स्त्री०) नियुक्ति।
तैयारी-(हिं०स्त्री०) तत्परता, समारोह, सजावट, धूमधाम।
तैरना-(हिं०क्रि०) पानी के ऊपर उतराना, हाथ पैर हिलाते हुए पानी में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलना; तैराई-(हिं०स्त्री०) तरने की क्रिया। तैराक-(हिं०वि०) तैरनेवाला, । तैराना-(हिं०क्रि०) तैरने का काम दूसरे से कराना।

तैर्थ-(सं०वि०) तीर्थ में सम्बन्धी ।

तैलकार-(सं०पुं०) तेल पेरने वाला, तेली ।

तैलकिट्ट-(सं०नपुं०) तेल का मैल, खली;, तैलयन्त्र-(सं०पुं०) तेल पेरने का कोल्हू ।

तैलाक्त-(सं०वि०) जिसमें तेल पोता हुआ हो।

तैलिक-(सं०पुं०) तेल पेरनेवाला, तेली ।

तैलिन-(सं०वि०) तैलयुक्त ।

तैसा-(हिं०वि०) उस प्रकारका वैसा। तैसे-(हिं०क्रि०वि०) उस प्रकारसे,वैसे

तों-(हिं०क्रि०वि०) देखो त्यों ।

तोंद-(हिं०स्त्री०) पेट के आगेका बढ़ा हुआ भाग, पेट का फुलाव । तोंदल-(हिं०वि०) तोंदवाला ।

तोंदा-(हिं०पुं०) तालाब का पानी निकालने का मार्ग, लक्ष्य का अभ्यास करने के लिये मिट्टी की भीत या टीला, राशि, ढेर।

तोंदी-(हिं०स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी ।

तोंदीला,तोंदेल-(हिं०वि०) देखो तोंदल

तोंबा-(हिं०पुं०) देखो तुम्बा। तोंबी-(हिं०स्त्री०) देखो तुम्बीं।

तो-(हिं०सर्व०) तेरा (अव्य०) उस स्थिति में तब; (अव्य०) जोर देने के लिये भी इस शब्द का प्रयोग होता है; (सर्व०) तुझ (वृजभाषा में प्रयोग होता है)

तोइ-(हिं०पुं०) तोय, जल, पानी ।

तोख-(हिं०पुं०) सन्तोष, तोखना-सन्तुष्ट करना।

तोटका-(हिं०पुं०) देखो टोटका ।

तोड़-(हिं०पुं०)तोड़ने की क्रिया, नदी की तीव्र धारा, प्रतीकार।

तोड़न-(सं०नपुं०) चीरने का काम, मारने का काम। तोड़ना-(हिं०पुं०) टुकड़े करना, किसी संस्था या संगठन को नष्ट करना, दूर करना, किसी वस्तु के खरीदने के लिये दाम घटाकर तय करना।

तोड़,तोड़ा-(हिं०पुं०) सोने या चांदीकी चौड़ी लच्छेदार सिकड़ी जो हाथोंमें पहिरी जाती है, रुपया रखने की टाट की थैली, किनारा, तट, घाटा, टोटा, कमी ।

तोड़ाई-(हिं०स्त्री०) देखो तुड़ाई ।

तोड़ाना-(हिं०क्रि०) देखो तुड़ाना ।

तोण-(हिं०पुं०) तूण, तरकश ।

तोत-(हिं०पुं०) राशि, ढेर, । तोतकर-(हिं०पुं०) पपीहा ।

तोतर, तोतरा-(हिं०वि०)देखो तोतला; तोतराना-(हिं०क्रि०) देखो तुतलाना । तोतला-(हिं०वि०) तुतला कर बोलने वाला ।

तोती-(हिं०स्त्री०) सुग्गी ।

तोद-(सं०पुं०) व्यथा, पीड़ा, (वि०) कष्ट पहुँचाने वाला । तोदन-(सं० नपुं०) चमोंटी, चाबुक ।

तोपना-(हिं०क्रि०)ढाँपना, बन्द करना ।

तोपाना-(हिं०क्रि०) ढाँपने का काम दूसरे से कराना।

तोम-(हिं०पुं०) समूह, ढेर।

तोमर-(सं०पुं०) भाले की तरह का भारत का एक प्राचीन अस्त्र ।

तोय-(सं०नपुं०) जल, पानी; तोयकर्म-तर्पण; तोयक्रीड़ा-(सं०स्त्री०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जलक्रीड़ा, **तोयधार, तोयधारा**-(सं० पुं०) मेघ, बादल; **तोयधि**-(सं०पुं०) समुद्र, सागर; **तोयनिधि**-(सं०पुं०) समुद्र, सागर।

तोयालय-(सं०पुं०) समुद्र, सागर।

तोर-(हिं०पुं०) अरहर।

तोरण-(सं०पुं०) किसी घर या नगर का बाहरी फाटक, बन्दनवार।

तोरन-(हिं०पुं०) देखो तोरण।

तोरना-(हिं०क्रि०) देखो तोड़ना।

तोरा-(हिं०सर्व०) तेरा।

तोराना-(हिं०क्रि०) देखो तुड़ाना।

तोरावान्-(हिं०वि०) तीव्र, तेज, वेगवान्

तोल-(हिं०स्त्री०) देखो तौल; **तोलन**-(सं०नपुं०) तौलने की क्रिया, उठाने की क्रिया; **तोलना**-(हिं०क्रि०) देखो तौलना। **तोलवाना**-(हिं०क्रि०) देखो तौलवाना।

तोला-(हिं०पुं०) बारह माशे या छानवे रत्ती की तौल, इस तौल का बाँट।

तोष-(सं०पुं०) सन्तोष, तृप्ति, प्रसन्नता, (वि०) अल्प, थोड़ा। **तोषक**-(सं०वि०) तुष्टिकारक। **तोषण**-(सं०नपुं०) सन्तुष्ट करने की क्रिया; **तोषना**-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना या करना,, तप्त होना।

तोषित-(सं०वि०) तप्त, सन्तुष्ट। **तोषी**-(सं०वि०) तृप्त करने वाला। **तोष्य**-(सं०वि०) सन्तुष्ट करने योग्य।

तोस-(हिं०पुं०) देखो तोष।

तोसक-(हिं०पुं०) रूईदार गद्दा।

तोहरा-(हिं०सर्व०) तुम्हारा।

तोहि-(हिं०सर्व०) तुझको तुमको, तुझे

तौंस-(हिं०स्त्री०) धूप से उत्पन्न प्यास जो किसी तरह न बुझे। **तौंसना**-(हिं०क्रि०) गरमी के कारण सन्तप्त होना। **तौंसा**-(हिं०पुं०) अधिक गरमी या ताप।

तौ-(हिं०क्रि०वि०) तो।

तौन-(हिं०सर्व०) वह, जो।

तौनी-(हिं०स्त्री०) रोटी सेकने का छोटा तवा, तई।

तौरा-(हिं०पुं०) वह रस्सी जिससे मथानी मथी जाती है, नेमी।

तौरि-(हिं०स्त्री०) धुमरी, चक्कर।

तौल-(सं०नपुं०) तुला, तराजू। **तौलना**-(हिं०क्रि०) जोखना, तारतम्य जानना, साधना; **तौलाई**-(हिं० स्त्री०) तौलने का कार्य, तौलने का शुल्क। **तौलाना**-(हिं०क्रि०) तौलने का काम दूसरेसे कराना।

तौलिया-(हिं०स्त्री०) शरीर पोंछनेके काम में आने वाला मोटा अंगौछा।

तौसना-(हिं०क्रि०) गरमी के कारण व्याकुल होना।

त्यक्त-(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ।

त्यजन-(सं०नपुं०) त्याग, छोड़ने का काम। **त्यजनीय**-(सं०वि०) त्याग करने योग्य। **त्यज्यमान**-(सं०वि०) जो छोड़ दिया जावे।

त्याग-(सं०पुं०) उत्सर्ग, छोड़ने का काम सम्बन्ध न रखने की क्रिया; **त्यागना**-(हिं०क्रि०) त्याग करना, छोड़ना। **त्यागपत्र**-(सं०नपुं०) दानपत्र, वह पत्र जिसमें किसी तरह के त्याग का उल्लेख हो॥ **त्यागवान्**-(सं०वि०) त्यागी, जिसने त्याग किया हो।

त्यागशील-(सं०वि०) दानशील, उदार।

त्यागी-(सं०वि०) सांसारिक सुख को छोड़ने वाला, विरक्त, शूर।

त्याज्य-(सं०वि०) छोड़ने योग्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्यार-(हिं०वि०) देखो तैयार।
त्यू ,त्यों-(हिं०क्रि०वि०) उसी प्रकार उसीतरह से, उसीसमय, तकाल।
त्योरी-(हिं०स्त्री०) दृष्टि, चितवन, अवलोकन,
त्योहार-(हिं०पुं०) उत्सव दिन, पर्व का दिन।
त्योहारी-(हिं०स्त्री०) त्योहार के उपलक्ष में मिठाई धन इत्यादि देना।
त्यौं-(हिं०क्रि०वि०) देखो त्यों, उस प्रकार से।
त्यौहार-(हिं०पुं०) देखो त्योहार, पर्व दिन। त्यौहारी-(हिं० स्त्री०) देखो त्योहारी।
त्रपा-(सं०स्त्री०) लज्जा, लाज।
त्रपु-(सं०नपुं०) सीसा नामक धातु।
त्रय-(सं०नपुं०) त्रितय,तीसरी संख्या।
त्रयी-(सं०स्त्री०)तीन वस्तुओंका समूह
त्रयोदशी-(सं०स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की तेरहवीं, तिथि, तेरस।
त्रष्टा-(सं०पुं०) तष्टा, तश्तरी।
त्रसन-(सं०नपुं०) उद्वेग, भय।
त्रसाना-(हिं०क्रि०)धमकाना, डराना।
त्रसित-(सं०वि०)भयभीत, डराहुआ।
त्राण-(सं० नपुं०) रक्षा, बचाव, कवच।
त्राण-(सं०वि०) रक्षा किया हुआ,
त्रातव्य-(सं०वि०) रक्षा करनयोग्य।
त्राता-त्रातार-(सं० पुं०) रक्षक, बचाने वाला।
त्रायमाण-(सं०वि०)रक्ष्यमाण, बचाने वाला।
त्रास-(सं०पुं०) डर, भय, कष्ट।
त्रासक, त्रासकर-(सं०पुं०)भयभीत, डरानेवाला।
त्रासन-(सं०नपुं०)भयोत्पादन, डराने का काम। त्रासनीय-(वि०) ताड़नीय, दण्ड देने योग्य। त्रासना-(हिं०क्रि०) भय दिखलाना, डराना।
त्रासित-(सं०वि०)त्रस्त, भयभीत।
त्राहि-(सं०क्रि०) रक्षा करो, बचाओ
त्रि-(सं०वि०) तीन; त्रिकाल-भूत, भविष्य, वर्तमान; त्रिभुवन-स्वर्ग, मर्त्य, पाताल; त्रिगुण-सत्य,रज,तम।
त्रिक-(सं०नपुं०) तीन का समूह, कटि भाग, तीसरे दिन आनेवाला ज्वर।
त्रिकटु-(सं०नपुं०)सोंठ मिर्च,पीपल ये तीन कटु पदार्थ।
त्रिकण्टक-(सं०पुं०)गोखरू,त्रिशूल।
त्रिकाम, त्रिकाय-(सं०पुं०) बुद्धदेव।
त्रिकाल-(सं०नपुं०)भूत भविष्य तथा वर्तमान काल; प्रातः मध्याह्न और सन्ध्या; त्रिकालज्ञ-(सं०पुं०) सर्वज्ञ
त्रिकुटी-(सं०स्त्री०) दोनों भौंहोंकेबीच के ऊपर का स्थान।
त्रिकूट-(सं०पुं०) तीन शिखर वाला पर्वत।
त्रिकोण-(सं०नपुं०) त्रिभुज, क्षेत्र, तीन कोने वाला क्षेत्र।
त्रिखा-(हिं०स्त्री०) देखो तृषा, प्यास।
त्रिगण-(सं०पुं०) धर्म अर्थ और काम, त्रिवर्ग।
त्रिगुण-(सं०पुं०)सत्व,रज तथा तम-इन तीनो गुणों का समूह।
त्रिगुणित-(सं०वि०)त्रिरावृत, तिगुना किया हुआ।
त्रिजामा-(हिं०स्त्री०) देखो त्रियामा, रात्रि।
त्रिज्या-(सं०स्त्री०) वह रेखा जो किसी वृत्त में केन्द्र से परिधि तक खींची गई हो, व्यासार्ध रेखा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रितय-(सं० नपुं०) सन्निपात ज्वर; (वि०) तीन प्रकार का।
त्रितल-(सं०वि०)तीन खण्डका घर।
त्रिदश-(सं०पुं०) देवता, (वि०) तीस;
त्रिदिव-(सं०पुं०)स्वर्ग,आकाश, सुख।
त्रिदिवेश-(सं०पुं०) देवता।
त्रिदोष-(सं०पुं०) वात, पित्त, और कफ।
त्रिधा-(सं०क्रि०वि०)तीन प्रकार से।
त्रिधातु-(सं०पु०) सोना, चाँदी, और तांबा ये तीन धातु।
त्रिधारा-(सं०स्त्री०) तीन पहल वाला सेंहुड़।
त्रिन-(हिं०पुं०) देखो तृण, तिनका।
त्रिनयन-(नेत्र) (सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिनाभ-(सं०पुं०) विष्णु।
त्रिपथ-(सं०नपुं०) तिरमुहानी। **त्रिपथगा, त्रिपथगामिनी**-(सं०स्त्री०)गंगा
त्रिभुज-(सं०वि०) तीन पद या भुज युक्त।
त्रिपादिका-(सं०स्त्री०) पिताई।
त्रिपिताना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट होना या करना।
त्रिपिष्टप-(सं०नपुं०) स्वर्ग, आकाश।
त्रिपुट-(सं०पुं०) तीन किनारा।
त्रिपुटक-(सं०पुं०) त्रिभुज।
त्रिपुण्ड-(सं०पुं०) भस्म की तीन आड़ी रेखाओं का तिलक जो शैव लोग ललाट पर लगाते हैं।
त्रिपुरुष-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिपुरुष-(सं०नपुं०) पिता, पितामह, और प्रपितामह,।
त्रिपौलिया-(हिं०स्त्री०)देखोतिरपौलिया
त्रिफला-(सं०स्त्री०) हर्रा बहेड़ा और आमले का फल।
त्रिवलि-(सं०स्त्री०) पेट में पड़ने वाले तीन बल या रेखा।
त्रिभाग-(सं०पुं०) तृतीय भाग।
त्रिभुज-(सं०पुं०) तीन भुजाओं का क्षेत्र, वह समतल जो तीन रेखाओं से घिरा हो।
त्रिभुवन-(सं०नपुं०) त्रिलोक।
त्रिमात्रिक-(सं०वि०) जिसमें तीन मात्रायें हों।
त्रिमार्ग-(सं०नपुं०) तिरमुहानी
त्रिमुकुट-(सं०पुं०) जिस पहाड़में तीन शिखर हों।
त्रिमूर्ति-(सं०पुं०) ब्रह्मा, विष्णु और शिव ये तीन देवता।
त्रिमूर्ध-(सं०वि०) जिसके तीन मस्तक हों
त्रियम्बक-(सं०पुं०) त्रिनेत्र, महादेव।
त्रिया-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
त्रियामा-(सं०स्त्री०) निशा, रात्रि।
त्रियुग-(सं०पुं०) वसन्त आदि तीन ऋतु, सत्य युग, त्रेता और द्वापर ये तीन युग।
त्रिलोक-(सं०नपुं०) त्रिभुवन, स्वर्ग, मर्त्य और पाताल ये तीनों लोक। **त्रिलोकीनाथ**-(सं०पुं०) परमेश्वर, ईश्वर।
त्रिलोचन-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
त्रिवर्ग-(सं०पुं०) धर्म, अर्थ और काम त्रिफला, त्रिकटु, वृद्धि, स्थिति और क्षय, सत्व, रज और तम ये तीनों गुण, ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ये प्रधान जातियां।
त्रिवर्ण-(सं०पुं०) तीन प्रधान रंग, काला, लाल और पीला रंग।
त्रिवर्त्मगा-(सं०स्त्री०) त्रिपथगा, गङ्गा
त्रिवर्षीय-(सं०वि०)तीन वर्ष का, तीन वर्ष ठहरने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिवार-(सं०वि०) तीन बार।
त्रिविध-(सं०वि०) तीन प्रकार का।
त्रिविष्टप-(सं०नपुं०) स्वर्ग।
त्रिवेणी-(सं०स्त्री०) तीन नदियों का सङ्गम, प्रयाग में वह स्थान जहाँ गंगा यमुना और सरस्वती नदियों का संगम हैं,।
त्रिवेद-(सं०पुं०) ऋक्,यजु और साम ये तीनों वेद।
त्रिवेनी-(हिं०स्त्री०) देखो त्रिवेणी।
त्रिशत-(सं०नपुं०) तीन सौ।
त्रिशाख-(सं०वि०) तीन शाखा युक्त।
त्रिशिख-(सं०पुं०) त्रिशूल, किरीट।
त्रिशूल-(सं० पुं०) एक प्रकार का अस्त्र जिसके सिर पर तीन फल होते हैं।
त्रिषित-(हिं०वि०) देखो तृषित।
त्रिसङ्गम-(सं०पुं०) तीन नदियों के मिलने का स्थान।
त्रिसन्ध्य-(सं०नपुं०) प्रातः, मध्याह्न और सन्ध्या ये तीन काल।
त्रिसर्ग-(सं०पुं०) सत्व, रज और तम ये तीनों गुण, सृष्टि।
त्रिस्रोता-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
त्रुटि-(सं०स्त्री०) न्यूनता, अभाव, संशय।
त्रुटित-(सं०वि०) टूटा फूटा हुआ।
त्रुटिस्वीकार-(सं० पुं०) दोष की स्वीकृति।
त्रुटी-(हिं०स्त्री०) देखो त्रुटि।
त्रै-(हिं०वि०) तीन।
त्रैकालिक-(सं०वि०) तीनों काल में अर्थात् सर्वदा रहने वाला।
त्रैगुणिक-(सं०वि०) तीन बार गुणा किया हुआ।
त्रध-(सं०अव्य०) तीन प्रकार से।
त्रैमासिक-(सं०वि०) तीन महीने का, हर तीसरे महीने होने वाला।
त्रैराशिक-(सं०नपुं०) गणित की वह क्रिया जिसमें तीन ज्ञात राशि से चौथी अज्ञात राशि निकाली जाती है।
त्रैलोक, त्रैलोक्य-(सं०पुं०) स्वर्ग, मर्त्य, और पाताल।
त्रैविद्य-(सं०पुं०) तीनों वेदों का जानने वाला।
त्रोटक-(सं०वि०) छेदक, भेदक, (नपुं०) दृश्य काव्य का एक भेद।
त्रोण, त्रोन-(हिं०पुं०) तरकस।
त्र्यंश-(सं०पुं०) तिगुना अंश, तिगुना भाग।
त्र्यक्षर-(सं०पुं०) प्रणव, ओंकार।
त्र्यध्वगा-(सं०स्त्री०) गङ्गा।
त्र्यम्बक-(सं०नपुं०) शिव, महादेव।
त्र्याह-(सं०पुं०) तीन दन का काल।
त्र्यायुष-(सं०नपुं०) बाल्य, यौवन और स्थविर गे तीन अवस्थायें।
त्र्याहिक-(सं०पुं०) तीसरे दिन आने वाला ज्वर।
त्वक्-(सं०पुं०) छिलका, छाल, खाल, चमड़ा, स्पर्श करने की इन्द्रिय,
त्वचकना-(हिं०क्रि०) पचकना।
त्वचा-(सं०स्त्री०) चमड़ा, छाल, वल्कल, केंचुली।
त्वत्कृत-(सं०वि०) तुमसे किया हुआ।
त्वदीय-(सं०स्त्री०) तुम्हारा।
त्वरा-(सं०स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी।
त्वरारोह-(सं०पुं०) पारावत, कबूतर।
त्वरावान्-(सं०पुं०) शीघ्रता करनेवाला
त्वरित-(सं०नपुं०) शीघ्र, जल्दी (वि० क्रि०वि०) जल्दी से।
त्वष्टा-(सं०पुं०) विश्वकर्मा, बढ़ई।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ

थ-हिंदी तथा संस्कृत वर्णमाला का सत्रहवाँ व्यंजन तथा तवर्ग का दूसरा अक्षर इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है।

थ-(सं०पुं०) पर्वत, भय आहार, (वि०) भयरक्षक।

थंका-(हिं०पुं०) थोक में।

थंब, थंभ-(हिं०पुं०) स्तम्भ, खंभा, सहारा।

थंभन-(हिं०पुं०) स्तम्भन, रुकावट।

थंभना-(हिं०क्रि०) देखो थमना।

थंभित-(हिं०वि०) स्थिर, निश्चल।

थक-(हिं०पुं०) देखो थाक।

थकना-(हिं०क्रि०) शिथिल होना, अशक्त होना।

थकान-(हिं०स्त्री०) शिथिलता, थकावट। **थकाना**-(हिं०क्रि०) शिथिल करना।

थकार-(सं०पुं०) 'थ' स्वरूप अक्षर।

थकाव, थकावट-(हिं०स्त्री०) शिथिलता, थकन का भाव। (हिं०वि०) श्रान्त, शिथिल, थका हुआ।

थकिया-(हिं०स्त्री०) वह मोटी तह जो किसी गाढ़ी वस्तु के जमने से बन जाती है।

थकौहां-(हिं०वि०) शिथिल।

थक्का-(हिं०पुं०) जमा हुआ कतरा, किसी गाढ़ी वस्तु की मोटी तह।

थगित-(हिं०वि०) ठहरा हुआ।

थड़ा-(हिं०पुं०) बैठने का स्थान, बैठक।

थति-(हिं०स्त्री०) देखो थाती।

थत्ती-(हिं०स्त्री०) राशि, ढेर, पुंज।

थन-(हिं०पुं०) चौपायों का स्तन।

थनी-(हिं०स्त्री०) बकरी के गले के लटकती हुई स्तन के आकार की माँस की दो थैलियाँ।

थनला-(हिं०पुं०) स्त्रियों के स्तन पर होने वाला एक प्रकार का फोड़ा।

थनैत-(हिं०पुं०) गाँव का प्रधान पुरुष।

थपकन-(हिं०पुं०) वह आघात जो प्रेम से किसी के शरीर पर किया जाय।

थपकना-(हिं०क्रि०) स्नेहवश किसी के शरीर पर धीरे धीरे हाथ मारना, पुचकारना, ढाढस देना।

थपका-(हिं०पुं०) थक्का। **थपकी**-(हिं०स्त्री०) आघात, जो प्रेमवश हथेली से धीरे धीरे पहुँचाया जाता है।

थपन-(हिं०पुं०) स्थापन, ठहरने का काम। **थपना**-(हिं०क्रि०) स्थापित होना, ठहरना।

थपुआ-(हिं०पुं०) चौरस छोटा छाजन।

थपेड़ना-(हिं०क्रि०) थप्पड़ मारना।

थपेड़ा-(हिं०पुं०) थप्पड़, ठोकर, टक्कर।

थपोड़ी, थपोली-(हिं०स्त्री०) हथेली।

थम-(हिं०पुं०) खंभा।

थमकारी-(हिं० पुं०) स्तम्भन करने वाला।

थमना-(हिं०क्रि०) ठहरना, रुकना।

थर-(हिं०स्त्री०) तह, परत।

थरकना-(हिं०क्रि०) भय से काँपना, थर्राना।

थरकौंकौहा-(हिं०वि०) काँपने वाला।

थरथर-(हिं०स्त्री०) भय के कारण कम्पन; (क्रि०वि०) काँपते हुए।

थरथराना-(हिं०क्रि०) भय से काँपना।

थरथराहट-(हिं०स्त्री०) भय से उत्पन्न कंपकपी।

थरना-(हिं० क्रि०) काँटी आदि की नोक को हथौड़ी से पीत कर चौड़ी करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थरहरी-(हिं०स्त्री०) भय से उत्पन्न कँपकपीं।

थरिया-(हिं०स्त्री०) देखो थाली।

थर्राना-(हिं०क्रि०) भय से काँपना।

थल-(हिं०पुं०) स्थल, ठिकाना, स्थान

थलकना-(हिं०क्रि०) झोल होने के कारण ऊपर से नीचे हिलना।

थलचर-(हिं०पुं०) स्थलचर, भूमि पर रहने वाला प्राणी।

थलथल-(हिं०वि०) मोटाई के कारण हिलता हुआ।

थलथलाना-(हिं०क्रि०) मोटाई के कारण शरीर के माँस का झूल कर हिलना।

थलपति-(हिं०पुं०) भूपति,राजा।

थली-(हिं० स्त्री०) स्थली, स्थान, ठिकाना, भूमि।

थवई-(हिं०पुं०) स्थपति, मकान बनाने वाला राज।

थहना-(हिं०क्रि०) थाह लगाना।

थहराना-(हिं०क्रि०) थाह लेना।

थहरि-(हिं०स्त्री०) भूमि।

थहाना-(हिं०क्रि०) थाह लगाना, किसी के आश्रय को जानने का प्रयत्न करना।

थाँग-(हिं०स्त्री०) अनुसन्धान, खोज, पता, गुप्त रूप से किसी बात का पता लगाना, भेद।

थाँगी-(हिं० पुं०) चोरों का भदिया, जासूस, चोरों का सरदार।

थाँम-(हिं०पुं०) खंभा, थूनी, चाँड।

था-(हिं०क्रि०) "है" शब्द का भूतकाल का रूप, रहा।

थाई-(हिं०वि०) स्थायी, स्थिर रहने वाला (पुं०) बैठने का स्थान, बैठक

थाक-(हिं०पुं०) गाँव की सीमा या सरहद, राशि, ढेर, समूह।

थाकना-(हिं०क्रि०) ठहराना।

थाति-(हिं०स्त्री०) स्थिरता, टिकाव।

थाती-(हिं०स्त्री०) धरोहर, संचित धन, अमानत।

थान-(हिं०पुं०) स्थान, ठिकाना। घोड़े या चौपायों को बाँधने का स्थान, मन्दिर, देवालय, संख्या, कपड़े गोट आदि का पूरा टुकड़ा।

थाना-(हिं०पुं०) अड्डा, टिकान, पुलिस की बड़ी चौकी।

थानी-(हिं०पुं०) स्थान का मालिक।

थानेत-(हिं०पुं०) देखो थानैत।

थानेदार-(हिं०पुं०) थाने का प्रधान अधिकारी। **थानेदारी**-(हिं०स्त्री०) थानदार का पद या कार्य।

थानैत-(हिं०पुं०) किसी स्थान का स्वामी।

थाप-(हिं०स्त्री०) मृदङ्ग, तबले आदि पर पूरे पंजे का आघात, ठोंक, महत्व प्रतिष्ठा, धाक, थप्पड़, छाप, स्थिति। **थापन**-(हिं०पुं०) स्थापित करने की क्रिया। **थापना**-(हिं०क्रि०) स्थापित करना, बैठाना।
(पुं०) किसी प्रतिमा का स्थापन या प्रतिष्ठा।

थापा-(हिं०पुं०) पंजे का छापा।

थापिया-(हिं०पुं०) थापने वाला।

थापी-(हिं०स्त्री०) कुम्हार का कच्चा घड़ा पीटने की मुंगरी, गच पीटने की राज की चिपटी मुंगरी।

थाम-(हिं०पुं०) स्तम्भ, खंभा।

थामना-(हिं०क्रि०) लेना, संभालना, सहारा देना।

थायी-(हिं०वि०) स्थायी, स्थिर, दृढ़।

थार-(हिं०पुं०) बड़ी थाली।

थाल-(हिं०पुं०) आलवाल, थांवला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थाली-(हिं०स्त्री०) छोटा थाल ।
थावर-(हिं०वि०) देखो स्थावर ।
थाह, थाव-(हिं०स्त्री०) जल की गहराई का अन्त, जलाशय का तल भाग, परिमित, हद; **थाहना**-(हिं०क्रि०) गहराई का पता लगाना, अनुमान करना । **थाहरा**-(हिं०वि०) कम गहरा, छिछला ।
थिगली-(हिं०स्त्री०) किसी फटे हुए वस्त्र के छेद पर लगाने की चकती, पेवन ।
थित-(हिं०वि०) स्थित, ठहरा हुआ, रक्खा हुआ । **थिति**-(हिं०स्त्री०) अवस्था, दशा ।
थिर-(हिं०वि०) स्थिर, अचल, स्थायी, शान्त, दृढ़, टिकाऊ ।
थिरता, थिरताई-(हिं०स्त्री०) स्थिरता ।
थिरना-(हिं०क्रि०) जल का क्षुब्ध न रहना ।
थिरा-(हिं०स्त्री०) स्थिरा, पृथ्वी ।
थिराना-(हिं०क्रि०) किसी तरल पदार्थ को स्थिर करना ।
थी-(हिं० क्रि०) "था" का स्त्रीलिङ्ग का रूप ।
थीता-(हिं०पुं०) स्थिरता, शान्ति,
थीरु-(हिं०पुं०) स्थिर ।
थुकवाना-(हिं०क्रि०) देखो थुकाना ।
थुकाई-(हिं०स्त्री०) थूकने का काम ।
थुकाना-(हिं०वि०) उगलवाना, तिरस्कार या निन्दा करना ।
थुड़ी-(हिं०स्त्री०) तिरस्कार और घृणा सूचक शब्द, धिक्कार ।
थुत्कार-(सं०पुं०) वह शब्द जो मुख से थूक निकलती समय उत्पन्न होता है ।
थुथना-(हिं०पुं०) देखो थूथन ।
थुन्नी-(हिं०स्त्री०) स्तम्भ, खंभा, चाँड ।
थुरना-(हिं०क्रि०) मारना, पीटना, कूटना ।
थुरहथा-(हिं०वि०) मितव्ययी ।
थू-(हिं०अव्य०) तिरस्कार सूचक शब्द, छिः थूकने का शब्द ; **थू थू करना**-धिक्कारना ।
थूक-(हिं०पुं०) निष्ठीवन, खखार ।
थूथना-(हिं०क्रि०) तिरस्कार करना, धिक्कारना ।
थूथन-(हिं०पुं०) मुख का अग्र भाग जो आगे से निकला हुआ हो ।
थूनी-(हिं०स्त्री०) स्तम्भ, खंभा, चाँड; **थूरना**-(हिं०क्रि०) पीटना, कूटना ।
थूल-(हिं०वि०) स्थूल, भारी ।
थूला-(हिं०वि०) हृष्ट पुष्ट ।
थूहा-(हिं०पुं०) टीला, राशि, ढेर ।
थूही-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का ढेर, मिट्टी का खंभा जो कुवें पर बनाया जाता है जिसपर लकड़ी रखकर पानी खींचने के लिये गड़ारी लगाई जाती है ।
थेंहर-(हिं०वि०) श्रान्त, थका हुआ ।
थेइ, थेई-(हिं० वि०) ताल सूचक आघात और मुद्रा ।
थेगली-(हिं०स्त्री०) देखो थिगली ।
थैला-(हिं०पुं०) कपड़े या टाट का बना हुआ झोला । **थैली**-(हिं०वि०) छोटा थैला, रुपयों से भरा हुआ कोष । तोड़ा ।
थोक-(हिं०पुं०) राशि ढेर समूह, एकत्रित वस्तु, इकट्ठा बेंचने की वस्तु, भूमि का टुकड़ा ।
थोड़ा-(हिं०वि०) न्यून, अल्प, कम परिमाण का, (क्रि०वि०) तनिक, थोड़ा बहुत; बिलकुल नहीं ।
थोथ-(हिं०स्त्री०) पोलापन, तोंद, पेटी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थोथरा-(हिं०वि०) निःसार, पोला, व्यर्थ का ।
थोथा-(हिं०वि०) निःसार ।
थोपड़ी-(हिं०स्त्री०) थप्पड़, चपत, धौल ।
थोवड़ा-(हिं०क्रि०) मिट्टी आदि का मोटा लेप चढ़ाना, आरोपित करना ।
थोवड़-थोवड़ा-(हिं० पुं०) पशुओं का थूथन ।
थोर, थोरा-(हि०वि०) देखो थोड़ा ।
थोरिक-(हिं०वि०) थोड़ा सा, अल्प मात्रा में ।

द

द-संस्कृत तथा हिंदी वर्णमाला का अठारहवाँ व्यंजन, तवर्ग का तीसरा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है ।
द-(सं०पुं०) अचल, पर्वत, दाँत, (स्त्री०) भार्या, (वि०) दाता, देने वाला ।
दइत-(हिं०पुं०) देखो दैत्य ।
दई-(हिं०पुं०) दैवयोग, प्रारब्ध ।
दईमारा-(हिं०वि०)हतभाग्य,अभागा ।
दंगली-(हिं०वि०) झगड़ालू ।
दंगा-(हिं०पुं०) उपद्रव, झगड़ा ।
दंगैत-(हिं०वि०) उपद्रवी, लड़ाका ।
दंड-(हिं०पुं०) डंडा, सोंटा ।
दंत-देखो दाँत ।
दँतिया दँतुरिया-(हिं० स्त्री०) छोटे छोटे दाँत ।
दँतुला-(हिं०वि०)बड़े बड़े दाँत वाला ।
दंद-(हिं०स्त्री०) किसी पदार्थ से निकलती हुई गरमी, (पुं०) लड़ाई झगड़ा ।
दंदी-(हिं०पुं०) उपद्रवी, झगड़ालू ।
दँवरी-(हिं०स्त्री०)अन्न के सूखे ठंठलों में से दाने अलगाने के लिये बैलों के खुरों से रौंदवाने का काम ।
दँवारी-(हिं०स्त्री०) देखो दवाग्नि ।
दंश-(सं०पुं०) गोमक्षिका, दाँत से काटने की क्रिया, साँप के काटने का घाव, द्वेष, वैर, दाँत, विषैले जन्तुओं के डंक, कटूक्ति । **दंशक**-(सं०वि०) दाँत से कटाने वाला ;
दंशन-(सं०पुं०)दाँत काटना, डंसना ।
दंष्ट्र-(सं०पु०) दाँत शूकर ।
दंष्ट्रा-(सं०स्त्री०) दाढ़, चौघड़ ।
दंष्ट्रायुध-(सं०पुं०) वराह, सुअर ।
दंस-(हिं०पुं०) देखो दंश ।
दकार-(सं०पुं०) तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द' ।
दक्खिन-(हिं०पुं०) सूर्य की ओर मुख करके खड़े होने पर दाहिने हाथ की ओर पड़ने वाली दिशा, भारत के दक्षिण की ओर का भाग । **दक्खिनी**-(हिं० वि०) जो दक्षिण दिशा में हों (पु०) दक्षिण देश का रहने वाला ।
दक्ष-(सं०वि०) निपुण, चतुर,कुशल ।
दक्षता-(सं०स्त्री०)निपुणता,योग्यता ।
दक्षाध्य-(सं०पुं०) गरुण पक्षी, गृध ।
दक्षिण-(सं०वि०) उत्तर के सामने की दिशा, अपसव्य, दाहिना, अनुकूल, निपुण, चतुर, दक्ष, समर्थ ।
दक्षिण गोल-(सं०पुं०)वे छ राशियाँ जो विषुवत रेखा के दक्षिण में हैं ।
दक्षिणा-(सं०स्त्री०) दक्षिण दिशा, प्रतिष्ठा, सम्मान, पुरस्कार, भेंट, ब्राह्मण को दिया जाने वाला दान ।
दक्षिणायन-(सं०नपुं०) सूर्य की दक्षिण की ओर की गति, सूर्य की कर्क रेखा से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दक्षिण मकररेखा की ओर गति ।
दक्षिणी-(हिं०स्त्री०) दक्षिण देश की भाषा, मराठी, (वि०) दक्षिण देश संबंधी ।
दक्षिणेतर-(सं०वि०) दाहिने से इतर बायाँ ।
दखिन-(हिं०पुं०) देखो दक्षिण ।
दखिनहा-(हिं०वि०) दक्खिन का, दक्षिणी ।
दगड़-(हिं०पुं०) बड़ा ढोल, जो लड़ाई के मैदान में बजाया जाता है ।
दगड़ना-(हिं०स्त्री०) सच्ची बात पर विश्वास न करना ।
दगदगाना-(हिं०क्रि०) चमकना, दमकना ।
दगदगी-(हिं०स्त्री०) भय, सन्देह ।
दगध-(हिं०पुं०) दाह क्रिया, दग्ध ।
दगधना-(हिं०क्रि०) जलना, जलाना ।
दगना-(हिं०क्रि०) बन्दूक या तोप का छूटना, दागा जाना ।
दगर,दगरा-(हिं०पुं०) विलम्ब, देर, मार्ग ।
दगवाना-(हिं०क्रि०) दागने के काम में किसी दूसरे को लगाना ।
दगहा-(हिं०वि०) दागवाला, जिसने मृतक का दाहकर्म किया हो ।
दगैल-(हिं०वि०) जिसमें कुछ दोष हो, (पुं०) छली, कपटी ।
दग्ध-(सं०वि०) जला हुआ, जलाया हुआ ।
दग्धाक्षर-(सं०पुं०) पिङ्गल के अनुसार झ, ह, र, भ, और ष ये पाँच अक्षर जिनसे किसी छन्द का आरंभ करना मना है ।
दग्धेष्टका-(सं०स्त्री०) झांवाँ ।
दचक-(हिं०स्त्री०) दबाव ।
दचकना-(हिं०क्रि०) दब जाना, झटका खाना, झटका देना ।
दचका-(हिं०पुं०) धक्का ।
दचना-(हिं०क्रि०) गिर पड़ना ।
दच्छ-(हिं०पुं०) देखो दक्ष ।
दच्छिना-(हिं०स्त्री०) देखो दक्षिणा ।
दच्छिन-(हिं०क्रि०) देखो दक्षिण ।
दढना-(हिं०क्रि०) जलना ।
दढ़ियल-(हिं०वि०) दाढ़ी वाला ।
दण्ड-(सं०नपुं०) यष्टि, लाठी, डंडा, दमन, शासन, २४ मिनट का समय, घड़ी ।
दण्डक-(सं०पुं०) एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में सत्ताइस अक्षर होते हैं, डंडा । **दण्डकी**-(सं०स्त्री०) ढोलक ।
दण्डग्रहण-(सं०नपुं०) सन्यास आश्रम ग्रहण करना । **दण्डढक्का**-(सं०स्त्री०) दुन्दुभि, नगाड़ा ।
दण्डधर-(सं०वि०) डंडा धारण करने वाला ; (पुं०) यमराज, शासनकर्ता, राजा, सन्यासी ।
दण्डन-(सं०नपुं०) दण्ड देने की क्रिया, शासन ; **दण्डनायक**-(सं०पुं०) सेनापति ; **दण्डनीति**-(सं०स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें राज्यशासन के संबंध के नियम और उपदेश हों ; **दण्डनीय**-(सं०वि०) दण्ड देने योग्य । **दण्डपाल**-(सं०नपुं०) द्वारपाल । **दण्डप्रणाम**-(सं०पुं०) भूमि पर डंडे के समान पड़कर प्रणाम करना ।
दण्डवत्-(सं०वि०) दण्ड के समान, (स्त्री०) पृथ्वी पर लेट कर प्रणाम करना ; **दण्डस्थान**-(सं०पुं०) शरीर का वह अंग जहाँ पर दण्ड दिया जा सकता है । **दण्डा**-(हिं०पुं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखो डंडा। **दण्डादण्डि**-(सं०अव्य०) डंडों की मारपीट।

दण्डायमान-(सं०वि०) जोडंडे की तरह सीधा खड़ा हो। **दण्डालय**-(सं०पुं०) वह न्यायालय जहाँ दण्ड देने का विधान हो। **दण्डिक**-(सं०स्त्री०) स्त्री०) डोरी, रस्सी,

दण्डित-(सं०वि०) वह जिसको दण्ड मिला हो।

दण्डी-(संपुं०) हिन्दुओं का एक उपासक संप्रदाय, ये लोग दण्ड कमण्डलु लिये इधर उधर घूमते हैं। **दण्डय**-(सं०-वि०) दण्डनीय।

दतवन-(हिं०स्त्री०) देखो दतुवन।

दतिया-(हिं०स्त्री०) छोटा दाँत।

दतअन,दतुवन-(हिं०स्त्री०) बबूल, नीम आदि की पतली टहनी, दाँत स्वच्छ करने की क्रिया। **दतौंन**-(हिं०स्त्री०) देखो दतुवन।

दत्त-(सं०वि०) रक्षित, बचाया हुआ, दान दिया हुआ। (पुं०) दान, दत्तक **दत्तक**-(सं०पुं०) गोद लिया हुआ बेटा।

दत्ती-(हिं०स्त्री०) दृढ़ संबंध, सगाई।

ददरा-(हिं०पुं०) छानने का कपड़ा, छन्ना।

ददा-(हिं०पुं०) देखो दादा।

ददिया ससुर-(हिं०पुं०) ससुर का पिता, **ददिया सास**-(हिं०स्त्री०) पति या पत्नी की दादी। **ददिहाल**-(हिं०पुं०) दादा का घर।

ददोरा-(हिं०पुं०) शरीर पर उभड़ा हुआ चकोता।

दद्रु-(सं०पुं०) कच्छप, कछुआ, दाद का रोग।

दधि-(सं०पुं०) जमाया हुआ दूध, दहीं

दधिचार-(सं०पुं०) दही मथने की मथानी।

दधिज-(सं०पुं०) नवनीत, मक्खन।

दधिमण्ड-(सं०पुं०) दही का पानी।

दध्यन्न-(सं०नपुं०) दही मिला हुआ अन्न।

दध्योदन-(सं०पुं०) दही मिला हुआ भात।

दनदनाना-(हिं०क्रि०) आनन्द करना

दनादन-(हिं०क्रि०वि०) दनदन शब्द के साथ, तुरत।

दन्त-(सं०पुं०) दाँत-**दन्तक**-(सं०पुं०) पहाड़ की चोटी। **दन्तकथा**-(सं०-स्त्री०) सुनी हुई बात, जनश्रुति। **दन्तकर्ष**-(सं०पुं०) दाँत किरकिराना; **दन्तच्छद**-(सं०पुं०) ओष्ठ, ओठ। **दन्तजात**-(सं०वि०) दाँत निकलने योग्य। **दन्तधावन**-(सं० नपुं०) दाँत धोने या स्वच्छ करने की क्रिया **दन्तप्रक्षालन**-(सं०नपुं०) दाँत स्वच्छ-करने का काम। **दन्तशुद्धि**-(सं० स्त्री०) दाँतों की स्वच्छता। **दन्तशूल**-(सं०पुं०) दाँत की पीड़ा। **दन्तसंघर्ष**-(सं०पुं०) दाँत किरकिराना।

दन्ताग्र-(सं०नपुं०) दाँत की नोक या अग्रभाग। **दन्ताघात**-(सं०पुं०) दाँत का आघात या चोट। **दन्तादन्ति**-(सं०स्त्री०) एक दूसरे को दाँत काटने का युद्ध।

दन्ती-(सं०स्त्री०) हाथी, गज।

दन्तुर-(सं०वि०) जिसके दाँत आगे को निकले हों, दँतूला।

दन्तोष्ठ्य-(सं०पुं०) वह वर्ण जिसका उच्चारण दाँत और ओंठ से हो।

दन्त्य-(सं०वि०) जिसका उच्चारण दाँत की सहायता से हो, तवर्ग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दन्न-(हिं०पुं०) तोप आदि के छूटने का 'दन' शब्द ।

दपट-(हिं०स्त्री०) डपट, घुड़की ।

दपेटना-(हिं०क्रि०) डाटना, घुड़कना ।

दपेट-(हिं०स्त्री०) देखो दपट, झिड़की

दपेटना-(हिं०क्रि०) झिड़कना, चपेटना ।

दफला-(हिं०पुं०) देखो डफला ।

दबंग-(हिं०वि०) प्रभावशाली ।

दबक-(हिं०स्त्री०) छिपाने का भाव, दबने की क्रिया, सिकुड़न; **दबकना**-(हिं०क्रि०) छिपना, लुकना; **दबकनी**-(हिं०स्त्री०) भाथी का छिद्र जिसमें से हवा होकर भीतर जाती है,

दबकवाना-(हिं०क्रि०) दबकाने में किसी दूसरे को प्रवृत्त करना ।

दबकाना-(हिं०क्रि०)ढांपना, छिपाना।

दबाना-(हिं०क्रि०) भार से नीचे को आना, संकोच करना, धीमा पड़ना, किसी के दवाव से विवश होना, पीछे को हटना,

दबवाना-(हिं०क्रि०) दबाने के काम में दूसरे को लगाना ।

दबाई-(हिं०वि०) दबाने का कार्य ।

दबाऊ-(हिं० वि०) दबाने वाला,

दबाना-(हिं०क्रि०)धसाना, भार देना, छिपा रखना, विवश करना, धरती में गाड़ना, अनुचित रीति से किसी का माल ले लेना, लाना, दमन करना, शान्त करना ।

दबाव-(हिं०पुं०) दबाने की क्रिया, चाँप ।

दबेला-(हिं०वि०) जिस पर दबाव पड़ा हो, शीघ्र होने वाला ।

दबोचना-(हिं०क्रि०) किसी को अकस्मात् पकड़ कर दबा लेना, छिपाना ।

दबोरना-(हिं०क्रि०) तेखो दवाना ।

दभ्य-(सं०वि०) हन्तव्य, मारने योग्य

दम-(सं०पुं०)दण्ड, दमन, इन्द्रियों को वश में करना,

दमक-(हिं०स्त्री०) द्युति, चमक ।

दमकना-(हिं०क्रि०) चमकना ।

दमकला-(हिं०स्त्री०) वह यन्त्र जिसके द्वारा किसी तरल पदार्थ का फौव्वारा बड़ी वेग से दूर तक फेंका जाता है ।

दमचूल्हा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चूल्हा जिसके बीच में जाली होती है और बगल में हवा देने के लिये एक बड़ा छेद होता है ।

दमड़ी-(हिं०स्त्री०) एक पैसे का आठवाँ भाग ।

दमन-(सं०पुं०) दबाने की क्रिया । दण्ड ।

दमनशील-(सं०वि०) दमन करने वाला

दमना-(हिं०क्रि०) दमन करना ।

दमनीय-(सं०वि०) दमन करने योग्य

दमाद-(हिं०पुं०) जामाता ।

दमादम-(हिं०क्रि० वि०) लगातार, बराबर ।

दमारि-(हिं०पुं०) वन की आग ।

दमित-(सं०वि०) वश में किया हुआ।

दमी-(हिं०वि०) दम लगाने वाला ।

दमैया-(हिं०वि०) दमन करने वाला।

दमोड़ा-(हिं०पुं०) मूल्य ।

दम्पती-(सं०पुं०) पति और पत्नी

दम्भ-(सं०पुं०) कपट, छल, धोखा ।

दम्भक-(सं०पुं०) पाखंडी ।

दम्भन-(सं०पुं०) लुभाने की क्रिया ।

दम्भी-(सं०वि०) अभिमानी, पाखंडी।

दम्य-(सं०वि०) दमन करने योग्य ।

दयंत-(हिं०पुं०) देखो दैत्य ।

दय-(सं०पुं०) दया, कृपा, करुणा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दया-(सं०स्त्री०) करुणा ।
दयाना-(हिं०क्रि०) दयालु होना ।
दयानिधान, दयानिधि-(सं०पुं०) अति दयालु । दयापात्र-(सं०वि०) वह जिस पर दया करना उचित हो ।
दयामय-(सं०वि०) दया से पूर्ण ।
दयार्द्र-(सं०वि०) दयापूर्ण, दयालु ।
दयाल-(हिं०वि०) दयालु, कृपालु । दयालु-(सं०वि०) दयावान्, कृपालु । दयालुता-(सं०स्त्री०) दया करने की प्रवृत्ति, दयावन्त-(हिं०वि०) दयालु। दयावान-(हिं०वि०) कृपालु । दयाशील-(सं०वि०) दयालान- कृपालु । दयासागर-(सं०पुं०) अत्यन्त दयालु मनुष्य ।
दयिता-(सं०स्त्री०) पत्नी, भार्या ।
दयिताधीन-स्त्री के वशीभूत ।
दर-(हिं०पुं०) सेना, समूह, दल, ठिकाना (वि०) थोड़ा सा ।
दरक-(सं०वि०) डरपोक, कायर, भीरु (हिं०स्त्री०) वह दरार जो दाब पड़ने से उत्पन्न होती है । दरकना-(हिं० क्रि०) विदीर्ण होना, फटना ।
दरकच-(हिं०स्त्री०) कुचल जाने से लगी हुई चोट ।
दरकटी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के भाव का ठहरना ।
दरकना-(हिं०क्रि०) विदीर्ण होना,
दरका-(हिं०पुं०) दरर ।
दरकाना-(हिं०क्रि०) फटना, फाड़ना ।
दरज-(हिं०स्त्री०) दरार, फटन ।
दरजन-(हिं०पुं०) बारह का समूह ।
दरजिन-(हिं०स्त्री०) दरजी की स्त्री ।
दरजी-(हिं०पुं०) कपड़ा सीने का व्यापार करने वाला ।
दरण-(हिं०पुं०) ध्वंस, नाश, पीसनेकी क्रिया
दरदरा-(हिं०वि०) जिसके कण मोटे हों, जो महीन पिसा न हो । दरदराना-(हिं०क्रि०) बहुत महीन न पीसना ।
दरद्द-(हिं०पुं०) पीड़ा ।
दरन-(हिं०वि०) नाश करने वाला ।
दरना-(हिं०क्रि०) मोटा पीसना, नष्ट करना ।
दरज-(हिं०पुं०) देखो दर्ज ।
दरपन-(हिं०पुं०) दर्पण ।
दरपना-(हिं०क्रि०) अहंकार करना ।
दरपनी-(हिं०स्त्री०) छोटा दर्पण ।
दरब-(हिं०पुं०) धन, धातु ।
दरभ-(हिं०पुं०) दर्भ, कुश ।
दरराना-(हिं०क्रि०) वेग से आ पहुँचना
दरवी-(हिं०क्रि०) सड़सी, करछुल, पौना । दरवीकर-सर्प, साँप ।
दरश-(हिं०पुं०) देखो दर्श । दरसन-(हिं०पुं०) देखो दरशन ।
दरसाना-(हिं०क्रि०) दरसाना, दिखलाना ।
दरस-(हिं०पुं०) दर्शन, भेंद, सुन्दरता, छवि । दरसन-(हिं०पुं०) दर्शन, भेंट ।
दरसना-(हिं०क्रि०) देखना ।
दरसनीय-(हिं०वि०) देखो दर्शनीय ।
दरसान-(हिं०पुं०) प्रकाश, चमक ।
दरसाना, दरसावना-(हिं०क्रि०) दिखलाना ।
दरारा-(हिं०पुं०) धक्का, रगड़, दरेरा।
दरि-(सं०स्त्री०) गुहा, कन्दरा ।
दरित-(सं०वि०) भयभीत, डरपोक ।
दरिद्र-(सं०वि०) निर्धन, कंगाल ।
दरिद्रता-(सं०स्त्री०) निर्धनता।
दरी-(सं०स्त्री०) पर्वत की गुहा, खोहा
दरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मोटे दल का बिछौना, जो मोटे सूत से बनाया जाता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दरेंती-(हिं०स्त्री०) अनाज दरने की छोटी चक्की।

दरेरना-(हिं०क्रि०) रगड़ते हुए धक्का देना, पीसना, रगड़ना। **दरेरा**-(हिं०पुं०) धक्का, रगड़, तोड़।

दरेस-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छीट।

दरेसी-(हिं०स्त्री०) तैयारी।

दरैया-(हिं०पुं०) दाल दरने वाला।

दर्जन-(हिं०पुं०) बारह वस्तु का समूह।

दर्दुर-(सं०पुं०) भेक, मेढक, मेघ, बादल

दर्प-(सं०पुं०) गर्व, अहङ्कार, अभिमान, **दर्पण**-(सं०पुं०) उत्तेजना, (नपुं०) आइना, आरसी, **दर्पद**-(सं०वि०) अभिमान उत्पन्न करने वाला। **दर्पित**-(सं०वि०) अहङ्कार से भरा हुआ। **दर्पी**-(सं०वि०) अहंकारी, घमंडी।

दर्भ-(सं०पुं०) कुश, डाभ, कुश का बना हुआ आसन।

दर्भासन-(सं०पुं०) कुशासन।

दर्राना-(हिं०क्रि०) बेधड़क किसी स्थान में प्रवेश करना,

दर्वि-(सं०स्त्री०) करछी।

दर्वी-(सं०स्त्री०) करछी, चम्मच, चमचा।

दर्शक-(सं०पुं०) द्वारपाल, (वि०) देखदेवाला, दिखाने वाला।

दर्शन-(सं०नपुं०) नयन, दर्पण, भेंट, साक्षात्कार, ज्ञान, वह शस्त्र जिसके द्वारा यथार्थ तत्व का ज्ञान होता है।

दर्शनपथ-(सं०पुं०) दृष्टिपथ।

दर्शनीय-(सं०वि०) देखने योग्य, सुन्दर

दर्शयिता-(सं०वि०) दर्शक, दिखलाने वाला।

दर्शाना-(हिं०क्रि०) दिखलाना।

दर्शित-(सं०वि०) दिखलाया हुआ।

दर्शी-(सं०वि०) देखने वाला, भेंट करानेवाला।

दल-(सं०नपुं०) खण्ड, टुकड़ा, झुण्ड, समूह, फूल की पंखड़ी, मण्डली, सेना।

दलक-(हिं०स्त्री०) थरथराहट, शरीर की वह पीड़ा जो रह रह कर उठती है; **दलकन**-(हिं०पुं०) दलकने की क्रिया

दलकना-(हिं०क्रि०) डराना, कँपाना।

दलदल-(हिं०स्त्री०) वह भूमि जो बहुत गहराई तक गीली और मृदु हो, कीचड़।

दलदार-(हिं०वि०) मोटी तह या परत का।

दलन-(सं०पुं०) विनाश, संहार, नाश।

दलना-(हिं०क्रि०) चूर्ण करना, कुचलना।

दलपति-(सं०पुं०) सरदार, सेनापति।

दलबल-(सं०पुं०) सैन्य समूह।

दलबादल-(हिं०पुं०) बादलों का समूह, बड़ी सेना।

दलमलना-(हिं०क्रि०) कुचलना।

दलवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से दलने का काम कराना।

दलवाल-(सं०पुं०) सेनापति।

दलवैया-(हिं०वि०) कुचलने वाला।

दलहन-(हिं०पुं०) वह अन्न जिसकी दाल बनाई जावे।

दलान-(हिं०पुं०) ओसारा।

दलित-(सं०वि०) विदीर्ण, कुचला हुआ।

दलिया-(हिं०पुं०) वह अन्न जो दल कर टुकड़े टुकड़े किया गया हो।

दलेंज-(हिं०पुं०) बुड्ढा मनुष्य।

दल्लाल-(हिं०पु०) देखो दलाल।

दल्लाली-(हिं०स्त्री०) देखो दलाली।

दवँरी-(हिं०स्त्री०) देखो दँवरी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दव-(सं०पुं०) वन, जंगल, वह अग्नि जो जंगलों में आप से आप लग जाती है।

दवदहन-(सं०पुं०) जंगल की आग।

दवना-(हिं०क्रि०) दग्ध करना, जलना।

दवनी-(हिं०स्त्री०) देखो दँवरी।

दवागिन-(हिं०स्त्री०) देखो दावाग्नि; दवाग्नि-(सं०पुं०) वन में लगने वाली अग्नि।

दवादर्पन-(हिं०पुं०) औषधि।

दवारि-(हिं०स्त्री०) वनाग्नि, दावानल।

दश-(सं०वि०) पाँच की दूनी संख्या, दस। दशकण्ठ-(सं०पुं०) रावण।

दशकन्ध, दशकन्धर-(सं०पुं०) रावण

दशकर्म-(सं० नपुं०) द्विजों के दस संस्कार।

दशग्रीव-(सं०पुं०) रावण।

दशदिक्-(सं०स्त्री०) दशो दिशा। दशदिक्पाल-(सं०पुं०) दशो दिशा की रक्षा करने वाले दस देवता।

दशद्वार-(सं०पुं०) शरीर के दश छिद्र।

दशधा-(सं०अव्य०) दस प्रकार से।

दशन-(सं०नपुं०) दाँत, शिखर, कवच।

दशनाम-(सं०पुं०) सन्यासियों के दस भेद। दशनामी-(हिं०पुं०) सन्यासियों का एक वर्ग।

दशम-(सं०वि०) दसवाँ। दशमलव-(सं०पुं०) गणित में वह भिन्न जिसके हर में दस या उसका कोई घात होता है।

दलमांश-(सं०पुं०) दसवाँ भाग।

दशमी-(सं०स्त्री०) चन्द्र मास के किसी पक्ष की दसवीं तिथि।

दशमुख-(सं०पुं०) रावण।

दशरथ-(सं०पुं०) रामचन्द्र के पिता।

दशवक्त्र-(सं०पुं०) रावण।

दशवाजिन्-(सं०पुं०) चन्द्र, चन्द्रमा।

दशवार्षिक-(सं०वि०) दस वर्षमें होने वाला।

दशविध-(सं०वि०) दस प्रकार का।

दशहरा-(सं० स्त्री०) ज्येष्ठ शुक्ल दशमी।

दशा-(सं०स्त्री०) अवस्था, चित्त, कपड़े का किनारा, दिये की बत्ती।

दशानन-(सं०पुं०) रावण।

दशान्त-(सं०पुं०) बत्ती का पिछला भाग।

दशार्ध-(सं० नपुं०) दश का आधा भाग।

दशाह-((सं०पुं०) मृतक के कृत्य का दसवाँ दिन।

दष्ट-(सं०वि०) दाँत से काटा हुआ।

दस-(हिं०वि०) जो गिनती में नव और एक हो पाँचका दुगुना; (पुं०) पाँच की दूनी संख्या १०।

दसन-(हिं०पुं०) देखो दशन।

दसना-(हिं०क्रि०) फैलना, फैलाना।

दसमाथ-(हिं०पुं०) दशशिर, रावण।

दसमी-(हिं०स्त्री०) देखो दशमी।

दसवां-(हिं०वि०) गिनती में दसवें स्थान का।

दसा-(हिं०स्त्री०) देखो दशा।

दसाना-(हिं०क्रि०) बिछाना।

दसी-(हिं०स्त्री०) वस्त्रके किनारेका पल्ला।

दसोतरा-(हिं०वि०) दस अधिक।

दस्यु-(सं०पुं०) डकैत, डाकू, चोर, म्लेच्छ, असुर, दैत्य। (वि०) उपेक्षा करनेवाला। दस्युता-(सं० स्त्री०) लुटेरापन, डकैती, भय।

दह-(हिं०पुं०) नदी के भीतर का गड्ढा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दहक-(हिं०स्त्री०) धधक,ज्वाला,लपट, लज्जा; **दहकन**-(हिं०स्त्री०) दहकनेकी क्रिया। **दहकना**-(हिं०क्रि०) ज्वाला के साथ वलना, शरीर का गरम होना। **दहकाना**-(हिं०क्रि०) धधकाना, क्रोध दिलाना।

दहन-(सं०पुं०) अग्नि।

दहना-(हिं०क्रि०) जलना, जलाना, भस्म होना या भस्म करना, क्रोध दिलाना। (वि०) दाहिना। **दहनि**-(हिं०स्त्री०) जलानेकी क्रिया। **दहनीय**-(सं०वि०) जलने या जलाने योग्य।

दहनोपल-(सं०पुं०) सूर्यकान्तमणि।

दहपटना-(हिं०क्रि०) ध्वस्त करना।

दहर-(हिं०पुं०) नदी का गहरा स्थान पाल, कुण्ड।

दहरदहर-(हिं०क्रि०वि०) धधकते हुए।

दहरना-(हिं०क्रि०) दहलना,दहलाना।

दहल-(हिं०स्त्री०) भयसे काँप उठने का कार्य। **दहलना**-(हिं०क्रि०) डर से काँप उठना।

दहलाना-(हिं०क्रि०) भयभीतकरना।

दहाड़-(हिं०स्त्री०) चिल्लाहट, आर्त नाद। **दहाड़ना**-(हिं०क्रि०) गुर्राना, गरजना।

दाहिना-(हिं०वि०) अपसव्य, बायें का उलटा।

दहिने-(हिं०क्रि०वि०) दाहिने ओर।

दही-(हिं०पुं०) खटाई डालकरजमाया हुआ दूध।

दहुँ-(हिं०अव्य०) किंवा,अथवा,कदाचित्

दहंगर-(हिं०पुं०) दहीं का घड़ा।

दहेंड़ी-(हिं०स्त्री०) दहीं रखने का मिट्टी का पात्र।

दह्यमान-(सं०वि०) जो जल रहा हो।

दाइज, दाइजा-(हिं०पुं०) दहेज।

दाईं-(हिं०वि०) दाहिनी, (स्त्री०) बार।

दाई-(हिं०स्त्री०) धात्री, धाय।

दाऊ-(हिं०पुं०) बड़ा भाई।

दाऊदी-(हिं०पुं०) सफेद नरम छिलके की गेहूँ।

दाँकना-(हिं०क्रि०) गरजना।

दाँक-(हिं०पुं०) डंका, नगाड़ा।

दाँज-(हिं०स्त्री०) समता, तुलना, बराबरी।

दाँड़ना-(हिं०क्रि०) दण्ड देना।

दाँडिक-(हिं०पुं०) घातक।

दाँत-(हिं०पुं०) मुख में की नुकीली हड्डी जो आहार को काटने तथा चबाने के काम में आती है।

दाँता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का नुकीला कंगूरा। **दाँताकिटकिट**-(हिं०स्त्री०) वाक्‌युद्ध, कहासुनी।

दाँना, दाँवना-(हिं०क्रि०) पकी हुई उपज के डंठलों में से दाना अलगाने के लिये बैलों से रौंदवाना।

दाक-(सं०पुं०) दाता, यजमान।

दाक्षायण-(सं०वि०) दक्ष से उत्पन्न।

दाक्षिण-(सं०वि०) दक्षिण संबंधी।

दाक्षिणात्य-(सं०वि०) दक्षिण देश संबंधी।

दाक्षिण्य-(सं०नपुं०) अनुकूलता, उदारता, सुशीलता, (वि०) दक्षिण संबंधी।

दाख-(हिं०स्त्री०) द्राक्षा, मुनक्का, अंगूर।

दाग-(हिं०पुं०) दग्ध, मृतक का दाह कर्म। **दागदेना**-मृतक का दाह कर्म करना।

दागना-(हिं०क्रि०) जलाना, तपे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुए लोहे से शरीर पर चिह्न लगाना रंजक में आग लगाना, बंदूक तोप आदि छोड़ना।

दाघ-(सं०पुं०) दाह, जलन, उष्णता।

दाजन-(हिं०स्त्री०) जलन। दाजना-(हिं०क्रि०) डाह करना, जलाना।

दाड़िम-(सं०नपुं०) अनार।

दाढ़-(सं०स्त्री०) भयंकर शब्द, चौघड़। दाढ़ना-(हिं०क्रि०) जलाना, दुःखी करना।

दाढ़ा-(सं०स्त्री०) दंष्ट्रा, चौघड़, प्रार्थना-(हिं०स्त्री०) दावानल।

दाढ़ी-(हिं०स्त्री०) चिबुक, ठुड्डी और दाढ़ पर के बाल।

दाण्डिक-(सं०पुं०) दण्ड देने के लिये नियुक्त पुरुष।

दात-(सं०वि०) काटा हुआ, छिन्न।

दातव्य-(सं० वि०) दान देन योग्य, (पुं०) उदारता।

दाता-(सं०पुं०) दानशील, दान देनेवाला।

दातापन-(हिं०पुं०) दानशीलता।

दातार-(हिं०पुं०) दाता, देनेवाला।

दातु-(सं०नपुं०) दान।

दातुन-(हिं०स्त्री०) देखो दतुवन।

दातृ-(सं०वि०) दान देने वाला। दातृत्व-(सं०नपुं०) दानशीलता।

दातौन-देखो दतुवन।

दाद-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का चर्म रोग, दद्रु।

दादा-(हिं०पुं०) पिता का पिता, बड़ा भाई, एक आदर सूचक शब्द जो बड़ बूढ़ों के लिये प्रयोग होता है।

दादी-(हिं०स्त्री०) पिता की माता।

दादु-(हिं०स्त्री०) दद्रु, दाद नामक चर्म रोग।

दादुर-(हिं०पुं०) मेढक, भेक।

दादू-(हिं०पुं०) दादा के प्रति प्यार का शब्द, एक साधारण संबोधन का शब्द।

दाधिक-(सं०वि०) दही में बना हुआ।

दाध-(हिं०स्त्री०) दाह, जलन।

दाघना-(हिं०क्रि०) जलाना, भस्म करना

दान-(सं०पुं०) हाथी का मद, राजनीति के चार उपायों में से एक, कार्य, त्याग, धर्मार्थ कार्य।

दानपति-(सं०पुं०) सर्वदा दान देने वाला; दानपत्र-(सं०नपुं०) वह लेख पत्र जिसके द्वारा कोई सम्पत्ति किसी को दान के रूप में दी जावे।

दानव-(सं०पुं०) असुर, राक्षस। दानवगुरू-(सं०पुं०) दानवों के गुरु शुक्राचार्य।

दानवी-(सं०स्त्री०) राक्षसी। दानवी-(हिं०वि०) दानव संबंधी।

दानवीर-(सं०पुं०) अत्यन्त दान देने वाला।

दानशील-(सं०वि०) दाता, दानी।

दानशीलता-(सं०स्त्री०) उदारता।

दानाध्यक्ष-(सं०पुं०) दान किये हुए धन को बाटने वाला अधिकारी।

दानुद-(सं०वि०) दान देन वाला।

दानौ-(हिं०पुं०) देखो दानव।

दान्त-(सं०वि०) जिसने अपनी इन्द्रियों को वश में कर लिया हो।

दाप-(हिं०पुं०) दर्प, अहंकार, गर्व।

दापनीय-(सं०वि०) दण्ड देने योग्य।

दापित-(सं०पुं०) दंडित।

दाबदार-(हिं० वि०) प्रभावशाली, प्रतापी।

दाबना-(हिं०क्रि०) देखो दबाना।

दाबा-(हिं०पुं०) वृक्ष की कलम बाँधने की एक विधि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दाभी-(सं०स्त्री०) अनिष्टकारक।
दाभ्य-(सं०वि०) शासन किये जाने योग्य
दाम-(सं०पुं०) हार, माला, समूह, अनुसन्धान, खोज, धन द्वारा शत्रु को वश में करने की राजनीति।
दाम-(हिं०पुं०) एक दमड़ी का तीसरा अंश, धन, रूपया, पैसा, मूल्य।
दामनी-(सं०स्त्री०) रस्सी, डोरी।
दामार,दामरी-(हिं०स्त्री०) रस्सी, डोरी
दामिनी-(सं०स्त्री०) विद्युत, बिजली।
दाम्पत्य-(सं०नपुं०) दम्पति सबंधी कर्म।
दाम्भिक-(सं०वि०) दम्भयुक्त, पाखंडी।
दाय-(सं० पुं०) उत्तराधिकारियों में बाँटी जाने वाली संपत्ति; **दायक**-(सं०वि०) दाता; **दायजा**-(हिं० पुं०) यौतुक, दहेज; **दायबन्धु**-(सं०पुं०) भ्राता, भाई, **दायभाग**-(सं० पुं०) पैत्रिक धन का पुत्र पौत्र तथा संबंधियों में विभाग।
दायाँ-(हिं०वि०) दाहिना।
दायागत-(सं० वि०) बाँट में आया हुआ पैत्रिक अंश।
दायाद-(सं०पुं०) कुटुम्बी; (पुं०) अंशभागी पुत्र।
दायिनी-(सं०वि०) देनेवाली।
दायी-(सं०वि०) दाता, देनेवाला।
दाये-(हिं०क्रि०वि०) दाहिनी ओर।
दार-(सं०पुं०) पत्नी, भार्या; **दारक**-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा, लड़का, (वि०) विदारक, फाड़नेवाला; **दारकर्म**-(सं०नपुं०) विवाह।
दारण-(सं०नपुं०) चीरने फाड़ने का काम; **दारपरिग्रह**-(सं०पुं०) विवाह।
दारन-(हिं०वि०) देखो दारुण।
दारना-(हिं०क्रि०) विदीर्ण करना।
दारा-(हिं०स्त्री०) भार्या, पत्नी।
दाराधीन-(सं० वि०) जो स्त्री के आधीन हो।
दारि-(सं०वि०) दारक, फाड़ने वाला, (हिं०) दाल।
दारिउँ-(हिं०पुं०) दाड़िम, अनार।
दारिका-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, बालिका।
दारित-(सं०वि०) फाड़ा हुआ।
दारिद-(हिं०पुं०) दरिद्रता।
दारिद्र्य-(सं०नपुं०) दरिद्रता, निर्धनता
दारीजार-(हिं०पुं०) लौंडी का पति
दारु-(सं०पुं०) काठ, लकड़ी।
दारुण-(सं० वि०) प्रचण्ड, भयंकर, विकट, कठिन; **दारुणता**-(सं०स्त्री०) कठोरता।
दारुपात्र-(सं० नपुं०) काठ का बना हुआ पात्र।
दारुवह-(सं०पुं०) लकड़ी ढोने वाला।
दारुसार-(सं०पुं०) चन्दन।
दार्दुरिक-(सं०वि०) कुम्हार।
दारयों-(हिं०पुं०) दाडिम, अनार।
दार्वी-(सं०स्त्री०) देवदार।
दार्शनिक-(सं०पुं०) दर्शनशास्त्र जानने वाला, तत्वज्ञानी, (वि०) दर्शन शास्त्र संबंधी।
दाल-(हिं०स्त्री०) दला हुआ अन्न जो सालन की तरह खाया जाता है, दाल के आकार की कोई वस्तु।
दालमोट-(हिं०स्त्री०) घी, तेल आदिमें तली हुई तथा नमक, मिर्च मिलाई हुई दाल।
दाँव-(हिं०पुं०) कार्य साधन का उपाय, युक्ति, जाल, छल, खेलने की बारी।
दाँवना-(हिं०क्रि०) सूखे हुए अन्न के डंठलों को भूसा अलगाने के लिये बैलों के पैरों से रौंदवाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दाँवरी-(हिं०स्त्री०) रस्सी, डोरी ।
दाव-(सं०पुं०)वन, जंगल', बड़वानल ।
दावन-(हिं०पुं०)दमन, नाश, खुखड़ी, हँसिया ।
दावना-(हिं०क्रि०) देखो दाँवना, दमन करना, नष्ट करना ।
दावनी-(हिं०स्त्री०) देखो दाँवनी ।
दावाग्नि, दावानल-(सं०पुं०) वन में लगनेवाली आग ।
दाश-(सं०पुं०) धीवर, केवट ।
दाशरथ, दाशरथि-(सं०पुं०) दशरथ के पुत्र, श्री रामचन्द्र ।
दास-(सं०पुं०) शूद्र, सेवक; **दासता, दासत्व**-(सं०) सेवावृत्ति ।
दासा-(हिं०पुं०) वह चबूतरा, जो आँगन के चारों ओर भीत से सटाकर उठाया जाता है । **दासानुदास**-(सं०पुं०) सेवक का सेवक, अति तुच्छ सेवक ।
दासिका, दासी-(सं०स्त्री०) दास की पत्नी, टहलनी ।
दास्य-(सं०नपुं०) दासत्व, सेवा ।
दास्यमान-(सं०वि०) दान दिया जाने वाला पदार्थ ।
दाह-(सं०नपुं०) भस्म करने या जलाने की क्रिया, शव जलाने की क्रिया, सन्ताप, अत्यन्त दुःख, ईर्ष्या; **दाहक**-(सं०.वि०) जलाने वाला; **दाहकर्म**-(सं०पुं०) शव फूंकने का काम, **दाहक्रिया**-(सं०स्त्री०)दाहकर्म; **दाहघ्न**-(सं०पुं०) शरीर की जलन मिटाने वाली औषधि, **दाहना**-(हिं०क्रि०) भस्म करना, जलाना, फूंकना, (हिं०वि०) दाहिना ।
दाहिना-(हिं० वि०) दक्षिण, बाँया का उलटा, अनुकूल । **दाहिने**-(हिं०क्रि० वि०) दाहिने हाथ की ओर ।
दाही-(हिं०वि०) जलाने या भस्म करने वाला ।
दिअरी, दिअली-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का बहुत छोटा दिआ, दिउली ।
दिआ-(हिं०पुं०)देखो दिया ; **दिआना**-(हिं०क्रि०) देखो दिलाना । **दिआसलाई**-(हिं०स्त्री०)देखो दियासलाई ।
दिक्क-(हिं०वि०) देखो दिक ।
दिक्चक्र-(सं०नपुं०) आठों दिशाओं का समूह ।
दिक्पाल-(सं०पुं०) दशों दिशाओं के पालन करने वाले देवता ।
दिक्षा-(हिं०स्त्री०) देखो दीक्षा ।
दिखना-(हिं०क्रि०) दिखाई पड़ना ।
दिखलवाई-(हिं०स्त्री०) दिखलवाने के बदले में दिया जाने वाला धन । **दिखलवाना**-(हिं० क्रि०) दिखलाने में दूसरे को प्रवृत्त करना । **दिखलाना**-(हिं०क्रि०) दृष्टिगोचर कराना दूसरे को देखने में प्रवृत्त करना, **दिखाई**-(हिं० स्त्री०) देखने का काम, दिखाने का भाव । **दिखाऊ**-(हिं०वि०) दर्शनीय, देखने योग्य, दिखौवा-बनावटी । **दिखावा**-(हिं० पुं०) आडंबर, ऊपरी, तड़क भड़क । **दिखैया**-(हिं०वि०)देखने या दिखलाने वाला । **दिखौवा**-(हिं०वि०) दिखावटी, बनावटी । **दिगंश**-(सं०पुं०) पुं०) शितिज वृत्ति का तीन सौ साठवाँ अंश ।
दिगन्त-(सं०पुं०) दिशाओं का छोर अन्त,क्षितिज,(हिं०पुं०)आँखका कोना
दिगन्तर-(सं०नपुं०)दिशाओं के बीच का स्थान, विपरीत दिशा ।
दिगम्बर-(सं० पुं०) शिव, महादेव, (वि०) नंगा, नग्न ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिग्-(हिं०स्त्री०) दिशा।
दिग्गज-(सं०पुं०) आठों दिशा के आठ हाथी जो पृथ्वी को दबाये रखते हैं, (वि०) बहुत भारी या बड़ा।
दिग्ज्ञान-(सं०नपुं०) वह ज्ञान साधन जिससे सभी दिशाओं का ज्ञान हो।
दिग्घ-(हिं०वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा।
दिग्दर्शक-यन्त्र (सं०पुं०) शीशा लगी हुई डिबिया के आकार का यन्त्र जिससे दिशा का बोध होता है।
दिग्दर्शन-(सं०पुं०) अभिज्ञता, जो कुछ उदाहरण के रूप में दिखाया जाय।
दिग्दाह-(सं०पुं०) एक उत्पात विशेष जिसमें सूर्यास्त होने पर भी दिशायें लालजलती हुई देख पड़ती हैं।
दिग्देवता-(सं०स्त्री०) दिक्पाल।
दिग्पति, दिग्पाल-(हिं०पुं०) देखो दिक्पाल।
दिग्विजय-(सं०पुं०) युद्ध द्वारा चारों दिशाओं की विजय; **दिग्विजयी**-(सं०वि०) जिसने दिग्विजय किया हो।
दिविदिक्-(सं०नपुं०) सब दिशायें।
दिग्विभाग-(सं०पुं०) दिशा, ओर।
दिग्व्यापी-(सं०वि०) जो सब दिशाओं में व्याप्त हो।
दिङ्मूढ़-(सं०वि०) जिसको दिशा का भ्रम हुआ हो, मूर्ख।
दिच्छित-(हिं०पुं०) देखो दीक्षित।
दिजराज-(हिं०पुं०) देखो द्विजराज।
दिठवन-(हिं०स्त्री०) देखो देवोत्थान।
दिठादिठी-(हिं०स्त्री०) देखो देखादेखी।
दिठाना-(हिं०क्रि०) बुरी दृष्टि लगाना; **दिठौना**-(हिं०पुं०) काजल का टीका जो बालक के माथे पर कुदृष्टि न पड़ने के लिये लगाया जाता है।
दिढ़-(हिं०वि०) देखो दृढ़, पुष्ट, **दिढ़ाना**-(हिं०क्रि०) दृढ़ करना।
दिदृक्षा-(सं०स्त्री०) देखने की अभिलाषा। **दिदृक्षु**-(सं०वि०) जो देखना चाहता हो।
दिन-(सं०नपुं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय, साठ दण्ड, परिमित काल, समय, काल, नियुक्त काल, निश्चित समय।
दिनअर-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनकंत-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनकर्ता-(सं०पुं०) सूर्य। **दिनचर्या**-(सं०स्त्री०) दिनभर का काम धंधा। **दिननाथ, दिननायक**-(सं०पुं०) सूर्य, दिनकर; **दिननाह**-(सं०पुं०) दिननाथ, सूर्य। **दिनप, दिनपति**-(सं०पुं०) सूर्य, अर्क, वृक्ष; **दिनमान**-(सं०नपुं०) सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक के समय का मान; **दिनमुख**-(सं०नपुं०) प्रभात, सवेरा।
दिनराज-(सं०पुं०) सूर्य, दिनकर।
दिनाइ-(हिं०पुं०) दद्रु, दाद का रोग।
दिनागम-(सं०पुं०) प्रातःकाल, तड़का।
दिनाती-(हिं०स्त्री०) कर्मकारों का, एक दिन का वेतन।
दिनाधीश-(सं०पुं०) सूर्य, मदार का वृक्ष।
दिनान्त-(सं०पुं०) सन्ध्याकाल।
दिनान्तक-(सं०पुं०) अन्धकार, अंधेरा।
दिनियर-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनी-(हिं०वि०) बहुत दिनों का पुराना।
दिनेर-(हिं०पुं०) दिनकर, सूर्य।
दिनेश-(सं०पुं०) आदित्य सूर्य।
दिनेश्वर-(सं०पुं०) दिनेश, सूर्य।
दिनौंधी-(हिं०स्त्री०) आँख का वह रोग जिसमें सूर्य के तीव्र प्रकाश में अच्छी तरह नहीं देख पड़ता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिपति-(हिं०स्त्री०) देखो दीम्प्ति।
दिपना-(हिं०क्रि०) चमकना। **दिपाना**-(हिं०क्रि०) चमकाना।
दिब-(हिं०वि०) देखो दिव्य।
दिमात-(हिं०वि०) दो मात्रा वाला।
दिय-(सं०वि०) देय, देने योग्य।
दियट-(हिं०स्त्री०) देखो दीयट।
दियना-(हिं०क्रि०) चमकाना।
दिया-(हिं०पुं०) देखो दीया।
दियाबत्ती-(हिं०स्त्री०) दिया जलाने का काम।
दियासलाई-(हिं० स्त्री०) वह लकड़ी जो रगड़ने से जल उठती है।
दिरद(हिं०पुं०) देखो द्विरद।
दिरानी-(हिं०स्त्री०) देखो देवरानी।
दिरिस-(हिं०पुं०) देखो दृश्य।
दिलवाना-(हिं०क्रि०) देखो दिलाना।
दिलवैया-(हिं०वि०) दिलाने वाला।
दिलाना-(हिं०क्रि०) देने का कार्य दूसरे से कराना।
दिलासा-(हिं०पुं०)आश्वासन, ढाढस।
दिली-(हिं०वि०) हार्दिक, अति घनिष्ट।
दिल्ला-(हिं०पुं०) किवाड़ के पल्ले में जड़ा हुआ लकड़ीका चौखटा, दिलाहा।
दिल्लीवाल-(हिं०वि०) दिल्ली नगरका। एक प्रकार का दिल्ली का बना हुआ जूता।
दिव-(सं० स्त्री०) आकाश, दिन, (नपुं०) वन, जंगल।
दिवङ्गम-(सं० वि०) आकाशगामी, स्वर्गगामी।
दिवारानी-(हिं०स्त्री०)दखो देवरानी।
दिवस-(सं०पुं०) दन, वासर;
दिवमुख-(सं०नपुं०) प्रभात, सबेरा।
दिवा-(सं०पुं०) दिवस, दिन।
दिवाचर-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
दिवाचारी-(सं०वि०) दिन में चलने वाला।
दिवान-(हिं०पुं०) दीवान, मन्त्री।
दिवाना-(हिं०क्रि०) दिलवाना।
दिवानाथ-(हिं०पुं०) सूर्य।
दिवानिशि-(सं०स्त्री०) दिन रात।
दिवान्ध-(सं०पुं०) उल्लू, (वि०) जिसको दिन में न सूझता हो।
दिवाभीत-(सं०पुं०) उल्लू।
दिवामणि-(सं०पुं०) सूर्य।
दिवामध्य-(सं०नपुं०)मध्याह्न, दोपहर।
दिवाल-(हिं०वि०) देने वाला।
दिवाला-(हिं०पुं०) महाजन की वह अवस्था जब उसके पास अपना ऋण चुकाने के लिये धन न रह जाय; **दिवालिया**-(हिं०वि०) जिसके पास ऋण चुकाने के लिये धन न बचा हो।
दिवाली-(हिं०स्त्री०) देखो दीपावली,
दिवावसान-(सं०नपुं०) सन्ध्या, शाम।
दिवास्वप्न-(सं०पुं०) दिन की निद्रा।
दिवास्वापा-(सं०स्त्री०) बगला पक्षी।
दिविचर, दिविचारी-(सं० वि०) आकाशगामी।
दिविष्ठ-(सं०वि०)स्वर्ग में रहने वाला।
दिवैया-(हिं०वि०)देनेवाला,जो देता हो।
दिवोद्भव-(सं०वि०)स्वर्ग में उत्पन्न।
दिवौकस्-(सं०वि०) स्वर्ग में रहने वाला।
दिवोद्भव-(सं०पुं०) देवता।
दिव्य-(सं०वि०) स्वर्गीय, प्रकाशमान्, चमकीला, अति सुन्दर, अलौकिक, अच्छी तरह स्वच्छ किया हुआ; **दिव्यचक्षु**-(सं०पुं०) ज्ञानचक्षु, **दिव्यता**-(सं०स्त्री०) उत्तमता, सुन्दरता; **दिव्यदर्शी**-(सं० वि०) अलौकिक पदार्थों को दखने वाला; **दिव्यदृष्टि**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं०स्त्री०) अलौकिक दृष्टि, **दिव्य-वाक्य**-देव वाणी; **दिव्य सरित**-(सं०स्त्री०) आकाश गङ्गा। **दिव्यस्त्री**-(सं०स्त्री०) देवाङ्गना, अप्सरा।

दिव्याङ्गना-(सं०स्त्री०) अप्सरा।

दिव्यांशु-(सं०पुं०) दिवाकर, सूर्य।

दिव्यास्त्र-(सं०पुं०) देवताओं का दिया हुआ अस्त्र, मन्त्रों की शक्ति से चलने वाला अस्त्र।

दिव्योदक-(सं०नपुं०) वर्षाका पानी।

दिशा-(सं०स्त्री०) ओर, क्षितिज, वृत्त के चार कल्पित विभागों में से एक विभाग या विस्तार।

दिशि-(हिं०स्त्री०) देखो दिशा।

दिष्ट-(सं०नपुं०) भाग्य, काल, (वि०) दिखलाया हुआ, उपदेश किया हुआ, दिया हुआ।

दिष्टबन्धक-(हिं०पुं०) वह बंधक जिसमें महाजन को केवल रुपये का सूद मिलता है और बंधक की हुई वस्तु पर कोई अधिकार नहीं होता।

दिष्टि-(सं०स्त्री०) हर्ष, उपदेश कथन

दिसंतर-(हिं०पुं०) देशान्तर, विदेश, परदेश।

दिस-(हिं०स्त्री०) दिशा।

दिसना-(हिं०क्रि०) दिखाई पड़ना।

दिसा-(हिं०स्त्री०) देखो दिशा, मलत्याग

दिसावर-(हिं०पुं०) देशान्तर, परदेश; **दिसावरी**-(हिं०वि०) विदेश से आया हुआ।

दिसैया-(हिं० वि०) देखने या दिखलानेवाला।

दिस्टी-(हिं०स्त्री०) देखो दृष्टि, **दिष्टी-बंध**-(हिं०पुं०) इन्द्रजाल, जादू। **बंध**-(हिं०पुं०) इन्द्रजाल, जादू।

दस्ता-(हिं०पुं०) दखो दस्ता।

दिहाड़ा-(हिं०पुं०) दुर्गति, बुरी अवस्था

दिहात-(हिं०स्त्री०) देखो देहात;

दिहाती-(हिं०वि०) ग्रामीण;

दिहातीपन-(हिं०पुं०) ग्रामीणता।

दिहुड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।

दिहेज-(हिं०पुं०) देखो दहेज।

दीअट-(हिं०स्त्री०) देखो दीयट।

दीआ-(हिं०पुं०) देखो दीया।

दीक्षित-(सं०वि०) दीक्षा देनेवाला, उपदेश देनेवाला, शिक्षक। **दीक्षण**-(सं०नपुं०) दीक्षा देने की क्रिया।

दीक्षा-(सं०स्त्री०) संकल्प पूर्वक अनुष्ठान, मन्त्र का उपदेश, गुरु से नियम पूर्वक मन्त्र ग्रहण करना; गुरुमन्त्र,

दीक्षित-(सं०वि०) जिसने आचार्य से विधिपूर्वक दीक्षा ली हो, (पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।

दीखना-(हिं०क्रि०) देख पड़ना।

दीघी-(हिं०स्त्री०) तालाब, पोखरी।

दीच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो दीक्षा।

दीठ, दीठि-(हिं०स्त्री०) नेत्र की ज्योति, देखने की शक्ति, खुली हुई आँख, किसी अच्छी वस्तु पर ऐसी दृष्टि डालना जिसका बुरा प्रभाव पड़े, देखभाल,

दीठबंद-(हिं०पुं०) इन्द्रजाल, जादू; **दीठबंदी**-(हिं०स्त्री०) जादू।

दीति-(सं०स्त्री०) दीप्ति, प्रकाश।

दीदी-(हिं०स्त्री०) बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द।

दीधिति-(सं०स्त्री०) सूर्य चन्द्रमा आदि की किरण, **दीधिति मान**-सूर्य।

दीन-(सं०वि०) दुःखित दरिद्र, उदास, विनीत।

दीनताई-(हिं०स्त्री०) दीनता, विनीत भाव; **दीनदयालु**-(सं०वि०) दुःखियों पर दया करने वाला, (पुं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परमेश्वर का एक नाम; **दीनबन्धु**-(सं०पुं०) वह जो दुःखियों की सहायता करता है, ईश्वर का एक नाम;
दीनानाथ-(सं०पुं०) दुःखियों का रक्षक, परमेश्वर।
दीनार-(सं०पुं०) सुवर्ण मुद्रा, सोने की मोहर।
दीप-(सं०पुं०) जलती हुई बत्ती, दीया, (हिं०पुं०) देखो द्वीप।
दीपक-(सं०नपुं०) दीया, (वि०) प्रकाश फैलाने वाला, पाचन शक्ति को तीव्र करने वाला, उत्तेजक। **दीपकवृक्ष**-(सं०पुं०) एक प्रकार का दीवट जिसमें दिया रखने के लिये अनेक शाखायें होती हैं। **दीपकसुत**-(सं०पुं०) कज्जल, काजल। **दीपकाल**-(सं०पुं०) सन्ध्या समय, दीया जलाने का समय।
दीपदान-(सं०पुं०) किसी देवताके सामने दीपक जलाने का कार्य
दीपदानी-(हिं०स्त्री०) घी की बोरी हुई बत्ती रखने की डिबिया।
दीपन-(सं०पुं०) क्षुधा को तीव्र करना, उत्तेजन; (वि०) भूख को बढ़ाने वाला।
दीपना-(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना, चमकना।
दीपनीय-(सं०वि०) उत्तेजित करने योग्य।
दीपपादप-(सं०पुं०) दीपवृक्ष, दीवट। **दीपमाला**-(सं०स्त्री०) जलते हुये दीपकों की पंक्ति। **दीपमालिका**-(सं०स्त्री०) जलते हुए दीपकों की पंक्ति, दीवाली। **दीपमाली**-(हिं० स्त्री०) दीवाली।
दीपित-(सं०वि०) प्रकाशित, प्रज्वलित।
दीपोत्सव-(सं०पुं०) दीपावली, दीवाली
दीप्त-(सं०वि०) प्रज्वलित, जलता हुआ।
दीप्तांशु-(सं०पुं०) सूर्य, अर्क वृक्ष।
दीप्ताङ्ग-(सं०वि०) जिसका अङ्ग चमकता हो, मोर।
दीप्ति-(सं०पुं०) द्युति, प्रकाश, उजाला, प्रभा, चमक। **दीप्तिमान्**-(सं०वि०) दीप्तियुक्त, चमकता हुआ।
दीप्तोपल-(सं०पुं०) सूर्यकान्त मणि।
दीप्यमान-(सं०वि०) चमकता हुआ।
दीबो-(हिं०पुं०) देखो देना।
दीयट-(हिं०पुं०) देखो दीवट।
दीयमान-(सं०वि०) जो देने योग्य हो।
दीया-(हिं०पुं०) वह बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती हो, दीपक, (स्त्री०) वह पात्र जिसमें तेल डालकर बत्ती जलाई जाती है।
दियासलाई-(हिं०स्त्री०) लकड़ी की छोटी सींक जिसके छोर पर मसाला लगा होता है जो रगड़ने से जल उठती हो।
दीरघ-(हिं०वि०) देखो दीर्घ।
दीर्घ-(सं०वि०) आयत, लंबा, बड़ा, **दीर्घकण्ठ**-(सं०पुं०) बकुला, (वि०) जिसकी गर्दन लंबी हो; **दीर्घकाय**-(सं०वि०) लंबे चौड़े शरीर वाला; **दीर्घकाल**-(सं०नपुं०) अनेक दिन; **दीर्घकेश**-(सं०पु०) भालू, (वि०) जिसके बाल लंबे हों।
दीर्घगति-(सं० पुं०) ऊँट (वि०) लंबी डग मारने वाला; **दीर्घ जिह्वी**-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता; **दीर्घजीवी**-(सं०वि०) बहुत दिनों तक जीने वाला; **दीर्घतन्तु**-(सं०पुं०) लंबा तागा; **दीर्घता**-(सं०स्त्री०) लंबाई; **दीर्घदर्शिता**-(सं०स्त्री०) दूरदर्शिता; **दीर्घदर्शी**-(सं०पुं०) वह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो सब बातों का परिणाम सोंच लेता है, **दीर्घदृष्टि**-(सं०पुं०) वह जो दूर तक की बात सोचता हो, पण्डित; **दीर्घ निद्रा**-(सं०स्त्री०) बहुत देर तक रहने वाली नींद, मृत्यु; **दीर्घरद**-(सं० पुं०) शूकर, सूअर, (वि०) जिसके दाँत लम्बे हों; **दीर्घरोगी**-(सं०वि०) बहुतदिनोंकारोगी, **दीर्घरोम**-(सं०पु०) भालू, (वि०) बड़े बड़े बालों वाला; **दीर्घलोचन**-(सं०वि०) बड़े बड़े आँखोवाला; **दीर्घश्मश्रुत**-(सं०वि०) बड़ी दाढ़ीवाला; **दीर्घश्रु**-(सं० व०) जो दूर तक सुन पड़े, जिसका नाम दूरतक प्रसिद्ध हो; **दीर्घसूत्रता**-(सं०स्त्री०) प्रत्येक कर्म में विलंब करने का अभ्यास। **दीर्घसूत्री**-(सं० वि०) विलंब करने वाला; **दीर्घस्वर**-(सं०पुं०) वह स्वर जिसमें दो मात्रा हो।

दीर्घास्य-(सं०वि०) बड़े मुख वाला।

दीर्घिका-(सं०स्त्री०) छोटा तालाब बावली।

दीर्घोच्चारण-(सं०नपुं०) गुरु उच्चारण

दीवट-(हिं०स्त्री०) दीया रखनेका धातु या लकड़ी का बना हुआ आधार।

दीवाला-(हिं०पुं०) देखो दिवाला।

दीवाली-(हिं०स्त्री०) एक उत्सव जो कार्तिक की अमावस्या के दिन होता है जिसमें सन्ध्या के समय नगर में तथा घर के बाहर जलते हुए दीपकों की पंक्ति रक्खी जाती है

दीसना-(हिं०क्रि०) देख पड़ना।

दीह-(हिं०वि०) दीर्घ, लंबा, बड़ा।

दुंद-(हिं०पुं०) युग्म, जोड़ा, दुन्दुभि, नगाड़ा।

दुंदुह-(हिं०पुं०) जलसर्प, डेड़हा।

दुःख-(सं०नपुं०) संकट, व्यथा, कष्ट, पीड़ा। **दुःखकर**-(सं०वि०) कष्ट पहुँचाने वाला; **दुःखता**-(सं०स्त्री०) दुःख का भाव। **दुःखद**-(सं०वि०) दुःखदायी, क्लेश पहुँचाने वाला; **दुख दाता**-(सं०वि०) क्लेश पहुँचाने वाला; **दुःखदायक, दुःखदायी**-(सं०वि०) क्लेश देने वाला; **दुःखप्रद**-(सं० वि०) कष्ट देने वाला; **दुःखभाग**-(सं०वि०) दुःख भोगने वाला; **दुःख शील**-(सं०वि०) जो सर्वदा दुःख भोगता हो; **दुःखसाध्य**-(सं०वि०) जिसका करना कठिन हो।

दुःखाकर-(सं०पुं०) दुःख की खान।

दुखान्त-(सं०पुं०) क्लेश की समाप्ति, (वि०) जिस नाटक आदि के अन्त में दुःख का वर्णन हो।

दुःखार्त-(सं०वि०) दुःखपीड़ित।

दुःखित-(सं०वि०) जिसको दुःख हो।

दुःखी-(सं०वि०) क्लेशित, पीड़ित।

दुःशकुन-(सं०पुं०) बुरा शकुन।

दुःशासन-(सं०वि०) जिसपर शासन करना कठिन हो।

दुःशील-(सं०वि०) बुरे स्वभाव का;

दुःशीलता-(सं०स्त्री०) दुष्टता, अविनय।

दुःशोध-(सं०वि०) जिसका शोधन या सुधार कठिनता से हो।

दुःसंकल्प-(सं०पुं०) दुष्ट विचार।

दुःसंग-(सं०पुं०) कुसंग।

दुःसह-(सं०वि०) जिसका सहना कठिन हो, **दुःसाध्य**-(सं०वि०) जिसका सहन करना कठिन हो, जिसका उपाय कठिन हो।

दुःसाहस-(सं०पुं०) अनुचित साहस।

दुःस्त्री-(सं०स्त्री०) दुष्ट स्त्री।

दुःस्थित-(सं०वि०) दुःख में अवस्थित,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दरिद्र। दुःस्थिति-(सं०स्त्री०)दुर्दशा।
दुःस्वभाव-(सं० पुं०) बुरा स्वभाव, (वि०) बुरे स्वभाव का,
दु-(हिं०वि०) 'दो' शब्द का छोटा रूप जो समस्त पदके पहिले जोड़ा जाता है।
दुआदस-(हिं०वि०) द्वादश, बारहवाँ।
दुआर-(हिं०पुं०)द्वार। दुआरी-(हिं०-स्त्री०) छोटा द्वार।
दुआली-(हिं०स्त्री०) वह आरा जिसको दो आदमी चलाते हैं।
दुइ-(हिं०वि०) दो संख्या, दो।
दुइज-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि।
दुऊ-(हिं०वि०) दोनों।
दुकड़हा-(हिं०वि०) जिसका दाम दो दमड़ीं या एक छदाम हो, तुच्छ, नीच; दुकड़ा-(हिं०पुं०)एक में लगी हुई दो वस्तु, एक पैसे का चौथा अंश, । दुकड़ी-(हिं०वि०) जिसमें किसी वस्तु का जोड़ा हो, (स्त्री०) वह ताश का पत्ता जिसमें दो बूटियां हों।
दुकना-(हिं०क्रि०) छिपना।
दुकाल-(हिं०पुं०) दुष्काल, अकाल,
दुकूल-(सं०नपुं०) महीन वस्त्र।
दुकेला-(हिं०वि०) जो अकेला न हो; दुकेले-(हिं०क्रि०वि०) दूसरे व्यक्ति को साथ लिये हुए।
दुक्कड़-(हिं०पुं०)एक प्रकार का बाजा जो तबले की तरह का होता है, दो नावों का बेड़ा जो एक में एक जुटी होती हैं।
दुक्का-(हिं०वि०) जो अकेला न हो, जोड़ा;
दुखंडा-(हिं०वि०) जिस (घर) में दो खण्ड हों।
दुख-(हिं०पुं०) देखो दुःख; दुखड़ा-(हिं०पु०) दुःख की कथा, विपत्ति का वर्णन; दुखदाई-(हिं०वि०)कष्ट देनेवाला। दुखना-(हिं०क्रि०) पीड़ा युक्त होना, दुखरा-(हिं०पुं०) देखो दुखड़ा, दुखवाना-(हिं०क्रि०)दुखाना; दुखाना-(हिं०क्रि०) कष्ट पहुँचाना।
दुखारा, दुखारी, दुखारी-(हिं०वि०) दुःख पीड़ित।
दुखित-(हिं०वि०) दुःखित, पीड़ित दुखिया-(हिं०वि०) दुःखी, पीड़ित। दुखियार-(हिं०वि०) जिसको किसी बात का दुःख हो, रोगी।
दुखी-(हिं०वि०)जिसको कोई कष्ट हो।
दुखीला-(हिं०वि०) दुःख पूर्ण; दुखौंहाँ-(हिं०वि०) दुःखदायी।
दुगदुगी-(हिं०स्त्री०) धुकधुकी, गले में पहिरने का एक गहना।
दुगना-(हिं०वि०) द्विगुण, दूना।
दुगुण-(हिं०वि०) देखो द्विगुण, दूना।
दुगुन-(हिं०वि०) द्विगुण, दूना।
दुगूल-(हिं०पुं०) देखो दुकूल।
दुग्य-(हिं०पुं०) देखो दुर्ग।
दुग्ध-(सं०नपुं०) दूध; दुग्धदा-(सं० वि०) दूध देने वाली।
दुघड़िया-(हिं०वि०)दो घड़ीका(मूहूर्त)।
दुचित-(हिं०वि०) अस्थिर चित्त।
दुचितई,दुचिताई-(हिं०स्त्री०) चिन्ता, द्विविधा, शंका।
दुचित्ता-(हिं०वि०) अस्थिर चित्त, चिन्तित।
दुज-(हिं०पुं०) देखो द्विज।
दुजन्मा-(हिं०पुं०) देखो द्विजन्मा।
दुजपति-(हिं०पुं०) देखो द्विजपति।
दुजाति-(हिं०पुं०) द्विज।
दुजानू-(हिं०क्रि०वि०)दोनों जाँघके बल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुजीह-(हिं०पुं०) द्विजिह्व, सर्प,
दुटप्पी बात-(हिं०पुं०) संक्षित वार्ता;
दुजेश-(हिं०पुं०) देखो द्विजेश।
दुटुक, दुटक-(हिं०वि०) दो टुकड़ों में किया हुआ।
दुण्डुभि-(सं०पुं०) देखो दुन्दुभि, नगाड़ा।
दुत्-(हिं०अव्य०) तिरस्कार सूचक शब्द जो हाटने के लिये प्रयोग होता है।
दुतकार-(हिं०स्त्री०) धिक्कार, तिरस्कार। **दुतकारना**-(हिं०क्रि०) तिरस्कार करना,।
दुति-(हिं०स्त्री०) द्युति, आभा, चमक।
दुतिमान-(हिं०वि०) देखो द्युतिमान।
दुतिय-(हिं०वि०) देखो द्वितीय, दूसरा।
दुतिया-(हिं०स्त्री०) द्वितीया।
दुतिवंत-(हिं०वि०) द्युतिमान, चमकीला
दुतिय-(हिं०वि०) द्वितीय, दूसरा।
दुतिया-(हिं०स्त्री०) देखो द्वितीय, दूज।
दुदल-(हिं०वि०) द्विदल, (पुं०) दाल।
दुदलाना-(हिं०क्रि०) दुतकारना।
दुदहंडी-(हिं०स्त्री०) दूध रखने का मिट्टी का पात्र।
दुधमुख-(हिं०वि०) दूध पीता हुआ।
दुधहंडी, दुधहांडी-(हिं०स्त्री०) दूध रखने या गरम करने का पात्र।
दुधाँड़ी-(हिं०स्त्री०) दखो दुधहंडी।
दुधार-(हिं०वि०) दूध दनेवाली।
दुधारा-(हिं०वि०) जिसमें दोनों ओर धार हो (पुं०) तलवार, खाँड़ा। **दुधारी**-(हिं०वि०) दूध देनेवाली, जिसमें दोनों ओर धार हो।
दुधारू-(हिं०वि०) देखो दुधार।
दुधिया-(हिं०वि०) दूध मिला हुआ, सफेद रंग का, दूध की तरह सफेद, (पुं०) खड़िया मिट्टी।
दुधैल-(हिं०वि०) बहुत दूध देनेवाली।
दुनरना, दुनवना-(हिं०क्रि०) लचक कर दोहरा हो जाना।
दुनाली-(हिं०वि०) जिसमें दो नाली लगी हो, (स्त्री०) दुनाली बंदूक जिसमें एक साथ दो गोलियां भरी जा सके।
दुनी-(हिं०स्त्री०) संसार, दुनिया।
दुन्दुभ-(सं०पुं०) दुन्दुभि, नगाड़ा।
दुन्दुभि-(सं०पुं०) बड़ा ढोल, नगाड़ा।
दुपटा, दुपट्टा, (हिं०पुं०) दो पाट की चद्दर वह लम्बा वस्त्र जो कन्धे या गले पर से ओढा जाता है।
दुपद-(हिं०पुं०) देखो द्विपद।
दुपर्दी-(हिं०स्त्री०) सिरजई।
दुपलिया-(हिं०वि०) दो पल्ले वाली।
दुपहर, दुपहरी-(हिं०स्त्री०) देखो दोपहर; **दुपहरिया**-(हिं०स्त्री०) मध्याह्न, दोपहर।
दुफसली-(हिं०वि०) दोनों फस्लों में (अर्थात् रबी और भदई दोनों में) उत्पन्न होने वाला (वि०) सन्दिग्ध, अनिश्चित।
दुबधा-(हिं०स्त्री०) अनिश्चिय, असमंजस, चिन्ता, संशय।
दुबरा-(हिं०वि०) देखो दुबला।
दुबराना-(हिं०क्रि०) दुर्बल होना।
दुबला-(हिं०वि०) दुर्बल, कृश; **दुबलापन**-(हिं०पुं०) दुर्बलता।
दुबाइन-(हिं०स्त्री०) दूबे की स्त्री।
दुबारा-(हिं०क्रि०वि०) देखो दोबारा।
दुबाहिया-(हिं०वि०) वह योद्धा जो दोनों हाथों से तलवार चलाता हो।
दुबे-(हिं०पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।
दुभासी-(हिं०पुं०) देखो द्विभाषी।
दुभाषिया, दुभासी-(हिं०पुं०) वह जो दो भाषाओं को जानता हो।
दुमन-(हिं०पुं०) अप्रसन्न, खिन्न।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुमाता-(हिं०वि०) सौतेली माता ।
दुमाला-(हिं०पुं०) पाश, फन्दा ।
दुमुहाँ-(हिं०वि०) दो मुखवाला ।
दुरंगा-(हिं०वि०) दो रंग का, दो तरह का ।
दुरंत, दुरंद-(हिं०वि०) दुर्गम, कठिन, भारी, दुष्ट ।
दुर-(सं०अव्य०) क्रिया के साथ लगाने से इस शब्द का अर्थ "दुष्ट, बुरा, निषेध दुःख, थोड़ा संकट तथा, दुबला होता है; (हिं०अव्य०) तिस्कार पूर्वक हटाने के लिये इस शब्द का व्यवहार होता है इसका, अर्थ है "दूर हो", **दुरदुर करना**-तिरस्कार पूर्वक हटाना ।
दुरजन-(हिं०वि०) दुर्जन, दुष्ट ।
दुरतिक्रय-(सं०वि०) अपार, प्रबल ।
दुरत्यय-(सं०वि०) दुस्तर, जिसका पार करना कठिन हो ।
दुरद-(हिं०पुं०) देखो द्विरद ।
दुरदाम-(हिं०वि०) कष्ट साध्य ।
दुरदुराना-(हिं०क्रि०) तिरस्कार दिखलातेहुए दूर करना, ।
दुरदृष्ट-(सं०नपुं०) अदृष्ट, दुर्भाग्य,
दुरधिग, दुरधिगम्य-(सं०वि०) कठिनता से मिलने योग्य ।
दुरधीत-(सं०वि०) बुरी तरह से अध्ययन किया हुआ ।
दुरध्यय-(सं०वि०) अध्ययन करने में अशक्य । **दुरध्यवसाय**-(सं०पुं०) बुरा काम करने की चेष्टा ।
दुरध्व-(सं०पुं०) कुपथ, कुमार्ग ।
दुरना-(हिं०क्रि०) आड़ में होना, छिप जना ।
दुरन्त-(सं०वि०) जो पहिले अच्छा जान पड़े परन्तु जिसका अन्त बुरा हो ।
दुरबार-(हिं०वि०) अटल ।
दुरबास-(हिं०पुं०) दुर्गन्ध ।
दुरभेव-(हिं०पुं०) दुर्भाव, मनमोटाव ।
दुरमुस-(हिं०पुं०) गदा के आकार का यन्त्र जिससे कंकड़ या मिट्टी पीट कर बैठाई जाती है ।
दुरवस्थ-(सं०वि०) जो दुर्दशा में हो, जिसकी दशा अच्छी न हो ।
दुराकाङ्क्षा-(सं०स्त्री०) बुरे विषय की अभिलाषा ।
दुराकृति-(सं०स्त्री०) बुरा स्वरूप ।
दुराक्रम-(सं०वि०) जो बड़ी कठिनता से आक्रमण किया जावे ।
दुरागौन-(हिं०पुं०) वधू का दूसरी बार ससुराल को जाना, द्विरागमन ।
दुराग्रह-(सं०पुं०) किसी विषय में बुरी तरह से हठ करना । **दुराग्रही**-(हिं०वि०) जो बिना उचित अनुचित बिचार किये हुए अपने मत पर अड़ा रहता है, हठी ।
दुराचरण-(सं०पुं०) बुरा व्यवहार ।
दुराचार-(सं०पुं०) बुरा आचरण,
दुराज-(हिं०पुं०) दुष्ट शासन ।
दुरात्मा-(सं० वि०) नीच प्रकृतिका, खोटा ।
दुरादुरी-(हिं०पुं०) गोपन, छिपाव ।
दुराधार-(सं०वि०) जो कठिनता से सहारा पा सके ।
दुराना-(हिं०क्रि०) हटना, छिपना, दूर करना, ।
दुराप-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, कठिनतासे मिलने योग्य ।
दुराम्नाय-(सं०वि०) जो बड़ी कठिनता से वश में लाया जा सके ।
दुराध्य-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, जो कठिनता से प्राप्त हो सके । **दुराराध्य**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं०वि०) जिसको सन्तुष्ट करना कठिन हो।

दुरालाप-(सं०पुं०)कटुवचन, गालीगलौज

दुराव-(हिं०पुं०) किसीसे बात गुप्त रखने का भाव, कपट, छल।

दुराश-(सं०पुं०) जिसको अच्छी आशा न हो; **दुराशय**-(सं०वि०) जिसका अभिप्राय बुरा हो।

दुराशा-(सं०स्त्री०) व्यर्थ की आशा,

दुरासद-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, जिसका मिलना कठिन हो।

दुरित-(सं०नपुं०) पातक, पाप।

दुरुक्त-(सं०नपुं०) कटुवचन, अपशब्द।

दुरुक्ति-(सं०स्त्री०)कटुवाक्य,कठोरवचन

दुरुत्तर-(सं०वि०) दुस्तर,जिसको पार करना कठिनहो, अनुत्तर, जिसका उत्तर देना कठिन हो, (नपुं०) बुरा उत्तर या जवाव।

दुरुद्वह-(सं०वि०) दुःसह।

दुरुपचार-(सं० पुं०) बुरा व्यवहार।

दुरुपयोग-(सं०पुं०)अनुपयुक्त व्यवहार

दुरुपाय-(सं०पुं०) बुरा विचार।

दुरेफ-(हिं०पुं०) देखो द्विरेफ।

दुर्ग-(सं०पुं०) कोट, गढ़।

दुर्गत-(सं०वि०) दुर्दशाग्रस्त, दरिद्र, (स्त्री०) देखो दुर्गति।

दुर्गतरणी-(सं०स्त्री०)एक देवीका नाम

दुर्गति-(सं०स्त्री०)बुरी स्थिति,दुर्दशा।

दुर्गन्ध-(सं०पुं०) बुरी गन्ध। (वि०) बुरी गन्ध का,। **दुर्गन्धी**-(सं०वि०) जिसकी गन्ध बुरी हो।

दुर्गपति-(सं०पुं०) दुर्गरक्षक। **दुर्गपाल**-(सं०पुं०) दुर्ग का रक्षक।

दुर्गम-(सं०वि०) जहां पहुँचना कठिन हो, जिसका जानना कठिन हो, दुस्तर, विकट।

दुर्गरक्षक-(सं०पुं०) गढ़पति।

दुर्गा-(सं०स्त्री०) आदि शक्ति।

दुर्गाधिकारी-(सं०पुं०)दुर्ग का रक्षक।

दुर्गुण-(सं०पुं०)बुरा गुण,दोष,बुराई।

दुर्गेश-(सं०पुं०) दुर्ग का अध्यक्ष।

दुर्ग्रह-(सं०वि०) जो कठिनता से पकड़ा जा सके,। **दुर्ग्राह्य**-(सं०वि०) कठिनता से पकड़े जाने योग्य।

दुर्घट-(सं०वि०) कठिनता से होने योग्य **दुर्घटना**-(सं०स्त्री०) अशुभ घटना, विपत्ति।

दुर्जन-(सं०पुं०) दुष्ट मनुष्य। **दुर्जनता**-(सं०स्त्री०) खोटापन दुष्टता।

दुर्जय-(सं० वि०) निसको जीतना कठिन हो।

दुर्जात-(सं०वि०) जिसका जन्म बूरी तरह से हुआ हो, नीच, अभागा।

दुर्जीव-(सं०नपुं०) बुरा जीवन।

दुर्जेय-(सं०वि०) जिसको जीतना कठिन हो।

दुर्ज्ञेय-(सं०वि०)दुर्बोध, जो सहज में समझ में न आ सके।

दुर्णीत-(सं०स्त्री०) देखो दुर्नीत।

दुर्दम-(सं०वि०) प्रचण्ड। **दुर्दम्य**-(सं०वि०) जो शीघ्र जीता न जा सके।

दुर्दर्श-(सं०वि०) भयंकर रूप का।

दुर्दशा-(सं०स्त्री०) बुरी अवस्था, बुरी दशा, दुर्गति।

दुर्दान्त-(सं०वि०) प्रचण्ड, प्रवल।

दुर्दिन-(सं० नपुं०) ऐसा दिन जब बादल छाये हों, बुरादिन, कष्ट का समय। **दुर्दिवस**-(सं०पुं०) दुर्दिन, बरसात का दिन।

दुर्दैव-(सं०नपुं०)दुर्भाग्य, पाप, बुरा संयोग।

द्रुम-(सं०पुं०) पलाण्डु, प्याज।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर्धर-(सं०वि०) कठिनता से होने योग्य, प्रचण्ड, दुर्ज्ञेय।
दुर्धर्ष-(सं०वि०) प्रबल, प्रचण्ड।
दुर्नय-(सं०पुं०) नीति विरूद्ध आचरण।
दुर्नाद-(सं०पुं०) अप्रिय ध्वनि।
दुर्नाम-(सं०पुं०) दुर्वचन, गाली गलौज।
दुर्निर्मित-(सं०वि०) जो बुरे विचार से फेंक दिया गया हो।
दुर्निवार्य-(सं०वि०) जो जल्दी से हटाया न जा सके।
दुर्नीत-(सं०नपुं०) बुरी नीति, कुचाल,
दुर्बचन-(हिं०पुं०) दुर्वचन, कुवाक्य, गाली।
दुर्बद्ध-(सं०वि०) बुरी तरह से बाँधा हुआ
दुर्बल-(सं०वि०) बलहीन, दुबला पतला, कृश। दुर्बलता-(हिं०स्त्री०) दुबलापन,
दुर्बुद्धि-(सं०स्त्री०) दुर्मति, कुबुद्धि; (वि०) मन्द बुद्धि वाला, दुष्ट।
दुर्बुध-(सं०वि०) गूढ़, कठिन, क्लिष्ट।
दुर्भक्ष-(सं०वि०) जो जल्दी से खाया जा सके, खाने में जो अच्छा न लगे।
दुर्भक्ष्य-(सं०वि०) जिसका खाना कठिन हो।
दुर्भग-(सं०वि०) अभागा,
दुर्भर-(स०वि०) दुःसह, भारी।
दुर्भागी-(सं०वि०) मन्दभाग्य, अभागा।
दुर्भाग्य-(सं०नपुं०) मन्द भाग्य, पापी (वि०) हतभाग्य, अभागा।
दुर्भाव-(सं०पुं०) बुरा भाव, द्वेष मनोमालिन्य। दुर्भावना-(सं०स्त्री०) बुरी भावना।
दुर्भाषित-(सं०नपुं०) बुरा वचन।
दुर्भाषी-(सं०वि०) कटु वचन बोलने वाला।
दुर्भिक्ष-(सं०नपुं०) अकाल; दुर्भिच्छ-(हिं०पुं०) दुर्भिक्ष, अकाल।
दुर्भिद-(सं०वि०) जो जल्दी से भेदा न जा सके।
दुर्भेद, दुर्भेद्य-(सं०वि०) जो सहज में भेदा या छेदा न जा सके।
दुर्मति-(सं०स्त्री०) दुर्बुद्धि।
दुर्मद-(सं०वि०) मद में चूर, अभिमान में भरा हुआ।
दुर्मनस्-(सं०नपुं०) बुरा मन या चित; (वि०) खिन्न, उदास।
दुर्मन्त्र, दुर्मन्त्रणा-(सं०) बुरा परामर्श।
दुर्मन्त्रित-(सं०वि०) जिसने बुरी मन्त्रणा दी हो, दुर्मन्त्रि-(सं०पुं०) कुमन्त्री दुष्ट मन्त्री।
दुर्मर-(सं०वि०) जिसकी मृत्यु बड़े कष्ट से हो।
दुर्मरण-(सं०नपुं०) बुरी तरहसे (बड़े कष्ट से) होने वाली मृत्यु।
दुर्मर्ष-(सं०पुं०) जिसको सहनकरना कठिन हो।
दुर्मषण-(सं०पुं०) वह जो कठिनाई से सहन किया जावे। दुर्मर्षित-(सं०वि०) जो वैर का बदला लेने के उद्योग में हो।
दुर्मित्र-(सं०पुं०) अमित्र, शत्रु।
दुर्मुस-(हिं०पुं०) लोहे या पत्थर का डंडा लगा हुआ गदा के आकार का एक यन्त्र जो मिट्टी या कंकड़ पीटने के काम में आता है, दुरमिस।
दुर्मुहूर्त-(सं०पुं०) बुरा समय।
दुर्मूल्य-(सं०वि०) मँहगा।
दुर्मेधस्-(सं०वि०) मन्द बुद्धि।
दुर्यश-(सं०नपुं०) अपयश, अपकीर्ति।
दुर्योग-(सं०पुं०) दुर्भाग्य सूचक योग।
दुर्लक्षण-(सं०नपुं०) अशुभ लक्षण।
दुर्लभ-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, अनोखा।
दुर्ललित-(सं०नपुं०) दुष्कर्म, पाप;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(वि०) चंचल, चपल।
दुर्लेख्य-(सं०नपुं०) निन्दित लेखपत्र, (वि०) जिसकी लिखावट बुरी हो।
दुर्वच, दुर्वचन-(सं०पुं०) कटु वचन, गाली गलौज।
दुर्वह-(सं०वि०) जिसको उठाकर ले जाना कठिन हो।
दुर्वाच्य-(सं०नपुं०) अपकीर्ति, निन्दा
दुर्वाद-(सं०पुं०) अपकीर्ति, निन्दा।
दुर्वार(सं०वि०) जिसका निवारण करना या हटाना कठिन हो।
दुर्वासना-(सं०स्त्री०) बुरी आकांक्षा।
दुर्विनय-(सं०पुं०) बुरा शिष्टाचार।
दुर्विपाक-(सं०पुं०) बुरा फल, दुर्घटना।
दुर्विभाग-(सं०पुं०) वह जिसका विभाग जल्दी से न हो सके।
दुर्विभाव्य-(सं०वि०) दुर्बोध।
दुर्वक्ता-(सं०पुं०) कटुभाष करनेवाला
दुर्विषह-(सं०वि०) असह्य।
दुर्वृत्त-(सं०नपुं०) निन्दित आचरण, (वि०) दुर्जन। **दुर्वृत्ति**-(सं०स्त्री०) निन्दित आचरण।
दुर्वेद-(सं०वि०) दुष्प्राप्य, दुर्लभ।
दुर्व्यवस्था-(सं०स्त्री०) कुप्रबन्ध; **दुर्व्यवस्थापक**-(सं०पुं०) कुप्रबन्ध करनेवाला।
दुर्व्यवहार-(सं०पुं०) दुष्ट आचरण।
दुर्हृद-(सं०पुं०) शत्रु, बैरी।
दुलकना-(हिं०क्रि०) अस्वीकार करना।
दुलखना-(हिं०क्रि०) बारंबार बतलाना या कहना।
दुलड़ा-(हिं०वि०) दो लड़ोंका। **दुलड़ी**-(हिं०स्त्री०) दो लड़ों की माला।
दुलना-(हिं०क्रि०) देखो डुलना।
दुलभ-(हिं०वि०) देखो दुर्लभ।
दुलरा-(हिं०वि०) दुलारा।
दुलराना-(हिं०क्रि०) लाड़ करना।
दुलरी-(हिं०स्त्री०) देखो दुलड़ी।
दुलहन-(हिं०स्त्री०) नव विवाहिता वधू।
दुलहा दुल्हा-(हिं०पुं०) देखो दूल्हा।
दुलहिन-(हिं०स्त्री०) देखो दुलहन।
दुलाई-(हिं०स्त्री०) रूई भरा हुआ ओढने का दोहरा कपड़ा।
दुलाना-(हिं०क्रि०) देखो डुलाना।
दुलार-(हिं०पुं०) अनुराग, प्रेम, लाड़, प्यार। **दुलारना**-(हिं०क्रि०) लाड़ करना, प्रेम दिखलाना। **दुलारा**-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा। **दुलारी**-(हिं०वि०) प्रिय कन्या।
दुल्लभ-(हिं०वि०) देखो दुर्लभ।
दुव-(हिं०वि०) दो संख्या का, दो।
दुवन-(हिं०पुं०) दुर्जन, बुरा मनुष्य।
दुवादस-(हिं०वि०) देखो द्वादश, बारह।
दुवाली-(हिं०स्त्री०) परतला में लगा हुआ तस्मा जिसमें तलवार आदि लटकाई जाती है।
दुवार-(हिं०पुं०) देखो द्वार।
दुविधा-(हिं०स्त्री०) देखो दुवधा।
दुवो-(हिं०वि०) देखो दोनों, (वि०) वैरी, शत्रु।
दुश्चर-(सं०वि०) दुष्कर, दुर्गम।
दुश्चरित-(सं०नपुं०) बुरा आचरण, पाप, कुचाल, (वि०) बुरे आचरणका
दुश्चरित्र-(सं०वि०) बुरे चरित्र या आचरण का, (पुं०) बुरा आचरण।
दुश्चलन-(हिं०स्त्री०) बुरा आचरण।
दुश्चिकित्स-(सं०वि०) जिसकी चिकित्सा न हो सके।
दुश्चित-(सं०पुं०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
दुश्चिन्ता-(सं०स्त्री०) आशंका।
दुश्चेष्टा-(सं०स्त्री०) कुचेष्टा।
दुश्चेष्टित-(सं०नपुं०) पाप, दुष्कर्म।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुष्कर-(सं०वि०) अत्यन्त दुःख से करने योग्य, दुःसाध्य।
दुष्कर्म-(सं०नपुं०) कुकर्म, पाप। **दुष्कर्मी**-(हिं०वि०) दुराचारी।
दुष्कलेवर-(सं०पुं०) बुरी शरीर।
दुष्काल-(सं०पुं०) कुसमय, दुर्भिक्ष, अकाल।
दुष्कीर्ति-(सं०स्त्री०) अपयश,
दुष्कुल-(सं०नपुं०) निन्दित कुल।
दुष्कृत-(सं०नपुं०) नीच कार्य।
दुष्कृति-(सं०पुं०) कुकर्म, बुरा काम।
दुष्क्रीत-(सं०वि०) महँगा, महँगे दामका।
दुष्ट-(सं०वि०) दोषयुक्त, दुराचारी, दुर्जन; **दुष्टचारी**-(सं०वि०) बुरा आचरण करने वाला। **दुष्टता**-(सं० स्त्री०) दुर्जनता, **दुष्टपना**-(हिं०पुं०) दुष्टता। **दुष्टशाक्षी**-(सं०वि०) कूट साक्षी। **दुष्टाचार**-(सं०पुं०) कुकर्म, कुचाल; **दुष्टाचारी**-(सं०वि०) कुकर्मी।
दुष्टात्मा-(सं०वि०) खोटी प्रकृति का।
दुष्टान्न-(सं०पुं०) कुत्सित अन्न, बासी अन्न, पाप की कमाई का अन्न।
दुष्टपरीक्ष-(सं०वि०) जिसकी जाँच कठिनता से हो।
दुष्पुत्र-(सं०पुं०) कुपुत्र, नीच लड़का।
दुष्प्रकृति-(सं०वि०) बुरे स्वभाव का। (स्त्री०) खोटा स्वभाव।
दुष्प्राप-(सं०वि०) दुर्लभ, जो कठिनता से प्राप्त हो सके।
दुसह-(हिं०वि०) असह्य, जो सहन न हो सके।
दुसाखा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का प्रदीपक जिसमें दो शाख निकली होती हैं।
दुसार-(हिं० पुं०) आरपार छेद, (क्रि०वि०) आर पार।
दुसासन-(हिं०पुं०) देखो दुःशासन।
दुसूती-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मोटी चादर जिसमें दो तागों का ताना और बाना रहता है।
दुसेजा-(हिं०पुं०) पलंग, दो आदमियों के सोने की खाट।
दुस्तर-(सं०वि०) दुर्घट, विकट।
दुस्सह-(हिं०वि०) देखो दुःसह।
दुहता-(हिं०पुं०) दोहिता, नाती।
दुहत्था-(हिं०वि०) दोनों हाथों से किया हुआ।
दुहना-(हिं०क्रि०) स्तन में से दूध निकालना, निचोड़ना तत्व निकालना, **दुहनी**-(हिं०स्त्री०) वह पात्र जिसमें गाय भैंस आदि का दूध दुहा जाता है।
दुहरा, दुहराना-देखो दोहरा, दोहराना।
दुहाई-(हिं०स्त्री०) सहायता के लिये पुकार, गाय भैंस आदि को दुहने का काम, दुहने की मजदूरी।
दुहागिन-(हिं०स्त्री०) विधवा स्त्री। **दुहागी**-(हिं०वि०) अभागा, दुर्भाग्य। **दुहाजू**-(हिं०वि०) वह मनुष्य जो दूसरा विवाह करे।
दुहाना-(हिं०क्रि०) किसी अन्य पुरुष से दूहने का काम कराना।
दुहिता-(हिं०स्त्री०) दुहितृ कन्या, लड़की, पुत्री।
दुहेल-(हिं०पुं०) संकट, क्लेश।
दुहेला-(हिं०वि०) दुःसाध्य, दुःखदायी।
दुहोतरा-(हिं०पु०) कन्याका पुत्र, नाती, (वि०) दो, दो अधिक।
दुह्य-(सं०वि०) दुहने योग्य; **दुह्यमान**-(सं०वि०) जो दूहा जाय।
दूंद-(हिं०पुं०) उधम।
दूंदना-(हिं०क्रि०) उधम करना।
दूइज-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरी तिथि, दूज।
दूक-(हिं०वि०) दो एक, एकाध।
दूखन-(हिं०पुं०) दोष।
दूखना-(हिं०क्रि०)दोषलगाना, पीड़ाहोना
दूज-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की दूसरी तिथि, द्वितीया।
दूजा-(हिं०वि०) दूसरा।
दूत-(सं०पुं०) संवाद पहुँचाने वाला, चर,। **दूतर**-(हिं०वि०) दुस्तर।
दूतावास-(हिं०पुं०) दूत के रहने का स्थान।
दूति,दूतिका-(सं०स्त्री०) दूती, कुटनी।
दूती-(सं०स्त्री०) संचारिका, कुटनी।
दूत्य-(सं०नपुं०) दूत का काम।
दूध-(हिं०पुं०) दुग्ध, दूध के समान वह तरल द्रव्य जो अनेक पौधे की डंठल तथा पत्तियों में से निकलना है; **दूध पूत**-(हिं०पुं०) धन और सन्तति। **दूधमुहाँ**-(हिं०वि०) जो अभी तक माता का दूध पीता हो, शिशु, बालक, छोटा बच्चा। **दूधमुख**-(हिं०वि०) छोटा बच्चा, शिशु।
दूधाभाती-(हिं०स्त्री०) विवाह की एक रीत जिसमें वर कन्या को तथा कन्या वर को दूध और भात खिलाते हैं।
दूधिया-(हिं०वि०)दुग्ध संबंधी, जिसमें दूध मिला हो, दूधके रंग का, सफेद।
दून-(हिं०स्त्री०) दूने का भाव, साधारण से कुछ जल्दी जल्दी गाना,
दूना-(हिं०वि०) द्विगुण, दुगुना।
दूनौं-(हिं०वि०) दोनों।
दूब-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की प्रसद्ध घास, दूर्वा।
दूबरा-(हिं०वि०) दुर्बल, दुबला।
दूभर-(हिं०वि०) दुःसाध्य, कठिन।
दूमना-(हिं०क्रि०)हिलना, डोलना।
दूर-(हि०क्रि०वि०) अनिकट। **दूरगत, दूरगामी**-(सं०वि०)जो बहुत दूरतक चला गया हो।
दूरङ्गम-(सं०वि०) बहुत दूर तक जाने वाला।
दूरता-(हिं०स्त्री०) दूरत्व। **दूरत्व**-(सं०नपुं०) दूर होनेका भाव, अन्तर। **दूरदर्शक**-(सं०वि०) देखो दूरदर्शी, (पुं०) दूर दर्शक यन्त्र-दूरबीन। **दूरदर्शिता**-(सं०स्त्री०) दूर की बात सोचने का गुण। **दूरदर्शी**-(सं०वि०) दूरदर्शक, बहुत दूर की बातसोचने वाला (पुं०) पंडित, बुद्धिमान। **दूरदृष्टि**-(सं०स्त्री०) भविष्य का विचार।
दुरवा-(हिं०पुं०) देखो दूर्वा।
दुरवर्ती-(सं०वि०) जो दूर का हो।
दूरवीक्षण-(सं०पुं०) वह यन्त्र जिससे दूर की वस्तु बहुत पास और बड़ी देख पड़ती है।
दूरवेधी-(सं०पुं०) वह जो दूर से लक्ष्य लगाता हो।
दूरावस्थित-(सं०वि०) दूरवर्ती।
दूरी-(हिं०स्त्री०) दूरत्व; **दूरीकरण**-(सं०नपुं०) बाहर निकाल देने की क्रिया; **दूरीकृत**-(सं०वि०) जो दूर निकाल दिया गया हो; **दूरीभूत**-(सं०वि०) बाहर निकाला हुआ।
दूर्वा-(सं०स्त्री०) दूब नाम की घास।
दूलन-(हिं०पुं०) देखो दोलन।
दूलह-(हिं०पुं०) दुलहा, पति, स्वामी।
दूषक-(सं०वि०) दोष लगाने वाला, (पुं०) वह पदार्थ जो दोष उत्पन्न करे।
दूषण-(सं०नपुं०) दोष लगाने की क्रिया या भाव, अवगुण,। **दूषणीय**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं०वि०)दोष लगाने योग्य, दूषना (हिं० क्रि०)कलंक लगाना ।
दूषिका-(सं०स्त्री०) चित्रकार की कूंची, (वि०) दोष लगाने वाली ।
दूषित-(सं०वि०) दोषयुक्त, जिसमें दोष हो ।
दूष्य-(सं०वि०) दोष लगाने (निन्दा करने) योग्य, नीच, तुच्छ ।
दूसना-(हिं०क्रि०) देखो दूषना ।
दूसर, दूसरा-(हिं०वि०) द्वितीय ।
दूहना-(हिं०क्रि०) देखो दुहना ।
दृक्-(सं०नपुं०) नेत्र, आँख ।
दृककर्ण-(सं०पुं०) सर्प, सांप ।
दृक्क्षेप-(सं०पुं०)दृष्टिपात; दृक्पात-(सं०पुं०) दृष्टि की पहुंच; दृक्पात-(सं०पुं०) अवलोकन ।
दृगंचल-(हिं०पुं०) आँख की पलक ।
दृग-(हिं०पुं०)दृष्टि, देने की शक्ति ।
दृग्गणित-(सं०पुं०) ग्रहों का वेध करने की गणित ।
दृग्गोचर-(सं०वि०) जो आंखों से देख पड़े ।
दृढ़-(सं०वि०) स्थूल, मोटा, बलवान्, स्थायी, पक्का, कठिन, निडर, ढीठ, दृढ़ता-(सं०स्त्री०) पुष्टता । दृढ़निश्चय-(सं०पुं०) वह जो अपने संकल्प पर दृढ़ रहे ।
दृढ़प्रतिज्ञ-(सं०वि०) जो अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे ।
दृढ़ाङ्ग-(सं०वि०) जिसके अङ्ग पुष्ट, हो, हट्टा कट्टा । दृढ़ाई-(हिं०स्त्री०) दृढ़ता । दृढ़ना-(हिं०क्रि०) दृढ़ करना, पक्का करना, पक्का होना ।
दृत-(सं०वि०) आदर किया हुआ ।
दृत्य-(सं०वि०) आदरणीय ।
दृन्भू-(सं०पुं०) वज्र, सूर्य, राजा ।
दृप्त-(सं०वि०) प्रबल, प्रचण्ड, घमण्डी ।
दृश्-(सं०पुं०) आँख, ज्ञान, दर्शन, ।
दृश्य-(सं०वि०) दर्शनीय, जो देखने योग्य हो, जो देखनेमें आ सके, मनोहर, सुन्दर ।
दृश्यकाव्य-(सं०नपुं०) वह काव्य जो नाटघशाला में नट लोगों से दिखलायाजाता है । दृश्यमान-(सं०वि०) जो देख पड़ता हो ।
दृष्ट-(सं०वि०) देखा हुआ, गोचर, प्रगट, प्रत्यक्ष ।
दृष्टान्त-(सं०पुं०) उदाहरण ।
दृष्टार्थ-(सं०वि०) जिसका अर्थ स्पष्ट हो ।
दृष्टि-(सं०स्त्री०) अवलोकन, चक्षु,
दृष्टिगत-(सं०पुं०) (वि०) जो देख पड़े । दृष्टिगोचर-(सं०वि०) जो देख पड़ सके । दृष्टिपथ-(सं०पुं०) दृष्टि की पहुँच, दृष्टिपात-(सं० पुं०) अवलोकन, ताकना । दृष्टिबन्ध-(सं०पुं०) इन्द्रजाल, जादू, ।
दृष्टिरोग-(सं०पुं०) नेत्र रोग ।
देई-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के लिये एक आदर सूचक शब्द, देवी ।
दृष्टिवन्त-(हिं०स्त्री०)देखनेकी क्रिया या भाव; देखनहार-(हिं०वि०) देखने वाला ।
देखना-(हिं०क्रि०) अवलोकन करना, ढूंढ़ना, परीक्षा करना, अनुभव करना, समझना ताकते रहना, विचारना ।
देखभाल-(हिं०स्त्री०) निरीक्षण, जाँच पड़ताल ।
देखरेख-(हिं०स्त्री०)निरीक्षण,देखभाल
देखाऊ-(हिं०वि०) झूठी तड़क भड़क वाला, दिखौवा ।
देखादेखी-(हिं०स्त्री०)साक्षात्कार,दर्शन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखाना-(हिं०क्रि०) देखो दिखाना; **देखाव**-(हिं०पुं०) बनावट, तड़क, भड़क **देखावट**-(हिं०स्त्री०) तड़क भड़क। **देखावना**-(क्रि०) देखो दिखाना। **देखावा**-(हिं०वि०) देखो देखाऊ।

देदीप्यमान-(सं०वि०) चमकता, हुआ अत्यन्त प्रकाशयुक्त।

देन-(हिं०स्त्री०) देने की क्रिया या भाव दान की हुई वस्तु। **देनदार**-(हिं०पुं०) ऋणी, दानी, **देनदारी**-(हिं०स्त्री०) ऋणी होने की अवस्था।

देनलेन-(हिं०पुं०) महाजनीका व्यवसाय

देनहारा-(हिं०वि०) देनेवाला।

देना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को अपने अधिकार से हटाकर दूसरेके अधिकार में स्थापित करना, सौंपना, लगाना, डालना। (पुं०) ऋण।

देय-(सं०वि०) दातव्य, देने योग्य।

देरी-(हिं०स्त्री०) विलम्ब।

देव-(सं०पुं०) देवता, राजा, पूज्य व्यक्ति

देवकर्म-(सं०पुं०) वह कर्म को देवता को प्रसन्न करने के लिये किया जाय।

देवकार्य-(सं०नपुं०) देवताओं को प्रसन्न करने के लिये किया हुआ कर्म; **देवकुल**-(सं०स्त्री०) देवताओं का वंश, देवतासमूह। **देवकुल्या**-(सं०स्त्री०) गङ्गा नदी।

देवक्षेत्र-(सं०नपुं०) पुण्यस्थान, स्वर्ग।

देवगण-(सं०पुं०) देवताओं का समूह किसी देवताका अनुचर।

देवगति-(सं०स्त्री०) स्वर्ग लाभ।

देवगिरा-(सं०स्त्री०) देववाणी, संस्कृत। **देवगुरु**-(सं०पुं०) देवताओं के गुरु वृहस्पति।। **देवगृह**-(नपुं०) देवालय, मन्दिर।

देवचर्या-(सं० स्त्री०) देवताओं के निमित्त हवन आदि।

देवजन-(सं०पुं०) देवताओं के सदृश मनुष्य, गन्धर्व।

देवठान-(हिं०पुं०) कातिक सुदी एकादशी

देवढ़ी-(हिं०स्त्री०) देखो ड्योढ़ी।

देवतर-(सं०वि०) बहुत चमकीला।

देवता-(सं०स्त्री०) स्वर्गमें रहनेवाले देव, सुर, निर्जर; **देवतागृह**-(सं० नपुं०) देवालय, ठाकुरद्वारा। **देवतीर्थ**-(सं०नपुं०) अंगूठेको छोड़ अन्य अंगुलियों का अग्र भाग।

देवत्व-(सं०नपुं०) देवता का भाव, देवता का धर्म।

देवदीप-(सं०पुं०) वह दीपक जो देवता के निमित्त जलाया गया हो; **देवदूत**-(सं०पुं०) देवताओं का दूत; **देवदूती**-(सं०स्त्री०) अप्सरा,; **देवदेवेश**-(सं०नपुं०) शिव, महादेव।

देवधाम-(सं०पुं०) देवस्थान, तीर्थ स्थान।

देवधुनी-(सं०स्त्री०) गङ्गा नदी।

देवनार, देवनागरी-(सं०पुं०) भारतवर्ष की वह प्रधान लिपि, जिसमें संस्कृत, हिन्दी मराठी आदि भाषाएँ लिखा जाती है।

देवनिकाय-(सं०पुं०) देवस्थान, स्वर्ग, **देवनिगंगा**-(हिं०स्त्री०) गंगा। **देवनिर्मित**-(सं०वि०) देवता से बनाया हुआ।

देवपति-(सं०पुं०) देवताओंके स्वामी इन्द्र; **देवपथ**-(सं०पुं०) देवताओं का मार्ग, आकाश।

देवपर-(सं०पुं०) वह जो आपत्ति में पड़ने पर केवल देवता के भरोसे बैठा रहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवपशु-(सं०पुं०) वह पशु जो देवता के नाम पर छोड़ा गया हो।
देवपूजा-(सं० स्त्री०) देवताओं का पूजन।
देववधू-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
देवभजन-(सं०नपुं०) स्वर्ग, देवालय।
देवभाग-(सं०पुं०) किसी सम्पत्ति या वस्तु का वह अंश जो देवताके लिये निकाला गया हो।
देवभाषा-(सं०स्त्री०) संस्कृत भाषा।
देवभू-(सं०पुं०) देवता, स्वर्ग। **देवभूमि**-(सं०स्त्री०) स्वर्ग।
देवमन्दिर-(सं०पुं०) देवालय, ठाकुरद्वारा।
देवयान-(सं०नपुं०) देवताओं का विमान।
देवयुग-(सं०पुं०) सत्ययुग।
देवयोनि-(सं०पुं०) देवजाति जिनके अन्तर्गत विद्याधर, अप्सरा, यक्ष, राक्षस, गन्धर्व, किन्नर, पिशाच गुह्यक और सिद्ध हैं।
देवर-(सं०पुं०)पति का छोटा भाई।
देवरा-(हिं०पुं०) छोटा देवता,देवर।
देवरानी-(हिं०स्त्री०) पति के छोटे भाई की स्त्री।
देवर्षि-(सं०पुं०) नारद, अत्रि, मरीचि, भारद्वाज आदि ऋषि।
देवल-(सं०पुं०) देवताओंकी पूजा, करके जीविका निर्वाह करने वाला, पुजारी, (हिं०पुं०) देवमन्दिर, देवालय।
देवलोक-(सं०पुं०) स्वर्ग।
देववर्त्म-(सं०नपुं०) आकाश।
देववाणी-(सं०स्त्री०)संस्कृत भाषा।
देवशत्रु-(सं०पुं०) असुर।
देवशिल्पी-(सं०पुं०) विश्वकर्मा।
देवसख-(सं०पुं०) देवताओं का मित्र।
देवसद्म-(सं०नपुं०) देवस्थान,देवालय।
देवसदन-(सं०नपुं०)देवालय, स्वर्ग।
देवसरित-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
देवसात्-(सं०अव्य०) देवताके निमित्त अर्पण किया हुआ।
देवस्थान-(सं०पुं०)देवालय,देवमन्दिर, ठाकुर द्वारा। **देवस्व**-(सं०नपुं०) देवप्रतिमा के लिये अर्पण की हुई सम्पत्ति।
देवा-(हिं०वि०) देनेवाला; **देवाङ्गना**-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
देवाना-(हिं०वि०) देखो दीवाना।
देवान्न-(सं०पुं०) चरु, हवि।
देवायतन-(सं०नपुं०) देव मन्दिर, ठाकुरद्वारा।
देवायुध-(सं०नपुं०) इन्द्रधनुष।
देवारी-(हिं०स्त्री०) देखो दिवाली।
देवाल-(हिं०वि०) दाता, देनेवाला।
देवालय-(सं०पुं०) देवगृह,ठाकुरद्वारा।
देवाला-(हिं०पुं०) देखो दिवाला।
देवालिया-(हिं०वि०)देखो दिवालिया।
देवी-(सं०स्त्री०) देवपत्नी, देवता की स्त्री, दुर्गा, पटरानी।
देवेंद्र-(सं०पुं०)देवताओंके राजा इन्द्र,
देवैया-(हिं०वि०) देने वाला, दाता।
देवोतर-(सं०पुं०) वह सम्पत्ति जो किसीदेवताकेनाम परअलग निकाल दी गई हो।
देवोत्थान-(सं०नपुं०) कार्तिक शुक्ला एकादशी, डिठवन एकादशी।
देश-(सं०पुं०) पृथ्वी का वह भाग जिसका कोई विशिष्ट नाम हो और जिसके अन्तर्गत अनेक नगर ग्राम आदि हों, जनपद।
देशक-(सं०वि०) उपदेश करने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देशज-(सं० वि०) देशजात, देश में उत्पन्न; । **देशज्ञ**-(सं०पुं०) वह जो देश की वार्ता जानता हो । **देशधर्म**-(सं०पुं०) देश की रीति के अनुसार व्यवहार ।

देशस्थ-(सं०वि०) देश में रहने वाला ।

देशाचार-(सं०पुं०) देश की चाल या व्यवहार ।

देशाटन-(सं०पुं०) देशभ्रमण, अनेक देशों में यात्रा ।

देशांतर-(सं०नपुं०) परदेश, विदेश, भूगोल में उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव तक गई हुई मध्य रेखा से पूरब या पच्छिम की ओर की दूरी, लम्बांश ।

देशिक-(सं०पुं०) यात्री, पथिक, वटोही ।

देशित-(सं०वि०) जिससे उपदेश लिया गया हो । **देशिनी**-(सं०स्त्री०) अंगूठे और मध्यमा के बीच की अंगुली

देशी-(हिं०वि०) देश का, देश संबंधी अपने देश का बना हुआ, स्वदेश में उत्पन्न ।

देस-(हिं०पुं०) देखो देश ।

देसावर-(हिं०पुं०) देशान्तर, परदेश, **देसावरी**-(वि०) बाहरी ।

देसी-(हिं०वि०) स्वदेशी, अपने देश का ।

देह-(सं०पुं०नपुं०) शरीर, तनु, शरीर का कोई अङ्ग,; **देहकर्ता**-(सं०पुं०) ईश्वर,, **देहकोष**-(सं०पुं०) त्वचा, चमड़ा, **देहक्षय**-(सं०पुं०) शरीरका नाश, रोग; **देहज**-(सं०पुं०) तनुज, पुत्र, बेटा, (वि०) जो शरीर से उत्पन्न हो; **देहत्याग**-(सं०पुं०) प्राणनाश, मृत्यु । **देहपात**-(सं०पुं०) मृत्यु:, **देहभाज**-(सं०वि०) जीवधारी; **देहयात्रा**-(सं०पुं०) देह के रक्षण के उद्यम; **देहर**-(हिं० स्त्री०) नदी के किनारे की नीची भूमि; **देहरी** (हिं०स्त्री०) देखो देहली । **देहलक्षण**-(सं०नपुं०) सामुद्रिक शास्त्र, शरीर के ऊपर का चिह्न ।

देहली-(सं०स्त्री०) द्वार के चौखट के नीचे लगी हुई लकड़ी ।

देहवना-(हिं०वि०) शरीरधारी (पुं०) देह धारण करने वाला मनुष्य । **देहवान**-(सं०वि०) शरीरधारी (पुं०) सजीव प्राणी ।

देहातीत-(सं०पुं०) वह ज्ञानी जिसको शरीर की ममता न हो । **देहान्त**-(सं०पुं०) मृत्यु । **देहांतर**-(सं० पुं०) दूसरे शरीर की प्राप्ति, मृत्यु ।

देहेश्वर-(सं०पुं०) शरीर का अधिष्ठाता, आत्मा ।

देहोद्भव-(सं०वि०) शरीर से उत्पन्न ।

दैर्घ्य-(सं०पुं०) लंबाई ।

दैत्य-(सं०पुं०) असुर, राक्षस, अति बलवान् मनुष्य; दुराचारी व्यक्ति ।

दैन-(सं०नपुं०) दीन होने का भाव, दीनता, (वि०) दिन सम्बन्धी । **दैनन्दित**-(सं०वि०) प्रतिदिन का, प्रति दिन होनेवाला ।

दैन-(हिं०पुं०) दैन्य, दीनता ।

दैनिक-(स०वि०) प्रति दिन होनवाला, प्रति दिन का (नपुं०) एक दिन का वेतन ।

दैन्य-(सं०पुं०) दीनता, दरिद्रता ।

दैया-(हिं०पुं०) दई, दैव ।

दैव-(सं० वि०) देवता सम्बन्धी, (वि०) प्रारब्ध, भाग्य, विधाता, ईश्वर, आकाश, । **दैवगति**-(सं०स्त्री० ईश्वरी घटना, प्रारब्ध, भाग्य ।

दैवदुर्विपाक-(सं०पुं०) दैव की प्रतिकूलता, अभाग्य ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दैवपर(सं०वि०) भाग्य पर भरोसा करनेवाला।

दैवयोग-(सं०पुं०) आकस्मिक फल, संयोग।

दैववश-(हिं०क्रि०वि०) दैवयोग से।

दैववशात्-(हिं०क्रि०)वि०) अकस्मात्।

दैववाणी-(सं०स्त्री०) आकाशवाणी, संस्कृत वाक्य। **दैववादी**-(सं०वि०) निरुद्योगी, आलसी।

दैवहीन-(सं०वि०) जिसके भाग्य में कोई शुभ लक्षण न हो।

दैवागत-(सं०वि०) सहसा होने वाला, आकस्मिक।

दैवात्-(सं०अव्य०) अचानक।

दैविक-(सं०वि०) देवता संबंधी।

दैवी-(सं०स्त्री०) देवता संबन्धी, देवकृत, अकस्मिक, प्रारब्ध से होने वाली

दैवोपहतक-(सं०वि०)हतभाग्य,अभागा

दैशिक-(सं०वि०) देश संबंधी।

दैहिक-(सं०वि०) शरीर संबंधी, शारीरिक।

दोंकना-(हिं०क्रि०) गुर्राना।

दोचना-(हिं०क्रि०) दवाव में डालना।

दोंकी-(हिं०स्त्री०) धौंकनी।

दो-(हिं०वि०) तीन से एक कम, एक और एक।

दोंइ-(हिं०वि०) दो संख्या का, दो।

दोउ, दोऊ-(हिं०वि०) दोनों।

दोंकोहा-(हिं०पुं०) वह ऊंट जसकी पीठ पर दो ककुद (कूबड़) हों।

दोख-(हिं०पुं०) देखो दोष।

दोखना (हिं०क्रि०) दोष लगाना; **दोखी** (हिं०वि०) दखो दोषी।

दोगा-(हिं०पुं०) छपे हुए मोटे देसी कपड़े का ओढ़ना, छूहने के लियेपानी में घोला हुआ चूना।

दोगुना-(हिं०वि०) देखो दुगना।

दोग्धा-(सं० वि०) ग्वाला, अहीर, (वि०) दुहने वाला, दुहने योग्य।

दोग्ध्री-(सं०स्त्री०) दुधार गाय।

दोघ-(सं०पुं०) दुहने वाला मनुष्य।

दोच-(हिं०स्त्री०) असमंजस, दुवधा।

दोचन-(हिं०स्त्री०) दुवधा, असमंजस।

दोचना-(हिं०स्त्री०) आग्रह करना, दवाव देना।

दोचिता-(हिं०वि०)उद्विग्न चित्त का; **दोचित्ती**-(हिं०स्त्री०) उद्विग्नता।

दोज-(हिं०स्त्री०) किसी पक्षकी दूसरी तिथि, द्वितिया।

दोजानू-(हिं०क्रि०वि०) घुटनेके बल।

दोतला, दोतल्ला-(हिं०वि०) दो खण्ड का (घर)।

दोतही-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की चादर

दोदना-(हिं०क्रि०) कही हुई बात को अस्वीकार करना।

दोधार-(हिं०पुं०) भाला, बरछा।

दोधारा-(हिं०वि०) जिस शस्त्रके दोनों ओर धार हों।

दोन-(हिं०पुं०) दो नदियों का संगम स्थान, दो वस्तुओं का मेल।

दोनला, दोनली-(हिं०वि०) दो नाल या नली वाला।

दोना-(हिं०पुं०) कटोरी के आकार का पत्तों का बना हुआ पात्र। **दोनियाँ** (हिं०स्त्री०) छोटा दोना।

दोनों-(हिं०वि०)उभय,एक और दूसरा।

दोपट्टा-(हिं०पुं०) देखो दुपट्टा।

दोपल्ला-(हिं०वि०) दो पल्ले का।

दोपल्ली-(हिं०वि०) दो पल्लेवाला, (स्त्री०) दोटुकड़े कपड़ों को एक में सिलकर बनाई हुई टोपी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दोपहर-(हिं०स्त्री०) मध्याह्नकाल।
दोपहरिया-(हिं०स्त्री०) देखो दोपहर।
दोपीठा-(हिं०वि०) जिस वस्त्रके दोनों ओर समान रंग रूप हों; (पुं०) कागज के ताव को एक ओर छापने के बाद दूसरी ओर छपना।
दोबल-(हिं०पुं०) अपराध, दोष।
दोबा-(हिं०पुं०) दुविधा।
दोमट-(हिं०स्त्री०) बालू मली हुई मट्टी।
दोमुंहा-(हिं० वि०) जिसके दो मुख हों, दोहरी चाल चलने वाला, कपटी
दोय-(हिं०वि०) दो, दोनों।
दोरंगा-(हिं०वि०) जिसमें दो रंग हो, दो रंग वाला, दोनों ओर चलने वाला।
दोरदण्ड-(हिं०वि०) देखो दुर्दण्ड।
दोरसा-(हिं०वि०) जिसमें दो तरह का स्वाद या रस हो।
दोराहा-(हिं०पुं०) वह स्थान जहांसे आग की ओर दो मार्ग जाते हों।
दोर्ज्या-(सं०नपुं०) भुज के आकार की ज्या।
दोर्दण्ड-(सं०पुं०) भुजदण्ड।
दोर्मध्य-(सं०पुं०) बाहुका मध्य भाग।
दोर्मूल-(सं०नपुं०) कक्ष, कोंख।
दोल-(सं०पुं०) हिंडोला, दोलना, झूला
दोलड़ा-(हिं०वि०) जिसमें दो लडें हों।
दोलत्ती-(हिं०स्त्री०) देखो दुलत्ती।
दोला-(सं० स्त्री०) हिंडोला, झूला, डोली; **दोलायमान**-(सं०वि०) झूलता हुआ, हिलता हुआ।
दोलिका-(सं०स्त्री०) झूला, हिंडोला, डोली;
दोलित-(हिं०वि०) चंचल, दोलायमान।
दोली-(सं०स्त्री०) देखो डोली।
दोष-(सं०पुं०) दूषण, अवगुण, परायापन, अभियोग, कलंक।
दोष-(सं०पुं०) पाप, शरीर का विकार जो वात, पित्त, कफ के कुपित होने से उत्पन्न होता है। **दोषग्राही**-(सं०वि०) दुर्जन, दुष्ट। **दोषघ्न**-(सं०वि०) कुपित दोषों की शान्त करने वाली औषधि। **दोषज्ञ**-(सं० पुं०) चिकित्सक, वैद्य। **दोषता**-(सं०स्त्री०) दोष का भाव। **दोषत्रय**-(सं०नपुं०) वात पित्त और कफ।
दोषन-(हिं०पुं०) दूषण, दोष, अपराध।
दोषना-(हिं०क्रि०) अपराध लगाना।
दोषपत्र-(सं०पुं०) वह कागज जिसमें अपराधी के अपराधों का विवरण लिखा रहता है।
दोषिन-(हिं०स्त्री०) पाप करनेवाली स्त्री
दोषी-(सं०वि०) दोषयुक्त, अपराधी।
दोस-(हिं०पुं०) देखो दोष।
दोसाला-(हिं०वि०) दो वर्ष पुराना।
दोसाही-(हिं०वि०) जिस वर्ष में दो फस्लें होती हों।
दोह-(सं०पुं०) दोहन, दुहने का काम, देखो द्रोह।
दोहथा-(हिं०पुं०) कन्याका पुत्र, नाती।
दोहत्थड़-(हिं०स्त्री०) वह थप्पड़ जो दोनों हाथों से मारा जाय। **दोहत्था**-(हिं०क्रि०वि०) दोनों हाथोंसे, दोनों हाथोंके द्वारा (वि०) जो दोनों हाथों से किया जाय।
दोहद-(सं०स्त्री०) गर्भवती की अभिलाषा या इच्छा, उकौना।
दोहना-(हिं०क्रि०) दोष या एब निकालना। **दोहनी**-(सं०स्त्री०) दूध दूहने का मिट्टी का पात्र, दूध दूहने का काम।
दोहर-(हिं०स्त्री०) दो परतों की बनी हुई ओढ़ने की चादर।
दोहरना-(हिं०क्रि०) दूसरी आवृत्ति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होना, दोबारा होना, दो परत किया जाना।

दोहरा-(हिं०वि०) जिसमें दो परत या तहे हों, दुगना। **दोहराना**-(हिं० क्रि०) किसी बात को दुबारा करना, तह करना।

दोहा-(हिं०पुं०) हिन्दी का एक मात्रा-वृत्त छन्द।

दोहाई-(हिं०स्त्री०) देखो दुहाई।

दोहाक, दोहाग-(हिं०पुं०) दुर्भाग्य, अभाग्य। **दोहागा**-(हिं०वि०) अभागा

दोहित-(सं०वि०) दूहा हुआ, (हिं०पुं०) दोहितय, नाती। **दोही**-(सं०वि०) दूहने वाला (पुं०) गोप, ग्वाला।

दौंकना-(हिं०क्रि०) दमकना, चमकना।

दौंचना-(हिं०क्रि०) दबाव डालकर लेना।

दौंरी-(हिं०स्त्री०) खेती की उपज के डंडलों में से दाना अलगाने के लिए इसको बैल के खुरों से कुचलवाना।

दौ-(हिं०स्त्री०) जंगल की अग्नि सन्ताप, जलन।

दौड़-(हिं०स्त्री०) द्रुतगमन, धावा, चढ़ाई, गति की पहुंच, विस्तार, लम्बाई, सिपाहियों का वह दल जो अपराधियों को पकड़ने के लिये एक साथ जाता है, बुद्धि की गति, अधिक से अधिक जो उपाय किया जा सके।

दौड़ना-(हिं०क्रि०) द्रुत गति से चलना, उपाय करना, उद्योग फैलना, छा जाना **चढ़ दौड़ना**-धावा करना; **दौड़ादौड़ी**-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, आतुरता।

दौड़ान-(हिं०स्त्री०) दौड़ने की क्रिया या भाव, वेग। **दौड़ाना**-(हिं०क्रि०) जल्दी जल्दी चलाना, बारंबार आने जाने के लिये विवश करना, चलाना, फैलाना।

दौत्य-(सं०नपुं०) दूतकर्म, दूतका काम

दौन-(हिं०पुं०) देखो दमन।

दौरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का टोकरा

दौंरी-(हिं०स्त्री०) छोटी टोकरी।

दौर्जन्य-(सं०नपुं०) दुर्जनत्व, दुर्जनता, दुष्टता, बुरा व्यवहार।

दौर्मनस्य-(सं०पुं०) कुमन्त्रणा, बुरा विचार।

दौर्बल्य-(सं०पुं०) दुर्बलता।

दौवारिक-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार।

दौहित्र-(सं०पुं०) लड़की का पुत्र, नाती।

द्युति-(सं०स्त्री०) कान्ति, चमक, शोभा, किरण।

द्युपात-(सं०पुं०) सूर्य, इन्द्र। **द्युपथ**-(सं०पुं०) स्वर्ग का मार्ग।

द्युतसरित्-द्युसिन्ध-(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी।

द्यूत-(सं०नपुं०) दांव बद कर खेला हुआ खेल, जुआ; **द्यूतकर**-(सं०पुं०) जुआ खेलने वाला, जुआरी। **द्यूतकारक**-(सं०वि०) जुआ खेलने वाला

द्यून-(सं०वि०) क्षीण।

द्यो-(सं०नपुं०) स्वर्ग, आकाश।

द्योत-(सं०पुं०) प्रकाश, आतप; **द्योतक**-(सं०वि०) प्रकाश करने वाला।

द्योतन-(सं०स्त्री०) प्रकाशन; **द्योति**-(हिं०स्त्री०) कान्ति; **द्योतित**-(सं० वि०) प्रकाशित।

द्रग-(हिं०पुं०) दृग, नेत्र।

द्रव-(सं०वि०) आर्द्र, गीला, तरल, पिघला हुआ। । **द्रवण**-(सं०वि०) बहाव, गरमी, पिघलने की क्रिया, हृदय पर करुणापूर्ण प्रभाव पड़ने की भाव। **द्रवना**-(सं०स्त्री०) पानी की तरह पतला होना या बहना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्रवरस-(सं०नपुं०) गीला रस ।
द्रवीकरण-(सं०नपुं०)गलनेकी क्रिया ।
द्रवीकृत-(सं०वि०) गलाया हुआ ।
द्रवीभाव-(सं०पुं०) गलनेका भाव ।
द्रवीभूत-(सं०वि०) कृपालु, दयालु ।
द्रव्य-(सं०नपुं०) वस्तु, धन, सामग्री, जतु, लाह; द्रव्यवान-(सं०वि०) धनवान् धनी ।
द्रष्टव्य-(सं०वि०) देखने योग्य ।
द्रष्टा-(सं०वि०) दर्शक, देखने वाला,
द्राक्षा-(सं०स्त्री०) दाख, अंगूर ।
द्राघिमा-(सं०स्त्री०) दीर्घता, लंबाई, भूमध्यके समानान्तर पूर्व और पश्चिम की ओर की वे कल्पित रेखायें जो अक्षांश को सूचित करती हैं ।
द्राव-(सं०पुं०) बहाव, गमन, गरमी, उष्णता, पसीज कर बहने की क्रिया ।
द्रावक-(सं०वि०) हृदयग्राही ।
द्रावित-(सं०वि०)द्रवित,गलाया हुआ ।
द्रुत-(सं०वि०)शीघ्रगामी, भागा हुआ ।
द्रुतगति-(सं०स्त्री०) तीव्र गति (वि०) शीघ्र चलने वाला; द्रुतगामी-(सं० वि०) शीघ्र चलने वाला; द्रुतविलम्बित-(सं०नपुं०) एक छन्द का नाम
द्रुति-(सं०स्त्री०) द्रव, गति ।
द्रुम-(सं०पुं०) वृक्ष, पेड़ ।
द्रुह-(सं०पुं०) वृक्ष, पुत्र, बेटा, (वि०) द्रोह करने वाला
द्रुही-(सं०स्त्री०)दुहिता,कन्या, बेटी ।
द्रोण-(सं०पुं०) कठवत, लकड़ी का रथ, डोम, कौवा, बिच्छू, नाव, डोंगा।
द्रोणि-(सं०स्त्री०) कठवत, डोंगी, दो पर्वतों के बीच की भूमि, एक सौ अट्ठाईस सेर का प्राचीन परिमाण।
द्रोणी-(सं०स्त्री०) काठ का बना हुआ पात्र कठवत ।
द्रोह-(सं०पुं०) द्वेष, बैर ।
द्रोही-(सं०पुं०)द्रोहक, द्रोह करनेवाला ।
द्वन्द, द्वन्द्व-(सं०नपुं०) मिथुन, जोड़ा, युग्म, दो मनुष्यों का परस्पर लड़ना, जोड़, कलह, झगड़ा ।
द्वन्दर-(हिं०वि०) झगड़ालू ।
द्वन्द्वयुद्ध-(सं०नपुं०) दो पुरुषों का परस्पर युद्ध ।
द्वन्द्व-(सं०नपुं०) युग्म जोड़ा, लड़ाई एक प्रकार का समास जिसमें सब शब्द जो जोड़े जाते हैं प्रधान रहते हैं, और उनका अन्वय एक ही क्रिया के के साथ होता है ।
द्वय-(सं०नपुं०)द्वन्द्व, युग्म दो (वि०) दोहराया हुआ ।
द्वादश-(सं०वि०) दस और दो की संख्या (पुं०) बारह की संख्या,
द्वादशाह-(सं०पुं०) बारह दिनों में किया जानेवाला एक यज्ञ, वह श्राद्ध जो किसी के निमित्त उसके मरने के बारहवें दिन किया जाता है ।
द्वादशी-(सं०स्त्री०) किसी मास के किसी पक्ष की बारहवीं तिथि ।
द्वापर-(सं०पुं०) चार युगों में से तीसरा युग ।
द्वार-(सं०नपुं०) मार्ग या छेद, साधन, उपाय । द्वारचार-(सं०पुं०) विवाह की एक रीति जो बारात के कन्या के द्वार पर पहुँचने पर होती है । द्वारछेकाई-(हिं०स्त्री०) विवाह की एक रीति जिसमें जब वर वधू घर पहुँचते हैं तब वर की बहिन मार्ग रोकती है और उसको कुछ नेग दिया जाता है, यह नेग ।
द्वारपात, द्वारपाल-(सं०पुं०)प्रतिहारी
द्वारपूजा-(हिं०स्त्री०) विवाह की एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रीति जो कन्या वाले के द्वार पर तब की जाती है जब वर वरात के साथ पहिले पहिल कन्या वाले के घर आता है।

द्वारयन्त्र-(सं०नपुं०) तालक, ताला।

द्वारा-(हिं०पुं०) फाटक, मार्ग, (अव्य०) साधन से। **द्वाराध्यक्ष**-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढ़ीबान।

द्वारिका-(सं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढ़ीदार

द्वारी-(हिं०स्त्री०) छोटाद्वार, दुआरी।

द्वास्थ-(सं०पुं०) द्वारपाल, दरवान।

द्वि-(सं०वि०) द्वित्व, दो संख्या का, दो।

द्विक-(सं०वि०) द्वय, दो, दूसरा, दो बार।

द्विकर-(सं०) दो भुजा, दो हाथ।

द्विकर्मक-(सं०वि०) वह क्रिया जिसमें दो कर्म हों।

द्विगु-(सं०पुं०) जिसके पास दो गाय हों वह कर्मधारय समास जिसका पूर्वपद संख्या वाचक शब्द हो।

द्विगुण-(सं०पुं०) दुगना, दूना।

द्विगुणित-(सं०वि०) दो से गुणा किया हुआ, दूगना, दूना।

द्विज-(सं०पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य जिसका उपनयन संस्कार हुआ हो, अण्डज प्राणी, पक्षी, (वि०) जिसका दो बार जन्म हुआ हो,

द्विजन्मा-(सं०पुं०) ब्राह्मण, दाँत, पक्षी, पक्षी, वैश्य, (वि०) जिसका दो बार जन्म हुआ हो।

द्विजराज-(सं०पुं०) देखो द्विजपति।

द्विजषभ-(सं०पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण।

द्विजवर-(सं०पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण।

द्विजाति-(सं०पुं०) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य।

द्विजालय-(सं०पुं०) कोटर।

द्विजिह्व-(सं०पुं०) सर्प, साँप, पिशुन, दुष्ट, चोर।

द्विजेन्द्र, द्विजेश-(सं०पुं०) द्विजश्रेष्ठ, ब्राह्मण।

द्विजोत्तम-(सं०पुं०) ब्राह्मण।

द्विजोपासक-(सं०पुं०) द्विज सेवक, शूद्र।

द्विजसेवा-(सं०स्त्री०) शत्रु की सेवा।

द्वितिय-(सं०नपुं०) दो की संख्या, (वि०) दोहरा। **द्वितीय**-(सं०वि०) दूसरा (पुं०) पुत्र, बेटा। **द्वितीया**-(सं०स्त्री०) स्त्री, प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। **द्वितीयाश्रम**-(सं०पुं०) गार्हस्थ आश्रम।

द्वित्व-(सं०नपुं०) दोहरा होने का भाव

द्विदल-(सं०वि०) दो पत्तोंवाला, दो पंखड़ियों वाला, (पुं०) वह अन्न जिसमें दल हों, दाल।

द्विदश-(सं०वि०) बीस की संख्या।

द्विधा-(सं०अव्य०) दो प्रकार।

द्विप-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।

द्विपक्ष-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया एक महीना, (वि०) जिसके दो पक्ष हों, दो पक्ष वाला।

द्विपथ-(सं०नपुं०) दो मार्ग।

द्विपद-(सं०पुं०) मनुष्य, पक्षी, दो पैर।

द्विपमद-(सं०पुं०) हाथी के मद का जल

द्विपाद-(सं०पुं०) मनुष्य, पक्षी, (वि०) जिसके दो पैर हों।

द्विबाहु-(सं०पुं०) मनुष्य आदि दो पैर वाले जीव (वि०) जिसके दो बाहु हों

द्विभाग-(सं०पुं०) दो भाग, दो अंश।

द्विभाषी-(सं०पुं०) दो भाषा जानने वाला मनुष्य।

द्विभुज-(सं०वि०) दो हाथ वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्विमुख-(सं०वि०) जिसके दो मुख हों।
द्विर-(सं० पुं०) भौंरा, शहद की मक्खी।
द्विरद-(सं०पुं०) हाथी, (वि०) दो दाँतवाला। द्विरसन-(सं०पुं०) सर्प, द्विरागमन-(सं०नपुं०) विवाह के बाद वधू का पति के घर पर दुबारा आना।
द्विरात्र-(सं०नपुं०) दो रात में होनेवाला वाला यज्ञ, (नपुं०) दो रात।
द्विरुक्त-(सं०वि०) दो बार कहा हुआ।
द्विवचन-(सं०नपुं०) संस्कृत व्याकरण में में किसी विभक्ति का वह रूप जो दो व्यक्ति के लिये प्रयोग किया जाता है।
द्विविध-(सं०वि०) दो प्रकार का।
द्विशीर्ष-(सं०पुं०) अग्नि, आग, (वि०) जिसके दो सिर हों।
द्विष-(सं०पुं०) वैरी, शत्रु, (वि०) विरोध या द्वेष करने वाला।
द्विहृदया-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
द्वीप-(सं०पुं०) भूमि का वह भाग जो चारों ओर जल से घिरा हो, टापू। (नपुं०) बाघ का चमड़ा।
द्वीपवती-(सं०स्त्री०) भूमि, द्वीपिनख-(सं०पुं०) व्याघ्र नख।
द्वेधा-(सं०अव्य०) दो प्रकार के।
द्वेष-(सं०पुं०) शत्रुता, वैर, विरोध।
द्वेषी-(सं०वि०) विरोध करने वाला।
द्वैत-((सं०नपुं०) भेद, भ्रम, अज्ञान, दुविधा।
द्वैध-(सं०अव्य०) दो प्रकार से (वि०) परस्पर का विरोध।
द्वैराज्य-(सं०नपुं०) वह राज्य जो दो राजाओं में विभक्त हो।
द्वैविध्य-(सं०नपुं०) भ्रम, दुविधा।

ध

ध-हिन्दी तथा, संस्कृत वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यञ्जन तथा तवर्ग का चौथा अक्षर, इसका उच्चारण स्थान दन्तमूल है।
ध-(सं०नपुं०) धन, ब्रह्मा, कुबेर, धन, धकार वर्ण।
धंका-(हिं०पुं०) धक्का।
धंगर-(हिं०पुं०) ग्वाल, अहीर, चरवाहा।
धंध, धंधक-(हिं०पुं०) जंजाल, बखेड़ा।
धंधरक-(हिं०पुं०) काम धंधे का आडम्बर
धंधला-(हिं०पुं०) झूठा आडम्बर, ढोंग बहाना। धंधलाना-(हिं०क्रि०) झूठा आडम्बर, रचना, ढंग करना।
धंधा-(हिं०पुं०) व्यवसाय, कामकाज, उद्यम।
धँस-(हिं०पुं०) डुबकी, गोता; धँसन-(हिं०स्त्री०) धँसने की क्रिया। धँसना-(हिं०क्रि०) घुसना, गड़ना, बैठ जाना, पठना, नष्ट होना, बैठ जाना।
धँसान-(हिं०स्त्री०) धँसने की क्रिया या ढंग, उतार। धँसाना-(हिं०क्रि०) गड़ाना, चुभाना, पैठाना। धँसाव-(हिं०पुं०) धँसने की क्रिया, दलदल।
धक-(हिं०स्त्री०) हृदय धड़कने का भाव या शब्द, उमंग, उद्वेग, (क्रि०) वि०) अचानक। धकधकाना-(हिं०क्रि०) दहकना, भभकना, जलना। धकधकाहट-(हिं०स्त्री०) आशंका, धड़कन, खटका। धकधकी-(हिं०स्त्री०) हृदय की धड़अकन।
धकपक-(हिं०स्त्री०) कलेजे की धड़कन (क्रि०वि०) डरते हुए। धकपकाना-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हिं०क्रि०) डरना, दहलना, ।
धकार-(सं०पुं०) "ध' अक्षर का रूप।
धका-(हिं०पुं०) देखो धक्का ।
धकाना-(हिं०क्रि०) धधकाना ।
धकियाना-(हिं०क्रि०) धक्का देना, ढकेलना । **धकेलना**-(हिं० क्रि०) ठेलना, धक्का देना । **धकेलू**-(हिं० पुं०) धक्का देने वाला । **धकैत**-(हिं०वि०) धक्का देने वाला ।
धकपक्क-(हिं०स्त्री०) देखो धकपक ।
धक्कमधक्का-(हिं०पुं०) बहुत से मनुष्यों में आपस में धक्का देने का कार्य ।
धक्का-(हिं०पुं०) आघात, टक्कर, झोंका, हानि, टोटा, । **धक्कामुक्की**-मुठभेड़, मारपीट ।
धगड़-(हिं०पुं०) देखो धगड़ ।
धचका-(हिं०पुं०) आघात, धक्का, झोंका ।
धज-(सं०स्त्री०) सुन्दर रचना, आकृति, शोभा । **सजधज**-तैयारी ।
धजा-(हिं०स्त्री०) ध्वजा, पताका, झंडा ।
धजीला-(हिं०वि०) सुन्दर ढंग का,
धज्जी-(हिं०स्त्री०) कपड़ा या कागज का लम्बा पतला टुकड़ा, लोहे की चद्दर या लकड़ी की पतली चीर या पट्टी ।
धटपरीक्षा-(सं०स्त्री०) देखो तुलापरीक्षा ।
धटी-(सं०स्त्री०) कपड़े की चीर ।
धड़ंग-(हिं०वि०) वस्त्रहीन, नंगा ।
धड़-(हिं०पुं०) शरीर का बिचला मोटा भाग, कमर के ऊपर का भाग, वृक्ष का जड़ से ऊपर का भाग, तना, पेड़ी, (स्त्री०) किसी वस्तु के भूमि पर वेग से गिरने का शब्द ।
धड़क-(हिं०स्त्री०) हृदय का स्पन्दन, खटका । **धड़कन**-(हिं०स्त्री०) हृदय का स्पन्दन । **कलेजा धड़कना**-(हिं०क्रि०) हृदय का स्पन्दन करना ।
धड़ाका-(हिं०पुं०) खटका, साहस ।
धड़काना-(हिं०क्रि०) दहलाना, डराना ।
धड़क्का-(हिं०पुं०) देखो धड़ाका ।
धड़ट्टा-(हिं०वि०) जिसकी कमर झुक गई हो, कुबड़ा ।
धड़धड़-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के चलने से उत्पन्न तीव्र शब्द (क्रि० वि०) बिना रुकावट के
धड़धड़ाना-(हिं०क्रि०) धड़धड़ शब्द करना ।
धड़क्का-(हिं०पुं०) देखो धड़ा का ।
धड़धड़-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के चलने से उत्पन्न घोर शब्द । (क्रि०वि०) बेधड़क, बिना रुकावट के । **धड़धड़ाना**-(हिं०क्रि०) धड़धड़ शब्द करना ।
धड़ल्ला-(हिं०पुं०) धड़धड़ शब्द, धड़का, भीड़ भाड़ ।
धड़वाई-(हिं०पुं०) किसी वस्तु को तौलने वाला ।
धड़ा-(हिं०पुं०) तराजू के पलड़े पर किसी पात्र आदि के भार को बराबर करने का तौल, बाँट, बटखरा, तुला, तराजू, चार सेर की तौल ।
धड़ाका-(हिं०पुं०) धड़धड़ शब्द करना; **धड़ाधड़**-(हिं० क्रि० वि०) धड़धड़, शब्द के साथ, बिना रुकावट के । **धड़ाबन्दी**-(हिं०स्त्री०) धड़ा बाँधने का काम ।
धड़ाम-(हिं०पुं०) किसी वस्तु के गिरने का शब्द ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धत्-(हिं०अव्य०) तिरस्कार के साथ हटाने का शब्द।
धत-(हिं०स्त्री०) बुरा अभ्यास, बुरी लत। **धतकारना**-(हिं० क्रि०) धिक्कारना, दुरदुराना।
धता-(हिं०वि०) दूर किया हुआ।
धतिया-(हिं०वि०) कुटेव का।
धतींगड़-(हिं०पुं०) मोटा मनुष्य।
धधक-(हिं०स्त्री०) आग की लपट का ऊपर उठना। **धधकना**-(हिं०वि०) आग भड़कना, दहकना। **धधकाना**-(हिं०क्रि०) दहकाना।
धन-(सं०नपुं०) द्रव्य, सम्पत्ति, अति प्रिय वस्तु, पूंजी, गणित में जोड़ का चिन्ह (+) (हि०वि०) देखो धन्य
धनक-(हिं०पुं०) धनुष कमान टोपी में लगाने का गोटा।
धनकुबेर-(हिं०पुं०)बड़ा धनी, धनाढ्य मनुष्य।
धनक्षय-(सं०पुं०) धन का नाश।
धनञ्जय-(सं०पुं०) अग्नि, आग।
धनतेरस-(हिं०स्त्री०) कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी।
धनद-(सं०पुं०) कुवेर, (वि०) धन देनेवाला। **धनदण्ड**-(सं०पुं०) धन रूप में दण्ड, जुर्माना।
धनदेव-(सं०पुं०) धन के देवता, कुवेर
धनधान्य-(सं०पुं०) धन और अन्न आदि सामग्री सम्पत्ति। **धनधाम**-(सं०पुं०) रुपया पैसा और घरबार।
धनपत्र-(सं०पुं०) हिसाब लिखने का वहीखाता।
धनलोभ-(सं०पुं०)धनकी अभिलाषा। **धनवन्त**-(सं०वि०) देखो धनवान।
धनवान-(सं०वि०)जिसके पास धन हो
धन शाली-(सं०वि०)धनवान्, धनी
धनसंचय-(सं०पुं०) धन इकट्ठा करना।
धनस्पृहा-(सं०स्त्री०)धन की अभिलाषा
धनहर-(सं०वि०) तस्कर। **धनहीन**-(सं०वि०) निर्धन, कंगाल, दरिद्र। **धनाकांक्षा**-(सं०स्त्री०) धन की अभिलाषा।
धनागम-(सं०पुं०) धन की प्राप्ति।
धनाढ्य-(सं०वि०) धनवान्। **धनाधिकारी**-(सं०पुं०) कोषाध्यक्ष भण्डारी।
धनाधिप-(सं०पुं०) कुवेर, धनरक्षक। भण्डारी। **धनाधिपति, धनाध्यक्ष**-(सं०पुं०) धन रक्षक, कुवेर।
धनार्थ-(सं०वि०)धन केलिये। **धनार्थी**-(सं०वि०) धन चाहने वाला।
धनार्थी-(सं०स्त्री०) धन का लोभ।
धना-(सं०वि०) जिसके पास धन हो।
धनिक-(सं०वि०) जिसके पास धन हो।
धनिष्ठ-(सं०वि०) बहुत बड़ा धनी।
धनी-(हिं०वि०) जिसके पास धन हो। (पुं०) धनवान, पुरुष।
धनु-(सं०पुं०) धनुष, कमान, **धनुआ**-(हिं०पुं०) धनुष, कमान, रुई धुनने की धुनकी। **धनुई**-(हिं०स्त्री०) छोटा धनुष, **धनुक**-(हिं०पुं०) इन्द्र धनुष।
धनुर्गुण-(सं०पुं०) धनुष की डोरी चिल्ला
धनुर्धर-(सं०पुं०) धनुर्धारी। **धनुर्धारी**-(सं०वि०) देखो धनुर्धर।
धनुर्वेद-(सं० पुं०) धनुर्विद्या बोधक शास्त्र
धनुष-(सं०पुं०) कमान।
धनुष्कर-(सं०पुं०) धनुष बनानेवाली।
धनुहाई-(हिं०स्त्री०)धनुष की लड़ाई खेलने का कमान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धनेस-(हिं०पुं०) धन का स्वामी, कुवेर ।
धन्ना-(हिं०पुं०) देखो धरना (वि०) धन्य।
धन्नासेठ-(हिं० पुं०) वड़ा धनाढ्य मनुष्य ।
धन्नी-(हिं०) एक जाति ।
धन्य-(सं० वि०) पुण्यवान्, श्लाघ्य **धन्यवाद**-(सं०पुं०) साधुवाद, कृतज्ञता सूचक शब्द ।
धन्वन्तर-(सं०नपुं०) चार हाथ की नाप ।
धन्वा-(हिं०पुं०) धनुष, कमान, चाप; **धन्वाकार**-(सं० वि०) कमान के आकार का ।
धन्वी-(सं०पुं०) धनुर्धर, वीर, निपुण ।
धप-(हिं०स्त्री०) धप्पड़, तमाचा । **धपना**-(हिं०क्रि०) वेग से चलना, झपटना । **धप्पा**-(हिं० पुं०) धौल, थप्पड़, क्षति, हानि ।
धबला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का ढीला पहरावा ।
धब्बा-(हिं०पुं०) कलंक, दोष ।
धम-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, धमाका । **धमक**-(हिं०स्त्री०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, आघात । **धमकना**-(हिं० क्रि०) धमाका करना, रह रहकर पीड़ा होना, **धमकाना**-(हिं० क्रि०) भय दिखलाना, डराना ।
धमकी-(हिं०स्त्री०) डाँट, डपट, घुड़की
धमगरज-(हिं०पुं०) उत्पात, उपद्रव ।
धमधमाना-(हिं०क्रि०) धमधम शब्द करना ।
धमधूसर-(हिं०वि०) भद्दा मोटा आदमी
धमना-(हिं०क्रि०) धौंकना, फूँकना ।
धमनी-(सं०स्त्री०) नाड़ी आदि का संचार करने वाली छोटी या बड़ी नली
धमसा-(हिं०पुं०) नगाड़ा, धौंसा ।
धमाका-(हिं०पुं०) किसी भारी वस्तु के गिरने का शब्द, बन्दूक का शब्द, आघात ।
धमाचौकड़ी-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, उछल कूद, उधम । **धमाधम**-(हिं० क्रि० वि०) प्रहार के शब्दों के सहित ।
धमार-(हिं०स्त्री०) उत्पात, उपद्रव ।
धमारिया-(हिं०पुं०) उछल कूद करने वाला, नट, (वि०) उपद्रवी ।
धमारी-(हिं०वि०) उत्पाती, उपद्रवी ।
धमूका-(हिं०पुं०) आघात, प्रहार,
धमेख-(हिं०स्त्री०) बुद्ध के काल का।
धयना-(हिं०क्रि०) दौड़ना, धूपना ।
धरंता-(हिं०वि०) पकड़नेवाला ।
धर-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, (वि०) धारण करन वाला, **धरपकड़**-अपराधियों को पकड़ने का काम ।
धरक-(हिं०पुं०) देखो धड़क, **धरकना**-(हिं०क्रि०) धड़कना ।
धरण-(सं०नपुं०) धारण करने की क्रिया ।
धरणि-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, धमनी । **धरणिधर**-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़, शेषनाग । **धरणिरुह**-(सं०पुं०) वृक्ष ।
धरणी-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, नाड़ी, मेदा **धरणीधर**-(सं०पुं०) देखो धरणिधर ।
धरता-(हिं०पुं०) ऋणी, देनदार,
धरती-(हिं०स्त्री०) धरित्री, पृथ्वी, संसार ।
धरन-(हिं०स्त्री०) धरन की क्रिया या भाव, टेक, हठ, कड़ी, धरनी ।
धरना-(हिं०क्रि०) स्थापित करना, ठहराना, बन्धक रखना, आश्रय लेना,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहण करना, स्वीकार करना, आरोपित करना, धारण करना, पहिरना।
धरना-(हिं०पुं०) अड़े रहना।
धरनि-(हिं०स्त्री०) देखो धरणि।
धरनी-(हिं०स्त्री०) देखो धरणी।
धरनेत-(हिं०पुं०) धरना देने वाला मनुष्य।
धरम-(हिं०पुं०) धर्म, **धरमघड़ी**-(हिं०स्त्री०) लंगर पर चलने वाली भीत पर लगी हुई बड़ी घड़ी।
धरवाना-(हिं०क्रि०) पकड़ाना।
धरसना-(हिं०क्रि०) डर जाना, दब जाना।
धरहर-(हिं०स्त्री०) धरपकड़, रक्षा बचाव, धीरज, तय।
धरहरा-(हिं०पुं०) ऊँचा बुर्ज या मकान जिसमें चढ़ने के लिये भीतर की ओर सीढ़ियाँ बनी रहती हैं।
धरहरिया-(हिं०पुं०) बीच बचाव करने वाला।
धरा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, धरती, संसार, बटखरा।
धराऊ-(हिं०वि०) बहुत दिनों का रक्खा हुआ, पुराना।
धरातल-(सं०पुं०) धरती, पृथ्वी, लंबाई और चौड़ाई का गुणनफल।
धराधर-(सं० पुं०) पर्वत, विष्णु, शेषनाग।
धराधिप, धराधिपति, धराधीश-(सं० पुं०) नृप, राजा।
धराना-(हिं०क्रि०) पकड़ाना।
धरासुर-(हिं०पुं०) ब्राह्मण।
धरित्री-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
धरैया-(हिं०वि०) धरने या पकड़ने वाला।
धरोहर-(हिं०स्त्री०) न्यास, थाती।
धर्ता-(सं०पुं०) धारण करने वाला, अपनें ऊपर किसी का भार लेने वाला
धर्म-(सं०नपुं०) सत्कर्म, पुण्य, सदाचार, कोई विशिष्ट व्यापार, प्रकृति, नियम, नित्य नियम। धर्म कमाना-धर्म कार्य
धर्मकर्म-(सं०नपुं०) वह कर्म जिसका करना किसी धर्मग्रन्थ में आवश्यक बतलाया गया हो।
धर्मक्षेत्र-(सं०पुं०) कर्मभूमि, भारतवर्ष; **धर्मचारी**-(सं०वि०) धर्म का आचरण करने वाला। **धर्मज्ञ**-(सं०वि०) धर्म को जानने वाला। **धर्मतः**-(सं०अव्य०) धर्म का ध्यान करते हुए, धर्म को साक्षी रख करके; **धर्मनिष्ठा**-(सं०स्त्री०) धर्म में विश्वास
धर्मपति, धर्मपत्नी-(सं०स्त्री०) विवाहिता स्त्री। **धर्मपरायण**-(सं०वि०) सर्वदा धर्मकार्य का यथाशक्ति अनुष्ठान करने वाला। **धर्मपुत्र**-(सं०पुं०) धर्म के अनुसार स्वीकृत किया हुआ पुत्र। **धर्मबुद्धि**-(सं०स्त्री०) धर्मज्ञान भले बुरे का विचार। **धर्मभगिनी**-(सं०स्त्री०) धर्म के अनुसार मानी हुई बहिन, गुरु की कन्या।
धर्मभ्राता-(सं०पुं०) भाई के समान एक ही आश्रम में रहने वाला। **धर्ममति**-(सं०वि०) धार्मिक पुण्यात्मा।
धर्ममहामात्य-(सं०पुं०) धर्म विषयक मंत्री।
धर्मयुग-(सं०नपुं०) सत्य युग। **धर्मयुद्ध**-(सं०पुं०) वह युद्ध जिसमें किसी प्रकार का अन्याय अथवा नियम भंग न हो।
धर्मराइ-(हिं०पुं०) देखो धर्मराज।
धर्मराज-(सं० पुं०) नृपति, राजा युधिष्ठिर, न्यायाधीश, यम, धर्म का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पालन करने वाला, राजा, न्याय-कर्ता। **धर्मराय**-(हिं०पुं०) देखो धर्म-राज।

धर्मवीर-(सं०पुं०) वीर रस के अनुसार वह पुरुष जो धर्म करने में साहसी हो। **धर्मशाला**-(सं० स्त्री०) यात्रियों के लिये धर्मार्थ बना हुआ गृह, सत्र, विचारालय। **धर्मशासन**-(सं०नपुं०) धर्मशास्त्र। **धर्मशास्त्र**-(सं०नपुं०) वह ग्रंथ जिसमें समाज के शासन के निमित्त नीति और सदाचार संबंधी नियम लिखे हों। **धर्मशास्त्री**-(सं० पुं०) वह जो धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देता हो, **धर्मशील**-(सं०वि०) धार्मिक। **धर्मसंकट**-(हिं० पुं०) ऐसी स्थिति का आ पड़ना जब किसी कार्य के करने या न करने पर धर्म का आघात पड़ता हो। **धर्मसभा**-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर बैठकर न्यायाधीश न्याय करे।

धर्मागम-(सं०पुं०) धर्मशास्त्र।

धर्माचार्य-(सं०पुं०) धर्मशिक्षक।

धर्मात्मा-(सं०वि०) धर्म करने वाला, धार्मिक।

धर्माधर्म-(सं०पुं०) पुण्य और पाप।

धर्माधिकार-(सं०पुं०) न्याय और अन्याय के विचार का अधिकार।

धर्माधिकारी-(सं०पुं०) धर्म, अधर्म की व्यवस्था देने वाला, न्यायाधीश।

धर्माध्यक्ष-(सं०पुं०) धर्माधिकारी।

धर्मार्थ-(सं०क्रि०वि०) धर्म के निमित्त, परोपकार के लिये।

धर्मावतार-(सं०पुं०) साक्षात् धर्म, अत्यन्त धर्मात्मा, अच्छी तरह न्याय कार्य करने वाला।

धर्माश्रित-(सं०वि०) धर्मशील, धार्मिक।

धर्मासन-(सं०नपुं०) न्यायाधीश के बैठने का आसन।

धर्मिणी-(सं०स्त्री०) पत्नी, स्त्री।

धर्मिष्ठ-(सं०पुं०) पुण्यात्मा, अत्यन्त धार्मिक।

धर्मी-(सं०वि०) धार्मिक।

धर्मोपदेश-(सं०पुं०) धर्मशास्त्र, धर्म की शिक्षा, **धर्मोपदेशक**-(सं०वि०) धर्म का उपदेश देने वाला।

धर्ष-(सं०पुं०) क्रोध, अविनय, अनादर

धर्षक-(सं०वि०) अपमान करने वाला

धर्षण-(सं०नपुं०) अनादर, अपमान।

धर्षणा-(सं०स्त्री०) अवज्ञा, अपमान।

धर्षणीय-(सं०वि०) दबाने या हराने योग्य। **धर्षित**-(सं०वि०) अपमानित किया हुआ।

धव-(सं०पुं०) पति, स्वामी।

धवरहर, धवराहर-(हिं०पुं०) देखो धरहरा।

धवरा-(हिं०वि०) उजला, सफेद।

धवल-(सं०वि०) सफेद, उजला, निर्मल, सुन्दर।

धवलता-(हिं०स्त्री०) सफेदी, उजलापन

धवला-(सं०स्त्री०) सफेद गाय, (वि०) उजली; **धवलाई**-(हिं०स्त्री०) उजलापन, सफेदी। **धवलित**-(सं०वि०) सफेद किया हुआ। **धवली**-(सं० स्त्री०) सफेद गाय, **धवलीभूत**-(सं० वि०) जो सफेद किया हुआ हो।

धवलोत्पल-(सं०नपुं०) कुमुद।

धलवाना-(हिं०क्रि०) दौड़ाना।

धस-((हिं०पुं०) गोता, डुबकी, **धसक**-(हिं०स्त्री०) सूखी खांसी, ईर्ष्या, डाह; **धसकना**-(हिं०क्रि०) नीचे को धसना, दबना, डाह करना।

धाँधल-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, ऊधम,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धोखा। धाँधलपन-उपद्रव, पाजीपन,
धाँधली-(हिं०वि०) उपद्रवी।
धाँय-(हिं०स्त्री०) देखो धांय।
धाँस-(हिं०स्त्री०) मिर्च, तमाखू आदि की तीव्र गन्ध जिससे खांसी आने लगती है।
धा-(सं०वि०) धारण करने वाला।
धाई-(हिं०स्त्री०) देखो धाय, धातु।
धाक-(हिं०पुं०) दबदबा, प्रसिद्धि।
धागा-(हिं०पुं०) बटा हुआ सूत, तागा, डोरा।
धाड़-(हिं०स्त्री०) डाकुओं का धावा, झुण्ड, जत्था, दहाड़।
धाड़स-(हिं०स्त्री०) देखो ढाढस।
धात-(हिं०स्त्री०) देखो धातु।
धाता-(सं०पुं०) विधाता, ब्रह्मा।
धातु-(सं०पुं०) परमात्मा, शरीर को धारण करनेवाला, द्रव्य, शब्द का वह रूप जिससे क्रिया बनती है, वे खान से निकलने वाले द्रव्य जो भारी हों, जो गलाये जा सकें, जिनमें गुरुत्व हो, जिनको पीटकर बढ़ाया जा सके तथा जिसका तार खींचा जा सके, यथा सोना चाँदी आदि।
धातृ-(सं०वि०) धारण करने वाला, पोषक (पुं०) ब्रह्मा, विष्णु, आत्मा, मेद।
धात्री-(सं०स्त्री०) माता, स्त्री, बच्चे का पालन पोषण करने वाली स्त्री, धाय।
धात्वर्थ-(सं०पुं०) किसी शब्द का धातु से निकलने वाला अर्थ।
धान-(हिं०पुं०) तृण जाति का एक पौधा जिसके बीजों का छिलका हटाने पर चावल होता है।
धानपान-(हिं०पुं०) विवाह के पहिले की एक रीति जिसमें वर पक्ष की ओर से कन्या के घर धान और हल्दी भेजी जाती है, (वि०) पतला।
धाना-(हिं०क्रि०) दौड़ना, भागना।
धानी-(सं०स्त्री०) आधार, वह जिसमें कोई वस्तु रक्खो जावे, स्थान, (हिं०स्त्री०) धान की पत्ती के समान रंग का।
धानुक-(हिं०पुं०) धनुर्धारी।
धान्य-(सं०पुं०) छिलका सहित चावल, धान, कोई भी अन्न, चार तिल का एक परिमाण, धनिया।
धान्यमण्ड-(सं०पुं०) धान की बनाई हुई मदिरा।
धाप-(हिं०पुं०) लंबा चौड़ा मैदान, दूरी की नाप जो एक या दो मील मानी जाती है, (स्त्री०) तृप्ति, संतोष;
धापना-(हिं० क्रि०) सन्तुष्ट होना, अघाना, दौड़ना, भागना।
धाभाई-(हिं०पुं०) देखो दूधभाई।
धाम-(सं०पुं०) घर, शरीर, शोभा, किरण, स्थान, जन्म, तेज, देवस्थान, अवस्था, स्थिति, गति, स्वर्ग।
धामा-(हिं०पुं०) भोजन का नेवता।
धाँय-(हिं०स्त्री०) तोप बंदूक आदि के छुटने का शब्द, गिरने का शब्द।
धाय-(हिं०स्त्री०) वह स्त्री जो दूसरे के पुत्र को दूध पिलाती है, तथा उसका पालन पोषण करती है।
धायना-(हिं०स्त्री०) दौड़ना, धूपना।
धार-(हिं०स्त्री०) निरन्तर जल का प्रवाह, पानी का सोता, किसी काटने वाले हथियार का पैना किनारा, आक्रमण, दिशा किनारा छोर।
धारक-(सं०वि०) धारण करने वाला, रोकने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धारण-(सं०नपुं०)ग्रहण, थामना, अपने ऊपर लेना, पहिरना, सेवा, रक्षा, स्थापन, ऋण ।
धारणा-(सं०स्त्री०) स्मरण शक्ति, पक्का विचार, स्मृति ।
धारणीय-(सं०वि०)धारण करनेयोग्य।
धारन-(हिं०पुं०)देखो धारण। **धारना**-(हिं०क्रि०) धारण करना, ऋण लेना
धारयित्री-(सं०स्त्री०) धारण करने वाली, पृथ्वी ।
धारा-(सं० स्त्री०) पानी आदि का बहाव, हथियार की धार, कीर्ति, यश, उन्नति, समूह, झुंड, अधिक वर्षा, पानी का झरना; **धारागृह**-(सं०नपुं०) वह घर जिसमें जलयन्त्र लगे हों । **धारांकुर**-(सं०पुं०) वर्षा की बूंद, **धाराङ्ग**-(सं०पुं०) खंग, तलवार, **धारायन्त्र**-(सं०पुं०) फुहारा । **धारावाही**-(सं०वि०) धारा रूप में (बिना रुकावट के) आगे को बढ़ने वाला । **धारासार**-(सं०नपुं०) जलकी की सतत वृष्टि ।
धारिणी-(सं०स्त्री०) धरणी, पृथ्वी, भूमि ।
धारी-(हिं०स्त्री०)सेना, समूह, झुंड, वाला, ऋण लेने वाला । **धारीदार**-(हिं०वि०) वह वस्त्र जिसमें लंबी लंबी रेखा व धारी हों ।
धारोष्ण-(सं०नपुं०) थन से निकला हुआ ताजा दूध जो कुछ गरम होता है ।
धार्मिक-(सं०वि०) धर्माचरण करने वाला, पुण्यात्मा, धर्मशील, धर्मात्मा; **धार्मिकता**-(सं०स्त्री०) धर्मशीलता ।
धार्य-(सं०वि०) धारण करने योग्य (पुं०) वस्त्र, कपड़ा ।
धावक-(सं०पुं०) हरकारा, धोबी ।
धावन-(सं०नपुं०)शीघ्रगमन, वेग से दौड़ कर जाना, धोने या स्वच्छ करने का काम ।
धावना-(हिं०क्रि०) दौड़ना, भागना।
धावरी-(हिं०स्त्री०) सफेद रंग की गाय
धावा-(हिं०पुं०) आक्रमण, चढ़ाई ।
धाह-(हिं०स्त्री०) चिल्ला कर रोना
धिग-(हिं०स्त्री०) उधम, उपद्रव । **धिंगा**-(हिं०वि०)उपद्रवी, निर्लज्ज। **धिंगाई**-(हिं०स्त्री०) उधम, उपद्रव, निर्लज्जता। **धिंगाधिंगी**-(हिं०स्त्री०) उपद्रव । **धिंगान**-(हिं०क्रि०) उधम मचाना, उपद्रव करना ।
धिआ-(हिं०स्त्री०) धिय, कन्या, बेटी ।
धिआन-(हिं०पुं०) देखो ध्यान ।
धिआना-(हिं०क्रि०) देखो ध्यावना ।
धिक्-(सं० अव्य०) घृणासूचक शब्द भर्त्सना, तिरस्कार, निन्दा ।
धिकना-(हिं०क्रि०) गरम होना ।
धिकाना-(हिं० क्रि०) आँच पर गरम करना ।
धिक्कार-(सं०पुं०)भर्त्सना, तिरस्कार, अनादर । **धिक्कारना**-(हि० क्रि०) तिरस्कार करना ।
धिग्-(हिं०अव्य०) देखो धिक् ।
धिया-(हिं०स्त्री०) कन्या, बेटी, लड़की।
धिरकार-(हिं०स्त्री०) देखो धिक्कार
धिरवना, धिराना-(हिं०क्रि०) डराना,
धिषणा-(सं०स्त्री०) बुद्धि, प्रशंसा ।
धींग-(हिं०पुं०) हृष्ट पुष्ट मनुष्य, (वि०) पापी, उपद्रवी ।
धींगा-(हिं०वि०) उपद्रवी, पाजी, **धींगाधींगी**-(हिं०स्त्री०) उपद्रव, बलप्रयोग । **धींगाड़ा**-(हिं०वि०) दुष्ट, हृष्ट, पुष्ट हट्टा कट्टा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धीवर-(हिं०पुं०) देखो धीवर, मल्लाह।
धी-(सं०स्त्री०) बुद्धि, ज्ञान, मन, कर्म (हिं०स्त्री०) लड़की, बेटी। धीगुण-(सं०पुं०) बुद्धि का गुण।
धीजना-(हिं०क्रि०) अंगीकार करना
धीति-(सं०स्त्री०) प्यास, अनादर, आराधना।
धींदा-(प्रा०स्त्री०) कन्या, कुमारी, बेटी; (सं०वि०) बुद्धिदायक
धीन्द्रिय-(सं०नपुं०) ज्ञानेन्द्रिय।
धीम्-(हिं०वि०) देखो धीमा।
धीमत्-(सं०वि०) बुद्धियुक्त,
धीमर-(हिं०पुं०) धीवर, मल्लाह।
धीमा-(हिं०वि०) जिसका वेग मन्दहो
धीमान-(सं०पुं०) बुद्धिमान।
धीय, धीया-(हिं०स्त्री०) दुहिता, लड़की
धीर-(सं०वि०) धैर्यचित्त, विनीत, नम्र, गंभीर, धीमा, मनोहर, सुन्दर,
धीरज-(हिं०पुं०) देखो धैर्य; धीरता-(सं०स्त्री०) चित्त की दृढ़ता, संतोष, धीरत्व-धीरता।
धीरे-(हिं०क्रि०वि०) मन्दगति से।
धीर्य-(हिं०वि०) कातर, डरपोक।
धीलटि-(हिं०स्त्री०) दुहिता, लड़की।
धीवर-(हिं०पुं०) मल्लाह, मछुआ।
धीवरि-(सं०स्त्री०) मल्लाहिन।
धीशक्ति-(हिं०स्त्री०) बुद्धि का गुण।
धीसचिव-(हिं०पुं०) बुद्धिमान मंत्री।
धु-(हिं०स्त्री०) कँपकँपी, धरथराहट।
धुंआ-(हिं०पुं०) धूम्र।
धुंकार-(हिं०स्त्री०) गड़गड़ाहट।
धुंगार-(हिं०स्त्री०) बघार, तड़का, छौंक।
धुंगारना-(हिं०क्रि०) बघारना, छौंकना
धुंद-(हिं०स्त्री०) देखो धुँध।
धुंदा-(हिं०वि०) अन्धा, नेत्रहीन।
धुंध--(हिं०स्त्री०) वायु में उड़ती हुई धूल, आँख का वह रोग जिसमें कोई वस्तु स्पष्ट नहीं दीख पड़ती।
धुंधका-(हिं०पुं०) धुआँ निकलने का छिद्र।
धुंधकार-(हिं०पुं०) अन्धकार, अंधेरा।
धुंधमार-(हिं०पुं०) देखो धुन्धुमार।
धुंधला-(हिं०वि०) धुवें के रंग का अस्पष्ट, थोड़ा अन्धेरा, धुंधलई-(हिं० स्त्री०) धुँधलापन; धुंधलाना-(हिं० क्रि०) धुधला पड़ जाना; धुंधलापन-(हि०पुं०) अस्पष्ट होने का भाव।
धुंधुकार-(हिं०पुं०) धुँधलापन।
धुंधुवाना-(हिं०क्रि०) धुआँ देना, धुवाँ देकर जलाना।
धूंधला-(हिं०पुं०) दुष्ट, छली।
धुआँ-(हिं०पुं०) धूम्र, बड़ा समूह, उमड़ती हुई वस्तु। धुआँकश-(हिं०पुं०) भाफ से चलने वाली नाव, धुआँदान-(हिं०पुं०) छत में धुआँ निकलने का छिद्र। धुआँधार-(हिं०वि०) घोर, प्रचण्ड, भड़कीला, गहरे रंग का (क्रि०वि०) बड़े वेग से। धुआँना-(हिं०क्रि०) अधिक धुयें में रहने के कारण स्वाद या गन्ध का बिगड़ जाना
धुआँएँध-(हिं०वि०) धुएँ के समान गन्ध का।
धुकड़पुकड़-(हिं०पुं०) व्यग्रता, घबड़ाहट।
धुकड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटी थैली या बटुआ।
धुकधुकी-(हिं०स्त्री०) छाती के बीच का गहरा स्थान, हृदय की धड़कन।
धुकाना-(हिं०वि०) झुकाना, पटकना, ढकेलना।
धुकार-(हिं०स्त्री०) नगाड़े का शब्द।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धुगधुगी-(हिं०स्त्री०) देखो धुकधुकी।
धुजिनी-(हिं०स्त्री०) सेना ।
धुड़ंगा, धुड़ंगी-(हिं०वि०) वस्त्रहीन।
धुतकार-(हिं०स्त्री०) देखो दुतकार ।
धुतकारना-(हिं० क्रि०) देखो दुतकारना ।
धुताई-(हिं०स्त्री०) धूर्तता ।
धुधुकार-(हिं०स्त्री०)कर्कश शब्द ।
धुन-(हिं०स्त्री०) किसी काम को निरन्तर विना सोचे समझे करने की प्रवृत्ति, मन की तरंग ।
धुनकना-(हिं०क्रि०) धुनना ।
धुनकी-(हिं०स्त्री०)धनुष के आकार का रुई धुनने का साधन ।
धुनना-(हिं०क्रि०)धुनकी से रुई स्वच्छ करना ।
धुनियाँ-(हिं०पुं०) रुई धुनने का काम करने वाला वहना ।
धुनी-(हिं०वि०) निरन्तर किसी काम में लगा रहने वाला ।
धुनैहा-(हिं०पुं०) देखो धुनिया, वहना।
धुपना-(हिं०क्रि०) धुलना, धोना ।
धुपाना-(हिं०क्रि०) धूप दिखाना ।
धुपेली-(हिं०स्त्री०) गरमी के दिनों में पसीने से निकलने वाली फुन्सी ।
धुमिलाना-(हिं०क्रि०) धुमिल करना।
धुमिला-(वि०) धुँधला । धुरंधर-देखो धुरन्धर ।
धुर-(सं०पुं०)गाड़ी या रथ का धुरा, प्रधान स्थान, धन, भूमि का एक नाम जो एक बिसवे के बराबर होती है, भाग, अंश, (वि०) दृढ़ ।
धुरना-(हिं०क्रि०) मारना पीटना ।
धुरन्धर-(सं०पुं०)बोझ ढोनेवाला मनुष्य या पशु; (वि०) भार ढोनेवाला, श्रेष्ठ या प्रधान ।
धुरा-(हिं०पुं०) वह लोहे का डंडा जिस पर गाड़ी आदि की पहिया घूमती है ।
धुरियाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को धूल से ढांपना ।
धुरी-(हिं०स्त्री०) छोटा धुरा ।
धुरीण-(सं०वि०)वोझले जाने वाला, मुख्य, प्रधान,
धुरेटना-(हिं०क्रि०) धूल लगाना,
धुर्रा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का वहुत छोटा भाग, कण ।
धुलना-(हि०क्रि०) धोया जाना ।
धुलवाना-(हिं०क्रि०) धोने का काम किसी दूसरे से कराना। (हिं०स्त्री०) धोने का काम या शुल्क ।
धुवाँरा-(हिं०पुं०) धुआँ निकलने का छिद्र । धुवाँस-(हिं०स्त्री०) उड़द का आटा ।
धुवाना-(हिं०क्रि०) देखो धुलाना ।
धुस्स-(हिं०पुं०) टीला बाँध ।
धुस्सा--(हिं०पुं०) मोटे ऊन की बनी हुई लोई ।
धू-(हिं०पुं०) ध्रुव तारा, धुरी ।
धुआँ-(हिं०पुं०) देखो धुआँ, धूम्र ।
धूआँधार-(हि०पुं०) देखो धुआँधार
धूत-(हिं०वि०) कम्पित, काँपता हुआ देखो धूर्त ।
धूतना-(हिं०क्रि०)ठगना, धोखा देना।
धूतपाप-(सं०पुं०)जिसका पाप दूर हो गया हो ।
धूतू-(हिं०पुं०) तुरही बाजा ।
धूधू-(हिं०पुं०) आग में दहकने का शब्द
धून-(सं०वि०) कम्पित, काँपता हुआ
धूनन-(सं०नपुं०) कम्प, थरथराहट ।
धूनना-(हिं०क्रि०) रुई के रेशे को अलगाना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धूनी-(हिं० स्त्री०) देवपूजन अथवा सुगन्ध के लिये कपूर, अगर, गुगुल, आदि सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर उठाया हुआ धुआँ, साधुओं के तापने की आग।

धूप-(सं०पुं०) मिश्रित गन्ध द्रव्यों का धुआँ, जो देवपूजन या सुगन्ध के लिये जलाई जाती है, सूर्य का प्रकाश घाम। **धूपघड़ी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का यन्त्र जिसमें सूर्य के प्रकाश से समय का ज्ञान होता है; **धूपछाँह**-जिसमें ताने और बाने का विभिन्न रंग होता है। **धूपदानी**-(हिं०स्त्री०) छोटा धुपदान। **धूपना**-(हिं०क्रि०) गन्ध द्रव्य जलाना, धूपदेना। **धूपबत्ती**-(हिं० स्त्री०) मसाला लपेटी हुई सींक या बत्ती जिसके जलाने से सुगन्धित धुआँ उठकर फैलता है।

धूपित-(सं०वि०) धूप दिया हुआ।

धूम-(सं०पुं०) धूम्र, धुआँ, **धूम**-(हिं०पुं०) आन्दोलन, उपद्रव, उत्पात, समारोह, प्रसिद्धि। **धूमकधैया**-(हिं०स्त्री०) उत्पात, उपद्रव। कूदफांद, हल्ला, **धूमकेतु**-(सं०पुं०) पुच्छलतारा। **धूमधड़क्का**-(हिं० पुं०) समारोह, भारी आयोजन। **धूमधाम**-(हिं० पुं०) समारोह, ठाटबाट। **धूमपान**-(सं० नपुं०) औषधियों का धुआँ जो नली द्वारा पान कराया जाता है, तमाखू, बीड़ी आदि पीने का काम। **धूमपोत**-(सं०पुं०) अग्निबोट, धुवाँकस।

धमल-(सं०पुं०) कृष्ण लोहित वर्ण, (वि०) धुवें के रंग का; **धूमला**-(हि०वि०) धुधला, मलिन

धूमिल-(हिं०वि०) धुँधला, धुएँ के रंग का।

धूम्र-(सं०पुं०) धुआँ, ललाई लिये काला रंग। **धूम्रलोहित**-(सं०पुं०) शिव, महादेव, कालापन लिये हुए लाल रंग

धूर-(हिं०स्त्री०) धूलि, धूल।

धूरत-(हिं०वि०) देखो धूर्त।

धूरदानी-(हिं०स्त्री०) धूर की ढेर।

धूरा-(हिं०पुं०) धूल, चूरा, चूर्ण, बुकनी

धूरे-(हिं०क्रि०वि०) पास में।

धूर्त-(सं०वि०) मायावी, वंचक, धोखा देनेवाला।

धूर्तता-(सं०स्त्री०) शठता, ठगपना।

धूल-(हिं०स्त्री०) मिट्टी रेत आदि का महीन कण, रेणु, रज।

धूला-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा।

धूलि-(सं०स्त्री०) मिट्टी रेत आदि का महीन चूर्ण।

धूली-(सं०स्त्री०) धूल।

धूवाँ-(हिं०पुं०) देखो धुवाँ।

धूसर-(सं०पुं०) मटमैला रंग; **धूसरा**-(हिं०वि०) धूल लगा हुआ, मटमैला

धूसला-(हिं०वि०) देखो धूसला।

धृत-(सं०वि०) धारण किया हुआ, निश्चित।

धृति-(सं०स्त्री०) धारण करने या पकड़ने की क्रिया, सन्तोष, तृप्ति

धृतिमत्-(सं०वि०) धैर्ययुक्त।

धृष्ट-(सं०वि०) निर्लज्ज, उद्धत, निर्दय।

धृष्टता-(सं०स्त्री०) ढिठाई, निर्लज्जता।

धृष्णु-(सं०वि०) प्रगल्भ, उद्यत, ढीठ।

धेन-(हिं०स्त्री०) देखो धेनु, गाय।

धेनु-(सं०स्त्री०) गाय, हाल की व्याई हुई गाय।

धैय-(सं०वि०) धारण करन योग्य।

धेलचा, धेला-(हिं०पुं०) आध पैसे के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूल्य का ताँबें का सिक्का ।
धेली-(हिं०स्त्री०) आधा रुपया, अठन्नी
धैर्य-(सं०नपुं०) चित्त की स्थिरता, धीरता । धैर्यच्युत-(सं०वि०)अस्थिर, धैर्यहीन, धैर्यशाली-(सं० वि०) धैर्ययुक्त, शान्त ।
धोंडाल-(हिं०वि०) जिसमें कंकड़, पत्थर के ढोंके हों ।
धोंधा-(हिं०पुं०)पिण्ड, लोंदा, भद्दा ।
धोई-(हिं०स्त्री०)उड़द या मूँग की छिलका निकाली हुई दाल ।
धोकड़-(हिं०वि०) हट्टा कट्टा ।
धोका-(हिं०पुं०) देखो धोखा ।
धोखा-(हिं०पुं०)छल, भुलावा, भ्रम, भ्रान्ति उत्पन्न करन वाली वस्तु ।
धोटा-(हिं०पुं०) देखो ढोटा ।
धोती-(हिं०स्त्री०) वस्त्र जिससे भारत-वासी हिंदू लोक कमर से लेकर पैर तक का शरीर का भाग ढांपते हैं तथा स्त्रियाँ सर्वांग ढांपने के लिये कमर से बाँध लेती हैं ।
धोना-(हिं०क्रि०)जलसे स्वच्छ करना, पखारना, हटाना, मिटाना ।
धोप-(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार ।
धोव-(हिं०पुं०) धोये जाने का काम, धोबिघटा-(हिं०पुं०) वह घाट जहाँ धोबी कपड़े धोते हैं । धोबिन-(हिं० स्त्री०) धोबी की स्त्री । धोबी-(हिं० पुं०) मैले कपड़ों को धोकर स्वच्छ करने वाला, रजक ।
धोम-(हिं०पुं०) धूम्र, धूम, धुआँ ।
धोर-(हिं०स्त्री०) निकटता, समीप्य ।
धोरी-(हिं०पुं०) भार उठाने वाला, बड़ा आदमी, सरदार ।
धोरे-(हिं०क्रि०वि०) पास में ।
धोवाना-(हिं०क्रि०) देखो धुलाना ।
धोवत-(हिं०पुं०) धोबी ।
धोवन-(हिं०पुं०) धोने या पखारने की क्रिया; धोवाना-(हिं०क्रि०) धुलने का काम किसी दूसरे से कराना ।
धौं-(हिं०अव्य०) "मालूम नहीं, न जाने अथवा; या अच्छा तो, भला, कि" अर्थों में यह शब्द प्रयोग किया जाता है ।
धौंक-(हिं०स्त्री०) आघात, ताप, हवा का वेग । धौंकना-(हिं०क्रि०) आग सुलगाने के लिये उसपर हवा के आघात पहुँचाना, दण्ड आदि लगाना, भार डालना या पहुँचाना । धौंकनी-(हिं०स्त्री०) आग फूकने की धातु या बाँस की सोनार की पोली नली, भाथी ; धौंका-(हिं०पुं०) वायु का झोंका, लू, तीव्र वायु; धौंकिया-(हिं०पुं०) आग फूकने वाला, भाथी चलानेवाला ।
धौंज, धौंजन-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट ।
धौंजना-(हिं०क्रि०)दौड़, धूप करना ।
धौंताल-(हिं०वि०) चतुर, साहसी, निपुण ।
धौंस-(हिं०क्रि०) घुड़की, धमकी, डाँट, डपट, कपट, धोखा; धौंसना-(हिं० क्रि०)दण्ड देना, धमकी देना, मारना, पीटना,डराना; धौंसपट्टी-(हिं०स्त्री०) धोखा, भुलावा ।
धौंसा-(हिं०पुं०) डंका, बड़ा नगाड़ा । धौंसिया-(हिं०पुं०) डाँट डपट से काम लेने वाला, नगाड़ा बजाने वाला ।
धौत-(सं०वि०) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ, नहाया हुआ ।
धौरा-(हिं०वि०) उजला ।
धौल-(हिं०वि०)थप्पड़, तमाचा,चाँटा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हिं०पुं०)उपद्रव, दंगा, मारपीट ।
धौहलर-(हिं०पुं०) देखो धोरहर ।
धौला-(हिं०वि०) धवल, उजला, सफेद, धौलाई-(हिं०स्त्री०) उजलापन,
ध्यात-(सं०वि०) ध्यान किया हुआ, विचार किया हुआ ।
ध्याता-(हिं०वि०)ध्यान करने वाला ।
ध्यान-(सं०नपुं०) चित्त की एकाग्रता, सोच, विचार, धारणा, स्मृति, बुद्धि, भावना, विचार, एक विषय में चित्त एकाग्र करना ।
ध्यानना-(हिं०क्रि०) विचार करना ।
ध्येय-(सं०वि०) जिसका ध्यान किया जावे, ध्यान करन योग्य, जो ध्यान का विषय हो ।
ध्रुव-(सं०वि०) दृढ़, निश्चित, स्थिर ।
ध्रुवता-(सं०स्त्री०) दृढ़ता, स्थिरता, निश्चय ।
ध्रुवतारा-(हिं०स्त्री०) मेरु के अग्र भाग में स्थित वह तारा जो सर्वदा ध्रुव में रहता है ।
ध्रुवदर्शक-(सं०पुं०)सप्तर्षि मण्डल ।
ध्रुवरेखा-(सं०स्त्री०) विषुवत रेखा
ध्वंस-(सं०पुं०) विनाश, क्षति, हानि,
ध्वंसक-(सं०वि०) नाश करने वाला ।
ध्वंसकला-(सं०स्त्री०) हत्या । ध्वंसन-(सं०पुं०) नाश करने की क्रिया ।
ध्वंसित-(सं०वि०) नाश किया हुआ
ध्वंसी-(सं०वि०) नाश करने वाला
ध्वज-(सं०पुं०) ध्वजा, चिह्न, गर्व, अभिमान, खाट, झंडा; ध्वजगृह-(सं०पुं०)वह घर जिसमें झंडा फहराया जाता है ।
ध्वजा-(सं०स्त्री०) पताका, झंडा ।
ध्वजारोपड़-(सं०नपुं०) देवालय तथा अट्टालिकाओं पर पताका फहराना ।
ध्वजी-(हिं०वि०) ध्वज युक्त, ध्वजा वाला ।
ध्वन-(सं०पुं०) शब्द । ध्वनन-(सं० नपुं०) अव्यक्त शब्द ।
ध्वनि-(सं०पुं०) मृदंगादि शब्द, नाद गूजन, लय, गूढार्थ आशय । ध्वनित-(सं०वि०) शब्द किया हुआ, प्रकट, किया हुआ । ध्वसनि-(सं०पुं०)मेघ, बादल ।
ध्वस्त-(सं०वि०) नष्ट भ्रष्ट ।
ध्वाङ्क्ष-(सं०पुं०)काक,कौवा, बगला
ध्वान-(सं०पुं०) शब्द ।
ध्वान्त-(सं०नपुं०) अन्धकार, अंधेरा

न

न-हिन्दी तथा संस्कृत व्यंजन वर्ण का बीसवाँ वर्ण तथा तवर्ग का पाचवाँ अक्षर इसका उच्चारण स्थान दन्त है ।
न-(सं०अव्य०) निषेध वाचक शब्द, मत, हीं, या नहीं, कि नहीं ।
नइहर-(हिं०पुं०) स्त्रियों की माता का घर, मायका ।
नई-(हिं०वि०) "नया" शब्द का स्त्री-लिङ्ग का रूप ।
नउ-(हिं०वि०) नव, नौ ।
नउआ-(हिं०पुं०) नापित, नाऊ ।
नउका-(हिं०पुं०) देखो, नौका, नाव ।
नउत-(हि०वि०) वह जो नीचे की ओर झुका हो ।
नउलि-(हिं०वि०) नवीन, नया ।
नउरंग-(हिं०स्त्री०) नारंगी ।
नउर-(हिं०पुं०) देखो नेवला, नेउर
नओढ़-(हिं०वि०) देखो नवोढ़ा ।
नंग-(हिं०पुं०)नंगापन; (वि०)नंगा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नंगधड़ंग-(हिं०वि०) जिसके शरीर पर एक भी वस्त्र न हो। **नंगपैरा**-(हिं० वि०) जिसके पैर में जूता न हो।
नंगर-(हिं०पुं०) देखो लंगर।
नंगा-(हिं०वि०) नग्न, वस्त्रहीन, बिना ढपने का, दुष्ट, निर्लज्ज। एक पर्वत; **नंगाझोरी-नंगा झोली**-(हिं०स्त्री०) किसी छिपाई हुई वस्तु का पता लगाने के लिये किसी मनुष्य के वस्त्र को उतरवा कर अथवा वस्त्र को भलीभांति हाथों से टटोल कर देखना। **नंगा लुच्चा, नंगा बुच्चा**-(हिं०वि०) अति दरिद्र, कंगाल,
नंगियाना-(हिं०क्रि०) नंगा करना।
नंदना-(हिं०स्त्री०) पुत्री, लड़की, बटी।
नंदोई-(हिं०पुं०) पति का बहनोई।
नंबरदार-(हिं०पुं०) गाँव का वह भू-स्वामी जो अपनी पट्टी के तथा हिस्से-दारों का कर आदि लेता हो तथा सरकारी कर जमा करता हो।
नंबरी-(हिं०वि०) जिस पर नंबर या संख्या लिखी हो। **नंबरीगज**-(हिं० पुं०) तीन फुट का गज, **नंबरी सेर**-(हिं०पुं०) अस्सी रुपये की तौल का लोहे का अंग्रेजी सेर,
नंस-(हिं०पुं०) ध्वंस, नाश।
न-(हिं०अव्य०) नहीं, **नइहर**-(हिं०पुं०) देखो नैहर। **नउ**-(हिं०वि०) नया, **नउका**-(हिं०स्त्री०) देखो नौका।
नककटा-(हिं०वि०) जिसकी नाक कटी हो निर्लज्ज; **नककटी**-(हिं०स्त्री०) नाक काटने की क्रिया, दुर्दशा। **नक-घिसनी**-(हिं०स्त्री०) अति दीनता। **नकचढ़ा**-(हिं०वि०) चिड़चिड़ा।
नकटा-(हिं०पुं०) वह जिसकी नाक कट गई हो,
नकना-(हिं०क्रि०) नाक में दम होना।
नकफूल-(हिं०पुं०) नाक में पहिरने का एक प्रकार का आभूषण,
नकबानी-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, दमा।
नकसा-(हिं०पुं०) मानचित्र।
नकसीर-(हिं०स्त्री०) आप से आप नाक से लहू बहना।
नकाना-(हिं०क्रि०) नाक में दम होना।
नकार-(सं०पुं०) "न" वर्ण स्वरूप।
नकारना-(हिं०क्रि०) अस्वीकार करना।
नकिंचन-(सं०वि०) दरिद्र, कंगाल।
नकियाना-(हिं०क्रि०) नाक से बोलना
नकुटी-(सं०पुं०) नासिका, नाक।
नकुल-(सं०पुं०) नेवला।
नकुली-(सं०स्त्री०) नेवली, नेवले की मादा।
नकुवा-(हिं०पुं०) नासिका, तराजू की डंडी में का छेद।
नकेल-(हिं०स्त्री०) ऊँट के नाक में बंधी हुई रस्सी।
नक्का-(हिं०पुं०) सुई का छेद, नाका, ताश के पत्ते में की एक्की, कौड़ी।
नक्कार-(हिं०पुं०) तिरस्कार, अपमान।
नक्की-(हिं०स्त्री०) ताश के पत्ते की एक्की।
नक्कू-(हिं०वि०) बड़ी नाक वाला, सबसे भिन्न आचरण वाला।
नक्त-(सं०पुं०) रात्रि।
नक्तचर-(सं०पुं०) रात को घूमनेवाला राक्षस, उल्लू; **नक्तचोरी**-बिल्ली, उल्लू, राक्षस।
नक्र-(सं०पुं०) मगर, घड़ियाल।
नक्षत्र-(सं०नपुं०) तारों का वह गुच्छा या समूह जो चन्द्रमा के पथ में घूमता है।
नक्षत्रपति-(सं०पुं०) चन्द्रमा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्रराज-(सं०पुं०) नक्षत्रों का अधिपति, चन्द्रमा। **नक्षत्रविद्या**-(सं०स्त्री०) ज्योतिष विद्या।
नक्षत्रवृष्टि-(सं०पुं०) उल्कापात, तारा टूटना।
नक्षत्री-(हिं०वि०) जो शुभ नक्षत्रों में उत्पन्न हुआ हो।
नख-(सं०नपुं०) अँगुली के अगले भाग की कोमलास्थि कररुह।
नखकर्तनि-(सं०स्त्री०) नाखून काटने की नहरनी।
नखक्षत-(सं०पुं०) नह गड़ाने से बना हुआ चिह्न।
नखत, नखतर-(हिं०पुं०) देखो नक्षत्र।
नखतेस-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।
नखतारण-(सं०नपुं०) नहरनी।
नखना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना। **नखशिख**-(हिं०पुं०) नख से लेकर शिखा तक सब अंग। **नखहरणी**-(हिं०पुं०) नहरनी।
नखानखि-(सं०अव्य०) परस्पर नखके आघात का युद्ध।
नखास-(अ०पुं०) वह बाजार जिसमें चौपाये और विशेष कर घोड़े बिकतेहैं।
नखियाना-(हिं०क्रि०) नह गड़ाना।
नखेद-(हिं०पुं०) निषेध।
नखोटना-(हिं०क्रि०) नख से नोंचना।
नग-(स०पुं०) पर्वत, पहाड़, पेड़, (वि०) स्थिर, अचल।
नगण्य-(सं०वि०) तुच्छ, घृणा करने योग्य।
नगन-(हिं०वि०) नग्न, नंगा, जिसके शरीर पर वस्त्र न हो। **नगना**-(हिं०स्त्री०) नग्ना, नगी।
नगपति-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत, शिव, मेरु पर्वत।
नगर-(सं०नपुं०) मनुष्यों के रहने की वह बस्ती जो गाँव और कस्बे से बड़ी हों जिसमें अनेक जातियाँ रहती हों।
नगरनायिका नगरनारी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी; **नगरपति**-(सं०पुं०) नगर का अध्यक्ष।
नगरपाल-(सं० पुं०) नगर रक्षक, चौकीदार।
नगरप्रान्त-(सं०पुं०) नगर के समीप का स्थान; **नगरवासी**-(सं०वि०) पुरवासी, नागरिक।
नगराई-(हिं० स्त्री०) नागरिकता, चतुराई।
नगराधिप-(सं०पुं०) नगर पालक।
नगाड़ा-(हिं०पुं०) देखो नागरा।
नगाधिप-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत,
नगारि-(सं०पुं०) इन्द्र।
नगाधिप-(हिं०पुं०) हिमालय पर्वत।
नगिचाना-(हिं०क्रि०) समीप आना।
नगी-(हिं०स्त्री०) रत्न, मणि, नगीना।
नगीच-(हिं०क्रि०वि०) पास।
नगेन्द्र, नगेश-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत
नग्न-(सं०वि०) विवस्त्र, नंगा।
नग्नता-(सं०स्त्री०) नंगापन।
नग्ना-(सं०स्त्री०) नंगी स्त्री।
नग्र-(हिं०पुं०) देखो नगर।
नघना-(हिं०क्रि०) लांघना, पार करना।
नघाना-(हिं०क्रि०) उल्लंघन करना।
नचना-(हिं०क्रि०) नाचना, इधर उधर घूमना। **नचनिया**-(हिं०वि०) नाचने वाला। **नचाना**-(हिं०क्रि०) नाचने का काम दूसरे से कराना, किसी वस्तु का इधर उधर घुमाना।
नचीला-(हिं०वि०) चंचल।
नचेत्-(सं०अव्य०)नहीं तो, ऐसा न हो कि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नचौंहाँ-(हिं०वि०) सर्वदा इधर उधर घूमने वाला।

नछत्र-(हिं०पुं०) देखो नक्षत्र।

नछत्री-(हिं० वि०) प्रभावशाली, भाग्यवान्।

नजराना-(हिं०क्रि०) बुरी दृष्टि का प्रभाव होना या लगाना (पुं०) भेंट, उपहार।

नजिकाना-(हिं०क्रि०) समीप पहुँचना,

नजीक-(हिं०क्रि०वि०) समीप, पास।

नट-(सं०पुं०) नर्तक, नाट्य करने वाला।

नटई-(हिं०स्त्री०) गला, गरदन।

नटखट-(हिं०वि०) उपद्रवी, चंचल,

नटखटी-(हिं०स्त्री०) उपद्रव।

नटता-(सं०स्त्री०) नटत्व, नट का भाव, नट का काम।

नटन-(सं०नपुं०) नृत्य, नाच।

नटना-(हिं०क्रि०) अस्वीकार करना, कहकर बदल जाना, नाचना, नष्ट करना; (हिं०पुं०) रस छानने की छलनी।

नटनि-(हिं०स्त्री०) नृत्य, नाच, अस्वीकार; **नटनी**-(हिं०स्त्री०) नट की स्त्री। **नटवना**-(हिं०क्रि०) अभिनय करना, नाटक दिखलाना। **नटवर**-(सं० पुं०) नाट्य कला म बहुत चतुर मनुष्य, (वि०) बहुत चतुर या चालाक।

नटसार-(हिं०स्त्री०) नाट्य शाला।

नटिन-(हिं०स्त्री०) नट की स्त्री।

नटी-(सं०स्त्री०) नट जाति की स्त्री, नाचने वाली स्त्री, अभिनय करने वाली स्त्री।

नठना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना या होना।

नढ़ना-(हिं०क्रि०) बाँधना, पिरोना, गूंथना।

नतम-(हिं०वि०) बाँका।

नतर, नतरु-(हिं०क्रि०वि०) अन्यथा, नहीं तो।

नतोश-(सं०पुं०) वह वृत्त जिसका केन्द्र भू केन्द्र पर रहता है और जो विषुवत् रेखा पर लम्ब होता है।

नति-(सं०स्त्री०) झुकान, नमन, नमस्कार, विनती।

नतिनी-(हिं०स्त्री०) लड़की की लड़की।

नतु-(सं०अव्य०) अन्यथा, नहीं हो।

नतैत-(हिं०पुं०) सम्बन्धी, नातेदार,

नत्थ-(हिं०स्त्री०) देखो नथ, नथिया।

नत्थी-(हिं०स्त्री०) कागज कपड़े आदि के टुकड़ों की एक साथ सिली हुई गड्डी, इस प्रकार नथे हुए पत्र।

नथ-(हिं०स्त्री०) बाली की तरह का एक आभूषण जिसको स्त्रियाँ नाक में पहिरती है, **नथना**-(हिं०पुं०) नाक का अग्रभाग, नाक का छेद।

नद-(सं०क्रि०) स्तुति करना, पूजा करना, (पुं०) बड़ी नदी।

नदना-(हिं०क्रि०) रंभाना।

नदर-(सं०वि०) भयशून्य, निडर।

नदराज-(सं०पुं०) समुद्र, सागर।

नदि-(सं०पुं०) स्तुति, प्रशंसा।

नदी-(सं०स्त्री०) किसी पर्वत या जलाशय से निकलकर बहने वाला जल का बड़ा प्राकृतिक प्रवाह जो वर्ष भर होता रहता है। **नदीपति**-(सं० पुं०) समुद्र

नन्दन-(सं०नपुं०) इन्द्र का बगीचा जो स्वर्ग में है, (पुं०) बेटा, लड़का, (वि०) आनन्द देने वाला;

नन्दरानी-(हिं०स्त्री०) नन्द की स्त्री, यशोदा, **नन्दलाल**-(हिं०पुं०) नन्द के पुत्र, श्रीकृष्ण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नन्दित-(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न। **नन्दिनी**-(सं०स्त्री०) गंगा, ननद, कन्या, पुत्री।

नन्योरा-(हिं०पुं०) ननिहाल, नाना का घर।

नन्हा-(हिं०वि०) छोटा; **नन्हाई**-(हिं० स्त्री०) छोटाई, अप्रतिष्ठा।

नपाई-(हिं०स्त्री०) नापने का काम या शुल्क।

नपुंसक-(सं०नपुं०) क्लीब, हिजडा; (वि०) कायर, डरपोक; **नपुंसकता**-(सं०स्त्री०) नपुंसक होने का भाव।

नपुआ-(हिं०पुं०) नापने की वस्तु।

नपुत्री-(हिं०वि०) देखो निपुत्री।

नप्ता-(हिं०स्त्री०) लड़की या लड़के का लड़का, नाती या पोता।

नप्त्री-(सं०स्त्री०) पांती, नातिन।

नबेड़ना-(हिं०क्रि०) झगड़ा तय करना, समाप्त करना।

नबेड़ा-(हिं०पुं०) न्याय, निपटारा,

नब्बे-(हिं०वि०) जो गिनती में अस्सी और दस के बराबर हो; (पुं०) यह संख्या ९०।

नभ-(सं०पुं०) आकाश, शून्य स्थान, **नभःकेतन, नभःपन्थ**-(सं० नपुं०) सूर्य; **नभःप्राण**-(सं० पुं०) पवन, **नभःसद**-(सं० पुं०) देवता, पक्षी, **नभग**-(सं०पुं०) पक्षी, पवन मेघ, (वि०) आकाश में विचरनेवाला, अभागा; **नभगामी**-(हिं०पुं०) सूर्य, तारा, देवता, चन्द्रमा, **नभश्चर**-(सं० वि०) गगनचारी।

नभस्थल-(हिं०पुं०) आकाश; **नभस्थित**-(हिं०वि०) नभःस्थित,

नभीत-(सं०वि०) भय रहित, निडर।

नभोमणि-(सं०पुं०) सूर्य; **नभोमण्डल**-(सं०नपुं०) गगनमण्डल।

नमन-(सं०नपुं०) प्रणाम, नमस्कार, झुकाव; **नमना**-(हिं०क्रि०) झुकना, नमस्कार करना; **नमनीय**-(सं०वि०) झुकने या झुकाने योग्य, नमस्कार, करने योग्य, आदरणीय।

नमस्कार-(सं०पुं०) प्रणाम, झुक कर अभिवादन करने की क्रिया। **नमस्ते**-(सं०) एक वाक्य जिसका अर्थ है—आपको नमस्कार।

नमित-(हिं०वि०) झुका हुआ।

नमाना-(हिं०क्रि०) झुकाना।

नमुचि-(सं०पुं०) कन्दर्प।

नम्य-(सं०वि०) झुकने योग्य।

नम्र-(सं०वि०) झुका हुआ, विनीत,

नम्रता-(सं०स्त्री०) विनय; **नम्रत्व**-(सं०नपुं०) नम्रता, **नम्रप्रकृति**-(सं० वि०) विनीत स्वभाव का।

नय-(सं०पुं०) नीति, न्याय, नम्रता,

नयकारी-(हिं०पुं०) नाचने वाला मनुष्य, नचनियाँ।

नयन-(सं०नपुं०) चक्षु, नेत्र, आँख। **नयनगोचर**-(सं०वि०) समक्ष, देख पड़ने वाला, जो आँख के सामने हो; **नयनपट**-(सं०पुं०) आँख की पलक, **नयनपक्ष**-(सं०पुं०) जितनी दूरी तक दृष्टि जा सके,। **नयनपुट**-(सं०पुं०) आँख की पलक।

नयनवारि, नयनसलिल-(सं०पुं०) नेत्रजल, आँसू।

नयना-(हिं०क्रि०) लटकना, झुकना, (पुं०), नयन, आँख; **नयनागर**-(सं०वि०) नीतिकुशल; **नयनाञ्जय**-(सं०नपुं०) काजल, सुरमा। **नयनाभिराम**-(सं०वि०) आँखोंको प्रिय लगने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नयनी-(सं०स्त्री०) आँख की पुतली,
नयनू-(हिं०पुं०) मक्खन, एक प्रकार की मलमल जिस पर सफेद बूटियों बनी होती हैं।
नयर-(हिं०पुं०) देखो नगर।
नयवर्त्म-(सं०नपुं०) नीति, मार्ग,
नया-(हिं०वि०) नूतन, नवीन; **नयापन**-(हिं०पुं०) नया होने का भाव, नवीनता।
नर-(सं०पुं०) परमात्मा, विष्णु, (हिं०पुं०) पानी का कल, नरकट।
नरकंत-(हिं०पुं०) राजा, नृप।
नरक-(सं०पुं०) हिन्दू धर्मशास्त्र तथा पुराणों के अनुसार वह स्थान जहाँ जाकर मनुष्य की आत्मा को अपने किये हुये पाप का फल भोगना पड़ता है, **नरककुण्ड**-(सं०नपुं०) पापियों के कष्ट भोगनेका एक स्थान;
नरकचतुर्दशी-(सं०स्त्री०) कार्तिक बदी चौदस; **नरकट**-(हिं०पुं०) बेंतकी तरह का एक पौधा; **नरकपाल**-(सं० नपुं०) मृतक की खोपड़ी।
नरकल, नरकस-(हिं०पुं०) देखो नरकट
नरकुल-(हिं०पुं०) देखो नरकट।
नरकेहरि-(हिं०पुं०) नरसिंह।
नरता-(स०स्त्री०) मनुष्यत्व।
नरतात-(सं०पुं०) नृपति, राजा।
नरत्व-(सं०नपुं०) मनुष्यत्व।
नरदान-(हिं०स्त्री०) नाद करना, गरजना
नरदारा-(हिं०पुं०) नपुंसक, हिजड़ा।
नरदेव-(सं०पुं०) नृपति, राजा, ब्राह्मण,
नरद्विष-(सं०पुं०) राक्षस, असुर।
नरनाथ, नरनायक-(सं०पुं०) नृपति, राजा।
नरनारायण-(सं०पुं०) नर और नारायण नामके दो ऋषि।
नरनाह-(हिं०पुं०) नृप, राजा।
नरनाहर-(हिं०पुं०) नृसिंह भगवान्
नरपति-(सं०पुं०) नृपति, राजा।
नरपद-(सं०पुं०) नगर, देश।
नरपशु,-(सं०पुं०) जिस मनुष्य का आचरण पशु के सदृश हो।
नरपाल-(सं०पुं०) राजा।
नरपिशाच-(सं०पुं०) अति दुष्ट, नीच मनुष्य।
नरपुङ्गव-(सं०पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ
नरपुर-(सं०पुं०) भूलोक, मनुष्य लोक
नरबलि-(सं०पुं०) देवता की वह पूजा जिसमें नर की हत्या की जाती है; नरमेध।
नरभक्षी-(सं०पुं०) दैत्य, दानव, राक्षस।
नरम-(हिं०वि०) कोमल, लचीला, मृदु। **नरमाई**-(हिं०स्त्री०) कोमलता, **नरमाना**-(हिं०क्रि०) कोमल करना, शान्त करना।
नरमेध-(सं०पुं०) देखो नरबलि।
नरयान-(सं०पुं०) मनुष्य से खींचे जाने वाली सवारी या गाड़ी।
नरराज-(सं०पुं०) नृश्रेष्ठ। **नररूप**-(सं०वि०) मनुष्य के समान आकृति का।
नरव्याघ्र-(सं०पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ,
नरसल-(हिं०पुं०) देखो नरकट।
नरसिंगा-(हिं०पुं०) देखो नरसिंघा।
नरसिंघ-(हिं०पुं०) देखो नरसिंह।
नरसिंघा-(हिं०पुं०) मुख से फूँक कर बजाने वाला एक बाजा।
नरसों-(हिं०क्रि०वि०) परसों से पहिले या बाद के दिन।
नरहर-(हिं०स्त्री०) पैर की पिड़ली के ऊपर की हड्डी।
नराच-(हिं०पुं०) नाराच, तीर, बाण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नराट-(हिं०पुं०) नृपति, राजा ।
नराधम-(सं०पुं०) नीच मनुष्य ।
नराधिप-(सं०पुं०) राजा ।
नारियर-(हिं०पुं०) देखो नारियल ।
नरिया-(हिं०पुं०) अर्धवृत्ताकार मिट्टी का खपड़ा । **नरियाना**-(हिं०क्रि०) चिल्लाना ।
नरेन्द्र-(सं०पुं०) नरेश, राजा ।
नरेश-(सं०पुं०) नरेन्द्र, राजा, नृप ।
नरोत्तम-(सं०पुं०) मनुष्यों में श्रेष्ठ ।
नर्क-(हिं०पुं०) देखो नरक ।
नर्कट-(हिं०पुं०) देखो नरकट ।
नर्त, नर्तक-(सं०पुं०) नट, नाचनेवाला बन्दी जन ।
नर्तन-(सं०नपुं०) नृत्य, नाच, **नर्तना**-(हिं०क्रि०) नाचना ।
नर्मद-(सं०वि०) आनन्द लेने वाला (पुं०) ठिठोलिया, भाँड़ ।
नर्मसचिव-(सं०पुं०) विदूषक, ।
नल-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, नरकट, (हिं०पुं०) कोई लंबी पोली वस्तु, धातुकी बनी हुई पोली वस्तु, परनाली, शरीर में की मूत्र निकालने की नाली
नलवा-(हिं०पुं०) गाय, बैल को दवा पिलाने की बांसकी ढरकी ।
नलाना-(हिं०स्त्री०) बोने के खेत में से निरर्थक घास आदि दूर करना, निराना
नलिका-(सं०स्त्री०) जल बहने की नाली, नली के आकार की कोई वस्तु, चोंगा, तीर रखने का तरकश, **नलिका यन्त्र**-नली आकार का जलोदर का पानी निकालने का एक प्राचीन यन्त्र ।
नलिन-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, पानी, नील ।
नलिनी-(सं०स्त्री०) कमलिनी ।
नलिनीरुह-(सं०नपुं०) कमल की नाल ।
नली-(हिं०स्त्री०) छोटी पतली नल, चोंगा, नल के आकार की हड्डी, बन्दूक की नली जिसमें से गोली छूटती है, पिंडली ।
नलुआ-(हिं०पुं०) बाँस की पोर, छोटी नली ।
नव-(सं०पुं०) स्तोत्र, (वि०) नवीन, नूतन, नया ।
नव-(हिं०वि०) दस से एक कम की संख्या का (पुं०) आठ और एक की संख्या ९ ।
नवका-(हिं०स्त्री०) देखो नौका ।
नवछात्र-(सं०नपुं०) नवीन विद्यार्थी ।
नवछावरि-(हिं०स्त्री०) देखो न्यौछावर।
नवत-(हिं०वि०) नवीन, नया । **नवता**-(हिं०पुं०) ठालुआँ भूमि, नयापन ।
नवता-(सं०स्त्री०) चित्रकार की रंग भरने की कूंची ।
नवदल-(सं०नपुं०) नया पत्ता ।
नवद्वीप-(सं०पुं०) बंगाल के नदिया नामक नगर का प्राचीन नाम ।
नवधा-(सं०अव्य०) नवगुणा, नवबार; **नवधाभक्ति**-(सं०स्त्री०) नव प्रकार की भक्ति यथाश्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वन्दन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन ।
नवन-(हिं०पुं०) देखो नमन ।
नवना-(हिं०क्रि०) झुकना, नम्र होना, **नवनि**-(हिं०स्त्री०) विनीत भाव, दीनता, नम्रता ।
नवनी, नवनीत-(सं०स्त्री०नपुं०) मक्खन
नवपदी-(सं०स्त्री०) चौपाई या जनकरी छन्द ।
नवम-(सं०वि०) जो गिनती में नव के स्थान में हो, नवाँ ।
नवमल्लिका-(सं०स्त्री०) चमेली या नेवारी का फूल ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवमी-(सं०स्त्री०) चान्द्रमास के किसी पक्ष की नवीं तिथि।
नवयुवक, नवयुवा-(सं०पुं०) तरुण, नवयुवक। **नवयौवन**-(सं०नपुं०) तरुण अवस्था।
नवरंग-(हिं०वि०) रूपवान्, सुन्दर, नये ढंग का। **नवरंगी**-(हिं०वि०) प्रति दिन नया आनन्द लेने वाला, (हिं०स्त्री०) देखो नारगी।
नवरत्न-(सं०नपुं०) नव प्रकार के रत्न।
नवरस-(सं०पुं०) शृङ्गार, शास्त्र के प्रधान नवरस।
नवरात्र-(सं०नपुं०) आश्विन शुक्ल प्रतिपद से लेकर वमी तक के नव दिन, चैत्र शुक्ल प्रतिपद से लेकर नवमी पर्यन्त नव दिन।
नवल-(सं०पुं०) नवीन, नया, सुन्दर।
नवलता-(हिं०स्त्री०) नयापन।
नववधू-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका विवाह हाल में हुआ हो।
नववर्ष-(सं०पुं०) नया वर्ष, नई वर्षा।
नववस्त्र-(सं०नपुं०) नया वस्त्र।
नवविधि-(सं०वि०) नव प्रकार का।
नवशस्य-(सं०नपुं०) नया अन्न।
नवशिक्षित-(सं०वि०) नवसिखुआ, आधुनिक रीति की शिक्षा प्राप्त किया हुआ।
नवसप्त-(सं०पुं०) नव और सात अर्थात् सोलह शृङ्गार।
नवसर-(हिं०पुं०) नव लड़ी का हार।
नवससि-(हिं०पुं०) द्वितीयाका चन्द्रमा।
नवसिखा-(हिं०पुं०) नव शिक्षित।
नवाँ-(हिं०वि०) आठवें के बाद तथा दसवें के पहिले का, नौवां।
नवाई-(हिं०स्त्री०) विनीत हीनेकाभाव
नवागत-(सं०वि०) नया आया हुआ।
नवाजना-(हिं०क्रि०) दया दिखलाना।
नवाना-(हिं० क्रि०) विनीत करना, झुकाना।
नवान्न-(सं०पुं०) नया अन्न।
नवासी-(हिं०वि०) अस्सी और नव की संख्या का; (पुं०) अस्सी और नव की संख्या ८९।
नवाह-(सं०पुं०) नव दिन।
नवि-(हिं०स्त्री०) गाय को दूहते समय बछड़े का गला बाँधने की रस्सी।
नवीन-(सं०वि०) नूतन, नया, विचित्र, तरुण।
नवीनता-(हिं०स्त्री०) नयापन।
नवेद-(हिं०स्त्री०) निमन्त्रण, न्योता,
नवेला-(हिं०वि०) नवीन, नया, तरुण।
नवोढा-(सं०स्त्री०) नव विवाहिता स्त्री।
नवोदक-(सं०नपुं०) नया पानी।
नवोद्धृत-(सं०वि०) तुरंत निकाला हुआ, (नपुं०) नवनीत, मक्खन।
नव्य-(सं०वि०) नूतन, नवीन, नया।
नशना-(हिं०क्रि०) नाश होना।
नशाना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना,
नशावन-(हिं०वि०) नष्ट करने वाला।
नशोहर-(हिं०वि०) नाश करने वाला।
नश्वर-(सं०वि०) नष्ट होने वाला; **नश्वरता**-(सं०स्त्री०) नाश।
नष्ट-(सं०वि०) जो देख न पड़े, अधम, नीच, पामर, निष्फल, व्यर्थ, जिसका नाश हो गया हो, **नष्टचित्त**-(सं०वि० उन्मत्त, मतवाला; **नष्टचेष्ट**-(सं०वि०) जिसमें हिलने डोलने की शक्ति न रह गई हो; **नष्टजन्मा**-(सं०नपुं०) वर्णसंकर, दोगला; **नष्टता**-(सं०स्त्री०) नाश, **नष्टदृष्टि**-(सं०वि०) दृष्टिहीन, अन्धा; **नष्टबुद्धि**-(सं०वि०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बुद्धिहीन, मूढ, मूर्ख; **नष्टभ्रष्ट**-(सं० वि०) जो बिलकुल नष्ट हो गया हो अथवा टूट फूट गया हो।

नष्टाग्नि-(सं०पुं०) वह अग्निहोत्री जिसकी अग्नि बुझ गई हो; **नष्टात्मा**-(सं०वि०) दुष्ट, खल; **नष्टार्थ**-(सं०वि०) निर्धन, दरिद्र।

नसंक-(हिं०वि०) निःशङ्क, निर्भय।

नस-(हिं०स्त्री०) शरीर के भीतर के तन्तुओं का वह लच्छा जो पेशियों के छोर पर रहता है और दूसरी पेशियों की अथवा हड्डी आदि को बाँधे रहता है, रक्तवाहिनी नली, पत्ते के बीच का जन्तु

नसकटा-(हिं०पुं०) नपुंसक, हिजड़ा।

नसना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना,

नसहा-(हिं०वि०) जिसमें नस हों।

नसाना, नसावना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना।

नसीठ-(हिं०पुं०) अपशकुन, असगुन।

नसीनी-(हिं०स्त्री०) निसेनी, सीढी।

नसीबा-(हिं०पुं०) भाग्य।

नसोला-(हिं०वि०) नसदार।

नसूढ़िया-(हिं०वि०) जिसके दर्शन मात्र से हानि या दोष हो।

नसेनी-(हिं०स्त्री०) सीढी।

नस्य-(सं०नपुं०) सुंघनी; **नस्यधानी**-(सं०स्त्री०) सुंघनी रखने की डिबिया।

नस्वर-(हिं०वि०) देखो नश्वर।

नहँ-(हिं०पुं०) नख।

नहन--(हिं०पुं०) पुरवट खींचने की मोटी रस्सी, नार।

नहना-(हिं०क्रि०) काम में लगाना।

नहरनी-(हिं०स्त्री०) नख काटने का यन्त्र।

नहला-(हिं०पुं०) ताश का वह पत्ता जिसमें नौ बूटियाँ रहती है।

नहलाई-(हिं०स्त्री०) नहलाने की क्रिया या भाव, नहलाने के बदले में दिया जाने वाला धन। **नहलाना, नहलवाना**-(हिं०क्रि०) स्नान कराना।

नहा-(हिं०पुं०) पहिये के बीच का छिद्र।

नहान-(हिं०पुं०) नहाने की क्रिया, स्नान का पर्व; **नहाना**-(हिं०क्रि०) स्नान करना।

नहिं-(सं०अव्य०) कभी नहीं। **नहीं**-(हिं०अव्य०) निषेध या अस्वीकृति सूचक अव्यय; **नहीं तो**-इस बातके न होने पर; **नहीं सहीं**-कुछ चिन्ता नहीं।

नाउँ-(हिं०पुं०) देखो नाम।

नाँगा-(हिं०वि०) देखो नंगा,

नाँघना-(हिं०क्रि०) उछल कर एक पार से दूसरे पार जाना।

नाँठना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना।

नाँद-(हिं०स्त्री०) चौड़ मुंह का मिट्टी का बड़ा पात्र।

नाँदना-(हिं०क्रि०) शब्द करना, आनन्दित होना।

नाँयँ-(हिं०पुं०) दखो नाम, (अव्य०) नहीं।

नाँवँ--(हिं०पुं०) देखो नाम।

नाह-(सं०पुं०) स्नाथ, स्वामी, मालिक

ना-(सं०अव्य०) अस्वीकृति या निषेध सूचक शब्द, न, नहीं।

नाइक-(हिं०पुं०) देखो नायक।

नाइन-(हिं०स्त्री०) नाई की स्त्री।

नाइँ-(हिं०स्त्री०) समान दशा या स्थिति (वि०) तुल्य, सदृश, समान।

नाई-(हिं०पुं०) नापित, नाऊ।

नाउँ-(हिं०पुं०) देखो नाम।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाउ-(हिं०पुं०) देखो नाव।
नाउन-(हिं०स्त्री०) देखो नाइन।
नाऊ-(हिं०पुं०) नाई, नापित।
नाक-(सं०पुं०) स्वर्ग, आकाश, किसी अस्त्र का एक आघात, (हिं०पुं०) नाक, नासिका, नाक से निकलने वाला मल, शोभा की वस्तु, मान, प्रतिष्ठा, मगर की जाति का एक जन्तु।
नाकचर-(सं०पुं०)आकाश में भ्रमण करने वाले ग्रह, देवता आदि।
नाकड़ा-(हिं०पुं०) नाक एक रोग जिसमें नाक के छिद्र के भीतर फोड़ा हो जाता है।
नाकना-(हिं०क्रि०) उल्लंघन करना।
नाका-(हिं०पुं०) प्रदेश, नगर अथवा गढ का फाटक, एक अस्त्र, सूई का छेद, वह प्रधान स्थान जहां निरीक्षण करनेके लिये अथवा कर लेने के लिये सिपाही नियुक्त रहते हैं।
नाकाबन्दी-(हिं०स्त्री०) जाने आने के मार्ग का छेंका जाना, चौकीदार, पहरेदार।
नाकेदार-(हिं०पुं०) फाटक पर रहने वाला सिपाही, (वि०) जिसमें नाका या छेद हों।
नाखना-(हिं०क्रि०)विगाड़ना, गिराना।
नाग-(सं०नपुं०)सीसा, सर्प, हाथी; **नागदन्त,नागदन्तक**-(सं०पुं०)हाथी-दाँत, भीत में लगाने की खूँटी; **नागधर**-(सं०पुं०) शिव, महादेव, **नागनग**-(हिं०)गजमुक्ता; (सं०पुं०)नागों का अधिपति, **नागपंचमी**-श्रावण शुक्ल पंचमी, **नागपत्र**-(सं०नपुं०) पान का पत्ता।
नागमती-(सं०स्त्री०) काली तुलसी।
नागयष्टि-(सं०स्त्री०) तालाब के बीचो बीच खड़ा किया हुआ खम्भा।
नागर-(सं०वि०) नगर सम्बन्धी, नगर में रहनेवाला, **नागरता**-(सं० स्त्री०)नगर की रीति और व्यवहार।
नागरबेल-(हिं०स्त्री०)ताम्बूल।
नागराज-(सं०पुं०)शेषनाग, ऐरावत।
नागरिक-(सं०वि०) नगर संबंधी, नगर निवासी, चतुर, सभ्य; **नागरिकता**-(सं०स्त्री०) नगर के अधिकारों से युक्त होने की अवस्था। **नागरी**-(सं०स्त्री०) स्त्री, भारतवर्ष की वह प्राचीन लिपि जिसमें संस्कृत तथा हिन्दी लिखी जाती है, देवनागरी।
नागलोक-(सं०पुं०) पाताल।
नागवल्लरी, नागवल्लिका-(सं०स्त्री०) पान की लता।
नागवारिक-(सं०नपुं०) हस्तिपालक, महावत।
नागा-(हिं०पुं०) शैव सम्प्रदाय के वे साधु जो वस्त्र धारण नहीं करते एक दम नंगे रहते हैं।
नागिन-(हिं०स्त्री०) मादा सर्प।
नागेन्द्र, नागेश्वर-(सं०पुं०) ऐरावत, शेषनाग, बड़ा हाथी, बड़ा सर्प।
नागोद-(सं०पुं०) छाती पर पहिरने का लोहे का कवच।
नाच-(हिं०पुं०) अंगों की वह गति जो चित्त के उमंग के कारण उत्पन्न हो, नाट्य, खेल, क्रीड़ा, कामधंधा; **नाचकूद**-(हिं०स्त्री०) प्रयत्न, आयोजन; **नाचघर**-(हिं०पुं०) नृत्यशाला, **नाचना**-(हिं०क्रि०) कूदना तथा अंगों में तरह तरह की आकृति बनाना; चक्कर मारना, इधर उधर घूमना, स्थिर न रहना, काँपना, थर्राना; **नाचरंग**-(हिं०पुं०) आमोद प्रमोद।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाचार-(हिं०वि०) असहाय, व्यर्थ, तुच्छ।

नाज-(हिं०पुं०) अन्न, अनाज।

नाट-(सं०पुं०) नृत्य, नाच,

नाटक-(सं०वि०) नर्तक, नट, नाट्य पर अभिनय करने वाला, (नपुं०) रंगशाला में नटों के हाव भाव वेश वचन आदि द्वारा घटनाओं का प्रदर्शन। **नाटकीय**-(सं०वि०) नाटकी सम्बन्धी।

नाटना-(हिं०क्रि०) अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ न रहना।

नाटा-(सं०वि०) छोटे डील डौल का, (पुं०) छोटा बैल।

नाटित-(सं०वि०) जिसका अभिनय हुआ हो।

नाट्यकार-(सं०पु०)नाटक करने वाला नट; **नाट्यशाला**-(सं०स्त्री०) नाटक घर।

नाठ-(हिं०पुं०) नाश, ध्वंस, हानि;

नाठना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना या होना; **नाठा**-(हिं०पुं०) वह जिसका कोई उत्तराधिकारी न हो।

नाड़-(हिं०स्त्री०) ग्रीवा, गरदन।

नाड़ा-(हिं०पुं०) सूत की मोटी डोरी जिससे स्त्रियां घाघरा या धोती बाँधती हैं, नीवी, बिना बटा हुआ (कच्चा) सूत।

नाड़ि-(सं०स्त्री०) दखो नाड़ी।

नाड़िया-(हिं०पुं०) चिकित्सक,वैद्य।

नाड़ी-(सं०स्त्री०) देहस्थित शिरा, शक्तिवाहिनी नालियां,

नाड़ीमण्डल-(सं०पुं०) विषुवद् रेखा

नात-(हिं०पुं०) नातेदर, सम्बन्धी, सम्बन्ध, नाता।

नातरु-(हिं०अव्य०)अन्यथा, नहीं तो।

नाता-(हिं०पुं०)ज्ञाति सम्बन्ध, कुटुम्ब की घनिष्ठता, सम्बन्ध, लगाव।

नातिदीर्घ-(सं०वि०) जो अधिक लंबा न हो।

नातिन-(हिं०स्त्री०) लड़की की लड़की।

नात्युष्ण-(सं०वि०) गुनगुना।

नाती-(हिं०पुं०) बेटी का बेटा।

नाते-(हिं०क्रि०वि०) सम्बन्धसे, वास्ते लिये; **नातेदार**-(हिं०वि०) संबंधी।

नाथ-(सं०पुं०) अधिपति, प्रभु, स्वामी पति, भैंसे, आदि की नाक छेदकर उसमें बंधी हुई रस्सी, (स्त्री०) लड़ी के रूप में जोड़ने की क्रिया, नत्थी; **नाथत्व**-(सं०नपुं०) प्रभुता, प्रभुत्व।

नाथना-(हिं०क्रि०) बैल, भैंसे आदि की नाक छदकर उसमें रस्सी डालना, नकेल लगाना, नत्थी करना।

नाद-(सं०पुं०) शब्द, अनुस्वार के समान उच्चारित होन वाला वर्ण, अर्धचन्द्र,; **नादना**-(हिं०क्रि०) शब्द करना, बजना, चिल्लाना, गरजना,

नादविद्या-(सं०स्त्री०) संगीत शास्त्र।

नादित-(सं०वि०) बजता हुआ।

नादी-(हिं०वि०) शब्द करने वाला, बजने वाला।

नाधना-(हिं०स्त्री०) बैल या घोड़े को जोतना, जोड़ना, सम्बन्ध करना, गूँथना, आरम्भ करना।

नानकीन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मटमैले रंग क सूती कपड़ा।

नानस-(हिं०स्त्री०) सास की माता।

नानसारा-(हिं०पुं०) पति या स्त्री का नानी।

नाना-(सं०अव्य०) अनेक प्रकार के, बहुत तरह के, अनेक, बहुत।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माना-(हिं०पुं०) माता का पिता, मातामह, माँ का बाप।

नानाप्रकार-(सं०वि०) बहुविध, अनेक प्रकार से; **नानारूप**-(सं० नपुं०) विविध प्रकार की आकृति; **नानार्थ**-(सं०वि०) वह शब्द जिसके एक से अधिक अर्थ हो; **नानावर्ण**-(सं०वि०) जिसमें कई एक रंग हों; **नानाविध**-(सं०वि०) अनेक प्रकार या तरहसे।

नानाशब्द संग्रह-(सं०पुं०)अनेक शब्दों का संग्रह, शब्द कोष।

नानहाल-(हिं०पुं०) नाना नानी के रहने का घर। **नानी**-(हिं०स्त्री०) माता की माता, मातामही।

नानुकर-(हिं०पुं०) अस्वीकार, नहीं।

नान्दी-(सं०स्त्री०) नाटक का मंगलाचरण।

नान्ह-(हिं०वि०) छोटा महीन, पतला

नान्हा-(हिं०वि०) नन्हा, छोटा।

नाप-(हिं०स्त्री०) परिमाण, माप, किसी निर्दिष्ट लम्बाई को एक मानकर यह स्थिर करना कि अमुक वस्तु का विस्तार कितना है, मानदण्ड। **नाप जोख**-(हिं०स्त्री०) नापने या तौलने की क्रिया, परिमाण या तौल जो नाप कर तौल कर स्थिरकी जावे। **नाप तौल**-(हिं० स्त्री०) नाप जोख। **नापना**-(हिं०क्रि०) अनुमान करना, पता लगाना, मापना;

नापित-(सं०पुं०) नाई, नाऊ,

नाभ-(हिं०स्त्री०) नाभि, ढोंढ़ी।

नाभि-(सं०पुं०) पहिये का बिचला भाग, (स्त्री०) ढोंढ़ी, धुन्नी, तुण्डी; **नाभिच्छेदन**-(सं०पुं०)नवजात शिशु की नाल काटने की क्रिया,

नाभी-(सं०स्त्री०) देखो नाभि।

नाम-(सं०अव्य०) संभावना, क्रोध, विस्मय, स्मरण विकल्प आदि अर्थ में प्रयोग होता है विभक्ति हीन शब्द; (हिं०पुं०) वह शब्द जिससे किसी व्यक्ति, वस्तु या समूह का बोध हो; संज्ञा, प्रसिद्धि।

नामक-(सं०वि०) नाम से प्रसिद्ध, नाम धारण करने वाला।

नामकरण-(सं०नपुं०) एक संस्कार जिसमें बालक का नाम रक्खा जाता है, नाम रखने का काम। **नामकीर्तन**-(सं०पुं०) भगवत् का भजन; **नामग्राम**-(सं०पुं०) नाम और पता; **नामधराई**-(हिं० स्त्री०) अपकीर्ति, निन्दा, **नामधाम**-(हिं०पुं०) पता ठिकाना; । **नामधारी**-(हिं०वि०) नाम वाला, नामक; **नामधेय**-(सं० नपुं०) नाम का, नाम वाला।

नामरूप-(सं०पुं०) जिसका केवल नाम मात्र अस्तित्व ज्ञात हो।

नामलेवा-(हिं० पुं०) उत्तराधिकारी, सन्तति।

नामशेष-(सं०वि०) जिसका केवल नाममात्र बच गया हो।

नामा-(हिं०वि०)नामधारी, नामवाला।

नामावली-(सं०स्त्री०)नामोंकी सूची।

नामक-(सं०वि०) नाम सम्बन्धी।

नामित-(सं०वि०) झुकाया हुआ।

नामी-(हिं०वि०)नामवाला, नामधारी

नायँ-(हिं०पुं०) देखो नाम, (अव्य०) नहीं।

नाय-(सं०पुं०) नय, नीति, युक्ति, **नायक**-(सं०पुं०) नेता, अगुवा, श्रेष्ठ पुरुष, सुमिरनी, सेनापति, वह प्रधान पुरुष जिसका चरित्र किसी नाटक या काव्य में वर्णन किया जावे; **नायका**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हिं०स्त्री०) वेश्या की माँ, कुटनी, दूती।
नायन-(हिं०स्त्री०) नापित की स्त्री।
नायर-(हिं०पुं०) बड़ी नाव।
नायका-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके चरित्र का वर्णन किसी काव्य या नाटक में किया गया हो।
नार-(हिं०स्त्री०) गरदन, गला, नाला, मोटा रस्सा।
नारकी-(सं०वि०) नरक भोगी, पातकी।
नारङ्गी-(हिं०स्त्री०) नीबू की जाति का एक वृक्ष जिसमें मीठे रसदार सुगन्धित फल लगते हैं, नारङ्गी के छिलके समान पीलापन लिये हुए लाल रंग, (वि०) ऐसे रंग का।
नारना-(हिं०क्रि०) थाह लेना, पता लगाना।
नारा-(हिं०पुं०) सूत की डोरी जिससे स्त्रियां घाघरा बांधती हैं, नीवी, बरसाती पानी बहने की नाली, लाल या पीला रंगा हुआ सूत जो देवताओं को चढ़ाया जाता है, मौली।
नाराच-(सं०पुं०) लोहे का बना हुआ बाण दुर्दिन।
नारायण-(सं०पुं०) परमात्मा, विष्णु।
नारायणी-(सं०स्त्री०) दुर्गा, लक्ष्मी, गंगा, सतावर,
नारि-(हिं० स्त्री०) देखो नारी।
नारीकेर, नारीकेल-(सं०पुं०) नारियल।
नारियल-(हिं०पुं०) खजूर की जाति का एक वृक्ष जो खम्भे की तरह पचास साठ गज ऊंचा होता है, नारियल के फल का बना हुआ हुक्का।
नारीयली-(हि०स्त्री०) नारियल की खोपड़ी।
नारी-(सं०स्त्री०) अबला, वामा, स्त्री, देखो नाड़ी, नाली।
नारीयान-(संन०पुं०) स्त्रियोंकी सवारी
नारू-(हिं०पुं०) जूँ, ढील।
नाल-(सं०पुं०) कमल दण्ड, (नपुं०) (पुं०) गर्भस्थ बालक की नाभि से मिली हुई मज्जातन्तु की बनी हुई रक्त की नली।
नालकी-(हिं०स्त्री०) धन्वाकार छाजन की दोनों ओर से खुली हुई पालकी।
नाला-(हिं०पुं०) वर्षा का जल बहने की चौड़ी नाली।
नाली-(सं०स्त्री०) नाड़ी, धमनी, (हिं०स्त्री०) मोरी, पनाला, चौपायों को दवा पिलाने का ढरका।
नालौट-(हिं०वि०) अपनी प्रतिज्ञा भंग करने वाला।
नावँ-(हिं०पुं०) देखो नाम।
नाव-(हिं०स्त्री०) जल के ऊपर तैरने वाली लोहे लकड़ी आदि की बनी हुई सवारी, जलयान।
नावक-(हिं०पुं०) मल्लाह, माँझी, केवट।
नावघाट-(हिं०पुं०) नावों के ठहरने का घाट।
नावना-(हिं०क्रि०) झुकना, नवाना, झुकाना, गिराना, डालना।
नावर-(हि०पुं०) नाव, नौका।
नाविक-(सं०पुं०) कर्णधार, मांझी।
नाश-(सं०पुं०) ध्वंस, अदर्शन, पलायन;
नाशक-(सं०वि०) ध्वंसक, नाश करने वाला, वध करने वाला,
नाशपाती-(सं०स्त्री०) एक मझोले आकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ अमरूद की पत्ती के समान होती हैं इसका गोल फल कुरकुरा और खटमीठा होता है।
नाशवान-(सं०वि०) नश्वर, अनित्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाशीत-(सं०वि०) नाश किया हुआ। **नाशी**-(सं०वि०) नाश होने वाला, नष्ट होने वाला।
नास-(हिं०स्त्री०) सुंघनी।
नासदान-(हिं० पुं०) सुंघनी रखने की डिबिया।
नासना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना।
नासा-(सं० स्त्री०) नासिका, नाक, नथना; **नासाग्र**-(सं०नपुं०)नाकका अगला भाग।
नासाविवर-(सं०नपुं०)नाक का छेद।
नासिका-(सं०स्त्री०)घ्राणेन्द्रिय, नाक, नासा; **नासिकाग्र**-(सं०नपुं०) नाक का अगला भाग; **नासिकामल**-(सं० नपुं०) नाक का मल,नेटा; **नासिका-शब्द**-(सं०पुं०) नाक से निकलने वाला शब्द।
नास्ति-(सं०अव्य०)अविद्यमानता,नहीं; **नास्तिक**-(सं०पुं०) वह जोईश्वर का अस्तित्व नहीं मानता।
नाह-(हिं०पुं०) नाथ।
नाहनूह-(हिं०स्त्री०) अस्वीकार, नहीं नहीं का शब्द।
नाहर-(हिं०पुं०)सिंह, शेर, व्याघ्र।
नाहरू-(हिं०पुं०)नहरूवा नामक रोग।
नाहिनै-(हिं०अव्य०) नहीं है।
नाहीं-(हिं०अव्य०) नहीं।
नि-(सं०अव्य०)एक उपसर्ग जिसके शब्द में लगने से "निषेध, संशय, समीप, बन्धन, अन्तर्भाव, समूह, अधोभाव आदि" अर्थ होते हैं;
निअर, निअरे-(हिं०क्रि०वि०) निकट, पास में।
निअराना-(हिंक्रि०) निकट जाना।
निआउ-(हिं०पुं०) देखो न्याय।
निआन-(हिं०पुं०)अन्त,(अव्य०)अन्तमें
निकंटक-(हिं०वि०)देखो निष्कण्टक।
निकंदन-(हिं०पुं०)नाश, ध्वंस।
निकंदना-(हिं०क्रि०) नाश करना।
निंद-(हिं०वि०) नेखो निन्द्य; **निंदना**-(हिं०क्रि०) निन्दा करना, **निंदरना**-(हिं०क्रि०)निन्दा करना।
निंदरिया-(हिं०स्त्री०) निद्रा, नींद।
निंदासा-(हिं०वि०) जिसको नींद आती हो; **निंदिया**-(हिं०स्त्री०)निद्रा,नींद।
निः-(सं०अव्य०)"विहीन" अर्थ का एक उपसर्ग। **निःकपट**-(हिं०वि०) देखो निष्कपट; **निःकाम**-(हिं०वि०) देखो निष्काम।
निःशैष-(सं०वि०) सम्पूर्ण,समूचा।
निःश्रेणि, निःश्रेणी-(सं०स्त्री०) काठ की सीढ़ी, खजूर का वृक्ष;, **निःश्वास**-(सं०पुं०) प्राण वायु का नाक या मुख से निकलना, नाक से निकली हुई वायु।
निःसंकोच-(सं०क्रि०वि०)बिना संकोच के, बेधड़क; **निःसंशय**-(सं०वि०) जिसमें सन्देह न हो; **निःसन्देह**-(सं०वि०) जिसमें सन्देह न हो, (क्रि०वि०)बिना सदेह के; **निःसत्व**-(सं०वि०) जिसमें तत्व या सार न हो; **निःसन्तान**-(सं०वि०) जिसके संतान न हो; **निःसंशय**(सं०वि०) बिना सन्देहका; **निःसारित**-(सं०वि० बाहर निकाला हुआ। **निःस्नेह**-रस-हीन, प्रेमरहित, जिसमें चिकनाहट न हो; **निःस्पन्द**-(सं०वि०) निश्चल,-**निःस्पृह**-(सं०वि०) आशाशून्य, इच्छा रहित; **निःस्वार्थ**-(सं०वि०)जो वह अपना अर्थ न साधता हो।
निकट-(सं०वि०)समीपका, पासीका, (क्रि०वि०) पास, सन्निकट;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निकटता-(सं०स्त्री०) समीपता; **निकटवर्ती**-(सं०वि०) निकट का, समीप का; **निकटस्थ**-(सं०वि०) पास का, समीप का।

निकटागत-(सं०वि०) जो पास में आ गयाहो।

निकन्दन-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश।

निकम्मा-(हिं०वि०)जो कोई व्यवसाय न करता हो।

निकर-(सं०पुं०)समूह, झुंड, राशि।

निकरना-(हिं०क्रि०) निकलना।

निकर्मा-(हिं०वि०) जो काम धंधा न करता हो, आलसी।

निकलंक-(हिं०वि०) निर्दोष।

निकलना-(हिं०क्रि०) भीतर से बाहर आना, पार जाना, व्यतीत होना, प्रकाशित होना, हिसाब करने पर कुछ धन बाकी देने का होना, प्राप्त होना, अलग होना, अलग हो जाना, शरीर पर उत्पन्न होना, छूटना, उत्तीर्ण होना, खलना, उदय होना, निश्चित होना, देख पड़ना, किसी प्रश्न का ठीक उत्तर प्राप्त होना, प्रचलित होना कहकर अस्वीकार करना, खपना।

निकलवाना-(हिं०क्रि०) निकलने का काम दूसरे से कराना।

निकष-(सं०पुं०)कसौटी; सान चढ़ाने का पत्थर।

निकस-(सं०पुं०) निकष, कसौटी।

निकसना-(हिं०क्रि०) देखो निकलना।

निकाई-(हिं०पुं०) देखो निकाय।

निकाज-(हिं०वि०) निकम्मा, बेकाम,

निकाम-(हिं०वि०) निकम्मा, बुरा, (क्रि०वि०) व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

निकाय-(सं०पुं०) समूह, झुंड, ढेर।

निकार-(हिं०पुं०) निकलाने का काम निकास।

निकाल-(हिं०पुं०) निकास; **निकालना** (हिं०क्रि०) भीतर से बाहर करना, उपस्थित करना, ठहराना, प्रगट करना, खोलना, घटाना, आविष्कार करना, घोड़े बैल आदि को गाड़ी में चलने की शिक्षा देना, पता लगाना, प्रकाशित करना, फैलाना, संकट से छुटकारा देना, बेंचना, खपना, नौकरी से छुड़ाना; **निकाला**-(हिं०पुं०) निकालने का काम, बहिष्कार, किसी स्थान से निकाले जाने का दण्ड।

निकास-(हिं०पुं०) क्रम, द्वार, आय, वह स्थान जिसमें से होकर कोई वस्तु निकले, मूलस्थान संकट, छुटकारे का उपाय, आय का ढंग; **निकासना** (हिं०क्रि०) देखो निकालना; **निकासी**-(हिं०स्त्री०) बिक्री, खपत, चुंगी, भरती लदाई, प्राप्ति, आय।

निकियाना-(हिं०क्रि०) नोच कर धज्जी धज्जी अलग करना।

निकिल्विष-(सं०नपुं०)पापका अभाव।

निकिष्ट-(हिं०वि०) देखो निकृष्ट।

निकुञ्ज-(सं०पुं०) लतागृह, वृक्षों, अथवा लताओंसे घिरा हुआ मण्डप।

निकृति-(सं०स्त्री०)तिरस्कार, अपकार। शठता, नीचता।

निकृन्तन-(सं० वि०) काटने वाला, (नपुं०) छेदन, खण्डन।

निकृष्ट-(सं०वि०) अधम,नीच, तुच्छ; **निकृष्टता**-(सं०स्त्री०) अधमता, नीचता।

निकेतन-(सं०नपुं०) गृह, घर।

निकोसना-(हिं०क्रि०) दाँत पीसना;

निकौनी-(हिं०स्त्री०) निराई का काम या शुल्क।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निक्का-(हिं०वि०) छोटा, नन्हा।
निक्षिप्त-(सं०वि०) त्यक्त, छोड़ा हुआ, रक्खा हुआ (धरोहर)
निक्षेप-(सं०पुं०) फेंकनेकी क्रिया या भाव, धरोहर, थाती, **निक्षेपक**-(सं०पुं०) फेंकने वाला। **निक्षेपण**-(सं०नपुं०) त्यागना, छोड़ना; **निक्षेपी**-(हिं०वि०) फेंकने वाला, छोड़ने वाला, धरोहर रखने वाला;
निखट्टर-(हि० वि०) निष्ठुर, निर्दय।
निखट्टू-(हिं०वि०) जो कोई काम काज न करता हो, आलसी, निकम्मा।
निखनन-(सं०नपुं०) खनना, खोदना।
निखरना-(हिं०क्रि०) स्वच्छ होना, निर्मल होना। **निखरवाना**-(हिं०क्रि०) धुलवाना।
निखरी-(हि०स्त्री०) घीमें पकाया हुआ भोजन द्रव्य।
निखर्व-(सं०पुं०) वामन, बौना।
निखार-(हिं०पुं०) निर्मलता, स्वच्छता।
निखिल-(सं०वि०) समग्र, सम्पूर्ण, सब।
निखुटना-(हिं०क्रि०) घटना, समाप्त होना।
निखेध-(हिं०वि०) देखो निषेध; **निखेधना**-(हिं०क्रि०) मना करना।
निखोट-(हिं०वि०) निर्दोष, स्पष्ट, स्वच्छ, (क्रि०वि०) बिना संकोच के
निखोड़ा (हिं०वि०) कठोर हृदय, निर्दय।
निखोड़ना-(हिं०क्रि०) नख से नोचना
निगंध-(हिं०वि०) देखो निर्गन्ध, गन्धहीन
निगड़-(सं०नपुं०) हाथी के पैर में बाँधने की लोहे की सिकड़ी, आँदू
निगड़न-(सं० नपुं०) सिकड़ी से बाँधने का काम। **निगड़ित**-(सं०वि०) सिकड़ी से बँधा हुआ।
निगद-(सं०पुं०) भाषण, कथन।
निगदित-(सं०वि०) भाषित, कहा हुआ;
निगम-(सं०पुं०) वाणिज्य, व्यापार;
निगमागम-(सं०पुं०) वेदशास्त्र।
निगर-(सं०पुं०) भोजन; **निगर**-(हिं० वि०) सब।
निगरण-(सं०नपुं०) भोजन, भक्षण।
निग्रही-(हिं०वि०) रोकने वाला, दबाने वाला, दण्ड देने वाला; **निग्रहीतव्य**-(सं०वि०) जो दण्ड देने योग्य हो।
निघण्ट-(सं०पुं०) निघण्टु, सूचीपत्र।
निघण्टु-(सं०पुं०) वैदिक शब्दों की सूची।
निघरघट-(हिं०वि०) जिसको कहीं रहने का ठिकाना न हो, निर्लज्ज।
निघरा-(हिं०वि०) जिसके घरबार न हो
निघ्न-(सं०वि०) घायल, निर्भर (गणित में) गुणा किया हुआ।
निचय-(सं०पुं०) समूह, निश्चय, संचय।
निचल-(हिं०वि०) देखो निश्चल।
निचला-(हिं०वि०) नीचे का, नीचे वाला। **निचाई**-(हिं०स्त्री०) नीचापन, नीचा।
निचुड़ना-(हिं०क्रि०) टपकना या चूना, रसहीन होना।
निचै-(हिं०पुं०) देखो निचय।
निचोड़-(हिं०पुं०) सार वस्तु, सत्व, तात्पर्य, सारांश। **निचोड़ना**-(हिं०क्रि०) निकालना, गारना, सार भाग अलग करना, सर्वस्व हरण करना, **निचोना**-(हिं०क्रि०) देखो निचोड़ना।
निचौंहा-(हिं०वि०) नीचेकी ओर किया हुआ या झुका हुआ। **निचौहें**-(हिं० क्रि० वि०) नीचे की ओर।
निछक्का-(हिं०पुं०) एकान्त।
निछत्र-(हिं०वि०) छत्रहीन, बिना छत्र का।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निछल-(हिं०वि०) बिना छल.कपट का। **निछला**-(हिं०वि०) बिना मिलावट का।
निछान-(हिं०वि०)विशुद्ध, बिना मिलावट का, (क्रि०वि०) एक दम।
निछावर-(हिं०स्त्री०) उत्सर्ग, उतारा, नेग।
निछोह, निछोही-(हिं० वि०) निर्दयी, निष्ठुर।
निज-(सं०वि०) स्वकीय, अपना, मुख्य, (अव्य०) ठीक ठीक, विशेष करके; **निजकाना**-(हिं०क्रि०) समीप आना, निकट पहुँचना; **निजन**-(हिं० वि०) देखो निर्जन।
निजी-(हिं०वि०) स्वयं, अपना।
निजू-(हिं०वि०) निजका, अपना।
निजोर-(हिं०वि०)बलहीन, निर्बल।
निझरना-(हिं०क्रि०)झड़ जाना, दोष। से मुक्त बनना।
निझाना-(हिं०क्रि०) छिप कर देखना,
निटर-(हिं०वि०) जिसमें कुछ दम न हो,
निटोर-(हिं०पुं०) टोला, मुहल्ला।
निठल्ला, निठल्लू-(हिं०वि०)व्यवसाय रहित।
निठाला-(हिं०पु०) ऐसा समय जब कोई काम धंधा न हो।
निठुर-(हिं०वि०)निष्ठुर, क्रूर, निर्दय।
निठुरता-(हिं०स्त्री०)निर्दयता क्रूरता।
निठुराव-(हिं०पुं०) निठुराई।
निठौर-(हिं०पुं०) बुरी अवस्था।
निडर-(हिं० वि०),निर्भय, साहसी।
निडरपन, निडरपना-(हिं० पुं०) निर्भयता, साहस।
निड़ै-(हिं०क्रि०वि०) निकट, समीप, पास।
नढाल-(हिं०वि०) अशक्त, शिथिल,
निढिल-(हिं०वि०) जो ढीला न हो, कसा हुआ।
नितंत-(हिं०क्रि०वि०) देखो नितान्त।
नित-(हिं०अव्य०)सर्वदा, नित्य, प्रतिदिन; नित नित–प्रति दिन।
नितम्ब-(सं०पुं०) स्त्री का कमर के पीछे का उभड़ा हुआ भाग, चूतड़, किनारा।
नितान्त-(सं०वि०) अधिक, सर्वथा।
निति-(हिं०अव्य०)नित, प्रति दिन।
नित्य-(सं०वि०) सतत, प्रति दिन का, (अव्य०)प्रतिदिन, हर दिन, सर्वदा;
नित्यशः-(सं०अव्य०)प्रति दिन, सर्वदा
नित्य समास-(सं०पुं०)'कु'शब्द तथा 'आदि' शब्द केसाथ जोसमास होता है वह नित्य समास कहलाता है;
निथंभ-(हिं०पुं०) स्तम्भ, खंभा।
निथरना-(हिं०क्रि०) धुली हुई वस्तु का नीचे बैठकर जल आदि का स्वच्छ हो जाना।
निथार-(हिं०पुं०)पानीके स्थिर होने से उसके जल में बैठी हुई वस्तु।
निथारना, निथालना-(हि०क्रि०) धुली हुई वस्तु को नीचे बैठाकर जल को स्वच्छ करना।
निदई-(हिं०वि०) देखो निर्दयी।
निदरना-(हिं०क्रि०) अपमान करना।
निदर्शक-(सं०वि०) दिखलाने वाला।
निदर्शन-(सं०नपुं०) प्रकाशित करने या दिखलाने का काम, उदाहरण, दृष्टान्त।
निदहना-(हिं०क्रि०) जलाना।
निदाघ-(सं०पुं०) ग्रीष्म काल, घाम, धूप।
निदान-(सं०नपुं०) रोग की पहिचान, अन्त, (अव्य०) अन्त में।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निदेश-(सं०पुं०) शासन, आज्ञा, कथन
निदेस-(हिं०पुं०) देखो निर्देश।
निदोष-(हिं०वि०) देखो निर्दोष।
निद्धि-(हिं०स्त्री०) देखो निधि।
निद्रा-(सं०स्त्री०) स्वप्न, नींद, सुषुप्ति; **निद्राकुल**-(सं०वि०) निद्रा से पीड़ित **निद्राक्रान्त**-(सं०वि०) निद्राकुल; **निद्राग्रस्त**-(सं०वि०) निद्राकुल, निद्रालु; **निद्राभङ्ग**-(सं०नपुं०) नींद टूटना; **निद्रालु**-(सं०वि०) निद्राशील, सोनेवाला। **निद्रित**-(सं०वि०) निद्रागत, सोया हुआ;।
निधड़क-(हिं०क्रि०वि०) बिना संकोच के, निःशंक, बिना भय या चिन्ता के।
निधन-(सं०नपुं०) मरण, नाश, (वि०) धनहीन, दरिद्र। **निधनता**-(सं०स्त्री०) दरिद्रता, कंगाली।
निधनी-(हिं०वि०) धनहीन, दरिद्र।
निधान-(सं०नपुं०) आश्रय, आधार, निधि।
निधि-(सं०पुं०) समुद्र, आधार; **निधिमान**-(सं०वि०) धनाढ्य;।
निनरा-(हिं०क्रि०) न्यारा, अलग, दूर।
निनाद-(सं०पुं०) शब्द मात्र।
निनादी-(सं०वि०) शब्द करने वाले।
निनान-(हिं० वि०) घोर, निकृष्ट, बुरा, (क्रि०वि०) अन्त में।
निनारा-(हिं०वि०) भिन्न, न्यारा, अलग,
निनावाँ-(हिं०पुं०) महीन लाल दाने जो जीभ और मसूढ़े पर निकल आते हैं।
निभौना-(हिं०क्रि०) नवाना, झुकाना, नीचे करना।
निनौरा-(हिं०पुं०) नाना नानी का घर।
निन्दक-(सं०वि०) दूसरों का दोष या बुराई कहने वाला। **नीन्दनीय**-(सं०वि०) निन्द्य, निन्दा करने योग्य।
निन्दा-(सं०स्त्री०) अपवाद, दुष्कृति, आक्षेप, जुगुप्सा; **निन्दाकर**-(सं०पुं०) अपवादक; **निन्दान्वित**-(सं०वि०) निन्दित;। **निन्दित**-(सं०वि०) निन्दा किया हुआ।
निन्द्य-(सं०वि०) निन्दनीय, निन्दा करन योग्य।
निन्यानवे-(हिं०वि०) एक कम सौ की गणना का; (पुं०) नब्बे और नव संख्या ९९।
निन्यारा-(हिं०वि०) देखो न्यारा।
निपजना-(हिं०क्रि०) उपजना, उगना।
निपजी-(हिं०स्त्री०) लाभ, उपज; (हिं०अव्य०) निरा, नितान्त।
निपट-(हिं०वि०) निरा। **निपटना**-(हिं०क्रि०) देखो निबटाना;
निपठित-(सं०वि०) अशिक्षित।
निपतन-(सं०नपुं०) अधःपतन, गिराव; **निपतित**-(सं०वि०) पतित, गिरा हुआ।
निपत्र-(हिं०वि०) पत्रहीन।
निपात-(सं०पुं०) पतन, गिराव, नाश, मृत्यु, अधःपतन, विनाश, वह शब्द जो व्याकरण में दिये हुए नियमों के अनुसार न बना हो, (वि०) बिना पत्ते का,; **निपातना**-(हिं०क्रि०) गिराना, नष्ट करना, वध करना; **निपातित**-(सं०वि०) जो नीचे फेंक दिया गया हो।
निपुड़ना-(हिं०क्रि०) खोलना, उघारना
निपुण-(सं०वि०) कार्य कुशल, दक्ष, विद्वान; **निपुणता**-(सं०स्त्री०) कुशलता; **निपुणाई**-(हिं०स्त्री०) दक्षता।
निपुत्री-(हिं०वि०) निःसन्तान, निपूता।
निपुन-(हिं०वि०) देखो निपुण, दक्षः;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निपुनई-(हिं०स्त्री०) निपुणता, दक्षता;
निपूत, निपूता-(हिं०वि०) अपुत्र, जिसके सन्तान न हो।
निपोड़ना-(हिं०क्रि०) दाँत निकालना।
निफन-(हिं०वि०) निष्पन्न, पूर्ण, पूरा, (क्रि०वि०) अच्छी तरहसे, पूर्णरूपसे;
निफरना-(हिं०क्रि०) चुभ कर इस पार से उस पार निकल जाना,
निफल-(हिं०वि०) देखो निष्फल।
निफारना-(हिं०क्रि०) खोलना, स्पष्ट करना।
निफालन-(सं०नपुं०) दर्शन, दृष्टि।
निफोट-(हिं०वि०) स्पष्ट, स्वच्छ।
निबकौरी-(हिं०स्त्री०) नीम का फल या बीज।
निबटना-(हिं०क्रि०) निश्चित होना, छुट्टी पाना, समाप्त होना अन्त होना; **निबटाना**-(हिं०क्रि०) पूरा करना, भुगताना, चुकाना; **निबटाव**-(हिं० स्त्री०) निर्णय; **निबटेरा**-(हिं० पुं०) झगड़े का निर्णय, निश्चय।
निबड़ना-(हिं०क्रि०) देखो निबटना।
निबद्ध-(सं०वि०) गुथा, हुआ बैठाया हुआ, जड़ा हुआ।
निबन्ध-(सं०पुं०) पुस्तक की टीका, बंधन।
निबर-(हिं०वि०) देखो निर्बल; **निबरना**-(हिं०क्रि०) अलग होना, छूटना, निर्णय होना, समाप्त होना अवकाश पाना, सुलझना, अन्त होना, दूर होना।
निबल-(हिं०वि०) देखो निर्बल। **निबलाई**-(स्त्री०) दुर्बलता।
निबह-(हिं०पुं०) देखो निर्बह, समूह झुण्ड।
निबहना-(हिं०क्रि०) छुटकारा पाना;
बिनहुर-(हिं०पुं०) यमद्वार जहाँ से कोई लौट कर न आवे।
निबहुरा-(हिं०वि०) जो जाकर फिर न लौटे।
निबाह-(हिं०पुं०) निर्वाह, निरन्तर व्यवहार; **निबाहक**-- (हिं०वि०) निर्वाह करने वाला; **निबाहना**-(हिं०क्रि०) निर्वाह करना, चरितार्थ करना,।
निबिड़-(हिं०वि०) बँधा हुआ; **निबिड़ना**-(हिं०क्रि०) बन्धन आदि से मुक्त करना, अलग करना,।
निबुकना-(हिं०क्रि०) बंधनसे मुक्तहोना
निबेड़ा-(हिं०पुं०) देखो निबेरा।
निबेरना-(हिं०क्रि०) निबटाना, दूर करना, हटाना।
निदेरा-(हिं०पुं०) मुक्ति, छुटकारा।
निभना-(हिं०क्रि०) निर्वाह होना।
निभरम-(हिं०वि०) भ्रमरहित, (क्रि० वि०) बेधड़क।
निभरोस-(हिं०वि०) निराश, हताश।
निभरोसी-(हिं०वि०) निराश्रय।
निभागा-(हिं०वि०) अभागा, हतभाग्य।
निभाना-(हिं०क्रि०) निर्वाह करना।
निभृत-(सं०वि०) धरा हुआ, रक्खा हुआ, भरा हुआ, निश्चित।
निमंत्रना-(हिं०क्रि०) नेवता देना।
निमक-(हिं०पुं०) देखो नमक।
निमकी-(हिं०स्त्री०) नीबू का अचार।
निमकौड़ी-(हिं०स्त्री०) नीमकी फली
निमग्न-(सं०वि०) डूबा हुआ, तन्मय।
निमछड़ा-(हिं०पुं०) अवकाश।
निमज्जक-(सं०वि०) डूबकी या गोता लगाने वाला; **निमज्जन**-(सं०नपुं०) अवगाहन; **निमज्जना**-(हिं०क्रि०) गोता लगाना, स्नान करना।
निमटना-(हिं०क्रि०) देखो निबटाना; **निमटेरा**-(हिं०पुं०) देखो निबटारा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निमंत्रक-(सं०पुं०) निमन्त्रण या नेवता देने वाला।

निमंत्रण-(सं०नपुं०) भोजन का बुलावा, न्योता: **निमंत्रित**-(सं०वि०) जिसको न्योता दिया गया हो।

निमन्यु-(सं०वि०) क्रोध रहित।

निमान-(हिं०नपुं०) मूल्य, दाम (हिं० वि०) नीचा, ढालुआँ, विनीत।

निमाना-(हिं०वि०) नम्र, विनीत।

निमि-(सं०पुं०) निमेष, आँख का मिचना।

निमिख-(हिं०पुं०) देखो निमिष।

निमित्त-(सं०नपुं०) चिह्न, लक्षण, हेतु, कारण शकुन, उद्देश्य,

निमिष-(सं०पुं०) आँख मिचना, पलकों का गिरना,।

निमीलन-(सं०नपुं०) निमेष, पलक मारना, मरण।

निमीलित-(सं०वि०) बँद किया हुआ, ढपा हुआ।

निमुंहाँ-(हिं०वि०)जिसको बोलने का मुँह न हो।

निमूंद-(हिं०वि०) बन्द किया हुआ,

निमूल-(हिं०वि०) मूल रहित।

निमख-(हिं०पुं०) देखो निमेष।

निमेट-(हिं०वि०) न मिलने वाला।

निमेष-(सं०पुं०) पलक मारने भर का समय, पल, क्षण।

निमोना-(हिं०पुं०)पिसे हुए हरे चने या मटर के दानों को भून कर बनाया हुआ एक व्यंजन।

निम्न-(सं०वि०) नीच, नीचा; **निम्नग**-(सं०वि०) नीचे नीचे जाने वाला; **निम्नगत**-(सं०वि०) जो नीचे की ओर गया हो; **निम्नगा, निम्नदेश**-(सं०स्त्री०) सरिता, नदी।

निनदेश-(सं०पुं०)तल देश, निचला भाग।

निम्ब-(सं०पुं०) नीम का वृक्ष।

नियत-(सं०वि०) संयत, स्थिर, ठहराया हुआ, नियोजित,स्थापित, परिमित,; **नियतमानस**-(सं०वि०) जितेन्द्रिय।

नियति-(सं०स्त्री०) नियम, बन्धेज, स्थिरता।

नियतेन्द्रिय-(सं०वि०)जितेन्द्रिय; **नियन्तव्य**-(सं०वि०) दमन या शासन करने योग्य।

नियन्ता-(सं०वि०) विधायक, कार्य चलाने वाला, नियम बाँधने वाला,

नियम-(सं०पुं०) प्रतिज्ञा, विधि या निश्चय के अनुसार प्रतिबन्ध, निश्चय, व्यवस्था, पद्धति परम्परा, क्रम, शासन **नियमन**-(सं०नपुं०) नियमबद्ध करने का कार्य; **नियमपत्र**-(सं०नपुं०) प्रतिज्ञापत्र।

नियमबद्ध-(सं०वि०) नियमों के अनुकूल; **नियमभंग**-(सं०पुं०) प्रतिज्ञा भङ्ग, नियम का उल्लंघन।

नियर-(हिं०अव्य०) पास, समीप,; **नियराई**-(हिं०स्त्री०) निकटता; **नियराना**-(हिं०क्रि०) निकट आना; आना; **नियरे**- समीप

नियाई-(हिं०वि०) देखो न्यायी।

नियाज-(हिं०पुं०) प्रार्थना।

नियान-(हिं०पुं०) निदान, परणाम, अन्त।

नियामक-(सं०वि०) नियम या व्यवस्था करनेवाला, मारने वाला।

नियार-(हिं०पुं०) जौहरी या सोनार की दुकान में का कूड़ा करकट।

नियारना-(हिं०क्रि०) अलगाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नियारा-(हिं०वि०) पृथक्, अलग, न्यारा; **नियारिया**-(हिं० पुं०) सुनारों या जौहरियों की दुकान के कूड़ा करकट में से माल निकालने वाला, चतुर मनुष्य।

नियारे-(हिं०अव्य०) देखो न्यारे।

नियाव-(हिं० पुं०) देखो न्याय।

नियुक्त-(सं०वि०) अधिकार किया हुआ, लगाया हुआ, प्रेरित।

नियोक्ता-(सं०पुं०) नियोजित करने वाला, किसी काम में लगाने वाला।

नियोग-(सं०पुं०) प्रेरणा में नियुक्ति, आज्ञा, निश्चय।

नियोगी-(सं०वि०) जो नियुक्त किया गया हो, **नियोगपत्र**-(सं०नपुं०) वह पत्र जिसमें किसी की नियुक्ति के विषय में लिखा हो।

नियोगविधि-(सं०पुं०) किसी को किसी कार्य में नियुक्त करने की विधि।

नियोग्य-(सं० वि०) नियोग करने योग्य।

नियोजक-(सं०पुं०) कार्यमें नियुक्ति करने वाला; **नियोजन**-(सं०नपुं०) नियोग, प्रेरणा।

नियोजित-(सं०वि०) नियुक्त किया हुआ **नियोज्य**-(सं०वि०) जो नियुक्त करने योग्य हो।

निर्-(सं० अव्य०) यह शब्द वियोग, अतिक्रम, निषेध आदि अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयोग किया जाता है।

निरंश-(सं०पुं०) बिना अक्षांश का।

निरकेवल-(हिं०वि०) बिनामेलका, स्वच्छ

निरक्षदेश-(सं०पुं०) भूमध्य रेखा के उत्तर तथा दक्खिन के वे देश जहां दिन रात बराबर होता है।

निरक्षन-(हिं०पुं०) देखो निरीक्षण।

निरक्षर-(सं०वि०) अनपढ़ा, मूर्ख।

निरक्षरेखा-(सं०स्त्री०) क्रान्तिवृत्त।

निरखना-(हिं०क्रि०) देखना, ताकना।

निरगुन-(हिं०वि०) देखो निर्गुण।

निरंकुश-(सं०वि०) बिना अंकुश या प्रतिबन्ध का।

निरङ्ग-(सं०वि०) अंगहीन; **निरंग**-(हिं०वि०) बिना रंग का, उदास, फीका।

निरच-(हिं०वि०) निश्चिन्त।

निरच्छ-(हिं०वि०) चक्षुहीन, अन्धा।

निरंजर-(हिं०वि०) जो कभी जीर्ण न हो

निरजल-(हिं०वि०) देखो निर्जल।

निरजिन-(सं०नपुं०) जिसको चमड़ा न हो।

निरजोस-(हिं०पुं०) निचोड़, सारांश।

निरजोसी-(हिं०वि०) निर्णय करनेवाला

निरझर-(हिं०पुं०) देखो निर्झर।

निरञ्जन-(सं०वि०) काजल रहित।

निरत-(सं०वि०) नियुक्त, तत्पर, लीन, तन्मय।

निरति-(सं०स्त्री०) अत्यन्त प्रीति।

निरदई-(हिं०वि०) देखो निर्दयी।

निरधन-देखो निरधन।

निरधार-(हिं०पुं०) देखो निर्धार।

निरधारना-(हिं०क्रि०) निश्चय करना, स्थिर करना।

निरध्व-(सं०वि०) जो अपना मार्ग भूल गया हो।

निरनुक्रोश-(सं०पुं०) निर्दयता, निष्ठुरता।

निरन्तर-(सं०वि०) निबिड़, घना, (हिं० वि०) सदा, सर्वदा।

निरन्न-(सं०वि०) अन्नहीन।

निरन्नता-(सं०स्त्री०) उपवास।

निरन्न-(हिं० वि०) निराहार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरन्वय-(सं०वि०) संबंध रहित;
निरपराध-(सं०वि०) अपराध रहित, निर्दोष, (हिं०क्रि०वि०) बिना कोई अपराध किये हुये;
निरपवर्त-(सं०वि०) जो लौटा न देता हो, जिसमें भाजक का पूरा भाग लग सके।
निरपवाद-(सं०वि०) अपवाद रहित।
निरपाय-(सं०वि०) जिसका नाश न हो
निरपेक्ष-(सं०वि०) जिसको किसी वस्तु की आकांक्षा न हो,तटस्थ,(नपुं०) अनादर; **निरपेक्षा**-(सं०स्त्री०)अवज्ञा, निराशा; **निरपेक्षी**-(सं०वि०) अपेक्षा न रखने वाला।
निरफल-(हिं०वि०) निष्फल।
निरबंध-(हिं०वि०) बन्धन हीन।
निरबंसी-(हिं०वि०) निर्वंश।
निरबल-(हिं०वि०) देखो निर्बल।
निरबान-देखो निर्वाण।
निरवाह-देखो निर्वाह।
निरभय-देखो निर्भय।
निरभिमान-(सं०वि०)अभिमान रहित।
निरभिलाष-(सं०वि०)अभिलाषारहित
निरभै-देखो निर्भय।
निरभ्र-(सं०वि०) मेघ शून्य।
निरमना-(हिं०क्रि०) निर्माण करना, बनाना।
निरभर,निरमल-(हिं० वि०) देखो निर्मल।
निरमान-(हिं०पुं०) देखो निर्माण। **निरमाना**-(हिं०क्रि०) बनाना, तैयार करना।
निरमायल-(हिं०पुं०) देखो निर्माल्य।
निरमूलना-(हिं०क्रि०) निर्मूल करना, नष्ट करना।
निरमोल-(हिं०वि०)अमूल्य, अनमोल,
निरमोही-(हिं०वि०) देखो निर्मोही।
निरम्बर-(सं०वि०) वस्त्र शून्य, नंगा।
निरम्बु-(सं०वि०)जलहीन, विनाजलका
निरर्थ-(सं०वि०) अर्थ शून्य, निष्फल, व्यर्थ; **निरर्थक**-(सं०वि०) निष्फल, निष्प्रयोजन, व्यर्थ।
निरलस-(हिं०वि०) आलस्य हीन। **निरवकाश**-(सं०वि०) जिसमें अवकाश न हो।
निरवच्छिन्न-(सं०वि०)जिसका क्रम न टूटे, निरन्तर।
निरवद्य-(सं०वि०)अनिन्द्य, निर्दोष।
निरवधि-(सं०क्रि०वि०) निरन्तर, बराबर, सर्वदा।
निरवयव-(सं०वि०)अवयवों से रहित, निराकार।
निरवलम्ब-(सं०वि०) आधार रहित, निराश्रय; **निरशेष**-(सं०वि०)समग्र, समूचा।
निरवाना-(हिं०क्रि०) निराने का काम दूसरे से कराना।
निरवार-(हिं०पुं०) निस्तार, छुटकारा, निबटारा, निर्णय; **निरवारना**-(हिं०क्रि०) युक्त करना, छोड़ाना, सुलझाना।
निरवाह-(हिं०पुं०) देखो निर्वाह।
निरशन-(सं०नपुं०) अनशन, उपवास,
निरसंक-(हिं०वि०) देखो निःशङ्क।
निरस-(सं०वि०)नीरस,रसहीन, फीका, निःसत्व, असार, सूखा। **निरसन**-(सं०नपुं०) निराकरण, परिहार, वध
निरस्त-(सं०वि०) थूका हुआ, उगला हुआ, भेजा हुआ, (पुं०) थूक, फेंकने की क्रिया।
निरस्त्र-(सं०वि०) बिना अस्त्र का।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरस्य-(सं०वि०) खँडनीय, परिहार, करने योग्य।
निरहंकार-(सं०वि०) अभिमान रहित।
निरहंकृत-(सं०वि०) अहंकार रहित।
निरहेतु-(हिं०वि०) देखो निर्हेतु।
निरा-(हिं०वि०) विशुद्ध, बिन मेल का; एकमात्र, नितान्त; निपट।
निराई-(हिं०स्त्री०) निराने का काम।
निराकांक्ष-(सं०वि०) जिसको अभिलाषा न हो; **निराकांक्षा**-(सं०स्त्री०) लोभ या लालसा का होना; **निराकांक्षी**-(सं०वि०) निस्पृह।
निराकार-(सं०वि०) जिसका कोई आकार नहो, परमेश्वर।
निराकाश-(सं०वि०) आकाश शून्य।
निराकुल-(सं०वि०) जो घबड़ाया न हो
निराकृत-(सं०वि०) नष्ट किया हुआ, हटाया हुआ।
निराखर-(हिं०वि०) अपठित, मूढ़, मौन, चुप
निराचार-(सं०वि०) आचरशून्य।
निराट-(हिं०वि०) निपट, निरा।
निराडम्बर-(सं०वि०) आड़म्बर रहित;
निरांतक-(सं०वि०) भयशून्य, रोगरहित;
निरातप-(सं०वि०) उष्णता रहित।
निरादर-(सं०पुं०) अपमान।
निराधार-(सं०वि०) अवलम्ब या आश्रय रहित, मिथ्या, अयुक्त।
निराधि-(सं०वि०) रोग रहित।
निरानन्द-(सं०वि०) आनन्द रहित।
निराना-(हिं०क्रि०) पौधोंके आस पास उगी हुई घास आदि को खोदकर हटाना।
निरापद-(सं०स्त्री०) जिसको कोई आपत्ति या डर न हो, सुरक्षित।
निरामिषाशी-(सं०वि०) मांस न खाने वाला, जितेन्द्रिय।
निराय-(सं०वि०) आय रहित, बिना करका।
निरायुध-(सं०वि०) अस्त्र हीन।
निरारा-(हिं०वि०) निराला, पृथक्, अलग।
निरालम्ब-(सं०वि०) निराधार।
निरालस-(हिं०वि०) बिना आलस्यका।
निरालस्य-(सं०वि०) जिसमें आलस्य न हो, तत्पर-(पुं०) आलस्यका अभाव
निराला-(हिं०पुं०) एकान्त स्थान, (वि०) निर्जन, एकान्त, अद्भुत, विलक्षण।
निरावलम्ब-(सं०वि०) निराधार।
निरावृत-(सं०वि०) जो ढँका न हो।
निराश-(सं०वि०) आशा रहित।
निराशङ्क-(सं०वि०) आशंका रहित।
निराशी-(सं० वि०) आशा हीन, हताश।
निराशिष-(सं०वि०) बिना आशीर्वादका।
निराश्रय-(सं०वि०) असहाय, अशरण।
निराश्रम-(सं०वि०) आश्रम रहित।
निरासी-(हिं०वि०) निराश, उदास।
निराहार-(सं०वि०) जो भोजन न किये हो।
निरिच्छ-(सं०वि०) इच्छा शून्य; जिसको इच्छा न हो।
निरिन्द्रिय-(सं०वि०) इन्द्रिय रहित।
निरिच्छना-(हिं०क्रि०) देखना।
निरिन्धन-(सं०वि०) बिना इँधन का।
निरी-(हिं०वि०) देखो निरा।
निरीक्षक-(सं०वि०) देख रेख करने वाला; **निरीक्षण**-(सं०नपुं०) दर्शन, देख रेख,; **निरीक्षित**-(सं०वि०) देखा हुआ; **निरीक्ष्यमाण**-(सं०वि०) जो देखा जाता हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निरीश-(सं०वि०) विना मालिक का, नास्तिक।
निरीह-(सं०वि०)चेष्टा शून्य, विरक्त, उदासीन, तटस्थ।
निरुक्त-(सं०नपुं०) वेद का चौथा अंग, (वि०) व्याख्या किया हुआ।
निरुक्ति-(सं०स्त्री०) व्युत्पत्ति आदि को बतलाते हुए किसी पद या वाक्य की व्याख्या।
निरुत्तर-(सं०वि०)जो उत्तर न दे सके।
निरुत्पात-(सं०वि०) उत्पात रहित।
निरुत्सव-(सं०वि०) उत्सव हीन।
निरुत्साह-(सं०वि०)बिना उत्साह का।
निरूत्सुक-(सं०वि०) औत्सुक्यहीन।
निरुद्ध-(सं०वि०) बँधा हुआ, रुका हुआ।
निरुद्यम-(सं०वि०) विना उद्योग का; **निरुद्यमी**-(हिं०वि०) जो कोई काम न करता हो; **निरुद्योग**-(सं०पुं०) जिसके पास कोई उद्योग न हो।
निरुद्योगी-(सं०वि०) जो कोई उद्योग न करता हो।
निरुद्विग्न-(सं०वि०) उद्वेग रहित।
निरुद्वेग-(सं०वि०) उद्वेग रहित।
निरुपद्रव-(सं०वि०) उपद्रव रहित।
निरुपाधि-(सं० वि०)जिसमें किसी प्रकार की उपाधि न हो।
निरुपम-(सं०वि०) उपमा रहित।
निरुपयोगी-(सं०वि०) निरर्थक, व्यर्थ।
निरुपसर्ग-(सं०वि०) उत्पात रहित।
निरुपाय-(सं०वि०) उपायहीन।
निरुपेक्ष्य-(सं०वि०) उपक्षा रहित।
निरुवरना-(हिं०क्रि०)कठिनाई हटाना।
निरुवार-(हिं०पुं०) मुक्ति, छुटकारा, **निरुवारना**-(हिं०क्रि०)मुक्त करना, निर्णय करना।
निरूढ-(सं०वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात, व्युत्पन्न।
निरुप-(सं०वि०)रूप हीन,निराकार, कुरूप, भद्दा, (पुं०) वायु, देवता, आकाश। **निरूपक**-(सं०वि०)किसी विषय का निरूपण करने वाला; **निरूपण**(सं०नपुं०)आलोक, विचार। **निरूपना**-(हिं०क्रि०) निश्चित करना, स्थिर करना।
निरूपित-(सं०वि०) विचारा हुआ, निर्णय किया हुआ
निरै-(हिं०पुं०) निरय, नरक।
निरोग, निरोगी-(हिं०वि०)रोग रहित,
निरोध-(सं०पुं०) नाश, रुकावट,प्रतिबंध,। **निरोधक**-(सं०वि०) रोकने वाला; **निरोधन**-(सं०नपुं०) गति का अवरोध, रुकावट; **निरोधी**-(सं० वि०) रोकने वाला।
निर्गत-(सं०वि०) निकला हुआ।
निर्गन्ध-(सं०वि०) गन्ध रहित।
निर्गमन-(सं०नपुं०) द्वार, द्वारपाल, **निर्गमना**-(हिं०क्रि०) निकलना।
निर्गुन-(हि०वि०). जिसमें गुण न हो, (पुं०) परमेश्वर।
निगूढ़-(सं०वि०) जो बहुत गूढ़ या गुप्त हो।
निर्धुरिणी-(सं०स्त्री०)पानी का सोता।
निर्घोष-(सं०वि०) शब्द रहित।
निर्जन-(सं०वि०) जन शून्य (स्थान) सुनसान।
निर्जर-(सं०पुं०)देवता, (वि०)जरा-रहित।
निर्जल-(सं०वि०) जल शून्य, बिना जल का, जल के संसर्ग से रहित, **निर्जला एकादशी**-(सं० स्त्री०) जेठ सुदी एकादशी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्जित-(सं०वि०) पराजित, जीता हुआ।
निर्जीव-(सं०वि०) प्राणहीन, मृतक।
निर्झर-(सं०पुं०) झरना, सोता।
निर्झरिणी-(सं०स्त्री०) नदी।
निर्णय-(सं०पुं०) किसी विषयमें कोई सिद्धान्त स्थिर करना, विचार, निबटारा।
निर्णेता-(सं०वि०) झगड़े को निबटानेवाला। **निर्णेय**-(सं०वि०) निर्णय करने योग्य।
निर्त-(हिं०पुं०) देखो नृत्य।
निर्तना-(हिं०क्रि०) नृत्य करना, नाचना
निर्दई-(हिं०वि०) देखो निर्दय।
निर्दय-(सं०वि०) दया हीन, निष्ठुर।
निर्दयता-(सं०त्री०) निष्ठुरता;
निर्दहना-(हिं०क्रि०) जलाना।
निर्दिष्ट-(सं०वि०) निश्चित, ठहराया हुआ।
निर्देश-(सं०पुं०) उल्लेख, वर्णन, नाम, संज्ञा, चेतन, निश्चय, कथन, आज्ञा,
निर्दोष-(सं०वि०) दोष रहित; **निर्दोषता**-(सं०स्त्री०) दोषहीनता, शुद्धता।
निर्दोषी-(हिं०वि०) जिसने कोई अपराध न किया हो।
निर्द्रव्य-(सं०वि०) दरिद्र, धनहीन।
निर्द्वन्द्व-(सं०वि०) जिसका विरोध करने वाला कोई न हो, स्वच्छन्द।
निर्धन-(सं०वि०) धन रहित, दरिद्र, कंगाल; **निर्धनता**-(सं०स्त्री०) दरिद्रता।
निर्धारण-(सं०नपुं०) निर्णय, निश्चय,; **निर्धारना**-(हिं०क्रि०) निर्धारित करना निश्चित करना, ठहरना।
निर्धारित-(सं०वि०) निश्चित, ठहराया हुआ।
निर्धूम-(सं०वि०) जहां धुआँ न हो।
निर्धूत-(सं०वि०) धुला हुआ, स्वच्छ किया हुआ।
निर्नाथ-(सं०वि०) नाथ शून्य।
निर्पक्ष-(हिं०वि०) पक्षपात रहित।
निर्फल-(हिं०वि०) देखो निष्फल।
निर्बन्ध-(सं०पुं०) आग्रह, हठ।
निर्बन्धु-(सं०वि०) बन्धु रहित, बन्धुहीन।
निर्बल-(सं०वि०) बलहीन।
निर्बलता-(सं०स्त्री०) शक्ति हीनता।
निर्बहना-(हिं०क्रि०) अलग होना, पालन होना।
निर्बाचन-(हिं०पुं०) देखो निर्वाचन।
निर्बाण-(हिं०पुं०) देखो निर्वाण।
निर्बाध-(सं०वि०) निरुपद्रव।
निर्बुद्धि-(सं०वि०) बुद्धिहीन, मूर्ख।
निर्बोध-(सं०वि०) अज्ञान।
निर्भय-(सं०वि०) भय रहित, निडर।
निर्भयता-(हिं०स्त्री०) निडर होने की की अवस्था।
निर्भर-(सं०वि०) अवलंबित, आश्रित।
निर्भाग्य-(सं०वि०) मन्दभाग्य, अभागा।
निर्भीक-(सं०वि०) निःशंक, निडर।
निर्भीत-(सं०वि०) भयरहित, निडर।
निर्भ्रम-(सं० वि०) भ्रम रहित, (क्रि०वि०) बिना सन्देह के, बखटके।
निर्भ्रान्त-(सं०वि०) भ्रम रहित।
निर्मत्सर-(सं०वि०) अहंकार हीन।
निर्मद-(सं०वि०) निरभिमान।
निर्मना-(हिं०क्रि०) देखो निर्माना।
निर्मनुज, निर्मनुष्य-(सं०वि०) निर्जन।
निर्मन्यु-(सं०वि०) क्रोध रहित।
निर्मम-(सं०वि०) जिसको ममता न हो; **निर्ममता**-(सं०स्त्री०) ममता का अभाव।
निर्मल-(सं०वि०) किलंकहीन; **नर्मलता** (सं०स्त्री०) स्वच्छता, शुद्धता, पवित्रता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्मांस-(सं०वि०) जिसमें मांस न हो, अति दुर्बल।

निर्माण-(सं०नपुं०) रचना, बनावट; **निर्माणविद्या**-(सं०स्त्री०) मकान, पुल आदि बनने की विद्या, वास्तु विद्या। **निर्माता**-(हिं०पुं०) निर्माण करनेवाला

निर्मान-(हिं०वि०) अपार, असीम, **निर्माना**-(हिं०क्रि०) निर्माण करना, बनाना।

निर्मायल-(हिं०पुं०) देखो निर्माल्य।

निर्माल्य-(सं०नपुं०) देवता को अर्पित की हुई वस्तु।

निर्मुक्त-(सं०वि०) जो मुक्त हो गया हो।

निर्मूल, निर्मूलक-(सं०वि०) बिना जड़ का, बिना आधार का।

निर्मेघ-(सं०वि०) बिना बादल का।

निर्मोक-(सं०पुं०) साँपकी केंचुली।

निर्मोल-(हिं०वि०) अमूल्य।

निर्मोह-(सं०वि०) मोह शून्य।

निर्मोही-(हिं०वि०) निर्दय, कठोर हृदयका

निर्यात-(सं०पुं०) निर्गत, देशके बाहर भेजी हुई सामग्री, (वि०) निकला हुआ;

निर्यास-(सं०पुं०) कषाय, काढा; (नपुं०) गोंद, लाह, वल्कल।

निर्लज्ज-(सं०वि०) लज्जाहीन; **निर्लज्जता**-(हिं०स्त्री०) लज्जाहीनता।

निर्लोभी-(हिं०वि०) लोभ रहित।

निर्वंश-(सं०वि०) जिसके आगे वंश में कोई न हो।

निर्वचन-(सं०वि०) मौन।

निर्वहना-(हिं०क्रि०) निभाना, चलाना; **निर्वाचक**-(सं०वि०) जो चुनता हो, चुनने वाला। **निर्वाचन**-(सं०नपुं०) किसी मुख्य कार्य के लिये अनेक व्यक्तियों में से एक या अधिक को चन लेना। **निर्वाचित**-(सं०वि०) चुना हुआ।

निर्वाण-(सं०नपुं०) निवृत्ति, शान्ति।

निर्वास-(हिं०पुं०) प्रवास, विदेश यात्रा;

निर्वासक-(सं०पुं०) निर्वास करने वाला।

निर्वासन-(सं० नपुं०) मारण, वध, नगर, देश, गाँव आदि से दण्ड रूप में बाहर निकाला जाना।

निर्वाह-(सं०पुं०) पालन, निर्वाह, समाप्ति, **निर्वाहक**-(सं०वि०) किसी काम का निर्वाह करने वाला। **निर्वाहना**-(हिं०क्रि०) निर्वाह करना; **निर्वाहित**-(सं०वि०) निबाहा हुआ।

निर्विकल्प-(सं०वि०) भेद से रहित, स्थिर।

निर्विकार-(सं०पुं०) जिसमें किसी प्रकार का विकार या परिवर्तन न हो, (वि०) विकार शून्य, विघ्न या बाधा रहित, बिना बाधा का।

निर्विचेष्ट-(सं०वि०) अज्ञान, मूर्ख।

निर्विवाद-(सं०वि०) कलह शून्य।

निर्विवेक-(सं०वि०) अविवेकी।

निर्विशंक-(सं०वि०) निर्भय, निडर।

निर्वीज-(सं०वि०) बीज शून्य।

निर्वृत्त-(सं०वि०) निष्पन्न।

निर्वोध-(सं०वि०) ज्ञान हीन, मूर्ख।

निर्व्याज-(सं०वि०) छल रहित।

निर्व्याधि-(सं० वि०) व्याधि मुक्त, आरोग्य।

निर्व्यापार-(सं०वि०) बिना काम काज का।

निर्हेतु-(सं०वि०) कारणहीन।

निलज्ज-(हिं०वि०) देखो निर्लज्ज।

निलज्जता-(हिं०स्त्री०) निर्लज्जता;

निलय-(सं०पुं०) गृह, घर, आश्रयस्थान।

निलहा-(हिं०वि०) नील संबंधी।

निवछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर

निवर्त-(सं०वि०) हटाया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवर्तक-(सं०वि०) प्रतिबन्धक ।
निवर्तन-(सं०नपुं०) साधन ।
निवसति-(सं०स्त्री०) घर, मकान ।
निवसथ-(सं०पुं०) गाँव, सीमा, हद ।
निवसन-(सं०नपुं०) घर, वस्त्र, कपड़ा;
निवसना-(हिं०क्रि०) बसना, रहना ।
निवाई-(हिं०वि०) नया, अनोखा ।
निवाज-(हिं०वि०) कृपा करने वाला ।
निवाजना-(हिं०क्रि०) अनुग्रह करना ।
निवाना-(हिं०क्रि०) झुकाना, नीचे की ओर करना ।
निवार-(सं०वि०) रोकने वाला ।
निवारण-(सं०नपुं०) निवृत्ति, छुटकारा ।
निवारणीय-(सं०वि०) रोकने या हटाने योग्य ।
निवारन-(हिं०पुं०) देखो निवारण ।
निवारना-(हिं०क्रि०) निषेध करना, मना करना, हटाना, दूर करना ।
निवास-(सं०पुं०) रहने का स्थान, आश्रम, गृह, घर ।
निवासस्थान-(सं०पुं०) रहने का स्थान, घर ।
निवासी-(सं०वि०) बसने वाला, रहने वाला,
निविड़-(सं०वि०) गहरा, घना ।
निविड़ता-(सं० स्त्री०) गहरापन, घनापन ।
निविष्ट-(सं०वि०) प्रविष्ट, घुसा हुआ ।
निवृत-(सं०वि०) घिरा हुआ ।
निवृत्ति-(सं०स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा ।
निवेद-(हिं०पुं०) देखो नैवेद्य ।
निवेदक-(सं०वि०) प्रार्थना करने वाला;
निवेदन-(सं०नपुं०) प्रार्थना, विनती;
निवेदना-(हिं०क्रि०) विनती करना, प्रार्थना करना; निवेदित-(सं०वि०) निवेदन किया हुआ, कहा हुआ, अर्पण किया हुआ । निवेदी-(सं०वि०) निवेदन करन वाला, प्रकाशक ।
निवेरना-(हिं०क्रि०) निबटाना, तय करना ।
निवेरा-(हिं०क्रि०) छांटा हुआ, चुना हुआ ।
निवेश-(सं०पुं०) शिविर, डेरा ।
निवेशन-(सं०नपुं०) स्थापन, स्थिति ।
निशंक-(हिं०वि०) निर्भय, निडर ।
निश-(हिं०स्त्री०) रात्रि ।
निशा-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात ।
निशाकर-(सं०पुं०) चन्द्रमा ।
निशाचर-(सं०पुं०) राक्षस, प्रेत, भूत, (वि०) रात को चलने वाला । निशाचरी-(सं०स्त्री०) राक्षसी ।
निशाजल-(सं०नपुं०) पाला, ओस ।
निशाटन-(सं०पुं०) रात के समय में भ्रमण ।
निशाधीश-(सं०पुं०) निशापति, चन्द्रमा
निशानाथ-(सं०पुं०) चन्द्रमा ।
निशान्त-(सं०पुं०) पिछली रात, प्रभात, तड़का ।
निशान्ध-(सं०पुं०) जिसको रात में सूझ न पड़ता हो ।
नशापति-(सं० पुं०) देखो निशाकर, चन्द्रमा ।
निशामुख-(सं०नपुं०) गोधूलि वेला ।
निशावसान-(सं०पुं०) रात का अन्त भाग, तड़का ।
निशि-(सं०स्त्री०) रजनी, रात,
निशिकर-(सं०पुं०) चन्द्रमा ।
निशिचर-(हिं०पुं०) निशाचर ।
निशित-(सं०वि०) चोखा किया हुआ ।
निशिदिन-(हिं०क्रि०वि०) रात दिन ।
निशिनाथ, निशिनायक, निशिपति,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निशिपाल-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
निशिवासर-(हिं० पुं०) रात दिन, सर्वदा।
निशीथ-(सं०पुं०) रात्रि, रात, आधी-रात।
निशित-(हिं०वि०) पैना, धारदार।
निश्चक्षु-(सं०वि०) नत्रहीन, अन्धा।
निश्चन्द्र-(सं०वि०) चन्द्रमा रहित।
निश्चय-(सं०पुं०) निर्णय, विश्वास, पक्का विचार, **निश्चयरूप- निश्चयात्मक**-(सं०वि०) बिना सन्देह का
निश्चयी-(सं०वि०) स्थिर किया हुआ।
निश्चल-(सं०वि०) स्थिर, अचल; **निश्चलता**-(सं०स्त्री०) दृढ़ता, स्थिरता।
निश्चायक-(सं०वि०) निश्चय करने वाला।
निश्चिन्त-(सं०वि०) चिन्तारहित,
निश्चेतन-(सं०वि०) चैतन्यशून्य।
निश्चेष्ट-(सं०वि०) निश्चल, स्थिर, अचेत।
निश्चेष्टा-(सं०स्त्री०) निश्चलता।
निश्चै-(हिं०पुं०) देखो निश्चय।
निश्छिन्द्र-(सं०वि०) बिना छेद का।
निश्छेद-(सं०वि०) गणित में अविभाज्य राशि।
निश्रयणी, निश्रेणी-(सं०स्त्री०) सोपान, सीढ़ी।
निश्रेयस-(हिं०पुं०) कल्याण, मोक्ष।
निश्वस्य् निश्वास-(सं०पुं०) दीर्घ निश्वास का परित्याग, आह भरना।
निश्शङ्क-(सं०वि०) निर्भय, निडर।
निश्शेष-(सं०वि०) जिसमें कुछ बाकी न हो।
निषङ्ग-(सं०पुं०) तूणीर, तरकश।
निषण्ण-(सं०वि०) बैठा हुआ।
निषधाभास-(सं०पुं०) आक्षेप, अलंकार।
निषिद्ध-(सं०वि०) जिसका निषेध किया गया हो, दूषित।
निषेचन-(सं०नपुं०) सींचना, भिगाना।
निषेध-(सं०पु०) वर्जन, बाधा, रुकावट, (सं० वि०) रोकने वाला। **निषेधपत्र**-(सं०पु०) वह पत्र जिसके द्वारा किसी प्रकार का निषेध किया जावे। **निषेधविधि**-(सं०पु०) वह आज्ञा जिसके द्वारा किसी बात का निषेध किया जावे। **निषेधित**-(सं० वि०) निषेध किया हुआ, **निषेधी**-(सं०वि०) निषेध करने वाला।
निषेधोक्ति-(सं०स्त्री०) निषेध वाक्य।
निषेवितव्य-(सं० वि०) सेवा करने योग्य।
निष्कण्टक-(सं०वि०) कंटक हीन, उपद्रव रहित, निर्विघ्न।
निष्कपट-(सं०वि०) निश्छल; **निष्कपटता**-(सं०स्त्री०) सरलता।
निष्करुण-(सं०वि०) दया रहित।
निष्कर्मा-(सं०वि०) अकर्मी, आलसी।
निष्कर्ष-(सं०पु०) सारांश, सार, निचोड़।
निष्कलङ्क-(सं०वि०) जिसमें कोई प्रकार का कलंक न हो, निर्दोष।
निष्कल्मष-(सं०वि०) कलंकहीन।
निष्काम-(सं०वि०) कामना रहित।
निष्कासन-(सं०पु०) बाहर करना।
निष्कासित-(सं०वि०) बाहर निकाला हुआ।
निष्कृति-(सं०स्त्री०) निस्तार, छुटकारा।
निष्क्रम-(सं०पुं०) घर से बाहर निकलने का कार्य, (वि०) बिना क्रम का। **निष्क्रमण**-(सं०पुं०) घर से बाहर निकलना **निष्क्रिय**-(सं०वि०) व्यापारशून्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निष्ठा-(सं०स्त्री०) निश्चय, धर्मादि में श्रद्धा।
निष्कृति-(सं०स्त्री०) निस्तार, छुटकारा।
निष्क्रय-(सं०पुं०) घर से बाहर निकलने का कार्य, (वि०) बिना क्रम का। **निष्क्रिय**-(सं०वि०) व्यापारशून्य।
निष्ठीव-(सं०नपु०) थूक, खखार।
निष्ठुर-(सं०वि०) कठोर, कठिन, क्रूर।
निष्ठुरता-(सं०वि०) निर्दयता, क्रूरता।
निष्पक्ष-(सं०वि०) पक्षपात रहित।
निष्पत्ति-(सं०स्त्री०) समाप्ति, सिद्धि।
निष्पन्द-(स०वि०) जिसमें किसी प्रकार का कम्प न हो।
निष्पादित-(सं०वि०) सम्पादित, उत्पादित।
निष्प्रकाश-(सं०वि०) जिसमें प्रकाश नहो
निष्प्रताप-(सं०वि०) प्रतापहीन।
निष्प्रतिघ-(सं०वि०) जिसमें कोई रुकावट न हो। **निष्प्रतिपक्ष**-(सं०वि०) शत्रुहीन। **निष्प्रतिभ**-(सं०वि०) मूर्ख, जड़।
निष्प्रपञ्च-(सं०वि०) प्रपंच रहित।
निष्प्रभ-(सं०वि०) प्रभा रहित, बिना चमक का। **निष्प्रभाव**-(सं०वि०) प्रभा रहित, बिना सामर्थ्य का।
निष्प्रयत्न-(सं०वि०) यत्नहीन।
निष्प्रयोजन-(सं०वि०) निरर्थक, व्यर्थ।
निष्फल-(सं०वि०) निरर्थक।
निस्--(सं०अव्य०) यह शब्द "निषेध, निश्चय, साकल्य, तथा अतिक्रम अर्थ में व्यवहार होता है।
निसंक-(हिं०वि०) देखो निश्संक।
निसठ-(हिं०वि०) निर्धन, दरिद्र।
निसंस-(हिं०वि०) नृशंस, क्रूर, निर्दय। **निसंसना**-(हिं०क्रि०) हाँफना।
निस-(हिं०स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।
निसक-(हिं०वि०) अशक्त, दुर्बल।
निसकर-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।
निसचय-(हिं०पुं०) देखो निश्चय।
निसत-(हिं०वि०) असत्य।
निसतरना-(हिं०क्रि०) छुटकारा पाना।
निसतार-(हिं०पुं०) देखो निस्तार; **निसतारना**-(हिं०क्रि०) मुक्त करना।
निसद्योस-(हिं०क्रि०वि०) रात दिन।
निसनेहा-(हिं०स्त्री०) देखो निःस्नेहा।
निसरना-(हिं०क्रि०) निकालना।
निसर्ग-(सं०पुं०) प्रकृति, स्वभाव, स्वरूप, सृष्टि।
निसवारस-(हिं०पुं०) रातदिन, सर्वदा।
निसाँस, निसाँसा-(हिं०पुं०) ठंढी सांस, (वि०) मृतप्राय।
निसा-(हिं०स्त्री०) सन्तोष, तृप्ति; देखो निशा।
निसाकर-(हिं०पुं०) देखो निशाकर।
निसाचर-(हिं० पुं०) देखो निशाचर;
निसान-(हिं० पुं०) नगाड़ा, धौंसा; सन्ध्या, चन्द्रमा।
निसारना-(हिं०क्रि०) बाहर करना, निकालना।
निसास-(हिं० पुं०) देखो निःश्वास;
निसि-(हिं०स्त्री०) देखो निशि।
निसिचर, निसिचारी-(हिं० पुं०) देखो निशिचर।
निसित-(हिं०वि०) तीव्र।
निसिदिन-(हिं०क्रि०वि०) रात दिन।
निसियर-(हिं०पुं०) निशिकर, चन्द्रमा।
निसिवासर-(हिं०क्रि०वि०) रातदिन।
निसीठा-(हिं०वि०) नीरस, फीका।
निसीथ-(हिं०पुं०) आधी रात।
निसु-(हिं०स्त्री०) निशा, रात्रि, रात।
निसुका-(हिं०वि०) दरिद्र।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निसूदक-(सं०वि०) हिंसक। **निसूदन**-(सं०नपुं०) हिंसा, वध, (वि०) मारने वाला।
निसृष्ठ-(सं०वि०) प्रेरित, भेजा हुआ।
निसेनी-(हिं०स्त्री०) सोपान, सीढ़ी।
निसेस-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।
निसैनी-(हिं०स्त्री०) देखो निसेनी।
निसोग, निसोच-(हिं०वि०) जिसको किसी प्रकार की चिन्ता न हो।
निस्केवल-(हिं०वि०) निर्मल, शुद्ध।
निस्तत्व-(सं०वि०) तत्वहीन, निःसार।
निस्तन्द्र-(सं०वि०) तन्द्रारहित।
निस्तब्ध-(सं०वि०) निश्चेष्ट। **निस्तब्धता**-(सं०स्त्री०) सन्नाटा।
निस्तरण-(सं०नपं०) निस्तार, छुटकारा। **निस्तरना**-(हिं०क्रि०) छूटना।
निस्तल-(सं०वि०) बिना पेदी का।
निस्तार-(सं०पुं०) निस्तरण, उद्धार। **निस्तारक**-(सं०वि०) मोक्ष देने वाला **निस्तारना**-(हिं०क्रि०) मुक्त करना।
निस्तिमिर-(सं०वि०) अन्धकार रहित।
निस्तुष-(सं०वि०) जिसमें भूसी न हो। निर्मल।
निस्तेज-(सं०वि०) प्रभा रहित, मलिन।
निस्तोय-(सं०वि०) जल रहित।
निस्त्रप-(सं०वि०) निर्लज्ज। (पुं०) खड्ग, तलवार।
निष्पन्द-(सं०वि०) जिसमें कम्प न हो। **निष्पन्दी**-(सं०वि०) काँपता हुआ।
निष्पृह-(सं०वि०) जिसको किसी प्रकार का लोभ या लालच न हो। **निस्पृहता**-(सं० स्त्री०) निस्पृह होने का कार्य।
निस्व-(सं०वि०) दरिद्र, गरीब।
निस्वन-(सं०पुं०) शब्द।
निस्वास-(हिं०पुं०) देखो निश्वास।
निस्संकोच-(हिं०वि०) संकोच रहित।
निस्संतान-(हिं०वि०) संतति रहित।
निस्संदेह-(हिं०क्रि०वि०) अवश्य।
निस्सरण-(सं०पुं०) निकास।
निस्सहाय-(हिं०वि०) निराश्रय।
निस्सारित-(सं०वि०) निकाला हुआ।
निस्सीम-(सं० वि०) सीमा रहित, असीम, अपार।
निस्स्वार्थ-(हिं०वि०) स्वार्थ से रहित।
निहंग-(हिं०वि०) अकेला, नंगा, निर्लज्ज।
निहन्ता-(हिं०वि०) प्राणघातक।
निहकाम-(हिं०पुं०) देखो निष्काम। **निहचय**-(हिं०वि०) देखो निश्चय। **निहचल**-(हिं०वि०) देखो निश्चल।
निहित-(सं०वि०) नष्ट, फेंका हुआ, मार डाला हुआ।
निहत्था-(हिं०वि०) जिसके हाथ में कोई शस्त्र न हो।
निहनन-(सं०नपुं०) मारण, वध।
निहफल-(हिं०वि०) देखो निष्फल।
निहाई-(हिं०स्त्री०) पक्के लोहे का चौकोर टुकड़ा जिस पर लोहार या सोनार हथौड़े से धातु पीटते हैं।
निहाउ-(हिं०पुं०) देखो निहाई।
निहार-(सं०पुं०) नीहार, हिम, ओस, कुहरा, पाला।
निहारना-(हिं०क्रि०) ध्यान पूर्वक देखना।
निहुकना-(हिं०क्रि०) झुकना।
निहुड़ना-निहुरना-(हिं०क्रि०) झुकना, नवना। **निहुरना**-(हिं०क्रि०) झुकना, नवाना।
निहुराई-(हिं०स्त्री०) निष्ठुरता।
निहोरना-(हिं०क्रि०) विनती करना।
निहोरा-(हिं०पुं०) उपकार, अनुग्रह। (क्रि०वि०), वास्ते, लिये, निमित्त, द्वारा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निहुत-(सं०वि०) छिपया हुआ ।
नींद-(हिं०स्त्री०) निद्रा, स्वप्न, नींद ।
नीक, नीका-(हिं०वि०) स्वच्छ, सुन्दर ।
नीके-(हिं०क्रि०वि०) भली भांति ।
नीच-(सं०वि०) तुच्छ, अधम, पामर । (पुं०) क्षुद्र मनुष्य ।
नीचग-(सं०नपुं०) नीचे की ओर वहने वाला पानी । (वि०) पामर, ओछा ।
नीचगा-(सं०स्त्री०) निम्नगा, नदी ।
नीचगामी-(हिं०वि०) नीचे जाने वाला ।
नीचता-(सं०स्त्री) ०अधमता, निचाई ।
नीचत्व-(सं०नपुं०) नीचता ।
नीचट-(हिं०वि०) दृढ़, पक्का ।
नीचा-(हिं०वि०) जिसके आस पास का तल ऊँचा न हो, छोटा, ओछा, धीमा, झुका, अधिक लटका ।
नीचाशय-(सं०वि०) तुच्छ विचार का ।
नीचे-(हिं०क्रि०वि०) नीचे की ओर, अधीनता में, न्यून, घटकर ।
नीज-(हिं०पुं०) रज्जु, रस्सी ।
नीजन-(हिं०पुं०) निर्जन स्थान ।
नीझर-(हिं०पुं०) पानी का सोता ।
नीठ-(हिं०क्रि०वि०) कठिनाई से ।
नीठि-(हिं०स्त्री०) अरुचि, अनिच्छा ; (क्रि०वि०) किसी न किसी प्रकार से
नीठो-क्रि०वि०) जो सुहावना न हो ।
नीड़-(सं०पुं०) पक्षियों के रहने का घोंसला ।
नीत-(सं०वि०) गृहीत, लाया हुआ ।
नीति-(सं०स्त्री०) आचार, पद्धति, समाज का कल्याण करने वाली व्यवहार की रीति, युक्ति, उपाय, चाल, राजा और प्रजा दोनों के लिये निर्धारण की हुई व्यवस्था, राजनीति ।
नीतिज्ञ-(सं०वि०) नीति जानने वाला
नीतिमान्-(हिं०वि०) नीति कुशल, सदाचारी ।
नीदना-(हिं०क्रि०) निद्रा लेना, सोना ।
नीधना-(हिं०वि०) निर्धन, दरिद्र ।
नीबू-(हिं०पुं०) एक मध्यम आकार का काँटेदार वृक्ष जिसका गोल फल खट्टा होता है ।
नीम-(हिं०पुं०) एक वृक्ष जिसका प्रत्येक भाग कड़ुवा होता है,
नीमटर-(हिं०वि०) जिसको किसी विद्या की पूरी जानकारी न हो ।
नीमन-(हिं०वि०) अच्छा भला, नीरोग ।
नीमर-(हिं०वि०) दुर्बल, बलहीन ।
नीमस्तीन-(हिं०स्त्री०) आधे बाँह की कुरती ।
नीर--(सं०नपुं०) जल, पानी, कोई द्रव पदार्थ ।
नीरज-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, मोती, उशीर, **नीरजात**-(सं०वि०) जल से उत्पन्न, (नपुं०) कमल ।
नीरद-(सं०पुं०) मेघ, बादल, (वि०) अदन्त, बिना दाँत का । **नीरधर**-(सं०नपुं०) मेघ, बादल ।
नीरन्ध्र--(सं०वि०) छिद्र रहित ।
नीरम-(हिं०पुं०) वह बोझ जो जहाज का समभार करने के लिये रक्खा जाता है
नीररुह-(सं०नपुं०) पद्म, कमल ।
नीरस-(सं०वि०) सूखा, स्वाद रहित ।
नीराजन-(सं०नपुं०) दीपदान, आरती ।
नीराजना-(हिं०स्त्री०) देवता को दीपक दिखलाने की विधि ।
नीराञ्जन(सं०पुं०) दीपदान, आरती ।
नीरुज-(सं०वि०) रोगरहित, नीरोग, स्वस्थ ।
नीरूप-(सं०वि०) रूपहीन, कुरूप ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नीरे-(हिं०क्रि०वि०) नियरे, पास में।
नीरोग-(हिं०वि०) रोगहीन, आरोग्य।
नील-(सं०पुं०) गहरा नीला रंग।
नीलकण्टक-(सं०पुं०) चातक पक्षी, पपीहा। नीलकण्ठ-(सं०वि०) जिसका कंठ नीला हो, एक प्रकार की चिड़िया जिसके पंख और कंठ नीले रंग के होते हैं। नीलगाय-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा हरिन जो गाय के बराबर होता है।
नीलपद्म-(सं०नपुं०) नीला कमल।
नीलफला-(सं०स्त्री०) बैंगन, भंटा।
नीलमणि-(सं०पुं०) इन्द्रनील, नीलम।
नीला-(हिं०वि०) नीले रंग का, (पुं०) नीलम।
नीलाथोथा-(हिं०पुं०) ताँबे का क्षार, तूतिया।
नीराम्बर-(वि०) नीला वस्त्र पहिरने वाला।
नीलाम्बुज-(सं०नपुं०) नील कमल।
नीलाहट-(हिं०स्त्री०) नीलापन।
नीलिमा-(हिं०स्त्री०) नीलापन।
नीली-(हिं०वि०) नीले रंग की।
नीलोत्पल-(सं०नपुं०) नीला कमल।
नीवँ (हिं० स्त्री०) भीत का आधार, स्थिति, जड़, मूल।
नीव-(हिं०स्त्री०) देखो नींव।
नीवानास-(हिं०पुं०) सत्यानाश, सर्वनाश
नीवार-(सं०पुं०) तिन्नी का चावल।
नीवि-(सं०स्त्री०) पण, पूंजी, स्त्री का कमर परके वस्त्र का बाँधने का डोरा, कमर में लपेटी हुई धोती की गाँठ। लहँगे में पड़ी हुई डोरी।
नीसक-(हिं०वि०) बलहीन।
नीसुआ, नीसू-(हिं०पुं०) भूमि में गड़ा हुआ लकड़ी का कुन्दा जिस पर रखकर गड़ांसे से चारा काटा जाता है।
नीहार-(सं०पुं०) तुषार, हिम, पाला,
नुकाना-(हिं०क्रि०) छिपाना।
नुकीला-(हिं०वि०) नोकदार।
नुक्कड़-(हिं०पुं०) नोक, अन्त, छोर,
नुक्का-(हिं०पुं०) नोक, नुकीला भाग।
नुचना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का खिंच कर अलग होना, उखड़ना, खरोंचा जाना।
नुचवाना-(हिं०क्रि०) नोचने के लिये किसी दूसरे को लगाना।
नुति-(सं०स्त्री०) स्तुति, वन्दना, पूजा।
नुनखरा, नुनखारा-(हिं०वि०) स्वाद में नमक के सदृश।
नुनना-(हिं०क्रि०) लुनना, कृषिफल काटना।
नुनेरा-(हिं०पुं०) नोनिया, नमक बनाने वाला।
नुनाई-(हिं०स्त्री०) सुन्दरता, लावण्य।
नूत-(हिं०वि०) नूतन, नया, अनोखा, (सं०वि०) नवीन, नया, अपूर्व, अनोखा।
नून-(हिं०हिं०) लवण, नमक, (वि०) देखो न्यून, कम।
नूनताई-(हिं०स्त्री०) न्यूनता, कमी।
नूपुर-(सं०पुं०) स्त्रियों के पैर में पहिरने का एक गहना, पैजनी।
नृ-(सं०पुं०) मनुष्य, पुरुष। नृकेशरी-(सं०पुं०) नृसिंहावतार। नृघ्न-(सं० वि०) नर घातक। नृजाति-(सं०स्त्री०) मनुष्य जाति।
नृतक-(हिं०वि०) नर्तक, नाचने वाला।
नृत्य-(सं०वि०) ताण्डव नाच। नृत्यकी-(सं०स्त्री०) नर्तकी, नाचने वाली।
नृत्यशाला-(सं०स्त्री०) नाचघर।
नृदेव, नृदेवता-(सं०पुं०) राजा, ब्राह्मण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नृप-(सं०पुं०) नरपति, राजा। **नृप-गृह**-राजामहल। **नृपति**-(सं०पुं०) पुं०) राजा; **नृपमन्दिर**-(सं०नपुं०) राजगृह, राजभवन।
नृपाल-(सं०पुं०) नृपति, राजा।
नृमेध-(सं०पुं०) नरमेध यज्ञ।
नृलोक-(सं०पुं०) मनुष्य लोक।
नृवाहन-(सं०पुं०) नरवाहन, कुबेर।
नृशंस-(सं०वि०) क्रूर, निर्दय, अपकारी; (सं०स्त्री०) निर्दयता, क्रूरता।
नृसिंह-(सं०पुं०) विष्णुका नरसिंह रूपी अवतार। **नृसिंह चतुर्दशी**-वैसाख मास की शुक्ला चतुर्दशी।
नृहन-(सं०पुं०) नरघातक।
ने-(हिं०प्रत्य०) सकर्मक भूत कालिक क्रिया के कर्ता का चिह्न जो उसके आगे लगाया जाता है।
नेउतना-(हिं०क्रि०) निमंत्रण देना।
नेउला-(हिं०पुं०) देखो नवला।
नेग-(हिं०पुं०) पुरस्कार जो विवाह आदि शुभ अवसरों पर संबंधियों आश्रितों तथा इन कृत्यों में सहायता देनवालों को दिया जाता है। **नेग-चार, नेगजोग**-(हिं०पुं०) विवाह आदि शुभ अवसरों पर दिया हुआ पुरस्कार; **नेगी**-(हिं०पुं०) नेग पाने वाला। **नेगीजोगी**-(हिं० पुं०) नेग पाने वाला।
नेछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर।
नेटा-(हिं०पुं०) नाक से निकलने वाला कफ।
नेठना-(हिं०क्रि०) देखो नाठना।
नेड़े-(हिं०स्त्री०) समीप, निकट, पास।
नेत-(हिं०पुं०) निर्धारण, निश्चय।
नेता-(हिं०पुं०) नायक, सरदार, अगुआ।
नेति-(सं०पुं०) एक संस्कृत वाक्य जिस जिसका अर्थ है "इति नहीं" अर्थात् अन्त नहीं है।
नेती-(हिं०स्त्री०) मथानी में लपेट कर खींचने की रस्सी। **नेतीधोती**-(हिं०स्त्री०) हठयोग की वह क्रिया जिसमें कपड़े की धज्जी पेट में डालकर आँतें साफ की जाती है।
नेतृत्व-(सं०नपुं०) नायकता, अध्यक्षता।
नेत्र-(सं०नपुं०) चक्षु, नयन, आँख। **नेत्रकोष**-आँख का परदा।
नेत्रजल-(सं०नपुं०) अश्रु, आँसू। **नेत्रमल**-(सं० नपुं०) आँख का कीचड़; **नेत्ररञ्जन**-(सं० नपुं०) कज्जल, काजल; **नेत्ररोम**-(सं० नपुं०) आँख की बरोनी। **नेत्रवारि**-(सं०नपुं०) अश्रुजल, आँसू।
नेनुआ, नेनुवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की तरकारी, घिया तरोई।
नेपथ्य-(सं०पुं०) वेष, भूषण, अभिनय, नाटक आदि में परदे के भीतर का वह स्थान जिसमें नट नटी नाना प्रकार के वेश सजते हैं।
नेब-(हिं०पुं०) सहायक, मंत्री, दीवान।
नेबु-(हिं०पुं०) देखो नीबू।
नेम-(हिं०पुं०) नियम, बन्धेज, रीति।
नेमत-(हिं०स्त्री०) वैभव।
नेमि-(सं०स्त्री०) पहिये का घेरा, चक्कर, वज्र, कुवें की जगत,
नेमी-(हिं०वि०) धर्म की दृष्टि से पाठ, पूजा, व्रत, उपवास आदि नियमों का पालन करने वाला।
नेरे-(हिं०क्रि०वि०) निकट, समीप, पास।
नेवज-(हिं०पुं०) नैवेद्य, भोग।
नेवतना-(हिं०क्रि०) निमंत्रण देना, नेवता भेजना। **नेवतहरी**-(हिं०पुं०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसको निमन्त्रण दिया जावे।
नेवता-(हिं०पुं०) देखो न्यौता।
नेवर-(हिं०पुं०) पैर का गहना, (वि०) बुरा। **नेवरना**-(हिं०क्रि०) दूर होना, समाप्त होना।
नेवला-(हिं०पुं०) गिलहरी के आकार का माँसाहारी एक जन्तु जो भूरे रंग का होता है।
नेवा-(हिं०पुं०) लोकोक्ति, कहावत।
नेष्ट-(सं०वि०) शास्त्र से निषिद्ध।
नेसुक-(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा, तनिक; (क्रि०वि०) अल्प मात्रा में।
नेह-(हिं०पुं०) स्नेह, प्रीति, प्रेम, घी।
नेही-(हिं०वि०) स्नेह करने वाला।
नैक-(सं०वि०) अनेक, बहुत।
नैकशः-(सं०वि०) अनेक बार।
नैकशेय-(सं०पुं०) राक्षस।
नैगम-(सं०नपुं०) नय, नीति।
नैदाघ-(सं०वि०) ग्रीष्म संबंधी।
नैधन-(सं०नपुं०) निधन, मरण।
नैन-(हिं०पुं०) नयन, नेत्र, मक्खन; **नैनसुख**-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सूती चिकना कपड़ा।
नैपुण, नैपुण्य-(सं०नपुं०) निपुणता।
नैमित्तिक-(सं०वि०) जो किसी मिमित्त से किया जाय।
नैया-(हिं०स्त्री०) नाव।
नैयायिक-(सं०पुं०) न्याय शास्त्र का जानने वाला।
नैर-(हिं०पुं०) देश, नगर।
नैरपेक्ष-(सं०नपुं०) अपेक्षा का अभाव।
नैराश्य-(सं०नपुं०) निराशा का भाव।
नैर्ऋत-(सं०पुं०) पश्चिम दक्षिण का कोना, इसका स्वामी।
नैर्ऋति-(सं० स्त्री०) दक्षिण और पश्चिम दिशा के बीच की दिशा।
नैर्मल्य-(सं०नपुं०) स्वच्छता, निर्मलता।
नैर्लज्ज-(सं०नपुं०) निर्लज्जता।
नैवेद्य-(सं० नपुं०) वह भोजन की सामग्री जो देवता को चढ़ाई जावे।
नैश-(सं०वि०) निशा संबंधी, रात का।
नैश्चित्य-(सं०नपुं०) निश्चय।
नैज-(सं०वि०) निज संबंधी, अपना।
नैष्ठुर्य-(सं०नपुं०) निठुरता, क्रूरता।
नैसर्गिक-(सं० वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक।
नैसर्गकी-(हिं०वि०) स्वाभाविक।
नैसा-(हिं०वि०) बुरा।
नैहर-(हिं०पुं०) स्त्री के पिता का घर, मायका।
नो-(सं०अव्य०) नहीं।
नोआ-(हिं०पुं०) दूध दुहते समय गाय के पैर बाँधने की रस्सी।
नोई-(हिं०स्त्री०) देखो नोआ।
नोकझोंक-(हिं०स्त्री०) शृंगार, ठाट-बाट।
नोकदार-(हिं०वि०) जिसमें नोक हो। चुभने वाला, चित्त पर प्रभाव डालने वाला, तड़कभड़क का।
नोकाझोंकी-(हिं०स्त्री०) वादाविवाद, छेड़छाड़ की बातें।
नोकीला-(हिं०वि०) देखो नुकीला।
नोच-(हिं०स्त्री०) नोचने की क्रिया या भाव, चारों ओर की माँग। **नोचना**-(हिं० क्रि०) उखाड़ना, खरोचना, पीछे पड़ जाना।
नोचू-(हिं०पुं०) नोचने वाला।
नोदन-(सं०नपुं०) खंडन, प्रेरणा।
नोधा-(सं०अव्य०) नवधा, नव प्रकार।
नोन-(हिं०पुं०) लवण, नमक।
नोनचा-(हिं०पुं०) नमकीन अचार।
नोना-(हिं०पुं०) लोनी मिट्टी। (वि०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नमक मिला हुआ , खारा ।
नोनिया-(हिं०पुं०) लोनी मिट्टी में से नमक निकालने वाला ।
नोवना-(हिं०क्रि०) दूहते समय गाय का पिछला पैर रस्सी से बाँधना ।
नोहर-(हिं०वि०) दुर्लभ, अलभ्य ।
नौं-(सं०स्त्री०) नौका, नाव ।
नौ-(हिं०वि०) नव, जो गिनती में आठ और एक हों, एक कम दस की संख्या ।
नौका-(सं०स्त्री०) तरणि, नाव, पोत ।
नौग्रही-(हिं०स्त्री०) हाथ में पहिरने का एक गहना ।
नौछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर ।
नौज-(हिं०अव्य०) ईश्वर करे, ऐसा न हो कि, न सही न हों ।
नौजीविक-(सं०पुं०) वह जो नाव चला कर अपनी जीविका करता हो ।
नौता-(हिं०पुं०) देखो न्यौता, निमंत्रण (वि०) नया ।
नौतन-(हि०वि०) देखो नूतन, नया ।
नौतम-(हिं० वि०) अत्यन्त नवीन, बहुत नया, (पुं०) विनय, नम्रता ।
नौतोड़-(हिं०वि०) नया तोड़ा हुआ, जो पहिले पहिल तोड़ा गया हो ।
नौदण्ड-(सं०पुं०) नाव का डाँड़ा ।
नौध्र-(हिं०पुं०) नया पौधा, अंखुवा ।
नौधा-(हिं०पुं०) देखो नवधा ।
नौना-(हिं०पुं०) नवना, झुकना ।
नौमि-(सं०क्रि०) एक संस्कृत का वाक्य जिसका अर्थ है—मैं नमस्कार करता हूँ ।
नौमी-(हिं०स्त्री०) नवमी, किसी पक्ष की की नवीं तिथि ।
नौरंगी-(हिं०स्त्री०) देखो नारंगी ।
नौलक्खा, नौलखा-(हिं०वि०) जिसका मूल्य नौ लाख हो, बहुमूल्य, अनमोल ।
नौला-(हिं०पुं०) देखो नवला, नकुल ।
नौसरा-(हिं०पुं०) नौ लड़ी की माला या हार ।
नौसादर-(हिं०पुं०) एक तीक्ष्ण क्षार या नमक जो सींग, हड्डी, खुर, बाल आदि का भभके से अर्क खींच कर निकाला जाता है ।
नौसिख-(हिं०वि०) नवशिक्षित ।
नौसिखिया, नौसिखुआ-(हिं० वि०) जो किसी विद्या या कला में पक्का न हुआ हो ।
नौसेना-(सं०स्त्री०) वह सेना जो जहाजों पर से लड़ती हो ।
नौहँड़-(हिं०पुं०) मिट्टी की नई हाँड़ी, कोरी हँडिया ।
नौहँड़ा-(हिं०पुं०) पितृपक्ष, कनागत ।
न्यग्रोध-(सं०पुं०) वट वृक्ष, बरगद ।
न्यस्त-(सं०वि०) फेंका हुआ, त्यक्त, छोड़ा हुआ ।
न्याउ-(हिं०पुं०) देखो न्याय ।
न्याति-(हिं०स्त्री०) ज्ञाति, जाति ।
न्याय-(सं०पुं०) नियम के अनुकूल बात, नीति, अधिकारी और अनाधिकारी तथा दोषी और निर्दोषी का निर्णय ।
न्यायकर्ता-(सं०पुं०) न्याय करने वाला दो पक्षों के विवाद का निर्णय करने वाला, **न्यायतः**-(सं०अव्य०) धर्माधर्म और नीति के अनुसार ठीक न्याय ।
न्यायता-(सं०स्त्री०) उपयुक्तता ।
न्यायपथ-उचित रीति । **न्यायपरता**-(सं०स्त्री०) न्यायी होने का भाव ।
न्याययुक्त-न्याय पर चलनेवाला ।
न्याय विहित-न्याय के अनुसार अथवा न्याय पूर्वक किया हुआ ।
न्यायसभा-(सं०स्त्री०) न्यायालय ।
न्यायाधीश-(सं०पुं०) न्यायकर्ता ।
न्यायालय-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर अभियोग का न्याय किया जाता है।

न्यायी-(सं०वि०) न्याय पर चलने वाला

न्यारा-(हिं०वि०) अलग, निराला, अनोखा, भिन्न, अन्य।

न्यारिया-(हिं०पुं०) सोनारों के नियार (कूड़ा करकरट को) धोकर इसमें से सोना चाँदी निकालने वाला।

न्यारे-(हिं०क्रि०वि०) दूर, अलग, पास नहीं, पृथक्।

न्याव-(हिं०पुं०) नियम, नीति, आचरण पद्धति।

न्यास-(सं०पुं०) उपनिधि, धरोहर। थाती, निक्षेप।

न्यासिक-(सं०वि०) धरोहर रखनेवाला

न्यून-(सं०वि०) क्षुद्र, हीन, अल्प, नीच, **न्यूनतर**-(सं०वि०) प्रचलित परिमाण से कम, **न्यूनता**-(सं०स्त्री०)-अल्पता, कमी।

न्यूनाङ्ग-(सं० वि०) अंगहीन, खंज, लंगड़ा।

न्योछावर-(हिं०स्त्री०) देखो निछावर।

न्योतना-(हिं०क्रि०) निमंत्रित करना।

न्योतहरी-(हिं०पुं०) न्यौते में आया हुआ मनुष्य।

न्योला-(हिं०पुं०) देखो नेवला।

न्हाना-(हिं०क्रि०) हखो नहाना, स्नान करना।

प

प-हिन्दी तथा संस्कृत वर्णमाला के व्यञ्जन वर्ण का इक्कीसवाँ अक्षर, इसाका उच्चारण ओंठ से होता है। यह स्पर्श वर्ण कहलाता है।

प-(सं०पुं०) हवा, पत्ता, पतन, अन्त, शब्द के अन्त में लगने से इसका अर्थ 'पालन करने वाला' होता है।

पंक-(देखो पङ्क) पंक्ति, देखो पंक्ति।

पंख-(हिं०पुं०) पक्ष, पर, डैना,

पंखड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पखड़ी।

पंखा-(हिं०पुं०) व्यजन, विजना, बेना।

पंखियाँ,पंखी-(हिं०प०) पक्षी,चिड़िया, पखड़ी, (स्त्री०) छोटा पंखा, पहिये की कीचड़ रोकने की धातु या लकड़ी की पट्टी।

पंखुड़ा, पखुरा-(हिं०पुं०) कन्धे और बाँह का जोड़, पखुरा।

पंखेरू-(हिं०पुं०) पखेरू, पक्षी।

पंग-(हिं०वि०) पंगु, लंगड़ा।

पंगत-(हिं०स्त्री०) पाँती, भोजनके समय भोजन करने वालों की पंक्ति, सभा, समाज।

पंच-(हिं०पुं०) पाँच की संख्या या अंक, पाँच या अधिक मनुष्योंका समुदाय समाज, न्याय सभा।

पंचकोस-(हिं०पुं०) पाँच कोस की लंबाई, चौड़ाई के बीच में बसी हुई भूमि, **पंचक्रोशी**-(हिं०स्त्री०) काशी की परिक्रमा।

पंचतपा-(हिं०पुं०) अपने चारों ओर आग जलाकर तथा धूप में बैठकर तप करने वाला साधु।

पचमेल-(हिं०वि०) जिसमें पांच वस्तु मिली हों।

पँचरंगा-(हिं०वि०) पाँच रंग का, रंग-बिरंगा।

पँचलड़ा-(हिं०वि०) पाँच लड़ों का।

पँचलड़ी या पचलरी-(हिं० स्त्री०) गले में पहिरने की पाँच लरों की माला।

पंचानबे-(हिं०वि०) नब्बे और पाँच की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संख्या का, (पुं०) नब्बे और पाँच की संख्या—९५ ।

पंचायत-(हिं०स्त्री०) निर्धारित मनुष्यों का वह समाज जो किसी विवाद विषय को निश्चित करने के लिये नियुक्त किय जाता है ।

पंचायती-(हिं०वि०) पंचायत संबंधी, साझे का, मिला जुला, सर्व साधारण का ।

पंचालिस-(हिं०वि०) देखो पैंतालिस ।

पंछा-(हिं०पुं०) छाला, फफोला, एक प्रकार का स्राव जो मनुष्य की शरीर से अथवा पौधों में से निकलता है ।

पंछी-(हिं०पुं०) पक्षी, चिड़िया ।

पंजरी-(हिं०स्त्री०') अरथी, टिकठी ।

पंजारा-(हिं०पुं०) रुई धुननेवाला, धुनिया

पंजीरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।

पंडल-(हिं०वि०) पीले रंग का (पुं०). (पुं०) शरीर, पिण्ड ।

पँड़वा-(हिं०पुं०) भैंस का बच्चा ।

पंडा-(हिं०पुं०) किसी तीर्थ या मन्दिर का पुजारी, घाटिया, (सं०स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि, विवेक ।

पंडित-(हिं०पुं०) देखो पण्डित । **पंडिताई**-(हिं०स्त्री०) पाण्डित्य, विद्वता । **पंडिताऊ**-(हिं०वि०) पंडितों के ढंग का । **पंडितानी**-(हिं०स्त्री०) पंडित की स्त्री, ब्राह्मणी ।

पंथ-(हिं०पुं०) रीति, चाल, व्यवस्था, संप्रदाय, धर्ममार्ग, मत,

पंथान-(हिं०पुं०) पथ, मार्ग ।

पंथकी, पंथिक-(हिं०पुं०) पथिक, बटोही

पंथी-(हिं०पुं०) किसी संप्रदाय का अनुयायी ।

पंदरह-(हिं०वि०) दस और पाँच की संख्या का-(पुं०) दस और पाँच की संख्या १५ । **पंदरहवाँ**-(हिं०वि०) जो पन्द्रह के स्थान पर हो ।

पंधलाना-(हिं०क्रि०) फुसलाना, बहलाना।

पँवर-(हिं०स्त्री०) सामान, सामग्री ।

पँवरना-(हिं०क्रि०) पानी में तैरना, पता लगाना ।

पँवरि-(हिं०स्त्री०) ड्योढ़ी ।

पँवरिया-(हिं०पुं०) द्वारपाल, शुभ अवसर पर द्वार पर बैठ कर मंगल गीत गाने वाला. भिक्षुक ।

पँवरीह-(हिं०स्त्री०) खड़ाऊँ ।

पँवाड़ा-(हिं०पुं०) मनगढ़ी कहानी, वृथा के विस्तार सहित कही हुई बात ।

पँवारना-(हिं०क्रि०) हटाना, दूर करना ।

पंसरहट्टा-(हिं०पुं०) वह हाट जहाँ पंसारियों की दूकान हो । **पंसारी**-(हिं०पुं०) वह बनिया जो मसाले तथा औषधि के लिये जड़ी बूटी बेंचता हो ।

पंसली-(हिं०स्त्री०) देखो पसली ।

पंसेरी-(हिं०स्त्री०) पाँच सेर की तौल या बाट ।

पइसना-(हिं०क्रि०) पैठना, घुसना ।

पइसार-(हिं०पुं०) प्रवेश, पैठ ।

पकड़-(हिं०स्त्री०) पकड़ने का ढंग, भिड़ंत, लड़ाई, दोष या भूल, ढूढ़ कर निकालने की क्रिया ; **पकड़ना**-(हिं०क्रि०) थामना, धरना, पता लगाना, रोक रखना, ठहराना,

पकड़वाना-(हिं०क्रि०) पकड़ने में दूसरे को प्रवृत्त करना, **पकड़ाना**। (हिं०क्रि०) ग्रहण कराना, थांभना ।

पकना-(हिं०क्रि०) सीझना, रींधना, चुरना, सौदा पटाना, आँच खाकर गलना या तैयार होना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पकरना-(हिं०क्रि०) देखो पकड़ना ।
पकवान-(हिं०पुं०) घी या तेल में पका कर बनाया हुआ खाद्य पदार्थ ।
पकवाना-(हिं०क्रि०) पकाने का काम दूसरे से कराना ।
पकाई-(हिं०स्त्री०) पकाने की क्रिया या शुल्क ।
पकार-(सं०पुं०) 'प' अक्षर, 'प' स्वरूप वर्ण, **पकारादि**-(सं०वि०)जिसके आदि आदि में 'प' अक्षर हो । **पकारान्त**-(सं०वि०) जिसके अंत में 'प' अक्षर हो । **पकाव**-(सं०पुं०) पकाने का भाव, पीव ।
पकावन-(हिं०पुं०) देखो पकवान ।
पकौड़ा-(हिं०पुं०) घी या तेल में पकी हुई बेसन या पीठी की बरी । **पकौड़ी**-(हिं०स्त्री०) छोटे आकार का पकौड़ा ।
पक्का-(हिं०पुं०) अन्न या फल जो पुष्ट होकर खाने योग्य हो गया हो, पका हुआ, अनुभव प्राप्त, निपुण, निश्चित, प्रामाणिक ।
पक्व-(सं०वि०) पका हुआ, पुष्ट, पक्का
पक्वान्न-(सं०नपुं०) पका हुआ अन्न, खाने की वस्तु जो घी पानी आदि के साथ आग पर पकाई गई हो । **पक्वाशय**-(सं०पुं०)पेट के भीतर का नाभि के नीचे का भाग ।
पक्ष-(सं०पुं०) पंद्रह दिन का काल, पाख, पक्षियोंका डैना, पर, किसी विषय के दो या अधिक परस्पर भिन्न अंगों में से एक, सेना बल; **पक्षघात**-(सं०पुं०) वह वात रोग जिसमें शरीर के एक ओर के अंग सुन्न हो जाते हैं, लकवा । **पक्षधर**-(सं०पुं०) चन्द्रमा, पक्षी; **पक्षपात**-(सं०पुं०) अनुचित और उचित का विचार न करते हुए किसी के अनुकूल प्रवृत्ति ।
पक्षपाती-(सं०वि०) उचित अनुचित विचार न करके किसी के अनुकूल प्रवृत्त होना । **पक्षपोषक**-(सं०वि०) पक्षसमर्थक ।
पक्षाघात-(सं०पुं०) एक प्रकार का वायु रोग जिसमें शरीरका आधा भाग निश्चेष्ट और क्रियाहीन हो जाता है, लकवा ।
पक्षान्तर-(सं०नपुं०) दूसरा पक्ष, मतान्तर ।
पक्षिशाला-(सं० स्त्री०) चिड़ियों के रहने का घर । **पक्षी**-(सं०पुं०) खग ।
पक्षी-(सं०पुं०) खग, विहंगम, शकुन्त, चिड़िया, (हिं०वि०) पक्षपाती ।
पक्ष्म-(हिं०पुं०) आँख की बरौनी ।
पखंड-(हिं०पुं०)देखो पाखण्ड; **पखण्डी**-(हिं०वि०) देखो पाखण्डी ।
पखडी-(हिं०स्त्री०) दल, फूलों का रंगीन पटल ।
पखपान-(हिं०पुं०) पैर में पहिरने का एक गहना ।
पखरना-(हिं०क्रि०) धोना । **पखराना**-(हिं०क्रि०) पखारने या धोने का काम कराना ।
पखरी-(हिं०स्त्री०)देखो पाखर,पाखड़ी ।
पखवाड़ा, पखवारा-(हिं०पुं०) अर्धमास, पन्द्रह दिन का समय ।
पखान-(हिं०पुं०)देखो पाषाण,पत्थर । **पखाना**-(हिं०पुं०) उपाख्यान, कथा, कहावत ।
पखारना-(हिं०क्रि०) पानी से धोकर मैल हटाना ।
पखाली-(हिं०पुं०) मसक में पानी भरने वाला ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पखावज-(हिं०स्त्री०) मृदंग से छोटा एक प्रकार का बाजा। **पखावजी**-(हिं० पुं०) पखावज बजाने वाला।
पखिया-(हिं०पुं०) झगड़ा करने वाला, बगली भाग।
पखेरू-(हिं०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
पखौआ-(हिं०पुं०) पंख, पर।
पखौटा-(हिं०पुं०) डैना, पर।
पखौरा-(हिं०पुं०) कंधे पर की हड्डी।
पग-(हिं०पुं०) पैर, पाँव, डग, फाल;
पगडंडी-(हिं०स्त्री०) मैदान या जंगल का वह पतला मार्ग जो मनुष्यों के चलने से बन गया हो।
पगड़ी-(हिं०स्त्री०) सिर पर लपेट कर बाँधने का कपड़ा, चीरा, उष्णीश, मुरेठा।
पगतरी-(हिं०स्त्री०) उपानह, जूता।
पगदासी-(हिं०स्त्री०) जूता, खड़ाऊँ।
पगना-(हिं०स्त्री०) रस के साथ पक कर मिलना, मग्न होना, प्रेम में डूबना।
पगनियाँ-(हिं०स्त्री०) जूती।
पगपान-(सं०पुं०) पैर में पहिरने का एक गहना।
पगरा-(हिं०पुं०) डग, पग।
पगरी-(हिं०स्त्री०) देखो पगड़ी।
पगला-(हिं०पुं०) देखो पागल।
पगहा-(हिं०पुं०) पशु बाँधने की रस्सी।
पगा-(हिं०पुं०) पटका, डुपट्टा।
पगाना-(हिं०क्रि०) चाशनी में किसी वस्तु को पागने काकाम दूसरेसे कराना।
पगार-(हिं०पुं०) पैर में लगी हुई मिट्टी
पगारना-(हिं०क्रि०) फैलाना।
पगियाना-(हिं०क्रि०) देखो पगाना।
पगिया-(हिं०स्त्री०) देखो पगड़ी।
पगुरना-(हिं०क्रि०) पागुर करना।
पघा-(हिं०पुं०) चौपायों को बाँधने की रस्सी, पगहा।
पघिलाना-(हिं०क्रि०) देखो पिघलाना।
पघैया-(हिं०पुं०) गाँव गाँव घूम घूम कर माल बचनेवाला व्यापारी।
पङ्क-(सं०पुं०) कीचड़, कींच, लेप, मगर। **पङ्कज**-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, (वि०) कीचड़ में उत्पन्न होने वाला। **पङ्कजात**-((सं०पुं०) पद्म, कमल। **पङ्कजावली**-(सं०स्त्री०) पद्म समूह। **पङ्कजह**-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
पङ्किल-(सं०वि०) कीचड़से भरा हुआ।
पङ्केज-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
पङ्केरुह-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
पङ्कित-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
पंक्ति-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पाँती। भोज में एक साथ बैठ कर खाने वालों की श्रणी। **पङ्क्तिच्युत**-(सं०वि०) जाति से निकाला हुआ।
पङ्गु-(सं०वि०) खंज, लंगड़ा।
पंगुता-(सं०स्त्री०) पंगुत्व, लंगड़ापन।
पंगुल-(सं०वि०) लंगड़ा।
पचकना-(हि०क्रि०) देखो पिचकना।
पचगुना-(हिं०वि०) पाँच गुना।
पचड़ा-(हिं०पुं०) प्रपंच, बखेड़ा, झंझट।
पचन-(सं०नपुं०) पकनेया पकाने की क्रिया, (वि०) पकाने वाला।
पचना-(हिं०क्रि०) भोजन किय हुए पदार्थ का रसादि में परिणित होकर शरीर में लगने योग्य होना, समाप्त होना, नष्ट होना।
पचनीय-(सं०वि०) पचने योग्य।
पचपचा-(हिं०वि०) वह अधपका भोजन जिसका पानी अच्छी तरह से सूखा या जला न हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पचपचाना-(हिं०क्रि०) कीचड़ होना।
पचपन-(हिं०वि०) पचास और पाँच की संख्या का, (वि०) पचास और पाँच की संख्या ५५। **पचपनवाँ**-(हिं०वि०) जो गिनती में चौवन के बाद हो।
पचमेल(हिं०वि०)कई तरह या मेल का
पचरा-(हिं०पुं०) देखो पचड़ा।
पचलड़ी-(हिं०स्त्री०) पाँच लड़ियों की माला या हार।
पचहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और पाँच की संख्या का, (पुं०) सत्तर और पाँच की संख्या। **पचहत्तरवाँ**-(हिं० वि०) जिसका क्रम चौहत्तर के बाद हो
पचहरा-(हिं०वि०) पाँच परत का।
पचाना-(हिं०क्रि०) आँच की सहायता से गलाना, खाई हुई वस्तु को जठराग्नि की सहायता से रसादि में परिणित करके शरीर में लगन योग्य बनाना, जीर्ण करना, नष्ट करना, पराये माल को अपना कर लेना, समाप्त करना।
पचारना-(हिं०क्रि०) ललकारना।
पचाव-(हिं०पुं०) पचने की क्रिया या भाव।
पचास-(हिं०वि०) चालीस और दस की संख्या का, (पुं०) चालीस और दस की संख्या ५०। **पचासवाँ**-(हिं०वि०) गिनती में पचास के स्थान पर पड़ने वाला। **पचासा**-(हिं०पुं०) एक ही प्रकार की पचास चीजों का समूह।
पचासी-(हिं०वि०) अस्सी और पाँच की संख्या का, (पुं०) अस्सी और पाँच की संख्या, ८५। **पचासीवां**-(हिं०वि०) जो क्रम से ८५ के स्थान पर हो।
पचित-(सं०वि०) जड़ा हुआ, बैठाया हुआ।
पचीस-(हिं०वि०) बीस और पाँच की संख्या का। (पुं०) बीस और पाँच की संख्या २५। **पचीसवाँ**-(हिं०वि०) जो गणना में पचीस के स्थान पर हो।
पचूका-(हिं०पु०) पिचकारी।
पचोतर-(हिं०वि०) किसी संख्या से पाँच अधिक। **पचोतरसो**-(हिं०पुं०) एक सौ पाँच की संख्या।
पचौनी-(हिं०स्त्री०) पाचन।
पचौर-(हिं०पुं०) गाँव का मुखिया।
पचौबर-(हिं०वि०) पाँच तह या परत किया हूआ।
पच्चड़, पच्चर-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का या बाँस की फट्टी।
पच्ची-(हिं०स्त्री०) धातु के बने पदार्थ पर किसी अन्य वस्तु के पत्तर का जड़ाव।
पच्छ-(हिं पुं०) देखो पक्ष। **पच्छघात**-(हिं०पुं०) देखो पक्षघात।
पच्छम, पच्छिम-(हिं०पुं०)देखो पश्चिम, पश्चिम, पिछला, पीछे का।
पच्छी-(हिं०स्त्री०) पिक्षी, चिड़िया।
पछड़ना-(हिं०क्रि०) लड़ने में पटका जाना, पिछाड़ना।
पछताना-(हिं०क्रि०)पश्चात्ताप करना,
पछतानि-(हिं०स्त्री०) पश्चाताप।
पछतावा-(हिं०पुं०)अनुताप,पश्चाताप।
पछना-(हिं०क्रि०) पाछा जाना, (पुं०) पाछने का यन्त्र।
पछमन(हिं०क्रि०वि०) पीछे।
पछरना-(हिं०क्रि०) लौटना; **पछरा**-(हिं०पुं०) पछाड़।
पछलगा-(हिं०पुं०) अनुयायी।
पछवाँ-(हिं०वि०) पश्चिमी।
पछांह-(हिं०स्त्री०) पश्चिम की ओर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का प्रदेश । **पछांहियाँ**-(हिं०वि०) पश्चिम देश का।

पछाड़-(हिं०स्त्री०) मूर्छित होकर गिरना । **पछाड़ना**-(हिं०क्रि०)लड़ाई या मल्लयुद्ध में पटकना या गिराना, कपड़े को धोने के लिये पटकना ।

पछाड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पिछाड़ी ।

पछाया-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का पिछला भाग ।

पछारना-(हिं०क्रि०) कपड़े को पटक कर धोना ।

पछांहीं-(हिं०वि०) पश्चिम प्रदेश का ।

पछियाना-(हिं०क्रि०) पीछे पीछे चलना

पछिताना-(हिं०क्रि०) देखो पछताना ।

पछिताव-(हिं०पुं०) देखो पछतावा ।

पछिलना-(हिं०क्रि०) देखो पिछड़ना ।

पछिला-(हिं०वि०) देखो पिछला ।

पछिवाँ-(हिं०वि०)पच्छिम की, (स्त्री०) पश्चिम की हवा ।

पछला-(हिं०पुं०) स्त्रियोंके हाथ में पहिरने का एक गहना,मठिया, (वि०) पिछला । **पछली**-(हिं०स्त्री०) हाथ का एक आभूषण ।

पछोड़ना,पछोरना-(हिं० क्रि०) सूप आदि में रख कर तथा फटक कर अन्न आदि को स्वच्छ करना ।

पछौरा-(हिं०पुं०) दखो पिछौरा ।

पजोड़ा-(हिं०वि०) दुष्ट, पाजी ।

पञ्च-(सं०पुं०) पाँच, पाँच संख्या युक्त । **पञ्चक**-(सं०नपुं०) पांच का समूह, धनिष्ठा आदि पाँच नक्षत्र, वह जिसमें पाँच अवयव हों ।

पञ्चकोण-(सं०नपुं०) पांच कोन का क्षत्र । **पञ्चक्रोशी**-(सं०स्त्री०) पाँच कोसकी लंबाई चौड़ाई के बीच में बसी हुई काशी नगरी ।

पञ्चगंगा-(सं०स्त्री०) गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा-इन पांच नदियों का समूह ।

पञ्चगव्य-(सं०नपुं०) गो संबंधी पांच प्रकार के द्रव्य यथा-दूध, दही, घी, गोवर और गोमूत्र ।

पञ्चगौड़-(सं०पुं०) ब्राह्मणों का वह विभाग जिसक अन्तर्गत सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल और उत्कल हैं । **पञ्चतत्व**-(सं०पुं०) पांच तत्वों का समुदाय जो पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश हैं ।

पञ्चमकार-(सं०पुं०) तन्त्रानुसार-मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन-पंच मकार कहलाते हैं । **पञ्चतन्त्र**-(सं०नपुं०) विष्णुशर्मा विरचित एक संस्कृत ग्रन्थ का नाम ।

पञ्चत्व-(सं०नपुं०) मरण, मृत्यु ।

पञ्चदश-(सं०पुं०)पन्द्रहकी संख्या ।

पञ्चनद-(सं०पुं०) पंजाब प्रदेश ।

पञ्चपक्षी-(सं०पुं०) प्रश्नादि द्वारा शकुन जानने का शिवोक्त एक शास्त्र । **पञ्चपल्लव**-(सं०नपुं०) आम, जामुन कैथ, बिजौरा और बेल-,अथवा आम पीपल बर,पाकर और औदुम्बर; **पञ्चपात्र**-(सं०नपुं०) चौड़े मुख का गिलास के आकार का पात्र जो पूजा आदि में जल रखने के काम में आता है ।

पञ्चप्राण-(सं०पुं०) शरीर स्थित पांच प्राण वायु जिनके नाम-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान हैं; **पञ्चबाण**-(सं०पुं०) कामदेव के पांच बाण ।

पञ्चभूत-(सं०नपुं०) पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश ।

पञ्चम-(सं०वि०) पांचवा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पञ्चमी-(सं०स्त्री०) किसी पक्ष की पाँचवी तिथि।
पञ्चमुख-(सं०पुं०) सिंह।
पञ्चरत्न-(सं०नपुं०) पांच प्रकार के रत्न।
पञ्चरात्र-(सं०नपुं०) पांच रात में होने वाला यज्ञ, पांच रात।
पञ्चराशिक-(सं०पुं०) गणित जिसमें चार ज्ञात राशियों से पांचवीं निकाली जाती है।
पञ्चवायु-(सं०पुं०) शरीर में स्थित-प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान ये पाँच वायु।
पञ्चवार्षिक-(सं०वि०) पाँच बरस का।
पञ्चविध-(सं०वि०) पांच प्रकार का।
पञ्चशः-(सं०अव्य०) पांच पांच करके।
पञ्चशाख-(सं०वि०) पनशाखा, जिसमें पाँच बत्तियां हों।
पञ्चसन्धि-(सं०स्त्री०) व्याकरण में सन्धि के पाँच भेद।
पञ्चाक्षर-(सं०पुं०) प्रणव, पाँच अक्षर का मन्त्र।
पञ्चाङ्ग-(सं०नपुं०) किसी वृक्ष की छाल, पत्ता, फूल, फल और जड़, पुरश्चरण विशेष-जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण भोजन, ज्योतिष के अनुसार वह पंजिका जसमें वार तिथि, नक्षत्र, योग और करण लिखे हों।
पञ्चामृत-(सं०नपुं०) एक स्वादिष्ट द्रव्य जो घी, दूध दही मधु और चीनी मिलाकर बनाया जाता है।
पञ्चायत-(हिं० पुं०) भारतवर्ष की ग्राम्य विचारसभा, जो आपस के झगड़ निबटाती है।
पञ्चालिका-(सं०स्त्री०) पुतली, गुड़िया।
पञ्चाली-(सं०स्त्री०) गुड़िया।
पञ्चाशिका-(सं० स्त्री०) वह पुस्तक जिसमें पचास श्लोक या कविता हों।
पञ्जिका-(सं०स्त्री०) पांच खण्ड या अध्यायों का समूह।
पञ्चेन्द्रिय-(सं०नपुं०) पांच ज्ञानेन्द्रियां
पञ्जर-(सं०नपुं०) शरीरकी हड्डियों का समूह।
पञ्जि-(सं०स्त्री०) पंजिका, पंचाङ्ग; **पञ्चिका**-(सं०स्त्री०) रूई की प्योनी, तिथि वार आदि पञ्चाङ्ग युक्त पत्रिका।
पट-(सं०पु०नपुं०) वस्त्र, कपड़ा, चित्र बनाने का कागज या कपड़ा, छान, छप्पर, आड़, परदा, (हिं०पुं०) किवाड़ा, सिंहासन, चिपटी चौरस भूमि, (वि०) ऐसी स्थिति जिसमें पेट भूमि पर हो तथा पीठ आकाश की ओर, (वि०) तुरंत, शीघ्र;
पटकन-(हिं०स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, चपत, तमाचा, छोटा डंडा या छड़ी।
पटकना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को वेग के साथ ऊंचे स्थान से नीच को झोंक से गिराना।
पटकनिया-(हिं०स्त्री०) पटकने की क्रिया या भाव, पटकान।
पटका-(हिं०पुं०) पट में बाँधने का दुपट्टा, कमरपेंच।
पटकार-(सं०पुं०) कपड़ा बुनने वाला, चित्रकार।
पटकुटी-(सं०स्त्री०) कपड़ेका घर, तंबू।
पटच्चर-(सं०नपुं०) पुराना कपड़ा, चीर।
पटझोल-(हिं०पुं०) अंचल।
पटड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पटरी।
पटतर-(हिं०पुं०) तुल्यता, समानता,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सादृश्य,उपम ; **पटवारी**-(हिं० वि०) जो वस्त्र पहिरे हो, (पुं०) कोष का अधिकारी।

पटना-(हिं० क्रि०) समतल या चौरस होना, पक्की या कच्ची छत बनाना। खेत आदि का सींचा जाना,बेंचा बिक्री आदि में मूल्य आदि का स्थिर होना, गाढ़ मैत्री होना, ऋण का चुकता हो जाना।

पटनी-(हिं०स्त्री०)कोठेका नीचे का घर, स्थायी पट्ट पर मिली हुई भूमि,

पटपट-(हिं०स्त्री०) किसी हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द जो बार बार होवे, (क्रि०वि०) पट पट शब्द करता हुआ; **पटपटाना**-(हिं०क्रि०) भूख प्यास अथवा सरदी गरमी के कारण अधिक कष्ट उठाना, किसी वस्तु को पीट कर पटपट शब्द उत्पन्न करना।

पटपर-(हिं०वि०) समतल, चौरस।

पटबास-(हिं०पुं०) वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य।

पटबंधक-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बंधक जिसमें महाजन बंधक की हुई सम्पत्ति के आय से सूद लने के बाद जो बढ़ती होती है उसको मूल ऋण में काटता जाता है और संपूर्ण ऋण चुके जाने पर वह सम्पत्ति उसके मालिक को लौटा दता है।

पटबोजना-(हिं०पु०)खद्योत, जुगनू।

पटमण्डप-(सं०पुं०) तंबू, कपड़े का बना हुआ घर।

पटरा-(हिं०पुं०)लकड़ी का लंबा चौरस पल्ला, धोबी का पाट।

पटरानी-(हिं०स्त्री०) किसी राजा की सबसे बड़ी या मुख्य रानी जिसको राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार हो।

पटरी-(हिं०स्त्री०)काठका लंबा पतला पटरा, लिखने की पटिया, सड़क के दोनों किनारों पर मनुष्यों के चलने के लिये बना हुआ ऊंचा मार्ग, बगीचों में कियारियां के चारों ओर चलने का मार्ग, स्त्रियों का हाथ में पहिरने का एक आभूषण।

पटल-(सं०नपुं०) छान छप्पर, तिलक टीका, पुस्तक का एक भाग, परिच्छेद समूह, पटरा, आवरण, परत।

पटली-(हिं०स्त्री०) पंक्ति।

पटवा-(हिं०पुं०) वह जो सूत या रेशम में गहनों को गूथता है।

पटवाद्य-(सं०पुं०) झांझ की तरह का एक प्राचीन बाजा।

पटवाना-(हिं०क्रि०) ढँपवाना, गढ्ढों को मिट्टी आदि से भरवाना, पानी से तर कराना, दाम चुकवा देना।

पटवारी-(हिं०पुं०) वह कर्मचारी जो गाँव की भूमि, उसका कर आदि का हिसाब किताब रखता हो।

पटवास-(सं०पुं०) शिबिर, तंबू, वस्त्र को सुगन्धित करने का द्रव्य।

पटवेश्म-(सं०नपुं०) शिबिर, तम्बू।

पटसन-(हिं०पुं०) पाट, जूट।

पटह-(हिं०पुं०) दुंदुभी, नगाड़ा।

पटहार-(हिं०पुं०)पटवा नामक जाति।

पटा-(हिं०पुं०) चटाई, लंबी धारी; **पटाई**-(हिं०स्त्री०) सिंचाई, पाटने की क्रिया।

पटाक-(हिं०पुं०) किसी छोटी वस्तु के गिरने का शब्द।

पटाका-(हिं०पुं०) एक प्रकार की अग्नि क्रीड़ा जिसके छूटने पर पटाक्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्द निकलता है, थप्पड़, चमाचा ।
पटाखा-(हिं०पुं०) देखो पटाका ।
पटाना-(हिं०क्रि०) गड्ढेको पाटकर भूमि समतल करना, पाटन बनवाना, मूल्य स्थिर करना, ऋण चुकाना ।
पटापट-(हिं०क्रि०वि०) निरन्तर पटपट शब्द करते हुए, (स्त्री०) निरन्तर पट पट शब्द होना ।
पटार-(हिं०स्त्री०) पिंजड़ा, पेटी, पिटारा ।
पटाव-(हिं०पुं०) पाटने की क्रिया, पटा हुआ स्थान, पाटन, भरेठा ।
पटिया-(हिं०स्त्री०) पत्थरका लंबा चौरस टुकड़ा, खाट या पलंग की पट्टी, पाटी, माँग, लिखने की पट्टी ।
पटीलना-(हिं०क्रि०) ठगना छलना ।
पटु-(सं०वि०) दक्ष, चतुर, स्वस्थ, तीक्ष्ण ।
पटुआ-(हिं०पुं०) देखो पटुवा ।
पटुका-(ह०पुं०) चादर, धारीदार वस्त्र ।
पटुता-(सं०स्त्री०) दक्षता, चतुराई, प्रवीणता । पटुत्व-(सं०नपुं०)पटुता, दक्षता ।
पटुवा-(हिं०पुं०) पटसन, जूट ।
पटूका-(हिं०पुं०) देखो पटका ।
पटेबाज-(हिं०पुं०) वह जो पटा खेलता हो, पटे से लड़ने वाला ।
पटेरा-(हिं०पुं०) देखो पटरा, पटैला ।
पटेल-(हिं०पुं०) गाँव का मुखिया या चौधरी ।
पटेलना-(हिं०क्रि०) देखो पटीलना ।
पटेला-(हिं०पुं०)वह नाव जिसका बिचला भाग पटा हुआ हो ।
पटेली-(हिं०स्त्री०) छोटा पटला ।
पटैत-(हिं०पुं०) पटा लड़ने वाला ।
पटौनी-(हिं०पुं०)नाविक, मल्लाह,मांझी
पट्ट-(सं०नपुं०) नगर, (पुं०) घाव पर बाँधन की पट्टी, दुपट्टा पीढा, पाटा, पगड़ी, (वि०) प्रधान । पट्टक-(सं० पुं०) लिखने की पटिया, चित्रपट,
पट्टदेवी-(हिं०स्त्री०) पटरानी ।
पट्टन-(सं०नपुं०) पत्तन, बड़ा नगर ।
पट्टमहिशी-(सं०स्त्री०) पटरानी ।
पटरांज्ञी-(सं०स्त्री०) पटरानी ।
पट्टा-(सं०पुं०) स्थावर सम्पत्ति के उपयोग का अधिकारपत्र जो स्वामी की ओर से असामी ठीकेदार या किरायदार को लिखा जाता है,एक आभूषण जिसको स्त्रियां चूड़ियों के बीचमें पहरती हैं, पीढ़ा, चपरास, पुरुष के सिर पर के बाल जो पीछे की ओर गिरे रहते हैं और बराबर कटे होते हैं, ।
पट्टी-(हिं०स्त्री०) किसी भूमि का वह भाग जो एक पट्टीदार के अधिकार में हो, कपड़े का किनारा, तिल या चने की दाल चिपका कर बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई, सूती या ऊनी वस्त्र की धज्जी, पंक्ति, पटिया, लिखने की पट्टी, धातु कागज या कपड़े की धज्जी, घाव पर बाँधने की कपड़े की धज्जी, बहकाने वाली शिक्षा, सिखावन, पाठ,मांग के दोनों ओर के बैठाये हुए बाल, विभाग ।
पट्टीदार-(हिं०पुं०) संयुक्त सम्पत्ति के अंश का स्वामी ।
पट्टीदारी-(हिं०स्त्री०) भाईचारा, वह भूसम्पत्ति जिसमें अनक भागी हों ।
पट्टू-(हिं०पुं०)एक प्रकार का मोटा ऊनी वस्त्र जो पट्टी के रूप में बनाया जाता है ।
पट्टैत-(हिं०पुं०) पटेत, मूर्ख ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पट्टोपाध्याय-(सं०पुं०) दानपत्र का लिखने वाला।
पट्ठा-(हिं० पुं०) तरुण, नवयुवक, स्नायु, दलदार मोटा पत्ता, एक प्रकार का चौड़ा गोटा, जांघ के जोड़ का का स्थान।
पठन-(सं०नपुं०) अध्ययन, पढ़ना।
पठनीय-(सं०वि०) पढ़ने योग्य।
पठवना-(हिं०क्रि०) भेजना। **पठवाना**-(हिं०क्रि०) भेजवाना।
पठवाना-(हिं०क्रि०) भेजना, पठवाना।
पठावन-(हिं०पुं०) सन्देश ले जाने वाला, दूत।
पठावनि, पठावनीय-(हिं०स्त्री०) किसी मनुष्य को कहीं कोई वस्तु लेकर अथवा सन्देश पहुँचाने के लिये भेजना, इस कार्य का वेतन।
पठित-(सं०वि०) शिक्षित, पढ़ा, हुआ, पढ़ा लिखा। **पठितव्य**-(सं० वि०) पढ़ने योग्य।
पठिया-(हिं०स्त्री०) यौवनप्राप्त स्त्री।
पठौना-(हिं०क्रि०) भेजना।
पठौनी-(हिं०स्त्री०) किसी को कुछ देकर कहीं भजने की क्रिया या भाव
पठ्यमान-(सं०वि०) जो पढ़ा जाता हो।
पठ्ठती-(हिं०स्त्री०) लकड़ी की पाटन।
पड़त, पड़ता-(हिं०पुं०) सामान्य दर, लागत
पड़ताल-(हिं०स्त्री०) अनसन्धान, गाँव या नगर क पटवारी द्वारा खेतों की उत्पत्ति आदि विषयक जाँच पड़ताल।
पड़तालना-(हिं०क्रि०) अनुसन्धान करना, छानबीन करना।
पड़ती-(हिं०स्त्री०) वह भूमि जो कुछ दिनों से जोती बोई न गई हो;
पड़ना-(हिं०क्रि०) गिरना, बिछाया जाना, उत्पन्न होना उपस्थित होना, ठहरना, रोगी होना, पड़ता खाना, ठहरना, मार्ग में मिलना।
पड़पड़ाना-(हिं०क्रि०) पड़पड़ शब्द होना, चरपराना।
पड़पड़ाहट-(हिं०स्त्री०) चरपराहट।
पड़पोता-(हिं०पुं०) प्रपौत्र, पोतेका पुत्र।
पड़वा-(हिं०स्त्री०) प्रत्येक पक्ष की पहिली तिथि; (पुं०) भैंस का बच्चा
पड़वाना-(हिं०क्रि०) गिरवाना।
पड़ाइन-(हिं०स्त्री०) दखो पांडाइन।
पड़ाका-(हिं०पुं०) दखो पताका।
पड़ाना-(हिं०क्रि०) झुकाना, गिराना।
पड़ापड़-(हिं०क्रि०वि०) दखो पटापट।
पड़ाव-(हिं०पुं०) वह स्थान जहाँ यात्री ठहरते हों।
पड़िया-(हिं०स्त्री०) भैंस का मादा बच्चा
पड़िवा-(हिं०स्त्री०) प्रतिपदा।
पड़ोस-(हिं०पुं०) आसपास का स्थान, समीपवर्ती स्थान; **पड़ोसी, पड़ौसी**-(हिं०पुं०) पड़ोसमें रहने वाला।
पढ़ंत-(हिं०क्रि०) पढ़ने की क्रिया या भाव।
पढ़ना-(हिं०क्रि०) उच्चारण करना, वांचना, अध्ययन करना, शिक्षा प्राप्त करना।
पढ़वाना-(हिं०क्रि०) बँचवाना, किसी के द्वारा शिक्षा दिलाना। **पढ़वैया**-(हिं०पुं०) शिक्षार्थी, पढ़ने वाला।
पढ़ाई-(हिं०स्त्री०) विद्याभ्यास, पठन।
पढ़ाना-(हिं०क्रि०) अध्ययन करना, शिक्षा देना, सिखाना, समझाना,
पढ़ैया-(हिं०पुं०) पाठक, पढ़ने वाला।
पण-(सं०पुं०) जुआ, मूल्य, दाम, धन, सम्पत्ति, प्रतिज्ञा, वह वस्तु जिसका देना स्वीकारहो, क्रय विक्रय की वस्तु,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पणनीय-(सं०वि०) खरीदने या बेचने यो य
पणाव-(सं०पुं०) छोटा नगाड़ा, छोटा ढोल।
पणश-(सं०पुं०) कटहल।
पणित-(सं०वि०) व्यवहार किया हुआ।
पण्डित-(सं०पुं०) विद्वान, विदग्ध, (वि०) चतुर, संस्कृत भाषा का विद्वान। **पण्डितराज**-(सं०पुं०) पण्डितों म श्रेष्ठ। **पण्डिता**-(सं०स्त्री०) विदुषी, विद्वान् महिला। **पण्डिताइन**-(हिं० स्त्री०) पाण्डितानी; **पण्डिताई**-(हिं० स्त्री०) विद्वत्ता, पाण्डित्य। **पण्डिताऊ**--(हिं०वि०) पाण्डितों के ढंग का। **पण्डितानी**-(हिं०स्त्री०) पण्डित की स्त्री।
पण्य-(सं०वि०) व्यवहार करने योग्य, प्रशंसा करने योग्य: (पुं०) व्यापार, माल, हाट, दूकान। **पण्यभूमि**-(सं० स्त्री०) कोठी, गोदाम। **पण्यशाला**-(सं०स्त्री०) विक्रय गृह।
पतंग-(हिं०स्त्री०) कनकैया, गुड्डी।
पतंगा-(हिं०पुं०) फतिंगा, चिनगारी।
पत-(हिं० स्त्री०) लज्जा, प्रतिष्ठा, (पुं०) पति, स्वामी।
पतई-(हिं०स्त्री०) पत्र, पत्ती।
पतङ्ग-(सं०पुं) पक्षी, चिड़िया, सूर्य, फतिंगा, टिड्डी, चिनगारी।
पतझड़, पतझर, पतझार-(हिं०स्त्री०) वह ऋतु जिसमें वृक्षों की पत्तियां झड़ जाती हैं,।
पतत्री-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
पतन-(सं०नपुं०) गिरने या नीचे आने का भाव, गिरना, अवनति, अधोगति, नाश।
पतनारा-(हिं०पुं०) परनाला, मोरी।
पतनीय-(सं०वि०) गिरने वाला।
पतपानी-(हिं०पुं०) प्रतिष्ठा, मान।
पतर-(हिं०वि०) पतला, (पुं०) पत्तल, पत्ता।
पतरा-(हिं० वि०) पतला; **पतराई**-पतलापन। **पतरी**-(हिं०स्त्री०) पत्तल।
पतला-(हिं०व०) कृश, झीना, हलका, अधिक तरल; **पतलापन**-(हिं०पुं०) पतला होने का भाव।
पतली-(हिं०स्त्री०) द्यूत, जुआ।
पतलून-(हिं०पु०) वह पायजामा जिसमें मियानी नहीं लगाई जाती और जो बटन वे बंद किया जाता है।
पतलो-(हिं०स्त्री०) सरकंडा, सरपत।
पतवर-(हिं०क्रि०वि०) बराबर से।
पतवार-(हिं०स्त्री०) नव्वका वह तिकोना अंग जिसके द्वारा नाव मोडी और घुमाई जाती है, कर्ण।
पतवाल-(हिं०स्त्री०) देखो पतवार।
पता-(हिं०पुं०) किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान का ज्ञान करानेवाली वस्तु, अनुसन्धान, रहस्य, चिट्ठी के पीठ पर लिखी हुए पते का शब्द।
पताई-(हिं०स्त्री०) सूख कर झड़ी हुई पौधे की पत्तियाँ।
पताका-(सं०स्त्री०) ध्वजा, झंडा।
पताल-(हिं०पुं०) देखो पताल।
पतावर-(ह०पुं०) पेड़ के सूखे पत्ते।
पतिंगा-(हिं०पुं०) फतिंगा।
पति-(सं०पुं०) दूल्हा, भर्ता, अधिपति, स्वामी, प्रभु, ईश्वर, मर्यादा, लज्जा।
पतिआना-(हिं०क्रि०) विश्वास करना।
पतिआर-(हिं०पुं०) विश्वास।
पतित-(सं०वि०) गिरा हुआ, नीति-भ्रष्ट, अति नीच, महापातकी, अधम।
पतितपावन-(सं०वि०) पापों को पवित्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करनेवाला,ईश्वर; **पतित्व**-(सं०नपुं०) स्वामीत्व।

पतिधर्म-(सं०पुं०) पति के प्रति स्त्री का धर्म।

पतियाना-(हिं०क्रि०) विश्वास करना, सच मानना।

पतिवती-(हिं०वि०) सौभाग्यवती, सधवा; **पतिव्रत**-(सं०स्त्री०) पति में निष्ठा पूर्वक अनुराग; **पतिव्रता**-अपने स्वामी के प्रति अनन्य अनुराग करनवाली तथा पति की सेवा करनेवाली स्त्री, सती, साध्वी।

पतीजन, पतीजना-(हि०क्रि०) विश्वास करना, पतिआना।

पतीरा-(हिं०स्त्री०) पंक्ति, पाँति।

पतीला-(हि०वि०) पतला।

पतीली-(हिं०स्त्री०) चौड़े मुँह की बटलोई, देगची।

पतुरिया-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी,

पतुली-(हिं०स्त्री०) कलाई में पहिरने का एक गहना।

पतेर-(हि०पुं०) पक्षी, चिड़िया,गड्ढा।

पतोखा-(हिं०पु०) पत्ते का बना हुआ पात्र, दोना। **पतोखी**-(हिं०स्त्री०) घोघी, एक पत्ते की बनी हुई दोनियाँ।

पतोह, पतोहू-(हिं०स्त्री०) बेटे की स्त्री।

पतौआ-(हि०पुं०) पत्र, पत्ता।

पत्तन-(सं०नपुं०) नगर, मृदङ्ग।

पत्तर-(हिं०पुं०) किसी धातु को पीट कर तैयार किया हुआ पतला टुकड़ा।

पत्तल-(हिं०स्त्री०) पत्तों को सींक से जोड़कर बनाया हुआ पात्र, पत्तल में परोसी हुई भोजन सामग्री।

पत्ता-(हिं०पुं०) पर्ण, पत्र, (वि०) बहुत हलका।

पत्ती-(हिं०स्त्री०) छोटा पत्ता, भाग,हिस्सा

पत्तीदार-(हिं०पुं०) साझीदार,हिस्सेदार

पत्थ-(हिं०पुं०) देखो पथ्य।

पत्थर-(हिं०पुं०) पृथ्वी तलका कड़ा खण्ड या पिण्ड, रत्न, विनौला, ओला, पत्थरकी तरह कठोर तथा भारी अयोग्य वस्तु।

पत्थरकला-(हिं० पुं०) पुरानी चाल की बन्दूक।

पत्नी-(सं०स्त्री०) स्त्री, भार्या, जाया;

पत्नीव्रत-(सं०पुं०) अपनी विवाहिता स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री के साथ गमन न करने का नियम।

पत्याना-(हिं०क्रि०) दखो पतिआना।

पत्यारा-(हिं०पुं०) दखो पतिआरा।

पत्र-(सं०नपुं०) पत्ता, चिड़ियोंका पर, पत्री, चिट्ठी, धातु की चद्दर, लिखा हुआ कागज, पट्टा, समाचार पत्र।

पत्रकार-(हिं० पुं०) समाचारपत्र का संपादक। **पत्रपुष्प**-(सं०पुं०) छोटा उपहार या भेंट। **पत्रभङ्ग**-(सं०पुं०) वे चित्र और रखायें जो स्त्रियाँ सुन्दरता बढ़ाने के लिये स्तन कपोल आदि पर बनाती हैं। **पत्ररथ**-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया। **पत्रवाह, पत्रवाहक**-(सं० पुं०) वाण, तीर, चिड़िया, चिट्ठीरसा, हरकारा (वि०) चिट्ठी लिखने वाला।

पत्रव्यवहार-(सं०पुं०) चिट्ठी लिखने और उत्तर पाने की क्रिया।

पत्रा-(हिं० पुं०) तिथिपत्र, जन्त्री, पंचाङ्ग, पन्ना, पृष्ठ।

पत्रिका-(सं०स्त्री०) चिट्ठी पत्री, छोटा लेख, समाचार पत्र।

पत्री-(सं०स्त्री०) लिपि, पत्र, चिट्ठी।

पथ-(सं०पुं०) पन्थ, मार्ग, यवहार, विधान। (हिं०पुं०) पथ्य। **पथ-**

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गामी पथचारी-(हिं०पुं०) पथिक, बटोही।

पथदर्शक-(सं०पुं०) मार्गदर्शक।

पथप्रदर्शक-(सं०पुं०) देखो पथदर्शक।

पथरकला-(हिं०पुह०) पुराने ढंग की बंदूक।

पथरना-(हिं०क्रि०) शस्त्र को पत्थर पर रगड़ कर पैना करना।। पथराना-(हिं०क्रि०) सूखकर पत्थर की तरह कड़ा हो जाना।

पथरी-(हिं०स्त्री०) अश्मरी नामक रोग, कटोरे के आकार का पत्थर का बना हुआ पात्र, । पथरीला-(हिं०वि०) पत्थरों से युक्त।

पथिक-(सं०पुं०) मार्ग चलने वाला, यात्री; पथिकशाला-(स्त्री०) सराय, यात्रियों के ठहरने की धर्मशाला।

पथिकार-(सं०वि०) मार्ग बनाने वाला।

पथिकाश्रय-(सं०पुं०) पथिकों के ठहरने का स्थान।

पथी-(हिं०पुं०) पथिक, यात्री।

पथु-(हिं०पुं०) पथ, मार्ग।

पथेरा-(हिं०पुं०) ईंट पाथने वाला, कुम्हार।

पथोरा-(हिं० पुं०) गोबर पाथने का स्थान।

पथ्य-(सं०पुं०) वह हलका और शीघ्र पचने वाला भोजन जो रोगी के लिये लाभकारक हो।

पद-(सं० नपुं०) पैर, शब्द, प्रदेश, पव्यवसाय, स्थान, चिह्न, श्लोक या किसी छन्द का चौथा भाग, मोक्ष, गीत, भजन।

पदक-(सं०पुं०) सोने चाँदी का बना हुआ गोल या चौकोर टुकड़ा जो कोई विशिष्ट या अद्भुत कार्य करने के उपलक्ष में किसी व्यक्ति या समाज को दिया जाता है।

पदग-(सं०पुं०) पैदल चलनेवाला, प्यादा

पदत्तर-(सं०पुं०) पैदल, प्यादा। पदचारी-(सं०पुं०) पैदल चलनेवाला। पदचिह्न-(सं०पुं०) वह चिह्न जो चलते समय भूमि पर बन जाता है।

पदच्छेद-(सं०पुं०) सन्धि और समास युक्त किसी वाक्य के प्रत्येक पदों को व्याकरण के नियमों के अनुसार अलग अलग करना।

पदच्युत-(सं०वि०) अपने पद या स्थान से हटाया या गिराया हुआ।

पदज-(सं०पुं०) पैर की अंगुली, शूद्र (वि०) जो पैर से उत्पन्न हो।

पदतल-(सं०पुं०) पैर का तलवा।

पदत्याग-(सं०पुं०) अपने पद को छोड़ने की क्रिया।

पदत्राण-(सं०पुं०) जूता; पदत्रान-(हिं०पुं०) देखो पदत्राण।

पदत्री-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया।

पददलित-(सं०वि०) पैरों से कुचला हुआ।

पदन्यास-(सं०पुं०) गमन करना, चलना

पदपंक्ति-(सं०स्त्री०) पदश्रेणी, पैर का चिह्न।

पदभंजिका-(सं०स्त्री०) पंजिका, टिप्पणी

पदमाकार-(हिं० पुं०) जलाशय, तालाब; पदमाला-(सं०स्त्री०) पदश्रेणी, पैरों का चिह्न; पदमूल-(सं० पुं०) पैर का तलवा;

पदरथी-(सं०पुं०) जूता, खड़ाऊ।

पदवि-(सं०स्त्री०) पद्धति, परिपाटी।

पदविग्रह-(सं०पुं०) समास, समास वाक्य

पदविच्छेद-(सं० पुं०) पदोंको अलग अलग करने का काम।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पदवी-(सं०स्त्री०) पद्धति, परिपाटी, विधि, उपाधि।

पदाति, पदातिक-(सं०पुं०) पैदल सिपाही, प्यादा, (वि०) पैदल चलने वाला।

पदाधिकारी-(सं०पुं०) वह जो किसी पद पर नियुक्त हो, अधिकारी।

पदान्त-(सं०पुं०) पद का शेष, पद का अन्त; **पदान्तर**-(सं०नपुं०) स्थानान्तर, दूसरा पद।

पदारथ-(हिं०पुं०) देखो पदार्थ।

पदारबिन्द-(सं०नपुं०) पद्मरूपी पैर।

पदार्घ्य-(सं०पुं०)वह जल जो किसी अतिथि या पूज्य के पैर धोने के लिये दिया जाय।

पदार्थ-(सं०पुं०) धर्म, सत्व, वस्तु।

पदार्थ विज्ञान-(सं०पुं०) वह विद्या जिसके द्वारा भौतिक पदार्थों और व्यापारों का ज्ञान प्राप्त होता है;

पदार्पण-(सं०पुं०) किसी स्थान में पैर रखने या जाने की किया (इस शब्द का प्रयोग केवल माननीय व्यक्ति के के लिये किया जाता है)।

पदावली-(सं०स्त्री०) वाक्यों की श्रेणी, भजनों का संग्रह।

पदाश्रित-(सं०वि०) शरण में आया हुआ।

पदी-(हिं०पुं०) पैदल, प्यादा।

पदु-(हिं० पुं०) पद, अधिकार।

पदुम-(हिंपुं०) देखो पद्म; **पदुमिनी**-(हिं०वि०) देखो पद्मिनी।

पद्धति-(सं०स्त्री०) पदवी, प्रणाली, रीति ढंग, वधि विधान।

पद्म-(सं०पुं०,नपुं०) कमल का फूल या पौधा।

पद्मकन्द-(सं०पुं०) कमल की जड़, भिस्सा, भसीड़। **पद्मकिञ्जल्क**-(सं० पुं०) कमल का केसर; **पद्मकोष**-(सं०पुं०) कमलके बीज का छत्ता; **पद्मतन्तु**-(सं०पुं०)मृणाली, कमलकी डंडी; **पद्मनाल**-(सं० नपुं०) मृणाल, **पद्मरज**-(सं० पुं०) कमल केशर; **पद्मबीज**-(सं०नपुं०) कमल बीज, कमल गट्टा।

पद्मा-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, **पद्माकर**-(सं०पुं०) बड़ा तालाब या झील जिसमें कमल उत्पन्न होते हैं; **पद्माक्ष**-(सं०पुं०) कमलगट्टा,विष्णु; **पद्मालया**-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, गंगा।

पद्मिनी-(सं०स्त्री०) पद्मलता, कमलिनी।

पद्मोद्भव-(सं०पुं०) ब्रह्मा।

पद्य-(सं०नपुं०)कविता, काव्य, श्लोक **पद्यात्मक**--(सं०वि०) जो पद्यमय या छंदवद्ध हो।

पधरना-(हिं०क्रि०) किसी प्रतिष्ठित या पूज्य व्यक्ति का आगमन। **पधारना**-(हिं०क्रि०) किसीको आदर पूर्वक ले जाकर बैठना। **पधरावनी**-(हिं०स्त्री०)आदर पूर्वक किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति को ले जाकर बैठाने की क्रिया। **पधारना**-(हिं०क्रि०) प्रष्ठित करना, आदर पूर्वक बैठाना।

पन-(हिं०पुं०) संकल्प, प्रतिज्ञा, (हिं० प्रत्य०) भाववाचक संज्ञा बनाने में प्रयोग होता है, यथा-कड़ापन, लड़कपन। **पनकपड़ा**-(हिं०पुं०) पानी से भिगाया हुआ लत्ता जो शरीर में कहीं पर कट जाने पर बाँधा जाता है।

पनकाल-(हिं० पुं०) अति वर्षा के कारण अकाल। **पनकुट्टी**-(हिं०स्त्री०) पान कूटने का छोटा खरल। **पनघट**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हिं०पुं०) पानी भरने का घाट, वह घाट जहाँ पर लोग पानी भरते हैं।
पनच-(हिं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
पनचक्की-(हिं०स्त्री०) पानी के वेगसे चलाई जाने वाली चक्की या कल।
पनचोरा-(हिं०पुं०) वह पात्र जिसकी पेंदी चौड़ी और मुँह छोटा हो।
पनडब्बा-(हिं०पुं०) पान रखने का डब्बा
पनडुब्बा-(हिं०पुं०) पानी में गोता लगाने वाला। **पनडुब्बी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा जहाज जो पानी में डूबकर यन्त्र से चलता है।
पनपना-(हिं०क्रि०) पानी मिलने के कारण फिर से हरा हो जाना, रोग से मुक्त होकर स्वस्थ होना।
पनपाना-(हिं०क्रि०) ऐसा कार्य करना जिससे कोई वस्तु पनपे।
पनभरा-(हिं०पुं०) पानी भरने वाला।
पनव-(हिं०पुं०) देखो प्रणव।
पनवाड़ी-(हिं०स्त्री०) पान का खेत।
पनस-(सं०पुं०) कटहल।
पनसल्ला-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहां यात्रियों को पानी पिलाया जाताहै।
पनसाखा-(हिं० पुं०) एक प्रकारकी मसाल जिसमें तीन या पांच बत्तियां जलती हैं।
पनसारी-(हिं०पु०) देखो पसारी।
पनसाल-(हिं०स्त्री०) पौसरा।
पनसुइया-(हिं०स्त्री०) छोटी नाव।
पनसेरी-(हिं०स्त्री०) पांच सेर की बाँट।
पनहरा-(हिं०पु०) पानी भरने वाला भृत्य, पनभरा।
पनहा-(हिं०पुं०) कपड़े या भीत आदि की चौड़ाई, गूढ़ आशय।
पनहारा-(हिं०पुं०) पनभरा।
पनहिया-(हिं०स्त्री०) देखो पनही, जूता
पनहियाभद्र-(हिं०पु०) सिरपर जूतों की मार।
पनही-(हिं०स्त्री०) उपानह, जूता, जूती।
पना-(हिं०पुं०) आम इमली आदि से बनाया हुआ एक प्रकार का शर्बत,
पनाती-(हिं०पुं०) नाती का लड़का।
पनारा, पनाला-(हिं०पुं०) देखो परनाला
पनासना-(हिं० क्रि०) पालन पोषण करना।
पनियाँ-(हिं०वि०) पानी से उत्पन्न, पानी मिला हुआ।
पनियाला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।
पनिहा-(हिं०वि०) पानी में रहने वाला
पनिहार-(हिं०पु०) देखो पनहर।
पनी-(हिं०पुं०) प्रतिज्ञा करने वाला पुरुष
पनीला-(हिं०वि०) जल युक्त।
पनुआँ-(हिं० वि०) फीका, जिसमें मिठास कम हो।
पनैला-(हिं० पुं०) गरम कपड़ों के नीचे अस्तर देने का चिकना गाढ़ा कपड़ा।
पनौआ-(हिं०पुं०) पान के पत्तोंकी पकौड़ी। **पनौटी**-(हिं०स्त्री०) पान रखने की पिटारी, पानदान।
पन्नग-(स०पु०) सर्प, साँप।
पन्ना-(हिं०पुं०) मरकत मणि, हरे रंग का एक रत्न।
पन्नी-(हिं०स्त्री०) राँगे या पीतल के बहुत पतले पत्र, सोनहला या रूपहला कागज।
पन्हाना-(हिं०क्रि०) देखो पहिराना।
पन्हैयाँ-(हिं०स्त्री०) देखो पनही।
पपड़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी का पतला कुड़कीला छिलका, चिप्पड़, रोटी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के ऊपर का छिलका। पपड़िया-(हिं०वि०) पपड़ीदार, पपड़ी, सबंधी पपड़ियाना-(हिं०क्रि०) अत्यन्त सूख जाना।

पपड़ी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तुके ऊपर की परत जो सूख कर कड़ी हो गई हों; एक प्रकार की मिठाई।

पपड़ीला-(हिं०वि०) जिसपर पपड़ी जमी हो।

पपनी, पपरी-(हिं०स्त्री०) बरौनी।

पपीहा-(हिं०पुं०) चातक।

पपीता-(हिं०पुं०) रेंड़ की तरह का एक पौधा जिसका फल पकाकर खाया जाता है।

पपैया-(हिं०पुं०) आम का नया पौधा।

पपोटा-(हिं०पुं०) आँख के ऊपर का परदा, पलक।

पपोरना-(हिं०क्रि०) बाँह की ऐंठ कर उसको उभाड़ना; पपोलना-(हिं०क्रि०) मुंह चलाना।

पबारना-(हिं०क्रि०) फेंक देना।

पबि-(हिं०पुं०) वज्र।

पब्बय-(हिं०पुं०) पर्वत, पहाड़।

पयःकुण्ड-(सं०नपुं०) दूध या जल रखने का घड़ा; पयःपान-(स०नपुं०) दुग्ध पान, दूध पीना।

पय-(सं०नपुं०) जल, पानी दूध, अन्न, पयद-(हिं०पुं०) मेघ; पयधि-(हिं० पुं०) देखो पयोधि, समुद्र; पयना-(हिं०वि०) नुकीला, चोखा।

पयस्विन्, पयस्विनी-(सं०) नदी, दूध देने वाली गाय, बकरी।

पयस्वी-(हिं०वि०) जिसमें जल हो।

पयान-(हिं०पुं०) गमन, यात्रा, जाना।

पयार, पयाल-(हिं०पुं०) धान के सूखे डंठल जसमें से दाने निकाल दिये गये हों, पुआल।

पयोद-(सं०पुं०) मेघ, बादल, पयोदन-(हिं०पुं०) दूध, भात।

पयोधर-(सं०पुं०) स्त्री का स्तन, समुद्र।

पयोमुख-(सं०वि०) दुग्धपीत, दुध मुहाँ।

परंच-(सं०अव्य०) तो भी, और भी, परन्तु

परंपरा-(हिं०स्त्री०) एक के पीछे दूसरा परंपरागत-(हिं०वि०) परंपरा से आता हुआ।

पर-(सं०वि०) श्रेष्ठ, अन्य, दूसरा।

पर-(हिं०अव्य०) पश्चात्, पीछे, परन्तु किन्तु, चिड़िया का डैना, पंख।

परई-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का रक पात्र जो दिए से बड़ा होता है।

परकटा-(हिं०वि०) जिसके पर कटे हों।

परचना-(हिं०क्रि०) अभ्यास पड़ना, हिलना मिलना।

परकर्म-(सं०नपुं०) दूसरे का काम।

परकलत्र-(सं०नपुं०) दूसरे की स्त्री।

परकसना-(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना।

परकाजी-(हिं०वि०) परोपकारी।

परकाना-(हिं०क्रि०) परचाना, हिलाना मिलाना।

परकार्य-(सं०नपुं०) दूसरे का कार्य।

परकाल-(हिं०पुं०) देखो परकार।

परकाला-(हिं०पुं०) सीढ़ी, खण्ड, टुकड़ा।

परकास-(हिं०पुं०) देखो प्रकाश; परकासना-(हिं०क्रि०) प्रगट करना। प्रकाशित करना।

परकिति-(हिं०स्त्री०) देखो प्रकृति।

परकीय-(स०वि०) पराया, दूसरे का।

परकोटा-(हिं०पुं०) गढ़ की रक्षा के लिये इसके चारो ओर बनाई हुई भीत।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परख-(हिं०स्त्री०) जांच, परीक्षा, **परखना**-(हिं०क्रि०) जांच करना, परीक्षा करना; **परखवाना**-(हिं०क्रि०) दूसरे से जँचवाना ; **परखवैया**-(हिं० पुं०) परखने वाला, **परखाई**-(हिं० स्त्री०) परखने का काम या शुल्क; **परखाना**-(हिं०क्रि०) परीक्षा कराना, जँचवाना; **परखैया**-(हिं०पुं०) परखने वाला।

परग-(हिं०पुं०) पग, कदम, डग; **परगट**-(हिं०वि०) देखो प्रगट; **परगसना**-(हिं०क्रि०) प्रगट होना। **परगास**-(हिं०पुं०) देखो प्रकाश ; **परगासना**-(हिं०क्रि०) प्रकाशित होना या करना।

परघट-(हिं०वि०) देखो प्रगट।

परचण्ड-(हिं०वि०) देखो प्रचण्ड।

परचन-(हिं०स्त्री०) जान पहचान।

परचना-(हिं०क्रि०) घनिष्टता प्राप्त करना।

परचाना-(हिं०क्रि०) हिलाना मिलाना, घनिष्टता उत्पन्न करना, संकोच हटाना।

परचार-(हिं०पु०) देखो प्रचार।

परचारना-(हिं०क्रि०) प्रचार करना।

परछाई-(हिं०स्त्री०) छायाकृति, प्रतिबिम्ब।

परछिद्र-(सं०नपुं०) दूसरेका दोष।

परजंक-(हिं०पु०) देखो पर्यङ्क।

परजन-(हिं०पु०) देखो परिजन।

परजन्य-(हिं०पु०) देखो परिजन्य।

परजरना-(हिं०क्रि०) सुलगना, दहकना।

परजा-(हिं०स्त्री०) प्रजा, आश्रितजन।

परजात-(सं०वि०) दूसरे से उत्पन्न, (पुं०) कोयल।

परजाता-(हिं०पु०) पारिजात, एक मझोले आकार का वृक्ष जिसके सुगन्धित फूल गुच्छों में लगते हैं, इसके फूल की डंठी मूगे के रंग की होती है।

परजाय-(हिं०पुं०) देखो पर्याय।

परजारना-(हिं०क्रि०) जलाना।

परजित-(स०वि०) शत्रु से पराजित।

परजौट-(हिं०पुं०) वह वार्षिक कर जो घर बनाने के लिये ली हुई भूमि पर लगे।

परञ्च-(सं०अव्य०) परन्तु, तौभी।

परत-(हिं०स्त्री०) स्तर, तह, कपड़े कागज आदि के अलग अलग भाग जो जोड़ने से नीचे ऊपर हो गये हों।

परतन्त्र-(सं०वि०) पराधीन, परवश,

परतच्छ-(हिं०वि०) देखो प्रत्यक्ष।

परतला-(हिं०पु०) कपड़े चमड़े आदि की चौड़ी पट्टी जो कन्धे पर से छाती और पीठ पर होती हुई तिरछी लटकती है और जिसमें तलवार लटकाई जाती है।

परता-(हिं०पुं०) देखो पड़ता।

परताप-(हिं०पुं०) देखो प्रताप।

परताल-(हिं०स्त्री०) देखो पड़ताल।

परतिग्या-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतिज्ञा।

परती-(हिं०स्त्री०) बिना जोती हुई भूमि।

परतीत-(हिं०स्त्री०) देखो प्रतीति।

परतेजना-(हिं०क्रि०) त्याग करना,

परतोली-(हिं०स्त्री०) गली।

परत्र-(स०अव्य०) दूसरे स्थान में, परलोक में।

परथन-(हिं०पुं०) देखो पलेथन।

परदच्छिना-(हिं०स्त्री०) देखो प्रदक्षिणा।

परदनी-(हिं०स्त्री०) धोती।

परदादा-(हिं०पुं०) दादा का बाप।

परदार-(सं०पुं०) दूसरे की स्त्री।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परदिवस-(सं०नपुं०) आज से दूसरा दिन।
परदेवता-(सं०स्त्री०) श्रेष्ठ या इष्ट देवता।
परदेश-(सं०पुं०) दूसरा देश विदेश।
परदेशी-(सं० वि०) दूसरे देश में रहने वाला।
परदोस-(हिं०पुं०) दखो प्रदोष।
परधान-(हिं०वि०) दखो प्रधान।
परधाम-(सं०पुं०) वैकुण्ठ, परलोक,
परन-(हिं०पुं०) प्रतिज्ञा, टेक अभ्यास।
परना-(हिं०क्रि०) दखो पड़ना।
परनाना-(हिं०पुं०) नानाका पिता।
परनाम-(हिं०पुं०) दखो प्रणाम।
परनाला-(हिं०पुं०) मोरी, पनाला।
परनाली-(हिं०स्त्री०) छोटी मोरी।
परनि-(हिं०स्त्री०) आदत, टेक।
परनौत-(हिं०स्त्री०) नमस्कार, प्रणाम।
परन्तु-(हिं०अव्य०) लेकिन, दखो परंतु।
परपंच-(हिं०पुं०) दखो प्रपंच।
परपंची-(हिं०वि०) धूर्त, वखेड़िया।
परपक्ष-(सं०पुं०) विरोधियों का दल।
परपट-(हिं०पु०) समतल भूमि।
परपटी-(हिं०स्त्री०) दखो पर्पटी।
परपराना-(हिं०क्रि०) चुनचुनाना।
परपराहट-(हिं०स्त्री०) चुनचुनाहट।
परपाजा-(हिं०पुं०) दादा का पिता।
परपारा-(हिं०पुं०) दूसरी ओर का।
परपीडक-(सं०पुं०) दूसरे को कष्ट देने वाला।
परपूठा-(हिं०वि०) पक्व, पक्का।
परपौता-(हिं०पुं०) दखो परपौत्र।
परफुल्ल-(हिं०वि०) दखो प्रफुल्ल।
परफुल्लित-(हिं०वि०) दखो प्रफुल्लित
परबन्ध-(हिं०पुं०) व्यवस्था।
परब-(हिं०पुं०) दखो पर्व, (स्त्री०) किसी रत्न का एक छोटा टुकड़ा।
परबत-(हिं०पुं०) पर्वत, पहाड़।
परबल-(हिं०वि०) दखो प्रबल।
परबस-(हिं०वि०) पराधीन; **परबसताई**-(हिं०स्त्री०) पराधीनता।
परबाल-(हिं०पुं०) आंख की बरौनी।
परबीन-(हिं०वि०) दखो प्रवीण।
परबेश-(हिं०पु०) दखो प्रवेश।
परबोध-(हिं०पु०) देखो प्रबोध।
परबोधना-(हिं०क्रि०) ज्ञान का उपदेश-करना, समझाना।
परब्रह्म-(सनपुं०) निर्गुण और निरुपाधि ब्रह्म।
परभाइ-(हिं०पुं०) देखो प्रभाव।
परभाग-(स०पुं०) बचा हुआ अंश, दूसरी ओर का भाग, पश्चिम भाग।
परभात-(हिं०पुं०) देखो प्रभात।
परभाती-(हिं०स्त्री०) देखो प्रभाती।
परभाव-(हिं०पुं०) देखो प्रभाव।
परभुक्त-(सं० वि०) दूसरे से भोगा हुआ।
परभृत, परभृत्-(सं०वि०) दूसरे को पालने वाला (पुं०) कोयला।
परभृत्य-(सं०पुं०) दूसरेका सेवक।
परम-(सं०वि०) प्रधान, मुख्य, अत्यन्त मुक्ति, मोक्ष।
परमधाम-(सं०पुं०) वैकुण्ठ- स्वर्ग; **परमपद**-(सं०नपुं०) मोक्ष, मुक्ति।
परम भट्टारक-(सं० पुं०) महाराजाधिराज।
परमल-(हिं०पुं०) ज्वार या गहूं का भूना हुआ दाना।
परमहंस-(सं०पुं०) ज्ञान की परम अवस्था को पहुँचा हुआ संन्यासी,।
परमा-(हिं०स्त्री०) शोभा, छबि।
परमाणु-(सं०पुं०) पृथ्वी, जल, तेज,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वायु तथा आकाश का सब से छोटा भाग जिसके फिर विभाग नहींहो सकते, अत्यन्त सूक्ष्म अणु।

परमात्मा-(सं०पुं०) परब्रह्मा, ईश्वर, **परमानन्द**-(सं०पुं०) परम आनन्द स्वरूप ब्रह्म, परमात्मा।

परमान-(हिं०पुं०) देखो प्रमाण, सत्य वार्ता, अवधि, सीमा।

परमारथ-(हिं०पुं०) देखो परमार्थ।

परमार्थ-(सं०पुं०) उत्कृष्ट पदार्थ, मोक्ष,; **परमार्थी**-(सं०वि०) यथार्थ तत्व को ढूंढने वाला, मोक्ष चाहने वाला।

परमुख-(हिं०वि०) पराङ्मुख, विमुख।

परमेश, परमेश्वर-(सं०पुं०) सृष्टि आदि का रचने वाला, त्रिमूर्तक ब्रह्म,

परमेसर-(हिं०पुं०) देखो परमेश्वर।

परमैश्वर्य-(सं०नपुं०) श्रेष्ठ एश्वर्य।

परमोद-(हिं०पुं०) देखो प्रमोद।

परम्परा-(सं०स्त्री०) परिपाटी, अनुक्रम, एकके बाद एक। **परम्परागत**-(सं०वि०) वंशानुक्रम से प्रचलित।

परयङ्क-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।

परलउ-(हिं०पुं०) देखो प्रलय।

परलय-(हिं०स्त्री०) प्रलय, सृष्टि का नाश या अन्त।

परला-(हिं०वि०) दूसरी ओर का, उधर का।

परलै-(हिं०पुं०) देखो प्रलय।

परलोक-(सं०पुं०) लोकान्तर, दूसरा लोक, स्वर्गादि; **परलोकवासी**-मृत्यु प्राप्त।

परवल-(हिं०पुं०) एक प्रकारकी लता जिसक फलों की तरकारी बनती है।

परवश- परवश्य-(हिं०वि०) पराधीन,

परवश्यता-(सं०स्त्री०) पराधीनता।

परवस्ती-(हिं०स्त्री०) पालन पोषण।

परवा-(हिं० स्त्री०) किसी पक्ष की पहली तिथि।

परवाद-(सं०पुं०) प्रवाद, अपवाद।

परवान-(हिं०पुं०) अवधि, प्रमाण।

परवानना-(हिं०क्रि०) उचित समझना।

परवाल-(हिं०पुं०) देखो प्रवाल, मूंगा।

परवासी-(सं०वि०) दूसरे के घर में बसने वाला।

परवाह-(हिं०पुं०) देखो प्रवाह, व्यग्रता, चिन्ता, भरोसा।

परवीन-(हिं०वि०) देखो प्रवीण।

परवेश-(हिं०पुं०) देखो प्रवेश।

परवेश्म-(सं०नपुं०) वैकुण्ठ, स्वर्ग।

परशु-(सं०पुं०) कुठार, कुल्हाड़ी।

परसंग-(हिं०पुं०) देखो प्रसङ्ग। **परसंसा**-(हिं०पुं०) देखो प्रशंसा।

परस-(हिं०पुं०) स्पर्श, छूने की क्रिया, पारस पत्थर।

परसंग-(सं०क्रि०) देखो प्रसंग।

परसन-(हिं०पुं०) स्पर्श, (वि०) प्रसन्न।

परसना-(हिं०क्रि०) स्पर्श करना, छूना, किसी के सामने भोजन के पदार्थ रखना।

परसन्न-(हिं०वि०) देखो प्रसन्न।

परसवर्ण-(सं०पुं०) उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण।

परसा-(हिं०पुं०) कुठार, फरसा।

परसाद-(हिं०पुं०) देखो प्रसाद।

परसाना-(हिं०क्रि०) स्पर्श कराना।

परसिद्ध-(हिं०वि०) देखो प्रसिद्ध।

परसु-(हिं०पुं०) देखो परशु।

परसेद-(हिं०पुं०) देखो प्रस्वेद।

परसेवा-(सं०स्त्री०) दूसरे की सेवा।

परसों-(हिं०अव्य०) बीते हुए कल से एक दिन पहले आने वाला, कल से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक दिन आगे।
परसोतम-(हिं०पुं०) देखो पुरुषोत्तम।
परस्पर-(सं०अव्य०) एक दूसरेके साथ, आपस में।
परहरना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
परहार-(हिं०पुं०) देखो प्रहार, परिहार।
परहित-(सं०नपुं०) दूसरेका कल्याण।
परहेलना-(हिं०क्रि०) निरादर करना।
पलठां-(हिं०पुं०) तवे पर घी लगा कर सेंकी हुई चपाती, परौंठा।
परा-(सं०अव्य०) प्राधान्य गति, विक्रम वध आदि अर्थ में प्रयोग होता है, अनादर अर्थ में उपसर्ग की तरह प्रयोग होता है।
पराइ, पराई-(हिं०वि०) दूसरे की।
पराकाष्ठा, पराकोटि-(सं०स्त्री०) चरम सीमा, हद।
पराक्रम-(सं०पु०) शक्ति, बल सामर्थ्य; **पराक्रमी**-(हिं०वि०) पुरुषार्थी, उद्यमी, बलवान्।
पराग-(सं०पुं०) पुष्प धूलि, वह रज जो फूलों के बीच में केशरों पर जमी रहती हैं।
परागना-(हिं०क्रि०) अनुरक्त होना।
पराङ्ग-(सं०नपुं०) शरीर का पिछला भाग।
पराङ्मुख-(सं०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, उदासीन।
पराचित-(सं०वि०) दूसरे से पाला पोसा हुआ।
परजय-(हिं०स्त्री०) पराभव, हार।
पराजित-(सं०वि०) पराभूत, हारा हुआ। **पराजिष्णु**-(सं०वि०) विजयी, जीतने वाला।
परात-(हिं०स्त्री०) थाली के आकार का बड़ा पात्र, बड़ी थाली, थाल।
परमेश्वर-(वि०) सर्वश्रेष्ठ, सबसे उत्तम (सं०पुं०) परमात्मा।
पराधीन-(सं०वि०) परवश। **पराधीनता**-(सं०स्त्री०) परतन्त्रता।
परान-(हिं०पुं०) देखो प्राण।
पराना-(हिं०क्रि०) भागना।
पराश-(सं०नपुं०) दूसरेका दिया हुआ भोजन।
पराभव-(सं०पुं०) पराजय, हार।
पराभूत-(सं०वि०) पराजित, हारा हुआ,
परामर्श-(सं०पुं०) विचार, युक्ति, निर्णय, मन्त्रणा; **परामर्शन**-(सं०नपुं०) स्मरण, चिन्तन।
परामृष्ट-(सं०वि०) निर्णय किया हुआ, विचारा हुआ।
परायण-(सं०वि०) प्रवृत्त, तत्पर।
परायत्त-(सं०वि०) पराधीन, परवश।
पराया-(हिं०वि०) अन्य का, दूसरेका
पराय-(हिं०वि०) दूसरेका, परायेका
परार्थ-(सं०वि०) दूसरे के निमित्त का, (पुं०) दूसरे का उपकार।
परावन-(हिं०पुं०) पलावन, भगदड़,
परावर्त-(सं०पुं०) अदल, बदल पलटाव। **परावर्तन**-(सं०नपुं०) पलटना, लौटना; **परावर्तित**-(सं०वि०) पटलाय हुआ।
परावा-(हिं०वि०) देखो पराया।
परावृत-(सं०वि०) फेरा हुआ, बदला हुआ। **परावृत्ति**-(सं०स्त्री०) पलटने या पलटाने की क्रिया या भाव।
पराश्रय-(सं०वि०) वह जो दूसरे के आश्रय में हो।
परास्त-(सं०वि०) पराजित, हारा हुआ।
पराह्न-(सं०पुं०) अपराह्न, तीसरा पहर।
परि-एक संस्कृत उपसर्ग जिसके शब्द

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में जोड़ने से "सर्वोत्तम अच्छी तरह, अतिशय, त्याग, नियम" अर्थों की वृत्ति होती है।

परिकर-(सं०पुं०) पर्यङ्क, पलंग, परिवार, अनुचर वर्ग।

परिकरमा-(हिं०स्त्री०) देखो परिक्रमा।

परिकल्प-(सं०नपुं०) बनावट, रचना।

परिकल्पन-(सं०पुं०) चिन्तन, मनन।

परिकल्पित-(सं०वि०) स्थिर किया हुआ।

परिकीर्ण-(सं०वि०) विस्तृत, फैला हुआ।

परिकीर्तन-(सं०नपुं०) अधिक प्रशंसा।

परिकीर्तित-(सं०वि०) प्रशंसा किया हुआ, कहा हुआ।

परिकूट-(सं०नपुं०) नगर या गढ़ के फाटक पर की खाई।

परिक्रम, परिक्रमण-(सं०पुं०,नपुं०) प्रदक्षिणा, परिक्रमा।

परिक्रमा-(सं०स्त्री०) किसी तीर्थ स्थान या देव मन्दिर के चारों ओर घूमनेके लिये बना हुआ मार्ग।

परिखन-(हिं०वि०) रक्षक, रखवाली करने वाला। **परिखना**-(हिं०क्रि०) प्रतीक्षा करना। परीक्षा करना।

परिखा-(सं०स्त्री०) किले को घेरने की खाई; **परिखान**-(सं० नपुं०) परिखा खाई।

परिख्यात-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।

परिगणन, परिगणना-(सं०नपुं०) भली भाँति गणना करना, विचार करना, **परिगणनीय**-(सं० वि०) गिनें जाने योग्य। **परिगणित**-(सं०वि०) गिना हुआ।

परिगत-(सं०वि०) ज्ञात, जाना हुआ, प्राप्त, भूला हुआ, बीता हुआ, घिरा हुआ, मरा हुआ।

परिगर्दित-(सं०वि०) कहा हुआ।

परिगर्हण-(सं०नपुं०) बड़ी निन्दा।

परिगह-(हिं०पुं०) कुटुम्बी, आश्रित जन

परिगृहीत-(सं०वि०) स्वीकृत, ग्रहण किया हुआ, मिला हुआ।

परिग्रह-(सं०पुं०) दान लेना, ग्रहण करना, अनुग्रह, कृपा।

परिचना-(हिं०क्रि०) देखो परचना।

परिचय-(सं०पुं०) प्रमाण, अभ्यास, किसी व्यक्तिके नाम धाम गुण आदि का बोध, जान पहिचान।

परिचर-(सं०पुं०) अनुचर, भृत्य, टहलुआ।

परिचरजा-(हिं०स्त्री०) देखो परिचर्या।

परिचरण-(सं०पुं०) सेवा, टहल।

परिचरजा-(हिं०स्त्री०) देखो परिचर्या। **परिचरी**-(सं०स्त्री०) दासी, टहलनी। **परिचर्या**-(सं०स्त्री०) सेवा, शुश्रूषा, रोगीकी सेवा।

परिचार-(सं०पुं०) सेवा टहल।

परिचायक-(सं०पुं०) भृत्य, दास, किंकर।

परिचारण-(सं०नपुं०) सेवा, टहल।

परिचारना-(हिं०क्रि०) सेवा टहल करना।

परिचारिक-(सं०पुं०) दास, सेवक।

परिचारिका-(सं०स्त्री०) दासी। **परिचारी**-(हिं०वि०) सेवक।

परिचालक-(सं०पुं०) संचालक, चलाने वाला, **परिचालन**-(सं०पुं०) कार्यक्रम चलाना। **परिचालित**-(सं०वि०) चलाया हुआ, परिचित, जाना समझा, अभिज्ञ, संचित, इकट्ठा किया हुआ।

परिच्छद-(सं०पुं०) परिवार, कुटुम्ब, वेश, पहिरावा।

परिच्छन्न-(सं०वि०) स्वच्छ किया हुआ, वस्त्रयुक्त, ढपा हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो परीक्षा।
परिच्छिन्न-(सं०वि०) मर्यादित, सीमा-युक्त।
परिच्छेद-(सं०पुं०) ग्रन्थ या पुस्तक का अध्याय, प्रकरण; **परिच्छेद्य**-(सं० वि०) बाँटने योग्य।
परिछन-(हिं०पुं०) देखो परछन।
परिछाहीं-(हिं०स्त्री०) देखो परछाई।
परिजंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।
परिजटन-(हिं०पुं०) देखो पर्यटन।
परजन-(सं०पुं०) परिवार, आश्रित वर्ग।
परिज्ञान-(सं०नपुं०) किसी वस्तु का भली भाँति ज्ञान, सूक्ष्म ज्ञान। **परिज्ञेय**-(सं०वि०) जानने योग्य।
परिणत-(सं०वि०) रूप बदला हुआ, प्रौढ़, तुष्ट।
परिणय-(सं०पुं०) विवाह, ब्याह;
परिणाम-(सं०पुं०) विकार, प्रकृतिका अन्यथा भाव, रूपान्तर प्राप्ति,फल।
परिणामदर्शी-(सं०क्रि०) सोच विचार कर काम करने वाला।
परितच्छ-(हिं०पुं०) देखो प्रत्यक्ष।
परितप्त-(सं०वि०) अत्यन्त गरम, तपा हुआ, जलता हुआ।
परिताप-(सं०पुं०) दुःख, सन्ताप।
परितापी-(हिं०वि०) दुःखित, व्यथित।
परितुष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट।
परितृप्त-(सं०वि०) अच्छी तरह से सन्तुष्ट, अघाया हुआ।
परित्यक्त-(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ; **परित्याग**-(सं०पुं०) त्यागने का भाव, अलग कर देना।
परित्रस्त-(सं०वि०) भयभीत, डरा हुआ।
परित्राण-(सं०नपुं०) रक्षा, बचाव।
परित्रात-(सं०वि०) रक्षा किया हुआ;
परित्राता-(सं०वि०) रक्षा करनेवाला।
परिध-(हिं०पुं०) देखो परिधि।
परिधान-(सं०नपुं०) पहिरने का वस्त्र।
परिधि-(सं०पुं०) रेखागणित में वह रेखा जो किसी वृत्त के चारो ओर खींची जाती है, घेरा, कक्षा।
परिधूपित-(सं०वि०) धूप द्वारा सुवासित
परिधेय-(सं०वि०) पहिरने योग्य।
परिध्वंस-(सं०पुं०) अत्यन्त नाश।
परिनय-(हिं०पुं०) देखो परिणय।
परिनिर्वाण-(सं०नपुं०) पूर्ण मोक्ष।
परिपक्व-(सं०वि०) प्रौढ़, अच्छी तरह से पका हुआ, अनुभवी, निपुण, प्रवीण।
परिपाक-(सं०पुं०) कर्म का फल, परिणाम, प्रौढ़ता, पूर्णता।
परिपाटी-(सं०स्त्री०) प्रणाली, ढंग, रीति, पद्धति, अङ्कगणित।
परिपालक-(सं०वि०) रक्षा करनेवाला;
परिपालन-(सं०नपुं०) रक्षा, बचाव।
परिपुष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरहसे पुष्ट।
परिपूत-(सं०वि०) विशुद्ध,अति पवित्र।
परिपूरित-(सं०वि०) परिपूर्ण,भरा हुआ।
परिपूर्ण-(सं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा किया हुआ, तृप्त, अघाया हुआ; **परिपूर्णता**-(सं०स्त्री०) सम्पूर्णता।
परिपृच्छक-(सं०पुं०) पूछने वाला।
परिफुल्ल-(सं०वि०) अत्यन्त खिला हुआ, रोमांचित।
परिभव, परिभवन-(सं० पुं०, नपुं०) अनादर, तिरस्कार, पराजय। **परिभावी**-(हिं०वि०) तिरस्कार करने वाला। **परिभाव**-(सं०पुं०) अनादर, तिरस्कार।
परिभावन-(सं०नपुं०) संयोग,मिलाप।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिभावना-(सं०स्त्री०) चिन्ता, शोच, **परिभावी**-(हिं०वि०) तिरस्कार किया हुआ, (पुं०) तिरस्कार या अपमान करने वाला।

परिभाषिक-(सं०वि०) निन्दक, अपमान करनेवाला।

परिभाषा-(सं०स्त्री०) किसी शब्द का इस प्रकार अर्थ करना कि जिसमें उसकी विशेषता और व्याप्ति पूर्णरूप से निश्चित हो जावे, किसी शास्त्र ग्रन्थ आदि की विशिष्ट संज्ञा, ऐसा जो किसी शास्त्र में निर्दिष्ट अर्थ में व्यवहार किया गया हो। **परिभाषित**-(सं०वि०) जिसकी परिभाषा की गई हो।

परिभूषित-(सं०वि०) सजाया या सँवारा हुआ।

परिभोक्ता-(सं०पुं०) दूसरेके धन का उपभोग करने वाला। **परिभ्रमण**-(सं०नपुं०) पर्यटन, इधर उधर घूमना।

परिभ्रष्ट-(सं०वि०) पतित, गिरा हुआ।

परिमल-(सं०पुं०) उत्तम गन्ध।

परिमाण-(सं०पुं०) माप, वह मान जो तौल या नापने से जानी जाय।

परिमान-(हिं०पुं०) देखो परिमाण।

परिमार्गण-(सं०नपुं०) खोजना, ढूंढना।

परिमार्जक-(सं०नपुं०) धोने या माँजने वाला। **परिमार्जन**-(सं०नपुं०) परिशोधन, मार्जन।

परिमार्जित-(सं०वि०) धोया हुआ, माँजा हुआ।

परिमित-(सं०वि०) अल्प, थोड़ा, कम।

परिमिति-(सं०स्त्री०) भूमि मापन, शास्त्र, (हिं०स्त्री०) मर्यादा, प्रतिष्ठा।

परिमुक्त-(सं०वि०) पूर्ण रूप से मुक्त।

परिम्लान-(सं०वि०) कुम्हलाया हुआ।

परियंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क। **परियंत**-(हिं०अव्य०) देखो पर्यन्त।

परिरक्षक-(सं०वि०) सब तरह से रक्षा करने वाला। **परिरक्षा**-(सं०स्त्री०) परिपालन। **परिरक्षित**-(सं०वि०) उत्तम रूप से रक्षित। **परिरक्षी**-(हिं०वि०) रक्षाकारी, बचानेवाला।

परिरम्भ-(सं०पुं०) **परिरम्भन**-(सं०नपुं०) आलिंगन। **परिरम्भना**-(हिं०क्रि०) आलिंगन करना।

परिलंघन-(सं०नपुं०) फलांग मारना।

परिलिखित-(सं०वि०) रेखा से घिरा हुआ।

परिलेख-(सं०पुं०) चित्र का स्थूलरूप जिसमें केवल रखा हों, रंग न भरा हो; **परिलेखन**-(सं०नपुं०) किसी वस्तु के चारो ओर रेखा खींचना।

परिलेखना-(हिं०क्रि०) समझना, विचार करना।

परिवर्जक-(सं०वि०) त्याग करनेवाला। **परिवर्जन**-(सं०नपुं०) परित्याग, मारण। **परिवर्जनीय**-(सं० वि०) त्याग करने योग्य। **परिवर्जित**-(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

परिवर्तक-(सं०वि०) चक्कर देने वाला, बदलने वाला,। **परिवर्तन**-(सं०नपुं०) दो वस्तुओं का परस्पर अदल बदल, घुमाव, फेरा, बदलने की क्रिया, युग की समाप्ति। **परिवर्तनीय**-(सं०वि०) बदलने योग्य; **परिवर्तित**-(सं०वि०) बदला हुआ।

परिवर्धन-(सं०नपुं०) अच्छी तरह वृद्धि होना,। **परिवर्धित**-(सं०वि०) बढा हुआ, बढाया हुआ।

परिवसथ-(सं०पुं०) ग्राम, गाँव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिवा-(हिं०स्त्री०) किसी पक्ष की पहिली तिथि, प्रतिपदा।
परिवाद-(सं०पुं०) अपवाद, निन्दा।
परिवादक-(सं०वि०) निन्दा करनेवाला।
परिवादी-(हिं०वि०) निन्दा करने वाला।
परिवार-(सं०पुं०) परिजन समूह, कुटुम्ब। **परिवारी**-(हिं०पुं०) कुटुम्बी।
परिविष्ट-(सं०वि०) घिरा हुआ। **परिवृत्ति**-(सं०स्त्री०) घुमाव, चक्कर, वेष्टन, घरा।
परिवृद्ध-(सं०वि०) अत्यन्त बढा हुआ।
परिवेश-(सं०पुं०) परिधि, वेष्टन, घेरा।
परिवेष-(सं० पुं०) परिधि, सूर्यका मंडल। **परिवेष्टन**-(सं० नपुं०) आच्छादन। **परिवेष्टित**-(सं० वि०) चारो ओर से घिरा हुआ।
परिव्यक्त-(सं०वि०) अत्यन्त स्पष्ट।
परिव्राज, परिव्राजक, परिव्राट्-(सं०पुं०) सन्यासी, परमहंस, यति, श्रमणक।
परिशिष्ट-(सं०नपुं०) पुस्तक की उपयोगिता बढ़ाने के लिये अवशिष्ट विषयों की पूर्ति (वि०) अवशिष्ट, छूटा हुआ।
परिशीलन-(सं०नपुं०) सब बातों या विषयों को सोच समझ कर पढ़ना,
परिशुद्ध-(सं०वि०) अच्छी तरहसे शुद्ध किया हुआ।
परिशोध-(सं०पुं०) ऋणकी चुकती।
परिशोधन-(सं० नपुं०) पूर्ण रीति से शुद्ध करना।
परिश्रम-(सं०पुं०) प्रयास, उद्यम, व्यायाम। **परिश्रमी**-(सं०वि०) उद्यमी।
परिश्रय-(सं०पुं०) वेष्टन, घेरा।
परिश्रान्त-(सं०वि०) बहुत थका हुआ;
परिश्रान्ति-(सं०स्त्री०) थकावट।
परिश्रुत-(सं०वि०) प्रसिद्ध।
परिषत्, परिषद्-(सं०स्त्री०) समूह, समाज, सभा।
परिषिक्त-(सं०वि०) सींचा हुआ।
परिषेक-(सं०पुं०) छिड़काव, स्नान। **परिषेचक**-(सं०वि०) सींचने वाला, छिड़कने वाला।
परिष्कार-(सं०पुं०) शुद्धि, अलंकार, स्वच्छता, । **परिष्कृत**-(सं०वि०) विभूषित, सजाया हुआ,
परिष्वङ्ग-(सं०पुं०) आलिंगन।
परिसंख्या-(सं०नपुं०) गणना, गिनती
परिसमाप्त-(सं०वि०) पूर्ण रूप से समाप्त, निःशेष।
परिस्पर्धा-(सं०स्त्री०) धन, बल, यश आदि में किसी के बराबर होने की इच्छा; **परिस्पर्धी**-(सं०वि०) स्पर्धा करनेवाला।
परिस्फुट-(सं०वि०) व्यक्त, प्रकाशित,
परिहत-(सं०वि०) मृत, मरा हुआ; (हिं०स्त्री०) हल की अन्तिम और मुख्य भाग की वह सीधी खड़ी लकड़ी जिसके ऊपर की ओर मुठिया लगी होती है तथा नीचे की ओर हरिस तथा तथा तरेली ठोंकी रहती है।
परिहर-(हिं०पुं०) देखो परिहार। **परिहरण**-(सं० नपुं०) परिवर्जन, त्याग, निवारण।
परिहरणीय-(सं०वि०) हटाने या दूर करने योग्य।
परिहरना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना,
परिहंस-(हिं०पुं०) परिहास, हँसी।
परिहार-(सं०पुं०) अनादर, उपेक्षा। छूट, खण्डन, दोषादि का त्याग, छिपाने की क्रिया, तिरस्कार।
परिहारक-(सं०वि०) परिहास करनेवाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिहारना-(हिं०क्रि०) प्रहार करना। परिहारी-(सं०क्रि०) हरण करनेवाला
परिहास-(हिं०पुं०) क्रीड़ा, खेल, हंसी, दिल्लगी।
परीक्षक-(सं०पुं०) परखने या जांचने वाला।
परीक्षा-(सं०स्त्री०) गुण दोष विवेचन, जाँच पड़ताल।
परीक्षित-(सं०वि०) जिसकी परीक्षा की गई हो। परीक्ष्य-(सं०वि०) परीक्षा करने योग्य।
परीखना-(हिं०क्रि०) देखो परखना।
परीछत-(हिं०पुं०) देखो परीक्षित्।
परीछना-(हिं०क्रि०) परीक्षा लेना।
परीछम-(हिं०पुं०) पैर में पहिरनेका एक आभूषण।
परीछा-(हिं०स्त्री०) देखो परीक्षा।
परीछित-(हिं०वि०) देखो परीक्षित।
परुख-(हिं०वि०) कठोर, तीक्ष्ण; परुखाई-(हिं०स्त्री०) परुषता, कठोरता,
परुष-(सं०वि०) कठोर, कड़ा, निष्ठुर, अप्रिय, निर्दय। परुषता-(हिं०स्त्री०) निष्ठुरता।
परुषोक्ति-(सं०स्त्री०) निष्ठुर वचन।
परे-(हिं०अव्य०) दूर,उधर,उस ओर।
परेखना-(हिं०क्रि०) ध्यान से देखना, जाँचना, प्रतीक्षा करना।
परेखा-(हिं०स्त्री०) परीक्षा।
परेग-(हिं०स्त्री०) लोहे की कील, छोटा काँटा।
परेट-(हिं०पुं०) सैनिक शिक्षा।
परेत-(हिं०पुं०) देखो प्रेत, (वि०) मृत, मरा हुआ;, परेत भूमि-श्मशान;
परेता-(हिं०पुं०) वह बेलन या चरखी जिसपर पतंग (गुड्ढी) की डोरी, (नख) लपेटी जाती है।
परेर-(हिं०पुं०) आकाश।
परोधित-(सं०वि०) दूसरे से पाला पोसा हुआ, (पुं०) कोकिल, कोयल।
परों-(हिं०क्रि०वि०) देखो परसों।
परोक्ष-(सं०पुं०) अप्रयक्ष,अनुपस्थित; (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।
परोजन-(हिं०पुं०) देखो प्रयोजन।
परोट-(सं०पुं०) घी में पकाई हुई पूरी।
परोना-(हिं०क्रि०) देखो पिरोना।
परोपकार-(सं०पुं०)दूसरे के हित का काम, दूसरे का उपकार। परोपकारक-(सं०पुं०) वह जो दूसरे की भलाई करता हो। परोपकारी-(सं०वि०) दूसरे का हित करनेवाला।
परोसना-(हिं०क्रि०)खानेके लिये किसी के सामने तरह तरहके भोजन रखना।
परोसा-(हिं०पुं०)एक मनुष्य के खाने भर का भोजन जो कहीं भेजा जाता है।
परोसी-(हिं०पुं०) देखो पड़ोसी।
परोसैया-(हिं०पुं०) भोजन परसने वाला
पर्कटि,पर्कटी-(सं०स्त्री०)पाकड़का वृक्ष;
पर्कार-(हिं०पुं०)देखो परकार,परकाल।
पर्काला-(हिं०पुं०) देखो परकाला।
पर्गना-(हिं०पुं०) देखो परगना।
पर्चा-(हिं०पुं०) देखो परचा।
पर्चाना-(हिं०क्रि०) देखो परचाना।
पर्चून-(हिं०पुं०) देखो पचून।
पर्चूनिया-(हिं०पुं०) दखो परचूनी।
पर्जंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।
पर्जन्य-(सं०पुं०) मेघ, बादल।
पर्ण-(सं०नपुं०) पत्र, पत्ता, डैना।
पर्णकार-(सं०पुं०) तमोली, बरई।
पर्णकुटिका, पर्णकुटी-(सं० पुं०) झोपड़ी, केवल पत्तों की बनी हुई कुटी
पर्त-(हिं०स्त्री०) देखो परत।
पर्दनी-(हिं०स्त्री०) धोती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर्दा-(हिं०पुं०) देखो परदा।
पर्पटी-(सं०स्त्री०) पपड़ी।
पर्बत-(हिं०पुं०) देखो पर्वत।
पर्बती-(हिं०वि०) पहाड़ संबंधी पहाड़ी।
पर्यङ्क-(सं०पुं०) पलंग,
पर्यटन-(सं०नपुं०) भ्रमण, घूमना, फिरना।
पर्यन्त-(सं०पुं०) समीप, पास, (अव्य०) तक, लौं।
पर्यवसायी-(हिं०व०) समाप्त करने वाला।
पर्यवस्कन्द-(सं०पुं०) रथ से उतारना।
पर्यवस्थान-(सं०नपुं०) विरोध।
पर्यस्त-(सं०वि०) पतित, प्रसारित।
पर्याकुल-(सं०वि०) बहुत घबड़ाया हुआ।
पर्याप्त-(सं०वि०) यथेष्ट, पूरा।
पर्यालोचन-(सं०नपुं०) अनुशीलन।
पर्यालोचना-(सं०स्त्री०) पूरी जांच पड़ताल।
पर्युपासक-(सं०नपुं०) सेवा करने वाला। **पर्युपासन**-(सं०नपुं०) सेवा सत्कार।
पर्व-(सं०नपुं०) बांस की गाँठ, अंगुलि, का जोड़ उत्सव, पूर्णिमा और प्रतिपदा की सन्धि, अंश, भाग अवसर, सूर्य अथवा चन्द्रमा का ग्रहण।
पर्वणी-(सं०स्त्री०) पूर्णिमा, पौर्णमासी,
पर्वत-(सं०पुं०) शैल गिरि, पहाड़, किसी वस्तु का ऊंचा ढेर।
पर्वती-(हिं०व०) पर्वत संबंधी, पहाड़ी।
पर्वतीय-(सं०वि०) पर्वत संबंधी, पहाड़ी, (पुं०) पहाड़ पर रहने वाला।
पर्वर-(हिं०पुं०) देखो परबर, परवल।
पर्वसन्धि-(सं०पुं०) घुटने पर का जोड़,
पर्शु-(सं०पुं०) परशु, फरसा, । **पर्शुका**-(सं०स्त्री०) छाती पर की हड्डी।
पर्षद--(सं०स्त्री०) सभा, समाज।
पलंग-(हिं०पुं०) पर्यङ्क, सुन्दर चारपाई। **पलंगड़ी**-(हिं०स्त्री०) छोटी पलंग।
पल-(सं०पुं०) समय का एक प्राचीन विभाग जो चौबीस सेकेन्ड के बराबर होता है, घड़ी या दण्ड का साठवां भाग।
पलई-(हिं०स्त्री०) पेड़ की टहनी।
पलक-(सं०पुं०) आँख के ऊपर का चमड़े का परदा जिसके गिरने से आँख बन्द होती है और उठने से खुलती है, क्षण, पल।
पलका-(हिं०पुं०के) पलंग, चारपाई।
पलटन-(हिं०स्त्री०) पैदल सेना का एक विभाग इसमें प्रायः दोसौ सैनिक रहते हैं, समूह, समुदाय दल।
पलटना-(हिं०क्रि०) बदलना, लौटाना, फेरना, लौटना, पीछे फिरना, मुड़ना, एक वस्तु को त्याग कर दूसरा ग्रहण करना।
पलटनिया-(हिं०पुं०) पलटन में काम करने वाला सैनिक।
पलटा-(हिं०पुं०) प्रतिफल, बदला, परिवर्तन।
पलटाना-(हिं०क्रि०) बदलना, फरना, लौटाना। **पलटे**-(हिं० क्रि० वि०) बदले में।
पलड़ा-(हिं०पुं०) तराजू का पल्ला।
पलथी-(हिं०स्त्री०) बैठने का एक ढंग जिसमें दाहिने पैर का पंजा बाँए और बाँए पैरका पंजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबा कर रक्खा जाता है और दोनों टाँगें ऊपर नीचे हो कर दोनों जांघों से त्रिकोण बनाती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पलना-(हिं०क्रि०) पाला पोसा जाना, तैयार होना।
पलरा-(हिं०पुं०) देखो पलड़ा।
पलल-(सं०नपुं०) मांस, कीचड़, तिल का चूर्ण, (पुं०) सेवार, बल, शक्ति।
पलवल-(हिं०पुं०) देखो परवल।
पलवाना-(हिं०क्रि०) किसी के द्वारा पालन पोषण कराना।
पलवैया-(हिं०वि०) पालन पोषण करने वाला।
पलस्तर-(हिं०पुं०) भीत आदि पर गारे आदि का लेप।
पलहना-(हिं०क्रि०) पत्तियों से भर जाना, पत्तियां फूटना।
पलहा-(हिं०पुं०) कोमल पत्ता, कोंपल।
पला-(हिं०पुं०) तराजू का पलड़ा, पल्ला, किनारा, अंचल।
पलाण्डु-(सं०पुं०) प्याज।
पलाद-(सं०पुं०) मांसभक्षक, राक्षस।
पलान-(हिं०पुं०) पशुओं की पीठ पर चढ़ने या बोझ रखने का गद्दा।
पलाना-(हिं०क्रि०) भाग जाना, भगा देना।
पलानी-(हिं०स्त्री०) पैर की अंगुलियों में पहिरन का एक गहना।
पलायक-(सं०वि०) भागने वाला।
पलायन-(सं०नपुं०) भागनेकी क्रिया या भाव।
पलायमान-(सं०वि०) भागता हुआ।
पलायित-(सं०वि०) भागा हुआ।
पलायी-(सं०वि०) पलायक, भग्गू।
पलाश-(सं०नपुं०) पत्र, पत्ता, ढाक का फूल, (वि०) निष्ठुर, कठोर।
पलास-(हिं०पुं०) पलाश ढाक।
पलिका-(हिं०पुं०) खाट, चारपाई।
पलिघ-(हिं०पुं०) गोशाला, फाटक, अर्गला, अगरी।
पलित-(सं०वि०) वृद्ध, बूढा।
पली-(हिं०स्त्री०) किसी खड़े पात्र में से घी या तेल निकालने की एक प्रकार की करछी।
पलीत-(हिं०पुं०) भूत, प्रेत, पिशाच; (वि०) दुष्ट, धूर्त।
पलुआ-(हिं०वि०) पाला हुआ, पालतू।
पलेट-(हिं०स्त्री०) लंबी पट्टी, गोंट।
पलेथन-(हिं०पुं०) वह सूखा आंटा जो रोटी बेलती समय लोई में लगाया जाता है।
पलेनर-(हिं०पुं०) चौरस करने की पटिया।
पलेव-(हिं०पुं०) जसको गाढा करने के लिये इसमें मिलाया हुआ आंटा या मसाला।
पलोटना-(हिं०क्रि०) पैर दबाना।
पलोथन-(हिं०पुं०) देखो पलेथन।
पल्टा-(हिं०पुं०) देखो पलटा।
पल्लव-(सं०पुं०) नये निकले हुए कोमल पत्ते, किसलय, । **पल्लवना**-(हिं०क्रि०) पत्ते निकलना।
पल्लवित-(सं०वि०) जिसमें नये नये पत्ते निकले हों।
पल्ला-(हिं०पुं०) किसी वस्त्रका अंचल, दूरी, पास, तराजू का पलड़ा, पटल, किवाड़ी पहल, चादर जिसमें अन्न बाँध कर लोग ले जाते हैं, दुपलिया टोपी का एक भाग।
पल्लि-(सं०स्त्री०) कुटी, ग्राम, छिपकली। **पल्ली**-(सं०स्त्री०) छिपकली, गोधा, बिस्तुइया।
पल्लू-(हिं०पुं०) चौड़ी गोंट, पल्ला, छोर, अँचरा।
पल्लेदार-(हिं०पुं०) आढ़त या दूकान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में अन्न तौलने वाला मनुष्य, बया।
पल्वल-(सं०पुं०) छोटा तालाव या गड्ढा
पवन-(सं०पुं०) वायु, पावन, पवित्र।
पवनचक्की-(हिं०स्त्री०) वायु के वेग से चलनेवाली चक्की या कल। **पवन-चक्र**-(सं०पुं०) चक्रवात, बवन्टर।
पवरिया-(हिं०पुं०) ड्योढीदार।
पवर्ग-(सं०पुं०) वर्णमालाका पांचवाँ वर्ग, जिसमें,प, फ, ब, भ, म ये पाँच अक्षर हैं।
पवाँरना-(हिं०क्रि०) डिराना, फेंकना।
पवाई-(हिं०स्त्री०) एक पैरका जूता, चक्की का एक पाट।
पवाना-(हिं०क्रि०) भोजन कराना, खिलाना।
पवि-(सं०पुं०) वज्र, विजली, मार्ग, थूहर का वृक्ष।
पवित-(सं०वि०) पूत, पवित्र, शुद्ध।
पवित्तर-(हिं०वि०) देखो पवित्र।
पवित्र-(सं०वि०) शुद्ध, निर्मल।
पवित्रता-(सं०स्त्री०) स्वच्छता, शुद्धि।
पवित्रा-(सं०स्त्री०) श्रावण के शुक्लपक्ष की एकादशी, रेशम के दोनों की बनी हुई माला। **पवित्रता**-(हिं०वि०) शुद्ध अन्तःकरण वाला। **पवित्रित**-(सं०वि०) शुद्ध या निर्मल किया हुआ
पवित्री-(सं०स्त्री०) कुश का बना हुआ छल्ला जो यज्ञादि के समय अनामिका में पहिरा जाता है।
पवेरना-(हिं०क्रि०) छितराकर बोना।
पवेरा-(हिं०पुं०) वह बोवाई जो अन्न को हाथ से छितरा कर या फेंककर की जावे।
पशम-(हिं०स्त्री०) बहुत बढ़िया कोमल ऊन जिसके दुशाले आदि बनते हैं, अति तुच्छ पदार्थ।
पशु-(सं०पुं०) चार पैर से चलने वाले रोवाँ और पोंछ युक्त प्राणि, प्राणि मात्र, जीव, देवता, पागल, यज्ञ।
पशुता-(सं०स्त्री०) पशु का भाव, मूर्खता।
पशुपति-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
पशुपाल-(सं०पुं०) पशुओं को पालनेवाला; **पशुपालक**-(सं०वि०) पशुओं का रक्षक।
पश्चात्-(सं०अव्य०) पीछे से फिर, अनन्तर, (पुं०) पश्चिम दिशा।
पश्चात्ताप-(सं०पुं०) पछतावा।
पश्चात्तापी-(सं०वि०) पछतावा करने वाला।
पश्चानुत्ताप-(सं०पुं०) पछतावा।
पश्चिम-(सं०वि०) अन्तिम, जो बाद में उत्पन्न हुआ हो,बादका, (पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य अस्त होता है।
पश्चिमरात्र-(सं०पुं०) रात्रि का शेष भाग।
पश्चिमी - (हिं० वि०) पश्चिम संबंधी।
पश्चिमोत्तर-(सं० स्त्री०) वायुकोण, पच्छिम और उत्तर के बीच का कोण
पश्मीना-(हिं०पुं०) एक प्रकार का उत्तम कोमल ऊनी वस्त्र।
पषाण-(न)-(हिं०पुं०) देखो पाषाण।
पषारना-(हिं०क्रि०) प्रक्षालन, धोना।
पसंगा-(घा)-(हिं०पुं०) वह भार जो तराजू के पल्लों का समभार करने के लिये उस पल्ले की ओर जोती में बाँध दिया जाता है जो पल्ला हलका होता है। (वि०) बहुत कम या थोड़े परिमाण का।
पसंती-(हिं०स्त्री०) देखो पश्यन्ती।
पसमीना-(हिं०पुं०) देखो पशमीना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पसर-(हिं०पुं०) गहरी की हुई हथेली, आधी अंजली, विस्तार, फैलाव,
पसारना-(हिं०क्रि०) फैलाना, आगे की ओर बढ़ाना, हाथ पैर फैलाकर लेटना।
पसरहा, पसरहट्टा-(हिं०पुं०) वह हाट जिसमें पंसारियों की दूकानें हों।
पसराना-(हिं०क्रि०) पसारने का काम दूसरे से कराना; **पसरौंहाँ**-(हिं०वि०) पसारने या फैलाने वाला।
पसली-(हिं०स्त्री०) मनुष्योंकी छाती के अस्थिपंजर की गोलाकार आड़ी हड्डियों में से एक, पर्शु।
पसाउ-(हिं०पुं०) प्रसाद, प्रसन्नता।
पसाना-(हिं०क्रि०) भात में का माड़ निकालना, पसेव निकालना।
पसार-(हिं०पुं०) विस्तार, फैलाव; **पसारना**-(हिं०क्रि०) फैलाना, आगे को बढ़ाना।
पसारी-(हिं०पुं०) देखो पंसारी।
पसाव-(हिं०पुं०) माड़, पीच।
पसावन-(हिं०पुं०) पानी, माड़, पीच।
पसाहनि-(हिं०स्त्री०) अंगराग।
पसीजना-(हिं०क्रि०) किसी घन पदार्थ में मिले हुए द्रव अंशों का गरमी पाकर रसकर बहना।
पसीना-(हिं०पुं०) श्रमवारि, स्वेद।
पसु-(हिं०पुं०) देखो पशु; **पसुरी**-(हिं०स्त्री०) देखो पसली, पर्शु।
पसूता-(हिं०स्त्री०) प्रसूता।
पसेउ-(हिं०पुं०) देखो पसेव।
पसेरी-(हिं०स्त्री०) पाँच सेर का परिमाण।
पसेव-(हिं०पुं०) रसकर निकलने वाला जल, स्वेद, पसीना।
पस्ताना-(हिं०क्रि०) देखो पछताना;
पस्तावा-देखो पछतावा।

पहँ-(हिं०अव्य०) निकट, समीप, पास।
पहचनवाना-(हिं०क्रि०) पहचाननेका काम करना।
पहचान-(हिं०स्त्री०) पहचानने की सामग्री, परिचय, लक्षण; **पहिचानना**-(हिं०क्रि०) विवेक करना, चीन्हना, जानना।
पहटना-(हिं०क्रि०) खदेड़ना।
पहनना-(हिं०क्रि०) शरीर पर धारण करना; **पहनवाना**-(हिं०क्रि०) पहिरने का काम किसी दूसरे से कराना।
पहनाई-(हिं०स्त्री०) पहनने की क्रिया या भाव, पहिनाने का शुल्क;
पहनाना-(हिं०क्रि०) किसी के शरीर पर वस्त्र, आभूषण आदि धारण कराना; **पहनावा**-(हिं०पुं०) पहिरने के प्रधान वस्त्र, वे वस्त्र जो मुख्य अवसर पर पहिने जाते हैं।
पहपट-(हिं०पुं०) कोलाहल, अपमान की चर्चा।
पहर-(हिं०पुं०) तीन घंटे का समय।
पहरना-(हिं० क्रि०) देखो पहनना।
पहरा-(हिं०पुं०) रक्षकगण, रखवाली, नियुक्ति।
पहिराइत-(हिं०पुं०) पहरा देने वाला
पहराना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना।
पहरावनी-(हिं०स्त्री०) वह पहिरावा जिसको कोई बड़ा अपने से छोटे को दे; **पहरावा**-(हिं०पुं०) देखो पहनावा।
पहरी-(हिं०पुं०) चौकीदार, पहरेदार, पहरुआ; **पहरू**-(हिं०पुं०) चौकीदार।
पहल-(हिं०पुं०) समतल अंश, परत, तह, किसी कार्य का आरंभ।
पहलदार-(हिं०वि०) जिसमें पहल हों।
पहला-(हिं०वि०) जो क्रम में प्रथम हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले-(हिं०अव्य०) आरंभ में, पूर्व काल में
पहलेज--(हिं०पुं०) एक प्रकार का खर्बूजा जो लंबोतरा होता है।
पहले पहल-(हिं०अव्य०) पहिली वार।
पहलौंठा, पहलौठा-(हिं०वि०) पहिली बार के गर्भ से उत्पन्न।
पहलौंठी, (सं०स्त्री०) प्रथम प्रसव।
पहाड़-(हिं०पुं०) पर्वत, गिरि, किसी वस्तु का भारी ढेर, दुःसाध्य अथवा अति क्लिष्ट कार्य, वहुत बड़े भार की वस्तु।
पहाड़ा-(हिं०पुं०) किसी अंक के एक से लेकर दस तक के गुणनफलों की क्रमागत सूची।
पहाड़िया-(हिं०वि०) देखो पहाड़ी।
पहाड़ी-(हिं०वि०) पहाड़ पर रहने वाला, पहाड़ संबंधी; (स्त्री०) छोटा पहाड़।
पहार-(हिं०पुं०) देखो पहाड़।
पहिचानना-(हिं०क्रि०) पहचानना।
पहिनना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना।
पहिनाना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना।
पहिनावा-(हिं०पुं०) देखो पहरावा।
पहिया-(हिं०पुं०) वह चक्राकार भाग जो अपनी धुरी पर घूमता हो, चक्र, चक्कर।
पहिरना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना।
पहिराना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना।
पहिरावना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना।
पहिरावनि, पहिरावनी-(हिं०स्त्री०) देखो पहनावा।
पहिला--(हिं०वि०) प्रथम। **पहिले**-(हिं०अव्य०) आरंभ में।
पहुँच-(हिं०स्त्री०) किसी स्थान तक की गति, प्राप्ति, प्रवेश, पैठ। **पहुँचना**-(हिं०क्रि०) प्राप्त होना, मिलना, पैठना, घुसना, गूढ़ अर्थ को जान लेना।
पहुँचा-(हिं०पुं०) अग्र वाहु और हथेली के बीच का भाग, मणिवन्ध, कलाई, गट्टा।
पहुँचाना-(हिं०क्रि०) किसी को किसी विशेष अवस्था में ले जाना।
पहुँची-(हिं०स्त्री०) हाथ की कलाई पर पहिरने का एक गहना।
पहुनई-(हिं०स्त्री०) देखो पहुनाई।
पहुनी-(हिं०पुं०) देखो पाहुना।
पहुनाई-(हिं०स्त्री०) अतिथि सत्कार।
पहुमी-(हिं०स्त्री०) देखो पहुनाई।
पहुप-(हिं०स्त्री०) पुष्प, फूल।
पहुमी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी।
पहुरी-(हिं०स्त्री०) संगतराश की मठारने की टाँकी।
पहेरी, पहेली-(हिं०स्त्री०) समस्या, बुझौवल, फेरवट की वात,
पाँ, पाँइ-(हिं०पुं०) पद, पाँव, पैर।
पाँइता-(हिं०पुं०) देखो पाँयता।
पाँउँ-(हिं०पुं०) पद, पाँव, पैर।
पाँक-(हिं०पुं०) पङ्क, कर्दम, कीचड़।
पाँका-(हिं०पुं०) देखों पाँक।
पाँख-(हिं०पुं०) पंख, पर।
पाँच-(हिं०वि०) जो गिनती में चार और एक हो, (पुं०) चार और एक की संख्या ५। **पांचवाँ**-(सं० वि०) जो क्रम से पाँच के स्थान पर हो।
पांचालिका-(हिं०स्त्री०) कपड़े की बनी हुई पुतली, गुड़िया।
पाँचना-(हिं०क्रि०) टाँका लगाकर जोड़ना, झालना।
पाँजर-(हिं० पुं०) पसली, पार्श्व, सामीप्य।
पाँति-(हिं०स्त्री०) पंगत, पंक्ति, पाँति।
पाँयँ-(हिं०वि०) पथिक, बटोही।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँथ-(हिं०पुं०) पद, पैर, चरण।
पाँयता-(हिं०पुं०) खाट या पलंग का उस ओर का भाग जिस ओर पैर किया जाता है।
पाँव-(हिं०पुं०) पाद, पैर।
पाँवड़ी-(हिं०स्त्री०) खड़ाऊँ।
पाँवरी-(हिं०स्त्री०) सोपान, सीढ़ी, जूता।
पाँशु-(सं०पुं०) धूलि, रज, बालू।
पांसा-(हिं०पुं०) हड्डी या हाथीदाँत के बने हुए चौसर खेलने के चौकोर टुकड़े
पांसु-(सं०पुं०) धूलि, रज।
पाँसुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पँसुली।
पाँही-(हिं०क्रि०वि०) समीप, निकट, पास।
पाइ-(हिं०पुं०) देखो पाद, पाँव।
पाइतरी-(हिं०स्त्री०) चारपाई का पैताना।
पाइल-(हिं०स्त्री०) देखो पायल।
पाई-(हिं०स्त्री०) एक पैसा, एक छोटी मुद्रा जो एक पैसे में तीन होती है, छोटी सीधी लकीर जो किसी संख्या के आगे लिखने से चतुर्थांश प्रगट करती है, पूर्ण विराम के लिये खोची हुई छोटी खड़ी रेखा, धुन की तरह का एक कीड़ा।
पाउँ-(हिं०पुं०) देखो पाँव।
पाक-(सं०पुं०) पकाने की क्रिया, रींधन, रसोंई, खाये हुए पदार्थ की पचने की क्रिया।
पाकठ-(हि०वि०) पका हुआ, अनुभवी।
पाकड़-(हिं०पुं०) देखो पाकड़।
पाकना-(हिं०क्रि०) देखो पकना।
पाकर-(हिं०पुं०) समस्त भारतवष में होने वाला एक वृक्ष।
पाकशाला-(हिं० स्त्री०) महानस, रसोंई बनाने का घर। **पाकशासन**-(सं०पुं०) इन्द्र। **पाकस्थली**-(सं० स्त्री०) उदर में का पक्वाशय जहाँ आहार का पाचन होता है।
पाकागार-(सं०पुं०) रसोइयाँघर।
पाक्षिक-(सं०वि०) पक्षपाती, जो प्रतिपक्ष में एक बार हो।
पाखंड-(हिं०पुं०) ढोंग, आडंबर।
पाखंडी-(हिं०वि०) ढोंगी, धूर्त, कपटी, बनावटी धर्म दिखलाने वाला।
पाख-(हिं०पुं०) महीने का आधा भाग। मकान की चौड़ाई के भीतों के भाग।
पाखण्ड-(सं०पुं०) कपट, छल, ढकोसला, आडंबर, (सं०वि०) कपटाचारी, ढोंगी, धूर्त।
पाखर-(हिं०स्त्री०) राल चढ़ाया हुआ टाट,। **पाखरी**-(हिं०स्त्री०) टाट का बना हुआ बड़ा चादर जिसको बैलडाड़ी में रखकर अनाज, भूसा आदि लादा जाता है।
पाखा-(हिं०पुं०) कोना, छोर, देखो पाख।
पाखान-(हिं०पुं०) देखो पाषाण, पत्थर।
पाग-(हिं०पुं०) पगड़ीं, (पुं०) चाशनी में पकाई हुई औषधि, फल आदि।
पागना-(हिं०क्रि०) चाशनी में लपेटना।
पागल-(सं०वि०) उन्मत्त, बावला, विक्षिप्त, मूर्ख।
पागुर-(हिं०पुं०) जुगाली।
पाचक-(सं०नपुं०) पकाने या पचाने वाला, (पुं०) पाचन शक्ति को बढ़ान वाली औषधि, रसोइयादार।
पाचन-(सं०पुं०) दोष को पचाने वाली औषधि।
पाचना-(हिं०क्रि०) अच्छी तरह से पकाना। **पाचनीय**-(सं० वि०) पचाने या पकाने योग्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाचर-(हिं०पुं०) देखो पच्चर।

पाछ-(हिं०स्त्री०) रस निकालने के लिये वृक्ष की डाल या तने पर बनाया हुआ चीरा, (पुं०) पिछला भाग, (क्रि० वि०) पीछे की ओर। **पाछना**-(हिं० क्रि०) जन्तु या पौधे के अंग पर छुरी की धार से मारकर रक्त या रस निकालना।

पाछल-(हिं०वि०) देखो पिछला। **पाछा**-(हिं०पुं०) देखो पीछा। **पाछिल**-(हिं०वि०) देखो पिछला।

पाछी, पाछु, पाछे-(हिं०क्रि०वि०) पाछे की ओर।

पाजी-(हिं०वि०) दुष्ट, नीच। **पाजीपन**-(हिं०पुं०) दुष्टता, नीचता।

पाञ्चालिका पाञ्चाली-(सं० स्त्री०) गुड़िया।

पाटबंर-(हिं०पुं०) रेशमी वस्त्र।

पाट-(हिं०पुं०) जूट का पौधा, वस्त्र, कपड़ा, चक्की का एक पल्ला, धोबी का कपड़ा पटक कर धोने का पत्थर, पल्ला, पीढा, विस्तार, फैलाव, चौड़ाई रेशम, राज्यशासन, कीड़ा।

पाटच्चर-(सं०पुं०) चोर।

पाटन-(हिं०स्त्री०) पाटने की क्रिया या भाव, पटाव।

पाटना-(हिं०क्रि०) किसी नीचे स्थान को उसके आसपास के धरातल के बराबर कर देना, ढेर लगा देना।

पाटमहिषी-(हिं०स्त्री०) प्रधान रानी, पटरानी।

पाटम्बर-(सं०पुं०) रेशमी वस्त्र।

पाटरानी-(हिं०स्त्री०) देखो पटरानी।

पाटला-(हिं०पुं०) भारत का शुद्ध किया हुआ बढ़िया सोना।

पाटव-(सं०नपुं०) पटुता, निपुणता।

पाटसन-(हिं०पुं०) पटसन, पटुआ।

पाटा-(हिं०पुं०) पीढ़ा, बल्ली, पटिया।

पाटी-(हिं०पुं०) वह लकड़ी की पट्टी जिस पर बालकों को विद्याध्यास कराया जाता है, पटिया पाट, खाट की लम्बाई बल की लकड़ी; **पाटीगणित**-(सं०नपुं०) अङ्क विद्या।

पाठ-(सं०पुं०) शिष्य का अध्यापन, पढ़ना, पढ़ने की क्रिया, किसी धर्मपुस्तक को नियम पूर्वक पढ़ने की क्रिया, किसी पुस्तक का वह अंश जो एक बार पढ़ाया जाय।

पाठक-(सं०पुं०) उपाध्याय, पढ़ाने वाला, धर्मोपदेशक, अध्यापक। **पाठना**-(हिं० क्रि०) पढ़ाना।

पाठपद्धति, पाठप्रणाली-(सं० स्त्री०) पढ़ने की रीति का ढंग।

पाठभेद-(सं०पुं०) वह भेद जो एक ही ग्रन्थ की दो प्रतियों के पाठ में पाया जाता है।

पाठशाला-(सं०स्त्री०) अध्ययनगृह, विद्यालय।

पाठान्तर-(सं०नपुं०) पाठभेद।

पाठार्थी-(सं०वि०) पढ़ने वाला।

पाठालय-(सं०पुं०) पाठशाला, विद्यालय।

पाठिका-(सं०स्त्री०) पाठ पढ़ने वाली।

पाठित-(सं०वि०) पढ़ाया हुआ।

पाठी-(हिं०पुं०) पढ़नेवाला।

पाठ्य-(सं०वि०) पढ़ने योग्य।

पाड़-(हिं०पुं०) धोती साड़ी आदि का किनारा।

पाड़ा-(हिं०पुं०) नगर का मुहल्ला, टोला।

पाढ़-(हिं०पुं०) वह पीढ़ा जिस पर बैठ कर सुनार, लोहार या बढ़ई काम करते हैं, अस्त्र, पाटा, लकड़ी की सीढ़ी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाढ़त-(हिं०स्त्री०) पढ़ने की क्रिया या भाव ।

पाढ़ल-(हिं०पुं०) देखो पाटल ।

पाणि-(सं०नपुं०) हस्त, हाथ, कर ।

पाणिग्रहण-(सं०नपुं०) विवाह ।

पाणिज-(सं०पुं०) अंगुली, नख, । **पाणितल**-(सं०नपुं०) करतल, हथेली ।

पाणिपीड़न-(सं०नपुं०) पाणिग्रहण, विवाह ।

पाणिरुह-(सं०पुं०) अंगुली, नख । **पाणिवाद्य**-(सं०वि०) ताली बजाना, **पाणिवादक**(सं०वि०) ताली बजाने वाल ।

पाण्डित्य-(सं०नपुं०) विद्वता,पण्डिताई;

पाण्डु-(सं०पुं०) हलका पीला रंग, कामला रोग, **पाण्डुता**-(सं०स्त्री०) पाण्डुत्व, पीलापन ।

पाण्डुरोग-(सं०पुं०) कामला रोग ।

पाण्डुलिपि, पाण्डुलेख-(सं०पुं०) लेख आदि का पहला रूप ।

पात-(सं०पुं०) पतन, खगोल का वह स्थान जहाँ नक्षत्रों की काँक्षायें कान्तिवृत्ति को काट कर ऊपर चढ़ती या नीचे उतरती हैं, नाश, मृत्यु, (वि०) गिराने वाला, (हिं०पुं०) पत्ता, कान में पहिरने का एक गहना ।

पातक-(सं०पुं०) पाप, दुष्कृत; **पातकी** (हिं०वि०) पाप करने वाला ।

पातबंदी-(हिं०स्त्री०) वह मानचित्र जिसमें भूसम्पत्ति की आय और उस पर का देन लिखा होता है।

पातर-(हिं०वि०) सूक्ष्म, पतला ।

पातल-(हिं०वि०) देखो पातल, पतला

पातव्य-(सं०वि०) रक्षा करने योग्य, पीने योग्य ।

पाता-(हिं०पुं०)पत्ता, (वि०) रक्षक ।

पातखत-(हिं०पुं०) पत्र और अक्षत ।

पाताल-(सं०नपुं०)विवर, गुफा, बिल, पृथ्वी तल के नीचे का सातवाँ लोक ।

पातालयन्त्र-(सं०नपुं०) एक प्रकार का यन्त्र जिसके द्वारा कड़ी औषधियाँ पिघलाई जाती हैं ।

पाति-(हिं०स्त्री०) पत्ती, दल, पत्र, चिट्ठी ।

पातित-(सं०वि०) गिराया हुआ ।

पातिव्रत, पातिव्रत्य-(सं०नपुं०) स्त्री का पतिव्रता होने का धर्म ।

पाती-(हिं०स्त्री०)मान, प्रतिष्ठा, पत्र, चिट्ठी पत्री ।

पात्र-(सं०वि०)अनेक गुणों से सम्पन्न, (नपुं०) आधार, भाजन, नाटक का अभिनेता अथवा नायक या नायिका

पात्रता-(सं०स्त्री०) योग्यता, **पात्रत्व**-(सं०नपुं०) योग्यता ।

पात्रशेष-(सं०पुं०)खाकर छोड़ा हुआ अन्न आदि, उच्छृष्ट, जूठा ।

पात्री-(हिं०वि०)जिसके पास सुयोग्य मनुष्य हों ।

पाथ-(हिं०पुं०) मार्ग ।

पाथना-(हिं०क्रि०) गढ़ना, पीटना, ठोंकना,किसी गोली वस्तु को साँचे में रखना

पाथर-(हिं०पुं०) देखो पत्थर ।

पाथि-(हिं०पुं०) घाव पर की पपड़ी ।

पाथेय-(सं०पुं०) यात्री का रास्ते का कलेवा । **पाथेयक**-(सं०वि०) वह जिसके पास मार्गव्यय हो ।

पाद-(सं०पुं०) चरण, पैर, पाँव, चतुर्थांश, श्लोक का चौथा भाग, मयूख, किरण ।

पादग्रहण-(सं०नपुं०)पैर छूकर प्रणाम करना । **पादचारी**-(सं०पुं०)पदाति,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैदल चलने वाला। **पादचिह्न**-(सं० नपुं०) दोनों पैरों के चिह्न।
पादज-(सं०पुं०) शूद्र, (वि०) जो पैर से उत्पन्न हो। **पादजल**-(सं० नपुं०) पादोदक।
पादटीका-(सं०स्त्री०) वह टिप्पनी जो किसी पुस्तक के पृष्ठ के नीचे लिखी गई हो।
पादतल-(सं०पुं०) पैर का तलवा। **पादत्र, पादत्राण**-(सं०पुं०) पादरक्षक, पादुका, खड़ाऊँ, जूता। **पाददलित**-(सं०वि०) पैर से कुचला हुआ।
पादधावन-(सं०पुं०) पैर धोने की क्रिया
पादना-(हिं०क्रि०) अपान वायु त्याग करना।
पादप-(सं०पुं०) वृक्ष, पेड़।
पादपद्धति-(सं०स्त्री०) पगडंडी।
पादप्रक्षालन-(सं०नपुं०) पैरों का धोना
पादप्रमाण-(सं०पुं०) साष्टांग दण्डवत **पादप्रहार**-(सं०पुं०) लात मारना। **पादमूल**-(सं०नपुं०) पैर का निचला भाग।
पादलेप-(सं०पुं०) पैर में लगाने का आलता, महावर।
पादशुश्रूषा-(सं०स्त्री०) चरण सेवा। **पादहीन**-(सं०वि०) जिसके चरण न हो जिस कविता में तीन ही चरण हो। **पादाक्रान्त**-(सं०वि०) पैरों से कुचला हुआ। **पादाग्र**-(सं०नपुं०) पैर की नोक।
पादाघात-(सं०नपुं०) पैरों का प्रहार।
पादान्त-(सं०पुं०) पाद का अन्त या अन्तिम भाग, (वि०) पैर का अन्त।
पादार्ध-(सं०पुं०) पाद का अर्ध भाग, आठवाँ हिस्सा।
पादीय-(हिं०पुं०) पद वाला।
पादोदक-(सं०नपुं०) वह जल जिसमें किसी का पैर धोया गया हो।
पादोदर-(सं०पुं०) सर्प, साँप।
पाद्यार्घ-(सं०पुं०) हाथ पैर धुलाने का जल, पूजा की सामग्री।
पाधा-(हिं०पुं०) आचार्य, उपाध्याय, पण्डित।
पान-(सं०नपुं०) पीना, मदिरा पीना, पीने का पदार्थ, मद्य, (वि०) रक्षा करने वाला।
पान-(हिं०पुं०) ताम्बूल, पान के आकार की कोई वस्तु, ताश के पत्ते के चार भेदों में से एक।
पानदान-(हिं०पुं०) वह डब्बा जिसमें पान, खैर, सुपारी, चूना आदि रक्खा जाता है।
पानदोष-(सं०पुं०) मद्यपान का व्यसन।
पानप-(सं०वि०) मद्य पीने वाला, पियक्कड़। **पानभूमि**-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ एकत्र होकर लोग मदिरा पीते हैं।
पानरा-(हिं०पुं०) देखो पनारा, पनाला।
पानही-(हिं०स्त्री०) पनही, जूता।
पाना-(हिं० क्रि०) प्राप्त करना, पास पहुँचना, समर्थ होना, जानना। देखना, अनुभव करना, अच्छा बुरा परिणाम भोगना।
पानागार-(सं०पुं०) जहाँ बहुत से लोग मिलकर मद्य पीते हैं
पानि-(हिं०पुं०) हाथ, पानी, जल।
पानिक-(सं०पुं०) मदिरा बेचने वाला कलवार।
पानिग्रहण-(सं०पुं०) देखो पाणिग्रहण विवाह।
पानिप-(हिं०पुं०) द्युति, चमक, कान्ति।
पानिय-(हिं०वि०) पानी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पानी-(हिं०पुं०) पानीय, जल, वृष्टि, वर्षा, मेघ, वारी, जलवायु, चमक, कोई द्रव पदार्थ, अर्क, मान, प्रतिष्ठा, पौरुष, शास्त्र की उत्तमता, जूस, छवि।

पानीदार-(हिं०पुं०) चमकदार, माननीय, आत्माभिमानी, ।

पानीदेवा-(हिं०वि०) तर्पण या पिण्डदान देने वाला।

पानीफल-(हिं०पुं०) सिंघाड़ा।

पानीय-(सं०नपुं०) जल, (वि०) पाने योग्य, जो पिया जा सके।

पान्थ-(सं०पुं०) पथिक, ('वि०) वियोगी, विरही।

पाप-(सं०नपुं०) अधम, दुष्कृत, अहित बुराई।

पापकर्म-(सं०पुं०) निषिद्ध कार्य जिसके करने से पाप हो। **पापकर्मी**-(हिं०वि०) पापी, पातकी।

पापघ्न-(सं०वि०) पाप नाशक।

पापचारी-(सं०वि०) पाप करने वाला।

पापड़-(हिं०पुं०) उर्द अथवा मूंग की धुली हुई बिना छिलके के दाल के आँटे से बनाई हुई मसालेदार महीन पापड़ी, (वि०) पतला, सूखा।

पापदृष्टि-(सं०वि०) अशुभ या अमंगल दृष्टि वाला।

पापधी-(सं०वि०) पापमति, मन्दबुद्धि।

पापनाशन-(सं०वि०) पाप नाशक, (पुं०), **पापर**-(हिं०पुं०) देखो पापड़।

पापलेन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सूती कपड़ा।

पापलोक-(सं०पुं०) नरक। **पापशील**-(सं०वि०) दुष्ट स्वभाव का। **पापहन, पापहर**-(सं०वि०) पाप को नाश करने वाला।

पापाचार-(सं०पुं०) पाप कार्य, पाप का आचरण।

पापात्मा-(सं०वि०) पापिष्ठ, पापी, पातकी।

पापिष्ठ-(सं०वि०) बहुत बड़ा पापी, पातकी।

पापी-(हिं० वि०) पाप करने वाला, निर्दय, क्रूर, दुराचारी।

पापीयसी-(हिं०वि०) पाप करने वाली,

पामर-(सं०वि०) दुष्ट, नीच कुल में उत्पन्न, दुश्चरित्र।

पामरी-(हिं०स्त्री०) उपरना, डुपट्टा।

पायँ-(हिं०पुं०) देखो पाँव।

पायँता-(हिं०पुं०) चारपाई का वह भाग जिस पर पैर रहता है।

पायँती-(हिं०स्त्री०) पायताना, पयताना।

पायक-(सं०वि०) पानेवाला, (हिं० पुं०) दूत।

पायना-(हिं०क्रि०) हथियार पर सान देना

पायल-(हिं०स्त्री०) नूपुर, पायजेब,

पायस-(सं०पुं०) खीर।

पायसा-(हिं०पुं०) पड़ोस।

पाया-(हिं०पुं०) गोड़ा, पावा, खंभा।

पायित-(सं०वि०) सान धरा हुआ।

पारंगत, पारंपर-देखो पारंगता, पारम्पर्य।

पार-(सं०पुं०) प्रान्त, भाग, छोर, अन्त, हद, (अव्य०) आगे, दूर।

पारख-(हिं०स्त्री०) देखो पारिख, पारखी।

पारखद-(हिं०पुं०) देखो पार्षद।

परखी-(हिं०पुं०) परीक्षक, परखने वाला।

पारग-(सं०वि०) पार जाने वाला, समर्थ, अभिज्ञ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पारगत-(सं०वि०) समर्थ, पूरा जानकार
पारण-(सं०नपुं०) वह भोजन जो किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन प्रथम वार किया जावे। **पारणा**-(सं० स्त्री०) उपवास व्रत आदि के दूसरे दिन का प्रथम भोजन।
पारतन्त्र्य-(सं० नपुं०) पराधीनता।
पारथ, पारथिव-(हिं०पुं०) देखो पार्थ।
पारद-(सं०पुं०) पारा।
पारदर्शक-(सं०वि०) आरपार दिखलाई देने वाला।
पारदर्शन-(सं०वि०) सर्वज्ञ, पारगामी, **पारदर्शी**-(सं०वि०) चतुर, विद्वान दूरदर्शी।
पारधी-(हिं०पुं०) वहेलिया, व्याध।
पारन-(हिं०पुं०) देखो पारण।
पारना-(हिं०क्रि०) डालना, गिराना, मिलाना, भूमि पर लंबा डारना, पछाड़ना।
पारवती-(हिं०स्त्री०) देखो पार्वती।
पारमार्थिक-(सं०वि०) परमार्थ संबंधी प्रेम रहित।
पारम्परीण-(सं० वि०) परम्परा से आधीन। **पारम्पर्य**-(सं०नपुं०) कुलक्रम।
पारलौकिक-(सं०पुं०) परलोक संबंधी
पारवश्य-(सं०नपुं०) परतन्त्रता।
पारस-(हिं०पुं०) स्पर्श मणि, एक कल्पित पत्थर जिसके विषय में लोगों में ऐसी प्रसिद्धि है कि इसमें लोहा छुलाने से सुवर्ण हो जाता है, अत्यन्त लाभ देने वाली तथा उपयोगी वस्तु।
पारा-(हिं०पुं०) चाँदी की तरह श्वेत चमकता हुआ एक तरल धातु।
पारायण-(सं०नपुं०) सम्पूर्णता, समाप्ति।
पारावत-(सं०पुं०) पण्डुक, कबूतर।
पारावार-(सं०नपुं०) आरापार वार पार, सीमा, हद।
पारिजात-(सं० पुं०) एक वृक्ष जो समुद्र मथन के समय निकला था और इन्द्र के नन्दन वन में स्थापित हुआ परजाता, हरसिंगार।
परितोषिक-(सं० पुं०) वह वस्तु जो किसी को प्रसन्न करने के लिये दी जावे भेंट उपहार
पारिपार्श्व-(सं०नपुं०) सेवक, अनुचर।
पारिभाषिक-(सं०नपुं०) परिभाषा द्वारा अर्थबोधक पद।
पारी-(हिं०स्त्री०) वारी, ओसरी।
पारीण-(सं०वि०) पारगामी।
पारुष्य-(सं०नपुं०) कठोरता, (पुं०) वृहस्पति।
पार्थ-(सं०पुं०) पृथ्वीपति, अर्जुन।
पार्थक्य-(सं०नपुं०) पृथक् होने का भाव, वियोग।
पार्थिव-(सं०पुं०) पृथ्वीपति, राजा, (वि०) मिट्टी आदि का बना हुआ।
पार्शुका-(सं०स्त्री०) पर्शुका, पसली।
पार्श्व-(सं०पुं०) काँख के नीचे का भाग, पसलियाँ निकटता, समीपता। **पार्श्ववर्ती**-समीपस्थ
पार्श्वग-(सं०पुं०) अनुचर, सेवक, (वि०) पास में चलने वाला। **पार्श्वचर**-(सं०पुं०) अनुचर, भृत्य।
पार्श्ववर्ती-(सं० पुं०) पास रहने वाला मनुष्य। **पार्श्वशायी**-(सं०वि०) पास में सोने वाला।
पार्श्वस्थ-(सं०पुं०) पार्श्वस्थित नट, (वि०) पाँस में खड़ा रहने वाला। **पार्श्वस्थित**-(सं०वि०) पास में रहने वाला। **पार्श्वानुचर**-(सं०पुं०) अनुचर
पार्ष्णि-(सं०पुं०) पालक, पालन करने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला-(हिं०पुं०)पत्ता बिछाकर फलों को पकाने की विधि, तंबू, चंदवा, गाड़ी आदि ढांपने का वस्त्र, ओहार नाव में बाँधने का मोटा वस्त्र, खाना, (स्त्री०) ऊँचा किनारा कगार।

पालक-(सं०पुं०) रक्षा करने वाला मनुष्य, (वि०) पालने वाला, (हिं० पुं०) एक प्रकार का शाक, पाला हुआ पुत्र।

पालकी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की सवारी जिसको कहार लेकर चलते हैं, पीनस, खड़खड़िया।

पालट-(हिं०पुं०) पाला पोसा हुआ, दत्तक पुत्र।

पालतू-(हिं०वि०) पाला पोसा हुआ।

पालथी-(हिं०स्त्री०) देखो पलथी।

पालन-(सं०नपुं०)रक्षक, भरण पोषण, अनुकूल व्यवहार से किसी बात का निर्वाह।

पालना-(हिं०क्रि०) पालन पोषण करना, पक्षी आदि को पोसना, निर्वाह करना, (पुं०)बच्चों को सुलाने का खटोला या झूला जो रस्सियों से लटकाया रहता है। **पालनीय**-(सं० वि०) पालन करने योग्य। **पालयिता**-(हिं०वि०) पालन करने वाला।

पाला-(हिं०पुं०) वायु में मिले हुए भाप के अत्यन्त सूक्ष्म कण जो पृथ्वी के ठंडी रहने पर उसपर बूंदों के रूप में जम जाते हैं, हिम बैठने की जगह, सीमा निर्धारित करने के लिये बनी हुई मेड़।

पालागन-(हिं०स्त्री०)नमस्कार, दण्डवत

पालान-(हिं०पुं०) देखो पलान।

पालि-मध्य एशिया में प्रचलित एक प्राचीन लिपि जिसमें लिखे हुए अशोक के समय के अनेक शिलालेख पाये जाते हैं।

पालि-(सं०स्त्री०)पंक्ति श्रेणी, कोना।

पालित-(सं०वि०) रक्षित,पाला हुआ।

पालित्य-(सं०नपुं०)बालों की सफेदी।

पाली-(हिं०वि०) पालन करने वाला, रक्षा करने वाला।

पाली-(हिं०स्त्री०) पात्र का ढपना, परई, एक प्राचीन भाषा जिसमें बौद्धों के धर्मग्रन्थ लिखे हुए हैं।

पालू-(हिं०वि०) पालतू, पाला हुआ।

पालो-(हिं०पुं०) गाँव में बस्ती से दूर की भूमि जिसमें सिंचाई कुवें से होती है।

पावँ-(हिं०पुं०) पाद, पैर।

पाँवड़ा-(हिं०पुं०) पैर रखने के लिये फैलाया हुआ कपड़ा। **पाँवड़ी**-(हिं० स्त्री०) खड़ाऊँ, जूता,

पाँवर-(हिं०वि०)पामर, तुच्छ, नीच, मूर्ख।

पाँव-(हिं०पुं०)चतुर्थ भाग, एक सेर का चौथाई भाग,चार छटाँक का परिमाण।

पावक-(सं० वि०) शुद्ध या पवित्र करने वाला। **पावकमणि**-(सं०पुं०) सूर्यकान्तमणि।

पावदान-(हिं०पुं०) पैर रखने की वस्तु या स्थान।

पावन-(सं०वि०) शुद्ध, पवित्र (सं० स्त्री०) पवित्रता, शुद्धता। **पावना**-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, पाना, अनुभव करना, भोजन करना, (पुं०) लेहना।

पावनी-(सं०वि०) पवित्र करने वाली।

पावस-(हिं०स्त्री०)वर्षाकाल, बरसात।

पावा-(हिं०पुं०) पाया।

पाश-(सं०पुं०)फन्दा,जाल,डोरी,रस्सी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाशक्रीड़ा-(सं०स्त्री०) पासा खेलना।
पाशबन्धक-(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया।
पाशव-(सं०वि०) पशु संबंधी।
पाशुपत-(सं०पुं०) पशुपति देवता के भक्त या उपासक।
पाश्चात्य-(सं०वि०) पिछला, पश्चिम देश का या दिशा का।
पाषण्ड-(सं०पुं०) मिथ्याधर्मी, कपट वेशधारी, ढोंगी। **पाषण्डी**-(सं०वि०) धूर्त, ढोंगी।
पाषाण-(सं०पुं०) प्रस्तर, पत्थर।
पास-(हिं०पुं०) पार्श्व, ओर, निकटता, (अव्य०) निकट, समीप में, अधिकारमें।
पासनी-(हिं०स्त्री०) अन्नप्रासन।
पासमान-(हिं०पुं०) पार्श्ववर्ती।
पासवर्ती-(हिं०पुं०) देखो पार्श्ववर्ती।
पासा-(हिं०पुं०) छपहल, छोटे टुकड़े जिनपर बिन्दिया बनी होती हैं जो चौसर खेलने के काम में आता है, कामी, गुल्ली या पीतल का काँसे का ठप्पा
पासिका-(हिं०स्त्री०) पाश, फन्दा, जाल।
पासी-(हिं०पुं०) व्याध, बहेलिया, (स्त्री०) फन्दा, फांसी।
पासुली-(हिं०स्त्री) देखो पसली।
पाहँ-(हिं०अव्य०) निकट, समीप, पास।
पाहन-(हिं०पुं०) पाषाण, पत्थर।
पाहरू-(सं०पुं०) चौकीदार।
पाहि-(हिं०अव्य०) समीप, निकट, पास
पाहि-(सं०) एक संस्कृत पद जिसका अर्थ है 'रक्षा करो' 'बचाओ'।
पाही-(हिं०स्त्री०) वह खेती जिसका किसान दूसरे गाँव में रहता हो।
पाहुँच-(हिं०स्त्री०) देखो पहुँच।
पाहुना-(हिं०पुं०) अभ्यागत, अतिथि।
पाहुनी-(हिं०स्त्री०) आतिथ्य सत्कार।
पाहुर-(हिं०पुं०) भेंट।
पाहू-(हिं०पुं०) पत्थरों के जोड़ पर जड़ने का टेढ़ा लोहा।
पिंग-(हिं०वि०) भूरे रंग का, पीला।
पिंगल-(हिं०वि०) पीला।
पिंगूरा-(हिं०पुं०) बच्चो को सुलाकर झुलाने का पालना।
पिंजड़ा-(हिं०पुं०) देखो पिंजरा।
पिंजन-(हिं०पुं०) रुई धुनने की धुनकी
पिंजर, पिञ्जर- पिंजड़ा।
पिंजरा-(हिं०पुं०) लोहे बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ झाबा जिसमें पक्षी पाले जाते हैं।
पिंजरापोल-(हिं०पुं०) गोशाला, पशु-शाला।
पिंजियारा-(हिं०पुं०) रुई ओटने वाला
पिंडी-(हिं०स्त्री०) गीली वस्तुका लोंदा।
पिंडखजूर-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खजूर जिसके फल मीठे होते हैं।
पिंडरी, पिंडली-(हिं०स्त्री०) टाँग।
पिंडा-(हिं०पुं०) गीली या ठोस वस्तु का टुकड़ा, पितरोंको अर्पित करने का मधु, तिल आदि मिला हुआ लोंदा।
पिंडालू-(हिं०स्त्री०) सकरकन्द, सुथनी।
पिंड़िया-(हिं०स्त्री०) गुड़ आदि का मुट्ठी में बाँध कर बनाया हुआ छोटा टुकड़ा, भेली, मुट्ठी।
पिअ-(हिं०वि०) देखो प्रिय।
पिअरवा-(हिं०पुं०) पति, (वि०) प्यारा।
पिअराई-(हिं०स्त्री०) पीलापन।
पिअरी-(हिं०स्त्री०) हल्दी से रंगी हुई धोती।
पिआज-(हिं०पुं०) देखो प्याज।
पिआना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना।
पिआर-(हिं०पुं०) देखो प्यार।
पिआस-(हिं०स्त्री०) देखो प्यास।
पिउ-(हिं०पुं०) पति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिउनी-(हिं०स्त्री०) देखो प्यूनी ।
पिक-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल ।
पिघलना-(हिं०क्रि०) किसी घन पदार्थ का गरमी से गलकर पानी के समान हो जाना । **पिघलाना**-(हिं०पुं०) दयार्द्र करना, पानी के रुप में लाना ।
पिङ्ग-(सं०पुं०) चूहा, (वि०) पीले रंग का ।
पिगर, पिङ्गल-(सं०पुं०) नीला और पीला रंग मिला हुआ का उल्लू पक्षी, नेवला, बन्दर, अग्नि ।
पिचक-(हिं०स्त्री०) देखो पिचकारी ।
पिचकना-(हिं०क्रि०) किसी उभड़े हुए अथवा फूले हूए तल का दब जाना; **पिचकवाना**-(हिं०क्रि०) पिचकाने का काम दूसरे से कराना । **पिचका**-(हिं०पुं०) बड़ी पिचकारी । **पिचकाना**-(हिं०क्रि०) फूले या उभड़े हुए तल को भीतर की ओर दावना ।
पिचकारी-(हिं०स्त्री०) एक नलदार यन्त्र जिससे कोई तरल पदार्थ खींचकर वेग से फेंका जाता है । **पिचकी**-(हिं०स्त्री०) पिचकारी ।
पिचपिचा-(हिं०वि०) देखो चिपचिपा ।
पिचपिचाना-(हिं०क्रि०) घाव आदि में से थोड़ा थोड़ा पंछा आदि निकलना ।
पिचपिचाहट-(हिं० स्त्री०) गीले या आर्द्र रहने का भाव ।
पिचलना-(हिं०पुं०) देखो कुचलना ।
पिचुकिया-(हिं०स्त्री०) छोटी पिचकारी
चिचुक्का-(हिं०पुं०) गोलगप्पा, पिचकारी ।
पिचोतरसो-(हिं०पुं०) पहाड़े में एक सौ पाँच की संख्या को कहा जाता है
पिच्छ, पिच्छक-(सं०पुं०) पशु की पोंछ मोर की पोंछ ।
पिच्छिल-(हिं०वि०) जिस पर से पैर फिसल जावे, चिकना ।
पिच्छिका-(सं०स्त्री०) चँवर, मोरछल ।
पिच्छिल-(सं०विं०) गीला और चिकना, फिसलने वाला ।
पिछड़ना-(हिं०क्रि०) श्रेणी में आगे या बरावर न रहना ।
पिछलगा-(हिं०पुं०) सेवक, आश्रित, अनुगामी, चेला । **पिछलगी**-(हिं० स्त्री०) अनुसरण । **पिछलग्गू**-(हिं० वि०) देखो पिछलगा ।
पिछलना-(हिं०क्रि०) पीछे की ओर जाना या मुड़ना ।
पिछलगाई-(हिं०स्त्री०) जादूगरनी, चुड़ैल ।
पिछला-(हिं०वि०) पीछे की ओर का, वीता हुआ, भूतकाल का, वादका ।
पिछवाई-(हिं०स्त्री०) पीछे की ओर लटकाने का परदा ।
पिझवाड़ा, पिछवारा-(हिं०पुं०) घर के पीछे का स्थान ।
पिछाड़ी-(हिं०स्त्री०) घोड़े के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी ।
पिछान-(हिं०स्त्री०) देखो पहचान ।
पिछनना-(हिं०क्रि०) देखो पहचानना
पिछौड़-(हिं०वि०) किसी के मुख की ओर पीठ किया हुआ । **पिछौंड़ा**-(हिं०वि०) पीछे की ओर का ।
पिछौंता-(हिं०क्रि०वि०) पिछली ओर ।
पिछौंहें-(हिं०क्रि०वि०) पिछली ओर ।
पिछौरा-(हिं०पुं०) मनुष्य के ओढ़ने का डुपट्टा या चादर ।
पिछौरी-(हिं० स्त्री०) स्त्रियों की चादर जिसको वे धोती के ऊपर ओढ़ती हैं ।
पिञ्जट-(सं०पुं०) आँख का कीचड़ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिञ्जन-(सं०नपुं०)धुनिये की कमान।
पिञ्जर-(सं०पुं०) पक्षियों के रखने का पिंजड़ा, हड्डी की ठठेरी। **पिञ्जरता**-(सं०स्त्री०) भूरापन।
पिञ्जल-(सं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
पिञ्जिका-(सं०स्त्री०) रुई की पोली बत्ती, पूनी।
पिटंत-(हिं०स्त्री०) पीटने की क्रिया या भाव।
पिटक-(सं०पुं०)पेटारा, फुड़िया,फुंसी, किसी ग्रंथ का विभाग या खंड। **पिटका**-(सं०स्त्री०) पिटारी, फुंसी।
पिटना-(हिं०क्रि०) मार खाना, ठोंका जाना, (पुं०) छत पीटने की लकड़ी की मुंगरी।
पिटपिट-(हिं०स्त्री०)हलके आघात से उत्पन्न शब्द।
पिटरिया-(हिं०स्त्री०) देखो पिटारी।
पिटवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से मार खिलवाना, कुटवाना, ठोंकवाना।
पिटाई-(हिं०स्त्री०) प्रहार, आघात, पीटने या मारने का वेतन। **पिटापीट**-(हिं०स्त्री०) मारपीट।
पिटारा-(हिं०पुं०)बाँस, बेंत आदि के छिलके का बना हुआ ढपनेदार गोल पात्र। **पिटारी**-(स्त्री०) छोटा पिटारा,झांपी।
पिट्टस-(हिं०स्त्री०) दुःख या शोक से छाती पीटना।
पिट्टू-(हिं०वि०) जिसको मार खाने का अभ्यास हो।
पिट्ठी-(हिं०स्त्री०) देखो पीठी।
पिट्ठू-(हिं०पुं०)सहायक, अनुयायी।
पिठौरी-(हिं०स्त्री०) पीठी की बनी हुई बरी पकौड़ी आदि।
पिड़क-(सं०पुं०)छोटा फोड़ा, फुंसी।
पिड़िया-(हिं०स्त्री०)चावल का लड्डू।
पिढ़ई-(हिं०स्त्री०) छोटा पीढ़ा या पाटा।
पिण्ड-(सं०पुं०, नपुं०) पित्रादि के उद्देश्य से दिया जाने वाला अन्न।
पिण्डज-(सं०पुं०) वह जन्तु जो गर्भ से अण्डे के रूप में न निकले, परन्तु बने हुए शरीर के रूप में निकले।
पिण्डद-(सं०पुं०)पिण्डदान करने वाला; **पिण्डदान**-(सं०नपुं०)पिण्ड देने का काम। **पिण्डमय**-(सं०वि०) गोल-मटोल टुकड़ा। **पिण्डमूल**-(सं०नपुं०) गाजर-शलजम।
पिण्डालु-एक प्रकार का सफतालू।
पिण्डाश-(सं०पुं०)भिक्षुक, भिखारी।
पिण्डी-(सं०स्त्री०) कद्दू, लौंकी, ठोस टुकड़ा, लुगदी, सूत रस्सी आदि का लपेटा हुआ लच्छा।
पितम्बर-(हिं०पुं०) देखो पीताम्बर।
पितर-(हिं०पुं०) मृत पूर्व पुरुष, मरे हुए पुरखे जिनके नाम पर श्राद्ध और तर्पण किया जाता है।
पितराइ, पितराई-(हिं०स्त्री०) खाद्य वस्तु में पीतल का कसाव।
पितरिहा-पीतल का बना हुआ।
पिता-(हिं०पुं०)जनक,बाप; **पितामह**-(सं०पुं०) पिता का पिता, दादा, **पितामही**-(सं० स्त्री०) पितामह की स्त्री, दादी।
पितिया-(हिं०पुं०)पिताका भाई,चाचा।
पितियानी-(हिं०स्त्री०)चाचा की स्त्री, चाची।
पितिया ससुर-(हिं०पुं०) स्त्री या पति का चाचा; **पितियासास**-(हिं०स्त्री०) स्त्री०) स्त्री या पति की चाची।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पितु-(हिं०पुं०) पिता । **पितुःस्वसा**-(सं०स्त्री०) पिता की बहिन, फुवा, मौसी ।
पितृ-(सं०पुं०) उत्पादक, जनक,पिता,
पितृक-(सं०वि०) पैत्रिक, पिता का, (सं०नपुं०) जो श्राद्ध तर्पण आदि पितरों के उद्देश्य से किये जाते हैं । **पितृकल्प**-(सं०वि०) पिता के सदृश
पितृकानन-(सं०पुं०) श्मशान ।
पितृगृह-(सं०नपुं०) श्मशान, बाप का घर, स्त्रियों का पीहर, नैहर,मायका; **पितृघात**-(सं०पुं०) पिता की हत्या, **पितृतर्पण**-पितरों के उद्देश्य से किया जाने वाला बलिदान, तर्पण आदि । **पितृतिथि**-(सं० स्त्री०) अमावस्या, **पितृतीर्थ**-(सं०नपुं०) गया तीर्थ, दहिने हाथ की तर्जनी और अंगूठे के बीच का स्थान । **पितृत्व**-(सं०नपुं०) पिता का भाव या धर्म । **पितृदान**-(सं०नपुं०) पितरों के उद्देश्य से दिया हुआ अन्न आदि का दान ; **पितृराय**-(सं०पुं०) पिता से प्राप्त धन या सम्पत्ति, बपौती । **पितृदिन**-(सं०नपुं०) अमावस्या । **पितृपक्ष**-(सं०पुं०) आश्विन मास का कृष्ण पक्ष । **पितृलोक**-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पितर लोग रहते हैं । **पितृवत्**-(सं०अव्य०) पिता के सदृश ।
पितृव्य-(सं०पुं०) पिता के भाई, चाचा । **पितृहा**-(सं०पुं०) पिता की हत्या करने वाला ।
पित्त-(सं०नपुं०) शरीर के भीतर यकृत में बननेवाला एक तरल पदार्थ जो खाये हुए अन्न को पचाने में सहायता देता है ।
पित्तल-(सं०नपुं०) पीतल नामक धातु ।
पित्ता-(हिं०पुं०) पित्ताशय, जिगर में की वह थैली जिसमें पित्त रहा है ।
पित्ती-((हिं०स्त्री०) गरमी के दिनों में पसीना मरने से शरीर में निकलने वाले महीन दाने ।
पित्र्य-(सं०वि०) पितृ संबंधी ।
पिधातव्य-(सं०स्त्री०) ढापने योग्य ।
पिधान-(सं०नपुं०) आवरण, आच्छादन, परदा, ढपना, किवाड़, । **पिधानक**--(सं० पुं०) खड्ग, कोष ।
पिनकना-(हिं०क्रि०) ऊँघना, नींद में आगे को झुकना ।
पिनकी-(हिं०पुं०) पिनक लेनेवाला, अफीमची
पिनपिन-(हिं०स्त्री०) रोगी या दुर्बल बच्चे का अनुनासिक स्वर में रोना; **पिनपिनहा**-(हिं०वि०) निरन्तर रोने वाला बच्चा । **पिनपिनाना**-(हिं० क्रि०) धीमे स्वर में रुक रुक कर बच्चे का रोना । **पिनपिनाहट**-(हिं०स्त्री०) पिनपिन करके रोने का शब्द ।
पिनस-(सं०पुं०) देखो पीनस ।
पिनाक-(सं०पुं०) शिव जी का धनुष जिसको श्रीरामचन्द्र ने जनकपुर में तोड़ा था ।
पिनाकी-(सं०पुं०) पिनाकधारी शिव ।
पिन्नस-(हिं०स्त्री०) देखो पीनस ।
पिन्ना-(हिं०वि०) सर्वदा रोने वाला, (पुं०) धुनकी ।
पिन्नी-(हिं०स्त्री०) आँटे या अन्य प्रकार के अन्न के चूर्ण में गुड़ या चीनी मिलाकर बनाई हुई मिठाई ।
पिन्हाना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना ।
पिपराही-(हिं०पुं०) पीपल का जंगल ।
पिपासा-(सं०स्त्री०) तृष्णा, प्यास, लोभ, लालच । **पिपासित**-(सं०वि०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्यासा । **पिपासु**-(सं०वि०) उत्कट इच्छा करने वाला, लालची ।
पिपीलिका-(सं०स्त्री०) चींटी, च्यूंटी
पिप्पल-(सं०नपुं०) अश्वत्थ, पीपल का पेड़ ।
पिप्पली-(सं०स्त्री०) पीपल की लता, इसका शहतूत के आकार का फल ।
पिय-(हिं०पुं०) स्वामी, भर्ता, पति ।
पियर-(हिं०वि०) पीला, पीले रंग का
पियरवा-(हिं०वि०) प्रिय, अति प्यारा । **पियरई**-(हिं०स्त्री०) पीलापन, **पियराई**-(हिं०स्त्री०) पीलापन । **पियराना**-(हिं०क्रि०) पीला पड़ना या होना
पियरी-(हिं०स्त्री०) पीली रंगी हुई धोती, एक प्रकार का पीला रंग ।
पियली-(हिं०स्त्री०) नारियल की खोपड़ी का टुकड़ा ।
पियल्ला-(हिं० पुं०) दूध पीनेवाला बच्चा ।
पियवास-(हिं०पुं०) देखो प्रियवास ।
पिया-(हिं०पुं०) देखो प्रिय, प्रिया ।
पियाज-देखो प्याज ।
पियाना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना ।
पियार-(हिं०पुं०) महुवे की तरह का एक वृक्ष जिसके बीच की गरी चिरौंजी कहलाती है ।
पियारा-(हिं०वि०) देखो प्यारा ।
पियाला-(हिं०पुं०) कटोरी ।
पियास-(हिं०वि०) देखो प्यास । **पियासा**-(हिं०वि०) प्यासा ।
पियूख,पियूष-(हिं०पुं०) देखो पीयूष ।
पिरकी-(हिं०स्त्री०) फुंसी, फोड़िया ।
पिरथी-(हिं०स्त्री०) देखो पृथ्वी ।
पिराक-(हिं०पुं०) एक प्रकार की चीनी का ढाल कर बना हुआ बड़ा अर्ध चन्द्राकार पकवान ।
पिराना-(हिं०क्रि०) पीड़ा होना,दुखना ।
पिरिच-(हिं०पुं०) कटोरी ।
पिरीतम-(हिं०वि०) प्रिय, प्रियतम ।
पिरीता-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा ।
पिरीति-देखो प्रीति ।
पिरोजन-(हिं०पुं०) देखो प्रयोजन ।
पिरोजा-(फा०पुं०) हरापन लिये हुए एक प्रकार का पत्थर ।
पिरोना-(हिं०क्रि०) तागे आदि को सूई के छेद में डालना ।
पिलई-(हिं०स्त्री०) बरबट, तापतिल्ली;
पिलकना-(हिं०क्रि०) ढकेलना,गिराना;
पिचलना-(हिं०क्रि०) तत्पर होना, लीन होना ।
पिलना-(हिं०क्रि०) लग जाना, लिपट जाना, टूट पड़ना, भिड़ जाना ।
पिलपिल,पिलपिला-(हिं०वि०) इतना नरम या ढीला कि दबाने से भीतर का रस या गूदा बाहर निकल आवे ।
पिलपिलाना-(हिं०क्रि०) गूदेदार या रसदार वस्तु जो इस प्रकार दबाना कि इसमें का रस ढीला होकर बाहर निकलने लगे । **पिलपिलाहट**-(हिं० स्त्री०) वह नरमी या मृदुता जो घुलने या रस के ढीले होने के कारण आ गई हो ।
पिलाना-(हिं०क्रि०) पीने का काम कराना, भीतर करना, किसी छेद में डाल देना ।
पिलुंडा-(हिं०पुं०) देखो पुलिन्दा ।
पिल्ला-(हिं०पुं०) कुत्ते का छोटा बच्चा ।
पिल्लू-(हिं०पुं०) बिना पैर का सफेद कीड़ा, जो सड़े हुए फल घाव आदि में पड़ जाता है ।
पिव-(हिं०पुं०) देखो पिय ।
पिवाना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिशंगी-(हिं०वि०) पीला।
पिशाच-(सं०पुं०) भूत, प्रेत।
पिशित-(सं०नपुं०) माँस।
पिशिताशन-(सं०वि०) माँस खाने वाला
पिशुन-(सं०वि०) क्रूर, दुष्ट। **पिशुनता**-(सं०स्त्री०) क्रूरता, चुगलखोरी।
पिष्ट-(सं०नपुं०) पिट्ठी, पीठी, (वि०) चूर्ण कियाहुआ। **पिष्टक**-(सं०नपुं०) पिष्ट, पिठी, रोट, कचौड़ी, पूआ। **पिष्टपेंषण**-(सं०पुं०) पीसे हुए को पीसना, एक बार कही हुई बात को बारंबार दोहराना।
पिसनहारी-(हिं०स्त्री०) आँटा पीसने वाली स्त्री।
पिसना-(हिं०क्रि०) पीसकर तैयार होना, कुचल जाना।
पिसवाज-(हिं०पुं०) रंडियों के पहिरने का घाघरा।
पिसवाना-(हिं०क्रि०) पीसने का काम दूसरे से कराना।
पिसाई-(हिं०स्त्री०) पीसने की क्रिया या भाव, पीसने का शुल्क।
पिसाच-(हिं०पुं०) देखो पिशाच।
पिसान-(हिं०पुं०) अन्न का महीन पिसा हुआ चूर्ण आटा। **पिसाना**-(हिं०क्रि०) पिसवाना।
पिसुन-(हिं०पुं०) देखो पिशुन।
पिसौनी-(हिं०स्त्री०) पीसने का काम, परिश्रम का काम।
पिस्ता-(हिं०पुं०) एक छोटा पेड़ जिसका फल अच्छे मेवों में गिना जाता है।
पिस्तौल-(हिं०स्त्री०) छोटी बंदूक, तमंचा।
पिस्सू-(हिं०पुं०) उड़ने वाला एक छोटा कीड़ा जो मच्छरों की तरह काटता और रक्त चूसता है।
पिहकना-(हिं०क्रि०) मोर कोयल पपीहे आदि पक्षियों का बोलना।
पिहान-(हिं०पुं०) पिधान, ढापना।
पिहित-(सं०वि०) आच्छादित, छिपा हुआ।
पींजरा-(हिं०पुं०) देखो पिंजड़ा।
पींड-(हिं०पुं०) किसी गीली वस्तु का गोला, पिंडी, पिंडखजूर, शरीर, देह।
पींडी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडी।
पी-(सं०पुं०) पपीहे की बोली, देखो पिय
पीक-(हिं०पुं०) थूक से मिला हुआ पान का रस। **पीकदान**-(हिं० पुं०) उगलदान।
पीकना-(हिं०क्रि०) पिहिकना।
पीखग-(हिं०पुं०) पपीहा।
पीच-(सं० पुं०) नीचे का जबड़ा, (हिं०स्त्री०) माड़।
पीचना-(हिं०क्रि०) पीसना, दबाना।
पीछा-(हिं०पुं०) पिछला भाग, किसी घटना के बाद का काल।
पीछे-(हिं०अव्य०) पीछे की ओर कुछ दूर पर, अन्त में, पीठ की ओर कारण से वास्ते, लिये, उपरान्त, अनन्तर।
पीजन-(हिं०पुं०) ऊन धुनने की धुनकी
पीजर-(हिं०पुं०) देखो पिंजड़ा।
पीटन-(हिं०पुं०) देखो पिटना।
पीटना-(हिं०क्रि०) प्रहार करना, मारना, चिपटो करना, ठोंकना।
पीठ-(सं०नपुं०) चौकी, आसन, किसी मूर्ति के नीचे का आधार, पिण्ड।
पृष्ठ-(हिं०स्त्री०) पेट के दूसरी ओर का स्थान।
पीठगर्भ-(सं०पुं०) वह गड्ढा जो किसी मूर्ति को बैठाने के लिये खोदा जाता है
पीठा-(हिं०पुं०) आटे की लोई में पीठी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भर कर बनाया हुआ एक पकवान । पीढ़ा ।
पीठि-(हिं०स्त्री०) देखो पीठ ।
पीठिका-(सं०स्त्री०) भाग, अध्याय।
पीठी-(हिं०स्त्री०) उड़द मूंग आदि की छिलका उतारकर पीसी हुई दाल ।
पीड़क-(सं०नपुं०) दुःखदायी, पीड़ा देनेवाला ।
पीडन-(सं०नपुं०) दुःख देना, चाँपने या दबाने की क्रिया, नाश, लोप, **पीड़नीय**-(सं०वि०) दुःख पहुँचाने वाला ।
पीड़ा-(सं०स्त्री०) वेदना, व्यथा, व्याधि, रोग । **पीड़ाकर**-(सं०वि०) दुःखदायक ।
पीड़ित-(सं०वि०) क्लेशयुक्त, दुःखित, रोगी ।
पीडुरी-(हिं०स्त्री०) देखो पिंडुली ।
पीढ़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी की छोटी नीची पावे की चौंकी ।
पीढ़ी-(हिं०स्त्री०) किसी वंश या कुल में किसी विशेष व्यक्ति से आरंभ करके उसके ऊपर या नीचे के पुरुषों की गना, क्रम से निश्चित स्थान, समुदाय, सन्तान, सन्तति ।
पीत-(सं०वि०) पीले रंगका, पिया हुआ ।
पीतता-(सं०स्त्री०) पीलापन ।
पीतम-(हिं०वि०) देखो प्रियतम ।
पीतर-(हिं०पुं०) देखो पीतल ।
पीतरत्न-(सं०पुं०) पीतमणि, पुखराज
पीतल-(हिं०पुं०) जस्ते और ताँबे के संयोग से बनी हुई एक उपधातु ।
पीतवान-(हिं० पुं०) हाथी के दोनों आँखों के बीच का स्थान ।
पीतवास-(सं०वि०) पीला वस्त्र पहिरने वाला ।
पीतसरा-(हिं०पुं०) ससुर का भाई ।
पीताम्बर-(सं०नपुं०) पीला कपड़ा, रेशमी धोती जिसको पहन कर लोग पूजा पाठ करते हैं ।
पीताश्म-(सं०पुं०) पुष्परागमणि, पुखराज ।
पींन-(सं०वि०) पृष्ठ, स्थूल, सम्पन्न, मोटा ।
पीनक-(हिं०स्त्री०) अफीम के नशे में ऊँघना, आगे को झुक पड़ना ।
पीनता-(सं०स्त्री०) स्थूलता, मोटाई ।
पीनना-(हिं०क्रि०) देखो पीजना ।
पीनस-(सं०पुं०) नाक का एक रोग, (हिं०स्त्री०) पालकी ।
पीना-(हिं०क्रि०) जल या इस के समान अन्य वस्तु को घूंट घूंट करके गले के नीचे उतारना, मद्य पीना, सोखना, चूसना, धूम्र पान करना, सहन करना, उपेक्षा करना ।
पीनी-(हिं०स्त्री०) तीसी, तिल आदि की खली ।
पीप-(हिं०स्त्री०) फोड़े या घाव के भीतर से निकलने वाला लसलसा सफेद पदार्थ, पीब, रीम ।
पीपर-(हिं०पुं०) देखो पीपल ।
पीपल-(हिं०पुं०) बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष एक लता जिसके पत्ते पान की तरह होते हैं ।
पीपा-(हिं०पुं०) ढोल के आकार का लोहे या काठ का बड़ा पात्र ।
पीब-(हिं०पुं०) देखो पीप ।
पीयर-(हिं०वि०) पीला, पीले रंग का।
पीयूख-(हिं०पुं०) देखो पीयूष ।
पीयूष-(सं०नपुं०) सुधा, अमृत ।
पीर-(हिं०स्त्री०) सहानुभूति, करुणा । दया, पीड़ा, दुःख, प्रसव वेदना ।
पीरा-(हिं०स्त्री०) देखो पीड़ा, (वि०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखो पीला ।
पीलपाल-(हिं०पुं०) हाथीवान, महावत ।
पीलपावँ-(हिं०पुं०) पैरके फूल जाने का एक रोग ।
पीलवान-(हिं०पुं०) हाथीवान, महावत ।
पीला-(हिं०पुं०) एक प्रकार का हल्दी या सोनेके सादृश रंग, शतरंज का एक-मोहरा ।
पीलापन-(हिं०पुं०) पीला होने का भाव
पीलाम-(हिं०पुं०) साटननामक कपड़ा ।
पीलिया-(हिं०पुं०) कामला रोग ।
पीलु-(सं०पुं०) अस्थिखंड, कीड़ाबाण ।
पीलू-(हिं०पुं) सफेद लंबे कीड़े जो फलों के सड़ने पर उनमें पड़ जाते हैं ।
पीव-(हिं०पुं०) पिय, पति, देखो पीव ।
पीगना-(हिं०क्रि०) देखो पीना ।
पीवर-(सं०वि०) स्थूल, गुरु, भारी, मोटा ।
पीवा-(हिं०वि०) स्थूल, पुष्ट, मोटा ।
पीसना-(हिं०क्रि०) कुचल कर बुकनी करना, कठोर परिश्रम करना ।
पीसू-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कीड़ा, देखो पिस्सू ।
पीह-(हिं०स्त्री०) वसा ।
पीहर-(हिं०पुं०) स्त्रियों के माता पिता का घर, मायका ।
पीहू-(हिं०पुं०) देखो पीसू ।
पुंखित-(हिं०वि०) पक्षयुक्त ।
पुंगफल, पुंगीफल-(हिं०पुं०) देखो पुंगीफल ।
पुछल्ला-(हिं०पुं०) देखो पुंछाला ।
पुछवाना-(हिं०क्रि०) देखो पुछवाना ।
पुछार-(हिं०पुं०) मयूर, मोर ।
पुछाला-(हिं०पुं०) पोंछ की तरह जोड़ी हुई वस्तु ।
पुंज-(हिं०पुं०) समूह, ढेर ।
पुंजा-(हिं०पुं०) समूह, गुच्छा, फूल ।
पुंजी-(हिं०स्त्री०) देखो पूंजी ।
पुंजीकृत-(हिं०वि०) इकट्ठा किया हुआ ।
पुंडरी-(हिं०पुं०) भूमि कमल ।
पुंलिङ्ग-(सं०नपुं०) पुरुष का चिह्न पुरुष वाचक शब्द ।
पुंवत्-(सं०अव्य०) पुरुष की तरह, पुरुष वाची शब्द की तरह ।
पुंश्चल-(सं०पुं०) व्यभिचारी पुरुष ।
पुंश्चली-(सं०स्त्री०) असती, कुलटा, छिनार ।
पुंस-(हिं०पुं०) पुरुष, मर्द ।
पुंसवन-(सं०नपुं०) द्विजों के सोलह संस्कारों में से एक जो गर्भाधान के तीसरे महीने में किया जाता है ।
पुंसवान-(हिं०वि०) पुत्रवाला ।
पुंस्त्व-(सं०नपुं०) पुरुषत्व, पुरुष का धर्म ।
पुआ-(हिं०पुं०) चाशनी में पागी हुई आटे की मोटी रोटी या टिकिया ।
पुआल-(हिं०पुं०) पयाल ।
पुकार-(हिं०स्त्री०) रक्षा या सहायता के लिये चिल्लाहट, 'हाँक, माँग की' चिल्लाहट, अभियोग, गुहार ।
पुकारना-(हिं०क्रि०) गोहार लगाना, घोषित करना, चिल्ला कर कहना ।
पुक्कश, पुक्कस-(सं०पुं०) अधम, नीच ।
पुख-(हिं०पुं०) देखो पुष्प ।
पुखता-(हिं०वि०) दृढ़ ।
पुखर-(हिं०पुं०) पुष्कर, तालाब ।
पुखराज-(हिं०पुं०) पीले रंग का एक रत्न ।
पुगना-(हिं०क्रि०) देखो पूजना ।
पुगाना-(हिं० क्रि०) पूरा करना, पुजाना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुंख-(सं०पुं०) बाण का पिछला भाग जिसमें पर खोंसे रहते हैं।

पुङ्गव-(सं०वि०) किसी शब्द के अन्त में जोड़ने से इसका अर्थ श्रेष्ठ होता है।

पुचकार-(हिं०वि०) चुमकार।

पुकारना-(हिं०क्रि०) चुमकारना।

पुचकारी-(हिं०स्त्री०) चुमकार।

पुचारना-(हिं०क्रि०)पोतना,पुचारा देना

पुचारा-(हिं०पुं०) वह गीला कपड़ा जिससे पोता या पुचारा दिया जाता है पतला लेप करने की क्रिया, हलका लेप, झूठी प्रशंसा।

पुच्छ-(सं०पुं०, नपुं०) लाँगूल, पूंछ, किसी वस्तु का पिछला भाग।

पुच्छल-(सं०वि०) पूंछदार, **पुच्छल तारा**-(हिं०स्त्री०) देखो केतु।

पुछल्ला-(हिं०पुं०) आश्रित, पीछे लगा रहने वाला, आवश्यक वस्तु के साथ अन्य वस्तु।

पुछार-(हिं० पुं०) पूछने वाला, खोज लेने वाला।

पुछैया-(हिं०पुं०) पूछने वाला।

पुंजना-(हिं०क्रि०) सम्मानित होना, पूजा जाना। **पुजवाना**-(हिं०क्रि०) पूजा करने में प्रवृत्त करना।

पुजाई-(हिं०स्त्री०) पूजा करने की क्रिया या भाव, पूजा करने का शुल्क।

पुजाना-(हिं०क्रि०)पूजा में प्रवृत्त करना अथवा भेंट चढ़वाना, धन लेना, घाव धोना, चोट आदि के गढे भरना, पूर्ति करना।

पुजापा-(हिं०पुं०) पूजा की सामग्री।

पुजारी-(हिं०पुं०) देवमूर्ति की पूजा करने वाला।

पुजाही-(हिं०स्त्री०) पूजा की सामग्री रखने का पात्र।

पुजेरी-(हिं०पुं०) देखो पुजारी।

पुजैया-(हिं०पुं०) पूजा करने वाला।

पुजौरा-(हिं०पुं०) पुजा के समय देवता को अर्पण करने की सामग्री।

पुट-(सं०नपुं०) कटोरा, औषधि पकाने का पात्र, अन्तःपट, ढापने की वस्तु, (हिं०पुं०) हलका छिड़काव, बहुत हलका मेल देने के लिये घुले हुए रंग में या पतली वस्तु में डुबाना।

पुटकी-(हिं०स्त्री०) दैवी आपत्ति, पोटली, गठरी।

पुटपाक-(सं०पुं०) किसी मिट्टी आदि के पात्र में औषधि रखकर तथा उसका मुख अच्छी तरह से बन्द करके गड्ढे के भीतर गोहरा रख कर पकाने की विधि।

पुटभेद-(सं०पुं०) पानी का भँवर।

पुटरिया-(हिं०स्त्री०) देखो पोटली।

पुटरी-(हिं०स्त्री०) देखो पोटली।

पुटिनी-(सं०स्त्री०) फेनी नाम की मिठाई।

पुटी-(सं०स्त्री०) छोटा कटोरा, छोटा दोना, पुड़िया।

पुटोदक-(सं०पुं०) नारिकेल,नारियल।

पुट्ठा-(हिं०पुं०) चूतड़ का ऊपरी कड़ा भाग, पुस्तक की जिल्द का पिछला भाग।

पुट्ठी-(हिं०स्त्री०) गाड़ी के पहिये के घेरे का वह भाग जिसमें आरे जड़े रहते हैं।

पुठवार-(हिं०क्रि०वि०)पीछे,बगल में।

पुठवाल-((हिं०पुं०) पृष्ठरक्षक।

पुड़ा-(हिं०पुं०) बड़ी पुड़िया।

पुड़िया-(हिं०स्त्री०) मोड़ कर लपेटा हुआ कागज या पत्ता जिसमें कोई वस्तु रक्खी जाय, पुड़िया में लपेटी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुई औषधि की एक मात्रा।

पुण्ड-(सं०पुं०) माथे पर लगाने का तिलक।

पुण्डरीक-(सं०नपुं०) सफेद कमल, रेशम का कीड़ा।

पुण्य-(सं०नपुं०) धर्मका कार्य, शुभ कार्य, कार्य का सञ्चय, (वि०) धर्म विहित पवित्र, शुभ। **पुण्यकर्म**-(सं०नपुं०) जिस कार्य के करने से पुण्य होता है। **पुण्यकाल**-(सं०पुं०) दान पुण्य करने का काल। **पुण्यक्षेत्र**-(सं०नपुं०) पुण्य भूमि, आर्यावर्त। **पुण्यजन**-(सं०पुं०) सज्जन, धर्मात्मा। **पुण्यता**-(सं०स्त्री०) पुण्य कर्म का भाव; **पुण्यदर्शन**-(सं०वि०) जिसके दर्शन का शुभ फल हो।

पुण्यवान्-(हिं०वि०) धर्मात्मा, पुण्य करने वाला। **पुण्यशील**-(सं०वि०) अच्छे स्वभाव वाला।

पुण्य स्थान-(सं०नपुं०) तीर्थ स्थान।

पुण्याई-(हिं०स्त्री०) पुण्य का फल, पुण्य का प्रभाव। **पुण्यात्मा**-(सं०वि०) पुण्यशील, धर्मात्मा-। **पुण्याह**-(सं० स्त्री०) पुण्य दिन, मंगल दिवस। **पुण्याहवाचन**-(सं०नपुं०) देवादि कर्म में मंगल के निमित्त 'पुण्याह' इस शब्द का तीन बार उच्चारण।

पुतरिया, पुतरी-(हिं० स्त्री०) देखो पुतली।

पुतला-(हिं०पुं०) लकड़ी, मिट्टी, धातु कपड़े आदि की बनी हुई पुरुष की मूर्ति। **पुतली**-(हिं०स्त्री०) लकड़ी मिट्टी, धातु अथवा कपड़े की बनी हुई स्त्री की आकृति, गुड़िया, आँख के बीच का काला भाग।

पुताई-(हिं०स्त्री०) पोतने की क्रिया भाव, पोतने का शुल्क।

पुतारा-(हिं०पुं०) पोतने के लिये भिगाया हुआ कपड़ा।

पुत्त-(हिं०पुं०) देखो पुत्र, बेटा।

पुत्तरी-(हिं०स्त्री०) पुत्री, बेटी।

पुत्तल, पुत्तलक-(सं०पुं०) पुतला।

पुत्तलिका-(सं०स्त्री०) गुड़िया। **पुत्तली**-(सं०नपुं०) प्रतिमूर्ति, पुतली।

पुत्र-(सं०पुं०) तनय, तनुज, लड़का, बेटा। **पुत्रक**-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा,

पुत्रकाम-(सं०वि०) पुत्राभिलाषी। **पुत्रकामेष्टि**-(सं०स्त्री०) पुत्र प्राप्त करने के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ। **पुत्रता**-(सं०स्त्री०) पुत्रका धर्म। **पुत्रपौत्र**-(सं०नपुं०) लड़के पोतों का समुदाय। **पुत्रवत्सल**-(सं०वि०) पुत्र के प्रति अधिक प्रेम युक्त। **पुत्रवधू**-(सं०स्त्री०) पुत्र की पत्नी, पतोहू।

पुत्रिका-(सं०स्त्री०) कन्या, बेटी, पुत्र के स्थान पर मानी हुई कन्या, पुतली, गुड़िया।

पुत्री-(सं०पुं०) पुत्रयुक्त, पुत्रवान् (स्त्री०) कन्या, बेटी।

पुत्रीय-(सं०वि०) पुत्र संबन्धी।

पुत्रेष्टि-(सं०स्त्री०) वह यज्ञ जो पुत्र की कामना से किया जाता है।

पुत्रोत्सव-(सं०पुं०) पुत्र के जन्म दिन में किया जाने वाला उत्सव।

पुनः-(हिं० अव्य०) दोबारा, दूसरी बार, फिर, अनन्तर, उपरान्त, पीछे। **पुनः पुनः**-(सं०अव्य०) बारंबार।

पुन-(हिं०पुं०) पुण्य, धर्म।

पुनना-(हिं०क्रि०) भला बुरा कहना।

पुनरपि-(सं०अव्य०) फिर से।

पुनरागत-(सं० वि०) दुबारा आया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुनरागमन-(सं०नपुं०) द्वितीय वार आगमन ।
पुनरावृत्त-(सं० वि०) फिर से कहा हुआ, फिर से घूमकर आया हुआ।
पुनरावृत्ति-(सं०स्त्री०) पुनर्जन्म ।
पुनरुक्त-(सं०वि०) फिर से कहा हुआ।
पुनरुक्ति-(सं०स्त्री०) कहे हुए वचन को दोहराना ।
पुनरुत्पत्ति-(सं०स्त्री०) पुनर्जन्म ।
पुनर्गमन-(सं०नपुं०) दुवारा गमन ।
पुनर्जन्म-(सं०नपुं०) एक शरीर छूटने पर दूसरी शरीर धारण करना।
पुनर्जात-(सं०वि०) फिर से उत्पन्न ।
पुनर्विवाह-(सं०पुं०) दुवारा विवाह।
पुनि-(हिं०क्रि०वि०) फिरसे, दुवारा
पुनिम,पुनी-(हिं०स्त्री०) पूर्णिमा ।
पुनी-(हिं०स्त्री०) पूर्णिमा, (पुं०) पुण्यात्मा, धर्मात्मा ।
पुनीत-(हिं०वि०) पवित्र, शुद्ध ।
पुन्न-(हिं०पुं०) देखो पुण्य ।
पुन्य-(सं०पुं०) देखो पुण्य ।
पुन्यताई-(हिं०स्त्री०) पवित्रता ।
पुपली-(हिं०स्त्री०) वांस की पतली नली
पुमान्-(सं०पुं०) पुरुष, नर ।
पुरः-(हिं०अव्य०) आगे पहिले, । पुरःसर (हिं०वि०) अग्रगण्य, अगुआ ।
पुर-(सं०नपुं०) नगर, गृह, घर, दुर्ग, गढ़, समूह, देह, शरीर, (वि०) पूर्ण, भरा हुआ (हिं०पुं०) कुवें से पानी निकालने का चमड़े का बड़ा डोल, पुरवट ।
पुरखा-(हिं०पुं०) पूर्वज, पूर्व पुरुष, कुल का वृद्ध पुरुष, बड़ा बूढ़ा;
पुरजन-(हिं०पुं०) नागरिक ।
पुरजित्-(सं०पुं०) त्रिपुरारि, शिव ।
पुरतटी-(सं०स्त्री०) छोटा हाट ।
पुरनियाँ-(हिं०वि०) वृद्ध, बुड्ढा ।
पुरपाल-(सं०पुं०) नगरपाल, कोतवाल ।
पुरबला, पुरबुला-(हिं०वि०) पहिले का, पूर्व जन्म संबंधी ।
पुरबिया, पुरबिहा-(हिं०वि०) पूर्व देश में उत्पन्न, पूरब का ।
पुरमार्ग-(सं०पुं०) नगर का मार्ग ।
पुररक्ष-(सं०पुं०) नगर का रक्षक ।
पुरवइया-(हिं०स्त्री०) देखो पुरवाई ।
पुरवट-(हिं०पुं०) मोट ।
पुरवना-(हिं०क्रि०) पूरा करना या होना, भरना, पुजाना ।
पुरवा-(हिं०पुं०) छोटा गाँव, पूर्व दिशा से चलने वाली हवा, मिट्टी का कुल्हड़ ।
पुरवाई-(हिं०स्त्री०) पूर्व दिशा से चलने वाली हवा ।
पुरवासी-(सं०वि०) नगरमें रहनेवाला।
पुरवैया-(हिं०व०) देखो पुरवाई ।
पुरश्चरण-(सं०नपुं०) किसी कार्य की सिद्धि के लिये अनुष्ठान करना ।
पुरषा-(हिं०पुं०) देखो पुरखा ।
पुरसा-(हिं०पुं०) ऊंचाई या गहराई की एक नाप जो प्रायः साढ़े चार या पांच हाथ की होती है ।
पुरस्कार-(सं०पुं०) आदर, पूजा, प्रधानता, स्वीकार उपहार, पारितोषिक;
पुरस्कृत-(सं०वि०) पूजित, स्वीकृत,
पुरःसर-(सं०स्त्री०) अगुआ, साथी, (वि०) आगे का, पहिला ।
पुरहत-(हिं०पुं०) वह अन्न द्रव्य आदि जो मंगल कार्य में पुरोहित या प्रजा को पहिले दिया जाता है, आखत ।
पुरहा-(हिं०पुं०) वह मनुष्य जो पुरवट का पानी गिराने के लिये नियुक्त रहता है ।
पुरा-(सं०अव्य०) प्राचीन काल में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(वि०) प्राचीन, पुराना (हिं०पुं०) पुरवा, गांव, बस्ती।
पुराकल्प-(सं०पुं०) प्राचीन काल,
पुराचीन-(हिं०वि०) देखो प्राचीन।
पुराण-(सं०वि०) प्राचीन, पुराना (सं० पुं०) पुरानी कथा, हिन्दुओं का धर्म संबंधी आख्यान ग्रन्थ जिनमें संसार की सृष्टि, लय प्राचीन ऋषि मुनियों और राजाओं की कथा रहती है, पुराण पुरुष-(सं०पुं०) विष्णु।
पुरातन-(सं०वि०) प्राचीन, पुराना।
पराधिप-(सं०पुं०) नगर का अध्यक्ष।
पुरान-(हिं०पुं०) देखो पुराण (वि०) पुराना। पुराना(हिं०वि०) प्राचीन काल का, जीर्ण, परिपक्व, पुरातन।
पुराल-(हिं०पुं०) देखो पयाल।
पुरावसु-(सं०पुं०) भीष्म।
पुरावृत्त-(सं०नपुं०) इतिहास, पुराना चरित्र।
पुरी-(सं०स्त्री०) नगरी।
पुरीष-(सं०नपुं०) विष्ठा, मल, गू।
पुरुख-(हिं०पुं०) देखो पुरुष।
पुरुखा-(हिं०पुं०) देखो पुरुखा।
पुरुष-(सं०पुं०) मनुष्य, पूर्वज, पति, मनुष्य का शरीर या आत्मा, सूर्य, व्याकरण में सर्वनाम और तदनुसारिणी क्रिया के रूपों का वह भेद जिससे यह निश्चय होता है कि सर्वनाम अथवा क्रियापद अपने लिये अथवा अन्य के लिये प्रयोग किया गया है-यथा "मैं" उत्तम पुरुष; "तुम" मध्यम पुरुष और "वह" प्रथम पुरुष कहलाता है। पुरुषकार-(सं०पुं०) पौरुष, उद्योग।
पुरुषता-(सं०स्त्री०) पुरुषत्व।
पुरुषमेध-(सं० पुं०) नर बलि।
पुरुषराज-(सं० पुं०) पुरुषश्रेष्ठ। पुरुषवध-(सं०पुं०) नर हत्या। पुरुषवत्-(सं०वि०) मनुष्य के समान।
पुरुषाधम-(सं०पुं०) अधम मनुष्य।
पुरुषानुक्रम-(सं०पुं०) पुरुषों से चली आती हुई परम्परा।। पुरुषारथ-(हिं० पुं०) देखो पुरुषार्थ। पुरुषार्थ-(सं० पुं०) पौरुष, पराक्रम, उद्यम। पुरुषार्थी-(सं०वि०) पराक्रमी, परिश्रमी, उद्योगी।
पुरुषोत्तम-(सं० पुं०) विष्णु, पुरुषश्रेष्ठ, ईश्वर।
पुरुहूत-(सं०पुं०) इन्द्र।
पुरेथा-(हिं०पुं०)हलकी मूठ, परिहथा।
पुरैन-(हिं०स्त्री०) देखो पुरइन।
पुरोग-(सं० वि०) अग्रगामी, आगे जाने वाला। पुरोगत-(सं०वि०) जो पहिले गया हो। पुरोगामी-(सं०वि०) अग्रगामी।
पुरोजन्मा-(सं०वि०) बड़ा भाई।
पुरोजव-(सं०वि०) आगे बढ़ने वाला।
पुरोडाश-(सं०पुं०) यज्ञीय द्रव्य।
पुरोद्यान-(सं०नपुं०)नगर का बगीचा।
पुरोध-(सं०पुं०) पुरोहित। पुरोधा-(हिं०स्त्री०) पुरोहिताई।
पुरोहित-(सं०पुं०) यजमान के यहाँ यज्ञादि श्रौत कर्म, गृह कर्म, संस्कार शान्ति आदि कर्म कराने वाला ब्राह्मण। पुरोहिताई-(हिं०स्त्री०) पुरोहित का काम। पुरोहितानी-(हिं०स्त्री०) पुरोहित की स्त्री।
पुर्सा-(हिं०पुं०) देखो पुरसा।
पुलक-(सं०पुं०) रोमाञ्च, एक प्रकार का रत्न। पुलकना-(हिं० क्रि०) रोमांचित, होना, गदगद होना। पुलकाई-(हिं०स्त्री०) पुलकित होने का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाव। पुलुकित-(सं०वि०) रोमाञ्चित, गदगद।
पुलट-(हिं०स्त्री०) देखो पलट।
पुलपुला-(हिं०वि०) जो इतना कोमल हो कि छूने से धँस जावे। पुलपलाना-(हिं०क्रि०) किसी कोमल वस्तु का दवाना, चूसना। पुलपुलाहट-(हिं० स्त्री०) पुलपुला होने का भाव।
पुलाव-(हिं० पुं०) मांस और चावल को एक साथ पका कर बना हुआ एक व्यंजन।
पुलिंदा-(हिं०पुं०) लपेटे हुए कपड़े कागज आदि का छोटा मुट्ठा, गट्ठा।
पुलिन-(सं०पुं०) तट, किनारा, नदी के बीच में पड़ी हुई रेती।
पुल्ल-(सं०वि०) विकसित, खिला हुआ।
पुल्ला-(हिं०पुं०) नाक में पहिरने का एक गहना।
पुवा-(हिं०पुं०) पूवा, मालपूवा।
पुवार-(हिं०पुं०) देखो पयाल, पुआल।
पुषित-(सं०वि०) पोषण किया हुआ।
पुष्कर-(सं०नपुं०) ढोल, मृदंग आदि का मुखड़ा जिसपर चमड़ा मढ़ा जाता है, आकाश, ताल, पोखरा।
पुष्करपर्ण-(सं०पुं०) कमल का पत्ता।
पुष्करिणी-(सं०स्त्री०) जलाशय, पोखरा।
पुष्कल-(सं०पुं०) एक प्रकार का ढोल, (नपुं०) अन्न नापने की एक प्राचीन नाप, (वि०) प्रचुर, अधिक।
पुष्ट-(सं०वि०) बलवर्धक, बलिष्ठ, मोटा, दृढ़, पक्का। पुष्टई-(हिं०स्त्री०) बल वीर्य को पुष्टकरने वाली औषधि।
पुष्टता-(सं०स्त्री०) दृढ़ता, पोढ़ापन।
पुष्टि-(सं०स्त्री०) पोषण, वृद्धि, दृढ़ता।
पुष्टिकर-(सं०वि०) पुष्ट करने वाला।
पुष्टिकारक-(सं०वि०) देखो पुष्टिकर।
पुष्टिद-(सं०वि०) पुष्टि देनेवाला।
पुष्प-(सं०नपुं०) कुसुम, सुमन, फूल।
पुष्पक-(सं०नपुं०) कुबेर का विमान।
पुष्पकाल-(सं०पुं०) वसन्त ऋतु।
पुष्पकीट-(सं० पुं०) भौंरा, फूल का कीड़ा।
पुष्पजासव-(सं०पुं०) फूलों से बनाई हुई मदिरा।
पुष्पद-(सं०वि०) फूल देने वाला।
पुष्पदाम-(सं०नपुं०) फूलों की माला।
पुष्पद्रव-(सं०पुं०) फूल का रस।
पुष्पनिर्यास-(सं०पुं०) मकरन्द, फूल का रस।
पुष्पपत्री-(सं०पुं०) कुसुमशर, कामदेव।
पुष्पभव-(सं०पुं०) मकरन्द, मधु।
पुष्पभूषित-(सं०वि०) फूलों से सुशोभित। पुष्पमास-(सं० पुं०) वसन्त ऋतुके दो महीने। पुष्पराग-(सं० पुं०) पुखराज। पुष्परेणु-(सं०पुं०) फूल की धूल, पराग। पुष्पलिह-(सं० पुं०) भ्रमर, भौंरा। पुष्पवाटिका-(सं०स्त्री०) फूलों का बगीचा फुलवारी।
पुष्पहीन-(सं०वि०) बिना फूल का, गूलर का वृक्ष। पुष्पहीना-(सं०स्त्री०) वन्ध्या, बाँझ स्त्री।
पुष्पाकर-(सं०पुं०) वसन्त ऋतु। पुष्पाञ्जलि-(सं० पुं०) अंगुली भर कर फूल जो किसी देवता पर चढ़ाये जावें।
पुष्पित-(सं०वि०) कुसुमित, फूला हुआ।
पुष्पोत्सव-(सं०पुं०) कुसुम क्रीड़ा, फूल का खेल; पुष्पोद्यान-(सं०पुं०) पुष्प वाटिका, फुलवारी।
पुष्य-(सं०पुं०) पुष्टि, पोषण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुस-(हिं०पुं०) बिल्ली को पुकारने का प्यार का शब्द।
पुसाना-(हिं०क्रि०) शोभा देना, अच्छा लगना, बन पड़ना।
पुस्तक-(सं०नपुं०) पोथी; पुस्तकाकार-(सं०वि०) पुस्तक के आकार का, पोथी के रूप का; पुस्तकागार-(सं० पुं०) जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो; पुस्तकालय-(सं०नपुं०) जिस भवन में पुस्तकों का संग्रह हो।
पुस्तिका-(सं०स्त्री०) छोटे आकार की पोथी।
पुस्फुस-(सं०पुं०) फुसफुस रोग।
पुहकर-(हिं०पुं०) देखो पुष्कर।
पुहाना-(हिं०क्रि०) गुथवाना, पिरोने का काम दूसरे से कराना।
पुहुप-(हिं०पुं०) देखो पुष्प, फूल।
पुहराज-(हिं०पुं०) पुखराज।
पुहुरेनु-(हिं०पुं०) पुष्परेणु, पराग।
पुहरेनु-(हिं०पुं०) पुष्परेणु, पराग।
पुहुमी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
पूंछ-(हिं०स्त्री०) पशु, पक्षी, कीड़े आदि के शरीर का सबसे पिछला भाग, लांगूल, पोंछ।
पूंछड़ी-(हिं० स्त्री०) लांगूल, पुच्छ, पोंछ।
पूंछताछ-(हिं० स्त्री०) देखो पूछताछ।
पूंछना-(हिं०क्रि०) देखो पूछना।
पूंछलतारा-(हिं०पुं०) देखो केतु।
पूंजी-(हिं०स्त्री०) मूल धन, किसी कार्यालय की अचल सम्पत्ति, रुपया पैसा, धन; पूंजीदार-पूंजीपति वह जो किसी व्यवसाय में धन लगावे।
पूंजीवाद-(हिं०पुं०) समाज में धनपति द्वारा उत्पादन के साधनों पर अधिकार करने की व्यवस्था।
पूँठ-(हिं०स्त्री०) देखो पीठ।
पूआ-(हिं०पुं०) मालपुआ।
पूखन-(सं०नपुं०) सुपारी क वृक्ष या फल।
पूगना-(हिं०स्त्री०) पूरा होना।
पूगी-(सं०पुं०) सुपारी।
पूंछ-(हिं०स्त्री०) जिज्ञासा, खोज।
पूछताछ-(हिं०स्त्री०) जिज्ञासा, जाँच पड़ताल।
पूछना-(हिं०क्रि०) जिज्ञासा करना, पता लगाना, आदर करना, ध्यान देना, टोकना।
पूछताछ-(हिं०स्त्री०) देखो पूछपाछ।
पूछातीछी, पूछापाछी-(हिं० स्त्री०) पूछने की क्रिया या भाव।
पूजक-(हिं०वि०) पूजा करने वाला।
पूज-(हिं०पुं०) देवता, (वि०) पूजने योग्य।
पूजक-(हिं० वि०) पूजा, अर्चना देवता की वन्दना।
पूजना-(हिं०क्रि०) गहराई भरना या बराबर होना, समाप्त होना, बीतना, ऋण आदि का चुकता होना, किसी देवता की आराधना करना, आदर करना, घूस देना।
पूजनीय-(सं०वि०) पूजा करने योग्य, आदरणीय, अर्चनीय।
पूजमान-(हिं०वि०) पूजनीय, पूज्य।
पूजा-(सं०स्त्री०) पूजन, अर्चन, आराधना, आदर सत्कार। पूजार्ह-(सं० वि०) मान्य, पूजने योग्य; पूजित-(सं० वि०) जिसकी पूजा की गई हो; पूजेता-(हिं०पुं०) पुजारी।
पूज्य-(सं०वि०) पूजनीय, माननीय,
पूज्यपाद-(सं०वि०) जिसके पैर पूजनीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हों; **पूज्यमान**-(सं०वि०) जो पूजा जाता हो।
पूठा-(हिं०पुं०) देखो पट्ठा।
पूठि-(हिं०स्त्री०) देखो पीठ, पृष्ठ।
पूड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पूरी।
पूणू-(हिं०स्त्री०) पूर्णिमा, पुनवासी।
पूत-(सं०वि०)पवित्र, सत्य, सच्चा।
पूत-(हिं०पुं०) पुत्र, बेटा।
पूतड़ा-(हिं०पुं०) छोटे बच्चों के नीचे मलमूत्र त्याग करने के लिये बिछाने का छोटा बिछौना।
पूतरा-(हिं०पुं०) देखो पुतला, बाल बच्चा; **पूतरी**-(हिं०स्त्री०) देखो पुतली।
पूता-(सं०वि०) पवित्र, शुद्ध; **पूतात्मा**-(सं०वि०) शुद्ध अन्तःकरण का,
पूति-(स्त्री०)पवित्रता, दुर्गन्ध, (वि०) दुर्गन्धयुक्त।
पूती-(हिं०स्त्री०) लहसुन की गाँठ।
पूथ, पूथा-(हिं०पुं०)बालूका ऊंचा टीला
पूनव-(हिं०स्त्री०) देखो पूर्णिमा, पूनो।
पूनसलाई-(हिं०स्त्री०) पूनी बनाने की सलाई।
पूनिउं-(हिं०स्त्री०)देखो पूनो; पूर्णिमा
पूनी-(हिं०स्त्री०) पवित्रता, शुद्धि, (हिं०स्त्री०) धुनी हुई रूई की बड़ी बत्ती जो सूत कातने के लिये बनाई जाती है।
पनो-(हिं०स्त्री०)पूर्णमासी, पूर्णिमा।
पूप-(सं०पुं०) पूआ, मालपूआ।
पूपली-(सं०स्त्री०)बांस आदि की पोली नली, बच्चों के खेलने का एक प्रकार का खिलौना।
पूय-(सं०नपुं०) मवाद, पीव।
पूर-(हिं०पुं०) मसाले आदि जो पकवान के भीतर भरे जाते हैं,
पूरक-(सं०पुं०) वह अंक जिसमें किसी संख्या का गुणा किया जावे, प्राणायाम का वह अंग जिसमें नाक के एक छिद्र को बन्द करके दूसरे छिद्र द्वारा सांस ऊपर को खींची जाती है,
पूरणी-(सं०स्त्री०) पूरा करने वाली,
पूरणीय-(सं०वि०) पूरा करने योग्य।
पूरन-(हिं०व०) देखो पूर्णः **पूरनकाम**-(हिं०वि०) देखो पूर्णकाम; **पूरनपूरी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मीठी कचौड़ी।
पूरनमासी-(हिं०स्त्री०)देखो पूर्णमासी।
पूरना-(हिं०क्रि०) पूर्ति करना, मनोरथ सिद्ध करना, मंगल अवसरों पर भूमिपर अबीर आंटे आदि से चौखूटे क्षेत्र बनाना, बटना, पूर्ण या व्याप्त होना।
पूरब-(हिं०पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है।
पूरबल-(हिं०पुं०) प्राचीन समय, पूर्व जन्म।
पूरबला-(हिं०वि०) पुरातन, पुराना, पहिले जन्म का।
पूरबिया, पूरबी-(हिं०वि०)पूर्व संबंधी, पूरब का।
पूरा-(हिं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, समूचा, बिना भाग किया हुआ, पूर्ण, भरपूर, तुष्ट, सम्पन्न।
पूरित-(सं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ,
पूरी-(हिं०स्त्री०) एक खाद्य पदार्थ जो आटे को साधारण रोटी की तरह बेल कर घी में पका लिया जाता है।
पूरुष-(सं०पुं०)पुरुष,नर,चेतन,आत्मा।
पूर्ण-(सं०वि०) परिपूर्ण, भरा हुआ, समूचा, परितृप्त, समाप्त, सफल, सिद्ध, **पूर्णकाम**-(सं०पुं०)परमेश्वर,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(वि०) जिसकी सब कामना पूरी हो चुकी हों; **पूर्णकुम्भ**-(सं०पुं०) जल से भरा हुआ घड़ा; **पूर्णचन्द्र**-(सं०पुं०) पूर्णिमा का चन्द्रमा। **पूर्णतया,पूर्णतः**-(सं०अव्य०) पूर्ण रूप से। **पूर्णता**-(सं०स्त्री०) पूर्णत्व। **पूर्णपात्र**-(सं० नपुं०) वस्तुपूर्ण पात्र, जलपूर्ण पात्र। **पूर्णमासी**-(सं०स्त्री०) चन्द्रमास की अन्तिम तिथि या पंद्रहवां दिन।

पूर्णविराम-(सं०पुं०) लिखने में वह चिह्न जो वाक्य के पूरे होने पर लगाया जाता है, नागरी बगला आदि में इसके लिये एक खड़ी पाई "।" का प्रयोग किया जाताहै।

पूर्णानन्द-(सं० पुं०) परमेश्वर, परब्रह्म।

पूर्णायु-(सं०पुं०) सौ वर्ष का जीवनकाल, (वि०) पूरी आयुष्य वाला।

पूर्णाहुति-(सं०स्त्री०) होम समाप्ति में अन्तिम आहुति।

पूर्णिमा-(सं०.स्त्री०) पौर्णमासी, पुनवासी।

पूर्णेन्दु-(सं०पुं०) पूर्णिमा का चन्द्रमा।

पूर्ति-(सं०स्त्री०) पूराकरने का काम, गुणा करने का काम।

पूर्व-(सं०वि०) पहिले का, प्राचीन, पुराना, पिछला, (पुं०) वह दिशा जिसमें सूर्य उदय होता है, (अव्य०) पहले।

पूर्वक-(सं०अव्य०) साथ, सहित, अर्थ में प्रायः संयुक्त संज्ञा के अन्त में प्रयोग होता है, यथा ध्यान पूर्वक।

पूर्वकर्म-(सं०नपुं०) पहले किया जाने वाला कार्य। **पूर्वकाय**-(सं०पुं०) शरीरमें नाभि के उपर का भाग; **पूर्वकाल**-(सं०पुं०) प्राचीन काल।

पूर्वकालिक-(सं०वि०) पूर्व काल संबंधी, जिसकी स्थिति पूर्वकाल में हो जिसका जन्म पूर्वकाल में हुआ हो; **पूर्वकालिक क्रिया**-वह अपूर्ण क्रिया जिसका काल किसी दूसरी पूर्ण क्रिया के पहले होता हो।

पूर्वज-(सं०पुं०) पूर्वपुरुष, पुरखा, (वि०) पूर्व काल में उत्पन्न। **पूर्वजन्मा**-(स०पुं०) अग्रज, बड़ा भाई।

पूर्वजा-(सं०स्त्री०) बड़ी बहन।

पूर्वज्ञान-(सं०नपुं०) पहिले का ज्ञान, पूर्व जन्म का ज्ञान।

पूर्वतन-(सं०वि०) पुराने समय का।

पूर्वतः-(सं०अव्य०) पहले से।

पूर्वत्व-(सं०नपुं०) पुरानापन।

पूर्वदिन-(सं०नपुं०) आज से पहिले का दिन।

पूर्वपक्ष-(सं०पुं०) कृष्णपक्ष, शास्त्रार्थ में संशय हटाने के लिये जो प्रश्न किया जाता है।

पूर्वपद-(सं०नपुं०) पूर्ववर्ती स्थान।

पूर्वपितामह-(सं०पुं०)प्रपितामह, परदाद

पूर्वपुरुष-(सं०पुं०) बाप दादा परदादा आदि पुरखा।

पूर्वभाषी-(सं०वि०) पहिले बोलने वाला। **पूर्वभूत**-(सं०वि०)जो पहिले बीत गया हो।

पूर्वराग-(सं०पुं०)पूर्वानुराग, प्रथम अनुराग।

पूर्वरात्र-(सं०पुं०)रात्रि का पूर्व भाग।

पूर्वरूप-(सं०नपुं०) पहिले का रूप,

पूर्ववत्-(सं०अव्य०)पूर्व तुल्य, पहले की तरह।

पूर्ववायु-(सं०पुं०) पुरवैया हवा।

पूर्वविद्-(सं०वि०) पुरानी बातों को जानने वाला। **पूर्ववृत्त**-(सं०नपुं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन घटना, इतिहास।
पूर्ववैरी-(हिं०पुं०) पहिले का शत्रु।
पूर्वा-(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा।
पूर्वापर-(सं०क्रि०वि०) अगला और छिला, क्रमानुसार, (पुं०) पूर्व और पश्चिम।
पूर्वाभिभाषी-(सं०वि०) पहिले बोलने वाला। पूर्वाभिमुख-(सं०वि०) पूरब की ओर मुख किया हुआ।
पूर्वार्जित-(सं०वि०) पहिले का उपार्जित या कमाया हुआ।
पूर्वार्ध-(सं०वि०) किसी पुस्तक का पहिला आधा भाग।
पूर्वाह्न-(सं०पुं०) दिनमान का प्रथम भाग, प्रातःकाल से दोपहर तक का समय।
पूर्वी-(हिं०वि०) पूरब का।
पूर्वेतर-(सं०वि०)पूर्वसे भिन्न, पश्चिम
पूर्वोक्त-(सं०वि०) पूर्व कथित, पहले कहा हुआ।
पूर्वोत्तरा-(सं०स्त्री०) ईशान कोण।
पूर्वोत्पन्न-(सं०वि०) पूर्वकाल में उत्पन्न।
पूला-(हिं०पुं०) मूंज आदि का बंधा हुआ गट्ठा।
पुवा-(हिं०पुं०) देखो पूआ।
पूस-(हिं०पुं०) पौष मास।
पृच्छक-(सं०वि०) प्रश्न करने वाला,
पृच्छना-(सं०स्त्री०) जिज्ञासा करना, पूछना।
पृतना-(सं०स्त्री०)सेना,संग्राम,लड़ाई।
पृथक्-(सं० अव्य०) भिन्न, अलग;
पृथक्करण-(सं०नपुं०)अलग करने का भाव, अलगाव।
पृथकजन-(सं०पुं०) नीच पापी पुरुष।
पृथग्भाव-(सं०पुं०) देखो पृथक्त्व।
पृथग्विध-(सं०वि०) नना रूप का।
पृथवी-(सं०स्त्री०) देखो पृथिवी।
पृथिवी-(हि०स्त्री०) अचला, भूमि, धरा, धरणी; पृथिवीकम्प-भूकम्प। पृथिवीपति-राजा। पृथिवीलोक-भूलोक।
पृथुता-(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव।
पृथुत्व-(हिं०पुं०) देखो पृथुता। पृथुदर्शी-(सं०वि०)बहुदर्शी,चतुर,प्रवीण; पृथुपाणी-(सं०वि०)जिसके हाथ बहुत लम्बे हों।
पृथुल-(सं०वि०) बड़ा भारी, स्थूल, अधिक।
पृथुलाक्ष-(सं०वि०) बड़ी-बड़ी आखों वाला।
पृथ्वी-(सं० वि०) सौर जगत् का वह ग्रह जिस पर हम सब प्राणी चलते फिरते हैं।
पृथ्वीगृह-(सं०नपुं०) गह्वर, गुफा।
पृथ्वीज-(सं०वि०) भूमि से उत्पन्न,
पृथ्वीतल-(सं०पुं०)संसार, वह धरातल जिस पर हम लोग चलते फिरते हैं
पृथ्वीधर-(सं०पुं०) पर्वत, पहाड़।
पृथ्वीनाथ-(सं०पुं०) राजा। पृथ्वीपति, पृथ्वीपाल-(सं० पुं०) पृथ्वीपालक, राजा।
पृथ्वीपुत्र-(सं०पुं०) मंगल ग्रह।
पृथ्वीश-(सं०पुं०) भूपति, राजा।
पृषदश-(सं०पुं०) वायु हवा।
पृष्ठ-(सं०नपुं०) शरीर के पीछे का भाग, पीठ, पीछा, पुस्तक का पत्र या पन्ना, पुस्तक के पत्र के एक ओर का तल। पृष्ठग्रन्थि-(सं०पुं०) गण्डरोग, कूबड़। पृष्ठचर-(सं०पुं) पीछे चलने वाला। पृष्ठपोषक-(सं० पुं०) पीठ ठोंकने वाला, सहायक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पृष्ठफल-(सं०पुं०) किसी पिण्ड के ऊपरी भाग का क्षेत्रफल; **पृष्ठ भाग** (सं०पुं०) पिछला भाग, पीठ।

पृष्ठवंश-(सं०पुं०)पीठ पर की रीढ़ देखो पृष्ठवंश।

पें-(हिं०पुं०) रोने या बाजा फूंकने से निकलने का शब्द।

पेंग-(हिं०स्त्री०) हिंडोले या झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर जाना।

पेंच-(हिं०पुं०) देखो पेंच।

पेंडुकी-(हिं०स्त्री०)पंडुक पक्षी, गुझिया नामक पकवान।

पेंदा--(हिं०पुं०)किसी वस्तु का निचला भाग या आधार। **पेंदी**-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु का निचला भाग।

पेउसी-(हिं०स्त्री०) व्याई हुई गाय या भैंस का पहिले दिन का दूध।

पेखल-(हिं०वि०)प्रेक्षक, देखनेवाला।

पेखना-(हिं०क्रि०) देखना।

पेचक-(सं०पुं०) उलूक पक्षी, उल्लू।

पेचना-(हिं०क्रि०)किसी दो वस्तुओं के बीच में तीसरी वस्तु को इस प्रकार से जमा देना कि पता न चले।

पेचिका-(सं०स्त्री०)मादा उल्लू पक्षी।

पेट-(हिं०पुं०) शरीर के भीतर का वह भाग जहाँ पहुँच कर भोजन पचता है, उदर, अन्तःकरण, मन, गर्भ, चक्कीका भीतरी भाग, जीविका,

पेटक-(सं०पुं०) मंजूषा, पेटारा, समूह, ढेर।

पेटकैया-(हिं०क्रि०वि०)पेट के बल।

पेटल-(हिं०वि०)बड़े पेट वाला,तोंदीला

पेटा-(हिं०पुं०) सीमा, पूरा विवरण, वृत्त, घेरा, किसी पदार्थ का मध्य भाग, नदी बहने का मार्ग, नदी का पाट।

पेटाक-(सं०पुं०) पेटक, पिटारा।

पेटागि-(हिं०स्त्री०) पेटकी आग,भूख।

पेटारा-(हिं०पुं०) देखो पिटारा।

पेटार्थी, पेटार्थू-(हिं०वि०) भुक्खड़।

पेटिका-(हिं०स्त्री०) छोटी पिटारी।

पेटी-(हिं०क्रि०) छोटा संदूक, छाती और पेडूके बीच का स्थान, कटिबन्ध।

पेटू-(हिं०वि०) जो खाता हो, भुक्खड़।

पेठ-(हिं०पुं०) देखो पैठ।

पेठा-(हिं०पुं०)कूष्माण्ड,सफेद कुम्हड़ा

पेड़-(हिं०पुं०) पादप, वृक्ष।

पेड़ना-(हिं०स्त्री०) देखो पेरना।

पेड़ा-(हिं०पुं०) खोवे की बनी हुई गोल चिपटी मिठाई।

पेड़ी-(हिं०स्त्री०) वृक्ष की धड़, पुराने पौधे में का पान।

पेड़ू-(हिं०पुं०) गर्भाशय, उपस्थ।

पेन्हाना-(हिं०क्रि०) देखो पहनाना, दूहते समय गाय भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

पेम-(हिं०पुं०) देखो प्रेम।

पेय-(सं०पुं०) पीने की वस्तु, (वि०) पीने योग्य।

पेरना-(हिं०क्रि०) किसी काम के करने में देर लगाना, रस निकालने के लिये किसी वस्तु को दबाना, कष्ट देना,

पेरवा-(हिं०पुं०)कोल्हू में किसी वस्तु को पेरने वाला।

पेरा-(हिं०पुं०) घर आदि पोतने की पीली मिट्टी।

पेरी-(हिं०क्रि०) देखो पियरी।

पेलव-(सं०वि०) मृदु, कोमल।

पेला-(हिं०पुं०) आक्रमण, धावा, झगड़ा।

पेवँ-(हिं०पुं०) प्रेम, स्नेह।

पेवक्कड़-(हिं०पुं०) देखो पियक्कड़।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पेवड़ी-(हिं०स्त्री०) रामरज, पीले रंग की बुकनी।
पेवर-(हिं०पुं०) पीला रंग।
पेवस-(हिं०पुं०) हाल की ब्याई हुई गाय या भैंस का दूध।
पेशल-(सं०वि०)दक्ष, प्रवीण, चतुर।
पेशी-(सं०स्त्री०) शरीर के भीतर की की मांस की गाँठ, पट्ठा।
पेशीकोष-(सं०पुं०) अण्डकोष।
पेषक-(सं०वि०)पीसने वाला; पेषण-(सं०नपुं०) चूर्ण करना, पीसना;
पेषणी-(सं०स्त्री०) वह सिल जिस पर कोई वस्तु पीसी जावे; पेषणीय-(सं०वि०) पीसने योग्य।
पेषना-(हिं०क्रि०) देखो पेखना।
पेसल-(हिं०वि०) देखो पेशल।
पैंकड़ा-(हिं०पुं०) पैरका कड़ा, ऊंट की नकेल।
पैंग-(हिं०स्त्री०) धनुष की डोरी।
पैंचना-(हिं०क्रि०) अनाज फटकना,
पैंचा-(हिं०पुं०) पलटा, हेरफेर।
पैंजना-(हिं०पुं०) पैर में पहरने का एक गहना; पैंजनियाँ, पैंजनी-(हिं० स्त्री०) पैर में पहरने का एक गहना जो चलने पर झनझन शब्द करता है, सग्गड़ या बैल गाड़ी के पहिये के आगे की ओर की वह टेढी लकड़ी जिसके छेद में पहिये या धुरा निकला रहता है।
पैंठ-(हिं०स्त्री०)हाट, दूकान, हाट लगने का दिन; पैंठोर-(हिं०पुं०) दूकान, हाट।
पैंड़-(हिं०पुं०)मार्ग, पगडंडी, पग, डग।
पैंड़ा-(हिं०पुं०) प्रणाली, रीति मार्ग।
पैंत-(हिं०स्त्री०) पण, दाँव।
पैंतालिस-(हिं०वि०)चालीस और पाँच की संख्या का, (पुं०) चालीस और पाँच की संख्या ४५।
पैंती-(हिं०स्त्री०) श्राद्धादि कर्म करती समय अंगुलियों में पहिरने का कुश का बना हुआ छल्ला।
पैंतीस-(हिं०वि०) तीस और पाँच की संख्या का, (पुं०) तीस और पाँच की संख्या ३५।
पैंसठ-(हिं०वि०) साठ और पांच की संख्या का, (पुं०) साठ और पांच की संख्या ६५।
पै-(हिं०स्त्री०) दोष, त्रुटि, (अव्य०) प्रति, ओर, निकट, समीप, परन्तु पर, अनन्तर, पीछे (प्रत्य०) अधिकरण सूचक विभक्ति-पर ऊपर, करण सूचक विभक्ति-द्वारा, से।
पैरकमा-(हिं०स्त्री०) देखो परिक्रमा।
पैका-(हिं०पुं०) पैसा।
पैकारी-(हिं०पुं०) देखो पैकार।
पैकी-(हिं०पुं०) मेले आदिमें घूम घूम कर तमाखू पिलाने वाला।
पैग-(हिं०पुं०) कदम, डग।
पैज-(हिं०स्त्री०) प्रतिज्ञा, पण, टेक।
पैजनी-(हिं०स्त्री०) देखो पैंजनी।
पैंजा-(हिं०पुं०) किवाड़ के छेद में पहिराया हुआ लोहे का कड़ा, पायना।
पैजावा-(हिं०पुं०)ईंट पकानेका स्थान।
पै-(हिं०स्त्री०) प्रवेश, पहुँच, त्रुटि;
पैठाना-(हिं०क्रि०) घुसाना।
पैठार-(हिं०पुं०) प्रवेश, पैठ।
पैठारी(हिं०स्त्री०) प्रवेश, पैठ, गति, पहुँच।
पैठी-(हिं०स्त्री०) बदला।
पैड़ी-(हिं०स्त्री०) सीढ़ी, पौदर।
पैतरा-(हिं०पुं०) मल्ल युद्धमें अथवा तलवार चलाती समय घूम फिर कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैर रखने की मुद्रा, धूल पर पड़ा हुआ पैरका चिह्न।

पैतरी-(हिं०स्त्री०) रेशम की परेती।

पैतला-(हिं०व०) छिछला, कम गहरा।

पैताना-(हिं०पुं०) देखो पायताना।

पैतृक-(सं०वि०) पितृ सम्बन्धी; **पैतृक-भूमि**-जिस स्थान में बापदादे बसे रहे हों।

पैत्त-(सं०वि०) पित्त से उत्पन्न, पित्त सम्बन्धी।

पैत्तिक-(सं०वि०) पित्त सम्बन्धी।

पैथला-(हिं०वि०) छिछला, उथला।

पैदल-(हिं०पुं०) पदाति, पैदल, सिपाही पाँव पांव चलना, (वि०) पाँव पाँव चलने वाला, (क्रि०वि०) पांव पांव, पैदल।

पैन-(हिं०पुं०) छोटा नाला, परनाली।

पैना-(हिं०पुं०) हलवाहों की हाँकने की छोटी छड़ी, (वि०) तीक्ष्ण, धारदार, चोखा।

पैनाना-(हिं०क्रि०) छुरी आदि की धार चोखी करना।

पैन्हना-(हिं०क्रि०) देखो पहनना।

पैयाँ-(हिं०स्त्री०) पैर, पाँव।

पैया-(हिं०पुं०) पोला दाना,।

पैर-(हिं०पुं०) चरण, पाँव, धूल, डंठल सहित अन्न का अटाल।

पैरना-(हिं०क्रि०) पानी के ऊपर हाथ पैर चलाते हुए जाना, तैरना।

पैरा-(हिं०पुं०) पड़े हुए चरण, पैर में पहिरने का एक प्रकार का कड़ा, बांट।

पैराई-(हिं०स्त्री०) तैरने की क्रिया।

पैराक-(हिं०पुं०) तैरने वाला।

पैराना-(हिं० क्रि०) तैराने का काम कराना।

पैराव-(हिं०पुं०) इतना गहरा पानी जो तैर कर ही पार किया जा सकता है।

पैरी-(हिं०पुं०) पैर में पहिरने का एक चौड़ा गहना।

पैलगी-(हिं०स्त्री०) पालागन, प्रणाम।

पैला-(हिं०पुं०) अन्न नापनेकी डलिया

पैशाच-(सं०वि०) पिशाच सम्बन्धी।

पैशाचिक-(सं०वि०) पिशाच सम्बन्धी, राक्षसी; **पैशाची**-(सं०स्त्री०) प्राकृतिक भाषा का एक भेद।

पैशुनिक-(सं०वि०) पीठ पीछे निन्दा करने वाला; **पैशुन्य**-(सं०नपुं०) पिशुनता।

पैसना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना।

पैसरा-(हिं०पुं०) व्यापार, प्रयत्न, झंझट

पैसा-(हिं०पुं०) तीन पाई अथवा पाव आने के मूल्य का ताँबेकी मुद्रा, धन।

पैसार-(हिं०पुं०) प्रवेश द्वार।

पैसे वाला-(हिं०पुं०) धनी, धनवान्।

पैहरा-(हिं०पुं०) पैकार, बनिया।

पैहारी-(हिं०वि०) केवल दूध पीकर रहनेवाला (साधु)।

पोंकना-(हिं०क्रि०) बहुत डरना।

पोंका-(हिं०पुं०) वह फतिंगा जो पौंधों पर उड़ता फिरता है।

पोंगरा-(हिं०पुं०) चोंगा, बाँस की पोर या नली, (वि०) पोला, खोखला, मूर्ख। **पोंगी**-(हिं० स्त्री०) छोटी पोली नली।

पोंछ-(हिं०स्त्री०) देखो पूंछ।

पोंछन-(हिं०पुं०) किसी वस्तु को पोंछ कर निकाला हुआ अंश। **पोंछना**-(हिं०क्रि०) काछना, (पुं०) पोंछने का कपड़ा।

पोंटा-(हिं०पुं०) नाक वे निकला हुआ मल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पोंआ-(हिं०पुं०) साँप का छोटा बच्चा;
पोंआना-(हिं०क्रि०) पोने का काम दूसरे से कराना।
पोई-(हिं०स्त्री०) अंकुर, गेहूँ आदि का छोटा पौधा।
पोकल-(हिं०वि०) निःसार, पोला, खोखला।
पोख-(हिं०पुं०) पालने पोसने का संबंध
पोखना-(हिं०क्रि०) पालना, पोसना, सोखना।
पोखर-(हिं०पुं०) तालाब, पोखरा।
पोखरा-(हिं०पुं०) खोद कर बनाया हुआ तालाब।
पोखराज-(हिं०पुं०) देखो पुखराज।
पोखरी-(हिं०स्त्री०) छोटा पोखरा या ताल।
पोगण्ड-(सं०पुं०) पांच वर्ष से लेकर दस वर्ष तक की अवस्था का बालक,
पोच-(हिं०वि०) क्षीण, हीन, तुच्छ, नीच, क्षुद्र।
पोचारा-(हिं०पुं०) देखो पुचारा।
पोची-(हिं०स्त्री०) निचाई, बुराई।
पोचना-(हिं०क्रि०) देखो पोछना।
पोट-(सं०पुं०) स्पर्श, मेल, मिलान; (हिं०स्त्री०) मोटरी, पोटली।
पोटना-(हिं०क्रि०) फुसलाना।
पोटरी-(हिं०स्त्री०) देखो पोटली।
पोटला-(हिं०पुं०) बड़ी गठरी।
पोटली-(हिं०स्त्री०) छोटी गठरी या बगुचा।
पोटा-(हिं०पुं०) पेट की थैली, सामर्थ्य, चिड़िया का बच्चा, नाकका मल, अंगुली का छोर।
पोट्टलिका-पोट्टली-(सं०स्त्री०) पोटरी, छोटी गठरी।
पोढ़ा-(हिं०वि०) दृढ़, पुष्ट, कठोर, कड़ा। **पोढ़ाना**-(हिं०क्रि०) पुष्ट करना।
पोत-(सं०पुं०) नाव, जहाज, पशु आदि का छोटा बच्चा।
पोत-(हिं०स्त्री०) माला या गुरिया का दाना, काँच की गुरिया, (पुं०) भूमि कर जो किसान देता है।
पोतड़ा-(हिं०पुं०) बच्चों के चूतड़के नीचे रखने का वस्त्र, गंतरा।
पोतदार-(हिं०पुं०) कोषाध्यक्ष जिसके पास लगान का रुपया रक्खा जावे,
पोतधारी-(सं०पुं०) जहाजका अध्यक्ष
पोतनहार-(हिं०स्त्री०) वह पात्र जिसमें पोतने के लिये मिट्टी घोल कर रक्खी हो, घर पोतने वाली स्त्री, आँत, अँतड़ी।
पोतना-(हिं०क्रि०) किसी गीले पदार्थ को दूसरे पदार्थ पर फैला कर लगाना, चुपड़ना, (पुं०) पोतने का कपड़ा।
पोतनायक-(सं०पुं०) जहाज का अधिकारी। **पोतभङ्ग**-(सं०पुं०) जहाज टक्कर खाकर नष्ट होना।
पोतला-(हिं०पुं०) तवे पर घी लगाकर सेकी हुई चपाती, परांठा।
पोतवाह-(सं०पुं०) मल्लाह, मांझी।
पोता-(हिं०पुं०) पौत्र, बेटे का बेटा,
पोतारा-(हिं०पु०) देखो पुतारा।
पोतारी-(हिं०स्त्री०) पोतनेका कपड़ा।
पोताश्रय-(सं०पुं०) बन्दरगाह।
पोती-(हिं०स्त्री०) पौत्री, पुत्र की बेटी, रेशमी कपड़े पर माड़ी चढ़ाने की क्रिया
पोथा-(हिं०पुं०) कागजों की गड्डी, बड़े आकार की पोथी। **पोथी**-(हिं०स्त्री०) पुस्तिका, किताब।
पोदना-(हिं०पुं०) नाटा या ठेंगना आदमी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पोद्दार-(हिं०पुं०) देखो पोतदार।
पोना-(हिं०क्रि०) गीले आँटे की लोई को हाथों में घुमाकर रोटी बनाना, पिरोना, गूथना, पकाना।
पोपला-(हिं०वि०) सिकुड़ा हुआ, पचका हुआ, बिना दाँत का। **पोपलाना**-(हिं० क्रि०) पोपला होना।
पोया-(हिं०पुं०) नरम छोटा पौधा, बच्चा, साँप का छोटा बच्चा।
पोर-(हिं०स्त्री०) अंगुली की गाँठ या जोड़, रीढ़, ऊख, बांस आदि का वह भाग जो दो गांठों के बीच में हो।
पोरा-(हिं०स्त्री०) लकड़ी का मण्डलाकार टुकड़ा।
पोरिया-(हिं०स्त्री०) छल्ले के आकार का वह गहना जो हाथ या पैर के पोरों पर पहना जाता है।
पोल-(हिं०पुं०) अवकाश, शून्य स्थान, खोखलापन।
पोला-(हिं०वि०) पुलपुला, खोखला, निःसार, तत्वरहित।
पोली-(सं०स्त्री०) पतली रोटी।
पोष-(सं०पुं०) पालन पोषण, वृद्धि, तृप्ति, उन्नति।
पोषक-(हिं०वि०) पालक, पालने वाला, सहायता देनेवाला।
पोषण-(सं०नपुं०) पुष्टि, पालन।
पोषना-(हिं०क्रि०) पालना।
पोषित-(सं०वि०) पाला हुआ।
पोष्य-(सं०वि०) पोषणीय, पालने योग्य
पोष्यपुत्र-पुत्र के समान पाला हुआ लड़का।
पोस-(हिं०पुं०) पालने वाले के साथ प्रेम। **पोसन**-(हिं०पुं०) रक्षा, पालन **पोसना**-(हिं०क्रि०) रक्षा करना, पालना।
पोहना-(हिं० क्रि०) पिरोना, गूंथना, घुसाना, घँसाना, (वि०) घुसने वाला।
पोहर-(हिं०पुं०) पशुओं के चरने का स्थान, पशुओं का चारा।
पोहमी-(हिं०स्त्री०) देखो पुहमी।
पोहा-(हिं०पुं०) पशु, चौपाया।
पोहिया-(हिं०पुं०) चरवाहा।
पौंचा-(हिं०पुं०) साढ़े पांच का पहाड़ा।
पौंड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की कड़ी और मोटी जाति की ऊख।
पौंड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो पौरी।
पौंढ़ना, पौरना-(हिं०क्रि०) तैरना।
पौ-(हिं०स्त्री०) पौसला, प्याऊ, (पुं०) पैर, जड़; **पौ-फटना**-प्रातः काल होना;
पौआ-(हिं०पुं०) देखो पौवा।
पौंढ़ना-(हिं०क्रि०) लेटना, सोना, आगे पीछे हिलाना। **पौंढ़ाना**-(हिं०क्रि०) इधर उधर हिलाना, झुलाना।
पौण्ड्र, पौण्ड्रक-(सं०पुं०) मोटा गन्ना, पौढा।
पौत्र-(सं०पुं०) पुत्र का पुत्र, पोता।
पौत्री-(सं०स्त्री०) पुत्र की बेटी, पोती।
पौद-(हिं०स्त्री०) छोटा पौधा।
पौदर-(हिं०स्त्री०) चिह्न, वह ढालुआ स्थान जिसपर से बैल कुवें से पुरवट खींचते हैं।
पौनः, पुनिक-(सं०नपुं०) गणित में दशमलव के अंक जो बारंबार आते हैं।
पौनरुक्त-(सं०वि०) बारंबार कहा हुआ।
पौन-(हिं०पुं०) देखो पवन, वायु, हवा; (वि०) तीन चौथाई भाग।
पौना-(हिं०पुं०) पौने का पहाड़ा; लोहे की बड़ी करछी या झरनी।
पौनार, पौनारि-(हिं०स्त्री०) कमल के फूल की डंडी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पौनी-(हिं०स्त्री०) छोटा पौना।
पौने-(हिं०वि०) किसी संख्या का तीन चौथाई।
पौमान-(हि०पुं०)जलाशय, पोखरा।
पौर-(सं०वि०) नगर संबंधी।
पौरजन-(सं०पुं०) नगरमें रहने वाला।
पौरा-(हिं०पुं०) पड़े हुए चरण।
पौराण-(सं०वि०) पुराण सम्बन्धी।
पौराणिक-(सं०स्त्री०) पुराणपाठी।
पौरि-(हिं०स्त्री०) देखो पौरी।
पौरिया-(हिं०पुं०) द्वारपाल, ड्योढीदार।
पौरी-(हिं०स्त्री०) ड्योढी, सीढी, खाड़ाऊ।
पौरुष-(सं०नपुं०) पराक्रम, साहस, उद्यम, उद्योग, (वि०) पुरुष संबंधी।
पौरुष्य-(सं०नपुं०)पुरुषता, साहस।
पौरोहित-(सं०नपुं०)पुरोहित का धर्म या कार्य। **पौरोहित्य**-(सं० नपुं०) पुरोहिताई।
पौर्णमासिक-(सं०वि०) पौर्णमा संबंधी
पौर्णमासी-(सं०स्त्री०) पूर्णमासी।
पौल-(हिं०स्त्री०) मार्ग।
पौलना-(हिं०क्रि०) कहना।
पौला-(हिं०पुं०)बिना खूंटी का खड़ाऊं जिसमें छेद में फंसी हुई रस्सी से अंगूठा फँसा रहता है।
पौलि-(हिं०स्त्री०) फुलका, रोटी।
पौलिया-(हिं०पुं०) देखो पौरिया।
पौली-(हिं०स्त्री०) पौरी, ड्योढी।
पौवा-(हिं०पुं०) एक सेर का चौथाई अंश, पाव भर।
पौष-(सं०पुं०) पूस का महीना।
पौष्करिणी-(सं०स्त्री०) छोटा पोखरा या तालाब।
पौष्टिक-(सं०वि०)पुष्टि करनेवाला।
पौसरा, पौसला-(हिं०स्त्री०)प्यासों को पानी पिलाने का स्थान।
पौसेरा-(हिं०पुं०)पाव सेर की तौल।
पौहारी-(हिं०पुं०) वह जो केवल दूध पीकर रहता है।
प्याऊ-(हिं०पुं०)पौसरा, पौसला।
प्याना-(हिं०क्रि०) पिलाना।
प्यार-(हिं०पुं०) प्रेम, स्नेह, प्रेम दिखलाने का कार्य। **प्यारा**-(हिं०वि०) प्रीति पात्र।
प्यावना-(हिं०क्रि०) देखो पिलाना।
प्यूनी-(हिं०स्त्री०) सूत कातने की रूई की बत्ती।
प्यूस-(हिं०पुं०) देखो पेवस।
प्यो-(हिं०पुं०) पति, स्वामी।
प्योसर-(हिं०पुं०) हाल की व्याई हुई गाय का दूध।
प्यीसार-(हिं०पुं०)स्त्री के माता पिता का घर।
प्र-(सं०अव्य०) एक संस्कृत का उपसर्ग जो गति, उत्कर्ष, उत्पत्ति, आरंभ, ख्याति तथा व्यवहार अर्थ के लिये प्रयोग किया जाता है।
प्रकट-(सं०वि०) स्पष्ट, जो प्रत्यक्ष हुआ हो, आविर्भूत, उत्पन्न। **प्रकटन**-(सं०नपुं०) प्रकट होनेकी क्रिया;
प्रकटित-(सं०वि०) प्रकाशित।
प्रकम्प-(सं०नपुं०) कँपकँपी, थरथराहट; **प्रकम्पमान**-(सं०वि०) वेगसे थरथराता हुआ; **प्रकम्पित**--(सं० वि०) कम्पनयुक्त।
प्रकरण-(सं०नपुं०) प्रसंग का विषय, किसी ग्रन्थ का एक छोटा विभाग।
प्रकर्तव्य-(सं०वि०) अवश्य करने योग्य।
प्रकर्ता-(सं०वि०) अच्छी तरह से काम करने वाला।
प्रकर्ष-(सं०पुं०) उत्तमता, अधिकता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकर्षक-(सं० पुं०) उत्तमतासे करने वाला; **प्रकर्षण**-(सं०नपुं०) आधिक्य, अधिकता।
प्रकला-(सं०स्त्री०) एक कला का साठवां भाग।
प्रकल्पना-(हिं०क्रि०) निश्चित करना।
प्रकल्पित-(सं०वि०) निश्चित किया हुआ।
प्रकाण्ड-(सं०पुं०) वृक्ष का तना, शाखा, (वि०) बहुत फैला हुआ।
प्रकाम-(सं०वि०) यथेष्ट।
प्रकार-(सं०पुं०) सादृश्य, समानता, भेद, भाँति, तरह, (हिं०स्त्री०) परकोटा, घेरा।
प्रकारान्त-(सं०पुं०) अन्य प्रकार।
प्रकाश-(सं०पुं०) दीप्ति, धूप, ज्योति, स्पष्ट रूप से समझ में आना, प्रसिद्धि,
प्रकाशक-(सं०वि०) प्रकट करनेवाला।
प्रकाशता-(सं०स्त्री०) प्रकाश का भाव या धर्म, प्रकाशत्व; **प्रकाशन**-(सं० पुं०) प्रकाशित करने का काम, किसी ग्रन्थ को छापकर सर्वसाधारण में प्रचलित करने का काम; **प्रकाशमान**-(सं०वि०) प्रकाशयुक्त, चमकीला, प्रसिद्ध, विख्यात; **प्रकाशित**-(सं० वि०) जिस पर प्रकाश पड़ रहा हो, चमकता हुआ, जो प्रकाशमें आ चुका हो, शोभित, प्रकट।
प्रकास-(हिं०पुं०) देखो प्रकाश; **प्रकाशना**-(हिं०क्रि०) प्रकट करना।
प्रकीर्ण-(सं०वि०) छितराया हुआ, फैलाया हुआ, **प्रकीर्णक**-(सं०नपुं०) अध्याय, प्रकरण, विस्तार।
प्रकीर्तन-(सं०नपुं०) उच्च स्वर से चिल्ला कर कीर्तन करना।
प्रकीर्ति-(सं०स्त्री०) प्रशंसा, प्रसिद्धि, घोषणा; **प्रकीर्तित**-(सं०वि०) कहा हुआ।
प्रकुपित-(सं०वि०) अति क्रुद्ध।
प्रकृति-(सं०स्त्री०) स्वभाव, किसी पदार्थ का गुण जो सर्वदा बना रहता हो,
प्रकृतिज-(सं०वि०) प्रकृति या स्वभाव से उत्पन्न; **प्रकृतिभाव**-(सं०पुं०) स्वभाव, व्याकरण में सन्धि का वह नियम जिसमें दो पदों के मिलने से इनमें से किसी में कोई परिवर्तन नहीं होता; **प्राकृतिसिद्ध**-(सं०वि०) स्वाभाविक, प्राकृत।
प्रकृष्ट-(सं०वि०) मुख्य, प्रधान, (वि०) आकृष्ट, खिंचा हुआ; **प्रकृष्टता**-(सं० स्त्री०) उत्तमता, श्रेष्ठता।
प्रकोट--(सं०पुं०) परकोटा, परिखा।
प्रकोप-(सं०पुं०) अधिक क्रोध, क्षोभ, चंचलता,; **प्रकोपन**-(सं० नपुं०) क्रोध, क्षोभ; **प्रकोपनीय**-(सं०वि०) क्रुद्ध करने योग्य; **प्रकोपित**-(सं०वि०) उत्तेजित किया हुआ।
प्रकोष्ठ-(सं०पुं०) केहुनी के नीचे का भाग, घर के प्रधान द्वार के पास की कोठरी, बड़ा आँगन जिसके चारो ओर कोठरियाँ हों।
प्रक्रिया--(सं०स्त्री०) प्रकरण, नियत विधि, युक्ति।
प्रक्लेद-(सं०पुं०) आर्द्रता, नमी, तरी।
प्रक्ष-(हिं०वि०) पूछने वाला।
प्रक्षालन-(सं०पुं०) मार्जन, जल से धोने की क्रिया; **प्रक्षालनीय**-(सं० वि०) धोने या स्वच्छ करने योग्य;
प्रक्षालित-(सं०वि०) धोया हुआ, स्वच्छ किया हुआ।
प्रक्षिप्त--(सं०वि०) फेंका हुआ।
प्रक्षेप-(सं०पुं०) फेंकना, छितराना,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिलाना, किसी व्यापार में अंशधारी की अलग अलग लगाई हुई पूँजी;
प्रक्षेपण-(सं०नपुं०) निक्षेपण, फेंकना;
प्रख्यात-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध
प्रख्याति-(सं०स्त्री०) विख्याति, प्रसिद्धि।
प्रगट-(हिं०वि०) देखो प्रकट; **प्रगटना**-(हिं० क्रि०) सन्मुख होना।
प्रगटाना-(हिं०क्रि०) प्रकट करना।
प्रगण्ड-(सं०पुं०) कन्धे से लेकर केहुनी तक का भाग।
प्रगति-(हिं०स्त्री०) ढंग, चाल; **प्रगतिशील**-(व०) गतियुक्त।
प्रगमन-(सं०पुं०) उन्नति।
प्रगर्जन-(सं०नपुं०) अति भयंकर शब्द,
प्रगल्भ-(सं०वि०) उद्धत, निर्लज्ज, धृष्ट, अभिमानी,; **प्रगल्भता**-(सं० स्त्री०) धृष्टता, निर्लज्जता, अभिमान।
प्रगसना-(हिं०क्रि०) देखो प्रगटना।
प्रगाढ़-(सं०वि०) अतिशय, अधिक गाढ़ा, घना।
प्रगृहीत-(सं०वि०) अच्छी तरह से पकड़ा हुआ।
प्रघट-(हिं०वि०) देखो प्रकट।
प्रघटना-(हिं०क्रि०) देख प्रकटना।
प्रचंड-देखो प्रचण्ड।
प्रघुर्ण,प्रघूर्ण-(सं०पुं०) अतिथि, पाहुन।
प्रचण्ड-(सं०वि०) प्रवल, कठोर, भयङ्कर, असह्य, उग्र, बलवान्। **प्रचण्डता**-(सं०त्री०) तीखापन।
प्रचय-(सं०पुं०) समूह, झुण्ड, ढेर, वृद्धि, बीज गणितमें एक प्रकार का संयोग।
प्रचर-(सं०पुं०) मार्ग, गमन। **प्रचरना**-(हिं०क्रि०) चलना, फैलना।
प्रचरित-(सं०वि०) चलता हुआ।
प्रचलन-(सं०नपुं०) प्रवर्तन, चलना।
प्रचलित-(सं०वि०) चलता हुआ।
प्रचार-(सं०पुं०) चलन, प्रसिद्धि; **प्रचारक**--(सं०वि०) प्रचार करने वाला, फैलाने वाला। **प्रचारण**-(सं०नपुं०) प्रचार, चलन, रीति।
प्रचारना--(हिं०क्रि०) प्रचार करना, विस्तार करना; **प्रचारित**-(सं०वि०) विस्तृत, प्रचार किया हुआ। **प्रचारी**-(सं०वि०) प्रचार करने वाला।
प्रचालित-(सं०वि०) प्रचार किया हुआ।
प्रचुर-(सं०वि०) अनेक, बहुत। **प्रचुरता**--(सं०स्त्री०) बहुलता, अधिकता
प्रचोदन-(सं०नपुं०) उत्तेजना, प्रेरणा, आज्ञा, नियम। **प्रचोदित**-(सं०वि०) उत्तेजित किया हुआ।
प्रच्छक-(सं०वि०) पूछने वाला।
प्रच्छना-(सं०स्त्री०) जिज्ञासा, पूछना।
प्रच्छन्न-(सं०वि०) आच्छादित, ढपा हुआ
प्रच्छर्दन-(सं०नपुं०) वमन, उल्टी।
प्रच्छादन-(सं०नपुं०) ओढने का वस्त्र।
प्रच्छादित-(सं० वि०) आच्छादित, ढपा हुआ।
प्रच्छालना, प्रछालना-(हिं०क्रि०) धोवी
प्रजंत-(हिं०अव्य०) देखो पर्यन्त।
प्रजल्प, प्रजल्पन-(सं०पुं०) व्यर्थ की इधर उधर की बातचीत। **प्रजल्पित**-(सं०वि०) कहा हुआ।
प्रजल्पिता-(सं०स्त्री०) वकवादी स्त्री।
प्रजा-(स०स्त्री०) सन्तति, सन्तान, वह जनसमूह जो किसी एक राजा के आधीन या एक राज्य के अन्तर्गत रहता हो।
प्रजागर-(सं०पुं०) पूरी तरह का जागरण। **प्रजागरण**-(सं०नपुं०) नींद न आना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रजातन्त्र-(सं०पुं०) वह शासन पद्धति जिसमें कोई राजा नहीं होता परन्तु जन समूह समय समय पर अपना शासक चुन लेते हैं।
प्रजानाथ-(सं०पुं०)लोकनाथ, राजा।
प्रजापति-(सं०पुं०) सृष्टि कर्ता, ब्रह्मा, महीपाल, राजा।
प्रजपाल-(सं०पुं०) प्रजा का पालन करनेवाला।
प्रजारना-(हिं०क्रि०) अच्छी तरह से जलाना।
प्रजासत्ता-(स०स्त्री०) देखो प्रजातन्त्र।
प्रजुरना-(हि०क्रि०) प्रकाशित होना, जगमगाना।
प्रजुलित-(सं०वि०) देखो प्रज्वलित।
प्रजोग-(हि०पुं०) देखो प्रयोग।
प्रज्ञ-(सं०पुं०) विद्वान, पण्डित।
प्रज्ञा-(सं०स्त्री०) ज्ञान, बुद्धि। **प्रज्ञा-चक्षु**-(वि०)जिसके पास प्रज्ञारूपी चक्षु हो, अन्धा।
प्रज्वलन-(सं०नपुं०) अच्छी तरह से जलने की क्रिया। **प्रज्वलित**-(सं० वि०) जलता हुआ।
प्रज्वालन-(हिं०क्रि०) जलाना, दहकाना
प्रण-(हिं०पुं०) किसी काम के करने के लिये किया हुआ अटल निश्चय, प्रतिज्ञा।
प्रणत-(सं०वि०) प्रणाम करता हुआ, **प्रणतपाल**-(सं०पुं०) दीन रक्षक।
प्रणति-(सं०स्त्री०) विनती, नम्रता।
प्रणम-(हिं०पुं०) देखो प्रणाम।
प्रणमन-(सं०पुं०)दण्डवत या प्रणाम।
प्रणम्य-(सं०वि०) प्रणाम करने योग्य, वन्दनीय।
प्रणय-(सं०पुं०)प्रीति युक्त प्रार्थना।
प्रणयी-(सं०पुं०) प्रेम करने वाला, पति, स्वामी।
प्रणव-(सं०पुं०) ओंकार, परमेश्वर,
प्रणवना-(हिं०क्रि०) प्रणाम या नमस्कार करना।
प्रणाम-(सं०पुं०) दण्डवत्, नमस्कार।
प्रणामी-(सं०वि०)प्रणाम करने वाला
प्रणालिका-(सं०स्त्री०) परनाली।
प्रणाली-(सं०स्त्री०) नाली, परिपाटी, श्रेणी, रीति, पद्धति।
प्रणिधान-(सं०पुं०) मन की एकाग्रता
प्रणिधि-(सं०पुं०) प्रार्थना, विनती, भेदिया।
प्रणिनाद-(सं०पुं०) वज्र के समान गरजना।
प्रणीत-(सं०वि०) बनाया हुआ, सुधारा हुआ, भेजा हुआ।
प्रणेता-(सं०वि०)रचयिता, बनानेवाला।
प्रतनु-(स०वि०) बहुत छोटा, बहुत महीन।
प्रतंचा-(हि०पुं०) देखो प्रत्यंचा।
प्रतच्छ(हिं०वि०) देखो प्रत्यक्ष।
प्रतप्त-(सं०वि०) तपा हुआ।
प्रतर्क-(सं०पुं०) सन्देह, वादाविवाद,
प्रतल-(सं०नपुं०) हाथ की हथेली, पाताल के सातवें भाग का नाम।
प्रताप-(सं०पुं०) वीरता, बल, पराक्रम, तेज, गरमी।
प्रनापवान्-(हिं०वि०) प्रताप युक्त।
प्रतापी-(हिं०वि०)प्रतापवान्, दुःखदायी।
प्रतारक-(सं०वि०) वंचक, ठग, धूर्त।
प्रतारण-(सं०नपुं०) वचन, धूर्तता। ठगी। **प्रतारणीय**-(सं०वि०) ठगने योग्य।
प्रतारित-(सं०वि०) जो ठगा गया हो।
प्रतिचा-(हिं०स्त्री०) प्रत्यंचा, चिल्ला।
प्रति-(सं०अव्य०)एक उपसर्ग जो शब्दों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के आरंभ में -"प्रतिनिधि, प्रतिकूल, विपरीत, प्रत्येक, दुबारा, ऊपर, समीप, विरोध, अल्पमात्रा, निश्चय, अंश, निन्दा, स्वभाव, प्रतिदिन तथा व्याप्ति"-अर्थों को बोधित करने के लिये जोड़ा जाता है।

प्रति-(हि० अव्य०) सामने, ओर, (स्त्री०) एक ही प्रकार की अनेक वस्तुओं में से एक वस्तु।

प्रतिकाय-(सं०पुं०) प्रतिमा, प्रतिरूप।

प्रतिकार, प्रतिकारी (सं०वि०) बदला चुकाने वाला।

प्रतिकूल-(सं०वि०) विपरीत, विरुद्ध, (नपुं०) प्रतिपक्षी। **प्रतिकूलता**-(सं० स्त्री०) प्रति कूल आचरण।

प्रतिकृत-(सं०वि०) जिसका बदला हो चुका हो। **प्रतिकृति**-(सं०स्त्री०) प्रतिमूर्ति, प्रतिभा, प्रतिबिम्ब।

प्रतिक्रिया-(सं०स्त्री०) प्रतीकार, बदला।

प्रतिक्षण-(सं०अव्य०) बारंबार।

प्रतिक्षिप्त-(सं०वि०) तिरस्कार किया हुआ।

प्रतिगृहीत-(सं०वि०) ग्रहण किया हुआ, लिया हुआ।

प्रतिग्या-(हि०स्त्री०) देखो प्रतिज्ञा।

प्रतिग्रह(सं०पुं०) ग्रहण, स्वीकार, ब्राह्मण का विधि पूर्वक दिये हुये दान को लेना, पाणिग्रहण।

प्रतिगृहीत-(हि०वि०) प्रतिग्रह या दान लेने वाला।

प्रतिघात-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, बाधा। **प्रतिघातन**-(सं०पुं०) हत्या, बाधा। **प्रतिघाती**-(सं०वि०) टक्कर लगाने वाला, विरोध करने वाला, (पुं०) शत्रु, वैरी।

प्रतिचिन्तन-(सं०पुं०) पुनर्विचार,।

प्रतिच्छाया-(सं०स्त्री०) प्रतिमूर्ति, चित्र, प्रतिबिम्ब, परछाई।

प्रतिछाया-(हि०स्त्री०) प्रतिबिंब, परछाई।

प्रतिज्ञा-(सं०स्त्री० किसी काम के करने के लिये दृढ़ निश्चय।

प्रतिज्ञात-(सं०वि०) अंगीकृत।

प्रतिज्ञापत्र-(सं०नपुं०) वह पत्र जिसपर कोई प्रतिज्ञा लिखी हो।

प्रतिदत्त-(सं०वि०) लौटाया हुआ।

प्रतिदान--(सं०नपुं०) विनिमय, बदला।

प्रतिदिन-(सं०नपुं०) प्रत्यह, हर दिन।

प्रतिदिवस-(सं०अव्य०) देखो प्रतिदिन।

प्रतिद्वन्द्व-(सं०नपुं०) बराबरी वालों की लड़ाई। **प्रतिद्वन्द्वी**-(सं०पुं०) शत्रु, बराबरी का लड़ने वाला।

प्रतिध्वनि-(सं०पुं०) वह शब्द जो अपनी उत्पत्ति स्थान पर फिर से सुनाई पड़े। **प्रतिध्वनित**-(वि०) गूंजता हुआ।

प्रतिनाद-(सं०पुं०) प्रतिशब्द, प्रतिध्वनि।

प्रतिनिधि-(सं०पुं०) किसी दूसरे की ओर से कोई काम करने के लिये नियुक्त पुरुष।

प्रतिनिधित्व-(सं०पुं०) प्रतिनिधि होने का कार्य या भाव।

प्रतिनियम-(सं०पुं०) व्यवस्था, प्रत्येक के लिये एक नियम।

प्रतिनिर्देश-(सं०पुं०) वह जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका हो।

प्रतिवृत्त-(सं०वि०) प्रत्यागत, लौटा हुआ।

प्रतिपक्ष-(सं०पुं०) प्रतिवादी, शत्रु, विरुद्ध पक्ष। **प्रतिपक्षी**-(सं०पुं०) विपक्षी, विरोधी।

प्रतिपच्छ(हि०पुं०) देखो प्रतिपक्ष।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतिपत्ति-(सं०स्त्री०) प्राप्ति, ज्ञान, अनुमान, निरूपण, विचार, गौरव, स्वीकृति।

प्रतिपदा-(सं०स्त्री०) किसी पक्ष की पहली तिथि।

प्रतिपन्न-(सं०वि०) जाना हुआ, परिपूर्ण, निश्चित।

प्रतिपादक-(सं० वि०) निर्वाह करने वाला, उत्पन्न करने वाला।

प्रतिपादन-(सं०नपुं०) दान, उत्पत्ति, पुरस्कार, निरूपण। **प्रतिपादनीय**-(सं०वि०) दान करने योग्य। **प्रतिपादित**(सं०वि०)स्थिर या निश्चय किया हुआ, सुधारा हुआ।

प्रतिपार(हिं०पुं०) देखो प्रतिपाल।

प्रतिपाल, प्रतिपालक-(सं०वि०)रक्षक।

प्रतिपादित-(सं०वि०)स्थिर या निश्चय किया हुआ, सुधारा हुआ।

प्रतिपार-(हिं०पुं०) देखो प्रतिपाल।

प्रतिपार, प्रतिपालक-(सं०वि०) रक्षक,, पोषक। **प्रतिपालन**-(सं०नपुं०)निर्वाह, रक्षा। **प्रतिपालित**-(सं०वि०) पालन किया हुआ।

प्रतिपुरुष-(सं०पुं०) प्रतिनिधि।

प्रतिफल-(सं०नपुं०)प्रतिबिम्ब, छाया, प्रत्युपकार।

प्रतिबन्ध-(सं०पुं०) बाधा, विघ्न, रुकावट। **प्रतिबन्धक**(सं०वि०) बाधा डालने वाला।

प्रतिबिम्ब-(सं०पुं०) प्रतिमा, मूर्ति, परछाई।

प्रतिबिम्बक-परछाहीं के समान पीछे पीछे चलने वाला। **प्रतिबिंबना**-(हिं०क्रि०) प्रतिबिंबित होना; **प्रतिबिम्बित**-(सं०वि०) जिसकी परछाहीं पड़ती हो, जो परछाहीं पड़ने के कारण देख पड़ता हो।

प्रतिबोध-(सं०पुं०) जागरण, ज्ञान।

प्रतिबोधक-(सं०पुं०) शिक्षक।

प्रतिभट-(सं०पुं०) शत्रु, बैरी, बराबरी का योद्धा।

प्रतिभा-(सं०स्त्री०) दीप्ति, चमक, असाधारण बुद्धिमानी।

प्रतिभाग-(सं०नपुं०) प्रत्येक भाग।

प्रतिभामुख-(सं०वि०) प्रभावशाली।

प्रतिभाशाली-(सं०वि०) प्रभावशाली।

प्रतिभासम्पन्न-(सं०वि०)प्रतिभाशाली।

प्रतिभाहानि-(सं०पुं०) बुद्धि नाश।

प्रतिभू-(सं०वि०)जमानत करने वाला;

प्रतिमा-(सं०स्त्री०) किसी वास्तविक या कल्पित आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र।

प्रतिमास-(सं०अव्य०) हर महीने।

प्रतिमुक्त-(सं०वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।

प्रतिमूर्ति-(सं०स्त्री०) देवतादिकी मूर्ति

प्रतिमोचन-(सं०नपुं०)बन्धन से मुक्त; करना।

प्रतियोग-(सं०पुं०) शत्रुता, विरुद्ध, पदार्थों का संयोग। **प्रतियोगिता**-(सं० स्त्री०) प्रतिद्वन्द्विता। **प्रतियोगी**-(हिं०वि०) विरोधी, वैरी।

प्रतियोद्धा-(हिं०वि०) शत्रु, वैरी।

प्रतिरात्र-(सं०अव्य०)प्रत्येक रात को।

प्रतिरुद्ध-(सं०वि०)अवरुद्ध, रुका हुआ।

प्रतिरूप-(सं०नपुं०)प्रतिमा,मूर्ति,चित्र।

प्रतिरोध-(सं०पुं०)विरोध,तिरस्कार।

प्रतिरोधक-(सं०पुं०) बाधा डालने वाला। **प्रतिरोधन**-(सं०पुं०) प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव।

प्रतिरोधित-(सं०वि०) निवारित, रोका हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतिलिपि-(सं०स्त्री०) किसी लेख का अनुकरण।
प्रतिलोम-(सं०वि०) विपरीत, उलटा।
प्रतिवचन-(सं०नपुं०) उत्तर, विरुद्ध-वाक्य।
प्रतिवसथ-(सं०पुं०) ग्राम, गाँव।
प्रतिवाक्य-(सं०नपुं०) प्रतिध्वनि, प्रत्युत्तर।
प्रतिवाद-(सं०पुं०) किसी के वाक्य या सिद्धान्त को खण्डन करने के लिये कहा हुआ वाक्य, विवाद, विरोध,
प्रतिवादी-(सं०पुं०) प्रतिवाद का खण्डन करने वाला, वादी का उत्तर देनेवाला।
प्रतिवास-(सं०स्त्री०) सुगन्धि, पड़ोस।
प्रतिवासी-(सं०पुं०) पड़ोस में रहने वाला, पड़ोसी।
प्रतिवेश्म-(सं०नपुं०) पड़ोस का घर।
प्रतिशब्द-(सं०पुं०) प्रतिध्वनि, गूंज।
प्रतिशयन-(सं०नपुं०) धरना देना।
प्रतिशिष्य-(सं०पुं०) चेले (शिष्य) का चेला।
प्रतिशोध-(हिं०पुं०) बदला चुकाने के लिये किया जाने वाला काम।
प्रतिश्रुत-(सं०वि०) स्वीकार किया हुआ। **प्रतिश्रुति**-(सं०स्त्री०) अंगीकार, प्रतिध्वनि।
प्रतिषिद्ध-(सं०वि०) निषेध किया हुआ।
प्रतिषेध-(सं०पुं०) खण्डन, निषेध।
प्रतिष्टम्भ-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट
प्रतिष्ठा-(सं०स्त्री०) मान, मर्यादा, गौरव, आदर, देवता की प्रतिमा का स्थापन।
प्रतिष्ठापन-(सं०नपुं०) किसी देव-मूर्ति की स्थापना।
प्रतिष्ठापत्र-(सं०पुं०) सम्मानपत्र।
प्रतिष्ठावान्-(हिं०वि०) प्रतिष्ठा योग्य।
प्रतिष्ठित-(सं०वि०) आदरप्राप्त, प्रशंसित।
प्रतिसंवत्सर-(सं० अव्य०) हरसाल, प्रतिवर्ष।
प्रतिसव्य-(सं०वि०) विपरीत, प्रतिकूल।
प्रतिसार-(सं०पुं०) दूरीकरण, अलग करना।
प्रतिस्पर्धा-(सं०स्त्री०) चढ़ा उपरी, विवाद, झगड़ा। **प्रतिस्पर्धी**-(सं० वि०) विद्रोही।
प्रतिहत-(सं०वि०) हटाया हुआ, चोट खाया हुआ।
प्रतिहार-(सं०पुं०) द्वारपाल, चोबदार।
प्रतिहारी-(सं०पुं०) द्वारपाल, दरवान।
प्रतिहार्य-(सं०वि०) छोड़ने योग्य।
प्रतिहास-(सं०पुं०) हँसी करने वाले के साथ हंसी।
प्रतिहिंसा-(सं०स्त्री०) बदला चुकाने के लिये हिंसा करना।
प्रतीक-(सं०पुं०) अवयव, अंग, चिह्न प्राकृति, किसी गद्य या पद्य के आदि या अन्त के कुछ शब्दों को लिख या पढ़कर पूरे वाक्य, या पद का पता लगाना।
प्रतीकार-(सं०पुं०) अपकार का बदला।
प्रतीक्षक-(सं०वि०) आसरा देखने वाला, पूजा करने वाला। **प्रतीक्षण**-(सं०नपुं०) आसरा देखना।
प्रतीक्षा-(सं०स्त्री०) प्रतीक्षण, आसरा।
प्रतीक्षणीय-(सं०वि०) प्रतीक्षा करने योग्य।
प्रतीची-(सं०स्त्री०) पश्चिम दशा।
प्रतीचीन-(सं०वि०) पश्चिम दिशा।
प्रतीत-(सं० वि०) विदित, जाना हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतीति-(सं०स्त्री०) विश्वास, दृढ़निश्चय **प्रतीप**-(सं०वि०) प्रतिकूल, उलटा, **प्रतीपगति**-(सं०स्त्री०) प्रतिकूल गति। **प्रतीपगमन**-(सं० नपुं०) प्रतिकूल गमन। **प्रतीपवचन**-(सं० नपुं०) प्रतिकूल वाक्य, खण्डन।

प्रतीहारी-(सं० पुं०) द्वारपालिका, ड्योढीदारिन।

प्रतुष्टि-(सं०स्त्री०) अधिक सन्तोष।

प्रतूलिका-(सं०स्त्री०) गद्दी।

प्रतोशना-(हिं०क्रि०) सन्तुष्ट करना।

प्रत्यंचा-(हिं०स्त्री०) धनुष की डोरी।

प्रत्यके-(हिं०क्रि०वि०) पीछे, पश्चिम।

प्रत्यक्ष-(सं०वि०) इन्द्रिय ग्राह्य, इन्द्रियगोचर, जो आँखों के सामने हो, (हिं०क्रि०वि०) आँखों के सामने।

प्रत्यक्षता- (सं०स्त्री०) प्रत्यक्ष होने का भाव। **प्रत्यक्षणता**-(सं०स्त्री०) यथार्थ ज्ञान।

प्रत्यक्षीकरण-(सं०नपुं०) इन्द्रियों द्वारा ज्ञान करा देना।

प्रत्यञ्चा-(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।

प्रत्यपकार-(सं०पुं०) किसी अपकार के बदले में किया हुआ अपकार।

प्रत्यभिज्ञान-(सं०नपुं०) सदृश वस्तु देखकर किसी पहले देखी हुई वस्तु का स्मरण।

प्रत्यभियोग-(सं०पुं०) वह अभियोग जो अभियुक्त अपने अभियोग लगाने वाले पर चलावे।

प्रत्यय-(सं०पुं०) ज्ञान, बुद्धि, विश्वास, निश्चय, व्याकरण में वह अक्षर से विशिष्ट अर्थ निकालता है।

प्रत्ययकारी-(सं० वि०) विश्वास दिलाने वाला। **प्रत्ययी**-(सं०वि०), विश्वास पात्र।

प्रत्यवाय--(सं०पुं०) परिवर्तन, उलटफेर।

प्रत्यवेक्षण-(सं०नपुं०) अनुसन्धान, खोज

प्रत्याख्यान-(सं० नपुं०) निराकरण, खण्डन।

प्रत्यागत-(सं०वि०) लौटा हुआ।

प्रत्यागमन-(सं०नपुं०) लौट आना।

प्रत्याघात-(सं०पुं०) चोट के बदले चोट, टक्कर।

प्रत्यादिष्ट-(सं०वि०) जताया हुआ।

प्रत्यादेश-(हिं०पुं०) निराकरण, खण्डन।

प्रत्यानीत-(सं०वि०) फिर से लाया हुआ।

प्रत्याशा-(सं०स्त्री०) आकाँक्षा, भरोसा।

प्रत्याशी-(हिं०वि०) अभिलाषी।

प्रत्याश्रय-(सं०पुं०) शरण का स्थान।

प्रसन्न-(सं०वि०) निकटवर्ती, समीप का।

प्रत्युक्त-(सं०वि०) उत्तर दिया हुआ।

प्रत्युत्-(सं०अव्य०) इसके विरुद्ध, वरन्।

प्रत्युत्तर-(सं०नपुं०) उत्तर का उत्तर,

प्रत्युत्थान-(सं०नपुं०) किसी बड़े या पूज्य के आने पर उसके स्वागत के लिये आसन छोड़ कर खड़े हो जाना।

प्रत्युत्पन्न-(सं०वि०) जो फिर से अथवा ठीक समय पर उत्पन्न हुआ हो।

प्रत्युत्पन्नमति-ठीक समय पर काम करने वाली बुद्धि।

प्रत्युदाहरण-(सं० नपुं०) उदाहरण के विपरीत उदाहरण।

प्रत्युपकार-(सं०पुं०) कसी उपकार के बदले में किया जाने वाला उपकार।

प्रत्युपकारी-(सं० वि०) उपकार का बदला देने वाला।

प्रत्युष, प्रत्यूष-(सं०पुं०) प्रभात, सबेरा।

प्रत्यूह-(सं०पुं०) विघ्न, बाधा।

प्रत्येक-(सं०वि०) बहुतों में से हर एक, अलग अलग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथम-(सं०वि०)प्रधान, मुख्य, पहिला, (क्रि०वि०) आगे, पहले; **प्रथम-कारक**-व्याकरण में कर्ता कारक; **प्रथमज, प्रथमजात**(सं०वि०)अग्रज, जो पहले उत्पन्न हुआ हो।

प्रथमतः-(सं०अव्य०)पहलेसे,सबसे पहले

प्रथम पुरुष-(सं०नपुं०) आदि पुरुष, व्याकरण में वह सर्वनाम जिसके विषय में कुछ कहा जाता है यथा-वह पुरुष, वह स्त्री, वह पशु आदि।

प्रथमा-(सं०स्त्री०) व्याकरणमें कर्ता कारक।

प्रथमी-(हिं०स्त्री०) देखो पृथ्वी।

प्रथमेत्तर-(सं०वि०) भिन्न, दूसरा।

प्रथा-(सं०स्त्री०) ख्याति, रीति चाल।

प्रथित-(सं०वि०) प्रसिद्ध।

प्रथिवी-(सं०स्त्री०) देखो पृथ्वी।

प्रद-(सं० वि०) दाता, देने वाला, यौगिक शब्द के अन्त में इस शब्द का प्रयोग होता है जैसे सुखप्रद, कष्टप्रद इत्यादि।

प्रदक्षिणा-(सं०स्त्री०) परिक्रमा।

प्रदत्त-(सं०वि०) अर्पित, दिया हुआ।

प्रदर्शक-(सं०वि०) देखने या दिखलाने वाला, (पुं०) गुरु। **प्रदर्शन**-(सं० नपुं०) उल्लेख।

प्रदर्शनी-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर भिन्न भिन्न प्रकार की वस्तु लोगों को दिखलाने के लिये रक्खी जाती है।

प्रदर्शित-(सं०वि०) दिखलाया हुआ।

प्रदहन-(सं०नपुं०)अच्छीतरहसे जलना।

प्रदाता-(सं०वि०) अधिक दान देने वाला।

प्रदान-(सं०नपुं०) दानदेनेकी क्रिया।

प्रदानशूर-(सं०पुं०) दान वीर।

प्रदायक-(सं०वि०) दन देने वाला। **प्रदायी**-(सं०वि०) दान देने वाला।

प्रदाह-(सं० नपुं०) दावाग्नि, जङ्गल की आग।

प्रदाह-(सं०पुं०) शरीर में जलन जो अधिक ज्वर आने में उत्पन्न होती है।

प्रदिशा-(सं०स्त्री०) दो मुख्य दिशाओं के बीच का कोना।

प्रदीप-(सं०पुं०) दीप, दीया, प्रकाश,

प्रदीपक-(सं०पुं०) प्रकाशक,

प्रदीपति-(हिं०स्त्री०) देखो प्रदीप्ति।

प्रदीपन-(सं०नपुं०) उद्दीपन, उजाला।

प्रदीपिका-(सं०स्त्री०) छोटी लालटेन।

प्रदीप्त-(सं०वि०) चमकता हुआ।

प्रदीप्ति-(सं०स्त्री०) प्रकाश, चमक।

प्रदेय-(सं०वि०) दान करने योग्य।

प्रदेश-(सं०पुं०)किसी देश का बड़ा विभाग, प्रान्त।

प्रदेशी-(सं०वि०) प्रदेश सम्बन्धी।

प्रदोष-(सं०पुं०) सूर्यास्त के बाद चार दण्ड का काल।

प्रद्वेष-(सं०पुं०) शत्रुता, वैर।

प्रद्वेषण-(सं०नपुं०) घृणा, द्वेष।

प्रधन-(सं०नपुं०) युद्ध, लड़ाई।

प्रधर्ष-(सं०पुं०) आक्रमण, धावा। **प्रधर्षक**-(सं०वि०) आक्रमण करने वाला। **प्रधर्षण**-(सं०नपुं०)आक्रमण।

प्रधान-(सं०नपुं०) सेनाध्यक्ष, सचिव, मन्त्री, सरदार, नेता; (वि०) मुख्य, सर्वश्रेष्ठ, उत्तम, प्रमुख। **प्रधानता**-(सं०स्त्री०) प्रधान होने का भाव या धर्म, कार्य या पद।

प्रधावन-(सं०नपुं०) वेग से दौड़ना।

प्रधी-(सं०स्त्री०) तीव्र बुद्धि।

प्रध्वंस-(सं०पुं०) नाश।

प्रध्वंसक-(सं०वि०) नाश करने वाला,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रध्वंसन-(सं०नपुं०) नाश; प्रध्वस्त-(सं०वि०) जो नष्ट हो गया हो।
प्रन-(हिं०पुं०) देखो प्रण, संकल्प, दृढ़ निश्चय।
प्रनति-(हिं०स्त्री०) देखो प्रणति।
प्रनवना-(हिं०क्रि०) देखो प्रणमना।
प्रनष्ट-(सं०वि०) अच्छी तरह से नष्ट।
प्रनामी-(हिं०पुं०) प्रणाम करने वाला।
प्रनाली-(हिं०स्त्री०) प्रणाली।
प्रनाशन-(हिं०पुं०) देखो प्रणाशन।
प्रनाशी-(सं०वि०) नाश करनेवाला।
प्रनिपात-(हिं०पुं०) देखो प्रणिपात।
प्रपञ्च-(सं०पुं०) विस्तार, भवजाल, संसारी जंजाल, झमेला, बखेड़ा, आड़म्बर, ढोंग। प्रपञ्चित-(सं०वि०) छली, कपटी, ढोगी।
प्रपन्न-(सं०वि०) प्राप्त, पाया हुआ।
प्रपा-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ प्यासों को पानी पिलाया जाता हैं, पौसरा।
प्रपात-(सं०पुं०) पहाड़ या चट्टान का किनारा, पानी का झरना।
प्रपान-(सं०नपुं०) पौंसरा, प्याऊ।
प्रपितामह-(सं०पुं०) दादा के बाप, परदादा।
प्रपितव्य-(सं०पुं०) परदादा का भाई।
प्रपीड़न-(सं०नपुं०) अधिक कष्ट देना।
प्रपीड़ित-(वि०) अधिक कष्ट दिया हुआ
प्रपुत्र-(सं०पुं०) पौत्र, बेटे का बेटा।
प्रपूरित, प्रपूर्ण-(सं०वि०) परिपूर्ण किया हुआ।
प्रपौत्र-(सं०पुं०) पोते का लड़का, परपोता; प्रपौत्री-(सं०स्त्री०) पोते की कन्या, परपोती। प्रफुड़ना-(हिं०क्रि०) फूलना।
प्रफुल्ल-(सं०वि०) विकसित, खिला हुआ, कुसुमित, फूला हुआ।
प्रबन्ध-(सं०पुं०) योजना, वाक्य रचना का विस्तार, उपाय, आयोजन, व्यवस्थान।
प्रबल-(सं०वि०) बलवान्, प्रचण्ड, उग्र।
प्रवाल-(हिं०पुं०) देखो प्रवाल, मूंगा।
प्रबीन-(हिं०वि०) देखो प्रवीण।
प्रबुद्ध-(सं०वि०) पण्डित, ज्ञानी, जागा हुआ।
प्रबोध-(सं०पुं०) यथार्थ ज्ञान, विकाश; प्रबोधक-(सं०वि०) जगाने वाला, समझाने वाला। प्रबोधन (सं०नपुं०) यथार्थ ज्ञान, जागरण, आश्वासन। प्रबोधन-(हिं०क्रि०) ढाढस देना; प्रबोधनी-(सं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ल पक्ष की एकादशी, देवोत्थान।
प्रबोधित-(सं०वि०) जगाया हुआ, ज्ञान प्राप्त।
प्रभञ्जन-(सं०पुं०) तोड़ फोड़, विनाश।
प्रभव-(सं०पुं०) जन्म, हेतु, जल निकलने का मार्ग, पराक्रम।
प्रभविष्णु-(सं०वि०) प्रभावशाली।
प्रभा-(सं०स्त्री०) दीप्ति, चमक, प्रकाश।
प्रभाउ-(हिं०पुं०) देखो प्रभाव।
प्रभाकर-(सं०पुं०) सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि।
प्रभाकीट-(सं०पुं०) खद्योत, जुगनू।
प्रभात-(सं०पुं०) प्रातःकाल।
प्रभामण्डल-(सं०नपुं०) गोलाकार रश्मि
प्रभामय-(सं०वि०) दीप्तिमय।
प्रभाव-(सं०पुं०) प्रताप, तेज, सामर्थ्य।
प्रभावज-(सं०वि०) प्रभाव से उत्पन्न।
प्रभावती (सं०स्त्री०) बड़े प्रभाव वाली स्त्री।
प्रभाषण-(सं०नपुं०) अच्छी तरह कहना
प्रभाषी-(सं०वि०) अच्छी तरह से बोलने वाला।
प्रभासना-(हिं०क्रि०) दिखाई पड़ना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रभु-(सं०पुं०) अधिपति, नायक, स्वामी; **प्रभुता, प्रभुताई**-(सं० स्त्री०) महत्व, बड़ाई, वैभव।
प्रभुभक्त-(सं०वि०) स्वामिभक्त।
प्रभूत-(सं०वि०) प्रचुर, अधिक, बहुत।
प्रभूति-(सं०स्त्री०) उत्पत्ति, अधिकता।
प्रभृति-(सं०अव्य०) इत्यादि, आदि।
प्रभेद(सं०पुं०) विभिन्नता, भेद, अन्तर।
प्रभेदक-(सं०वि०) विभाग करने वाला
प्रभ्रष्ट-(सं०वि०) टूटाफूटा हुआ।
प्रमत्त-(सं०वि०) उन्मत्त, मतवाला, विक्षिप्त; **प्रमत्तता**-(सं०स्त्री०) पागलपन।
प्रमथ-(सं०पुं०) घोटक, घोड़ा।
प्रमद-(सं०पुं०) हर्ष, आनन्द, उन्मत्तता।
प्रमदा-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
प्रमद-(हिं०वि०) प्रसन्न।
प्रमर्दन-(सं० वि०) अच्छी तरह से रगड़ने वाला।
प्रमा-(सं०वि०) यथार्थ ज्ञान।
प्रमाण-(सं०नपुं०) सत्यता, सचाई, निश्चय, (वि०) सच बोलने वाला, मान्य, प्रमाणित, (अव्य०) पर्यन्त, तक।
प्रमाणपत्र-(सं०पुं०) वह लिखा हुआ पत्र जिसपर का लेख किसी बात का प्रमाण हो; **प्रमाण पुरुष**-(सं०पुं०) पंच।
प्रमाणित-(सं०वि०) सच्चा ठहराया हुआ।
प्रमाणीकृत-(सं०वि०) प्रमाण रूप से जो स्वीकार किया गया हो।
प्रमाता-(सं०स्त्री०) पिता की माता, दादी।
प्रमातामह-(सं०पुं०) मातामह का पिता, परनाना; **प्रमातामही**-(सं०स्त्री०) प्रमातामह की पत्नी, परनानी।
प्रमाद-(सं०पुं०) भ्रान्ति, असावधानी।
प्रमादी-(सं०वि०) असावधानी करने वाला, (पुं०) पागल।
प्रमान-(हिं०पुं०) देखो प्रमाण।
प्रमानना-(हिं०क्रि०) सिद्ध करना, यथार्थ जानना।
प्रमानी-(हिं०वि०) प्रमाण योग्य, माननीय।
प्रमुख-(सं०वि०) मुख्य, प्रधान, पहला, प्रतिष्ठित।
प्रमुद-(सं०स्त्री०) अत्यन्त आनन्द।
प्रमुदित-(सं०स्त्री०) अत्यन्त आनन्द, युक्त, **प्रमुदित**-(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
प्रमृष्ट-(सं०वि०) मार्जित, धोया हुआ।
प्रमेय-(सं०वि०) जो प्रमाण का विषय हो सके।
प्रमेह-(सं०पुं०) बहुमूत्र का रोग।
प्रमेही-(सं०पुं०) प्रमेहका रोगी।
प्रमोद-(सं०पुं०) हर्ष, आनन्द, सुख,
प्रमोदित-(सं०वि०) हर्षित, आनन्दित; **प्रमोदी**-(सं०वि०) अति प्रसन्न।
प्रमोह-(सं०पुं०) मूर्छा; **प्रमोही**-(सं०वि०) मोह जनक।
प्रयंक-(हिं०पुं०) देखो पर्यङ्क।
प्रयंत-(हिं०अव्य०) देखो पर्यन्त।
प्रयत-(सं०वि०) पवित्र, नम्र, दीन, दिया हुआ।
प्रयत्न-(सं०पुं०) चेष्टा, प्रयास।
प्रयागवाल-(हिं०पुं०) प्रयाग तीर्थ का पंडा।
प्रयाण-(सं०नपुं०) गमन, चढ़ाई, आरम्भ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रयात-(सं०वि०) गया हुआ, मरा हुआ, सोया हुआ।
प्रयास-(सं०पुं०) प्रयत्न, उद्योग, श्रम।
प्रयुक्त-(सं०वि०) प्रेरित, लगाया हुआ।
प्रयुक्ति-(सं०स्त्री०) प्रयोजन, प्रयोग।
प्रयुत-(सं०नपुं०) दस लाख की संख्या,
प्रयोक्ता-(सं०पुं०) प्रयोग या व्यवहार करने वाला, सूत्रधार।
प्रयोग--(सं०पुं०) अनुष्ठान, साधन।
प्रयोगी-(सं०वि०) प्रयोग करने वाला।
प्रयोजक-(सं०वि०) प्रबन्ध करने वाला।
प्रयोजन-(सं०नपुं०) हेतु, कार्य कारण, व्यवहार, उपयोग।
प्रयोजनीय-(सं०वि०) उपगोग का।
प्ररोचन-(सं०नपुं०) रुचि दिलाना, उत्तेजित करना, मोहित करना।
प्ररोचना-(सं०स्त्री०) उत्तेजना, बढ़ावा।
प्ररोह- (सं०पुं०) अंकुर, अँखुआ।
प्ररोहण--(सं०नपुं०) उत्पत्ति, आरोह, चढ़ाव।
प्रलपित (सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
प्रलम्बित--(सं०वि०) नीचे तक लटका हुआ। प्रलम्बी-(सं०वि०) सहारा लेने वाला।
प्रलम्भन-(सं०नपुं०) छल, धोखा।
प्रलय-(सं०पुं०) संसार के नाना रूपों का प्रकृति में लीन होकर मिट जाना।
प्रलाप-(सं०पुं०) व्यर्थ की बकवाद।
प्रलापन-(सं०नपुं०) बकवाद, बकबक।
प्रलापी- (सं०वि०) अंडबंड बकने वाला।
प्रलेप-(सं०पुं०) शरीर पर किसी औषधि का लेप चढ़ाना।
प्रलोभ-(सं०पुं०) अति लोभ, लालच।
प्रलोभक- (सं०वि०) ललचाने वाला
प्रलोभन- (सं०नपुं०) लालच।
प्रलोभी- (सं०वि०) लोभ में फंसाने वाला; प्रलोभित-(सं०वि०) ललचाया हुआ।
प्रवंचना-(हिं०स्त्री०) धूर्तता, छल, कपट।
प्रवक्ता-(सं०वि०) उपदेश देने वाला।
प्रवचन-(सं०नपुं०) किसी वाक्य की व्याख्या। प्रवचनीय--(सं० वि०) समझा कर कहने योग्य।
प्रवदन-(सं० नपुं०) घोषणा।
प्रवर-(सं० नपुं०) गोत्र, सन्तति। (वि०) श्रेष्ठ, मुख्य। प्रवर्तक-(सं० (वि०) किसी काम को चलाने वाला। आविष्कार करने वाला, उसकाने वाला
प्रवर्तन-(सं०नपुं०) ठानना, प्रचार करना।
प्रवर्तित--(सं०वि०) चलाया हुआ, आरंभ किया हुआ।
प्रवर्धक-(सं०वि०) वृद्धि करने वाला।
प्रवर्ष-(सं०पुं०) अति वृष्टि।
प्रवर्षण-(सं० नपुं०) अति वृष्टि,।
प्रवचन-(सं ०नपुं०) किसी वाक्य की व्याख्या। प्रवचनीय-(सं० वि०) समझा कर कहने योग्य।
प्रवादन- (सं०नपुं०) घोषणा।
प्रवहन-(सं०नपुं०) यान, सवारी, पोत, नाव। प्रवाचक-(सं०वि०) अच्छा बोलने वाला।
प्रवाद-(सं०पुं०) जनरव, जनश्रुति।
प्रवादक-(सं०पुं०) बाजा बजाने वाला।
प्रवाल-(सं०नपुं०) विद्रुम, मूंगा।
प्रवास-(सं०पुं०) अपना घर या देश त्याग कर दूसरे देश में निवास करना।
प्रवासन-(सं०पुं०) देश या नगर से बाहर निकालना। प्रवासित-(सं० वि०) देश से निकाला हुआ। प्रवासी-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं० वि०) परदेश में रहने वाला, परदेसी।
प्रवाह-(सं०पुं०) जल का स्रोत, विस्तार; प्रवाहक सं०वि०) अच्छी तरह ले जाने वाला।
प्रवाहिका-(सं०स्त्री०) ग्रहणी रोग।
प्रवाही-(सं०वि०) वहने या वहाने वाला, तरल, द्रव।
प्रविष्ट-(सं०वि०) पैठा हुआ, घुसा हुआ।
प्रविसना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना।
प्रवीण-(सं०पुं०) निपुण, शिक्षित। कुशल,चतुर। प्रवीणता-(सं०स्त्री०) चतुराई।
प्रवीर-(सं०पुं०) वड़ा योद्धा।
प्रवृत्त-(सं०वि०) नियुक्त, लीन।
प्रवृत्ति-(सं०स्त्री०) चित्त का किसी ओर झुकाव, उत्पत्ति।
प्रवेश-(सं०पुं०) गति, पहुँच।
प्रवेशनीय-(सं०वि०) घुसने योग्य।
प्रवेशिका-(सं०स्त्री०) वह पत्र, चिह्न आदि जिसको दिखला कर कोई कहीं प्रवेश पा सकता है।
प्रबोध-(सं०नपुं०) ज्ञान, समझ।
प्रव्रजन-(सं०नपुं०) सन्यास।
प्रशंसक-(सं०वि०) प्रशंसाकारी,।
प्रशंसन-(सं०नपुं०) गुणकीर्तन।
प्रशंसना-(हिं०क्रि०) प्रशंसा या स्तुति करना। प्रशंसनीय-(सं०वि०) स्तुति के योग्य। प्रशंसा-(सं०स्त्री०)स्तुति।
प्रशंसित-(सं०वि०) प्रशंसा युक्त।
प्रशमन-(सं०नपुं०) शान्ति।
प्रशस्त-(सं०वि०) अति श्रेष्ठ, उत्तम (नपुं०) क्षेम, कुशल।
प्रशस्ति-(सं०स्त्री०' प्रशंसा, स्तुति, सिरनामा, राजा के वे आज्ञापत्र जो प्राचीन समय में पत्थरों, चट्टानों या ताम्रपत्रों पर खोदे जाते थे,प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकोंके आदि और अन्त की कुछ पंक्तियाँ जिनमें पुस्तक के कर्ता, विषय काल आदि का कुछ पता चलता है।
प्रशाखा-(सं०स्त्री०) शाखा में से निकली हुई शाखा।
प्रशान्त-(सं०वि०) स्थिर, शान्त, निश्चल वृत्तिका।
प्रशिष्य-(सं०पुं०) शिष्य का शिष्य।
प्रश्न-(सं०पुं०) जिज्ञासा, पूछने की वात।
प्रश्नदूती-(सं०पुं०) बुझौवल।
प्रश्नोत्तर-(सं०नपुं०) प्रश्न का उत्तर
प्रश्रय-(सं०पूं०) विनय, सहारा, टेक; प्रश्रयण-(सं०नपुं०) विनय, शिष्टाचार। प्रश्रयी-(सं० वि०) शान्त, नम्र, विनीत।
प्रश्वास-(सं०पुं०) साँस लेते समय वह वायु जो नाक से बाहर निकलती है।
प्रष्टा-(सं०पूं०) प्रश्नकर्ता, पूछने वाला
प्रसक्त-(सं०वि०) संवद्ध, आसक्त, संश्लिष्ट।
प्रसङ्ग-(सं०पुं०) घनिष्ट संवंध, मेल।
प्रशस्ति-(सं०स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति,
प्रशंसना-(हिं०क्रि०) वड़ाई करना।
प्रसन्न-(सं०वि०) सन्तुष्ट, अनुकूल।
प्रसन्नता-(सं०स्त्री०) हर्ष, आनन्द।
प्रसन्नमुख-(सं०वि०' जिसकी आकृति से प्रसन्नता टपकती हो। प्रसन्नात्मा-(सं० वि०) जो सदा प्रसन्न रहे, (पुं०) विष्णु।
प्रसर-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव।
प्रसारित-(सं०वि०)विस्तृत, फैला हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसर्पण-(सं०नपुं०) फैलाव।
प्रसव-(सं०पुं०) बच्चा जनने की क्रिया, प्रसूति, जन्म, उत्पत्ति । प्रसवना-(हिं०क्रि०) उत्पन्न होना ।
प्रसवनी-(सं० स्त्री०) जन्म देनेवाली, माता ।
प्रसाद-(सं०पुं०) प्रसन्नता, स्वच्छता, कृपा, अनुग्रह, वह पदार्थ जिसको देवता या बड़े लोग प्रसन्न होकर अपने भक्तों या सेवकों को दें ।
प्रसादना-(सं०स्त्री०) परिचर्या, सेवा।
प्रसादनीय-(सं०वि०) प्रसन्न करने योग्य ।
प्रसादी-(हिं०स्त्री०) नैवेद्य, देवताओं को चढ़ाया हुआ पदार्थ ।
प्रसाधक-(सं०वि०) सम्पादन करने वाला; प्रसाधन-(सं०नपुं०)अलंकार, शृंगार ।
प्रसार-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, ।
प्रसारना-(हिं०क्रि०) फैलाना ।
प्रसारण-(सं०नपुं०) फैलाव, बढ़ाना। प्रसारित-(सं० वि०) विस्तारित, फैलाया हुआ। प्रसारी-(सं०वि०) फैलाने वाला ।
प्रसिद्ध-(सं०वि०) विख्यात, विभूशित । प्रसिद्धि-(सं०स्त्री०) ख्याति, सिंगार ।
प्रसुप्त-(सं०वि०)निद्रित, सोया हुआ ।
प्रसुप्ति-(सं०स्त्री०) गहरी नींद ।
प्रसूत-(सं०वि०) संजात, उत्पन्न ।
प्रसूता-(सं०स्त्री०) बच्चा जनने वाली, स्त्री। प्रसूति-(सं०स्त्री०) प्रसव, जनन, प्रसूतिका-(सं०स्त्री०) प्रसूता ।
प्रसून-(सं०नपुं०) पुष्प, फूल।
प्रसृत-(सं०वि०)बढ़ा हुआ,फैला हुआ।
प्रसृति-(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव, सन्तति।
प्रसेक-(सं०पुं०) सेंकना ।
प्रसेद-(हिं०पुं०) पसीना ।
प्रस्तर-(सं०पुं०) शिला, पत्थर, मणि, बिछावन।
प्रस्तार-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, परत, सीढ़ी, समतल भूमि ।
प्रस्ताव-(सं०पुं०) प्रकरण, छिड़ी हुई बात, चर्चा, सभा के सामने उपस्थित की हुई बात, भूमिका ।
प्रस्तावक (सं०पुं०)प्रस्ताव करने वाला ।
प्रस्तावना-(सं०स्त्री०) आरंभ, कथोद्घात ।
प्रस्तुत-(सं०वि०) उपयुक्त, योग्य, प्राप्त, उद्यत, तैयार ।
प्रस्तुति-(सं०स्त्री०) प्रस्तावना, प्रशंसा।
प्रस्थान-(सं०नपुं०) गमन। प्रस्थानी-(हिं०वि०) प्रस्थान करने वाला, जाने वाला। प्रस्थायी-(सं० वि०) प्रेषित, भेजा हुआ ।
प्रस्थायी-(सं०वि०) जो भविष्य में यात्रा करने वाला हो ।
प्रस्थित-(सं०वि०) स्थिर, ठहरा हुआ, दृढ़। प्रस्थिति-(सं०स्त्री०) प्रस्थान, यात्रा ।
प्रस्नुषा-(सं०स्त्री०) पतोह,पुत्र की स्त्री।
प्रस्फट-(सं०वि०) प्रकट, खिला हुआ।
प्रस्फोटन-(सं०नपुं०)सूर्प, किसी पदार्थ का एकाएक फूटना या खुलना, जिसमें भीतर का पदार्थ वेग से बाहर निकल आवे ।
प्रस्रव-(सं०पुं०) झरना, बहना ।
प्रवण-(सं० पुं०) स्वेद, पसीना, सोता, झरना। प्रस्राव-(सं० पुं०) अच्छी तरह से बहना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्वेद-(सं०पुं०) धर्म, पसीना ।
प्रहत-(सं०वि०) प्रताड़ित, पीटा हुआ; (पुं०) प्रहार ।
प्रहन्ता-(सं०वि०) मारने वाला ।
प्रहर-(सं०पुं०) तीन घन्टे का समय ।
प्रहरण-(सं०नपुं०) फेंकना, हटाना, छीनना । प्रहरणीय-(सं०वि०') हरण करने योग्य ।
प्रहरी-(सं०पुं०) पहरा देने वाला, चौकीदार ।
प्रहर्ता-(सं०वि०) प्रहार करने वाला, योद्धा ।
प्रहर्ष-(सं०पुं०) हर्ष, अत्यन्त आनन्द ।
प्रहसन-(सं०नपुं०) अट्टहास, परिहास, व्यंगोक्ति, चुहल, खिल्ली ।
प्रहार-(सं०पुं०) आघात, चोट, युद्ध ।
प्रहारक-(सं०पुं०) मारने वाला ।
प्रहारना-(हिं०क्रि०) आघात पहुँचाना, मारना ।
प्रहारी-(सं०वि०) मारने वाला ।
प्रहास-(सं०पुं०) वेग की हँसी, ठहाका, प्रहासिक, प्रहासी-(सं०पुं०) लोगों को हँसाने वाला ।
प्रहृत-(सं०वि०) फेंका हुआ ।
प्रहृष्ट-(सं०वि०) अत्यन्त प्रसद्ध ।
प्रहेलिका-(सं०स्त्री०) कूटार्थ, पहेली ।
प्रह्लादक-(सं०वि०) आनन्दकर ।
प्रह्लादन-(सं०नपुं०) प्रसन्न करना ।
प्रांशु-(सं०वि०) उच्च, उन्नत । प्राँशुता-उच्चता ।
प्राकार-(सं०पुं०) प्राचीर, चहारदीवारी
प्राकृत-(सं०वि०) स्वाभाविक, लौकिक। संसारी, साधारण, (स्त्री०) बोलचाल की वह भाषा जिसका प्रचार किसी समय किसी प्रान्त में हो, एक प्राचीन भाषा जिसका प्रचार प्राचीन समय में भारतवर्ष में था ।
प्राकृतिक-(सं०वि०) प्रकृति संबंधी । स्वाभाविक, साधारण, साँसारिक, लौकिक ।
प्रगल्भ्य-(सं०नपुं०) निर्भयता, साहस, वीरता, प्रबलता ।
प्रगुत्तरा-(सं०स्त्री०) पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा ।
प्रग्गामी-(सं०वि०) अग्रगामी, पूर्वगामी।
प्रग्जन्म-(सं०नपुं०) पूर्व जन्म ।
प्राची-(सं०स्त्री०) पूर्व दिशा, पूरब ।
प्राचीन-(सं०वि०) पहिले का, पुराना।
प्राचीनता-(सं०स्त्री०) पुरानापन ।
प्राचीर-(सं०नपुं०) परकोटा ।
प्राचुर्य-(सं०नपुं०) प्रचुरता, बहुतायत;
प्राच्य-(सं०पुं०) पूर्व देश या पूर्व दिशा में उत्पन्न । (वि०) पूर्वी, पूर्व काल का, पुराना ।
प्राज्ञ-(वि०) बुद्धिमान, चतुर, पण्डित ।
प्राण-(सं०पुं०) वायु, श्वास, शक्ति, परम प्रिय व्यक्ति,
प्राण आधार-(हिं०पुं०) स्वामी, पति, अत प्रिय व्यक्ति ।
प्राणकर-(सं०वि०) शक्ति वर्धन ।
प्राणकष्ट-(सं०पुं०) बहुत बड़ा कष्ट या दुःख । प्राणघात-(सं०पुं०) हत्या, वध । प्राणघ्न-(सं०वि०) प्राण लेने वाला । प्राणजीवन-(सं०पुं०) परम प्रिय व्यक्ति । प्राणत्याग-(सं०पुं०) प्राण का परित्याग करना । प्राणदाता-(सं० वि०) जीवन देने वाला, प्राणदान-(सं०नपुं०) जीवन दान, प्राणद्रोह-(सं०पुं०) प्राणहत्या।
प्राणधन-(सं०वि०) अत्यन्त प्रिय ।
प्राणाधार-(सं०वि०) जीवित, प्राणवाला
प्राणधारण-(सं०नपुं०) जीव धारण ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राणधारी-(सं० वि०) प्राण, जीवित, चेतन।
प्राणनाथ-(सं०पुं०) पति,स्वामी,प्रिय।
प्राणनाश-(सं०पुं०) प्राणत्याग।
प्राणनाशक-(सं०वि०) मार डालने वाला।
प्राणनिग्रह-(सं०पुं०) प्राणायाम की क्रिया।
प्राणपति-(सं०पुं०) आत्मा, स्वामी। पति, प्रिय व्यक्ति।
प्राण प्यारा-(हिं०पुं०) अत्यन्त प्रिय व्यक्ति, पति, स्वामी।
प्राणप्रतिष्ठा-(सं०स्त्री०) किसी नई बनी हुई मूर्ति को मन्दिर में स्थापित करते समय मन्त्रों को पढ़कर उसमें प्राण आरोपण करना।
प्राणप्रद-(सं०वि०) शरीर का स्वास्थ्य तथा बल आदि बढ़ाने वाला। प्राण-प्रिय-(सं०वि०)प्राणके समान प्यारा, प्रियतम।
प्राणभृत्-(सं०वि०) प्राण धारण करने वाला।
प्राणरोध-(सं०पुं०) प्राणायाम। प्राण-वध-(सं०पुं०) जान से मार डालना।
प्राणवल्लभ-(सं०पुं०) अत्यन्त प्रिय।
प्राणवायु-(सं०स्त्री०) प्राण, जीव।
प्राणसंयम-(सं०पुं०) प्राणायाम।
प्राणसंशय, प्राणसंकट, प्राणिसन्देह-(सं०पुं०) जीवन की आशंका।
प्राणसम-(सं०पुं०) प्रोणों के समान।
प्राणहारी-(हिं०वि०) प्राण लेने वाला
प्राणाधार। प्राणाधिक-(सं० वि०) प्राणों से अधिक प्रिय, प्यारा।
प्राणाधिनाथ-(सं०पुं०) पति, स्वामी
प्राणान्त-(सं०पुं०) प्राणनाश, मरण;
प्राणायाम-(सं०पुं०)योग जिसमें श्वास और प्रश्वास को यथाविधि अपने अधिकार में किया जाता है।
प्राणायामी-(सं०वि०)प्राणायाम करने वाला।
प्राणीद्यूत-(सं०नपुं०) मेढा, तीतर, घोड़े आदि जीवों की लड़ाई या दौड़ का जुआ।
प्राणी-(हिं०पुं०) जीव, जन्तु, मनुष्य, व्यक्ति, पुरुष या स्त्री, (वि०) जिसमें प्राण हो।
प्राणेश,प्राणेश्वर-(सं०पुं०) पति,स्वामी प्रिय व्यक्ति, बहुतप्यारा।
प्रात-(हिं०अव्य०) सबेरे, तड़के।
प्रातः(सं०पुं०) प्रभात, तड़का।
प्रातराश-(सं०पुं०) प्रातःकाल का जलपान, कलेवा।
प्रातिपादक-(सं०पुं०)संस्कृत व्याकरण के अनुसार वह अर्थवान् शब्द जो न धातु हो और न उसकी सिद्धि विभक्ति लगाने से हुई हो—इसके अन्तर्गत ऐसे नाम सर्वनाम, तद्धितान्त, कृदन्त, और समासान्त पद हैं जिनमें कारक की विभक्तियाँ न लगाई गई हों।
प्रातिरूप्य-(सं०नपुं०) अनुरूपता।
प्राथमिक-(सं०वि०) प्रारंभिक, जो पहले उत्पन्न हुआ हो।
प्राथम्य-(सं० नपुं०) प्रथमता, पहलापन।
प्रादुर्भाव-(सं०पुं०)आविर्भाव,उत्पत्ति।
प्रादुर्भूत-(सं०वि०) प्रकटित, विकसित, उत्पन्न।
प्रादेशिक-(सं०वि०) किसी एक देश का, प्रान्तिक।
प्राधान्य-(सं०नपुं०) प्रधानता,श्रेष्ठता।
प्रान-(हिं०पुं०) देखो प्राण।
प्रान्त(सं०पुं०) अन्त, किनारा, दिशा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रदेश। प्रान्तभूमि (सं०स्त्री०) सोपान, सीढ़ी।
प्रान्तिक-(सं०वि०) प्रान्त संबंधी, प्रांतीय।
प्रांशु-(सं०वि०) ऊँचा।
प्रापक-(सं०वि०) पाने वाला।
प्रापण-(सं०नपुं०) ले आना, मिलना।
प्रापणिक-(सं०पुं०) माल बेंचने वाला
प्रापति-(हिं०स्त्री०) देखो प्राप्ति।
प्रापना (हिं०क्रि०) प्राप्त होना, मिलना।
प्राप्त-(सं०वि०) लब्ध, पाया हुआ, मिला हुआ। प्राप्तकाल-(सं०पुं०) उचित समय। (वि०) जिसका काल आ गया हो। प्राप्त-जीवन (सं०वि०) जिसका नया जीवन हो। प्राप्तदोष-(सं०वि०) जिसने कोई अपराध किया हो।
प्राप्तबुद्धि-(सं०वि०) बुद्धिमान, चतुर; प्राप्तमनोरथ-(सं०वि०) जिसकी वांछा पूरी हुई हो। प्राप्त-यौवन-(सं०वि०) जिसकी युवावस्था आ गई हो।
प्राप्ति-(सं०स्त्री०) लाभ, पहुँच, आय, भाग्य, प्रवेश, प्राप्तिसम-((सं०वि०) प्राप्त करने योग्य।
प्राबल्य-(सं०नपुं०) प्रबलता, प्रधानता;
प्राबोधक-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो राजाओं को उनकी स्तुति सुनाकर जगाते हों।
प्रामाणिक-(सं०पुं०) जो प्रमाणों द्वारा सिद्ध हो, माननीय (पुं०) व्यापारियों का मुखिया।
प्रायः-(सं०अव्य०) बहुधा, विशेषकर।
प्रायण-(सं०नपुं०) जन्मान्तर, पारण।
प्रातद्वीप-(सं०पुं०) स्थल का वह भाग जो तीन ओर से पानी से घिरा हो। तथा केवल एक ओर स्थलसे मिला हो।
प्रायशः-(सं०अव्य०) सब प्रकार से।
प्रायश्चित-(सं० नपुं०) शस्त्रानुसार किया हुआ वह कृत्य जिससे शुद्ध होकर मनुष्य पापों से निर्मुक्त हो जाता है।
प्रायश्चित्ती-(सं०वि०) प्रायश्चित करने वाला।
प्रायोगिक-(सं०वि०) जिसका प्रयोग नित्य होता है। प्रायोज्य-(सं०वि०) प्रयोग में आने वाला।
प्रायोपवेश-(सं०पुं०) अनशन व्रत।
प्रारब्ध-(सं०नपुं०' भाग्य, अदृष्ट, (वि०) आरम्भ किया हुआ। प्रारब्धी-(हिं०वि०) भाग्यवान्।
प्रारम्भ-(सं०पुं०) आरंभ। प्रारम्भिक-(सं०वि०) प्राथमिक, आरम्भ का।
प्रार्थक-(सं०वि०) प्रार्थना करने वाला;
प्रार्थना-(सं०स्त्री०) याचना, माँगना, विनती, प्रार्थनापत्र-(सं०पुं०) निवेदन पत्र। प्रार्थनीय-(सं०वि०) प्रार्थना करने योग्य। प्रार्थयिता-(सं० वि०) प्रार्थना करने वाला। प्रार्थित-(सं०वि०) याचित, माँगा हुआ।
प्रार्थी-(सं०वि०) प्रार्थना करनेवाला।
प्रालब्ध-(हिं०पुं०) देखो प्रारब्ध।
प्रालेय-(सं०नपुं०) हिम, तुषार।
प्रावृट्-(सं०पुं०) वर्षा ऋतु।
प्रावेशिक-(सं०वि०) प्रवेश करने में सहायता देने वाला।
प्राशन-(सं०स्त्री०) भोजन, खाना।
प्राशनीय-(सं०वि०) खाने योग्य।
प्राशित-(सं०वि०) भक्षित, खाया हुआ।
प्राशी-(सं०वि०) भक्षक, खाने वाला।
प्राश्निक-(सं०वि०) प्रश्नकर्ता, पूछने वाला।
प्रासङ्ग-(सं०पुं०) तराजू की डंडी।
प्रासङ्गिक-(सं०वि०) प्रसंग संबंधी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रासाद-(सं०पुं०) देवता, और राजाओं का घर, हर्म्य ।
प्राहारिक-(सं०पुं०) पहरूआ, चौकीदार;
प्राहुण-(सं०पुं०) पाहुन, अतिथि ।
प्रिय-(सं०पुं०) भर्ता, स्वामी, पति, हित, भलाई, (वि०) प्यारा, ललित, मनोहर ।
प्रियकर्म-(सं०नपुं०) हित कार्य ।
प्रियकांक्षी-(सं० वि०) भला चाहने वाला ।
प्रियजन-(सं०पुं०) प्रिय व्यक्ति ।
प्रियतनु-(सं०वि०) सुन्दर शरीर वाला । प्रियतम-(सं०पुं०) स्वामी, पति, (वि०) प्राणों से बढ़कर प्रिय । प्रियतर-(सं०वि०) जो दो में से अधिक प्रिय हो ।
प्रियता-(सं०स्त्री०) प्रिय होने का भाव
प्रियत्व-(सं०नपुं०) प्रेम, स्नेह ।
प्रियदर्शन-(सं०वि०) जो देखने में सुन्दर हो । प्रियदर्शी-(सं०वि०) सबको प्रिय समझने वाला ।
प्रियधाम-(सं०नपुं०) प्यारा स्थान । प्रियपात्र-(सं०वि०) जिसके साथ प्रेम किया जावे ।
प्रियभाषण-(सं०नपुं०) मधुर वचन बोलना । प्रियभाषी-(सं० वि०) मधुर वचन बोलने वाला ।
प्रियरूप-(सं०वि०) अति सुन्दर ।
प्रियवक्ता-(सं०वि०) प्रिय वचन बोलने वाला । प्रियवचन-(सं०नपुं०) प्रिय वाक्य, मधुर वचन ।
प्रियवर-(सं०वि०) अति प्रिय, सबसे प्यारा ।
प्रियसख-(सं०पुं०) प्रिय बन्धु ।
प्रियसन्देश-(सं०पुं०) प्रिय संवाद ।
प्रिया-(सं०स्त्री०) नारी, भार्या, पत्नी;
प्रियोदित-(सं०पुं०) मीठे वचन ।
प्री-(सं०स्त्री०) प्रेम, प्रीति, कान्ति ।
प्रीतम-(हिं०पुं०) पति, स्वामी, प्यारा;
प्रीति-(सं०स्त्री०) तृप्ति, सन्तोष, प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द, प्रेम, स्नेह । प्रीतकर, प्रीतिकारक-(सं० वि०) प्रसन्नता उत्पन्न करने वाला ।
प्रीतिपात्र-(सं०पुं०) जिसके साथ प्रीति की जाय । प्रीतिभोज-(सं०पुं०) वह भोजन या खानपान जिसमें मित्र और बन्धु बान्धव प्रेमपूर्वक सम्मिलित हों ।
प्रीत्यर्थ-(सं०अव्य०) प्रीति के कारण प्रसन्न करने के लिये, वास्ते, लिये ।
प्रेक्षण-(सं०नपुं०) चक्षु, आँख, दर्शन ।
प्रेक्षणीय-(सं०वि०) देखने योग्य ।
प्रेक्षित-(सं०वि०) दृष्ट, देखा हुआ ।
प्रेक्षी-(सं०वि०) बुद्धिमान ।
प्रेत-(सं०पुं०) मरा हुआ प्राणी, मृत मनुष्य, नरक में रहने वाला प्राणी; प्रेतकर्म-(सं०नपु०) हिन्दुओं में वह कर्म जो मृतक के दाह के बाद से पिण्डीकरण तक किया जाता है । प्रेतगृह-(सं०पुं०) श्मशान, मरघट । प्रेतपुर-(पुं०) यमपुरी ।
प्रेतिनी-(हिं०स्त्री०) पिशाचनी, डाइन ।
प्रेती-(हिं०पुं०) प्रेतपूजक, प्रेत की उपासना करने वाला ।
प्रेतोन्माद-(सं०पुं०) एक प्रकार का उन्माद जिसको लोग समझते हैं कि प्रेतों के कोप से होता है ।
प्रेम-(सं०पुं०, नपुं०) प्रियता, स्नेह प्रीति, अनुराग, प्यार । प्रेमकर्ता-(सं०पुं०) प्रेम करने वाला, प्रेमी ।
प्रेमकलह-(सं० पुं०) प्रेम के कारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हँसी दिल्लगी या झगड़ा करना।
प्रेमजाल, प्रेमनीर-(सं०पुं०) प्रेम के कारण आँखों में निकलने वाला आँसू, प्रेमाश्रु। **प्रेमपात्र**-(सं०पुं०) वह जिससे प्रेम किया जाय। **प्रेमपाश**-(सं०स्त्री०) प्रेम का फन्दा या जाल। **प्रेमपुलक**-(सं०स्त्री०) प्रेम के कारण होने वाला रोमाञ्च। **प्रेमभक्ति**-(सं० स्त्री०) श्रीकृष्ण की वह भक्ति जो प्रेम से की जाय। **प्रेमवारि**-(सं० नपुं०) प्रेम के कारण निकलने वाला आँसू।
प्रेमिक, प्रेमी-(सं०पुं०) प्रेम करने वाला आसक्त।
प्रेरक-(सं०वि०) प्रेरणा करने वाला
प्रेरणा-(सं०स्त्री०) उत्तेजना प्रवृति, दबाव।
प्रेरणार्थक क्रिया(सं०स्त्री०) किसी क्रिया का वह रूप जिससे क्रिया के व्यापार के संबंध में यह सूचित होता है कि वह कर्ता से किसी प्रेरणा द्वारा हुआ है यथा 'पढ़ना' क्रिया का प्रेरणार्थक रूप 'पढ़वाना' है।
प्रेरणीय-(सं०वि०)प्रेरणा करने योग्य।
प्रेरना-(हिं०वि०) प्रवृत्त करना।
प्रेरयिता-(सं०पुं०)प्रेरणा करने वाला।
प्रेरित-(सं०वि०) उत्तेजित, उभाड़ा हुआ। **प्रेषक**(सं०नपुं०)भेजने वाला
प्रेषण-(सं०नपुं०) भेजने का काम।
प्रेषना-(हिं०क्रि०) भेजना।
प्रेषयित-(हिं०वि०) भेजने वाला।
प्रेषित-(सं०वि०) प्रेरणा किया हुआ. भेजा हुआ।
प्रेष्यता-(सं०स्त्री०) दासत्व, दूतत्व।
प्रोक्त-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
प्रोक्षण-(सं०नपुं०) सेचन, पानी का छींटा, परिछन।
प्रोक्षणी-(सं०स्त्री०) कुश की बनी हुई मुद्रिका। **प्रोक्षित**-(सं०वि०) सींचा हुआ।
प्रोत्साह-(सं०पुं०) बहुत उत्साह।
प्रोत्साहक-(सं०पुं०) ढाढ़स बाँधने वाला।
प्रोत्साहन-(सं०नपुं०) अधिक उत्साह बढ़ाना; **प्रोत्साहित**-(सं०वि०) उत्तेजित, उत्साह, बढ़ाया हुआ।
प्रोषित-(सं०वि०) प्रवासी जो विदेश गया हो।
प्रोष्ण-(सं०पुं०)अति उष्ण, बहुत गरम।
प्रोह-(सं०स्त्री०) पर्व-सन्धिस्थान।
प्रोहित-(हिं०पुं०) देखो पुरोहित।
प्रौढ़-(सं०वि०)अच्छी तरह बढ़ा हुआ, निपुण, युवा,। **प्रौढ़ता**-(सं०स्त्री०) प्रौढ़ होने का भाव। **प्रौढत्व** (सं०नपुं०) प्रौढ़ता।
प्रौढ़ा-(सं०स्त्री०) अधिक वय वाली स्त्री।
प्रौढ़ोक्ति-(सं० स्त्री०) गूढ़ रचना, किसी बात को बढ़ा कर कहना;
प्लक्ष-(सं०पुं०) पाकर का वृक्ष, सात कल्पित द्वीपों में से एक।
प्लवग-(सं०वि०) तैरने वाला।
प्लवङ्ग, प्लवङ्गम-(सं०पुं०) बन्दर। (वि०) कूद कूद कर चलने वाला।
प्लवन-(सं०पुं०) उछलना, कूदना।
प्लावन-(सं०नपुं०) मज्जन, तैरना, बाढ़।
प्लावित-(सं०वि०) जल में डूबा हुआ।
प्लीहा-(सं०पुं०) पेट की तिल्ली।
प्लुत-(सं०नपुं०) स्वर का एक भेद जो दीर्घ से भी बड़ा और तीन मात्रा का होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ

फ-हिन्दी वर्णमाला का बाईसवाँ व्यंजन तथा पवर्ग का दूसरा अक्षर। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

फ-(सं०नपुं०) फुफकार, निष्फल भाषण जृम्भा, फललाभ।

फंक-(हिं०स्त्री०) देखो फांक।

फंका-(हिं०पुं०) सूखे दाने या बुकनी की उतनी मात्रा जितनी एक बार मुँह में फांकी जा सके, खण्ड, टुकड़ा।

फंकी-(सं०स्त्री०) फांकने का चूर्ण, फांकने की औषधि।

फांग-(हिं०पुं०) बन्धन, फन्दा, अनुराग

फंद-(हिं०पुं०) बंधन, फंदा, दुख, कष्ट

फंदना-(हिं०क्रि०) फन्दे में पड़ना, फँसना।

फंदबार-(हिं०वि०) फंदा लगाने वाला

फंदा-(हिं०पुं०) फंसाने के लिये लगाया हुआ रस्सी आदि का घेरा, कष्ट, दुःख, पाश, फांस।

फंदाना-(हिं०क्रि०) जाल में फंसाना।

फफाना-(हिं०क्रि०) हकलाना, खौलते हुए दूध आदि का ऊपर को उठना।

फसना-(हिं०क्रि०) उलझना, अटकना।

फसाना-(हिं०क्रि०) अटकाना, बझाना

फसिहारा-(हिं०वि०) फँसने वाला।

फक-(हिं०वि०) स्वच्छ, सफेद।

फकड़ी-(हिं०स्त्री०) दुर्गति, दुर्दशा।

फकीरी-(हिं०स्त्री०) भिखमंगापन,

फक्किका-(सं०स्त्री०) अनुचित व्यवहार, छलकपट।

फग-(हिं०पुं०) देखो फंग, बन्धन।

फगुआ-(हिं०पुं०) होली के उत्सव का दिन।

फगुहारा-(हिं०पुं०) फगुआ गाने वाला पुरुष।

फट-(हिं०स्त्री०) किसी पतली हलकी वस्तु के गिरने से उत्पन्न शब्द।

फटक-(हिं०पुं०) स्फटिक, (हिं०अव्य०) तत्क्षण, झटपट।

फटकन-(हिं०स्त्री०) अन्न की भूसी आदि जो फटक कर निकाली जाय। फटकना-(हिं०क्रि०) सूप पर अन्न आदि को हिला कर स्वच्छ करना, फेंकना, पटकना, अलग होना, तड़फड़ाना।

फटकरी-(हिं०स्त्री०) देखो फिटकिरी।

फटका-(हिं०पुं०) धुनिये की धुकनी। फटकाना-(हिं०क्रि०) फटकाने का काम दूसरे से कराना, फेंकाना।

फटकार-(हिं०स्त्री०) झिड़की, दुतकार, शाप। फटकारना-(हिं०क्रि०) झटका देकर फेंकना, शस्त्र आदि चलाना, दूर करना, छितराना, कपड़े को पटक कर धोना।

फटकी-(सं०स्त्री०) फिटकिरी। (हिं०स्त्री०) बहेलियों की चिपटी टोकरी जिसमें वे चिड़ियों को बन्द करते हैं।

फटना-(हिं०क्रि०) अधिक पीड़ा होना, किसी द्रव पदार्थ में ऐसा विकार हो जाना कि उसमें का सार भाग और पानी अलग हो जावे।

फटफट-(हिं०स्त्री०) वृथा की बकवाद, जूते आदि के पटकने का शब्द। फटफटाना-(हिं०क्रि०) इधर उधर फिरना, हिलाकर फटफट शब्द करना या धोना।

फटहा-(हिं०वि०) फटा हुआ।

फटा-(सं०स्त्री०) सर्प का फन, दम्भ घमंड, छल, (हिं०पुं०) छेद। फटिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हिं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर।
फटेहाल-(हिं०पुं०) कंगाल, दरिद्र।
फटठा-(हिं०पुं०) चिरे हुए बाँस की छड़ी।
फटठा फटठी-(हिं०स्त्री०) बाँस की चिरी हुई पतली छड़।
फड़-(हिं०स्त्री०) पक्ष, दल, जुए का अड्डा, वह स्थान जहाँ दुकानदार बैठ कर माल लेता या बेचता है, लकड़ी का मोटा चिरा हुआ बल्ला।
फड़क, फड़कन-(हिं०स्त्री०) फड़फड़ाहट, फड़कन, उत्सुकता, लालसा।
फड़कना-(हिं०क्रि०) फड़फड़ाना, उद्यत होना, तड़फड़ाना, पक्षियों का पर हिलाना। फड़कना-अति चंचल होना।
फड़कना-(हिं०क्रि०) हिलाना, उमंग दिलाना।
फड़फड़ाना-(हिं०क्रि०) उत्सुक होना, तड़फड़ाना।
फतिङ्गा-(सं०स्त्री०) झींगुर, फतिङ्गा।
फड़काज, फड़िया-(हिं०पुं०) वह पुरुष जो लोगों को अपने घर पर जुआ खिलाता है।
फड़ी-(हिं०स्त्री०) ईंटों की ढेर।
फड़ोलना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को इधर उधर करना।
फण-(सं०पुं०) साँप का फन, रस्सी का फन्दा।
फणा-(सं०स्त्री०) सर्प का फन।
फणि-(सं०पुं०) विष। फणिक-(हिं० पुं०) नाग, सर्प।
फणिमुख-(सं०नपुं०) चोर की सेन लगाने की सबरी। फणी-(सं०पुं०) सर्प, साँप।
फतिंगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का उड़ने वाला कीड़ा।
फदकना-(हिं०क्रि०) खदबदाना, फुदकना
फदका-(हिं०पुं०) गुड़ का पाग जो बहुत गाढ़ा न हुआ हो।
फन-(हिं०पुं०) साँप का फैलाया हुआ सिर, फण।
फनकना-(हिं०क्रि०) सनसनाते हुए हवा में हिलना, फनफनाना। फनकार-(हिं०स्त्री०) फनफन होने का शब्द।
फनगना-(हिं०क्रि०) पौधों में नये नये अंकुर निकलना।
फनगा-(हिं०पुं०) देखो फतिंगा।
फनना-(हिं०क्रि०) कार्य का आरंभ होना।
फनफनाना-(हिं०क्रि०) फनफन शब्द उत्पन्न करना, इधर उधर हिलना।
फनस-(हिं०पुं०) कटहल।
फनिधर, फनिपति-(हिं० पुं०) सर्प, साँप।
फनिग-(हिं०पुं०) देखो फणीन्द्र।
फनिंद-(हिं०पुं०) देखो फणीन्द्र।
फनि-(हिं०पुं०) देखो फण, फणी।
फनिंग, फनिप, फनिधर-(हिं०पुं०) सर्प।
फन्नी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी आदि का वह टुकड़ा जो किसी ढीली वस्तु को दृढ़ करने के लिये ठोका जाता है,
फफदना-(हिं०क्रि०) किसी गीले पदार्थ का बढ़कर फैलना, बढ़ना।
फफूंदी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की साड़ी का बन्धन, नीवी।
फफोला-(हिं०पुं०) चमड़े पर का पोला उभाड़ जिसके भीतर पानी भर जाता है, छाला।
फबकना-(हिं०क्रि०) मोटा होना।
फबती-(हिं०स्त्री०) हँसी की बात जो किसी पर घटती हो, चुटकी, व्यंग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फबन-(हिं०स्त्री०) सुन्दरता, शोभा, छवि। फबना-(हिं०क्रि०) सुन्दर या भला जान पड़ना। फबीला-(हिं०वि०) शोभा देने वाला।

फरक-(हिं०स्त्री०) फरकने का भाव या क्रिया।

फरकन-(हिं०पुं०) फड़कने का भाव या क्रिया। फरकना-(हिं०क्रि०) उड़ना, उभड़ना।

फरकाना-(हिं०क्रि०) हिलाना, फड़फड़ाना।

फरकीला-(हिं०पुं०) देखो फड़कीला।

फरचा-(हिं०वि०) जो जूठा न हो, शुद्ध, पवित्र। फरचाना-(हिं०क्रि०) शुद्ध करना।

फरना-(हिं०क्रि०) देखो फलना।

फरफंद-(हिं०पुं०) चोचला, छल, कपट।

फरफर-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ के उड़ने या फड़फड़ाने से उत्पन्न शब्द। फरफराना-(हिं०क्रि०) देखो फड़फड़ाना।

फरफुंदा-(हिं०पुं०) देखो फतिंगा।

फरराना-(हिं०क्रि०) देखो फहराना।

फरवी-(हिं०पुं०) एक प्रकार का भूना हुआ चावल, मुरमुरा।

फरस-(हिं०पुं०) समतल भूमि।

फरसा-(हिं० पुं०) चौड़ी धार की कुल्हाड़ी।

फरहर-(हिं०वि०) शुद्ध, निर्मल, प्रसन्न।

फरहरना-(हिं०क्रि०) फरकना, फहराना

फरहरा-(हिं०पुं०) झंडा, पताका, (वि०) स्पष्ट, शुद्ध, निर्मण, खिला हुआ।

फरहरी-(हिं०स्त्री०) फल।

फराक-(हिं०पुं०) मैदान, (वि०) लंबा चौड़ा।

फराल-(हिं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव,

फरियाना-(हिं०क्रि०) छांट कर अलग करना, पक्ष निर्णय करना, स्पष्ट देख पड़ना।

फरुहा-(हिं०पुं०) देखो फवड़ा।

फरुही-(हिं०स्त्री०) छोटा फावड़ा, एक प्रकार का भूना हुआ चावल जो भीतर से पोला. हो जाता है,लाई।

फरुहरी-(हिं०स्त्री०) देखो फुरहरी।

फरेंदा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की बड़ी गूदेदार मीठी जामुन।

फरेरी-(हिं०पुं०) जंगली मेवा।

फर्राटा-(हिं०पुं०) वेग, देखो खर्राटा।

फल-(सं०नपुं०) लाभ, वनस्पति में होने वाला गूदे से परिपूर्ण वह बीजकोष जो फूलों में से विशिष्ट ऋतु में उत्पन्न होता है, गणित की किसी क्रिया का परिणाम, उद्देश्य की सिद्धि, त्रैराशिक की तीसरी राशि, सूद, क्षेत्रफल, प्रयोजन, गुण, प्रभाव, कर्मों का परिणाम, वाण, भाले आदि का नुकीला भाग।

फलक-(सं०नपुं०) लकड़ी आदि का पटरा, चौकी, हथेली।

फलकना-(हिं०क्रि०) छलकना,फरकना।

फलकर-(हिं०पुं०) वह कर जो वृक्षों के फल पर लगाया जाता है।

फलग्राही-(सं०वि०) फल देनेवाला।

फलतः-(सं०अव्य०) फलस्वरूप,इसलिये;

फलद-(सं०वि०) फल देने वाला।

फलदार-(हिं०वि०) जिसमें फल लगे हों।

फलना-(हिं०क्रि०) फल से युक्त होना, फल लगना।

फलप्रद-(सं०वि०) फल देने वाला।

फलभागी-(हिं० स्त्री०) फल का भोग करने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फलहरी-(हिं०स्त्री०) बन के वृक्षों के फल, मेवा । **फलहार**-(हिं०पुं०). देखो फलाहार ।

फलहारी-(हिं०वि०) जिस खाद्य पदार्थ के बनाने में केवल फलों का उपयोग किया गया हो ।

फलांग-(हिं०स्त्री०) एक स्थानसे उछल कर दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या उसका भाव । **फलांगना**-(हिं०क्रि०) कूदना, फांदना ।

फलांश-(हिं०पुं०) तात्पर्य, सारांश ।

फलागम-(सं०पुं०) फल आने का काल।

फलादेश-(सं०पुं०) किसी बात का फल या परिणाम बतलाना,फल कहना

फलाना-(हिं०क्रि०) फलने में प्रवृत्त करना । **फलान्त**-(सं०पुं०) फल का अन्त या शेष ।

फलाफल-(सं०नपुं०) अच्छा और बुरा फल । **फलाराम**-(सं०पुं०) फल का बागीचा । **फलार्थी**-(सं०वि०) फल की कामना करने वाला ।

फलाशी-(सं०वि०) फलभोजी ।

फलाहार-(सं०पुं०) केवल फलों का भोजन । **फलाहारी**-(हिं०पुं०)वह जो केवल फल खाकर निर्वाह करता हो, (वि०) जो केवल फलों से बना हो ।

फलित-(सं० वि०) फलवान, फला हुआ, पूर्ण, संपूर्ण ।

फलिन-(सं०वि०) जिसमें फल लगे हों ।

फली-(हिं०स्त्री०) पौधों के वे फल जो चिपटे और लंबे होते हैं जिनमें बीज भरे होते हैं ।

फलीभूत-(सं०वि०) फलदायक, लाभदायक ।

फलेंदा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा गूदेदार मीठा जामुन ।

फलोदय-(सं०पुं०) फल की उत्पत्ति । **फलोपजीवी**-(सं०वि०) जो केवल फल खाकर जीविका निर्वाह करता हो ।

फल्गु-(सं०वि०) निरर्थक, व्यर्थ, क्षुद्र, छोटा ।

फसकड़ा-(हिं०पुं०) पथली ।

फसकना-(हिं०क्रि०) बैठना, धंसना,

फसकाना-(हिं०क्रि०)धंसाना, बैठाना ।

फहरना-(हिं०क्रि०) हवा में उड़ना ।

फहरान-(हिं०स्त्री०) फहराने का भाव या क्रिया । **फहराना**-(हिं०क्रि०) हवा में उड़ने के लिये किसी वस्तु को छोड़ देना या उड़ना ।

फाँक-(हिं०स्त्री०) किसी फल आदि का एक सिरे से दूसरे सिरे तक काट कर अलगाया हुआ टुकड़ा ।

फाँकना-(हिं० क्रि०) बुकनी के रूप में किसी वस्तु को दूर से मुंह में डालना।

फाँका(हिं०पुं०) उतनी वस्तु जो एक बार फांकी जाय ।

फाँट-(हिं०स्त्री०) कई भागों में बाँटने का क्रिया, औषधि का क्वाथ या काढ़ा करना । **फाँटना**-(हिं०क्रि०) विभाग करना, बाँटना ।

फाँटा-(हिं०पुं०) दो वस्तुओं को परस्पर जोड़ने की कोनिया ।

फाँड़, फाड़ा-(हिं०पुं०) धोती या डुपट्टे का वह भाग जो कमर में बँधा रहता है

फाँद-(हिं०स्त्री०) उछाल । **फांदना**-(हिं०क्रि०) कूद कर लाँघना, फंदे में डालना ।

फाँदा-(हिं०स्त्री०) गट्ठर बाँधने की रस्सी ।

फाँफी-(हिं०स्त्री०) बहुत महीन झिल्ली, मलाई की पतली तह,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फाँस-(हिं०स्त्री०) पाश, बंधन, वह रस्सी जिसका फन्दा डालकर पशु पक्षी फंसाये जाते हैं, महीन काँटा, पतली तीली या खमाची ।

फाँसना-(हिं०क्रि०) बंधन में डालना, पकड़ना, धोखे में डालना, जाल में फँसाना

फाँसी-(हिं०स्त्री०) फँसाने का फंदा, मृत्युदण्ड जो गले में फन्दा डालकर दिया जाता है ।

फाग-(हिं०पुं०) फाल्गुन महीने में होने वाला उत्सव, फाग में गाई जाने वाली गीत ।

फागुन-(हिं०पुं०) माघ के बाद का महीना, फाल्गुन । फागुनी-(हिं०वि०) फागुन संबंधी ।

फाटक-(हिं०पुं०) बड़ा द्वार, तोरण ।

फाटकी-(हिं०स्त्री०) फिटकिरी ।

फाड़न-(हिं०पुं०) कागज या कपड़े का फाड़ कर निकाला हुआ भाग, दही के ताजे मक्खन की छांछ । फाड़ना-(हिं० क्रि०) टुकड़े करना, चीरना, धज्जियाँ उड़ाना, किसी गाढ़े द्रव पदार्थ का जल और सार भाग अलगाना

फानना-(हिं०क्रि०) किसी काम को-हाथ में लेना ।

फाफा-(हिं०स्त्री०) पोपली बुढ़िया ।

फारना-(हिं०क्रि०) देखो फाड़ना ।

फाल-((सं०नपुं०) लोहे की चौकोर छड़ जिसका सिरा नुकीला होता है । फाल-(हिं०स्त्री०) किसी ठोस वस्तु में से काटा हुआ पतला टुकड़ा ; (पुं०)डग, फलांग । (स्त्री०) कटी हुई सुपारी ।

फाल्गुन-(सं०पुं०) फाल्गुन का महीना

फावड़ा-(हिं०पुं०) फरसा ।

फावड़ी-(हिं०स्त्री०) छोटा फावड़ा फरूही ।

फाहा-(हिं०पुं०) घाव, फोड़े आदि पर लगाने की मरहम से तर की हुई पट्टी ।

फिकवाना-(हिं०क्रि०) देखो फेंकवाना ।

फिंगा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की चिड़िया

फि-(सं०पुं०) पाप, कोप, निष्फल वाक्य ।

फिचकुर-(हिं० पुं०)वह फेन जो मूर्छा में मुख से निकलता है ।

फिट-(हिं०अव्य०) धिक्कार का शब्द, धिक, छिः ।

फिटकारी-(हिं०स्त्री०) देखो फिटकरी

फिटकार-(हिं०पुं०) धिक्कार, शाप, कोस, हलकी मिलावट, भावना ।

फिटकिरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का खनिज पदार्थ जो लाल, काला पीला तथा सफेद भी होता है ।

फिटकी-(हिं०स्त्री०) छींटा ।

फिटाना-(हिं०क्रि०) भगाना ।

फिट्टा-(हिं०वि०) अपमानित ।

फिना-(हिं०स्त्री०) मृत्यु नाश ।

फिनिया-'(हिं०स्त्री०) कान में पहिरने का एक गहना ।

फिफरी-((हिं०स्त्री०) पपड़ी ।

फिरंट-(हिं०क्रि०वि०) विरुद्ध ।

फिर-(हिं०क्रि०वि०) पुनः, दुबारा, अनन्तर, उपरान्त, भविष्य में, किसी समय, आगे चल कर, इसके अतिरिक्त ।

फिरकना-(हिं० क्रि०) थिरकना, नाचना ।

फिरकी-(हिं०स्त्री०) लड़को के नचाने का एक खिलौना, तागा बाटने की तकली के नीचे लगा हुआ धातु, आदि का गोल टुकड़ा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फिरङ्ग-(सं०पुं०)यूरोप का एक देश।
फिरङ्गी-(हिं०वि०)फिरंग देश का रहने वाला, गोरा।
फिरता-(हिं०पुं०) अस्वीकार, (वि०) लौटाया हुआ।
फिरना-(हिं०क्रि०) विचरना, टहलना चक्कर या फेरा लगाना, विपरीत होना मुड़ना।
फिरवाना-(हिं०क्रि०) फेरने या फिराने का काम दूसरे से कराना।
फिराना-(हिं० क्रि०) चक्कर देना, नाचना, पलटाना, घुमाना, ऐंठना।
फिरि-(हिं०क्रि०वि०) देखो फिर।
फिरहिरी-(हिं०स्त्री०) बच्चों को घुमाने का खिलौना फिरकी।
फिस्-(हिं०वि०) कुछ नहीं।
फिसड्डी-(हिं०वि०) काम में पीछे रह जानेवाला।
फिसफिसाना-(हिं०क्रि०) शिथिल होना, ढीला पड़ना।
फिसलन-(हिं०स्त्री०) फिसलने की क्रिया या भाव, सरकन। फिसलना-(हिं०क्रि०) चिकनाहट और गीलेपन के कारण पैरका न जमना। फिसलाना-(हिं०क्रि०) किसी को ऐसा करना कि वह फिसल जाय।
फीका-(हिं०वि०) नीरस, स्वादहीन, व्यर्थ, कान्तिहीन, धूमिल, निष्फल।
फीली-(हिं०स्त्री०) घुटने के नीचे एड़ी तक का भाग।
फुकना-(हिं०क्रि०) भस्म होना, जलना नष्ट होना।
फुंकनी-(हिं०स्त्री०) बाँस, पीतल आदि की नली जिसमें मुंह की हवा फर कर आग को दहकाने के लिये उसपर छोड़ छोड़ते हैं, भाथी।
फुंकरना-(हिं० क्रि०) मुंहसे हवा छोड़ना। फुंकवाना-(हिं०क्रि०) भस्म करवाना, जलवाना। फुंकाना-(हिं०क्रि०)फूंकने का काम कराना।
फुंकार-(हिं०पुं०) फूत्कार।
फुंदना-(हिं०पुं०) झालर, झब्बा, फुंदिया-(हिं०स्त्री०) फुंदना।
फुंदी-(हिं०स्त्री०) बिंदी, गाँठ,टीका।
फुंसी-(हिं०स्त्री०) छोटी फुड़िया।
फुआरा-(हिं०पुं०) देखो फुहारा।
फुचड़ा-(हिं०पुं०) वह सूत या रेशा जो कपड़े, चटाई आदि बुनी हुई वस्तु के बाहर निकला रहता है।
फुट-(हिं०वि०) अयुग्म, जिसका परस्पर संबंध अलग हो।
फुटकर, फुटकल-(हिं०वि०) विषम, अकेला, थोड़ा थोड़ा, कई प्रकार का।
फुटका-(हिं०पुं०) फफोला।
फुटकी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के छोटे लच्छे या कणजो अलग अलग देख पड़ते हैं।
फुटेहरा-(हिं०पुं०) मटर या चने का भूना हुआ दाना जिसका छिलका फटकर अलग हो गया हो।
फुटैल-(हिं०वि०) देखो फुट्टैल।
फुट्टैल-(हिं०वि०) झुंड या समूह से अलग रहने वाला, अभागा।
फुत्कार-(सं०पुं०) फूंक, मुँह से हवा छोड़ने का शब्द।
फुदकना-(हिं०क्रि०) उछल उछल कर कूदना, उमंग में आना।
फुनंग-(हिं०स्त्री०) वृक्ष की शाखा का अगला भाग, अंकुर।
फुन-(हिं०अव्य०) पुनः, फिर से।
फुनगी-(हिं०स्त्री०) वृक्ष या वृक्ष की शाखाओं का अग्र भाग।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फुनना-(हिं०पुं०) देखो फुंदना।
फुनफुनि-(हिं०अव्य०) वारंवार।
फुसफुस-(सं०पुं०) फेफड़ा।
फुँफुंदी-(हिं०स्त्री०) वह डोरी जो लँहगे, या स्त्रियों की साड़ी में कसी जाती है, नीवी।
फुफुकाना-(हिं०पुं०) देखो फुफकारना।
फुफकार-(हिं०पुं०) फूत्कार।
फुफेरा-(हिं०वि०) फूफा संबंधी।
फुर-(हिं०स्त्री०) पक्षी का पर फड़-फड़ाने का शब्द (वि०) सत्य, सच्चा।
फुरकाना-(हिं०क्रि०) देखो फड़काना।
फुरती-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता; फुरतीला (हिं०वि०) जो मन्द न हो।
फुरना-(हिं०क्रि०) सच्चा ठहरना, पूरा उतरना, प्रकाशित होना, चमक उठना, मुख से शब्द निकालना, फड़कना।
फुरफुर-(हिं०स्त्री०) उड़ने में पर की फड़फड़ाहट से उत्पन्न शब्द; फुर-फुराना-(हिं०क्रि०) उड़कर परों से शब्द निकालना, कान में रूई की फुरेरी फिराना; फुरफुराहट-(हिं० स्त्री०) पंख फड़फड़ाने का भाव।
फुरमान-(हिं०पुं०) राजा की आज्ञा।
फुरहरना-(हिं०क्रि०) स्फुरित होना।
फुरहरी-(हिं०स्त्री०) फरफराहट, कँपकँपी, रोमाञ्च।
फुराना-(हिं०स्त्री०) प्रमाणित करना।
फुरेरी-(हिं०स्त्री०) रोमाञ्च युक्त कँपकपी, रूई लपेटी हुई सींक जो तेल इत्र आदि में डुबो कर काम में लाई जाती है।
फुर्ती-(हिं०स्त्री०) देखो फुरती।
फुलका-(हिं०पुं०) पतली हलकी रोटी, चपाती।
फुलझड़ी फुलझरी-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जिसमें से फूलों के समान चिनगारियां निकलती हैं, विवाद या कलह उत्पन्न करने वाली बात।
फुलवर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का कपड़ा जिसपर रेशम के बेल बूटे कढे होते हैं।
फुलवाई-(हिं०स्त्री०) देखो फुलवारी।
फुलवार-(हिं०पुं०) प्रसन्न।
फुलवारी-(हिं०स्त्री०) उद्यान, बगीचा।
फुलहारा-(हिं०पुं०) माली।
फुलाई-(हिं०स्त्री०) फूलने का भाव।
फुलाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु के फैलाव को वायु आदि का दवाव पहुँचा कर बाहर की ओर बढ़ाना, गर्वित करना।
फुलाव-(हिं०पुं०) फूलने का भाव या अवस्था; फुलावट-(हिं० स्त्री०) उभाड़ या सूजन।
फुलिंग-(हिं०पुं०) स्फुलिंग, चिनगारी।
फुलिया-(हिं०स्त्री०) कील या कांटा जिसका माथा फैला हुआ हो।
फुलेरा-(हिं०पुं०) फूल की बनी हुई छतरी जो देवताओं की मूर्ति के ऊपर लगाई जाती है।
फुलेल-(हिं०पुं०) सुगन्ध युक्त तेल; फुलेली-(हिं०स्त्री०) फुलेल रखनेका काँच का पात्र।
फुलेहरा-(हिं०पुं०) बन्दरवार।
फुलौरा-(हिं०पुं०) बड़ी फुलौरी, पकौड़ा।
फलौरी-(हिं०स्त्री०) बेसन की पकौड़ी;
फुल्ली-(हिं०स्त्री०) फुलिया, फूल के आकार का कोई आभूषण।
फुस-(हिं०स्त्री०) अति मन्द स्वर।
फुसकारना-(हिं०क्रि०) फूंक मारना।
फुसड़ा-(हिं०पुं०) देखो फुचड़ा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फुसफुसा-(हिं०वि०) नरम, ढीला; फुसफुसाना-(हिं०क्रि०) अति मन्द स्वर से बोलना।

फुसलाना-(हिं०क्रि०) भुलावा देकर शान्त और चुप करना, बहलाना।

फुहार-(हिं०पुं०) पानी का छींटा, झींसी।

फुहारा-(हिं०पुं०) जल कीवह टोंटी जिसमें से महीन धार या छींटे वेग से ऊपर की ओर उठते और नीचे गिरते हैं, जल का महीन छींटा। फुही-(हिं०स्त्री०) महीन महीन बूंदों की झड़ी।

फूंक-(हिं० स्त्री०) साँस, मुंह की हवा, फूंकना-(हिं०क्रि०) ओठों को चारों ओर से सिकोड़ कर वेग से हवा फेंकना, धातुओं को रसायन की रीति से भस्म करना, फूंककर प्रज्वलित करना या जलाना, कष्ट देना, व्यर्थ व्यय करना।

फूका-(हिं० पुं०) भाथी या नली से आग पर फूंक मारने की क्रिया, फफोला, बाँस की नली में जलन उत्पन्न करने वाली औषधियों को भरकर गाय के थन में लगाकर फूंकना जिसमें उसका सब दूध बाहर निकल जावे।

फूद, फूंदा-(हिं०स्त्री०) फुँदना, झब्बा।

फूट-(हिं०स्त्री०) विरोध, वैर, बिगाड़, एक प्रकार की बड़ी ककड़ी जो पकने पर फूट जाती है।

फूटन-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु का वह टुकड़ा जो फूटकर अलग हो गया हो, शरीर के जोड़ों की पीड़ा।

फूटना-(हिं०क्रि०) खण्ड होना, नष्ट होना, बिगड़ना, शरीर पर दाने के रूप में प्रगट होना, अंखुआ फूटना, व्याप्त होना, फैलना, कली का खिलना, शब्द का मुख से निकलना, शरीर के जोड़ों में पीड़ा होना, भेद खुलना।

फूटा-(हिं०वि०) भग्न, टूटा हुआ।

फूत्कार-(सं०पुं०) मुख से हवा छोड़ने का शब्द।

फूफा-(हिं०पुं०) पिता की बहिन का पति; फूफी-(हिं०स्त्री०) पिता की बहिन, बुआ।

फूल-(हिं०पुं०) पुष्प, कुसुम, शरीर पर का सफेद चिह्न, स्त्रियों के पहरने का एक प्रकार का गहना, दीपक का गुल, चिनगारी, ताँबे और रांगे के मेल से बनी हुई एक मिश्र धातु। फूलगोभी-(हिं०स्त्री०) गोभी की एक जाति जिसमें मंजरियों का बँधा हुआ ठोस पिण्ड होता है। फूलडोल-(हिं०पुं०) चैत्र शुक्ल एकादशी के दिन होने वाला एक उत्सव। फूलदान-(हिं० पुं०) गिलास के आकार का फूलों को रखने का पात्र। फूलदार-(हिं० वि०) जिस पर बलबूटे या फूल पत्ते काढ़कर बनाये गये हों।

फूलना-(हिं०क्रि०) फूलों से युक्त होना, किसी तल का उठा होना, विकसित होना, खिलना, घमंड करना, मोटा होना, रूठना, प्रफुल्ल होना, आनन्दित होना।

फूली-(हिं०स्त्री०) सफेद चिह्न जो आँख की पुतली पर पड़ जाता है।

फूस-(हिं०पुं०) छप्पर आदि छाजने की सूखी हुई लंबी घास, तृण, तिनका, खर।

फूहड़, फूहर-(हिं०वि०) कुरूप और भद्दा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फूहा-(हिं०पुं०) रूई का गोला।
फूही-(हिं०स्त्री०)पानी की महीन बूंद।
फेंक-(हिं०स्त्री०) फेंकने की क्रिया या भाव। फेंकना-(हिं०क्रि०) एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर डालना, अपव्यय करना, उछालना, छोड़ना।
फेंट-(हिं०स्त्री०) कमर में बाँधा हुआ कपड़ा, फेंटा, लपेट।
फेंटा-(हिं०पुं०)कमर का घेरा, पटुका, सिरपर लपटने की छोटी पगड़ी।
फेकरना-(हिं०क्रि०) आच्छादन रहित होना, नंगाहोना।
फेकारना--(हिं०क्रि०)खोलना या नंगा करना।
फेन-(सं०पुं०) जल के ऊपर उठा हुआ बुलबुला।
फेनल-(सं०वि०) फेनयुक्त।
फेनिका-(सं०स्त्री०) फेनी नाम की मिठाई।
फेनिल-(सं०वि०) फेनयुक्त।
फेनी-(हिं०स्त्री०) लपेटे हुए सूत के लच्छे के आकार की मिठाई।
फेफड़ा-(हिं०पुं०) शरीर के भीतर छाती के हड्डियों के नीचे का वह अवयव जिसकी क्रिया से जीव सांस लेते हैं, फुप्फुस।
फेफड़ी-(हिं०स्त्री०) पपड़ी।
फेर-(हिं०पुं०) घुमाव, चक्कर, मोड़, उलझन,संशय, घाटा, प्रभाव, युक्ति, अन्तर, धोखा, ढंग, दिशा, ओर (हिं०अव्य०) पुनः, एकबार फिर।
फेरना-(हिं०क्रि०) पलटना, बदलना, बारंबार दोहराना, लौटाना, ऐंठना, मरोड़ना, पीछे चलाना, पोतना, तह चढ़ाना।
फेरपलटा-(हिं०पुं०)द्विरागमन,गौना।
फेरफार-(हिं०पुं०) परिवर्तन, उलट-फेर।
फेरवट-(हिं०स्त्री०) फेरने का भाव, पेंच, अन्तर, घुमाव फिराव।
फेरवा-(हिं०पुं०) तार को दो तीन बार लपेट कर बनाया हुआ छल्ला।
फेरा-(हिं०पुं०) परिक्रमण, टक्कर, लपेट, फेर, बारंबार आना जाना, घेरा, मण्डल।
फेराफेरी-(हिं०पुं०)हेराफेरी, इधर का उधर।
फेरि-(हिं०अ०) पुनः,फिर से।
फेरी-(हिं०स्त्री०) परिक्रमा, प्रदक्षिणा,
फेरीवाला-(हिं०पुं०) घूम घूम कर सौदा बेंचने वाला व्यापारी।
फैल-(हिं०स्त्री०)विस्तृत,लंबा चौड़ा।
फैलना-(हिं०क्रि०) लगातार स्थान घेरना, बहुतायत से मिलना, प्रसिद्ध होना, मोटाना, बिखरना, अधिक खुलना, व्यापक होना, बिखरना।
फैलाना-(हिं०क्रि०) इधर उधर दूर तक पहुँचाना, छेद या गड्ढे को बड़ा करना, हिसाब किताब करना, बढ़ाना, गुणा भाग की क्रिया को ठीक होने की परीक्षा करना, पसारना, बिखेरना, व्यापक करना, प्रसिद्ध करना।
फैलाव-(हिं०स्त्री०)विस्तार, प्रचार।
फोंक-(हिं०पुं०) वस्त्र की फटन।
फोंका-(हिं० पुं०) लंबा और पोला चोंगा।
फोंकट-(हिं०वि०)निःसार,पोला, व्यर्थ।
फोंकला-(हिं०वि०) छिछला।
फोंफर-(हिं०वि०) खोखला।
फोंकी-(हिं०स्त्री०) छोटी नली।
फोट-(हिं०पुं०) स्फोट, धड़ाका।
फोटा-(हिं०पुं०) बूंद, तिलक, बुन्दा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फोड़ना-(हिं०क्रि०) खरी वस्तु के टुकड़े टुकड़े करना, भेद खोल देना, भेदभाव उत्पन्न करना, विदीर्ण करना।
फोड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का शोथ या उभाड़ जो शरीर पर रुधिर के बिगड़ने से उत्पन्न हो जाता है।
फोड़िया-(हिं०स्त्री०) छोटा फोड़ा, फुंसी।
फोया-(हिं०पुं०) रूई का लच्छा।
फोरना-(हिं०क्रि०) देखो फोड़ना।
फोहारा-(हिं०पुं०) देखो फुहारा।
फौआरा-(हिं०पुं०) देखो फुहारा।
फौकना-(हिं०क्रि०) डींग हांकना,

ब

ब-हिन्दी वर्णमाला का तेइसवां व्यंजन तथा पवर्ग का तीसरा वर्ण; इसका उच्चारण दोनों ओठों को मिलाकर किया जाता है।
ब-(सं०पुं०) वरूण, जल, गन्ध, कुम्भ।
बंक-(हिं०वि०) टेढ़ा, तिरछा, दुर्गम।
बंकट-(हिं०वि०) वक्र, टेढ़ा।
बंका-(हिं०वि०) टेढ़ा, तिरछा।
बंकाई-(हिं०स्त्री०) टेढ़ापन, तिरछापन।
बंकुर-(हिं०पुं०) वंक, टेढ़ा।
बंकुरता-(हिं०स्त्री०) वक्रता, टेढ़ापन।
बंगला-(हिं०पुं०) एक खंड का घर जिसके चारो ओर का बरामदे होते हैं, घर की ऊपरी छत पर बना हुआ हवादार कमरा, बंगाल देश का पान, बंगाली भाषा, (वि०) बंगाल संबंधी।
बंगाला-(हिं०पुं०) बंगाल प्रान्त।
बंगालिन-(हिं०स्त्री०) बंगाली की स्त्री। बंगाली-(हिं० पुं०) बंगाल देश का निवासी।
बंचक-(हिं०पुं०) धूर्त, पाखंडी।
बंचकता, बंचकताई-(हिं०स्त्री०) धूर्त। बंचन-(हिं० पुं०) छल, धूर्तता। बंचनता-(हिं०स्त्री०) ठगी, छल।
बंचना-(हिं०स्त्री०) छल, ठगी, (क्रि०) ठगना, धोखा देना।
बंचर-(हिं०पुं०) देखो बनचर।
बंचवाना-(हिं०क्रि०) पढ़वाना।
बंचित-(सं०वि०) देखो वञ्चित।
बंछना-(हिं०क्रि०) इच्छा करना।
बंछनीय, बंछित-(हिं० वि०) देखो वाञ्छित।
बेज-(हिं०पुं०) देखो बनिज।
बंजर-(हिं०पुं०) ऊसर।
बंझा-(हिं०वि०) जिसको संतान न हो, बाँझ।
बटना-(हिं०क्रि०) विभाग होना।
बटवाई-(हिं०स्त्री०) बाँटने का शुल्क। बटवाना-(हिं०क्रि०) वितरण करवाना, सबको अलग अलग करके दिखवाना,। बटवारा-(हिं०पुं०) बांटने की क्रिया, विभाग। बटइया-(हिं० वि०) बाँटने वाला।
बंटा-(हिं०पुं०) चौकोर या गोल छोटा डब्बा; बटाई-(हिं०स्त्री०) वितरण, बाँटने का काम या शुल्क,।
बटाना-(हिं०क्रि०) अंश ले लेना, भाग करा लेना,। बँटावन-(हिं०वि०) बाँटने या भाग करने वाला।
बंटी-(हिं०स्त्री०) छोटा बंटा।
बटैया-(हिं०पुं०) बाँटने वाला।
बंडी-(हिं०स्त्री०) मिरजई, बगलबन्दी।
बंडेरा-(हिं०) खपरैल की छाजन में मगरे पर रखने की लकड़ी।
बंदगोभी-(हिं०स्त्री०) करमकल्ला, पातगोभी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बदन-(हिं० पुं०) देखो वन्दन, (हिं०स्त्री०) रोली, इंगुर, सिन्दूर।
बंदनता-(हिं०स्त्री०) आदर या वन्दना किये जाने की योग्यता।
बंदनवार-(हिं०पुं०) वन्दन, मालातोरण
बंदना-(हिं०स्त्री०)देखोवन्दना,(क्रि.०) प्रणाम करना।
बंदनी-(हिं०स्त्री०)सिर पर पहरने का स्त्रियों का एक आभूषण।
बंदर-(हिं०पुं०) कपि, मर्कट; । बंदर-(फा०पुं०) समुद्र के किनारे पर का जहाज ठहरने का स्थान।
बंदवान-(हिं०स्त्री०) बंदीगृह का रक्षक; बंदसाल-(हिं०पुं०) बंदीगृह।
बंदारू-(हिं०वि०)आदरणीय, पूजनीय।
बंदिया-(हिं०स्त्री०) स्त्रियोंके सिर पर पहरने का एक आभूषण, बंदी।
बंदी-(हिं०पुं०) चारणों की एक जाति (स्त्री०) एक प्रकार का आभूषण जिसको स्त्रियाँ सिरपर पहरती हैं।
बंदीघर-(हिं०पुं०) कारागृह।
बंध-(हिं०पुं०) देखो वन्ध, बन्धन;
बंधना-(हिं०क्रि०) बाँधा जाना, वचन-वद्ध होना, फँसना, अटकना, बंदी होना, (पुं०) कोई बाँधने की वस्तु,
बंधवाना-(हिं०क्रि०) बाँधने का काम दूसरे से कराना।
बंधान-(हिं०पुं०) लेन देन के विषय में निश्चित क्रम या नियम, पानी रोकने का बाँध।
बंधाना-(हिं० क्रि०) बांधने का काम दूसरे से कराना।
बंधुर-(हिं०पुं०) मुकुट।
बंधेज-(हिं०पुं०) किसी वस्तु को रोकने या बाँधने की क्रिया या युक्ति, प्रतिबन्ध, रुकावट।
बंध्या-(हिं०स्त्री०) बांझ स्त्री। बंध्या-पन-(हिं०पुं०) बांझपन।
बंपुलिस-(हिं० स्त्री०) म्युनिसिपैलिटी आदि का बनाया हुआ सार्वजनिक मलत्याग करने का स्थान।
बंबं-(हिं०स्त्री०)नाद, दुंदुभी, नगाड़ा।
बंबा-(हिं०पुं०) जल का सोता, पानी बहने की नल।
बंबाना-(हिं०क्रि०)रंभाना।
बंबू-(हिं०पुं०) बाँस की छोटी पतली नली।
बंस-(हिं०पुं०) वंश, परिवार।
बंसकार-(हिं०पुं०) बांसुरी। बंसरी-(हिं०स्त्री०) बंसी।
बंसवाड़ी-(हिं०स्त्री०)बांसका बगीचा।
बंसार-(हिं०पुं०) भण्डार घर।
बंसी-(हिं०स्त्री०)बांसुरी, मछली फँसने का एक अस्त्र। बंसीधर-(हिं०पुं०) वंशीधर, श्रीकृष्ण।
बँहगी-(हिं०स्त्री०) भार ढोने का एक उपकरण जिसमें बांस के डंडे के दोनों सिरों पर रस्सियों में छीके लटकाये रहते हैं।
बहोली-(हिं०स्त्री०) कुरते आदि का हाथ का भाग।
बइठना-(हिं०क्रि०) देखो बैठना।
बउर-(हिं०पुं०) देखो बौर।
बउरा-(हिं०वि०) बावला, पागल।
बउराना-(हिं०क्रि०) पगलाना।
बक-(सं०पुं०) बगुला।
बकचा-(हिं०पुं०) देखो बकुचा।
बकझक-(हिं०स्त्री०) बकवाद।
बकठाना-(हिं०क्रि०) किसी बहुत कसैले पदार्थ के खाने से मुख का स्वाद बिगड़ जाना।
बकता,बकतार-(हिं०वि०) देखो वक्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बकध्यान-(हिं०पुं०) पाखंड पूर्ण मुद्रा; **बकध्यानी**-(हिं०वि०) वह जो देखने में सीधा परन्तु वस्तुतः कपटी हो।

बकना-(हिं०क्रि०) बड़बड़ाना।

बकबक-(हिं०स्त्री०) प्रलाप, बकवाद।

बकमौन-(हिं० पुं०) अपना उद्देश्य पूर्ण करने के लिये बगले की तरह सीधे बनकर चुपचाप रहने की क्रिया या भाव, (वि०) चुपचाप अपना काम साधने वाला।

बकयन्त्र-(सं०पुं०) मुड़े हुए लंबे गरदन की कांच की गोल पेंदे की शीशी जिसको वैद्य लोग तेल आदि उतारने के काम में लाते हैं।

बकरना-(हिं०क्रि०) आपसे आप बकना बड़बड़ाना,।

बकरा-(हिं०पुं०) फटे हुए खुर का एक प्रसिद्ध छोटे जाति का चौपाया, अज।

बकराना-(हिं०क्रि०) दोष या करतूत कहलाना।

बकला-(हिं०पुं०) पेड़ की छाल, फल के ऊपर का छिलका।

बकवाद-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ की वार्ता, बकबक। **बकवादी**-(हिं०वि०) बकबक करने वाला, **बकवाना**-(हिं०क्रि०) किसी से बकवाद कराना। **बकवास**-(हिं०स्त्री०) बकबक करने का अभ्यास।

बकवृत्ति-(सं०पुं०) कपटचारी मनुष्य।

बकस-(हिं०पुं०) कपड़े कागज आदि रखने का संदूक, छोटा डब्बा।

बकसीला-(हिं०वि०) जिसके खाने से जीभ ऐंठने लगे और मुख का स्वाद विगड़ जाय।

बकाना-(हिं०क्रि०) बकबक करने के लिये उद्यत करना।

बकारी-(हिं०स्त्री०) मुख से निकलने वाला शब्द।

बकुचा-(हिं०पुं०) छोटी गठरी।

बकुचना-(हिं०क्रि०) संकुचित होना, सिकुड़ना। **बकुचाना**-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को गठरी बाँध कर कंधे पर लटकाना या पीठ पर बाँधना।

बकुची-(हिं०स्त्री०) छोटी गठरी।

बकुरना-(हिं०क्रि०) देखो बकरना।

बकुराना-(हिं०क्रि०) स्वीकार कराना;

बकुल-(सं०पुं०) मौलसिरीका वृक्ष।

बकुला-(हिं०पुं०) देखो बगला।

बकेन,बकेना-(हिं०स्त्री०) वह गाय या भैंस जिसको बच्चा दिये प्रायः साल-भर हो गया, और वह दूध देती हो।

बकैयां-(हिं०पुं०) बच्चों का घुटने के बल चलने का ढङ्ग।

बकोट(हिं०स्त्री०) बकोटने या नोचने की क्रिया या भाव, उतनी मात्रा जो जो एक बार चंगुल में पकड़ी जा सके; **बकोटना**-(हिं०क्रि०) नख से नोचना।

बक्कल-(हिं०पुं०) वल्कल, छिलका, छाल।

बक्की-(हिं०वि०) बकवाद करने वाला, (पुं०) एक प्रकार का भदहिया धान।

बक्कुर-(हिं०पुं०) बचन, बोली।

बखर-(हिं०पुं०) देखो बक्खर।

बखरा-(हिं०पुं०) भाग हिस्सा, बाँट। **बखरी**-(हिं०स्त्री०) एक कुटुम्ब के रहने योग्य ईंट मिट्टी आदि का बना हुआ गाँव का घर।

बखरैत-(हिं०पुं०) हिस्सेदार, साझीदार।

बखान-(हिं०पुं०) वर्णन, कथन, गुण-कीर्तन, प्रशंसा। **बखानना**-(हिं०क्रि०) वर्णन करना,बुरा भला कहना, प्रशंसा करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बखार-(हिं०पुं०) भीत या टट्टी आदि से घेर कर बनाया हुआ अन्न रखने का स्थान। बखारी-(हिं०स्त्री०) छोटा बखार।

बखिया-(फा०पुं०) एक प्रकार की महीन पुष्ट सिलाई। बखियाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु पर बखिया की सिलाई करना, बखिया करना।

बखीर-(हिं०स्त्री०) मीठे रस में पकाया हुआ चावल, एक प्रकारकी खीर।

बखेड़ा-(हिं०पुं०) आड़म्बर, व्यर्थ का विस्तार, विवाद ,झगड़ा, झंझट,।

बखेड़िया-(हिं० वि०) बखेड़ा करने वाला, झगड़ालू।

बखेरना-(हिं०क्रि०) पदार्थों को इधर उधर फैलाना या फेंकना।

बखोरना-(हिं०क्रि०) टोकना, छेड़ना।

बगदना-(हिं०क्रि०) बिगड़ना, नष्ट होना, बहकना, भूलना।

बगदर-(हिं०पुं०) मच्छड़।

बगदवाना-(हिं०क्रि०) भुलवाना।

बगदाना-(हिं०क्रि०) भड़काना,भुलाना।

बगना-(हिं०क्रि०) घूमना फिरना।

बगर-(हिं०पुं०) बड़ा घर, द्वार के सामने का खुला स्थान, आँगन।

बगरना-(हिं०क्रि०) बिखरना, फैलना, छितराना। बिगराना-(हिं०क्रि०) छितराना, फैलाना, बिखरना।

बगलबंदी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिरजई जिसमें बगल के नीचे बंद लगे रहते हैं।

बगला-(हिं०पुं०) सफेद रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी।

बगलियाना-(हिं०क्रि०) अलग करना, बगल में लाना या करना, बगल से होकर जाना।

बगली-(हिं०वि०) बगल का, बगल से संबंध रखने वाला, कपड़े का वह टुकड़ा जो अंगे, कुरते आदि के बगल में लगाया जाता है।

बगलौहां-(हिं०वि०) बगल की ओर झुका हुआ, तिरछा।

बगा-(हिं०पुं०)जामा, बागा, (पु०) बगला

बगाना-(हिं०क्रि०) घुमाना, फिराना, भागना।

बगारना-(हिं०क्रि०) पसाना, फैलाना,

बगिया-(हिं०स्त्री०) छोटा उपवन। बकीचा-(हिं०पुं०) उपवन।

बगुला-(हिं०पुं०) बकपक्षी।

बगुलाभगत-(हिं०वि०) पाखण्डी मनुष्य

बगेदना-(हिं०क्रि०) विचलित करना।

बगैचा-(हिं०पुं०) देखो बगीचा।

बग्गी, बग्घी-(हिं०स्त्री०) पालकी के आकार की चौपहिया गाड़ी।

बघम्बर-(हिं०पुं०) बाघ की खाल।

बघनहां-(हिं०पुं०) एक प्रकार का शस्त्र जिसमें नख के समान चिपटे टेढे काँटे रहते हैं, यह अंगुलियों में पहना जाता है।

बघार-(हिं०पुं०) छौंक, तड़का, बघारने का मसाला। बघारना-(हिं०क्रि०) तड़का देना, छौंकना।

बघूरा-(हिं०पुं०) बवंडर।

बघेरा-(हिं०पुं०) लकड़बग्घा।

बचकाना-(हिं०वि०) बच्चों के योग्य, बच्चों के समान, थोड़ी अवस्था का।

बचत-(हिं०स्त्री०) शेष, बचाव, लाभ।

बचन-(हिं०पुं०) वाणी, वचन।

बचना-(हिं०क्रि०) हटना, अलग होना, छूट जाना।

बचपन-(हिं०पुं०)बाल्यावस्था,लड़कपन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बचवैया-(हिं०वि०) बचाने वाला।
बचा-(हिं०पुं०) देखो बच्चा, लड़का।
बचाना-(हिं०क्रि०) रक्षा करना पीछे करना, हटाना, व्यय न होने देना।
बचाव-(हिं०पुं०) बचाने का भाव, रक्षा
बच्ची-(हिं०स्त्री०) छोटी कन्या, बालिका।
बच्छ-(हिं०पुं०) बच्चा,बेटा, बछड़ा।
बच्छल-(हिं०वि०) देखो वत्सल।
बच्छस-(हिं०पुं०) छाती,सीना।
बच्छा-(हिं० पुं०) किसी पशु का बच्चा।
बछ,बछड़ा-(हिं०पुं०)गायका बच्चा।
बछरा-(हिं०पुं०)देखो बछड़ा। **बछरू**-(हिं०पुं०) देखो बछड़ा, बछवा।
बछल-(हिं०वि०) देखो वत्सल।
बछवा, बछेड़ा-(हिं० पुं०) गाय का बच्चा।
बजकना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ का सड़कर बुलबुले फेंकना, बजबजाना।
बजका-(हिं०पुं०)बेसन की पकौड़ी जो पानी में भिगो कर दही में डाली जाती है।
बजड़ना-(हिं०क्रि०) पहुंचना, टकराना।
बजना-(हिं०क्रि०) प्रसिद्ध होना, प्रहार होना, आघात पड़ना, शस्त्रों का चलाना, बोलना, (पुं०) बजाने वाला, बाजा, रुपया, (वि०) बजानेवाला।
बजनियां,बजनिहां-(हिं० पुं०) बाजा बजाने वाला।
बजरंग-(हिं०वि०) वज्र के समान पुष्ट शरीरवाला।
बजरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की बड़ी पटी हुई नाव, देखो बाजरा।
बजरागि-(हिं०स्त्री०) देखो बिजली।
बजवाई-(हिं०स्त्री०) बाजा बजाने का परिश्रमिक। **बजवाना**-(हिं०क्रि०) बजाने में किसी को प्रवृत्त करना।
बजवैया-(हिं०वि०) बजाने वाला।
बजागि-(हिं० पुं०) वज्रकी आग, बिजली।
बजाना-(हिं०क्रि०) शब्द उत्पन्न करना, आघात पहुंचाना।
बजार-(हिं०पुं०) हाट।
बजारी, बजारू-(हिं०वि०) साधारण सामान्य।
बजुआ-(हिं०पुं०) देखो बाजू।
बजूखा-(हिं०पुं०) बाजू।
बज्जर-(हिं०वि०) कड़ा, पुष्ठ, (पुं०) देखो वज्र।
बज्र-(हिं०पुं०) देखो वज्र।
बझवट-(हिं०स्त्री०) बांझ स्त्री।
बझना-(हिं०क्रि०) बंधन में पड़ना, फँसना, उलझना। **बझान**-(हिं०स्त्री०) बझाव। **बझाना**-(हिं०क्रि०) उलझाना, फंसाना।
बझाव, बझावट-(हिं०पुं०) अटकाव, उलझन।
बझावना-(हिं०क्रि०) देखो बझाना।
बट-(हिं०पुं०) देखो वट, बड़ा नामक पकवान, बट्टा, लोढ़िया, बाँट, बखरा, रस्सी की ऐंठन या बल।
बटखर, बटखरा-(हिं०पुं०)तौलने का मान, बाँट।
बटन-(हिं०स्त्री०) रस्सी आदि बटने या ऐंठने की क्रिया या भाव,। **बटना**-(हिं०क्रि०) कई तन्तुओं तागों या तारों को एक साथ मिलाकर इस प्रकार ऐंठना कि वे सब मिलकर एक हो जावें।
बटपरा,बटपार-(हिं०पुं०) देखो बटमार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बटपारी-(हिं०स्त्री०) डकैती, ठगी।
बटम-(हिं०पुं०) कोन नापने का यन्त्र, गोनिया।
बटमार-(हिं०पुं०) डाकू, लुटेरा।
बटला-(हिं०पुं०) देगचा।
बटली, बटलोई-(हिं०स्त्री०) देगची।
बटवायक, बटवार-(हिं०पुं०) चौकीदार
बटा-(हिं०पुं०) गोल वस्तु, गोला, गणित में अपूर्ण संख्या में अंक भाग। यथा तीन बटा चार।
बटाई-(हिं०स्त्री०) बटने या ऐंठन डालने का काम, बटने का शुल्क।
बटाऊ-(हिं०पुं०) बटोही, पथिक।
बटाक-(हिं०वि०) बड़ा ऊंचा।
बटाना-(हिं०क्रि०) बंद हो जाना।
बटाली-(हिं०स्त्री०) रुखानी।
बटिया-(हिं०स्त्री०) लोढिया, छोटा बट्टा।
बटी-(हिं०स्त्री०) बड़ी नामका पकवान।
बटुआ-(हिं०पुं०) देखो बटुवा।
बटुक-(सं०पुं०) लड़का, बच्चा।
बटुरना-(हिं०क्रि०) सिमटना, फैला न रहना।
बटुला-(हिं०पुं०) बड़ी बटलोई।
बटुवा-(हिं०पुं०) कपड़े या चमड़े की थैली जिसमें कई घर रहते हैं, बड़ी बटलोई।
बटेरा-(हिं०पुं०) कटोरा, गहरी थाली।
बटोई-(हिं०पुं०) देखो बटोही।
बटोर-(हिं०पुं०) जमघट, जमावड़ा, कूड़े करकट का ढेर। बटोरन-(हिं० स्त्री०) कूड़े करकट का ढेर। बटोरना-(हिं०क्रि०) इकट्ठा करके ढेर लगाना, समेटना।
बटोहिया-(हिं०पुं०) देखो बटोही।
बटोही-(हिं०पुं०) पथिक, यात्री।
बट्ट-(हिं०पुं०) बाँट, बटखरा।
बट्टा-(हिं०पुं०) दलाली, हानि, पत्थर आदि का गोल टुकड़ा, कूटने या पीसने का पत्थर वह कमी जो लेन देन में किसी वस्तु के मूल्य में दी जाती है।
बट्टी-(हिं०स्त्री०) छोटा बट्टा, लोढ़िया।
बट्टू-(हिं०पुं०) धारीदार चारखाना।
बट्टेबाज-(हिं०वि०) जादूगर, धूर्त।
बड़-(हिं०स्त्री०) प्रलाप, बकवाद, (पुं०) बरगद का वृक्ष, (वि०) बड़ा, (क्रि० वि०) बढ़कर।
बड़प्पन-(हिं०पुं०) महत्व, श्रेष्ठता, बड़ाई।
बड़बड़-(हिं० स्त्री०) बकवाद। बड़बड़ाना-(हिं०क्रि०) प्रलाप करना, बड़बड़िया-(हिं०वि०) बकवादी।
बड़बोल, बड़बोला-(हिं०व०) लंबी चौड़ी बातें करनेवाला, सीटने वाला।
बड़भाग, बड़भागी-(हिं०वि०) भाग्यवान।
बड़रा-(हिं०वि०) विशाल, बड़ा।
बड़राना-(हिं०वि०) बर्राना, बरबर करना।
बड़वा-(हिं०स्त्री०) घोड़ी। बड़वाग्नि, बड़वानल-(सं०पुं०) समुद्र के भीतर की अग्नि या ताप।
बड़वार-(हिं०वि०) बड़ा, विशाल।
बड़वारी-(हिं०स्त्री०) महत्व, बड़प्पन,
बड़हल-(हिं०पुं०) एक बड़ा वृक्ष जिसके फल बेडौल होते हैं और खाने में मीठे होते हैं।
बड़हार-(हिं०पुं०) बरातियों की वह ज्योनार जो विवाह के बाद की जाती है।
बड़ा-(हिं०वि०) अधिक विस्तृत, लंबा चौड़ा, श्रेष्ठ, उत्तम, (पुं०) मसाला मिली हुई उर्द की पीठी को घी या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेल में तल कर बनाया हुआ एक पकवान। बड़ाई-(हिं०स्त्री०) महिमा, प्रशंसा, बड़प्पन, श्रेष्ठता।

बड़ादिन-(हिं०पुं०) २५ दिसबंर का दिन जो इसुमसीह का जन्मदिवस माना जाता है। बड़ाबोल-(हिं०पुं०) अहंकार के शब्द।

बड़ी-(हिं०स्त्री०) उड़द मूंग आदि की पीठी की बनाई हुई छोटी छोटी टिकिया।

बड़ी माता-(हिं०स्त्री०) शीतला रोग, चेचक। बड़े लाट-(हिं०पुं०) भारतवर्ष में साम्राज्य के प्रधान शासक।

बड़ेरा-(हिं०पुं०) छाजन में लंबे बल की लकड़ी जिस पर ठाठ रक्खा जाता है।

बड़ौना-(हिं०पुं०) प्रशंसा।

बढ़-(हिं०वि०) अधिक।

बढ़ई-(हिं०पुं०) काठ को छील और गढ़कर अनेक प्रकार की सामग्री बनाने वाला।

बढ़ती-(हिं०स्त्री०) मात्रा, मन या संख्या में वृद्धि, धन धान्य की वृद्धि।

बढ़न-(हिं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।

बढ़ना-(हिं०क्रि०) वृद्धि को प्राप्त होना, उन्नति करना, दुकान आदि का बन्द होना, दीपक का बुझना।

बढ़नी-(हिं०स्त्री०) झाड़ू, बोहारी,

बढ़ाना-(हिं०क्रि०) फैलाना, लम्बा करना, किसी कार्यालय को बन्द करना, भाव अधिक कर देना, चलाना।

बढ़ाली-(हिं०स्त्री०) कटारी, कटार।

बढ़ाव-(हिं०पुं०) विस्तार, वृद्धि, अधिकता। बढ़ावना-(हिं० क्रि०) देखो बढ़ाना। बढ़ावा-(हिं०पुं०) उत्तेजना, प्रोत्साहन।

बढ़िया-(हिं०वि०) उत्तम, अच्छा।

बढ़ेला-(हिं०पुं०) जंगली सुअर।

बढ़ैया-(हिं०वि०) बढ़ने या बढ़ाने वाला

बढ़ोतरी-(हिं०स्त्री०) उन्नति, बढ़ती।

बणिक्-(सं०पुं०) वाणिज्य करने वाला, बनिया। बणिक्पथ-हाट।

बत-(हिं०स्त्री०) बात योगिक शब्दों में इसका प्रयोग होता है, यथा बतकही

बतकहाव-(हिं०पुं०) वादा विवाद।

बतकही-(हिं० स्त्री०) वार्तालाप बातचीत।

बतख-(हिं०स्त्री०) हंस की जाति की पानी में तैरनेवाली एक सफेद चिड़िया

बतचल-(हिं०वि०) बकवादी, बक्की।

बतबढ़ाव-(हिं० पुं०) व्यर्थ बात बढ़ाना, झगड़ा बढ़ाना।

बतरस-(हिं०पुं०) वार्तालाप का आनन्द।

बतरान-(हिं०स्त्री०) बातचीत।

बतराना-(हिं०क्रि०) बातचीत करना।

बतरौंहा-(हिं० वि०) बातचीत करने का उत्सुक।

बतलाना, बताना-(हिं० क्रि०) निर्देश करना, दिखाना, जताना, समझाना,

बताशा-(हिं०पुं०) देखो बतासा।

बतास-(हिं०स्त्री०) वायु, हवा।

बतासा-(हिं०स्त्री०) चीनी की चाशनी टपकार बनाई हुई एक प्रकार की मिठाई।

बतिया-(हिं०पुं०) कच्चा छोटा फल।

बतियाना-(हिं०क्रि०) बातचीत करना।

बतियार-(हिं०स्त्री०) बातचीत।

बतीसी-देखो बत्तीसी।

बतौरी-(हिं०स्त्री०) सूजन।

बत्तक-(हिं०स्त्री०) देखो बत्तख।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बत्तिस-(हिं०वि०) देखो बत्तीस।
बत्ती-(हिं०स्त्री०)सूत रूई कपड़े आदि की पतली छड़ या मोटा फीता जो दीपक जलाने के लिये उपयोग में आता है, प्रकाश, बत्ती के आकार की कोई वस्तु, पलीता।
बत्तीस-(हिं०वि०) तीस और दो की संख्या का, (पुं०) तीस और दो की संख्या ३२। **बत्तीसी**-(हिं०स्त्री०) बत्तीस का समूह, मनुष्य के नीचे ऊपर के दाँतों की पंक्ति जिसकी पूरी संख्या बत्तीस होती है।
बदना-(हिं०क्रि०) स्थित करना, ठहराना, स्वीकार करना, मान लेना, होड़ लगाना।
बदरा-(हिं०पुं०) बादल, मेघ।
बदराई-(हिं०स्त्री०) बदली।
बदरिया-बदरी-(हिं० स्त्री०) देखो बदली।
बदलना-(हिं०क्रि०) भिन्न होना, एक वस्तु देकर दूसरी वस्तु लेना अथवा एक के स्थान पर दूसरा हो जाना; **बदलवाना**-(हिं०क्रि०) बदलने का काम दूसरे से कराना।
बदला-(हिं०पुं०)प्रतीकार, प्रतिफल।
बदलाना-(हिं०क्रि०) देखो बदलवाना।
बदली-(हिं०स्त्री०) फैलकर छाया हुआ बादल, एक स्थान या पद से दूसरे स्थान पर नियुक्ति। **बदलौवल**-(हिं० स्त्री०) अदलबदल, हेरफेर।
बदा-(हिं०वि०) प्रारब्ध में लिखा हुआ।
बदान-(हिं०स्त्री०) किसी बातका प्रतिज्ञा पूर्वक पहले से स्थिर किया जाना;
बदाबदी-(हिं०स्त्री०) लागडांट।
बदाम-(हिं०पुं०) देखो बादाम।
बदामी-(हिं०वि०) बदाम के रंग का।
बदि-(हिं०स्त्री०) बदला, पलटा, (अव्य०) वास्ते, बदले में।
बदी-(हिं०स्त्री०) कृष्णपक्ष, अंधेरा पाख
बदे-(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।
बन्नर,बद्दल--(हिं०पुं०) देखो बादल।
बद्द-(हिं०वि०) अपमानित।
बद्ध-(सं० वि०) बंधन मुक्त किया हुआ।
बद्धमुष्टि-(सं० वि०) कृपण, कंजूस।
बद्धी-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी, बाँधने की कोई वस्तु।
बध-(सं०पुं०) हनन, हत्या।
बधक-(सं०वि०) बध करने वाला,
बधना-(हिं०क्रि०) बध करना, हत्या करना।
बधाई-(हिं०स्त्री०) बढ़ती, शुभ अवसर पर दिया जाने वाला उपहार, चहल पहल।
बधाना-(हिं०क्रि०) बध कराना।
बधाया-(हिं०पुं०) देखो बधाई।
बधावना-बधावा-(हिं०पुं०) बधाई मंगलाचार।
बधक-(हिं०पुं०) बध करने वाला।
बधिया-(हिं०पुं०) वह पशु जो अण्डकोश कुचल कर या निकाल कर षंड (नपुसंक) कर दिया गया हो।
बधियाना-(हिं०क्रि०) बधिया करना या बनाना।
बधिर-(सं०वि०) बहरा। **बधिरता**-(सं०क्रि०) बहरापन।
बधू-(सं०स्त्री०) नव विवाहिता स्त्री, पतोहू, भार्या, पत्नी; **बधूजन**-नारी, स्त्री।
बधूटी-(सं०स्त्री०) पुत्र की स्त्री, पतोहू, नई आई हुई बहू।
बबूरा-(हिं०पुं०) अंधड़, बवंडर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बध्य-(सं०वि०) मार डालने योग्य। बध्यभूमि-वध करने का स्थान,
बन-(हिं०पुं०) जंगल, अरण्य।
बनउर-(हिं०पुं०) बिनौला। **बनकंडा**-(हिं०पुं०) जंगल का सूखा गोबर।
बनक-(हिं०स्त्री०) बन की उपज, (स्त्री०) सजधज।
बनकर-(हिं०पुं०) जंगल में होनेवाले पदार्थों की आय।
बनखंड-(हिं०पुं०) जंगल का कोई भाग। **बनचर**-(हिं०पुं०) वन्य पशु, जंगली मनुष्य। **बनचारी**-(हिं०पुं०) जंगल में रहने वाला मनुष्य या पशु।
बनज-(हिं०पुं०) वाणिज्य, व्यवसाय।
बनजना-(हिं०क्रि०) व्यापार करना।
बनजर-(हिं०स्त्री०) देखो बंजर।
बनजारा-(हिं०पुं०) वह व्यापारी जो बैलों पर अन्न लादकर देश देश में घूम कर बेंचता है।
बनत-(हिं०स्त्री०) रचना, बनावट।
बनताई-(हिं०स्त्री०) जंगल का घनापन।
बनद-(हिं०पुं०) मेघ, बादल।
बनना-(हिं०क्रि०) रचा जाना, तैयार होना, आपस में मित्रता होना, अच्छा अवसर प्राप्त होना, स्वरूप धारण करना, मूर्ख ठहरना।
बननि-(हिं०स्त्री०) बनावट, सिंगार पटार।
बननिधि-(सं०पुं०) समूद्र।
बनपति-(हिं०पुं०) सिंह, शेर।
बनपथ-(हिं०पुं०) वह मार्ग जिसमें बहुत से जंगल पड़ते हो।
बनवारी-(हिं०स्त्री०) फूल का बगीचा
बनवास-(हिं०पुं०) वन में रहने या बसने की क्रिया या अवस्था। **बनावासी**-(हिं०वि०) वन में रहने वाला, जंगली;
बनमानुष-(हिं० पुं०) वह पशु जो बन्दर से बड़ा होता है, जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता जुलता है, बिलकुल जंगली आदमी।
बनरखा-(हिं०पुं०) वन का रक्षक।
बनरुह-(हिं०पुं०) जंगली पेड़
बनवना-(हिं०क्रि०) देखो बनना।
बनवर-(हिं०पुं०) बिनौला।
बनबसन-(हिं०पुं०) वृक्ष की छाल का बना हुआ कपड़ा।
बनवाना-(हिं०क्रि०) बनाने का काम दूसरे से कराना।
बनवारी-(हिं०पुं०) वनमाली, श्रीकृष्ण।
बनवासी-(हिं०पुं०) जंगलमें रहनेवाला।
बनवैया-(हिं०वि०) बनानेवाला।
बनसपती-(हिं०स्त्री०) देखो वनस्पति।
बनबसी-(हिं०स्त्री०) देखो वंशी।
बनस्थली-(हिं०स्त्री०) जंगल का कोई भाग।
बनस्पती-(हिं०पुं०) देखो वनस्पति;
बनाइ-(हिं०क्रि०वि०) अत्यन्त, बहुत,
बनाउ-(हिं०पुं०) देखो बनाव।
बनाग्नि-(हिं०स्त्री०) दावानल।
बनात-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का ऊनी वस्त्र जो कई रंग का होता है।
बनाती-(हिं०वि०) बनात का बना हुआ;
बनाना-(हिं०क्रि०) प्रस्तुत करना, रचना, तैयार करना, आविष्कार करना, दोष हटाकर ठीक करना, मूर्ख ठहराना, अच्छी स्थिति में पहुँचना, प्राप्त करना, उपार्जित करना।
बनाय-(हिं०क्रि०वि०) पूर्ण रूप से, अच्छी तरह से।
बनाव-(हिं०पुं०) रचना, श्रृंगार, युक्ति। **बनावट**-(हिं०स्त्री०) गढन, ऊपरी दिखावा, आडंबर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनावटी-(हिं०वि०) कृत्रिम, दिखौवा।
बनावन-(हिं०पुं०) कंकड़ी, मिट्टी, छिलके आदि जो अन्न को स्वच्छ करने पर निकलें, बिनना; **बनावनहारा**-(हिं०पुं०) रचयिता, बनाने वाला।
बनि-(हिं०वि०) समस्त, सब।
बनिक-(हिं०पुं०) वणिक्, बनिया।
बनिज-(हिं०पुं०) वस्तुओं का क्रय विक्रय, व्यवसाय, व्यापार की वस्तु।
बनिजाति-(हिं०स्त्री०) व्यापार की सामग्री।
बनिजना-(हिं०क्रि०) व्यापार करना।
बनिजारा-(हिं०पुं०) देखो बनजारा।
बनजारी-(हिं०स्त्री०) बनजारे की स्त्री।
बनित-(हिं०स्त्री०) वेषभूषा, बानक।
बनिता-(हिं०स्त्री०) स्त्री, भार्या, पत्नी।
बनिया-(हिं०पुं०) व्यापार करने वाला मनुष्य, वैश्य, मोदी।
बनियाइन-(हिं०स्त्री०) बनिये की स्त्री, बंडी या कुरती जो शरीर में चिपकी रहती है।
बनिहार-(हिं०पुं०) वह भृत्य जो रखवाली के लिये नियुक्त किया जाता है
बनी-(हिं०स्त्री०) वनस्थली, वन का टुकड़ा, वाटिका।
बनैठी-(हिं०स्त्री०) वह लंबी लाठी जिसके दोनों सिरों पर लट्टू लगे होते हैं जिसका व्यवहार पटेबाजी के खेल और अभ्यासों में किया जाता है।
बनैला-(हिं०वि०) वन्य, जंगली।
बनौरी-(हिं० स्त्री०) वर्षा के साथ गिरने वाला ओला या पत्थर।
बनौवा-(हिं०वि०) कृत्रिम, बनावटी
बन्दर-(हिं०पुं०) कपि।
बन्ध-(सं०पुं०) बन्धन शरीर, गांठ।
बन्धक-(सं०नपुं०) ऋण के बदले महाजन के पास रखने की वस्तु गिरवी।
बन्धकी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बन्धन-(सं०नपुं०) बाँधने की क्रिया, वह जिससे कोई वस्तु बाँधी जाय, रस्सी, बंधन स्थान, बंधीगृह, (वि०) बांधने वाला:
बन्धनी-(सं०स्त्री०) शरीर के बन्धन स्थान पर की मोटी नसें जो अवयवों को बाँधे रहती हैं। **बन्धनीय**-(सं०वि०) बाँधने योग्य।
बन्धयिता-(हिं०वि०) बाँधने वाला।
बन्धु-(सं०पुं०) बान्धव, भाई।
बन्धुजन-(सं०पुं०) आत्मीय कुटुम्ब।
बन्धुता-(सं.स्त्री.) भाईचारा। **बन्धुत्व**-(सं०नपुं०) मित्रता।
बन्धुपाल-(सं०पु०) अपने कुटुम्ब का पालन करने वाला।
बन्धुर-(सं०वि०) सुन्दर, नम्र, ऊंचानीचा
बन्ध्या-(सं०स्त्री०) जिस स्त्री को सन्तान न हो, बाँझ स्त्री।
बन्नी-(हिं०स्त्री०) उपज का कोई अंश जो खेत में काम करनेवालों को वेतन के बदले में दिया जाता है।
बहनि-(हिं०स्त्री०) देखो वह्नि।
बप-(हिं०पुं०) बाप, पिता। **बपमार**-(हिं०वि०) अपने पिता की हत्या करने वाला।
बपना-(हिं०क्रि०) बीज बोना।
बपु-(हिं०पुं०) शरीर, अवतार, रूप।
बपुरा-(हि०पु०) अशक्त, बेचारा।
बपौती-(हि०स्त्री०) पिता से मिली हुई सम्पत्ति।
बप्पा(हिं०पुं०) पिता, बाप।
बबकना-(हिं०क्रि०) आवेग में आकर वेग से बोलना।
बबा-(हिं०पुं०) देखो बाबा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बबुआ-(हिं०पुं०) पुत्र या दामाद के लिये प्यार का शब्द; रईस, भूमि स्वामी, **बबुई**-(हिं०स्त्री०) कन्या, किसी सरदार या बाबू की बेटी, छोटी ननद।

बभूत-(हिं०स्त्री०) देखो भभूत, विभूति

बम्-(हिं०पुं०) शिव के उपासकों का बम् बम् शब्द, वह लम्बा बाँस जो गाड़ी आदि में आगे की ओर लगा रहता है।

बमकना-(हिं०क्रि०) डींग हाँकना।

बमचख-(हिं०स्त्री०) लड़ाई झगड़ा।

बमीठा-(हिं०पुं०) बल्मीक, बांबी।

बयन्द-(हिं०स्त्री०) हथी, गज।

बय-(हिं०पुं०) देखो तय।

बयन-(हिं०पुं०) वाणी, बात।

बयना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना, कहना (पुं०) बौना।

बयर-(हिं०पुं०) देखो बैर।

बयस-(हिं०स्त्री०) देखो वयस।

बया-(हिं०पुं०) अनाज तौलने वाला मनुष्य, एक पक्षी।

बयाई-(हिं०स्त्री०) अन्न आदि तौलने की तौलाई।

बयाना-(हिं०पुं०) वह धन जो किसी काम के लिये दिये जाने वाले पुरस्कार के लिये बात पक्की हो जाने पर अग्रिम दिया जाता है और पुरस्कार देती समय काट लिया जाता है।

बयार-(हिं०स्त्री०) पवन, हवा।

बयारा-(हिं०पुं०) हवा का झोंका।

बयालिस-(हिं०पुं०) चालीस और दो की संख्या ४२, (वि०) जो संख्या चालीस और दो हो; **बयालिसवाँ**-जो क्रम से बयालिस के स्थान पर हो।

बयासी-(हिं०वि०) अस्सी और दो की संख्याका, (पुं०) अस्सी और दो की संख्या ८२।

बरँगा-(हिं०पुं०) छत पाटने की पत्थर या लकड़ी की पटिया।

बर-(हिं०पुं०) दूल्हा, आशीर्वाद सूचक वचन, बलशक्ति, वर का पेड़, (वि०) श्रेष्ठ।

बरई-(हिं०पुं०) तमोली।

बरकना-(हिं०क्रि०) अलग रहना, हटना

बरकाज-(हिं०पुं०) विवाह।

बरकाना-(हिं०क्रि०) बचाना, फुसलाना।

बरख-(हिं०पुं०) वर्ष, साल।

बरखना-(हिं०क्रि०) वर्षा होना; **बरखा** (हिं०स्त्री०) वर्षा, वृष्टि।

बरगद-(हिं०पुं०) वटवृक्ष, वर का पेड़

बरछा-(हिं०पुं०) भोंककर मारने का एक अस्त्र, भाला। **बरछैत**-(हिं०पुं०) बरछा चलाने वाला।

बरजन-(हिं०क्रि०) मना करना, रोकना; **बरजनि**-(हिं०स्त्री०) रुकावट, मनाही

बरजोर-(हिं०वि०) प्रबल, (क्रि०वि०) बहुत वेग से।

बरजोरी-(हिं०स्त्री०) बल का प्रयोग (क्रि०वि०) बलपूर्वक।

बरणना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना।

बरत-(हिं०पुं०) व्रत, उपवास।

बरतन-(हिं०पुं०) कोई वस्तु रखने का मिट्टी या धातु का पात्र।

बरतना-(हिं०क्रि०) व्यवहार में लाना।

बरताना-(हिं०क्रि०) बाँटना।

बरताव-(हिं०पुं०) व्यवहार।

बरती-(हिं०स्त्री०) बत्ती, (वि०) जिसने व्रत या उपवास किया हो।

बरतोर-(हिं०पुं०) बाल की जड़ टूट जाने से होने वाला फोड़ा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरदवान-(हिं०पुं०) तीव्र वायु।
बरधा-(हिं०पुं०) बैल।
बरन-(हिं०पुं०) देखो वर्ण।
बरनन-(हिं०पुं०) देखो वर्णन।
बरना-(हिं०क्रि०) वर्णन करना।
बरना-(हिं०क्रि०) पति या पत्नी के रूप में अंगीकार करना, देखो वलना।
बरफ-(हिं०स्त्री०) हिम।
बरबंड-(हिं०स्त्री०) व्यर्थ की वात,
बरबस-(हिं०क्रि०वि०) बलपूर्वक, व्यर्थ
बरम-(हिं०पुं०) कवच।
बरमा-(हिं०पुं०) लकड़ी आदि में छेद करने का एक अस्त्र।
बरबट-(हिं०स्त्री०) तापतिल्ली नाम का रोग।
बरषना-(हिं०क्रि०) वरसना, वर्षा होना
बरषा-(हिं०स्त्री०) वृष्टि, पानी वरसना, वरसात।
बरस-(हिं०पुं०) वर्ष, बारह महीने का समूह।
बरसगाँठ-(हिं०स्त्री०) सालगिरह।
बरसना-(हिं०क्रि०) आकाश से जल के बूँदों का निरन्तर गिरना, अधिक प्रगट होना।
बरसाऊ-(हिं०स्त्री०) वर्षाऋतु, वर्षाकाल
बरसाती-(हिं०वि०) वर्षा सम्बन्धी, बरसात का, वर्षा ऋतु में पहरने का कपड़ा जिसके पहनने से शरीर नहीं भींगता।
बरसाना-(हिं०क्रि०) वृष्टि या बरसा करना, अन्न को ओसाना, अधिक मात्रा या संख्या में चारों ओर से प्राप्त कराना।
बरसावना-(हिं०क्रि०) देखो बरसाना।
बरसी-(सं०स्त्री०) वह श्राद्ध जो किसी मृतक के उद्देश्य से उसके मरने की तिथि के ठीक एक वर्ष बाद होता है।
बरसीला-(हिं०वि०) वरसने वाला।
बरसौंहा-(हिं०वि०) वरसने वाला।
बरहा-(हिं०पुं०) खेत में सिंचाई के लिये बनाई हुई छोटी नाली, मोटा रस्सा।
बरही-(हिं०पुं०) मोर, इन्धन का बोझ पत्थर आदि उठाने का मोटा रस्सा, प्रसूत का सन्तान उत्पन्न करने के बारहवें दिन का स्नान तथा अन्य क्रियायें।
बराहीमुख-(हिं०पुं०) देखो बर्हिमुख, देवता।
बरह्मंड-(हिं०पुं०) देखो ब्राह्मण्ड।
बरांडा-(हिं०पुं०) देखो बरामदा।
बरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पकवान जो उड़द की दाल को पीसकर बनाया जाता है।
बराई-(हिं०स्त्री०) देखो बड़ाई।
बराक-(हिं०पुं०) युद्ध लड़ाई, (वि०) अधम पापी, बेचारा।
बराट-(हिं०स्त्री०) कौड़ी।
बरात-(हिं०स्त्री०) वर पक्ष के लोग जो विवाह के समय वर को लेकर कन्या वाले के घर पर जात हैं, अनेक मनुष्यों का समुदाय। बराती-(हिं०पुं०) वर के साथ कन्या के घर बरात ले जाने वाला मनुष्य।
बराना-(हिं०क्रि०) अलग करना, बचाना रक्षा करना, चुनना, छांटना।
बराव-(हिं०पुं०) निवारण, बचाव।
बरास-(हिं०पुं०) भीमसेनी कपूर,
बरा-(हिं०पुं०) देखो वराह।
बरिआत-(हिं०स्त्री०) देखो बरात।
बरिआर-(हिं०वि०) प्रबल, बलवान्।
बरिया-(हिं०वि०) बलवान्, पुष्ट।
बरियाई-(हिं०क्रि०वि०) हठपूर्वक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बरिषा-(हिं०स्त्री०) देखो वर्षा।
बरिस-(हिं०पुं०) वर्ष, साल।
बरी-(हिं०स्त्री०) गोल टिकिया, बटी, उर्द या मूंग की पीठी के सुखाये हुए छोटे छोटे गोल टुकड़े,।
बरीसना-(हिं०क्रि०) देखो बरसना।
बरु-(हिं०अव्य०) चाहे, कुछ चिन्ता नहीं,भले ही।
बरुआ-(हिं०पुं०)उपनयन सस्कार,
बरुनी-(हि०स्त्री०) बरौनी।
बरे-(हिं०अव्य०) बदले में, पलटे में, निमित्त, वास्ते, (क्रि०वि०) बड़ वेग से, हठ से ऊंचे स्वर से।
बरेखी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का गहना जिसको स्त्रियां भुजा पर पहरती हैं; (हि०स्त्री०) विवाह संबंध के निमित्त कन्या को देखना, ठहरौनी।
बरेठा-(हिं०पुं०) धोबी।
बलेदी-(हिं०पुं०) चरवाहा।
बरोठा-(हिं०पुं०) ड्योढी, पौरी, बैठक।
बरोह-(हिं०स्त्री०) बरगद की जटा जो नीचे की ओर बढ़ती हुई भूमि में जाकर जड़ पकड़ लेती है।
बरौंछी-(हिं०स्त्री०) सुअर के बालों की बनी हुई कूंची।
बरौनी-(हिं०स्त्री०) देखो बरुनी।
बरौरी--(हिं०स्त्री०) बरी नाम का पकवान।
बर्छा-(हिं०पुं०) देखो बरछा। **बर्जना**-(हिं०क्रि०) देखो बरजना।
बर्णना-(हिं०क्रि०)वर्णन करना।
बर्तन-(हिं०पुं०) पात्र।
बर्तना-(हिं०क्रि०) व्यवहार करना।
बर्ताव-(हिं०पुं०) व्यवहार।
बर्द-(हिं०पुं०) वृष, बैल।
बर्न-(हिं०पुं०) देखो वर्ण।
बर्फी-(फा०स्त्री०) देखो बरफो।
बर्बर-(सं०वि०) हकलाता हुआ, घुंघुरुवा, असभ्य, उद्दण्ड, (पुं०) असभ्य मनुष्य, शस्त्रों की झनकार।
बर्बरता-(स्त्री०)असभ्यता, अत्याचार।
बर्राना-(हिं०क्रि०)व्यर्थ बकबक करना स्वप्न की अवस्था में बोलना।
बर्रे-(हिं०पुं०) भिड़ नामक कीड़ा, तितैया।
बर्सात-(हिं०स्त्री०) देखो बरसात।
बल-(स०नपु०) सेना, स्थूलता, सामर्थ्य, आश्रय, सहारा।
बल-(हिं०पुं०) लपेट, फेरा, ऐंठन, टेढ़ापन, सिकुड़न घुमाव।
बलकट-(हिं०वि०) अग्रिम।
बलकना-(हिं०क्रि०)उबलना,खौलना।
बलकर-(सं०वि०) जिसमें बल की वृद्धि हो।
बलकल-(हिं०पुं०) देखो वल्कल।
बलकाना-(हिं० क्रि०) उबालना, खौलना।
बलद-(सं०वि०) बल देने वाला।
बलदाऊ-(हिं०पुं०) बलदेव, बलराम।
बलदेव--(स०पुं०) बलराम।
बलना-(हिं०क्रि०) जलना, दहकना।
बलप्रद-(सं०वि०) बल दायक।
बलबलाना-(हिं०क्रि०)ऊंट का बोलना, निरर्थक शब्द बोलना,। **बलबलाहट**-(हिं०स्त्री०)ऊंट की बोली, व्यर्थ की बकवाद, अहंकार।
बलम,बलमा-(हिं०पुं०) पति, नायक।
बलय-(हिं०पुं०) देखो वलय।
बलवंड-(हिं०वि०)बलवान्। **बलवन्त**-(हिं०वि०) बलवान्, बली।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बलवान्-(सं०वि०) शक्तिमान्।
बलशाली-(सं०वि०) बलवान्।
बलसुम-(हिं०वि०) बलुआ, जिसमें बालू हो।
बलसेना-(सं०स्त्री०) सेनादल।
बलहर-(सं०वि०) बल नाशक।
बलहीन-(सं०वि०) बलशून्य, बलरहित।
बलाग्र-(सं०नपुं०) सेना का अगला भाग, सेनापति, (वि०) बलवान्।
बलाढ्य-(सं०वि०) शक्तिशाली, बलवान्
बलात्-(सं०अव्य०) बलपूर्वक, हठ से।
बलात्कार-(स०पुं०) अत्याचार, अन्याय।
बलाध्यक्ष-(सं०पुं०) सेनापति।
बलाय-(हिं०पुं०) आपत्ति, विपत्ति, दुःख, कष्ट।
बलावलेप-(सं०पु०) दर्प, गर्व, अहङ्कार।
बलाहक-(सं०पुं०) मेघ, बादल।
बलि-(सं०पुं०) उपहार, भेंट, चढ़ावा, नैवेद्य, वह पशु जो किसी देवता के उद्देश्य से मारा जावे।
बलिकर्म--बलिदान।
बलित-(हिं०वि०) बलिदान दिया हुआ;
बलिदान-(सं०नपुं०) किसी देवता के उद्देश्य से नैवेद्य आदि पूजा की सामग्री चढ़ाना, दुर्गा आदि देवता को चढ़ाने के लिये बकरा आदि पशु को मारना।
बलिया-(हिं०वि०) बलवान्।
बलिवर्द-(सं०पुं०) वृष, साड़।
बलिष्ठ-(सं०वि०) अधिक बलवान्।
बलिहारना-(हिं० क्रि०) न्योछावर करना।
बलिहारी-(हिं०स्त्री०) श्रद्धा भक्ति प्रेम आदि के कारण अपने को निछावर करना।
बली-(सं०वि०) पराक्रमी, बलवान्।
बलीक-(सं०नपुं०) ओलती, ओरी।
बलीमुख-(सं०पुं०) वानर, बन्दर।
बलीवर्द-(सं०पुं०) वृषभ, बैल।
बलुआ-(हिं०वि०) रेतीला।
बलैया-(सं०स्त्री०) बला, बलाय।
बल्कल-(हिं०पुं०) देखो वल्कल।
बलभ-(हिं०पुं०) देखो वल्लभ।
बलभी-(हिं०स्त्री०) प्रिया।
बलभ-(हिं० पुं०) बरछा, भाला, डंडा सोंटा, वह सुनहला या रुपहला डंडा जिसको चोबदार राजाओं के आगे आगे लेकर चलते हैं।
बल्ला-(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा लंबा डंडा।
बल्ली-(हिं०स्त्री०) छोटा बल्ला।
बवेंड़ना-(हिं०क्रि०) व्यर्थ इधर उधर घूमना।
बवंडर-(हिं०पुं०) चक्रवात, आंधी।
बवधूरा-(हिं०पुं०) बवंडर, चक्रवात।
बवन-(हिं०पुं०) देखो वमन।
बवना-(हिं०क्रि०) छिटकना, बिखरना
बवरना-(हिं०क्रि०) देखो बौरना।
बसंत-(हिं०पुं०) देखो वसन्त।
बसंती-(हिं०वि०) वसन्त ऋतु संबंधी, सरसों के फूल के समान रंग पीला, कपड़ा (वि०) पीले रंग का।
बसंदर-(हिं०पुं०) अग्नि, आग।
बस-(हिं०पुं०) देखो वश।
बसन-(हिं०पुं०) देखो वसन।
बसना-(हिं०क्रि०) निवास करना, जनपूर्ण होना, ठहरना, सुगन्ध से पूर्ण हो जाना, (पुं०) बेठन, थैली।
बसनि-(हिं०स्त्री०) निवास, रहना, वास।
बसवार-(हिं०पु०) छौंक, बघार।
बसवास-(हिं०पुं०) निवास, ठिकाना,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थिति।

बसह-(हिं०पुं०) वृषभ, बैल।

बसा-(हिं०स्त्री०) वसा, चर्बी, वर्रैं, भिड़

बसाना-(हिं०क्रि०) ठहराना, टिकाना, महकाना, दुर्गन्ध करना।

बसिऔरा-(हिं०पुं०) बासी भोजन।

बसिया-(हिं०वि०) देखो बासी। **बसियाना**-(हिं०क्रि०) बासी हो जाना।

बसीकर-(हिं०वि०) वशमें करनेवाला; **बसीकरण**-(हिं०पुं०) देखो वशीकरण

बसीठ-(हिं०पुं०) दूत।

बसीठी-(हिं०स्त्री०) दौत्य, दूत का काम।

बसीना-(हिं०पुं०) वसन, रहन।

बसुधा-(हिं०स्त्री०) देखो वसुधा।

बसुरी-(हिं०स्त्री०) बाँसुली, वसुला,

बसुला-(हिं०पुं०) बढ़ई का लकड़ी छीलने और गढ़न का अस्त्र। **बसूला**-(हिं०स्त्री०) मेमार का बसुले के आकार का छोटा अस्त्र।

बसेरा-(हिं०वि०) रहने वाला, बसने वाला, (पुं०) यात्रियों का टिकने का स्थान, वह स्थान जहाँ पक्षी रात में रहते हैं, निवास।

बसेरी, बसेरा-(हिं०वि०) निवासी, रहने वाला।

बसौंधी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी रबड़ी जो सुगन्धित और लच्छेदार होती है।

बस्तर-(हिं०पुं०) देखो वस्त्र।

बस्ती-(हिं०स्त्री०) जनपद, निवास, बहुत से घरों का समूह जिसमें लोग बसते हैं

बस्तु-(हिं०पुं०) देखो वस्तु। **बस्त्र**-(हिं०पुं०) देखो वस्त्र। **बस्य**-(हिं० वि०) देखो वश्य।

बस्साना-(हिं०क्रि०) दुर्गन्ध देना।

बहँगी-(हिं०स्त्री०) तराजू के आकार का एक ढाँचा जिसके दोनों ओर के पलरों पर बोझ ले जाते हैं, काँवर।

बहकना-(हिं०क्रि०) मार्ग भ्रष्ट, होना, भटकना।

बहकाना-(हिं०क्रि०) भुलावा देना, भटकाना। **बहकावट**-(हिं०स्त्री०) बहकाने की क्रिया या भाव।

बहतोल-(हिं०स्त्री०) पानी बहाने की नाली।

बहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और दो की संख्या का, (पु०) सत्तर और दो की सख्या ७२, **बहत्तरवाँ**-जिसका स्थान बहत्तर पर पड़े।

बहन-(हिं०स्त्री०) देखो बहिन, (स्त्री०) बहने की क्रिया या भाव।

बहना-(हिं०क्रि०) पानी की धारा में पड़कर जाना, व्यर्थ खर्च हो जाना, उठना, चलना, धारण करना, रखना, हवा का चलना, द्रव रूप के पदार्थ का किसी ओर चलना, निर्वाह करना।

बहनापा-(हिं०पुं०) बहन का सम्बन्ध।

बहनु-(हिं०पुं०) देखो बहन, यान।

बहनेली-(हिं०स्त्री०) वह जिसके साथ बहनापा हो।

बहनोई-(हिं०पुं०) बहन का पति।

बहनौता-(हिं०पुं०) बहिन का पुत्र।

बहनौरा-(हिं०पुं०) बहिन का ससुराल।

बहरा-(हिं०पुं०) वह जो कान से कम सुनता हो, जो बिलकुल न सुनता हो।

बहराना-(हिं० क्रि०) भुलावा देना, बहकाना।

बहरियाना-(हिं०क्रि०) बाहर निकालना, अलग करना,।

बहरूपिया-(हिं०पुं०) वह जो नाना प्रकार के रूप धारण करता हो।

बहल-(हिं०पुं०) बैलसे खींची जाने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाली एक प्रकार की छतरीदार गाड़ी।
बहलना-(हिं०क्रि०) मनोरञ्जन होना चित्त प्रसन्न होना।
बहलाना-(हिं०क्रि०) भुलावा देना, बातों में लगाना।
बहलाव-(हिं०पुं०) मनोरंजन, प्रसन्नता।
बहलिया-(सं०नपुं०) देखो बहेलिया।
बहली-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की छतरीदार या परदेदार बैलगाड़ी, खड़खड़िया।
बहल्ला-(हिं०पुं०) प्रसन्नता, आनन्द।
बहसना-(हिं०क्रि०) वादाविवाद करना।
बहाना-(हिं०क्रि०) ढलकाना, लुढ़काना, पानी की धारा में डालना, खोना, गँवाना।
बहाव-(हिं०पुं०) प्रवाह, बहनेकी क्रिया या भाव, बहती हुई धारा।
बहिअर-(हिं०स्त्री०) स्त्री।
बहिन-(हिं०स्त्री०) भगिनी।
बहिनापा-(हिं०पुं०) देखो बहनापा।
बहिया-(हिं०स्त्री०) बाहु, बांह।
बहिर-(हिं०वि०) बहरा।
बहिरत-(हिं०अव्य०) बाहर।
बहिराना-(हिं०क्रि०) बाहर करना।
बहिर्गत-(सं०वि०) जो बाहर गया हो, अलग। **बहिर्भूमि**-(सं०स्त्री०) बस्ती के बाहर की भूमि; **बहिर्मुख**-(सं०वि०) पराङ्मुख, विरुद्ध।
बहिला-(हिं०वि०) बन्ध्या, बांझ।
बहिष्करण-(सं०नपुं०) बाहर करना; **बहिष्कार**-(सं०पुं०) निकालना, बाहर करना, दूर करना, हटाना।
बहिष्कृत-(सं०वि०) अलग किया हुआ। **बहिष्कृति**-(सं०स्त्री०) बाहर करने की क्रिया।
बही, बहीखाता-(हिं० स्त्री०) हिसाब किताब लिखने की पुस्तक।
बहीर-(हिं०स्त्री०) जनसमूह, भीड़भाड़,
बहु-(सं०वि०) एक से अधिक, अधिक, बहुक (वि०) झाड़ू देने वाला, बहुत से काम करने वाला।
बहुकरी-(सं०स्त्री०) मार्ज्जनी, झाड़ू।
बहुक्षम-(सं०वि०) अधिक सहने वाला
बहुगुण-(सं०वि०) अनेक गुणोंसे युक्त।
बहुगुना-(हिं०पुं०) चौड़े मुंह का एक गहरा पात्र जो अनेक कामों में लाया जाता है।
बहुज्ञ-(सं०वि०) बहुदर्शी।
बहुचारी-(सं०वि०) अनेक स्थानों में घूमने वाला।
बहुटनी (हि०स्त्री०) बांह पर पहरने का एक गहना।
बहुत-(हिं०वि०) आवश्यकता से अधिक अनेक।
बहुतक-(हिं०वि०) बहुत से, बहुतेरे।
बहुता-(सं०स्त्री०) अधिकता, बहुत्व।
बहुताइत-(सं०स्त्री०) देखो बहुतायत।
बहुताई-(हि० स्त्री०) अधिकता; **बहुतात, बहुतायत**-(हिं० स्त्री०) अधिकता।
बहुतेरा-(हिं०वि०) अधिक, बहुतसा, (क्रि०वि०) बहुत परिमाण में, बहुत प्रकार से; **बहुतेरे**-(हिं०वि०) संख्या में अधिक, बहुत से; **बहुत्व**-(सं० पुं०) आधिक्य, अधिकता।
बहुदर्शिता-(सं०स्त्री०) बहुत सी बातों का ज्ञान; **बहुदर्शी**-(सं०पुं०) जिसने बहुत कुछ देखा हो, अनुभवी।
बहुधा-(सं०अव्य०) प्रायः, अधिकतर;
बहुप्रकार-(सं०वि०) अनेक तरह का।
बहुप्रज-(सं०वि०) जिसके बहुत से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संतान हो; **बहुप्रद**-(सं०वि०) बहुत देनेवाला।

बहुभाषी-(सं०वि०) बहुत बोलने वाला, बकवादी, (पुं०) वह जो अनेक भाषा जानता हो।

बहुभुजक्षेत्र-(सं०पुं०) रेखा गणित में वह क्षेत्र जो चारों ओर अनेक रेखाओं से घिरा हों।

बहुमत-(सं०पुं०) बहुत से मनुष्यों का अलग अलग मत, बहुत से लोगों का मिलकर एक मत।

बहुमान-(सं०वि०) अधिक माननीय;

बहुमानी-(सं०वि०) अधिक आदरणीय;

बहुमान्य-(सं०वि०) जिसका बहुतसे लोग आदर करते हों।

बहुमूल्य-(सं०वि०) अधिक दाम का।

बहुरंगा-(हिं०वि०) चित्र विचित्र, अनेक रंग का, **बहुरंगी**-(हिं०वि०) अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला, बहुरूपिया।

बहुरना-(हिं० क्रि०) लौटना, फिर मिलना।

बहुराशिक-(सं० पुं०) गणित में एक त्रैराशिक द्वारा दूसरे त्रैराशिक की निर्दिष्ट राशि जानने की विधि।

बहुरि-(हिं०क्रि०वि०) इसके उपरान्त फिर से।

बहुरिया-(हिं०स्त्री०) नई बहू।

बहुरी-(हिं०स्त्री०) चवर्ण, चवेना।

बहुरूप-(सं०वि०) नाना रूप युक्त। **बहुरूपिया**-(हिं०पुं०) अनेक रूप धारण करने वाला मनुष्य।

बहुल-(सं०वि०) प्रचुर, अधिक।

बहुलता-(सं०स्त्री०) अधिकता।

बहुवचन-(सं०पुं०) व्याकरण की एक परिभाषा जिसमें एक से अधिक वस्तुओं के होने का बोध होता है।

बहुवर्ण-(सं०पुं०) अनेक वर्ण, अनेक जाति

बहुवादी-(सं०वि०) बहुत बोलने वाला।

बहुबार-(सं०पुं०) अनेक बार।

बहुवार्षिक-(सं०वि०) कई वर्षों तक बहोने वाला।

बहुविध-(सं०वि०) नाना प्रकार का।

बहुविस्तीर्ण-(सं०वि०) बहुत लंबा चौड़ा

बहुव्ययी-(सं०वि०) अतिव्ययी।

बहुव्रीहि-(सं०पुं०) एक प्रकार का समास जिसमें दो या दो से अधिक पदों के मिलने से जो समस्त पद बनता है वह किसी अन्य पद का विशेषण होता है।

बहुश्रुत-(सं०वि०) जिसने अनेक विद्वानों से भिन्न भिन्न शास्त्रों की बातें सुनी हो।

बहुसंख्यक-(सं०पुं०) गिनती में बहुत।

बहुसुत-(सं० वि०) जिसके बहुत सन्तान हों।

बहूँटा-(सं०पुं०) बाँह पर पहरने का एक आभूषण।

बहू-(हिं०स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू, नव-विवाहिता स्त्री, दुलहिन, पत्नी।

बहेतू-(हिं०वि०) इधर उधर मारा फिरने वाला, व्यर्थ घूमने वाला।

बहेलिया-(हिं०पुं०) चिड़ीमार व्याध।

बहोर-(हिं०पुं०) फेरा, पलटा, (क्रि० वि०) फिर से। **बहोरना**-(हिं०क्रि०) सटाना।

बहोरि-(हिं०अव्य०) पुनः, फिर से।

बह्वक्षर-(सं०वि०) अनेक अक्षरों का पद

बह्वाशी-(सं०वि०) बहुत भोजन करने वाला।

बाँ-(हिं०पुं०) गाय बैल के बोलने का शब्द।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाँक-(हिं०पुं०) बाँह पर पहरने का एक आभूषण। लोहे का शिकंजा; (वि०) टेढ़ा, घुमावदार, तिरछा, बांका

बाँकड़ा-(हिं०वि०) शूरवीर, साहसी,

बाँकड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका सुनहला या रुपहला फीता जो बादले और कलावत्तू से बनाया जाता है।

बाँकना-(हिं०क्रि०) टेढा करना या होना।

बाँकपन-(हिं०पुं०) तिरछापन, टेढ़ा—छवि, शोभा।

बाँका-(हिं०वि०) वीर, बहादुर, बनाठना, सुन्दर, छैला, टेढ़ा, तिरछा,

बांकुर, बांकुरा-(हिं०वि०) पतली बार का, टेढ़ा, बांका, चतुर।

बाँगड़-(हिं०वि०) मूर्ख।

बाँगा-(हिं०पुं०) बिना ओटी हुई रूई, कपास।

बाँगेर-(हिं०पुं०) पशु पक्षियों को फँसाने का जाल, फँदा।

बाँचना-(हिं०क्रि०) पढ़ना।

बाँछना-(हिं०क्रि०) अभिलाषा करना, इच्छा करना।

बाँछां-(हिं०स्त्री०) वाञ्छा, इच्छा।

बांछित-(हिं०वि०) इच्छा किया हुआ।

बांछी-(हिं०वि०) अभिलाषा या इच्छा करने वाला।

बाँझ-(हिं०स्त्री०) वन्ध्या स्त्री, वृक्ष।

बाँझपन, बाँझपना-(हिं० पुं०) बाँझ होने का भाव।

बाँट-(हिं०पुं०) बांटनेकी क्रिया या भाव, भाग। **बाँटना**-(हिं०क्रि०) किसी वस्तुके अनेक विभाग करके अलग अलग करना।

बाँटा-(हिं०पुं०) बांटने की क्रिया या भाव, विभाग।

बाँड़-(हिं०पुं०) दो नदियों के संगम के बीच की भूमि।

बाँड़ा-(हिं०पुं०) वह पशु जिसकी पूंछ कट गई हो, (वि) बिना पूंछ का।

बांड़ी-(हिं०स्त्री०) बिना पूंछ की गाय।

बाँदर-(हिं०पुं०) देखो बन्दर।

बांदा-(हिं०पुं०) किसी वृक्ष के ऊपर उगी हुई दूसरी वनस्पति।

बाँदी-(हिं०स्त्री०) दासी, लौंड़ी।

बाँदू-(हिं०पुं०) बंधुवा।

बाँध-(हिं०पुं०) मिट्टी ईंट या पत्थर का बना हुआ धूस जो जलाशय के किनारे पर पानी रोकने के लिये बनाया जाता है।

बाँधना-(हिं०क्रि०) गांठ लगाकर कसना पकड़ कर बन्द करना, ठीक करना, पानी का बहाव रोकने का प्रबंध करना नियत करना।

बाँधनू-(हिं०पुं०) उपक्रम, कल्पित वार्ता, मनगढंत।

बाँधव-(सं०पुं०) भाईबन्द।

बांबी-(हिं०स्त्री०) दीमक रहने का भीटा, सर्प की बिल।

बाँयाँ-(हिं०वि०) देखो बायाँ।

बाँस-(हिं०पुं०) तृण जातिकी एक प्रसिद्ध वनस्पति जिसके कांडों में थोड़ी थोड़ी दूर पर गाँठ होती है और गाँठों के बीच का स्थान पोला होता है, लाठा।

बाँसली-(हिं०स्त्री०) मुरली, बांसुरी।

बाँसा-(हिं०पुं०) नाकके ऊपर की हड्डी जो दोनों नयनों के बीच में रहती है,

बाँसुरी, बसुली-(हिं०स्त्री०) मुख से फूंककर बजाने का एक बाजा, बांसुली।

बाँह-(हिं०स्त्री०) बाहु, भुजा, बल,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शक्ति, सहारा, भरोसा, सहायक ।
बाँही-(हिं०स्त्री०) देखो बाँह ।
बा-(हिं०पुं०) जल, पानी ।
बाइ-(हिं०स्त्री०) देखो बाई ।
बाइसवां-(हि०वि०) देखो बाईसवां ।
बाई-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों का आदर सूचक शब्द ।
बाईस-(हिं०वि०)बीस और दो की संख्या का, (पुं०) बीस और दो की संख्या २२ । **बाईसवां**-(हिं०वि०) जो क्रम से बाईस के स्थान पर हो । **बाईसी**-(हिं०स्त्री०) बाईस वस्तुओं का अथवा बाईस पद्यों का समूह ।
बाउ-(हिं०पुं०) वायु, पवन, हवा ।
बाउर-(हिं०वि०) बावला, पागल ।
बाऊ-(हिं०पुं०) वायु, पवन; **बाएँ**-(हिं०क्रि०वि०) बाईं ओर ।
बकचाल-(हिं०वि०) बड़ा बकवादी,
बाकना-(हिं०क्रि०) बकबक करना ।
बाकल-(हिं०पुं०) देखो वल्कल ।
बाकुल-(हिं०पुं०) देखो वल्कल ।
बाखरि-(हिं०स्त्री०) देखो बखरी ।
बागडोर-(हिं०स्त्री०) घोड़े की लगाम में बाँधने की रस्सी ।
बागना-(हिं०क्रि०) चलना,फिरना, घूमना, टहलना ।
बाँगर-(हिं०पुं०) नदी के किनारे की वह ऊँची भूमि जहाँ तक नदी का पानी कभी नहीं पहुँचता ।
बागल-(हिं०पुं०) बक, बगला ।
बागुर-(हिं०पुं०) पशु या पक्षी फँसाने का जाल ।
बागेसरी-(हिं०स्त्री०) सरस्वती ।
बाघंबर-(हिं०पुं०) बाघकी खाल जो बिछाने के काम में आती है ।
बाघ-(हिं०पुं०) सिंह, शेर ।
बाचना-(हिं०क्रि०) सुरक्षित रखना, बचाना ।
बाचा-(हिं०स्त्री०) बोलने की शक्ति, वार्तालाप, बातचीत; **बांचाबंध**-जिसने किसी प्रकारकी प्रतिज्ञा की हो ।
बाछड़ा-(हिं०पुं०)देखो बछड़ा। **बाछा**-(हिं०पुं०) गाय का बच्चा, बछवा,
बाज-(हिं०पुं०) घोड़ा ।
बाजड़ा-(हिं०पुं०) देखो बाजरा ।
बाजन-(हिं०पुं०)देखो बाजा । **बाजना**-(हिं०क्रि०) बाजे आदि का बजना, लड़ना, भिड़ना ।
बाजरा-(हिं०पुं०) जोंधरी ।
बाजा-(हिं०पुं०)वाद्य, बजानेका कोई यन्त्र; **बाजा गाजा**-अनेक प्रकार के बाजों का समुदाय ।
बाजारू-(हिं०वि०) हाट संबंधी ।
बाजि-(हिं०पुं०)घोड़ा, पक्षी, बाण ।
बाजी-(हिं०पुं०) घोड़ा, बजनिया ।
बाजूबंद-(हिं०पुं०) बाजूबंद ।
बाझन-(हिं० स्त्री०) उलझन, बखेड़ा, झंझट । **बाझना**-(हिं०क्रि०) बझना ।
बाट-(हिं०पुं०) मार्ग, बटखरा, पत्थर का वह टुकड़ा जिससे सिल पर कोई वस्तु पीसी जाती है, (स्त्री०) बटन, बल; **बाटना**-(हिं०क्रि०) सिल पर बट्टे से कोई वस्तु पीसना ।
बाटिका-(सं०स्त्री०) उपवन, उद्यान, बगीचा, फुलवारी ।
बाटी-(हिं०स्त्री०) अंगारों या उपलों पर सेकी हुई गोली या पेड़े के आकार की रोटी, लिट्टी ।
बाड़-(हिं०स्त्री०) बाढ़, धार ।
बाड़ा-(हिं०पुं०) पशुशाला ।
बाड़ी-(हिं०स्त्री०) वाटिका, बारी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाढ़-(सं० नपुं०) वृद्धि, अधिकता,
बाढ़-(हिं०स्त्री०) बढ़ती, अधिक वर्षा के कारण नदी आदि के जल का वेग से बढ़ना, बंदूक तोप आदि का निरन्तर छूटना, व्यापार में होने वाला लाभ, तलवार छुरी आदि की धार, सान।
बाढ़ना-(हिं०क्रि०) देखो बढ़ना।
बाढ़ीवान-(हिं०पुं०) छुरी कैंची आदि पर सान रखने वाला।
बाण-(सं०पुं०) तीर, सायक, अग्नि। **बाणपथ**-(सं०पुं०) उतनी दूरी जहां तक जा सके। **बाणविद्या**-(सं० स्त्री०) बाण चलाने की विद्या।
बाणिज्य-(सं०पुं०) व्यापार।
बात-(हिं०स्त्री०) वचन, फैली हुई चर्चा, उपदेश, सीख, रहस्य, प्रतिज्ञा, मान मर्यादा, इच्छा, रीति, व्यवहार, प्रकृति, संबंध, अभिप्राय, विशेषता, बहाना, सन्देश, वार्तालाप।
बातचीत-(हिं०स्त्री०) वार्तालाप।
बाती-(हिं०स्त्री०) देखो बत्ती।
बातुल-(हिं०वि०) सनकी, बौड़हा।
बातूनिया, बातूनी-(हिं०वि०) बहुत बोलने वाला, बकवादी।
बाद-(हिं०पुं०) तर्क, वितर्क, विवाद, झंझट, (अव्य०) निरर्थक।
बादना-(हिं०क्रि०) बकवाद करना।
बादर-(हिं०पुं०) बदल, मेघ।
बादरिया-(हिं०स्त्री०) देखो बदल।
बादल-(हिं०पुं०) मेघ।
बादला-(हिं०पुं०) सोने या चांदी का महीन चिपटा किया हुआ तार जो कलाबत्तू बनाने के काम में आता है।
बादहवाई-(हिं०क्रि०वि०) व्यर्थ।
बादाम-(हिं०पुं०) जामुन आदि वृक्षों की तरह का एक पेड़ जिसका तना मोटा होता है, इसका फल मेवों में गिना जाता है।
बादामी-(हिं०वि०) बादाम के छिलके के रंग का, अण्डाकार।
बादि-(हिं०अव्य०) व्यर्थ।
बादिया-(हिं०पुं०) पेंच बनाने का लोहारों का एक अस्त्र।
बादुर-(हिं०पुं०) शत्रु, प्रतिद्वन्द्वी। बादुर-(हिं०पुं०) चमगीदड़।
बाध-(सं०पुं०) प्रतिबन्ध, रुकावट, उपद्रव, कष्ट, पीड़ा, कठिनता। **बाधक**-(सं०वि०) प्रतिबन्धक, दुःखदायी। **बाधकता**-(सं०स्त्री०) बाधक का भाव या धर्म, बाधा।
बाधन-(सं०नपुं०)कष्ट, पीड़ा बाधा। **बाधना**-(हिं०क्रि०) बाधा डालना, विघ्न करना।
बाधा-(सं०स्त्री०) कष्ट, पीड़ा, विघ्न, संकट, अड़चन।
बाधित-(सं०वि०) ग्रस्त, असङ्गत, जिसको सिद्ध करने में रुकावट हो।
बाध्य-(सं०वि०) रोका जाने वाला।
बान-(हिं०पुं०) बाण, तीर, एक प्रकार की अग्निक्रीड़ा जो तीर के आकार की होती है, अभ्यास, बनावट, (पुं०) कान्ति, रंग।
बानइत-(हिं०वि०) बाण चलाने वाला योद्धा, वीर।
बानक-(हिं०स्त्री०) वेष, भेस।
बानगी-(हिं०स्त्री०) किसी माल का वह अंश जो गाहक को दिखलाने के लिये दिया जाता है।
बानर-(हिं०पुं०) बन्दर।
बानबे-(हिं०वि०) नब्बे और दो की संख्या का, (पुं०) नब्बे और दो की संख्या ९२।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाना-(हिं०पुं०)वस्त्र, पहिरावा, भाला के आकार का एक शस्त्र, कपड़े की बुनावटमें वे तागे जो ताने जाते हैं, भेस, स्वभाव, बुनाई।

बानात-(हिं०स्त्री०) देखो बनात।

बानि-(हिं०स्त्री०) बनावट, अभ्यास, वचन।

बानिक-(हिं०स्त्री०) वेश, शृंगार, सजधज।

बानिया-(हिं०स्त्री०)बनिया,व्यापारी।

बानी-(हिं०स्त्री०) वचन, प्रतिज्ञा, साधु महात्मा का उपदेश, वाणिज्य।

बानैत-(हिं०पुं०) बाण चलाने वाला, योद्धा, सैनिक।

बान्धव-(सं०पुं०) भाई, बन्धु, नातेदार मित्र।

बाप-(हिं०पुं०) पिता, जनक। **बाप-दादा**-पूर्व पुरुष, पुरखा। **बाप माँ**-पालन या रक्षा करने वाला।

बापी-(हिं०स्त्री०) देखो बापी, बावली

बापुरा-(हिं०वि०)तुच्छ,दीन, बेचारा।

बापू-(हिं०पुं०) देखो बाबू, बाप।

बाबरी-(हिं०स्त्री०) सिर पर के लंबे बाल।

बाबा-(हिं०पुं०) पिता, बाप, पितामह, दादा, वृद्ध पुरुष, एक आदर सूचक, श द जो साधु सन्यासियों के लिये प्रयोग होता है, लड़कों के लिये प्यार का शब्द।

बाबू-(हिं०पुं०)एक आदर सूचक शब्द, भाला आदमी, पिता के लिये संबोधन, छोटे राजा के बन्धु बान्धवों के लिये प्रयुक्त शब्द।

बाभन-(हिं०पुं०) ब्राह्मण।

बाम-(हिं०पुं०) देखो वाम।

बामी-(हिं०स्त्री०) देखो बाँबी।

बायँ-(हिं०वि०) बायाँ, खाली, चूका हुआ, लक्ष्य पर न बैठा हुआ।

बाय-(हिं०स्त्री०) वायु, हवा।

बायक-(हिं०पुं०)दूत, बतलाने वाला।

बायन-(हिं०पुं०) भेंट, उपहार।

बायबी-(हिं०वि०)अपरिचित, बाहरी।

बायव्य-(हिं०पुं०) देखो वायव्य।

बायल-(हिं०वि०)जो दाँव खाली जाय।

बायस-(हिं०पुं०) देखो वायस।

बायाँ-(हिं०वि०) प्रतिकूल, विरुद्ध, बायें हाथ से बजाने का तबला।

बायें-(हिं०क्रि०वि०) विपरीत, विरुद्ध, बाईं ओर।

बारंबार-(हिं० क्रि० वि०) पुनः पुनः, लगातार।

बार-(हिं०पुं०) द्वार, आश्रय, स्थान, (स्त्री०) काल, समय, अतिकाल, (पुं०) घेरा, रोक; बारबार-फिरफिर; (हिं०पुं०) देखो बाल।

बारजा-(हिं०पुं०) कोठा, अटारी, घर के आगे की दालान।

बारतीय-(हिं०स्त्री०) देखो बारस्त्री, वेश्या।

बारन-(हिं०पुं०) देखो वारण, बालना, (हिं०क्रि०) मन करना, जलाना, जोंधरी बाजरे आदि के दाने अलगाना।

बारबधू, बाधवघूटी-(हिं०स्त्री०)वेश्या, रंडी।

बारह-(हिं०वि०) दस और दो की संख्या का, (पुं०) दस और दो की संख्या १२।

बारहखड़ी-(हिं०स्त्री०) वर्णमाला का वह अंश जिसमें प्रत्येक व्यंजन में अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ, अं, अः इन बारह स्वरों को मात्रा के रूप में लगातार बोलते या लिखते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारहदरी-(हिं०स्त्री०) चारों ओर से खुला हुआ हवादार बैठक।
बारहमासी-(हिं०वि०) सब ऋतुओं में फलने फूलने वाला।
बारहवाँ-(हिं०वि०) जो बारहवें स्थान में हो।
बारहसिंघा-(हिं०पुं०) हरिन की जाति का एक चौपाया जिसकी सींघ में कई एक शाखा निकली रहती है।
बारा-(हिं०वि०) बाल्यावस्था का, जो सयाना न हो, (पुं०) महीन तार खींचने की जन्ती।
बारात-(हिं० स्त्री०) वरयात्रा, वह समाज जो वर के साथ उसको ब्याहने के लिये वधू के घर ले जाता है।
बारादरी-(हिं०स्त्री०) देखो बारहदरी
बारिधर-(हिं०पुं०) मेघ, बादल।
बारिधि-(हिं०पुं०) देखो वारिधि।
बारिवाह-(हिं०पुं०) बादल।
बारी-(हिं०स्त्री०) तट, किनारा, धारा, बाढ़, बगीचे खेत आदि के चारों ओर बना हुआ घेरा, किसी पात्र की कोर, अवसर, पारी, खिड़की, झरोखा वह स्थान जहाँ वृक्ष लगाये गये हों,
बारीस-(हिं०पुं०) समुद्र।
बारुणी-(हिं०स्त्री०) देखो वारुणी।
बारू-(हिं०पुं०) देखो वालू।
बाल-(सं०पुं०) बालक, लड़का, लोभ, केश, कुन्तल, (वि०) वह जो पूरी बाढ़ पर न पहुँचा हो, (स्त्री०) कुछ अन्न के पौधों के डंठल का अग्रभाग जिसमें दानों के गुच्छे लगे रहते हैं।
बालक-(सं०पुं०) पुत्र, शिशु, लड़का, थोड़ी वय का बच्चा, अबोध या अनजान मनुष्य, हाथी या घोड़े का बच्चा, केश, बाल,। **बालकता**-(सं० स्त्री०) लड़कपन। **बालकताई**-(हिं० स्त्री०) बाल्यावस्था, लड़कपन।
बालकाल-(सं०पुं०) बाल्यावस्था।
बालकेलि-(सं० स्त्री०) लड़कों का खेल। **बालखोरा**-(हिं०पुं०) सिर के बाल झड़ने का रोग।
बालगोपाल-(सं०पुं०) परिवार के बच्चे। **बालचरित**-(सं०नपुं०) लड़कों का खिलवाड़।
बालटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की डोलची जिसका नीचे का घेरा सकरा तथा ऊपर का चौड़ा होता है।
बालधि-(हिं०स्त्री०) पुंछ।
बालना-(हिं०क्रि०) प्रज्वलित करना, जलाना।
बालपन-(हिं०पुं०) बाल्यावस्था, लड़कपन
बालपुष्पी-(सं०स्त्री०) यूथिका, जूही।
बालबच्चे-(हिं०पुं०) सन्तान।
बालबुद्धि-(सं०स्त्री०) बालकों के समान बुद्धि। **बालबोध**-(सं०स्त्री०) देवनागरी लिपि। **बालब्रह्मचारी**-(सं०पुं०) वह जिसने बाल्यावस्था से ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हो।
बालभाव-(सं०पुं०) लड़कपन।
बालम-(हिं०पुं०) पति, स्वामी, प्रेमी।
बाललीला-(सं०स्त्री०) लड़कों का खेल।
बालविधु-(सं० पुं०) अमावस्या के बाद के दिन का नवीन चन्द्रमा।
बालसूर्य-(सं०नपुं०) उदय काल का सूर्य।
बाला-(सं०स्त्री०) बारह वर्ष से सोलह वर्ष तक की स्त्री, एक प्रकार का आभूषण
बालादित्य-(सं०पुं०) तुरत का उदय हुआ सूर्य।
बालापन-(हिं०पुं०) बचपन, लड़कपन।
बालार्क-(सं०पुं०) प्रातःकाल का सूर्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालिका-(सं० स्त्री०) कन्या, पुत्री।
बालिश-(सं०वि०) मूर्ख, अवोध ।
बाली-(हि०स्त्री०) कान में पहिरने का एक प्रसिद्ध आभूषण ।
बालुका--(सं० स्त्री०)वालू । **बालुका यन्त्र**-वह यन्त्र जिसमें औषधि फूंकने के लिये वालू भरी हाँडी में रक्खी जाती है
बालू-(हिं०पुं०) पत्थर का वह महीन चूर्ण या कण जो वर्षा के जल के साथ पहाड़ पर से आता है और नदियों के किनारों पर जम जाता है, रेणुका, रेत,
बालूदानी-(हिं०स्त्री०) वालू रखने की झंझरीदार छोटी डिबिया जिसमें से वालू गिराकर मसि (रोशनाई) आदि सुखाई जाती हैं ।
बालूसाही-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई ।
बालेन्दु-(सं०पुं०) नया उदित चन्द्र ।
बालेय-(सं०पुं०) रासभ, गदहा ।
बाल्टी-(हिं०स्त्री०) देखो वालटी ।
बाल्य-(सं०वि०) बालक संबंधी, वचवपन का ।
बाल्यावस्था-(सं०स्त्री०) लड़कपन ।
बावड़ी-(हिं०स्त्री०) बावली, छोटा; तालाब ।
बावन-(हिं०वि०) पचास और दो की संख्या का (पुं०) पचास और दो की संख्या ५२ ।
बावना-(हिं०वि०) देखो बौना ।
बावभक-(हि०स्त्री०) झक, पागलपन ।
बावरा-(हिं०वि०) देखो बावला ।
बावरी-(हिं०स्त्री०) देखो बावली ।
बावल-(हिं०पुं०) अन्धड़, आँधी ।
बावला-(हिं०वि०) विक्षिप्त, पागल ।
बावलापन-(हिं०पुं०)झक, पागलपन।
बावली-(हिं०स्त्री०) सीढ़ियाँ लगा हुआ छोटा गहरा तालाव या चौड़े मुंह का कुआँ ।
बावां-(हिं०वि०) बाईं ओर का, बायाँ।
बाष्प-(हि०पुं०) भाफ ।
बास-(हिं० पुं०) निवास, रहने का स्थान, गन्ध, महक ।
बासठ-(हिं०वि०) साठ और दो की संख्या का, (पुं०) साठ और दो की संख्या ६२ । **बासठवाँ**-वह जो क्रम से वासठ के स्थान पर हो ।
बासदेव-(हिं०पुं०) देखो वासुदेव।
बासन-(हिं०पुं०) पात्र, भांड ।
बासना-(हिं०स्त्री०) इच्छा, चाह । (क्रि०) सुवासित करना, मँहकाना ।
बासर-(हिं०पुं०) वासर, दिन, प्रातः-काल ।
बाससी-(सं०पुं०) वस्त्र कपड़ा ।
बासा-(हि०पुं०) वह स्थान जहाँ पकी हुई रसोई दाम देने पर मिलती है ।
बासित-(हिं० वि०) सुगन्धित किया हुआ ।
बासी-(हिं०वि०) देर का अथवा एक दिन पहले का बना हुआ, जो हरा भरा न हो, सूखो या कुम्हलाया हुआ, कुछ देर तक रक्खा हुआ ।
बासौंधी-(हिं०स्त्री०) देखो बसौंधी ।
बाहना-(हिं०क्रि०) ढोना, लादना, या चढ़ाकर ले जाना, फेंकना, चलाना ।
बाहनी-(हिं०स्त्री०) सेना ।
बाहर-(हिं०क्रि०वि०) किसी निश्चित या कल्पित सीमा से हट कर, सिवाय, अलग, प्रभाव या अधिकार से पृथक्, किसी दूसरे स्थान पर, दूसरे नगर में
बाहरी-(हिं०वि०) बाहर का, पराया, जो घर का न हो, जो बाहर से देखा जावे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाहाँजोरी(हिं० क्रि० वि०) भुजा से भुजा अथवा हाथ से हाथ मिलाकर।
बाहिनी-(हिं०स्त्री०) सेना, नदी; यान।
बाहिर-(हिं०क्रि०वि०) देखो बाहर।
बाहीं-(हिं०स्त्री०) देखो बाँह, बाहु।
बाहु-(सं०पुं०) भुजा, बाँह।
बाहुज्या-(सं०पुं०) गणित की भुजज्या।
बाहुत्राण-(सं०नपुं०) चमड़े लोहे आदि का बना हुआ हस्तत्राण जो युद्ध में हाथों की रक्षा के लिये पहना जाता है।
बाहुमूल-(सं०नपुं०) कन्धे और बाँह का जोड़, काँख। **बाहुयुद्ध**-(सं०नपुं०) मल्लयुद्ध।
बाहुल्य-(सं०नपुं०)आधिक्य, अधिकता।
बाहुवीर्य-(सं०नपुं०) बाहुबल, पराक्रम।
बाहुशिखर-(सं०पुं०) स्कन्ध, कन्धा।
बाह्य-(सं०नपुं०)भार ढोने वाला पशु; (वि०) ढोने वाला, बाहरी, बाहर का।
बिंग-(हिं०पुं०) देखो व्यंग।
बिंजन-(हिं०पुं०) देखो व्यंजन।
बिन्द-(हिं०पुं०) पानी का बूंद, देखो बिन्दी।
बिंदा-(हिं०स्त्री०) माथे पर का गोल बड़ा टीका, **बिंदी**-(हिं०स्त्री०) शून्य, सुन्ना, माथे पर लगाने का गोल छोटा टीका, इस आकार का कोई चिन्ह। **बिंदुका**(हिं०पुं०) बिन्दी, गोल, टीका। **बिंदुरी, बिंदुली**-(हिं०स्त्री०)माथे पर का गोल टीका, टिकुली।
बिंधना-(हिं०क्रि०) छेदा जाना, उलझना।
बिंब-(हिं०पुं०) प्रतिबिंब, छाया।
बि-(हिं०वि०) दो, एक और एक।
बिअहुता-(हिं०वि०) विवाह संबंधी, जिसका विवाह हो गया हो।
बिआधि-(हिं०स्त्री०) देखो व्याधि।
बिआधु-(हिं०पुं०) देखो व्याध।
बिआना-(हिं०क्रि०) पशुओं का बच्चा देना, जनना।
बिआपी-(हिं०वि०) देखो व्यापी।
बिओग, बिओगी-(हिं०वि०) देखो वियोग, वियोगी।
बिकट-(हिं०वि०) देखो विकट।
बिकना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ का मूल्य लेकर दिया जाना, बेंचा जाना,
बिकरम-(हिं०पुं०) देखो विक्रमादित्य।
बिकरार, बिकराल-(हिं०वि०) डरावना, भयानक।
बिकल-(हिं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ। **बिकलाई**-(हिं०स्त्री०) व्याकुलता। **बिकलाना**-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना, घबड़ाना।
बिकवाना-(हिं०क्रि०) बेचने का काम दूसरे से कराना।
बिकसना-(हिं०क्रि०) खिलना, फूलना बहुत प्रसन्न होना। **बिकसाना**-(हिं० वि०) विकसित कराना, खिलाना, प्रफुल्लित करना, प्रसन्न करना।
बिकाऊ-(हिं० वि०) बिकने योग्य, बिकने वाला।
बिकाना-(हिं०क्रि०) देखो बिकना।
बिकार-(हिं०वि०) देखो विकार, **बिकारी**-(हिं० वि०) विकृत रूपवाला, हानिकारक।
बिकास-(हिं०पुं०) देखो विकास।
बिक्री-(हिं० स्त्री०) बेचे जाने की क्रिया या भाव।
बिख-(हिं०पुं०) विष, गरल।
बिखम-(हिं०पुं०) देखो विषम।
बिखरना-(हिं०क्रि०) छितराना।
बिखराना-(हिं०क्रि०) बिखेरना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिखाद-(हिं०पुं०) देखो विषाद।
बिखान-(हिं०पुं०) देखो विषाण।
बिखेरना-(हिं०क्रि०) छितराना।
बिग-(हिं०पुं०) भेड़िया।
बिगड़ना-(हिं०क्रि०) असली रूप रंग या गुण का नष्ट हो जाना, क्रुद्ध होना, विरोधी होना, पशु आदि का अपने रक्षक की आज्ञा से बाहर होना, बुरी अवस्था को प्राप्त होना, लड़ाई झगड़ा होना, व्यर्थ व्यय होना।
बिगड़ैल-(हिं०वि०) थोड़ी बात पर क्रुद्ध होने वाला, हठ करने वाला।
बिगरना-(हिं०क्रि०) देखो बिगड़ना।
बिगराइल-(हिं०वि०) देखो बिगड़ैल।
बिगलित-देखो विगलित। **बिगसना**-(हिं०क्रि०) देखो विकसना।
बिगहा-(हिं०पुं०) देखो बीघा।
बिगाड़-(हिं०पुं०) वैमनस्य, लड़ाई झगड़ा, बुराई। **बिगाड़ना**-(हिं०क्रि०) कुमार्ग में लगाना, बुरी अवस्था में लाना, व्यर्थ व्यय करना।
बिगार-(हिं०पुं०) देखो बिगाड़।
बिगारी-(हिं०स्त्री०) देखो बेगारी।
बिगास-(हिं०पुं०) देखो विकास।
बिगासना-(हिं०क्रि०) विकसित करना।
बिगुन-(हिं०वि०) गुण रहित।
बिगुर-(हिं०वि०) बिना गुरु का।
बिगूचन-(हिं०स्त्री०) असमंजस, कठिनता। **बिगूचना, बिगूतना**-(हिं०क्रि०) संकोच में पड़ना।
बिगोना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, व्यग्र करना, छिपाना।
बिग्रह-(हिं०पुं०) देखो विग्रह।
बिघटना-(हिं०क्रि०) बिगाड़ना।
बिघन-(हिं०पुं०) देखो विघ्न।
बिच-(हिं०वि०) देखो बीच।
बिचकना-(हिं०क्रि०) भड़कना।
बिचकाना-(हिं०क्रि०) मुँह चिढ़ाना।
बिचच्छन-(हिं०वि०) देखो विचक्षण।
बिचलना-(हिं०क्रि०) विचलित होना, कोई बात कह कर मुकर जाना।
बिचला-(हिं०वि०) बीच का, बीच वाला।
बिचलाना-(हिं०क्रि०) विचलित करना।
बिचवान, बिचवानी-(हिं०पुं०) मध्यस्थ,
बिचहुत-(हिं०पुं०) सन्देह, दुबधा, अन्तर।
बिचारना-(हिं०क्रि०) विचार करना
बिचारमान-(हिं०वि०) विचार करने वाला, विचारने योग्य।
बिचारा-(हिं०वि०) देखो बेचारा।
बिचारी-(हिं०वि०) विचार करने वाला।
बिचाल-(हिं०पुं०) अन्तर।
बिचेत-(हिं०वि०) अचेत, मूर्छित।
बिचौहा-(हिं०पुं०) मध्यस्थ।
बिच्छी, बिच्छू-(हिं०पुं०) एक छोटा विषैला कीड़ा जिसकी पूँछ में डंक होता है जिसमें विष रहता है, एक प्रकार की घास जिसके छू जाने से बिच्छू के काटने के समान जलन और पीड़ा उत्पन्न होती है।
बिच्छेप-देखो विक्षेप।
बिछना-(हिं०क्रि०) फैलाया जाना।
बिछलन-(सं०पुं०) फिसलन।
बिछलाना-(हिं०क्रि०) फिसलाना।
बिछवाना-(हिं०क्रि०) बिछाने का काम दूसरे से कराना।
बिछाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को भूमि पर कुछ दूर तक फैला देना।
बिछावन, बिछायत-(हिं०पुं०) बिछौना।
बिछिया-(हिं०स्त्री०) पैर की अंगुलियों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में पहिरने का एक प्रकार का छल्ला ।
बिछिप्त-(हिं०वि०) देखो विक्षिप्त ।
बिछुआ-(हिं०पुं०) पैर में पहिरने का एक प्रकार का गहना, एक प्रकार की छोटी छुरी ।
बिछुड़न-(हिं०स्त्री०) बिछुड़ने या अलग होने का भाव, वियोग । **बिछुड़ना**-(हिं० क्रि०) दो प्रेमियों का परस्पर वियोग होना ।
बिछुरना-(हिं०क्रि०) देखो बिछुड़ना ।
बिछुरनि-(हिं०स्त्री०) बिछुड़न ।
बिछुरंता-(हिं०पुं०) बिछुड़ने वाला ।
बिछूना-(हिं०पुं०) वह जो बिछुड़ गया हो ।
बिछोई-(हिं०पुं०) वियोगी ।
बिछोड़ा-(हिं०पुं०) विछोह ।
बिछोय, बिछोह-(हिं०पुं०) वियोग, विरह ।
बिछोयना-(हिं०क्रि०) वियोग करना ।
बिछौना-(हिं०पुं०) बिछावन, बिस्तर ।
बिजड़-(हिं० स्त्री०) खड्ग, तलवार ।
बिजन, बिजना-(हिं०पुं०) व्यजन, पंखा, (वि०) एकान्त ।
बिजली-(हिं०स्त्री०) वह शक्ति जिसके कारण वस्तुओं में आकर्षण और अपकर्षण होता है और जिससे कभी कभी ताप और प्रकाश भी उत्पन्न होता है, विद्युत, वादलों के टकराने तथा रसायनिक क्रिया से उत्पन्न होने वाला वह प्रकाश जो आकाश में कभी कभी देख पड़ता है, कान में पहिरने का एक गहना, गले में पहिरने का एक आभूषण ।
बिजाती-(हिं०वि०) दूसरी जाति का, दूसरी तरह का ।
बिजान-(हिं०वि०) अज्ञान ।
बिजायठ-(हिं०पुं०) वाजूवन्द ।
बिजुरी-(हिं०स्त्री०) देखो विजुली ।
बिजूका, बिजूखा-(हिं०पुं०) विभीषिका, पशु पक्षियों के डराने के लिये खेत में गाड़ा हुआ पुतला ।
बिजोग-(हिं०पुं०) वियोग ।
बिजोरा-(हिं०वि०) निर्बल, बलहीन ।
बिज्जु-(हिं०स्त्री०) विजली, विद्युत् ।
बिज्जुपात-(हिं०पुं०) विजली का गिरना । **बिज्जुल**-(हिं०स्त्री०) विजली ।
बिझरा-(हिं०पुं०) एक में मिला हुआ मटर, चना, गेहूँ और जव ।
बिझुकना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना ।
बिझुकाना-(हिं० क्रि०) भड़काना, डराना ।
बिटरना-(हिं०क्रि०) घंघोलना ।
बिटिनियां, बिटिया-(हिं० स्त्री०) वेटी, पुत्री ।
बिठलाना-(हिं०क्रि०) देखो बैठाना ।
बिठाना-(हिं०क्रि०) बैठाना ।
बिड़ब-(हिं०पुं०) विडम्ब, आडम्बर ।
बिड़बना-(हिं०पुं०) निन्दा, उपहास, हँसीठट्ठा ।
बिडर-(हिं०वि०) निर्भय, ढीठ ।
बिडरना-(हिं० क्रि०) तितर बितर होना । **बिडराना**-(हिं०क्रि०) तितर बितर करना ।
बिड़वना-(हिं०क्रि०) तोड़ना ।
बिडारना-(हिं०क्रि०) डरा कर भगाना ।
बिडाल-(सं०पुं०) बिलाव, बिल्ली ।
बिड़ौजा-(सं०पुं०) इन्द्र का एक नाम ।
बिढ़तो-(हिं०पुं०) लाभ ।
बिढ़ंबना-(हिं०क्रि०) एकत्रित करना ।
बित-(हिं०पु०) धन, द्रव्य ।
बितनाना-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बितना-(हिं०पुं०) बित्ता ।
बितरना-(हिं०क्रि०) बाँटना।
बितवना-(हिं०क्रि०) बिताना ।
बिता-(हिं०पुं०) देखो बित्ता ।
बिताना-(हिं०क्रि०) समय आदि व्यतीत करना।
बिताल-(हिं०पुं०) देखो वैताल ।
बितावना-(हिं०क्रि०) देखो बिताना ।
बितीतना-(हिं०क्रि०) व्यतीत होना ।
बितु-(हिं०पुं०) देखो वित्त ।
बित्त-(हिं०पुं०) वित्त, धन ।
बित्ता-(हिं०पुं०) हाथ की अंगुलियों को फैला कर अंगूठे के सिरे तक की पूरी नाप ।
बिथकना-(हिं०क्रि०) चकित होना ।
बिथरना-(हिं०क्रि०) छितराना, खिल जाना ।
बिथा-(हिं०स्त्री०)देखो व्यथा, पीड़ा ।
बिथारना-(हिं०क्रि०) बिखेरना ।
बिथित-(हिं०वि०) देखो व्यथित ।
बिथोरना-(हिं०क्रि०) देखो बिथरना।
बिदकना-(हिं०क्रि०) फटना, चिरना ।
बिदकाना-(हिं० क्रि०)विदीर्ण करना, फाड़ना ।
बदरन-(हिं०स्त्री०) दरार, फटन, (वि०) फाड़ने या चीरने वाला ।
बिदलना-(हिं०क्रि०) दलित करना ।
बिदला-(सं०वि०) जिसमें पत्ते न हों ।
बिदा-(अ०स्त्री०) प्रस्थान, जाने की आज्ञा ।
बिदाई-(हिं०स्त्री०) बिदा होने का भाव या क्रिया, बिदा होने की आज्ञा ।
बिदारना-(हिं०क्रि०) फाड़ना, नष्ट करना ।
बिदुराना-(हिं०क्रि०) मुसकराना ।
बदुरानी-(हिं०स्त्री०) मुसकराहट ।
बिदूषना-(हिं०क्रि०) कलंक या दोष लगाना ।
बिदेस-(हिं०पुं०) अन्य देश, परदेश ।
बिदोख-(हिं०पुं०) वैमनस्य, वैर, शत्रुता ।
बिदोरना-(हिं०क्रि०) ओंठ चलाना ।
बिधँसना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना ।
बिध-(हिं०पुं०) ब्रह्मा, प्रकार, तरह, आय व्यय का लेखा ।
बिधना-(हिं०पुं०) विधि, बिधाता, ब्रह्मा ।
बिधवपन-(हिं०पुं०) वैधव्य, रड़ापा
बिधवा-(हिं०स्त्री०) विधवा ।
बिधाँसना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना ।
बिधाना-(हिं०क्रि०) देखो बिंधाना ।
बिधानी-(हिं०पुं०) रचने या बनाने वाला ।
बिधि-देखो विधि ।
बिधिना-(हिं०स्त्री०) देखो बिधना ।
बिधुंतुद-(हिं०पुं०) राहू ।
बिधुसना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना ।
बिधु-देखो विधु ।
बिन-(हिं०अव्य०) विना ।
बिनई-(हिं०वि०) देखो विनयी ।
बिनऊ-(हिं०स्त्री०) देखो विनय ।
बिनति, बिनती-(हिं०स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना ।
बिनन-(हिं०स्त्री०) बुनने की क्रिया, बुनावट, चुनकर निकाला हुआ कूड़ा करकट ।
बिनना-(हिं०क्रि०) छोटे छोटे पदार्थों को एक एक करके अलग करना, देखो बुनना ।
बिनय-(हिं०पुं०) देखो विनय ।
बिनवना-(हिं०क्रि०) प्रार्थना करना ।
बिनसना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करना । **बिनसाना**-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना ।
बिना-(हिं०अव्य०) छोड़ कर ।
बिनाई-(हिं०स्त्री०) बीनने चुनने की क्रिया या भाव, इस कार्य का शुल्क ।
बिनाती-(हिं०स्त्री०) देखो बिनती ।
बिनाना-(हिं०क्रि०) देखो बुनना ।
बिनानी-(हिं०वि०) अज्ञानी ।
बिनावट-(हिं०स्त्री०) देखो बुनावट ।
बिनासना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना ।
बिनि, बिनु-(हिं०अव्य०) बिना।
बिनै-(हिं०स्त्री०) देखो विनय ।
बिनौला-(हिं०पुं०) कपास का बीज ।
बिन्दु-(हिं०पुं०) देखो विन्दु, बूंद ।
बिपच्छ-(हिं०पुं०)विपक्ष,शत्रु, (वि०) विपरीत, प्रतिकूल, विरुद्ध ।
बिपच्छी-(हिं०पुं०) शत्रु, विरोधी ।
बिपत-(हिं०स्त्री०) देखो विपत्ति ।
बिपद, बिपत्ति-(हिं०स्त्री०) देखो विपत्ति ।
बिफरना-(हिं०क्रि०)विद्रोही होना ।
बिपरीत-(हिं०वि०) प्रतिकूल ।
बिबरन-(हिं०वि०) जिसका रंग विगत गया हो, देखो विवरंण ।
बिबस-(हिं०क्रि०) विवश, पराधीन ।
बिबहार-(हिं०पुं०) देखो व्यवहार ।
बिबाक-(हिं०वि०) चुकता ।
बिभावरी-(हिं०स्त्री०) रात्रि ।
बिबाहना-(हिं०क्रि०) विवाह करना ।
बिभु, बिमान-देखो विभु, विमान ।
बिबि-(हिं०वि०) दो ।
बिमन-(हिं०वि०)अति दुखी, चिन्तित, उदास ।
बिमानी-(हिं०वि०) मान रहित ।
बिमोहना-(हिं०क्रि०) मोहित करना ।
बिमौरा-(हिं०पुं०) वल्मीक, बाँबी ।
बिम्ब-(सं०नपुं०) प्रतिविम्ब, छाया ।
बिय-(हिं०वि०) युग्म, दो, दूसरा ।
बियत-(हिं०पुं०) बियुत्, आकाश ।
बिया-(हिं०पुं०) बीज, (वि०) अन्य, दूसरा । **बियाज**-(पुं०) देखो व्याज ।
बियाधा-(हिं०पुं०) देखो व्याधा ।
बियाधि-(हिं०स्त्री०) देखो व्याधि ।
बियान-(हिं०पुं०) प्रसव ।
बियाना-(हिं०क्रि०) पशुओं का बच्चा देना ।
बियापना-(हिं०क्रि०) देखो व्यापना ।
बियारी, बियालू-(हिं० स्त्री०) देखो ब्यालू ।
बियाह-(हिं०पुं०) विवाह, व्याह ।
बियोग-देखो वियोग ।
बिरकत-देखो विरक्त ।
बिरङ्ग-(हिं०वि०) कई रंगों का ।
बिरचना-(हिं०क्रि०) बनाना ।
बिरंचि-(हिं०पुं०) ब्रह्मा ।
बिरछ-(हिं०पुं०) देखो वृक्ष ।
बिरज-(हिं०वि०) निर्दोष ।
बिरझना-(हिं०क्रि०) झगड़ा करना ।
बिरतंत-(हिं०पुं०) देखो वृत्तान्त ।
बिरताना-(हिं०क्रि०) बांटना ।
बिरथा-(हिं०वि०) वृथा, व्यर्थ, निरर्थक ।
बिरद-(हिं०पुं०) बड़ाई, यश ।
बिरदैत-(हिं०वि०) प्रसिद्ध, नामी ।
बिरध-(हिं०वि०) देखो वृद्ध ।
बिरधाई-(हिं०स्त्री०)वृद्धावस्था, बुढ़ापा
बिरधापन-(हिं०पुं०) वृद्धावस्था ।
बिरमना-(हिं०क्रि०) विराम करना, सुस्ताना, ठहरना, **बिरमाना**-(हिं० क्रि०) व्यतीत करना, बिताना ।
बिरला-(हिं०वि०) कोई कोई, इक्का दुक्का ।
बिरवा-(हिं०पुं०) वृक्ष, पौधा, चना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिरवाही-(हिं०स्त्री०) छोटे छोटे पौधों का कुंज।
बिरषभ-(हिं०पुं०) देखो वृषभ।
बिरसन-(हिं०पुं०) विष, गरल।
बिरहा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की गीत।
बिरही-(हिं०पुं०) वियोग से पीड़ित पुरुष। **बिराग**-(हिं०पुं०) विरक्ति।
बिराजना-(हिं० क्रि०) शोभित होना, शोभा देना।
बिरान, बिराना-(हिं०वि०) दूसरा।
बिराना-(हिं०क्रि०) मुंह चिढ़ाना।
बिरिछि-(हिं०पुं०) देखो वृक्ष।
बिरियां-(हिं०स्त्री०) समय, बार।
बिरिया-(हिं०स्त्री०) कान में पहिरने का कटोरी के आकार का एक गहना।
बिरी-(हिं०स्त्री०) देखो बीड़ी, बीड़ा।
बिरुझना-(हिं०क्रि०) उलझना, झगड़ना।
बिरुद-(हिं०पुं०) प्रशंसा।
बिरुधाई-(हिं०स्त्री०) बुढ़ापा।
बिरूप-(हिं०पुं०) कुरूप।
बिरोधना-(हिं०पुं०) विरोध करना।
बिलंगी-(हिं०स्त्री०) अलगनी, अरगनी।
बिलंबना-(हिं०वि०) विलंब करना, देर करना।
बिल-(सं०नपुं०) छेद, गुहा, कन्दरा।
बिलखना-(हिं०क्रि०) विलाप करना, रोना, दुःखी होना, **बिलखाना**-(हिं० क्रि०) दुःखी करना।
बिलग-(हिं०वि०) पृथक्, अलग, (पुं०) अलग होने का भाव।
बिलगाना-(हिं०क्रि०) पृथक होना, अलगाना, चुनना, छांटना।
बिलच्छन-(हिं०वि०) देखो विलक्षण।
बिलनी-(हिं०स्त्री०) काली भौंरी, आँख की पलक पर होने वाली फुंसी।
बिलपना-(हिं०क्रि०) विलाप करना, रोना
बिलबिलाना-(हिं०क्रि०) छोटे छोटे कीड़ों का इधर उधर रेंगना, असंबद्ध प्रलाप करना, व्याकुल होकर बकना, भूख से व्यग्र होना, व्याकुल होकर रोना और चिल्लाना।
बिलम-(हिं०पुं०) देखो विलम्ब, देर।
बिलमना-(हिं०क्रि०) विलम्ब करना।
बिलमाना-(हिं०क्रि०) रोक रखना।
बिललाना-(हिं०क्रि०) विलाप करना।
बिलवाना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना।
बिलवासी-(सं०वि०) बिलमें रहनेवाला।
बिलसना-(हिं०क्रि०) अच्छा जान पड़ना, शोभा देना। **बिलसाना**-(हिं०क्रि०) काम में लाना, दूसरे से भोग कराना।
बिलहरा-(हिं०पुं०) बाँस का बना हुआ एक प्रकार का चिपटा डब्बा।
बिलाई-(हिं०स्त्री०) बिल्ली, लोहे या लकड़ी की सिटकिनी जो किवाड़ों को बन्द करने के लिये लगाई जाती है।
बिलाना-(हिं० क्रि०) नष्ट होना, विलीन होना।
बिलापना-(हिं०क्रि०) विलाप करना।
बिलार-(हिं०पुं०) मार्जार, बिल्ली।
बिलारी-(हिं०स्त्री०) मार्जारी, बिल्ली।
बिलास--देखो विलास।
बिलासना-(हिं०क्रि०) भोग करना।
बिलूर-(हिं०पुं०) देखो बिल्लौर।
बिलैया-(हिं०स्त्री०) बिल्ली, सिटकिनी, कद्दूकस।
बिलोकना-(हिं०क्रि०) परीक्षा करना, देखना। **बिलोकनि**-(हिं०स्त्री०) दृष्टिपात, कटाक्ष।
बिलोड़ना-(हिं०क्रि०) व्यग्र होना।
बिलोन-(हिं०वि०) बिना नमक का, कुरूप, भद्दा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिलोना-(हिं०क्रि०) मथना, गिराना।
बिलोरना-(हिं०क्रि०) देखो बिलोड़ना।
बिलोलना-(हिं०क्रि०) हिलना, डोलना।
बिलौर-(हिं०पुं०) देखो बिल्लौर।
बिल्ला-(हिं०पुं०) नर बिल्ली, चपरास की तरह की पतली पट्टी जो बाँह पर या गले में पहरी जाती है।
बिल्ली-(हिं० स्त्री०) सिटकिनी, बिलैया।
बिल्लूर, बिल्लौर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का स्वच्छ पारदर्शक पत्थर, स्फटिक;
बिल्लौरी-(हिं०वि०) बिल्लौर पत्थर का, बिल्लौर के समान स्वच्छ।
बिल्व-(सं०पुं०) बेल का वृक्ष।
बिल्वपत्र-(सं०नपुं०) बेल की पत्ती।
बिषान-(हिं०पुं०) देखो विषाण।
बिसंच-(हिं०पुं०) बाधा, भय, डर।
बिसंभार-(हिं०वि०) असावधान।
बिस-(हिं०पुं०) देखो विष।
बिसकरमा-देखो विश्वकर्मा।
बिसतरना-(हिं०क्रि०) बढ़ाना, फैलाना।
बिसतार-देखो विस्तार।
बिसद-(हिं०वि०) देखो विशद।
बिसन-(हिं०पुं०) देखो व्यसन। **बिसनी**-(हिं०वि०) जिसको किसी बात का व्यसन हो।
बिसमऊ-(हिं०पुं०) देखो विस्मय।
बिसमरना-(हिं०क्रि०) भूल जाना।
बिसमव-(हिं०पुं०) देखो विसमय।
बिसरना-(हिं०क्रि०) भूल जाना।
बिसराना-(हिं०क्रि०) ध्यान में रखना।
बिसराम-(हिं०पुं०) देखो विश्राम।
बिसवास-(हिं०पुं०) देखो विश्वास।
बिसवासी-(हिं०वि०) जिसपर विश्वास किया जा सके।
बिसहर-(हिं०पुं०) सर्प, साप।
बिसहरू-(हिं०पुं०) मोल लेने वाला।
बिसावँध-(हिं०वि०) सड़ी मछली की गन्ध वाला, (स्त्री०) सड़ी मछली के समान गन्ध।
बिसाना-(हिं०क्रि०) वश में होना।
बिसारद-(हिं०पुं०) देखो विशारद।
बिसारना-(हिं०क्रि०) भुलाना।
बिसारना-(हिं०क्रि०) भूलाना।
बिसारा-(हिं०वि०) विष भरा हुआ।
बिसास-(हिं०पुं०) विश्वास। **बिसासनी, बिसासिनी**-(हिं०स्त्री०) जिस पर विश्वास न किया जा सके।
बिसासी-(हिं०वि०) छली, कपटी।
बिसाह-(हिं०पुं०) क्रय।
बिसाहना-(हिं०क्रि०) मोल लेना, अपने साथ करना।
बिसाहा-(हिं०पुं०) मोल हुई वस्तु, सौदा।
बिसिख-(हिं०पुं०) देखो विशिख।
बिसियर-(हिं०वि०) विषैला।
बिसूरना-(हिं०क्रि०) चिन्ता करना, (स्त्री०) चिन्ता।
बिसेस-(हिं०वि०) देखो विशेष।
बिसेषना-(हिं०क्रि०) ब्यौरेवार वर्णन करना।
बिसेसर-(हिं०पुं०) देखो विश्वेश्वर।
बिस्तर-(हिं०पुं०) बिछौना, विस्तार, बढ़ाव। **बिस्तरना**-(हिं०क्रि०) विस्तार पूर्वक वर्णन करना या कहना।
बिस्तारना-(हिं०क्रि०) बिस्तार करना, फैलाना। **बिस्तुइया**-(हिं०स्त्री०) गृहगोधा, छिपकिली।
बिस्मय, बिश्राम-देखो विस्मय, विश्राम।
बिस्वा-(हिं०पुं०) एक बीघे का बीसवाँ भाग।
बिस्वास-(हिं०पुं०) देखो विश्वास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बिहंग-(हिं०पुं०) पक्षी।
बिहंडना-(हिं० क्रि०) टुकड़े टुकड़े करना।
बिहँसना-(हिं०क्रि०) मुस्कराना।
बिहँसाना-(हिं०क्रि०) प्रफुल्लित करना।
बिहग-(हिं०पुं०) देखो विहङ्ग, पक्षी।
बिहबल-(हिं०पुं०) विह्वल, व्याकुल।
बिहरना-(हिं०क्रि०) भ्रमण करना, विदीर्ण होना।
बिहरी-(हिं०स्त्री०) अंशदान, चन्दा।
बिहान-(हिं०पुं०) प्रातःकाल, सवेरा; (क्रि०वि०) कल्ह, कल।
बिहाना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना, बीतना।
बिहारना-(हिं०क्रि०) बिहार करना।
बिहाल-(हिं०वि०) व्याकुल।
बिहि-(हिं०स्त्री०) देखो विधि।
बिहीन, बिहून, (हिं०वि०) विहीन, रहित, विना।
बिहोरना-(हिं०क्रि०) देखो विछुड़ना
बीड़ा-(हिं०पुं०) मेड़रा, घास आदि की बनी हुई गेंडुरी।
बींधना-(हिं०क्रि०) बाँधना, छेदना।
बीका-(हिं०वि०) वक्र, टेढा।
बीख-(हिं०पुं०) पद, कदम, डग।
बीग-(हिं०पुं०) भेड़िया।
बीगना-(हिं०क्रि०) फेंकना, छितराना।
बीघा-(हिं०पुं०) खेत नापने का वह वर्गमान जो बीस बिस्वे का होता है।
बीच-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का मध्य भाग, अन्तर, अवसर, भेद, (स्त्री०) तरङ्ग, लहर।
बीचु-(हिं०पुं०) अन्तर, अवसर।
बीछना-(हिं०क्रि०) चुनना, छाटना।
बीछी, बीछू-(हिं०पुं०) देखो बिच्छू, बिछुआ।
बीज-(सं०नपुं०) प्रधान करण, अंकुर, वृक्ष, आदि के अंकुर का आधार।
बीजक-(सं०पुं०) वह सूची जिसमें माल का व्यौरा मूल्य आदि लिखा हो।
बीजक्रिया-(सं०स्त्री०) बीजगणित के किसी प्रश्न की क्रिया। **बीजगणित**-(सं०नपुं०) गणित का वह भेद जिसमें अक्षरों की संख्याओं का द्योतक मान कर अज्ञात संख्याएँ आदि जानी जाती हैं।
बीजमन्त्र-(सं०नपुं०) मूल मन्त्र।
बीजरी-(हिं०स्त्री०) देखो बिजली।
बीजल-(सं०वि०) बीजयुक्त।
बीजा-(हिं०वि०) दूसरा।
बीजाक्षर-(सं०नपुं०) किसी बीजमन्त्र का पहला अक्षर; **बीजाकुंर**-(सं०पुं०) प्रथम अंकुर, अँखुआ।
बीजी-(हिं०स्त्री०) गरी, मींगी, गुठली।
बीजु-(हिं०स्त्री०) बिजुली, विद्युत्।
बीजुपात-(हिं०पुं०) देखो वज्रपात।
बीजुरी-(हिं०स्त्री०) देखो बीजली।
बीजू-(हिं०वि०) जो (वृक्ष) बीज से उत्पन्न हो।
बीझना-(हिं०क्रि०) लिप्त होना, फंसना।
बीझा-(हिं०वि०) निर्जन, एकान्त।
बीट-(हिं०स्त्री०) पक्षियों की बिष्ठा।
बीड़-(हिं०स्त्री०) एक के ऊपर दूसरे रक्खे हुए रुपयों की तही या गड्डी।
बीड़ा-(हिं०पुं०) पान की गिलौरी।
बीड़ी-(हिं०स्त्री०) बीड़ा, गड्डी, बीड़।
बीतना-(हिं०क्रि०) समय का व्यतीत होना, दूर होना, छूट जाना।
बीता-(हिं०पुं०) देखो बित्ता।
बीथी-(हिं०स्त्री०) देखो वीथी।
बीथित-(हिं०वि०) व्यथित, दुःखित।
बीधना-(हिं०क्रि०) फंसना, बींधना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीन-(हिं०स्त्री०) वीणा।
बीनना-(हिं०क्रि०) चुनना, छांटकर अलगाना।
बीफै-(हिं०पुं०) वृहस्पतिवार, गुरुवार।
बीभत्स-(सं०पुं०) घृणा। **बीभत्सिक**-(सं०वि०) घृणित, निन्दित।
बीय-(हिं०वि०) देखो बींजा, दूसरा।
बीया-(हिं०वि०) द्वितीय, दूसरा, (पुं०) बीज, दाना।
बीर-(हिं०वि०) देखो वीर।
बीरन-(हिं०पुं०) भ्राता, भाई।
बीरा-(हिं०पुं०) देखो बीड़ा।
बीरो-(हिं०पुं०) वृक्ष, पेड़।
बीस-(हिं०वि०) दस की दूनी संख्या का, (पुं०) दस की दूनी संख्या २०।
बीसवाँ-(हिं०वि०) बीस के स्थान पर पड़ने वाला।
बिसरना-(हिं०क्रि०) भूलना।
बीसी-(हिं०स्त्री०) बीस वस्तुओं का समूह, कोड़ी।
बीहड़-(हिं०वि०) विषम, ऊँचा-नीचा, विकट।
बुंद-(हिं०स्त्री०) बूंद, टोप, (वि०) थोड़ा सा। **बुंदकी**-(हिं०स्त्री०) गोल छोटी बिन्दी, छोटा गोल चिह्न या धब्बा।
बुंदवान-(हिं०पुं०) छोटे छोटे बूंदों की वर्षा।
बुंदा-(हिं०पुं०) माथे पर लगाने की बड़ी टिकुली।
बुंदिया-(हिं०स्त्री०) देखो बूंदी। **बुंदीवार**-(हिं० वि०) जिसमें छोटी छोटी बिन्दिया बनी या लगी हों।
बुंदौरी-(हिं०स्त्री०) बूंदी या बुंदिया नाम की मिठाई।
बुआ-(हिं०स्त्री०) देखो बूआ।
बुक-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का कलफ किया हुआ महीन कुकड़ा।
बुकचा-(हिं०पुं०) वह गठरी जिसमें कपड़े बँधे हों। **बुकची**-(हिं०स्त्री०) छोटी गठरी।
बुकनी-(हिं०स्त्री०) महीन पिसा हुआ चूर्ण, वह महीन चूर्ण जिसको पानी में घोलने से कोई रंग बनता है।
बुकवा-(हिं०पुं०) उबटन, बटना।
बुकस-(हिं०पुं०) भंगी, मेहतर।
बुक्कस-(सं०पुं०) चाण्डाल।
बुक्का-(हिं०पुं०) कूटे हुए अभ्रक का चूर्ण।
बुक्कार-(सं०पुं०) सिंह का गरजना।
बुग-(हिं०पुं०) मच्छड़।
बुगचा-(हिं०पुं०) देखो बुकचा।
बुगदर-(हिं०पुं०) मच्छड़।
बुझना-(हिं०क्रि०) जलने का अन्त होना, ठंढा होना।
बुझाई-(हिं०स्त्री०) बुझाने की क्रिया या भाव।
बुझाना-(हिं०क्रि०) जलते हुए पदार्थ को ठंढा करना, सन्तोष देना, जी भरना।
बुटना-(हिं०क्रि०) माँगना।
बुड़की-(हिं०स्त्री०) डुबकी, गोता।
बुड़ना-(हिं०क्रि०) देखो बूड़ना।
बुड़बुड़ाना-(हिं०क्रि०) बड़बड़ करना।
बुड़ाना-(हिं०क्रि०) डुबाना, गोता देना।
बुड़ाव-(हिं०पुं०) डुबाव।
बुड्ढा-(हिं०वि०) जिसका वय अधिक हो गया हो।
बुढवा-(हिं०वि०) देखो बुड्ढा। **बुढाई**-(हिं०स्त्री०) बुढ़ापा। **बुढाना**-(हिं०क्रि०) बुड्ढा होना। **बुढापा**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हिं०पुं०) वृद्धावस्था । बुढौती-(हिं०स्त्री०) बुढापा ।
बुतना-(हिं०क्रि०) देखो बुझना ।
बुताना-(हिं०क्रि०) बुझाना ।
बुत्ता-(हिं०पुं) बहाना, धोखा ।
बुदबुद-(सं०पुं०) बुलबुला, बुल्ला । बुदबुदा-(हिं०पुं०) बुलबुला, बुल्ला ।
बुद्ध-(सं०वि०) जागा हुआ, ज्ञानी, विद्वान्, पंडित,
बुद्धि-(सं०स्त्री०) मन की वह शक्ति जिसके अनुसार मनुष्य किसी उपस्थित के विषय में संबंध में ठीक ठीक विचार या निर्णय करता है, ज्ञान ।
बुद्धिपर-(सं० वि०) जहाँ तक बुद्धि न पहुँच सके । बुद्धिपूर्ण-(सं० वि०) जो जान बूझ कर किया गया हो । बुद्धिमत्ता-(सं०स्त्री०) बुद्धिमानी । बुद्धिवंत-(हिं०वि०) बुद्धिमान् । बुद्धिशाली, बुद्धिशील-(सं०वि०) बुद्धिमान् । बुद्धिहीन-(सं० वि०) जिसमें बुद्धि न हो ।
बुद्बुद्-(सं०पुं०) बुलबुला, बुल्ला ।
बुध-(सं०पुं०) विद्वान्, पण्डित ।
बुधवार-(सं० पुं०) सात वारों में से एक वार जो मंगलवार के बाद और गुरुवार के पहले होता है ।
बुनना-(हिं०क्रि०) ताने बाने की सहायता से कपड़ा तैयार करने की क्रिया
बुनाई-(हिं० स्त्री०) बुनने की क्रिया या भाव । बुनावट-(हिं०स्त्री०) बुनने में सूतों के संयोग ।
बुबुकना-(हिं०क्रि०)उच्च स्वर से रोना ।
बुबुकारी-(हिं०क्रि०) उच्च स्वर से रोना ।
बुबुधान-(सं०पुं०) आचार्य, पण्डित ।
बुभुक्षा-(सं०स्त्री०) क्षुधा । बुभुक्षित, बुभुक्षु-(सं०वि०) क्षुधित ।
बुरकाना-(हिं०क्रि०) भुरभुराने या छिड़कने का काम दूसरे से कराना ।
बुरा-(हिं०वि०) निकृष्ट । बुराई-(हिं० स्त्री०) बुरापन, नीचता, खोटापन ।
बुरापन-(हिं०पुं०) देखो बुराई ।
बुलवाना-(हिं०क्रि०) बुलाने का काम दूसरे से करवाना ।
बुलाक-(हिं०पुं०) एक लंबा सुराहीदार मोती जिसको स्त्रियाँ नथ में या दोनों नथनों के बीच के परदे में पहनती हैं ।
बुलाना-(हिं०क्रि०) पुकारना, किसी को अपने पास आने के लिये कहना ।
बुलावा-(हिं०पुं०) निमन्त्रण ।
बुलौवा-(हिं०पुं०) देखो बुलावा ।
बुल्लन-(हिं०पुं०) मुख, चेहरा, बुल्ला ।
बुल्ला-(हिं०पुं०) बुदबुद, बुलबुला ।
बुष, बुस-(सं०नपुं०) अनाज के ऊपर का छिलका ।
बुहारना-(हिं०क्रि०) झाड़ू से निर्मल करना ।
बुहारी-(हिं०स्त्री०) झोड़ू, बढ़नी, सोहनी ।
बूंद-(हिं०स्त्री०) जल आदि का थोड़ा अंश जो गिरती समय छोटी सी गोली या दाने के रूप धारण करता है ।
बूंदा-(हिं०पुं०) बड़ी टिकली, सुराहीदार लंबोतरा मोती जो कान या नाक में पहना जाता है । बूंदाबूंदी-(हिं० स्त्री०) अल्प वृष्टि हलकी वर्षा ।
बूंदी-(हिं०स्त्री०) वर्षा के बूंद, एक प्रकार की मिठाई, बुन्दिया ।
बूआ-(हिं०स्त्री०) पिता की बहिन, फूफी ।
बूकना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ को पीसकर महीन चूर्ण करना, अपने से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक योग्य प्रमाणित करने के लिये गढ़कर बातें करना ।

बूगा-(हिं०पुं०) भूसा ।

बूचा-(हिं०वि०) कनकटा, भद्दा, और कुरूप ।

बूजना-(हिं०क्रि०) धोखा देना छिपाना ।

बूझ, बूझन-(हि०स्त्री०) बुद्धि, समझ, ज्ञान, पहेली ।

बूझना-(हिं०क्रि०)जानना, समझना ।

बूट-(हिं०पुं०) चने का हरा दाना, होरहा ।

बूटना-(हिं०क्रि०) भागना ।

बूटा-(हिं०पुं०) वृक्ष, फल पत्ते आदि का चित्र जो कपड़े भीत आदि पर रंग बिरंगे बनाये जाते हैं ।

बूटी-(हिं०स्त्री०) बनस्पति, जड़ी बनौषधि, भांग ताश, में बनी हुई टिक्की, फल फूल के छोटे चिह्न जो वस्त्रादि पर बनाये जाते हैं ।

बूढ़, बूढ़ा-(हिं०वि०) देखो बुड्ढा ।

बूता-(हिं०पुं०) बल, पराक्रम ।

बूरा-(हिं०पुं०) भूरे रंग की कच्ची चीनी, महीन चूर्ण ।

बृच्छ-(हिं०पुं०) देखो वृक्ष ।

बृहच्चञ्चु-(सं०नपुं०)लंबी चोंच वाला ।

बृहज्जाल-(सं०नपुं०) बड़ी जाल ।

बृहत्-(सं०वि०) विशाल, बहुत बड़ा, ऊँचा, दृढ ।

बेग-(हिं०पुं०) भेक, मेढक ।

बेंड़-(हिं०स्त्री०) चाँड, थोक ।

बेंड़ना-(हिं०क्रि०) बन्द करना ।

बेंड़ा-(हिं०वि०) आड़ा, तिरछा, कठिन ।

बेंढ़-(हिं०पुं०) हवा की ओर घूमने वाला वाला एक यन्त्र, फरहरा ।

बेंत-(हिं०पुं०) देखो बेंत ।

बेंदली-(हिं०स्त्री०) टिकली ।

बेंदा-(हिं०पुं०) माथे पर लगाने का तिलक, टीका, स्त्रियों के माथे पर पहनने का एक प्रकार का आभूषण ।

बेंदी-(हिं०स्त्री०) टिकुली, बिंदी ।

बेंवड़ा-(हिं०पुं०)वह लकड़ी जो बन्द द्वार के पीछे लगाई जाती है, अरगल ।

बेंवताना-(हिं०क्रि०) किसी से कपड़ा नपवाना ।

देअंत-(हिं०वि०) जिसका अन्त न हो ।

बेआरा-(हिं०वि०) एक में मिला हुआ जव और चना ।

बेकल-(हिं०वि०) व्याकुल, व्यग्र ।

बेकली-(हिं०स्त्री०)व्यग्रता,घबड़ाहट ।

बेकहा-(हिं०वि०) जो किसी का कहना न मानता हो ।

बेकाम-(हिं०वि०) निकम्मा, (क्रि० वि०) निरर्थक, व्यर्थ ।

बेकाम्यो-(हिं०पुं०)पुकारने का संबोधन का शब्द ।

बेखटक-(हिं०वि०) बिना संकोच या असमंजस का, (क्रि०वि०) बिना आगा पिछा किये हुए ।

बेग-(हिं०पुं०) देखो वेग; चमड़े, कपड़े आदि का बना हुआ थैला ।

बेगना-(हिं०क्रि०) शीघ्रता करना ।

बेगर-(हि०पुं०) अचार में मिलाया हुआ मसाला ।

बेगसर-(हिं०पुं०) खच्चर ।

बेगि-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्रतासे, तुरंत ।

बेचना-(हिं०क्रि०)विक्रय करना, ।

बेचवना, बेचाना-(हिं० क्रि०) देखो बिकवाना ।

बेझना-(हिं०क्रि०) देखो बेधना ।

बेझरा-(हिं०पुं०)गेंहू जव, चना, मटर आदि में से दो या तीन मिले हुए अन्न ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेटा-(हिं०पुं०) पुत्र, लड़का।
बेटौना-(हिं०पुं०) बेटा।
बेठन-(हिं०पुं०) कपड़े का टुकड़ा जो किसी वस्तु के लपेटने के काम में आता है, बँधना।
बेठिकाने-(हिं०वि०) निरर्थक, बिना सिर पैर का।
बेड़-(हिं०पुं०) मेड़, थाला,नगद,रुपया; **बेड़ना**-(हिं०क्रि०) छोटी भीत खड़ी करना, थाला बांधना।
बेड़ा-(हिं०पुं०) लट्ठे, बांस, आदि को एक में बाँधकर बनाया हुआ ढाँचा जिस पर बैठकर नदी पर चलते हैं, तिराना, नाव, बहुत सी नाव या जहाजों का समूह।
बेड़ी-(हिं०स्त्री०) लोहे की कड़ी जो अपराधियों के पैर में डाल दी जाती है।
बेडौल-(हिं०वि०) भद्दा, बेढ़गा।
बेढ़ंग, बेढंगा-(हिं०वि०) कुरूप, भद्दा **बेढंगपन**-(हिं०पुं०) भद्दापन।
बेढ़-(हिं०पुं०) नाश।
बेढ़ई-(हिं०स्त्री०) पीठी आदि भरी हुई कचौड़ी।
बेढब-(हिं०वि०) जिसका ढंग अच्छा न हो।
बेढाना-(हिं०क्रि०)ओढाना,घिरवाना।
बेणीफल-(हिं०पुं०) सिर पर पहरने का एक प्रकार का गहना, सीसफूल।
बेत-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लचीली नरकट, आकाश, वियत्।
बेतना-(हिं०क्रि०) प्रतीत होना, जान पड़ना।
बेतार-(हिं०वि०) बिनातारका, जिसमें तार न हो।
बेताल-(हिं०पुं०) देखो वेताल।
बेताल-(हिं०पुं०) भाट, वन्दी।
बेतुला-(हिं०वि०) बेढ़ंगा।
बेद-(हिं०पुं०) देखो वेद।
बेदना-देखो वेदना।
बेदाना-(हिं०पुं०)एक प्रकारका बढ़िया काबुली अनार।
बेधड़क-(हिं०क्रि०वि०) बिना किसी प्रकार के संकोच भय या आशंका के, (वि०) निर्भर, निठर।
बेधना-(हिं०क्रि०) किसी नुकीली वस्तु से छेद करना।
बेधर्म-(हिं०क्रि०) जिसको अपने धर्म का ध्यान न हो।
बेधिया(हिं०पुं०) अंकुश।
बेधीर-(हिं०वि०) देखो अधीर।
बेन-(हिं०पुं०) वंसी, मुरली, सँपेरे की तुमड़ी।
बेना-(हिं०पुं०) बांस का बना हुआ छोटा पंखा, व्यजन।
बेनागा-(हिं०क्रि०वि०) निरन्तर।
बेनी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों की चोटी, वेणी।
बेनु-(हिं०पुं०) देखो-वेणु, वंसी,मुरली, बाँस।
बेपाई-(हिं०वि०)हक्काबक्का,भौंचक।
बेपार,बेपारी-देखो व्यापार, व्यापारी।
बेपेंदी-(हिं०वि०) इधर उधर लुढ़कने वाला।
बेबस-(हिं०वि०) विवश, लाचार।
बेबसी-(हिं०स्त्री०)विवशता,पराधीनता
बेबहा-(हिं०वि०) अमूल्य।
बेब्याहा-(हिं०वि०)अविवाहित,कुँआरा,
बेमन-(हिं०क्रि०वि०)बिना मन लगाये, (वि०) जिसका मन न लगता हो।
बेरवा-(हिं०पुं०) कलाई में पहरने का एक गहना, कड़ा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेरा-(हिं० पुं०)वेला, समय, एक में मिला हुआ चना और जव।
बेरिआ(हिं०स्त्री०) समय, वेला।
बेरूप-(हिं०वि०) कुरूप।
बेरों-(हिं०पुं०) मिले हुए जव चने का आंटा।
बेलंब-(हिं०पुं०) देखो विलम्ब।
बेल-(हिं०पुं०)विल्व, श्रीफल; (स्त्री०) वे छोटे कोमल पौधे जो अपने बल पर ऊपर नहीं उठ सकते, लता, वल्ली, फीते पर वना हुआ जरदोजी या रेशम का काम।
बेलक-(हिं०पुं०) फरसा, फावड़ा।
बेलकी-(हिं०पुं०) चरवाहा।
बेलगिरी-(हिं०स्त्री०) बेल के फल का गूदा।
बेलड़ी-(हिं० स्त्री०) छोटी बेल या लता।
बेलन-(हिं०पुं०) कोई लंबा गोल लुड़कने वाला पदार्थ।
बेलना-(हिं०पुं०)काठ का गोल लंबा टुकड़ा जो पूरी रोटी आदि को बेलने के काम में आता है; (हिं० क्रि०) चकले पर लोई रखकर बेलना से बढ़ाकर गोल करना, तथा पतला करना, नष्ट करना।
बेलपत्ती, बेलपत्र-(हिं०पुं०) बेल के वृक्ष की पत्ती।
बेलपाता-(हिं०पुं०) देखो बेलपत्र।
बेलसना-(हिं०क्रि०)भोगविलास करना,
बेलहरा-(हिं०पुं०) बांस या धातु की वनी हुई लंबोतरी पिटारी जिसमें पान के बीड़े रक्खे जाते हैं।
बेला(हिं०पुं०) एक छोटा पौधा जिसमें सफेद सुगन्धित फूल लगते हैं।
बेलाग-(हिं०पुं०) जिसमें किसी प्रकार की लगावट न हो।
बेलि-(हिं०स्त्री०) देखो वेल; **बेलिया**-(हिं०स्त्री०) छोटी कटोरी।
बेलौस-(हिं०पुं०) सच्चा, खरा।
बेवपार-(हिं०पुं०) देखो व्यापार।
बेवरा-(हिं०पुं०) विवरण, ब्योरा,
बेवरेबाजी-(हिं०स्त्री०) धूर्तता।
बेवरेवार-(हिं०वि०) विवरण सहित।
बेवसाय-(हिं०पुं०) देखो व्यवसाय ;
बेवस्था-(हिं०स्त्री०) देखो व्यवस्था।
बेवहरना-(हिं०क्रि०) व्यवहार करना; **बेवहरिया**-(हिं०पुं०) लेन देन का व्यवहार करने वाला, महाजन; **बेवहार**-(हिं०पुं०) देखो व्यवहार।
बेवाई-(हिं० स्त्री०) देखो वेवाई; **बेवान**-(हिं०पुं०) देखो विमान; **वेश**-(हिं-पुं०) देखो वेश।
बेश्म-(हिं०पुं०) देखो वेश्म, गृह, घर।
बेसभर-(हिं०वि०) बेसुध।
बेसन-(हिं०पुं०) चनेका महीन आटा।
बेसर-(हिं०पुं०) नाक में पहरने का नथ।
बेसवा-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
बेसारा-(हिं०वि०)वैठने या ठहरने वाला
बेसाहना-(हिं०क्रि०) मोल लेना।
बेसाह, बेसाहा(हिं०पुं०)माल, सौदा।
बेसी-(हिं०क्रि०वि०) अधिक।
बेसुध-(हिं०वि०)अचेत; **बेसुधी**-(हिं० स्त्री०) अचेत अवस्था।
बेसुर-(हिं०वि०) जिसका स्वर (संगीत में) ठीक न हो, बमेल स्वर का।
बेसुरा-(हिं०वि०) जो नियमित स्वर में न हो।
बेस्वाद-(हिं०वि०)जो स्वाद रहित हो।
बेहंगम-(हिं०वि०)बेढंगा,बिकट,बेढब।
बेहंगमपन-(हिं०पुं०) बेढंगापन, भद्दापन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेहँसना-(हिं०क्रि०) ठट्ठा मार कर हँसना।
बेह-(हिं०पुं०) वेध, छिद्र, छेद।
बेहड़-(हिं०वि०) देखो बीहड़।
बेहन-(हिं०पुं०) अन्न आदि का बीज जो खेत में बोया जाता है,बीज;
बेहरा-(हिं०पुं०)एक प्रकार की चिपटी पेटारी, (वि०) पृथक्, अलग। **बेहराना**-(हिं०क्रि०)दरार होना,फटना।
बेहरी-(हिं०स्त्री०) अंशदान के रूप में इकट्ठा किया हुआ धन।
बेहला-(हिं०पुं०) सारंगी की तरहका एक प्रकार का अंग्रेजी बाजा।
बैगन-(हिं०पुं०) भंटा; **बैंगनी**-(हिं० वि०) ललाई लिये नीले रंग का; **बैजनी**-(हिं०वि०) देखो बैंगनी।
बैंडा-(हिं०वि०) देखो बेंड़ा।
बै-(हिं०स्त्री०) बिक्री, बेंचना।
बैकल-(हिं०वि०) उन्मत्त, पागल।
बैगन-(हिं०पुं०) देखो बैंगन, भंटा।
बैगनी-(हिं०वि०) देखो बैंगनी।
बैठक-(हिं०स्त्री०) बैठने का स्थान, आसन, बैठने का ढंग, मेल।
बैठका-(हिं०पुं०) वह चौपाल या दालान जहाँ पर बैठकर लोग बात-चीत करते हैं।
बैठकी-(हिं०स्त्री०) आसन, आधार।
बैठन-(हिं०स्त्री०) बैठने का ढंग, बैठक, आसन।
बैठना-(हिं०क्रि०) स्थित होना, आसन जमाना, निरुद्योग रहना, समाना, ठीक होना, धँसना, व्यवसाय हीन होना, पचक जाना, दबना।
बैठवाना-(हिं०क्रि०) बैठानेका काम दूसरे से कराना, पेड़ पौधे लगवाना।
बैठना-(हिं०क्रि०) दबाकर बराबर करना, पचकाना या धँसाना, लक्ष्य पर जमाना, सवार कराना, पौधे को लगाना, धुली हुई वस्तु को तल में जमाना, अभ्यस्त करना, नीचे की ओर ले जाना, पद पर स्थापित करना, । **बैठारना, बैठालना**-(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।
बैताल-(हिं०पुं०) देखो बेताल।
बैद-(हिं०पुं०) देखो वैद्य, चिकित्सक।
बैदगी-(हिं०स्त्री०) वैद्य की विद्या या व्यवसाय।
बैन-(हिं०पुं०) वार्ता, बात।
बैना-(हिं०पुं०) वह मिठाई पकवान आदि जो विवाहादि उत्सवों के उपलक्ष में इष्ट-मित्रों के यहां भेजा जाता है।
बैपार-(हिं०पुं०) देखो व्यापार।
बैपारी-(हिं०पुं०) व्यापार करनेवाला।
बैर-(हिं०पुं०) देखो वैर, शत्रुता, द्रोह, विरोध, बेर का वृक्ष या फल, कूड़ में गिरता जाता है।
बैराखी-(हिं०स्त्री०) भुजा पर पहरने का एक गहना, बैरखी।
बैराग-(हिं०पुं०) देखो वैराग्य। **बैरागी**-(हिं०पुं०) वैष्णव मत के साधुओं का एक भेद। **बैराग्य**-(हिं०पुं०) देखो वैराग्य।
बैरी-(हिं०वि०)देखो-वैरी,विरोधी,शत्रु।
बैल-(हिं०पुं०) एक चौपाया जिसकी मादा गाय कहलाती है, मूर्ख मनुष्य।
बैस-(हिं०स्त्री०) आयु, युवावस्था।
बैसना-(हिं०क्रि०)देखो बैठना।
बैसाख-(हिं०पुं०) चैत के बाद के महीने का नाम। **बैसाखी**-(हिं०वि०) वैशाख महीने की, (हिं०पुं०) वह लाठी जिसको बगल में रखकर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लँगड़े लोग टेककर चलते हैं।

बैसाना, बैसारना-(हिं० क्रि०) देखो बैठाना।

बैहर-(हिं०वि०) भयानक, प्रचण्ड, क्रोधी, (स्त्री०) वायु हवा।

बोंक-(हिं०पुं०) लोहे का मुड़ा हुआ कीला जो पल्ले के नीचे की कील में लगाया जाता है।

बोंगना-(हिं०पुं०) चौड़े मुख का एक प्रकार का पात्र।

बोआई-(हिं०स्त्री०) बोने का काम, बोने का वेतन।

बोझ-(हिं०पुं०) भार, गुरुत्व, भारीपन, कठिन कार्य। **बोझना**-(हिं०क्रि०) नाव गाड़ी आदि पर माल रखना।

बोझल-(हिं०वि०) भारी। **बोझा**-(हिं०पुं०) देखो बोझ। **बोझाई**-(हिं०स्त्री०) बोझने या लादने का काम, इस काम का शुल्क।

बोटा-(हिं०पुं०) लकड़ी का छोटा मोटा कटा हुआ टुकड़ा। **बोटी**-(हिं०स्त्री०) माँस का छोटा टुकड़ा,

बोड़री-(हिं०स्त्री०) नाभि, तोंदी।

बोड़ी-(हिं०स्त्री०) पौधे वृक्ष आदि की फली।

बोतल-(हिं०स्त्री०) कांच का लंबी गरदन का पात्र। **बोतलिया**-(हिं० वि०) बोतल के रंग का हरा।

बोदर-(हिं०पुं०) ताल के किनारे का सिंचाई का पानी चढ़ाने का स्थान।

बोदा-(हिं०वि०) मूर्ख, मट्ठर। **बोदापन**-(हिं०पुं०) मूर्खता।

बोध- (सं०पुं०) ज्ञान, सन्तोष, धैर्य, धीरज। **बोधक**-(सं०पुं०) ज्ञापक, **बोधकर**-(सं०पुं०) जो प्रातःकाल किसी को जगता है। **बोधगम्य**-(सं० वि०) समझ में आने योग्य।

बोधन-(हिं०नपुं०) ज्ञापन, जताना, विज्ञापन, चैतन्य, संपादन। **बोधना**-(हिं०क्रि०) ज्ञान देना समझाना।

बोधनीय-(सं०वि०) समझाने योग्य।

बोधित-(सं०वि०) ज्ञापित, जताया हुआ।

बोना-(हिं०क्रि०) किसी दाने या फल के बीज को इसलिये मिट्टी में डालना जिसमें उसमें से अंकुर फूटें और पौधा उत्पन्न हो, बिखराना।

बोय-(हिं०स्त्री०) गन्ध, दुर्गन्ध।

बोर-(हिं०पुं०) गुंबज के आकार का एक गहना जो सिर पर पहना जाता है।

बोरका-(हिं०पुं०) मिट्टी की दावात जिसमें लड़के खड़िया मिट्टी घोलकर रखते हैं।

बोरना-(हिं०क्रि०) डुबोना, कलंकित करना, योग देना, मिलाना, डुबाकर भिगोना।

बोरसी-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का वह पात्र जिसमें आग रक्खी जाती है, अंगीठी।

बोरा-(हिं०पुं०) अन्न आदि रखने का टाट का बना हुआ थैला।

बोरिया-(हिं०स्त्री०) छोटा थैला; बिस्तर, चटाई; । **बोरी**-(हिं०स्त्री०) छोटा बोरा।

बोरो-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा धान।

बोल-(हिं०पुं०) वचन, व्यंग, ताना, प्रतिज्ञा।

बोलता-(हिं०पुं०) आत्मा, बोलने वाला प्राणी, मनुष्य, हुक्का, प्राण; (वि० वाचाल, बकवादी। **बोलती**-(हिं० स्त्री०) वाक्, वाणी। **बोलनहारा**-(हिं०वि०) बोलने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बोलना-(हिं०क्रि०) मुख से शब्द निकालना, कहना, पुकारना।
बोलवाना-(हिं०क्रि०) उच्चारण कराना।
बोलाचाली-(हिं०स्त्री०) देखो बोलचाल।
बोलाना-(हिं०क्रि०) देखो बुलाना।
बोलावा-(हिं०पुं०) निमंत्रण।
बोली-(हिं०स्त्री०) वाणी, अर्थ युक्त शब्द या वाक्य, वचन, नीलाम करने वाले और लेने वाले का चिल्ला कर दाम कहना।
बोवाई-(हिं०स्त्री०) बोने की क्रिया।
बोवाना-(हिं०क्रि०) बोने का काम दूसरे से कराना।
बोह-(हिं०स्त्री०) डुबकी, गोता।
बोहनी-(हिं० स्त्री०) किसी दिन की पहली बिक्री।
बोहारी-(हिं०स्त्री०) झाड़ू।
बोडर-(हिं०पुं०) चक्र वायु, बवन्डर।
बोड़ी-(हिं०स्त्री०) लता या पौधों के कच्चे फल, फली, छीमी।
बौआना-(हिं०क्रि०) स्वप्न की अवस्था में बोलना।
बौखल-(हिं०वि०) पागल, सनकी, झक्की।
बौखलाना-(हिं०क्रि०) सनक जाना।
बौखा-(हिं०स्त्री०) हवा का तीव्र झोंका।
बौछाड़-(हिं०स्त्री०) वायु के छोंके से तिरछी आती हुई पानी की बूंदों का समूह, झपास, ताना।
बौछार-(हिं०स्त्री०) देखो बौछाड़।
बौड़हा-(हिं०वि०) पागल, सनकी।
बौना-(हिं०पुं०) वामन, बहुत ठिंगना आदमी।
बौर-(हिं०पुं०) आम के वृक्ष की मंजरी।
बौरई-(हिं०स्त्री०) पागलपन, सनक।
बौरना-(हिं०क्रि०) आम के वृक्ष में मंजली निकलना।
बौरहा-(हिं०वि०) विक्षिप्त, पागल।
बौराई-(हिं०स्त्री०) सनक, पागलपन।
बौराना-(हिं०क्रि०) पगला हो जाना, सनक जाना। **बौराहा**-(हिं०वि०) पागल, सनकी।
ब्यंग, ब्यंजन-(हिं०पुं०) देखो व्यङ्ग, व्यञ्जन।
ब्यतीतना-(हिं०क्रि०) बीतना।
ब्यक्ति, ब्यंजन-(हिं०पुं०) देखो व्यक्ति, व्यञ्जन। **ब्यथा, ब्यथित**-(हिं०पुं०) देखो व्यथा, व्यथित।
ब्यवहार-(हिं०पुं०) देखो व्यवहार।
ब्यवहारिया-(हिं०वि०) रुपये का लेन-देन करने वाला महाजन।
ब्यवसाय-(हिं०पुं०) देखो व्यवसाय।
ब्यवस्था-(हिं०स्त्री०) देखो व्यवस्था।
ब्यवहार-(हिं०पुं०) व्यवहार, रुपये का लेन देन।
ब्यवहारी-(हिं०वि०) व्यापारी, कार्यकर्ता।
ब्यसन, ब्यसनी-(हिं०वि०) देखो व्यसन व्यसनी।
ब्याज-(हिं०पुं०) वृद्धि, सूद।
ब्याध, ब्याधा-(हिं०पुं०) देखो व्याध, व्याधा।
ब्याधि-(हिं०स्त्री०) देखो व्याधि, रोग।
ब्याना-(हिं०क्रि०) पशुओं का बच्चा पैदा करना।
ब्यापना-(हिं०क्रि०) चारो ओर फैलना, ग्रसना, घेरना।
ब्यापार-(हिं०पुं०) देखो व्यापार।
ब्याल-(हिं०पुं०) देखो व्याल।
ब्यालि-(हिं० स्त्री०) सर्पिणी, नागिन।
ब्यालू-(हिं०पुं०) रात का भोजन।
ब्याह-(हिं०पुं०) देखो विवाह, पाणिग्रहण, **ब्याहता**-(हिं०वि०) जिसके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साथ विवाह हुआ हो। **ब्याहना**-(हिं०क्रि०) किसी का किसी के साथ विवाह संबंध कर देना। **ब्याहुता**-(हिं०वि०) विवाह संबंधी।

ब्योंचना-(हिं० क्रि०) कसी अंग का मुरक जाना।

ब्योंत-(हिं०पुं०) विवरण, युक्ति, उपाय साधन या सामग्री, पहरावा बनाने के लिये कपड़े की काट छांट, प्रबध, आयोजन **ब्योतना**-(हिं० क्रि०) कोई पहरावा बनाने के लिये कपड़े को नाप कर काटना छांटना। **ब्योंताना**-(हिं० क्रि०) शरीर की नाप के अनुसार कपड़ा कटवाना।

ब्योपार, ब्योपारी-(हिं०) देखो व्यापार व्यापारी।

ब्योरा-(हिं०पुं०) विवरण, वृत्तान्त, समाचार,।

ब्योसाय-(हिं०पुं०) देखो व्यवसाय।

ब्योहर-(हिं०पुं०) रुपये का लेन देन, व्यापार। **ब्योहरिया**-(हिं०पुं०) महाजनी करने वाला, सूद पर रुपया ऋण देने वाला।

ब्योहर-(हिं०पुं०) देखो ब्योहर।

ब्रजना-(हिं०क्रि०) चलना।

ब्रह्मांड-(हिं०पुं०) देखो ब्रह्माण्ड।

ब्रह्म-(सं०नपुं०) आनन्द स्वरूप आत्मा, आत्मा, चैतन्य।

ब्रह्मगति-(सं०स्त्री०) निर्वाण, मोक्ष। **ब्रह्मग्रन्थि**-(सं०पुं०) यज्ञोपवीत की मुख्य गाँठ। **ब्रह्मघाती**-(सं०वि०) ब्राह्मण की हत्याकर ने वाला। **ब्रह्मघ्न**-(सं०वि०) ब्राह्मण को मारने वाला।

ब्रह्मचर्य-(सं०नपुं०) एक आश्रम का नाम।

ब्रह्मचारिणी-(सं०स्त्री०) ब्रह्मचर्य पालन करने वाली स्त्री।

ब्रह्मचारी-(सं०पुं०) उपनयन के बाद नियम पूर्वक वेदादि के अध्ययन के लिये गुरू के घर में रहने वाला।

ब्रह्मज्ञान-(सं०नपुं०) ब्रह्म विषयक ज्ञान, अपने आत्मा का यथार्थ अनुभव।

ब्रह्मज्ञानी-(सं०वि०) परमार्थ तत्त्व का ज्ञान रखने वाला।

ब्रह्मत्व-(सं०नपुं०) ब्राह्मणत्व। **ब्रह्मदण्ड**-(सं०पुं०) ब्राह्मण का शाप रूप दण्ड, ब्राह्म शाप। **ब्रह्मदोस**-(सं०पुं०) ब्रह्महत्या, ब्राह्मण की हत्या करने का पाप। **ब्रह्मपद**-(सं० पुं०) ब्रह्मत्व, मोक्ष, मुक्ति, ब्राह्मणत्व। **ब्रह्मभवन**-(सं०नपुं०) ब्रह्मलोक। **ब्रह्मभोज**-(सं०पुं०) ब्राह्मणों को भोजनकराना। **ब्रह्ममुहूर्त**-(सं०पुं०) सूर्योदय के तीन चार घड़ी पहले का समय, प्रभात, **ब्रह्मराक्षस**-(सं० पुं०) वह ब्राह्मण जो मरकर प्रेत योनि को प्राप्त हुआ हो। **ब्रह्मलेख**-(सं०पुं०) भाग्य या अभाग्य का लेख। **ब्रह्मर्षि**-(सं०पुं०) ब्राह्मण ऋषि। **ब्रह्मलोक**-(सं०पुं०) वह लोक जहाँ ब्रह्मा रहते हैं। **ब्रह्मवाद**-(सं०पुं०) वेदपाठ। **ब्रह्मवादी**-(सं०पुं०) वेदान्ती, वेदों को पढ़ाने वाला। **ब्रह्मविद्या**-(सं०स्त्री०) ब्रह्मज्ञान। **ब्रह्मसूत्र**-(सं० नपुं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ। **ब्रह्महत्या**-(सं०स्त्री०) ब्राह्मण का वध।

ब्रह्मा-(स०पुं०) वह जो सृष्टि की रचना करता है, **ब्रह्माक्षर**-(सं०नपुं०) प्रणव, ओंकार। **ब्राह्मणी**-(सं०स्त्री०) ब्रह्मा की स्त्री, शक्ति, सावित्री, गायत्री, दुर्गा। **ब्रह्माण्ड**-(सं० नपुं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौदहो भुवनों का समूह।

ब्राह्मण-(सं०पुं०) अग्रजन्मा, भूदेव, विप्र, ब्राह्मण जाति। **ब्राह्म मुहूर्त**-(सं०पुं०) अरुणोदय काल के प्रथम दो दण्ड।

भ

भ-हिन्दी वर्णमाला का चौबीसवाँ तथा पवर्ग का चौथा वर्ण। इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ है।

भ-(सं०नपुं०) नक्षत्र, ग्रह, पर्वत, भ्रांति।

भंकार-(हिं०पुं०) भयंकर ध्वनि या शब्द

भंग-(हिं०पुं०) खण्ड, टुकड़ा, भाँग।

भंगड़-(हिं०वि०) बहुत भाँग पीने वाला।

भंगना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, दबाना।

भंगार-(हिं०पुं०) वह गड्ढा जो कूप खनते समय पहले खोदा जाता है,

भंगी-(हिं०वि०) नष्ट होने वाला, (पुं०) एक अस्पृश्य जाति जिसका काम मल मूत्र आदि उठाना है, (वि०) भँगेड़ी।

भंगुर-(हिं०वि०) नाशवान्।

भंगेड़ी-(हिं०पुं०) अधिक भाँग पीने वाला।

भंजक-(हिं०वि०) तोड़ने वाला।

भंजन-(हिं०पुं०) तोड़ने का काम।

भंजना-(हिं०क्रि०) विभक्त होना, किसी बड़ी मुद्रा का छोटे मुद्रा में बदला जाना, भुनना।

भंजाना-(हिं०क्रि०) तोड़वाना, बड़ी मुद्रा के बदले में छोटे मुद्रा देना, भुनाना, रस्सी कागज आदि को भांजने में दूसरे को नियुक्त करना।

भंटा-(हिं०पुं०) बैंगन।

भंड-(हिं०पुं०) भाँड़;

भंडना-(हिं०क्रि०) भंग करना, तोड़ना, अपकीर्ति फैलाना।

भंडफोड़-(हिं०पुं०) भेद खोलने का काम।

भड़रिया-(हिं०पुं०) पाखंडी, ढोंगी, धूर्त, (स्त्री०) भीत का ताखा जिसमें पल्ले लगे हों।

भंड़सार, भंडसाल-(हिं०स्त्री०) वह गोदाम जहां सस्ता अन्न मोल लेकर महंगा बेंचने के लिये इकट्ठा किया जाता है।

भंडा-(हिं०पुं०) पात्र, भाँडा, भंडार, रहस्य, भेद।

भंडाना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, तोड़ना,

भंडार-(हिं०पुं०) कोष, कोठार, भंडारा

भंडारा-(हिं० पुं०) झुंड, समूह, साधुओं का भोज। **भंडारी**-(हिं० पुं०) कोषाध्यक्ष, रसोइयादार।

भंडेरिया-(हिं०पुं०) देखो भँडरिया।

भंडेरियापन-(हिं०पुं०) पाखंड, ढोंग।

भंभरना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना।

भंभा-(हिं०पुं०) बिल, छेद। **भंभाका**-(हिं०स्त्री०) कोई बड़ा छिद्र।

भंभाना-(हिं०क्रि०) गौ आदि पशुओं का चिल्लाना, रंभाना।

भंभेरि-(हिं०स्त्री०) भय, डर।

भँवना-(हिं०क्रि०) घूमना फिरना, चक्कर लगाना।

भँवर-(हिं०पुं०) भौंरा, गड्ढा जल के बहाव में वह स्थान जहाँ पानी की लहर एक केन्द्र पर चक्कर खाती हुई घूमती है।

भँवरकली-(हिं०स्त्री०) लोहे या पीतल की वह कड़ी जो कील में इस प्रकार जड़ी रहती है कि चारो ओर घूम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सके। **भँवरजाल**-(हिं०पुं०) संसार के झगड़े।

भँवरा-(हिं०पुं०)देखो भौंरा, भ्रमर।

भँवरी-(हिं०स्त्री०) भँवर, पानी का चक्कर, जन्तुओं के शरीर पर का वह स्थान जहां पर रोवें या वाल एक केन्द्र पर घुमे रहते हैं।

भँसना-(हिं०वि०)पानी के ऊपर तैरना, पानी में डाला या फेंका जाना।

भइया-(हिं०पुं०) भ्राता, भाई, एक आदर सूचक शब्द जो बरावर वालों के लये प्रयोग होता है।

भक-(हिं०वि०) आग के एकाएक जलने या घुवें के निकलने से उत्पन्न शब्द।

भकभकाना-(हिं०क्रि०)प्रदीप्त होना।

भकक्षा-(सं०स्त्री०) नक्षत्र की कक्षा।

भकराँध-(हिं०स्त्री०) अन्नके सड़ने की गन्ध।

भकराधाँ-(हिं०वि०) सड़ा हुआ।

भकसा-(हिं०वि०)जो अधिक समय तक पड़ा रहने के कारण दुर्गन्धयुक्त हो गया हो। **भकसाना**-(हिं०क्रि०) किसी खाद्य पदार्थ का दुर्गन्धी और कसैला हो जाना।

भकाऊं-(हिं०पुं०) बच्चों को डराने का शब्द, हौवा।

भकार-(सं०पुं०) 'भ' स्वरूप वर्ण।

भकुआ-(हिं०वि०) मूढ, मूर्ख। **भकुआना**-(हिं०क्रि०) व्यग्र होना, घवड़ा जाना।

भकोसना-(हिं०क्रि०)बिना अच्छी तरह से कुचले खा जाना, निगलना।

भक्त-(सं०नपुं०)भात, (वि०) तत्पर भक्तियुक्त,। **भक्तवत्सल**-(सं०स्त्री०) भक्तों पर स्नेह करने वाला; **भक्तशाला**-(सं०स्त्री०) रसोइया घर।

भक्ति-(सं०स्त्री०) सेवा, शुश्रुषा, श्रद्धा, विश्वास, पूजा, अर्चन, स्नेह, अनुराग।

भक्ष-(सं०पुं०) अशन, खाने का काम, खाने का पदार्थ। **भक्षक**-(सं०वि०) खाने वाला। **भक्षकार**-(सं०पुं०) हलवाई। **भक्षना**-(हिं०क्रि०) भोजन करना, खाना। **भक्षणीय**-(सं०वि०) खोने योग्य। **भक्षयिता**-(सं०व०) खाने वाला। **भक्षित**-(सं०वि०) खाया हुआ।

भक्षी-(सं०वि०) भक्षक, खाने वाला।

भक्ष्य-(सं०वि०)खाने योग्य,(पुं०)अन्न, आहार; **भक्ष्यकार**-हलवाई। **भक्ष्याभक्ष्य**-(सं०नपुं०) खाने तथा न खाने योग्य पदार्थ।

भख-(हिं०पुं०) आहार, भोजन।

भखना-(हिं०क्रि०) भोजन करना, खाना।

भग-(सं०पुं०) स्त्री की योनि, मोक्ष, सौभाग्य, कान्ति।

भगत-(हिं०पुं०) भक्त, सेवक, उपासक।

भगदड़,भगदर-(हिं०स्त्री०)किसी कारण से त्रस्त होकर बहुत से लोगों का एकाएक भागना।

भगतबछल-(हिं०वि०)देखो भक्तवत्सल।

भगति-(हिं०स्त्री०) देखो भक्ति।

भगती-(ह०स्त्री०) देखो भक्ति।**भगन**-(हिं०वि०) देखो भग्न।

भगना-(हिं०पुं०) बहन का पुत्र, भांजा,

भगनी-(हिं०स्त्री०)देखो भगिनी।

भगन्दर-(सं०पुं०) गुदा में व्रण होने का रोग।

भगर-(हिं०पुं०) सड़ा हुआ अन्न, छल, कपट।

भगवती-(सं०स्त्री०)देवी,सरस्वती,दुर्गा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भगवत्-(सं०पुं०) परमेश्वर, पूजनीय गुरु, (वि०) पूजनीय।

भगवद्गीता-(सं०स्त्री०) महाभारत के भीष्म पर्व के अन्तर्गत अठारह अध्याय का वह ग्रंथ जिसमें कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग का उपदेश है।

भगवद्भक्त-(सं०पुं०) ईश्वर का भक्त।

भगवा-(हिं०पुं०) लँगोटा।

भगवान्, भगवान-(हिं०पुं०) परमेश्वर, विष्णु, कोई आदरणीय व्यक्ति।

भगांकुर-(सं०पुं०) अर्शरोग, बवासीर।

भगाना-(हिं०क्रि०) किसी को भागनेमें प्रवृत्त करना।

भगिनी-(सं०स्त्री०) सहोदरा, बहिन; **भगिनीपति**-बहनोई।

भगेड़-(हिं०वि०) वह जो काम पड़ने पर भाग जाता हो, कायर। **भगोड़ा**-(हिं०वि०) भागने वाला, कायर।

भगोल-(सं०पुं०) नक्षत्रचक्र, खगोल।

भगौती-(हिं०स्त्री०) देखो भगवती।

भगौहाँ-(हिं०वि०) वहजो भागने को तैयार हो, कायर।

भग्गुल, भग्गू-(हिं०वि०) जो विपत्ति देख कर भागता हो, युद्ध क्षेत्र से भगा हुआ, कायर।

भग्न-(सं०वि०) पराजित, हारा हुआ।

भग्नावशेष-(सं०पुं०) किसी टूटे हुए पदार्थ के टुकड़े। **भग्नांश**-(सं०वि०) हताश

भङ्ग-(सं०पुं०) पराजय, हार।

भङ्गा-(सं०स्त्री०) भांग।

भङ्गी-(सं०पुं०) नष्ट करने वाला।

भङ्गुर-(सं०वि०) नाश होने वाला, टेढ़ा। **भङ्गुरता**-(सं०स्त्री०) कुटिलता, टेढापन।

भचक-(हिं०स्त्री०) लंगड़ापन। **भचकना**-(हिं०क्रि०) चलती समय पैर का टेढ़ामेढ़ा पड़ना।

भचक्र-(सं० नपुं०) नक्षत्र समूह, राशिचक्र।

भच्छ-(हिं०पुं०) देखो भक्ष्य। **भच्छना**-(हिं०क्रि०) भक्षण करना, खाना।

भजन-(सं०नपुं०) सेवा, पूजा, बार बार किसी देवता या पूज्य का नाम लेना, स्मरण, स्तोत्र, गुण कीर्तन।

भजना-(हिं०क्रि०) सेवा करना, पहुँचना, देवता का नाम जपना।

भजनानन्द-(सं०पुं०) वह आनन्द जो परमेश्वर का नाम लेने का प्राप्त होता है।

भजनी-(हिं०वि०) भजन गाने वाला।

भजनीय-(सं०वि०) सेवा करने योग्य।

भजाना-(हिं०क्रि०) दौड़ाना, भगाना।

भञ्जन-(सं०नपुं०) नाश, ध्वंस।

भट-(सं०पुं०) योद्धा वीर, सैनिक।

भटकना-(हिं०क्रि०) भ्रम में पड़ना, मार्ग भूल जाना, **भटकाना**-(हिं०क्रि०) भ्रम में डालना।

भटकैया-(हिं०वि०) भटकने या भटकाने वाला। **भटकौहां**-(हिं०वि०) भ्रम में डालने वाला।

भटा-(हिं०पुं०) भंटा, बैगन।

भटियारा-(हिं०पुं०) देखो भठियारा।

भटोट-(हिं०पुं०) यात्रियों के गले में फाँसी लगाने वाला ठग।

भटोला-(हिं०पुं०) वह भूमि जो भाट को दी गई हो।

भट्ट-(सं०पुं०) महाराष्ट्र ब्राह्मणों की एक उपाधि, पण्डित, योद्धा, भाट।

भट्टारकवार-(सं०पुं०) रविवार।

भट्ठी-(हिं०पुं०) बड़ी भट्ठी, ईंट खपड़ आदि के पकाने का पजावा, हलवाई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का बड़ा चूल्हा, देशी मद्य बनाने का कार्यालय।

भठियाना-(हिं०क्रि०) समुद्र में भाटा आना।

भठियारपन-(हिं०पुं०) भटियारों की तरह लड़ना और गाली बकना।

भठियारा-(हिं०पुं०) सराय का प्रबंध करने वाला।

भड़क-(हिं० स्त्री०) दिखौवा चमक दमक।

भड़कदार-(हिं०वि०) चमकीला, भड़कीला।

भड़कना-(हिं०क्रि०) प्रज्वलित होना, चौंकना,।

भड़काना-(हिं०क्रि०) जलाना, चमकाना, उत्तेजित करना।

भड़कीला-(हिं०वि०)भड़कदार, चमकीला, डरकर उत्तेजित होने वाला, **भड़कीलापन**-(हिं०पुं०) भड़कीला होने का भाव।

भड़भड़-(हिं०स्त्री०) आघात से उत्पन्न शब्द, भीड़भाड़, व्यर्थ की अधिक वार्ता। **भड़भड़ाना**-(हिं०क्रि०) भड़ भड़ शब्द करना, व्यर्थ की बकबाद करना।

भड़भड़िया-(हिं०वि०) व्यर्थ की बात करने वाला।

भड़भूंजा-(हिं०पुं०) हिन्दुओं की एक छोटी जाति जो भाड़ में अन्न भूनने का काम करती है।

भड़साईं-(हिं०स्त्री०) भड़भूंजे की भाँड़।

भड़ाल-(हिं०पुं०)वीर योद्धा, लड़ाका।

भड़िहा-(हिं०पुं०) तस्कर, चोर, ठग।

भड़ी-(हिं०स्त्री०) झूठा बढावा।

भड़ुआ-(हिं० पुं०) रंडियों का तबला या सारंगी बजाने वाला।

भड़ुर, भड्डर-(हिं०पुं०) ब्राह्मणों में निम्न श्रेणी की एक जाति।

भणन-(सं०नपुं०)कथन उक्ति। **भणना**-(हिं०क्रि०)कहना। **भणित**-(सं०वि०) कहा हुआ,(स्त्री०) कही हुई बात।

भण्ड-(सं०पुं०) भांड़।

भण्डन-(सं०नपुं०) क्षति, हानि।

भतवान-(हिं०पुं०) विवाह की एक रीति, जिसमें कन्या पक्ष के लोग वर पक्ष के लोगों को कच्ची रसोई खिलाते हैं।

भतार-(हिं०पुं०) देखो भर्ता, पति।

भतीजा-(हिं०पुं०) भाई का पुत्र।

भत्ता-(हिं०पुं०) किसी कर्मचारी को यात्रा के समय दिया जाने वाला दैनिक व्यय।

भदई-(हिं० वि०) भादों महीने का, (स्त्री०) भादो के महीने में तैयार होने वाली उपज।

भदेरू-(हिं०वि०) कुरूप, भद्दा।

भदैसिल-(हिं०वि०) भद्दा, कुरूप।

भदौंहाँ-(हिं०वि०)भादों महीने में होने वाला।

भद्दा-(हिं०वि०) कुरूप, बेढंगा; **भद्दापन**-(पुं०)कुरूपता, बेढंगापन।

भद्र-(सं०पुं०) क्षेम, कुशल, (वि०) सभ्य,श्रेष्ठ, कल्याणकारी,। **भद्रकार, भद्रकारक**-(सं०वि०) कल्याण करने वाला। **भद्रगणित**-(सं० नपुं०) बीज गणित के अन्तर्गत एक गणित जो चक्रविन्यास की सहायतासे की जाती है।

भद्रता-(सं०स्त्री०)सभ्यता, शिष्टता,

भद्रशील-(सं०वि०) सच्चरित्र।

भद्रा-(सं०स्त्री०) आकाश गंगा,फलित ज्योतिष में द्वितीया, सप्तमी और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

द्वादशी तिथियों का नाम। **भद्राकरण**-(सं०नपुं०) मुड़न, सिर का बाल मुड़वाना।
भद्री-(हिं०वि०) भाग्यवान्।
भनक-(हिं०स्त्री०) धीमा शब्द, ध्वनि, जनश्रुति। **भनकना** (हिं०क्रि०) धीरे से बोलना या कहना।
भनना-(हिं०क्रि०) कहना।
भनभनाना-(हिं०क्रि०) भनभन शब्द करना। **भनभनाहट**-(हिं०स्त्री०) गुंजार।
भनित-(हिं०वि०) देखो भणित।
भबका-(हिं०पुं०) अर्क उतारने या मद्य चुआने का यन्त्र।
भभक-(हिं०स्त्री०) उबलना, उबाल।
भभकना-(हिं० क्रि०) गरमी पाकर किसी वस्तु का फटना, उबलना, प्रज्वलित होना, भड़कना।
भभका-(हिं०पुं०) देखो भबका।
भभकी-(हिं० स्त्री०) झूठी धमकी, धुड़की।
भभूका-(हिं०पुं०) ज्वाला, लपट।
भभूत-(हिं०स्त्री०) वह भस्म जिसको शैव लोग माथे तथा भुजा पर लगाते हैं।
भभ्भड़-(हिं०स्त्री०) जन समुदाय।
भंभीरा-(हिं०स्त्री०) झींगुर।
भय-(सं०नपुं०) भय हेतु, डर। **भयंकर**-(सं० वि०) भयकारक। **भयकर्ता**-(सं०वि०) भयानक, भय उत्पन्न करने वाला।
भयङ्कर-(सं०वि०) भयजनक।
भयंकरता-(हिं०स्त्री०) भीषणता।
भयजात-(सं०वि०) भय से उत्पन्न।
भयद-(सं०वि०) भय उत्पन्न करने वाला।
भयप्रद-(सं०वि०) भयानक।
भयभीत-(सं०वि०) डरा हुआ।
भयवाद-(हिं०पुं०) भाईबंद, सजातीय।
भयहारी-(हिं० वि०) डर दूर करने वाला।
भया-(हिं०वि०) हुआ।
भयाकुल-(सं०वि०) डरसे घबड़ाया हुआ
भयातुर-(सं० वि०) डर से घबड़ाया हुआ।
भयानक-(सं०वि०) भयंकर, डरावना।
भयाना-(हिं०क्रि०) डरना, डराना।
भयारा-(हिं०वि०) भयानक, डरावना।
भयावन-(हिं०वि०) डरावना। **भयावह**-(सं०वि०) भयंकर, डरावना।
भय्या-(हिं०पुं०) भैया, भाई।
भरंत-(हिं०स्त्री०) भ्रान्ति, सन्देह।
भर-(हिं०पुं०) पुष्टि, मोटाई, (क्रि० वि०) द्वारा, बलसे, (हिं० पुं०) एक अस्पृश्य जाति।
भरक-(हिं०पुं०) भडक। **भरकना**-(हिं०क्रि०) देखो भड़कना।
भरण-(सं०नपुं०) पालन पोषण।
भरणीय-(सं०वि०) पालने पोसने योग्य।
भरण्ड-(सं०पुं०) स्वामी, मालिक।
भरतखण्ड-(सं०नपुं०) भारतवर्ष।
भरतरी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी।
भरतवर्ष-(हिं०पुं०) देखो भारतवर्ष।
भरता-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सालन जो भंटा आलू आदि को भून कर बनाया जाता है।
भरतार-(हिं०पुं०) पति, स्वामी।
भरती-(हिं०स्त्री०) भरे जाने का भाव।
भरथ-(सं०पुं०) लोकपाल; (हिं०पुं०) देखो भरत।
भरना-(हिं०क्रि) पूर्ण करना, अवकाश या छिद्र का बन्द होना, पद पर नियुक्त करना, निर्वाह करना, खेत में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पानी देना, किसी की गुप्त रूप से निन्दा करना, सहना, झेलना।
भरना-(हिं०पुं०) उत्कोच, घूस।
भरनि-(हिं०स्त्री०) पहरावा।
भरपाई-(हिं०क्रि०वि०) भली भांति, पूर्ण रूप से, (स्त्री०) जो कुछ बाकी हो वह पूरा पूरा पा जाना।
भरपूर-(हिं०वि०) परिपूर्ण; (क्रि० वि०) भली भांति।
भरभराना-(हिं० क्रि०) रोवाँ खड़ा होना।
भरभराहट-(हिं०स्त्री०) घबड़ाहट।
भरभूंजा-(हिं०पुं०) देखो भड़भूंजा।
भरम-(हिं०पुं०) भ्रम, भ्रान्ति, संशय।
भरमना-(हिं०क्रि०) भटकना, धोखे में पड़ना, (स्त्री०) भ्रम, भ्रान्ति, भूल; **भरमाना**-(हिं०क्रि०) बहकाना, चकित होना।
भरमार-(हिं०स्त्री०) अत्यन्त, अधिकता।
भरराना-(हिं० क्रि०) भरराना, टूट पड़ना।
भरवाई-(हिं०स्त्री०) भरवाने की क्रिया या भाव, भरवाने का वेतन; **भरवाना**-(हिं०क्रि०) भरने का काम दूसरे से कराना।
भरसक-(हिं०क्रि०वि०) यथाशक्ति।
भरसन-(हिं० स्त्री०) भर्त्सना, डाँट फटकार।
भरसाई-(हिं०पुं०) देखो भाड़।
भरहरना-(हिं०क्रि०) देखो भरभराना।
भरहराना-(हिं०क्रि०) भहराना।
भराँति-(हिं०स्त्री०) देखो भ्रांति।
भराई-(हिं०स्त्री०) भरने की क्रिया या भाव, भरने का शुल्क।
भरापूर-(हिं०वि०) जिसमें किसी बात की न्यूनता न हो।
भराव-(हिं०पुं०) भरने का भाव, भरने का काम।
भरित-(हिं०वि०) भरा हुआ, पालित, जिसका पालन पोषण किया गया हो।
भरिया-(हिं०वि०) भरने वाला, पूर्ण करने वाला, ऋण चुकाने वाला।
भरी-(हिं०स्त्री०) दस मासे या एक रुपये के बराबर की तौल।
भरुहाना-(हिं०क्रि०) गर्व करना, बहकाना, उत्तेजित करना।
भरुही-(हिं०स्त्री०) लेखनी बनाने की एक प्रकार की कच्ची किलक।
भरेठ-(हिं०पुं०) द्वार के ऊपर लगाई हुई लकड़ी जिसपर भींत उठाई जाती है।
भरैया-(हिं०वि०) पालन करने वाला।
भरोसा-(हिं०पुं०) अवलम्ब, सहारा।
भरोसी-(हिं०वि०) भरोसा करने वाला, विश्वसनीय, जिस पर भरोसा किया जावे।
भरौती-(हिं०स्त्री०) वह रसीद जिसमें भरपाई की गई हो।
भरौना-(हिं०वि०) बोझल, भारी।
भर्जन-(सं०नपुं०) भूना हुआ अन्न।
भर्तव्य-(सं०वि०) भरण पोषण करने योग्य।
भर्ता-(हिं०पुं०) स्वामी, पति।
भर्तार-(हिं०पुं०) पति, स्वामी।
भर्तृत्व-(सं०नपुं०) पति का भाव या धर्म।
भर्त्सना-(सं०स्त्री०) निन्दा, डाँट-डपट, फटकार।
भर्म-(हिं०पुं०) देखो भ्रम।
भर्राना-(हिं०क्रि०) भर्र भर्र शब्द होना।
भलमनसत, भलमनसाहत, भलमनसी-(हिं०स्त्री०) सज्जनता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भला-(हिं०वि०) उत्तम, श्रेष्ठ, अच्छा, बढ़िया, (पुं०) लाभ, कल्याण।
भला-(हिं०अव्य०) अस्तु।
भलाई-(हिं०स्त्री०) अच्छापन, उपकार; भलापन-(हिं०पु०) देखो भलाई।
भले-(हिं०क्रि०वि०) भलीभाँति, अच्छी तरह से, (अव्यय) वाह।
भल्लाक्ष-(सं०वि०) जिसको कम देख पड़ता हो, मन्ददृष्टि।
भल्लुक, भल्लूक-(सं०पुं०) भालू।
भवँ-(हिं०स्त्री०) देखो भौंह।
भवंग-(हिं०पुं०) भुजग, सर्प।
भवंत-(हिं०वि) आपका, आपलोगों का।
भव-(सं०पुं०) जन्म, उत्पत्ति, संसार, क्षेम कुशल, प्राप्ति, कारण हेतु, जन्म मरण का दुःख, (हिं०पुं०) भय, डर; (वि०) कल्याण कारक, शुभ, उत्पन्न जनमा हुआ। भवक्षिति-(सं०स्त्री०) जन्मभूमि।।
भवतव्यता-(हिं०स्त्री०) देखो भवितव्यता।
भवदीय-(सं०वि०) आपका, तुम्हारा।
भवन-(सं०नपुं०) प्रासाद, हर्म्य, गृह, (हिं०पुं०) जगत्, संसार; भवनपति-घर का स्वामी।
भवना-(हिं०क्रि०) घूमना।
भवनी-(हिं०स्त्री०) गृहिणी, भार्या, स्त्री।
भवपाली-(सं०स्त्री०) संसार की रक्षा करने वाली शक्ति।
भवबन्धन-(सं०पुं०) संसारकी झंझट।
भवभञ्जन-(सं०पुं०) संसार का नाश करने वाला, काल, परमेश्वर।
भवभय-(सं०पुं०) संसार में बारबार जन्म लेने और मरने का भय।
भवाँ-(हिं०स्त्री०) चक्कर, भौरी।
भवाँना-(हिं०क्रि०) घुमाना, फिराना।
भवितव्य-(सं०वि०) भवनीय, अवश्य होने वाली। भवितव्यता-(सं०स्त्री०) भाग्य, अदृष्ट।
भविष्य-(सं०वि०) आने वाला काल।
भविष्यत्-(सं०वि०) वर्तमान काल के उपरान्त का काल, आगामी काल।
भविष्यद्वक्ता-(सं०पुं०) वह जो होने वाली बात को पहले से ही कह दे। भविष्यद्वाणी-(सं०स्त्री०) भविष्य की बात जो पहले ही से कही गई हो।
भवीला-(हिं०वि०) भावयुक्त, भावपूर्ण।
भव्य-(सं०वि०) शुभ, जो देखने में भारी और सुन्दर जान पड़े, योग्य, श्रेष्ठ, बड़ा, प्रसन्न।
भव्यता-(सं०स्त्री०) भव्य होने का भाव या धर्म।
भषण-(सं०नपुं०) कुत्ते का भूँकना।
भषना-(हिं०स्त्री०) भोजन करना, खाना।
भसना-(हिं०क्रि०) पानी के तल पर तैरना, पानी में डूबना।
भसम-(हिं०पुं०) देखो भस्म।
भसान-(बंगला पुं०) काली या सरस्वती आदि की मूर्ति की पूजा के उपरान्त नदी में प्रवाह करना। भसाना-(बं०क्रि०) पानी में डुबाना।
भसिंड, भसींड-(हिं०स्त्री०) कमलनाल, मुरार।
भसुंड-(हिं०पुं०) हाथी, गज।
भसुर-(हिं०पुं०) पति का बड़ा भाई, जेठ।
भसूंड़-(हिं०पुं०) हाथी का सूंड़।
भस्त्रका, भस्त्रा-(सं०स्त्री०) भाथी।
भस्म-(सं०पुं०) लकड़ी आदि के जलने पर बची हुई राख, चिता की राख,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अग्निहोत्र की राख, (वि०) जो जलाकर राख हो गया हो।

भस्मित-(सं०वि०) जलाया हुआ।

भस्मीभूत-(सं०वि०) जो जल कर राख हो गया हो।

भहराना-(हिं०क्रि०) झोंके से गिर पड़ना, टूट पड़ना, फिसल पड़ना।

भहूं-(हिं०स्त्री०) देखो भौंह।

भाँउँ-(हिं०पुं०) भाव, अभिप्राय, आशय।

भांग-(हिं०स्त्री०) सन की जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियां मादक होती हैं, विजया, बूटी।

भाँज-(हि०स्त्री०) किसी पदार्थ को मोड़ने या तह करने की क्रिया।

भाँजना-(हिं०क्रि०) तह करना, मोड़ना, मुद्गर आदि को घुमाना, दो या अनेक लड़ियों को एक में मिला कर बटना।

भाँजा-(हिं०पुं०) देखा भानजा। भाँजी-(हिं०स्त्री०) बहिन की पुत्री, किसी होते हुए काममें बाधा डालनेवाली बात।

भाँट-(हिं०पुं०) देखो भाट।

भाँटा-(हिं०पुं०) बैंगन।

भाँड़-(हिं०पुं०) मसखरा, ठिठोलिया, विदूषक।

भाँड़ना-(हिं०क्रि०) भ्रष्ट करना, बिगाड़ना।

भाँड़ा-(हिं०पुं०) पात्र, बड़ा पात्र।

भाँडागार-(हिं०पुं०) कोष। भाँडागारिक-(हिं०पुं०) भंडारी, कोषाध्यक्ष।

भाँति-(हिं०स्त्री०) तरह, प्रकार।

भाँपना-(हिं०क्रि०) अनुमान कर लेना, ताड़ना।

भाँय भाँय-(हिं०पुं०) निर्जन स्थान का शब्द।

भाँवर-(हिं०स्त्री०) परिक्रमा करना।

भा-(सं०स्त्री०) प्रभा, कान्ति, शोभा, (हि०अव्य०) यदि इच्छा हो।

भाइ-(हिं०पुं०) प्रीति, प्रेम, स्वभाव।

भाइप-(हिं०पुं०) भाई चारा, आत्मीयता।

भाई-(हिं०पुं०) भ्राता, सहोदर, भैया, संबोधन का एक शब्द, किसी वंश या परिवार की किसी एक पीढ़ी के व्यक्ति के लिये उसी पीढ़ी का दूसरा मनुष्य यथा-ममेरा या चचेरा भाई। भाईचारा-(हिं०पुं०) भाई के समान होने का भाव। भाईदूज-(हिं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला द्वितीया। भाईपन-(हिं०पुं०) भातृत्व, परम मित्र या बन्धु होने का भाव। भाईबन्द-(हिं० पुं०) अपनी जाति के लोग।

भाउ-(हिं०पुं०) भाव, चित्तवृत्ति।

भाऊ-(हिं०पुं०) भावना, चित्तवृत्ति, प्रेम, स्नेह, महिमा, अवस्था।

भाएँ-(हि०क्रि०वि०) बुद्धि के अनुसार।

भाकसी-(हिं०स्त्री०) भट्ठी, भरसाई।

भाक्त-(सं०वि०) भक्त सम्बन्धी।

भाक्ष-(सं०वि०) खाने योग्य।

भाख-(हिं०पुं०) देखो भाषण। भाखन-(हिं०क्रि०) बोलना, कहना।

भाखर-(हिं०पुं०) पर्वत, पहाड़।

भाखा-(हिं०स्त्री०) देखो भाषा।

भाग-(सं०पुं०) अंश, भाग्य, प्रारब्ध। गणित में किसी राशि को अनेक अंशों या भागों में बांटने की क्रिया, वैभव, ऐश्वर्य। भागक-(सं०वि०) भाजक। भागकर-(सं०पुं०) विभाग करने वाला, बाँटने वाला।

भागड़-(हिं०स्त्री०) भगदड़।

भागधेय-(सं०नपुं०) भाग्य, प्रारब्ध, (पुं०) दायाद, सपिण्ड।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भागना-(हिं०क्रि०) पिंड छुड़ाना, टल जाना, हट जाना।
भागनेय-(स०पुं०) भानजा ।
भागफल-(सं०पुं०) गणित में वह संख्या जो भाज्य को भाजक से भाग देनेपर प्राप्त हो, लब्धि ।
भागवंत-(हिं०वि०) भाग्यवान्, भाग्यशील ।
भागवत-(सं०नपुं०) अठारह पुराणों के अन्तर्गत एक महापुराण; (सं०वि०) भगवद्भक्त।
भागवान-(हिं०वि०) देखो भाग्यवान्।
भागहर-(सं०वि०) भाग या अंश लेने वाला। **भागहार**-(सं०पुं०) गणित में किसी राशि को कुछ निश्चित अंशों में विभक्त करने की क्रिया। **भागार्ह**-(सं०वि०) जो विभक्त करने योग्य हो।
भागिनेय-(सं०पुं०)भगिनीपुत्र,भानजा; **भागिनेयी**-(सं०पुं०) भानजी।
भागी-(हिं०पुं०) अधिकारी, अंशधारी;
भागीरथी-(सं०स्त्री०) जाह्नवी, गंगा;
भाग्य-(सं०नपु०) अदृष्ट।
भाजक-(सं०वि०) विभाग करने वाला; (पुं०) गणित में वह अंक जिससे कोई संख्या भाग दी जावे; **भाजकांश**-(सं०पुं०) वह संख्या जिससे किसी राशि को भाग देने पर कुछ शेष न बचे।
भाजन-(सं०नपुं०) आधार, पात्र, बरतन, योग्य, **भाजनता**-(सं०स्त्री०) योग्यता।
भाजना-(हिं०क्रि०) भाग देना।
भाजित-(सं०वि०) पृथक् किया हुआ।
भाजी-(हिं०स्त्री०) साग, तरकारी, मिठाई, पकवान आदि जो तेहवारों पर इष्ट मित्र या सम्बन्धियों के घर भेजा जाता है।
भाज्य-(सं०वि०) विभाग करने योग्य; (पुं०) वह संख्या जो भाजक से भाग दी जाती है।
भाट-(हिं०पुं०) स्तुतिपाठक, बन्दी, चारण।
भाटा-(हिं०पुं०) पानी का चढ़ाव की ओर से उतार की ओर जाना।
भाठ-(हिं०स्त्री०) वह मिट्टी जिसको नदी बाढ़ में लाती है और उतार के समय कछार में जमाती है, (हिं०पुं०) गड्ढा।
भाठी-(हिं०स्त्री०) पानी का उतार, देखो भट्ठी।
भाड़-(हिं०पुं०) भड़भूजों की भट्ठी।
भाड़ा-(हिं०पुं०) किराया।
भाण्ड-(सं०नपुं०) पात्र,बनिये का मूलधन; **भाण्डक**-छोटा पात्र; **भाण्डपति**-बनियां, व्यवसायी; **भाण्डशाला**-भंडारघर; **भाण्डागारिक**-भंडारी।
भाण्डार-(सं०नपुं०) भंडारघर।
भाण्डारिक-(सं०पुं०) भण्डारी।
भाण्डिनी-(सं०स्त्री०) मंजूषा, छोटी पेटी।
भात-(हिं०पुं०) पानी में उबाला हुआ चावल।
भाथा-(हिं०पुं०) तरकश, तूणीर, बड़ी भाथी।
भाथी-(हिं०स्त्री०) चमड़े की बनी हुई धौंकनी जिसमें से हवा फेंक कर भट्ठी की आग सुलगाई जाती है।
भादों-(हिं०पुं०)सावन के बाद के तथा कुआर के पहिले के महीने का नाम।
भान-(सं०नपुं०) प्रकाश, दीप्ति, चमक
भानजा-(हिं०पुं०) बहिन का लड़का।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भानना-(हिं०क्रि०) तोड़ना, काटना, मिटाना।
भानमती-(हिं०स्त्री०) जादूगरनी।
भाना-(हिं०क्रि०) जान पड़ना, रुचना
भानु-(सं०पुं०) सूर्य। भानुकम्प-ग्रहण आदि के समय सूर्य के बिम्ब का काँपना।
भानुदिन-(सं०नपुं०) रविवार। भानु-पाक-(सं०पुं०) औषध आदि को सूर्य की गरमी से पकाने की विधि। भानुफला-(सं०स्त्री०)कदली, केला। भानुमत-(सं०वि०)दीप्तिमान् प्रकाश-मान्।
भाप-(हिं०स्त्री०) वाष्प।
भापना-(हिं०क्रि०) देखो भाँपना।
भाभर-(हिं०पुं०) पहाड़ों के नीचे तराई के बीच का जंगल।
भाभरी-(हिं०स्त्री०) गरम राख।
भाभी-(हिं०स्त्री०) बड़े भाई की स्त्री।
भाम-(सं०पुं०) बहनोई, (हिं०स्त्री०) भामा, स्त्री।
भामक-(सं०पुं०) भगिनीपति, बहनोई।
भामण्डल-(सं०नपुं०)किरणों की मंडला
भामिनी-(सं०स्त्री०) स्त्री।
भाय-(हिं०पुं०) भाई, भाव, ढंग।
भायप-(हिं०पुं०)भ्रातृभाव, भाईचारा।
भाया-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा।
भार-(सं०पुं०) गुरुत्व, बोझ, (हिं० पुं०) उत्तरदायित्व।
भारत-(सं०पुं०) महाभारत का पूर्व रूप जिसका मूल चौबीस हजार श्लोकों का है, इसको वेदव्यास ने बनाया था, लम्बा चौड़ा विवरण, बड़ा संग्राम। भारत खण्ड-(सं०पुं०) भारत वर्ष। भारतवर्ष-(सं०पुं०)वह देश जो उत्तर में हिमालय पर्वत तक, दक्षिण में कन्या कुमारी तक, पश्चिम में सिन्धु नदी तक तथा पूर्व में ब्रह्म-पुत्र नदी तक विस्तृत है।
भारती-(सं०स्त्री०)वचन, वाक्य, सर-स्वती। भारतीय-(सं०वि०) भारत सम्बन्धी, भारत का।
भारथ-(हिं०पुं०) युद्ध, सग्राम। भारथी-(हिं०पुं०) योद्धा, सिपाही;
भारना--(हिं०क्रि०) भार लादना।
भारभारी, भारभूत-(सं०वि०) बोझ उठाने वाला।
भारयष्टि-(सं०स्त्री०) बँहगी।
भारवाह भारवाहक-(स०वि०) बोझ ढोने वाला।
भारवी-(सं०पुं०) तुलसी का पेड़।
भारा-(हिं०पुं०) देखो भाड़ा।
भारिक-(सं०पुं०) बोझ ढोने वाला।
भारी-(हिं०वि०) अधिक भार का, कठिन, विशाल, अधिक, अत्यन्त गम्भीर, प्रबल। भारीपन-(हिं०पुं०) भारी होने का भाव।
भार्या-(सं०स्त्री०) पत्नी जाया, दारा, कलत्र; भार्यात्व-भार्या का भाव या धर्म।
भाल-(सं०नपुं०) ललाट, मस्तक, कपाल, (हिं०पुं०) भाला, बरछा। भालचन्द्र-(सं०पुं०)शिव, महादेव।
भालना-(हिं०क्रि०)ध्यान पूर्वक देखना;
भाला-(हिं०पुं०)बरछा, साँग। भाल-बरदार-(हिं०पुं०) बरछा चलाने वाला।
भालि-(हिं०स्त्री०)बरछी, शूल, काँटा। भाली-(हिं०स्त्री०)भाले की नोक।
भालू-(हिं०पुं०) एक स्तनपायी भयंकर चौपाया जो जगलों और पहाड़ों में पाया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भावंता-(हिं०पुं०) भावी, होने वाला।
भाव-(सं०पुं०) मन का विकार, सत्ता, अभिप्राय, स्वभाव, चित्त, आत्मा, चेष्टा, चोचला, आदर, प्रतिष्ठा, श्रद्धा भक्ति, कल्पना, ढंग, अवस्था।
भावइ-(हि०अव्य०) जो इच्छा हो, जो जी चाहे।
भावक-(वि०) भाव पूर्ण।
भावगति-(हिं०स्त्री०) विचार, इच्छा।
भावज-(सं०वि०) भाव से उत्पन्न, (हि०स्त्री०) भाई की स्त्री, भौजाई।
भावताव-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का मूल्य या भाव।
भावन-(हिं०वि०) जो प्रिय या अच्छा जान पड़े।
भावना-(सं०स्त्री०) साधारण विचार या कल्पना, ध्यान, इच्छा। (वि०) प्रिय, प्यारा।
भाविन-(हिं०स्त्री०) मन की बात, जो चित्त में आवे। **भावनीय**-(सं०वि०) चिन्ता या विचार योग्य।
भावबोधक-(सं०वि०) वह जिसके द्वारा भाव का बोध हो।
भावभक्ति-(हिं०स्त्री०) आदर सत्कार।
भावली (हिं०स्त्री०) खेत के उपज की बँटाई जो भूस्वामि और कृषक के बीच होती है।
भाववाचक-(सं०पुं०) व्याकरण में वह संज्ञा जिससे किसी पदार्थ का भाव, गुण अथवा धर्म सूचित होता है।
भाववाच्य-(सं०पुं०) व्याकरण में का वह रूप जिससे यह विदित होता है कि वाक्य का उद्देश्य उस क्रिया का कर्ता और कार्य नहीं है परन्तु केवल कोई भाव है।
भावात्मक-(सं०वि०) किसी विषय की प्राकृत अवस्था का सूचक।
भावार्थ-(सं०पुं०) वह अर्थ या टीका जिसमें मूल का केवल भाव आ जावे अक्षरशः अनुवाद न हो, तात्पर्य।
भावित-(सं०वि०) सोचा हुआ, मिलाया हुआ, शुद्ध किया हुआ।
भावी-(हिं०स्त्री०) भाग्य, प्रारब्ध, अवश्य होने वाली बात। (वि०) भावना करने वाला, सोचने वाला।
भावै-(हिं०अव्य०) चाहे।
भाष-(हिं०पुं०) भाषा।
भाषक-(सं०वि०) वक्ता, बोलने वाला
भाषण-(सं०नपुं०) वक्तृता, व्याख्यान कथन, बातचीत।
भाषा-(सं०स्त्री०) वाक्य, बोली, किसी विशेष जनसमूह में प्रचलित बात-चीत करने का ढंग।
भाषातत्व-(सं०नपुं०) शब्द तत्व का विज्ञान।
भाषान्तर-(सं०पुं०) अनुवाद, उल्था।
भाषित-(सं०वि०) कथित, कहा हुआ।
भाषी-(हिं०वि०) कहने या बोलने वाला।
भाष्य-(सं०नपुं०) सूत्रों की व्याख्या या टीका। **भाष्यकार**-(सं०पुं०) सूत्रों की व्याख्या या टीका करने वाला।
भास-(सं०पुं०) दीप्ति, प्रकाश, चमक, स्वाद, मिथ्याज्ञान।
भासना-(हि०क्रि०) चमकना, देख पड़ना, फँसना।
भासमान-(सं०वि०) दिखाई पड़ता हुआ।
भासित-(सं०वि०) दिखाई पड़ने वाला।
भासुर-(सं०पुं०) स्फटिक, बिल्लौर, वीर योद्धा।
भास्कर-(सं०पुं०) सूर्य, अग्नि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिगाना-(हिं०क्रि०) देखो भिगोना।
भिजाना-(हिं०क्रि०) देखो भिगोना।
भिंडी-(हि०स्त्री०) एक पौधे की फली जिसकी तरकारी बनती है।
भिक्षा-(सं०स्त्री०) भीख, मांगी हुई वस्तु; भिक्षापात्र-(सं०नपुं०) भीख मांगन का पात्र। भिक्षार्थी-(सं०वि०) भिक्षुक, भिखमंगा। भिक्षावृत्ति-(सं० वि०) भीख मांगकर जीविका निर्वाह करने वाला।
भिक्षु-(सं०पुं०) भिक्षुक, भिखारी।
भिखमंगा-(हिं०पुं०) भिक्षुक; भिखारी।
भिखार-(हि०पुं०) भिखमंगा, भिखारी।
भिखारिन, भिखारिणी-(हिं०स्त्री०) भीख मांगने वाली स्त्री।
भिखारी-(हि०पुं०) भिक्षुक।
भिखिया-(हि०स्त्री०) देखो भिक्षा।
भिगाना, भिगोना-(हिं०क्रि०) पानी से गीला करना।
भिच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो भिक्षा। भिच्छु-(हिं०पुं०) देखो भिक्षु।
भिजवाना-(हिं०क्रि०) भेंजने का काम दूसरे से कराना।
भिगवाना-(हिं०क्रि०) भिगोने में दूसरे को प्रवृत्त करना।
भिजाना-(हिं०क्रि०) गीला करना।
भिड़-(सं०स्त्री०) बर्रे, ततैया।
भिड़ना-(हिं०क्रि०) लड़ना, झगड़ना,
भितल्ला-(हिं०पुं०) दोहरे कपड़े का भीतरी पल्ला, (वि०) भीतर का।
भितल्ली-(हिं०स्त्री०) चक्की के नीचे का पाट।
भिताना-(हिं०क्रि०) डराना।
भिदना-(हिं०क्रि०) प्रवेश करना, घुसना,
भिनकना-(हिं०क्रि०) भिन्न भिन्न शब्द करना, घृणा उत्पन्न होना। भिनभिनाना-(हिं०क्रि०) भिन भिन शब्द करना।
भिनसहरा, भिनसार-(हिं०पुं०) प्रातःकाल, सवेरा। भिनहीं-(हिं०क्रि० वि०) प्रातःकाल, सवेरे।
भिन्न-(सं०वि०) कटा हुआ, अन्य, दूसरा, पृथक्, (पुं०) गणित में वह संख्या जो एकाई से कम हो; भिन्नता-(सं० स्त्री०) भिन्न होने का भाव, भेद।
भिन्नार्थक-(सं०वि०) दूसरे अर्थ का।
भियना-(हिं०क्रि०) डरना।
भिया-(हिं०पुं०) भ्राता, भाई।
भिरना-(हिं०क्रि०) देखो भिड़ना।
भिरिंग-(हिं०पुं०) देखो भृंग।
भिषक्-(सं०पुं०) चिकित्सक, वैद्य।
भिषज्-(हिं०पुं०) चिकित्सक, वैद्य।
भिष्टा-(हिं०पुं०) देखो विष्टा, मल।
भिसज-(हिं०पुं०) वैद्य।
भिस्स-(हिं०स्त्री०) कमल की जड़, भसींड़
भिस्सा-(सं०स्त्री०) अन्न, अनाज।
भींचना-(हिं०क्रि०) खींचना, कसना,
भींजना-(हिं०क्रि०) गीला होना।
भी-(हिं०स्त्री०) भय, डर, (अव्य०), निश्चय करके, अवश्य, तक।
भीक-(हिं०वि०) भीत, डरा हुआ।
भीख-(हिं०स्त्री०) भिक्षा में दी हुई वस्तु
भीखन-(हिं०वि०) विकराल, भीषण;
भीखम-(वि०) भयानक, डरावना।
भीगना-(हिं०क्रि०) आर्द्र होना।
भीजना-(हिं०क्रि०) देखो भींगना।
भीटा-(हि०पुं०) टीलेदार ऊँची भूमि, या छाजन।
भीड़-(हि०स्त्री०) जमघट, जनसमूह, संकट।
भीत-(हिं०स्त्री०) भित्तिका, विभाग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने का परदा, खण्ड, टुकड़ा, (हिं० वि०) डरा हुआ;
भीतर-(हिं०क्रि०) मे, (पु०) हृदय, अन्तःकरण, अन्तःपुर।
भीतरा-(हिं०वि०) अन्तःपुर में आने जाने वाला मनुष्य।
भीतरी-(ह०वि०) भीतर वाला।
भीति-(सं०स्त्री०) भय, डर, (हिं०-स्त्री०)दीवार; **भीतिकर, भीतिकारी**-(सं०वि०) डरावना।
भीन-(हिं०पुं०) प्रातःकाल,सवेरा।
भीनना-(हिं०क्रि०)समाजाना,भर जाना
भीनी-(हिं०वि०) मीठी।
भीम-(सं०वि०) भीषण, घोर, भयंकर, **भीमता**-(सं० स्त्री०) भयंकरता, **भीमनाद**-(सं०पुं०) सिंह, भयंकर शब्द।
भीर-(सं०पु०)देखो आभीर, अहीर।
भीर-(हिं०स्त्री०) देखो भीड़; संकट, विपत्ति, (वि०) भयभीत; **भीरना**-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना।
भीरु-(सं०वि०) भयभीत, डरपोक, **भीरुता**-(सं०स्त्री०)कायरता,भय, डर, **भीरुताई**-(हिं० स्त्री०) **भीरुता**।
भीरे-(हिं०क्रि०वि०)समीप में, पास।
भीषण-(वि०) भयानक, डरावना, **भीषणता**-(हिं०स्त्री०) डरावनापन,
भीषन-(हिं०वि०)देखो भीषण, भयंकर,
भीषम-(हिं०पुं०) देखो भीष्म।
भीष्म-(सं०वि०) भयानक, भयंकर **भीष्मगन्धक**-(सं०पुं०) माधवी लता
भीसम-(हिं०पुं०) देखो भीष्म।
भुंइ-(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
भुंइहरा-(हिं०पुं०) भूमि खोद कर बनाया हुआ स्थान।
भुंजना-(हिं०क्रि०)भुन जाना, झुलसना
भुंजना-(हिं०क्रि०) भूनना।
भुंडा-(हिं०वि०) बिना सींघ का।
भुअ-(हिं०स्त्री०) भ्रू, भौंह।
भुअन-(हिं०पुं०) देखो भुवन।
भुआर,भुआल-(हिं०पुं०) भूपाल,राजा
भुइँ-(हिं०स्त्री०) भूमि, पृथ्वी।
भुइँकम्प, भुइँडोल-(हिं०पुं०) भूकम्प, भूचाल।
भुक-(हिं०पुं०) भोजन, आहार।
भुकड़ी-(हिं०स्त्री०) सड़े पदार्थ पर पड़ने वाली पपड़ी।
भुकराँध-(हिं०स्त्री०) सड़ने की दुर्गन्ध।
भुकाना-(हिं०क्रि०) बकाना।
भुक्खड़-(हिं०वि०)भूखा, कंगाल,दरिद्र।
भुक्त-(सं०वि०) भक्षित, खाया हुआ भोगा हुआ, **भुक्तशेष**-(सं०नपुं०) उच्छिष्ट, जूठा।
भुक्ति-(सं०स्त्री०) भोजन, आहार,
भुखमरा-(हिं०वि०) भुक्खड़, पेटू।
भुखाना-(हिं०क्रि०) भूख से पीड़ित होना; **भुखालू**-(हिं०वि०) भूखा।
भुगत-(हिं०स्त्री०) देखो भुक्ति।
भुगतना-(हिं०क्रि०) भोगना, सहना, **भुगतान**-(हिं०पुं०) निबटारा; **भुगताना**-(हिं०क्रि०)पूरा करना, बिताना
भुगाना-(हिं०क्रि०) भोग कराना।
भुगुति-(हिं०स्त्री०) देखो भुक्ति।
भुच्चड़-(हिं०वि०) मूर्ख।
भुजंग-(हिं०पुं०) भुजङ्ग, सर्प।
भुज-(सं०स्त्री०) भुजा, बाहु, बाँह, समकोणों का पूरक कोण, किसी क्षेत्र के किनारे की रेखा, प्रान्त, किनारा, शाखा, त्रिभुज का आधार।
भुजङ्ग-(सं०पुं०)सर्प,।
भुजङ्गा-(हिं०पुं०)काले रंग का मधुर स्वर बोलने वाला एक प्रसिद्ध पक्षी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भुजज्या-(स०स्त्री०) त्रिकोण क्षेत्र की भुजग्रीवा।
भुजदण्ड-(सं०पुं०) बाहुदण्ड। भुजपाश-(सं०पुं०) गले में हाथ डालना, गलबाँही।
भुजबन्द-(हिं०पुं०) बाहमें पहिरने का एक आभूषण।
भुजबल-(सं०पुं०) बाहुबल।
भुजमूल-(सं०नपुं०) बाहुमूल, काँख।
भुजवा-(हिं०पुं०) भड़भूंजा।
भुजशिखर, भुजशिर-(सं०) स्कन्ध, कन्धा
भुजा-(सं०स्त्री०) बाँह, हाथ।
भुजाना-(हिं०क्रि०) देखो भुनाना।
भुजामध्य-(सं०नपुं०) केहुनी। भुजामूल-(सं०नपुं०) बहुमूल कांख।
भुजाली-(हिं०स्त्री०) खुखरी, छोटी बरछी।
भुजिया-(हिं०पुं०) उबाले हुए धान का चावल।
भुजौना-(हिं०पुं०) भाड़ में भुजा हुआ अन्न, चबैना भुनने या भुनाने का शुल्क।
भुट्टा-(हिं०पुं०) जुआर की बाल, मक्के की हरी बाल।
भुन-(हिंपुं०) अव्यक्त गुंजार का शब्द
भुनगा-(हिं०पुं०) फतिंगा, अति दुर्बल मनुष्य।
भुनना-(हिं०क्रि०) भूना जाना, नोट रुपये आदि के बदले में छोटी मुद्रा का मिलना।
भुनभुनाना-(हिं०क्रि०) भुनभुन शब्द करना, मन ही मन कुछ बड़बड़ाना।
भुनाना-(हिं०क्रि०) भुनने का काम कराना, नोट रुपये आदि को छोटी मुद्रा में बदलना।
भुवि-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
भुरकना-(हिं०क्रि०) सूखकर भुरभुरा हो जाना, भूलना।
भुरका-(हिं०पुं०) बुकनी, अबीर, मिट्टी का बड़ा कसोरा;। भुरकाना-(हिं० क्रि०) भुरभुरा करना।
भुरकी-(हिं०स्त्री०) अन्न रखने का छोटा कोठिला।
भुरकुन-(हिं०पुं०) चूर्ण, चूरा।
भुरकुस-(हिं०पुं०) चूर्ण, चूरा।
भुरता-(हिं०वि०) चोखा या भरता नाम का सालन।
भुरभुरा-(हिं०वि०) कुड़कीला।
भुरभुराना-(हिं०क्रि०) चूर्ण आदि को छिड़कना।
भुरवना-(हिं०क्रि०) भुलवाना।
भुराई-(हि०स्त्री०) भोलापन, भूरापन।
भुराना-(हिं०क्रि०) भूलना, भुलाना। भुलक्कड़-(हिं०वि०) भूलने के स्वभाव वाला। भुलना-(हिं०पुं०) देखो भुलक्कड़।
भुलभुला-(हिं०पुं०) गरम राख।
भुलवाना-(हिं०क्रि०) भ्रम में डालना,
भुलसाना-(हिं०क्रि०) गरम राख में झुलसना।
भुलाना-(हिं०क्रि०) धोखा देना, भ्रम में पड़ना।
भुलावा-(ह०पुं०) छल, कपट, धोखा।
भुवंग-(हिं०पुं०) देखो भुजंग, सर्प, सांप
भुव-(सं०पुं०) संसार, पृथ्वी।
भुवन-(सं०नपुं०) जगत्, संसार, जल।
भुवा-(हिं०पुं०) रूई, घूवा।
भुवार, भुआल-(हिं०पुं०) देखो भुवाल।
भुवि-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि।
भुस-(हिं०पुं०) भूसा।
भुसी-(हिं०स्त्री०) देखो भूसी।
भूंकना-(हिं०क्रि०) कुत्ते का भों भों करना, व्यर्थ बक बक करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूंचाल-(हिं०पुं०) भूकम्प।
भूंजना-(हिं०क्रि०) पकाना, तलना, कष्ट देना।
भूंजा-(हिं०पुं०) भूना हुआ अन्न, चवेना, भड़भूजा।
भूंडोल-(हिं०पुं०) देखो भूकम्प।
भू-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, स्थान,
भूआ--(हिं०पुं०) रूई के समान हलकी तथा कोमल वस्तु का छोटा टुकड़ा।
भूकन्द-(सं०पुं०) सूरण, ओल।
भूकम्प-(सं०पुं०) भूचाल, भूंडोल।
भूख-(हिं०स्त्री०) क्षुधा, अभिलाषा, कामना।
भूखन-(हिं०पुं०) देखो भूषण।
भूखा-(हिं०वि०) जिसको भोजन की प्रबल इच्छा हो, इच्छुक।
भूगर्भ-(सं०पुं०) पृथ्वी का भीतरी भाग; भूगर्भ गृह-भूमि के भीतर का घर।
भूगर्भ-(सं०पुं०) भूमण्डल, वह शास्त्र जिसके द्वारा पृथ्वी के ऊपरी भाग का स्वरूप तथा उसके प्राकृतिक विभागों का ज्ञान हमको होता है।
भूचक्र-(सं०नपुं०) पृथ्वी की परिधि, विषुवत् रेखा, अयन वृत, क्रान्ति वृत्त
भूचर-(सं०पुं०) भूमि पर रहने वाला प्राणी।
भूचाल(हिं०पुं०) भूकम्प, भूडोल।
भूचित्र-(सं०नपुं०) पृथ्वी का मानचित्र
भूड़-(हिं०स्त्री०) बालू मिली हुई भूमि
भूत-(सं०नपुं०) मृत शरीर, पिशाच आदि व्याकरण में क्रिया का वह रूप जो यह सूचित करता है कि क्रिया का व्यापार समाप्त हो चुका, अतीत काल, प्राणी, जन्तु, (वि०) युक्त, मिला हुआ, बीता हुआ, सदृश, समान; भूतदया-प्राणि मात्र पर दया करना; भूतकाल-(सं०पुं०) बीता हुआ समय; भूतकालिक-(सं०वि०) अतीत काल संबंधी।
भूतत्व-(सं०नपुं०) भूत का भाव या धर्म। भूतत्वविद्या-(सं०स्त्री०) भूगर्भ शास्त्र, भूतपूर्व-(सं०वि०) वर्तमान कालके पहिले का, इस समय से पहिले का।
भूतल-(सं०नपुं०) पृथ्वी, संसार, पृथ्वी का ऊपरी तल, धरातल।
भूतवत्-(सं०वि०) पूर्ववत्।
भूतवादी-(सं०वि०) ठीक-ठीक बोलने वाला।
भूतसंप्लव-(सं०पुं०) प्रलय।
भूतहत्या-(सं०स्त्री०) जीवहत्या।
भूतात्मा-(सं०पुं०) जीवात्मा।
भूति-(सं० स्त्री०) वैभव, ऐश्वर्य, सम्पत्ति, उत्पत्ति, बुद्धि।
भूतिनी-(हिं०स्त्री०) डाकिनी।
भूदेव-(सं०पुं०) ब्राह्मण।
भूधन-(सं०पुं०) राजा, नृप।
भूधर-(सं०पुं०) शेषनाग।
भूनना-(हिं०क्रि०) आग पर रख कर पकाना।
भूनेता-(सं०पुं०) भूपति, राजा।
भूप-(सं०पुं०) राजा, नृप।
भूपाल-(सं०पुं०) नृप, राजा।
भूप्रकम्प-(सं०पुं०) भूकम्प।
भूबिम्ब-(सं०नपुं०) पृथ्वी की छाया।
भूभल-(हिं०स्त्री०) गरम राख या धूल।
भूभुज-(सं०पुं०) नृप, राजा।
भूभृत-(सं०पुं०) पर्वत, राजा।
भूमण्डल-(सं०नपुं०) मण्डलाकार भूमि भाग, पृथ्वी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमि-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, स्थान, क्षेत्र, आधार, वास स्थान, प्रदेश, प्रान्त।
भूमिकम्प-भूडोल।
भूमिका-(सं०स्त्री०) रचना, वक्तव्य, मुखवन्ध, दीवाचा।
भूमिखण्ड-(सं०नपुं०)भूमि का भाग।
भूमिगर्त-(सं०पुं०) भूमि में का विवर छिद्र, छेद। भूमिगुहा-(सं०स्त्री०) सुरंग। भूमिगृह-(सं०नपुं०)तहखाना
भूमिचल-(सं०नपुं०) भूकम्प, भूडोल।
भूमिज-(सं०वि०)जो भूमि से उत्पन्न हुआ हो। भूमिजीवी-(सं०पुं०) खेतिहर, किसान। भूमितल-(सं० नपु०) भूतल। भूमिदेव-(स०पुं०) ब्राह्मण। भूमिधर-(स०पु०) पर्वत, पहाड़। भूमिप, भूमिपति, भूमिपाल-(सं०पुं०) भूपति, राजा। भूमिभृत-(सं०पुं०) राजा, पर्वत, पहाड़।
भूमिया-(हिं०पुं०) ग्रामदेवता। भूमिरुह-(सं०पुं०) वृक्ष, पेड़। भूमिलोक-(सं०पुं०)पृथ्वी लोक, भूमिष्ठ-(सं०पुं०) भूमि पर गिरा हुआ।
भूमिसुर-(सं०पुं०) ब्राह्मण।
भूमीन्द्र-(सं०पुं०) भूपति, राजा।
भूम्य-(सं०वि०) भूमि पर होने योग्य।
भूय-(सं०अव्य०)वहुत, अधिक, फिर से
भूयिष्ठ-(सं०वि०) बहुतर, प्रचुर।
भूर-(हिं०वि०) वहुत ,अधिक।
भूरसी (दक्षिणा)-(हिं०स्त्री) वह थोड़ी थोड़ी दक्षिणा जो किसी बड़े यज्ञ, दान अथवा धर्मकृत्य के अन्त में उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।
भूरा-(हिं०पुं०) कच्ची चीनी, खाँड,
भूरि-(सं०वि०) प्रचुर, अधिक, बड़ा भारी।
भरिता-(सं०स्त्री) अधिकता।
भूरुह-(सं०पुं०) वृक्ष, पेड़।
भूर्जपत्र-(सं०वि०) भोजपत्र।
भूर्लोक-(सं०पुं०) मर्त्य लोक।
भूल-(हिं०स्त्री०)दोष,अपराध, अशुद्धि;
भूलक-(हिं०पुं०)भूलने वाला।
भूलना-(हिं०क्रि०) विस्मरण होना, याद न रहना, खोजाना, (वि०) भूलने वाला।
भूलभुलैया(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का घुमावदार और चक्कर में डालने वाला गृह जिसमें एक ही तरह के वहुत से मार्ग और द्वार रहते हैं जिसके भीतर जाकर बाहर निकलना कठिन होता है।
भूलोक-(सं०पुं०)पृथ्वी लोक, संसार।
भूलोटन-(हिं०वि०) पृथ्वी पर लोटने वाला।
भूवलय-(सं०नपुं०)भूमि की परिधि।
भूविद्या-(सं०स्त्री०)भूमि के तत्वों का ज्ञान।
भूशय्या-(संस्त्री०) भूमि पर सोना।
भूशायी--(हिं० वि०) भूमि पर सोने वाला।
भूषण-(सं०नपुं०) अलंकार, आभरण।
भूषन-(हिं०पुं०) देखो भूषण।
भूषना-(हिं० पुं०) अलंकृत करना, सजाना।
भूषा-(सं०स्त्री०) आभूषण, गहना।
भूषित-(सं०वि०)अलंकृत, सज्जित।
भूसन-(हिं०पुं०) देखो भूषण।
भूसा-(हिं०पुं०) तुष, भूसी। भूसी-(हिं०स्त्री०)अन्न तथा दाने के ऊपर का छिलका।
भूसुत-(सं०पुं०)मंगल, ग्रह, वृक्ष, पेड़।
भसुर-(सं०पुं०) ब्राह्मण।
भृकुटी-(सं०स्त्री०) भृकुटी, भौंह।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भृङ्ग-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।
भृङ्गी-(सं०स्त्री०) भौंरी, भाँग।
भृत-(सं०वि०) पुष्ट, पाला हुआ।
भृति-(सं०स्त्री०) वेतन, मूल्य।
भृत्य-(सं०पुं०) दास। भृत्यता-(सं० स्त्री०)भृत्य का भाव या कर्म।
भृया-(सं०स्त्री०) दासी।
भृश-(सं०नपुं०) बहुत अधिक।
भृष्ट-(सं०वि०) भूना हूआ, भृष्टकार-(सं०पुं०) भड़भूंजा।
भेंगा-(हिं०वि०) जिसकी आँख की पुतली टेढ़ी रहती हो।
भेंट-(हिं०स्त्री०) मिलना, उपहार।
भेंटना-(हिं०क्रि०)मिलना,गले लगाना।
भेंड़-(हिं०स्त्री०) देखो भेड़।
भेवना-(हिं०क्रि०) भिगोना, तर करना
भेउ-(हिं०पुं०) भेद, रहस्य।
भेक-(सं०पुं०)मेढक, भेख-(हिं०पुं०) देखो वेष।
भेखज-(हिं०पुं०) देखो भेषज।
भेजना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ को एक स्थान से दूसरे को रवाना करना।
भेजवाना-(हिं०क्रि०) भेजने का काम दूसरे से कराना।
भेजा-(हिं०पुं०) खोपड़ी के भीतर का गूदा।
भेट-(हिं०स्त्री०) देखो भेंट।
भेड़-(हिं०स्त्री०) बकरी की जाति का एक चौपाया जिसके रोवें के कम्बल आदि बनते हैं।
-भेड़ा-(हिं०पुं०) भेड़ जाति का नर, मेढा।
भेड़िया-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध मांस-हारी जंगलनी पशु।
भेड़ी-(सं०स्त्री०) मादा भेड़।
भेद-(सं० पु०) शत्रु को बहका कर अपनी ओर मिलाना, अन्तर, प्रकार, छिपी हुई बात।
भेदक-(सं० वि०) विदारक, छेदने वाला। भेदकर-(सं०वि०) भेद करने वाला।
भेदना-(हिं०क्रि०) छेदना। भेदनीय-(सं०वि०) भेद करने योग्य।
भेदभाव-(सं०पुं०) अन्तर।
भेदित-(सं०वि०) विदारित।
भेदिया-(हिं०पुं०) भेद लेने वाला।
भेदी, भेदू-(हिं०पुं०) गुप्त वार्ता को जाननेवाला (वि०)भेद करने वाला।
भेद्य-(सं०वि०) भेद करने योग्य।
भेन-(हिं०स्त्री०) भगिनी, बहिन।
भेना-(हिं०क्रि०) भिगोना,तर करना।
भेरी-(सं०स्त्री०) नगाड़ा, पटह।
भेरीकार-(हिं०पुं०) नगाड़ा बजाने वाला।
भेली-(हिं०स्त्री०) गुड़ आदि की बट्टी या पिण्डी।
भेत्र-(हिं०पुं०) रहस्य, भेद।
भेवना-(हिं०क्रि०)भिगोना,तर करना।
भेश-(हिं०पुं०) देखो वेश।
भेष-(हिं०पुं०) देखो वेश।
भेषज-(सं०नपुं०) औषधि।
भेस-(हिं०पुं०) वेष।
भेसज-(हिं०स्त्री०) औषधि।
भेसना-(हिं०क्रि०) वस्त्र आदि पहराना।
भैंस-(हिं०स्त्री०) गाय की जाति का काला पशु जिसको लोग दूध के लिये पालते हैं भैंसा-(हिं०पुं०) भैंसे का नर।
भैं-(हिं०पुं०) भय, डर।
भैक्ष-(सं०नपुं०) भिक्षा माँगने की क्रिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भैचक-(हिं०वि०) विस्मित, चकित।
भैन-(हिं०स्त्री०) भगिनी, बहिन।
भैने-(हिं०पुं०) बहिन का पुत्र, भानजा।
भैया-(हिं०पुं०) भ्राता, भाई, एक संबोधन का शब्द जो बराबरी वाले तथा छोटों के लिये व्यवहार किया जाता है। **भैयाचार, भैयाचारी**-(हिं० पुं०) भ्रातृभाव, भाईचारा।
भैरव-(सं०वि०) भयंकर, डरावना।
भैरो-(हिं०पुं०) देखो भैरव।
भैवाद-(हिं०पुं०) भाईचारा।
भैषज, भैषज्य-(सं०नपुं०) औषध।
भैहा-(हिं०पुं०) डरा हुआ, भयभीत।
भों(हिं०स्त्री०) भों भों का शब्द।
भोंकना-(हिं०क्रि०) धँसाना, घुसेड़ना।
भोंगाल-(हिं०पुं०) बड़ा भोंपा।
भोंचाल-(हिं०पुं०) देखो भूकम्प।
भोंड़ा-(हिं०वि०) कुरूप, भद्दा।
भोंड़ापन-कुरूपता, भद्दापन।
भोंतरा-(हिं०वि०) जिसकी धार पैनी न हो।
भोंदू-(हिं०वि०) मूर्ख, भोला, सीधा।
भोंपा, भोंपू-(हिं०पुं०) तुरही की तरह का मुंह से फूंककर बजाने का बाजा।
भो-(हिं०क्रि०वि०) भया, हुआ।
भोकार-(हिं०स्त्री०) वेग से रोने का शब्द।
भोक्ता-(सं०वि०) भोजन करने वाला उपभोग करने वाला।
भोग-(सं०पुं०) सुखदुःख का अनुभव, भोजन, पुण्य पाप का फल, पालन पोषण
भोगत्व- (सं०पुं०) भोग का भाव या धर्म।
भोगना-(हिं०क्रि०) सुखदुःख का अनुभव करना, सहन करना।
भोगबन्धक-(सं०पुं०) बंधक रखने की वह रीति जिसमें उधार लिये हुए रुपए का सूद नहीं देना होता परन्तु कुछ काल के लिये महाजन को सम्पत्ति काभोग करने का अधिकार होता है।
भोगली-(हिं०स्त्री०) छोटी नली, पुपली।
भोगवाना-(हिं० कि०) भोग कराना।
भोगविलास-(सं०पुं०) आमोद प्रमोद
भोगस्थान-(सं०नपुं०) भोगभूमि।
भोगाना-(हिं०क्रि०) भोग कराना।
भोगी-(सं०पुं०) सर्प; (वि०) इन्द्रियों का सुख चाहने वाला।
भोग्य-(सं०वि०) भोगने योग्य।
भोज-(हिं०पुं०) बहुत से लोगों को एक साथ बैठकर भोजन कराना, जेवनार।
भोजन-(सं०नपुं०) भक्षण, भोजन की सामग्री।
भोजनालय-(सं०पुं०) पाकशाला, रसोंइयाँघर। **भोजनीय**-(सं०वि०) भोजन करने योग्य।
भोजपत्र-(हिं०पुं०) मझोले आकार का एक वृक्ष जिसकी छाल प्राचीन समय में पुस्तकादि लिखने के काम में आती थी।
भोजयिता-(हिं०वि०) भोजन करने वाला।
भोजविद्या-(सं०स्त्री०) ऐन्द्रजालिक विद्या, बाजीगरी।
भोजी-(हिं०वि०) भोजन करने वाला।
भोजू-(हिं०पुं०) भोजन।
भोज्य-(सं०वि०) भोजन करने योग्य (पु०) खाद्य पदार्थ।
भोजागार-(हिं०पुं०) भण्डारघर।
भोथरा-(हिं०वि०) देखो भुथुरा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भोना-(हिं० क्रि०) लिप्त होना, भीनना ।
भोपा-(हिं०पुं) एक प्रकार की तुरही, मूर्ख।
भोर-(हिं०पुं०) प्रातःकाल, तड़का ।
भोराई-(हिं०स्त्री०) भोलापन, सिधाई
भोराना-(हिं०क्रि०) भ्रम में डालना,
भोरानाथ-(हिं०पुं०) भोलानाथ, शिव
भोला-(हिं०वि०) सरल, सीधा, सादा मूर्ख । भोलानाथ-(सं०पुं०) शिव, महादेव । भोलापन-(हिं० पुं०) सरलता, सिधाई । भोलाभाला-(हिं०वि०) सीधा सादा ।
भोसर-(हिं०वि०) मूर्ख ।
भौं-(हिं०स्त्री०) आँख के ऊपर की बालों की श्रेणी, भौंह ।
भौंकना-(हिं०क्रि०)भौं भौं शब्द करना, कुत्तों का बोलना ।
भौंचाल-(हिं०पुं०) देखो भूकम्प ।
भौंर-(हिं०पुं०) भौंरा, जल का आवर्त
भौंरा-(हिं०पुं०) काले रंका का उड़ने वाला एक फतिंगा, बड़ी मधु-मक्खी, अन्न रखने का गड्ढा ।
भौंराना-(हिं०क्रि०) परिक्रमा करना, घुमाना, ब्याह करना ।
भौंरी-(हिं०स्त्री०) पशुओं के शरीर में का रोंवे का चक्र।
भौंह-(हिं०स्त्री०) भृकुटी, भौं ।
भौंहरा-(हिं०पुं०) भूमिगृह ।
भौ-(हिं०पुं०) भव, संसार, जगत भय, डर ।
भौका-(हिं०पुं०) बड़ी दौरी, टोकरा ।
भौगोलिक-(सं०वि०) भूगोल संबंधी
भौचक-(हिं०वि०) स्तम्भित, घबड़ाया हुआ ।
भौचाल-(हिं०पुं०) देखो भूकम्प ।
भौज, भौजाई-(हिं०स्त्री०) भाई की स्त्री, भावज ।
भौतिक-(सं०वि०) पंच तत्वों से बना हुआ, पार्थिव, शरीर संबंधी ।
भौन-(हिं०पुं०) देखो भवन, घर ।
भौना-(हिं०क्रि०)भ्रमणकरना,घूमना।
भौम-(सं०वि०) भूमि संबंधी, भूमि से उत्पन्न ।
भौमिक-(सं०वि०) भूमि संबंधी ।
भौर-(हिं०पुं०) भवँर, भौंरा ।
भौलिया-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की नाव जो ऊपर से ढपी रहती है ।
भौसा-(हिं०पुं०) जन समूह, भीड़ भाड़;
भ्रंश-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश, (वि०) भ्रष्ट ।
भ्रकुटि-(सं०स्त्री०) भृकुटी, भौंह ।
भ्रम-(सं०पुं०) भ्रान्ति, धोखा, सन्देह, संशय; भ्रमण-(स० नपुं०) घूमना, फिरना, यात्रा ।
भ्रमणीय-(सं०वि०) घूमने फिरने-वाला ।
भ्रमना-(हिं०क्रि०) भटकना, भूलना ।
भ्रमर-(सं०पुं०) मधुकर, भौंरा ।
भ्रमरी-(सं० स्त्री०) मिरगी रोग, भौंरे की मादा ।
भ्रमरात्मक-(सं०वि०) संदिग्ध ।
भ्रमाना-(हिं०क्रि०) बहकाना ।
भ्रमी, भ्रमीत-(हिं०वि०) चकित, भौचक ।
भ्रमित-(सं०वि०)शंकित,घूमता हुआ ।
भ्रष्ट-(सं०वि०) दूषित, दुराचारी ।
भ्रात, भ्राता-(हिं०पुं०) सगा भाई, सहोदर भ्राता, भ्रातृत्व-(सं०नपुं०) भ्राता का भाव या धर्म ।
भ्रान्त-(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भ्रान्ति-(सं०स्त्री०) भ्रम, धोखा, संशय
भ्रामक-(सं०पुं०) भ्रम में डालने वाला
भ्रकुटी-(सं०स्त्री०) क्रोध आदि द्वारा भौंह चढ़ाना ।
भ्रू-(सं०स्त्री०) भौंह, भौं । भ्रूभङ्ग-(सं०पुं०) भौंह चढ़ाना ।
भ्रूण-(सं०पुं०) स्त्री का गर्भ ।
भ्रूविकार-(सं०पुं०) भौंहें चढ़ाना ।
भ्वहरना-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना ।
भ्वासर-(हिं०वि०) मूर्ख ।

म

म-हिन्दी वर्णमाला का पचीसवाँ व्यञ्जन तथा पवर्ग का अन्तिम वर्ण । इसका उच्चारण स्थान ओष्ठ और नासिका है ।
म-(सं०पुं०) शिव, चन्द्रमा, ब्रह्मा, यम, विष, समय ।
मउर-(हिं०पुं०) विवाह के समय दुलहे के सिर पर पहराने का फूलो का बना हुआ मुकुट,
मउलसिरी-(हिं०त्री०) देखो मौलसिरी
मउसी-(हिं०स्त्री०) देखो मौसी ।
मंग-(हिं०स्त्री०) देखो माँग ।
मंगता,मंगन-(हिं०पुं०) भिक्षुक भिखमंगा
मँगनी-(हिं०स्त्री०) माँगने की क्रिया या भाव ।
मंगलामुखी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी ।
मंगल-देखो मङ्गल ।
मँगवाना-(हिं०क्रि०) माँगने का काम दूसरे से करान । मंगाना-(हिं०क्रि०) मंगवाना ।
मंजना-(हिं०क्रि०) माँजा जाना, अभ्यस्त होना ।
मंजाना(हिं०क्रि०) मांजने का काम दूसरे से कराना ।
मंजार-(हिं०पुं०) देखो मार्जार, बिल्ली ।
मंजीर-(हिं०पुं०) नूपुर, घुंघुरू ।
मंजीरा-(हिं०पुं०) करताल नामक बाजा ।
मंजु, मंजुल-(हिं०वि०) मनोहर, सुन्दर
मंजूषा-(हिं०स्त्री०) छोटा पेटारा ।
मंझा-(हिं०पुं०) वह पदार्थ जिससे पतंग की डोरी माँजी जाती है ।
मंझार-(हिं०क्रि०वि०) मध्य भाग में, बीच में । मंझियार-(हिं०वि०) मध्य या बीच का ।
मंडना-(हिं०क्रि०) भरना, शृंगार करना ।
मंडल-(हिं०पुं०) देखो मण्डल ।
मंडराना-(हिं०क्रि०) चारों ओर से घेर लेना । मंडराना-(हिं०क्रि०) मण्डल बाँध कर या चक्कर देते हुए उड़ना । किसी के चारो ओर घूमना
मंडल-देखो मण्डल ।
मंत्रणा-देखो मन्त्रणा ।
मंडलाना-(हिं०क्रि०) देखो मंडराना ।
मंडलीक-(हिं०पुं०) बारह राजाओं की अधिपति ।
मंडवा-(हिं०पुं०) देखो मण्डप ।
मंडी-(हिं०स्त्री०) थोक बिक्री का स्थान, हाट ।
मंडुआ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का क्षुद्र अन्न ।
मंडूक-(हिं०पुं०) मेढक, मण्डक ।
मंडूर-(हिं०पुं०) मण्डूर, लोहकीट ।
मंत-(हिं०पुं०) मंत्र, सलाह ।
मंत्री-(हिं०पुं०) मन्त्री, परामर्श देने वाला ।
मंथ-देखो मंथ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मंदरा-(हिं०वि०) नाटा, ठिगना ।
मंदा-(हिं०वि०) धीमा, कम दाम का, सस्ता, शिथिल ।
मंदिल-(हिं०पुं०) देखो मन्दिर ।
मंदी-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु के भाव का कम होना ।
मंसना-(हिं०क्रि०) मन में संकल्प करना ।
मंसा-(हिं०स्त्री०) अभिप्राय, इच्छा, आशय ।
मइका-(हिं०पुं०) नैहर ।
मउनी-(हिं०स्त्री०) छोटी डलिया ।
मकई-(हिं०स्त्री०) ज्वार नामक अन्न ।
मकड़ा-(हिं०पुं०) बड़ी मकड़ी ।
मकड़ी-(हिं०स्त्री०) आठ पैर वाला एक प्रसिद्ध कीड़ा, लता ।
मकर-(सं०पुं०) मगर ।
मकरन्द-(सं०पुं०) फूलों का रस जिसको मधुमक्खियाँ और भौंरे आदि चूसते हैं, पुष्प केसर ।
मकरा-(हिं०पुं०) भूरे रंग का एक कीड़ा, मडुवा नामक अन्न ।
मकराकार-(सं०वि०) मगर या मछली के आकार का ।
मकरालय,मकरावास-(सं०पुं०) समुद्र ।
मकरौरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो प्रायः आम के वृक्षों पर चिपका रहता है ।
मकार-(सं०पुं०) म स्वरूप वर्ण ।
मकुंद-(हिं०पुं०) देखो मुकुन्द ।
मकु-(हिं०अव्य०) कदाचित्, चाहे, वरन्
मक्कुट-(हिं०पुं०) देखो मुकुट ।
मकुना-(हिं०पुं०) बिना मूंछ का मनुष्य ।
मकुनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की वाटी या लिट्टी ।
मको-(हिं०स्त्री०) देखो मकोय ।
मकोड़ा-(हिं०पुं०) कोई छोटा कीड़ा ।
मकोय-(हिं०स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसमें गोल छोटे फल लगते हैं ।
मकोरना-(हिं०क्रि०) देखो मरोड़ना ।
मक्का-(हिं०पुं०) ज्वार, मकई ।
मक्खन-(हिं०पुं०) गाय या भैंस के दूध का वह सार भाग जो दूध या दही को मथने से प्राप्त होता है जिसको तपाने से घी बनता है ।
मक्खा-(हिं०पुं०) बड़ी जाति की मक्खी नर मक्खी । **मक्खी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध उड़ने वाला छोटा कीड़ा जिसके छ पैर होते हैं, मक्षिका, मधु-मक्खी ।
मक्खीचूस-(हिं० वि०) बहुत बड़ा कृपण ।
मक्खीलेट-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की जाली जिस पर छोटी छोटी बूटियाँ बनी रहती है ।
मक्षिका-(सं०स्त्री०) मक्खी, शहद की मक्खी : **मक्षिका मल**-सिक्थ, मोम
मख-(सं०पुं०) याग, यज्ञ ।
मखद्विष मखद्वेषी-(सं० पुं०) राक्षस
मखन-(हिं०पुं०) देखो मक्खन ।
मखनिया-(हिं०पुं०) मक्खन बनाने या बेंचने वाला, (वि०) जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो ।
मखशाला-(सं०स्त्री०) यज्ञशाला ।
मखाना-(हिं०पुं०) देखो ताल मखाना
मखालय-(सं०पुं०) यज्ञशाला ।
मग-(हिं०पुं०) मार्ग ।
मगजी-(हिं०स्त्री०) पतली गोट या पट्टी जो कपड़े के किनारे पर लगाई जाती है ।
मगद-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मिठाई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो मूंग के आँटे और घी से बनाई जाती है। **मगदर, मगदल**-(हिं०पुं० एक प्रकार का लड्डू जो मूंग या उड़द के आटे में घी और चीनी मिलाकर मथ कर बनाया जाता है।

मगदा-(हिं०पुं०) मार्ग दिखलाने वाला

मगन-(हिं०वि०) मग्न, प्रसन्न, लीन।

मगना-(हिं०क्रि०) लीन या तन्मय होना

मगर-(हिं०पुं०) इस नाम का एक प्रसिद्ध जल जन्तु।

मगरमच्छ-(हिं०पुं०) बड़ी मछली।

मगह-(हिं०पुं०) मगध देश।

मगही-(हिं०वि०) मगध देश का, मगह में उत्पन्न (पुं०) एक प्रकार का पान

मग्न-(सं०वि०) तन्मय, लीन, प्रसन्न

मघई-(हिं०वि०) देखो मगही।

मघवा-(सं०पुं०) इन्द्र।

मघौना-(हिं०पुं०) नीले रंग का वस्त्र।

मङ्गल-(सं०नपुं०) कल्याण, कुशल, शुभ, क्षेम। **मंगल पाठक**-बन्दीजन, स्तुति पाठक।

मङ्गलाचरण-(सं०नपुं०) शुभ कार्य के पहले मंगल जनक कार्य का आचरण

मङ्गलामुखी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी

माङ्गल्य-(सं० वि०) मंगल जनक, सुन्दर।

मचक-(हिं०स्त्री०) दबाव, बोझ।

मचकना-(हिं०क्रि०) झटके से किसी पदार्थ को हिलाना।

मचका-(हिं०पुं०) झोंका, धक्का।

मचना-(हिं०क्रि०) फैलना, छा जाना

मचमचाना-(हिं०क्रि०) शब्द सहित हिलना।

मचल-(हिं०स्त्री०) मचलने की क्रिया या भाव। **मचलना**-(हिं०क्रि०) हठ करना, अड़ना।

मचला-(हिं०वि०) मचलने वाला। **मचलाई**-हठ

मचलाना-(हिं०क्रि०) वमन करने की इच्छा होना, ओकाई आना।

मचवा-(हिं०पुं०) खटिया या चौकी का पावा।

मचान-(हिं०स्त्री०) चार खंभों पर बाँस या टट्टर बाँध कर बनाया हुआ स्थान जिस पर बैठ कर लोग शेर आदि का शिकार करते हैं या किसान खेत की रखवाली करते हैं।

मचाना-(हिं०क्रि०) ऐसा कार्य आरंभ करना जिसमें शब्द हो।

मचिया-(हिं०स्त्री०) ऊँचे पायों की एक आदमी के बैठने योग्य छोटी चारपाई।

मचिलई-(हिं०स्त्री०) मचलाहट।

मच्छ-(हिं०पुं०) बड़ी मछली।

मच्छड़, मच्छर-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध छोटा फतिंगा जो वर्षा तथा ग्रीष्म ऋतु में गरम देशों में पाया जाता है।

मच्छरता-(हिं०स्त्री०) द्वेष, ईर्ष्या, डाह।

मच्छी-(हिं०स्त्री०) देखो मछली।

मछलीमार-धीवर, मल्लाह।

मछली-(हिं०स्त्री०) मत्स्य, मीन।

मछलीमार-धीवर, मछुआ।

मछुवा, मछुआ-(हिं० पुं०) धीवर, मल्लाह।

मछेह-(हिं०पुं०) मधुमक्खी का छत्ता

मजारी-(हिं०स्त्री०) मार्जार, बिल्ली;

मजीरा-(हिं०पुं०) काँसे की बनी हुई छोटी छोटी कटोरियों की जोड़ी जिनके बीच में छेद होता है जिनमें से डोरा पिरो कर एक दूसरे से टकराई जाती है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मज्जन-(सं०नपुं०) स्नान, नहाना।
मज्जना-(हिं०क्रि०) नहाना, गोता लगाना।
मज्जा-(सं०स्त्री०) हड्डी के भीतर का गूदा।
मज्झ, मझ-(हिं०क्रि०वि०) बीच में
मझधार-(हिं०स्त्री०) नदी की मध्य धारा, बीच धारा।
मझला-(हिं०वि०) मध्य का बीच का
मझाना-(हिं०क्रि०) बीच में धंसना या धँसाना।
मझार-(हिं०क्रि०वि०) बीच में।
मझियारा-(हिं०वि०) बीच का, मध्य का
मझोला-(हिं०वि०) बीच का, मध्यम आकार का।
मञ्च-(सं०पुं०) पीढ़ा, मचिया।
मञ्जरी-(सं०स्त्री०) मोती, लता।
मञ्जीर-(सं०पुं०) नूपुर, घुंघुरू।
मञ्जु-(सं०वि०) मनोहर, सुन्दर।
मञ्जुपाठक-(सं०वि०) अच्छी तरह पढ़ने वाला।
मञ्जुभाषी-(सं० वि०) सुन्दर बोलने वाला।
मञ्जुल-(सं०वि०) मनोहर, सुन्दर;
मञ्जुवादी-(सं०वि०) मीठे वचन बोलने वाला।
मञ्जूषा-(सं०स्त्री०) पिटक, पिटारी।
मट-(हिं०पुं०) मिट्टी का बड़ा पात्र।
मटक-(हिं०स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, चाल।
मटकना-(हिं०क्रि०) लचक कर या चोचला दिखाते हुए चलना, लौटना, फिरना, **मटकान**-(हिं०स्त्री०) नृत्य, मटक, चोचला।
मटका-(हिं०पुं०) मिट्टी का बड़ा घड़ा जिसका मुख चौड़ा होता है।
मटकाना-(हिं०क्रि०) अङ्गों को नखरे के साथ हिलाना, डुलाना, चमकाना।
मटकी-(हिं०स्त्री०) छोटा मटका, कमोरी, मटक।
मटकीला-(हिं०वि०) चोचला के साथ अङ्गों को हिलाने वाला। **मटकौअल**-(हिं०स्त्री०) मटकने की क्रिया या भाव, मटक।
मटमैला-(हिं०वि०) मिट्टी के रंग का, धूमिल।
मटर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा अन्न, इसकी फलियों को छीमी कहते हैं जो मीठी होती है और कच्ची भी खाई जाती है।
मटराला-(हिं०पुं०) जव के साथ मिला हुआ मटर।
मटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लाल चींटा।
मटिआना-(हिं०क्रि०) अशुद्ध पात्र को मिट्टी आदि लगा कर स्वच्छ करना, मिट्टी से ढाँपना।
मटिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी, मृत शरीर, (वि०) मिट्टी के समान, मटमैला।
मटियामेट-(हिं०वि०) नष्ट भ्रष्ट।
मटियाला, मटीला,-(हिं०वि०) मटमैला।
मटुका-(हिं०पुं०) देखो मटका।
मटुकी-(हिं०स्त्री०) देखो मटकी।
मट्टी-(हिं०स्त्री०) देखो मिट्टी।
मट्ठर-(हिं०वि०) आलसी।
मट्ठा-(हिं०पुं०) मथा हुआ दही जिसमें से मक्खन निकाल लिया गया हो, तक्र, छाछ।
मट्ठी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का पकवान।
मठ-(सं०पुं०) निवास स्थान, छात्रा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वास, देवगृह, मन्दिर, **मठधारी**-(हिं०पुं) मठाधीश, अनेक मठों का अधिकारी।

मठरी-(हिं०स्त्री०) देखो मट्ठी, टिकिया

मठाधिपति, मठाधीश-(सं०पुं०) मठ का महन्त।

मठिया-(हिं०स्त्री०) फूल धातु की बनी हुई हाथ की चूड़ियाँ। **मठी**-(हिं०स्त्री०) मठ का अधिकारी या महन्त।

मठोर-(हिं०स्त्री०) दही मथने या मट्ठा रखने की मटकी।

मड़ई-(हिं०स्त्री०) छोटी कुटी या झोपड़ी।

मड़क-(हिं०स्त्री०) गुप्त बात, रहस्य।

मड़भलाना-(हिं०क्रि०) देखो मरमराना

मडराना-(हिं० क्रि०) देखो मंडराना।

मड़वा-(हिं०पुं०) मण्डप।

मड़हट-(हिं०पुं०) मरघट।

मड़ाड़-(हिं० पुं०) कच्चा तालाव, कुवें आदि में का गड्ढा जो भीति के गिरने से बन गया हो।

मड़ैया-(हिं०स्त्री०) पर्णशाला, कुटी।

मढ़-(हिं०पुं०) दाँत के ऊपर की मैल, (वि०) अड़कर बैठने वाला। **मढ़ना**-(हिं०क्रि०) चौफेर से लपेटना, ढोल किसी के गले लगाना, **मड़वाना**-(हिं० क्रि०) मढ़ने का काम दूसरे से कराना

मड़ाई--(हिं०स्त्री०) मढ़ने का काम या शुल्क।

मढ़ाना-(हिं०क्रि०) मढ़ने का काम दूसरे से कराना।

मढ़ी-(हिं० स्त्री०) छोटा देवालय, छोटा मण्डप, झोपड़ी।

मढ़ैया-(हिं०वि०) मढ़ने वाला।

मणि-(सं०पुं०) बहुमूल्य पत्थर, रत्न।

मणिकार-(सं०पुं०) रत्नों को जड़कर गहने बनाने वाला।

मणी-(सं०पुं०) सर्प, साँप।

मण्ड-(सं०पुं०) अन्न आदि का रस माड़।

मण्डन-(सं०नपुं०) आभूषण, गहना, प्रमाण आदि द्वारा किसी मत को सिद्ध या पुष्ट करना।

मण्डप-(सं० पुं०, नपुं०) देवालय के ऊपर का गोल भाग, चंदवा।

मण्डल-(सं०नपुं०) चन्द्रमा या सूर्य के चारों ओर पड़ने वाला घेरा, वृत्ताकार घेरा, समाज, समूह। **मण्डलाकार**-(सं०वि०) गोल। **मण्डलित**-(सं०वि०) गोल किया हुआ।

मण्डली-(सं०स्त्री०) गोष्ठी, समूह।

मण्डलीक, मण्डलेश, मण्डलेश्वर-(सं० पुं०) बारह राजाओं का अधिपति।

मण्डित-(सं०वि०) भूषित, सजाया हुआ

मण्डूक-(सं०पुं०) मेढक।

मण्डूर-(सं०पुं०) गलाये हुए लोहे का मल।

मतंग-(हिं०पुं०) हाथी, मेघ, बादल।

मत-(सं०नपुं०) सम्मति, आशय, धर्म, पन्थ, ज्ञान, सम्प्रदाय, (हिं०क्रि०वि०) निषेध वाचक शब्द, नहीं।

मतंगज-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।

मतरिया-(हिं०स्त्री०) देखो माता,

मतवाला-(हिं०वि०) उन्मत्त, पागल।

मता-(हिं०पुं०) देखो मत, (स्त्री०) देखो मति। **मताधिकार**-(स०पुं०) मत देने का अधिकार। **मतानुयायी**-(सं०पुं०) किसी के मत के अनुसार आचरण करने वाला।

मतारी-(हिं०स्त्री०) महतारी, माता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतावलम्बी-(सं० पुं०) किसी एक मत, सिद्धान्त या सम्प्रदाय का अवलम्बन करने वाला ।

मति-(सं०स्त्री०)बुद्धि, इच्छा, सम्मति, (हिं०क्रि०वि०)देखो मत, (हिं० अव्य०) सदृश, समान। **मतिभेद**-(सं० पुं०) बुद्धि की भिन्नता-। **मतिभ्रंश**-(सं०पुं०) पागलपन । **मतिभ्रम**-(सं०पुं०) बुद्धिभ्रंश ।

मतिमत, मतिमन्द-(सं० वि०) बुद्धिवान्, विचारवान ।

मतिमान-(सं०वि०)बुद्धिवान्, विचारवान् ।

मतिमाह-(हिं०वि०) मतिमान ।

मतिविभ्रम-(सं०पुं०) उन्माद रोग ।

मतिशाली-(हिं०वि०) मेधावी, बुद्धिमान् ।

मती-(हिं०स्त्री०) देखो मति, (क्रि० वि०) मत ।

मत्कुण-(सं०पुं०) खटमल ।

मत्त-(सं० वि०) मतवाला, उन्मत्त, पागल ।

मत्तता, मत्तताई-(हिं० स्त्री०) मतवालापन ।

मत्तनाग-(सं०पुं०) मतवाला हाथी ।

मत्था-(हिं०पुं०)ललाट, माथा, सिर।

मत्सर-(सं०पुं०) ईर्षा, डाह, (वि०) कृपण, कंजूस, **मत्सरता**-(सं०स्त्री०) डाह, जलन ।

मत्स्य-(सं०पुं०) मीन, मछली ।

मत्स्यांगना-(सं० स्त्री०) मत्स्यनारी, वह प्राणी जिसका मुख स्त्री के समान तथा बाकी शरीर का भाग मछली के समान होता है ।

मत्स्याशन-(सं०पुं०)मछली खाने वाला

मत्स्योपजीवी-(सं०पुं०)धीवर, मल्लाह

मथन-(सं०पुं०) मथने की क्रिया या भाव।

मथना-(हिं०क्रि०)किसी तरल पदार्थ को वेगपूर्वक हिलाना या चलाना, रगड़ना, नष्ट करना, घूम घूम कर पता लगाना, किसी काम को बारंबार करना ।

मथनियाँ-(हिं०स्त्री०), मथनी-(पुं०) दूध को मथ कर मक्खन निकालने वाला

मथनी-(हिं०स्त्री०)मथने की क्रिया ।

मथित-(सं०वि०) मथा हुआ ।

मथुरिया-(हिं०वि०) मथुरा का ।

मथौरी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के सिर पर पहरने का एक गहना ।

मदंध-(हिं०वि०) देखो मदान्ध ।

मद-(सं०पुं०) एक गन्धयुक्त द्राव जो मतवाले हाथियों की कनपटियों में से बहता है, आनन्द, हर्ष, उन्मत्तता, पागलपन, गर्व, अहंकार, (वि०) मत्त, मतवाला ।

मदक-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अफीम के सत्व से बनाया जाता है ।

मदकारी-(हिं० वि०) जिसकी बुद्धि नष्ट हो गई हो ।

मदकी-(हिं०वि०) मदक पीने वाला ।

मदगल-(हिं०वि०) मत्त, बावला ।

मदजल-(सं०नपुं०) मत्त हाथी के मस्तक का स्राव ।

मदन-(सं० पुं०) कामदेव, वसन्त, मत्तता ।

मदनगोपाल-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण ।

मदनान्ध-(सं०वि०) कामान्ध ।

मदनी-(सं०स्त्री०) सुरा, मदिरा, कस्तूरी ।

मदमत्त-(सं०वि०) मद में चर ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मदस्थल-(सं०नपुं०) मदिरा पीने का स्थान ।
मदान्ध-(सं०वि०) मदमत्त, मद में चूर
मदार-(हिं०पुं०)आक का वृक्ष, अकवन ।
मदारिय, मदारी-(हिं० पुं०) वन्दर, भालू आदि का तमाशा दिखलाने वाला, कलन्दर, वाजीगर ।
मदालस-(सं०नपुं०) मद के कारण आलस्य ।
मदिया-(हिं०स्त्री०) मादा प्राणी ।
मदिरा-(सं०स्त्री०) मद्य; **मदिराक्ष**-(सं०वि०) जिसकी आखें मद से भरी हों।
मदिरागृह-(सं०नपुं०) मद्यशाला ।
मदीय-(सं०वि०) मेरा ।
मदीला-(हिं०वि०) मद में भरा हुआ
मदोत्कट-(सं०वि०) मन्दोन्मत्त ।
मदोद्धत-(सं०वि०) मत्त, अभिमानी, घमंडी ।
मदोन्मत-(सं०वि०) उन्मत्त ।
मद्धिम-(हिं०वि०) मध्यम, मन्दा ।
मद्धे-(हिं०अव्य०)संबंध में, विषय में ।
मद्य-(सं०नपुं०)सुरा, मदिरा । **मद्यप**-(स०वि०) मदिरा पीनेवाला । **मद्यपान**-(स०नपुं०) मदिरा पीना ।
मध-(हिं०पुं०)देखो मध्य । (अव्य०) में
मधिम-(हिं०वि०) देखो मध्यम, मद्धिम।
मधु-(सं०नपुं०) मद्य, जल, दूध, मकरन्द, मठा रस, (वि०) मीठा, स्वादिष्ट । **मधुकर**-(सं०पुं०) भ्रमर भौंरा । **मधुकरी**-(सं०स्त्री०)भ्रमरी, भौंरी, वह भिक्षा जिसमें पका हुआ अन्न दिया जाता है ।
मधुकोष-(सं०पुं०) मधुमक्खी का छत्ता **मधुगन्ध**-(सं०पुं०)मीठी महक, **मधुतृण**-(सं०पुं०)ईक्षु, ईख । **मधुत्व**-(सं०नपुं०) मीठापन । **मधुप**-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा, मधुमक्खी ।
मधुपटल-(सं०पुं०) मधुमक्खी का छत्ता । **मधुपर्क**-(सं०पुं०) पूजन का एक उपचार जिसमें दही, घी, जल, और चीनी मिला कर देवताओं को चढ़ाया जाता है । **मधुपायी**-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा, मधु पीने वाला ; **मधुप्रमेह**-(सं०पुं०) वह रोग जिसमें मूत्र के साथ शक्कर आती है ।
मधुफल-(सं०पुं०) मीठा नारियल, दाख । **मधुमक्खी**-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मक्खी जो फूलों का रस चूस कर मधु इकट्ठा करती है । **मधुमक्षिका**-(सं०स्त्री०) मधुमक्खी । **मधुमाखी**-(हिं०स्त्री०) मधुमक्खी ।
मधुमाधव-(सं०पुं०) वसन्तकाल ।
मधुर-(स०वि०) जिसका स्वाद मीठा हो, मनोरञ्जक, सुन्दर । **मधुरई**-(हिं०स्त्री०) सुकुमारता, मधुरता, कोमलता, मीठापन । **मधुरता**-(सं०स्त्री०) मधुर होने का भाव, सौन्दर्य, सुन्दरता, मिठास ।
मधुराक्षर-(सं०वि०) सुन्दर अक्षर ।
मधुराज-(सं०पुं०) भौंरा ।
मधुरान्न-(सं०पुं०) मिठाई ।
मधुराना-(हिं०क्रि०) मीठा होना, सुन्दर हो जाना ।
मधुरिका-(सं०स्त्री०) सौंफ ।
मधुरिमा-(हिं०स्त्री०) मीठापन । सुन्दरता ।
मधुलिह, मधुलोलुप-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा ।
मधुवीज-(सं०पुं०) दाड़िम, अनार ।
मधुवृक्ष-(सं०पुं०) महुए का पेड़ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मधुशर्करा-(सं०स्त्री०) मधु से बनाई हुई शक्कर । **मधुश्री**-(सं०स्त्री०) वसन्त की शोभा । **मधुस्थान**-(सं० नपुं०) मधुमक्खी का छत्ता । **मधुस्नेह**-(सं०पुं०) मोम । **मधुस्वर**-(सं० पुं०) कोकिल, कोयल । **मधूकरी**-(सं०स्त्री०) मधुकरी, भ्रमरी । **मधूत्सव**-(सं०पुं०) वसन्तोत्सव ।

मध्य-(सं०नपुं०) किसी वस्तु के बीच का अंश, कटि, कमर, **मध्यगत**-(सं०वि०) मध्य स्थित, बीच का **मध्यचारी**-(सं०वि०) बीच में चलने वाला ।

मध्यतः-(सं०अव्य०) मध्य में, बीच में ।

मध्यता-(सं०स्त्री०) मध्य का भाव या धर्म । **मध्य दिन**-(सं०नपुं०) मध्याह्न, दोपहर ; **मध्यदेश**-(सं०पुं०) भारतवर्ष का वह प्रदेश जिसके उत्तर में हिमालय, दक्षिण में विन्ध्य पर्वत पश्चिम में कुरुक्षेत्र, और पूर्व में प्रयाग है । **मध्यदेह**-(सं०पुं०) उदर, पेट । **मध्यमपदलोपी**-(हिं०पुं०) लुप्त पद समास जिसमें पहले पद का आगामी पद से संबंध बतलाने वाला शब्द लुप्त रहता है ।

मध्यमपुरुष-(सं०पुं०) व्याकरण के अनुसार वह व्यक्ति जिससे कुछ कहा जाय ।

मध्यम रात्र-(सं०पुं०) मध्य रात्रि, आधीरात ।

मध्यमलोक-(सं०पुं०) पृथ्वी ।

मध्यमस्थ-(सं०वि०) मध्यस्थित, बीच का ।

मध्यमा-(सं०स्त्री०) बीच की अंगुली

मध्यमाहरण-(सं०नपुं०) बीज गणित की वह क्रिया जिसके अनुसार कोई अव्यक्त मान निकाल लिया जाता है ।

मध्यमिक-(सं०वि०) बीच का ।

मध्यरात्र-(सं०पुं०) निशीथ, आधी रात

मध्यरेखा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी के मध्य-भाग की कल्पित रेखा जो उत्तर, दक्षिण मानी जाती है ।

मध्यलोक-(सं०पुं०) पृथ्वी ।

मध्यवर्ती-(सं०वि०) मध्य का, बिचला ।

मध्यवय-(हिं०पुं०) जीवनका मध्य भाग ।

मध्यवृत्ता-(सं०पुं०) नाभि ।

मध्यशरीर-(सं०वि०) पेट, उदर ।

मध्यशायी-(सं०वि०) मध्यवर्ती, बीचका ।

मध्यस्थ-(सं०पुं०) पंच, वह व्यक्ति जो बीच में पड़ कर दो मनुष्यों के झगड़े को निबटाता है । **मध्यस्थता**-(सं० स्त्री०) मध्यस्थ होने का भाव या धर्म । **मध्यस्थल**-(सं०नपुं०) कटि देश, कमर । **मध्यस्थित**-(सं०वि०) मध्यवर्ती ।

मध्यायु-(सं०नपुं०) तैंतीस वर्ष से पैंसठ वर्ष तक की आयु ।

मध्याह्न-(सं०पुं०) दिन का मध्य भाग । ठीक दोपहर का समय । **मध्याह्नोत्तर**-तीसरा प्रहर ।

मध्ये-(सं०क्रि०वि०) विषय में ।

मनःक्षेप-(सं०पुं०) मन का उद्वेग ।

मनःशास्त्र-(सं०पुं०) मनो विज्ञान ।

मन-(सं०पुं०) अन्तःकरण, इच्छा ।

मन-(हिं०पुं०) चालीस सेर की तौल ।

मनई-(हिं०पुं०) मनुष्य ।

मनकना-(हिं०क्रि०) हिलना, डोलना । तर्क वितर्क करना ।

मनकरा-(हिं०वि०) प्रकाशमान ।

मनका-(हिं०पुं०) छेदा हुआ गोल दाना जिसकी सुमिरिनी बनाई जाती है गुरिया ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनकामना-(हिं०स्त्री०) मनोरथ, इच्छा।
मनगढंत-(हिं०वि०) कपोल कल्पित। जिसकी वास्तव में सत्ता न हो।
मनचला-(हिं० वि०) साहसी, निडर, रसिक।
मनन-(सं०नपुं०) सोचना अच्छी तरह से अध्ययन।
मनभाया-(हिं०वि०)जो मनको अच्छा लगे। **मनभावता**-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा।
मनभावन-(हिं०वि०) मन को अच्छा लगने वाला।
मनमंत-(हिं०वि०) चेखो मैमंत।
मनमति-(हिं०वि०) स्वेच्छाचारी।
मनमथ-(हिं०पुं०)देखो मन्मथ,कामदेव।
मनमानता-(हिं०वि०) मनोवांछित। मनमाना। **मनमाना**-(हिं० वि०) मनोनीत, यथेच्छ। **मनमुखी**-(हिं० वि०) स्वेच्छाचारी।
मनमुटाव-(हिं०स्त्री०) वैमनस्य।
मनमोदक-(हिं०पुं०) वह कल्पित या असंभव बात जो अपनी प्रसन्नता के लिये मन में बनाई गई हो। **मनमोहन**-(हिं०वि०) प्रिय, प्यारा, (पुं०) श्रीकृष्ण।
मनमौजी-(हिं०वि०) मनमाना काम करने वाला।
मनरंज, मनरंजन-(हिं०वि०) चित्त को प्रसन्न करने वाला।
मनलाडू-(हिं०पुं०) देखो मनमोदक।
मनवाँ-(हिं०पुं०) नरमा, राम कपास।
मनवांछित-(हिं० वि०) देखो मनोवांछित।
मनवाना-(हिं०क्रि०) किसी को मानने में प्रवृत्त करना।
मनसना-(हिं०क्रि०) संकल्प करना, दृढ़ निश्चय करना,, हाथ में जल लेकर संकल्प का मन्त्र पढ़कर कोई वस्तु दान करना।
मनसा-(हिं०स्त्री०') अभिलाषा,कामना (क्रि०वि०) मन के द्वारा, मन से। **मनसाना**-(हिं० क्रि०) संकल्प का मन्त्र पढ़कर या पढ़ाकर दूसरे से दान आदि कराना।
मनसायन-(हिं०वि०) मनोरम स्थान
मनसिज, मनसिशय-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव।
मनसेधू-(हिं०पुं०) मनुष्य, मनई।
मनस्क-(सं०नपुं०) 'मन' शब्द का अल्पार्थ रूप जिसका प्रयोग समस्त पदों में होता है यथा—तन्मनस्क। **मनस्काम**-(सं०पुं०) मनोरथ, अभिलाषा। **मनस्ताप**-(सं० पुं०) पछतावा।
मनस्विन्-(सं०पुं०) उच्च विचार वाला **मनस्विनी**-(सं०स्त्री०) श्रेष्ठ विचार की स्त्री।
मनस्विन्-(हिं०वी०) देखो मनस्विन।
मनहर-(हिं०वि०) **मनोहर, मनहरण**-(हिं०वि०) मन को हरने वाला।
मनहुँ-(हिं०अव्य०)मानो, जैसे, यथा।
मनाक-(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा।
मनाना-(हिं०क्रि०)दूसरे को मनाने पर उद्यत करना, स्वीकार कराना।
मनावन-(हिं०पुं०) मनाने की क्रिया।
मनाही-(हिं०स्त्री०) निषेध, रोक।
मनि-(हिं०स्त्री०) देखो मणि।
मनिका-(हिं०स्त्री०) गुरिया।
मनिया-(हिं०स्त्री०) मनका, गुरिया
मनियार-(हिं०वि०) चमकीला, शोभा युक्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनी-(हिं०स्त्री०) देखो मणि
मनीषा-(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
मनीषित-(सं०वि०) अभिलषित, वाँछित।
मनीषिता-(सं०स्त्री०) बुद्धिमत्ता, बुद्धिमानी। **मनीषी**-(हिं० पुं०) पण्डित।
मनु-(सं०पुं०) मनुष्य, ब्राह्मा के पुत्र जो मानव जाति के आदि पुरुष थे।
मनु-(हिं०अव्य०) माने, जैसे।
मनुआँ-(हिं०पुं०) मनु, मनुष्य, नरमा।
मनुज-(सं०पुं०) मनुष्य, आदमी।
मनुजपति- राजा। **मनुजलोक**-मृत्यु लोक।
मनुजात-(सं०वि०) मनु या मनुष्य से उत्पन्न।
मनुष-(सं०पुं०) मनुष्य, पति।
मनुष्य-(सं०पुं०) मनुज, मानव, पुरुष **मनुष्यता**-(सं०स्त्री०) सभ्यता, शिष्टता, **मनुष्ययज्ञ**-(सं०नपुं०)अतिथि सत्कार। **मनुष्यरथ**-(सं०पुं०) वह रथ जिसको मनुष्य खींचते हैं।
मनुसाई-(हिं०स्त्री०) पुरूषार्थ, पराक्रम।
मनुहार-(हिं० स्त्री०) विनय, प्रार्थना, आदर, सत्कार।
मनुहारना-(हिं०क्रि०) आदर सत्कार करना।
मनो-(हिं०अव्य०) मानो।
मनोकामना-(हिं० स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा।
मनोगत-(सं०वि०) जो मन में हो।
मनोगति-(सं० स्त्री०) चित्तवृत्ति, अभीष्ट, इच्छा।
मनोज्ञ-(सं०पुं०) कन्तदर्प, कामदेव, मदन। **मनोज्ञ**-(सं०वि०) रुचिर, सुन्दर, मनोहर। **मनोज्ञता**-(सं०स्त्री०) स्त्री०) सुन्दरता।
मनोनिग्रह-(सं०पुं०)चित्त की वृत्तियों का निरोध।
मनोनीत-(सं०वि०)जो मन के अनुकूल हो।
मनोहारी-(हिं०वि०)मन को हरने वाला
मनोभव-(सं०पुं०) कन्दर्प, कामदेव। (वि०) मन से उत्पन्न।
मनोभिराम-(सं०वि०) मनोज्ञ, सुन्दर।
मनोरञ्जक-(सं० वि०) चित्त को प्रसन्न करने वाला; **मनोरञ्जन**-(सं०नपुं०) चित्त को प्रसन्न करने की क्रिया या भाव।
मनोरथ-(सं० पुं०) अभिलाषा, वाँछा इच्छा।
मनोरम-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
मनोरमा-(सं० स्त्री०) गोरोचन।
मनोरा-(हिं० पुं०) भीत पर गोवर से बनाये हुए चित्र।
मनोराज-(हिं० पुं०)मन की कल्पना।
मनोलौल्य-(सं०नपुं०) चित्तकी चंचलता
मनोवांछा-(सं० स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा।
मनोवाञ्छित-(सं० वि०) इच्छित, चाहा हुआ।
मनोविज्ञान-(सं० पुं०) वह शास्त्र जिसमें मन की वृत्तियों का अनुशीलन होता है।
मनोवृत्ति-(सं०स्त्री०) मन का व्यापार
मनोहर-(सं० वि०) सुन्दर।
मनोहरता-(सं० स्त्री०) सुन्दरता।
मनोहारी-(सं०वि०) मनोहर, चित्ताकर्षक।
मनोह्लाद-(सं०पुं०) चित्त की प्रसन्नता
मनौती-(हिं०स्त्री०) किसी देवी देवता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की विशिष्ट रूप से पूजा करने का संकल्प।

मन्तव्य-(सं० पुं०) मन, विचार।

मन्त्र-(सं०पुं०) वेद की रहस्यपूर्ण बात, परामर्श, देवता के साधन के निमित्त वैदिक वाक्य जिनको पढ़कर यज्ञादि क्रिया की जाती है; **मन्त्रकार**-मन्त्र रचने वाला ऋषि; **मन्त्र-कुशल**-मन्त्र जानने वाला। **मन्त्रज्ञ**-मन्त्र जानने वाला, भेद जानने वाला।

मन्त्रण-(सं० नपुं०) मन्त्रणा, परामर्श

मन्त्रद-(सं०वि०) मन्त्र देने वाला गुरु।

मन्त्री-(सं०पुं०) अमात्य, सचिव।

मन्थ-(सं०पुं०) मन्थदण्डक, मथानी; **मन्थज**-मक्खन; **मन्थन**-मथना, डूबकर पता लगाना।

मन्थर-(सं० वि०) निश्चल, नीच, अधम।

मन्थिनी-(सं०स्त्री०) दही मथने का यन्त्र।

मन्द-(सं० वि०) धीमा, आलसी; **मन्दता**-धीमी चाल।

मन्दगति-(सं०स्त्री०) आलस्य, धीमापन।

मन्दधी, मन्दबुद्धि-(सं०वि०) अल्पबुद्धि।

मन्दभागी-(सं० वि०) हतभाग्य, अभागा। **मन्दभाग्य**-(सं० वि०) दुर्भाग्य।

मन्दा-(सं० वि०) मन्द, धीमा, शिथिल, सस्ता।

मन्दाकिनी-(सं० स्त्री०) गंगा की वह प्रधान धारा जो स्वर्ग को चली गई है

मन्दाग्नि-(सं०पुं०) अग्नि मन्द होने का रोग।

मन्दार-(सं० पुं०) अर्कवृक्ष।

मन्दिर-(सं० नपुं०) गृह, घर, जिस घर में देवी या देवता का स्थापन किया हो।

मन्दिल-(हिं० पुं०) देवालय।

मन्दी-(सं०स्त्री०) भाव का कम होना, सस्ती।

मन्दोष्ण-(सं० वि०) थोड़ा गरम, गुनगुना।

मन्मथ-(सं० पुं०) कामदेव।

मन्य-(सं० वि०) माननीय।

मन्यु-(सं० पुं०) क्रोध, अहंकार; **मन्युमय**-क्रोधमय।

मम-(सं० सर्व०) मेरा या मेरी।

ममता-(सं०स्त्री०) ममत्व, अपनापन लोभ, मोह। **ममत्व**-(सं०नपुं०) ममता, स्नेह, अभिमान, गर्व।

ममाखी-(हिं०स्त्री०) मधुमक्खी।

ममिया-(हिं० वि०) जो संबंध में मामा के स्थान पर पड़ता हो, यथा ममिया ससुर, सास आदि।

ममियाउर, ममियौरा-(हिं०पुं०) मामा का घर।

मयंक-(हिं० पुं०) देखो मृगाङ्क, चन्द्रमा।

मयंद-(हि०पुं०) देखो मृगेन्द्र, शेर।

मयगल-(हिं०पुं०) मस्त हाथी।

मयट-(सं० पुं०) पर्णशाला, झोपड़ी।

मयन-(हिं०पुं०) देखो मदन, कामदेव

मयमंत, मयमत्त-(हिं०वि०) मदोन्मत्त मस्त।

मया-(हिं०स्त्री०) देखो माया।

मयार-(हिं० वि०) कृपालु, दयावान।

मयूख-(सं० पुं०) रश्मि, किरण, प्रकाश।

मयूर-(सं० पुं०) शिखी, बर्हि, मोर।

मयूरासन-(सं० पुं०) शाहजहाँ का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बनाया हुआ मयूर के आकार का प्रसिद्ध सिंहासन।
मयूरी-(सं०स्त्री०) मोरनी।
मरंद-(हिं०पुं०) देखो मकरंद।
मरक-(हिं०स्त्री०) मड़क, मृत्यु, मरण
मरकट-(हिं०पुं०) देखो मर्कट।
मरकत-(सं०पुं०) पन्ना नाम का रत्न।
मरकना-(हिं० क्रि०) दबाव पड़कर टूट जाना।
मरकहा-(हिं०वि०) सींग से मारने वाला
मरकाना-(हिं०क्रि०) दबाकर चूर चूर करना।
मरखम-(हिं०पुं०) देखो मलखंभ।
मरगजा-(हिं०वि०) मसला हुआ।
मरघट-(हिं०पुं०) श्मशान।
मरजाद, मरजादा-(हिं० स्त्री०) मर्यादा, रीति, परिपाटी।
मरजिया-(हिं०वि०) मृतप्राय, अधमरा
मरण-(सं०नपुं०) मृत्यु, पंचतत्व।
मरणान्त-(सं०वि०) मरण पर्यन्त।
मरणोत्तर-(सं०वि०) मृत्यु के बाद का।
मरत-(हिं०नपुं०) मरण, मृत्यु।
मरतबान-(हिं०पुं०) देखो अमृतबान।
मरदन-(हिं० क्रि०) मर्दन करना, मसलना।
मरन-(हिं०पुं०) देखो मरण।
मरना-(हिं०क्रि०) मृत्यु को प्राप्त होना, बहुत दुःख सहना, कुम्हलाना।
मरनी-(हिं०स्त्री०) मृत्यु, दुःख, कष्ट,
मरभुक्खा-(हिं०वि०) भुखड़, दरिद्र
मरम-(हिं०पुं०) देखो मर्म।
मरमरा-(हिं०वि०) सहज में टूटने वाला।
मरमराना-(हिं०क्रि०) वृक्ष की शाखा का दबाव पाकर मरमर शब्द करना।
मरवाना-(हिं०स्त्री०) बध कराना।
मरहट-(हिं०पुं०) मरघट, श्मशान।
मराना-(हिं०क्रि०) मारने के लिये प्रेरणा करना।
मरायल-(हिं०वि०) जिसने कई बार मार खाई हो, निर्बल (पुं०) घाटा।
मराल-(सं०पुं०) राजहंस, काजल, बादल।
मरिंद-(हिं०पुं०) देखो मलिन्द, मरन्द
मरिच-(सं०नपुं०) गोलमिर्च, मिरिच
मरिचा-(हिं०पुं०) लाल बड़ा मिरचा
मरियल-(हिं०वि०) देखो मड़ियाल।
मरी-(हिं०स्त्री०) महामारी।
मरीचि-(सं०स्त्री०) किरण, कान्ति, ज्योति; **मरीचजल**-मृगतृष्णा।
मरीचिका-(सं०स्त्री०) मृगतृष्णा, सिरोह, किरण।
मरीची-(हिं०वि०) किरणयुक्त; **मरीचिमाली**-सूर्य या चन्द्रमा।
मरु-(सै०पुं०) मरुभूमि, निर्जल प्रदेश
मरुआ-(हिं०पुं०) पत्थर या लकड़ी का छोटा खंभा।
मरुज-(सं०वि०) मरुभूमि में होनेवाला
मरुत्-(सं०पुं०) वायु, हवा।
मरुत्पत्ति-(सं०पुं०) इन्द्र, **मरुत्पथ**-(सं०पुं०) आकाश।
मरुथल-(हिं०पुं०) देखो मरुस्थल।
मरुदेश-(सं०पुं०) मरुभूमि, मारवाड़ देश।
मरुद्रुम-(सं०पुं०) बबूल का वृक्ष।
मरुप्रिय-(सं०पुं०) उष्ट्र, ऊँट।
मरुभूमि-(सं०स्त्री०) पेड़, पौधे तथा जलरहित बालुमय विस्तृत भूमि भाग।
मरुरना-(हिं०क्रि०) ऐंठना, मरोड़ना।
मरुस्थल-(सं०नपुं०) मरुभूमि।
मरू-(हिं०वि०) कठिन, कड़ा।
मरूरा-(हिं०पुं०) देखो मरोड़।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मरोड़-(हिं०पुं०) मरोड़ने की क्रिया या भाव, ऐंठन, घुमाव। **मरोड़ना**-(हिं०क्रि०) ऐंठना, बल डालना।
मरोड़ा-(हिं०पुं०) पेट की पीड़ा जिसमें ऐंठन जान पड़ती है।
मरोड़ी-(हिं०स्त्री०) ऐंठन, घुमाव; **मरोर**-(हिं०स्त्री०) पछतावा।
मर्कट-(सं०पुं०) बन्दर, मकड़ा।
मर्कटी-(सं०स्त्री०) मकड़ी, बन्दरिया
मर्कत-(सं०पुं०) देखो मरकत।
मर्तबान-(हिं०पु०) रंग चढ़ाया हुआ मिट्टी का पात्र जिसमें अचार, मुरब्बा आदि रक्खा जाता है, अमृतबान।
मर्त्य-(सं०पुं०) भूलोक, मनुष्य, शरीर देह।
मर्त्यलोक-(सं०पुं०) मनुष्य लोक, पृथ्वी।
मर्दना-(हिं०क्रि०) मलना, रौंदना कुचलना।
मर्दन-(सं०नपुं०) शरीर में तेल उबटन आदि मलना, कुचलना, रौंदना,
मर्दित-(सं०वि०) चूर्ण किया हुआ, मला हुआ, मसला हुआ।
मर्म-(सं०नपुं०) रहस्य, तत्व, शरीर में का वह स्थान जहाँ पर आघात पड़ने पर बड़ी पीड़ा होती है और कभी कभी मृत्यु भी हो जाती है।
मर्मघ्न-(सं०वि०) मर्म घातक।
मर्मज्ञ-(सं०वि०) किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला। **मर्मभेदक**-(सं०वि०) हृदय को अधिक कष्ट पहुँचाने वाला।
मर्मभेदी-(हिं०वि०) हृदय पर आघात पहुँचाने वाला, हार्दिक कष्ट देने वाला।
मर्मर(सं०पुं०) कपड़े पत्ते इत्यादि का मरमर शब्द।
मर्मवचन-(सं०पुं०) मर्मभेदी बात।
मर्मवाक्य-(सं०पुं०) रहस्य की बात।
मर्मविद्-(सं०वि०) मर्मज्ञ।
मर्याद-(हिं०स्त्री०) रीति, प्रथा, चाल
मर्यादक-(सं०वि०) माननीय।
मर्यादा-(सं०स्त्री०) मान, गौरव, सदाचार, नियम, सीमा, **मर्यादित**-(सं०वि०) मर्यादा पूर्ण।
मर्षण-(सं०पुं०) क्षमा; **मर्षणीय**-(सं०वि०) क्षमा करने योग्य।
मल-(सं०नपु०) पाप, विष्टा, पुरीष, कपूर, दोष, विकार,।
मलकना-(हिं०क्रि०) हिलना, डोलना, इतराना।
मलखंभ मलखम-(हिं० पुं०) चार पाँच हाथ लंबा लकड़ी का मोटा डंडा जिस पर अनेक प्रकार का व्यायाम किया जाता है।
मलघ्न-(सं०वि०) मल नाशक।
मलदूषित(सं०वि०) मलिन, मैला।
मलना-(हिं०क्रि०) रगड़ना, ऐंठना, मसलना, मीचना।
मलबा-(हिं०पुं०) कूड़ा, कर्कट, ईट आदि
मलमल-(हिं०स्त्री०) महीन सूत से बुना हुआ एक प्रकार का पतला कपड़ा
मलमलाना-(हिं०क्रि०) बारंबार खोलना, मूदना, पछतावा करना।
मलमास-(सं०पुं०) अधिक मास जो प्रति तीसरे वर्ष होता है।
मलय-(सं०पुं०) मालाबार प्रदेश।
मलयज-(सं०पुं०) चन्दन, राहु।
मलरुचि-(सं०वि०) पापमय चित्त।
मलरोधक-(सं०वि०) मल में रुकावट करने वाला।
मलवाना-(हिं०क्रि०) मलने का काम दूसरे से करवाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मलहारक-(सं०वि०)पाप हरने वाला।
मलाई-(हिं०स्त्री०) दूध की साढ़ी, सार, तत्व, रस, रंग मलने की क्रिया या भाव, मलने का वेतन ।
मलाट-(हिं०पुं०) एक प्रकार का भूरे रंग का घटिया मोटा कागज जो बाँधने के काम में आता है ।
मलान-(हिं०वि०) देखो म्लान।
मलानि-(हिं०स्त्री०) देखो म्लानि ।
मलाह-(हिं०पुं०) देखो मल्लाह ।
मला-(हिं०पुं०)देखो मलिन्द, भौंरा।
मलिक्ष, मलिच्छ-(हिं०वि०) देखो म्लेच्छ ।
मलिन-(सं०नपुं०)दोष, पाप, (वि०) मैला, धीमा, फीका; **मलिनता**-(सं०स्त्री०) मैलापन ।
मलिनत्व-(सं० नपुं०) मलिनता ।
मलिनमुख-(सं० वि०) क्रूर, जिसका जिसका मुख उदास हो ।
मलिनाई-(हिं०स्त्री०) मलिनता । मैलापन । **मलिनाना**-(हिं० क्रि०) मैला होना ।
मलियामेट-(हिं० पुं०) सत्यानाश ।
मलीन-(हिं० वि०) मैला, कुचैला, उदास । **मलीमस**-(सं० नपुं०) पाप, दोष ।
मलुक-(हिं०स्त्री०) उदर, पेट ।
मलेक्ष, मलेच्छ-(हिं०वि०)देखो म्लेच्छ।
मल्ल-(सं०पुं०) पहलवान ।
मल्लक्रीड़ा-(सं०स्त्री०) मल्लयुद्ध ।
मल्लखम्भ-(हिं०पुं०)देखो मलखंभ ।
मल्लभूमि-(सं०स्त्री०) मल्लयुद्ध का स्थान, अखाड़ा । **मल्लयुद्ध**-(सं० नपुं०) आपस में युद्ध ।
मल्लविद्या-(सं०स्त्री०) मल्लयुद्ध की विद्या ।
मल्लिक-(सं०पुं०) भूस्वामी की एक उपाधि ।
मल्लिका-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का बेला, जिसको मोतिया भी कहते हैं ।
मल्लू-(हिं०पुं०) बन्दर ।
मल्हराना, मल्हाना-(हिं०क्रि०) चुमकारना ।
मवास-(हिं०पुं०)आश्रय, शरण, रक्षा, रक्षा स्थान ।
मवासी-(हिं० स्त्री०) गढ़ी, (पुं०) गढ़पति ।
मश-(सं०पुं०) क्रोध, मच्छड़ ।
मशक-(सं०पुं०) मच्छड़ ।
मशकहरी-(सं०स्त्री०) मसहरी ।
मष-(हिं०पुं०) देखो मख ।
मस-(हिं०क्रि०) देखो मसि, रोशनाई, मोछ निकलने के पहिले ओंठ पर का कालापन ।
मसक-(सं०पुं०) मसा, मच्छड़,
मसकना-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ में दरार पड़ जाना, बल पूर्वक दबाना या मलना, चिन्तित होना ।
मसखवा-(हिं०पुं०) माँसाहारी ।
मसना-(हिं०क्रि०) मसलना, गूंधना ।
मसलना-(हि०क्रि०) रगड़ना, मलना, आटा गूंथना, बल पूर्वक दबाना।
मसहरी-(हिं०स्त्री०) वह जालीदार कपड़े का बना हुआ परदा जो मच्छड़ों से बचने के लिये पलंग के चारों ओर लटकाया जाता है ।
मसहार-(हिं०पुं०) मांसाहारी ।
मसा-(हिं०पुं०) शरीर के किसी भाग में काले रंग का उभड़ा हुआ माँस का छोटा दाना । (हिं०पुं०) मच्छड़,मस ।
मसान-(हिं०पुं०) मरघट । **मसानिया**-(हिं०पुं०) मसान का डोम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मसार-(सं०वि०) स्निग्ध, गीला ।
मसाला-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ को तैयार करने के लिए आवश्यक सामग्री
मसि-(सं०पुं०) लिखने की रोशनाई ।
मसिदानी, मसिधानी-(हिं० स्त्री०) दावात ।
मसिपात्र-(सं०पुं०) देखो मसिदानी ।
मसिबुन्दा-(हिं०पुं०) रोशनाई का बूंद ।
मसीमुख-(सं०वि०) पापी, कुकर्मी ।
मसियाना-(हिं०क्रि०) पूरा हो जाना
मसिबिन्दु-(हिं०पु०) काजल का बुन्दा जो कुदृष्टि से बचने के लिये बच्चों के माथे में लगाया जाता है, डिठौना
मसी-(सं०स्त्री०) काली स्याही ।
मसीका-(हिं०पुं०) एक माशे का मान
मसुर-(सं०पुं०) मसूर, मसुरी ।
मसूढ़ा-(हिं०पुं०) मुख के भीतर का वह माँस जिसमें से दाँत निकले रहते हैं
मसूर-(सं०पुं०) एक प्रकार का चिपटा अन्न जिसकी दाल गुलाबी रंग की होती है ।
मसूरिका-(सं०स्त्री०) शीतला रोग, चेचक ।
मसृण-(सं० क्रि०) चिकना और कोमल ।
मसेवरा-(हिं०वि०) माँस का बना हुआ खाने का पदार्थ ।
मसोसना-(हिं०क्रि०) मन में कष्ट होना
मस्करा-(हिं०पुं०) ठिठोलिया ।
मस्करी-(हिं०स्त्री०) ठिठोलियापन ।
मस्तखरा-(हिं०पुं०) देखो मस्करा ।
मस्तक-(सं०पुं०) मुण्ड, शिर, सिर ।
मस्तिष्क-(सं०नपुं०) मस्तक के भीतर का गूदा, भेजा ।
मस्सा-(हिं०पुं०) देखो मसा ।
मह-(हिं०अव्य०) में ।
महक, महकना-देखो महक, महकना ।
महगा-(हिं०वि०) अधिक मूल्य पर बिकने वाला । **महगाई**-(हिं०स्त्री०) महंगी ।
महँगी-(हिं०स्त्री०) महँगा, होने की अवस्था, अकाल, दूर्भिक्ष ।
महन्त-(हिं०पुं०) किसी मठ का अधिष्ठाता, साधुओं का मुखिया, (वि०) श्रेष्ठ, प्रधान । **महन्ती**-(हिं०स्त्री०) महन्त का भाव या पद ।
मह-(हिं०अव्य०) देखो महँ ।
महक-(हिं०स्त्री०) गन्ध, वास ।
महकना-(हिं०क्रि०) गन्ध निकालना ।
महकान-(हिं०स्त्री०) देखो महक ।
महकीला-(हिं०वि०) सुगन्धित, महकदार ।
महत्-(सं०वि०) वृहत्, विपुल, विस्तीर्ण ।
महत-(हिं०पुं०) देखो महत्व ।
महता-(हिं०पुं०) सरदार, (स्त्री०) गर्व, अभिमान ।
महतारी-(हिं०पुं०) माता, मा ।
महतु-(हिं०पुं०) देखो महत्व ।
महतो-(हिं०स्त्री०) सरदार, चौधरी ।
महत्कथ-(सं०वि०) चापलूस ।
महत्तम-(सं०वि०) सबसे बड़ा या श्रेष्ठ,
महत्तर-(सं०वि०) दो पदार्थों में बड़ा या श्रेष्ठ । **महत्व**-(सं० नपुं०) श्रेष्ठता, बड़प्पन ।
महना-(हिं०क्रि०) दही दूध आदि को मथना, (पुं०) मथानी, रई ।
महनिया-(हिं०पुं०) मथने वाला ।
महनु-(हिं०पुं०) मथन करने वाला ।
महमंत-(हिं०वि०) मदोन्मत्त, मस्त ।
महमह-(हिं०क्रि०वि०) सुगन्धके साथ
महमहा-(हिं०वि०) सुगन्धित ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महमहाना-(हिं०क्रि०) महँकना।
महमा-(हिं०स्त्री०) देखो महिमा।
महरा-(हिं०पुं०) कहार, सरदार, (वि०) श्रेष्ठ बड़ा। **महराई**-(हिं० स्त्री०) श्रेष्ठता, प्रधानता। **महराज**-(हिं०पुं०) देखो महाराज।
महराना-(हिं०पुं०) महरों के रहने का स्थान।
महराब-(हिं०स्त्री०) घरों में की वृत्ताकार रचना।
महरी-(हिं०स्त्री०) ग्वालिन।
महर्घता-(सं०स्त्री०) महँगा होने का भाव, महँगी।
महर्षि-(सं०पुं०) अति श्रेष्ठ ऋषि,
महल्लक-(सं०पुं०) अन्तःपुरका रक्षक।
महाँ-(हिं० अव्य०) देखो महँ।
महा-(सं०वि०) अत्यन्त, बहुत, अधिक
महाई-(हिं०वि०) मथने का भाव, मथने का शुल्क।
महाउत-(हिं०पुं०) देखो महावत।
महाउर-(सं०स्त्री०) देखो महावर।
महाकर-(सं०पुं०) लंबा हाथ, अधिक लगान, (वि०) बड़े हाथ वाला।
महाकरुण-(सं०वि०) अति दयालु।
महाकान्त-(सं०वि०) बहुत सुन्दर।
महाकाय-(सं०वि०) बड़ शरीर वाला।
महाकाव्य-(सं०नपुं०) सर्गबद्ध वह बड़ा काव्य जिसमें आठ से अधिक सर्ग हों।
महाकुमार-(स०पुं०) युवराज।
महाक्रतु-(सं०पुं०) अश्वमेध आदि बड़ा यज्ञ।
महाखर्व-(स०पु०) सौ खर्वकी संख्या
महाखात-(सं०नपुं०) लंबा चौड़ा गड्ढा
महाख्यात-(सं०वि०) अति प्रसिद्ध।
महाघोर-(सं०वि०) अति भयानक।
महाजन-(सं०पुं०) साधु, श्रेष्ठ पुरुष, धनी, कोठीवाल; **महाजनी**-(हिं० स्त्री०) रुपये के लेन देन का व्यवसाय, महाजनों के यहां वही खाता लिखने की एक लिपि जिसमें मात्रायें आदि नहीं लगाये जाते, मुडिया अक्षर।
महाजल-(सं०पुं०) समुद्र;।
महाढ्य-(स०वि०) बड़ा धनी।
महातङ्क-(सं०पुं०) बड़ी व्याधि।
महातप-(हिं०पुं०) कठिन तपस्या
महातम-(हिं०पुं०) देखो महात्म्य।
महात्मा-(हिं०पुं०) वह जिसकी अत्मा का आशय बहुत ऊंचा हों, महानुभाव, बहुत बड़ा साधु, सन्यासी वा विरक्त।
महादन्त-(हिं०वि०) हाथी का दांत,
महादान-(सं०नपुं०) वे बड़े दान जिनके करने में अनन्त स्वर्ग की प्राप्ति। होती है।
महादेव-(सं०पुं०) शिव।
महाद्रुम-(सं०पुं०) ताड़ का पेड़।
महाद्वीप-(सं०पुं०) पृथ्वी का वह बड़ा भाग जो चारो ओर प्राकृतिक सीमाओं से घिरा हो, जिसमें अनेक देश हों और अनेक जातियां जिसमें वास करती हों।
महाधन-(सं०वि०) बहुत धनी;
महाध्वनि-(सं०पुं०) बड़े वेग का शब्द
महान्-(सं०वि०) विशाल, बहुत बड़ा। **महानट**-(सं०पुं०) शिव; **महानन्द**-(सं०पुं) मुक्ति, मोक्ष।
महानस-(सं०पुं०) पाकशाला।
महानिद्रा-(सं०स्त्री०) मृत्यु, मरण।
महानिशा-(सं०स्त्री०) रात्रि का मध्य भाग, आधी रात, प्रलय की रात्रि।
महानुभाव-(सं०वि०) महाशय, कोई

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़ा आदरणीय व्यक्ति; महानुभावता (सं०स्त्री०) बड़प्पन ।
महानुराग-(सं०वि०) ऐकान्तिक प्रेम ।
महान्तक-(सं०पु०) मृत्यु ।
महापथ-(सं०पुं०) प्रधानपथ, राजपथ, परलोक मार्ग ।
महापद्म-(सं०पुं०) एक पद्म की संख्या, सफेद कमल ।
महापद्य-(सं०पुं०) महाकव्य ।
महापवित्र-(सं०वि०) अति पवित्र ।
महापातक-(स०नपुं०) पांच सबसे बड़े पतक ।
महापात्र-(स०पुं०) प्रधान मंत्री, कट्टहा ब्राह्मण जो मृतक कर्मका दान लेता है ।
महापुरी-(सं०स्त्री०) राजधानी ।
महापुरुष-(सं०पुं०) महात्मा, महानुभाव, श्रेष्ठ मनुष्य ।
महाप्रताप-(सं०वि०) अत्यन्तप्रभावशाली
महाप्रभ-(सं०वि०) जिसमें बहुत चमक हो; महाप्रभाव-(सं०पुं०) अति बलवान; महाप्रसाद-(सं०पुं०) जगन्नाथजी को चढ़ाया हुआ भात ।
महाप्राण-(सं०पुं०) व्याकरण में—ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, श, ष,स, और ह इन वर्णों का नाम, (वि०) बड़ा बलवान् ।
महाबली-(हिं०वि०) बहुत बड़ा बलवान्
महाबाहु-(सं०वि०) लंबी भुजा वाला, बलवान्; महाबुद्धि-(सं०वि०) तीव्र बुद्धि वाला ।
महा ब्राह्मण-(सं०पुं०) देखो महा
महाभट-(सं०पुं०) बहुत बड़ा योद्धा ।
महा भाग-(सं०वि०) बड़ा भाग्यवान्, सौभाग्यशाली, महात्मा ।
महाभागी-(हिं०वि०) बड़ा भाग्यवान् ।
महाभार-(सं०पुं०) भारी बोझा ।
महाभारत-(सं-नपुं०) व्यास प्रणीत अठारह पर्वों का एक प्राचीन ऐतिहासिक महाकाव्य जिसमें पाण्डव तथा कौरवों के युद्ध का वर्णन है; महाभाष्य-(सं०नपुं०) पाणिनि व्याकरण के सूत्रों का विस्तृत भाष्य जिसको पातंजलि ने लिखा है ।
महाभिमान-(सं०पुं०) बहुत बड़ा घमंड
महाभीत-(सं०वि०) बड़ा डरपोक; महाभीरु-(सं०वि०) अत्यन्त डरपोक; महाभुज-(सं०वि०) जिसकी बांह लम्बी हों ।
महाभूषण-(सं०नपुं०) मूल्यवान अलंकार ।
महामद-(सं०वि०) बहुत प्रसन्न ।
महामन्त्री-(सं०पुं०) राजाका प्रधान मन्त्री । महामति-(हिं०वि०) बड़ा बुद्धिमान; महामह-(सं०पुं०) बड़ा उत्सव । महामहोपाध्याय-(सं०पुं०) श्रेष्ठ पण्डित, गुरुओं का गुरु, एक उपाधि जो भारत सरकार की ओर से पण्डितों को दी जाती थी ।
महामांस-(सं०नपुं०) मनुष्य के शरीर का मांस ।
महामाई-(हिं०स्त्री०) दुर्गा, काली ।
महामात्य-(सं०पुं०) राज का प्रधान या सबसे बड़ा मन्त्री । महामात्र-(सं०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ, (पुं०) प्रधान मन्त्री ।
महामानी-(हिं०वि०) बहुत बड़ा घमंडी
महामारी-- सं०स्त्री०) वह संक्रामक और भीषण रोग जिसमें एक साथ बहुत से मनुष्यों की मृत्यु होती है ।
महामूढ़, महामूर्ख-(सं०वि०) बड़ा मूर्ख
महामूर्ति(सं०पुं०) विष्णु ।
महामेघ-(सं०पुं०) काली घटा ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महामैत्री-(सं०स्त्री०) गाढी मित्रता।
महामोह-(सं०पुं०) सांसारिक सुखों का भोग।
महाय-(हिं०वि०) देखो महान्, बहुत।
महायुत-(सं०पुं०) सौ अयुत की एक संख्याका नाम।
महारण-(सं०पुं०) महायुद्ध, । **महारण्य**-(सं०नपुं०) बड़ा जंगल।
महारथ महारथी-(सं० पुं०) बड़ा योद्धा।
महाराज-(सं०पुं०) बहुत बड़ा राजा, ब्राह्मण, गुरु, आचार्य या किसी पूज्य के लिय संबोधन। **महाराजाधिराज**-(सं०पुं०) अनेक राजाओं में श्रेष्ठ
महाराज्ञी-(सं० स्त्री०) महारानी।
महाराज्य-(सं०नपुं०)बहुत राज्य।
महारात्रि-(सं०स्त्री०) महा प्रलय रात्रि।
महाराष्ट्री-(सं०स्त्री०) अठारह प्रकार की प्राकृत भाषा में से एक।
महारुज-(सं०स्त्री०)बड़ी पीड़ा या दुःख,
महारौरव-(सं०पुं०)एक नगर का नाम
महार्घ-(सं०वि०) बहुमूल्य।
महार्णव-(सं०पुं०) बड़ा समुद्र।
महार्थक-(सं०वि०) अधिक मूल्य का।
महार्बुद-(सं०स्त्री०) सौ करोड़ या दस अर्बुद की संख्या।
महार्ह-(सं०वि०) महापूज्य।
महालय-(सं०पुं०) पितृपक्ष, आश्विन का कृष्ण पक्ष।
महालस-(सं०पुं०) बड़ा आलसी।
महालोल-(सं०वि०) अत्यन्त चंचल।
महावत-(हिं०पुं०)हाथी हाँकने वाला,
महावन-(सं०नपुं०) घोर जंगल।
महावर-(हिं०पुं०) लाख से बना हुआ एक प्रकार का लाल रंग जिससे सौभाग्यवती स्त्रियां पैर को रंगती हैं।
महावसु-(सं०वि०) बड़ा धनी।
महावात,महावायु-(सं०पुं०)प्रचण्ड वायु
महाविक्रम-(सं०वि०)बड़ा प्रतापवान्।
महाविज्ञ-(सं०वि०) बड़ा ज्ञानवान्।
महाविद्या-(सं०स्त्री०) तन्त्र में मानी हुई दस देवियां।
महावैर-(सं०नपुं०) बड़ी शत्रुता।
महाव्रत-(सं०नपुं०) बारह वर्ष तक। चलने वाला व्रत। **महाव्रीहि**-(सं० पुं०) साठी धान।
महाशंख-(सं०पुं०) एक बहुत बड़ी संख्या जो दस शंख की होती है;
महाशठ-(सं०वि०)बड़ा दुष्ट,बड़ा धूर्त
महाशब्द-(सं०पुं०) भयानक शब्द।
महाशय-(सं०वि०)महानुभाव, महात्मा, सज्जन।
महाशालीन-(सं०वि०) अति विनीत, बड़ा नम्र।
महाशुक्ति-(सं०स्त्री०) बड़ी सीप, जिसमें से मोती निकलता है।
महाशून्य-(सं०नपुं०) आकाश।
महासम्मत-(सं०वि०)अति आदरणीय।
महासुख-(सं०नपुं०) अति आनन्द।
महास्पद-(सं०वि०) बड़ा प्रभावशाली।
महास्वन-(सं०पुं०) लड़ाई का डंका,
महास्वर-(सं०पुं०) उच्च स्वर।
महाहास-(सं०पुं०) ठहाके की हँसी।
महि-(हिं०अव्य०) देखो महँ।
महि-(सं०पुं०) पृथ्वी।
महिख-(हिं०पुं०) दो महिष।
महित-(सं०वि०) पूजित; **महिता**-(स०स्त्री०) महत्व, महिमा; **महित्व**-(सं०नपुं०) महत्व, प्रभुता।
महिदेव-(सं०पुं०) ब्राह्मण।
महिपाल-(सं०पुं०) देखो महीपाल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महिमा-(सं०स्त्री०) महत्व ।
महियाँ-(हिं०अव्य०) में ।
महियाउर-(हिं० पुं०) मठे में पका हुआ चावल ।
महिला-(सं०स्त्री०) स्त्री ।
महिष-(सं०पुं०) भैंस,
महिषी-(सं० स्त्री०) भैंस, पटरानी ।
मही-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, संख्या, (हिं० पुं०) मठा छाछ। महीकम्प-(सं० पुं०) भूडोल ।
महीचर-(सं०वि०) पृथ्वी पर घूमनें वाला; महीतल-(सं०नपुं०) भूतल, पृथ्वी ।
महीदेव-(सं०पुं०) देखो भूदेव, ब्राह्मण ।
महीधर-(सं०पुं०) पर्वत, शेष, नाग,
महीन-(हिं०वि०) जिसकी मोटाई या घेरा बहुत कम हो, कोमल, पतला, धीमा ।
महीना-(हिं०पुं०) कालका वह परिमाण जो वर्ष के बारहवें अंश के बराबर होता है, मासिक वेतन ।
महीनाथ, महीप-(सं०पुं०) पृथ्वीपति, राजा ।
महीपतन-(सं०नपुं०) साष्टाङ्ग प्रणाम करना ।
महीपति, महीपाल-(सं०पुं०) पृथ्वीपति राजा । महीप्रकम्प-(सं०पुं०) भूमिकम्प, भूडोल ।
महीभुज-(सं०पुं०) राजा । महीभृत्-(सं०पुं०) पर्वत, राजा। महीमण्डल-(सं०नपुं०) भूमण्डल ।
महीरुह-(सं०पुं०) वृक्ष, पादप, पेंड़ ।
महीशासक-(सं०पुं०) भूपाल, राजा ।
महीसुर-(सं०पुं०) ब्राह्मण ।
महुं-(हिं०अव्य०) देखो महँ ।
महुअर-(हिं०स्त्री०) महुआ मिला कर पकाई हुई रोटी, एक प्रकार का बाजा जिसको सपेरे बजातें हैं ।
महुअरी-(हिं०स्त्री०) आंटें में महुआ मिलाकर बनाई हुई रोटी ।
महुआ-(हिं०पुं०) एक प्रकारका प्रसिद्ध वृक्ष जिसके छोटे मीठे फलों से एक प्रकार की मदिरा बनती है । महुआरी-(हिं०स्त्री०) महुए का जंगल ।
महुर्छा-(हिं०पुं०) महोत्सव, बड़ा उत्सव ।
महुवरि-(हिं०स्त्री०) महुअर नाम का बाजा, तुंबड़ी ।
महुवा-(हिं०पुं०) देखो महुआ ।
महूरत-(हिं०स्त्री०) देखो मूहूर्त ।
महेन्द्र-(सं०पुं०) विष्णु, इन्द्र ।
महेर-(हिं०पुं०) झगड़ा, देखो महेरा ।
महेरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का व्यंजन जो दही में चावल पका कर बनाया जाता है । महेरी-(हिं०स्त्री०) जल में उबाली हुई ज्वार जो नमक मिर्च मिला कर खाई जाती है ।
महेला-(हिं०स्त्री०) पशुओं को खिलाने का एक पौष्टिक पदार्थ ।
महेलिका-(सं०स्त्री०) महिला, नारी ।
महेश-(सं०पुं०) शिव, महादेव, ईश्वर ।
महेस-(हिं०पुं०) देखो महेश ।
महोगनी-(सं०पुं०) एक प्रकारका बड़ा सदाबहार वृक्ष, इसकी लकड़ी पुष्ट-टिकाऊ और बहुमूल्य होतीहै ।
महोच्छव, महोछा-(हिं०पुं०) महोत्सव ।
महोती-(हिं०स्त्री०) महुवे का फल ।
महोत्पल-(सं०नपुं०) पद्म ।
महोत्सव-(सं०पुं०) कोई बड़ा उत्सव ।
महोदधि-(सं०पुं०) सागर, समुद्र ।
महोदय-(सं०पुं०) महाशय, बड़ों के लिय आदर सूचक शब्द। महोदया-(सं०स्त्री०) महाशया ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महोद्यम, महोद्योग-(सं०पुं०) बड़ा उद्योग या यत्न।
महोन्नत-(सं०वि०) जिसकी बड़ी उन्नति हुई हो, (पुं०) ताल वृक्ष।
महोन्नति-(सं०स्त्री०) बड़ी उन्नति।
महोन्मद-(सं०वि०) अति उन्मत्त।
महोजस्-(सं०वि०) बड़ा तेजस्वी।
महोषधि-(सं०स्त्री०) श्रेष्ठ औषधि,
मां-(हिं०स्त्री०) जन्म देने वाली माता,
मांकड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो मकड़ी।
मांखन-(हिं०पुं०) मक्खन, नवनीत।
मांखना-(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना,
मांखी-(हिं०स्त्री०) मक्खी।
मांग-(हिं०स्त्री०) मांगने की क्रिया या भाव, आवश्यकता, सिर के बाल के बीच में की रेखा जो बालों को विभक्त करने के लिये बनाई जाती है, किसी वस्तु का ऊपरी भाग, सिरा।
माँगन--(हिं०पुं०) माँगने की क्रिया या भाव, याचक; भिखमंगा। **माँगना**-(हिं०क्रि०) कुछ प्राप्त करने के लिये प्रार्थना करना।
माँचा-(हिं०पुं०) मचान, खाट, पलंग,
माँछ-(हिं०पुं०) मछली।
माँछना-(हिं०क्रि०) घुसना, बैठना।
माँछर, माँछली-(हिं०स्त्री०) मछली।
माँछी-(हिं०स्त्री०) देखो मछली।
माँजना-(हिं०क्रि०) मलकर स्वच्छ करना, अभ्यास करना, कण्ठस्थ करना।
माँजर-(हिं०स्त्री०) अस्थिपंजर, ठठरी
माँझ-(हिं०अव्य०) में, बीचमें।
माँझा-(हिं०पुं०) नदी के बीच का टापू,
माँझिल-(हिं०वि०) बीच का।
माँझी-(हिं०पुं०) नाव खेने वाला मल्लाह केवट।
माट-(हिं०पुं०) मटका, घर।
माँठ-(हिं०पुं०) मटका कुंडा। **माठी**-(हिं०स्त्री०) मठिया।
माँड़-(हिं०पुं०) पकाये हुए चावल से निकाला हुआ पानी।
माँड़ना-(हिं०क्रि०) मसलना, सानना, पोतना गूँथना, बनाना,
माँड़वी-(हिं०पुं०) अतिथि शाला, विवाह मण्डप, मड़वा।
माँड़व-(हिं०पुं०) मण्डप।
माँड़ा-(हिं०पुं०) आंख का एक रोग जिसमें आंख के भीतर एक पतली झिल्ली पड़ जाती है, मँड़वा, देखो मण्डप।
माँड़ी-(हिं०स्त्री०) भात का पसेव, मांड़, आंटे मैदे, चावल के पसेव आदि से तैयार की हुई लेई जिससे कपड़ों में कलफ दी जाती है।
मांत-(हिं०वि०) उन्मत्त, बेसुध, पागल,
मातना-(हिं०क्रि०) उन्मत्त होना।
माँता-(हिं०वि०) उन्मत्त, मतवाला।
माँथबन्धन-(हिं०पुं०) परान्दा, सिर में लपेटने का कपड़ा,।
माँथा-(हिं०पुं०) मस्तक, सिर।
माँद-(हिं०स्त्री०) हिंसक पशुओं के रहने का विवर, खोह।
माँय-(हिं०अव्य०) में, बीच, मध्य में।
माँस-(सं०नपुं०) शरीर का रक्तजात धातु विशेष।
मांसपित्त-(सं०पुं०) अस्थि, हड्डी।
मांसपेशी-(सं०स्त्री०) शरीर के भीतर का मांस पिंड। **मांसभक्षी, मांसभोजी**-(सं०पुं०) मास खाने वाला।
मांसल-(वि०) मांस युक्त, स्थूल, मोटा, पुष्ट। **मांसलता**-(सं०स्त्री०) स्थूलता, **मांसवृद्धि**-(सं०स्त्री०) गलगण्ड, घेघा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्लीपद, अण्ड वृद्धि का रोग।
मांसस्नेह-(सं०पुं०) वसा।
मांसाशन-(सं०नपुं०) मांस भक्षण, मांसाशी-(सं०पुं०) राक्षस। मांसाहारी-(सं०पुं०) मांस खाने वाला।
मांह-(हिं०अव्य०) बीच में।
माइका-(हिं०पुं०) स्त्री के माता पिता का घर।
माई(हिं०स्त्री०) माता, मां, बड़ी बूढ़ी स्त्री के लिये संबोधन का शब्द;
माक्ष-(सं०पुं०) स्पृहा, देखो माख।
माख-(हिं०पुं०)अभिमान, अप्रसन्नता, पश्चात्ताप।
माखन-(हिं०पुं०) मक्खन, नवनीत।
माखना-(हिं०क्रि०) अप्रसन्नहोना, क्रुद्ध होना।
माखी-(हिं०स्त्री०) मक्खी।
मागध-(सं०पुं०) स्तुतिपाठक, वन्दी, भाट। मागधी-(सं०स्त्री०) मगध देश की प्राचीन भाषा।
माघ-(सं०पुं०) पौषके के बाद तथा फाल्गुन के पहिले का चान्द्रमास;
माघी-(सं०स्त्री०)माघ मासकी पूर्णिमा
मांगलिक-(वि०) मगल प्रकट करने वाला। मांगल्य-(सं०वि०)शुभजनक मंगलकारी।
माच-(हिं०पुं०) मचान। माचना-(हिं०क्रि०) देखो मचना।
माचल-(हिं० वि०) मचलने वाला
माचा-(हिं०पुं०) मचिया।
माछ-(हिं०पुं०) बड़ी मछली, मछली।
माछर-(हिं०पुं०) मच्छड़।
माछी-(हिं०स्त्री०) मक्खी, मछली।
माटा-(हिं०पुं०) लाल रंग का च्यूँटा जिसके झुंड के झुंड आम के पेड़ पर पर रहते हैं।
माटी-(हिं०स्त्री०) शरीर, मिट्टी, धूल, रज।
माठ-(हिं०पुं०)एक प्रकार की मिठाई।
माठा-(हिं०पुं०) देखो मठा, मट्ठा;
माड़ना-(हिं०क्रि०) विभषित करना, धारण करना, हाथ या पैरसे मसलना।
माणवक-(सं०पुं०)बालक बटु, विद्यार्थी
माणिक्य-(सं०नपुं०) लाल रंग का एक रत्न, मानिक।
माण्डप-(सं०वि०) मण्डप सम्बन्धी।
माण्डलिक-(सं०पुं०) किसी प्रान्त का शासक, वह छोटा राजा जो किसी सार्वभौम राजा के अधीन हो।
मात-(हिं०स्त्री०) माता।
मातङ्ग-(सं०पुं०) हस्ती, हाथी।
मातमुख-(हिं०वि०) मूर्ख।
मातलि-(सं०पुं०) इन्द्र के सारथी का नाम।
माता-(हिं०स्त्री०)जननी, किसी आदरणीय स्त्री के लिये सम्बोधन का शब्द, मातामह-(सं०पुं०) नाना; मातामही-(सं०स्त्री०) नानी।
मातु-(हिं०स्त्री०) माता, माँ।
मातुल, मातुलक-(सं०पुं०) माता का भाई, मामा।
मातुला-(सं० स्त्री०) मामी; मातुलानी-(सं०स्त्री०)मामी;
मातुली-(सं०स्त्री०) मामी; मातुलेय-(सं०पुं०) ममेरा, भाई।
मातुलेयी-(सं० स्त्री०) ममेरी बहिन; मातुल्य-(सं०नपुं०) मामा का घर।
मातृ-(सं०स्त्री०) जननी, माता।
मातृक-(सं०वि०) माता सम्बन्धी।
मातृका-(सं०स्त्री०) दूध पीलाने वाली धाय, जननी, माता, उपमाता, मातृघाती-(हिं०वि०)माता की हत्या

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने वाला; मातृपूजन-(सं०नपुं०) माता की पूजा; मातृभाषा-(सं०स्त्री०) वह भाषा जिसका बोलना माता की गोद में रहते हुए बालक सीखता है; मातृवत्-(सं०वि०) माता के समान; मातृ वत्सल-(सं०वि०) माता के प्रति भक्ति करने वाला, मातृष्वसा-(सं० स्त्री०) माता की बहन, मौसी;

मात्र-(सं०अव्य०) केवल, निश्चय।

मात्रा-(सं० स्त्री०) परिमाण, किसी वस्तु का नियमित अल्प भाग, अवयव, शक्ति, स्वर सूचक रेखा जो अक्षर में लगाई जाती है,

मात्रिक-(सं०वि०) जिसमें मात्राओं की गणना की जाय।

मात्सर्य-(सं०पुं०) ईर्ष्या, डाह।

माथ-(हिं०पुं०) माथा।

माथना-(हिं०क्रि०) मथन करना।

माथा-(हिं० पुं०) किसी पदार्थ का ऊपरी भाग।

माथे-(हिं०क्रि०वि०) सिरपर, सहारे, भरोसे।

माद-(सं०पुं०) हर्ष, प्रसन्नता।

मादक-(सं०वि०) नशा उत्पन्न करने वाला।

मादिनी-(सं०स्त्री०) विजया, भंगा।

माधव-(सं०पुं०) विष्णु, नारायण, वसन्त ऋतु।

माधवी-(सं०स्त्री०) इस नाम की लता जिसमें चमेली के समान सुगन्धित फूल लगते हैं, मदिरा, मधु से बनाई हुई चीनी।

माधुर-(सं०वि०) मीठा, (नपुं०) चमेली का फूल; माधुरई, माधुरता-(हिं०स्त्री०) मधुरता, मिठास।

माधुरिया, माधुरी-(सं०स्त्री०) मद्य, शराब, सौन्दर्य, शोधा, मधुरता, मिठास

माधुर्य-(सं०पुं०) मधुरता, सुन्दरता, मिठास।

माध्यन्दिन-(सं०स्त्री०) दिन का मध्य भाग, दोपहर।

माध्यम-(सं०वि०) मध्यका, बीच का।

माध्यस्थ-(सं०पुं०) झगड़ा निवटाने वाला पच, दलाल।

माध्याकर्षण-(सं०पुं०) पृथ्वी के मध्य भाग का वह आकर्षण जो सर्वदा सब पदार्थों को खींचता रहता है।

माध्याह्निक-(सं०वि०) मध्याह्न के समय किया जाने वाला कार्य।

माध्वी-(सं०स्त्री०) मद्य, महुवे की बनी हुई मदिरा।

मान-(सं०नपुं०) परिमाण, तौल, सामर्थ्य, शक्ति, प्रतिष्ठा।

मानक्षति-(सं०स्त्री०) मानहानि।

मानगृह-(सं०पुं०) कोपभवन।

मानचित्र-(सं०पुं०) किसी स्थान या देश का चित्र।

मानता-(हिं०स्त्री०) मनौती।

मानद-(सं०वि०) बड़ाई करने वाला,

मानदण्ड-(सं०पुं०) वह डडा या लकड़ी जिससे कोई वस्तु नापी जावे।

मानधन-(सं०वि०) बड़ा प्रतिष्ठित।

मानना-(हिं०क्रि०) स्वीकार करना। मान लेना, ध्यान में लाना, श्रद्धा या विश्वास करना, आदर करना।

माननीय-(सं०वि०) आदर करने योग्य।

मानपरेखा-(हिं०पुं०) आशा।

मानभंग-(सं०पुं०) मानहानि।

मानभाव-(सं०पुं०) चोचला।

मानमन्दिर-(सं०पुं०) ग्रहों की गति आदि देखने के लिये वैज्ञानिक यन्त्रों से सुसज्जित स्थान, वेध शाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मानमय-(सं०वि०) गर्व युक्त, घमंडी।
मानमरोर-(हिं०स्त्री०) मन मुटाव।
मानव-(सं०पुं०) मनुष्य।
मानवर्जित-(सं०वि०) मानरहित।
मानवशास्त्र-(सं०पुं०) मानव जातिकी उत्पत्ति तथा विकास का शास्त्र
मानवी-(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री, (वि०) मनुष्य सम्बन्धी।
मानवेन्द्र-(सं०पुं०) राजा।
मानस-(सं०नपुं०) मन हृदय, मनुष्य, सकल्प, विकल्प,। मानसजप-(सं० पुं०) मन में ही (बिना उच्चारण किये) जप करने की विधि।
मानसरोवर-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध बड़ी झील जो हिमालयपर्वत के उत्तर में है।
मानसवेग-(सं० पुं०) मनका वेग, चिन्ता।
मानसशास्त्र-(सं०पुं०) मनोविज्ञान।
मानसिक-(सं०वि०) मन सम्बन्धी।
मानहानि-(सं०स्त्री०)अप्रतिष्ठा; मान-हानी-(हिं०वि०) जिसकी अप्रतिष्ठा हुई हो
मानहु-(हिं०अव्य०) मानों।
माना-(हिं०पुं०) अन्न आदि नापने का एक पात्र (क्रि०) नापना, तौलना, (क्रि०वि०) मान लो कि।
मानिक-(हिं०पुं०) माणिक्य, पद्मराग
मानित-(सं०वि०) सम्मानित, पूजित।
मानिनी-(सं०स्त्री०) गर्ववती स्त्री।
मानी-(सं० वि०) अभिमानी, गर्वी,
मानुख-(हिं०पुं०) देखो मनुष्य।
मानुष-(हिं०पुं०) देखो मनुष्य। मानुष (सं०पुं०)मनुष्य, मानव,(वि०)मनुष्य का। मानुषता-(सं०स्त्री०)मनुष्य का भाव या धर्म। मानुषिक-(सं०वि०) मनुष्य संबंधी मानुषी-(सं० वि०) मनुष्य संबन्धी। मानुस-(हिं० पुं०) मनुष्य, आदमी।
मानो-(हिं०अव्य०) जैसे।
मान्द्य-(सं०पुं०) मन्दता, आलस्य।
मान्य-(सं०वि०) पूजनीय; मान्यत्व-अधिक सम्मान योग्य।
मान्या-(सं०स्त्री०) आदर करने योग्य।
माप-(हिं०स्त्री०) मापने की क्रिया या भाव, परिमाण।
मापक-(सं०पुं०) वह जो मापता हो, वह जिससे कोई पदार्थ मापा जाय।
मापन-(सं०पुं०) परिमाण, तौलना, नाप। मापना-(हिं०क्रि०) नापना,
माम-(हिं०पुं०) अहंकार, ममता।
मामक-(सं०वि०) ममता युक्त, मेरा। मामकीन-(सं०वि०) मेरा। ममता-(हिं०स्त्री०) आत्मीयता।
मामा-(हिं०पुं०) माता का भाई।
मामी-(हिं०स्त्री०) मामी की स्त्री, मां की भौजाई।
मामूं-(हिं०पुं०)माता का भाई मामा।
माय-(हिं० स्त्री०) जननी, माता, मां
मायक-(सं०पुं०) मायावी।
मायका-(हिं० पुं०) नैहर, पीहर।
माया-(सं०स्त्री०) छल पूर्ण रचना, जादू, धूर्तता, अज्ञान, अविद्या, भ्रम, मायाकार-(सं० पुं०) ऐन्द्रजालिक, जादूगर; मायाचार-(सं०वि०)मायावी।
मायाविनी-(सं० स्त्री०) छल कपट करने वाली स्त्री, मायावी-(सं०-वि०) बड़ा छली।
मायिक-(सं०नपुं०), (पुं०) ऐन्द्र-जालिक, (वि०) मायावी, बनावटी।
मायी-(हिं०स्त्री०) देखो माता।
मायूर-(सं०वि०) मयूर सँबधी,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं०पुं०) मारने की क्रिया या भाव, मारण, आघात, (हिं०अव्य०) अत्यन्त, बहुत।

मारक-(सं०वि०) संहारक, हत्या करने वाला।

मारकाट-(हिं०स्त्री०) युद्ध, लड़ाई।

मारकीन-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारका मोटा कोरा कपड़ा।

मारग-(हिं०पुं०) देखो मार्ग;

मारजन-(हिं०पुं०) देखो मार्जन।

मारजनी-(हिं०स्त्री०) देखो मार्जनी।

मारजार-(हिं०पुं०) बिल्ली।

मारण-(सं०नपुं०) वध, हत्या।

मारतौल-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा हथौड़ा।

मारना-(हिं०क्रि०) वध करना, आघात पहुँचाना, धातु आदि को जलाकर भस्म करना, अनुचित रीति से किसी वस्तु को ले लेना, निर्जीव कर देना, डँसना, काटना, विना परिश्रम के प्राप्त करना, छिपाना, रोकना, नष्टकरना, ठोंकना, पीटना,।

मारपेंच-(हिं०पुं०) नह युक्ति जो किसी को धोखे में रख कर उसकी हानि की जावे।

मारा-(हिं०वि०) हत, मारा हुआ।

मारित-(सं०वि०) जो मार डाला गया हो

मारी-(सं०स्त्री०) मरी रोग।

मारुत-(सं०पुं०) वायु, हवा।

मारु,-(हिं०पुं०) बड़ा नगाड़ा, जंगी धौंसा, (वि०) हृदय विदारक, मारने वाला,

मारे-(हिं०अव्य०) कारण से।

मार्का-(हिं०पु०) सकेत, कोई अंक या चिह्न जो किसी विशेष बात का सूचक हो।

मार्ग-(सं०पुं०) पथ।

मार्गण-(हिं०पुं०) अन्वेषण, ढूंढ़ना।

मार्गरक्षक-(सं०पुं०) पथरक्षक, पहरेदार।

मार्गशीर्ष-(सं०पुं०) अगहन का महीना

मार्गिक-(सं०पुं०) पथिक, यात्री।

मार्गित-(सं०वि०) खोजा हुआ;

मार्जक-(सं०वि०) निर्मल करने वाला, (पुं०) रजक, धोबी।

मार्जन-(सं०नपुं०) स्वच्छ करनेका काम,

मार्जनी-(सं०स्त्री०) झाड़ू; मार्जनीय-(सं०वि०) परिष्कार करने योग्य।

मार्जार-(सं०पुं०) विडाल, बिल्ली;

मार्जित-(सं०वि०) स्वच्छ किया हुआ।

मार्तण्डमूल-अकवन की जड़।

मार्त्य-(सं०वि०) शरीर का मैल।

मार्दव-(सं०नपुं०) अहंकार रहित होना सरलता।

मार्मिक-(सं०वि०) मर्म स्थान पर प्रभाव डालने वाला।

माल-(हिं०स्त्री०) माला, हार, पंक्ति, वह द्रव्य जिससे कोई वस्तु बनी हो, गणित में वर्ग का धात, धन, संपत्ति, सामग्री, क्रय विक्रय पदार्थ,

मालगाड़ी-(हिं०पुं०) रेल की वह गाड़ी जिसमें केवल माल भर कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाया जाता है।

मालगोदाम-(हिं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर व्यापार का माल जमा रहता है,

मालती-(सं०स्त्री०) वृक्षों पर धनी फैलने वाली एक लता जिसमें सुगंधित सफेद फूल होते हैं,

मालदह-(हिं०पुं०) एक प्रकार का आम जो विहार प्रान्त में विशेष करके होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मालदही-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार छप्पर लगी हुई नाव ।
मालद्वीप-(हिं०पुं०) भारत सागर के अन्तर्गत सिंहल के समीप एक द्वीपपुंज ।
मालपूआ, मालपूवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मीठा पकवान जो पूरी की तरह का होता है ।
मालव-(सं०पुं०) अवन्ति देश, मालवा, मालवा देश,
माला-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, गले में पहरने का फूलों का हार, गजरा, जप करन की माला, । मालाकार-(सं०पुं०) माला बनाने वाला, माली । मालागुण-(सं०पुं०) माला गूथने का सूत, । मालाधार-(सं०वि०) (सं०वि०) माला धारण करने वाला, मालामणि (सं०पुं०) रुद्राक्ष ।
मालिका-(सं०स्त्री०) पंक्ति, माला, चमेली, मालिन ।
मालिनी-(सं०स्त्रीं०) मालिन, चम्पा नगरी !
मालिवान-(हिं०पुं०) देखी माल्यवान् ।
माली-(हिं०पुं०) फूल बेंचने वाली जाति विशष, वह पुरुष जो बगीचों में पेड़ पौध लगाने और सींचने का काम करता है ।
माल्य-(सं०नपुं०) फूल, सिर पर धारण करने की माला ।
मावत-(हिं०पुं०) देखो महावत ।
माश-(हिं०पुं०) देखो माष ।
माशा-(हिं०पुं०) एक तोले का बारहवां भाग, आठ रत्ती का एक मान या बांट ।
माष-(सं०पुं०) उड़द, । माषवर्णी-(सं०स्त्री०) जंगली उड़द ।
माषवटी(सं०स्त्री०) उड़द की बड़ी ।
मास-(सं०पुं०) वर्ष का बारहवां भाग, महीना ।
मासना-(हिं०क्रि०) मिलना, मिलाना ।
मासवृद्धि-(सं०स्त्री०) अण्ड वृद्धि का रोग, गलगण्ड, घेघा ।
मासल-(सं०वि०) देखो मांसल ।
मासा-(हिं०पुं०) देखो माशा ।
मासान्त-(सं०पुं०) एक महीनें का अन्त
मासिक-(सं०वि०) मास संबंधी, महीने में एक बार होने वाला; (पुं०) मासिक वेतन ।
मासी-(हिं०स्त्री०) मां की बहिन, मौसी
माहत-(सं०नपुं०) महत्व, बड़ाई ।
माहनीय-(सं०वि०) पूजनीय, श्रेष्ठ ।
माहां-(हिं०अव्य०) देखो महँ ।
माहात्मिक-(सं०वि०) माहात्म्य संबंधी
माहात्म्य-(सं०नपुं०) महिमा, महत्व, गौरव ।
माहिं-(हिं०अव्य०) भीतर, में, पर ।
माहीं-(हिं०अव्य०) देखो माहिं ।
माहुर-(हिं०पुं०) विष, गरल ।
मि-चीन देश की एक जाति का नाम
मिंगनी-(हिं०स्त्री०) देखो मेंगनी ।
मिंगी-(हिं०स्त्री०) देखो मींगी ।
मिंड़ाई-(हिं०स्त्री०) मीड़ने या मींजने की क्रिया या भाव, मींड़ने का शुल्क
मिहदी-(हिं०स्त्री०) देखो मेंहदी ।
मिचकना-(हिं०क्रि०) पलकोंका झपकना या बन्द होना । मिचकाना-(हिं०क्रि०) बार बार आँखें खोलना या बन्द करना
मिचकी-(हिं०स्त्री०) छलांग ।
मिचना-(हि०क्रि०) आँखोंका बन्द होना।
मिचलाना-(हिं०क्रि०) मटली आना ।
मिचवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से आंख बंद कराना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिछा-(हिं०वि०) देखो मिथ्या।
मिटका-(हिं०पुं०) देखो मटका।
मिटना-(हिं०क्रि०) किसी अंकित चिह्न आदिका लुप्त हो जाना, नष्ट होना, **मिटाना**-(हिं० क्रि०) रेखा, चिह्न आदि को पोंछ देना या हटाना, नष्ट कर दना,
मिटिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का छोटा बरतन, मटकी, (वि०) मिट्टी का बना हुआ। **मिटियाना**-(हिं०क्रि०) मिट्टी लगाकर स्वच्छ करना।
मिटियाफूस-(हिं०वि०) जो दृढ़ न हो।
मिट्टी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी, भूमि, धूल, शरीर,
मिट्ठा-(हिं०वि०) देखो मीठा।
मिट्ठी-(हिं०स्त्री०) चुम्बन, चूमा।
मिट्ठू-(हिं०वि०) मीठा बोलनें वाला,
मिठ-(हिं०वि०) "मीठा" शब्द का संक्षिप्त रूप, इसका व्यवहार प्रायः यौगिक शब्द बनाने के लिये होता हैं और यह किसी शब्द के पहले जोड़ा जाता है। **मिठबोलना-मिठबोला**, (हिं० वि०) मधुरभाषी। **मिठाई**-(हिं०स्त्री०) मिठास, कोई मीठी खाने की वस्तु। **मिठास**-(हिं०स्त्री०) मीठापन।
मिड़ाई-(हिं०स्त्री०) देखा मिंड़ा।
मितंग-(हिं०पुं०) हस्ती, हाथी।
मित-(सं० वि०) परिमित- **मितभाषी**-(सं०वि०) स्वल्पभाषी, ।
मितभुक्-(सं०वि०) थोड़ा खाने वाला
मितमति (सं०वि०) अल्पमति, ।
मितव्यय-(सं०पु०) कम व्यय करना **मितव्ययी**-(सं०वि०) परिमित व्यय करने वाला। **मितशायी**-(सं० वि०) बहुत कम सोने वाला।
मिताई-(हिं०स्त्री०) मित्रता।
मिताशन-(सं०वि०) कम भोजन करन वाला; **मिताशी**-अल्पभोजी।
मिताहार-(सं०पुं०) थोड़ा भोजन।
मिती-(हिं०स्त्री०) महीने की तिथि जब तक व्याज देना हो।
मित्रघ्न-विश्वास घातक।
मित्रता-(सं०स्त्री०) मित्र होने का भाव, सौहार्द। **मित्रभाव**-(सं०पुं०) मित्रता, **मित्रभेद**-(सं०पुं०) वहजो मित्रों में वैमनस्य उत्पन्न कराता हो।
मित्रलाभ-(सं०पुं०) मित्रों का मिलना।
मित्राई-(हिं०स्त्री०) देखो मित्रता।
मिथुन-(सं०नपुं०) स्त्री और पुरुष का युग्म या जोड़ा, द्वन्द्व, युगल।
मिथ्या-(सं०वि०) असत्य, अनृत, झूठ; **मिथ्याभियोग**-(सं० नपुं०) किसी पर झूठा दोष लगाना; **मिथ्याभिशाप**-(सं०पुं०) झूठा कलंक; **मिथ्यामति**-(सं०स्त्री०) भ्रान्ति भूल; **मिथ्यावाद**-(सं०पुं०) झूठी बात; **मिथ्यावादी**-(हिं०वि०) झूठ बोलने वाला, झूठा; **मिथ्याहार**-(सं०पुं०) प्रकृति के विरुद्ध भोजन करना।
मिनती-(हिं०स्त्री०) देखो विनति।
मिनमिन-(हिं०स्त्री०) मक्खी के भनभनाने के समान मन्द शब्द; **मिनमिना**-(हिं०वि०) नाक के बोलने वाला, **मिनमिनाना**-(हिं०क्रि०) नाक से बोलना।
मिमियाना-(हिं०क्रि०) बकरी या भेंड़ का बोलना।
मिरग-(हिं०पुं०) देखो मृग।
मिरगी-(हिं० स्त्री०) अपस्मार रोग जिसमें रोगी मूर्छित होकर गिर पड़ता है।
मिरचा-(हिं०पुं०) लाल मिर्च।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिरचाई-(हिं०स्त्री०) देखो मिरीच।
मिरदंग-(हिं०पुं०) देखो मृदङ्ग।
मिरदंगी-(हिं०पुं०) मृदङ्ग बजाने वाला
मिरिग-देखो मृग।
मिरिच-(हिं०स्त्री०) देखो मरिच।
मिर्च-(हिं०स्त्री०) कुछ तीते फलों और फलियों का वर्ग जिसके अन्तर्गत लाल तथा कालीमिर्च है।
मिलकना-(हिं०क्रि०) जलना।
मिलकी-(हिं०स्त्री०) जिसके पास भूसम्पत्ति हो।
मिलन-(सं० नपुं०) समागम, भेंट, मिश्रण, मिलावट; **मिलनसार**-(हिं० वि०) सबसे हेलमल रखने वाला; **मिलनसारी**-(हिं० स्त्री०) सुशीलता,
मिलना-(हिं० क्रि०) सम्मिलित होना; किसी पक्ष में होना, मेल मिलाप होना, सटना, चिपकना, लाभ होना, भेंट होना, प्राप्त होना।
मिलवाई-(हिं०स्त्री०) मिलवाने की क्रिया या भाव।
मिलवाना-(हिं०क्रि०) भेंट या परिचय कराना, मेल कराना।
मिलाई-(हिं०स्त्री०) मिलनेकी क्रिया या भाव।
मिलान-(हिं०पुं०) मिलनें की क्रिया या भाव, तुलना।
मिलाना-(हिं०क्रि०) मिश्रण करना, सन्धि करना, किसी को अपने पक्ष में करना, सटाना, चिपकाना, एक करना, बराबर करना, यह देखना कि प्रतिलिपि मूल के अनुसार है या नहीं।
मिलाप-(हिं०पुं०) मिलनेकी क्रिया या भाव, मित्रता।
मिलाव-(हिं०पुं०) मिलाप, मिलावट;
मिलोना-(हिं०क्रि०) देखो मिलाना।
मिलौनी-(हिं०स्त्री०) मिलान की क्रिया या भाव, मिलावट।
मिश्र-(सं०वि०) मिश्रित, मिला हुआ, गणित में भिन्न प्रकार की सख्या संबंधी।
मिश्रजाति-(सं०स्त्री०) वर्णसंकर, दोगला
मिश्रण-(सं०नपुं०) जोड़ करने की क्रिया, मिलावट, संयोजन; **मिश्रणीय**-(सं०वि०) मिलाने के योग्य;
मिश्रव्यवहार-(सं० पुं०) गणित की एक क्रिया; **मिश्रित**-(सं० वि०) मिलाया हुआ।
मिश्री-(हिं०स्त्री०) देखो मिसरी।
मिश्रोदन-(सं०नपुं०) खेचरिका, खिचड़ी
मिष-(सं०नपुं०) छल, कपट, बहाना,
मिष्ट-(सं०वि०) मधुर, मीठी; **मिष्टपाचक**-मिष्टान्न, मोरब्बा; **मिष्टपाचक**-अच्छा भोजन बनाने वाला; **मिष्टभाषी**-मधुर बोलने वाला।
मिष्टान्न-(सं.पुं.) मिष्ट द्रव्य, मिठाई।
मिस-(हिं०पुं०) बहाना, हीला, पाखण्ड
मिसना-(हिं०क्रि०) मिश्रित होना, मला जाना।
मिसरी-(हिं०स्त्री०) स्वच्छ करके जमाई हुई दानेदार सफेद चीनी।
मिसिरी-(हिं०स्त्री०) देखो मिसरी।
मिस्री-(हिं०स्त्री०) देखो मिसरी।
मिस्सा-(हिं०पुं०) कई तरह की दालों को पीस कर बनाया हुआ आंटा।
मींगीं-(हिं०स्त्री०) गूदा, गिरी।
मींजना-(हिं०क्रि०) हाथों से मलना,
मीड़क-(हिं०पुं०) मेढ़क।
मीड़ना-(हिं०क्रि०) हाथों से मलना, मसलना।
मीचना-(हिं०क्रि०) आंख बन्द करना या मूंदना।
मीचु-(हिं०स्त्री०) मृत्यु।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मीटना-(हिं०क्रि०) देखो मीचना।
मीठा-(हिं०वि०) हलका, धीमा, सुस्त, बहुत सीधा, प्रिय, रुचिकर, स्वादिष्ट, (पुं०) मीठा खाद्य, मिठाई, गुड़।
मीठा,आलू-शक्करकन्द; मीठाकद्दू-कुम्हड़ा
मीठा चावल-मीठा भात; **मीठा तेल**-तिल या पोस्ते के दाने का तेल; **मीठी छुरी**-कपटी मित्र; **मीठी मार**-भीतरी मार जिसमें बाहर से चोट के चिह्न न देख पड़े।
मीत-(हिं०पुं०) मित्र।
मीन-(सं०पुं०) मत्स्य, मछली,
मीना-(सं०वि०) मछली के समान सुन्दर आंखों वाली।
मीनाण्ड-(सं०नपुं०) मछली का अंडा
मीनालय-(सं०पुं०) सागर, समुद्र।
मीमांसक-(सं०पुं०) मीमाँसा शास्त्र को जानने वाला। **मीमांसा**-(सं० स्त्री०) विचार पूर्वक तत्व निणय,
मीलन-(सं०नपुं०) आँख बंद करना,
मीलित-(सं०वि०) बन्द किया हुआ, सिकोड़ा हुआ,
मुंगरा-(हिं०पुं०) काठ का बड़ा हथौड़ा, नमकीन बुंदिया।
मुंगौरी-(हिं०पुं०) मूंग की बनी हुई बरी।
मूंचना-(हिं०क्रि०) मुक्त करना।
मुंड-(हिं०पुं०) दखो मुण्ड; सिर।
मुंडचिरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार के फकीर जो अपना सिर, आँख कान, नाक, आदि किसी नुकीले हथियार से घायल करके भीख मांगते हैं और जब कोई जल्दी से भीख नहीं दता तो वे अड़ जाते हैं और अपने अँगों को और भी घायल करते हैं।
मुंडन-(हिं०पुं०) सिर के बालों का मूड़ा जाना। **मुंडना**-(हिं०क्रि०) सिर के बालों का मूड़ा जाना, ठगा जाना।
मुंडा-(हिं०पुं०) वह जिनके सरपर बाल न हों या मुड़े हुये हों, वह पशु जिसकों सींघ न हो, बिना मात्रा की एक प्रकार की लिपि, बिना नोक का जूता,
मुंड़ाई-(हिं०स्त्री०) मूंडने या मुड़ने की क्रिया या भाव, मुंडने या मुंडाने का शुल्क। **मुंड़ासा**-(हिं०पुं०) सिर पर बाँधने का मुरेठा।
मुंड़िया-(हिं०वि०) वह जो सिर मुड़ाकर किसी साधु सन्यासी का चेला बन गया हो।
मुंडी-(हिं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका सिर मूड़ा गया हो, विधवा, रांड़,
मुंडेर-(हिं०स्त्री०) देखो मुँडेरा।
मुंडेरा-(हिं०पुं०) सबसे ऊपर की छत पर चारो ओर बना हुआ भीत का उभड़ा हुआ भाग।
मुंडो-(हिं०स्त्री०) विधवा, रांड।
मुंदना-(हिं०क्रि०) खुली हुई वस्तु का ढप जाना या बन्द होना।
मुंदरी-(हिं०स्त्री०) अगुलियों में पहरने का सादा छल्ला, अंगूठी।
मुंह-(हिं०पुं०) मुख, चेहरा, सामर्थ्य, ऊपरी भाग या किनारा।
मुंहअखरी-(हिं०वि०) मौखिक।
मुंह काला-(हिं०पुं०) अप्रतिष्ठा, एक प्रकार की गाली।
मुंहचोर-(हिं०पुं०) वह जो लोगों के सामने जाने में संकोच करताहो।
मुंह छुआई-(हिं०स्त्री०) केवल ऊपरी मन से कुछ कहना। **मुँह छूट**-(हिं० वि०) जिसका मुंह तुच्छ बातें कहने में या गाली देने में खुला रहे।
मुंहजोर-(हिं०वि०) बड़बड़िया, उद्दण्ड;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुँह जोरी-(हिं० स्त्री०) उद्दण्डता
मुंहनाल-(हिं०स्त्री०) धातुकी बनी हुई वह छोटी नली जो हुक्के की सटक के अगले भाग में लगी रहती है।
मुंहपड़ा-(हिं०वि०) प्रसिद्ध, आख्यात।
मुंहफट-(हिं०वि०) जिसकी वाणी संयत न हो।
मुहाँसा-(हिं०पुं०) युवावस्था में मुख पर निकलने वाले दाने या फुंसियां।
मुकट-(हिं०पुं०) देखो मुकुट।
मुकटा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की रेशमी धोती जो पूजन, भोजन आदि के समय पहरी जाती है।
मुकता-(हिं०पुं०) देखो मुक्ता, मोती, (वि०) यथेष्ट, पर्याप्त, बहुत अधिक।
मुकना-(हिं० क्रि०) मुक्त होना, छुटकारा पाना।
मुकरना-(हिं०क्रि०) कोई बात कहकर उससे फिर जाना, (पुं०) वह जो बात कहकर मुकर जाता हो।
मुकराना-(हिं०क्रि०) दूसरे को झूठा बनाना।
मुक्कियाना-(हिं०क्रि०) किसी के शरीर में मुक्कियों से बार बार आघात करना, मुक्कियों से दबाना, घूसे लगाना
मुकुट-(सं०नपुं०) किरीट, अवतंस;
मुकुटी-(सं०स्त्री०) अंगुली मटकाना।
मुकुर-(सं०पुं०) दर्पण, कोरक, कली।
मुकुरित-(सं०वि०) खिला हुआ।
मुकुल-(सं०पुं०) शरीर, आत्मा, भूमि,
मुकुलित-(सं०वि०) जिसमें कलियां आ गई हों।
मुक्का-(हिं०पुं०) बंधी हुई मुट्ठी जो मारने के लिये उठाई जाय।
मुक्की-(हिं०स्त्री०) मुक्का, घूंसा, मुक्कोंकी मार।
मुक्त-(सं०वि०) जिसको मोक्ष प्राप्त हो गया हो, बंधन से छूटा हुआ; मुक्तकण्ठ-(सं०वि०) चिल्ला कर बोलन वाला, बेधड़क बोलने वाला। मुक्त केश-(सं०वि०) जिसका जूड़ा खुला हो।। मुक्तनिद्रा-(सं०वि०) जागृत, जगा हुआ। मुक्तलज्ज-(सं०वि०) निर्लज्ज; मुक्तवसन-(सं० वि०) नग्न, नंगा। मुक्तव्यापार-(सं०वि०) जिसने कारबार छोड़ दिया हो। मुक्तहस्त-(सं०वि०) वह जो बड़ा दानी हो।
मुक्ता-(सं०स्त्री०) मौक्तिक, मोती; मुक्ताकलाप-मोती की माला।
मुक्तात्मा-(सं०पुं०) माया के बंधनों से छूट कर जो मुक्त हुआ हो।
मुक्ताफल-(सं०नपुं०) मोती।
मुक्तामोदक-(सं०पुं०) मोतीचूर का लड्डू
मुक्ताम्बर-(सं०वि०) नग्न, नंगा।
मुक्ति-(सं०स्त्री०) मोक्ष, कैवल्य, निर्वाण।
मुख-(सं०नपुं०) मुंह, आनन, किसी पदार्थ का अगला या ऊपरी भाग, (वि०) मुख्य, प्रधान। मुखचन्द्र-(सं०पुं०) चन्द्रमा के समान मुख की शोभा।
मुखचपल-(सं०वि०) जो बढ़ बढ़ कर बोलता हो।
मुखज-(सं०पुं०) ब्राह्मण, (वि०) मुख से उत्पन्न।
मुखड़ा-(हिं०पुं०) मुख, चेहरा;
मुखधावन-(सं०नपु०) दतवन करना।
मुखपट-(सं०पुं०) घूंघट। मुखपान-(हिं०पुं०) पान के आकार का किसी धातु का कटा हुआ टुकड़ा।
मुखबन्ध-(सं०पुं०) अनुक्रमणिका, प्रस्तावना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुखभूषण-(सं०नपुं०) ताम्बूल, पान। **मुखमण्डल**-(सं०नपुं०) चेहरा। **मुखर**-(सं०वि०) कड़ुवा बोलने वाला, बकवादी, प्रधान; **मुखशुद्धि**-(सं०स्त्री०) मंजन या दतुअन आदि कीसहायता से मुंह स्वच्छ करना, भोजन के उपरान्त पान सुपारी आदि खाकर मुख को शुद्ध करना। **मुखशोष**-(सं०पुं०) प्यास के कारण मुह सूखना।

मुखस्राव-(सं०पुं०) थूक, लार।

मुखाकार-(सं०पुं०) मुख के सदृश।

मुखाग्र-(सं०नपुं०) किसी पदार्थ का अगला भाग, ओंठ (वि०) कण्ठस्थ; **मुखापेक्षा**-(सं०स्त्री०) दूसरे का मुंह ताकना। **मुखापेक्षी**-(सं०पुं०) वह जो दूसरे की कृपादृष्टि के भरोसा रहता हो। **मुखामृत**-(सं०नपुं०) मुख की शोभा।

मुखिया-(हिं०पुं०) नेता, अग्रसर, अगुआ।

मुख्य-(सं०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ। **मुख्यतः**-(सं०अव्य०) श्रेष्ठ रूप से, अच्छी तरह से। **मुख्यता**-(सं०स्त्री०) श्रष्ठता।

मुगदर-(हिं०पुं०) एक प्रकार की गावदुम लकड़ी की मुगरी जो व्यायाम में उपयोग की जाती है।

मुंगरेला-(हिं०पुं०) कलौंजी या मँगरैला नाम का दाना।

मुग्धम-(हिं०वि०) संकेत में कही हुई।

मुग्ध-(सं०वि०) मोह या भ्रम में पड़ा हुआ, मनोहर, मूढ़। **मुग्धता**-(सं० स्त्री०) मूढ़ता, सुन्दरता। **मुग्धबुद्धि**-(सं०वि०) भ्रान्तबुद्धि।

मुचंगड़-(हिं०वि०) मोटा और भद्दा।

मुछंदर-(हिं०पुं०) जिसकी दाढी मूँछ बड़ी बड़ी हों, भद्दा, मूर्ख मनुष्य,

मुछियल-(हिं०पुं०) बड़ी बड़ी मूंछ वाला।

मुजराई-(हिं०स्त्री०) काटने या घाटाने की क्रिया, बट्टा।

मुझ-(हिं०सर्व०) "मैं" का वह रूप जो उसको कर्ता और सम्बन्ध कारक को छोड़कर अन्य कारकों में विभक्ति लगाने से पहले प्राप्त होता है यथा, मुझको, मुझसे, मुझपर। **मुझे**-(हिं० सर्व०) एक पुरुष वाचक सर्वनाम, वह उत्तम पुरुष एकवचन का रूप है जो पुल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों में व्यवहार किया जाता है।

मुटकना-(हिं०वि०) जो आकार में छोटा परन्तु सुन्दर हो।

मुटका-(हिं०पुं०) एक प्रकार की रेशमी धोती; देखो मुकटा।

मुटाई-(हिं०स्त्री०) स्थूलता, मोटापन, अभिमान। **मुटाना**-(हिं०क्रि०) मोटा हो जाना,। **मुटासा**-(हिं०वि०) वह जो कुछ धन कमा लेने से असावधान और घमंडी हो गया हो।

मुटिया-(हिं०पुं०) वह श्रमी जो बोझ ढोता हो।

मुट्ठा-(हिं०पुं०) घासफूस तृण आदि का उतना पूला जितना हाथ की मुट्ठी में आ सके।

मुट्ठी-(हिं०स्त्री०) बंधी हुई हथेली,

मुठभेड़-(हिं०स्त्री०) लड़ाई, टक्कर,

मुठिया-(हिं०स्त्री०) किसी अस्त्र की बेंट।

मुड़क-(हिं०स्त्री०) देखो मुरक। **मुड़कना**-(हिं०क्रि०) देखो मुरकना।

मुड़ना-(हिं०क्रि०) दबाव या आघात से झुक जाना, लौटना, पलटना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुड़ला-(हिं०वि०) मुंडा, बिना बाल का। मुड़वाना-(हिं०क्रि०) किसी को मुड़ने के काम में प्रवृत्त करना, घूमने या मुड़ने में प्रवृत्त करना। मुड़वारी-(हिं०स्त्री०) मुँडेरा, चारपाई का सिरहाना। मुड़हर-(हिं०पुं०) स्त्रियों की साड़ी का वह भाग जो ठीक सिरपर रहता है। मुड़ाना-(हिं०क्रि०) मुंडन कराना, । मुड़िया-(हिं०पुं०) वह जिसका मस्तक मूंड़ा गया हो।

मुड़ेरा-(हिं०पुं०) देखो मुंड़रा।

मुण्ड-(सं०पुं०) वृक्ष का ठूंठ, मस्तक, सिर, कटा हुआ सिर, (वि०) अधम नीच। मुण्डन-(सं०नपुं०) सिर को उस्तरे से मूंड़न की क्रिया, मुण्डा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके सिर पर के बाल मूड़ दिये गये हों।

मुण्डित-(सं०वि०) मुड़ा हुआ।

मुतक्का-(हिं०पुं०) खम्भा।

मुतसिरी-(हिं०स्त्री०) गले में पहरने की मोती की कंठी।

मुतिलाडू-(हिं०पुं०) मोतीचूर का लड्डू।

मुद-(सं०स्त्री०) हर्ष, आनन्द।

मुदकारी-(हिं०वि०) सुख कारक।

मुदगर-(हिं०पुं०) देखो मुगदर।

मुदित-(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न।

मुद्ग-(सं०पुं०) मूंग नामक अन्न।

मुद्गर-(सं० नपुं०) काठ का बना हुआ एक प्रकार का गावदुम दण्ड इसको हाथ में लेकर हिलाते हुए मल्ल कई प्रकार का व्यायाम करते हैं।

मुद्धी-(हिं०स्त्री०) सरकने वाली गाँठ।

मुद्रक-(सं०पुं०) छापने वाला।

मुद्रण-(सं० पुं०) छपाई का काम, मुद्रणालय-(सं०पुं०) मुद्रण करनेका स्थान, छापाखाना।

मुद्रा-(सं०स्त्री०) किसी के नाम की छाप' मुहर, सोने चाँदी का सिक्का, चिह्न,

मुद्राकर-(सं०पुं०) राज्य का वह प्रधान अधिकारी जिसके अधिकार में राजा की मुद्रा रहती है, वह जो किसी प्रकार की मुद्रा तैयार करता हो। मुद्राक्षर-(सं०नपुं०) सीसे के ढले हुये अक्षर जो छापने के काम में आते हैं। मुद्राङ्कण-(सं०नपुं०) मुद्रा की सहायता से छापने का काम। मुद्राङ्कित-(सं०वि०) मोहर किया हुआ। मुद्रायन्त्र-(सं० नपुं०) वह यन्त्र जिसके द्वारा कागज आदि पर लकड़ी या सीसे के ढले हुए टाइप से छापा जाता है, मुद्रिका-(सं०स्त्री०) अंगूठी।

मुद्रित-(सं०वि०) मुद्रण किया हुआ, छपा हुआ।

मुधा-(सं०अव्य०) व्यर्थ, वृथा, निष्फल

मुनमुना-(हिं०पुं०) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का पकवान।

मुनि-(सं०पुं०) महात्मा, व्रती, तपस्वी, त्यागी; मुनिपुङ्गव-(सं०पुं०) मुनि श्रेष्ठ।

मुनियाँ-(हिं०स्त्री०) लाल नामक पक्षी की मादा।

मुनीन्द्र-(सं०पुं०) ऋषिश्रेष्ठ।

मुनीम, मुनीब-(सं०पुं०) सहायक, वह जो साहूकारों का हिसाब किताब लिखता हो।

मुनीश-(सं०पुं०) मुनिश्रेष्ठ।

मुन्ना-(हिं०पुं०) छोट बच्चे के लिये प्रेम सूचक शब्द, प्यारा।

मुन्नू-(हिं०पुं०) दखो मुन्ना।

मुमुक्षा-(सं० स्त्री०) मुक्ति की अभिलाषा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुमुक्षु-(सं०पुं०) वह जो मुक्ति की कामना करता हो।
मुमूर्षा-(सं०स्त्री०) मरने की अभिलाषा
मुरण्डा-(हिं०पुं०) गुड़धानी, (वि०) शुष्क, सूखा हुआ।
मुरई-(हिं०स्त्री०) देखो मूली।
मुरक-(हिं०स्त्री०) मुड़नेकी क्रिया या भाव। मुरकना-(हिं०क्रि०) लचक कर एक ओर मुड़ना या झुकना, मुरकाना-(हिं०क्रि०) घुमाना, फेरना लौटाना।
मुरकी-(हिं०स्त्री०) कान में पहिरने की छोटी बाली।
मुरखाई-(हिं०स्त्री०) देखो मूर्खता।
मुरचंग-(हिं०पुं०) लोहे का बना हुआ एक बाजा जो मुंह से बजाया जाता है
मुरचा-(हिं०पुं०) देखो मोरचा।
मुरछना-(हिं०क्रि०) शिथिल होना,
मुरछल-(हिं०पुं०) देखो मोरछल।
मुरछा-(हिं०स्त्री०) देखो मूर्छा।
मुरछावंत-(हिं०वि०) देखो मूर्छित।
मुरछित-(हिं०वि०) देखो मूर्छित।
मुरज-(सं०पुं०) मृदङ्ग, पखावज।
मुरझाना-(हिं०क्रि०) फूल पत्ती आदि का कुम्हलाना, उदास होना।
मुरड़-(हिं०पुं०) अभिमान, अहंकार।
मुरना-(हिं०क्रि०) देखो मुड़ना।
मुरमुराना-(हिं०क्रि०) चूरचूर होना।
मुरलिया-(हिं०स्त्री०) मुरली, बांसुरी
मुरली-(सं०स्त्री०) बाँसुरी, वंसी।
मुरलीधर, मुरलीमनोहर-(सं० पुं०) श्रीकृष्ण।
मुरबी-(हिं०स्त्री०) धनुष की डोरी, चिल्ला।
मुरहा-(हिं०पुं०) वह बालक जो मूल नक्षत्र में उत्पन्न हुआ हो। (वि०) उपद्रवी।
मुराड़ा-(हिं०पुं०) जलती हुई लकड़ी,
मुराना-(हिं०क्रि०) चुभलाना।
मुरार-(हिं०पुं०) कमल की जड़, मसीड़
मुरारि-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण; मुरारे-(सं०पुं०) हे मुरारि-संबोधन का रूप
मुरासा-(हिं०पुं०) कर्णफूल, तरकी।
मुरुख-(हिं०वि०) देखो मूर्ख।
मुरुछना-(हिं०क्रि०) देखो मुरझना,
मुरुझाना-(हिं०क्रि०) देखो मुरझाना।
मुरेठा-(हिं०पुं०) पगड़ी।
मुरेर-(हिं०स्त्री०) देखो मरोड़; मुरेरना-(हिं०क्रि०) देखो मरोड़ना।
मुरेरा-(हिं०पुं०) मुंड़ेरा, देखो मरोड़।
मुर्री-(हिं०स्त्री०) कपड़े आदि में ऐंठन या मरोड़,।
मुलकना-(हिं०क्रि०) पुलकित होना।
मुलहा-(हिं०वि०) मूल नक्षत्र में उत्पन्न,
मुवना-(हिं०क्रि०) मरना।
मुवाना-(हिं०क्रि०) मार डालना।
मुशल-(सं०पुं०) मूसल।
मुषक-(सं०पुं०) मूसा, चूहा।
मुषित-(सं०वि०) चुरायाहुआ, ठगा हुआ
मुष्क-(सं०पुं०) अण्ड कोष, तस्कर, चोर
मुष्टि-(सं०पुं०) मुट्ठी मुक्का, घूंसा, चोरी।
मुसकनि-(हिं०स्त्री०) मुसकराहट।
मुसकराना-(हिं०क्रि०) बहुत मन्द रूप से हँसना; मुसकराहट-(हिं०स्त्री०) मुसकारने की क्रिया या भाव।
मुसकान-(हिं०पुं०) देखो मुसकराहट
मुसकाना-(हिं०क्रि०) देखो मुसकराना
मुसकानि-(हिं०स्त्री०) मुसकराहट।
मुसकिराना-(हिं०क्रि०) देखो मुसकराना; मुसकिराहट-(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट; मुसकुराना-(हिं०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रि०) देखो मुसकराना; मुसकुराहट-(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट; मुसक्यान-(हिं०पुं०) देखो मुसकान।
मुसखोरी-(हिं०स्त्री०) खेत में चूहों की अधिकता।
मुसटी-(हिं०स्त्री०) चुहिया।
मुसना-(हिं०क्रि०) लूटा जाना।
मुसम्मी-(हिं०पुं०) मीठा नीबू।
मुसरा-(हिं०पुं०) पड़ की वह जड़ जिसमें एक ही मोटा पिण्ड धरती के भीतर दूर तक चला गया हो, उसमें शाखायें न हों।
मुसरिया-चूहे का बच्चा, मुसरी।
मुसल-(सं०पुं०) धान कूटन का एक अस्त्र, मूसल।
मुसवाना-(हिं०क्रि०) लुटवाना।
मुस्क्यान-(हिं०स्त्री०) देखो मुसकराहट।
मुस्टंडा-(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट।
मुहरा-(हिं०पुं०) मुख की आकृति, लक्ष्य।
मुहाला-(हिं०पुं०) पीतल की चूड़ी जो शोभा के लिये हाथी के दाँत पर चढ़ाई रहती है।
मुंहि-(हिं०सर्व०) देखो मोंहि।
मुहु-(सं०अव्य०) बार बार, फिर फिर।
मुहुर्मुहुः-(सं०अव्य०) बारंबार, फिरफिर;
मुहूर्त-(सं०पुं०) दिन रात का तीसवां भाग, कला का दसवां भाग, निर्दिष्ट क्षण या काल।
मूंग-(हिं०पुं०) एक अन्न जिसकी दाल बनाई जाती है। मूंगफली-(हिं०स्त्री०) चिनिया बादाम।
मूंगा-(हिं०पुं०) विद्रुम, प्रवाल।
मूंगिया-(हिं०वि०) हरे रंग का।
मूंछ-(हिं०स्त्री०) ऊपर के ओंठ पर कड़े बाल जो केवल मनुष्यों को होते हैं;
मूंज-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का तृण
मूंड़-(हिं०पुं०) कपाल, सिर।
मूंड़न-(हिं०पुं०) मुण्डन, चूड़ा करण संस्कार। मुड़ना-(हिं०क्रि०) सिर के बाल बनाना, हजामत करना, धोखा देकर ठगना, चेला बनाना, भेंड़ का ऊन कतरना।
मूंड़ी-(हिं०स्त्री०) मस्तक, सिर।
मूंदना-(हिं०क्रि०) ऊपर से कोई वस्तु को छिपाना, बन्द करना।
मूक-(सं०वि०) वाक्य रहित, गूंगा, मूकता-(सं०स्त्री०) गूंगापन।
मूका-(हिं०पुं०) छोटा गोल झरोखा, मोखा।
मूंखना-(हिं०क्रि०) देखो मूसना।
मूंठ-(हिं०स्त्री०) मुष्टि, मुट्ठी, उतनी वस्तु जितना मुट्ठी में आ सके, किसी हथियार की मूठ। मूठना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना, मर मिटना।
मूठा-(हिं०पुं०) मुट्ठा।
मूठी-(हिं०स्त्री०) देखो मुट्ठी। मूड़-(हिं०पुं०) दखो मूंड़।
मूढ़-(सं०वि०) मूर्ख, निश्चेष्ट, स्तब्ध, मूढ़चेतन-(सं०वि०) निर्बोध। मूढ़ता-(सं०स्त्री०) मूढत्व। मूढ़धी-(सं०वि०) मन्दबुद्धि, जड़। मूढ़मति-(सं०स्त्री०) मन्दबुद्धि, मूर्ख।
मूतना-(हिं०पुं०) प्राणियोंके उपस्थ मार्ग से निकलने वाला जल, मूत।
मूत्र-(सं०नपुं०) मूत; मूत्रकृच्छ्र-(सं० नपुं०) मूत्र का वह रोग जिसमें बड़े कष्टसे रुकरुक कर मूत्र निकलता है;
मूत्रकोष-(सं०पुं०) मूत्राशय।
मूना-(हिं०पुं०) पीतल या लोहे की अँकुसी जो टकुवे पर जड़ी रहती है।
मूर-(हिं०पुं०) मूल, जड़, मूल धन,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुरचा-(हिं०पुं०) देखो मोरचा। मूरख-(हिं०वि०) देखो मूर्ख। मूरखताई-(हिं०स्त्री०) मूर्खता।
मूरछना-(हिं०क्रि०) मूर्छित होना।
मरछा-(हिं०स्त्री०) देखो मूर्छा। मूरत-(हिं०स्त्री०) देखो मूर्ति।
मूरतिवंत-(हिं०वि०)मूर्तिमान्, शरीरधारी
मूरि,मूरी-(हिं०वि०)मूल, जड़,जड़ी,बूटी
मूरूख-(हिं०वि०) देखो मूर्ख।
मूर्ख-(सं०वि०) मूढ, अज्ञ। मूर्खता-(सं० स्त्री०) मूढ़ता।
मूर्छन(सं०स्त्री०) अचेत स्थिति,-मूर्छा-गत-अचेत।
मूर्छित-(सं०वि०) मूर्छायुक्त।
मूर्त-(सं०वि०) साकार।
मूर्ति-(सं०स्त्री०) शरीर, प्रतिमा, आकृति, स्वरूप। मूर्तिकार-(सं०पुं०) मूर्ति बनाने वाला, चित्रकार।
मूर्तिविद्या-(सं०स्त्री०) मूर्ति गढ़ने की विद्या, चित्रकारी।
मूर्ध-(हिं०पुं०) मस्तक, शिर।
मुर्धज-(सं०वि०)शिर से उत्पन्न होने वाला।
मूर्धन्य-(सं०वि०) मर्धा संबंधी, मूर्धन्य वर्ण-वे वर्ण जिनका उच्चारण मूर्धासेहोता है यथा-ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र, और ष।
मूर्धवेष्टन-(सं०नपुं०) उष्णीश, पगड़ी
मूल-(सं०नपुं०)वृक्ष का वह भाग जो पृथ्वी के नीचे रहता है, जड़, आरंभ, धन या पूंजी जो किसी व्यापार में लगायी जाती है, आदि कारण, नीव, (वि०) मुख्य, प्रधान।
मूलक-(सं०पुं०) मूली, मुरई, मूल-स्थान-(सं०नपुं०) प्रधान स्थान, मूलहर-(सं०वि०) मूलनाशक।
मूलाशी-(सं०वि०) कन्द मूल खाकर रहने वाला।
मूलिका-(सं०स्त्री०)औषधियोंकीजड़,जड़ी
मूली-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी जड़ खाने में तौक्ष्ण तथा मीठी होती है, मुरई।
मूलोच्छेद-(सं०पुं०) जड़से नाश।
मूलोत्पादन-(सं०नपुं०)जड़से उखाड़ना
मूल्य-(सं०नपुं०) किसी वस्तुके बदले में मिलने वाला धन दाम।
मूल्यवान-अधिक दाम का।
मूषक-(सं०पुं०) इन्दुर, चूहा।
मूस-(हिं०पुं०) चूहा; मूसदानी-चूहा फँसाने का पिंजड़ा।
मूसना-(हिं०क्रि०)चुराकर उठा ले जाना
मूसर-(हिं०पुं०) धान कूटने का लकड़ी का मोटा डंडा, मूसल।
मूसरचंद-(हिं०पुं०) अपढ़, गँवार, हट्टाकट्टा परन्तु निकम्मा।
मूसल-(हिं०पुं०) धान कूटने का लंबा मोटा डंडा।
मूसलाधार-(हिं०क्रि०वि०) वृष्टि जो मोटी धार में हो।
मसा-(हिं०पुं०) चूहा।
मृग-(सं०पुं०) कोई पशु विशेष कर जंगलीपशु, अन्वेषण, खोज, हरिन, मृगछाला-(हिं०स्त्री०) हरिन का चमड़ा। मृगजल-(सं०पुं०) मृग तृष्णा-। मृगजीवन-(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया। मृगणा-(सं०स्त्री०) खोई हुई वस्तु की खोज। मृगतृष्णा-(सं० स्त्री०) मृगजल, मरीचिका। मृगधर-(सं०पुं०)चन्द्रमा। मृगधूर्त-(सं०पुं०) शृगाल,सियार। मृगनाभि-(सं०पुं०) कस्तूरी। मृगपति, मृगप्रभु-(सं०पुं०) सिंह। मृगमरीचिका-(सं०स्त्री०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देखो मृगतृष्णा। मृगमित्र-(सं०पुं०) चन्द्रमा। मृगया-(सं०स्त्री०) आखेट

मृगराज-(सं०पुं०) सिंह, व्याघ्र।

मृगलाञ्छन-(सं०पुं०) चन्द्रमा।

मृगलोचना, मृगलोचनी-(सं० स्त्री०) हरिण के समान नेत्र वाली स्त्री।

मृगवन-(सं०नपुं०) आखेटका जंगल।

मृगव्याध-(सं०पुं०) मृगों को खोजने वाला बहेलिया।

मृगशाव-(सं०पु०) हरिण का बच्चा।

मृगश्रेष्ठ-(सं०नपुं०) व्याघ्र, बाघ।

मृगहन-(सं०स्त्री०) व्याध, बहेलिया

मृगाक्षी-(सं०स्त्री०) मृगनयना।

मृगाङ्क-(सं०पुं०) चन्द्रमा, वैद्यक के एक रस का नाम।

मृगाङ्गजा-(सं०स्त्री०) कस्तूरी।

मृगाधिप-मृगाधिराज-(सं०पुं०) सिंह, शेर।

मृगित-(सं०वि०) अन्वेषित, खोजा हुआ।

मृगिनी-(हिं०स्त्री०) हरनी।

मृगी-(सं०स्त्री०) कस्तूरी, अपस्मार रोग।

मृगीलोचना-(सं०स्त्री०) देखो मृगनयना।

मृगेक्षण-(सं०वि०) मृग के समान आंख वाला।

मृगेन्द्र-(सं०पुं०) सिंह; मृगेश, मृगेश्वर-(सं०पुं०) सिंह।

मृग्य-(सं०व०) खोजने योग्य।

मृणाल-(सं०पुं०) कमल की डंडी, कमलनाल।

मृणालिनी-(सं०स्त्री०) पद्मिनी, कमलिनी

मृत-(सं०वि०) गतप्राण, मरा हुआ; मृतक-(सं०नपुं०) शव; मृतकर्म-(सं०पुं०) प्रेतकर्म; मृतकल्प-(सं० वि०) मरे के समान।

मृतवत्सा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सन्तति मर मर जाती हो।

मृतसंस्कार-(सं०पुं०) अन्त्येष्टि क्रिया।

मृतस्नान-(सं०नपुं०) सजाति या बन्धु के मरने पर उसके उद्देश्य से किया जाने वाला स्नान।

मृताशन-(सं०वि०) शव खाने वाला।

मृताशौच-(सं०नपुं०) वह अशौच जो किसी आत्मीय के मरने पर लगता है

मृति-(सं०स्त्री०) मरण, मृत्यु।

मृत्तिका-(सं०स्त्री०) मिट्टी।

मृत्पात्र-(सं०नपुं०) मिट्टी का पात्र।

मृत्यु-(सं०पुं०) प्राण छूटना, शरीर में से प्राणों का अलग होना।

मृत्युञ्जय-(सं०पुं०) शिव, महादेव

मृत्युलोक-(सं०पुं०) मर्त्यलोक।

मृथा-(हि०क्रि०वि०) मृषा, वृथा।

मृदङ्ग-(सं०पुं०) ढोलक के आकार का उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का बाजा।

मृदु-(सं०वि०) कमल, सुकुमार, धीमा,

मृदुल-(वि०) कोमल, सुकुमार, दयालु; मृदुलता-(सं०स्त्री०) सुकुमारता।

मृधा-(सं०अव्य०) मृषा, झूठ मूठ।

मृनाल-(हिं०पुं०) देखो मृणाल।

मृन्मय-(सं०वि०) मिट्टी का बना हुआ।

मृषा-(सं०अव्य०) मिथ्या, झूठमूठ, (वि०) असत्य, झूठ।

में-(हिं०अव्य०) अधिकरण कारक का चिह्न जिसको किसी शब्द के आगे लगाने से 'भीतर, बीच का, या चारो ओर होना' बतलाया जाता है, यह आधार या अवस्थान सूचित करता है।

मेंगनी-(हिं०स्त्री०) पशुओं की गोलियों के रूप में विष्टा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेंख-(हिं०स्त्री०) खूंटा, कील, कांटा, लकड़ी का पच्चड़।
मेखड़ा-(हिं०स्त्री०) बांस की फट्टी का घेरा।
मेखल-(हिं०स्त्री०) किंकणी, करधनी।
मेखला-(सं०स्त्री०) करधनी, कमरबंद गोल घेरा, ।
मेखली-(हिं०स्त्री०) कटिबन्ध, करधनी।
मेघ-(सं०पुं०) पर्जन्य, बादल, मेघकाल-वर्षाकाल ; मेघगर्जन-बादलों की गड़गड़ाहट; मेघजाल-बिजली, मेघजीवन-चकवा पक्षी; मेघडम्बर-मेघ की गर्जना;
मेघनाथ-(सं०पुं०) इन्द्र।
मेघमण्डल-(सं०नपुं०) आकाश; मेघमाला-(सं०स्त्री०) बादलों की घटा।
मेघवाई-(हिं०स्त्री०) मघों की घटा।
मेघवाहन-(सं०पुं०) इन्द्र।
मेघवेश्म-(सं०नपुं०) आकाश।
मेघश्याम-(सं०वि०) मेघ के समान काला, (पुं०) श्रीकृष्ण।
मेघसुहृद-(सं०पुं०) मयूर, मोर।
मेघस्वन, मेघह्लाद-(सं० पुं०) मेघ की गर्जना।
मेघा-(हिं०पुं०) मण्डूक, मेढक।
मेघागम-(सं०पुं०) वर्षाकाल।
मेघाच्छन- मेघाच्छादित-(सं० वि०) बादलों से ढपा हुआ।
मेघाडम्बर-(सं०पुं०) मेघों का विस्तार।
मेचक-(वि०) श्यामल, कालापन, श्यामता, कालापन।
मेजा-(हिं०पुं०) मण्डूक, मेढक।
मेटक-(हिं०वि०) नाश करने वाला, मिटाने वाला। मेटनहार-(हिं०पुं०) मिटाने या दूर करने वाला।
मेटना-(हिंक्रि०) मिटाना, नष्ट करना
मेटिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का घड़े से छोटा पात्र। मेटी, मेटुवा-(हिं० स्त्री०) देखो मेटिया।
मेटुवा-(हिं०वि०) कृतघ्न।
मेड़-(हिं०पुं०) खेत या भूमि का मिट्टी डाल कर बनाया हुआ घेरा।
मेड़क-(हिं०पुं०) मण्डूक, मेढ़क।
मेड़रा-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का मण्डालाकार ढांचा।
मेडराना-(हिं०क्रि०) देखो मँड़राना।
मेड़िया-(हिं०स्त्री०) मेढी।
मेढक-(हिं०पुं०) मण्डूक, दुर्दर, मेघा।
मेढा-(हिं०पुं०) सींगवाला एक चौपाया जिसके शरीर पर घने रोवें होते हैं, इसको लोग लड़ाने के लिये पालते हैं।
मेढ्र-(सं०पुं०) शिश्न, लिङ्ग।
मेद-(सं०पुं०) वसा, चरबी।
मेदिनी-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, धरती।
मेदनीपति-(सं०पुं०) पृथिवी पति।
मेधा-(सं०स्त्री०) मन की स्मरण रखने की शक्ति।
मेधावी-(सं०वि०) जिसकी धारणा शक्ति तीव्र हो, पंडित, विद्वान।
मेध्य-(सं०वि०) पवित्र, बुद्धि बढ़ाने वाला।
मेम-(हिं०स्त्री०) युरोप या अमेरिका आदि देश की स्त्री, ताश का एक पत्ता, बीबी, रानी।
मेमना-(हिं०पुं०) भेड़ी का बच्चा।
मेरवाना-(हिं०क्रि०) मिलाना।
मेरा-(हिं०सर्व०) 'मैं' शब्दका संबंध कारक का रूप, मुझसे संबंध रखने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेराउ, मेराव-(हिं०पुं०) मिलाप, समागम।
मेरी-(हिं०सर्व०) 'मेरा' का स्त्रीलिंग का रूप।
मेरुदण्ड-(सं०पुं०) पीठ के बीच की हड्डी, रीढ, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी के दोनों ध्रुवों के बीच में गई है।
मेरुपृष्ठ-(सं०नपुं०) आकाश, स्वर्ग
मेरुयन्त्र-(सं०नपुं०) बीजगणित में एक प्रकार का चक्र, चरखा।
मेरे-(हिं०सर्व०) 'मेरा' का बहुवचन; 'मेरा' का वह रूप जो संबन्धवान् शब्द के आगे विभक्ति लगाने पर प्राप्त होता है।
मेल-(सं०पुं०) संयोग, मित्रता, अनुकूलता, अनुरूपता, ढंग, प्रकार, मिलावट, समता, सङ्गति, एकता।
मेलन-(सं०नपुं०) मिलने की क्रिया या भाव। मेलना-(हिं०क्रि०) मिलाना, इकट्ठा होना।
मेला-(हिं०पुं०) बहुत से लोगों का जमावड़ा, उत्सव, खेल, कौतुक देखने के लिये बहुत से लोगों की भीड़।
मेली-(हिं०पुं०) संगी, हेलमेल रखनेवाला
मेल्हना-(हिं०क्रि०) बेचैन होना, छटपटाना।
मेवास-(हिं०पुं०) दुर्ग, गढ़, सुरक्षित स्थान। मेवासी-(हिं०पुं०) गढ़में रहने वाला, घर का मालिक।
मेष-(सं०पुं०) भेड़ा, मेषपाल-गड़ेरिया।
मेहँदी-(हिं०स्त्री०) एक पौधा जिसकी पत्तियों को पीस कर स्त्रियाँ हाथ पैर में लगाती हैं जिससे लाल रंग हो जाता है।
मेह-(हिं०पुं०) मेष, बादल, वर्षा।
मेहन-(सं०नपुं०) शिश्न, लिंग।
मेहना-(हिं०पुं०) उलहना, दोष कथन।
मेहर-(हिं०स्त्री०) देखो मेहरी, पत्नी।
मेहरा-(हिं०पुं०) स्त्रियों के समान चेष्टा या प्रकृति वाला मनुष्य।
मेहरारू-(हिं०स्त्री०) स्त्री, औरत।
मेहरी-(हिं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी।
मैं-(हिं०सर्व०) स्वयं खुद, सर्वनाम उत्तम पुरुष में कर्ता के एक वचन का रूप (अव्य०), में।
मै-(हिं०अव्य०) देखो मय, साथ, मिलकर।
मैत्री-(सं०स्त्री०) मित्र का भाव, मित्रता।
मैदानी-(हिं०वि०) मैदे का बना हुआ।
मैन-(हिं०पुं०) मोम।
मैनसिल-(हिं०पुं०) मनःशिला, एक प्रकार की धातु जो मिट्टी की तरह पीली होती है।
मैना-(हिं०स्त्री०) काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो सिखलाने पर मनुष्य की तरह बोली बोल सकता है।
मैया-(हिं०स्त्री०) माता, माँ।
मैर-(हिं०स्त्री०) साँप के बिष की लहर।
मैरा-(हिं०पुं०) वह मचान जिस पर बैठकर किसान अपने खेत की रखवाली करते हैं।
मैल-(हिं०वि०) मलिन, मैला, (स्त्री०) धूल, मैली करने की वस्तु, दोष, विकार।
मैलखोरा-(हिं०वि०) मैलको छिपाने वाला।
मैला-(हिं०पुं०) कूड़ा, करकट (वि०) दूषित, जिस पर मैल जमी हो।
मैला-कुचैला-(हिं०वि०) बहुत मैला,
मैलापन-(हिं०पुं०) मैला होने का भाव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मों-(हिं०अव्य०) मे, (सर्व०) मों।
मोंगरा-(हिं०पुं०) मेख ठोंकने का हथौड़ा, एक प्रकार की केशर।
मोंछ-(हिं०स्त्री०) देखो मूंछ।
मोढ़ां-(हिं०पुं०) एक प्रकार का गोल ऊंचा आसन, कन्धा।
मो-(हिं०सर्व०) मेरा, "मैं" का वह रूप जो वृज भाषा में कर्ता कारक के सिवाय अन्य कारकों में इसके चिह्न लगाने के पूर्व व्यवहार किया जाता है।
मोई-(हिं०स्त्री०)घी में सना हुआ आटा
मोकना-(हिं०क्रि०) त्यागना, छोड़ना।
मोकल-(हिं०वि०) मुक्त, छोड़ा हुआ;
मोकला-(हिं०वि०) अधिक चौड़ा।
मोक्ष-(सं०पुं०) मुक्ति, छुटकारा। **मोक्षक**-(सं०वि०) मोक्ष देने वाला **मोक्षद**-(सं०वि०) मोक्षदाता, मोक्ष देने वाला।
मोख-(हिं०पुं०) देखो मोक्ष।
मोखा-(हिं०पुं०) भीत आदि में का छिद्र, झरोखा।
मोगरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बड़ा बेले का फूल।
मोघ-(सं०वि०) निरर्थक, निष्फल, हीन। **मोघता**-(सं०स्त्री०)निष्फलता
मोच-(हिं०स्त्री०) अंग के किसी जोड़ पर की नस का अपने स्थान से हट जाना।
मोचक-(सं०वि०)मुक्तिकारक, छुड़ाने वाला। **मोचन**-(सं०नपु०) मोक्ष, **मोचना**-(हिं०क्रि०) छुड़ाना, मुक्त करना।
मोचनीय-(स०वि०) मुक्त करने योग्य।
मोची-(हिं०पुं०) चर्मकार श्रेणी की एक जाति, ये लोग जूता बनाते और इनकी मरम्मत करते हैं।
मोच्छ-(हिं०पुं०) देखो मोक्ष।
मोछ-(हिं०स्त्री०) देखो मूँछ।
मोट-(हिं०स्त्री०) चमड़े का बड़ा थैला जिसके द्वारा खेत सींचने के लिये कुवेंसे पानी निकाला जाता है, चरसा, (वि०) मोटा, साधारण, कम मूल्यका
मोटरी-(हिं०स्त्री०) गठरी।
मोटा-(हिं०वि०)दरदरा, बैडौल, भद्दा, अहंकारी, घटिया, स्थूल शरीर का मनुष्य; **मोटाना**-(हिं०क्रि०) स्थूलकाय होना, मोटा होना अमीर होना, अभिमानी होना, **मोटाई**-(हिं०पुं०) स्थूलता, मोटापन। **मोटापा**-(हिं०पुं०) स्थूलता।
मोटिया-(हिं०पुं०) रूक्ष मोटा देशी कपड़ा, खद्दड़, बोझ ढोने वाला कुली,
मोठ-(हिं०स्त्री०) मूंग की तरह का एक प्रकार का मोटा अन्न।
मोठस-(हिं०वि०) मौन, चुप।
मोड़-(हिं०स्त्री०)घुमाव या मुड़ने का भाव,घुमाना। **मोड़ना**-(हिं०क्रि०) फेरना, लौटाना, विमुख होना, तह करना।
मोड़ी-(हिं०स्त्री०) घसीट लिखने की एक प्रकार की लिपि जिसमें प्रायः मराठी भाषा लिखी जाती है।
मोतिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का वेला (फूल) जिसकी कली मोती के समान गोल होती है, (वि०)गोल छोटे दाने का।
मोतियाबिन्द-(हिं०पुं०) आंख का एक रोग जिसमें उसके परदे में गोल झिल्ली सी पड़ जाती है जिसके कारण आँख से देख नहीं पड़ता।
मोती-(हिं०पुं०) मुक्ता, वह बाली

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसमें बड़े बड़े मोती पड़े रहते हैं; **मोतीचूर**-(हिं०पुं०) छोटी बूंदियों का लड्डू; **मोतीझिरा**-(हिं०स्त्री०) छोटी शीतला का रोग।

मोद-(सं०पुं०) हर्ष आनन्द, सुगन्ध, **मोदक**-(सं०पुं०) लड्डू, । **मोदकर**-(सं०वि०) आनन्द देने वाला। **मोदकार**-(सं०पुं०) मिठाई बनाने वाला, हलवाई।

मोदकी-(सं०स्त्री०) चमेली के फूल का पौधा, (वि०) आनन्द देने वाली।

मोदन-(सं०नपुं०) हर्ष, आनन्द, सुगन्ध

मोदना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना, प्रसन्न करना।

मोदनीय-(सं०वि०) आनन्द करने योग्य।

मोदित-(सं०वि०) आनन्दित, हर्ष युक्त

मोदी-(हिं०पु०) आटा, चावल, दाल बेंचने वाला बनिया।

मोधू-(हिं०वि०) मूर्ख, हतबुद्धि ।

मोना-(हिं०क्रि०) तर करना, भिगाना, (पुं०) बाँस मूंज आदि का ढपनेदार पिटारा; **मोनिया**-(हिं०स्त्री०) छोटा मोना।

मोमबत्ती-(हिं०स्त्री०) मोम या चरबी को सांचे में ढालकर बनाई हुई बत्ती जो प्रकाश के लिये जलाई जाती है।

मोमी-(हिं०वि०) मोम के समान, मोम का बना हुआ।

मोयन-(हिं०पुं०) माड़े हुए आटे में घी मिलाना।

मोर-(हिं०पुं०) एक सुन्दर बड़ा पक्षी, (सर्व०) मेरा।

मोरचा-(फी०पु०) लोहे के ऊपरी तल पर चढ़ जाने वाली लाल तह जो वायु और तरी से उत्पन्न होती है, वह गड्ढा जो गढ़ के चारो ओर रक्षा के लिये खोद कर बनाया जाता है।

मोरछल-(हिं०पुं०) मोर की पूँछ के परों को इकट्ठा बाँध कर बना हुआ चँवर।

मोरन-(हिं०स्त्री०) मोड़ने की क्रिया या भाव, श्रीखण्ड (सिखरन)।

मोरना-(हिं०क्रि०) देखो मोड़ना।

मोरनी-(हिं०स्त्री०) मोर पक्षी की मादा

मोरपंख-(हिं०पुं०) मोर का पर।

मोरपंखी-(हिं०स्त्री०) वह नाव जिसका अगला भाग मोर की तरह बना और रँगा रहता है, (वि०) गहरा चमकीला नीला।

मोरा-(हिं०सर्व०) मेरा।

मोराना-(हिं०क्रि०) चारो ओर घुमाना फिराना।

मोरी-(हिं०स्त्री०) मैला पानी बहने की नाली, परनाली, मोहरी।

मोर्चा-(हिं०पुं०) देखो मोरचा।

मोल-(हिं०पुं०) मूल्य, दाम ।

मोलाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का दाम पूछना अथवा मूल्य स्थिर करना

मोवना-(हिं०क्रि०) देखो मोना।

मोष-(सं०पुं०) चोरी, लूट, ठगी; (हिं०पुं०) देखो मोक्ष; **मोषक**-(सं०पु०) तस्कर, चोर; **मोषण**-(सं०नपुं०) लूटना, चोरी करना, वध करना।

मोह-(सं०पुं०) अविद्या, मूर्छा, अज्ञान, भ्रान्ति, प्रेम; **मोहक**-(सं०वि०) मोह उत्पन्न करने वाला ।

मोहकर-(हिं०पुं०) घड़े का मोहड़ा।

मोहड़ा-(हिं०पुं०) किसी पात्र का मुख या खुला भाग।

मोहजनक-(सं०वि०) मोह उत्पन्न करने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोहन-(सं०पुं०) जिसको देखकर मन लुभा जावे, श्री कृष्ण, (हिं०वि०) मोह उत्पन्न करनेवाला; **मोहनभोग**-(सं०पुं०) एक प्रकार का हलुआ, **मोहनमाला**-(सं०स्त्री०) सोने के दानों की बनी हुई माला।

मोहना-(हिं०क्रि०) किसी पर अनुरक्त होना या रीझना, मूर्छित होना, लुभाना।

मोहनीय-(सं० वि०) मोह करने योग्य

मोहयिता-(सं०जि०) मोहकारक।

मोहरा-(हिं०पुं०) किसी पात्र का मुख या खुला हुआ भाग, सेना की अगली पंक्ति, किसी पदार्थ का उपरी या अगला भाग।

मोहरी-(हिं०स्त्री०) किसी पात्र का छोटा मुख।

मोहल्ला-(हिं०पुं०) देखो मुहल्ला।

मोहार-(हिं०पुं०) द्वार, मोहड़ा, अगला भाग।

मोहारनी-(हिं०स्त्री०) पाठशाले में बालकों का एक साथ खड़े होकर पहाड़े पढ़ना।

मोंहि-(हिं०सर्व०) मुझे, मुझको।

मोहित-(सं०वि०) भ्रम में पड़ा हुआ।

मोहिनी-(सं०वि०) मोहने वाली।

मोही-(हिं०वि०) मोहित करने वाला, प्रेम करने वाला, अज्ञानी।

मोहुक-(सं०वि०) मोह करने वाला।

मौक्तिक-(सं०नपुं०) मुक्ता, मोती।

मौखर्य-(सं०नपुं०) बहुत अधिक बढ़ बढ़ कर बोलना।

मौखिक-(सं०वि०) मुख सम्बन्धी, मुखका

मौख्य-(सं०नपुं०) प्रधानता।

मौगा-(हिं०) निर्बुद्धि, हिजड़ा।

मौजी-(हिं०वि०) मनमाना काम करने वाला।

मौञ्जी-(हिं०वि०) मूँज की बनी हुई मेखला।

मौड़ा-(हिं०पुं०) देखो मौंड़ा।

मौन-(सं०नपुं०) न बोलने की क्रिया या भाव, चुप्पी, (वि०) चुप, जो न बोले।

मौना-(हिं०पुं०) घी या तेल रखने का पात्र, मूंज की बनी हुई पिटारी।

मौनी-(हिं०वि०) मौन व्रत धारण करने वाला, चुप रहने वाला।

मौनित्व-(सं०नपुं०) मौन।

मौर-(हिं०पुं०) एक प्रकार का शिरोभूषण जो विवाह के समय पहराया जाता है, शिरोमणि, प्रधान, गरदन का पिछला भाग।

मौरना-(हिं०क्रि०) वृक्षों पर मंजरी लगना।

मौरी-(हिं०स्त्री०) छोटा मोर।

मौर्ख्य-(सं०नपुं०) मूर्खता का भाव।

मौलि-(सं०पुं०) मस्तक, सिर, किरीट, प्रधान व्यक्ति, **मौलिक**-मूल सम्बन्धी।

मौसा-(हिं०पुं०) माता की बहिन का पति।

मौसियाउत, मौसियायत-(हिं०वि०) मौसेरा।

मौसी-(हिं०स्त्री०) माताकी बहिन, मौसी

मौसेरा-(हिं०वि०) मौसी के सम्बन्ध का।

म्यांव-(हिं०स्त्री०) बिल्ली की बोली।

म्यान-(हिं०पुं०) तलवार कटार आदि के फल को सुरक्षित रखने का खोली।

म्याना-(हिं०क्रि०) म्यान में रखना।

म्यों-(हिं०स्त्री०) बिल्ली की बोली।

म्रियमाण-(सं०वि०) मृतकल्प, मृतप्राय

म्लान-(सं० वि०) कुम्हलाया हुआ, (पुं०) ग्लानि, शोक। **म्लानता**-मलिनता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

म्लेच्छ-(सं०पुं०) वर्णाश्रम हीन जाति, (वि०) नीच, सर्वदा पाप करनेवाला;
म्हा-(हिं०सर्व०) मुझे।
म्हारा-(हिं०सर्व०) हमारा।

य

य-हिन्दी वर्णमाला का छब्बीसवाँ अक्षर इसका उच्चारण स्थान तालू है,यह स्पर्श वर्ण और ऊष्म वर्ण के बीच का वर्ण है इसलिये इसको अन्तःस्थ वर्ण कहते हैं।
य-(सं०पुं०) यश, योग, यान, संयम, प्रकाश, त्याग।
यकअंगी-(हिं०वि०) एक अंग वाला,
यकार-(सं०नपुं०) 'य' स्वरूप वर्ण।
यकृत्-(सं०स्त्री०) पेट की दाहिनी ओर की एक थैली जिसमें पाचन रस रहता है।
यक्ष-(सं०पुं०) देवयोनि विशेष।
यक्षिणी-(सं०स्त्री०) यक्ष की पत्नी
यक्ष्मा-(सं०पुं०) क्षय नामक रोग।
यगण-(सं०पुं०) छन्द शास्त्र के आठ गणों में से एक जिसमें पहिला वर्ण लघु तथा बाद के दो वर्ण गुरु होते हैं।
यग्य-(हिं०पुं०)देखो यज्ञ। **यच्छ**-(हिं० पुं०) देखो यक्ष।
यच्छिनी-(हिं०स्त्री०) देखो यक्षिणी।
यजन-(सं०नपुं०) यज्ञ करना।
यजनीय-(सं०वि०)यजन करने योग्य।
यजमान-(सं०पुं०) ब्राह्मणों को दान देन वाला। **यजमानी**-(हिं०स्त्री०) यजमान का भाव या धर्म।
यजिष्णु-(सं०वि०)यज्ञ करने वाला।
यजुर्वेद-(सं०पुं०) चार प्रसिद्ध वेदों में से एक जिसमें विशेष करके यज्ञ कर्म का विस्तृत वर्णन है। **यजुर्वेदी**-(हिं०वि०) यजुर्वेद के अनुसार सब कृत्य करने वाला।
यज्ञ-(सं०पुं०)वह वैदिक कार्य जिसमें सभी देवताओं का पूजन तथा हवन होता है।
यज्ञकुण्ड-(सं०नपुं०) यह कुण्ड या वेदी जिसमें हवन किया जाता है।
यज्ञपशु-(सं०पुं०)वह पशु जिसका यज्ञ में बलिदान किया जाता है। **यज्ञपात्र**-(सं०नपुं०) काठ के बने हुये पात्र जो यज्ञ में काम आते हैं
यज्ञभूमि-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर यज्ञ होता है, यज्ञ स्थान। **यज्ञमन्दिर**-(सं०पुं०) यज्ञशाला।
यज्ञयूप-(सं०पुं०)वह खंभा जिसमें यज्ञ का बलि पशु बाँधा जाता है।
यज्ञशाला-(सं०स्त्री०) यज्ञगृह, यज्ञ करने का स्थान।
यज्ञसदन-(सं०नपुं०)यज्ञ स्थान। **यज्ञसूत्र**-(सं०नपुं०) यज्ञोपवीत, जनेऊ।
यज्ञस्तम्भ,यज्ञस्थाणु-(सं०पुं०) देखो यज्ञयूप।
यज्ञागार-(सं०पुं०) यज्ञ शाला।
यज्ञाशन-(सं०पुं०) देवता।
यज्ञोपवीत-(सं०नपुं०) ब्रह्म सूत्र, उपनयन, व्रतबन्ध, जनेउ।
यज्य-(सं०वि०) यजन करने योग्य।
यतन-(हिं०पुं०)देखो यत्न; **यतनीय**-(सं०वि०) यत्न करने योग्य।
यतमान-(सं०वि०) यत्न करता हुआ।
यति-(सं०पुं०) सन्यासी, योगी, ब्रह्मचारी, (स्त्री०) पढ़ते पढ़ते जहाँ पर विश्राम किया जाता है।
यतिनी-(सं०स्त्री०) सन्यासिनी।
यती-(सं०स्त्री०)देखो यति; जितेन्द्रिय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यत्किञ्चित-(सं०वि०) थोड़ा सा,
यत्न-(सं०पुं०) उद्योग, उपाय,उपचार
यत्नवान-(सं०वि०) यत्न करने वाला
यत्रतत्र-(सं०अव्य०) जहाँ तहाँ,। **यथा**-(सं०अव्य०) जैसे, ज्यों।
यथाकाम-(सं०क्रि०) इच्छानुसार।
यथाकामी-(सं०वि०) स्वेच्छाचारी।
यथाकाल-(सं० पुं०) उपयुक्त समय में। **यथाक्रम**-(सं०अव्य०) क्रमानुसार, क्रमशः। **यथाक्षम**-(सं०अव्य०) यथाशक्ति। **यथागत**-(सं०त्रि०) जैसा आया है वैसा। **यथागम**-(सं०अव्य०) शास्त्रके अनुरूप।**यथागुण**-(सं०अव्य०) गुण के अनुरूप। **यथाचर**-(सं०अव्य०) रीति के अनुसार। **यथाचारी**-(सं० क्रि०) पूर्व आचार के अनुसार चलनेवाला। **यथाजात**-(सं०वि०) मूर्ख, नीच।
यथाज्ञान-(सं०अव्य०)ज्ञान के अनुसार
यथातथ-(सं०अव्य०) यथार्थ, उचित। **यथादिष्ट**-(सं०वि०) जैसा कहा गया हो।
यथाधर्म-(सं०अव्य०) धर्म के अनुसार। **यथानियम**-(सं०अव्य०)नियमानुसार। **यथान्याय**-(सं०अव्य०) न्याय के अनुसार।
यथाप्रदिष्ट-(सं०वि०) जैसी आज्ञा दी गई हो। **यथापूर्व**-(सं०अव्य०) पहिले के समान, ज्यों का त्यों।
यथाभिरुचि-(सं०अव्य०)इच्छानुसार।
यथाभिलिखित-(सं०अव्य०) लिखे के अनुसार। **यथाभिलषित**-(सं०वि०) इच्छानुसार। **यथामति**-(सं०अव्य०) बुद्धि के अनुसार। **यथायथ**-(सं० अव्य०) तुल्य,समान।
यथायोग्य-(सं०अव्य०)योग्यतानुसार।
यथारुचि-(सं०अव्य०) रुचि के अनुसार।
यथारूप-(सं०अव्य०) रूप के समान।
यथार्थ-(सं०अव्य०) ठीक जैसा होना चाहिये वैसा, सत्य, ठीक स्थिर। **यथावकाश**-(सं०अव्य०)अवकाश के अनुसार। **यथावत्**-(सं०अव्य०)पूर्ववत्, जैसा चाहिये वैसा, अच्छी तरह से। **यथावस्थित**-(सं०अव्य०)सत्य, ठीक, स्थिर। **यथाविधि**-(स०अव्य०) विधिपूर्वक।
यथाशक्ति-(सं०अव्य०) सामर्थ्य के अनुसार, जितना हो सके।
यथासमय-(सं०अव्य०) समय के अनुसार, जैसा समय हो वैसा। **यथासम्भव**-(सं०अव्य०) जहां तक हो सके। **यथासाध्य**-(सं०अव्य०) यथाशक्ति।
यथास्थान-(सं०अव्य०)ठीक स्थानपर।
यथेच्छ-(सं०अव्य०)इच्छानुसार, मनमाना।
यथेच्छा-(सं० स्त्री०) इच्छानुसार, मनमाना। **यथेच्छाचार**-(सं०पुं०) जो मन में आवे सो करना।
यथेच्छाचारी-(सं०वि०) मनमौजी।
यथेप्सित-(सं०अव्य०) जैसी इच्छा हो वैसा।
यथेष्ट-(सं०अव्य०) जितना चाहिये उतना।
यथोचित-(सं०अव्य०) जैसा चाहिये वैसा, ठीक।
यथोद्दिष्ट-(सं०वि०)जैसा कहा गया हो।
यथोपदिष्ट-(सं०वि०) जैसा उपदेश दिया गया हो।
यदपि-(हिं०अव्य०) देखो यद्यपि।
यदा-(सं०अव्य०) जिस समय, जब,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जहां। यदाकदा-(सं०अव्य०) कभी
यदि-(सं०अव्य०) यद्यपि, संशय या अपेक्षा सूचित करने के लिये वाक्य के आरंभ में प्रयोग होता है।
यदिच, यदिचेत्-(सं०अव्य०)यद्यपि।
यदिच्छा-(सं०स्त्री०) जैसी इच्छा।
यद्यपि-(सं०अव्य०) यदि।
यदृच्छया-(सं०क्रि०वि०) अकस्मात्, देवयोग से, । यदृच्छा-(सं०स्त्री०) आकस्मिक संयोग।
यद्वातद्वा-(सं०अव्य०) कभी कभी।
यन्त्र-(सं०नपुं०) किसी विशेष कार्य के लिये बनाया हुआ उपकरण।
यन्त्रगृह-(सं०नपुं०) वेधशाला।
यन्त्रण-(सं०नपुं०) रक्षण, नियम।
यन्त्रणा-(सं०स्त्री०) वेदना, यातना, कष्ट।
यन्त्रविद्या-(सं०स्त्री०) कलों के वनाने और चलाने की विद्या।
यन्त्रशाला-(सं०स्त्री०) वेधशाला।
यन्त्रालय-(सं०पुं०) मुद्रालय, छापाखाना।
यन्निमित्त-(सं०अव्य०)जिस कारण से।
यम-(सं०पुं०) मृत्यु के देवता, मन तथा इन्द्रियों को वश में करना।
यमज-(सं०वि०) एक गर्भसे एक साथ उत्पन्न होने वाली दो सन्तान, जुटुवां।
यमदूत-(सं०पुं०) यम के दूत।
यमद्वितीया-(सं०त्री०) कार्तिक शुक्ला द्वितीया, भाईदूज।
यमन-(सं०नपुं०) रोकना, बन्द करना, वाँधना।
यमनिका-(सं०स्त्री०) यवनिका, नाटक का परदा।
यातना-(सं०वस्त्री०) मृत्यु समय का कष्ट।
यमरथ-(सं०पुं०)यमका वाहन, भैंसा।
यमल-(सं०नपुं०) युग्म, जोड़ा,यमज।
यमहन्ता-(सं०पुं०) काल का नाश करने वाला।
यमालय-(सं०पुं०) यमपुर।
यमी-(सं०पुं०) संयमी।
यव-(सं०पुं०)जव नाम का अन्न, चार धान या छ सरसों की तौल का मान।
यवक्षार-(सं०पुं०) जवाखार।
यवन-(सं०पुं०) यूनान देश का निवासी, मुसलमान।
यवनिका-(सं०स्त्री०) नाटक का परदा।
यवनी-(सं०स्त्री०) यवन जातिकी स्त्री।
यवमद्य-(सं०नपुं०) जव की मदिरा।
यवशक्तु-(सं०पुं०)जव का सत्तू।
यश-(हिं०पुं०) प्रशंसा, ख्याति, कीर्ति,
यशद-(सं०नपुं०)एक धातु विशेष, जस्ता
यशस्कर-(सं०वि०) कीर्ति कारक।
यशस्करी-(सं०स्त्री०) यश बढ़ाने वाली विद्या। यशस्काम-(सं०वि०) यश की कामना करने वाला।
यशस्कृत्, यशस्य-(सं०वि०)यश चाहने वाला।
यशस्वत्-(सं०वि०)यशस्वी। यशस्वी-(हिं०वि०) कीर्तिमान्, जिसका बहुत यश हो। यशस्विनी-(सं० स्त्री०) कीर्तिमती।
यशी-(सं०वि०) यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोधन-(सं०वि०)यशही जिसका एक मात्र धन है।
यशोधर-(सं०वि०)यशस्वी, कीर्तिमान्।
यशोमती-(सं० स्त्री०) यशस्विनी।
यष्टि-(सं०पुं०)लाठी, छड़ी, (स्त्री०) शाखा, टहनी, हार, मुलेठी, बाहु, ब्रांह। यष्टिका-(सं०स्त्री०)हाथ में रखने की छड़ी या लाठी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह-(हिं०सर्व०) निकटकी वस्तु का निर्देश करने वाला एक सर्वनाम जो वक्ता और श्रोता के अतिरिक्त जीवों या पदार्थों के लिये प्रयोग किया जाता है।

यहाँ-(हिं०क्रि०वि०) इस स्थान में।

यहि-(हिं०वि०सर्व०) "यह" का वह रूप जो प्राचीन हिन्दी में किसी विभक्ति लगाने के पूर्व प्रयोग होता था, 'ए' का विभक्ति युक्त रूप, इसको।

यही(हिं०अव्य०) निश्चित रूप से, यह. यह ही।

यहूदी-(हिं०पुं०) पश्चिम एशिया वासी एक प्राचीन जाति।

यां-(हिं०क्रि०वि०) यहां।

यांत्रिक-(हि०वि०) यन्त्र संबंधी।

या-(सर्व०) ब्रजभाषामें कारक का चिह्न लगानेके पहले का 'यह' का रूप

याग-(सं०पुं०) यज्ञ। **यागकर्म**-(सं० नपुं०) यज्ञ का कार्य। **यागकाल**-(सं०पुं०) यज्ञ करने का उपयुक्त समय।

याचक-(सं० वि०) माँगने वाला, भिक्षुक।

याचन-(सं०नपुं०) याञ्चा, प्रार्थना।

याचना-(सं०स्त्री०) प्रार्थना, (हिं०क्रि०) मांगना। **याचनीय**-(सं०वि०) माँगने योग्य। **याचमान**-(सं०वि०) माँगनें वाला। **याचित**-(सं०क्रि०) माँगी हुई वस्तु। **याचितक**-(सं०नपुं०) माँगी हुई वस्तु। **याचितव्य**-(सं०वि०) माँगने योग्य।

याची-(सं०क्रि०) भिक्षुक, भिखमंगा। **याचिष्णु**-(सं०वि०) माँगनें वाला।

याजन-(सं०नपुं०) यज्ञ की किया।

याजननीय-(सं०वि०) यज्ञ करन योग्य।

याज्य-(सं०वि०) यज्ञ करने योग्य।

याज्ञ-(सं०वि०) यज्ञ सम्बन्धी।

याज्या-(सं०स्त्री०) गंगा।

यात-(सं०वि०) पाया हुआ, ज्ञात, जाना हुआ।

यातना-(सं०स्त्री०) बहुत अधिक कष्ट या वेदना।

यातायात-(सं०नपुं०) आना जाना।

यातु-(सं०पुं०) मार्ग चलने वाला, (पुं०) राक्षस।

यातुधान-(सं०पुं०) राक्षस।

यात्रा-(सं०स्त्री०) प्रस्थान, प्रयाण, पर्यटन। **यात्राकार**-(सं०पुं०) यात्रा करने वाला। **यात्रावाल**-(हिं०पुं०) यात्रियों को दर्शन आदि कराने वाला पंडा।

यात्रिक-(सं०वि०) यात्री सम्बन्धी।

यात्री-(सं०वि०) यात्रा करने वाला,

याथातथ्य-(सं०पुं०) यथार्थता।

याथार्थ्य-(सं०नपुं०) यथार्थता।

यादृश-(सं० वि०) जिस प्रकार का, जैसा।

यादृशी-(सं०वि०स्त्री०) जिस प्रकार की। **यान**-(सं०नपुं०) घोड़ा हाथी रथ आदि सवारी, विमान, वाहन। **यानपात्र**-(सं०नपुं०) जहाज। **यानभंग**-(सं०पुं०) जहाज का नष्ट होना।

यापन-(स०नपुं०) चलाना, समय बिताना; **यापना**-(सं०स्त्री०) कालक्षेप, व्यवहार; **यापनीय**-(सं०वि०) प्राप्त करने योग्य।

याम-(सं०पुं०) तीन घंटे का समय, प्रहर, (हिं०स्त्री०) रात्रि, रात।

यामल-(सं०नपुं०) यमज, जड़ुवाँ लड़के।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यामिक-(सं०पुं०) पहरा देने वाला, चौकीदार- । यामिका, यामिनी-(सं० स्त्री०) रात, यामिनीपति-(सं०पुं०) चन्द्रमा ।

यामोत्तरदिशंग-(सं०पुं०) भूगोल में लम्बांश या दिगंश । याम्योत्तर रेखा-(सं०स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो सुमेरु और कुमेरु से होती हुई भूगोल के चारों ओर जाती है ।

यायी-(सं०वि०) गमनशील,जाने वाला (पुं०) अभियोग चलाने वाला ।

यावज्जन्म-(सं०अव्य०) जन्म भर ।

यावत्-(सं०अव्य०)जब तक, अवधि या मर्यादा तक ।

यावन,यावनी-(सं०वि०) यवन संबंधी ।

यावनी-(सं०वि०)यावन संबंधी ।

यावन्मात्र-(सं०अव्य०)थोड़ा थोड़ा ।

यासु-(हिं०सर्व०) देखो जासु ।

याहि-(हिं०सर्व०) इसको, इसे ।

यियक्षु-(सं०वि०)यज्ञ करनेका इच्छुक ।

युक्त-(सं०वि०) न्याय्य, उचित, ठीक, मिला हुआ, जुटा हुआ,

युक्ति-(सं०स्त्री०) नीति, उपाय, ढंग, तर्क, अनुमान, रीति, कारण हेतु; युक्तियुक्त-(सं०अव्य०) उपयुक्त, तर्क के अनुसार । युक्तिशास्त्र-(सं० नपुं०) प्रमाण शास्त्र ।

युग-(सं०नपुं०) युग्म, जोड़ा, जुआ, समय, काल, युगयुग-(सं०अव्य०) अनन्त काल तक ।

युगपत्-(सं०अव्य०)एक ही समय में । युगति-(हिं०पुं०) प्रलय ।

युगम-(हिं०पुं०) देखो युग्म ।

युगल-(सं०पुं०) युग्म, जोड़ा ।

युगाद्या-(सं०स्त्री०) वह तिथि जिसमें कोई युग आरंभ हुआ था, यथा-वैशाख शुक्ला तृतीया में सतयुग, कार्तिक शुक्ला नवमी को त्रेता, भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी को द्वापर तथा पौष मास की पूर्णिमा को कलियुग का आरंभ माना जाता है ।

युगान्त-(सं०पुं०) युग का अन्तिम समय, प्रलय । युगान्तर-(सं०नपुं०) दूसरा युग ।

युग्म-(सं०पुं०) युगल ,द्वन्द्व ,जोड़ा, युग्मज-(सं०पुं०) जुड़वा लड़के ।

युत-(सं०वि०) युक्त, सहित ।

युद्ध-(सं०नपुं०) रण, समर, संग्राम; युद्धस्थल-(सं०नपुं०) रणभूमि । युद्धावसान-(सं०नपुं०) युद्ध का शेष । युद्धोन्मत्त-(सं०वि०)युद्ध करने के लिये उतावला । युद्धोपकरण-(सं० नपुं०) युद्ध की सामग्री ।

युयुत्सा-(सं०स्त्री०) युद्ध करने की लालसा, । युयुत्सु-(सं०वि०) लड़ने की इच्छा करने वाला ।

युयुधान-(सं०पु०.)क्षत्रिय, योद्धा ।

युवक-(सं०पुं०) सोलह वर्ष से पैंतीस वर्षके वय का मनुष्य ।

युवति,युवती-(सं०स्त्री०)जवान स्त्री ।

युवराई-(हिं०स्त्री०)युवराज का पद ।

युवराज-(सं०पुं०) राजाका वह राजकुमार जो राज्य का उत्तराधिकारी होता है । युवराजी-(हिं०स्त्री०) युवराज का पद ।

युवा-(हिं०वि०)युवक ।

यूं-(हिं०अव्य०)यों, इस प्रकार से ।

यूक, यूका-(सं०पुं०स्त्री०) जवां, ढील । यूकाण्ड-(सं०पुं०) चीलर, लीख ।

यूथ-(सं०नपुं०) झुण्ड, दल, सेना; यूथपति-(सं०पुं०) सेनानायक ।

यूप-(सं०पुं०) यज्ञ में वह खम्भा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसमें बलि का पशु बाँधा जाता है।
यूह-(हिं०पुं०) यूथ, झुण्ड, समूह।
ये-(हिं०सर्व०) 'यह' का बहुवचन का रूप, यह सब।
येई-(हिं०सर्व०) देखो यही। **येऊ**-(हिं०सर्व०)यह भी। **येतो**-(हिं०वि०) देखो एतो। **येह**-(हिं०अव्य०)यह भी।
यों-(हिं० अव्य०) इस तरह, इस प्रकार से।
योंही-(हिं०अव्य०)ऐसे ही, इसी प्रकार से, व्यर्थ ही।
योग-(सं०पुं०) संयोग, मेल, उपाय, युक्ति, संगति, ध्यान, गणित में दो या अधिक राशियों का जोड़, युक्ति या मोक्ष का उपाय, चित्त की चंचलता को रोकना; **योगपथ**-(सं०नपुं०) योगमार्ग।
योगफल-(सं०पुं०) दो या अधिक संख्याओं का जोड़। **योगबल**-(सं० पुं०)तपोबल। **योगरूढ़ि**-(सं०स्त्री०) दो शब्दों के योग से बना हुआ वह शब्द जिसका विशेष अर्थ होता है, यथा 'मण्डप' शब्द का अर्थ "माड़ पीने वाला" नहीं होता, परन्तु 'गृह' बोधक है। **योगवह**-(सं०वि०) मिलावट से तैयार किया हुआ।
योगाकर्षण-(सं०नपुं०) वह आकर्षण शक्ति जिसक कारण परमाणु आपस में मिले रहते हैं अलग नहीं होते।
योगान्तर(सं०नपु०) भिन्न भिन्न वस्तुओं का संयोग।
योगिनी-(सं०स्त्री०) योगाभ्यासिनी,
योगिराज-(सं०पुं०)बहुत बड़ा योगी।
योगी-(सं०पुं०)आत्मज्ञानी; **योगीन्द्र**-(सं०पुं०) योगीश्वर।
योग्य-(सं०वि०) प्रवीण, चतुर श्रेष्ठ, उपयुक्त, आदरणीय,उचित, सुन्दर, उपाय लगाने वाला, ठीक; **योग्यता**-(सं०स्त्री०) सामर्थ्य, अनुकूलता,
योजक-(सं०वि०)संयोजकारक, मिलाने वाला; (पुं०) भूडमरुमध्य।
योजन-(सं०नपुं०) एक में मिलाने की क्रिया या भाव, संयोग, मिलान, लीलावती के अनुसार बत्तीस हजार हाथ की दूरी।
योजना-(सं०स्त्री०) किसी काम में लगाने की क्रिया या भाव, जोड़, मिलान, व्यवस्था, आयोजन, व्यवहार,
योजित-(सं०वि०) रचा हुआ, बनाया हुआ।
योज्य-(सं० वि०) व्यवहार करने योग्य, (पुं०) जोड़ी जाने वालीं संख्यायें।
योद्धा-(हिं०पुं०) युद्ध करनें वाला सिपाही
योधा-(हिं०पुं०) देखो योद्धा।
योध्य-(सं०वि०) युद्ध करने योग्य।
योनि-(सं०पुं०स्त्री०) आकर, खान, प्राणियों का उत्पत्ति स्थान, **योनिज**-(सं०पुं०) जरायुज,
योषिता-(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री।
यौं-(हिं०अव्य०) दखो यों।
यौ-(हिं०सर्व०) यह।
यौक्तिक-(सं०वि०) जो युक्ति के अनुसार ठीक हो।
यौगपद, यौगपद्य-(सं०नपुं०) समकालीन।
यौगिक-(सं० वि०) मिश्रित, मिला हुआ, प्रकृति प्रत्ययादि से बना हुआ शब्द, वह शब्द जों शब्दों से मिलकर बना हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

र

र-हिन्दी वर्णमाला का सत्ताइसवां व्यंजनवर्ण इसका उच्चारण जीभ के अगले भाग को मूर्धा के साथ कुछ स्पर्श करने से होता है यह स्पर्श वर्ण और उष्म वर्ण के मध्य का वर्ण है।

र-(सं०पुं०) अग्नि, (वि०) तीक्ष्ण, तीखा।

रंक-(हिं०वि०) धनहीन।

रंग-(हिं०पुं०) देखो रङ्ग; रांगा, नृत्य

रंग-(हिं०पुं०) दृश्य पदार्थ का वह गुण जो केवल आँखों से जाना जाता है यथा, लाल, काला, पीला; रगनेके लिये व्यवहार में आने वाला पदार्थ, वर्ण, मुख की आकृति, आनंद, चाल-ढाल, प्रेम, प्रभाव, शोभा, महत्व का प्रभाव,आनन्द का उत्सव।

रंगत-(हिं०स्त्री०) आनन्द, दशा।

रंगना-(हिं०क्रि०)किसी वस्तु पर रंग चढ़ाना, किसी को अपने अनुकूल करना, किसी पर अपना प्रभाव डालना।

रंगबिरंग, रंगबिरंगा-(हिं०वि०) कई रंगों का, तरह तरह का।

रंगभरिया-(हिं०वि०)रंगसाज,चित्रकार

रंगभवन, रंगमहल-(हिं०पुं०) भोग विलास का स्थान।

रंगमार-(हिं०पुं०) ताश का एक खेल।

रंगरली-(हिं०स्त्री०) आमोदप्रमोद,

रंगरस-(हिं०पुं०) आनन्द मंगल-

रंगरूट-(हिं०पुं०) वह सिपाही जो पुलीस या सेना में नया भरती हुआ हो, वह मनुष्य जो किसी काम के सीखने में लगा हो।

रंगरेज-(हिं०पुं०) कपड़ा रंगने का काम करने वाला।

रंगवाई-(हिं०स्त्री०) रंगने का काम।

रंगवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे से रंगने का काम करना।

रंगशाला-(हिं०स्त्री०) नाटक घर।

रंगाई-(हिं०स्त्री०) रंगनेका काम, रंगने की क्रिया या वेतन।

रंगाना-(हिं०क्रि०) रंगने का काम दूसरे से कराना; रंगावट-(हिं०स्त्री०)रंगाई

रंगिया-(हिं०पुं०) रगरेज, रंगसाज।

रंगी-(हिं०वि०) आनन्दी।

रंगीला-(हिं०वि०) आनन्दी, प्रेमी,

रंगैया-(हिं०पुं०) रंगने वाला।

रंच-(हिं०वि०) अल्प, थोड़ा।

रंजक-(हिं०वि०)प्रसन्न करने वाला।

रंजक-(हिं०स्त्री०) बत्ती लगाने के लिये बंदूक की प्याली में रक्खी जाने वाली थोड़ी सी बारूद।

रंजना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न करना, रंगना

रंडापा-(हिं०पुं०) वैधव्य, विधवा होने की दशा।

रंडुआ,रंडुवा-(हिं०पुं०) वह पुरूष जिसकी पत्नी मर गई हो।

रंत-(हिं०वि०) रत, अनुरक्त।

रंदना-(हिं०क्रि०) लकड़ी की सतह को रंदे से छील कर चिकना करना।

रंदा-(हिं०पुं०) बढ़ई का वह अस्त्र जिससे वह लकड़ी के तल को छील कर चिकनी करता है।

रंधन-(हिं०पुं०) रसोई बनाना।

रंध्र-(हिं०पुं०) छिद्र।

रंभा-(हिं०पुं०) देखो रम्भा; केला।

रंभाना-(हिं०क्रि०) गायका शब्द करना

रहँचटा-(हिं०पुं०) लालसा, लालच।

रइअत-(हिं०स्त्री०) दखो रैयत।

रइकौ-(हिं०क्रि०वि०)कुछ भी,थोड़ा भी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रइनि-(हिं०स्त्री०) रजनी, रात्रि,रात।
रई-(हिं०स्त्री०) गेंहू का मोटा दरदरा आंटा, सूजी।
रउताई-(हिं०स्त्री०) स्वामित्व।
रउरे-(हिं०सर्व०) मध्यम पुरुषका आदर सूचक शब्द, आप।
रकछ-(हिं०पुं०) पत्तों की बनी हुई पकौड़ी।
रकत-(हिं०पुं०) देखो रक्त, रुधिर; (वि०) लाल रंग का।
रकार-(सं०पुं०) "र"वर्णका बोधक वर्ण
रक्त-(सं०नपुं०) लाल कमल, रुधिर; (वि०) लाल रंग का, अनुरक्त, रंगा हुआ।
रक्तगर्भा-(सं०स्त्री०) मेंहदी का पेड़,
रक्तचञ्चु-(सं०पुं०) शुक तोता;
रक्तचन्दन-(सं०पुं०) लाल चन्दन;
रक्तता-(सं०स्त्री०)लालिमा, ललाई,
रक्तधातु-(सं०पुं०) गैरिक गेरू,
रक्तनयन-(सं०पुं०नपुं०) कबूतर, चकोर।
रक्तपद्म-(सं०पुं०) लाल कमल;
रक्तपर्ण, रक्तपल्लव-(सं०पुं०) लाल पत्ता।
रक्तपा-(सं०स्त्री०) जोंक, रक्तपात-(सं०पुं०) रक्तस्राव, रुधिर, का बहना; रक्तपायी-(सं०पुं०) मत्कुण, खटमल, (वि०) रुधिर पीने वाला; रक्तबीज-(सं०पुं०)दाड़िम, अनार; रक्तवर्ण-(स०पुं०) प्रवाल, मूंगा, (वि०) लाल रंग का, रक्तवासस-(सं०स्त्री०) लाल कपड़ा पहरने वाला; रक्तस्राव-(सं०पुं०) शरीरक किसी अंग से रुधिर का बहना
रक्ताब्ज-(सं०नपुं०) लाल कमल।
रक्तिका-(सं०स्त्री०) गुंजा घुंमची, रत्ती
रक्तिमा-(सं०स्त्री०) ललाई।
रक्तोत्पल-(सं०नपुं०) लाल कमल।
रक्ष-(सं०त्रि०) रक्षा, राक्षस।
रक्षक-(सं०पुं०) रक्षा करने वाला, पहरेदार। रक्षण-(सं०नपुं०) रक्षा, पालन पोषण। रक्षणीय-(सं०वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्षपाल-(सं०पुं०) रक्षा करने वाला
रक्षस-(हि०पुं०) राक्षस, दानव।
रक्षा-(सं०स्त्री०) कष्ट नाश या आपत्ति से बचाना, अनिष्ट निवारण के लिये हाथ में बांधा हुआ सूत्र।
रक्षागृह-(सं०नपुं०) सूतिका गृह,
रक्षापति-नगर वासियों की रक्षा करने वाला, रक्षापुरुष-(सं०पुं०) पहरेदार। रक्षाबन्धन-(सं०पुं०) श्रावण शुक्ला पूर्णिमाको होने वाला हिन्दुओं का एक त्योहार।
रक्षामणि-(सं०पुं०) वह रत्न जो किसी ग्रह के प्रकोप से बचन के लिये पहना जाय।
रक्षित-(सं०वि०) रक्षा किया हुआ, पाला पोसा हुआ। रक्षितव्य-(सं० वि०) रक्षा करने योग्य।
रक्ष्य-(सं०वि०) रक्षणीय, रक्षा करने योग्य।
रखना-(हिं०क्रि०) ठहराना, निर्वाह करना, सौंपना, नियुक्त करना।
रखनी-(हिं०स्त्री०) रखली, सुरैतिन।
रखया-(हिं०वि०)रक्षा करने वाली।
रखवाई-(हिं०स्त्री०)खेतों की रखवाली, चौकीदारी। रखवाना-(हिं०क्रि०)। रखने की क्रिया दूसरे से कराना।
रखवार-(हिं०पुं०)रखवाला, चौकीदार। रखवारी-(हिं०स्त्री०) रखवाली। रखवाला-(हिं०पुं०) चौकी-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दार । रखवाली-(हिं०स्त्री०) रक्षा करने की क्रिया या भाव ।
रखान-(हिं०स्त्री०) चराई की भूमि ।
रखाना-(हिं०क्रि०) रखवाली करना;
रखिया-(हिं०पुं०) रखने वाला;
रखियाना-(हिं०क्रि०) पात्रों को राख से माँजना ।
रखी-(हिं०पुं०) देखो ऋषि, मुनि ।
रखीसर-(हिं०पुं०) ऋषीश्वर ।
रखेली-(हिं०स्त्री०) रखनी, सुरैतिन ।
रखैया-(हिं०पुं०) देखो रक्षक ।
रगंड़-(हि०पुं०) हाथी का कपोल ।
रगड़-(हिं०स्त्री०) घर्षण, रगड़ने से उत्पन्न चिह्न, बड़ा परिश्रम, झगड़ा: रगड़ना-(हिं०क्रि०) घसना, पीसना, अभ्यास करने के लिये कोई काम वार-म्वार करना, रगड़वाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को रगड़ने में प्रवृत्त करना, रगड़ा-(हिं०पुं०) रगड़, अत्यन्त परिश्रम, वह झगड़ा जो शीघ्र समाप्त न हो; रगड़ान-(हिं०स्त्री०) रगड़ने की क्रिया या भाव ।
रगत-(हिं०पुं०) देखो रक्त, रुधिर ।
रगर-(हिं०पुं०) देखो रगड़; रगरा-देखो रगड़ा ।
रगवाना-(हिं०क्रि०) शान्त कराना ।
रगाना-(हिं०क्रि०) शांत होना या करना ।
रगीला-(हिं०पुं०) हठी, दुष्ट ।
रगेद-(हिं०स्त्री०) दौड़ने या भागने की क्रिया; रगेदना-(हिं०क्रि०) भागा देना ।
रग्गी-(हिं०स्त्री०) अधिक वर्षा के वाद होने वाली धूप ।
रघु-(सं०पुं०) सूर्य वंशीय राजा दिलीप के पुत्र के जो श्री रामचन्द्र के प्रपितामह थे; रघुराई-(हिं०पुं०) श्रीरामचन्द्र,
रघुवंश तिलक-(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र
रघुवर-(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र ।
रघुवीर-(सं०पुं०) श्रीरामचन्द्र;
रङ्क-(स०पुं०) कृपण, कजूस, मन्द, धनहीन, गरीव ।
रंग-(सं०नपुं०) रांगा, नृत्य, नाच, रंगने की वस्तु, नाटकघर, रंगने की वस्तु, प्रभाव, शोभा, सौन्दर्य, दशा, स्थिति, रङ्गकार-(सं०पुं०) चित्र-कार; रङ्गक्षेत्र-(सं०नपुं०) नाटक-घर; रङ्गभवन-(सं०नपुं०) रंग-महल; रङ्गभूमि-(सं०स्त्री०) अखाड़ा
रङ्गशाला-(सं०स्त्री०) नाट्य गृह
रङ्गी-(सं०स्त्री०) रंगा हुआ ।
रचक-(सं०पुं०) रचयिता । रचन-(सं०नपुं०) निर्माण । रचना-(सं०स्त्री०) यथा क्रम रखना, स्थापित करना, वाक्य विन्यास, चमत्कार युक्त गद्य या पद्य ।
रचना-(हिं०क्रि०) हाथों से बनाकर प्रस्तुत करना, ग्रन्थ आदि लिखना, सजाना, अनुरक्त होना, उत्पन्न करना, क्रममें रखना ।
रचनीय-(स०वि०) रचना करने योग्य ।
रचयिता-(सं०वि०) निर्माता, रचने वाला । रचवाना-(हिं०क्रि०) रचने का काम दूसरे से कराना । रचाना-(हिं०क्रि०) बनाना, रचवाना । रचित-(सं०वि०) रचा हुआ, गूंथा हुआ,
रचिपचि-(हिं०क्रि०वि०) परिश्रम से ।
रच्छस-(हिं०पुं०) देखो राक्षस ।
रच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो रक्षा ।
रज-(सं०पुं०) पराग, धूल (हिं०पुं०) ज्योति, प्रकाश ।
रजक-(सं०पुं०) धावक, धोबी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रजतंत-(हिं०स्त्री०) शूरता, वीरता।
रजत-(सं०नपुं०) चांदी, (वि०) सफेद रंगका, रजतमय-(सं०वि०) रजताई-(हिं०स्त्री०) सफेदी।
रजनि-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।
रजधानी-(हिं०स्त्री०)देखो राजधानी।
रजना-(ह०क्रि०) रंगना, रंगा जाना।
रजनी-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात। रजनीकर-(सं०पुं०) चन्द्रमा। रजनीचर-(सं०पुं०) चन्द्रमा राक्षस,(वि० रात में चलने वाला। रजनीपति-(सं०पुं०) चन्द्रमा। रजनीमुख-सन्ध्या।
रजबली-(हिं०पुं०) भूपति, राजा।
रजबलाह-(हिं०पुं०) मेघ, बादल।
रजवाड़ा-(हिं०पुं०) देशी राज्य।
रजवार-(हिं०पुं०) राजा की सभा।
रजाई-(हिं०स्त्री०) जाड़े में ओढ़ने का दोहरा कपड़ा जिसमें रूई भरी होती है।
रजाना-(हिं०क्रि०) राज्य सुखका भोग
रजायस-(हिं०स्त्री०) आज्ञा, इच्छा।
रजोकुल-(हिं०पुं०) देखो राजकुल।
रजोगुण-(सं०नपुं०) जीवधारियों की प्रकृति का वह स्वभाव जिससें उनके भोग विलास तथा दिखावटी बातों में रुचि उत्पन्न होती है।
रजोरस-(सं०नपुं०)अन्धकार, अन्धेरा
रज्जू-(सं०स्त्री०) रस्सी, बागडोर।
रञ्जित-(सं०वि०) आनन्दित, प्रसन्न।
रट-(हिं०स्त्री०) बारंबार किसी शब्द को उच्चारण करने की क्रिया। रटन-(सं०नपुं०)कथन कहना,(हिं०स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव।
रटना-(हिं०क्रि०)किसी शब्द को बारंबार कहना, कण्ठ करने के लिये बारंबार दोहराना। रटन्त-(हिं० स्त्री०) रटने की क्रिया या भाव। रटित-(सं० वि०) कथित, कहा हुआ।
रठ-(हिं०वि०) शुष्क, सूखा।
रढ़ना-(हिं०क्रि०) देखो रटाना।
रण-(सं०पुं०) युद्ध, लड़ाई, रणदुन्दुभि-(सं०पुं०)युद्ध का नगाड़ा। रणन-(सं०नपुं०) कोलाहल, शब्द। रणमुख-(सं०नपुं०) सेना का अग्र भाग। रणशिक्षा-(सं०स्त्री०) युद्धाभ्यास। रणशूर-(सं०पुं०) वह जो युद्ध में वीरता दिखलाता हो। रणसिंघा-रणसिंहा-(हिं०पुं०) नरसिंघा, तुरही। रणाजिर-(सं०नपुं०) युद्धक्षेत्र। रणातोद्य-(सं०नपुं०)लड़ाई का डंका।
रण्डा-(सं०स्त्री०) विधवा, रांड़।
रत-(सं० वि०) अनुरक्त, कार्य में लगा हुआ, लिप्त।
रतजगा-(हिं० पुं०) रात भर होने वाला आनन्दोत्सव।
रतन-(सं०पुं०) देखो रत्न।
रतनाकर-(हिं०पुं०) देखो रत्नाकर।
रतनागर-(हिं०पुं०) समुद्र।
रतनागरभ-(हिं०स्त्री०)भूमि, पृथ्वी।
रतनार,रतनारा-(हिं० वि०) कुछ लाल। रतनारी-(हिं०स्त्री०)लाली, लालिमा।
रताना-(हिं०क्रि०) लीला करना।
रतालू-(हिं०पुं०) पिण्डालू, वाराहीकन्द
रति-(सं०स्त्री०)प्रेम, संभोग, सौभाग्य, छवि, शोभा।
रती-(हिं०स्त्री०) आठ चावल का मान, रत्ती देखो रति, (वि०) थोड़ा, कम, (क्रि०वि०) जरासा, रत्तीभर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रतोपल-(हिं०पुं०) लाल सुरमा, लाल खड़िया, गेरू।

रतौंधी-(हिं०स्त्री०) आँख का वह रोग जिसमें रोगी को रात के समय कुछ देख नहीं पड़ता।

रत्त-(हिं०वि०) देखो रक्त।

रत्ती-(हिं०स्त्री०) आठ चावल का मान या वांट, गुँजा, (वि०) बहुत थोड़ा।

रत्थी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी या बांस का ढांचा, अथवा संदूक जिसमें शवको रखकर अन्तिम संस्कार के लिये ले जाते हैं, टिकठी।

रत्न-(सं०नपुं०) खनिज पदार्थ या पत्थर, मणि, नगीना, वह जो अपने वर्ग या जाति में श्रेष्ठ हो। **रत्नगर्भ**-(सं०पुं०) समुद्र। **रत्नगर्भा**-(सं० स्त्री०) पृथ्वी, भूमि। **रत्नद्रुम**-(सं० पुं०) प्रवाल, मूंगा। **रत्नपरीक्षक**-(सं०पुं०) जौहरी। **रत्नपारखी**-(सं०पुं०) जौहरी। **रत्नप्रभा**-(सं० स्त्री०) पृथ्वी। **रत्नमुख्य**-(सं०नपुं०) हीरा; **रत्नाकर**-(सं०पुं०) रत्नोंका समूह, समुद्र। **रत्नालंकार**-(सं०नपुं०) रत्न का गहना। **रत्नावली**-(सं०स्त्री०)मोती की माला, मणियों की माला।

रथ-(सं०पुं०) प्राचीन काल का एक प्रकार का यान जिसमें दो या अधिक पहिया होती थी, गाड़ी; **रथकार**-(सं० पुं०) रथ बनाने वाला बढ़ई।

रथघोष-(सं० पुं०) रथ का शब्द; **रथचक्र**-(सं०नपुं०) रथकी पहिया। **रथपथ**-(सं०पुं०) जिस मार्गपर रथ चल सके। **रथयात्रा**-(सं०स्त्री०) एक पर्व जो आषाढ़ शुक्ल द्वितीयाको होता है। **रथयुद्ध**-(सं०नपुं०) रथ पर चढ़कर युद्ध करना। **रथवाहक**-(सं०पुं०) रथ हांकने वाला।

रथस्वन-(सं०पुं०) रथ का शब्द।

रथारथि-(सं० अव्य०) परस्पर रथ द्वारा युद्ध करना।

रथारोह-(सं०वि०) रथपर बैठ कर युद्ध करने वाला।

रथाश्व-(सं०पुं०)रथ में जोतने का घोड़ा।

रथिक-(सं०पुं०)रथपर सवार होनेवाला

रथी-(सं०वि०) रथपर चढ़कर लड़ने वाला योद्धा, (हिं०स्त्री०) अरथी, शव को ले जाने का ढांचा।

रथोत्सव-(सं०पुं०) रथ यात्रा नामक उत्सव।

रथ्या-(सं०स्त्री०) रथ का मार्ग।

रद-(सं०पुं०) दन्त, दाँत।

रदन-(सं०पुं०)दन्त, दाँत। **रदनच्छद**-(सं०पुं०) ओंठ।

रदपट-(सं०पुं०) ओष्ठ, ओंठ।

रद्दा-(हिं०पुं०)भीत की पूरी लंबाई में एक बार रक्खी हुई ईटों की जोड़ाई, मिट्टी की भीत उठाने में उतना अंश जितना एक बार में उठाया जाता है, वस्तुओं की एक के ऊपर एक रक्खी हुई तह।

रद्दी-(हिं०वि०)वह पदार्थ जो काम में न आवे।

रन-(हिं०पुं०)रण, युद्ध,लड़ाई, वन।

रनकना-(हिं०क्रि०) घुंघरू आदि का धीमा शब्द होना।

रनना-(हिं०क्रि०)बजना।

रनना-(हिं०क्रि०) बजना, झनकार होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रनबंका, रनबांकुरा-(हिं०पुं०) योद्धा, शूरवीर।
रनवादी-(हिं०वि०) शूर, योद्धा।
रनवास-(हिं०पुं०) महल में रानियों के रहने का स्थान, अन्तःपुर। **रनित**-(हिं०वि०) झन् झन् शब्द करता हुआ।
रनी-(हिं०पुं०) योद्धा, लड़ने वाला।
रन्धन-(सं०नपुं०) रसोई बनानेकी क्रिया
रन्ध्र-(सं०नपुं०) छिद्र।
रपट-(हिं०स्त्री०) अभ्यास, रपटने की क्रिया या भाव, दौड़, सूचना। **रपटना**-(हिं०क्रि०) वेग से चलना, झपटना, किसी काम को झटपट पूरा पूरा करना। **रपटाना**-(हिं०क्रि०) सरकाना, फिसलाना। **रपट्टा**-(हिं० पुं०) फिसलाव, झपट्टा दौड़ धूप।
रपुर-(हिं०स्त्री०) स्वर्ग।
रफल-(हिं०पुं०)ऊनी चादर।
रफूचक्कर-(हिं०वि०) चम्पत।
रबड़ना-(हिं०क्रि०) घुमाना, चलाना।
रबड़ी-(हिं०स्त्री०) औंटाकर गाढ़ा और लच्छेदार किया हुआ दूध जिसमें चीनी मिलाई रहती है, बसौंधी।
रबदा-(हिं०पुं०) थकावट, कीचड़।
रबरी-(हिं०स्त्री०) देखो रबड़ी।
रबी-(हिं०स्त्री०) वसन्त ऋतु, वसन्त ऋतु में काटी जाने वाली फस्ल।
रभस-(सं०पुं०)वेग, हर्ष, उत्सुकता।
रमक-(हिं०स्त्री०)झूले की पेंग, झकोरा।
रमकना-(हिं०क्रि०) इतराते हुए चलना।
रमचकरा-(हिं०पुं०)बेसनकी मोटी रोटी
रमण-(सं०नपुं०) क्रीड़ा, विलास, घूमना फिरना; (वि०) सुन्दर, मनोहर, आनन्द देने वाला।
रमणा, रमणी-(सं०स्त्री०)नारी, सुन्दर स्त्री।
रमणीक रमणीय-(सं०वि०) रमणीक, सुन्दर।
रमणीया-(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
रमता-(हिं०वि०) घूमता फिरता।
रमन-(हिं०पुं०)देखो रमण। **रमनक**-(हिं०पुं०) देखो रमणक।
रमना-(हिं०क्रि०) व्याप्त होना, इधर उधर घूमना, अनुरक्त होना, आनन्द करना (पुं०)वह सुरक्षित स्थान जहां पशु मृगया के लिये छोड़े जाते हैं।
रमनी-(हिं०स्त्री०) देखो रमणी।
रमनीक-(हिं०वि०) देखो रमणीक।
रमा-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी। **रमाकान्त**-(सं०पुं०) विष्णु।
रमाना-(हिं०क्रि०) मोहित करना, संयुक्त करना।
रमानाथ, रमापति-(सं०पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण।
रमाप्रिय-(सं०पुं०)पद्म, कमल, विष्णु।
रमित-(हिं०वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ।
रम्भा-(सं०स्त्री०) कदली, केला, (हिं० पुं०) पेशराज का लोहे का छोटा डंडा
रम्भाना-(हिं०क्रि०)गायकाशब्द करना।
रम्भाफल-(सं०पुं०)कदलीफल, केला।
रम्भित-(सं०वि०) शब्द किया हुआ,
रम्भोरू-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसकी जांघ केले के खंभे के समान हों।
रम्य-(सं०वि०)सुन्दर,मनोहर,रमणीय
रम्यता-(सं०स्त्री०) सौन्दर्य।
रम्हाना-(हिं०क्रि०)गायका बोलना।
रयन-(हिं०स्त्री०) रात्रि, रात।
रयना-(हिं० क्रि०) बोलना, मिलाना, रंगना।
रयि-(सं०पुं०) धन, ऐश्वर्य।
ररंकार-(हिं०पुं०)रकार की ध्वनि।
रर-(हिं०स्त्री०)रट, रटन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ररकना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना।
ररना-(हिं०वि०) रटना।
ररिहा-(हिं०पुं०) रटने वाला, भिखमंगा।
ररी-(हिं०वि०) झगड़ालू।
रलना-(हिं०क्रि०) एकमें एक मिल जाना
रलाना-(हिं०क्रि०) एकमें एक मिलाना,
रली-(हिं०स्त्री०) आनन्द, प्रसन्नता।
रल्ल-(हिं०पुं०) कोलाहल, हल्ला।
रव-(सं०पुं०) शब्द, ध्वनि, गुंजार।
रवकना-(हिं०क्रि०) लपकना, उछलना।
रवताई-(हिं०स्त्री०) राजा होने का भाव।
रवना-(हिं०क्रि०) क्रीड़ा करना, शब्द करना, (हिं०पुं०) देखो रावण।
रवनि, रवनी-(हिं०स्त्री०) रमणी, सुन्दरी
रवन्ना-(हिं०पुं०) चुंगी आदि की वह रसीद जो किसी भेजी जाने वाली वस्तु के साथ रहती है।
रवा-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का बहुत छोटा टुकड़ा, कण, सूजी।
रवि-(सं०पुं०) सूर्य, नायक, सरदार।
रविकर-(सं०पुं०) सूर्य की किरण।
रविदिन-(सं०नपुं०) अतवार; **रविन्द**-(सं०नपुं०) पद्म, कमल; **रविबिम्ब**-(सं०नपुं०) सूर्य का मडल; **रविमण्डल**-(सं०नपुं०) वह लाल मण्डल जो सूर्य के चारो ओर देख पड़ता है;
रविरत्न-(सं०नपुं०) सूर्यकान्त मणि।
रवैया-(हिं०पुं०) चालचलन, ढंग।
रशना-(सं०स्त्री०) करधनी, जीभ।
रश्मि-(सं०पुं०) किरण, घोड़े की लगाम, **रश्मिकेतु**-(सं०पुं०) एक प्रकार का पुच्छल तारा।
रस-(सं०पुं०) किसी वस्तु के खाने का स्वाद; शरीरस्थ धातु विशेष, कोई तरल पदार्थ, गुण, किसी पदार्थ का सार, आनन्द, प्रेम, जलीय अंश, धातुओं को फूंक कर बनाया हुआ भस्म।
रसकपूर-(सं० नपुं०) एक सफेद उपधातु।
रसकोरा-(हिं०पुं०) रसगुल्ला नाम की मिठाई; **रसखीर**-(हिं०स्त्री०) मीठा भात; **रसगुल्ला**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की छेने की मिठाई।
रसज्ञ-(सं०वि०) काव्य के रसको जानने वाला, निपुण, कुशल।
रसता-(सं०स्त्री०) रस का भाव या धर्म।
रसद-(सं०वि०) स्वादिष्ट, सुखद।
रसदार-(हिं०वि०) जिसमें किसी प्रकार का रस हो, स्वादिष्ट।
रसना-(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ, करधनी, लगाम, रस्सी।
रसना-(हिं०क्रि०) धीरे धीरे बहना, टपकना, स्वाद लेना, प्रेम में अनुरक्त होना, तन्मय होना।
रसनाथ-(सं०पुं०) पारद, पारा।
रसनीय-(सं०वि०) स्वादिष्ट।
रसनेन्द्रिय-(सं०स्त्री०) जिह्वा, जीभ।
रसभरी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का वसंत ऋतु में होने वाला मीठा फल।
रसभस्म-(सं०नपुं०) पारे का भस्म।
रसभीना-(हिं०वि०) आनंद में मग्न।
रसमसा-(हिं०वि०) आनन्द में मग्न, गीला, श्रान्त।
रसमि-(हिं०स्त्री०) रश्मि, किरण।
रसमुंडी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बंगला मिठाई।
रसराज-(सं०पुं०) पाद, पारा, रसौत।
रहराय-(हिं०पुं०) देखो रसराज।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रसरी-(हिं०स्त्री०) देखो रस्सी।
रसल-(हिं०वि०) रसयुक्त, रसीला; **रसवंत**-(हिं० वि०) रसीला, (पुं०) रसिक, प्रेमी।
रसशास्त्र-(सं०नपुं०) रसायन शास्त्र।
रससम्भव-(सं०नपुं०) रुधिर; **रससार**-(सं०पुं०) मधु, विष।
रसा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, रसना, जीभ
रसाइन-(हिं०पुं०) देखो रसायन। **रसाइनी**-(हिं०पुं०) रसायन विद्या जानने वाला।
रसातल-(सं०नपुं०) पुराण के अनुसार पृथ्वी के नीचे के सात लोकों में छठाँ लोक।
रसाधिक-(सं०पुं०) अधिक रस।
रसान्तर-(सं०नपुं०) भिन्न रस।
रसापायी-(हिं०पुं०) वह जन्तु जो जीभ से पानी पीता है, कुत्ता।
रसायन-(सं०नपुं०) वह औषध जिसके सेवन से सब रोग हट जाते हैं और बुढ़ापा दूर होती है, और शरीर पुष्ट होता है, पदार्थों के तत्वों का ज्ञान। धातु विद्या। **रसायनविज्ञान**-(सं०पुं०) वैज्ञानिक उपाय से तत्वों का ज्ञान;
रसाल-(सं० वि०) रसीला, मीठा, स्वादिष्ट, शुद्ध।
रसालय-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के रस बनाये जाते हों,
रसाव-(हिं०पुं०) रसने की क्रिया या भाव।
रसिआउर-(हिं०पुं०) ऊख के रस।
रसिक-(सं०वि०) जो रस का स्वाद लेता हो, काव्यमर्मज्ञ, आनन्दी, प्रेमी, रसिया; **रसिकता**-(सं०स्त्री०) रसिक होने का भाव या धर्म।
रसिया-(हिं०पुं०) रस लेने वाला, रसिक
रसियाव-(हिं०पुं०) ऊख के रस में पका हुआ चावल।
रसी-(हिं०पुं०) देखो रसिक।
रसील, रसीला-(हिं०वि०) रस भरा हुआ, स्वादिष्ट, आनन्द लेने वाला।
रसेन्द्र-(सं०पुं०) पारद, पारा।
रसेस-(हिं०पुं०) पारद, पारा।
रसोइया-(हिं०पुं०) रसोई बनाने वाला
रसोइ, रसोई-(हिं०पुं०) पकाया हुआ खाद्य पदार्थ, पाकशाला; **रसोईघर**-(हिं०पुं०) पाकशाला; **रसोईदार** (हिं०पुं०) रसोई बनाने वाला; **रसोईदारी**-(हिं०स्त्री०) भोजन बनाने का काम।
रसौर-(हिं०पुं०) ऊख के रस में पकाया हुआ चावल।
रस्ता-(हिं०पुं०) मार्ग।
रस्मि-(हिं०स्त्री०) देखो रश्मि, किरण;
रस्सा-(हिं०पुं०) मोटी रस्सी।
रस्सी-(हिं०स्त्री०) रज्जु, डोरी।
रस्सीवाट-(हिं०पुं०) रस्सी बनानेवाला
रहँकला-(हिं०पुं०) तोप लादने की गाड़ी।
रहँचटा-(हिं०पुं०) अभिलाषा, चसका
रहँट-(हिं०पुं०) कुएं से पानी निकालने का एक प्रकार का यन्त्र। **रहँटी**-(हिं०स्त्री०) कपास ओटने की चरखी।
रहठा-(हिं०पुं०) रहर के पौधे का सूखा डंठल।
रहन-(हिं०स्त्री०) रहने की क्रिया या भाव, रहने का ढंग, व्यवहार; **रहना**-(हिं०क्रि०) ठहरना, रुकना, बचना, बसना, टिकना, उपस्थित होना, थमना; **रहा सहा**-बचा हुआ।
रहनि-(हिं०स्त्री०) चाल ढाल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहर-(हिं०स्त्री०) देखो अरहर ।
रहस-(हिं०पुं०) निर्जन स्थान, गुप्त भेद, छिपी बात; रहसना-(हिं० क्रि०) आनन्दित होना, प्रसन्न होना।
रहंसि-(हिं०स्त्री०) एकान्त स्थान ।
रहाई-(हिं०स्त्री०) रहने की क्रिया या भाव ।
रहावन-(हिं०स्त्री०) वह स्थान जहांपर गांव भर के पशु इकट्ठा खड़े हों
रहासहा-(हिं०वि०) बचा हुआ।
रहित-(सं०वि०) वर्जित, विना ।
रहिला-(हिं०पुं०) चना।
राँकड़-(हिं०स्त्री०) कंकरीली भूमि जिसमें बहुत कम अन्न उत्पन्न होता है।
राँगा-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध धातु जो बहुत नरम होता है, इसका रंग सफेद होता है।
राँचना-(हिं०स्त्री०) चाहना, प्रेम करना, रंग चढ़ाना।
राँड़-(हिं०वि०स्त्री०) विधवा स्त्री।
राँढना-(हिं०क्रि०) रोना।
राआ-(हिं०पुं०) राजा।
राइ-(हिं०पुं०) छोटा राजा राय।
राइता-(हिं०पुं०) देखो रायता ।
राई-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बहुत छोटी सरसों, बहुत थोड़ी मात्रा
राउ-(हिं०पुं०) राजा, नृप । राउत (हिं०पुं०) राजवंश का कोई पुरुष-
राउर-(हिं०पुं०) अन्तःपुर, (वि०) आपका, श्रीमान् का ।
राकस-(हिं०पुं०) राक्षस । (हिं०स्त्री०) राक्षसी, निशाचरी ।
राका-(सं०स्त्री०) पूर्णिमा की रात ।
राकेश-(सं०पुं०) पूर्ण चन्द्रमा।
राक्षस-(सं०पुं०) दैत्य, असुर, निशाचर
राक्षसता-(सं०स्त्री०) राक्षस का भाव या धर्म । राक्षसी-(सं०स्त्री०) असुर की स्त्री । राक्षसेन्द्र-(सं० पुं०) रावण।
राक्षा-(हिं०स्त्री०) लाक्षा, लाह।
राख-(हिं०स्त्री०) भस्म।
राखना-(हिं०क्रि०) रक्षा करना, बचाना, छिपाना, देखो रखना ।
राखी-(हिं०स्त्री०) हाथ की कलाई पर बाँधने का मंगल सूत्र, देखो राख।
राग-(सं०पुं०) अनुराग, मोह, प्रीति, प्रेम, ईर्ष्या, द्वेष, सुगन्धित लेप जो शरीर में लगाया जाता है।
रागना-(हिं०क्रि०) अलापना, गाना, प्रेम करना;
रागान्ध-(सं०वि०) अति क्रोधी।
रागी-(हिं०स्त्री०) अनुरक्त, अनुरागी, प्रेमी ।
राघव-(सं०पुं०) रघु के वंश में उत्पन्न।
राचना-(हिं०क्रि०) रचना, बनाना, रचा जाना, बनना, रंगा जाना,
राछस-(हिं०पुं०) देखो राक्षस।
राज-(हिं०वि०) प्रजापालन की व्यवस्था शासन, पूर्ण अधिकार, देश, जनपद, राजा, घर आदि बनाने वाला राजगीर, थवई; राज काज-राज्य प्रबन्ध; राजपाट-शासन व्यवस्था;
राजक-(सं०पुं०) राजा (वि०) चमकाने वाला।
राज कथा-(सं०स्त्री०) राजाओं का इतिहास। राजकन्या-(सं०स्त्री०) राजा की पुत्री। राजकर-(सं०पुं०) वह कर जो प्रजा से राजा को मिलता है।
राजकर्ता-(सं०पुं०) वह पुरुष जो दूसरे को राजसिंहासन पर बैठाता है। राजकीय-राजा संबंधी, राज्य संबंधी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजकुंअर-(हिं०पुं०) राजकुमार, राजा का पुत्र।
राज कुमारिका-(सं०स्त्री०)राजाकी पुत्री
राजकुल-(सं०स्त्री०) राजवंश ।
राजकुल-(हिं० स्त्री०) राजसिंहासन, राज्याभिषेक।
राजगद्दी-(हिं०पुं०) घर बनाने वाला, राज, थवई।
राजगुरु-(सं०पुं०)राजा का गुरु या उपदेशक।
राज गृह-(सं०पुं०) राज भवन।
राजगेह-(सं०नपुं०) राज भवन।
राजतनय-(सं०पुं०) राजपुत्र।
राजतिलक-(हिं०पुं०) किसी नये राजा के राजसिंहासनपर बैठने का संस्कार। **राजत्व**-(सं०नपुं०) राजा का पद, । **राजदण्ड**-(सं०पुं०) वह दण्ड जो राजा की आज्ञा के अनुसार दिया जाय। **राजदन्त**-(सं०पुं०) दाँतों की पंक्ति के बीच का वह दांत जो औरों से चौड़ा होता है। **राजदुहिता**-(सं०स्त्री०) राजा की कन्या।
राजदूत(सं०पुं०) वह पुरुष जो एक राज्य की ओरसे अन्य राज्य में किसी प्रकारका संदेश लेकर भेजा जाता है। **राजद्रोह**-(सं०नपुं०) राजा अथवा राज्य के प्रति किया हुआ द्रोह। **राजद्रोही**-(सं०वि०) राजा या राज्य द्रोही। **राजद्वार**-(सं०नपुं०) राजा की ड्योढी, न्यायालय; **राजधानी**-(सं०स्त्री०) वह प्रधान नगर जहां किसी देश का राजा या शासक रहता है।
राजना-(हिं०क्रि०) शोभित होना, सोहना ।
राजनीति-(सं०स्त्री०)वह नीति जिसके अनुसार राजा अपने राज्य का शासन तथा प्रजा की रक्षा करता है। **राजनैतिक**-(सं० वि०) राजनीति सम्बन्धी ;
राजन्य-(सं०पुं०) क्षत्रिय, राजपुत्र।
राजपति-(सं०पुं०)राजाधिराज, सम्राट्।
राजपथ-(सं०पुं०) वह चौड़ा मार्ग जिस पर हाथी घोड़े रथ आदि सुगमता से चल सकते हों; **राजपद्धति**-(सं०स्त्री०) राजनीति।
राजपुत्र-राजा का पुत्र, युवराज।
राजपुत्री-(सं०स्त्री०) राजकन्या ।
राजपुरुष-(सं० पुं०) राज्य का कोई अधिकारी।
राजभक्त-(सं०वि०)राजा का भक्त ।
राजभक्ति-(सं०स्त्री०)राजा या राज्य के प्रति भक्ति।
राजभट-(सं०पुं०) राजसैनिक ।
राजभवन-(सं०नपुं०) राजाका प्रासाद
राजभाण्डार-(सं०पुं०) राजा का कोष।
राजभूय-(सं०नपुं०) राजत्व, राज्य।
राजभ्रातृ-(सं०पुं०) राजा का भाई।
राजमण्डल-(सं०पुं०) किसी बड़े राज्य के आस पास का राज्य।
राजमणि-(सं०पुं०) बहुमूल्य रत्न।
राजमन्दिर-(सं०नपुं०) राजभवन।
राजमराल-(सं०पुं०) राजहंस ।
राजमाता-(सं०स्त्री०)राजा की माता।
राजमार्ग-(सं० पुं०) राजपथ, चौड़ी सड़क। **राजयक्ष्मा**-(हिं०पुं०) क्षयरोग । **राजराज, राजराजेश्वर**-(सं०पुं०) अधिराज, राजाओं का राजा, चन्द्रमा। **राजरोग**-(हिं०पुं०) राजयक्ष्मा, क्षयरोग । **राजर्षि**-(सं०पुं०) वह ऋषि जो राजवंश या क्षत्रिय कुल का हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजलक्ष्म-(सं०पुं०) राजचिह्न। **राजलक्ष्मी**-(सं०स्त्री०) राजश्री, राज वैभव, राजा की शोभा। **राजवंश**-(सं०पुं०) राजा का कुल; **राजवसति**-(सं०स्त्री०) राजभवन। **राजवार**-(हिं०पुं०) राजद्वार। **राजविद्या**-(सं०स्त्री०) राजनीति। **राजविद्रोह**-(सं०पुं०) राजविप्लव। **राजविद्रोही**-(सं०पुं०) राजा से विद्रोह करने वाला। **राजवीथी**-(सं०स्त्री०) चौड़ी सड़क। **राजवेश्म**-(सं०नपुं०) राजा का भवन। **राजवेष**-(सं०पुं०) राजा का पहिरावा।

राजस-(सं०वि०) वह शक्ति जो गुण से उत्पन्न हो, आवेश, क्रोध; **राजसत्ता**-(सं०स्त्री०) राजशक्ति, राज्य की सत्ता **राजसभा**-(सं०स्त्री०) वह सभा जिसमें अनेक राजे बैठे हों। **राजसमाज**-(सं०पुं०) राजमण्डली; **राजसिंहासन**-(सं०पुं०) राजा के बैठने का सिंहासन; **राजसिक**-(सं० वि०) रजोगुण से उत्पन्न, राजस; **राजसिरी**-(हिं०स्त्री०) देखो राजश्री; **राजसी**-(वि०) राजा के योग्य, ठाटदार, भड़कीला, **राजसुत**-(सं०पुं०) राजा का लड़का, राजपुत्र। **राजसुता**-(सं० स्त्री०) राजकन्या, राजा की लड़की। **राजसूय**-(सं०पुं०) वह यज्ञ जिसको करने का अधिकार केवल सम्राट् को होता है। **राजसेवक**-(सं०पुं०) राजा की सेवा करने वाला भृत्य। **राजसेवा**-(सं०स्त्री०) राजा की सेवा।

राजस्व-(सं०पुं०) भूमि आदि का वह कर जो राजाको दिया जाता है।

राजा-(सं०पुं०) नरपति, अधिपति, स्वामी, प्रिय व्यक्ति, **राजाज्ञा**-(सं० स्त्री०) राज की आज्ञा।

राजाधिकारी-(सं०पुं०) न्यायालय में बैठकर विचार करने वाला।

राजाधिष्ठान-(सं०पुं०) किसी राजा की राजधानी।

राजासन-(सं०नपुं०) राजाओं के बैठने का आसन।

राजि-(सं०स्त्री०) श्रेणी, पंक्ति, लकीर।

राजित-(सं०वि०) विराजमान।

राजिव-(हिं०पुं०) राजीव, कमल।

राजीव-(सं०नपुं०) पद्म, कमल, नील कमल, हाथी। **राजीवलोचन**-(सं०वि० कमल के समान आँखों वाला।

राजेन्द्र-(सं०पुं०) राजश्रेष्ठ, राजाओं का राजा, सामन्त।

राजेश्वर-(सं०पुं०) राजाओं में श्रेष्ठ।

राजोपजीवी-(सं०पुं०) राजकर्मचारी,

राज्ञी-(सं०स्त्री०) राजपत्नी, रानी,

राज्य-(सं०नपुं०) राष्ट्र, जनपद। **राज्यकर्ता**-(सं०पुं०) राज्य के शासन विभाग का कर्मचारी। **राज्यच्युत**-(सं० वि०) राजसिंहासन से उतारा हुआ। **राज्यतन्त्र**-(सं०नपुं०) राज्य की शासन प्रणाली। **राज्याभिषेक**-(सं०पुं०) किसी नये राजा का राजसिंहासनपर बैठाया जाना, राजगद्दी।

राठ-(हिं०पुं०) राज्य, राजा।

राढ़-(हिं०स्त्री०) झगड़ा, (वि०) नीच।

राणा-(हिं०पुं०) राजा, इस शब्द का प्रयोग राजपूताना के कुछ राज्यों तथा नेपाल के सरदारों के लिये होता है।

रात-(हिं०स्त्री०) रात्रि, रजनी,

रातना-(हिं०क्रि०) अनुरक्त होना, रंगा जाना।

राता-(हिं०वि०) रंगा हुआ, लाल रंग का।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रातिचर-(हिं०पुं०) निशाचर,राक्षस।
रात्रि-(सं०नपुं०) रात्रि,रात,निशा,रजनी
रात्रिचर-(सं०पुं०) राक्षस। **रात्रिचर्या**-(सं०स्त्री०) रात में करने का कर्तव्य। **रात्रिज**-(सं०नपुं०) नक्षत्र तारे आदि। **रात्रिजल**-(सं०नपुं०) कुहरा। **रात्रिजागरण**-(सं०पुं०) रतजगा।
रात्री-(सं०स्त्री०) रात।
रात्र्यन्ध-(सं०वि०) जिसको रात में देख न पड़ता हो।
राधना-(हिं०क्रि०) सिद्ध करना, पूरा करना, साधना, काम निकालना,
राध्य-(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।
राना-(हिं०पुं०) देखो राणा (क्रि०) अनुरक्त होना; **रानी**-(हिं० स्त्री०) राजा की पत्नी, स्वामिनी, मालकिन, स्त्रियों के लिये आदर सूचक शब्द;
राब-(हिं०स्त्री०) आंच पर औंटा कर गाढा किया हुआ गन्ने का रस।
राबड़ी-(हिं०स्त्री०) औटा कर तथा चीनी मिला कर गाढा किया हुआ दूध, बसौंधी।
राम-(सं०पुं०) राजा दशरथ के पुत्र जो अवतार माने जाते हैं।
रामजना-(हिं०पुं०) एक संकर जाति जिसकी कन्यायें वेश्यावृत्ति करती हैं।
रामजनी-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रामतरोई-(हिं०स्त्री०) भिंडी नामकी एक तरकारी।
रामदल-(सं० पुं०) श्री रामचन्द्र की बन्दरों की सेना, ऐसी प्रबल सेना जिसको हराना कठिन हो।
रामदाना-(हि०पुं०) मरसे या चौराई जाति का एक पौधा जिसमें बहुत छोटे सफेद दाने लगते हैं।
रामदूत-(सं०पु०) हनूमान जी।
रामना-(हिं०क्रि०) देखो रमना।
रामनवमी-(हिं०पुं०) वह चादर या दुपट्टा जिस पर 'राम राम' छपा रहता है, एक प्रकार का गले का हार जिसके बीच के पान में 'राम' अंकित रहता है।
रामफल-(हिं०पुं०) सीताफल, शरीफा।
रामबँटाई-(हिं०स्त्री०) आधे आध का विभाग।
रामबान-(हिं०पुं०) तुरत प्रभाव दिखाने वाला।
रामबांस-(हिं०पुं०) एक प्रकार का मोटा बाँस जो पालकी के डंडे बनाने के काम में आता है, केवड़े के जाति का एक पौधा जिसकी पत्तियों के रेशे से रस्से बनाये जाते हैं।
रामरज-(सं०स्त्री०) एक प्रकार की पीली मिट्टी जिसका तिलक वैष्णव लोग लगाते हैं।
रामरस-(हिं०पुं०) नमक।
रामराज्य-(सं०पुं०) रामचन्द्र का शासन जो प्रजा के लिये अत्यन्त सुखदायक था।
रामराम-(हिं०पुं०) प्रणाम, नमस्कार, भेंट।
रामलीला-(सं०स्त्री०) रामजी के जीवन काल के किसी कृत्य का अभिनय या नाटक।
रामबाण-(हिं०वि०) तुरत प्रभाव दिखलाने वाली (औषधि)।
रामसेतु-(सं०पुं०) दक्षिण भारत की अंतिम सीमा पर रामेश्वर तीर्थ के पास समुद्र में पड़ी हुई चट्टानों का समूह।
रामा-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रामायण-(सं०नपुं०) वाल्मीकि ऋषि का संस्कृत में रचा हुआ भारतवर्ष का आदि काव्य।

रामायन-(हिं०पुं०) देखो रामायण।

रामेश्वर-(सं०पुं०) दक्षिण भारत के समुद्र तट पर का एक स्थान जहाँ-पर श्री रामचन्द्र जी का स्थापित एक शिवलिङ्ग है।

राय-(सं०पुं०)छोटा राजा या सरदार, वन्दीजन।

रायता-(हिं०पुं०) दही में मिलाया हुआ साग, कुम्हड़ा, लौवा, बुंदिया आदि जिसमें नमक, मिर्च आदि मिलाया रहता है।

रायरासि-(हिं०स्त्री०) राजा का कोष

रार-(हिं०पुं०) झगड़ा।

राल-(सं०पुं०) धूना का वृक्ष, वह तरल गोंद जो इस वृक्ष से निकाला जाता है।

राव-(सं०पुं०) ध्वनि, शब्द, (हिं०पुं०) राजा, सरदार, श्रीमान धनक।

रावट-(हिं०पुं०) राजभवन।

रावटी-(हिं०स्त्री०) छोलदारी, ओसारी

रावत-(हिं०पुं०) छोटा राजा, सरदार

रावना-(हिं०क्रि०) रुलाना।

रावर-(हिं०वि०) भवदीय, आपका; (पुं०) अन्तःपुर, रनिवास।

रावल-(हिं०पुं०) राजा, प्रधान सरदार, एक प्रकार का आदर सूचक संबोधन का शब्द।

राशि-(सं०पुं०)पुंज, समुच्चय, ढेर, राशिचक्र का बारहवाँ भाग,

राशिचक्र-(सं०नपुं०) ग्रहों के चलने का मार्ग या वृत्त।

राशीकृत-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ

राष्ट्र-(सं०पुं०) राज्य, देश, प्रजा।

राष्ट्रतन्त्र-(सं०नपुं०) राज्य का शासन करने की प्रणाली। **राष्ट्रपति**-(सं०पुं०) किसी राष्ट्र का स्वामी, आधुनिक प्रजातन्त्र शासन प्रणाली में बहुमत से चुना हुआ शासक

राष्ट्रपाल-(सं०पुं०) राष्ट्रपति। **राष्ट्र-भङ्ग**-(सं०पुं०) राज्य का नाश।

राष्ट्रविप्लव-(सं०पुं०)विद्रोह, बलवा।

राष्ट्रान्तपालक-(सं०वि०) राज्य की सीमा का रक्षक।

राष्ट्रीय-(सं०वि०) राष्ट्र संबंधी।

रास-(सं०पुं०) कोलाहल, ध्वनि, गूंज, गोपियों की एक क्रीड़ा जिसमें श्रीकृष्ण के साथ घेरा बाँध कर नाचती थीं। (हिं०स्त्री०) ढेर, समूह, जोड़, झुंड, सूद, व्याज।

रासधारी-(सं०पुं०) वह मण्डली या व्यक्ति जो श्रीकृष्ण की रासक्रीड़ा अथवा अन्य लीलाओं का अभिनय करता है।

रासना-(हिं०पुं०) देखो रास्ना।

रासभ-(सं० पुं०) गर्दभ, अश्वतर, खच्चर। **रासभी**-(सं०स्त्री०)गदही।

रासभूमि-(सं०स्त्री०) रासक्रीड़ा का स्थान।

रासमण्डल-(सं०नपुं०) रासक्रीड़ा का स्थान, रासलीला करने वालों का समूह।

रासलीला-(सं०स्त्री०) वह क्रीड़ा या नृत्य जो श्रीकृष्ण ने गोपियों के साथ शरदपूर्णिमा को आधीरात के समय किया था।

रासबिहारी-(सं०पुं०) श्री कृष्ण।

रासायनिक-(सं०वि०) रसायन शास्त्र संबंधी, रसायन शास्त्र का जानकार।

रासि-(हिं०स्त्री०) देखो राशि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रासी-(हिं०वि०) कृत्रिम, बुरा, छोटे नाप का।
रासो-(हिं०पुं०) किसी राजा का पद्यमय जीवन चरित्र।
राहरीति-(हिं०स्त्री०) परिचय।
राहना-(हिं०क्रि०) मोटी रेती से रगड़ कर चिकना करना।
राहा-(हिं०पुं०) चक्की के नीचेका मिट्टी का चबूतरा।
राहु-(सं०पुं०)नवग्रहों में से एक ग्रह।
रिंगन-(हिं०स्त्री०) घुटनों के बल चलना।
रिंगना-(हिं०क्रि०) रेंगना, घुमाना फिराना।
रिकाबी-(हिं०स्त्री०) कटोरी।
रिक्त-(सं०वि०)शून्य, खाली, निर्धन।
रिक्तता-(सं०स्त्री०) शून्यता।
रिक्तपाणि-(सं०वि०) खाली हाथ।
रिक्तमति-(सं०वि०) शून्यचित्त।
रिक्तहस्त-(सं०वि०)जिसके पास एक पैसा भी न हो।
रिक्थ-(सं० नपुं०) वंश परंपरा में मिला हुआ धन या सम्पत्ति।
रिक्ष-(हिं०पुं०) देखो ऋक्ष, रीछ, भालू
रिक्षा-(सं०स्त्री०) लीख।
रिचा-(हिं०स्त्री०) देखो ऋचा।
रिच्छ-(हिं०पुं०) भालू।
रिजु-(हिं०वि०) देखो ऋजु।
रिझाना-(हिं०क्रि०) अपने ऊपर किसी को प्रसन्न कर लेना, लुभाना। **रिझायल**-(हिं०वि०) रीझने वाला। **रिझाव**-(हिं०पुं०) किसी को अपने ऊपर प्रसन्न होने का भाव। **रिझावना**-(हिं०क्रि०) देखो रिझाना।
रित, रितु-(हिं०स्त्री०) देखो ऋतु।
रितवना-(हिं०क्रि०) खाली करना।
रिद्ध-(सं०वि०) पका या रींधा हुआ।
रिन-(हिं०पुं०) देखो ऋण।
रिनबंधी-(हिं०पुं०) ऋणी।
रिनिआं-(हिं०पुं०) ऋणी।
रिनी-(हिं०वि०) देखो ऋणी।
रिपु-(हिं०पुं०) शत्रु, वरी। **रिपुघाती** (सं०वि०) शत्रुओं का नाश करने वाला। **रिपुता**-(सं०स्त्री०) शत्रुता।
रिमझिम-(हिं०स्त्री०) छोटी छोटी जल की बूंदों का निरन्तर गिरना।
रिरक्षा-(सं०स्त्री०) रक्षा करने की इच्छा।
रिर-(हिं०पुं०) हठ।
रिरना-(हिं०क्रि०) हठ करना।
रिरहा-दीनता पूर्वक भिक्षा माँगने वाला
रिस-(हिं०स्त्री०) क्रोध, रोष।
रिसना-(हिं०क्रि०) छनकर बाहर टपकना। **रिसवाना**-(हिं०क्रि०) क्रोध दिलाना।
रिसहा-(हिं०वि०) क्रोधी।
रिसाना-(हिं०क्रि०) किसी पर क्रुद्ध होना।
रिसि-(हिं०स्त्री०) रिस, क्रोध।
रिसौंहां-(हिं०वि०) क्रोध से भरा हुआ
रींधना-(हिं०क्रि०) उबालना, तलना या पकाना।
री-(हिं०अव्य०) सखियों के लिये संबोधन का शब्द, अरी।
रीछ-(हिं०पुं०) भालू।
रीझ-(हिं०स्त्री०) रीझने की क्रिया या भाव, प्रसन्न होना, मोहित होने का भाव। **रीझना**-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना, मोहित या मुग्ध होना।
रीढ-(हिं०स्त्री०) पीठ के बीचोबीच की लंबी हड्डी जो गरदन से कमर तक जाती है, मेरुदण्ड, पृष्ठवंश।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रीढा-(सं०स्त्री०) अवज्ञा, अपमान।
रीत-(हिं०स्त्री०) देखो रीति।
रीतना-(हिं०क्रि०) रिक्त होना, रिक्त करना।
रीता-(हिं०वि०) जिसके भीतर कुछ न हो, खाली।
रीति-(सं०स्त्री०) ढंग, परिपाटी, नियम, प्रकार, तरह, प्रकृति, स्तुति।
रीस-(हिं०स्त्री०) स्पर्धा, डाह, ईर्ष्या।
रीसना-(हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना।
रुंदवाना-(हिं०क्रि०) पैर से कुचलवाना
रुंधना-(हिं०क्रि०) उलझना, रुकना, फँस जाना।
रुआ-(हिं०पुं०) देखो रोंआँ, रोम।
रुईदार-(हिं०वि०) रुई भरा हुआ।
रुकना-(हिं०क्रि०) आगे न बढ़ सकना, ठहर जाना।
रुकवाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को रोकने में प्रवृत्त करना।
रुकाव, रुकावट-(हिं०पुं०) रुकने का भाव, रुकावट।
रुक्ख-(हिं०पुं०) देखो वृक्ष, पेड़
रुक्म-(सं०वि०) दीप्तिमान, रुक्मिणी का छोटा भाई।
रुक्ष-(सं०वि०) रूखा, नीरस, सूखा।
रुक्षता-(सं०स्त्री०) रुखाई, रूखापन।
रुखाई-(हिं०स्त्री०) रूखा होने का भाव। रुखाना-(हिं०क्रि०) रूखा होना, सूखना। रुखानी-बढ़इयों का एक धारदार अस्त्र।
रुखावट, रुखाहट-(हिं०स्त्री०) रूखापन, रुखाई।
रुखौंहां-(हिं०वि०) रुखाई लिये हुए।
रुग्न-(हिं०पुं०) रुग्ण, रोगग्रस्त।
रुग्नता-(सं०स्त्री०) रोगी होने का भाव।
रुच-(हिं०स्त्री०) देखो रुचि।
रुचना-(हिं०क्रि०) अनुकूल होना।
रुचि-(सं०स्त्री०) दीप्ति, प्रकाश, शोभा।
रुचि-(सं०स्त्री०) अनुराग, प्रेम, आसक्ति-प्रवृत्ति, भूख, स्वाद। रुचिकर-(सं०वि०) अच्छा लगने वाला। रुचिकारक-(सं०वि०) स्वादिष्ट। रुचिकारी-(सं०वि०) मनोहर। रुचित-(सं०वि०) अभिलषित,
रुचिर-(सं०वि०) सुन्दर, अच्छा,। रुचिराई-(हिं०स्त्री०) मनोहरताई, सुन्दरता।
रुची-(हिं०स्त्री०) देखो रुचि।
रुच्छ-(हिं०वि०) देखो रूक्ष, रूखा।
रुज-(सं०नपुं०) क्षत, घाव, वेदना, भंग, कष्ट। (सं०वि०) रोगग्रस्त,
रुजा-(सं०स्त्री०) रोग, पीड़ा।
रुजी-(हिं०वि०) अस्वस्थ, रोगी।
रुझना-(हिं०क्रि०) घाव आदि का पूजना।
रुठ-(हिं०पुं०) क्रोध, रोष।
रुठना (हिं०क्रि०) क्रुद्ध होना।
रुठना-(हिं० क्रि०) रूठने में प्रवृत्त करना।
रुणित-(सं०वि०) शब्द करता हुआ।
रुण्ड-(सं०पुं०) कबन्ध जिसका हाथ पैर छिन्न हो।
रुत-(सं०नपुं०) पक्षियों का कलरव, शब्द, ध्वनि।
रुदन-(सं०नपुं०) क्रन्दन, रोने की क्रिया।
रुदराछ-(हिं०पुं०) देखा रुद्राक्ष।
रुदित-(सं०वि०) रोता हुआ।
रुद्ध-(हिं०वि०) रोता हुआ।
रुद्ध-(सं०वि०) आवृत्त, वेष्टित, घिरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ, फँसा हुआ। रुद्धकण्ठ-(सं०वि०) जिसका गला भर आया हो, जो बोल न सकता हो।

रुद्र-(सं०पुं०) एक प्रकार के गण देवता जो संख्या में ग्यारह हैं।

रुद्रपति-(सं०पुं०) शिव, महादेव

रुद्रपत्नी-(सं०स्त्री०) दुर्गा। रुद्रप्रिया-(सं०स्त्री०) पार्वती।

रुद्राक्ष-(सं०नपुं०) एक बड़ा वृक्ष इसके गोल फल की माला बनाकर शैव लोग पहनते और जप के व्यवहार में लाते हैं।

रुद्राणी-(सं०स्त्री०) रुद्र की पत्नी, पार्वती।

रुद्री-(सं०स्त्री०) वेद के रुद्रानुवाक या अघमर्षण सूत्र की बारह आवृत्तियाँ।

रुधिर-(सं०नपुं०) रक्त, शोणित।

रुधिरपायी-(हिं०पुं०) लोहू पीने वाला, राक्षस।

रुधिराक्त-(सं०वि०) रुधिर से भीगा हुआ।

रुनझुन-(हिं०स्त्री०) नूपुर, मंजीर, झनकार।

रुनाई-(हिं०स्त्री०) लालिमा।

रुनित-(हिं०वि०) बजता हुआ।

रुनुक झुनुक-(हिं०स्त्री०) नूपुर का शब्द, रुनझुन।

रुपया-(हिं०पु०) चाँदी की सबसे बड़ी मुद्रा जो भारतवर्ष में प्रचलित है, यह तौल में दस माशे होती है, धन, सम्पत्ति।

रुपहला-(हिं०वि०) चाँदी के रंग का।

रुमंच-(हिं०पु०) देखो रोमांच।

रुराई-(हिं०स्त्री०) सुन्दरता।

रुरु-(सं०पुं०) काला मृग, कस्तूरी मृग

रुरुआ-(हिं०पुं०) एक बड़ी जाति का उल्लू जिसकी बोली बड़ी कर्कश होती है।

रुरुक्षु-(सं०वि०) रुक्ष, रूखा।

रुलना-(हिं०क्रि०) व्यर्थ मारे फिरना।

रुलाई-(हिं०स्त्री०) रोने की क्रिया या भाव। रुलाना-(हिं०क्रि०) रोने में दूसरे को प्रवृत्त कराना।

रुवाई-(हिं०स्त्री०) देखो रुलाई।

रुष-(सं०पुं०) क्रोध, रोष।

रुषित रुष्ट-(सं०वि०) रोषयुक्त, क्रुद्ध। रुष्टता-(सं०स्त्री०) रुष्ट होने का भाव, अप्रसन्नता।

रुष्टपुष्ट-(हिं०वि०) देखो हृष्ट पुष्ट।

रूसना-देखो रूठना।

रुसवाई-(हिं०स्त्री०) अपमान और दुर्गति।

रुसित-(हिं०वि०) रुष्ट, अप्रसन्न।

रूंदना-(हिं०क्रि०) देखो रौंदना।

रूंध-(हिं०वि०) अवरुद्ध, रुका हुआ।

रूंधना-(हिं०क्रि०) रोकना, छेकना।

रूई-(हिं०स्त्री०) कपास के कोष या डोडे के भीतर का धूआ जिसको कातकर सूत बनता है जिससे कपड़े बुने जाते हैं।

रूक्षता-(हिं०वि०) रूखापन।

रूखर-(हिं०पुं०) वृक्ष, पेड़ (वि०) रूखा

रूक्ष-(हिं०पुं०) देखो रूखड़ा।

रूख-(हिं०क्रि०) रूठना।

रूखा-(हिं०वि०) परुष, कठोर, विरक्त उदसीन। रूखापन-(हिं०पुं०) रुखाई, कठोरता, नीरसता।

रूचना-(हिं० क्रि०) रुचना, अच्छा लगना।

रूझना-(हिं०क्रि०) देखो उझलना।

रूठ, रूठन-(हिं०स्त्री०) रूठने की क्रिया या भाव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूठना-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना।
रूष्टता-(सं० स्त्री०) रुष्ट होने का भाव, अप्रसन्नता।
रूठना-(हिं०क्रि०) अप्रसन्न होना
रूड़, रूड़ा-(हिं०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
रूढ-(सं०वि०)उत्पन्न, प्रचलित, प्रसिद्ध, आरूढ, जिसका विभाग न किया गया हो, कठोर (पुं०) वह शब्द जो प्रकृति और प्रत्यय की किसी प्रकार की अपेक्षा न करके अर्थ का बोध करता हो।
रूढ़ि-(सं०स्त्री०) जन्म, उत्पत्ति, वृद्धि, प्रसिद्धि, प्रादुर्भाव, रूढ शब्द की वह शक्ति जो यौगिक न होने पर भी अपने अर्थ को बतलाती है।
रूप-(सं०नपुं०) स्वभाव, प्रकृति, सुन्दरता-दशा, अवस्था, भेस, शब्द या वर्ण का वह रूपान्तर जो उसमें विभक्ति प्रत्ययादि लगाने से बनता है। रूपरेखा-आकृति।
रूपक-(सं०पुं०) मूर्ति, प्रतिकृति, वह अलंकार जिसमें प्रकृत विषय को न छिपाकर उपमेय में उपमान का आरोप होता है।
रूपकार-(सं०पुं०) मूर्ति बनाने वाला।
रूपण-(सं०नपुं०) आरोग्य, परीक्षा, प्रमाण।
रूपतम-(सं०वि०) बड़ा सुन्दर। **रूपता**-(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
रूपधर-(सं०वि०) सुन्दर। **रूपधारी**-(हि०वि०) बहुरूपिया।
रूपमनी-(हिं०वि०) रूपवती, सुन्दर।
रूपमय-(हिं०वि०) बहुत सुन्दर।
रूपमान्-(हिं०वि०) देखो रूपवान्।
रूपया-(हिं०पुं०)देखो रुपया।
रूपवती-(सं०स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।
रूपवन्त-रूपवान्-(सं०वि०) रूपवान्, सुन्दर।
रूपहानि-(सं०स्त्री०) रूप का नाश।
रूपा-(हिं०पुं०) चाँदी, घटिया चाँदी जिसमें कुछ मिलावट हो।
रूपाजीवा-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
रूपावली-(सं०स्त्री०) शब्द की विभक्तियों का वर्णन।
रूपी-(हिं०वि०) रूपयुक्त, रूपवाला।
रूपोपजीवी-(हिं० वि०) बहुरूपिया।
रूमना-(हिं०क्रि०) झूलना, झूमना।
रूरना-(हिं०क्रि०) चिल्लाना, कोलाहल करना।
रूसना-(हिं०क्रि०)रूठना, क्रुद्ध होना।
रूसी-(हिं०वि०) रूस देस का रहने वाला, रूस संबंधी, (स्त्री०) रूस देश की भाषा, सिर पर जनने वाला भूसी के समान छिलका।
रूहड़-(हिं०स्त्री०) पुरानी रुई जो एक बार कपड़े आदि में भरी जा चुकी हो।
रूहना-(हिं०क्रि०) घेरना।
रेंकना-(हिं०क्रि०) गदहे का बोलना।
रेंगटा-(हिं०पुं०) गदहे का बच्चा।
रेंगना-(हिं०क्रि०)कीड़े या चीउटी का चलना, धीरे धीरे चलना।
रेंट-(हिं०पुं०) नाक का मल, नकटी।
रेंड़-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसके बीज का तेल गाढ़ा और रेचक होता है।
रेंड़ी-(हिं०स्त्री०) अरंडी या रेंड़ के बीज।
रेंरें-(हिं०पुं०) बच्चों के रोने का शब्द
रे-(सं०अव्य०) एक संबोधन जिससे आदर का अभाव सूचित होता है।
रेउता-(हिं०पुं०) व्यजन, बेना, पंखा।
रेख-(हिं० स्त्री०) रेखा, लकीर, चिह्न, नई निकलती हुई मूछें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रेखांश-(सं०पुं०) यामोत्तर वृत्ति का एक अंश।
रेखा-(सं० स्त्री०) लकीर, गणना, गिनती, आकृति, आकार।
रेखागणित-(सं० नपुं०) गणित का वह विभाग जिसमें रेखाओं द्वारा कुछ सिद्धान्त निर्धारित किये गये हों।
रेच-(हिं०पुं०) ऐंठन, दोष।
रेचन-(सं०नपुं०) कोष्ठ शुद्धि।
रेचना-(हिं०क्रि०) अधोवायु या मल को बाहर निकालना।
रेचनीय-(सं०वि०) शौच लाने वाला
रेचित-(सं० वि०) परित्यक्त, छोड़ा हुआ।
रेणु-(सं०पुं०) धूल, वालू, कणिका
रेणुका-(सं० स्त्री०) पृथ्वी, रज, धूल, बालू।
रेत-(हिं०पुं०) लोहा रेतने का एक अस्त्र (स्त्री०) वालू, मरुस्थल।
रेतना-(हिं०क्रि०) रेती के द्वारा किसी वस्तु को रगड़ कर उसमें से महीन कण गिराना।
रेतला-(हिं०वि०) रेतीला।
रेतिया-(हिं०पुं०) रेतने वाला।
रेता-(हिं०स्त्री०) बालू।
रेती-(हिं०स्त्री०) लोहा लकड़ी आदि रेतने का लोहे का एक अस्त्र, नदी या समुद्र के किनारे की बलुई भूमि।
रेतीला-(हिं०वि०) बालुकामय, बलुआ
रेनु-(हिं०पुं०) देखो रेणु।
रेफ-(सं०पुं०)रकार, रवर्ग, रकार का वह रूप जो अन्य अक्षर के पहिले आने से उस अक्षर में माथे पर रक्खा जाता है "र्", राग, शब्द।
रेहुआ-(हिं०पुं०) बड़ा उल्लू पक्षी।
रेल-(हिं०स्त्री०)बहाव, धारा, अधिकता
रेलना-(हिं०क्रि०) आगे की ओर झोंकना या ढकेलना।
रेला-(हिं०पुं०) पंक्ति, समूह, धक्का-मुक्का, अधिकायत।
रेवड़ी-(हिं०स्त्री०) पगी हुई चीनी का टुकड़ा जिस पर सफेद तिल चपकाई होती है।
रेह-(हिं० स्त्री०) खार मिली हुई मिट्टी जो ऊसर में पाई जाती है।
रेहुआ-(हिं०वि०) जिसमें रेह बहुत हो
रैअति-(हिं०पुं०) प्रजा।
रैतुआ-(हिं०पुं०) देखो रायता।
रैदास-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध भक्त जो जाति का चमार था।
रैदासी-(हिं०पुं०) रैदास भक्त के सम्प्रदाय का।
रैन, रैनि-(हिं० स्त्री०) रात्रि, रात।
रैनिचर-(हिं०पुं०) राक्षस।
रैयाराव-(हिं० पुं०) छोटा राजा, सरदार।
रैल-(हिं०स्त्री०) समूह।
रैहर-(हिं०पुं०) झगड़ा, लड़ाई।
रोंग-(हिं०पुं०) लोम, रोंवाँ।
रोंगटा-(हिं०पुं०) संपूर्ण शरीर पर के रोवें।
रोंव-(हिं० पुं०) रोआँ, लोम।
रोक-(हिं० स्त्री०) बाधा, अटकाव, निषेध, मनाही।
रोकड़-(हिं०स्त्री०) नकद रुपया पैसा
रोकड़िया-(हिं०पुं०) कोषाध्यक्ष।
रोकना-(हिं०क्रि०) बाधा डालना, मना करना।
रोख-(हिं०पुं०) देखो रोष।
रोग-(सं०पुं०) व्याधि। **रोगकारक**-(सं०वि०) रोग उत्पन्न करने वाला। (सं० वि०) व्याधिग्रस्त। **रोंगातुर**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं०वि०) व्याधित, पीड़ित। **रोगिया**-(हिं०पुं०) रोगी। **रोगी**-(हिं०वि०) व्याधि ग्रस्त, रुग्ण।

रोचक-(सं०वि०) रुचि कारक, मनोरंजक। **रोचकता**-(सं०स्त्री०) मनोहरता।

रोचि-(सं०स्त्री०) प्रभा, दीप्ति, किरण

रोचित-(सं०वि०) सुशोभित।

रोचिष्णु-(सं०वि०) रोचक, चमकदार।

रोट-(हिं०पुं०) गेहूँ के आटे की बहुत मोटी रोटी, लिट्टी।

रोटका-(हिं०पुं०) बाजरा।

रोटिहा-(हिं० पुं०) वह सेवक जो भोजन पर काम करता है।

रोटी-(हिं०स्त्री०) गुंधे हूए आटे की टिकिया जो आँच पर सेंकी गई हो।

रोड़ा-(हिं०पुं०) बड़ा कंकड़, ईंट या पत्थर का ढेला।

रोदन-(सं०नपुं०) क्रन्दन, रोना।

रोदसी-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी।

रोदा-(हिं०पुं०) कमान की डोरी।

रोध-(सं०पुं०) किनारा, तट, रूकावट

रोधक-(सं०वि०) रोकने वाला।

रोधना-(हिं०क्रि०) रुकावट करना, रोकना।

रोधित-(हिं०वि०) रोका हुआ।

रोधी-(सं०वि०) रोकने वाला।

रोना-(हिं०क्रि०) दुःख करना, पछताना, बुरा मानना, चिढ़ना, (पुं०) दुःख (वि०) रोने वाला।

रोपक-(सं०वि०) वृक्ष लगाने वाला, उठाने वाला।

रोपना-(हिं०क्रि०) जमाना, लगाना, ठहराना, अड़ाना, किसी वस्तु को लेने के लिये हथेली या कोई पात्र आगे करना।

रोपित-(सं०वि०) जमाया हुआ, लगाया हुआ, रक्खा हुआ।

रोम-(सं०नपुं०) लोम, शरीर के बाल, रोआँ।

रोमकूप-(सं०पुं०) शरीर के महीन छिद्र।

रोमन्थ-(सं०पुं०) पागुर करन।

रोमपाट-(सं०पुं) ऊनी वस्त्र, दुशाला।

रोम पुलक-(सं०पुं०) रोमाञ्च।

रोमश-(सं०पुं०) मेष, भेड़ा, सुअर।

रोमहर्ष, रोमहर्षण-(स०पुं०, नपुं०) रोमांच, रोवा खड़ा होना।

रोमहर्षित-(सं०वि०) पुलकित।

रोमाञ्च-(सं०पुं०) आनन्द या भय से रोंगटे खड़े होना, पुलक।

रोमाञ्चित-(सं०वि०) जिसके रोंगटे खड़े हों।

रोमाली-(सं०स्त्री०) देखो रोमावली।

रोमावलि, रोमावली-(सं०स्त्री०) रोमों की पंक्ति जो पेट के बीच में नाभि के ऊपर होती है, रोमाञ्च, पुलक।

रोमोद्गम-(सं०पुं०) रोवें का खड़ा होना।

रोयां-(हिं०पु०) शरीर पर के बाल।

रोर-(सं०स्त्री०) कलकल, कोलाहल, घमासान, चिल्लाहट का शब्द, (वि०) प्रचण्ड, उपद्रवी, अत्याचारी।

रोरी-(हिं०स्त्री०) हलदो चूने से बनी हुई लाल रंग की बुकनी जिसका तिलक लगाया जाता है, रत्न।

रोल-(हिं०पु०) पानी का तोड़, बहाव, (स्त्री०) कोलाहल।

रोलम्ब-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा।

रोला-(हिं०पुं०) कोलाहल, घमासान युद्ध।

रोली-(हिं०स्त्री०) देखो रोरी।

रोवनहार-(हिं०पुं०) रोने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोवना-(हिं०वि०) देखो रोना '(वि०) हँसी या खेल में बुरा मानने वाला।
रोवनी धोवनी-(हिं०स्त्री०) रोने धोने का काम।
रोवासा-(हिं०वि०) जो रोने पर तैयार हो।
रोष-(सं०पुं०) क्रोध, कुढ़न, विरोध।
रोस-(हिं०पुं०) देखो रोष, क्रोध।
रोहण-(सं०नपुं०) चढ़ना, चढ़ाई।
रोहना-(हिं०क्रि०) चढ़ना, ऊपर करना सवार कराना।
रोहा-(हिं०पुं०) आँख के पलक के भीतर दाने पड़ जाने का रोग।
रोहिताक्ष-(सं०पुं०) लाल आँख।
रोहिताश्व-(सं०पुं०) अग्नि।
रोही-(हिं०वि०) चढ़ने वाला।
रोहू-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी मछली।
रौंद-(हिं०स्त्री०) रौंदने की क्रिया या भाव, चक्कर। **रौंदन**-(हिं०पुं०) रौंदने की क्रिया, मर्दन। **रौंदना**-(हिं० क्रि०) पैरों से कुचलना, लातों से मारना, खूब पीटना।
रौक्ष्य-(सं०नपुं०) रूक्षता, रूखापन।
रौद्रकर्म-(सं०पुं०) भयंकर कर्म।
रौद्रता-(सं०स्त्री०) प्रचण्डता, डरावनापन।
रौना-(हिं०पुं०) देखो रोना। **रौनी**-(हिं०स्त्री०) देखो रमणी।
रौप्य-(सं०नपुं०) चाँदी, रूपा। **रौप्य-मुद्रा**-(सं०स्त्री०) चाँदी की मुद्रा।
रौरव-(सं०पुं०) एक नरक का नाम।
रौरा-(हिं०पुं०) हल्ला, कोलाहल, उधम (सर्व०) आपका।
रौराना-(हिं०क्रि०) बकझक करना।
रौरी-(हिं०स्त्री०) कोलाहल।
रौरे-(हिं०सर्व०) आप, संबोधन का शब्द।
रौला-(हिं०पुं०) हल्ला, उधम।
रौलि-(हिं०स्त्री०) चपत, धौल।

ल

ल-(सं०नपुं०) पृथ्वी इन्द्र। **लंकेश**-(हिं०पुं०) रावण।
लंगड़, लंगड़ा-(हिं०वि०) जिसका पैर टूटा या बेकाम हो (पुं०) एक प्रकार का बहुत बढ़िया कलमी आम। **लंगड़ाना**-(हिं०क्रि०) लंगड़ाते हुए या भचक कर चलना।
लंगड़ी(हिं०वि०) वह स्त्री जिसके पैर टूट गये हों।
लँगूर-(हिं०पुं०) एक विशेष प्रकार का बन्दर जिसका मुंह काला और पूंछ लंबी होती है।
लंगूल-(हिं०पुं०) पुंछ, दुम।
लंगोट-(हिं०पुं०) एक प्रकार का सिला हुआ वस्त्र जो कमर में लपेटा जाता है, जिससे केवल उपस्थ ढप जाता है, रुमाली। **लंगोटी**-(हिं०स्त्री०) कौपीन कछनी।
लंघना-(हिं०क्रि०) देखो लाँघना।
लंठ-(हिं०वि०) मूर्ख, उद्दण्ड।
लंबतड़ंग-(हिं०वि०) लंबे आकार का
लंबा-(हि०वि०) विशाल, बड़ा, दीर्घ। **लंबाई**-(हिं० स्त्री०) लंबापन, लंबा होने का भाव। (हिं० स्त्री०) लंबाई।
लंबी-(हिं०वि०स्त्री०) लंबा शब्द का स्त्रीलिंग का रूप।
लंबोतरा-(हिं०वि०) लंबे आकार का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लकड़बग्घा-(हिं०पुं०) एक जंगली मांसाहारी पशु जो भेड़िये से कुछ बड़ा होता है, लग्घड़ ।

लकड़हारा-(हिं०पुं०) वह जो जंगल से लकड़ी लाकर नगर में बेचता हो ।

लकड़ा-(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा कुन्दा, जुआर बाजरे आदि का सूखा डंठल ।

लकड़ी-(हिं०स्त्री०) काठ, इन्धन, छड़ी, लाठी ।

लकसी-(हिं०स्त्री०) फल आदि तोड़ने की लग्घी जिसके सिरे पर लोहे का चन्द्राकार फल लगा होता है ।

लकार-(सं०पुं०) 'ल' स्वरूप वर्ण ।

लकीर-(हिं० स्त्री०) रेखा, धारी, पंक्ति ।

लकुट-(हिं०पुं०)लगुड़, लाठी, (हिं०) पुं०) एक प्रकार क वृक्ष जिसका जामुन के आकार का फल वर्षा ऋतु में पकता है ।

लकुटी-(हिं०स्त्री०) छोटी लाठी, छड़ी

लक्कड़-(हिं०पुं०)काठ का बड़ा कुन्दा ।

लक्खी-(हिं०वि०) लाख के रंग का

लक्तक-(सं०पुं०) अलता ।

लक्ष-(सं०नपुं०) व्याज, बहाना, चिह्न, पैर (वि०) एक लाख, सौ हजार ।

लक्षण-(सं०नपुं०) चिह्न, नाम, शरीर में देख पड़ने वाले रोग के चिह्न ।

लक्षणा-(सं०स्त्री०) शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा उसके अभिप्राय का बोध होता है ।

लक्षणी-(सं०वि०) लक्षण जानने वाला

लक्षणीय-(सं०वि०) लक्षण द्वारा जाना हुआ ।

लक्षित-(सं०वि०) आलोचित, बिचारा हुआ, अनुमान से जाना हुआ ।

लक्ष्म-(सं०नपुं०) चिह्न ।

लक्ष्मी-(सं०स्त्री०) विष्णु की पत्नी पद्मा, शोभा, सौंदर्य, सम्पत्ति, लक्ष्मी; **लक्ष्मीधर**(सं०पुं०) विष्णु । **लक्ष्मीफल**-(सं०पुं०) बेल ।

लक्ष्मीसख-(सं०पुं०) राजा या धनवान पुरुष ।

लक्ष्य-(सं०नपुं०) निशाना लगाने का स्थान, जिसपर किसी प्रकार का आक्षेप किया जाय, उद्देश्य ।

लक्षघर-(हिं०पुं०) देखो लाक्षागृह ।

लखन-(हिं०पुं०) लक्ष्मण (हिं०स्त्री०) लखने या देखने की क्रिया या भाव ।

लखना-(हिं०क्रि०) अनुमान कर लेना

लखपती(हिं०पुं०) जिसके पास लाखों रुपये की सम्पत्ति हो ।

लखलुट-(हिं०वि०) धन लुटाने वाला, अपव्ययी ।

लखाना-(हिं०क्रि०) दिखलाना, समझा देना ।

लखाव-(हिं०पुं०) देखो लखाउ ।

लखिमी-(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी ।

लखिया-(हिं० वि०) अनुमान करने वाला ।

लखेदना-(हिं०क्रि०) भगाना ।

लखौरी(हिं०स्त्री०) भारतवर्ष की पुराने ढंग की छोटी पतली ईंट, किसी देवता को एक लाख पत्तियाँ या फल चढ़ाना ।

लखेत-(हिं० स्त्री०) लगन होने की क्रिया ।

लग-(हिं०क्रि०वि०) पास, पर्यन्त, तक (स्त्री०)लगन, प्रेम, (अव्य०) लिये, साथ, संग ।

लगढग-(हिं०क्रि०वि०) देखो लगभग ।

लगन-(हिं०स्त्री०) लगाव, प्रवृत्ति का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी ओर लगना, प्रेम, लौ, देखो लग्न।

लगनपत्री-(हिं० स्त्री०) विवाह के मुहूर्त का पत्र जो कन्या का पिता वर के पिता के पास भेजता है।

लगना-(हिं०क्रि०) मिलना, सटना, चिपकाया जाना, जमना, उगना, स्थापित होना, चोट पहुँचाना, संबंध में कोई होना, किनारे पर ठहरना-जान पड़ना, गड़ना, चुभना, किसी कार्य में तत्पर होना, निश्चय होना, गाय भैंस आदि का दुहा जाना, ठीक बैठना, जलना, इकट्ठा होना, मूल्य निर्धारित होना, सधना, जान पड़ना, प्रभाव पड़ना, सड़ना, गलना, किसी पदार्थ का तल में बैठना, मला जाना।

लगनि-(हिं०स्त्री०) देखो लगन।

लगनी(हिं०स्त्री०) छोटी थाली।

लगभग-(हिं०क्रि०वि०) प्रायः।

लगमात-(हिं०स्त्री०) स्वरो के चिह्न जो उच्चारण के लिये व्यञ्जनों में जोड़े जाते हैं।

लरग-(हिं०पुं०) लग्घड़ नाम का पक्षी

लगव-(हिं०वि०) मिथ्या, झूठ, असत्य

लगवाना-(हिं०क्रि०) लगाने का काम दूसरे से कराना, दूसरे को लगाने में प्रवृत्त करना।

लगातार-(हिं०क्रि०वि०) एक के बाद एक।

लगान-(हिं०पुं०)लगने या लगाने की क्रिया, भूमिकर जो किसान भूस्वामी को देता है।

लगाना-(हिं०क्रि०) मिलाना, चिपकाना, जोड़ना, नियुक्त करना, प्रवृत्त करना, फैलाना, नाव या जहाज को छिछले किनारे पर चढ़ाना, चिह्नित करना, किसी के प्रति दुर्भाव उत्पन्न करना, छुआना, आँकना, धँसाना, गाय भैंस को दुहना, क्रम में रखना, चोट पहुँचाना, अभिमान करना, वृक्ष जमाना, दाँव पर रखना।

लगाम-(फा०स्त्री०) घोड़े के मुंह में रखने की बाग, रास।

लगाय-(हिं०स्त्री०) प्रेम।

लगार-(हिं०स्त्री०) बंधेज, लगावमेली, लगन, प्रीति, टिकान, किसी घर के ऊपरी भाग से मिला हुआ कोई ऐसा स्थान जहाँ से वहाँ कोई आ जा सकता है।

लगालगी-(हिं०स्त्री०) लाग, संबंध, मेल।

लगाव-(हिं०पुं०) संबंध। **लगावट**-(हिं०स्त्री०) प्रीति, प्रेम, संबंध।

लगावन-(हिं०क्रि०) देखो लगाना।

लगित-(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ।

लगुड़-(सं०पुं०) दण्ड, डंडा, लाठी।

लगूर-(हिं०स्त्री०) लाङ्गूल, पोंछ।

लगौहां-(हिं०वि०) जिसको लगन लगाने की अभिलाषा हो।

लग्गा-(हिं०पुं०)लंबा बाँस।

लग्गी-(हिं०स्त्री०) लंबा बाँस।

लग्घड़-(हिं०पुं०) श्येन पक्षी, बाज, लकड़बग्घा।

लग्घा, लग्घी(हिं०) देखो लग्गा, लग्गी

लग्न-(सं०नपुं०) वह शुभ मुहूर्त जिसमें कोई शुभ कार्य किया जाता है, विवाह का समय, (वि०) लगा हुआ, मिला हुआ।

लघिमा-(सं०स्त्री०)लघुत्व, छोटापन।

लघीयस-(सं०वि०) बहुत छोटा या हलका।

लघु-(सं०नपुं०) व्याकरण में वह स्वर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो एक ही मात्रा का होता है यथा अ, इ, उ, ए, ओ, आदि, (वि०) हलका, छोटा। **लघुकाय**-(सं०पुं०) नाटे शरीर का। **लघुक्रिया**-(सं०स्त्री०) स्त्री०) तुच्छ कार्य। **लघुता**-(सं० स्त्री०) तुच्छता, हलकापन। **लघुतुपक**-(सं०स्त्री०) तमंचा, पिस्तौल।

लघुत्तमापवर्तक-(सं०पुं०) वह सबसे छोटी संख्या जो दो या अधिक संख्याओं से बिना शेष के विभाजित हो सके।

लघुत्व-(सं०पुं०) तुच्छता, छोटापन, हलकापन। **लघुदुन्दुभि**-(सं०पुं०) डुगडुगी। **लघुद्राक्षा**-(सं० स्त्री०) किशमिश। **लघु भोजन**-(सं०नपुं०) हलका भोजन। **लघुमति**-(सं०वि०) छोटी बुद्धिवाला, मूर्ख। **लघुराशि**-(सं०स्त्री०) छोटी संख्या। **लघुशंका**-(सं० स्त्री०) मूत्रोत्सर्ग। **लघुशंख**-(सं०पुं०) घोंघा। **लघुहृदय**-(सं० वि०) चंचल चित्त वाला।

लघूकर-(सं०नपुं०) काटना, छांटना।

लघूक्ति-(सं०स्त्री०) कम बोलना।

लघ्वाशी-(सं०वि०) कम खानवाला।

लघ्वाहार-(सं०पुं०) हलका भोजन।

लङ्क-(सं०स्त्री०) कटि, कमर।

लङ्कानाथ-(सं०पुं०) रावण।

लङ्का-(सं०स्त्री०) रावण का राज्य।

लङ्केश, लङ्केश्वर-(सं०पुं०) रावण।

लङ्गूल-(सं० नपुं०) लांगूल, पोंछ।

लङ्घक-(सं०वि०) लाँघने वाला, सीमा के बाहर जाने वाला।

लङ्घन-(सं०नपुं०) अनाहार, उपवास।

लङ्घना-(सं०स्त्री०) उपेक्षा।

लङ्घनीय-(सं०वि०) लाँघने योग्य।

लङ्घित-(सं०लि०) जो लाँघा गया हो।

लचक-(हिं०स्त्री०) लचकने की क्रिया या भाव, झुकाव। **लचकना**-(हिं०क्रि०) झुकना, लचना, **लचकनि**-लचक, लचीलापन।

लचकाना-(हिं०क्रि०) झुकाना।

लचकीला-(हिं०वि०) लचकने योग्य

लचन-(हिं०स्त्री०) देखो लचक।

लचना-(हिं०क्रि०) लचकना।

लचनि-(हिं०स्त्री०) लचक। **लचलचा**-(हिं०वि०) लचीला।

लचाना-(हिं०क्रि०) लचकाना, झुकाना

लच्छ-(हिं०पुं०) लक्ष्य, बहाना, सौ हजार की संख्या, लाख।

लच्छण-(हिं०पुं०) स्वभाव, लच्छन।

लच्छन-(हिं०पुं०) देखो लक्षण।

लच्छना-(हिं०क्रि०) देखो लखना।

लच्छमी-(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी।

लच्छा-(हिं०पुं०) झुप्पा, गुच्छा।

लच्छि-(हिं०पुं०) एक लाख की संख्या, (स्त्री०) लक्ष्मी। **लच्छिनाथ**-(हिं० पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु। **लच्छित**-लक्ष्य किया हुआ, देखा हुआ।

लच्छी-(हिं०स्त्री०) कलावत्तू, सूत, रेशम आदि की लपेटी हुई अंटी।

लछन-(हिं०पुं०) देखो लक्षण।

लछना-(हिं०क्रि०) देखो लखना।

लछमन-(हिं०पुं०) देखो लक्ष्मण।

लछमी-(हिं०स्त्री०) देखो लक्ष्मी।

लछारा-(हिं०वि०) लंबा।

लज-(हिं०स्त्री०) देखो लाज, लज्जा।

लजना-(हिं०क्रि०) लजाना। **लजवाना**-(हिं०क्रि०) दूसरे को लज्जित करना;

लजाधुर-(हिं०वि०) लजालू नाम का पौधा। **लजाना**-(हिं०क्रि०) लज्जित होना या करना।

लजारू, लजालू-(हिं०पुं०) **लजाधुर**-नाम का पौधा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लजावन-(हिं०क्रि०) लजाना।
लजियाना-(हिं०क्रि०) लजाना।
लजीला-(हिं०वि०) लज्जायुक्त।
लजुरी-(हिं०स्त्री०) कुवें से पानी निकालने की रस्सी।
लजोर-(हिं०वि०) लज्जावान।
लज्जा-(सं०स्त्री०) अन्तःकरण की वह स्थिति जिसके कारण दूसरे के सामने वृत्तियाँ संकुचित हो जाती हैं, लाज।
लज्जालु-(हिं०वि०) लज्जाशील।
लज्जाशील-(सं०वि०) जो बात बात में लज्जा करता हो। **लज्जाशून्य**-(सं०वि०) निर्लज्ज। **लज्जाहीन**-(सं०वि०) निर्लज्ज, **लज्जित**-(सं० वि०) लजाया हुआ।
लच्छन-(हिं०पुं०) देखो लक्षण।
लट-(हिं०स्त्री०) सिर के बालों का समूह जो नीचे तक लटका रहता है, बालों का गुच्छा,।
लटक-(हिं०स्त्री०) झुकाव, लचक।
लटकन-(हिं०पुं०) नीचे की ओर लटकने की क्रिया या भाव, लगे हुए रत्नों का गुच्छा, नाक में पहिरने का झुमका, एक वृक्ष जिसके फूलों से लाल रंग निकलता है
लटकना-(हिं०क्रि०) झूलना, टंगना, लचकना, झुकना, दुविधा में पड़े रहना, नम्र होना। **लटकवाना**-(हिं०क्रि०) लटकाने का काम दूसरे से कराना।
लटका-(हिं०पुं०) गति, चाल, किसी शब्द या वाक्य का बारंबार प्रयोग, बनावटी चेष्टा, हाव भाव,। आसरे में रखना, लचकाना, या झुकाना
लटकीला-(हिं०वि०) झूमता हुआ।
लटकौंवा-(हिं०वि०) लटकने वाला।
लटना-(हिं० क्रि०) ढीला पड़ना, शिथिल होना, व्याकुल होना, दुर्बल होना, ललचाना।
लटपटा-(हिं०व०) लड़खड़ाता हुआ, टूटा फूटा, अशक्त, अव्यवस्थित,
लटपटान-(हिं०स्त्री०) लड़खड़ाहट।
लटपटाना-(हिं०क्रि०) लड़खड़ाना, लुभाना, डिगना।
लटालु-(हिं०वि०) लोलुप, लंपट, बुरा,
लटपटी-(हिं०स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा।
लटापोट-(हिं०वि०) मुग्ध, मोहित।
लटिया-(हिं०स्त्री०) सूत आदि का लच्छा, आँटी।
लटी-(हिं०स्त्री०) असत्य वार्ता।
लटुआ-(हिं०पुं०) देखो लट्टू।
लटूरी-(हिं०स्त्री०) अलक, केश।
लट्टू-(हिं०पुं०) गोल बट्टे के आकार का एक खिलौना जिसमें सूत लपेट कर तथा फेंक कर पृथ्वी पर नचाया जाता है, लट्टू के आकार की कोई वस्तु।
लट्ठ-(हिं०पुं०) बड़ी लाठी, सोंटा,
लठ्ठबाज-(हिं०वि०) लाठी लड़ने वाला, बड़ी लाठी बाँधने वाला।
लठ्ठबाजी-(हिं०स्त्री०) लाठियों की लड़ाई। **लठ्ठमार**-(हिं०वि०) अप्रिय, कठोर, कर्कश।
लठ्ठा-(हिं०पुं०) लकड़ी का मोटा लंबा टुकड़ा।
लठियल-(हिं०वि०) लाठी बाँधने वाला
लठैत-(हिं०पुं०) लाठी लड़ने वाला।
लड़ंत-(हिं०स्त्री०) लड़ाई, सामना।
लड़-(हिं०स्त्री०) पंक्ति, माला, रस्सी का एक तार।
लड़कई-(हिं०स्त्री०) बाल्यावस्था।
लड़कखेल-(हिं०पुं०) बालकों का एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खेल, अति सहज कार्य, लड़कपन-(हिं०पुं०) बाल्यावस्था। लड़कबुद्धि-(हिं०स्त्री०) बालकों के समान बुद्धि

लड़का-(हिं०पुं०) बालक, पुत्र, बेटा।

लड़की-(हिं०स्त्री०) बालिका, बेटी।

लड़कोरी-(हिं०वि०स्त्री०) जिस स्त्री के के गोद में लड़का हो।

लड़खड़ाना-(हिं०क्रि०) डगमगा कर गिरना, झोका खाकर नीचे आ जाना

लड़खड़ी-(हिं०स्त्री०) डगमगाहट।

लड़ना-(हिं०क्रि०) झगड़ा करना, भिड़ना, मल्लयुद्ध करना, एक दूसरे को कठोर शब्द कहना, टक्कर खाना, वादाविवाद करना, टकराना।

लड़बड़ाना-(हिं०क्रि०) देखो लड़खड़ाना

लड़बाबरा-(हिं०वि०) गवाँर, अल्हड़, अनाड़ी।

लड़ाई-(हिं०स्त्री०) एक दूसरे पर चोट पहुँचाने की क्रिया या भाव, विवाद, कलह, झगड़ा, विरोध।

लड़ाका, लड़ाकू-(हिं०वि०) लड़नेवाला योद्धा, झगड़ालू।

लड़ाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को लड़ने में प्रवृत्त करना, कलह के लिये उद्यत करना।

लड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो लड़, पंक्ति।

लड़वा, लड्डुवा-(हिं०पुं०) मोदक, लड्डू

लड़ैता-(हिं०वि०) लाड़ला, दुलारा।

लड्डू-(हिं०पुं०) मोदक।

लढ़िया-(हिं०स्त्री०) बैलगाड़ी।

लत-(हिं०स्त्री०) दुर्व्यसन, बुरी टेव।

लतखोर, लतखोरा-(हिं०वि०) वह जो सर्वदा लात खाता हो, नीच, दुष्ट, द्वार पर पड़ा हुआ पैर पोछने का टाट

लतड़ी-(हिं०स्त्री०) केसारी नामक अन्न।

लतपत-(हिं०वि०) देखो लथपथ।

लतमर्दन-(हिं०स्त्री०) पैरों से रौंदने की क्रिया।

लतर-(हिं०स्त्री०) बेल, बल्ली, लता।

लतरी-(हिं०स्त्री०) मोट, खेसारी।

लता-(सं०स्त्री०) वल्ली, बेल, कोमल शाखा।

लताकुञ्ज-(सं०पुं०) लताओं से छाया हुआ स्थान। लतागृह-(सं०नपुं०) लतामण्डप।

लताड़ना-(हिं०क्रि०) लात मारना।

लतापत्ता-(हिं०पुं०) जड़ी बूटी।

लताभवन-(सं०नपुं०) लताओं का कुंज

लतामणि-(सं०पुं०) प्रवाल, मूंगा।

लतियर, लतियल-(हिं०वि०) जो सर्वदा लात खाता हो, लतखोर।

लतियाना-(हिं०क्रि०) पैरों से रौंदना, लात मारना।

लतिहर, लतिहल-(हिं०वि०) लतखोर।

लत्ता-(हिं०पुं०) फटा पुराना वस्त्र, चिथड़ा।

लत्ती-(हिं०स्त्री०) पशुओं फी लात मारने की क्रिया, कपड़े की लंबी धज्जी।

लथपथ-(हिं०वि०) जो भीग कर भारी हो गया हो।

लथाड़-(हिं०वि०) भूमि पर पटक कर घसीटने की क्रिया, चपेट, हानि।

लथाड़ना, लथेड़ना-(हिं०क्रि०) भूमि पर पटक कर घसीटना, हराना, शिथिल करना, थकाना, डांटना।

लदन-(हिं०स्त्री०) लदाव। लदना-(हिं०क्रि०) परिपूर्ण होना, बोझ रक्खा जाना, बंदी होना।

लदलद-(हिं०क्रि०वि०) किसी गीली वस्तु के गिरने के शब्द का अनुकरण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लदवाना-(हिं०क्रि०) लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाऊ-(हिं०वि०) देखो लदाव।
लदाना-(हिं०क्रि०) लादने का काम दूसरे से कराना।
लदाफंदा-(हिं०वि०) बोझ से भरा हुआ।
लदाव-(हिं०पुं०) भार, बोझ।
लदुवा, लद्दू-(हिं०वि०) बोझ ढोने वाला, जिस पर भार रखा जावे।
लद्धड़-(हिं०वि०) आलसी।
लद्धना-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, पाना
लप-(हिं०पुं०) (स्त्री०) लचीली वस्तु को पकड़ कर हिलाने से उत्पन्न शब्द
लपक-(हिं०स्त्री०) ज्वाला, लपट, **लपकना**-(हिं०क्रि०) दौड़ पड़ना, झपटना, किसी वस्तु को लेने के लिये झट से हाथ फैलाना। **लपककर**-(क्रि०वि०) बड़े वेग के साथ।
लपझप-(हिं० वि०) चंचल, चपल, अधीर।
लपट-(हिं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला वायु में फैली हुई गरमी, गन्ध।
लपटना-(हिं०क्रि०) आलिंगन करना उलझना, फंसना, घिरा जाना।
लपटा-(हिं०पुं०) कोई गाढ़ी गीली वस्तु, कढ़ी, लेई, लपसी।
लपटाना-(हिं० क्रि०) गले लगाना, लपेटना।
लपना-(हिं०क्रि०) झुकना, लचना।
लपलपाना-(हिं०क्रि०) झोंके के साथ इधर उधर लचना, किसी कोमल वस्तु का हिलना, चमकना। **लप-लपाहट**-(हिं०स्त्री०) प्रकाश की चमक, झलक।
लपसी-(हिं०स्त्री०) कोई गीली गाढ़ी वस्तु।
लपाना-(हिं०क्रि०) लचीली वस्तु को झोंक से इधर उधर फटकारना।
लपेट-(हिं०स्त्री०) ऐंठन, मरोड़, उलझन, फँसाव, पकड़, बन्धन। **चक्कर लपेटन**-(हिं०स्त्री०) लपेट, ऐंठन, मरोड़, फँसाव। **लपटना**-(हिं०क्रि०) घुमाव या फेर के साथ चारों ओर फँसाना, फैली हुई वस्तु को गठरी के रूप में करना, फँसाना, लेप करना, पोतना।
लपेटवाँ-(हिं०वि०) लपेट कर बनाया हुआ, घुमाव फिराव का, गूढ़ अर्थ का
लप्पा-(हिं०पुं०) छत की धरन में लगाई हुई लकड़ी।
लबड़धोंधों-(हिं० स्त्री०) गड़बड़ी, अन्याय, अनीति,
लबड़ना-(हिं०क्रि०) झूठ बोलना।
लबदा-(हिं०पुं०) मोटा बेडौल डंडा।
लबदी-(हिं०स्त्री०) छोटी पतली छड़ी
लबरा-(हिं०वि०) झूठ बोलने वाला, गप हाँकने वाला।
लबार-(हिं० वि०) मिथ्यावादी, झूठ बोलने वाला, गप्पी। **लबारी**-(हिं० वि०) झूठा।
लबी-(हिं०स्त्री०) ऊख का पका हुआ गाढ़ा रस, राब।
लबेद-(हिं०पुं०) दन्तकथा, लोकाचार
लबेदा-(हिं०पुं०) मोटा बड़ा डंडा।
लबेदी-(हिं० स्त्री०) मोटा छोटा डंडा।
लब्ध-(सं०वि०) प्राप्त, उपार्जित, कमाया हुआ, गणित में भाग करने से आया हुआ फल। **लब्धकाम**-(सं० वि०) जिसकी मनोकामना पूरी हो गई हो।
लब्धकीर्त्ति-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लब्धचेतन-(सं०वि०) जिसने पुनः ज्ञान प्राप्त किया हो।
लब्धांक-(सं०पुं०) गणित करने पर जो अंक प्राप्त हो।
लब्धावकाश, लब्धावसर-(सं० वि०) जिसने अवकाश या छुट्टी पाई हो।
लब्धि-(सं०स्त्री०) लाभ, प्राप्ति, प्राप्त संख्या।
लब्धोदय-(सं०वि०) सौभाग्य प्राप्त।
लभन-(सं०नपुं०) प्राप्ति।
लभ्य-(सं०वि०) उचित पाने योग्य,
लमकना-(हिं०क्रि०) उत्कण्ठित होना लपकना।
लमछड़-(हिं०वि०) लंबा और पतला
लमतडंग-(हिं०वि०) बहुत लंबा तथा ऊँचा।
लमधी-(हिं०पुं०) समधी का पिता।
लमाना-(हिं०क्रि०) दूर चले जाना, लंबा होना।
लम्प-(सं०वि०) व्यभिचारी, कामुक।
लम्पट--(सं०पुं०) उछाल।
लम्ब-(सं०पुं०) उत्कोच, विषुवत रेखा के समानान्तर रेखा, (वि०) दीर्घ, लंबा। **लम्बतडंग**-(हिं०वि०) ताड़-के समान लंबा।
लम्बन-(सं०नपुं०) आश्रय, झूलने की क्रिया।
लम्बमान-(सं०वि०) लंबायमान (पदार्थ)
लम्भ-(सं०पुं०) लाभ। **लम्भक**-(सं० वि०) लाभ करने वाला; **लम्भन**-(सं०नपुं०) प्रतिलम्भ, लाभ।
लय-(सं०पुं०) विनाश, लोप, प्रलय, गाने और बजाने का मेल, मूर्छा, गूढ़ अनुराग, लगन।
लयन-(सं०नपुं०) विश्राम, शान्ति।
लरकई-(हिं०स्त्री०) लड़कपन।
लरकना-(हिं०क्रि०) देखो लटकना।
लरकिनी-(हिं०स्त्री०) देखो लड़की
लरखराना-(हिं०स्त्री०) लड़खड़ाना।
लरजना-(हिं०क्रि०) हिलना, काँपना।
लरझना-(हिं०वि०) प्रचुर, बहुत अधिक।
लरना-(हिं०क्रि०) देखो लड़ना।;
लरनि-(हिं०स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा
लराई-(हिं०स्त्री०) लड़ाई।
लरिकई-(हिं०स्त्री०) लड़कपन।
लरिक सलोरी-(हिं०स्त्री०) लड़कपन।
लरिका-(हिं०पुं०) देखो लड़का।
लरिकाई-(हिं०स्त्री०) लड़कपन।
लरी-(हिं०स्त्री०) देखो लड़ी।
ललक-(हिं०स्त्री०) प्रबल इच्छा; **ललकना**-(हिं०क्रि०) ललचना, उमंग से भरना।
ललकार-(हिं०स्त्री०) लड़ने के लिये बढ़ावा; **ललकारना**-(हिं०क्रि०) लड़ने के लिये बढ़ावा देना, उत्साहित करना।
ललचना-(हिं०क्रि०) लालच करना, लालसा करना, अधीर होना। **ललचाना**-(हिं०क्रि०) किसी के मन में लालसा उत्पन्न करना। **ललचौंहां**-(हिं०वि०) लालच से भरा हुआ।
ललन-(सं०नपुं०) केलि, क्रीड़ा, (पुं०) दुलारा लड़का।
ललना-(सं०स्त्री०) कामिनी, स्त्री, जीभ,।
लला-(हिं०पुं०) प्यारा पुत्र, बच्चों के लिये प्यार का शब्द।
ललाई-(हिं०स्त्री०) लालिमा, लाली।
ललाट-(सं०नपुं०) मस्तक, माथा, भाग्य का लेख; **ललाटपटल**-(सं० नपुं०) मस्तक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ललाना-(हिं०क्रि०) ललचाना।
ललाम-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर, लाल लाल, प्रधान श्रेष्ठ, (सं०नपुं०) चिह्न सींग।
ललित-(सं०वि०) मनोहर, सुन्दर
ललितकला-(सं०स्त्री०) वे कला या विद्या जिनके व्यक्त करने में किसी प्रकार के सौंदर्य की अपेक्षा होती है।
ललिता-(सं०स्त्री०) कस्तूरी।
लली-(हिं०स्त्री०) लड़की के लिये प्रेम का शब्द, दुलारी लड़की।
ललौंहां-(हिं०वि०) ललाई लिये हुए।
लल्ला-(हिं०पुं०) देखो लला।
लल्लो-(हिं०स्त्री०) जिह्वा- जीभ।
लल्लोंचप्पो, लल्लोपत्तो-(हिं०स्त्री०) ठकुरसुहाती।
लव-(सं०पुं०) बहुत छोटा मात्रा, कटाई, अल्प समय।
लवंग-(सं०नपुं०) एक वृक्ष जिसकी कली लौंग कहलाती है; **लवंगलता**-(सं०स्त्री०) समोसे के आकार की एक बंगला मिठाई।
लवण-(सं०नपुं०) नमक, नोन।
लवणता-(सं०स्त्री०) नमकपन।
लवणाकर-(सं०पुं०) नमक की खान।
लवन-(सं०नपुं०) छेदन, खेत के उपज की कटाई, लुनाई; (हिं०क्रि०) पके हुए अन्न के पौधों को खेत में से काटकर इकटठा करना; (हिं०स्त्री०) लुनाई, अन्न काटने का शुल्क।
लवर-(हिं०स्त्री०) अग्नि की लपट या ज्वाला।
लवलासी-(हिं०स्त्री०) प्रेम का लगाव
लवलीन-(हिं०वि०) तन्मय, निमग्न
लवलेश-(हिं०पुं०) अत्यन्त थोड़ा मात्रा थोड़ा संसर्ग।
लवाई-(हिं०स्त्री०) खेत की उपज की कटाई, लवने का शुल्क।
लवासी-(हिं०वि०) बकवादी।
लवित्र-(सं०नपुं०) हंसिया, हंसुआ।
लशुन-(सं०नपुं०) लहसुन।
लषना-(हिं०क्रि०) देखो लखना।
लस-(सं०पुं०) चिपकने या चिपकाने का गुण।
लसना-(हिं०क्रि०) चिपकाना, सटाना शोभित होना
लसनि-(हिं०स्त्री०) स्थिति, शोभा।
लसम-(हिं०वि०) जो खरा न हो, दूषित।
लसलसा-(हिं०वि०) लसदार, चिपचिपा।
लसलसाना-(हिं० क्रि०) चिपचिया। स्त्री०) लसदार होने का भाव।
लसित-(हिं०वि०) शोभित।
लसी-(हिं०स्त्री०) लस, मिला हुआ लगाव, दही और पानी पेय।
लसीला-(हिं०वि०) लसदार, चिपचिपा।
लसुन-(हिं० पुं०) देखो लशुन।
लस्टम् पस्टम्-(हिं०क्रि०वि०) किसी न किसी प्रकार से।
लस्त-(हिं० वि०) अशक्त, थका हुआ, साहसहीन।
लस्सी-(हिं०स्त्री०) लस, चिपचिपाहट, छाछ, मठा।
लहँगा-(हिं०पुं०) स्त्रियों का कमर के नीचे का भाग ढांपने का घेरेदार पहरावा।
लहक-(हिं०स्त्री०) चमक, आग की लपट, छवि, शोभा; (हिं०क्रि०) आग का दहकना, उत्कंठित होना, । **लहकाना**-(हिं० क्रि०) झोंका देना, भड़काना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लहकारना-(हिं०क्रि०) ताव दिलाना ललकारना।

लहना-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, (पुं०) उधार दिया हुआ धन, किसी कारण मिलने वाला धन।

लहनी-(हिं०स्त्री०) प्राप्ति, फल, भोग

लहबर-(हिं०पुं०) ढीला ढाला पहरावा, चोगा, झंडा।

लहर-(हिं०स्त्री०) बड़ा हिलोरा, उमंग वक्रगति, मन की मौज, शरीर में रह-रहकर उठने वाली पीड़ा, आनन्द की उमंग।

लहरना-(हिं०क्रि०) देखो लहराना।

लहरा-(हिं०पुं०) लहर, तरंग, मौज,

लहराना-(हिं०क्रि०) वायु के वेग से इधर उधर हिलना, डुलना, उत्कंठित होना।

लहरिया-(हिं०वि०) ऐसी समानान्तर रेखाओं का समूह जो सीधी न जाकर क्रम से मुड़ती हुई जाती हैं।

लहरी-(सं०स्त्री०) लहर, तरंग, (वि०) तरंगी, मनमौजी।

लहलह-(हिं०वि०) लहलहाता हुआ, आनन्द से फूला हुआ। **लहलहा**-(हिं०वि०) आनन्दी,। **लहलहाना**-(हिं०क्रि०) प्रफुल्ल होना, सूखे पेड़ पौधों में नई पत्तियाँ निकलना।

लहसुन-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ में गोल गाँठ होती है।

लहसुनिया-(हिं०पुं०) धूमिल रंग का एक बहुमूल्य रत्न।

लहा-(हिं०पुं०) देखो लाह।

लहालोट-(हिं०वि०) हँसी में मग्न, मोहित। **लहास**-(हिं०पुं०) शव।

लहासी-(हिं०स्त्री०) नाव या जहाज बाँधने की मोटी रस्सी।

लहि-(हिं०अव्य०) पर्यन्त, तक।

लहु-(हिं०अव्य०) देखो लौ।

लहुरा-(हिं०वि०) वय में छोटा।

लहू-(हिं०पुं०) रक्त, रुधिर।

लाँक-(हिं०पुं०) कटि, कमर।

लाँग-(हिं०स्त्री०) धोती का वह भाग जो कमर में पीछे की ओर खोंसा जाता है, काछ।

लांगल-(हिं०पुं०) खेत जोतने का हल, पूंछ। **लांगूली**-(हिं०पुं०) बन्दर।

लाँघना-(हिं०क्रि०) उछल कर पार करना, डांकना।

लांच-(हिं०स्त्री०) उत्कोच, घूस।

लांछन-(हिं०पुं०) देखो लाञ्छन,

लांबा-(हिं०वि०) देखो लंबा।

लाइ-(हिं०पुं०) लुक, अग्नि।

लाइची-(हिं०स्त्री०) देखो इलाइची।

लाई-(हिं०स्त्री०) धान का लावा, चुगली।

लाकड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो लकड़ी।

लाक्षणिक-(सं०पुं०) वह जो लक्षणों को जानता हो। (वि०) लक्षण संबंधी।

लाक्षा-(सं०स्त्री०) लाख, लाह।

लासारस-(सं०पुं०) महावर।

लाख-(हिं० वि०) सौ हजार, बहुत अधिक। (पुं०) सौ हजार की संख्या

लाखना-(हिं०क्रि०) लाख लगाकर किसी किसी वस्तु का छेद बन्द करना

लाखपति-(हिं०पुं०) देखो लखपती।

लाग-(हिं०स्त्री०) संपर्क, युक्ति, उपराचढ़ी, विशेष कौशल का स्वांग जिसकी रचना जल्दी समझ में न न आवे, बैर (क्रि०वि०) पर्यन्त, तक। **लागडांट**-(हिं०स्त्री०) प्रति स्पर्धा, शत्रुता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लागत-(हिं०स्त्री०) वह व्यय जो किसी वस्तु के तैयार करने में लगे।
लागना-(हिं०क्रि०) देखो लगना।
लागि-(हिं०अव्य०) निमित्त, लिये हेतु, से (क्रि०वि०) पर्यन्त तक।
लागू-(हिं०वि०) लगने या प्रयोग में आने योग्य।
लागे-(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।
लाघव-(सं० नपुं०) अल्पत्व, कमी, लघुता, अल्पता, हाथ की चातुरी।
लाङ्गूल-(सं०नपुं०) पूंछ।
लांगुली-(सं०पुं०) बन्दर।
लाची-(हिं०स्त्री०) इलायची।
लाज-(हिं०स्त्री०) लज्जा।
लाजक-(सं०पुं०) धान का लावा।
लाजना-(हिं०क्रि०) लज्जित होना।
लाजभक्त-(सं०पुं०) लावे का भात।
लाजमण्ड-(सं०पुं०) लावा पका कर इसमें से निकाला हुआ माँड़।
लाजवंत-(हिं०वि०) जिसको लज्जा हो
लाजशक्तु-(सं०पुं०) लावे का सत्तू।
लाजा-(सं०स्त्री०) भूना हुआ धान, लावा।
लाञ्छन-(सं०पुं०) चिह्न, दोष, कलंक
लाट-(हिं०स्त्री०) मोटा, ऊँचा खंभा।
लाटी-(हिं०स्त्री०) ओंठों तथा मुख का सूख जाना।
लाठ-(हिं०पुं०) देखो लाट।
लाठी-(हिं०स्त्री०) लकड़ी, डंडा।
लाड़-(हिं०पुं०) बच्चों का प्यार या दुलार।
लाड़ला-(हिं०वि०) दुलारा। **लाड़ली**-(हिं०वि०स्त्री०) दुलारी।
लाड़ू-(हिं०पुं०) लड्डू, मोदक।
लात-(हिं०स्त्री०) पैर, पाँव, पैर का आघात।
लाद-(हिं०स्त्री०) लादने की क्रिया, आँत, अतड़ी।
लादना-(हिं०क्रि०) पीठपर भार रखना पीठ पर उठा लेना।
लादिया-(हिं०पुं०) बोझ लादने वाला।
लादी-(हिं०स्त्री०) कपड़ों की गठरी जो पशु की पीठ पर लादी जाती है।
लाधना-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, पाना
लाना-(हिं०क्रि०) साथ लेकर आना, उत्पन्न करना।
लाने-(हिं०अव्य०) वास्ते, लिये।
लाप-(सं०पुं०) कथन, वार्ता।
लापी-(सं०वि०) कहने वाला।
लाभ-(सं०पुं०) प्राप्ति, उपकार, भलाई। **लाभकारक**-(सं०वि०) लाभ दायक। **लाभकारी**-(सं०वि०) लाभ करने वाला। **लाभदायक**-(सं०वि०) गुणकारी।
लाम-(हिं०पुं०) सेना, बहुत से मनुष्यों का समूह।
लामे--(हिं०क्रि०वि०) दूर पर।
लायची-(हिं०स्त्री०) देखो इलायची।
लार-(हिं०स्त्री०) वह पतला लसदार थूक जो मुंह में से तार के रूप में निकलता है, (क्रि०वि०) पीछे साथ।
लारू-(हिं०पुं०) लड्डू।
लाल-(हिं०पुं०) छोटा प्रिय बालक दुलार, प्यार, लाल रंग की एक प्रसिद्ध छोटी चिड़िया, मानिक नाम का रत्न (वि०) लाल रंग का, अति क्रुद्ध।
लालच-(हिं०पुं०) तीव्र लालसा, लोभ
लालची-(हिं०वि०) अति लोभी।
लालन-(सं०नपुं०) प्रेमपूर्वक बालकों का आदर, लाड़ प्यार। (हिं०पुं०) प्रिय बालक, । **लालना**-(हिं०क्रि०) लाड़ करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लालमन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का लाल तोता जिसका शरीर लाल, डैने हरे, चोंच गुलाबी और दुम काली होती है।
लालमिर्च-(हिं०स्त्री०) मिरचा, मरचा
लालयितव्य-(सं०वि०) लालन पालन करने योग्य।
लालसा-(सं०स्त्री०) अधिक अभिलाषा, उत्सुकता।
लालसिखी-(हिं०पुं०) मुरगा।
लालसी-(हिं०वि०) अभिलाषी, उत्सुक।
लाला-(सं०स्त्री०) मुख से निकलने सूचक एक संबोधन का शब्द, महाशय इस शब्द का व्यवहार पंजाब में अधिकतर होता है, कायस्थ जाति सूचक शब्द, छोटे प्रिय बच्चे के लिये संबोधन।
लालायित-(सं०वि०) ललचाया हुआ
लालित्य-(सं०स्त्री०) होनेका भाव। मनोहरता, सुन्दरता। अरुणाई, ललाई
लाली-(सं०स्त्री०) लाल होने का भाव
लाले-(हिं०पुं०) लालसा, अभिलाषा
लावण्य-(सं०नपुं०) लाणत्व, अत्यन्त सुन्दरता।
लावनता-(हिं०स्त्री०) देखो लावण्य।
लावना-(हिं०क्रि०) लगाना, स्पर्श करना, देखो लाना।
लावनि-(सं०स्त्री०) सौंदर्य, लावण्य।
लावा-(हिं०पुं०) भूना हुआ धान।
लषना-(हिं०क्रि०) देखो लखना।
लास-(सं०पुं०) एक प्रकार का नाच, मटक, जूस।
लकासा-(सं०पुं०) नाचने वाला, मोर
लासा-(हिं०पुं०) कोई लसदार या चिपचिपी वस्तु वह चिपचिपा पदार्थ जिससे बहेलिये चिड़ियों को फँसाते हैं।
लास्य-(सं०नपुं०) भाव और ताल सहित नाच।
लाह-(हिं०स्त्री०) लाख, चपड़ा (पुं०) लाभ।
लाही-(हिं०स्त्री०) लाल रंग का वह छोटा कीड़ा जो वृक्षों पर लाह उत्पन्न करता है। (वि०) मटमैले लाल रंग का।
लाहु (हिं०पुं०) लाभ।
लिए-(हिं०) हिंदी के कारक का एक चिह्न जो संप्रदान में प्रयोग किया जाता है, जिस शब्द के साथ यह लगाया जाता है उसके अर्थ या निमित्त किसी क्रिया का होना सूचित होता है यथा मैं तुम्हारे लिये पुस्तक लाया हूँ।
लिक्खाड़-(हिं०पुं०) बहुत लिखनें वाला, बड़ा भारी लेखक।
लिक्षा-(सं०स्त्री०) जू का अंडा, लीख।
लिखत-(हिं०स्त्री०) लिखी हूई बात।
लिखन-(सं० नपुं०) लिपि, लिखावट
लिखना-(हिं०क्रि०) किसी नुकीली वस्तु से रेखा रूप में चिह्नित करना, अंकित करना, स्याही में डुबाकर लेखनी से आकृति बनाना।
लिखनी-(हिं०स्त्री०) देखो लेखनी।
लिखवाई-(हिं० स्त्री०) देखो लिखाई। **लिखवाना**-(हिं०क्रि०) लिखने का काम दूसरे से कराना
लिखाई-(हिं०स्त्री०) लिखने का कार्य लिखने का ढंग, लिखावट, लिखने का शुल्क। **लिखाना**-(हिं०क्रि०) अंकित कराना, दूसरे से लिखनेका काम कराना। **लिखापढी**-(हिं०स्त्री०) पत्र व्यवहार। **लिखावट**-(हिं०स्त्री०) लिखने का ढंग। **लिखित**-(सं०वि०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिखा हुआ, (पुं०) लिपि, लेख प्रमाणपत्र।

लिङ्ग-(सं०नपुं०) चिह्न, लक्षण, हेतु, व्याकरण में वह भेद जिससे स्त्री पुरुष का पता लगता है, **लिङ्गशरीर**-(सं०पुं०) सूक्ष्म शरीर। **लिङ्गविपर्यय**-(सं०पुं०) व्याकरण में लिङ्ग का परिवर्तन।

लिङ्गानुशासन-(सं०नपुं०) व्याकरण में शब्दों के लिङ्गनिरूपण करने के नियम।

लिटाना-(हिं०क्रि०) लेटने की क्रिया कराना।

लिट्टू-(हिं०पुं०) रोटी जो विना तवे के आग पर ही सेंकी जावे, वाटी।

लिपटना-(हिं०क्रि०) चिपटना, सट जाना, तन्मय होना। **लिपटाना**-(हिं० क्रि०) चिमटाना, गले लगाना,

लिपना-(हिं०क्रि०) किसी रंग या गीली वस्तु से पोता जाना, किसी गीली वस्तु का फैल जाना। **लिपवाना**-(हिं०क्रि०) लीपने पोतने का काम दूसरे से कराना। **लिपाई**-(हिं०स्त्री०) लीपने पोतने की क्रिया या भाव, **लिपाना**-(हिं०क्रि०) रंग अथवा किसी गीली वस्तु की तह चढ़वाना।

लिपि-(सं०स्त्री०) लिखावट, वर्ण अंकित करने की पद्धति, लिखे हुए अक्षर। **लिपिकार**-(सं०पुं०) लेखक। **लिपिबद्ध**-(सं०वि०) लिखित, लिखा हुआ,

लिप्त-(सं०वि०) पोता हुआ, मिला हुआ, अनुरक्त, तत्पर, संलग्न,

लिप्सा-(सं०स्त्री०) अभिलाषा, इच्छा, लालच। **लिप्सु**-(सं०वि०) लाभ की इच्छा करने वाला।

लिबड़ी-(हिं०स्त्री०) कपड़ा लत्ता।

लिलाट, लिलार-(हिं०पुं०) देखो ललाट

लिवाना-(हिं०क्रि०) लेनेका काम दूसरे से कराना।

लिवाल-(हिं०पुं०) मोल लेने वाला।

लिवैया-(हिं०पुं०) लेने वाला।

लिहाड़ा-(हिं०वि०) नीच, निकम्मा।

लिहाड़ी-(हिं०स्त्री०) उपहास, निन्दा।

लिहित-(हिं०वि०) चाटता हुआ।

लीक-(हिं०स्त्री०) चिह्न, लकीर, रेखा, ढुर्री, गिनतीके लिए लगाया हुआ चिह्न, हद, रीति, प्रथा,

लीख-(हिं०स्त्री०) जूंका अण्डा।

लीचड़-(हिं०वि०) जल्दी से न छोड़ने वाला।

लीची (हिं०स्त्री०) एक सदाबहार वृक्ष जिसका फल खाने में मीठा होता है।

लीद-(हिं०स्त्री०) घोड़े, गधे, ऊंट, हाथी आदि पशुओं का मल।

लीन-(सं०वि०) तन्मय, मग्न।

लीनता-(सं०स्त्री०) तत्परता।

लीपना-(हिं०क्रि०) मिट्टी गोबर आदि की पतली तह चढ़ाना, पोतना;

लील-(हिं०वि०) नीला, नीले रंग का, (पुं०) नील।

लीलना-(हिं०क्रि०) निगलना।

लीला-(सं०स्त्री०) क्रीड़ा, खेल, विचित्र कार्य, कोई विचित्र कार्य, अवतारों का अभिनय, (हिं०पुं०) काले रंग का घोड़ा;

लीलाब्ज-(सं०नपुं०) लीला कमल। **लीलावतार**-(सं०पुं०) वह अवतार जिसमें विष्णु ने लीला दिखलाई थी; **लीलामनुष्य**-(सं०पुं०) छद्मवेशी मनुष्य।

लीलावती-(सं०स्त्री०) प्रसिद्ध ज्योतिर्विद भास्कराचार्य की पत्नी का नाम

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिन्होंने गणित की एक पुस्तक लिखी थी।

लीली-(हिं०वि०) देखो नीली।

लुंगाड़ा-(हिं०पुं०) नीच, लुच्चा।

लुंगी-(हिं०स्त्री०) कमर में लपेटने का छोटा टुकड़ा।

लुंज-(हिं०वि०) बिना हाथ पैर का, लंगड़ा लूला; **लुंडमुंड**-(हिं०पुं०) बिना सिर का धड़, कबंध।

लुंडा-(हिं०वि०) जिसकी पूंछ पर बाल न हों।

लुआठा-(हिं०पुं०) वह लकड़ी जिसका एक छोर जलता हो; **लुआठी**-(हिं०स्त्री०) सुलगती हुई लकड़ी।

लुआर(हिं०स्त्री०) लू।

लुक-(हिं०पुं०) आग की लपट, लौ।

लुकठी-(हिं०स्त्री०) देखो लुआठी।

लुकना-(हिं०क्रि०) आड़में छिप जाना।

लुकाना, लुकोना-(हिं०क्रि०) आड़ में रखना, छिपाना।

लुक्कायित-(सं०वि०) लुकाया हुआ, छिपाया हुआ।

लुखिया-(हि.स्त्री.) धूर्त स्त्री, वेश्या।

लुगदा-(हिं०पुं०) किसी गीली वस्तु का लोंदा; **लुगदी**-(हिं०स्त्री०) गीली वस्तु का छोटा गोला।

लुगरी-(हिं०स्त्री०) फटी पुरानी धोती।

लुगाई-(हिं०स्त्री०) स्त्री।

लुगा-(हिं०स्त्री०) पुराना वस्त्र।

लुग्गा (हिं०पुं०) देखो लूगा, वस्त्र।

लुचकना-(हिं०क्रि०) झटके से खींचना; **लुचवाना**-(हिं०क्रि०) नोचवाना,

लुचुई-(हिं०स्त्री०) मैदे की पतली पूरी, लूची।

लुच्चा-(हिं०वि०) दुराचारी, कुचाली

लुच्ची-(हिं०वि०स्त्री०) खोटी, नीच।

लुञ्चन-(सं०पुं०) उखाड़ना, नोचना,

लुञ्चित-(सं०वि०) नोचा हुआ।

लुटंत-(हिं०स्त्री०) लूट।

लुटकना-(हिं०क्रि०) देखो लटकना।

लुटना-(हिं०क्रि०) लूटा जाना,

लुटाना-(हिं० क्रि०) दूसरे को लूटने देना, व्यर्थ फेंकना या व्यय करना, अति दान करना।

लुटिया-(हिं०स्त्री०) धातु का छोटा लोटा।

लुटेरा-(हिं०पुं०) डाकू।

लुठना-(हिं०क्रि०) भूमिपर लोटना, लुड़ना; **लुड़कना**-(हिं०क्रि०) देखो **लुड़काना**; **लुड़खुड़ाना**-(हिं०क्रि०) देखो लड़खड़ाना।

लुढ़कना-(हिं०क्रि०) चक्कर खाना, ढुलकना; **लुढकाना**-(हिं०क्रि०) भूमि पर इस प्रकार चलाना कि नीचे ऊपर होता हुआ कुछ दूर तक बढ़ता जाय।

लुढियाना-(हिं०क्रि०) गोल बत्ती की तरह की सिलाई करना।

लुण्टक-(सं०पुं०) एक प्रकारका साग। **लुण्टक**-(सं०स्त्री०) लुटरा। **लुण्ठन**-(सं०नपुं०) लूटना, चुराना। **लुण्ड**-(सं०वि०) बिन हाथ पैर का, लंगड़ा। **लुण्डी**-(सं०स्त्री०) लपेटे हुए सूत की गोली।

लुतरा-(हिं०वि०) पिशुन,नटखट,**लुतरी** (हिं०वि०स्त्री०) पिशुन स्त्री।

लुनना-(हिं०क्रि०) खेत की तैयार उपज को काटना।

लुनेरा-(हिं०पुं०) खेत की उपज काटने वाला।

लुप्त-(सं०वि०) छिपा हुआ, अदृश्य,

लुबुध-(हिं०वि०) देखो लुब्ध; **लुबुधा**-(हिं०वि०) लोभी, लालची।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लुब्ध-(सं०वि०) लोभ युक्त, मोहित,
लुब्धक-(सं० पुं०) व्याध, बहेलिया, लम्पट।
लुभाना(हिं०क्रि०) लुब्ध होना, मोह में पड़ना, लालच में पड़ना, मोहित करना, ललचाना।
लुभित-(सं०वि०) लुभाया हुआ
लुटकी,लुरकी -(हिं० स्त्री०) कान में पहरने की छोटी बाली, मुरकी।
लुरना (हिं०क्रि०) लहराना, झूलना,
लुरयाना-(हिं०क्रि०) सहसा आ जाना।
लुलना-(हिं०क्रि०) देखो लुरना।
लुलत-(सं०वि०) झूलता हुआ
लुवार-(हिं०पुं०) वेग को गरम हवा, लू
लुहना-(हिं०क्रि०) देखो लुभाना।
लुहार-(सं०पुं०)लोहेका बनाने वाला, **लुहारिन**-(हिं० स्त्री०) लुहार की स्त्री; **लुहारी**-(हिं०स्त्री०) लोहे की वस्तु बनाने का काम।
लू-(हिं०स्त्री०) ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा।
लूक-(हिं०स्त्री०) अग्नि की ज्वाला, लुआठी, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा, उल्का, टूटता तारा।
लूकट-(हिं०पुं०) लुआठी।
लूकना-(हिं०क्रि०) आग लगाना,
लूका-(हिं०पुं०) अग्नि की ज्वाला या लपेट, लुआठी।
लूकी(हिं०स्त्री०) स्फुलिंग, चिनगारी।
लुक-(हिं०वि०) रुखा, रूक्ष।
लूगा-(हिं०पुं०) वस्त्र, कपड़ा।
लूट-(हिं०स्त्री०) डकैती, लूटने से मिला हुआ माल; **लूटना**-(हिं०क्रि०) छीनना, धोखे से या अन्याय पूर्वक किसी का धन हर लेना,
लूटमार, लूटपाट-(हिं०पुं०) मारपीट कर किसी का धन छीन लेना।
लूता-(सं०स्त्री०) मकड़ी (हिं०पुं०) लुआठी; **लूतातन्तु**-(हिं०पुं०)मकड़े का जाला।
लूतक-(सं०स्त्री०) मकड़ी।
लूती-(सं०स्त्री०) लुआठी।
लूमना-(हिं०क्रि०) लटकना।
लूषविष-(सं०पुं०) बिच्छू।
लूला-(हिं०वि०) जिसका हाथ कट गया हो या बेकाम हो गया हो; लुंजा
लूलू-(हिं०वि०) मूर्ख।
लेंड़-(हिं०पुं०)बंधी हुई मल की बत्ती,
लेंड़ी-(हिं०स्त्री०) बरी, ऊंट आदि की मेंगनी।
लेंहड़,लेंहड़ा-(हिं०पुं०) भेंड़ आदि का झुंड।
ले-(हिं०अव्य०)आरंभ होकर,तक,पर्यन्त
लेई-(हिं०स्त्री०) अवलेह, गाढ़ा करके बनाया हुआ लसीला पदार्थ, लपसी,
लेख-(सं०पुं०) लिपि,लिखी हुई बात, लिखाई, लिखावट। (हिं०स्त्री०) पक्की बात, लकीर; **लेखक**-(सं० पुं०)लिखने वाला,ग्रन्थकार,; **लेखन**-(सं०नपुं०) लिखने का कार्य, चित्र बनाना, लेखना-(हिं०क्रि०) लिखना, गिनना, चित्र बनाना।
लेखनी-(सं०स्त्री०) लिखने का साधन, कलम।
लेखनीय-(सं०वि०) लिखने योग्य।
लेखनीय-(सं०नपुं०) लिखा हुआ, कागज; **लेखपत्रिका**-(सं०स्त्री०) लिखे हुए आवश्यक पत्र; **लेखप्रणाली** (सं०स्त्री०) लिखने का ढंग; **लेखहार**-(सं०पुं०) पत्रवाहक, चिट्ठी पत्री ले जाने वाला।
लेखा-(सं०स्त्री०) लिखावट, रेखा,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(हिं०पुं०) हिसाब, किताब, गिनती कूत, अनुमान, आय व्यय आदि का विवरण।

लेखा बही-(हिं० स्त्री०) वह वही जिसमें रोकड़ के लेनदेन का हिसाब लिखा जाता है।

लेखिका (सं०स्त्री०) पुस्तक लिखनेवाली

लेखित (सं०वि०) लिखा या लिखवाया हुआ।

लेख्य (सं०वि०) लेखनीय, लिखा जाने योग्य।

लेख्यस्थान-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर लिखने पढ़ने काम होता है।

लेजुर,लेजुरी-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी,

लेट्-(हिं०स्त्री०) चूना और कंकड़ पीटी हुई छत।

लेटना-(हिं०क्रि०) हाथ पैर तथा संपूर्ण शरीर भूमि या विस्तर पर पड़ा रखना।

लेटाना-(हिं०क्रि०) दूसरे को लेटने में प्रवृत्त करना।

लेन-(हिं०पुं०) लेने की क्रिया या भाव, लहना।

लेनदेन-(हिं०पुं०) लेने और देने का व्यवहार, महाजनी। **लेनहार**-(हिं० वि०) लेने वाला, लहनेदार।

लेना-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, थामना, स्वीकार करना, संचय करना, पहुँचना, अगवानी करना, ऋण लेना, जीतना, मोल लेना, अधिकार में करना,

लेप-(सं०पुं०) लेई के समान कोई गाढ़ी वस्तु जो किसी वस्तु के ऊपर फैला कर चढ़ाई जाती है, उबटन। **लेपना**-(हिं०क्रि०) फैलाकर पोतना।

लेर-(हिं०स्त्री०) लहर।

लेव-(हिं०पुं०) लेप, कहगिल, लेवा।

लेवा-(हिं०पुं०) मिट्टी का गिलावा, कहगिल, लेप।

लेवाल-(हिं०पुं०) लेने वाला।

लेश-(सं०पुं०) कणु, अणु, सूक्ष्मता,

लेषना-(हिं०क्रि०) देखो लखना, लिखना

लेसना-(हिं०क्रि०) जलाना, चिपकाना, सटाना, पोतना, चुगली खाना, उत्तेजित करना।

लेहना-(हिं०पुं०) खेत में कटी हुई उपज का वह अंश जो काम करने वालों को दिया जाता है।

लेहाड़ी-(हिं०स्त्री०) अप्रतिष्ठा, अपमान

लैं-(हिं०अव्य०) पर्यन्त, तक।

लों-(हिं०अव्य०) तक।

लोंदा-(हिं०पुं०) किसी गोले पदार्थ का बँधा हुआ गोला।

लो-(हिं०अव्य०) इसका प्रयोग श्रोता का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करने लिये होता है।

लोइ-(हिं०पुं०) लोग, जन।

लोई-(हिं०स्त्री०) गूंधे हुए आंटे की गोली जिसको बेल कर रोटी बनाई जाती है, एक प्रकार का कम्बल।

लोइन-(हिं०पुं०) लावण्य।

लोक-(सं०पुं०) भुवन, प्राणी, जन, मनुष्य, प्रदेश, दिशा, यश, कीर्ति, संसार; **लोक कंटक**-(सं०पुं०) दुष्ट मनुष्य; **लोक कथा**-(सं०स्त्री०) जनश्रुति; **लोक गति**-(सं०स्त्री०) जीवन यात्रा; **लोक गाथा**-(सं०स्त्री०) जन श्रुति।

लोकगुरु-(सं०पुं०) जगद्गुरु।

लोकचरित्र-(सं०नपुं०) मनुष्य के जीवन का इतिहास; **लोकष्टी**-(हिं०स्त्री०) लोमड़ी; **लोक तन्त्र**-(सं०नपुं०) संसार का इतिहास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोक धुनि-(सं०स्त्री०) जनश्रुति ।
लोकना-(हिं०क्रि०) ऊपर से गिरती हुई वस्तु को हाथ से पकड़ लेना।
लोकपति-(सं०पुं०) विष्णु, लोकपाल ।
लोकपथ-(सं०पुं०) साधारण पथ या उपाय; **लोकपाल**-(सं०पुं०) दिक्पाल ।
लोकप्रवाद-(सं०पुं०) जनप्रवाद, जनश्रुति; **लोकमार्ग**-(सं०पुं०) प्रचलित रीति, साधारण पन्थ; **लोकयात्रा**-(सं०स्त्री०) संसारयात्रा, व्यापार ; **लोकरञ्जन**-(सं० नपुं०) जनता को प्रसन्न करने वाला; -**लोकरव**-(सं०पुं०) जनश्रुति; **लोकरा**-(हिं०पुं०) चिथड़ा।
लोकलोचन-(सं०पुं०) सूर्य ।
लोकवचन-(सं०नपुं०) जनप्रवाद ।
लोकवाद-(सं०पुं०) जनश्रुति। **लोक वार्ता**-(सं०स्त्री०) जनरव ।
लोकवृत्त-(सं० नपुं०) लौकिक, आचार, । **लोकवृत्तान्त**-(सं०पुं०) मनुष्य चरित्र, इतिहास । **लोकव्यवहार**-(सं०पुं०) सर्व, साधारण में प्रचलित रीति। **लोकश्रुति**-(सं०स्त्री०) जनश्रुति । **लोकसिद्ध**-(सं०वि०) प्रचलित, प्रसिद्ध । **लोकस्थिति**-(सं०स्त्री०) प्रचलित नियम । **लोकहित**-(सं०नपुं०) संसार की भलाई। **लोकाचार**-(सं०पुं०) जन समूह का आचार ।
लोकाधिप, लोकाधिपति-(सं० पुं०) लोकपाल, देवता।
लोकाना-(हिं०क्रि०) फेंकना, उछालना
लोकानुग्रह-(सं०पुं०)संसार की भलाई
लोकानुराग-(सं०पुं०)संसार का प्रेम।
लोकान्तर-(सं०नपुं०) परलोक।
लोकापवाद-(सं०पुं०) लोक निन्दा, जनापवाद।
लोकोक्ति-(सं०स्त्री०) कहावत।
लोकोत्तर-(सं०वि०)अद्भुत,विलक्षण,
लोखर-(हिं०पुं०)नाई, बढ़ई, लोहार, आदि के अस्त्र।
लोग-(हिं०पुं०) जन, मनुष्य ।
लोगाई-(हिं०स्त्री०)देखो लुगाई, स्त्री।
लोच-(हिं०पुं०)लचक, कोमलता, अभिलाषा ।
लोचन-(सं० नपुं०) आँख, नेत्र ।
लोचन पथ-(सं०पुं०) दृष्टि मार्ग ।
लोचनहित-(सं०वि०) नेत्रों के लिये लाभदायक। **लोचना**-(हिं० क्रि०) प्रकाशित करना, शोभित होना, ललचाना।
लोचून-(हिं०पुं०) लोहे का चूर।
लोट-(हिं०स्त्री०)लोटने की क्रिया या भाव ।
लोटना-(हिं०क्रि०) लुड़कना, विश्राम, करना, लेटना, चकित होना।
लोटा-(हिं०पुं०) पानी आदि रखनेका धातु का बना हुआ छोटा पात्र।
लोटिया-(हिं०स्त्री०)·छोटा लोटा।
लोटी-(हिं०स्त्री०) छोटा लोटा।
लोढा-(हिं०पुं०) सिल पर किसीवस्तु को पीसने का पत्थर का गोल लंबोतरा, टुकड़ा, बट्टा; **लोढिया**-(हिं०-स्त्री०) छोटा लोढा, बट्टा।
लोथ-(हिं०स्त्री०) शव ।
लोथड़ा-(हिं०पुं०) मांस का बड़ा पिण्ड जिसमें हड्डी न हो।
लोन-(हिं०पुं०) लवण, नमक, ।
लोना-(हिं०वि०) नमकीन, सुन्दर।
लोनाई-(हिं०स्त्री०) लावण्य, सुन्दरता
लोनार-(हिं०स्त्री०) नमक बनानेका स्थान ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोप-(सं०पुं०) विच्छेद, क्षय, नाश, अभाव, अदर्शन, व्याकरण का वह नियम जिसके अनुसार शब्द साधन में कोई वर्ण हटा दिया जाता है। **लोपक** (सं०वि०) विघ्न या बाधा डालने वाला।

लोपना-(हिं०क्रि०) लुप्त होना, छिनना, मिटाना।

लोप्त्र-(सं० नपुं०) चोरी का माल

लोबा-(हिं०स्त्री०) लोमड़ी।

लोभ-(सं० पुं०) लालच, आकांक्षा, लिप्सा।

लोभाना-(हिं०क्रि०) मुग्ध करना।

लोभनीय-(सं०वि०) लोभ के योग्य।

लोभाना-(हिं० क्रि०) मुग्ध होना, मोहित होना। **लोभित**-(सं०वि०),

लोभी-(सं०वि०) अधिक लोभ करने वाला, लालची।

लोम-(सं०नपुं०) शरीर के रोवे, रोवाँ, बाल, (हिं०पुं०) लोमड़ी। **लोमकूप**-(सं०पुं०) शरीर में रोम के जड़ में का छिद्र।

लोमघ्न-(सं०वि०) लोमनाशक।

लोमड़ी-(हिं० स्त्री०) कुत्ते या गीदड़ की जाति का एक वन्य पशु।

लोमविवर-(सं०नपुं०) रोमकूप।

लोमश-(वि०) बड़े बड़े रोवें वाला।

लोमर्ष-(सं० पुं०) रोमांच, पुलक,

लोमाश-(सं० पुं०) गीदड़।

लोय-(हिं०पुं०) नयन, आँख, (स्त्री०) आग की लौ, लपट (अव्य०) देखो लौं।

लोयन-(हिं०पुं०) नयन, नेत्र।

लोर-(हिं० पुं०) कान का कुण्डल, लटकन, आँसू, (वि०) उत्सुक, चंचल।

लोरना-(हिं० क्रि०) चंचल होना,

लोल-(सं० वि०) चंचल, हिलता डोलता हुआ, अति उत्सुक।

लोलक-(सं०नपुं०) बाली में पहराने का लटकन, घंटी में का लटकन।

लोलना-(हिं०क्रि०) हिलना।

लोला-(सं० स्त्री०) जिह्वा, जीभ, चंचल स्त्री।

लोलित-(सं० वि०) शिथिल, ढीला।

लोलिनी-(सं० स्त्री०) चंचल प्रकृति की स्त्री।

लोलुप-(सं०वि०) बड़ा लोभी, चटोरा, परम उत्सुक। **लोलुपता**-(सं०स्त्री०) लालच।

लोवा-(हिं०स्त्री०) लोमड़ी।

लोष्ट-(सं०पुं०) ईंट या पत्थर का टुकड़ा ढेला।

लोहँड़ा-(हिं०पुं०) लोहे की छोटी कड़ाही, तसला।

लोह-(सं० पुं०) लोहा नामक धातु।

लोहकान्त-(सं०नपुं०) चुंबक।

लोहकार-(सं०पुं०) लोहार। **लोहकिट्ट**-(सं०नपुं०) लोहे की मैल।

लोहचूर्ण-(सं०नपुं०) लोहे का बुरादा।

लोहनाल-(सं०पुं०) नाराच नाम का अस्त्र। **लोहपाश**-(सं०पुं०) लोहे की जंजीर। **लोहवर्म**-(सं० नपुं०) लोहे का कवच। **लोहशंकु**-(सं० पुं०) लोहे का खूँटा।

लोहसार-(सं०पुं०) पक्का लोहा।

लोहाँगी-(हिं०स्त्री०) वह छड़ी जिसके किनारे पर लोहा लगा रहता है।

लोहा-(हिं०पुं०) इस नाम का प्रसिद्ध धातु, अस्त्र, लोहे की बनी वस्तु, लाल रंग का बैल, (वि०) लाल, बहुत कड़ा;। **लोहाना**-(हिं० स्त्री०) लोहे की वस्तु में खाद्य पदार्थ रखने से लोहे का रंग या स्वाद आ जाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोहार-(हिं० पुं०) एक जाति जो लोहे की चीजें बनाती है। **लोहारी**-(हिं०स्त्री०) लोहार का काम।
लोहित-(सं० वि०) लाल रंग का;
लोहिताक्ष-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल (वि०) जिसकी आखें लाल हों;
लोहितोत्पल-(सं०नपुं०) लाल कमल।
लोहितोर्ण-(सं०वि०) जिसके ऊन लाल रंग के हों।
लोहिया-(हिं०पुं०) लोहे का व्यापार करने वाला, लाल रंगका बैल,
लोहू-(हिं०पुं०) रक्त, रुधिर।
लौं-(हिं०अव्य०) पर्यन्त, तक, तुल्य, समान
लौंकना-(हिं०क्रि०) चमकना, देख पड़ना
लौंग-(हिं०पुं०) एक वृक्ष की कली जो खिलने के पहले ही तोड़ ली जाती है, लौंग के आकार का एक गहना जिसको स्त्रियां नाक में पहनती है;
लौंडा-(हिं०पुं०) छोकड़ा, बालक, (वि०) अबोध, छिछोरा; **लौंडापन**-(हिं०पुं०) लड़कपन।
लौंड़ी-(हिं०स्त्री०) दासी।
लौंन-(हिं०पुं०) देखो लवन।
लौ-(हिं०स्त्री०) आग की लपट, ज्वाला, दीपक की टेम, आशा, कामना; **लौलीन**-ध्यान में मग्न।
लौआ-(हिं०पुं०) कद्दू, घीआ।
लौकना-(हिं०क्रि०) दूर से देख पड़ना।
लौकिक-(सं०वि०) व्यावहारिक, सांसारिक, लोक संबंधी।
लौकी-(हिं०स्त्री०) कद्दू, घीया।
लौट-(हिं०स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव; **लौटना**-(हिं०क्रि०) कहीं पर जाकर फिर से वापस आना, पलटना, **लौटान**-(हिं०स्त्री०) लौटने की क्रिया या भाव; **लौटाना**-(हिं०क्रि०) फेरना, पलटाना।
लौटानी-(हिं०क्रि०वि०) लौटती समय।
लौनहार-(हिं०पुं०) खेत की लवन करने वाला, खेत काटने वाला।
लौन-(हिं०पुं०) लवण, नमक।
लौना-(हिं०पुं०) खेत काटने का काम।
लौनी-(हिं०स्त्री०) कृषिकाल की कटाई, लहना।
लौरी-(हिं०स्त्री०) बछिया।
लौल्यता-(सं०स्त्री०) चंचलता, उत्कट इच्छा।
लौहकार-(सं०पुं०) लोहार। **लौहकिट्ट**-(सं०नपुं०) मण्डूर, **लौहयन्त्र**-(सं०पुं०) लोहे की कल।
ल्याना-(हिं०क्रि०) देखो लाना।
ल्यारी-(हिं०पुं०) भेड़िया।
ल्यावना-(हिं०क्रि०) देखो लाना।
ल्वारि-(हिं०स्त्री०) देखो लू, ग्रीष्म ऋतु की गरम हवा।

व

व-हिन्दी या संस्कृतवर्णमाला का उनतीसवां व्यञ्जन वर्ण, यह अन्तस्थ अर्ध व्यञ्जन माना जाता है, इसका उच्चारण स्थान दन्त्य अथवा दन्त्योष्ठ माना नाता है।
व-(सं०पुं०) वायु, बाहु, अस्त्र, मद्य, वृक्ष, (वि०) बलवान् (अव्य०) ऐसा।
वंक, वंकट-(हिं०वि०) वक्र, टेढ़ा,
वंकिम-(हिं०वि०) झुका हुआ, टेढा।
वंग-(हिं०पुं०) वङ्ग, रांगा।
वंचक, वंचकता, वंचित-देखो वञ्चकता, वञ्चित; **वंदन वन्दित वंदी**-देखो वन्दन, वन्दित, वन्दी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वंश-(सं०पुं०) सन्तति, गोत्र, कुल, जाति, पीठ की रीढ, वर्ग ।
वंशकर-(सं०पुं०) वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरंभ होता है ।
वंशकीर्ति-(सं०स्त्री०)वंश का गौरव ।
वंशक्षय-(सं०पुं०) वंश का नाश ।
वंशचरित्र-(सं०नपुं०)वंश का इतिहास
वंशज-(सं०पुं०) जिसका जन्म उच्च कुल में हुआ हो ।
वंशधर-(सं०स्त्री०) सन्तति, सन्तान ।
वंशधारा-(सं०स्त्री०) कुलपद्धति ।
वंशपूरक-(सं०नपुं०) ईख की आँख ।
वंशमय-(सं०वि०) बांस का बना हुआ
वंशराज-(सं०पुं०) सबसे बड़ा बांस ।
वंशलोचन-(सं०पुं०) वंसलोचन
वंशवर्धन-(सं०वि०) कुल का गौरव बढ़ाने वाला ।
वंशस्थिति-(हिं०स्त्री०)वंश की मर्यादा ।
वंशागत-(सं०वि०) वंश परंपरा से आया हुआ ।
वंशहीन-(सं०वि०) निःसन्तान ।
वंशानुक्रम-(सं०पुं०) वंश परम्परा ।
वंशावली-(सं०स्त्री०) पूर्व पुरुषों की नामावली ।
वंशिका-(सं०स्त्री०) बांसुरी ।
वंशी-(सं०स्त्री०) मुरली, बांसुरी;
बक-(सं०पुं०) बगला नामक पक्षी,
बकयन्त्र-(सं०नपुं०) अर्क उतारने का भभका ।
बकवृत्ति-(सं०पुं०) अपना काम निकालने के लिये घात में रहना ।
बकव्रत-(सं०नपुं०) कपटी मनुष्य ।
बकुल-(सं०पुं०) मौलसिरी ।
वक्तव्य-(सं०वि०)कहने योग्य,(नपुं०) वचन, कथन, निन्दा; **वक्तव्यता**-(सं०स्त्री०) कथन, योग्यता ।
वक्ता-(सं०वि०)बोलने वाला, बोलने में निपुण, वाग्मी, (पुं०) कथा कहने वाला व्यास ।
वक्तुकाम-(सं०वि०) बोलने का अभिलाषी ।
वक्तृता-(सं०स्त्री०) व्याख्यान, कथन ।
वक्तृत्व-(सं०नपुं०) व्याख्यान, कथन
वक्त्र-(सं०नपुं०) मुख, आनन, बीजगणित में प्रथम गृहीत संख्या, **वक्त्रद्वार**-(सं०नपुं०) मुख विवर ।
वक्रगति-(सं०स्त्री०) टेढ़ी चाल; **वक्रगामी**-(सं०त्रि०) कुटिल । **वक्रता**-(सं०स्त्री०) क्रूरता; **वक्रतुण्ड**-(सं०पुं०) गणेश,जिसके ओंठ टेढ़े हों, **वक्रदृष्टि**-(सं०स्त्री०) क्रोध की दृष्टि; **वक्रपुच्छ**-(सं०पुं०) कुत्ता; **वक्रभाव**-(सं०पुं०) कुटिलता ।
वक्ररेखा-(सं०स्त्री०) टेढ़ी रेखा ।
वक्रित-(सं०वि०)जो टेढ़ा हो गया हो
वक्री-(हिं०पुं०)वह जिसके अंग जन्म सेही टेढ़े हो, (वि०) अपने मार्गको छोड़ कर पीछे हटने वाला; **वक्रीभाव**-(सं०पुं०) टेढ़ापन, कपट ।
वक्रोक्ति-(सं० स्त्री०) व्यंग बचन;
वक्ष-(हिं०पुं०) वक्षःस्थल, हृदय, छाती
वक्षोज, वक्षोरुह-(सं०नपुं०)स्तन, कुच
वक्ष्यमाण-(सं०वि०) वक्तव्य, कहने योग्य ।
वङ्क-(सं०पुं०) नदी का तोड़ ।
वङ्किम-(सं०वि०)कुछ टेढ़ा, झुका हुआ
वङ्ग-(सं०नपुं०)रांगा नामक धातु ।
वङ्गन-(सं०पुं०) बैंगन ।
वङ्गीय-(सं०वि०) वंग देश का ।
वचन-(सं०नपुं०) मुख से निकला हुआ सार्थक शब्द, वाक्य, वाणी, भाषा, उक्ति, व्याकरण में शब्द का वह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विधान जिससे एक या अनेक अर्थ का बोध होता है।

वचनकर-(सं०वि०) वह जो अपने वचन पर दृढ़ रहे; **वचनकारी**-(सं०क्रि०)आज्ञाकारी। **वचनविरुद्ध**-(सं०वि०)शास्त्र विरुद्ध; **वचनविरोध**-(सं०क्रि०) शास्त्रवाक्य जो प्रमाण के विरुद्ध हो।

वचनानुग-(सं०वि०)वचन के अनुसार चलने वाला।

वचनीकृत-(सं०वि०) तिरस्कार किया हुआ।

वचनीयता-(सं०स्त्री०) लोकापवाद

वचनीपक्रम-(सं०पुं०) वाक्याम्भ।

वच्छ-(हिं०पु ०) देखो वक्ष, छाती।

वज्र-(सं०पुं० नपुं०)इन्द्र का आयुध विशेष, हीरा, बिजली, पक्का लोहा, (वि०) बहुत कड़ा या पुष्ट भयंकर। **वज्रचञ्चु**-(सं०पुं०)गीध। **वज्रधर**-(सं०पुं०) इन्द्र। **वज्रपाणि**-(सं०पुं०)इन्द्र। **वज्रमय**-(सं०वि०) वज्र के समान। **वज्रलौह**-(सं०वि०) चुंबक। **वज्रसार**-(सं०पुं०)हीरा। **वज्राकर**-(सं०पुं०) हीरे की खान। **वज्राघात**-(सं०पुं०) आकस्मिक दुर्घना।

वज्राभ्यास-(सं०पुं०) गणित में गुणा करने की एक विधि।

वञ्चक-(सं०पुं०) चोर, ठग, धूर्त। **वञ्चना**-(सं०स्त्री०) धोखा, छल **वञ्चनीय**-(सं०वि०) ठगने योग्य। **वञ्चित**-(सं०क्रि०) धोखे में आया हुआ।

वट-(सं०पुं०) बरगद का पेड़।

वटक-(सं०पुं०)बड़ा, पकौड़ा, बड़ी टिकिया या गोला।

वटिका, वटी-(सं०स्त्री०)वटी, गोली, टिकिया।

वटु, वटुक-(सं०पुं०)बालक, ब्रह्मचारी

वड़वा-(सं०स्त्री०)घोड़ी। **वड़वाग्नि**-(सं०पुं०) बड़वानल।

वड़ा-(सं०स्त्री०) वटक, बड़ा।

वणिक-(सं०पुं०)व्यवसायी, बनियां।

वणिकपथ-(सं०पुं०) वाणिज्य, व्यवसाय; **वणिक्जन**-(सं०पुं०) बनियां,

वतंस-(हिं०पुं०)देखो अवतंस, शिरोभूषण।

वतायन-(सं०पुं०) वातायन, झरोखा

वत्-(सं०पुं०) समान, तुल्य।

वत्स-(सं०पुं०)शिशु, बालक; **वत्सतरी**-(सं०स्त्री०) तीन साल की बछिया, कलोर।

वत्सपाल-(सं० पुं०) बच्चा पालने वाला।

वत्सल-(सं०वि०) सन्तान के लिये प्रेम पूर्ण।

वत्सा-(सं०स्त्री०) बछिया।

वदन-(सं०नपुं०)मुख, अगला भाग।

वदाम-(सं०नपुं०) बादाम का फल।

वदि-(हिं०पुं०) कृष्ण पक्ष।

वदितव्य-(सं०वि०)कहने योग्य।

वध-(सं०पुं०) हत्या, मारण, हनन।

वधक-(सं०वि०)वध करने वाला।

वधदण्ड-(सं०पुं०) प्राणदण्ड।

वधार्ह-(सं०वि०) वध करने योग्य।

वधुका-(सं०स्त्री०)पुत्र की स्त्री, पतोहू।

वधुटी-(सं०स्त्री०)अविवाहिता कन्या।

वधू-(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री, पुत्रवधू, पतोहू,भार्या,पत्नी; **वधूटी**-(सं०स्त्री०) पुत्रवधू, पतोहू।

वध्य-(सं०स्त्री०)वध करने योग्य।

वन-(सं०नपुं०) जंगल, राशि, किरन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फूलों का गुच्छा। **वनकाम**-(सं०वि०) जंगल में घूमने वाला। **वनकुक्कुट**-(सं०पुं०) जंगली मुर्गा। **वनकुञ्जर**-(सं०पुं०) जंगली हाथी।

वनगो-(सं०स्त्री०) नीलगाय।

वनगोचर-(सं०पुं०) व्याध।

वनचर-(सं.वि.) जंगल में घूमने वाला

वनज-(सं०वि०) जो वनमें उत्पन्न हों,

वनजीवी-(सं०पुं०) लकड़हारा।

वनद-(सं०पुं०) मेघ, बादल।

वनपन्नग-(सं०पुं०) जंगली सर्प।

वनपांशुल-(सं०पुं०) व्याध, शिकारी।

वनपादप-(सं०पुं०) जंगली वृक्ष।

वनमानुष-(हिं०पुं०) विना पूंछ का बड़ा बन्दर जिसका आकार मनुष्य से बहुत मिलता है।

वनमाला-(सं०स्त्री०) जंगली फूलों की माला। **वनमाली**-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण

वनराज-(सं०पुं०) सिंह; **वनवह्नि**-(सं०पुं०) दावानल।

वनवास-(सं०पुं०) जंगल में निवास।

वनवासी-(सं०वि०) बस्ती छोड़कर वन में रहने वाला।

वनस्थ-(सं०वि०) वनवासी; **वनस्थलि**-(सं०स्त्री०) वनभूमि, जंगली प्रदेश।

वनस्पति-(सं०पुं०) वह वृक्ष जिसमें फूल न हों केवल फल ही हों।

वनहरि-(सं०पुं०) सिंह।

वनाटन-(सं०नपुं०) जंगल में घूमना।

वनिता-(सं०स्त्री०) प्रियतमा,अनुरक्त स्त्री, औरत।

वनेंचर-(सं०वि०) वनमें घूमने वाला।

वनोद्देश-(सं०पुं०) वन के बीच का स्थान।

वनोद्भव--(सं०वि०) वन में उत्पन्न।

वनौषध-(सं०स्त्री०)जंगली जड़ी बूटी।

वन्दक-(सं०वि०)स्तुति करने वाला।

वन्दन-(सं०नपुं०) प्रणाम, स्तुति।

वन्दनमाला-(सं० स्त्री०) तोरण, बन्दनवार।

वन्दना-(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रणाम।

वन्दनीय-(सं०वि०)आदर करने योग्य।

वन्दी-(हिं०पुं०) स्तुति पाठक, भाट।

वन्दीपाल-(सं०पुं०)कारागृह का रक्षक

वन्द्य-(सं०वि०) वन्दना करने योग्य।

वन्य-(सं०वि०) जंगल में उत्पन्न होने वाला, जंगली। **वन्यद्वीप**-(सं०पुं०) जंगली हाथी।

वपनीय-(सं०वि०) बोने योग्य।

वपा-(सं०स्त्री०)छिद्र, छेद, बसा, वांबी

वपु-(हिं०पुं०) शरीर देह।

वपुमान-(हिं०वि०) शरीर धारी।

वप्तव्य-(सं०वि०) बोने योग्य।

वप्ता-(सं०वि०) बीज बोने वाला।

वम,वमन-(सं०पुं०) उल्टी, कै।

वयःक्रम-(सं०पुं०) आयुष्य।

वयन-(सं०नपुं०) बुनने की क्रिया या भाव।

वयस-(सं०पुं०) जीवनकाल, अवस्था।

वयस्क-(सं०वि०) पूरी अवस्था को पहुंचा हुआ।

वयस्य-(सं०पुं०) समान वय का, हमजोली, मित्र।

वयःसम-(सं०वि०) समान वय वाला

वयोगत-(सं०नपुं०) बुढ़ापा।

वयोवस्था-(सं०स्त्री०) जीवन काल।

वयोवृद्ध-(सं०वि०) जो अवस्था में बड़ा हो।

वरंच-(हिं०अव्य०) परन्तु।

वर-(सं०पुं०) किसी देवी देवता से मांगा हुआ मनोरथ, फल या सिद्धि; (वि०) श्रेष्ठ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वरट-(सं०पुं०) भिड़, बर्रे।
वरणीय-(सं०वि०)प्रार्थनीय,श्रेष्ठ,बड़ा
वरतनु-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वरद-(सं०वि०)वर देने वाला, प्रसन्न।
वरदाता-(हिं०वि०) वर देने वाला, अभीष्ट देने वाला; **वरदान**-(सं० नपुं०) किसी देवता आदि का प्रसन्न होकर मांगी हुई वस्तु का देना, फल-प्राप्ति। **वरदानी**-(सं०पुं०) मनोरथ पूर्ण करने वाला।
वरन्-(हिं०अव्य०) ऐसा न हो कि।
वरनारी-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वरपक्ष-(सं०पुं०) वरयात्रा, बारात।
वरयात्रा-(सं०स्त्री०) बारात।
वरवर्णिनी-(सं०स्त्री०)अत्युत्तमा स्त्री।
वरवारण-(सं०पुं०) सुन्दर हाथी।
वरांगना-(सं०स्त्री०) सर्वाङ्ग सुन्दर स्त्री।
वरानना-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वरासन-(सं०नपुं०) श्रेष्ठ, आसन, सिंहासन।
वराह-(सं०पुं०) शिशुमार, सूँस।
वरिष-(सं०नपुं०) वत्सर, वर्ष।
वरिषा-(सं०स्त्री०) वर्षा।
वरिषा प्रिय-(सं०पुं०)चातक पक्षी।
वरिष्ठ-(सं०वि०)श्रेष्ठ,उत्तम,विस्तीर्ण
वरुण-(सं०पुं०) जल, पानी, **वरुण-ग्रस्त**-(सं०वि०)जल में डूबा हुआ; **वरुणालय, वरुणावास**-(सं०पुं०)समुद्र
वरुणोद-(सं०नपुं०) सागर, समुद्र।
वरेश-(सं०पुं) सर्वेश्वर, भगवान्।
वरोरु-(सं०व०)सुन्दर जांघवाली स्त्री
वर्कर-(सं०पुं०)भेड़ का बच्चा, मेमना।
वर्ग-(सं०पुं०) एक तरह के अनेक पदार्थों का समूह, समान धर्म वाले पदार्थों का समूह, व्याकरण में एक ही स्थान से उच्चारण होने वाले व्यञ्जन वर्णों का समूह प्रकरण, अध्याय परिच्छेद, जाति, श्रेणी, समान अंक या राशियों का गुणन फल, रेखा-गणित में वह क्षेत्र जिसकी लंबाई चौड़ाई बराबर हो तथा जिसके चारो कोण समकोण हों।
वर्गधन-(सं०नपुं०) किसी वर्ग राशि का घन फल; **वर्गण**-(सं० स्त्री०) गुणन।
वर्गपद-(सं०नपुं०) वर्ग मूल; **वर्गफल**-(सं०नपुं०) वह अंक जो किसी अंक के साथ गुणा करने से प्राप्त हो
वर्गमूल-(सं० नपुं०) किसी वर्गाङ्क का वह अंकजिसको यदि उसी से गुणा करें तो गुणन फल वही वर्गाङ्क हो।
वर्गीय-(सं०वि०) वर्ग संबंधी।
वर्चस्-(सं०नपुं०) तेज, अन्न।
वर्चस्क-(सं०नपुं०) दीप्ति, तेज।
वर्चस्वी-(सं०वि०) दीप्तियुक्त।
वर्जन-(सं०पुं०) त्याग, **वर्जनीय**-(सं० वि०) छोड़ने योग्य, निषिद्ध; **वर्जित**-(सं०वि०) त्यागा हुआ, छोड़ा हुआ,
वर्ण-(सं०पुं०) जाति यथा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, पदार्थों के लाल, काले, पीले आदि का भेद, रूप, अक्षर, व्याकरण के अनुसार आकारादि शब्दों के चिह्न या संकेत; **वर्णक्रम**-(सं०पुं०) जाति परंपरा अक्षर, श्रेणी; **वर्णज**-(सं०वि०) वर्णोद्भव, जाति; **वर्णतूलि**-(सं० स्त्री०) चित्रकार की कूंची; **वर्णधर्म**-(सं०पुं०) वर्णाश्रम धर्म।
वर्णन-(सं०स्त्री०) गुणकथन, स्तुति, प्रशंसा।
वर्णनीय-(सं०वि०) वर्णन करने योग्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्णपात्र-(सं०नपुं०) चित्रकार का रंग रखने का पात्र।
वर्णमाला-(सं०स्त्री०) वर्ण,श्रेणी, किसी भाषा के क्रम से लिखे हुए अक्षर।
वर्णराशि-(सं०पुं०) वर्ण समूह।
वर्णलिपि-(सं०स्त्री०) अक्षर प्रकाशक लेखन प्रणाली।
वर्णविलोड़क-(सं०पुं०) वह जो दूसरे के लिखे हुए लेख को अपना बतलाता हो।
वर्णवृत्त-(सं०नपुं०) वह पद्य जिसके चरणों में वर्णों की संख्या तथा लघु-गुरु के क्रमों में समानता हो।
वर्णश्रेष्ठ-(सं०पुं०) चारोंवर्णोंमें श्रेष्ठ ब्राह्मण।
वर्णसंकर-(सं०पुं०) ब्राह्मणादि वर्ण के अनुलोम या प्रतिलोम से उत्पन्न जाति।
वर्णस्थान-(सं०नपुं०) वर्ण या शब्द आदि का उच्चारण स्थान।
वर्णाश्रम-(सं०पुं०)चारो वर्ण का आश्रम
वर्णित-(सं०वि०) वर्णन किया हुआ, कहा हुआ।
वर्णी-(सं०पु०) लेखक, चित्रकार, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण।
वर्तन-(सं०नपुं०) व्यवसाय, जीवन-वृत्ति, उलटफेर, व्यवहार, पात्र।
वर्तना-(हिं०क्रि०) देखो बरतना।
वर्तमान-(सं०पुं०) व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया अभी चली जाती है समाप्त नहीं हुई है, वृत्तान्त, (वि०) विद्यमान, उपस्थित।
वर्तमानता-(सं०स्त्री०) उपस्थिति।
वर्ति-(सं०स्त्री०) दीपशिखा, बत्ती,
वर्तित-(सं०वि०) सम्पादित, चलाया हुआ, प्रस्तुत।
वर्ती-(हिं०वि०) बरतने योग्य।
वर्तुल-(सं०वि०) वृत्ताकार, गोल।
वर्त्म-(सं०पुं०) मार्ग, पथ, आधार,
वर्धक-(सं०वि०) पूरक, बढ़ाने वाला,
वर्धन-(सं०वि०) बढ़ाने वाला।
वर्धनी-(सं०स्त्री०) सम्मार्जनी, झाड़ू।
वर्धनीय-(सं०वि०) बढ़ाने योग्य।
वर्धापन-(सं०नपुं०) कर्णवेध, कनछेदन
वर्धमान-(सं०वि०)बढ़ने वाला, बढ़ता हुआ।
वर्धित-(सं०वि०)वृद्धिप्राप्त, बढ़ा हुआ।
वर्धिष्णु-(सं०वि०) बढ़ने वाला।
वर्म-(सं०पुं०) तनुत्राण, कवच। **वर्म-धर**-(सं०वि०) कवचधारी। **वर्मा**-(सं०पुं०)क्षत्रियों की उपाधि जो नाम के अन्तमें लगाई जाती है।
वर्य-(सं०वि०) प्रधान, श्रेष्ठ।
वर्वर-(सं० नपुं०) घूंघराले बाल, (वि०) दुष्ट, नीच।
वर्ष-(सं०पुं०) किसी द्वीप का प्रधान भाग, वृष्टि, वर्षा, मेघ, बादल, संवत्सर, बारह महीने का काल। **वर्षकाम**-वृष्टि की कामना करने वाला।
वर्षगांठ-(हिं०पुं०)जन्म दिन का उत्सव
वर्षज-(सं०व०) वृष्टि से उत्पन्न।
वर्षण-(सं०नपुं०) वृष्टि। **वर्षप्रिय**-(सं०पुं०) चातक पक्षी, पपीहा।
वर्षवृद्ध-(सं०वि०) जो वय में बड़ा हो। **वर्षवृद्धि**-(सं०स्त्री०) वय की वृद्धि। **वर्षशत**-(सं०नपुं०) सौ वर्ष **वर्षसहस्र**-(सं०व०) हजार वर्ष।
वर्षा-(सं०स्त्री०) पानी बरसने का ऋतु, पानी बरसने की क्रिया।
वर्षाप्रिय-(सं०पुं०) पपीहा। **वर्षाभव**-(सं०वि०) वर्षा में उत्पन्न।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्षावत्-(सं०वि०) वर्षा के समान।
वर्षावसान-(सं०पुं०) शरद ऋतु।
वर्षासमय-(सं०पुं०) वर्षाकाल।
वार्षिक-(सं०वि०) वर्षा संबंधी।
वर्षीय-(सं०वि०) वर्ष संबंधी।
वर्षेश-(सं०पुं०) वर्ष का स्वामी।
वर्ह-(सं०नपुं०) मोर का पंख, मोर
वर्हण-(सं०नपुं०) पत्ता।
वर्हिण-(सं०पुं०) मयूर, मोर। **वर्ही**-(हिं०स्त्री०) मयूर, मोर।
वलभी-(सं०स्त्री०) घर की चोटी, घर के शिखर पर का मण्डप।
वलम्ब-(सं०पुं०) सीधी रेखा के ऊपर खड़ी हुई लंब रेखा।
वलय-(सं०पुं०नपुं०) वेष्टन, कंकण, चूड़ी।
वलयित-(सं०वि०) घिरा हुआ।
वलसूदन-(सं०पुं०) इन्द्र।
वलाहक-(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वलि-(सं०पुं०) रेखा, लकीर, पेट में पड़ी हुई सिकुड़न, देवी देवता को अर्पण करने की वस्तु, श्रेणी, पंक्ति
वलित-(सं०वि०) बल खाया हुआ, लचका हुआ, झुकाया, या मोड़ा हुआ।
वली-(सं०स्त्री०)श्रेणी, पंक्ति, रेखा।
वलीमुख-(सं०पुं०) बन्दर।
वल्कल-(सं०नपुं०) वृक्ष की छाल, इसका बना हुआ वस्त्र।
वल्कली-(सं०वि०) वल्कलधारी।
वल्मीक-(सं०पुं०) दीमकका लगाया हुआ मीट्टी का ढेर, बांबी।
वल्लकी-(सं०स्त्री०) वीणा, बीन।
वल्लभ-(सं०वि०)प्रिय, प्यारा,(पुं०) प्यारा मित्र, पति।
वल्लभा-(सं०स्त्री०)प्यारी स्त्री,(वि०) प्रियतमा।
वल्लरि, वल्लरी-(सं०स्त्री०) वल्ली, मंजरी, लता।
वल्लि-(सं०स्त्री०) लता, पृथ्वी।
वश-(सं०पुं०) एक व्यक्ति का दूसरे पर प्रभाव; **वशकर**-(सं०वि०) वशीभूत।
वशगामी-(सं०वि०) वश में लाया हुआ
वशता-(सं०स्त्री०)वशका भाव या धर्म।
वशनीय-(सं०वि०) वश में करने योग्य;
वशवर्ती-(सं०वि०) वशीभूत।
वशिता-(सं०स्त्री०) मोहने की क्रिया या भाव।
वशी-(सं०वि०) जितेन्द्रिय, अपने को वश में करने वाला; **वशीकरन**-(सं० नपुं०) किसीको अपने वश में करने का प्रयोग।
वशीकृत-(सं०वि०) मोहित,मुग्ध।
वशीभूत-(सं०वि०) वश में लाया हुआ,
वश्य-(सं०वि०) किसी की इच्छा के अधीन, (पुं०) दास, सेवक; **वश्यता** (सं०स्त्री०) वश में होने की अवस्था
वश्या-(सं०स्त्री०) वशीभूत स्त्री।
वसंत-देखो वसन्त।
वसंती-(हिं०पुं०) सरसोंके फूलोंका रंग
वसती-(सं०स्त्री०) वासस्थान।
वसन-(सं०नपुं०) वस्त्र,आवरण,ढापने की वस्तु, निवास।
वसन्त-(सं०पुं०) चैत्र और वैशाख का महीना; **वसन्त पञ्चमी**-(सं०स्त्री०) माघ शुक्ला पंचमी, श्रीपंचमी। **वसन्तरोग**-(सं०पुं०)मसूरिका, चेचक
वसन्तव्रत-(सं०पुं०) कोकिल, कोयल।
वसा-(सं०स्त्री०) मेदा, धातु।
वसारोह-(सं०पुं०)छत्रक, कुकुरमुत्ता।
वसितव्य-(सं०वि०) पहरने योग्य।
वसुंधरा-(हिं०स्त्री०) पृथ्वी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वसु-(सं०पुं०) अग्नि, किरण, देवताओंका एक गण,रत्न, धन, सुवर्ण, जल।

वसुदा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी; **वसुदान**-(सं०नपुं०) धनदान।

वसुधा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी, (वि०) धनदाता; **वसुधाधर**-(सं०पुं०)पर्वत विष्णु; **वसुधाधिप**-(सं०पुं०) राजा, पृथ्वीपति।

वसुभरित-(सं०वि०) धनपूर्ण।

वसुमती-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।

वसूत्तम-(सं०स्त्री०)बहुत बड़ा धनी।

वसूमती-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।

वस्त-(हिं०पुं०) वस्तु।

वस्तव्य-(सं०वि०) वासके योग्य।

वस्ति-(सं०स्त्री०) पेट का नाभी के नीचे का भाग, पेड़ू, मूत्राशय।

वस्तिकर्म-(सं०पुं०) पिचकारी द्वारा औषधि का जल गुदामें चढ़ाने की क्रिया।

वस्तु-(सं०नपुं०)वह जिसकी सत्ता या अस्तित्व हो, गोचर पदार्थ, वृत्तान्त, कथा वस्तु, नाटक का आख्यान।

वस्तुतः-(सं०अव्य०)यथार्थ में, सचमुच

वस्तुबल-(सं०नपुं०) किसी पदार्थ का गुण।

वस्तुभाव-(सं०पुं०)वस्तु का धर्म या गुण

वस्तुभेद-(सं०पुं०) वस्तु का प्रकार।

वस्तुशून्य-(सं०वि०) द्रव्यहीन।

वस्त्र-(सं०नपुं०) कपड़ा।

वस्त्रगृह-(सं०नपुं०) छोलदारी।

वस्त्रवेश-(सं०पुं०)कपड़े का बना हुआ घर, खेमा।

वस्त्रवेष्टित-(सं०वि०)कपड़ा लपेटा हुआ

वस्त्रागार-(सं०पुं०)कपड़े की दूकान।

वस्त्राञ्चल-(सं०पुं०) कपड़े का छोर

वस्त्रभवन-(सं०पुं०) रावटी।

वह-(हिं०सर्व०)इस शब्द से किसी तीसरे मनुष्य का संकेत होता है,कर्त-कारक प्रथम पुरुष सर्वनाम का एक वचन (बहुवचन-वे) इस शब्द से दूर या परोक्ष की वस्तु का निर्देश होता है।

वहन-(सं०नपुं०) भार ले जाने का कार्य अपने ऊपर लेना, । **वहनीय**-(सं०वि०) ले जाने योग्य।

वहां-(हिं०अव्य०) उस स्थान पर।

वहिः-(सं०अव्य०)बाहर,जो भीतर न हो

वाहित-(सं०वि०) प्रसिद्ध, प्रख्यात।

वहित्र-(सं०नपुं०) नौका नाव।

वहिरंग-(सं०नपुं०) शरीर का बाहरी भाग, वह मनुष्य जो अपने मण्डल का न हो, (वि०) ऊपरी, बाहरी।

वहिरिन्द्रिय-(सं०स्त्री०) कर्मेन्द्रिय।

वहिर्गत-(सं०वि०) बाहर किया हुआ,

वहिर्गमन-(सं०नपुं०) किसी काम से घर के बाहर जाना।

वहिर्जगत-(हि०पुं०)दृश्यमान जगत।

वहिर्देश-(सं०पुं०) विदेश, परदेश।

वहिर्द्वार-(सं०नपुं०) घर का बाहरी फाटक, तोरण।

वहिर्भवन-(सं०नपुं०) बाहर का घर।

वहिर्भाव-(सं०पुं०) बाह्य भाव।

वहिर्भूत-(सं०वि०) वहिर्गत, बाहर किया हुआ। **वहिर्मुख**-(सं०वि०) बाहरी, विमुख; **वहिर्लम्ब**-(सं०पुं०) रेखागणित में वह लम्ब जो किसी क्षेत्र के बाहर गिरता हो; **वहिर्लापिका**-(सं०स्त्री०) प्रहेलिका, पहेली।

वहिष्कार-(सं०पुं०) दूर करना।

वहिष्कृत-(सं०वि०) बाहर किया हुआ त्यागा हुआ, निकाला हुआ।

वहीं-(हिं०अव्य०)उसी स्थान पर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वही-(हिं०सर्व०) पूर्वोक्त व्यक्ति, वह व्यक्ति जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो, निर्दिष्ट व्यक्ति।
वहेलिया-(हिं०पुं०) एक व्याध जाति
वह्नि-(सं० पुं०)अग्नि, आग **वह्नि-चूड़**-(सं०नपुं०) आग की लपट; **वह्निदग्ध**-(सं०वि०) आग से जला हुआ; **वह्निमित्र**-(सं०पुं०) वायु, हवा; **वह्निमुख**-(सं०पुं०)देवता।
वह्यक-(सं०वि०) वाहक, ढोनेवाला।
वाँ-(हिं०अव्य०) वहाँ, उस जगह।
वांछा, वांछित-देखो वाञ्छा, वाञ्छित,
वा-(सं०अव्य०)या, अथवा, (हिं०सर्व०) व्रज भाषा में प्रथम पुरुष के एक वचन का वह रूप जिसमें कारक के चिह्न लगाये जाते हैं।
वाक्-(सं०पुं०) वाणी, वाक्य, बोलने की इन्द्रिय।
वाक्कलह-(सं०पुं०) बातोंका झगड़ा।
वाक्चपल-(सं०नपुं०)वाचाल, बकवादी
वाक्पटु-(सं०वि०) बोल चाल में चतुर; **वाक्पटुता**-(सं०स्त्री०) बात करने में चातुरी।
वाक्य-(सं०नपुं०) पदों का वह समूह जिससे श्रोताको वक्ता का अभिप्राय जताया जाता है जिसमें उद्देश्य का होना आवश्यक होता है; **वाक्यकर**-(सं०पुं०) बातें बनाने वाला; **वाक्यालंकार**-(सं०पुं०) वाक्य की शोभा; **वाक्सिद्धि**-(सं०पुं०) वाणी की सिद्धि, ऐसी सिद्धि या शक्ति आ जाना कि जो बात मुख से निकले वह सच्ची घट जावे।
वागीश-(सं०वि०) अच्छा बोलनेनाला
वागुलि-(सं०पुं०) डिब्बा।
वागुलिक-(सं०पुं०) राजा का खवास।
वाग्जाल-(सं०नपुं०) लपेट की बात; **वाग्डम्बर**-(सं०पुं०) बातोंकी लपेट
वाग्दण्ड-(सं०नपुं०)झटकार, डांट डपट
वाग्दत्त-(सं०वि०) किसी वस्तु को देने के लिये वचन दिया हुआ या कहा हुआ।
वाग् दरिद्र-(सं०पुं०) मितभाषी, कम बोलने वाला।
वाग्दान-(सं०नपुं०)कन्या के पिता का किसी से यह कहना कि मैं तुम्हें अपनी कन्या व्याह दूंगा।
वाग्देवता, वाग्देवी-(सं०स्त्री०) वाणी, सरस्वती।
वाग्दोष-(सं०पुं०) व्याकरण संबंधी दोष या त्रुटि, निन्दा।
वाग्मी-(सं०पुं०) वाचाल, अच्छा बोलने वाला, पण्डित, वृहस्पति।
वाग्विदग्ध-(सं०वि०) बोल चाल में प्रवीण।
वाग्विलास-(सं०पुं०) आनन्द पूर्वक आपस में वार्तालाप।
वाङ्मय-(सं० वि०) वचन सम्बन्धी, पढ़ने लिखने के विषय का।
वाङ्मुख-(सं०पुं०) उपन्यास।
वाच्-(सं०स्त्री०) वाणी, वाक्।
वाचक-(सं०वि०) सूचक, द्योतक, बोधक
वाचन-(सं०नपुं०) उच्चारण करना. पढ़ना, बाँचना।
वाचनालय-(सं० पुं०) पुस्तक, समाचारपत्र आदि पढ़ने का स्थान।
वाचा-(सं०स्त्री०) वाणी, वचन, शब्द।
वाचाट-(सं०वि०) बक्की, बकवादी।
वाचापत्र-(सं०नपुं०) प्रतिज्ञा पत्र।
वाचाबन्धन-(सं०पुं०)प्रतिज्ञा बद्ध होना
वाचाबद्ध-(सं०वि०) वचन दनसेविवश
वाचाल(सं० वि०) बोलने में चतुर;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाचालता-(सं०स्त्री०) बात करने में निपुणता।
वाचिक(सं०वि०) वाणी संबंधी, संकेत द्वारा सूचित।
वाची-(हिं०व०) बोधकरने वाला, सूचक; यह शब्द समस्त पद के अन्त में प्रयोग होता है।
वाच्य-(सं०वि०) कहने योग्य। **वाच्यता**-(सं०स्त्री०) वाच्य का भाव या धर्म। **वाच्यार्थ**-(सं०पुं०) वह तात्पर्य जो शब्दों के स्थिर या नियत अर्थ से सूचित हो।
वाजसनि-(सं०पुं०) सूर्य।
वाजि-(हिं०पुं०) घोड़ा।
वाजिमेध-(सं०पुं०) अश्वमेध।
वाजिशाला-(सं०क्रि०) अश्वशाला।
वाजी-(हिं०पुं०) घोड़ा।
वाञ्छनीय-(सं०वि०) चाहने योग्य, **वाञ्छा**-(सं०स्त्री०) इच्छा, अभिलाषा; **वाञ्छित**-(सं०वि०) अभिलषित।
वाट-(सं०पुं०)मार्ग, मण्डप।
वाटिका-(सं०स्त्री०) बाग, बगीचा।
वाटुक-(सं०नपुं०) भूना हुआ जब, बहुरी।
वाड़वाग्नि-(सं०पुं०) समुद्र के भीतर की अग्नि, बड़वानल।
वाढम्-(सं०अव्य०) पर्याप्त, बस।
वाण-(सं०पुं०) धनुष पर छोड़ने की तीर।
वाणतूण-(सं०पुं०) तरकश।
वाणावली-(सं०स्त्री०)तीरों की वर्षा।
वाणिज्य-(सं०नपुं०) देखो बाणिज्य।
वाणी-(सं०स्त्री०) वचन, सरस्वती, जीभ, स्वर, वाक्शक्ति।
वात-(सं०पुं०) वायु, हवा, वैद्यक के अनुसार शरीरके भीतर पक्वाशय में रहने वाली वह वायु जो शरीर के सब धातुओं को गति युक्त करती है। **वातज**-(सं०वि०) वायु से उत्पन्न; **वायुप्रकोप**-(सं०पुं०) शरीर में वायु का अधिक हो जाना; **वातव्याधि**-(सं०पुं०) गठिया रोग; **वातसख**-(सं०पुं०) अग्नि;
वाताम-(सं०नपुं०) बादाम।
वातायन-(सं०पुं०)गवाक्ष, झरोखा, छोटी खिड़की।
वातावरण-(हिं०पुं०) सामान्य परिस्थिति चारो ओर की व्यवस्था।
वात्सल्य-(सं०नपुं०) माता पिता का अपनी सन्तति पर प्रेम।
वाद-(सं०पुं०)तर्क, शास्त्रार्थ। **वादक**-(सं०पुं०)बाजा बजाने वाला, वक्ता, शास्त्रार्थ करने वाला।
वादयुद्ध-(सं०पुं०) शास्त्रीय झगड़ा।
वादानुवाद-(सं०पुं०) तर्क, वितर्क, शास्त्रार्थ।
वादिक-(सं०पुं०) तार्किक, शास्त्रार्थ, करने वाला।
वादित-(सं०वि०)बजाया हुआ। **वादित्र**-(सं०नपुं०) वाद्य, बाजा।
वादी-(सं०पुं०) वक्ता, बोलने वाला,
वाद्य-(सं०पुं०)बाजा। **वाद्यक**-(सं०पुं०) बाजा बजाने वाला।
वान-(हिं०पुं०) देखो बाण।
वानप्रस्थ-(सं०नपुं०) आर्यों की प्राचीन पद्धति के अनुसार मनुष्यके जीवन का तीसरा आश्रम।
वानर-(सं०पुं०) बन्दर,
वानीरक-(सं०पुं०) मूंज।
वान्ति-(सं०स्त्री०) वमन, उलटी।
वापक-(सं०वि०) बीज बोने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वापन-(सं०पुं०) बीज बोना।
वापिका-(सं०स्त्री०) वापी, बावली।
वापित-(सं०वि०) बोया हुआ।
वापी-(सं०स्त्री०) छोटा जलाशय, बावली
वाम-(सं०वि०) बायाँ, प्रतिकूल, विरुद्ध दुष्ट, कुटिल, बुरा,
वामन-(सं०वि०) छोटे डील डौल का, नाटा, बौना,
वामनी-(सं०स्त्री०) बौनी स्त्री।
वामनेत्र-(सं०नपुं०) बाई आँख।
वाममार्ग-(सं०पुं०) एक तांत्रिक मत
वामलोचना-(सं०स्त्री०) सुन्दरी स्त्री।
वामा-(सं०स्त्री०) दुर्गा, स्त्री।
वामाक्षी-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वामेतर-(सं०वि०) बायें का उलटा, दहिना।
वामोरु-(सं०व०) सुन्दर जाँघ।
वामोरू-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
वायव्य-(सं०वि०) वायु सम्बन्धी, (पुं०) पश्चिमोत्तर दिशा। **वायस**-(सं०पुं०) काक, कौवा,
वायु-(सं०पुं) हवा, बात। **वायुकोण**-(सं०पुं०) पश्चिमोत्तर दिशा। **वायु-गुल्म**-(सं०पुं०) चक्रवात, बवंडर।
वायुमण्डल- वायुलोक, आकाश।
वायुवाह-(सं०पुं०) धुवाँ।
वायुसख-(सं०पुं०) अग्नि।
वारंवार-(हिं०अव्य०) देखो बारबार।
वार-(सं०पुं०) द्वार, अवरोध, रुकावट, क्षण, सप्ताह का कोई दिन।
वारक-(सं०वि०) निशेध करने वाला।
वारकन्या-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी,
वारण-(सं०नपुं०) निषेध, बाधा, हाथी, अंकुश।
वारणीय-(सं०वि०) निषेध करने योग्य
वारणेन्द्र-(सं०पुं०) सुन्दर हाथी।
वारतिय-(हिं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारद-(हिं०पुं०) मेघ, बादल।
वारन-(हिं०स्त्री०) निछावर, बलि, (पुं०) बन्दनवार, तोरण।
वारना-(हिं०क्रि०) निछावर करना,
वारपार-(हिं०पुं०) पूरा विस्तार, इधर उधर का छोर; (अव्य०) इस किनारे से उस किनारे तक।
वारा-फेर-(हिं०स्त्री०) निछावर, बलि–
वारमुखी-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारम्वार-(सं०अव्य०) फिर फिर।
वारयितव्य-(सं०वि०) निवारण करने योग्य।
वारयुवती-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारविलासिनी, वारसुन्दरी, वारस्त्री-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वारनिधि-(सं०पुं०) समुद्र।
वारा-(हिं०पुं०) लाभ, व्यय की बचत; (वि०) उत्सर्ग या निछावर किया हुआ, सस्ता।
वाराङ्गना-(सं०स्त्री०) वेश्या, रंडी।
वाराणसी–(सं० स्त्री०) काशी का प्राचीन नाम।
वारान्यारा-(हिं०पुं०) निर्णय, निबटारा।
वाराह-(सं०पुं०) शूकर, सुअर।
वारि-(सं०पुं०) जल, पानी,
वारिजात-(सं०वि) जल में उत्पन्न।
वारिज-(सं०नपुं०) मल, मछली, शंख, कौड़ी।
वारित-(सं०वि) रोका हुआ।
वारिद-(सं०पुं०) मेघ, बादल।
वारिद्र-(सं०पुं०) चातक, पपीहा।
वारिधर-(सं०पुं०) देखो वारिद; **वारिधारा**-(सं०स्त्री०) जल की धारा; **वारिनाथ, वारिधि**-(सं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समुद्र; वारियन्त्र-(सं०नपुं०)जलयन्त्र
वारियां-(हिं०स्त्री०)निछावर, बलि।
वारीफेरी-(हिं०स्त्री०) देखो वारफेर, निछावर।
वारीश-(सं०पुं०) समुद्र।
वारुणी-(सं०स्त्री०) मदिरा।
वार्ता-(सं०स्त्री०) वृत्तान्त, समाचार, प्रसंग, विषय, बात।
वार्तायन-(सं०पुं०) दूत।
वार्त-लाप-(सं०पुं०) बातचीत।
वार्तावह-(सं०पुं०)समाचार ले जाने वाला दूत।
वार्तिक-(सं०पुं०) दूत, चर, किसी ग्रन्थ के अर्थों को स्पष्ट करने वाले वाक्य।
वार्वट-(सं०नपुं०) नौका, नावका बेड़ा
वार्षिक-(सं०वि०) प्रति वर्ष होने वाला, वर्षा ऋतु का।
वालुका-(सं०स्त्री०) रेती, बालू।
वालुकायन्त्र-(सं०पुं०) औषधि बनाने का एक यन्त्र।
वालेय-(सं०पुं०)गर्दभ, गदहा, पुत्र।
वाश्र-(सं०पुं०) मन्दिर, चौरहा।
वाष्प-(सं०पुं०) अश्रु, आंसू, लोहा, भाप।
वास-(सं०पुं०) अवस्थान, गृह घर।
वासगृह-(सं०नपुं०)शयनागार, अन्तः-पुर; वासगेह-सं(०नपुं०) देखो वासगृह।
वासना-(सं०स्त्री०) ज्ञान संस्कार, कामना, इच्छा, (हिं०क्रि०) देखो बासना।
वासान्तक-(सं०वि०) बसन्त ऋतु सम्बन्धी।
वासन्तिक-(सं०पुं०)भाड़, विदूषक।
वासन्ती-(सं०स्त्री०) माधवी लता, जूही, वासभवन-(स०नपुं०)वासगृह;
वासभूमि-(सं०स्त्री०)वासस्थान।
वासर-(सं०नपुं०)दिवस, दिन।
वासराधीश, वासरेश-(सं०पु०) सूर्य।
वासवेश्म-(सं०नपुं०)रहने का घर।
वासि-(सं० पुं०) कुठार, वसुला।
वासित-(सं०वि०) सुगन्धित किया हुआ, वस्त्र से ढ़पा हुआ।
वासी-(हिं०वि०) वसनें वाला, रहने वाला।
वास्तव-(मं० वि०) सत्य, यथार्थ; वास्तव में, संचमुच; वास्तविक-(सं० वि०)प्राकृत, यथार्थ सत्य ठीक।
वास्तव्य-(सं०वि०) बसने या रहने योग्य, बसने वाला, (पुं०) बस्ती।
वास्तु-(सं०पुं०) वह स्थान जिस पर घर बनाया जाता है।
वास्प-(सं०पुं०) गरमी, भांफ।
वाह-(सं०पुं०) वाहन, सवारी।
वाहक-(सं०पुं०)बोझ ढोने या ले जाने वाला, सारथी।
वाहन-(सं०नपुं०) यान।
वाहनीय-(सं०वि०) वहन करने योग्य
वाहिक-(सं०पुं०) गाड़ी, छकड़ा।
वाहित-(सं०स्त्री०) चलाया हुआ।
वाहिनी-(सं०स्त्री०) सेना।
वाहिनीपति-(सं०पु०) सेनापति।
बाहु-(सं०स्त्री०)भुजदण्ड, रेखागणित में क्षेत्र के किनारे की रेखा, भुजा, बाहुमुल-कांख।
वाहुल्य-(सं०नपु०)अधिकता,आधिक्य।
वाह्य-(सं०क्रि० वि०) बाहर, अलग, पृथक; वाह्यक-(सं०नपुं०) वाहक, गाड़ी छकड़ा।
वाह्यान्तर-(सं०वि०) भीतर और वाहर का।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाह्येन्द्रिय-(सं०नपुं०)शरीर की पांचो इन्द्रियां यथा, आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा।
विंदु-देखो विन्दु।
विंदुर-(हि०पु०)छोटे चिह्न, वुन्दकी।
विंश-(सं०पु०) बौसवां।
विंशत्-(सं०स्त्री०) वीस की संख्य।
वि-(सं०अव्य०)यह शब्द विशेष, निषेध तथा वैरूप्य अर्थ में शब्दों में लगाया जाता है, (पुं०) आकाश, नेत्र, अन्न।
विकच-(हिं०वि०) केश रहित।
विकट-(सं०वि०) विकराल, भयंकर, विशाल,दुर्गम, दुःसाध्य, वक्र।
विकत्थन-(सं०नपुं०) झूठी प्रशंसा।
विकत्थना-(सं०स्त्री०) अत्मश्लाघा।
विकत्था-(सं०स्त्री०) आत्मप्रशंसा।
विकथा-(सं०स्त्री०) वुरी कथा।
विकम्पन-(सं०पुं०) वड़ी कँपकपी।
विकरार-(हिं०वि०)विकराल, भयंकर,
विकराल-(सं०वि०) भयंकर, डरावना
विकरालता-(सं०स्त्री०) भयंकरता।
विकर्म-(सं०नपुं०) दुराचरण।
विकर्षण-(सं०नपुं०) आकर्षण, खींचना
विकल-(सं०वि०) व्याकुल, असमर्थ,
विकलता-(सं०वि०) व्याकुलता।
विकलाङ्ग-(सं०वि०) जिसका कोई अङ्ग टूटा फूटा हो।
विकला-(सं०स्त्री०) कला का साठवाँ भाग, अति सूक्ष्म काल।
विकलाना-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना,
विकलित-(सं०वि०) व्यग्र, व्याकुल।
विकलेन्द्रिय-(सं०वि०)जिसकी इन्द्रियाँ उसके वश में न हो।
विकल्प-(सं०पुं०) भ्रान्न्ति, धोखा, भ्रम, विरुद्ध कल्पना, अनेक विधियों का सम्मिलित होना; व्याकरण में किसी नियम के दो या अधिक भेदों में से इच्छानुसार किसी एक का ग्रहण;
विकल्पित-(सं०वि०) अनियमित, सन्दिग्ध; **विकल्पी**-(सं०वि०) विकल्प युक्त।
विकल्मष-(सं०वि०) पाप रहित।
विकवच-(सं०वि०) कवच रहित।
विकसन-(सं०नपुं०) फूटना, खिलना।
विकार-(सं०पुं०) किसी वस्तु के रूप रंग आदि में परिवर्तन, वुराई, दोष, अवगुण, **विकारी**-(हिं० वि०) वुरी वासना वाला, जिसमें उलट फेर हुआ हो।
विकाल-(सं०नपुं०) अतिकाल, देर।
विकाश-(सं०पुं०) विस्तार, वढ़ती, प्रकाश, फैलाव, खिलना, **विकास**-(सं०नपुं०) विस्तार, फैलाव, पुष्प आदि का खिलना, क्रम से उन्नति को प्राप्त करना। **विकासन**-(सं०नपुं०) प्रकाशन। **विकासना**-(हिं०क्रि०) प्रकट करना।
विकीर्ण-(सं०वि०)प्रसिद्ध, चारो ओर फैला हुआ।
विकुण्ठ-(हिं०पुं०)देखो वैकुण्ठ, स्वर्ग।
विकुण्ठन-(सं०नदुं०) दुर्बलता।
विकुण्डल-(सं०वि०) कुण्डल रहित।
विकुत्सा-(सं०स्त्री०) विशेष निन्दा।
विकूजन-(सं.नपुं.) वेगसे शब्द करना
विकृत-(सं०वि०) विगड़ा हुआ, कुरूप, भद्दा, अपूर्ण, अधूरा, विचित्र, रोगी, विद्रोही, **विकृतदृष्टि**-(सं०पुं०) ऐंचा
विकृति-(सं०पुं०) विकार, विगाड़, मनका क्षोभ, शत्रुता।
विकृष्ट-(सं०वि०)आकृष्ट, खिचा हुआ।
विक्रम-(सं०पुं०) बलया शक्ति की अधिकता,पराक्रम, गति।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विक्रमाब्द-(सं०पुं०) विक्रमादित्य का चलाया हुआ सम्वत्।

विक्रमी-(हिं०वि०) बड़ा पराक्रमी।

विक्रय-(सं०पुं०) बेंचने का कार्य, बिक्री; **विक्रयक**-(सं०पुं०) बिक्रेता, बेंचने वाला; **विक्रयन**-(सं०नपुं०) बिक्री; **बिक्रयी**-(सं०पुं०) बेंचने वाला।

विक्रान्ति-(सं०पुं०) शूरता, वीरता।

बिक्री-(हिं०स्त्री०) बेंचने की क्रिया या भाव; **विक्रीत**-(सं०वि०) बेंचा हुआ; **विक्रेता**-(सं०पुं०) बेचने या बिक्री करने वाला; **विक्रेय**-(सं०वि०) बिकने वाला।

विक्लिष्ट-(सं०वि०) बहुत थका हुआ।

विक्लेद-(सं०पुं०) आर्द्रता, गीलापन।

विक्षत-(सं०वि) बुरी तरहसे घायल।

विक्षिप्त-(सं०वि०) फेंका हुआ, व्याकुल, पागल।

विक्षुब्ध-(सं० वि०) जिसका मन चंचल हो।

विक्षेप-(सं०पुं०) इधर उधर फेंकना चित्त को इधर उधर भटकाना, बाधा, विघ्न।

विक्षेपण-(सं०नपुं०) इधर उधर फेंकने का काम।

विक्षोभ-(सं०पुं०) चित्तकी उद्विग्नता।

विख-(हिं०पुं०) देखो विष।

विखनन-(सं०नपुं०) खोदने का काम।

विखान-(हिं०पुं०) देखो विषाण, सींग।

विखायँध-(हिं०स्त्री०) कड़वी गन्ध।

विख्यात-(सं०वि०) प्रसिद्ध; **विख्याति**-(सं०स्त्री०) प्रसिद्धि।

विगणन-(सं०नपुं०) हिसाब करना, लेखा करना।

विगत-(सं०वि०) जो बीत गया हो,

विगतभय-(सं०वि०) निर्भीक, निडर; **विगतशोक**-(सं०वि०) शोक रहित। **विगतस्पृह**-(सं०वि०) देखो निःस्पृह;

विगति-(सं०पुं०) दुर्गति, दूर्दशा।

विगन्ध-(सं०वि) दुर्गन्धी, गन्धहीन।

विगर्ह-(सं०पुं०) निन्दा; **विगर्हणा**-(सं०नपुं०) डाँट डपट, धिक्कार। **विगर्हित**-(सं०वि०) निन्दनीय, **विगर्ही**-(सं०वि०) निन्दा कारक।

विगलन-(हिं०पुं०) नाश।

विगलित-(सं०वि०) विगड़ा हुआ, शिथिल।

विगन्ध-(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार की गन्ध न हो।

विगुण-(सं०वि०) विकृत, गुणहीन। **विगुणता**-(हिं०स्त्री०) गुणहीनता।

विगूढ़-(सं०वि०) निन्दित, गुप्त।

विग्रह-(सं०पुं०) विभाग, दूर करना, व्याकरण में यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों को अलग करना, युद्ध, कलह।

विग्रही-(हिं०वि०) युद्ध करने वाला,

विघटन-(सं०नपुं०) तोड़ना, फोड़ना अलगाना; **विघटित**-(सं०वि०), तोड़ा फोड़ा हुआ।

विघन-(हिं०पुं०) देखो विघ्न।

विघहन-(सं०नपुं०) रगड़ान।

विघात-(सं०पुं०) आघात, प्रहार, चोट, **विघातक**-(सं०वि०) नाश करने वाला; **विघातन**-(सं०नं०) हत्या; **विघाती**-(हिं०वि०) हत्या करने वाला।

विघ्न-(सं०पुं०) बाधा, अड़चन, विघ्नक, **विघ्नकर**-(सं०वि०) बाधा डालनेवाला; **विघ्नकारी**-(सं०वि०) विघ्न करने वाला;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विचकित-(सं०वि०) घबड़ाया हुआ।
विचक्षण-(हिं०वि०) निपुण, चतुर, बुद्धिमान् पंडित।
विचच्छन-(हिं०पुं०) देखो विचक्षण।
विचक्षु-(सं०वि०) जिसकी आँख नष्ट हो गई हो।
विचय-(सं०पुं०) एकत्र करना, परीक्षा
विचरण-(सं०पुं०) घूमना, फिरना।
विचरनि-(हिं०क्रि०) घुमना, चलना फिरना।
विचरनि-(हिं०स्त्री०) चलने फिरने की क्रिया।
विचल-(सं०वि०) अस्थिर, हिलता डोलता हुआ, **विचलता**-(सं०स्त्री०) चंचलता।
विचलना-(हिं०क्रि०) अपने स्थान से हट जाना, अधीर होना; **विचलाना**-(हिं०क्रि०) इधर उधर हटाना; **विचलित**-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल।
विचार-(सं०पुं०) भावना, न्यायालय का वादी प्रतिवादी के विषयमें निश्चय
विचारक-(सं०पुं०) विचार करने वाला; न्यायाधीश; **विचारणीय**-(सं०वि०) विचार करने योग्य; **विचारना**-(हिं०क्रि०) सोचना, समझना, ढूंढना, पता लगाना; **विचारपति**-(सं०पुं०) न्यायाधीश।
विचारवान्-(सं० पुं०) वह जिसमें विचारने की अच्छी शक्ति हो; **विचारशक्ति**-(सं०स्त्री०) भला बुरा पहिचानने की शक्ति, विचारशास्त्र-
विचारस्थल-(सं०नपुं०) न्यायालय,
विचाराध्यक्ष-(सं०पुं०) न्यायाधीश
विचारालय-(सं०पुं०) विचार स्थल;
विचारित-(सं०वि०) सोचा विचारा हुआ।
विचारी-(हिं०पुं०) विचार करनेवाला;
विचार्यमाण-(सं०वि०) विचार करने योग्य।
विचालन-(सं०नपुं०) अच्छी तरह हटाना, चलाना।
विचित्ति-(सं०स्त्री०) अनुसन्धान।
विचिन्तन-(सं०नपुं०) चिन्ता करना, सोचना; **विचिन्तनीय**-सोचने योग्य।
विचित्ति-(सं०पुं०) चित्त ठिकाने न रहने की अवस्था।
विचित्र-(सं०वि०) विलक्षण, असाधारण, रमणीय, सुन्दर, **विचित्रता**-सं० स्त्री०) विलक्षणता, **विचित्रशाला**-(सं०स्त्री०) अजायब घर।
विचिन्ता-(सं०स्त्री०) सोच विचार,
विचिन्तित-(सं०वि०) सोचा विचारा हुआ; **विचिन्त्यमान**-(सं०वि०) विचार किया हुआ।
विचेतन-(सं०वि०) अचेत।
विचेता-(सं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
विचेष्टन-(सं०नपुं०) इधर उधर लोटना
विचेष्टा-(सं०स्त्री०) मुँह बनाना; **विचेष्टित**-(सं०वि०) विशेष चेष्टा युक्त।
विच्छित-(सं०स्त्री०) त्रुटि, कमी, अलगाव।
विच्छिन्न-(सं०वि०) काट कर अलगाया हुआ, पृथक्, अलग।
विच्छेद-(सं०पुं०) विरह, वियोग, नाश काटने या अलगाने की क्रिया।
विच्छेदक-(सं०पुं०) काट कर अलग करने वाला; **विच्छेदन**-(सं०नपुं०) अलग करने की क्रिया, नाश; **विच्छेदनीय**-(सं०वि०) काट कर अलगाने योग्य; **विच्छेदी**-(सं०क्रि०) काटने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विछलना-(हि०क्रि०) विचलित होना, फिसलना ।
विछेद-(हिं०पु०) वियोग, विछोह ।
विछोई-(हि०पुं०) वियोगी ।
विछोह-(हिं०पुं०) प्रियसे अलग होना ।
विजंघ-(हिं०वि०) विना जांघ का ।
विजई-(हिं०पुं०) देखो विजयी ।
विजन-(सं०वि०) जनशून्य, एकान्त, वीजन, पंखा, वेना; **विजनता**-(सं० स्त्री०) एकान्तता ।
विजनन-(सं०नपुं०) प्रसव ।
विजना-(हिं०पुं०) पंखा, वेना ।
विजन्मा-(हि०पुं०) जारज, दोगला ।
विजय-(सं०पुं०) जय, जीत, **विजयक**-(सं०वि०) सर्वदा जीतनू वाला; **विजयकण्टक**-(सं०पुं०) विजय में विघ्न डालने वाला; **विजयपताका**-(सं०स्त्री०) वह झंडा जो सेना से विजय प्राप्त करने पर फहराया जाता है ।
विजया-(सं० स्त्री०) एक मातृक छन्द का नाम; **विजया दशमी**-(सं० स्त्री०) आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी ।
विजयी-(हिं०पुं०) वह जिसने विजय प्राप्त की हो, जीतने वाला ।
विजयेश-(सं०पुं०) शिव, महादेव ।
विजर-(सं०वि०) जरा रहित, जिसको वुढ़ापा न हो ।
विजर्जर-(सं०वि०) अत्यन्त जर्जर ।
विजल-(सं०नपुं०) वर्षा न होना, सूखा पड़ना ।
विजल्प-(सं०पुं०) व्यर्थ की बहुत सी बकवाद ।
विजाग-(हिं०पुं०) विमोह । **विजागी**-(हिं०पूं०) वियोगी ।
विजात-(सं०वि०) वर्ण संकर, दोगला ।
विजाति-(सं०वि०) भिन्न जाति का ।
विजातीय-(सं०वि०) जो अपनी जाति से भिन्न हो ।
विजिगीषा-(सं०पुं०) विजय प्राप्त करने की अभिलाषा, उन्नति ।
विजित-(सं०वि०) जीता हुआ ।
विजिह्म-(सं०वि०) वक्र, कुटिल ।
विजृम्भण-(सं० नपुं०) जंभाई लेना, भौंह सिकोड़ना । **विजृम्भा**-(सं०स्त्री०) जंभाई ।
विजेतव्य-(सं०वि०) जो जीतने योग्य हो ।
विजेता-(हिं०पुं०) विजय करने वाला, **विजेय**-(सं०वि०) जीता जाने योग्य ।
विजै-(हिं०पुं०) देखो विजय ।
विजोग-देखो वियोग ।
विजोर-(हिं०वि०) निर्बल ।
विज्जु-(हिं०स्त्री०) विद्युत, विजली ।
विज्जुल-(हिं० पुं०) त्वचा, छिलका ।
विज्जुलता-(हिं०स्त्री०) विद्युल्लता, विजली ।
विज्ञ-(सं०पुं०) बुद्धिमान्, पण्डित, विद्वान । **विज्ञता**-(सं० स्त्री०) पाण्डित्य ।
विज्ञप्त-(सं०वि०) सूचित किया हुआ,
विज्ञप्ति-(सं०स्त्री०) विज्ञापन ।
विज्ञात-(सं०वि०) प्रसिद्ध । **विज्ञाता**-(हिं०पुं०) जानने वाला ।
विज्ञान-(सं०नपुं०) ज्ञान, किसी विषय के सिद्धान्तों का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान जो ठीक क्रम से संग्रह किया गया हो, निश्चयात्मक बुद्धि । **विज्ञानी**-(हिं० पुं०) वह जिसको किसी विषय का अच्छा ज्ञान हो, वैज्ञानिक ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विज्ञापक-(सं०पुं०) समझाने या बतलाने वाला। **विज्ञापन**-(सं०नपुं०) किसी बात को जताने की क्रिया, सूचना देना, वह पत्र जिसके द्वारा कोई बात बतलाई जाती है।

विट-(सं०पुं०) लम्पट, कामुक, धूर्त,

विटप-(सं०पुं०) वृक्ष या लता की नई शाखा, झाड़ी, कोपल, पेड़।

विड़म्बक-(सं०पुं०) ठीक ठीक अनुकरण करने वाला, चिढ़ाने वाला।

विड़म्बना-(सं० स्त्री०) अनुकरण करना हँसी उड़ाना। **विडम्बनीय**-(सं०वि०) अनुकरण करने योग्य, चिढ़ाने लायक। **विड़म्बित**-(सं०वि०) उपहास किया हुआ, ठगा हुआ। **विड़म्बी**-(सं० नपुं०) अनुकरण करने वाला।

विड़रना-(हिं०क्रि०) इधर उधर या तितर बितर होना।

विड़ारना, विड़राना-(हिं०क्रि०) छितराना, दौड़ना, भागना।

विडाल-(सं०पुं०) मार्जार, बिल्ली।

विडौजा-(सं०पुं०) इन्द्र का एक नाम।

वितण्डा-(सं० स्त्री०) दूसरे के पक्ष को दबा कर अपने पक्ष का स्थापन।

वित-(हिं०पुं०) चतुर, ज्ञाता, निपुण।

वितत-(सं०वि०) विस्तृत, फैला हुआ।

विततानाः-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना।

विततिः-(सं०स्त्री०) विस्तार, फैलाव।

वितथ-(सं०वि०) मिथ्या, झूठ, निरर्थक

वितनु-(सं०वि०) अति सूक्ष्म।

वितपन्न-(हिं० वि०) व्युत्पन्न, दक्ष, प्रवीण।

वितरक-(हिं०वि०) बाँटने वाला।

वितरण-(सं०नपुं०) बाँटना।

वितरन-(हिं०पुं०) वितरण।

वितरना-(हिं०क्रि०) वितरण करना।

वितरिक्त-(हिं० अव्य०) अतिरिक्त, सिवाय।

वितरित-(सं०वि०) बाँटा हुआ।

वितरेक-(हिं०क्रि०वि०) व्यतिरिक्त, छोड़कर, सिवाय।

वितर्क-(सं०पुं०) एक तर्क के बाद दूसरा तर्क।

वितान-(सं०नपुं०) विस्तार, फैलाव, बड़ा चंदवा, समूह।

वितानक-(सं०पुं०) बड़ा चंदवा, समूह, जमघट।

वितानना-(हिं० क्रि०) चंदवा आदि तानना।

वितिक्रम-(हिं०पुं०) देखो व्यतिक्रम।

वितिमिर-(सं०वि०) अन्धकार शून्य।

वितीत-(हिं०वि०) व्यतीत, बीता हुआ।

वितीपाती-(हिं०वि०) उपद्रवी।

वितुंड-(हिं०पुं०) गज, हाथी।

वितु-(हिं०पुं०) वित्त, धन, सम्पत्ति।

वितृण-(सं०वि०) तृणहीन।

वितृप्त-(सं०वि०) जो तृप्त न हो।

वितृष्ण-(सं०वि०) तृष्णा से रहित।

वितृष्णा-(सं०स्त्री०) तृष्णा का अभाव

वितोय-(सं०वि०) जलहीन।

वित्त-(सं०नपुं०) सम्पत्ति, धन, (वि०) जाना हुआ, प्रसिद्ध। **वित्तकोश**-रुपया पैसा रखने की थैली। **वित्तहीन**-(सं०स्त्री०) धनहीन, दरिद्र।

वित्रप-(सं०वि०) निर्लज्ज।

वित्रस्त-(सं०वि०) बहुत डरा हुआ।

वित्रास-(सं०पुं०' भय, डर।

वियकना-(हिं०क्रि०) शिथिल होना।

वियकित-(हिं०वि०) शिथिल, थका हुआ।

वियराना-(हिं०क्रि०) छितराना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विथा-(हिं०स्त्री०) व्यथा, पीड़ा, रोग ।

विथित-(हिं०वि०) व्यथित, पीड़ा युक्त, दुखी ।

विदग्ध-(सं० पुं०) विद्वान, पण्डित, चतुर, (वि०)जला हुआ। **विदग्धता**-पाण्डित्य, चतुराई ।

विदरण-(सं०नपुं०) विदारण करना, फाड़ना । **विदरना**-(हिं०क्रि०) विदीर्ण होना, फटना ।

विदल-(सं०वि०) बिना दल का, जिसमें दल न हों ।

विदलन-(सं०नपुं०) टुकड़े करना, फटना फाड़ना । **विदलना**-(सं०वि०) नष्ट करना, फाड़ना। **विदलित**-(सं०वि०) फाड़ा हुआ, टुकड़े किया हुआ, रौंदा हुआ ।

विदा-(हिं०पुं०) प्रस्थान, कहीं जाने की आज्ञा । **विदाई**-(हिं०स्त्री०) विदा होने की अनुमति । **विदाय**-(हिं०पुं०) विसर्जन, प्रस्थान ।

विदार-(सं०पुं०) समर, युद्ध ।

विदारक-(सं०वि०) फाड़ डालने वाला **विदारण**-(सं०नपुं०) हत्या, समर, युद्ध । **विदारना**-(हिं०क्रि०) फाड़ना टुकड़े करना । **विदारित**-(सं०वि०) विदीर्ण, फाड़ा हुआ ।

विदारी-(हिं०वि०) फाड़ने वाला ।

विदाह-(सं०पुं०) हाथ पैर में होने वाली जलन ।

विदाही-(हिं०पुं०) दाह उत्पन्न करने वाला पदार्थ ।

विदित-(सं०वि०) ज्ञात, जाना हुआ ।

विदिथ-(हिं०पुं०) पण्डित, विद्वान् ।

विदिश-(सं०स्त्री०) दो दिशाओं के बीच का कोण ।

विदीर्ण-(सं०वि०)बीच से फाड़ा हुआ ।

विदुर-(सं०पुं०) पण्डित, ज्ञानी, जानकार ।

विदुष-(सं०पुं०) विद्वान्, पंडित, । **विदुषी** (सं०स्त्री०) स्त्री, विद्वान स्त्री

विदूर-(सं०वि०) जो बहुत दूर हो ।

विदूषक-(सं०पुं०)बातचीत करके दूसरों को हँसानेवाला । भांड़ ।

विदूषण-(सं०नपुं०) दोष लगाने का कार्य ।

विदूषना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना, दोषी ठहराना, दुःखी होना ।

विदेश-(सं०पुं०) परदेश; **विदेशी**-(हिं०वि०) परदेशी ।

विदेह (सं०पुं०) वह जो शरीर रहित हो, राजा जनक का एक नाम ।

विदोष-(सं०वि०) दोष रहित ।

विद्ध-(सं०वि०) छेदा हुआ, फेंका हुआ

विद्यमान-(सं०वि०)वर्तमान, उपस्थित; **विद्यमानता**-(सं०स्त्री०) उपस्थिति ।

विद्या-(सं०स्त्री०) शिक्षा आदि द्वारा उपार्जित ज्ञान, किसी विषय का विशिष्ट ज्ञान, **विद्यागम**-(सं०पुं०) विद्यालाभ । **विद्यागुरु**-(सं०पुं०) शिक्षक । **विद्यागृह**-(सं०पुं०) विद्यालय, पाठशाला । **विद्यादान**-(सं० नपुं०) विद्या पढ़ाना, शिक्षा देना । **विद्यादेवी**-(सं०स्त्री०) सरस्वती ।

विद्याधर-(सं०नपुं०) एक प्रकार की देवयोनि । **विद्याधरी**-(सं०स्त्री०) किन्नरी ।

विद्याधार-(सं०नपुं०) विद्वान्, पंडित **विद्याधिप**-(सं०पुं०) गुरु, शिक्षक, विद्वान् । **विद्यारम्भ**-(सं०पुं०) बालकों को विद्या पढ़ाना, प्रारम्भ करने का संस्कार । **विद्याभृत्**-(सं०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पुं०) विद्वान् । **विद्यार्थी**-(हिं०पुं०) विद्या पढ़ने वाला छात्र, शिष्य । **विद्यालय**-(सं०पुं०) पाठशाला । **विद्यावान्**-(सं०पुं०) विद्वान्, पंण्डित **विद्यावेश्म**-(सं०नपुं०) विद्यालय । **विद्यासागर**-(सं०वि०) सब शास्त्रों को जानने वाला ।

विद्युता-(सं०स्त्री०) विद्युत, विजली ।

विद्युत्-(सं०स्त्री०) विजली । **विद्युत्पात**--(सं०पुं०) विजली का गिरना । **विद्युत्मापक**-(सं०पु०) वह यन्त्र जिसके द्वारा विजली के बल, प्रवाह आदि के विषय में जाना जाता है । **विद्युन्माला**-(सं०स्त्री०) विजली का समूह ।

विद्युल्लता-(सं०स्त्री०) विद्युत, विजली

विद्योतन-(सं०वि०) दीप्ति युक्त । **विद्योती**-(सं०वि०) प्रभावशाली ।

विद्रथ-(सं०वि०) मोटा, पुष्ट ।

विद्राव-(सं०नपुं०) बहना, पिघलना ।

विद्रावण-(सं०पुं०) पिघलना, भीगना ।

विद्रावित-(सं०वि०) भीगा हुआ ।

विद्रावी-(सं०वि०) भागने वाला, गलने वाला ।

विद्रुत-(सं०वि०) गला हुआ भीगा हुआ ।

विद्रुम-(सं०नपुं०) प्रवाल, मूंगा ।

विद्रोह-(सं०पुं०) द्वेष, राज्य को हानि पहुँचाने वाला, उपद्रव । **विद्रोही**-(सं०वि०) राज्य को हानि पहुँचाने वाला ।

विद्वत्तम-(सं०वि०) विद्वानों में श्रेष्ठ **विद्वत्ता**-(सं०स्त्री०) पाण्डित्य, पंडिताई ।

विद्वत्व-(सं०नपुं०) पाण्डित्य ।

विद्वान्-(सं०पुं०) वह जिसने बहुत विद्या पढ़ी हो, पण्डित, सर्वज्ञ ।

विद्विष-(सं०पुं०) शत्रु, वैरी । **विद्वेष**-(सं०वि०) शत्रु । **विद्वेषिता**-(सं०स्त्री०) शत्रुता करने वाला वैरी ।

विधंस-(हिं०पुं०) विध्वंस, नाश ।

विध-(हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा ।

विधनता-(सं०स्त्री०) निर्धनता ।

विधना-(हिं०क्रि०) प्राप्त करना, अपने ऊपर लेना । (हिं०स्त्री०) भवितव्यता (हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा ।

विधर-(हिं०क्रि०वि०) देखो उधर, उस ओर ।

विधरण-(सं०नपुं०) रोकना, पकड़ना ।

विधर्म-(सं०पुं०) वह धर्म जो अपना न हो, पराये का धर्म, (वि०) गुणहीन, । **विधर्मिक, विधर्मी**-(हिं०पुं०) वह जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी है ।

विधवा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति मर गया हो, राँड़ । **विधवापन**-(हिं०पुं०) रड़ांपा, वैधव्य । **विधवा-आश्रम**-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ निराश्रय विधवाओं के पालन पोषण आदि का प्रवन्ध रहता है ।

विधासना-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, इधर उधर करना ।

विधातव्य-(सं०वि०) कर्तव्य, करने योग्य ।

विधाता-(हिं० पुं०) व्यवस्था करने वाला, प्रवन्ध करने वाला, जगत की रचना करने वाला ।

विधात्री-(सं०स्त्री०) विधान करने वाली ।

विधान-(सं०नपुं०) किसी कार्य का आयोजन, अनुष्ठान, प्रवन्ध, विधि,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पद्धति, प्रणाली, ढंग, उपाय, पूजा, व्यवस्था, रचना । **विधानक**-(सं० वि०) विधि या रीति जानने वाला ।

विधानी-(हिं०पुं०) विधि पूर्वक कार्य करने वाला ।

विधायक-(सं०पुं०) बनाने या रचने वाला ।

विधि-(सं०स्त्री०) काम करने की रीति, ढंग, नियम, व्यवस्था, व्याकरण में क्रिया का वह रूप जिससे कोई आज्ञा दी जाती है ।

विधिज्ञ-(सं०वि०) शास्त्रोक्त विधान को जानने वाला ।

विधिदृष्ट-(सं०वि०) शास्त्र विहित ।

विधिना-(हिं०पुं०) विधि, ब्रह्मा । **विधिपूर्वक**-(सं०वि०) नियम के अनुसार ।

विधिरानी-(हिं०स्त्री०) सरस्वती ।

विधिलोक-(सं०पुं०) ब्रह्मलोक ।

विधिवत्-(सं०अव्य०) विधि पूर्वक, **विधिबद्ध**-(सं०वि०) नियमबद्ध ।

बिधिशास्त्र-(सं०नपुं०) व्यवहारशास्त्र, स्मृतिशास्त्र ।

बिधुन्तुद-(हिं०पुं०) राहु ।

विधु-(सं०पुं०) चन्द्रमा । **विधुप्रिया**-(सं०स्त्री०) कुमुदिनी ।

विधुमणि-(हिं० स्त्री०) चन्द्रकान्तमणि । **विधुवैनी**-(हिं०स्त्री०) चन्द्रमुखी, सुन्दर स्त्री ।

विधुर-(सं०वि०) व्यग्र, व्याकुल ।

विधुवदनी-(सं०स्त्री०) चन्द्रमा के समान मुखवाली स्त्री, सुन्दर स्त्री ।

विधूत-(सं०वि०) काँपता हुआ, हटाया, हुआ, दूर किया हुआ ।

विधूम-(सं०वि०) बिना धुवें का ।

विधेय-(सं०वि०) कर्तव्य, जिस कार्य का करना उचित हो, होने वाला, व्याकरण में वह वाक्य जिसके द्वारा किसी के विषय में कुछ कहा जाय ।

विध्वंस-(सं०पुं०) नाश, अनादर, वैर । **विध्वंसक**-(सं०वि०) नाश करनेवाला **विध्वंसि**-(हिं०वि०) नाश करनेवाला **विध्वस्त**-(सं०वि०) नाश किया हुआ

विन-(हिं०सर्व०) उस, (अव्य०) बिना

विनत-(सं०वि०) विनीत, नम्र, शिष्ट, झुका हुआ ।

विनतड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो विनति ।

विनति-(सं०स्त्री०) नम्रता, शिष्टता, सुशीलता, प्रार्थना ।

विनती-(हिं०स्त्री०) देखो विनति ।

विनिमन-(सं०नपुं०) झुकाना, नवाना

विनम्र-(सं०वि०) अति विनीत, सुशील ।

विनय-(सं०स्त्री०) नम्रता, प्रार्थना । **विनयपत्र**-(सं०नपुं०) प्रार्थनापत्र । **विनयवान्**-(सं०वि०) नम्र, शिष्ट, **विनयशील**-(सं०वि०) विनय युक्त, सुशील ।

विनयी-(हिं०वि०) विनीत, नम्र ।

विनशन-(सं०नपुं०) नाश ।

विनश्वर-(सं०वि०) अनित्य, नष्ट होने वाला । **विनश्वरता**-(सं०स्त्री०) अनित्यता ।

विनष्ट-(सं०वि०) जो नष्ट हो गया हो ।

विनस-(सं०वि०) बिना नाक का ।

विनसना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना । **विनसाना**-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना ।

विना-(सं०अव्य०) अभाव में ।

बिनती-(सं०स्त्री०) विनय, प्रार्थना ।

विनाथ-(सं०वि०) बिना रक्षक का ।

विनाश-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश ।

विनाशक-(सं० वि०) नाश करने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वाला । **विनाशन**-(सं०पुं०) संहार, नाश । **विनाशित**-(सं०वि०) नाश किया हुआ ।

विनास-(हिं०पुं०) विनाश । **विनासना**-(हिं०क्रि०) नष्ट करना, बिगाड़ना ।

विनिःसृत-(सं०वि०) बाहर निकाला हुआ ।

विनिक्षिप्त-(सं०वि०) परित्यक्त ।

विनिग्रह-(सं०पुं०) प्रतिबंध, बंधेज ।

विनिघ्न-(सं०वि०) गुणा किया हुआ ।

विनिद्र-(सं०वि०) निद्रा रहित ।

विनिद्रत्व-(सं०नपुं०) जागरण ।

विनिध्वस्त-(सं०वि०) ध्वंस प्राप्त ।

विनिन्दक-(सं०पुं०) अत्यन्त निन्दा करने वाला । **विनिन्दित**-(सं०वि०) बहुत निन्दा किया हुआ ।

विनिपात-(सं०पुं०) ध्वंस, हत्या । **विनिपातक**-(सं०वि०) संहार या अपमान करने वाला ।

विनिमय-(सं०पुं०) परिवर्तन, अदलबदल, बंधक, गिरवी ।

विनिपातित-(सं०वि०) फेंका हुआ ।

विनियुक्त-(सं०वि०) नियोजित ।

विनिमय-(हिं०पुं०) परिवर्तन ।

विनियोग-(सं०पुं०) किसी फल की आकांक्षा से किसी वस्तु का उपयोग । **विनियोजित**-(सं०वि०) प्रेरित, नियुक्त ।

विनिर्गत-(सं०वि०) निकाला हुआ, बीता हुआ ।

विनिर्गम-(सं०पुं०) प्रस्थान । **विनिर्जित**-(सं०वि०) पराभूत, पराजित । **विनिर्भय**-(सं०वि०) भय रहित । **विनिर्मल**-(सं०वि०) अति निर्मल ।

विनिर्मित-(सं०वि०) अच्छी तरह से बनाया हुआ ।

विनिर्मुक्त-(सं०वि०) छुटकारा पाया हुआ ।

विनिर्मोक-(सं०वि०) वस्त्र रहित ।

विनिवर्तित-(सं०वि०) लौटा हुआ ।

विनिश्चल-(सं०वि०) विशेष रूप से स्थिर ।

विनिहत-(सं०वि०)आहत, चोट खाया हुआ ।

विनीत-(सं०वि०) सुशील, शिष्ट, नम्र । **विनीतता**-(सं०स्त्री०) नम्रता । **विनीति**-(सं०स्त्री०) सुशीलता, सम्मान ।

विनु-(हिं०अव्य०) देखे बिना ।

विनूठा-(हिं० वि०) अपूर्व, अनुठा ।

विनोद-(सं०पुं०) कौतूहल, खेलकूद, क्रीड़ा, प्रसन्नता, आनन्द । **विनोदित**-(सं०वि०) हर्षित, प्रसन्न । **विनोदी**-(हिं०वि०) क्रीड़ा करने वाला । हँसी करने वाला ।

विन्दु-(सं०पुं०) बूंद, बुंदकी, अनुस्वार,

विन्दुर-(हिं०पुं०) छोटी, विन्दी, बुनकी

विन्यस्त-(सं०वि०) स्थापित, रक्खा हुआ ।

विन्यास-(सं०पुं०) ठीक स्थान पर रखना या बैठाना, जड़ना ।

विपक्ष-(सं०पुं०) प्रतिद्वन्दी, शत्रु, विरोध, खण्डन, व्याकरण में बाधक नियम या अपवाद, (वि०) विरुद्ध, प्रतिकूल, बिना पक्ष या डैने का । **विपक्षता**-(सं०स्त्री०) विपक्ष होने की क्रिया या भाव ।

विपक्षी-(सं०वि०) विरुद्ध पक्ष का ।

विपत्ति-(सं०पुं०)आपत्ति ,क्लेश, संकट की अवस्था, कठिनाई ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विपथ-(सं०पुं०) कुमार्ग, बुरा मार्ग
विपद्-(सं०स्त्री०) आपत्ति, संकट।
विपद्-(हिं०स्त्री०) विपत्ति, संकट, दुःख।
विपरीत-(सं०वि०) विरुद्ध।
विपर्यय-(सं०पुं०) व्यतिक्रम, मिथ्या, ज्ञान, उलटफेर, अव्यवस्था, भ्रम,
विपर्यस्त-(सं०वि०) उलटा पुलटा हुआ।
विपर्यास--(सं०पुं०) व्यतिक्रम, मिथ्या ज्ञान।
विपल-(सं०नपुं०) पल का साठवाँ भाग।
विपश्चित्-(सं०पुं०) विद्वान्, पण्डित।
विपाक-(सं०पुं०) भोजन का पेट में पचना।
विपाटित-(सं०वि०) उखाड़ा हुआ।
विपादित-(सं०वि०) नष्ट किया हुआ।
विपिन-(सं०नपुं०) उपवन, वाटिका, जंगल। **विपिनबिहारी**-(सं० वि०) जंगल में विहार करने वाला, श्री कृष्ण का एक नाम।
विप्रभ-(सं०वि०) पुत्रहीन पुत्ररहित। **विपुत्रा**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसको कोई पुत्र न हो।
विपुल-(सं०वि०) वृहत्-अगाध संख्या या परिमाण में अधिक। **विपुलता**-(सं०स्त्री०) अधिकता।
विपुलमति-(सं० पुं०) बहुत बुद्धिमान
विपुला-(सं०स्त्री०) वसुन्धरा, पृथ्वी
विपलाई-(हिं० स्त्री०) विपुलता, अधिकता।
विपुष्ट-(सं०वि०) बड़ा पुष्ट या दृढ़।
विपुष्प-(सं०वि०) बिना फूल का।
विपोहना-(हिं०क्रि०) लीपना, पोतना नाश करना।
विप्र-(सं०पुं०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रकर्ष-(सं०पुं०) दूरसे खींच लेना। **विप्रकर्षण**-(सं०नपुं०) दूर से खींचने की क्रिया।
विप्रकीर्ण-(सं०वि०) छितराया हुआ, बिखरा हुआ।
विप्रकृष्ट-(सं०वि०) खींचकर दूर किया हुआ।
विप्रजन-(सं०पुं०) ब्राह्मण, पुरोहित।
विप्रतारक-(सं०वि०) धोखा देनेवाला
विप्रतिपत्ति-(सं०पुं०) विरोध।
विप्रमत्त-(सं०वि०) अति प्रमत्त।
विप्रयुक्त-(सं०वि०) बिछुड़ा हुआ।
विप्रयोग-(सं०पुं०) वियोग।
विप्रलब्ध--(सं०वि०) धोखा दिया हुआ, वंचित।
विप्रलम्भ-(सं०पुं०) प्रिय वस्तु का न मिलाना। **विप्रलम्भक**-(सं०वि०) छली, धूर्त।
विप्रलाप-(सं०पुं०) व्यर्थ की बकवाद।
विप्रलीन--(सं०वि०) चारों ओर बिखरा हुआ।
विप्रलोप-(सं०पुं०) पूर्ण लोप, नाश।
विप्रलोभी-(सं०वि०) बड़ा लालची, ठग
विप्रेषित-(सं०वि०) बाहर भेजा हुआ
विप्लब--(सं०पुं०) उपद्रव, हलचल, विपत्ति, अव्यवस्था।
विप्लावक-(सं०पुं०) राज्यद्रोही।
विप्लावी-(हिं०वि०) उपद्रव करनेवाला
विप्लुत-(सं०वि०) आकुल, घबड़ाया हुआ।
विप्लुति--(सं० स्त्री०) उपद्रव, विप्लव
विफल-(सं०वि०) व्यर्थ, निष्फल।
विबुद्ध-(सं० वि०) जागृत, जागता हुआ।
विबुध-(सं०पुं०) बुद्धिमान, पण्डित।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विबुधाधिप, विबुधाधिपति-(हिं०पुं०) इन्द्र
विबुधान-(सं०पुं०) आचार्य, देवता ।
विबुधेतर(सं०पुं०) असुर, दैत्य ।
विबोध-(सं०पुं०) जागरण, अच्छा ज्ञान **विबोधन**-(सं०पुं०) समझाना, बुझाना **विबोधित**-(सं०वि०) बतलाया हुआ।
विभंग-(सं०पुं०) विभाग, भ्रूभङ्ग ।
विभक्त-(सं०वि०) अलग किया हुआ, बांटा हुआ ।
विभक्ति-(सं०स्त्री०) विभाग, बाँट, व्याकरण में शब्द में लगाया हुआ वह प्रत्यय जिससे उस पद का क्रियापद से संबंध सूचित होता है ।
विभग्न-(सं०वि०) टूटा फूटा हुआ ।
विभव-(सं०पुं०) ऐश्वर्य, धन, सम्पत्ति
विभवमद-(सं०पुं०) धन का अहंकार ।
विभववान्-(सं०वि०) शक्तिशाली ।
विभवशाली-(सं०लि०) ऐश्वर्ययुक्त
विभा-(सं०स्त्री०) प्रभा, कान्ति, शोभा
विभाग-(सं०पुं०) बाँटने की क्रिया या भाव, बँटवारा ।
विभागी-(हिं०पुं०) विभाग करने वाला
विभाजक-(सं०पुं०) विभाग करनेवाला गणित में वह संख्या जिससे किसी दूसरी संख्या भाग दी जाती है ।
विभाजन-(सं०नपुं०) भाग करने या बाँटने की क्रिया । **विभाजित**-(सं० वि०) भाग किया हुआ, बाँटा हुआ । **विभाज्य**-(सं०वि०) विभाग करने योग्य
विभात-(सं०नपुं०) प्रभात, सबेरा ।
विभाति-(हिं०पुं०) शोभा, सुन्दरता ।
विभाना-(हिं०क्रि०) सुशोभित होना ।
विभारना-(हिं०क्रि०) चमकना ।
विभावन-(सं०नपुं०) विशेष रूप से चिन्तन ।
विभावनीय-(सं०वि०) चिन्तन करने योग्य ।
विभावरी-(सं०स्त्री०) रात्रि, वह रात जिसमें तारे चमकते हों ।
विभावित-(सं०वि०) चिन्तित, सोंचा हुआ ।
विभिन्न-(सं०वि०) अलग अलग, अनेक प्रकार का, उलटा । **विभिन्नता**-(सं०स्त्री०) भेद ।
विभीत-(सं०वि०) डरा हुआ ।
विभीति-(सं०स्त्री०) भय, डर, शंका ।
विभीषक-(सं०वि०) डराने वाला । **विभीषण**-(सं०वि०) बड़ा भयंकर या डरावना ।
विभु-(सं०पुं०) वह जो सर्वव्यापक हो नित्य, अचल, शक्तिमान, (पुं०) आत्मा, ईश्वर, स्वामी ।
विभुग्न-(सं०वि०) कुछ टूटा हुआ ।
विभुता-(सं०पुं०) ऐश्वर्य, प्रभुता, शक्ति
विभूति-(सं०स्त्री०) वृद्धि, ऐश्वर्य, बड़ाई ।
विभूतिमान्-(सं०पुं०) ऐश्वर्य शाली ।
विभूषण-(सं०नपुं०)अलंकार, गहना ।
विभूषणा-(सं०स्त्री०) शोभा । **विभूषना**-(हिं०क्रि०) अलंकृत, सजाया हुआ । **विभूषित**-(सं०वि०) सुशोभित, गुणों से युक्त ।
विभूषा-(सं०स्त्री०) अलंकार, गहना ।
विभेटन-(हिं०पुं०) गले लगाना ।
विभेत्ता-(सं०वि०) डराने वाला ।
विभेद-(सं०पुं०) विभिन्नता । **विभेदक**-(सं०वि०) काटनेवाला । **विभेदकारी**-(सं०वि०) फूट उत्पन्न करने वाला । **विभेदना**-(हिं०क्रि०) छेदना, काटना, प्रवेश करना । **विभेदी**-(हिं० वि०) छेद कर घुसने वाला ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विभो-(हिं०पुं०) हे प्रभू !
विभोर-(हिं०वि०) डूबा हुआ ।
विभौ-(हिं०पुं०) देखो विभव ।
विभ्रंशित-(सं०वि०) पतित, विलुप्त
विभ्रम-(सं०पुं०) भ्रम, संशय, सन्देह ।
विभ्रमी-(सं०वि०) विभ्रम युक्त ।
विभ्रान्त-(सं०वि०) भ्रम में पड़ा हुआ
विभ्रान्ति-(सं०स्त्री०) व्यग्रता, घबड़ाहट ।
विमण्डन-(सं०नपुं०) आभूषण ।
विमण्डित-(सं०वि०) सुशोभित, सजा हुआ ।
विमत-(सं०नपुं०) विरुद्ध मत या सिद्धान्त ।
विमति-(सं०पुं०) कुमति ।
विमत्सर-(सं०पुं०) अधिक अहंकार ।
विमद-(सं०वि०) मद रहित ।
विमन, विमनस्क-(सं०वि०) उदास, खिन्न ।
विमन्यु-(सं०वि०) क्रोध रहित ।
विमर्द-(सं०पुं०) पीसना, झगड़ा, विनाश, युद्ध । **विमर्दन**-(सं०नपुं०) नष्ट करना, मार डालना । **विमर्दित**-(सं०वि०) कुचला हुआ, नष्ट किया हुआ ।
विमर्श-(सं०पं०)समालोचना,परामर्श ।
विमल-(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ, निर्दोष ।
विमलता-(सं०स्त्री०) पवित्रता, मनोहरता । **विमलत्व**-(सं०स्त्री०) स्वच्छता, निर्मलता ।
विमाता-(सं०स्त्री०) सौतेली माँ ।
विमातृज-(सं०पुं०) सौतेला भाई ।
विमान-(सं०नपुं०) वायुयान ।
विमानना-(हिं०स्त्री०) अपमान, तिरस्कार ।
विमार्ग-(सं०पुं०)बुरा मार्ग, कुचाल ।
विमुक्त-(सं०वि०) भली भांति मुक्त, स्वतंत्र, छोड़ा हुआ, अलग किया हुआ । **विमुक्ति**-(सं०स्त्री०) मुक्ति, मोक्ष, छुटकारा ।
विमुख-(सं०वि०) मुखरहित, निवृत्त, विरुद्ध, निराश । **विमुखता**-(सं० स्त्री०) विरोध, अप्रसन्नता ।
विमुग्ध-(सं०वि०) मोहित, व्यग्र, घबड़ाया हुआ ।
विमूढ-(सं०वि०) मोह प्राप्त, भ्रम में पड़ा हुआ, बेसुध, अचेत,
विमूल-(सं० वि०) निर्मूल, बिना जड़का ।
विमूलन-(सं०नपुं०) नाश, ध्वंस ।
विमृश-(सं०पुं०) आलोचना ।
विमृष्ट-(सं०वि०) जिस पर तर्क वितर्क किया गया हो ।
विमोक-(सं०पुं०) मुक्ति, छटकारा ।
विमोघ-(हिं०वि०) अमोघ । **विमोचक**-(सं०वि०) बन्धन खोलने वाला । **विमोचन**-(सं०नपुं०) बन्धन खोलना । **विमोचना**-(हिं०क्रि०)बन्धन खोलना, मुक्त करना । **विमोचित**-(सं० वि०) मुक्त किया हुआ, खुला हुआ ।
विमोह-(सं०पुं०) भ्रम, अज्ञान ।
विमोहक-(सं० पुं०) चित्त को लुभाने वाला । **विमोहना**-(हिं० क्रि०) मोहित होना या करना ।
विमोहित-(सं०वि०) मुग्ध, लुभाया हुआ, मूछित । **विमोही**-(सं०स्त्री०) लुभाने वाला ।
विमौन-(सं०वि०) मौन रहित ।
विम्बित-(सं०वि०) प्रतिबिम्बित ।
विय-(हिं०वि०) दो, जोड़ा ।
वियत्-(सं०पुं०) आकाश, वायुमण्डल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वियुत-(सं०वि०) रहित, अलग, हीन।
वियुक्त-(सं०वि०) बिछुड़ा हुआ, रहित।
वियोग-(सं०पुं०) विरह, अलगाव।
वियोगी-(हिं०पुं०वि०) विरही पुरुष।
वियोजक-(सं०पुं०) गणित में वह संख्या जो किसी बड़ी संख्या में से घटाई जाने वाली हो।
वियोजन-(सं०नपुं०) पृथक करना, बाकी निकालना। **वियोजित**-(सं० वि०) अलगाया हुआ।
विरंचि-(सं०पुं०) सृष्टिकर्ता, ब्रह्मा।
विरक्त-(सं०वि०) विमुख, अप्रसन्न, उदासीन। **विरक्ति**-(सं०स्त्री०) उदासीनता।
विरचन-(सं०नपुं०) निर्माण। **विरचना**-(हिं०क्रि०) निर्माण करना। **विरचित**-(सं०वि०) निर्मित, बनाया हुआ।
विरज-(हिं०वि०) स्वच्छ, निर्मल, निर्दोष।
विरत-(सं०वि०) विमुख, विरक्त।
विरति-(सं०पुं०) उदासीनता, वैराग्य
विरथ-(सं०वि०) बिना रथ का, पैदल, रथ से गिरा हुआ।
विरद-(हिं०पुं०) प्रसिद्धि, यश, कीर्ति। (वि०) बिना दाँत का।
विरदावली-(सं०स्त्री०) यश की कथा
विरदैत-(हिं०वि०) यशस्वी।
विरमना-(हिं०क्रि०) विराम करना, ठहरना। **विरमाना**-(हिं०क्रि०) अनुरक्त करना, फँसाना।
विरल-(सं०वि०) जो घना न हो, दूर दूर पर हो। **विरलता**-(हिं० स्त्री०) पतलापन।
विरव-(सं०वि०) शब्द रहित।
विरश्मि-(सं०वि०) बिना कारण का
विरस-(सं०वि०)नीरस, फीका, बिना स्वाद का।
विरह-(सं०पुं०) वियोग।
विरहा-(हिं०वुं०)एक प्रकार की गीत जिसको अहीर गड़रिये गाते हैं।
विरहित-(सं०वि०)रहित, शून्य, बिना
विराग-(सं०पुं०) उदासीन भाव, वैराग्य
विरागी-(हिं०वि०) विरक्त, संसारत्यागी।
विराजना-(हिं०क्रि०)उपस्थित रहना, शोभित होना।
विराजमान-(हिं०वि०) सुशोभित, बैठा हुआ।
विराजित-(सं०वि०) बैठा हुआ, उपस्थित, चमकाता हुआ।
विराम-(सं०नपुं०) ठहराव, विश्राम, बोलती समय वाक्य में वह स्थान जहाँ ठहरना पड़ता हो।
विरावी-(हिं०वि०) कोलाहल करने वाला।
विरास,विरासी-(हिं०) देखो विलास, विलासी।
विरिंच-(हिं०पुं०) ब्रह्मा, शिव, विष्णु
विरुज-(सं०वि०) रोग रहित, नीरोग
विरुझना-(हिं०क्रि०) उलझना।
विरुत-(सं०वि०) कूजित, गूंजता हुआ।
विरुद-(सं०पुं०) यश, कीर्ति, गुण।
विरुदावली-(सं० स्त्री०) किसी के प्रताप पराक्रम आदि का विस्तार पूर्वक वर्णन।
विरुद्ध-(सं०वि०) प्रतिकूल, विपरीत।
विरुद्धता-(सं०स्त्री०) प्रतिकूलता, उलटापन।
विरुधिर-(सं०वि०) रक्तहीन।
विरूप-(सं०वि०)कुरूप, भद्दा, विरुद्ध,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिन्न। **विरूपता**-(सं०स्त्री०)कुरूपता भद्दापन।

विरूपाक्ष-(सं०त्रि०) डरावने नेत्र वाला।

विरूपी-(हिं०वि०) कुरूप।

विरेचक-(सं०वि०) शौच लानेवाला। **विरेचन**-(सं०नपुं०)शौच लानेवाली औषधि।

विरेफ-(सं०वि०) रेफ शून्य।

विरोध-(सं०पुं०) विपरीत भाव, वैर,

विरोधक-(सं०वि०)विरोध करनेवाला

विरोधना-(हिं०क्रि०) विरोध करना, शत्रुता करना।

विरोधाचरण-(सं०नपुं०) शत्रुता का व्यवहार।

विरोधित-(सं०वि०) जिसका विरोध किया हुआ हो।

वरोधिता-(सं०स्त्री०) शत्रुता, वैर।

विरोधिनी-(सं०स्त्री०) विरोध करने वाली।

विरोधी-(हिं० वि०) विरोध करने वाला, विपक्षी, शत्रु।

विरोधोक्ति-(सं० स्त्री०) परस्पर विरोधी वचन।

विरोम-(सं०वि०) रोम रहित, बिना रोवें का।

विरोष-(सं०वि०) क्रोध रहित।

विरोहण-(सं०पुं०) एक स्थान से उखाड़ कर दूसरे स्थान में लगाना।

विरोही-(हिं०पुं०) पौधा लगाने वाला.

विर्त-(हिं०पुं०) देखो वृत्ति।

विलंघनीय-(सं०वि०) लाँघने योग्य।

विल-(सं०नपुं०) छिद्र, कन्दरा।

विलक्षण-(सं०नपुं०) अपूर्व, अद्भुत। **विलक्षणता**-(सं०स्त्री०) अनोखापन

विलखना-(हिं०क्रि०) दुखी होना।

विलखाना-(हिं०क्रि०') घबड़ाना।

विलग-(सं०वि०) अलग, पृथक(पुं०) भेद। **विलगाना**-(हिं०क्रि०) अलग होना या करना।

विलग्न-(सं०वि०) संलग्न, लगा हुआ।

विलंघी-(सं०वि०) नियम का उल्लंघन करने वाला।

विलच्छन-(हिं०वि०) देखो विलक्षण।

विलज्ज-(सं०वि०) लज्जा रहित।

विलपन-(सं०नपुं०) विलाप, वार्तालाप **विलपना**-(हिं०क्रि०) विलाप करना रोना। **विलपाना**-(हिं० क्रि०) रुलाना।

विलम्ब-(सं०पुं०) अति काल, देर।

विलम्बन-(सं० पुं०) विलंब करना, सहारा लेना; **विलम्बना**-(हिं०क्रि०) देर करना, सहारा लेना। **विलम्बित**-(सं०वि०) लटकता हुआ, जिसको देर हुई हो।

विलम्बी-(सं०वि०) देर करने वाला।

विलम्भ-(सं०पुं०) उदारता, उपहार।

विलय-(सं०पुं०) प्रलय, लोप, नाश, मृत्यु।

विलसन-(सं०नपुं०) आमोद प्रमोद, क्रीड़ा। **विलसना**-(हिं०क्रि०) विलास करना, शोभा प्राप्त करना।

विलाप-(सं०पुं०) क्रन्दन विकल होकर रोने की क्रिया। **विलापना**-(हिं०क्रि०) विलाप करना, रोना।

विलास-(सं०पुं०) हर्ष, आनन्द, सुख, मनोरंजन, हावभाव।

विलासभवन, विलासमन्दिर-(सं० नपुं०) क्रीड़ाघर, नाचघर।

विलासिनी-(सं०स्त्री०) सुन्दर युवा स्त्री, वेश्या।

विलासी-(हिं०पुं०) कामी पुरुष।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलिखित-(सं० वि०) लिखा हुआ,
विलिप्त-(सं०वि०) लिपा पुता हुआ।
विलीक-(सं०वि०) अनुचित, अयोग्य
विलीन-(सं०वि०) लिप्त, छिपा हुआ।
विलुप्त-(सं०वि०) जो देख न पड़ता हो।
वितुलित-(हिं०वि०) लहराता हुआ।
विलून-(सं०वि०) अलग किया हुआ।
विलेप-(सं०पुं०) लेप : **विलेपन**-(सं० नपुं०) लेप करने की क्रिया।
विलोक-(सं०पुं०) दृष्टि; **विलोकना**-(हिं०क्रि०) देखना। **विलोकनीय**-(सं०वि०) देखने योग्य।
विलोकित-(सं०वि०) देखा हुआ।
विलोचन-(सं०पुं०) नयन, नेत्र, आँख।
विलोप-(सं०पुं०) नाश, हानि। **विलोपक**-(सं०वि०) नाश करने वाला। **विलोपना**-(हिं०क्रि०) लोप करना, बाधा डालना।
विलोपी-(सं०वि०) नाश करने वाला
विलोभ-(सं०पुं०) मोह, भ्रम, माया।
विलोभन-(सं०नपुं०) मोहित करने का व्यापार।
विलोल-(सं०वि०) चंचल, चपल।
विल्व-(सं०पुं०) बेल का पेड़। **विल्वपत्र**-(सं०नपुं०) बेल का पत्ता।
विवंश-(सं०वि०) वंशरहित। **विव**-(हिं०वि०) दो, दूसरा।
विवचन-(सं०नपुं०) कथन।
विवक्ता-(हिं०पुं०) कहने वाला, संशोधक।
विवक्षा-(सं०स्त्री०) बोलने की इच्छा आशय, तात्पर्य, अर्थ। **विवक्षित**-(सं०वि०) इच्छा किया हुआ।
विवदना-(हिं०क्रि०) शास्त्रार्थ करना,
विवर-(सं०नपुं०) बिल, छेद, गुहा।
विवरण-(सं०नपुं०) सविस्तार वर्णन, व्याख्या, भाष्य, टीका।
विवर्जन-(सं०नपुं०) परित्याग, उपेक्षा
विवर्जनीय-(सं० वि०) त्याग करने योग्य।
विवर्जित-(सं०वि०) निषिद्ध, उपेक्षित
विवर्ण-(सं०वि०) नीच, कान्तिहीन।
विवर्तन-(सं०नपुं०) परिभ्रमण।
विवर्तित-(सं०वि०) बदला हुआ।
विवर्धन-(सं०नपुं०) वृद्धि, बढ़ती।
विवश-(सं०वि०) पराधीन, परवश।
विवशता-(सं०स्त्री०) पराधीनता।
विवस-(हिं०वि०) देखो विवश।
विवस्त्र-(सं०वि०) वस्त्र हीन, नंगा।
विवाद-(सं०पुं०) वाक् युद्ध, झगड़ा, कलह, मतभेद। **विवादक**-(सं०पुं०) झगड़ालू। **विवादास्पद**-(सं०वि०) जिसपर विवाद या झगड़ा हो।
विवाह-(सं०पुं०) पाणिग्रहण, परिणय, व्याह, दारकर्म। **विवाहना**-व्याह करना।
विवाहित-(सं०वि०) जिसका विवाह हो चुका हो। **विवाहिता**-(सं०वि० स्त्री०) व्याही हुई स्त्री।
विवि-(हिं०वि०) दो, दूसरा।
विविक्त-(सं०वि०) बिखरा हुआ।
विवित्सा-(सं०स्त्री०) जानने की इच्छा।
विवित्सु-(सं०वि०) जानने के लिये उत्सुक।
विविध-(सं०वि०) अनेक प्रकार का।
विविर-(सं०नपुं०) खोह, गुहा, बिल।
विबुध-(सं०पुं०) देवता, ज्ञानी, पण्डित
विवृत्त-(सं०वि०) घूमा हुआ।
विवृत्ति-(सं०स्त्री०) परिभ्रमण, भाष्य, टीका।
विवेक-(सं०पुं०) भली बुरी वस्तु का

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान। **विवेकज्ञान**-(सं०नपुं०) तत्व-ज्ञान, सच्चा ज्ञान। **विवेकी**-(हिं० पुं०) भला,बुद्धिमान, ज्ञानी, न्याया-धीश।

विवेचन-(सं०नपुं०) परीक्षा, जाँच, निर्णय, अनुसन्धान।

विवेचित-(सं०वि०) निश्चित।

विशंक-(सं०वि०) निर्भय, निडर। **विशंकनीय**-(सं०वि०) डरपोक।

विशंका-(सं०स्त्री०) अविश्वास।

विशंकी-(सं०वि०) जिसको किसी का भय हो।

विशस्पति, विशाम्पति-(सं०पुं०) राजा

विशारद-(सं०पुं०) किसी विषय का अच्छा विद्वान, दक्ष, कुशल। (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम, प्रसिद्ध।

विशाल-(सं०वि०) अति विस्तृत और बड़ा, भव्य, प्रसिद्ध।

विशिष्ट-(सं०वि०) विलक्षण, अद्भुत यशस्वी,कीर्तिमान। **विशिष्टता**-(सं० स्त्री) विशेषता।

विशीर्ण-(सं० वि०) जीर्ण बहुत पुराना।

विशीर्ष-(सं०वि०) बिना सिर का।

विशुद्ध-(सं०वि०) अति शुद्ध। **विशुद्ध-गणित**-(सं०नपुं०) वह गणित जिसमें पदार्थ का कोई संबंध रखते हुए केवल राशि का विचार किया जाता है। **विशुद्ध चरित्र**-(सं०पुं०) शुद्ध आचरण का।

विशुद्धता-(सं० स्त्री०) पवित्रता।

विशेष-(सं०नपुं०) अन्तर, भेद, समानता, विचित्रता, नियम, तत्व, अधिकता, पदार्थ, अवयव, अङ्ग, वैशेषिक

विशेषक-(सं०वि०) विशेषता उत्पन्न करने वाला।

विशेषज्ञ-(सं०पुं०) किसी विषय का अच्छा जानकार।

विशेषण-(सं०नपुं०) वह जो किसी प्रकार की विशेषता दिखलाता हो, व्याकरण में वह शब्द जो किसी संज्ञा या क्रिया की विशेषता सूचित करता है।

विशेषता-(सं०स्त्री०) विशेष का भाव या धर्म। **विशेषना**-(हिं० क्रि०) निश्चय करना। **विशेषित**-((सं० वि०) जो विशेष रूप से अलग किया हो।

विशेष्य-(सं०पुं०) व्याकरण में वह संज्ञा जिसके साथ कोई विशेषण लगा रहता है।

विशोक-(सं०वि०) शोक रहित,

विशोध-(सं०वि०) विशुद्ध करने योग्य।

विशोधी-(सं०वि०) अच्छी तरह से शुद्ध करने वाला।

विशोषण-(सं०नपुं०) अच्छी तरह सोखना।

विश्रम्भ-(सं०पुं०) विश्वास, प्रेम।

विश्रब्ध-(सं०वि०) विश्वसनीय, शान्त, निर्भय, निडर।

विश्रान्त-(सं०वि०) जिसकी थकावट दूर हो गई हो। **विश्रान्ति**-(सं०पुं०) विश्राम, आराम।

विश्राम-(सं०पुं०) थकावट दूर करना सुख, ठहरने का स्थान।

विश्रुत-(सं०वि०) विख्यात, प्रसिद्ध।

विश्लिष्ट-(सं०वि०) अलग किया हुआ प्रकाशित, विकसित, शिथिल।

विश्लेष-(सं०नपुं०) शिथिलता, विकास वियोग, विछोह। **विश्लेषण**-(सं० नपुं०) किसी पदार्थ के संयोजक द्रव्यों को पृथक् करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विश्व-(सं०पुं०) समस्त ब्रह्माण्ड। (वि०) समस्त, अधिक।

विश्वकथा-(सं०स्त्री०) संसार संबंधी कथा। **विश्वकर्ता**-(सं०पुं०) परमेश्वर। **विश्वकर्मा**-(सं०पुं०) संपूर्ण संसार की रचना करने वाला, ईश्वर ब्रह्मा, बढ़ई, लोहार,

विश्वकोश-(सं०पुं०) वह ग्रन्थ जिसमें संसार के सब विषयों का विस्तृत वर्णन रहता है।

विश्वक्षय-(सं०पुं०) प्रलय।

विश्वतोमुख-(सं०पुं०) परमेश्वर।

विश्वदेव-(सं०पुं०) वह देवता जिनकी पूजा नान्दीमुख श्राद्ध में होती है।

विश्वधर-(सं०पुं०) विष्णु। **विश्वनाथ**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।

विश्वम्भर-(सं०पुं०) परमेश्वर। **विश्वयोनि**-(सं०पुं०) ब्रह्मा।

विश्वविद्-(सं०वि०) बहुत बड़ा पण्डित

विश्वविद्यालय-(सं० पुं०) वह संस्था जिसमें सब प्रकार की विद्याओं की उच्च कोटि की शिक्षा दी जाती है।

विष्वविधाता-(सं०पुं०) सृष्टिकर्ता।

विश्वविश्रुत-(सं०वि०) संसार भर में प्रसिद्ध।

विश्वव्यापी-(सं०वि०) जो संपूर्ण विश्व में व्याप्त हो।

विश्वसन-(सं०नपुं०) विश्वास।

विश्वसनीय-(सं०पुं०) विश्वास करने योग्य।

विश्वसित-(सं०वि०) विश्वास करने योग्य।

विश्वस्त-(सं०वि०) विश्वासनीय।

विश्वा-(हिं०पुं०) बीस पल का एक मान

विश्वास-(सं०पुं०) मन का दृढ़ निश्चय।

विश्वासकारक-(सं० वि०) मन में विश्वास उत्पन्न करन वाला।

विश्वासघात-(सं०पुं०) जिस पर भरोसा किया जावे। **विश्वासन**-(सं०नपुं०) विश्वासपात्र। **विश्वासपात्र**-(सं०वि०) विश्वास का पात्र। **विश्वासी**-((हिं०वि०) वह जिस पर विश्वास किया जाय।

विष-(सं०नपुं०) वह पदार्थ जो प्राणी के शरीर में प्रवेश होने पर प्राण ले लेता है अथवा स्वास्थ्य नष्ट कर देता है।

विषक्त-(सं०वि०) संलग्न, आसक्त।

विषघ्न-(सं०वि०) विष नाश करने वाला।

विषण्ण-(सं०वि०) चिन्तित, दुःखी। **विषण्णता**-(सं०स्त्री०) मूर्खता।

विषद-(सं०वि०) निर्मल, स्वच्छ।

विषम-(सं०वि०) जो समान या बराबर न हो, वह संख्या जो २ से बराबर विभाग न हो, ताख, बहुत तीव्र, अति कठिन, भयंकर।

विषमकर्ण-(सं०पुं०) समकोण चतुर्भुज में किसी दो बराबर के कोणों के सामने की रेखा। **विषमकोण**-(सं० नपुं०) समकोण से भिन्न कोण। **विषमचतुरस्त्र**-(सं०पुं०) वह असमान बाहु का चतुष्कोण क्षेत्र जिसके सामने की भुजा समानान्तर हो। **विषम चतुष्चोण**-(सं०पुं०) विषम कोण वाला चतुष्कोण क्षेत्र। **विषम ज्वर**-(सं०पुं०) वह ज्वर जो प्रतिदिन आता है परन्तु इसके आने का कोई नियत समय नहीं होता तथा तापमान भी प्रतिदिन समान नहीं होता।

विषमता-(सं०स्त्री०) असमानता, द्रोह, वैर। **विषम त्रिभुज**-(सं०पुं०) वह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्रिभुज जिसकी तीनों भुजा समान न हों
विषम राशि-(सं०स्त्री०)अयुग्म राशि, **विषमरूप**-(सं०वि०) जो समरूप का न हो। **विषम भाग**-(सं०पुं०)असमान अंश।
विषमशील-(सं०वि०) उद्धत, उद्दण्ड।
विषय-(सं०पुं०) वह जिस पर कुछ विचार किया जाय, सम्पत्ति, बड़ा प्रदेश या राज्य।
विषयक-(सं०वि०) विषय संबंधी।
विषय कर्म-(सं०नपुं०) सांसारिक कार्य
विषमता-(सं०स्त्री०) विषय का भाव या धर्म।
विषयवासी-(सं०वि०) जनपद वासी।
विषयात्मक-(सं०वि०) विषय स्वरूप।
विषयाधिप-(सं०पुं०) शासन करनेवाला
विषाङ्कुर-(सं०पुं०) शल्य, तीर।
विषाण-(सं०नपुं०) हाथी का दाँत, पशु की सींग, सुअर का दाँत।
विषाद-(सं०पुं०) दुःख, खेद, मूर्खता
विषादी-(हिं०पुं०) वह जिसको विषाद हो।
विषान्न-(सं०नपुं०) विष मिला हुआ भोजन।
विषुव-(सं०पुं०) ज्योतिष के अनुसार वह काल जब सूर्य विषुव रेखा पर पहुँचता है और दिन रात बराबर होते हैं। **विषुवरेखा**-(सं० स्त्री०) वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तल पर उसके ठीक मध्य भाग में पूर्व से पश्चिम में चारों ओर जाती हुई मानी जाती है।
विष्कम्भ-(सं०प,०) विस्तार, विघ्न।
विष्टप्-(सं०नपुं०) स्वर्गलोक।
विष्टम्भ-(सं०पुं०) बाधा, रुकावट, आक्रमण। **विष्टम्भन**-(सं० नपुं०) रोकने या संकुचित करने की क्रिया।
विष्टर-(सं०पुं०) कुशा का आसन।
विष्टा-(सं०स्त्री०) मल।
विष्णु-(सं०पुं०) प्रधान देवता जो सृष्टि के पालन पोषण करने वाले माने जाते हैं।
विसंज्ञ-(सं०वि०) संज्ञा शून्य।
विसंवाद-(सं०पुं०)विरोध, डाँट, डपट
विसंशय-(सं०वि०) संशय रहित।
विसदृश-(सं०वि०) विपरीत, विरुद्ध।
विसम-(हिं०वि०) देखो विषम। **विसमता**-(हिं०स्त्री०) देखो विषमता।
विसयना-(हिं०क्रि०) अस्त होना।
विसरण-(सं०नपुं०) विस्तार, फैलाव।
विसर्ग-(सं०पुं०) त्याग, दान वियोग, व्याकरण में वह वर्ण (:) जिसका उच्चारण आधे "ह" के समान होता है, प्रलय।
विसर्जन-(सं०नपुं०) परित्याग, विदाई अन्तिम उपचार, समाप्ति।
विसर्पण-(सं०नपुं०) फैलना, फेंकना,
विसर्पी-(सं०वि०) फैलने वाला।
विसार-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, प्रवाह। **विसारित**-(सं०वि०) फैलाया हुआ।
विसाल-देखो विशाल,
विसूचिका-(सं०स्त्री०)हैजानामक रोग।
विसूर्य-(सं०वि०) सूर्य रहित।
विसृत-(सं०वि०) विस्तृत, चौड़ा।
विसृष्ट-(सं०वि०) त्यागा हुआ, फेंका हुआ।
विस्तर-(हिं० पुं०) देखो विस्तार, आधार, समूह, आसन।
विस्तार-(सं०नपुं०) लंबे चौड़े होने का भाव, फैलाव, **विस्तारित**-(सं०-वि०)फैलाया हुआ।
विस्तीर्ण-(सं०वि०) विस्तृत, विशाल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विस्तृत-(सं०वि०) विशाल, विस्तार वाला।
विस्तृति-(सं०वि०) विस्तार, फैलाव।
विस्फार-(सं०पुं०) धनुष की टंकार,
विस्फुरित-(सं०वि०) अस्थिर, चंचल
विस्फूर्जन-(सं०पुं०) किसी पदार्थ का फैलना या बढ़ना,
विस्फुलिंग-(सं०नपुं०) आग की चिनगारी।
विस्फोट-(सं०पुं०) किसी पदार्थ का वेग से फूट पड़ना। विषैला फोड़ा; **विस्फोटक**-(सं०पुं०) शीतला रोग, चेचक। **विस्फोटन**-(सं०नपुं०) धड़ाके का शब्द।
विस्मय-(सं०पुं०) आश्चर्य।
विस्मरण-(सं०नपुं०) स्मरण न रखना भूल जाना।
विस्मारक-(सं०वि०) भुलाने वाला।
विस्मित-(सं०वि०) चकित।
विस्मृत-(सं०वि०) भूला हुआ।
विस्मृति-(सं०पुं०) विस्मरण, भूल जाना।
विस्रम्भ-(सं०पुं०) विश्वास।
विस्राम-(सं०पुं०) देखो विश्राम।
विहत-(सं०वि०) विफल, टूटा हुआ।
विहति-(सं०स्त्री०) नाश, ध्वंश।
विहनन-(सं०नपुं०) हिंसा, त्याग।
विहन्ता-(सं०वि०) नाश करने वाला।
विहंग-(सं०पु०) पक्षी, चिड़िया, बाण, तीर
विहङ्गम-(सं०पु०) पक्षी, चिड़िया, सूर्य।
विहंगिका-(सं०स्त्री०) बहँगी।
विहग-(सं०पुं०) देखो विहङ्ग।
विहँसना-(हिं०क्रि०) मुसकाना।
विहरण-(सं०नपुं०) घूमना, फिरना। फैलना।
विहायस-(सं० पुं०) आकाश, पक्षी,
विहार-(सं०पुं०) क्रीड़ा, संभोग, संभोग करने का स्थान, बौद्धों का मठ, मनोरंजन के लिये इधर उधर घूमना
विहारी-(हिं०पुं०) विहार करने वाला श्रीकृष्ण का एक नाम।
विहित-(सं०वि०) किया हुआ।
विहिंसक-(सं०वि०) नाश करने वाला।
विहीन-(सं०वि०) त्यागा हुआ, रहित।
विहीनता-(सं०स्त्री०) विहीन होने का भाव।
विह्वल-(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ। **विह्वलता**-(सं० स्त्री०) व्याकुलता। **विह्वली**-(हिं०पुं०) वह जो बहुत घबड़ा गया हो।
वीक्षण-(सं०नपुं०) देखने की क्रिया
वीक्षणीय-(सं०वि०) दर्शनीय, देखने योग्य। **वीक्षा**-(सं० स्त्री०) देखना की क्रिया। **वीक्षित**-(सं०वि०) अच्छी तरह देखा हुआ।
वीचि-(सं०स्त्री०) तरंग, लहर।
वीचिमाली-(सं०पुं०) सूर्य।
वीची-(सं०स्त्री०) तरंग, लहर।
वीज-(सं०पुं०) मूल कारण, तत्व, मूल बीजा, अंकुर।
वीजकोश(सं०पुं०) वह फल जिसमें बीज रहते हैं।
वीजगणित-(सं०नपुं०) वह गणित जिसमें अज्ञात राशियों के लिये अक्षरों का प्रयोग होता है।
वीजगर्भ-(सं०पुं०) परवल।
वीजन-(सं०नपुं०) व्यजन, पंखा।
वीणा-(सं०स्त्री०) प्राचीन काल का, एक प्रसिद्ध बाजा, बीन।
वीत-(सं०वि०) छोड़ा हुआ, मुक्त समाप्त, निवृत्त। **वीतराग**-(सं०वि०) निस्पृह।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीथिका, वीथी-(सं०स्त्री०) मार्ग ।
वीप्सा-(हिं०स्त्री०) व्याप्ति ।
वीर-(सं०वि०) साहसी और बलवान शूर, सैनिक । **वीरकुक्षि**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो वीर पुत्र जनमाती है। **वीरकेशरी**-(सं०पुं०) वीरों में अति श्रेष्ठ । **वीरगति**-(सं०स्त्री०) वह उत्तम गति जो वीरों को रणक्षेत्र में मरने पर प्राप्त होती है। **वीरता**-(सं० स्त्री०) शूरता। **वीरमाता**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो वीर पुत्र जनमाती है ।
वीरवर-(सं०वि०) अति वीर ।
वीरव्रत-(सं०वि०) दृढ़ संकल्प ।
वीरशय्या-(सं०स्त्री०) रणभूमि ।
वीर्य-(सं०नपुं०) शुक्र, वीज, पराक्रम बल, शक्ति ।
वृहण-(सं०वि०) पुष्टि कारक ।
वृहित-(सं०नपुं०)हाथी का चिग्घाड़
वृक-(सं०पुं०) भेड़िया, हुंडार ।
वृक्क-(सं०पुं०)गुरदा, । **वृक्का**-(सं० स्त्री०) हृदय ।
वृक्ष-(सं०पुं०) पेड़ । **वृक्षचर**-(सं० पुं०) वन्दर ।
वृक्षायुर्वेद-(सं०पुं०) वृक्षों का चिकित्साशास्त्र ।
वृज-(हिं०पुं०) देखो व्रज ।
वृत्त-(सं०नपुं०) चरित्र, वार्ता (पुं०) समाचार, वृत्तान्त, गोल परिधि का क्षेत्र, मण्डल, (वि०) वीता हुआ, गोल, वर्तुल । **वृत्तखण्ड**-(सं०पुं०) वृत्त का कोई खण्ड, कमान ।
वृत्तस्थ-(सं०वि०) सदाचारी ।
वृत्तानुवर्ती-(सं०पुं०) सदाचारी।
वत्तान्त-(सं०पुं०) समाचार ।
वृत्ति-(सं०स्त्री०) जीविका, व्यवहार, व्यापार । **वृत्तिकार**-(सं०पुं०) वह जिसने किसी सूत्रग्रन्थ पर वृत्ति लिखी हो ।
वृत्युपाय-(सं०पुं०)अपनी शरीर अथवा कुटुम्ब के भरण पोषण का उपाय ।
वृथा-(सं०अव्य०) व्यर्थ, निरर्थक ।
वृद्ध-(सं०वि०) जीर्ण, जर्जर, वुड्ढा। **वृद्धकाल**-(सं०पुं०) वुढ़ापा । **वृद्धता**-(सं०स्त्री०) वुढ़ापा ।
वृद्धा-(सं०स्त्री०) वुड्ढी स्त्री ।
वृद्धि-(सं०स्त्री०) अधिकता, बढ़ती, सूद, समृद्धि । **वृद्ध जीवक**-(सं० वि०) सूदखोर ।
वृन्द-(सं०नपुं०) समूह (पुं०) सौ करोड़ की संख्या ।
वृन्दार-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर ।
वृष-(सं०पुं०) वैल, साँड़ ।
वृषण-(सं०पुं०) अण्डकोष ।
वृषभ-(सं०पुं०) वलीवर्द, वैल, साँड़।
वृषल-(सं०पुं०) शूद्र, घोड़ा ।
वृषोत्सर्ग-(सं०पुं०) शास्त्रोक्त विधिपूर्वक साँड़ को दाग कर छोड़ना ।
वृष्टि-(सं०स्त्री०) मेघों से जल का टपकना, वर्णन, वर्षा, । **वृष्टिजीवन**-(सं०पुं०) चातक पक्षी ।
वृष्णि-(सं०पुं०) मेघ, यादव, यदुवंश ।
वृक्ष-(सं०पुं०) ध्वनि, हाथी की चिग्घाड़
वृहत्-(सं०वि०) विपुल, बड़ा, महान, भारी ।
वृहती-(सं०स्त्री०)उत्तरीय वस्त्र, दुपट्टा
वृहद्राव-(सं०पुं०) उलूक, उल्लू ।
वृहन्नल-(सं०पुं०)वाहु, बाँह ।
वे-(हिं०सर्व०) "वह" शब्द का बहुवचन
वेक्षण-(सं०नपुं०) अच्छी तरह से खोजना या ढूंढ़ना ।
वेग-(सं०पुं०) प्रवाह, धारा, शीघ्रता वृद्धि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेगवान्-(सं०वि०) वेग से चलने वाला।
वेगी-(हिं०वि०) वेगवान्।
वेड़-(सं०नपुं०) वृत्ति की परिधि।
वेड़ा-(सं०स्त्री०) नौंका, नाव, देखो बेड़ा।
वेणि-(सं०स्त्री०) स्त्रियों के बालों की गुथी हुई चोटी।
वेणी-(सं०स्त्री०) बालों की गुथी हुई चोटी, कवरी।
वेणु-(सं०पुं०) वंश, बाँस, बाँस की बाँसुरी। **वेणुकार**-(सं०पुं०) वंशी बनाने वाला।
वेतन-(सं०नपुं०) वह धन जो किसी को काम करने के लिये दिया जाता है। जीवन का आश्रय। **वेतनभोगी**-(सं० वि०) वेतन पर काम करने वाला।
वेतस्-(सं०पुं०) बेंत।
वेताल-(सं०पुं०) द्वारपाल, सन्तरी।
वेत्ता-(हिं०वि०) ज्ञाता, जानने वाला।
वेत्र-(सं०पुं०) बेंत। **वेत्रक**-(सं०पुं०) सरपत। **वेत्रकार**-(सं०पुं०) बेंत के पात्र आदि बनाने वाला। **वेत्रधर**-(सं०पुं०) द्वारपाल, सन्तरी।
वेत्रासन-(सं०नपुं०) बेंत का बना हुआ आसन।
वेद-(सं०पुं०) श्रुति, निगम।
वेदक-(सं०वि०) परिचय कराने वाला
वेदध्वनि-(सं०पुं०) देखो वेदघोष।
वेदना-(सं०स्त्री०) व्यथा, पीड़ा।
वेद निन्दक-(सं०पुं०) वेदों की निन्दा करने वाला, नास्तिक।
वेदनीय-(सं०वि०)ज्ञातव्य,जानने योग्य।
वेदमूर्ति-(सं०पुं०) सूर्य नारायण।
वेदरहस्य-(सं०नपुं०) उपनिषद्।
वेदसम्मत-(सं०वि०) वेदोक्त मतके अनुसार।
वेदहीन-(सं०वि०) जिसको वेद में अधिकार नहीं है।
वेदाङ्ग-(सं०पुं०) वेद के अंग या शास्त्र।
वेदान्त-(सं०नपुं०) वेद का अवशिष्ट अंश अर्थात् उपनिषद् और अरण्यक।
वेदान्ती-(सं०पुं०) वेदान्त शास्त्र को अच्छी तरह जानने वाला, ब्रह्मवादी।
वेदित-(सं०वि०) ज्ञापित, जाना हुआ।
वेदितव्य-(सं०वि०) ज्ञातव्य, जानने योग्य।
वेदी-(सं०स्त्री०) किसी शुभ कार्य के लिये तैयार की हुई भूमि।
वेदोक्त, वेदोक्ति-(सं०वि०) वेद में कहा हुआ।
वेद्य-(सं०वि०) वेदितव्य, जानने योग्य
वेध-(सं०पुं०) छेदने की क्रिया, वेधना, यन्त्रादि की सहायता से ग्रह, नक्षत्र तथा तारों को देखना।
वेधक-(सं०वि०) वेध करने वाला।
वेधनी-(सं०स्त्री०) अंकुश।
वेधशाला-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर नक्षत्रों और तारों आदि को देखने और उनकी दूरी गति आदि जानने के यन्त्र हों।
वेधालय-(सं०पुं०) देखो वेधशाला।
वेधित-(सं०वि०) छिद्रित, छेदा हुआ।
वेधी-(हिं०वि०) वेधने वाला, छेदने वाला।
वेध्य-(सं०वि०) वेधनीय, छेदने योग्य
वेपथु-(सं०पुं०) कम्प, कंपकंपी।
वेपन-(सं०नपुं०) कम्पन, काँपना।
वेपमान-(सं०वि०) काँपता हुआ।
वेलदार-(हिं०पुं०) भूमि खोदने वाला।
वेला-(सं०स्त्री०) समय, क्षण, काल, अवसर, समुद्र का किनारा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वेल्ली-(सं०स्त्री०) वेल, लता।
वेश-(सं०पुं०) वस्त्र आदि पहरने का ढंग, पहरने के वस्त्र, वस्त्रगृह।
वेशभूषा-(सं०स्त्री०) पहरावा।
वेशी-(हिं०वि०) वेष धारण करने वाला।
वेश्म-(सं०नपुं०) गृह, घर।
वेश्मवास-(सं०पुं०) रहने का घर।
वेश्या-(सं०स्त्री०) गणिका, रंडी।
वेश्र-(सं०पुं०) नेपथ्य।
वेष्टक-(सं०वि०) घेरने वाला।
वेष्टन-(सं०नपुं०) घेरने या लपेटने की क्रिया।
वेष्टित-(सं०वि०) लपेटा हुआ।
वेसन-(सं०नपुं०) देखो बेसन।
वैकटिक-(सं०पुं०) रत्न, परीक्षक, जौहरी।
वैकट्य-(सं०नपुं०) विकटता।
वैकल्प-(सं०पुं०) विकल्प का भाव।
वैकल्पिक-(सं०वि०) जिसमें किसी प्रकार का सन्देह हो।
वैकल्य-(सं०नपुं०) विकलाहट, घबड़ाहट
वैकालिक-(सं०वि०) उपयुक्त समय पर न होने वाला।
वैकुण्ठ-(सं०पुं०) स्वर्ग।
वैक्रमीय-(सं०वि०) विक्रम संबंधी।
वैक्रान्त-(सं०नपुं०) मणि विशेष, चुन्नी
वैखानस-(सं०पुं०) वानप्रस्थ, वनचारी।
वैचित्र, वैचित्र्य-(सं०नपुं०) विचित्रता
वैजयन्त-(सं०पुं०) इन्द्रपुरी।
वैजयन्तिक-(सं०वि०) झंडा उठानेवाला
वैजयन्तिका-(सं०स्त्री०) झंडा, पताका
वैजयन्ती-(सं०स्त्री०) पताका, झंडा।
वैज्ञानिक-(सं०वि०) विज्ञान संबंधी, निपुण, दक्ष, (पुं०) वह जो विज्ञान अच्छा जानता हो।
वैतथ्य-(सं०नपुं०) विफलता।
वैतनिक-(सं०पुं०) वेतन लेकर काम करने वाला।
वैतरणी-(सं०स्त्री०) यमद्वार पर की एक नदी का नाम।
वैताल-(सं०पुं०) स्तुतिपाठक।
वैदक-(हिं०पुं०) देखो वैद्यक।
वैदग्ध-(सं०नपुं०) पाण्डित्य, चतुराई।
वैदिक-(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जो वेद जानता हो, (वि०) वेद संबंधी।
वैदूर्य-(सं०नपुं०) लहसुनियाँ नाम का रत्न।
वैदेशिक-(सं०वि०) विदेश संबंधी।
वैद्य-(सं०पुं०) आयुर्वेद के अनुसार चिकित्सा करने वाला। वैद्यक-(सं०पुं०) चिकित्सा शास्त्र।
वैद्युत-(सं०वि०) विद्युत संबंधी।
वैद्रुम-(सं०वि०) विद्रुम संबंधी।
वैध-(सं०नपुं०) विधर्मी होने का भाव, नास्तिकता।
वैधव्य-(सं०नपुं०) रड़ांपा।
वैधेय-(सं०वि०) विधि संबंधी, मूर्ख।
वैपरीत्य-(सं०नपुं०) प्रतिकूलता।
वैपार, वैपारी-(हिं०) देखो व्यापार।
वैपुल्य-(सं०नपुं०) विपुलता, अधिकता
वैफल्य-(सं०नपुं०) विफल होने का भाव।
वैभव-(सं०नपुं०) विभव, महिमा, महत्व।
वैभवशाली-(सं०वि०) जिसके पास बहुत धन हो।
वैमनस्य-(सं०नपुं०) द्वेष, शत्रुता।
वैमात्र-(सं०वि०) विमाता से उत्पन्न, सौतेला।
वैयाकरण-(सं०पुं०) वह जो व्याकरण शास्त्र अच्छी तरह से जानता हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैर-(सं०पुं०) विरोध, द्वेष, शत्रुता।
वैरता-(हिं०स्त्री०) शत्रुता।
वैराग-(हिं०पुं०) देखो वैराग्य।
वैरागी-(हिं०पुं०) विरक्त, उदासीन।
वैराग्य-(सं०नपुं०) विरक्ति, चित्त की वह वृत्ति जिसके अनुसार संसार की विषयवासना तुच्छ जान पड़ती है और लोग संसार के प्रपञ्च को त्याग कर एकान्त में जाकर ईश्वर का भजन करते हैं।
वैरिता-(सं०स्त्री०) शत्रुता।
वैवर्त-(सं०नपुं०) किसी पदार्थ का चक्कर खाते हुए घूमना।
वैवश्य-(सं०नपुं०) विवशता।
वैवाहिक-(सं०वि०) विवाह संबंधी।
वैशाख-(सं०नपुं०) चैत्र के बाद का महीना जो जेठ के पहले होता है, बैसाख।
वैश्य-(सं०पुं०) भारतवर्ष की चार जातियों का वर्गों में से तृतीय वर्ण वणिक, बनिया।
वैश्वदेव-(सं०पुं०) विश्वदेव के उद्देश्य से किया जाने वाला होम या यज्ञ।
वैश्वानर-(सं०पुं०) परमात्मा, अग्नि,
वैषम, वैषम्य-(सं०नपुं०) विषमता,
वैष्णव-(सं०वि०) विष्णु सम्बन्धी, (पुं०) विष्णु भक्त।
वैष्णवी-(सं०स्त्री०) विष्णु की शक्ति।
वैसा-(हिं०क्रि०वि०) उस प्रकार या तरह का। **वैसे**-उसी प्रकार से।
वैस्तारिक-(सं० वि०) विस्तार सम्बन्धी।
वैहंग-(सं०वि०) पक्षी सम्बन्धी।
वैहायस-(सं०वि०) आकाश सम्बन्धी।
वोक-(हिं०अव्य०) ओर।
वोछा-(हिं०वि०) देखो ओछा।
वोढव्य-(सं०वि०) ढोने लायक।
व्यंग, व्यंजन-देखो व्यङ्ग, व्यञ्जन।
व्यक्त-(सं०वि०) स्पष्ट, प्रकट, प्रकाशित, देखा हुआ, अनुमान किया हुआ
व्यक्तगणित-(सं०नपुं०) अंकविद्या।
व्यक्तराशि-(सं० स्त्री०) गणित में ज्ञात राशि।
व्यक्ति-(सं०स्त्री०) किसी शरीरधारी का सम्पूर्ण शरीर जिसकी सत्ता अलग मानी जाती है और जो किसी समाज का अंग समझा जाता है, मनुष्य, जीव, शरीर, वस्तु, पदार्थ।
व्यक्तीकृत, व्यक्तिभूत-(सं० वि०) प्रकाशित, प्रकट किया हुआ। **व्यक्तिगत**-निजी।
व्यक्तीभूत-(सं०वि०) प्रकट किया हुआ
व्यक्तोदित-(सं०वि०) स्पष्ट कहा हुआ
व्यग्र-(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ,; **व्यग्रता**-(सं०स्त्री०) व्याकुलता, घबड़ाहट।
व्यङ्ग-(सं०पुं०) ताना। **व्यंगित**-(सं०वि०) विकल, घबड़ाया हुआ।
व्यजन-(सं०नपुं०) हवा करने का पंखा, बेना।
व्यञ्जक-(सं०वि०) प्रकाशक।
व्यञ्जन-(सं०नपुं०) तरकारी शाक आदि जो रोटी दाल चावल के साथ खाई जाती है, पकाया हुआ भोजन, वर्णमाला के वे अक्षर जो बिना स्वर की सहायता से उच्चारण नहीं किये जा सकते।
व्यञ्जना-(सं०स्त्री०) प्रकट करने की क्रिया।
व्यतिकर-(सं०पुं०) व्याप्ति, समूह, व्यसन, सम्बन्ध, मिलावट।
व्यतिक्रम-(सं०पुं०) विपर्यय, उलट-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फेर, विघ्न, बाधा । **व्यतिक्रमण**-(सं०नपुं०) क्रम में उलट फेर होना ।
व्यतिचार-(सं०पुं०) पापाचरण ।
व्यतिपात-(सं०पुं०) बड़ा उपद्रव, अपमान
व्यतिरिक्त-(सं०वि०) विभिन्न, अलग, (क्रि०वि०) अतिरिक्त, । **व्यतिरेक** (सं०पुं०) अभाव, भिन्नता ।
व्यतीत-(सं०वि०) बीता हुआ ।
व्यतीपात-(सं०पुं०) कोई अमंगल सूचक उत्पात, अपमान ।
व्यत्यय-(सं०पुं०) व्यतिक्रम, विपर्यय ।
व्यथक-(सं०वि०) पीड़ा देने वाला ।
व्यथन-(सं०नपुं०) व्यथा, पीड़ा ।
व्यथा-(सं०स्त्री०) दुःख, पीड़ा, भय, क्लेश
व्यथित-(सं० वि०) दुःखित, पीड़ित,
व्यपदेश-(सं०पुं०) कपट, छल, कुल, वंश, निन्दा ।
व्यपनीत-(सं०वि०) दूर किया हुआ ।
व्यपोह-(सं०पुं०) विनाश ।
व्यभिचार-(सं०पुं०) भ्रष्ट आचरण ।
व्यय-(सं०पुं०) खर्च, परित्याग, नाश । **व्ययकर**-(सं०वि०) व्यय करने वाला
व्यर्थ-(सं०वि०) निरर्थक, बिना आशय का, (क्रि०वि०) निष्फल; **व्यर्थता** (सं०स्त्री०) निष्फलता ।
व्यलीक-(सं०नपुं०) विलक्षणता, दुःख, कष्ट, (वि०) कष्टकारक, अप्रिय ।
व्यवकलन-(सं०नपुं०) गणित में किसी संख्या में दूसरी संख्या को घटाने का कार्य । **व्यवकलित**-(सं० वि०) घटाया हुआ ।
व्यवकीर्ण-(सं० वि०) मिलाया हुआ ।
व्यवच्छिन्न-(सं०वि०) विभक्त, अलगाया हुआ ।
व्यवच्छेद-(सं०नपुं०) पृथकत्व, अलग, **व्यवच्छेदक**-(सं०वि०) अलगाने वाला
व्यवधान-(सं०नपुं०) विभाग, आच्छादन । **व्यवधायक**-(सं०वि०) छिपाने वाला ।
व्यवसाय-(सं०पुं०) उपजीविका, उद्यम व्यापार ।
व्यवसायी-(हिं०पुं०) व्यवसाय करने वाला ।
व्यवसित-(सं०वि०) उद्यत, तत्पर ।
व्यवस्था-(सं०स्त्री०) नियम स्थिति, शास्त्र निरूपित विधि, । **व्यवस्थापक**-(सं०वि०) नियम पूर्वक किसी कार्य को चलाने वाला; **व्यवस्था पत्र**-(सं०नपुं०) वह पत्र जिसमें किसी शास्त्रीय व्यवस्था का विधान लिखा हो । **व्यवस्थापन**-(सं०नपुं०) निर्धारण । **व्यवस्थापिका सभा**-(सं० स्त्री०) नियम बनाने वाली सभा । **व्यवस्थापित**-(सं०वि०) निर्धारित, नियमित ।
व्यवस्थित-(सं०वि०) व्यवस्था या नियम के अनुसार ।
व्यवहर्ता-(सं०पुं०) न्यायकर्ता ।
व्यवहार-(सं०पुं०) व्यापार, लेन-देन का काम । **व्यवहारकविधि**-(सं०स्त्री०) वह शास्त्र जिसमें व्यवहार संबंधी बातों का उल्लेख हो ।
व्यवहार शास्त्र-(सं०नपुं०) धर्मशास्त्र
व्यवहारिक-(सं० पुं०) जो व्यवहार के लिये उपयुक्त हो ।
व्यवहारी-(हि०वि०) व्यवहार करने वाला ।
व्यवहृत-(सं०वि०) जो काम में लाया गया हो ।
व्यसन-(सं०नपुं०) आपत्ति, दुःख, कष्ट निष्फल प्रयत्न लत, काम और क्रोध-जनित दोष, किसी बात का प्रेम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यसनी-(हिं०वि०) जिसको किसी प्रकार का व्यसन हो।
व्यस्त-(सं०वि०)फैला हुआ, व्याकुल।
व्याकरण-(सं०नपुं०)वह शास्त्र जिसमें किसी भाषा के शब्दों के शब्दरूप तथा वाक्यों में इनके शुद्ध व्यवहार आदि के नियमों का वर्णन रहता है
व्याकीर्ण-(सं०वि०) चारो ओर फैलाया हुआ।
व्याकुल(सं०वि०)व्यग्र, विकल,घबड़ाया हुआ। **व्याकुलता**-(सं०स्त्री०) विकलता, घबड़ाहट।
व्याकृति-(सं.स्त्री.)प्रकाशन, व्याख्यान;
व्याक्रोश-(सं०पुं०) तिरस्कार करते हुए कटूक्ति कहना, चिल्लाना।
व्याक्षेप-(सं०पुं०) विलम्ब, देर, व्याकुलता।
व्याख्या-(सं०स्त्री०) वह वाक्य जो कठिन शब्दों के अर्थ सरल भाषा में स्पष्ट करता हो, टीका, वर्णन। **व्याख्यात**-(सं०वि०) जिसकी व्याख्या की गई हो। **व्याख्याता**-(सं०वि०) व्याख्या करने वाला, व्याख्यान देने वाला। **व्याख्यान**-(सं०नपुं०) किसी विषय की व्याख्या या टीका करने का काम, भाषण, वक्तृता।
व्याघ्र-(सं०पुं०) चित्रक, चीता, बाघ, **व्याघ्रनायक**-(सं०पुं०) शृंगाल, सियार। **व्याघ्रमुख**-(सं०पुं०) बिल्ली।
व्याज-(सं०पुं०) कपट, छल, विघ्न, बाधा, विलम्ब, देर।
व्याजी-(सं०पुं०) जंगली पशुओं को मार कर निर्वाह करने वाला।
व्याधि-(सं०स्त्री०)रोग ,पीड़ा,आपत्ति
व्याधित(सं०वि०) रोगी।
व्याधूत-(सं०वि०)कम्पित, कँपा हुआ।
व्यान-(सं०पुं०) शरीरमें रहने वाली पांच वायु में से एक जो सम्पूर्ण शरीर में संचार करने वाली मानी जाती है।
व्यापक-(सं०वि०) चारो ओर फैला हुआ।
व्यापन-(हिं०क्रि०) व्याप्त होना, किसी वस्तु के भीतर फैलना।
व्यापादित-(सं०वि०) मारा हुआ।
व्यापार-(सं०पुं०) काम, व्यवसाय, बेंचा बिक्री।
व्यापी-(हिं०वि०)जो व्याप्त हो,व्यापक।
व्यापृत-(सं०वि०) किसी कार्यमेंलीन।
व्याप्त-(सं०वि०) सम्पूर्ण, परिपूरित।
व्याप्ति(सं०स्त्री०) सर्वत्र फैला होना।
व्याप्य-(सं०नपुं०) व्याप्त करन योग्य
व्यामोह-(सं०पुं०) मोह, अज्ञान।
व्यायाम-(सं०वि०) शरीर पुष्ट करने के लिये किया हुआ शारीरिक श्रम, **व्यायामी**-(हिं०वि०) व्यायाम करने वाला।
व्याल-(सं०पुं०) सर्प, व्याघ्र, कोई हिंस्रक पशु।
व्यालू-(हिं०पुं) रात्रि का भोजन।
व्यालोल-(सं०वि०) थोड़ा हिलता हुआ
व्यावर्तक-(सं०वि०) पीछे की ओर लौटने वाला।
व्यावर्त्य-(सं०वि०) त्यागने योग्य।
व्यावहारिक-(सं०वि०) व्यवहार संम्बन्धी।
व्यावृत्त-(सं०वि०) निषिद्ध, खण्डित,
व्यावृत्ति-(सं०स्त्री०) खण्डन, निषेध, निवृत्ति।
व्यास-(सं०पुं०) विस्तार, फैलाव, गोल वस्तु की मध्य रेखा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यासार्ध-(सं०पुं०) किसी वृत्त के व्यास का आधा भाग।
व्याहत-(सं०वि०) विशेष रूप में आहत
व्याहरण-(सं०नपुं०) कथन, उक्ति।
व्याहार-(सं०पुं०) वाक्य।
व्याहृत-(स०वि०) कथित, कहा हुआ।
व्याहृति-(सं०स्त्री०) कथन, उक्ति,
व्युत्क्रम-(सं०पुं०) क्रम में उलटफेर होना।
व्युत्पत्ति-(सं०स्त्री०) किसी पदार्थ की विशिष्ट उत्पत्ति, ज्ञान विशेष, किसी शब्द का वह मूल रूप जिससे वह निकला हो।
व्युत्पन्न-(सं०वि०)किसी शास्त्र आदि का अच्छा ज्ञाता।
व्युत्पादक-(सं०वि०)उत्पन्न करनेवाला
व्युत्पादन-(सं० नपुं०) व्युत्पत्ति।
व्युत्पादित-(सं०वि०)उत्पन्न किया हुआ,
व्युपदेश-(सं०पुं०) छल, वंचना।
व्यूह-(सं०पुं०) समूह, निर्माण, रचना,
व्योम-(हिं०पुं०) आकाश, बादल जल।
व्योमचारी-(सं०पुं०) देवता, पक्षी।
व्योमयान-हवाई जहाज।
व्रज-(सं०नपुं०)व्रजन,गमन,समूह,झुंड।
व्रजन-(सं०नपुं०) गमन, चलना, जाना
व्रजभाषा-(सं०स्त्री०) मथुरा आगरा तथा इसके आसपास के प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा।
व्रजमण्डल-(सं०पुं०) व्रजभूमि, व्रज और इसके आसपास के प्रदेश।
व्रण-(सं०पुं०नपुं०) क्षत, फोड़ा।
व्रणस्राव-(सं०पुं०) घाव या फोड़े में से पीब निकलना।
व्रत-(सं०पुं०नपुं०) किसी पुण्य तिथि में पुण्य प्राप्त करने के निमित्त उपवास करना, सङ्कल्प।
व्रतचर्या-(सं०स्त्री०) व्रत का अनुष्ठान।
व्रती-(हिं०पुं०) जिसने किसी प्रकार का व्रत किया हो, ब्रह्मचारी।
व्रात्य-(सं०वि०) उपनयन संस्कार रहित, वर्णसङ्कर, दोगला।
व्रीड-(सं०पुं०) व्रीडन, (सं०नपुं०) लज्जा।
व्रीडा-(सं०स्त्री०) लज्जा।

श

श-हिन्दी वर्णमाला में व्यंजन का तीसवाँ वर्ण, इसका उच्चारण स्थान तालु है—इसी से यह "तालव्य श" कहलाता है,।
शं-(सं०पुं०) शिव, महादेव, शास्त्र, शस्त्र, (नपुं०) शुभ, कल्याण।
शं-(सं०पुं०) मंगल, कल्याण, सुख।
शंकना-(हिं०क्रि०) सन्देह करना।
शंबर-(सं०नपुं०) जल, पानी।
शंबूक-(सं०पुं०) घोंघा।
शंसन-(सं०नं०) कथन, प्रार्थना, हिंसन। **शंसनीय**-(सं०वि०) प्रार्थनीय
शंसित-(सं०वि०) निश्चित, वांछित।
शंस्य-(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।
शकट-(सं०नपुं०) बैलगाड़ी, छकड़ा, **शकटाक्ष**-(सं०पुं०) गाड़ी का धुरा।
शकटि-(सं०स्त्री०) छोटी गाड़ी। **शकटिक**-(सं०वि०) शकट संबंधी। **शकटिका**-(सं०स्त्री०) बच्चों के खेलने की गाड़ी। **शकटी**-(सं०स्त्री०) छोटी गाड़ी।
शकठ-(सं०पुं०) मचान।
शकर-(हिं०नपुं०)शक्कर,कच्ची चीनी
शकरकन्द-(हिं०पुं०) एक प्रकारका मीठा कन्द।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शकरपाला-(फा०पुं०) एक प्रकारका पकवान।
शकल-(सं०नपुं०) खण्ड, टुकड़ा।
शकलेन्दु-(सं०पुं०) अपूर्ण चन्द्रमा।
शकाब्द-(सं०पुं०) शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्।
शकार-(सं०पुं०) श स्वरूप वर्ण;
शकुन-(सं०नपुं०) शुभाशुभ सूचक लक्षण; (पुं०) पक्षी, चिड़िया,
शकुनिवाद-(सं०पुं०) प्रातःकाल के समय पक्षियों का शब्द करना।
शकुनी-(हिं०पुं०) शकुनों का शुभाशुभ फल जानने वाला।
शकुन्त-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया।
शकृत्-(सं०नपुं०) विष्टा, गोबर।
शक्त-(सं०वि०) समर्थ।
शक्ति-(सं०स्त्री०) सामर्थ्य, बल, शौर्य, पराक्रम, **शक्तिता**-(सं०अव्य०) शक्ति के अनुसार। **शक्तिमत्ता**-(सं०स्त्री०) शक्तिमान् होने का भाव या धर्म।
शक्तिहीन-(सं०वि०) निर्बल, नपुंसक।
शक्य-(सं०वि०) समर्थनीय, किया जाने योग्य, सम्भव।
शक्र-(सं०पुं०) इन्द्र,। **शक्रचाप**-(सं० नपुं०) इन्द्र धनुष।
शक्रधनु-(सं०पुं०) इन्द्र धनुष। **शक्र वाहन**-(सं०पुं०) मेघ, बादल।
शक्रशरासन-(सं०नपुं०) इन्द्रधनुष।
शक्करी-(सं०स्त्री०) अंगुलि, मेखला,
शगुन-(हिं०पुं०) देखो शकुन।
शगुनियां-(हिं०पुं०) शुभाशुभ शगुनों का विचार करने वाला व्यक्ति।
शगन, शगूनियां-(हिं०पुं०) देखो शकुन शकुनयां।
शंक-(स०पुं०) आशंका, भय डर;
शंकनीय-(सं.वि.) शंका करने योग्य।
शङ्कर-(स००पुं०) शिव, महादेव, (वि०) कल्याण करनेवाला, लाभदायक।
शङ्करालय, शङ्करावास-(सं० पुं०) कैलास।
शङ्करीय-(सं०वि०) शंकर सम्बन्धी।
शङ्का-(सं०स्त्री०) संशय, आशंका। **शङ्कामय**-(सं०वि०) शंकायुक्त। **शङ्कित**-(सं०वि०) अनिश्चित, सन्देह युक्त; **शङ्कितव्य**-(सं०वि०) शंका के योग्य।
शंकु-(सं०पुं०) कोई नुकीली वस्तु, बरछा, भाला, खूँटा, मख, कील,
शङ्कु-(सं०स्त्री०) सुपारी काटने का सरौता।
शङ्ख-(सं०पुं०नपुं०) एक प्रकार का बड़ा घोंघा जो समुद्र में पाया जाता है, **शङ्खज**-(सं०पुं०) मोती; **शङ्खधर**-(सं०पुं०) विष्णु; **शङ्खपाणि**-(सं०पुं०) विष्णु; **शङ्खमुख**(सं० पुं०) घड़ियाल।
शखास्थि-(सं०स्त्री०) सिर की हड्डी
शचि, शची-(सं०स्त्री०) इन्द्रकी पत्नी **शचीपति**-(सं०पुं०) इन्द्र।
शचीश-(सं०पुं०) इन्द्र।
शठ-(सं०वि०) धूर्त, दुष्ट, वंचक। **शठता**-(सं०स्त्री०) धूर्तता; **शठत्व**-(सं०नपुं०) शठता।
शण-(सं०नपुं०) सन नाम का पौधा।
शणई-(हिं०स्त्री०) देखो सनई।
शण्ड-(सं० पुं०) नपुंसक, हिजड़ा, **शण्डा**-(सं०पुं०) फटा हुआ दूध।
शत-(सं०वि०) दस का दस गुना, सौ
शतक-(सं०पुं०) एक ही प्रकार की सौ वस्तुओं का संग्रह, सौ वर्षों का समूह, शताब्दी; **शतक्रतु**-(सं०पुं०) इन्द्र;
शतखण्ड-(सं० नपुं०) सुवर्ण, सोना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शतगुण-(सं०वि०) सौ गुना।
शतघ्नी-(सं०स्त्री०) एक प्रकार का प्राचीन शास्त्र।
शतचण्डी-(सं०स्त्री०) सौ बार चण्डी पाठ।
शतच्छद-(सं०पुं०) सौ पंखड़ियों का कमल; **शतदला**-(सं०स्त्री०) सेवती, गुलाब।
शतधौत-(सं०वि०) सौ बार धोया हुआ।
शतपत्र-(सं०नपुं०)कमल,पद्म,(वि०) सौ पत्तों वाला,सौ पंख वाला;
शतपथ-(सं०वि०) सैकड़ों मार्ग या शाखावाला।
शतपद-(सं०नपुं०) कनखजूरा, गोजर,
शतपोर-(सं०पुं०) पौंढ़ा, गन्ना।
शतमुख-(सं०पुं०) शतक्रतु, इन्द्र।
शतलक्ष-(सं०नपुं०) सौ लाख, करोड़।
शतवार्षिक-(सं०वि०) प्रतिसौ वर्ष पर होने वाला।
शतशः-(सं०अव्य०) सौ बार।
शत संवत्सर-(सं०पुं०) सौ वर्ष।
शतसहस्र-(सं०नपुं०) एक लाख।
शतांश-(सं०पुं०) सवाँ भाग।
शताननन-(सं०पुं०) बिल्व, बेल।
शतानीक-(सं०पुं०) वृद्ध पुरूष।
शताब्दी-(सं०स्त्री०) सौ वर्ष का समय
शतायु-(सं०पुं०)वह जिसकी मनष्य सौ वर्ष की हो।
शतायुध-(सं०वि०) जो सौ अस्त्र धारण करता हो।
शतार-(सं०नपुं०) वज्र, सुदर्शन चक्र।
शतार्ध-(सं०पुं०) पचास।
शतावधान-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो एक साथ बहुतसी बातों को सुनकर उनको क्रम से याद रखता हो,
शतावधानी-(सं०पुं०) शतावधान का काम करनेवाला।
शताष्टक-(सं०नपुं०) एक सौ आठ।
शती-(हिं०वि०) सौ की संख्या का
शतेश-(सं०पुं०)सौ गांव का अधिपति।
शत्रु-(सं०पुं०) रिपु, वैरी, अरि, द्वेषी,
शत्रुता-(सं०स्त्री०) वैरभाव; **शत्रुताई**-(हिं०स्त्री०) शत्रुता; **शत्रुबाधक**-(सं०वि०) शत्रु को पीड़ा देने वाला; **शत्रुमर्दन**-(सं०पुं०) शत्रुओं का नाश करने वाला **शत्रुवत्**-(सं० अव्य०) शत्रु के समान; **शत्रुबल**-(सं०नपुं०) शत्रु की सेना; (हिं० वि०) शत्रु के हृदय में शूल उत्पन्न करने वाला; **शत्रुहन्ता**-(सं०वि०) शत्रु का नाश करने वाला।
शन्-(हिं०अव्य०)थोड़ा,थोड़ा,धीरे धीरे।
शनि-(सं०पुं०) शनैश्चर, ग्रह-**शनिवार**-(सं०पुं०) वह बार जो शुक्रवार के बाद तथा रविवार के पहले पड़ता है।
शनैः-(सं०अव्य०) धीरे धीरे।
शनैश्चर-(सं०पुं०) शनि ग्रह।
शन्तन-(सं०वि०) सुन्दर शरीर वाला,
शपथ-(सं०पुं०) सौगन्ध।
शपथपत्र-(सं०नपुं०) सौगन्ध खाकर लिखित पत्र।
शप्त-(सं०पुं०) वह मनुष्य जिसको शाप दिया गया हो; **शप्ता**-(हिं०वि०) शाप देने वाला।
शफ-(सं०नपुं०) पशु का खुर, वृक्ष की जड़।
शबर-(सं०वि०) चितकबरा।
शबरक-(सं०वि०) रंगाबिरंगा, चितकबरा।
शबलता-(सं०स्त्री०) चितकबरापन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शबलित-(सं०वि०) चितकबरा।
शब्द-(सं०पुं०) ध्वनि, नाद, वह सार्थक ध्वनि जिससे किसी पदार्थ या भाव का बोध होता है; **शब्दकार**-(सं०वि०) ध्वनिकारक; **शब्दकारी**-(सं०वि०) शब्द करने वाला; **शब्दचातुर्य**(सं० पुं०) बोल चालकी प्रवीणता; **शब्द-चित्र**-(सं०पुं०) अनुप्रास; **शब्द-प्रमाण**-वह प्रमाण जो किसी के केवल कथन के आधार पर हो; **शब्दवि-रोध**-(सं०पुं०) वह विरोध जो केवल शब्दों में जान पड़ता हो; **शब्दविशेषण**-(सं० नपुं०) विशेषण शब्द; **शब्द बोध**-(सं०पुं०) वह ज्ञान जो मौखिक साक्षी से प्राप्त हो; **शब्दब्रह्म**-(सं०नपुं०) ॐ कार, वेद, श्रुति; **शब्दभेदी**-(सं०पुं०) शब्दवेधी वाण; **शब्दविद्या**-(सं०स्त्री०) व्या-करण; **शब्दविज्ञान**-(सं०नपुं०) वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसके द्वारा शब्द विषयक तत्वज्ञान जाना जाता है। **शब्दविरोध**-(सं०पुं०) विरूद्ध शब्द का व्यवहार। **शब्दवेधी**-(सं०पुं०) वह मनुष्य जो आँखों से बिना देखे हुए केवल शब्द से दिशा का ज्ञान करकेकिसी व्यक्ति या वस्तु को बाणसे मारता है, **शब्दशासन**-(सं०नपुं०) व्याकरण के नियम; **शब्दशास्त्र**-(सं० नपुं०) व्याकरण; **शब्दसाधन**-(सं० व्याकरण का वह अंग जिसमें शब्दों की व्युत्पत्ति, भेद, रूपान्तर आदिका विवेचन होता है; **शब्दहीन**-(सं०वि०) शब्दरहित। **शब्दाड़म्बर**-(सं०पुं०) शब्दजाल। **शब्दानुशासन**-(सं०नपुं०) व्याकरण; **शब्दायमान**-(सं०वि०) शब्द करता हुआ; **शब्दार्थ**-(सं०पुं०) किसी शब्द का अर्थ; **शब्देन्द्रिय**-(सं०नपुं०) कर्ण, कान।
शम-(सं०पुं०)शान्ति, मोक्ष, निवृत्ति, क्षमा, उपचार, अन्तःकरण अथवा इन्द्रियोंका निग्रह, **शमता**-(सं०स्त्री०) शान्ति, उपशमन।
शमन-(सं०नपुं०) चित्त की स्थिरता, शान्ति,हिंसा, तिरस्कार।
शमित-(सं०वि०) शान्त किया हुआ।
शम्ब-(सं०पुं०) इन्द्र का वज्र।
शम्बर-(सं०नपुं०) जल, पानी, वादल
शम्बल-(सं०पुं०) तट, किनारा।
शम्बु-(सं०पुं०) घोंघा, सीप।
शम्बूक-(सं०पुं०) हाथी के सूंड़ का अगला भाग, शंख।
शम्भु-(सं०पुं०) शिव, महादेव,
शम्भुबीज-(सं०पुं०) पारद, पारा।
शम्भुलोक-(सं०पुं०) कैलास।
शयन-(सं०नपुं०) निद्रा, शय्या, **शयन-गृह**-(सं०नपुं०) सोने का कमरा या घर। **शयनागार**-(सं०पुं०) शयन गृह।
शयनीय-(सं०वि०) शयन के योग्य,
शयान-(सं०पुं०नपुं०) निद्रित, जो सोया हो। **शयालू**-(सं०वि०)जिसको नींद आती हो।
शय्या-(सं०स्त्री०) खटिया, पलंग, खाट; **शय्यागत**-(सं०वि०) बिछौने पर सोने वाला। **शय्यादान**-(सं०पुं०) मृतक के उद्देश्य से चारपाई बिछावन आदि का दान।
शर-(सं०पुं०) बाण, तीर,सरकंडा, नरकट, जल।
शरच्चन्द्र शरच्छशी-(सं० पुं०) शरद काल का चन्द्रमा।
शरण-(सं०स्त्री०) आश्रय, रक्षा घर,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरणागत, शरणापन्न-(सं०वि०) शरण में आया हुआ। **शरणार्थी**-(सं०वि०) आश्रय चाहने वाला। **शरणालय**-(सं०पुं०) आश्रय स्थान।

शरण्य-(सं० वि०) शरणागत की रक्षाकरने वाला।

शरत्-(सं०स्त्री०) शरद ऋतु जो कुंवार और कार्तिक महीने में मानी जाती है। **शरत्काल**-(सं०पुं०) शरद ऋतु।

शरद-(सं०स्त्री०) शरत् ऋतु।

शरदण्ड-(सं०पुं०) सरकंडा, चाबुक।

शरविन्दु-(सं०पुं०) शरत् ऋतु का चन्द्रमा।

शरधि-(सं०पुं०) तूण, तरकस।

शरबती-(हिं०पुं०) एक प्रकार पीला रंग, मीठा नीबू या फालसा।

शरभ-(सं०पुं०) सिंह, हाथी का बच्चा टिड्डी।

शरमुख-(सं०नपुं०) बाणका अग्र भाग

शरवत्-(सं०वि०) बाण के तुल्य। **शरवारण**-(सं०नपुं०) ढाल। **शरवृष्टि**-(सं०स्त्री०) बाणोंकीवर्षा। **शरशय्या**-(सं०स्त्री०) बाण की बनी हुई शय्या।

शराघात-(सं०पुं०) बाण का आघात।

शराटि-(सं०पुं०) टिटिहिरी नामक पक्षी।

शरापना-(हिं०क्रि०) शाप देना।

शराभ्यास-(सं०पुं०) बाणशिक्षा।

शरारोप-(सं०पुं०) धनुष, कमान।

शराव-(सं०पुं०नपुं०) मिट्टी का पात्र, पुरवा, एक सेर का परिमाण।

शरासन-(सं०पुं०)धनुष, कमान, धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

शरिष्ठ-(हिं०वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।

शरीफा-(हिं०पुं०)सीताफल, श्रीफल

शरीर-(सं०नपुं०) गात्र, कलेवर, देह, **शरीरवृत्ति**-(सं० स्त्री०) जीविका; **शरीर शास्त्र**-(सं०पुं०)शरीर विज्ञान, वह शास्त्र जिसमें शरीर के सब अवयवों की रचना और इनके कार्य का विवेचन होता हैं; **शरीर शुश्रूषा**-(सं०स्त्री०) देहकी सेवा; **शरीरान्त**-(सं०पुं०) मृत्यु. **शरीरी**-(हिं०पुं०) प्राणी, जन्तु, जीवधारी।

शर्कर-(सं०पुं०)कंकड़, बालू का कण; **शर्करा**-(सं० स्त्री०) शक्कर, खांड़, चीनी।

शर्मकृत्-(सं०वि०) मंगलकारी।

शर्मद-(सं०वि०) आनन्द देने वाला।

शर्मन्-(सं०नपुं०)सुख,आनन्द,(पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।

शर्मा-(सं०पुं०) ब्राह्मणों की एक उपाधि।

शर्व-(सं०वि०) शिव, महादेव। **शर्वरी**-(सं०स्त्री०) निशा, रात्रि, रात

शलक-(सं०पुं०) साही का कांटा।

शलभ-(सं०पुं०) शरभ, टिड्डी।

शलल-(सं०नपुं०) साही का कांटा;

शलाक-(सं०पुं०) देखो शलाक।

शलाका-(सं०स्त्री०)लोहे लकड़ी आदि की लंबी सलाई, सींक, सलई; मैना पक्षी, छाते की कमानी, शर, बाण, चित्रकार की कूची, सुरमा लगाने की सलाई।

शली-(हिं०स्त्री०) साही नामक पशु।

शल्क-(सं०नपुं०) वल्कल, छिका।

शल्मलि-(सं०पुं०) सेमल का वृक्ष।

शल्य-(सं०नपुं०)बाण,भाले के आकार का एक अस्त्र,हड्डी, अस्त्र चिकित्सा।

शल्यक्रिया-(सं०स्त्री०)शस्त्र चिकित्सा चीर फाड़ करने की विधि।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शल्ल-(सं०नपुं०) त्वचा, चमड़ा, वृक्ष की छाल, **शल्लकी**-(सं०स्त्री०) साही नामक पशु।
शव-(सं०नपुं०) मृतशरीर।
शवदाह-(सं०पुं०) मनुष्य के मृत शरीर को जलाने की क्रिया; **शवभस्म**-(सं०पुं०) चिता की भस्म, शव।
शवमन्दिर-(सं०नपुं०) मरघट; **शवयान**-(सं०नपुं०) शव ले जाने की अरथी।
शवल-(सं०वि०) चितकबरा। **शवलित**-(सं०वि०) मिश्रित, मिलाया हुआ।
शश-(सं०पुं०) खरहा, चन्द्रमा का लाँछन या कलंक; **शशक**-(सं०पुं०) खरहा; **शशधर**-(सं०पुं०) चन्द्रमा; **शशलक्षण शशलांछन**-(सं०पुं०) चन्द्रमा। **शशश्रृंग**-(सं०नपुं०) कोई अनहोनी या असम्भव बात।
शशाङ्क-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
शशि-(हिं० पुं०) चन्द्रमा; **शशिकर**-(सं०पुं०) चन्द्रमा की किरण। **शशिकला** (सं०स्त्री०) चन्द्रमा की कला, **शशिधर**-(सं० पुं०) महादेव। **शशिप्रभ**-(सं०नपुं०) कुमुद,कोई, मोती, (वि०) चन्द्रमा के समान प्रभा वाला। **शशिप्रभा**-(सं०स्त्री०) ज्योत्स्ना, चन्द्रिका।
शशिप्रिय-(सं०पुं०) मुक्ता, मोती। **शशिभूषण**--(सं०पुं०) महादेव; **शशिमंडल**-(सं०पुं०) चन्द्रमण्डल; **शशिमुख**-(सं०वि०) अति मनोहर; **शशिवदना**-(सं०स्त्री०) चन्द्रमुखी।
शश्वत्-(सं०वि०) बहुत अधिक (अव्य०) वारंवार।
शष्कुली-(सं०स्त्री०) कर्णरन्ध्र, कान का छेद।
शस्त-(सं०नपुं०) कल्याण, भलाई, (वि०) प्रशस्त, उत्तम।
शस्तता-(सं०स्त्री०) प्रस्तार, फैलाव।
शस्ति-(सं०स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा।
शस्त्र-(सं०नपुं०) लोहा, अस्त्र, खड़ग, तलवार।
शस्त्रक्रिया-(सं०स्त्री०) चीरा लगाने का काम। **शस्त्रगृह**-(सं०पुं०) शस्त्र रखने का घर। **शस्त्रजीवी**-(सं०वि०) सैनिक।
शस्त्रशास्त्र-(सं०पुं०) धनुर्वेद,**शस्त्रशिक्षा** (सं०स्त्री०) शस्त्र चलाने की विद्या;
शस्त्रागार-(सं० पुं०) शस्त्रशाला;
शस्त्राभ्यास-(सं० पुं०) शस्त्रशिक्षा-
शस्त्रायुध-(सं०वि०) शस्त्रधारी।
शस्त्रोपजीवी-(सं०क्रि०) शस्त्र द्वारा अपनी जीविका चलाने वाला।
शस्य-(सं०नपुं०) वृक्ष लता आदि का फल।
शाक-(सं०पुं०नपुं०) भाजी, तरकारी
शाकटिक-(सं०पुं०) गाड़ीवान।
शाकभक्ष-(सं०वि०) शाकाहारी।
शाकल-(सं०पुं०) खण्ड टुकड़ा, हवन की सामग्री।
शाकाम्ल-(सं०नपुं०) इमली।
शाकाहार-(सं०पुं०) अन्न, फल, फूल, पत्तों आदि का भोजन।
शाकाहारी-(सं०वि०) फल फूल तथा शाक खाने वाला।
शाकुन-(सं०पुं०) शकुन द्वारा मनुष्य का शुभाशुभ कहने वाला।
शाकुनि-(सं०पुं०) व्याध, बहेलिया।
शाक्त-(सं०पुं०) शक्ति का उपासक।
शाक्य-(सं०पुं०) बुद्धदेव।
शाखा-(सं०स्त्री०) डाल, टहनी, शरीर का अवयव, अंगुली, किसी मूल वस्तु

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से निकले हुए भेद, विभाग, किसी शास्त्र या विद्या के अन्तर्गत उसका कोई भेद।
शाखाग्र-(सं०नपुं०) शाखा का अगला भाग, अंगुली।
शाखामृग-(सं०पुं०) बन्दर, गिलहरी।
शाखाशिफा-(सं०स्त्री०) वह शाखा जो नीचें की ओर झुककर भूमि में जड़ पकड़ ले। **शाखास्थि**-(सं०नपुं०) हाथ की हड्डी।
शाखोच्चार-(सं०पुं०) विवाह के समय वंशावली का वर्णन।
शाङ्कर-(सं०व०) शंकर संबंधी।
शाट, शाटक-(सं०पुं०) पट, वस्त्र, कपड़े का टुकड़ा।
शाटिका, शाटी-(सं०स्त्री०) धोती, साड़ी
शाठ्य-(सं०नपुं०) शठता, दुष्टता।
शाण-(सं०नपुं०) सन के रेशे का वना हुआ कपड़ा, हथियार पैना करने का पत्थर। **शाणित**-(सं० वि०) सान पर रक्खा हुआ।
शाद्वल-(सं०पुं०) दूव, हरी घास।
शाद्वली-(हिं०वि०) हराभरा।
शान्त-(सं०वि०) सौम्य, गंभीर, मौन, चुप, उत्साह रहित, स्थिर श्रान्त, विघ्न, या बाधा रहित।
शान्तात्मा(सं०वि०) शान्त स्वभावका।
शान्ति-(सं०स्त्री०) शमन, स्तब्धता, स्वस्थता, गम्भीरता, अमंगल दूर करने का उपचार, **शान्तिकर**-(सं० वि०) शान्तिकरने वाला।
शान्तिकर्म-(सं०नपुं०) बाधा, पाप के निवारण का उपाय आदि।
शान्तिप्रद-(सं०वि०) शान्ति देनेवाला।
शाप-(सं०पुं०) आक्रोश, भर्त्सना।
शापग्रस्त-(सं० वि०) जिसको शाप दिया गया हो; **शापमुक्त**-(सं०वि०) जिसके ऊपर से शापका प्रभाव हट गया हो; **शापित**-(सं० वि०) जिसको शाप दिया गयाहो; **शापोद्धार**-(सं०पुं०) शाप के प्रभाव से छुटकारा।
शाफरिक-(सं०पुं०) मछुआ, धीवर।
शाब्द-(सं०वि०) शब्द सम्बन्धी।
शाब्दिक-(सं०पुं०) शब्द शास्त्रवेत्ता, वैयाकरण; **शाब्दी**-(सं०वि०) शब्द सम्बन्धी।
शामी-(हिं०स्त्री०) लोहे पीतल आदि का छल्ला जो छड़ी छाते आदि के छोर पर लगाया जाता है।
शामूल-(सं०पुं०) ऊनी वस्त्र।
शाम्बरिक-(सं०पुं०) जादूगर; **शाम्बूक** (सं०पुं०) घोंघा।
शाम्भव-(सं०वि०) शिव सम्बन्धी;
शायक-(सं०पुं०) बाण, तीर, खड्ग।
शायी-(हिं०वि०) शयनकारी, सोनेवाला,
शारङ्ग-(सं०वि०) चितकबरा।
शारङ्गी-(सं०स्त्री०) सारंगी नामका बाजा।
शारद-(सं०वि०) शरत् काल का।
शारदा-(सं०स्त्री०) सरस्वती, दुर्गा।
शारदी-(सं०स्त्री०) शरत् कालका।
शारिका-(सं०स्त्री०) मैना नामक पक्षी।
शारीरक-(सं०वि०) शरीर से उत्पन्न
शारीरक मीमांसा-(सं०स्त्री०) वेदान्त सूत्र; **शारीरक सूत्र**-(सं० पुं०) वेदान्तसूत्र।
शारीर विधान-(सं०नपुं०) वह शास्त्र जिसमें जीव उत्पन्न हो।
शारीरिक-(सं०वि०) शरीर सम्बन्धी।
शार्ङ्ग-(सं०नपुं०) धनुष, **शार्ङ्गधर**-(सं०पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण; **शार्ङ्गी**-(सं०पुं०) धनुर्धारी। **शार्दूल**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं०पुं०) व्याघ्र, बाघ, (वि०) सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

शार्वरी-(सं०स्त्री०) रात्रि, रात।

शालग्राम-(सं०पुं०) गण्डकी नदी में उत्पन्न एक प्रकारकी विष्णु कीमूर्ति।

शालन-(पुं०नपुं०) साग।

शालभञ्जिका, शालभञ्जी-(सं०स्त्री०) कठपुतली।

शालरस-(सं०पुं०) राल, धूना।

शाला-(सं०स्त्री०) स्थान, गृह, घर।

शालाद्वार-(सं०नपुं०) घर का द्वार;

शालापति-(सं०पुं०) घर का मालिक;

शालामुख-(सं०पुं०) घर का अगला भाग

शालामृग-(सं०पुं०) सियार, कुत्ता

शालि-(सं०पुं०) धान्य, धान।

शालिका-(सं०स्त्री०) देखो शारिका, मैंना

शालिगोप-(सं०पुं०) धान के खेत की रखवाली करने वाला।

शालिवाह-(सं०पुं०) अन्न ढोने वाला बैल; **शालिहोत्र**-(सं०पुं०) पशुओं के चिकित्सा का शास्त्र।

शालिहोत्री-(सं०पुं०) पशुओं की चिकित्सा करने वाला वैद्य।

शालीन-(सं०वि०) विनीत, सदृश, समान लज्जायुक्त; **शालीनता**-(सं०स्त्री०) विनय, नम्रता;

शाल्मलि-(सं०पुं०स्त्री०) सेमल कावृक्ष

शाव, शावक-(सं०पुं०) शिशु, पशु आदि का बच्चा।

शाशक-(सं०वि०) शशक सम्बन्धी,

शाश्वती-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।

शासक-(सं०पुं०) शासन करने वाला, अधिकारी।

शासन-(सं० नपुं०) आज्ञा, आदेश, लिखित प्रतिज्ञा, इन्द्रियों का निग्रह; **शासनपत्र**-(सं०नपुं०) वह शिला या ताम्रपत्र जिस पर किसी राजा की आज्ञा लिखी या खोदी हुई हो; **शासनवाहक**-(सं०पुं०) आज्ञावाहक, राजदूत; **शासनशिला**-(सं०स्त्री०) वह शिला जिस पर राजा की कोई आज्ञा खोदी गई हो; **शासनीय**-(सं०वि०) शासन करने योग्य; **शासित**-(सं०वि०) शासनकिया हुआ, दण्ड दिया हुआ; **शासिता, शास्ता**-(सं०पुं०) शासन करने वाला, राजा।

शास्त्र-(सं०नपुं०) ऋषि मुनियों के बनाये हुए वे प्राचीन ग्रंथ जिनमें मुनियों के हित के लिये अनेक प्रकार के कर्तव्य बतलाये गये हैं, हैं, किसी विशिष्ट विषय का क्रमबद्ध ज्ञान, विज्ञान; **शास्त्रकार**-(सं० पुं०) शास्त्र बनाने वाला; **शास्त्रज्ञ**-(सं०पुं०) शास्त्र को जाननेवाला;

शास्त्री-(सं०पुं०) एक उपाधि जो इस नाम की परीक्षा में उत्तीर्ण होने पर विश्वविद्यालय से दी जाती है, शास्त्रज्ञ, पण्डित; **शास्त्रीय**-(सं० (वि०) शास्त्र सम्बन्धी।

शास्त्रोक्त-(सं०वि०) शास्त्रों में कहा हुआ।

शिंशुमार-(सं०पुं०) सूंस नामक जल जन्तु।

शिक्य-(सं०नपुं०) छत में लटकाने का छीका, सिकहर।

शिक्षक-(सं०पुं०) शिक्षा देने वाला, गुरु; **शिक्षण**-(सं०नपुं०) शिक्षा, **शिक्षणीय**-(सं०वि०) शिक्षा के उपयुक्त।

शिक्षा-(सं०स्त्री०) पढ़ने पढ़ाने की क्रिया, विद्या का अभ्यास, दक्षता,

Kirtikant Sharma Collection; Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निपुणता, उपदेश दण्ड, शासन;- **शिक्षाकर**-(सं०पुं०) सिखलानेवाला **शिक्षापद**-(सं०पुं०) उपदेश; **शिक्षार्थी**-(सं०पुं०) विद्यार्थी; **शिक्षालय**-(सं०पुं०) पाठशाला।

शिक्षा विभाग-(सं०पुं०) वह राजकीय विभाग जिसके द्वारा सार्वजनिक शिक्षा का प्रवन्धहोता है; **शिक्षाहीन**-(सं०वि०) अशिक्षित, बेपढ़ा; **शिक्षित**-(सं०वि०) जिसने शिक्षा पाई हो, पढ़ा लिखा।

शिखण्ड-(सं०पुं०) मोर की पूंछ, शिखा, चोटी।

शिखण्डिक-(सं०पुं०) कुक्कुट, मुरगा।

शिखण्डिनी-(सं०स्त्री०) मयूरी, मोरनी।

शिखण्डी-(हिं०पुं०) मोर, मुर्गा, तीर।

शिखर-(सं०पुं०नपुं०) सिरा, ऊपरी भाग, पहाड़ की चोटी।

शिखरन-(हिं०पुं०) दही और चीनी से बनाया हुआ एक पेय जिसमें केशर, इलायची मेवे आदि डाले जाते हैं।

शिखरिणी-(सं०स्त्री०) दही का पानी

शिखरी-(हिं०पुं०) वृक्ष, पहाड़ी, एक प्रकार का मृग।

शिखा-(सं०स्त्री०) आग की लपट, चोटी, शाखा, डाली, पक्षियों के सिर पर की कलँगी, दिये की टेम, नोक, उभड़ा हुआ भाग, **शिखाभरण**-(सं०नपुं०) शिर का आभूषण; **शिखामणि**-(सं०पुं०) श्रेष्ठ भक्ति। **शिखावृद्धि**-(सं०स्त्री०) सूद दर सूद।

शिखि-(सं०पुं०) मयूर, मोर,

शिखी-(सं०पुं०) मोर, अग्नि।

शिखिनी-(सं०स्त्री०) मोरनी, मुर्गी।

शिङ्जिनी-(सं०स्त्री०) धनुष की डोरी चिल्ला।

शित-(सं०वि०) दुर्वल, नुकीला, **शितफल**-(सं०पुं०) सीताफल, शरीफा।

शिति-(सं०वि०) शुक्ल, सफेद, **शितिकण्ठ**-(सं०पुं०) महादेव, मोर, पपीहा

शिथिल-(सं० वि०) श्रान्त, थका हुआ, मन्द, धीमा, अदृढ़, अस्पष्ट।

शिथिलता-(सं०स्त्री०) ढिलाई, थकावट आलस्य। **शिथिलाई**-(हिं०स्त्री०) शिथलता। **शिथिलाना**-(हिं०क्रि०) थकना।

शिकर-(हिं०पुं०) ढाल।

शिफा-(सं०स्त्री०) कोड़े की फटकार।

शिम्बा-(सं०स्त्री०) छीमी, फली।

शिरःकम्प-(सं०पुं०) सिरका काँपना।

शिरःखण्ड-(सं०नपुं०) माथे की हड्डी।

शिर-(सं०पुं०) मस्तक, माथा, सिर, खोपड़ी, शिखर, सबसे ऊँचा भाग, प्रधान, अगुआ, चोटी, सिरा।

शिरनेत-(हिं०पुं०) गढ़वाल के आस-पास का एक प्रदेश। **शिरपेंच**-(हिं०पुं०) देखो सिरपेंच। **शिरफल**-(हिं०पुं०) स्त्रियों का सिर पर पहरने का एक आभूषण। **शिरमौर**-(हिं०पुं०) शिरोभूषण, मुकुट, **शिरसिज, शिरसिरुह**-(सं०पुं०) केशवाल।

शिरस्क-(सं०वि०) मस्तक संबंधी।

शिरस्त्र, शिरस्त्राण-(सं०नपुं०) युद्ध के समय सिर पर पहरने की लोहेकी टोपी

शिरहन-(हिं०पुं०) सिरहाना, तकिया।

शिरा-(सं०स्त्री०) शरीरमें रूधिरवाहिनी नाड़ी।

शिरामूल-(सं०पुं०) नाभि, ढोंढी।

शिराहर्ष-(सं०पुं०) नसोंका मनान।

शिरीष-(सं०पुं०) सिरिस का पेड़।

शिरोगृह-(सं०नपुं०) अट्टालिका, कोठा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिरोज-(सं०नपुं०) केश, बाल।
शिरोधरा-(सं०स्त्री०) गरदन, ग्रीवा।
शिरोधार्य-(सं० वि०) आदर पूर्वक मानने योग्य।
शिरोभाग-(सं०पुं०) अग्र भाग।
शिरोभूषण-(सं०नपुं०) मुकुट, चूड़ामणि।
शिरोमणि-(सं०पुं०स्त्री०) चूड़ामणि, शिरोरत्न, श्रेष्ठ व्यक्ति।
शिरोमाली-(हिं०पुं०) महादेव।
शिरोमौलि-(सं०पुं०) सिर का रत्न।
शिरोरुजा-(सं०स्त्री०) सिर की वेदना।
शिरोरुह-(सं०पुं०) सिर के ऊपर के बाल।
शिरोवेष्टन-(सं०नपुं०) पगड़ी, मुरेठा
शिल-(हिं०पुं०) देखो शिला।
शिला-(सं०स्त्री०) पाषाण, पत्थर का बड़ा टुकड़ा, चट्टान।
शिलाधातु-(सं०पुं०) गेरू, खड़िया, मिट्टी। **शिलानिचय**-(सं०पुं०) पत्थर के ढोंकों का ढेर।
शिलान्यास-(हिं०पुं०) किसी भवन की नींव देने का कार्य।
शिलापद-(सं०पुं०) पत्थर की चट्टान।
शिलालेख-(सं०पुं०) पत्थर पर लिखा या खुदा हुआ कोई प्राचीन लेख।
शिलावृष्टि-(सं०स्त्री०) आकाश से ओले या पथर गिरना। **शिलास्थि**-(सं०स्त्री०) गरदन में की वह हड्डी जिस पर कपाल स्थिर रहता है।
शिलास्तम्भ-(सं० पु०) पत्थर का खंभा।
शिली-(सं०स्त्री०) चौखट के नीचे की लकड़ी, डेहरी।
शिल्प-(सं०नपुं०)कला संबंधी व्यवसाय। **शिल्पकला**-(सं०स्त्री०) हस्त कौशल। **शिल्पकार**-(सं०पुं०) शिल्पी **शिल्पकारा**-(सं०पुं०) वह जो शिल्प का कार्य करता हो। **शिल्पगृह**-(सं०नपुं०) शिल्पशाला,। **शिल्पजीवी**-(सं०पुं०) शिल्पी; **शिल्पता**-(सं०स्त्री०) शिल्प कौशल; **शिल्प विद्या**-(सं०स्त्री०) शिल्प विषयक विद्या। **शिल्प शाला**-(सं०स्त्री०) शिल्पगृह। **शिल्प शास्त्र**-(सं०नपुं०) वह शास्त्र जिसमें हाथ से पदार्थों के बनाने का वर्णन लिखा होता है, गृह निर्माण शास्त्र।
शिल्पिक, शिल्पी-(सं०पुं०)शिल्पकार।
शिव-(सं०नपुं०) मंगल, सुख, कल्याण, (पुं०) महादेव, मोक्ष। **शिवकारी**-(सं०वि०) कल्याण करने वाला। **शिवंकर**-(सं०वि०) कल्याण करने वाला। **शिवद्रुम**-(सं०पुं०)बेल का पेड़। **शिवबीज**-(सं०नपुं०) पारद, पारा। **शिवनिर्माल्य**-(सं०पुं०) शिव को अर्पित की हुई वस्तु। **शिवरात्रि**-(सं०स्त्री०) फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी। **शिवरानी**-(हिं० स्त्री०) पार्वती। **शिवलोक**-(सं०पुं०)कैलास। **शिववाहन**-(सं०पुं०)वृषभ बैल।
शिवा-(सं०स्त्री०)दुर्गा, पार्वती, मुक्ति, शृगाली, सियारिन।
शिवाक्ष-(सं०नपुं०) रुद्राक्ष; **शिवारुत**-(सं०नपुं०) सियार के बोलने का शब्द; **शिवालय**-(सं०पुं०) वह मन्दिर जिसमें शिव की मूर्ति या लिङ्ग स्थापित हो; **शिवाला**-(हिं०पुं०) शिवालय,।
शिविका-(सं०स्त्री०) पालकी, डोली
शिविर-(सं०नपुं०) डेरा, पड़ाव छावनी, वस्त्र मण्डप।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शिशिर-(सं०पुं०नपुं०) शीतकाल, (वि०) शीतल, ठंढा।
शिशु-(सं०पुं०) बालक, छोटा लड़का,
शिशुकाल-(सं०पुं०) बचपन। **शिशुता**-(सं०स्त्री०) बचपन; **शिशुताई**-(हिं० स्त्री०) शिशुता; **शिशुपन**-(हिं० पुं०) बालकपन; **शिशुमार**-(सं.पुं.) सूंस नामक जलजन्तु।
शिश्न-(सं०पुं०) उपस्थ, मेढ, लिङ्ग।
शिष्ट-(सं०वि०) शान्त, सुशील, विनीत सज्जन, (पुं०) मन्त्री, सभासद।
शिष्टता-(सं०स्त्री०) सज्जनता।
शिष्टसभा-(सं०स्त्री०) राजसभा; **शिष्ट समाज**-(सं०पुं०) शिष्ट जनों का समाज
शिष्टाचार-(सं०पुं०) विनय, आदर, नम्रता, सभ्य व्यवहार।
शिष्य-(सं०पुं०) विद्यार्थी, चेला।
शीकर-(सं०नपुं०) तृषा, शीत, जाड़ा,
शीघ्र-(वि०क्रि०) तुरंत, चटपट, **शीघ्रकारी**-(सं०वि०) शीघ्रता से काम करने वाला; **शीघ्रकोपी**-(सं०वि०) जिसको शीघ्र क्रोध आता हो; **शीघ्रगामी**-(सं०वि०) शीघ्र चलनेवाला; **शीघ्रता**-(सं०स्त्री०) त्वरा; **शीघ्रवाही**-(सं०वि०) शीघ्र ले जानेवाला।
शीघ्रवेधी-(सं०पुं०) शीघ्रता से बाण चलाने वाला।
शीत-(सं०नपुं०) जाड़ा, तुषार, ओस, जाड़े का ऋतु (वि०) शीतल, ढंढा; **शीत कटिबन्ध**-(सं०पुं०) पृथ्वी के उत्तर तथा दक्षिण के खण्ड के वे कल्पित विभाग जो मनुष्य रेखा से २३॥ अंश दक्षिण पर माने जाते हैं-इन भागों में जाड़ा बहुत पड़ता है। **शीतकाल**-(सं०पुं०) हिम ऋतु; **शीतगन्ध**-(सं०नपुं०) सफेद चन्दन; **शीतता**-(सं० पुं०) ठंढक; **शीतदीधिति**-(सं०पुं०) चन्द्रमा; **शीतमूलक**(सं०नपुं०) उशीर, खस; **शीतरश्मि**-(सं०पुं०) चन्द्रमा, कपूर।
शीतल-(सं०वि०) ठंढा, शान्त, उद्वेग रहित; **शीतलता**-(सं०स्त्री०) ठंढापन, सरदी; **शीतलताई**-(हिं०स्त्री०) ठंढापन।
शीतला-(सं०स्त्री०) वसन्त रोग, चेचक,
शीतांशु-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
शीताम्बु-(सं०पुं०) ठंढा जल।
शीताश्म-(सं०पुं०) चन्द्रकान्त मणि।
शीतेतर-(सं०वि०) उष्ण, गरम।
शीतोष्ण-(सं०वि०) गुनगुना।
शीर्ण(सं०वि०) दुबला पतला, टूटा फूटा हुआ, मुरझाया हुआ, **शीर्णत्व**-(सं०नपुं०) कृशता।
शीर्ष-(सं०नपुं०) मस्तक, शिर, अग्र भाग, चोटी; **शीर्षक**-(सं०नपुं०) चोटी, वह वाक्य जो विषय परिचय के लिये किसी लेखके ऊपर लिखा जाता है; **शीर्षच्छेद**-(सं०पुं०) सिर काटना
शीर्षतः-(सं०अव्य०) मस्तक पर।
शीर्षबिन्दु-(सं०पुं०) शिर के ऊपर की ओर ऊँचाई में सब से ऊपर का स्थान; **शीर्षभार**-(सं० पुं०) माथे पर का बोझ; **शीर्षरक्षण**-(सं०नपुं०) पगड़ी।
शील-(सं०पुं०) चरित्र, चाल, व्यवहार, स्वभाव, उत्तम आचरण; **शीलता**-(सं०स्त्री०) शीलत्व, साधुता; **शीलधर**-(सं०वि०) सच्चरित्र; **शीलन**-(सं०नपुं०) अभ्यास; **शीलभ्रंश**-(सं०पुं०) शीलता का परित्याग।
शीलवान्-(हिं०वि०) कोमल स्वभाव का।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शीश-(हिं०पुं०) देखो शीर्ष।
शुक-(सं०पुं०) सुग्गा, तोता, **शुकतुण्ड**-(सं०पुं०) तोते की चोंच।
शुक्ति-(सं०स्त्री०)सीप, सुतुही, शंख।
शुक्तिज-(सं०नपुं०) मोती; **शुक्तिबीज**-(सं०नपुं०) मुक्ता, मोती;
शुक्तिवधू-(सं०स्त्री०) सीपी।
शुक्र-(सं०नपुं०) वीर्य, शक्ति बल, सामर्थ्य, **शुक्रवार**-(सं०पुं०) सप्ताह का छठां दिन।
शुक्ल-(सं०पुं०) श्वेतवर्ण, (नपुं०) चाँदी, मक्खन; **शुक्लता**-(सं०स्त्री०) श्वेतता, **शुक्लवंश**-(सं०पुं०) सफेद बांस।
शुचि-(सं०वि०) स्वच्छ, निर्दोष, पापरहित; ; **शुचिता**-(सं०स्त्री०) पवित्रता।
शुण्ठी-(सं०स्त्री०) सोंठ।
शुण्ड-(सं०पुं०) हाथी का सूड़।
शुण्डादण्ड(सं०पुं०) हाथी का सूंड; **शुण्डापान**-(सं०नपुं०) कलवरिया।
शुण्डार-(सं० पुं०) मद्य बनाने या बेंचने वाला।
शुण्डिक-(सं०पुं०) कलवरिया।
शुण्डिक--(सं०स्त्री०) गले के भीतर की घंटी।
शुद्ध-(सं०वि०) दोष रहित, पवित्र, उज्वल, बिना मिलावट का; **शुद्धता**-(सं०स्त्री०) निर्दोषता; **शुद्ध पक्ष**-(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष; **शुद्धभाव**-(सं०पुं०) स्वच्छ भावना। **शुद्धान्त**-(हिं०वि०) पवित्र स्वभाव का।
शुद्धान्त-(सं०पुं०) अन्तःपुर।
शुद्धावास-(सं०पुं०) स्वर्ग।
शुद्धि-(सं० स्त्री०) स्वच्छता, **शुद्धिपत्र**-(सं०पुं०) वह पत्र जिसमें छापे की अशुद्धियाँ बतलाई जाती हैं।
शुन-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
शुनि-(सं०पुं०) कुक्कुर: कुत्ता। **शुनी**-(सं०स्त्री०) कुक्कुरी, कुतिया
शुभ-(सं०वि०) कल्याणकारी, सुन्दर, उत्तम, सुखी। **शुभकर**-(सं०वि०) मंगल जनक। **शुभकर्म**-(सं०पुं०) मंगलजनक कार्य। **शुभक्षण**-(सं०नपुं०) शुभ मुहूर्त। **शुभंकर**-(सं०वि०) शुभ या मंगल करने वाला।
शुभचिन्तक-(सं०वि०) हितैषी।
शुभद-(सं०वि०) शुभदायक। **शुभदर्शन**-(सं०वि०) सुन्दर। **शुभदायी**-(सं०वि०) शुभ करने वाला। **शुभपत्रिका**-(सं०स्त्री०) मंगलपत्रिका।
शुभप्रद-(सं०वि०) मंगल करने वाला
शुभावह-(सं०वि०) मंगलजनक।
शुभाशय-(सं०वि०) धार्मिक।
शुभ्र-(सं०वि०)उद्दीप्त,सफेद (नपुं०) **शुभ्रता**-(सं०स्त्री०) शुक्लता।
शुम्बल-(सं०पुं०) जलती हुई लकड़ी, मसाल।
शुल्क-(सं० पुं०) राजकर, दहेज, होड: किसी कार्य के बदले में दिया जाने वाला धन। **शुल्कशाला**-(सं० स्त्री०) वह वह स्थान जहाँ पर कर या चुंगी चुकाई जाती है।
शुश्रूषक-(सं०वि०) सेवा शुश्रूषा करने वाला। **शुश्रूषा**-(सं०स्त्री०) सेवा, परिचर्या, टहल।
शुष्क-(सं०वि०) सूखा, नीरस, स्नेह, रहित, निर्मोही, निरर्थक, व्यर्थ। **शुष्ककण्ठ**-(सं०वि०)प्यासा। **शुष्कता**-(सं०स्त्री०) सूखापन; **शुष्कपत्र**-(सं०नपुं०) सूखा पत्ता। **शुष्कमुख**-(सं०वि०) कृपण, कंजूस।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शूकर-(सं०पुं०)वराह, सुअर। **शूकर-शूची**-(सं०स्त्री०) सूई।
शूद्र-(सं०पुं०)आर्यों के चार वर्णों में से अन्तिम वर्ण।
शूद्रता-(सं०स्त्री०) शूद्र का भाव या या धर्म। **शूद्रत्व**-(सं०नपुं०) शूद्रता।
शूद्रा, शूद्री-(सं०स्त्री०) शूद्र की स्त्री।
शून्य-(सं०नपुं०) रिक्तस्थान, आकाश, विन्दु, निर्जन स्थान, अभाव, (वि०) बहुत थोड़ा, असम्पूर्ण। **शून्यता**-(सं० स्त्री०) शून्य भाव।
शून्या-(सं०स्त्री०) वन्ध्या स्त्री।
शून्यालय-(सं०पुं०) एकान्त स्थान।
शूप-(हिं०पुं०) शूर्प, सूप,
शूर-(सं०पुं०) वीर, योद्धा; **शूरता**-(सं०स्त्री०) वीरता, **शूरताई**-(हिं० स्त्री०) वीरता।
शूरन-(हिं०पुं०) देखो सूरन।
शूरविद्या-(सं०स्त्री०) युद्ध करने की विद्या। **शूरवीर**-(सं० पुं०) अतिशय योद्धा।
शूल-(सं०पुं०नपुं०) प्राचीन समय का बरछा, (वि०) तीक्ष्ण, (नपुं०) शूली जिस पर चढ़ा कर प्राचीन काल में प्राणदण्ड दिया जाता था, त्रिशूल; **शूलना**-(हिं०पुं०) शूलके समान कष्ट देना। **शूलपाणि**-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
शूलिक-(सं०नपुं०) शशक, खरहा।
शूलिका-(सं०स्त्री०) सीकचे में गोद कर भूना हुआ मांस।
शृगाल-(सं०पुं०) गीदड़, सियार,
शृङ्खल-(सं०पुं०) मेखला, करधनी, हथकड़ी, बेड़ी। **शृङ्खलता**-(सं० स्त्री०) क्रम बद्ध होने का भाव। **शृङ्खला**-(सं०स्त्री०) मेखला, करधनी, तागड़ी, श्रेणी, नियम। **शृङ्खला-बद्ध**-(सं०वि०) क्रमिक, सिकड़ी में बंधा हुआ।
शृङ्ग-(सं० स्त्री०) पर्वत का शिखर, चोटी, गौ भैंस आदि पशुओं की सींग,
शृङ्गाट, शृङ्गाटक-(सं० नपुं०) चौरहा चौमुहानी, सिंघाड़ा। स्त्रियों का आभूषण, वस्त्र आदि से शरीर को सुशोभित करना, सजावट, शोभा देनेवाली वस्तु,। **शृङ्गारना**-(हिं० क्रि०) शृंगार करना, सजाना। **शृङ्गारहाट**-(हिं०स्त्री०) वेश्याओं के रहने का स्थान।
शृङ्गारिणी-(सं०स्त्री०) शृङ्गार करने वाली स्त्री; **शृङ्गारित**-(सं०वि०) शृङ्गार किया हुआ, संवारा आ। **शृङ्गारिया**-(हिं०पुं०) देवी देवता का शृङ्गार करने वाला, बहुरूपिया।
शृत-(सं०पुं०) क्वाथ, काढा।
शेखर-(सं०पुं०) शिरोभूषण, किरीट, मुकुट, चोटी, माथा, श्रेष्ठता वाचक शब्द।
शेषर-(सं०पुं०)अनन्त, सर्पराज, समाप्ति, अन्त, परिणाम,। **शेषधर**-(सं० पुं०) शिव, महादेव। **शेषनाग**-(सं०पुं०) अनन्त। **शेषभाग**-(सं० पुं०) बचा हुआ भाग। **शेषरात्रि**-(सं०स्त्री०) रात का पिछला पहर।
शेषोक्त-(सं०वि०) अन्त में कहा हुआ।
शेक्या-(सं०नपुं०) सिकहर, छीका (वि०) दृढ़।
शैत्य-(सं०नपुं०) शीत, ठंढक।
शैथिल्य-(सं.नपुं.) शिथिलता, ढिलाई,
शैल-(सं०नपुं०) चट्टान, (पुं०) पर्वत, पहाड़ (वि०) पथरीला, कठोर।
शैलकुमारी-पार्वती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शैलपति-(सं०पुं०) हिमालय। **शैलपथ**-(सं०पुं०) पहाड़ का मार्ग। **शैल रन्ध्र**-(सं०नपुं०) पहाड़ी गुफा। **शैलराज**-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत। **शैलशृंग**-(सं०पुं०) पर्वत का शिखर। **शैली**-(सं०स्त्री०) ढाल, ढंग, रीति, प्रथा, प्रणाली, परिपाटी, वाक्य रचना।

शैलेन्द्र-(सं०पुं०) शैलराज, हिमालय। **शैलेय**-(सं०नपुं०) सेंधा नमक, (पुं०) सिंह, भौंरा, (वि०) पहाड़ी, पथरीला, पत्थर के समान।

शैव-(सं०वि०) शिव संबंधी, (पुं०) शिव का उपासक। **शैवपत्र**-(सं० नपुं०) बिल्वपत्र।

शैवालिनी-(सं०स्त्री०) नदी।

शैवाल-(सं०नपुं०) जलनील, सेवार।

शैव्य-(सं०वि०) शिव संबंधी।

शैशव-(सं०नपुं०) बाल्यावस्था, बचपन (वि०) बचपन का।

शैशिर-(सं०वि०) शिशिर संबंधी।

शोक-(सं०पुं०)शोच, खेद। **शोककर, शोककारक**-(सं०वि०) शोक जनक। **शोकहारी**-(सं०वि०)शोक को दूर करने वाला। **शोकाकुल**-(सं०वि०)शोक से व्याकुल। **शोकातुर**-(सं०वि०) दुःख या शोक से व्याकुल।

शोच-(हिं०पुं०)चिन्ता, दुःख; **शोचनीय**-(सं०वि०) शोक करने योग्य।

शोण-(सं०नपुं०) रुधिर, अग्नि, लाल रंग, ललाई, **शोणता**-(सं०स्त्री०) रक्तता,ललाई। **शोणमणि**-(सं०स्त्री०) पद्मराग मणि, मानिक।

शोणित-(सं०वि०) लाल रंग का, लाल। **शोणितोत्पल**-(सं०नपुं०)लाल कमल।

शोथ-(सं०पुं०) किसी अंग में सूजन

शोध-(सं०पुं०) निर्मलता, परीक्षा, जांच, अनुसन्धान, खोज, ढूंढ। **शोधक**-(सं०वि०) खोजने या ढूंढ़ने वाला, सुधारक-(पुं०) वह संख्या जिसके घटाने से वर्गमूल ठीक ठीक निकले; **शोधन**-(सं०नपुं०) शोच, शुद्धता, आचरण सुधारने के लिये दण्ड देना, **शोधना**-(हिं०क्रि०) शुद्ध करना।

शोधनी-(सं०स्त्री०) सम्मार्जिनी-झाड़ू बोहारू। **शोधनीय**-(सं०वि०) शुद्ध करने के योग्य। **शोधवाना**-(हिं०क्रि०) शोधने का काम दूसरे से कराना; **शोधित**-(सं०वि०)परिष्कृत, स्वच्छ किया हुआ। **शोधैया** शोधने वाला, सुधारक।

शोफ-(सं०पुं०) सूजन।

शोभन-(सं०नपुं०) शुभ, कल्याण, सौन्दर्य, आभूषण, रमणीय, सुहावना। **शोभना**-(हिं०क्रि०) सुशोभित; **शोभनीय**-(सं०वि०) शोभा के योग्य।

शोभा(सं०स्त्री०) दीप्ति, कान्ति, छवि, सुन्दरता, गोरोचन, चमेली; **शोभाकर**-(सं०वि०) शोभा करने वाला। **शोभान्वित**-(सं०वि०) शोभा युक्त। **शोभायमान**-(सं०वि०) सुन्दर सोहाता हुआ।

शोभित-(सं०वि०) शोभा, युक्त

शोष-(सं०पुं०)सूखने का भाव, शोषण, यक्ष्मा रोग, बच्चों का सुखण्डी का रोग। **शोषक**-(सं०वि०)सोखने वाला **शोषण**-(सं०नपुं०)सोखना, सुखाना, क्षीण करना।

शोषणीय-(सं०वि०) सुखाने योग्य। **शोषित**-(सं०वि०) सुखाया हुआ।

शौक्तिका-(सं०स्त्री०) सीप।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शौच-(सं०नपुं०) शुचिता, पवित्रता, वे कृत्य जो प्रातःकाल उठकर सबसे पहले किये जाते हैं,
शौचत्व-(सं०नपुं०) शौच कार्य।
शौचविधि-(सं०स्त्री०) मलमूत्र आदि का त्याग करना। **शौचाचार**-(सं० पुं०) शुद्धिकर्म।
शौण्ड-(सं०वि०) मद्य पीकर मतवाला प्रगल्भ। **शौण्डता**-(सं०स्त्री०)मत्तता
शौत-(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
शौनिक-(सं०पुं०) आखेट, मृगया।
शौरसेनी-(सं०स्त्री०) प्राचीन काल की एक प्रसिद्ध प्राकृत भाषा।
शौर्य-(सं०नपुं०) शूरता, वीरता।
श्मशान-(सं० पुं०) शव जलाने का स्थान, मरघट।
श्मश्रु-(सं०नपुं०) मुख पर के बाल दाढ़ी, मूँछ।
श्याम-(सं०वि०) काला, सांवले रंग का; (पुं०) बादल, कोयल, श्रीकृष्ण का एक नाम। **श्यामक**-(सं०वि०) काले रंग का। **श्यामकण्ठ**-(सं०पुं०) नीलकण्ठ पक्षी। **श्यामता**-(सं०स्त्री०) कृष्णता, कालापन।
शामल-(सं०पुं०)काले रंग का,साँवला।
श्यामलता-(सं०स्त्री०) सांवलापन।
श्यामसुन्दर-(सं०पुं०) श्रीकृष्ण।
श्यामा-(सं० स्त्री०) बांझ स्त्री, रात, छाया, कोयल, सावाँ नामक अन्न।
श्यामाङ्ग-(सं०पुं०) साँवले रंग का।
श्याल,श्यालक-(सं० पुं०) पत्नीका भाई, साला, भगिनीपति, बहनोई,
श्यालिका-(सं०स्त्री०)पत्नी की बहिन शाली, **श्येन्**-(सं०पुं०) बाज नामक पक्षी।
श्रद्धास्पद-(सं०वि०) पूजनीय।
श्रद्धेय-(सं०वि०) श्रद्धा के योग्य।
श्रम-(सं०पुं०) प्रयास, अभ्यास, परिश्रम, शास्त्रों का अभ्यास, तपस्या, व्यायाम, पसीना। **श्रमकण**-(सं०पुं० पसीने का बूंद। **श्रम कर**-(सं०वि०) परिश्रम करने वाला। **श्रमजल**-पसीना।**श्रमजीवी**-(सं०वि०) परिश्रमकरके पेट पालने वाला, **श्रमण**-(सं०पुं०) बौद्ध सन्यासी। **श्रमबिन्दु**-(सं०पुं०)पसीनों के बूंद। **श्रमवारि**- (सं०नपुं०) पसीना। **श्रमविनोद**-(सं०पुं०) परिश्रम से होने वाला सुख। **श्रमविभाग**-(सं०पुं०) परिश्रम या कार्य का विभाग। **श्रमस्थान**-(सं०नपुं०) कार्यालय परिश्रम करनेका स्थान।**श्रमावण्बु**-(सं०-नपुं०) **श्रमिक**-(हिं०पुं०) श्रम करने वाला।
श्रमित-(सं० वि०) शिथिल, थका हुआ।
श्रमी-(हिं०वि०) परिश्रमी,श्रमजीवी।
श्रवण-(सं०नपुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान।
श्रवणगोचर-(सं०पुं०) कर्ण गोचर।
श्रवणपथ-(सं० पुं०) कान। **श्रवण-विद्या**-(सं०स्त्री०) संगीत शास्त्र।
श्रवणीय-(सं०वि०) सुनने योग्य।
श्रवना-(हिं० क्रि०) गिराना, बहाना
श्रव्य-(सं०वि०) जो सुना जा सके।
श्राद्ध-(सं०नपुं०)वह कर्म जो शास्त्र विधि के अनुसार पितरों के उद्देश्य से किया जाता है।
श्रान्त-(सं०वि०) दुःखी, थका हुआ।
श्रान्ति-(सं०स्त्री०) श्रम, खेद, दुःख।
श्राप-(हिं०पुं०) देखो शाप।
श्राम-(सं०पुं०) मण्डप, घर।
श्राव-(सं०पुं०) श्रवण, कान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्रावक-(सं० पुं०) बौद्ध या जैन सन्यासी।
श्रावण-(सं०पुं०) वर्ष का चौथा महीना
श्रावणी-(सं०स्त्री०) श्रावण,मासकी पूर्णिमा, इस दिन ब्राह्मणों का 'रक्षा-बन्धन' नामक त्योहार होता है।
श्रावयितव्य-(सं०वि०) सुनाने योग्य।
श्राविता-(सं०वि) श्रोता, सुनने वाला।
श्रित-(सं०वि०) सेवित, आश्रित।
श्रिय-(सं०स्त्री०) मंगल, कल्याण शोभा।
श्री-(सं०स्त्री०) लक्ष्मी, कीर्ति, कमल, वृद्धि, बेल का वृक्ष, ऐश्वर्य, अधिकार, प्रभा शोभा कान्ति, सफेद चन्दन, एक आदर सूचक शब्द जो नाम के आगे लिखा जाता है।
श्रीकण्ठ-(सं०पुं०) शिव, महादेव।
श्रीकर-(सं०नपुं०) लाल कमल।
श्रीकान्त-(सं०पुं०) लक्ष्मीपति, विष्णु।
श्रीकाम-(सं० वि०) **श्रीखण्ड**-(सं० नपुं०) हरिचन्दन।
श्रीगर्भ-(सं० पुं०) खड्ग, तलवार।
श्रीधर-(सं० पुं०) शालग्राम चक्र, विष्णु, (वि०) तेजस्वी, तेजवान्;
श्रीनिकेतन-(सं०पुं०) वैकुण्ठ; **श्रीनिवास** (सं०पुं०) लक्ष्मी का निवास, **श्री-पञ्चमी**-(सं०स्त्री०) वसन्तपंचमी।
श्रीपति-(सं०पुं०) विष्णु, राजा; **श्री-फल**-(सं०पुं०) बेल का वृक्ष।
श्रीमत्-(सं०वि०) ऐश्वर्यशाली, धन-वान् सुन्दर,
श्रीमती-(सं०स्त्री०) स्त्रियों के लिये आदरसूचक शब्द।
श्रीमन्त-(सं०वि०) धनवान्, धनाढ्य।
श्रीमान्-(हिं०वि०) देखो श्रीयुत, धनवान
श्रीमाला-(सं०स्त्री०) गले में पहरने का एक आभूषण।
श्रीमुख-(सं०नपुं०) सुन्दर मुख।
श्रीमूर्ति-(सं०स्त्री०) विष्णु की प्रतिमा।
श्रीयुक्त-(सं०वि०) श्रीमान्, शोभा सम्पन्न, एक आदर सूचक विशेषण जो बड़े आदमियों के नाम के पहले लगाया जाता है। **श्रीयुत**-(सं०वि०) श्रीयुक्त।
श्रीवन्त-(सं०वि०) सम्पत्तिशाली, धनाढ्य
श्रीवृद्धि-(सं०स्त्री०) भाग्य की वृद्धि।
श्रीहत-(सं०वि०) निस्तेज, शोभा-रहित।
श्रुत-(सं०वि०) सुना हुआ, ज्ञात।
श्रुतपूर्व-(सं०वि०) जो पहले सुना गया हो।
श्रुति-(सं०स्त्री०) वेद, कर्ण, कान, सुनी हुई बात, वार्ता, ध्वनि, शब्द, त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा अभि-धान, नाम, विद्या। **श्रुतिकटु**-(सं० पुं०) कठोर या कर्कश शब्द, **श्रुति-पथ**-(सं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय। **श्रुति-मार्ग**, **श्रुतिमण्डल**-(सं०नपुं०) कर्ण, कान। **श्रुतिमाला**-(सं०पुं०) ब्रह्मा। **श्रुतिमुख**-(सं०पुं०) ब्रह्मा।
श्रेणि-(सं०स्त्री०) पंक्ति, परम्परा शृंखला, मण्डली, समूह, तेल, सेना, **श्रेणिबद्ध**-(सं०पुं०) क्रम बांधे हुए।
श्रेणी-(सं०स्त्री०) देखो श्रेणि।
श्रेणीधर्म-(सं०पुं०) पंचायत की रीति।
श्रेणीबद्ध-(सं०वि०) क्रम बांधे हुए।
श्रेय-(हिं०वि०) धर्म, पुण्य, सदाचार, मुक्ति, कल्याण, (वि०) श्रेष्ठ, उत्तम।
श्रेयस-(सं०नपुं०) अतिशय मङ्गल।
श्रेयस्कर-(सं०वि०) शुभ करने वाला
श्रेयस्काम-(सं०पुं०) मंगल चाहने वाला।
श्रेष्ठ-(सं०वि०) प्रशस्त, उत्तम, ज्येष्ठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़ा, मुख्य। **श्रेष्ठतम**-(सं०वि०) सब में श्रेष्ठ।

श्रेष्ठतर-(सं०क्रि०) वह जो दो व्यक्ति या पदार्थों में प्रधान हो। **श्रेष्ठतः**-(सं०अव्य०) विशेष करके।

श्रेष्ठता-(सं०स्त्री०) प्रधानता, बड़ाई।

श्रोणि-(सं०वस्त्री०) कटिदेश, कमर। **श्रोणिबिम्ब**-(सं०स्त्री०) करधनी।

श्रोणिसूत्र-(सं०नपुं०) तलवार लटकाने का परतला, कमर की करधनी।

श्रोणी-(सं०स्त्री०) कटि, कमर, नितम्ब।

श्रोत-(हिं०पुं०) श्रवणेन्द्रिय, कान। **श्रोतक**-(सं०वि०) सुनने योग्य।

श्रोता-(हिं०पुं०) कथा आदि सुनने वाला।

श्रोत्रिय-(सं०पुं०) वह ब्राह्मण जिसने वेद का अध्ययन किया हो। **श्रोत्री**-(हिं०पुं०) श्रोत्रिय।

श्रोनित-(हिं०वि०) देखो शोनित।

श्रौत-(सं०नपुं०) श्रुति संबंधी।

श्लथ-(सं०वि०) शिथिल, ढीला, दुर्बल। **श्लाघनीय**-(सं०वि०) प्रशंसनीय, **श्लाघा**-(सं०स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति, बड़ाई, **श्लाघित**-(सं०वि०) प्रशंसित।

श्लाघ्य-(सं०वि०) सराहने योग्य, श्रेष्ठ।

श्लिष्ठ-(सं०वि०) मिला हुआ, जुटा हुआ।

श्लीपद-(सं०नपुं०) फीलपाँव नामक रोग।

श्लील-(सं०वि०) शुभ, मंगलदायक।

श्लेष-(सं०नपुं०) संयोग, मिलान, जोड़। **श्लेषण**-(सं०नपुं०) संयुक्त करना, मिलाना, आलिंगन।

श्लेष्मा-(सं०पुं०) कफ।

श्लैष्मिक-(सं०वि०) कफ संबंधी।

श्लोक-(सं०पुं०) पद्य, कविता, अनुष्टुप छन्द, यश, प्रसिद्धि, कीर्ति।

श्वजीविका-(सं०स्त्री०) दासत्व वृत्ति।

श्वन-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।

श्वपच्-(सं०पुं०) चाण्डाल, डोम।

श्वभीरु-(सं०पुं०) शृगाल, सियार।

श्वशुर-(सं०पुं०) पति या पत्नी का पिता, ससुर।

श्वश्रू-(सं०स्त्री०) पति या पत्नी की माता, सास।

श्वसन-(सं०नपुं०) साँस लेना, हाँफना।

श्वान-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।

श्वास-(सं०पुं०) प्राणवायु, साँस, दम, दमे का रोग। **श्वासकास**-दमा, खांसी, **श्वासरोध**-दम घुटना। **श्वासा**-(हिं० स्त्री०) साँस, दम, प्राण।

श्वासोच्छ्वास-(सं०पुं०) वेग से साँस खींचना और बाहर निकालना।

श्वेतता-(सं०स्त्री०) सफेदी। **श्वेतद्युति**-(सं०पुं०) चन्द्रमा। **श्वेतधातु**-(सं० पुं०) खड़िया। **श्वेतनील**-(सं०पुं०) बादल।

ष

ष्-संस्कृत या हिन्दी वर्णमाला के व्यञ्जन वर्णों में से इकतीसवाँ अक्षर। इसका उच्चारण स्थान मूर्धा है।

ष-(सं०पुं०) ध्वंस, नाश, अवशेष, मुक्ति, स्वर्ग, (वि०) सुन्दर।

षट्-(सं०वि०) गिनती में छः (पुं०) ६ की संख्या।

षट्क-छः वस्तुओं का समूह।

षट्कार-(सं० पुं०) षट् शब्द का उच्चारण।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षट्कोण-(सं० नपुं०) छः कोने की आकृति (वि०) छपहल का ।
षट्चक्र-(सं०नपुं०) हठयोग के अनुसार कुण्डलिनी के ऊपर ६ चक्र, षड्यन्त्र ।
षट्चरण-(सं०पुं०) भ्रमर, भौंरा, खटमल (वि०) छः पैर वाला ।
षट्तिला-(सं०स्त्री०) माघ महीने की कृष्ण पक्ष की एकादशी का नाम ।
षट्पद्-(सं०वि०) छः पैर वाला ।
षट्पदा-(सं० स्त्री०) भ्रामरी, भौंरी, खटमल ।
षट्पदी-(सं०वि०) छः पैर वाली ; (स्त्री०) भ्रामरी, भौंरी ।
षट्रस-(सं०पुं०) छः प्रकारका रस या स्वाद ।
षडंग-(सं०नपुं०)शरीर के अवयव ।
षडंगी-(हिं०वि०) छ अंग वाला ।
षडानन-(सं०वि०) छ मुख वाला ।
षड्गुण-(सं०पुं०)छ गुणों का समूह ।
षड्दर्शन-(सं०नपुं०) हिन्दुओं के छ दर्शन शास्त्र यथा-न्याय, वैशेषिक, साँख्य, वेदान्त, मीमाँसा और योग ।
षड्दर्शनी-(हिं०पुं०)दर्शनो को जानने वाला, ज्ञानी ।
षड्यन्त्र-(सं० पुं०) किसी मनुष्य के विरुद्ध गुप्त रीति से कोई कार्य, कपट पूर्ण आयोजन ।
षड्रस-(सं०पुं०) छ प्रकार का स्वाद या रस यथा-मधुर, अम्ल, लवण, कटु, तिक्त और कषाय ।
षड्रिपु-(सं०पुं०) काम, क्रोध आदि मनुष्य के छ विकार ।
षण्ड-(सं०पुं०) साँड़, क्लीव, नपुंसक, हिजड़ा ।
षण्डत्व-(सं०नपुं०) हिजड़ापन ।
षण्मास-(सं०वि०) छ मास आधा वर्ष
षत्व-(सं०नपुं०) मूर्धन्य "षकार" का भाव, 'ष' होना ।
षष्ट-(सं०वि०) साठ संख्या का ।
षष्टि-(सं०स्त्री०) साठ की संख्या ।
षष्टिका-(सं०स्त्री०) साठी धान ।
षष्ठ-(सं०वि०) जिसका स्थान पाँच के उपरान्त हो, छठां ।
षष्ठक-(सं०वि०) छठां ।
षष्ठांश-(सं०पुं०) छठां भाग ।
षष्ठी-(सं०स्त्री०) किसी मास की शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि ।
षाण्मासिक-(सं०वि०) छ छ महीने पर होने वाला ।
षोड़श-(सं०वि०) सोलहवाँ, सोलह की संख्या ।
षोड़शविध-(सं०वि०)सोलह प्रकार का
षोड़शी-(सं०वि०स्त्री०) सोलहवीं, सोलह वर्ष की स्त्री, नवयौवना, स्त्री
षोड़शोपाचार-(सं० पुं०) पूजन के पूर्ण अंग जो सोलह हैं यथा-आसन, स्वागत, पाद्य, अर्घ्य, आचपनीय, मधुपर्क, पुनराचमनीय, स्नान, वसन, आभरण, गन्ध, पुरुष, धूप, दीप, चन्दन और नैवेद्य ।
ष्टीवन(सं०नपुं०) थूकना ।
ष्टीवी-(सं०वि०) थूक से भरा हुआ ।

स

स-हिन्दी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यञ्जन वर्ण, इसका उच्चारण स्थान दन्त है ।
स-(सं०पुं०) ईश्वर, शिव, विष्णु, सर्प, पक्षी, चन्द्रमा, वायु, जीवात्मा, कान्ति (नपुं०) ज्ञान, चिन्ता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सं-(सं०अव्य०) एक अव्यय जिसका व्यवहार "संगीत, समानता, शोभा आदि" सूचित करने के लिये होता है यथा-संताप, संयोग आदि।

संइतना-(हिं०क्रि०) लीपना, पोतना। सहेजना।

संउपना-(हिं०क्रि०)देखो सौंपना।

संक-(हिं०स्त्री०) देखो शंका।

संकत-(हिं०पुं०) देखो संकेत।

संकना-(हिं०क्रि०) सन्देह करना।

संकर-(हिं०पुं०) शङ्कर, शिव।

संकरा-(हिं०वि०) जो अधिक विस्तृत न हो, पतला (पुं०) कष्ट, आपत्ति।

संकराना-(हिं०क्रि०)संकुचित करना।

संकल-(हिं०स्त्री०) सिकड़ी।

संकलन-(हिं०पुं०) संग्रह।

संकल्पना-(हिं०क्रि०) दृढ़ निश्चय करना,धार्मिक उद्देश्य से कुछ दान देना।

संकष्ट-(हिं०पुं०) सङ्कट।

संकाना-(हिं०क्रि०) शंका करना, डरना।

संकारना-(हिं०क्रि०) संकेत करना।

संकेतना-(हिं०क्रि०)संकट में डालना।

संकोचना-(हिं०क्रि०)संकुचित करना।

संकोची-(हिं०पुं०) संकोच या लज्जा करने वाला।

संकोपना-(हिं०क्रि०) क्रोध करना।

संक्रम-(सं०पुं०) प्राप्ति, सेतु, पुल, उपाय।

संक्रमण-अतिक्रमण, घूमना, फिरना, सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि में प्रवेश करना।

संक्रमणिका-(सं०स्त्री०) सीढ़ियों की पंक्ति।

संक्रमित-(सं०वि०) स्थापित, प्रतिबिम्बित।

संक्रान्त-(सं०वि०) युक्त, प्रविष्ट, व्याप्त, प्रतिबिम्बित।

संक्रान्ति-(सं०स्त्री०) संचार, गमन, सूर्य का एक राशि में से दूसरे में जाना व्याप्ति।

संक्रामक-(सं०वि०) संसर्ग या छूत से फैलने वाला (रोग)

संक्षिप्त-(सं०वि०) अल्प, थोड़ा।

संक्षेप-(सं०पुं०) थोड़े में कोई बात कहना।

संक्षेपतः-(सं०अव्य०) संक्षेप में, थोड़े में।

संख-(हिं०पुं०) देखो शंख।

संखिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बहुत विषैला उपधातु या पत्थर।

संगठन-(हिं०पुं०) अलग अलग शक्तियों, लोगों या अंगों आदि को इस प्रकार एक में मिलाना कि उसमें नई शक्ति आ जावे, संख्या या संघ।

संगठित-(हिं०वि०) भलीभांति व्यवस्था व्यवस्था करके मिलाया हुआ।

संगति-(हिं०स्त्री०) देखो संगति।

संगसी-(हिं०स्त्री०) देखो संड़सी।

संगाती-(हिं०पुं०) साथी, संगी, मित्र,

संगृहीत-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ।

संगोतरा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की नारंगी, सन्तरा।

संगोपित-(सं०वि०) छिपाया हुआ।

संग्रह-देखो सङ्ग्रह। **संघ**-देखो सङ्घ।

संघाती-(हिं०पुं०) साथी, मित्र (वि०) प्राण नाशक।

संजमी-(हिं०पुं०) देखो संयमी।

संजोग-(हिं०पुं०) देखो संयोग।

संज्ञा-(सं०स्त्री०) चेतना, ज्ञान, बुद्धि, संकेत, व्याकरण में वह शब्द जिससे किसी वस्तु का बोध होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संज्ञान-(सं०नपुं०) संकेत ।
संज्ञापन-(सं०नपुं०) विज्ञापन, कथन ।
संज्ञाहीन-(सं०वि०) अचेत, बेसुध ।
संज्ञवाती-(हिं०स्त्री०) संध्या के समय जलाने का दीपक ।
संझा-(हिं०स्त्री०) संध्या, सूर्यास्त का समय ।
संठ-(हिं०पुं०) शठ, धूर्त, नीच ।
संड-(हिं०पुं०) साँड़ । **संडमुसंड**-(हिं०वि०) हट्टा कट्टा ।
संडसा-(हिं०पुं०) गरम लोहे को पकड़ने का लोहार का एक अस्त्र ।
संडसी-(हिं०स्त्री०) छोटा संडसा ।
सँडा-(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट ।
संडास-(हिं०पुं०) शौचकूप ।
संतरा-(हिं०पुं०) बड़ी नारंगी ।
संतरी-(हिं०पुं०) द्वारपाल, पहरेदार ।
संतोष-(हिं०क्रि०) देखो सन्तोष ।
संतोषना-(हिं०क्रि०) संन्तोष दिलाना, सन्तुष्ट करना ।
संद-(हिं०पुं०) दरार, छेद ।
संदि-(हिं०स्त्री०) सन्धि, सेल ।
संदूख-(हिं०पुं०) देखो सन्दूक ।
संदूर-(हिं०पुं०) देखो सिंदूर ।
संदेसा-(हिं०पुं०) सन्देश, समाचार ।
संनिधानी-(हिं०वि०) अधिकार में रखने वाला ।
संयात-(सं०वि०) प्राप्त, पहुँचा हुआ ।
संयुक्त-(सं०वि०) लगा हुआ, मिला हुआ ।
संयुक्त-(सं०वि०) संयुक्त, जुड़ा हुआ ।
संयोग-(सं०पुं०) मिलान, मिलाप, समागम, सम्बन्ध, विवाह सम्बन्ध, मत का एक होना, दो या अधिक व्यञ्जन वर्णों का मेल, जोड़ ।
संयोगित-(सं०वि०) मेल किया हुआ ।
संयोगी(संयोग करने वाला, मिलाने वाला ।
संयोजक-(सं०वि०) जोड़ने वाला, (पुं०) व्याकरण में वह शब्द जो दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ता है ।
संयोजन-(सं०नपुं०)जोड़ने या मिलाने की क्रिया । **संयोजना**-(सं०स्त्री०) प्रबन्ध, व्यवस्था । **संयोजित**-(सं० वि०) मिलाया हुआ ।
संरक्त-(सं०वि०) अनुरक्त, आसक्त ।
संरक्षक-(सं०वि०) रक्षा करने वाला, सहायक, आश्रय देने वाला ।
संरक्षण-(सं०नपुं०) देखरेख, प्रतिबन्ध **संरक्षणीय**-(सं०वि०) रक्षा करने योग्य । **संरक्षित**-(सं०वि०) भली भांति रक्षा किया हुआ ।
संरम्भ-(सं०पुं०)क्रोध, युद्ध, लड़ाई ।
सपोलिया-(हिं०पुं०)साँप पकड़ने वाला
सभलना-'(हिं०क्रि०') थांभा जाना, सचेत होना, चंगा होना ।
संरभाल-(हिं०स्त्री०) रक्षा, पोषण का भार । **संभालना**-(हिं०क्रि०) गिरने से बचाना, रोकना, थांभना, पालन पोषण करना ।
संयत-(सं०वि०) बंधा हुआ, व्यवस्थित उद्यत ।
संयति-(सं०स्त्री०) निरोध ।
संयम(सं०पुं०) वश में करने की क्रिया या भाव, उद्योग, प्रयत्न ।
संयमित-(सं०वि०) वश में लाया हुआ इन्द्रियनिग्रह ।
संयमी-(हिं०पुं०) आत्मनिग्रही, योगी
संयुक्त-(सं०वि०) जुटा हुआ, संबद्ध ।
संरुद्ध-(सं०वि०)आच्छादित, ढंपा हुआ
संलग्न-(सं०वि०)संयुक्त, मिला हुआ । जुड़ा हुआ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संलाप-(सं०पुं०) आपस की बातचीत
संवत्-(सं०पुं०) संवत्सर, वर्ष ।
संवरण-(सं०नपुं०) छिपाव, ढपना,
संवरना-(हिं०क्रि०) अलंकृत होना, सजना ।
संवर्धक-(सं०वि०) बढ़ाने वाला ।
संवर्धन-(सं०नपुं०) बढ़ाना, पालना पोसना; सन्वर्धनीय-(सं०वि०) बढ़ाने या पालने पोसने योग्य ।
संसंवर्धित (०वि०) बढ़ाया हुआ, पाला पोसा हुआ ।
संवाद--(सं०पुं०) बातचीत, वृत्तान्त, संग, चर्चा । **संवादक**-(सं०क्रि०) संभाषण करने वाला ।
संवारना-(हिं०क्रि०) अलंकृत करना, सजाना ।
संवाही-(हिं०वि०) हाथ पैर दबाने वाला, ढोने वाला, पहुँचाने वाला ।
संविधान-(सं०नपुं०) व्यवस्था, रीति
संविभाग-(सं०पुं०) बाँट, बँटाई, भाग ।
संविष्ट-(सं०वि०) निविष्ट, बैठा हुआ ।
संवीत-(सं०वि०)आवृत, ढंपा हुआ ।
संवृत-(सं०वि०) आच्छादित, ढपा, हुआ ।
संवेग-(सं० पुं०) आवेग, बक्ड़ाहट, भय ।
संवेदन-(सं०पुं०) अनुभव ।
संशय-(सं०नपुं०) शाँत करना, निवृत्ति वृत्ति करना ।
संशमन-(सं०पुं०) सन्देह, आशंका । **संशयात्मक**-(सं०वि०) सन्देहजनक । **संशयान**-(हिं० वि०) संशययुक्त **संशयित**-(सं०वि०) संदिग्ध, अनिश्चित । संशयी-(हिं० वि०) सन्देह करने वाला ।
संशोधक-(सं०वि०) शोधन करने वाला **संशोधन**-(सं०नपुं०) शुद्ध करना, त्रुटि या दोष दूर करना । **संशोधनीय**-(सं० वि०) सुधारने योग्य । **संशोधित**-(सं०वि०) परिष्कृत, सुधारा हुआ ।
संश्रय-(सं०पुं०) आश्रय, शरण, संयोग
संश्लेष्ट-(सं०वि०)सम्मिलित, मिश्रित
संश्लेष-(सं०पुं०) आलिंगन, मेल मिलाप । **संश्लेषण**-(सं०नपुं०) जुटना, मिलना । **संश्लेषित**-(सं० वि०) सटाया हुआ ।
संस, संसई-(हिं०पुं०) देखो संशय ।
संसक्त-(सं०वि०) संबद्ध, लगा हुआ
संसनाना-(हिं०क्रि०) देखा सनसनाना ।
संसय-(हिं०पुं०) देखो संशय ।
संसरण-(सं०नपुं०) गमन ।
संसर्ग-(सं०पुं०) संबंध, संपर्क, लगाव,
संसर्गी-(सं०त्रि०) सहचर, मित्र ।
संसादित-(सं०वि०) एकत्र किया हुआ सजाया हुआ ।
ससाधान-(सं०नपुं०) आयोजन ।
संसार-(सं० पुं०) मर्त्यलोक, जगत् । सृष्टि, गृहस्थी, । **संसारी**-(हिं० वि०) संसार संबंधी, लौकिक ।
संसिद्ध-(सं० वि०) प्रस्तुत, उद्यत, प्राप्त ।
संसृष्ट-(सं०वि०)परस्पर मिला हुआ अन्तर्गत । **संसृष्टि**-(सं०स्त्री०) एक साथ उत्पत्ति, परस्पर, संबंध, लगाव घनिष्टता ।
संस्करण-(सं०नपुं०) सुधारना, पुस्तकों की एक बार की छपाई । आवृत्ति,
संस्कर्ता-(सं०वि०)संस्कार करने वाला।
संस्कार-(सं० पुं०) सुधार, अनुभव । मनोवृत्ति या सुभाव का शोधन । इन्द्रियों पर वाह्य विषयों से पड़ा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ प्रभाव। पूर्वजन्म की वासना, चित्त पर पड़ा हुआ प्रभाव।

संस्कृत-(सं०नपुं०) भारतवर्षकी प्राचीन पवित्र भाषा, देववाणी (वि०) संस्कार किया हुआ।

संस्कृति-(सं०स्त्री०) संस्कार, सुधार, परिष्कार, शुद्धि, सजावट, सभ्यता।

संस्तीर्ण-(सं०वि०) छितराया या फैलाया हूआ।

संस्तुत-(सं०वि०) प्रशंसा किया हुआ।

संस्था-(सं०स्त्री०) व्यवस्था, नियम मण्डल, समाज, सभा, समुदाय।

संस्थान-(सं०नपुं०) स्थिति, ठहराव, आयोजन।

संस्थापक-(सं०वि०) प्रवर्तक, स्थापित करने वाला, किसी समाज सभा आदि का खोलने वाला। **संस्थापन**-(सं०नपुं०) जमाना, बैठाना, कोई नई बात चलाना।

संस्मरण-(सं०नपुं०) पूर्ण स्मरण।

संस्मरणीय-(सं०वि०) नाम जपने योग्य।

संस्मरित-(सं०वि०) याद दिलाया हुआ।

संहत-(सं०वि०) घना, गठा हुआ, दृढ़, एकत्र।

संहति-(सं०स्त्री०) समूह, झुण्ड, ढेर, राशि, घनत्व।

संहरण-(सं०नपुं०) बलपूर्वक छीन लेना।

संहरना-(हिं०क्रि०) संहार करना।

संहर्षण-(सं०नपुं०) रोंवें का खड़ा होना।

संहार-(सं०पुं०) संग्रह संचय, संक्षेप कथन, ध्वंश, नाश, अन्त, प्रलय।

संहारक-(सं० वि०) नाश करने वाला।

संहिता-(सं०स्त्री०) वह ग्रंथ जिसमें पद पाठ आदि का क्रम नियमानुसार चला आता हो, व्याकरण के अनुसार दो अक्षरों का परस्पर मिलकर एक होना, सन्धि।

संहृत-(सं०वि०) जुटाया हुआ नष्ट, संक्षिप्त।

सइ-(हिं०अव्य०) से, साथ, विभक्ति का एक चिह्न जो करण और अपादान कारक में प्रयोग होता है।

सई-(हिं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।

सउँ-(हिं०अव्य०) सो।

सकट-(हिं०पुं०) शकट, गाड़ी, सग्गड़। **सकटी**-(हिं०स्त्री०) छोटा सग्गड़ या गाड़ी।

सकड़ी-(हिं०स्त्री०) देखो सिकड़ी।

सकत-(हिं०स्त्री०) शक्ति, बल, सामर्थ्य।

सम्पति-(हिं०क्रि०वि०) यथासंभव, भरसक।

सकती-(हिं०स्त्री०) शक्ति।

सकना-(हिं०क्रि०) किसी काम करने के योग्य होना।

सकपकाना-(हिं०क्रि०) चपकाना, हिचकिचाना।

सकम्प-(सं०वि०) काँपता हुआ।

सकरना-(हिं०क्रि०) स्वीकृत होना।

सकरा-(हिं०वि०) देखो सँकरा।

सकरुण-(सं०वि०) दयायुक्त।

सकर्तृक-(सं०वि०) जिसमें कर्ता हो।

सकर्मक-(सं०पुं०) जिस धातु के कर्म हो, कर्मयुक्त धातु, (वि०) कर्मयुक्त

सकल-(सं०वि०) समस्त। **सकलेन्द्र**-(सं०पुं०) पूर्णिमाका चन्द्रमा

सकसकाना-(हिं० क्रि०) डर के मारे काँपना।

सकाना-(हिं०क्रि०) शंका करना, **सकना**- का प्रेरणार्थक रूप।

सकाम-(सं०वि०) फल की कामना से कोई काम करने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकार-(सं०पुं०) "स" अक्षर।
सकारण-(सं०वि०) हेतुसहित।
सकारना-(हिं०स्त्री०)स्वीकार करना,
सकाश-(सं०पुं०) समीप, निकट।
सकिलना-(हिं०क्रि०)सरकना,फिसलना
सकुच-(हिं०पुं०स्त्री०) संकोच, लज्जा
सकुचना-(हिं०क्रि०) संकोच करना
सकुचाई-(हिं०स्त्री०) संकोच, लज्जा
सकुचाना-(हिं०क्रि०) लज्जित करना
सकुचौहां-(हिं०वि०) संकोच करने वाला।
सकुन-(हिं०पुं०) शकुन, पक्षी, चिड़िया
सकृत्-(सं०अव्य०)एकबार,साथ,सदा।
सकेत-(हिं०पुं०) संकेत, निर्दिष्ट, विपत्ति, कष्ट, दुःख।
सकेतना-(हिं०क्रि०) सिकुड़ना।
सकेलना-(हिं०वि०) इकट्ठा करना।
सकोरा-(हिं०पुं०) मिट्टी का छोटा पात्र कसोरा।
सक्ति-(हिं०स्त्री०) देखो शक्ति।
सक्तु-(सं०पुं०) सत्तू।
सक्र-(हिं०पुं०) शक्र, इन्द्र।
सख-(हिं०पुं०) सखा, मित्र, साथी।
सखत्व-(सं०नपुं०) मित्रता।
सखरा-(हिं०वि०)जल में पकाया हुआ भोजन।
सखरी-(हिं०स्त्री०) कच्ची रसोंई।
सखा-(हिं०पुं०)साथी, संगी, सहचर।
सखित्व-(सं०पुं०) बन्धुता, मित्रता।
सखी-(सं०स्त्री०) सहचरी, सहेली।
सख्य-(सं०नपुं०) सखापन, मित्रता।
सख्यता-(सं०स्त्री०) मैत्री।
सगपन-(हिं०पुं०) देखो सगापन।
सगबग-(हिं०वि०)तराबोर, लतफथ। परिपूर्ण (क्रि०वि०) झटपट।
सगबगाना-(हिं०क्रि०) लथपथ होना तराबोर होना। भयभीत होना
सगरा-(हिं०वि०) संपूर्ण, कुल।
सगल-(हिं०वि०) देखो सकल।
सगा-(हिं०वि०) एक ही माता से उत्पन्न, सहोदर, निकट के संबंध का।
सगाई-(हिं० स्त्री०) विवाह से संबंध का निश्चय।
सगुण-(सं०वि०) गुणयुक्त, गुणवान
सगुन-(हिं०पुं०) देखो शकुन।
सगुनाना-(हिं०क्रि०) शकुन बतलाना
सगुनिया-(हिं०पुं०) शकुन विचारने वाला।
सगोती-(हिं०पु०) एक वंश का, भाई, बन्धु।
सघन-(सं०वि०) अविरल, घना, ठोस
संकट-(सं०नपु०) विपत्ति, दुःख, कष्ट
संकर-(सं०पुं०) मिश्रित, तत्व, मिश्रण वर्णसंकर जाति। **संकरता**-(सं० स्त्री०) मिलावट।
संकर्षण-(सं०पुं०) आकर्षण, खिंचाव।
संकल्प-(सं०पुं०) दानपुण्य अथवा देवकार्य आरंभ करने से पहले दृढ़, निश्चय या विचार का प्रगट करना।
संकाश-(सं०अव्य०) समीप, निकट।
संकीर्ण-(सं०पुं०) भीड़भाड़ (वि०) अपवित्र, संकुचित, संकरा, तुच्छ, नीच, क्षुद्र।
संकुचन-(सं०वि०) सिकुड़ा या सिमटा हुआ।
संकुल-(सं०नपुं०) युद्ध, लड़ाई।
संकेत-(सं०पु०) इङ्गित, चेष्टा, चिह्न।
संकोच-(सं० पुं०) खिंचाव, लज्जा, हिचकिचाहट।
सङ्क्रमण-(सं०पुं०) गमन, चलना, सूर्य का एक राशि से निकल कर दूसरे में प्रवेश करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संङ्क्रान्ति-(सं०स्त्री०) सूर्य का एक राशि में से दूसरी राशि में जाना।
सङ्क्रामक-(सं०वि०) संसर्ग या छूत से फैलने वाला।
संक्षय-(सं०पुं०) नाश, ध्वंस, प्रलय।
संक्षिप्त-(सं०वि०) संचित किया हुआ छोड़ा हुआ, जो संक्षेप में कहा गया हो।
संक्षिप्त-(सं०वि०) व्याकुल, घबड़ाया।
सङ्क्षुब्ध-(सं० वि०) व्याकुल, घबड़ाया हुआ।
संक्षेप-(सं०पुं०) थोड़े में कोई बात कहना। संक्षेपतः-(सं०अव्य०) संक्षेप में, थोड़े में।
संक्षोभ-(सं०पुं०) चंचलता, गर्व, घमंड
सङ्ख्या-(सं०स्त्री०) गणना, गिनती।
संग-(सं०पुं०) संसर्ग, संबंध, बन्धुत्व।
संगति-(सं०स्त्री०) संगम, मेल, संबंध।
संङ्गम-(सं०पुं०) दो नदियों के मिलने का स्थान, मिलाप, सम्मेलन।
संगीत-(सं० नपुं०) वह कार्य जिसमें नाचना, गाना, बजाना तीनों हों।
संगृहीत-(सं०वि०) संग्रह किया हुआ।
सङ्ग्रह-(सं०पुं०) वह ग्रन्थ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों।
सङ्ग्रहणी-(सं०स्त्री०) ग्रहणी रोग।
सङ्गृहीत-(सं०वि०) इकट्ठा किया हुआ
सङ्ग्राम-(सं० पुं०) युद्ध, लड़ाई।
सङ्घ-(सं०पुं०) दल, सभा, समाज।
सङ्घटन-(सं०नपुं०) निर्माण, रचना
सङ्घटित-(सं०वि०) एकत्र किया हुआ।
सङ्घर्ष-(सं०पुं०) रगड़, मर्दन।
सङ्घाती-(सं०पुं०) प्राणनाशक।
सच-(हिं०वि०) यथार्थ, वास्तविक, सत्य।
सचना-(हिं०क्रि०) इकट्ठा करना।
सचमुच-(हिं०अव्य०) यथार्थ में, वास्तव में।
सचरना-(हिं०क्रि०) प्रचलित होना
सचराचर-(सं०पुं०) सब चर और अचर प्राणी।
सचल-(सं०वि०) चलायमान।
सचाई-(हिं०स्त्री०) सत्यता, सच्चापन
सचारना-(हिं०क्रि०) फैलाना।
संचित-(सं०वि०) चिन्तायुक्त, चिन्तित
सचिव-(सं०पुं०) मन्त्री, सहायक, मित्र।
सची-(सं०स्त्री०) शची, इन्द्राणी।
सचु-(हिं०पुं०) सुख, आनन्द, प्रसन्नता
सचेत-(हिं०वि०) चेतना युक्त, सावधान
सचेती-(हिं०स्त्री०) सावधानी।
सच्चरित-(सं०वि०) जिसकी चाल चलन अच्छी हो।
सच्चा-(हिं०वि०) सत्यवादी, सच बोलने वाला, यथार्थ, वास्तविक, विशुद्ध, ठीक। **सच्चाई**-(हिं०स्त्री०)
सच्चापन-(हिं०पु०) सत्यता, सच्चाई
सच्चति-(सं०नपुं०) सत् और चित् से युक्त ब्रह्म। **सच्चिदानन्द**-(सं० पुं०) नित्य ज्ञान और सुख स्वरूप ब्रह्म।
सच्छन्द-(हिं०वि०) देखो स्वच्छन्द।
सच्छाय-(हिं०वि०) छाया युक्त।
सच्छी-(हिं०पुं०) साक्षी।
सज-(हिं०स्त्री०) सजने की क्रिया या भाव, शोभा, सौन्दर्य।
सजग-(हिं०वि०) सतर्क, सावधान।
सजदार-(हिं०वि०) अच्छी आकृतिका सुन्दर।
सजधज-(सं०स्त्री०) शृंगार, सजावट।
सजन-(सं०पुं०) भला आदमी।
सजना-(हिं०क्रि०) शृंगार करना, अलंकृत करना, सुशोभित होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सजनी-(हिं०स्त्री०) सुखी।
सजन्य-(सं०वि०) सजातीय।
सजल-(सं०वि०) जल से युक्त, अश्रु-पूर्ण।
सजवाई-(हिं०स्त्री०)सजने या सजाने की क्रिया, सजाने का शुल्क। **सजवाना**-(हिं०क्रि०) सजाने का काम दूसरे से कराना।
सजाई-(हिं०स्त्री०) सजाने की क्रिया या भाव।
सजागर-(सं०वि०)जागृत।
सजाति-(सं०पुं०) एक जाति का। **सजातीय**-(सं०पुं०) एक जाति या गोत्र का।
सजाना-(हिं०क्रि०) शृंगार करना, अलंकृत करना, शोभा देना।
सजबज-(हिं०स्त्री०) देखो सजधज।
सजावट-(हिं०स्त्री०) शोभा, तैयारी। **सजावन**-(हिं०पुं०) सजाने का भाव या क्रिया।
सजीउ-(हिं०वि०) देखो सजीव।
सजीला-(हिं०वि०) सजधज के साथ रहने वाला।
सजीव-(सं०वि०) जीवित, जिसमें प्राण हो, (पुं०) जीवधारी।
सजीवन, सजीवन बूटी-(हिं०पुं०) संजीवनी नामक बूटी।
सजोना-(हिं०क्रि०) देखो सजाना।
सज्ज-(सं०वि०) सज्जित, सजा हुआ।
सज्जन-(सं०पुं०)सत्पुरुष, भला आदमी अच्छे कुल का मनुष्य। **सज्जनता, सज्जनताई**-(हिं०स्त्री०) भलमनसी।
सज्जा-(सं०स्त्री०)वेषभूषा, सजावट। (हिं०स्त्री०) चारपाई, शय्या।
सज्जित-(सं०वि०)विभूषित,सजा हुआ
सज्ञान-(सं०वि०) ज्ञानयुक्त।
सञ्चय-(सं०पुं०) संग्रह, समूह, ढेर। **सञ्चयी**-(हिं०वि०) संचय करने वाला, कृपण, कंजूस।
सञ्चलन-(सं०नपुं०) हिलना, डोलना चलना, फिरना।
सञ्चार-(सं०पुं०) गमन, चलना, विस्तार।
सञ्चारक-(सं०पुं०) चलाने वाला।
सञ्चारण-(सं०नपुं०)प्रसारण, फैलाव,
सञ्चारित-(सं०वि०)फैलाया हुआ।
सञ्चालक-(सं०पुं०) गति देने या चलानेवाला। **सञ्चालन**-(सं०नपुं०) प्रतिपादन।
सञ्चित-(सं०वि०)संचय किया हुआ।
सञ्जल्प-(सं०पुं०)कथावार्ता,बातचीत।
सञ्जात-(सं०वि०) प्राप्त, उत्पन्न।
सञ्जीवनी-(सं०स्त्री०) जीवनदायिनी औषधि।
सटक-(हिं०स्त्री०) खिसकने का व्यापार, तमाखू पीने का लंबा नैचा, पतली लचकनेवाली छड़ी। **सटकना**-(हिं०क्रि०) धीरे से भाग जाना। **सटकाना**-(हिं०क्रि०) किसी को कोड़े, छड़ी आदिसे मारना। **सटकार**-(हिं०स्त्री०) सटकाने की क्रिया या भाव। **सटकारना**-(हिं०क्रि०) किसी लचीली वस्तु से किसी को मारना।
सटना-(हिं०क्रि०) मिलना, चिपकना।
सटपट-(हिं०स्त्री०)चकपकाहट, असमंजस, संकट, दुविधा।
सटरपटर-(हिं०वि०)अत्यन्त साधारण तुच्छ।
सटसट-(हिं०क्रि०वि०) अति शीघ्र, तुरत।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सटा-(सं०स्त्री०)जटा, शिखा, केशर।
सटान-(हिं०स्त्री०) मिलान। **सटाना**-(हिं०क्रि०) मिलाना, जोड़ना।
सटीक-(सं०वि०) टीका या व्याख्या सहित, (हिं०वि०) ठीक ठीक जैसा चाहिये वैसा।
सट्टा-(हिं०पुं०) किसी काम को निश्चित करने के लिये लिखा हुआ प्रतिज्ञापत्र।
सट्टी-(हिं०स्त्री०) वह हाट जिसमें फल, तरकारी आदि बिकती है।
सठ-(हिं०पुं०) देखो शठ, दुष्ट, पाजी। **सठता**-(हिं०स्त्री०) शठता, दुष्टता,।
सठियाना-(हिं०क्रि०) वृद्धावस्था के कारण विवेक तथा बुद्धि का कम होना
सड़क-(हिं०स्त्री०) राजमार्ग।
सड़न-(हिं०स्त्री०) सड़ने का भाव या क्रिया। **सड़ना**-(हिं०क्रि०) किसी पदार्थ में खमीर उठना या दुर्दशा में पड़ना।
सड़सठ-(हिं०वि०) साठ और सात की संख्या का, (पुं०) जो गिनती में साठ और सात हो ६७। **सड़सठवाँ**-(हिं०वि०) गिनती में सड़सठ के स्थान पर रहने वाला।
सड़सी-(हिं०स्त्री०) देखो सँड़सी।
सड़ा-(हिं०वि०)सड़ी हुई वस्तु संबंधी।
सड़ाइंध-(हिं०स्त्री०) सड़ाहट की दुर्गन्ध वाला।
सड़ाक-(हिं०पुं०) कोड़े आदि के फटकार का शब्द, शीघ्रता।
सड़ान-(हिं०स्त्री०) सड़ने की क्रिया।
सड़ाना-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना।
सड़ायँध-(हिं०स्त्री०) सड़ी हुई वस्तु की गन्ध।
सड़ाव-(हिं०पुं०) सड़ने की क्रिया या भाव।
सड़ियल-(हिं०वि०) सड़ा गला हुआ, तुच्छ, नीच।
सण्ड-(हिं०पुं०) षण्ड, साँड।
सत-(हिं०पुं०) सत्व किसी पदार्थ का मूल भाग सार तत्व सार भाग; **सतशक्ति**-(वि०) सात का संक्षिप्त रूप।
सतकार-(हिं०पुं०) देखो सत्कार।
सतगुरु-(हिं०पुं०) अच्छा गुरु, परमात्मा।
सतजुग-(हिं०पुं०) देखो सत्ययुग।
सतत-(सं०अव्य०) सर्वदा, निरन्तर
सतनज-(हिं० पुं०) सात प्रकार के अन्नों का मेल।
सतपुतिया-(हिं०स्त्री०)एक प्रकार की तरोई जो वर्षा ऋतु में होती है।
सतभाव-(हिं०पुं०) सर्जनता, सच्चाई
सतमासा-(हिं०पुं०) सात महीने पर उत्पन्न होने वाला बच्चा।
सतयुग-(हिं०पुं०) देखो सत्ययुग।
सतरंगा-(हिं०वि०)जिसमें सात रंग हों
सतरह-(हिं०पुं०) देखो सत्तरह।
सतर्क-(सं०वि०)तर्कयुक्त, सावधान।
सतलड़ा-(हिं०वि०) सात लड़ियों का हार।
सतवंती-(हिं०स्त्री०)सती,पतिव्रता स्त्री।
सतसंग-(हिं०पुं०) देखो सत्सङ्ग।
सतसई-(हिं०स्त्री०) सात सौ पद्यों का समूह।
सतहत्तर-(हिं०वि०) सत्तर और सात की संख्या का (पुं०) सत्तर और सात की संख्या ७७। **सतहत्तरवाँ**-(हिं० वि०) वह जो क्रम से सत्तहत्तर के स्थान पर हो।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सतालू-(हिं०पुं०) एक छोटा वृक्ष जिसके गोल फल खाये जाते हैं, आड़ू।
सतासी-(हिं०वि०) अस्सी और सात की संख्या ८७। **सतासीवाँ**-(हिं० वि०) जिसका स्थान अस्सी और सात पर पड़ता हो।
सती-(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री, वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता में जले।
सतुआ-(हिं० पुं०) सत्तू, **सतुआ-संक्रान्ति**-(हिं०पुं०) मेष संक्रान्ति
सतुष-(सं०वि०) भूसा सहित (अन्न)
सतृष्ण-(सं०वि०) पिपासित, प्यासा
सतेज-(हिं०वि०) तेजस्वी, बलवान।
सतोगुण-(हिं०पुं०) देखो सत्वगुण।
सत्कर्म-(सं०नपुं०)अच्छा कार्य, पुण्य।
सत्कवि-(सं०पुं०) श्रेष्ठ कवि, उत्तम कवि।
सत्कार-(सं० पुं०) आदर, सम्मान, पूजा, आतिथ्य।
सत्कार्य-(सं०नपुं०) सत्कर्म, अच्छा काम।
सत्कीर्ति-(सं०स्त्री०) उत्तम कीर्ति।
सत्कुल-(सं०नपुं०) उत्तम कुल।
सत्कृत-(सं०वि०) जिसका सत्कार किया गया हो। **सत्कृति**-(सं०स्त्री०) सत्कार।
सत्त-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का सार भाग, तत्व।
सत्तर-(हिं०वि०) साठ और दस की संख्या का, (पुं०) साठ और दस की संख्या ७०। **सत्तरहवाँ**-(हिं०वि०) जो क्रम से सत्तर के स्थान पर हो।
सत्ता-(सं० स्त्री०) विद्यमानता, अस्तित्व, प्रभुत्व, शक्ति, गुण।
सत्ता-(हिं०स्त्री०) ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमें सात बूटियाँ हों।
सत्ताईस-(हिं०वि०) बीस और सात की संख्या का, (पुं०)बीस और सात की संख्या २७। **सत्ताईसवाँ**-(हिं० वि०) जो क्रम से सत्ताइस के स्थान पर पड़ता हो।
सत्तानबे-(हिं०वि०) नब्बे और सात की संख्या का, (पुं०) नब्बे और सात की संख्या ९७।
सत्तावन-(हिं०वि०) पचास और सात की संख्या का, (पु०) पचास और सात की संख्या ५७। **सत्तावनवाँ**-(हिं०वि०) जो क्रम से सत्तावन के स्थान पर पड़ता हो।
सत्तासी-(हिं०वि०) अस्सी और सात की संख्या का,(पुं०)अस्सी और सात की संख्या ८७।
सत्तू-((हिं०वि०) सतुआ।
सत्पथ-(सं०पुं०) उत्तम मार्ग।
सत्पात्र-(सं०नपुं०) श्रेष्ठ, सदाचारी मनुष्य।
सत्पुत्र-(सं०पुं०) उत्तम सन्तान।
सत्पुरुष-(सं०पुं०) पूज्य पुरुष।
सत्य-(सं०नपुं०) यथार्थ, ठीक।
सत्यतः-(सं०अव्य०) वास्तव में, यथार्थ में, सचमुच। **सत्यता**-(सं० स्त्री०) सचाई। **सत्यनारायण**-(सं० पुं०) सत्यदेव, विष्णु।
सत्यप्रतिज्ञ-(सं०वि०)सत्यवादी, वचन का सच्चा। **सत्यभाषण**-(सं०नपुं०) सच बात कहना।
सत्ययुग-(सं०नपुं०) चार युगों में से पहिले युग का नाम। **सत्ययुगी**-(सं० वि०) सच्चरित्र, अति प्राचीन।
सत्यवादी-(सं०वि०) यथार्थ वक्ता।
सत्याग्रह-(सं०पुं०)किसी न्यायता पूर्ण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पक्ष के लिये निरन्तर शान्तिपूर्वक हठ करना।

सत्यानास-(हिं०पुं०) सर्वनाश, ध्वंस। **सत्यानासी**-(हिं०वि०) नाश करने वाला, अभागा।

सत्येतर-(सं०वि०) सत्य से भिन्न, झूठा

सत्र-(सं०नपुं०) यज्ञ, घर, वह स्थान जहाँ पर अनाथों को भोजन दिया जाता है।

सत्व-(सं०पुं०) अस्तित्व, सत्ता, तत्व, चैतन्य, प्राण।

सत्वर-(सं०अव्य०) शीघ्र, तुरत, झटपट।

संत्संग-(सं०पुं०) साधु सज्जन के साथ उठना बैठना।

सथिया-(हिं०पुं०) स्वस्तिक, एक मंगल सूचक चिह्न जो समकोण पर काटती हुई दो रेखाओं के रूप में बनता है।

सद-(हिं०अव्य०स्त्री०) तुरत, (वि०) नवीन, (स्त्री०) प्रकृति, अभ्यास।

सदई-(हिं०त्रय०) सर्वदा।

सदन-(सं०नपुं०) घर, स्थिरता।

सदना-(हिं०क्रि०) छेद में से रसना, चूना

सदय-(सं०वि०) दयालु, दया युक्त

सद्सत्-(सं०वि०) सच और झूठ।

सदस्य-(सं० पुं०) किसी सभा या समाज का सभासद्।

सदा-(सं०अव्य०) सर्वदा, निरन्तर।

सदाचरण-(सं०नपुं०) अच्छी चाल चलन।

सदाचार-(सं०पुं०) भलमनसी। **सदाचारी**-(सं०पुं०) धर्मात्मा, पुण्यात्मा।

सदातन-(सं०वि०) नित्य।

सदानन्द-(सं०वि०) सर्वदा प्रसन्न रहने वाला।

सदाबरत-(हिं०पुं०) देखो सदावर्त।

सदाबहार-(हिं०वि०) जो सर्वदा हरा बना रहे।

सदाभव-(सं०वि०) सदा रहने वाला।

सदावर्त-(सं० पुं०) वह भोजन जो दीन दुखियों को प्रतिदिन बाँटा जाय।

सदाशय-(सं०वि०) उच्च विचार का

सदाशिव-(सं०वि०) सर्वदा कल्याण करने वाला।

सदुपदेश-(सं०पुं०) उत्तम शिक्षा।

सदृश-(सं०वि०) तुल्य, अनुरूप, समान।

सदेह-(सं० क्रि० वि०) बिना शरीर त्यागे हुए।

सदैव-(सं०अव्य०) सर्वदा।

सदोष-(सं०वि०) दोष सहित, अपराधी।

सद्गति-(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मुक्ति, अच्छा व्यवहार।

सद्गुण-(सं०नपुं०) उत्तम गुण।

सद्गुरु-(सं०पुं०) अच्छा गुरु। परमेश्वर।

सद्ग्रन्थ-(सं०पुं०) अच्छा ग्रन्थ।

सद्द-(हिं०पुं०) देखो शब्द, (अव्य०) सद्यः, तुरत।

सद्भाव-(सं०पुं०) मैत्री, मेलजोल।

सद्म-(सं०नपुं०) पृथ्वी, घर।

सद्यः-(सं०अव्य०) अभी तुरत।

संद्वंश-(सं०पुं०) उत्तम वंश।

सद्विद्या-(सं० स्त्री०) ब्रह्मविद्या, ब्रह्मज्ञान।

सधना-(हिं० क्रि०) सिद्ध लक्ष्य, ठीक होना।

सधर्म-(सं०वि०) तुल्य. समान; **सधर्मचारिणी**-(सं०स्त्री०) भार्या; **सधर्मा, सधर्मी**-(सं०वि०) समान तुल्य।

सधवा-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, सुहागिन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन-(हिं०पुं०) एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशे से दृढ़ रस्सियाँ बनाई जाती हैं।
सनई-(हिं०स्त्री०) छोटी जाति का सन।
सनक-(हिं०स्त्री०) किसी बात की धुन, उन्माद; **सनकारना, सनकियाना**-(हिं०क्रि०) संकेत करना।
सनना-(हिं०क्रि०) जल के योग से किसी वस्तु के चूर्ण के कणों का परस्पर मिलना।
सननी-(हिं०स्त्री०) देखो सानी।
सनमान-(हिं०पुं०) सम्मान, प्रतिष्ठा;
सनमुख-(हिं०क्रि०वि०) देखो सन्मुख।
सनसनाना-(हिं०क्रि०) हवा के वेग से शब्द होना, खौलते हुए पानी का शब्द होना; **सनसनाहट** (हिं०पुं०) वायु का शब्द; **सनसनी**-(हिं०स्त्री०) उद्वेग, खलबली।
सनसय-(हिं०पुं०) देखो संशय, सन्देह।
सनातन-(सं० पुं०) प्राचीन काल से आता हुआ क्रम, (वि०) परम्परागत
सनातनी-(हिं०पुं०) सनातन धर्म का अनुयायी।
सनाथ-(सं०वि०) जिसकी रक्षा करने वाला कोई स्वामी हो।
सनाभ (सं०पुं०) सहोदर भाई।
सनाम-(सं०वि०) एक नाम का।
सनाह-(हिं०पुं०) कवच।
सनित-(हिं०वि०) सना हुआ।
सनिद्र-(सं०वि०) निद्रा युक्त।
सनीचर-(हिं०पुं०) देखो शनैश्चर।
सनेह-(हिं०पुं०) देखो स्नेह, प्रेम।
सनेही-(हिं०वि०) प्रेमी।
सन्त-(सं०पुं०) साधु, सन्यासी, महात्मा
सन्तति-(सं०स्त्री०) सन्तान, बाल बच्चे, विस्तार, फैलाव।
सन्तप्त-(सं०वि०) जला हुआ, दुःखी, पीड़ित।
सन्तान-(सं०पुं०) बाल बच्चे, वंश, कुल।
सन्ताप-(सं०पुं०) जलन, कष्ट, दुःख।
सन्तापी-(सं० पुं०) दुःख या सन्ताप देने वाला।
सन्तुष्ट-(सं०वि०) जिसकी तृप्ति हो गई हो।
सन्तोष-(सं०पुं०) शान्ति, तृप्ति, प्रसन्नता, हर्ष।
सन्तोषी-(सं०वि०) सन्तुष्ट।
सन्दर्भ-(सं०पुं०) प्रबन्ध, संग्रह, विस्तार परम्परान्वित रचना।
सन्दिग्ध-(सं०वि०) सन्देह युक्त।
सन्दिग्धार्थ-(सं० पुं०) वह अर्थ जिसमें सन्देह हो।
सन्दीपन-(सं०नपुं०) उद्दीप्त करने की क्रिया। **सन्दीपित**-(वि०सं०) प्रज्वलित, जलाया हुआ।
सन्देश-(सं०पुं०) सम्वाद, समाचार, एक प्रकार की बंगला मिठाई।
सन्देसा-(हिं०पुं०) समाचार।
सन्देह-(सं०पुं०) संशय, द्विधाभाव।
सन्धान-(सं० नपुं०) संघटन-अन्वेषण, खोज, सन्धि, मेल।
पन्धान-(सं०नपुं०) संघटन, अन्वेषण। खोज, सन्धि, मेल।
सन्धि-(सं०पुं०) आपस का मिलना। एक राजा का दूसरे विपक्ष राजा के साथ विशेष नियम से आबद्ध होकर मिलना, शरीर की हड्डियों का जोड़, संयोग, व्याकरण में दो वर्णों का मिला
सन्धिभंग-(सं०पुं०) शरीर के किसीन जोड़ का टूटना।
सन्धिवेला-(सं०स्त्री०) सन्ध्या का समय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन्ध्या-(सं०स्त्री०) दिन और रात के टिकने का समय, संझा। **सन्ध्याकाल**-(सं०पुं०) सन्ध्योपासन करने का समय।

सन्न-(सं०वि०) स्तम्भित, भौचक।

सन्नद्ध-(सं०वि०) बँधा हुआ, कसा हुआ।

सन्नाटा-(हिं०पुं०) निःशब्दता, एकान्तता।

सन्निकट-(सं० अव्य०) समीप, पास।

सन्निकर्ष-(सं०पुं०) समीपता।

सन्निधान-(सं०वि०) निकटता, समीपता।

सन्निधि-(सं०स्त्री०) समीपता, निकटता।

सन्निपात-((सं०पुं०) समूह, संयोग, युद्ध, नाश, वात, पित्त, कफ का एक साथ बिगड़ना।

सन्निबद्ध-(सं०वि०) एक साथ जकड़ा हुआ।

सन्निमग्न-(सं०वि०) खूब डूबा हुआ।

सन्निविष्ट-(सं०वि०) उपस्थित, पास का, लगा हुआ, रक्खा हुआ, आया हुआ।

सन्निवेश-(सं०पुं०) व्यवस्था, योजना, समाज, समूह,

सन्निहित-(सं०वि०) समीप का, निकट का।

सन्मान-(हिं०पुं०) देखो सम्मान।

सन्यस्त-(सं०वि०) समर्पित।

सन्मुख-(हि०अव्य०) रेखा सम्मुख।

सन्यास-(सं०पुं०) चतुर्थ आश्रम, संसार के प्रपंच से अलग होने की अवस्था, त्याग।

सन्यासी-(हिं०पुं०) जिसने सन्यास ग्रहण किया हो, वैरागी, त्यागी।

सपक्ष-(सं०वि०) तुल्य, समान, समर्थक, अनुकूल।

सपक्षत-(सं०स्त्री०) अनुकूलता।

सपत्नी-(सं०स्त्री०) सौत। **सपथ**-(हिं० स्त्री०) सौगन्ध।

सपदि-(सं०अव्य०) तुरत, शीघ्र।

सपना-(हिं०पुं०) स्वप्न।

सपरना-(हिं०क्रि०) निवटना, तैयार होना।

सपराना-(हिं०क्रि०) काम पूरा करना।

सपरिकर-(सं०वि०) अनुचर वर्ग के साथ।

सपर्या-(सं०स्त्री०) आराधना, उपासना।

सपाट-(हिं०वि०) समतल, चिकना।

सपाटा-(हिं०पुं०) दौड़ने या चलने का वेग, झोंक, झपट।

सपाद (सं०वि०) पादयुक्त, जिसमें एक का चौथाई मिला हो।

सपिण्ड (सं०पुं०) सात पुरुष तक की ज्ञाति।

सपूत-(हिं०पुं०) अच्छा पुत्र।

सपूती-(हिं०स्त्री०) योग्य पुत्र उत्पन्न करने वाली माता।

सपेद-(हिं०वि०) श्वेत।

सपेरा-(हिं०पुं०) देखो सँपेरा।

सपोला-(हिं०पुं०) साँप का छोटा बच्चा

सप्त-(सं०वि०) वह जो गिनती में सात हो। **सप्तक**-(सं०वि०) सातवाँ, जिसमें सात की संख्या हो।

सप्तजिह्व-(सं०पुं०) अग्नि।

सप्तम-(सं०वि०) सातवाँ।

सप्तमी-(सं०स्त्री०) शुक्ल या कृष्ण पक्ष की सातवीं तिथि।

सप्तर्षि-(सं०पुं०) ब्रह्मा के सात मानस पुत्र जो ऋषि थे।

सप्तशती-(सं०स्त्री०) सात सौ श्लोकों का देवी महात्म्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सप्ताह-(सं०पुं०) सात दिनों का काल
सप्रभाव-(सं०वि०) तेजस्वी, पराक्रमी।
सप्रमाण-(सं०वि०) प्रामाणिक।
सफल-(सं०वि०) सार्थक, कृतकार्य।
सफलता-(सं०स्त्री०) पूर्णता, सिद्धि।
सफलीभूत-(सं०वि०) जो सिद्ध या पूरा हुआ हो।
सफाचट-(हिं०वि०) एकदम स्वच्छ, उखाड़ कर अलग किया हुआ, जो बिलकुल चिकना हो।
सब-(हिं०वि०) समस्त, जितने हों वे कुल, पूरा।
सबद-(हिं०पुं०) देखो शब्द।
सबल-(सं०वि०) बलवान, सैन्य युक्त।
सबेरा-(हिं०पुं०) प्रातःकाल।
सभर्तृका-(सं०स्त्री०) सधवा।
सभा-(सं०स्त्री०) वह स्थान जहाँ पर बहुत से लोग बैठ कर किसी बात पर परामर्श करते हैं, परिषद्, समिति,
सभापति-(सं०पुं०) सभा या समाज का नेता।
सभासद-(सं०पुं०) वह जो किसी सभा से सम्मिलित हो।
सभ्य-(सं०पुं०) समासद, सदस्य, वह जिसका आचरण अच्छा हो, (वि०) सभा संबंधी।
सभ्यता-(सं०स्त्री०) भलमनसी, सज्जनता।
सम-(सं०वि०) कुल, समान, तुल्य, बराबर, समतल, जूस संख्या, (पुं०) गणित में वह सीधी रेखा जो उस अंक पर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है।
समकोण-(सं०वि०) रेखागणित में वह आकृति जिसके आमने सामने के कोण बराबर हों।
समक्ष-(सं०अव्य०) सम्मुख, सामने।
समग्र-(सं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा,।
सम चतुष्कोण-(सं०पुं०) वह चतुर्भुज जिसके चारों भुज समान हों।
समचर-(सं०वि०) समान आचरण वाला।
समचित-(सं०नपुं०) वह जिसका चित्त सब अवस्था में समान रहता हो।
समजातीय-(सं०वि०) एक ही जाति का
समञ्जस-(सं०वि०) उचित, ठीक।
समझ-(हिं०पुं०) ज्ञान, बुद्धि।
समझदार-(हिं०वि०) बुद्धिमान।
समझना-(हिं०क्रि०) किसी बात को अच्छी तरह ध्यान में लाना। **समझाना**-(हिं०क्रि०) दूसरे को समझने में प्रवृत्त करना। **समझौता**-(हिं०पुं०) आपस का निवटारा।
समतल-(सं०वि०) जिसका तल बिलकुल बराबर हो।
समता-(सं०स्त्री०) बराबरी।
सम त्रिभुज-(सं०पुं०) वह त्रिभुज जिसके तीनों भुज बराबर हों।
समद-(सं०वि०) अभिमानी।
सम द्विभुज-(सं०वि०) दो समान भुज वाला, त्रिभुज।
समधियाना-(हिं०पुं०) समधी का घर।
समधी-(हिं०पुं०) पुत्र या कन्या का ससुर।
समन्त-(सं०पुं०) सीमा प्रान्त, किनारा
समन्वय-(सं०पुं०) संयोग, मिलाप।
समन्वित-(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ।
सम भाग-(सं०पुं०) समान भाग।
समय-(सं०पुं०) काल, अवसर, अवकाश, अन्तिम काल।
समया-(सं०स्त्री०) निकट, समीप, पास

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समर-(सं०पुं०) युद्ध, संग्राम, लड़ाई।
समरजित्-(सं०पुं०) युद्ध में जीतने वाला।
समरथ-(हिं०वि०) देखो समर्थ।
समरपोत-(सं०नपुं०) लड़ाई का जहाज
समरभू, समरभूमि-(सं०स्त्री०) लड़ाई का मैदान।
समरांगण-(सं०नपुं०)युद्ध स्थल, समर भूमि।
समर्घ-(सं०वि०) कम मूल्य का, सस्ता
समर्थ-(सं०वि०) बलवान, योग्य, अनुकूल। **समर्थक**-(सं०पुं०) समर्थन करने वाला। **समर्थन**-(सं०नपुं०)किसी किसी मत का पोषण, विवेचन। **समर्थनीय**-(सं०वि०) समर्थन करने योग्य। **समर्थित**-(सं०वि०) स्थिर-किया हुआ।
समर्पक-(सं०वि०) समर्पण करने वाला
समर्पण-(सं०नपुं०) किसी को कोई वस्तु आदरपूर्वक भेंट करना।
समर्पित-(सं०वि०)समर्पण किया हुआ।
समवृत्त-(सं०वि०) समा,नगोल, समान गोलाई का।
समवेक्षण-(सं०नपुं०) भली भांति देखना।
समवेदना-(हिं०स्त्री०) सहानुभूति।
समशीतोष्ण कटिबन्ध-(सं०पुं०)पृथ्वी के वे भाग जो ऊष्ण कटिबन्ध के उत्तर में कर्क रेखा से उत्तर वृत्त तक और दक्षिण मकर रेखासे दक्षिण वृत्त तक पड़ते हैं-इन स्थानों में न तो बहुत सरदी पड़ती है और न बहुत गरमी।
समष्टि-(सं०स्त्री०) सब का समूह।
समसंख्यात-(सं०वि०) समान अंक वाला।
समस्त-(सं०वि०) समग्र, कुल।
समस्या-(सं०स्त्री०) किसी श्लोक या छन्द आदि का वह अन्तिम पद जो श्लोक या छन्द बनाने के लिये किसी को दिया जाता है जिसके आधार पर पूरा श्लोक या छन्द बनाया जाता है, संघटन, मिश्रण।
समाई-(हिं०स्त्री०) शक्ति।
समाक्रान्त-(सं०वि०) व्याप्त, फैला हुआ।
समागत-(सं० वि०) उपस्थित, मिलित।
समागम-(सं०पुं०) आगमन भेंट।
समागमन-(सं०नपुं०) आना, पहुँचना
समाघात-(हिं०पुं०) युद्ध, लड़ाई, धच
समाचार-(सं०पुं०) संवाद।
समाचार पत्र-(सं०पुं०) समाचार का पत्र।
समाज-(सं०पुं०) संघ, सभा, समुदाय, **समाजवाद**-साम्यवाद।
समाधान-(सं०नपुं०) चित्त को एकाग्र करके ब्रह्म की ओर लगाना, किसी प्रश्न का सन्तोषकारक उत्तर, निष्पत्ति, निबटारा, समर्थन।
समाधि-(सं०पुं०)समर्थन, नियम, योग ध्यान, एकाग्रता।
समाधिक्षेत्र-(सं०नपुं०) कब्रिस्तान।
समान-(सं०वि०) सम, तुल्य, बराबर, गर्व सहित, शरीरस्थ वायु, विशेष,
समानतः-(सं०अव्य०)समान भाव में।
समानता-(सं०स्त्री०) तुल्यत्व।
समाना-(हिं०क्रि०)भरना, अँटना।
समानाधिकरण (सं०नपुं०) व्याकरण में वह शब्द या वाक्यांश जो वाँक्य में किसी समानार्थी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये आता है।
समानार्थ (सं०वि०) तुल्य अर्थवाला

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समानीत-(सं०वि०) आदर या यत्न-पूर्वक लाया हुआ।
समानोदक-(सं०पुं०) जिसकी ग्यारहवीं से चौहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।
समान्तक-(सं०पुं०) दो सरल रेखाजो बहुत दूर तक जाकर भी एक दूसरे से न मिलें।
समापक-(सं०वि०) समाप्त करनेवाला
समापिका-(सं०स्त्री०) व्याकरण में वह क्रिया जिससे किसी कार्य का समाप्त होना सूचित होता है।
समापित-(सं०वि०) समाप्त किया हुआ
समाप्त (सं०वि०) जिसका अन्त हो गया हो। **समाप्ति**-(सं०स्त्री०) अवसान, अन्त।
समारम्भ-(सं०पुं०) आरम्भ।
समारोह-(सं०पुं०) धूमधाम, आडम्बर, आरोहण होना।
समालोचक-(सं०वि०) किसी वस्तु के गुण दोषको देखकर बतलाने वाला। **समालोचन**-(सं०नपुं०) गुण दोष की अच्छी तरह से आलोचना। **समालोचना**-(सं०स्त्री०) गुण दोष की विवेचना, आलोचना। **समालोची**-(सं०वि०) समालोचना करनेवाला।
समावर्तन-(सं०नपुं०) वेदाध्ययन के वाद गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का कार्य।
समावेश-(सं०पुं०) एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ के अन्तर्गत होना।
समाश्रय-(सं०पुं०) अवलम्बन, रक्षा।
समाश्वासन-(सं०नपुं०) आश्वासन, धीरज। **समास** (सं०पुं०) संग्रह, संक्षेप, समर्थन, व्याकरण में दो या अधिक पदो को मिलाकर एक पद बनाना।
समासादित-(सं०हि०) प्राप्त, पाया हुआ, लाया हुआ, उद्धृत, लिखा हुआ।
समासीन-(हिं०वि०) प्रतिष्ठित।
समासोक्त-(सं०वि०) संक्षेप रूप से कहा हुआ।
समाहत-(सं०वि०) आहत।
समाहार-(सं०पुं०) संग्रह, मिलान, समास का एक भेद। **समाहार द्वन्द्व**-(सं०पुं०) द्वन्द्व समाम का वह भेद जिसमें उसके पदों के अर्थ के सिवाय कोई विशेष अर्थ भी सूचित होता है, जैसे दाल रोटी, हाथ पाँव इत्यादि।
समाहृत-(सं०वि०) संग्रह किया हुआ।
समिति-(सं०स्त्री०) सभा, समाज।
समिता-(सं०वि०) प्रदीप्त, जलाहुआ।
समिधा-(हिं०स्त्री०) अग्नि जलाने का काठ, इन्धन, यज्ञ में जलाने की लकड़ी
समीकरण-(सं०नपुं०) तुल्य या बराबर करने की क्रिया, गणित में वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से किसी अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।
समीकृत-(सं०वि०) बराबर किया हुआ।
समीक्ष, समीक्षण-(सं०नपुं०) अच्छी तरह देखने की क्रिया, अन्वेषण।
समीक्षा-(सं०स्त्री०) यत्न, अच्छी तरह से देखने की क्रिया।
समीचीन-(सं०वि०) यथार्थ, ठीक, उचित।
समीप-(सं०वि०) निकट, पास।
समीपग-(सं०वि०) जो समीप हो गया हो।
समीपता-(-सं०स्त्री०) निकटता।
समीपवर्ती-(सं०त्रि०) निकटगामी। पास का; **समीपस्थ**-(सं० वि०) पास का।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समीर-(सं०पुं०) वायु, हवा।
समीरण-(सं०पुं०) वायु, हवा, पथिक
समुंदर-(हिं०पुं०) समुद्र।
समुचित-(सं०वि०) उचित, योग्य, ठीक।
समुचय-(सं०पुं०) समाहार, समूह।
समुझ-(हिं०स्त्री०) बुद्धि।
समुत्कीर्ण-(सं०वि०) विदीर्ण, टूटा हुआ।
समुत्तर-(सं०नपुं०) ठीक उत्तर।
समुत्थान-(सं०पुं०) आरंभ, उदय, उत्पत्ति। **समुत्थित**-(सं०वि०) अच्छी तरह उठा हुआ।
समुत्पन्न-(सं०वि०) घटित, उत्पन्न।
समुत्पाटित-(सं०वि०) जड़ से उखाड़ा हुआ।
समुदाय-(सं०पुं०) समूह, ढेर, झुंड।
समुदाव-(हिं०पुं०) समुदाय।
समुदित-(सं०वि०) उठा हुआ, उन्नत
समुदीरित-(सं०वि०) उच्चारण किया हुआ।
समुद्धत-(हिं०वि०) चंचल।
समुद्यत-(हिं०वि०) प्रस्तुत।
समुद्र-(सं०पुं०) जल का बड़ा समूह, अम्बुधि, सागर।
समुन्नत-(सं०वि०) अति उन्नत, बहुत ऊँचा। **समुन्नति**-(सं०स्त्री०) महत्व, बड़ाई।
समुन्नद्ध-(सं०वि०) गर्वित, अभिमानी
समुन्नयन-(सं०नपुं०) लाभ, प्राप्ति।
समुन्मूलन-(सं०नपुं०) पूर्ण रूप से नाश
समुपालम्भ (सं०पुं०) तिरस्कार।
समुल्लसित-(सं०वि०) आनन्दित।
समुल्लास-(सं०पुं०) आनन्द, प्रसन्नता ग्रन्थ का प्रकरण या परिच्छेद।
समुल्लेखन-(सं०पुं०) खनन, खोदना, छिलना।
समुहा-(हिं०वि०) सामने का।
समुहाना-(हिं०क्रि०) सामने आ जाना।
समूल-(सं०पुं०) मूलयुक्त, जड़ वाला, जिसका कोई हेतु हो। (क्रि०वि०) मूल सहित।
समूह-(सं०पुं०) समुदाय, ढेर।
समृद्ध-(सं०वि०) जिसके पास अधिक हो।
समृद्धि-(सं०स्त्री०) ऐश्वर्य, उन्नति, सम्पत्ति।
समेटना-(हिं०क्रि०) बिखरी हुई वस्तु को इकट्ठा करना।
समेत-(सं०वि०) संयुक्त, मिला हुआ (अव्य०) सहित, साथ।
समोह-(सं०पुं०) संग्राम, युद्ध (वि०) मोह युक्त।
समौरिया-(हिं० वि०) समवयस्क।
सम्पत्ति-(सं०स्त्री०) ऐश्वर्य, धन।
सम्पद्-(सं०स्त्री०) सम्पत्ति, ऐश्वर्य विभव।
सम्पदा-(हिं०स्त्री०) धन, ऐश्वर्य।
सम्पन्न-(सं०वि०) साधित, पूरा किया हुआ।
सम्पर्क-(सं०पुं०) मिश्रण, संयोग, मिलाप, संसर्ग।
सम्पात-(सं०पुं०) प्रवेश, संगम।
सम्पादक-(सं०पुं०) किसी काम को पूरा करने वाला, किसी समाचर पत्र या पुस्तक को क्रम से लिखने वाला
सम्पादकीय-(सं०वि०) सम्पादक संबंधी।
सम्पादन-(सं०नपुं०) ठीक करना, पुस्तक आदि को प्रकाशित करना।
सम्पादनीय-(सं० वि०) सम्पादन करने योग्य। **सम्पादित**-(सं०वि०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रस्तुत, क्रम, पाठ आदि लगाकर ठीक किया हुआ।

सम्पाद्य-(सं०क्रि०) सम्पादन करने योग्य, ज्यामिति शास्त्र की उद्देश साधक प्रतिज्ञा।

सम्पुट-(सं०पुं०) दोना, डिब्बा, अंजली

सम्पूर्ण-(सं०वि०) पूर्ण रूप से युक्त।

सम्पूर्णता-(सं० स्त्री०) समाप्ति।

सम्प्रति-(सं०अव्य०) इस समय, अभी।

सम्प्रदान-(सं०नपुं०) देने की क्रिया या भाव, भेंट, व्याकरण में चतुर्थी विभक्ति जिसका हिन्दी में चिह्न 'को' 'के लिये' होता है।

सम्प्रदाय-(सं०पुं०) कोई विशेष धर्म संबंधी मत, मार्ग पंथ, रीति। **सम्प्रदायी**-(हिं०वि०) मतावलम्बी।

सम्प्राप्त-(सं०वि०) पाया हुआ, उपस्थित, पहुँचा हुआ।

सम्बद्ध-(सं०वि०) बंधा हुआ, जुटा हुआ।

सम्बन्ध-(सं०पुं०) संसर्ग, संपर्क, लगाव, नाता, संयोग, मेल योग्यता, व्याकरण में वह कारक जिसके चिह्न "का, की के हैं।

सम्बन्धी-(सं०पुं०) नातेदार।

सम्बुद्ध-(सं०वि०) ज्ञान प्राप्त, पूर्ण रूप से जाना हुआ।

सम्बोध-(सं०पुं०) ज्ञान, पूरा बोध।

सम्बोधन-(सं०पुं०) नींद से उठाना, जगाना, समझाना व्याकरण में वह कारक जो किसी को पुकारने के लिये प्रयोग किया जाता है। व्याकरण में वह कारक जिससे शब्द के किसी को पुकारने के लिये प्रयोग किया जाता है।

सम्भव-(सं०पुं०) हेतु, कारण, जन्म, उत्पत्ति, प्रसंग, संभावना, संकेत।

सम्भावतः-(सं०अव्य०) हो सकता है। **सम्भवनीय** (सं०वि०) जो हो सकता हो। **सम्भावनीय**-(सं०वि०) कल्पना के योग्य; **सम्भावित**-(सं०वि०) मन में लाया या उपस्थित किया हुआ।

सम्भाषण-(सं०नपुं०) बातचीत।

सम्भाषणीय-(सं०वि०) संभाषण करने योग्य।

सम्भूत-(सं०वि०) उत्पन्न।

सम्भूति-(सं०स्त्री०) क्षमता, शक्ति।

सम्भृत-(सं०वि०) हृष्ट पुष्ट, पाया हुआ।

सम्भोग-(सं०पुं०) किसीवस्तु का भली भाँति उपयोग।

सम्भोजन-(सं०नपुं०) एक साथ बैठ कर भोजन।

सम्भ्रम-(सं०पुं०) व्याकुलता, भ्रान्ति, भूल, आतुरता, उत्कण्ठा।

सम्भ्रान्त-(सं०वि०) उद्विग्न, घबड़ाया हुआ, चक्कर दिया हुआ। **सम्भ्रान्ति**-(सं०स्त्री०) उद्वेग, घबड़ाहट।

सम्मत-(सं०वि०) अभिमत, जिसकी राय मिली हो।

सम्मति-(सं०स्त्री०) इच्छा, अनुमति, आज्ञा, आदेश।

सम्मान-(सं०पुं०) प्रतिष्ठा, मान, (नपुं०)। सम्मानना-(हिं०क्रि०) आदर सत्कार करना। **सम्माननीय**-(सं०वि०) आदर के योग्य। **सम्मानित**-(सं०वि०) आदर किया हुआ।

सम्मार्जिनी-(सं०स्त्री०) झाड़ू, बुहारी

सम्मिलन-(सं०नपुं०) मिलन, मिलाप

सम्मिलित-(सं०वि०) युक्त, मिला हुआ

सम्मिश्रण-(सं०पुं०) मिलावट।

सम्मुख-(सं०वि०) आगे, सामने।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्मेलन-(सं०नपुं०) मनुष्यों का एकत्रित समाज, जमघट, मेल।
सम्मोह-(सं०पुं०) भ्रम, सन्देह, मूर्छा।
सम्मोहक-(सं०क्रि०) लुभाने वाला
सम्मोहन-(सं०नपुं०) मोहित करने की क्रिया।
सब-(हिं०वि०) सब प्रकार से, भली भाँति।
सम्यकज्ञान-(सं०नपुं०) पूरा ज्ञान।
सम्राट्-(सं०पुं०) राजाधिराज।
सयत्न-(सं०वि०) यत्न सहित।
सयानपन-(हिं०पुं०) चतुराई, दक्षता।
सयाना-(हिं०वि०) अधिक वय का, बुद्धिमान्, धूर्त।
सर-(सं०नपुं०) सरोवर, तालाब।
सरई-(हिं०स्त्री०) सरहरी।
सरकंडा-(हिं०पुं०) सरपत।
सरक-(हिं०पुं०) सरकने की क्रिया, (वि०) गति युक्त; **सरकना**-(हिं० क्रि०) खिसकना, निर्वाह होना, किसी ओर बढ़ना।
सरग-(सं०पुं०) देखो स्वर्ग।
सरगम-(हिं०पुं०) स्वर ग्राम, संगीत, सातों स्वरों के उतार चढ़ाव का क्रम।
सरधर-(हिं०पुं०) तरकश, तूणीर।
सरजना-(हिं०क्रि०) सृष्टि करना, बनाना
सरजीवन-(हिं०वि०) जिलाने वाला,
सरण-(सं०नपुं०) गमन, आगे बढ़ना
सरणि-सरणी-(सं०स्त्री०) पंक्ति, पग-डंडी, लकीर।
सरताज-(हिं०पुं०) श्रेष्ठ व्यक्ति।
सरन-(हिं०स्त्री०) देखो शरण।
सरन-(हिं०क्रि०) सम्पादित होना, हिलना डोलना।
सरनी-(हिं०स्त्री०) मार्ग।
सरन्ध्र-(सं०वि०) छिद्र सहित, छेददार
सरपट-(हिं०वि०) घोड़े की बहुत वेग से चलने की चाल या दौड़।
सरपत-(हिं०पुं०) कुश की तरह की एक घास।
सरबंधी-(हिं०पुं०) धनुर्धारी, देखो सम्बन्धी।
सरब-(हिं०वि०) देखो सर्व।
सरबदा-देखो सर्वदा।
सरवत्तर-देखो सर्वत्र।
सरबस-(हिं०पुं०) देखो सर्वस्व।
सरराना-(हिं०क्रि०) हवा बहने या हवा में किसी वस्तु के वेग से चलनेका शब्द।
सरल-(सं०वि०) सीधा, सहज, कपट रहित।
सरलता-(सं०स्त्री०) सिधाई, सीधापन, सुगमता। **सरलित**-(सं०वि०) सीधा किया हुआ।
सरवर-(हिं०पुं०) देखो सरोवर, तालाब
सरवरि-(हिं०स्त्री०) बराबरी, सादृश्य।
सरवाक-(हिं०पुं०) दीया, कसोरा।
सरिवान-(हिं०पुं०) तंबू।
सरस-(सं०वि०) रस युक्त, रसीला, स्वादिष्ट, मधुर, नया, मनोहर, सुन्दर,
सरसई-(हिं०स्त्री०) हरापन, सरसता।
सरसठ-(हिं०पुं०) देखो सड़सठ।
सरसता-(सं०स्त्री०) रसयुक्तता।
सरसना-(हिं०क्रि०) बढ़ना, पनपना।
सरसर-(हिं०पुं०) भूमि पर रेंगनेका शब्द; **सरसराना**-(हिं०क्रि०) वायुका वेग से चलना; **सरसराहट**-(हिं०स्त्री०) साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न शब्द, वायु के बहने का शब्द, खुजली।
सरसाई-(हिं०स्त्री०) सरसता, अधिकता; **सरसारना**-(हिं०क्रि०) रसपूर्ण करना, हराभरा करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरसिज-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
सरसेटना-(हिं०क्रि०) भला बुरा कहना
सरसों-(हिं०स्त्री०) सर्षप, एक धान्य, जिसके छोटे गोल बीजों का तेल निकाला जाता है।
सरसोंहां-(हिं०वि०) सरस बनाया हुआ
सरहज-(हिं०स्त्री०) साले की स्त्री।
सरहरा-(हिं०वि०) सीधा, फिसलने वाला।
सरहरी-(हिं०स्त्री०) सरपत की जाति का एक पौधा।
सराई-(हिं०स्त्री०) शलाका, सलाई।
सराध-(हिं०पुं०) देखो श्राद्ध।
सराना-(हिं० क्रि०) किसी काम को पूरा करना।
सराप-(हिं०पुं०) देखो शाप।
सरापना-(हिं०क्रि०) शाप देना।
सराफ-(हिं०पुं०) रुपये पैसे या सोने चांदी का लेन देन करने वाला महाजन,। **सराफा**-(हिं०पुं०) सराफों का हाट।
सराबोर-(हिं०वि०) भींगा हुआ।
सराव-(सं०पुं०) पीने का पात्र, कसोरा
सराह-(ह०स्त्री०) श्लाघा, प्रशंसा। **सराहना**-(हिं०क्रि०) प्रशंसा करना। **सराहनीय**-(हिं०वि०) प्रशंसा करने योग्य।
सरि-(हिं०स्त्री०)सरिता, नदी, समता (वि०) सदृश, समान।
सरित, सरिता-(सं०स्त्री०) जल की धारा, नदी।
सरित्पति-(सं०पुं०) समुद्र।
सरियाना-(हिं०क्रि०) बिखरी हुई वस्तुओं को ढंग से समेटना।
सरिल-(सं०नपुं०) देखो सलिल,जल।
सरिवरि-(हिं०स्त्री०) समता, बराबरी
सरिस-(हिं०वि०) देखो सदृश, समान।
सरिसता-(हिं०स्त्री०) भाग।
सरीखा-(हिं०वि०)तुल्य,सदृश, समान।
सरीफा-(हिं०पुं०) श्रीफल।
सरीर-(हिं०पुं०) देखो शरीर, देह।
सरीसृप-(सं०पुं०) साँप।
सरुज्-(सं०वि०) रोयुक्त, रोगी।
सरुष-(सं०वि०) क्रोधयुक्त, कुपित।
सरूहना-(हिं०क्रि०) अच्छा होना।
सरूप-(सं०वि०)सदृश, समान आकार वाला। **सरूपता**-(सं०स्त्री०) समानता (हिं०पुं०) देखो स्वरूप।
सरेख-(हिं०वि०) बुद्धिमान, श्रेष्ठ।
सरेखना-(हिं०क्रि०) देखो सहेजना।
सरेफ-(सं०वि०) रेफ युक्त।
सरो-(हिं०पुं०) एक सीधा वृक्ष जो बगीचों में शोभा के लिये बोया जाता है, बनझाऊ।
सरोग-(सं०वि०) रोग युक्त, रोगी।
सरोज-(सं०नपुं०)पद्म्, कमल।
सरोजिनी-(सं०स्त्री०) पद्म्, कमल।
सरोरुह-(सं०नपुं०) पद्म, कमल।
सरोवर-(सं०नपुं०) तालाब, झील।
सरोष-(सं०वि०) रोष युक्त, कुपित।
सरौता-(हिं०पुं०) संडसी के आकार का सुपारी काटने का एक यंत्र।
सर्ग-(सं०पुं०) आज्ञा, प्रकृति, स्वभाव, परिच्छेद, उत्साह, मूर्छा, परित्याग, प्रयत्न, गति, सन्तति।
सर्जन-(सं०नपुं०) विसर्जन, त्याग।
सर्प-(सं०पुं०) साँप। **सर्पगति**-(सं० स्त्री०) कुटिल गति। **सर्पिणी**-(सं० स्त्री०) साँपिनी।
सर्पी-(हिं०वि०)धीरे धीरे चलने वाला।
सर्पिस-(सं०नपुं०) हवि, घृत।
सर्वस-(हिं०वि०) देखो सर्वस्व।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्व-(सं०पुं०) शिव, महादेव, (सं० वि०) सम्पूर्ण, समग्र, सब।

सर्वसह-(सं०वि०) सब प्रकार का क्लेश हरने वाला।

सवहर-(सं०वि०) सब कुछ हरण करने वाला।

सर्वगत-(सं०वि०) सर्वव्यापी। जिसमें उनका संपूर्ण मण्डल छिप जाता है।

सर्वजन-(०पुं०) सबलोग; **सर्वजनता** (सं०स्त्री०) सामान्य, लोग; **सर्वजन प्रिय**-(सं०वि०) सबका प्रिय; **सर्वजनीन** (सं०वि०) सर्वजन संबंधी; **सर्वजित्**-(सं०पुं०) काल, मृत्यु।

सर्वज्ञ-(सं०पुं०) शिव, विष्णु, सबकुछ जानने वाला; ईश्वर, देवता। **सर्वज्ञानी**-(सं०पुं०) सब कुछ जानने वाला

सर्वतन्त्र-(सं०वि०) जिसको सब शास्त्र मालूम हों।

सर्वत्र-(सं०अव्य०) सब ओर, चारो ओर, पूर्ण रूप से।

सर्वतोमुख-(सं०पुं०) जल, आकाश, (वि०) जिसका मुख चारो ओर व्यापक हो।

सर्व-(सं० अव्य०) सब जगह, हरएक स्थान में; **सर्व गामी**-(सं० वि०) व्यापक।

सर्वथा-(सं०अव्य०) सब प्रकार से, **सर्वदर्शी**-(सं०पुं०) सब कुछ देखने वाला, परमेश्वर।

सर्वदा-(सं०अव्य०) सब काल में।

सर्वनाम-(सं०पुं०) सबका नाम या संज्ञा, व्याकरण में वह शब्द जो संज्ञा के स्थान में प्रयोग किया जाता है, यथा मैं, तू, वह।

सर्वनाश-(सं०पुं०) सत्यानाश।

सर्वनाशी-(सं०वि०) सब का नाश करने वाला।

सर्वनिधान-(सं०पुं०) सब का नाश या वध; **सर्वनियन्ता**-(सं०त्रि०) सब को वश में करने वाला; ।

सर्वप्रद-(सं०वि०) सब कुछ देने वाला

सर्वप्रिय-(सं०वि०) सब का प्यारा,

सर्वभक्ष, सर्वभक्षी-(सं०वि०) सब कुछ खाने वाला; **सर्वभूतहित**-(सं०पुं०) सब प्राणियों की भलाई; **सर्वभोगी** (हिं०वि०) सब का आनन्द लेने वाला, सब कुछ खाने वाला; **सर्वमङ्गला**-(सं०स्त्री०) सब प्रकार का मंगल करने वाली, दुर्गा, लक्ष्मी।

सर्वरी-(सं०स्त्री०) शर्वरी, रात्रि।

सर्वलिङ्गी-(हिं०वि०) आडम्बरी, पाषण्डी

सर्ववित्-(सं०पुं०) परब्रह्म, परमेश्वर, ओंकार; **सर्वविद्य**-(सं०वि०) सब विषय में विद्वान; **सर्वव्यापी**-(सं०वि०) सब में रहनेवाला; **सर्वशक्तिमान्**-(सं०वि०) जिसमें सब कुछ करने का सामर्थ्य हो।

सर्वशः-(सं०अव्य०) पूर्ण रूप से।

सर्वश्रेष्ठ-(सं०वि०) सब से उत्तम।

सर्वस-(हिं०वि०) देखो सर्वस्व।

सर्वसह-(सं०वि०) सब कुछ सहनेवाला

सर्वसाधारण-(सं०वि०) सामान्य, जो सब में पाया जावे, (पुं०) साधारण लोग, जनता।

सर्वस्व-(सं०नपुं०) सम्पूर्ण सम्पत्ति, सब कुछ कुल।

सर्वहर-(सं० पुं०) सब कुछ हरने वाला, यमराज।

सर्वाङ्ग-(सं०नपुं०) सम्पूर्ण शरीर, सब अवयव।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर्वाधिकार-(सं०पुं०) पूर्ण प्रभुत्व, **सर्वाधिकारी**-(सं०पुं०) पूरा अधिकार रखने वाला; **सर्वाधिपत्य**-(सं० नपुं०) सबके ऊपर प्रभुत्व;
सर्वानन्द-(सं० वि०) जिसको सभी विषय में आनन्द हो।
सर्वार्थ-(सं०पुं०) सकल प्रयोजन।
सर्वेश, सर्वेश्वर-(सं०पुं०) सब का स्वामी, ईश्वर, चक्रवर्ती राजा।
सर्वोत्तम-(सं०वि०) सर्वश्रेष्ठ।
सर्षप-(सं०पुं०) सरसों, सरसों भर का परिमाण।
सर्सों-(हिं०स्त्री०) देखो सरसों।
सलई-(हिं०स्त्री०) चीड़ का पेड़।
सलक्षण-(सं०वि०)लक्षण युक्त।
सलज-(हिं०वि०) समूचा, पूरा।
सलज्ज-(सं०वि०) जिसको लज्जा हो।
सलना-(हिं०क्रि०) छिदना, साला जाना
सलसलाना-(हिं०क्रि०)सरसराना, खुजलाना, गुदगुदी होना तर होना।
सलसलाहट-(हिं०स्त्री०)खुजली,गुदगुदी
सलाई-(हिं०स्त्री०)धातु की बनी हुई कोई पतली छोटी छड़ी, दियासलाई, सलाने की क्रिया या भाव।
सलिल-(सं०नपुं०) जल, पानी।
सलीता-(हिं०पुं०) गज्जी की तरह का मोटा कपड़ा।
सलीपर-(हिं० पुं०) बिना एड़ी की जूती, रेल की पटरियों के नीचे बिछान का लकड़ी का पटरा, ।
सलूक-(हिं०पुं०) एक प्रकार की जनानी साड़ी।
सलोतर, सलोतरी-(हिं० पुं०) घोड़ों की चिकित्सा करने वाला,शालिहोत्र।
सलोना-(हिं०वि०) नमकीन, रसीला, सुन्दर।
सलोनो-(हिं०पुं०) रक्षाबन्धन।
सल्लकी-(सं०स्त्री०) सलाई का वृक्ष।
सवत-(हिं०स्त्री०) देखो सौत।
सवत्स-(सं०वि०)जिसके साथ बच्चा हो
सवन-(सं०नपुं०) यज्ञ स्थान, प्रसव।
सवर्ण-(सं०वि०) सदृश, समान ,समान वर्ण या जाति का।
सवा-(हिं०स्त्री०वि०) सम्पूर्ण और एक का चतुर्थांश, चौथाई सहित। **सवाई**-(हिं०स्त्री०) एक और चौथाई, सवा।
सवांग-(हिं०पुं०) देखो स्वांग।
सवाद-(हिं०पुं०) देखो स्वाद।
सवादिक-(हिं०वि०) स्वाद लेने वाला।
सविता-(सं०पुं०) दिवाकर, सूर्य।
सवित्री-(सं०स्त्री०) प्रसव करने वाली
सविनय-(सं०वि०) विनय सहित; **सविनय-अवज्ञा**-राज्य की किसी आज्ञा को न मनाना तथा शान्ति रखना।
सवेरा-(हिं०पुं०) सूर्योदय का समय।
सवैया-(हिं०पुं०) सवा सेर का बाँट, वह पहाड़ा जिसमें प्रत्येक संख्या का सवाया रहता है।
सव्य-(सं०वि०) वाम, बांया, प्रतिकूल, विरुद्ध।
सव्रत-(सं०वि०) नियम युक्त।
सशंक-(सं०वि०)शंका युक्त,भयभीत।
सशब्द-(सं०वि०) शब्द युक्त, **सशरीर**-(सं०वि०) शरीर धारी;
ससक-(हिं०पुं०) शशक खरहा।
ससत्वा-(सं०स्त्री०) गर्भवती स्त्री।
ससरना-(हिं०क्रि०) सरकना, घिसकना
ससि-(हिं०पुं०) शशि, चन्द्रमा।
सची-(हिं०स्त्री०) देखो शची।
ससुर-(हिं०पुं०) पति या पत्नी का पिता, श्वसुर, । **ससुरा**-(हिं०पुं०) श्वसुर, एक प्रकार की गाली।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ससुराल-(हिं० स्त्री०) पति या पत्नी के पिता का घर।

सस्ता-(हिं०वि) कम मूल्य का, जो मंहगा न हो, साधारण, घटिया; **सस्ताना**-(हिं०क्रि०) किसी वस्तु का दाम कम होना। **सस्ती**-(हिं०स्त्री०) सस्ता होने का भाव, सस्तापन।

सस्त्रीक-(सं०वि०) सपत्नीक,। **सस्नेह**-(सं०वि०) प्रीति युक्त।

सस्य-(सं०नपुं०) धान्य।

सस्वर-(सं०वि०)स्वरसहित, स्वरयुक्त।

सह-(सं०अव्य०)सहित,समेत, (वि०) विद्यमान,उपस्थित, सहनशील, (नपुं०) समानता, बराबरी,**सहकार**-(सं०पुं०) सहायक; **सहकारिता**-(सं० स्त्री०) सहायता; **सहकारी**-(सं०पुं०) सहायक।

सहगमन-(सं० नपुं०) सती होना; **सहगामी**-(सं०पुं०) साथी, अनुयायी **सहगामिनी**-(सं०स्त्री०)सहचरी,पत्नी

सहचर-(सं०पुं०) भृत्य, दास, मित्र, **सहचरी**-(सं०स्त्री०) पत्नी, भार्या सखी।

सहज-(सं०पुं०) सगा भाई, स्वभाव, (वि०) स्वभाविक, साधारण, सरल, सुगम, साथ उत्पन्न होने वाला;

सहजन्म-(सं० क्रि०) सहोदर, सगा, जुड़ुवाँ।

सहजात-(सं०वि०) सहोदर, यमज।

सहजीवी-(हिं०वि०) एक साथ जीवन धारण करने वाले।

सहत-(हिं०पुं०) देखो शहद;।

सहतूत-(हिं०पुं०) देखो शहतूत।

सहताना-(हिं०क्रि०) सुस्ताना।

सहधर्मचरी-(सं०स्त्री०) स्त्री, पत्नी,

सहधर्मिनी-(हिं०स्त्री०) पत्नी।

सहन-(सं०नपुं०) क्षान्ति, क्षमा।

सहनशील-(सं०वि०) सन्तोषी।

सहनशीलता-(सं०स्त्री०) सन्तोष।

सहना-(हिं०क्रि०) झेलना, भोगना।

सहनीय-(सं०वि०)सहन करने योग्य।

सहपाठ-(सं०स्त्री०) एक साथ पढ़ना;

सहपाठी-(सं० वि०) जो साथ में पढ़ा हो; **सहपान**-(सं०नपुं०) एक साथ मदिरा पीना; **सहभक्ष**-(सं०नपुं०) साथ भोजन करना; **सहभोज, सहभोजन**-(हिं०पुं०) एक साथ बैठकर भोजन करना, **सहभोजी**-(हिं०वि०) साथ बैठकर भोजन करने वाले;

सहमत-(सं०वि०)जिसका मत दूसरे से मिलता हो; **सहमना**-(हिं०क्रि०) भयभीत होना, डरना; **सहमरण**-(सं०नपुं०) सती होना।

सहमान-(सं०वि०) मर्यादा या मान के साथ।

सहमूल-(सं०वि०) समूल, मूलयुक्त।

सहयोग-(सं०पुं०) साथ मिलकर काम करने का भाव, आधुनिक भारतीय राजनैतिक क्षेत्र में सरकार से मिलकर काम करने का सिद्धान्त; **सहयोगी**-(सं०पुं०) सहायक, साथ में काम करने वाला।

सहराना-(हिं०क्रि०) डरके मारे काँपना

सहर्ष-(सं०वि०)हर्षयुक्त, हर्ष सहित।

सहलाना-(हिं०क्रि०)सुहराना,मलना।

सहवास-(सं०पुं०) एक साथ रहनेका व्यापार।

सहस-(हिं०वि०) सहस्र, सौ।

सहसा-(सं०अव्य०) एकाएक, अचानक अकस्मात्।

सहस्र-(सं०नपुं०) दस सौ अथवा एक हज़ार की संख्या; **सहस्र गुणित**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(सं०वि०) हजार से गुणा किया हुआ।
सहस्रधा-(सं० अव्य०) हजारों प्रकार से; **सहस्रधी**-(सं०वि०) बड़ा चतुर;
सहस्रशः-(सं०अव्य०) हजार बार।
सहस्रशीर्ष-(सं० पुं०) विष्णु।
सहाइ, सहाय-(हिं०वि०) सहायक, (स्त्री०) सहायता।
सहादर-(सं०अव्य०) आदर के साथ।
सहाध्ययन-(सं०नपुं०) एक साथ पढ़ना
सहाध्यायी-(सं०पुं०) सहपाठी।
सहानुभूति-(सं०स्त्री०) किसी के कष्ट को देखकर स्वयं दुःखी होना।
सहाय-(सं०पुं०) सहायता, आश्रय।
सहायक-(सं०वि०) सहायता करनेवाला।
सहायता-(सं०स्त्री०) आर्थिक अथवा शारीरिक साहाय्य।
सहायी-(सं०वि०) सहायता देनेवाला
सहार-(हिं०पुं०) सहनशीलता।
सहारना-(हिं०क्रि०) सहन करना।
सहारा-(हिं०पुं०) सहायता, भरोसा।
सहार्द-(सं०वि०) प्रेमयुक्त, स्नेहसहित।
सहित-(सं०वि०) संयुक्त, साथ, समेत।
सहितव्य-(सं०स्त्री०) सहन करने योग्य।
सहिष्णु-(सं०वि०) सहनशील।
सहिष्णुता-(सं०स्त्री०) सहनशीलता:
सहुं-(हिं०अव्य०) सन्मुख, समाने।
सहृदय-(सं०वि०) दयालु, प्रसन्नचित्त।
सहेजना-(हिं०क्रि०) अच्छी तरह जाँचना,
सहेजवाना-(हिं०क्रि०) सहेजने का काम दूसरे से कराना।
सहेतु, सहेतुक-(सं०वि०) हेतुयुक्त,
सहेली-(हिं०स्त्री०) अनुचरी, संगनी।
सहैया-(हिं०वि०) सहन करने वाला
सहोदर-(सं०पुं०) एकही माता के पुत्र (वि०) सगा।
सह्य-(सं०वि०) सहने योग्य।

साईं-(हिं०पुं०) परमेश्वर, स्वामी।
साँकड़-(हिं० पुं०) शृंखला, सीकड़
साँकड़ा-(हिं० पुं०) पैर में पहरने का चांदी का एक प्रकार का आभूषण
साँकर-(हिं०स्त्री०) शृंखला, (वि०) संकरा, दुःखमय।
साँकरा-(हिं०वि०) देखो सांकरा, सांकड़ा
साँक्रामिक-(सं०वि०) छूत से उत्पन्न होने वाला।
साँग-(हिं०वि०) सम्पूर्ण, पूरा।
साँगी-(हिं०स्त्री०) बरछी।
सांघातिक-(सं०वि०) मारक।
सांच-(हिं०वि०) सत्य, यथार्थ, ठीक।
सांचला-(हिं०वि०) सत्यवादी, सच्चा
सांचा-(हिं०पुं०) वह उपकरण जिसमें कोई तरल पदार्थ या गीला पदार्थ रखकर कोई विशेष आकार की कोई वस्तु बनाई जाती है, ठप्पा, छपा,।
साँचिया-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ का सांचा बनाने वाला।
साँची-(हिं०पुं०) एक प्रकार का पान पुस्तकों की छपाई का वह प्रकार जिसमें पंक्तियाँ बेंड़ बल में होती हैं तथा पन्ने अलग अलग रहते हैं।
साँझ-(हिं०स्त्री०) सन्ध्या, शाम।
साँझा-(हिं०पुं०) साझा।
सांट-(हिं०स्त्री०) शरीर पर का चाबुक, कोड़े आदि की मार का चिह्न।
सांटा-(हिं०पुं०) कोड़ा।
सांटी-(हिं०स्त्री०) बाँसकी खमाची, शाखा, बदला।
सांठ-(हिं०पुं०) देखो साँकड़ा, सरकंडा
सांठी-(हिं०स्त्री०) पूँजी, मूल धन,
सांड़-(हिं०पुं०) वह घोड़ा या बैल जो बधिया नहीं किया जाता, वृषभ (वि०) बलिष्ठ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सांड़नी-(हिं०स्त्री०) ऊंटनी जो वेग से चलती है और सवारी के काम में आती है।
सांथरी-(हिं०स्त्री०)चटाई, बिछौना।
सांधना-(हिं०क्रि०) रस्सियों आदि में जोड़ लगाना, मिलाना, साधना।
सांप-(हिं०पुं०) भुजंग,सर्प; बड़ा दुष्ट मनुष्य।
सांपिन-(हिं०स्त्री०) सांप की मादा,
सांवत्सर,सांवत्सरक-(सं०पुं०)गणक, ज्योतिषी। **सांवत्सरिक**-(सं०वि०) वार्षिक।
साँवलताई-(हिं०स्त्री०) श्यामता। सांवला।
साँवला-(हिं०वि०) श्यामवर्ण का
सवलापन-(हिं०पुं०) सावला होने का भाव।
सांव-(हिं०पुं०)कंगनी या चेना जाति का एक अन्न।
सांस-(हिं०स्त्री०)श्वास, दम, अवकाश, छुट्टी, वह दरार जिसमें से हवा आ जा सकती है, श्वास का रोग।
सांसत-(हिं०स्त्री०) अधिक कष्ट या पीड़ा, झंझट।
सांसतघर-(हिं०पुं०) कारागार में बहुत छोटी अन्धेरी कोठरी।
सांसना-(हिं०क्रि०) कष्ट देना, दुःख पहुँचाना।
सांसा-(हिं०पुं०) श्वास, प्राण, जीवन, बड़ा कष्ट।
साँसारिक-(सं०वि०)लौकिक।
साँस्कारिक-(सं०वि०) संस्कार के उपयोगी।
सा-(हिं०अव्य०)तुल्य, समान सदृश।
साइत-(अ०स्त्री०) शम, लग्न, मुहूर्त
साइयाँ-(ा०पुं०) देखो साईं।
साईं-(हिं०पुं०) ईश्वर, मालिक, पति,
साईस-(हिं०पुं०)घोड़े की सेवा करने वाला नौकर।
साउज-(हिं०पुं०) आखेट के पशु।
साक-(हि०पुं०) शाक, तरकारी भाँजी।
साकट-(हि०पुं०) देखो शक्ति।
साकर-(हि०स्त्री०) देखो साँकल।
साकल्य-(सं०नपुं०) समुदाय।
साका-(हि०पुं०) संवत्, शाखा, प्रसिद्धि, धाक, अवसर।
साकार-(सं०वि०) मूर्तिमान्, साक्षात्।
साक्षत-(सं०वि०) अक्षत सहित।
साक्षर-(सं०पुं०) विद्वान्, जो लिखना पढ़ना जानता हो।
साक्षात्-(सं०अव्य०) प्रत्यक्ष, स्वयं, तुल्य, (पुं०) भेंट; **साक्षात्कार**-(सं०पुं०) भेंट, पदार्थों का वह ज्ञान जो इन्द्रियों द्वारा होता है।
साक्षी-(सं०पुं०) वह जिसने किसी घटना को अपनी आँखों से देखा हो, दर्शक, (स्त्री०) साखी; **साक्ष्य**-(सं०नपुं०) साक्षी का कान।
साख-(हिं०पुं०) गवाही, मर्यादा, धाक, लेनदेन का खरापन;
साखर-(हिं०वि०) देखो साक्षर।
साखा-(हिं०स्त्री०) देखो शाखा।
साखी-(हिं०पुं०) साक्षी, गवाह, (स्त्री०) गवाही, ज्ञान सम्बन्धी, कविता या पद; (पुं०) वृक्ष, पेड़,
साग-(हिं०पुं०) शाक, भाजी, तरकारी;
सागर-(सं०पुं०) उदधि, समुद्र, बड़ा जलाशय।
सागूदाना-(हिं०पुं०) सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा।
साग्रह-(सं०वि०) आग्रह सहित।
सांकर्य-(सं०नपुं०) मिश्रण, मिलावट

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सांकेतिक-(सं०वि०) संकेत संबंधी।
साङ्ग-(सं०वि०) अंग युक्त, सम्पूर्ण।
साजन-(हिं०पुं०) स्वामी, पति, प्रेमी
साजना-(हिं०क्रि०) सजावट करना।
साजबाज-(हिं०पुं०) घनिष्टता, मेलजोल
साजुज्य-(हिं०पुं०) देखो सायुज्य।
साझी-(हिं० पुं०) हिस्सा, बाँट; **साझादार**-(हिं० पुं०) हिस्सेदार, साझी; **साझेदारी**-(हिं० स्त्री०) हिस्सेदारी।
साटक-(हिं०पुं०) छिलका, भूसी।
साटन-(हिं०पुं०) एक प्रकार का बढ़िया एकरुखा रेशमी कपड़ा।
साटना-(हिं०क्रि०) दो वस्तुओं का परस्पर मिलना, जोड़ना।
साठ-(हिं०वि०) पचास और दस संख्या का, (पुं०) पचास और दस की संख्या ६०।
साठा-(हिं०वि०) साठ वर्ष के वय का।
साड़ी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहरने की किनारदार धोती।
साढ़ी-(हिं०स्त्री०) दूध के ऊपर जमने वाली मलाई।
साढ़ू-(हिं०पुं०) साली का पति।
साढ़ेसाती-(हिं०स्त्री०) शनि गृह की साढ़ेसात वर्ष, साढेसात महीने या साढ़ेसात दिन की दशा जो अशुभ मानी जाती है।
सात-(हिं०वि०) पांच और दो की संख्या का, (पुं०) पांच और दो की संख्या ७।
सात्मक-(सं०वि०) आत्मा के सहित।
सात्म्य-(सं०पुं०) सरूपता, सारूप्य।
सात्विक-(सं०पुं०) वह भाव जिसमें सत्व गुण प्रबल हो, (वि०) सत्वगुण युक्त।
साथ-(हिं०पुं०) मिल कर या संग रहने का भाव, सहचार, घनिष्टता, मेल मिलाप, (अव्य०) सहत, प्रति, से।
साथरा-(हिं०पुं०) बिछौना, चटाई।
साथी-(सं०पुं०) साथ रहनेवाला, मित्र
सादन-(सं०नपुं०) उच्छेदन, विनाश।
सादर-(सं०वि०) आदर सहित।
सादित-(सं०वि०) छिन्न भिन्न।
सादृश्य-(सं०नपुं०) एकरूपता, समानता।
साध-(हिं०स्त्री०) अभिलाषा, कामना।
साधक-(सं०पुं०) साधन करनेवाला, सहायक।
साधन-(सं०नपुं०) हेतु, कारण, विधान, गति, उपकरण सामग्री, उपाय, सिद्धि युक्ति, उपासना; **साधना**-(हिं०क्रि०) पूरा करना, पक्का करना, ठहरना, नापना, शुद्ध करना, वश में करना।
साधनी-(हिं०स्त्री०) राजगीरका भूमि चौरस करने का एक अस्त्र।
साधन्त-(सं०पुं०) भिक्षुक, भिखमंगा।
साधयितव्य(सं०वि०) साधने योग्य।
साधयिता-(सं०स्त्री०) साधनेवाला।
साधर्म्य-(सं०नपुं०) एक धर्मता।
साधर-(सं०वि०) आधारयुक्त।
साधरण-(सं०वि०) सामान्य, सदृश, सहज, सार्वजनिक।
साधारणतः-(सं०अव्य०) सामान्य रूप से, बहुधा, प्रायः।
साधित-(सं०वि०) सोधा हुआ, शोधित,
साधु-(सं०पुं०) सज्जन, धार्मिक, (वि०) योग्य, निपुण, उचित, उत्तम; **साधता**-(सं०स्त्री०) सज्जनता, भलाई, सीधापन; **साधुभाव**-(सं०पुं०) सज्जनता; **साधुवाद**-(सं०पुं०) प्रशंसावाद।
साधुवादी-(सं०वि०) सच बोलने वाला;

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साधुवृत्त-(सं०वि०) अच्छे चरित्र वाला।
साधू-(हिं०पुं०) धार्मिक पुरुष, सन्त साज्जन।
साधो-(हिं०पुं०) सन्त, साधू।
साध्य-(सं०वि०) साधन करने योग्य, सरल, सहज, प्रतिपाद्य।
साध्वी-(सं०स्त्री०) पतिव्रता स्त्री,
सान-(हिं०पुं०) अस्त्रादि की धारपैनी करने का पत्थर का चाक शाण।
सानना-(हिं०क्रि०) मिलाना, लपेटना, गूधना।
सानन्द-(सं०वि०) आनन्द सहित।
सानी-(हिं०स्त्री०) वह भोजन जो पानी में सान कर पशुओं को खिलाया जाता है।
सान्त्वन-(सं०नपुं०) आश्वासन, ढाढस।
सान्द्र-(सं० वि०) स्निग्ध, चिकना, सुन्दर।
सान्ध्य-(सं०वि०) सन्ध्या काल में करने योग्य।
सान्निध्य-(सं०नपुं०) समीपता।
सान्वय-(सं०वि०) अन्वय सहित।
साप-(हिं०पुं०) शाप।
सापत्न्य-(सं०नपुं०) सौतपन, (पुं०) सौत का लड़का।
सापत्य-(सं०वि०) सन्तान युक्त।
सापना-(हिं०क्रि०) शाप देना, गाली देना
सापेक्ष-(हिं०वि०) परस्पर निर्भर रहने वाला।
साफल्य-(सं०नपुं०) लाभ, सफलता।
साबल-(हिं०पुं०) बरछी, भाला।
साबूदाना-(हिं०पुं०) देखो सागूदना।
साँमग्री-(सं०स्त्री०) किसी विशेष कार्य में उपयोग आने वाले पदार्थ।
सामना-(हिं०पुं०) किसी वस्तु का अगला भाग, विरोध।
सामने-(हिं०क्रि०वि०) सन्मुख, आगे।
सामन्त-(सं०पुं०) श्रेष्ठ राजा।
सामयिक-(सं०वि०) समयोचित, समय के अनुसार, समय सम्बन्धी, वर्तमान-समय का।
सामरथ-(हिं०स्त्री०) देखो सामर्थ्य।
सामरिक-(सं०वि०) समर सम्बन्धी। **सामरिक पोत**-(सं० पुं०) युद्ध का जहाज।
सामर्थ्य-(सं० नपुं०) शक्ति, बल योग्यता।
सामवाद-(सं०पुं०) प्रिय वचन।
सामवायिक-(सं०पुं०) मन्त्री, (वि०) जिसमें नित्य सम्बन्ध हो।
सामाजिक-(सं०वि०) समाज से संबंध रखने वाला, सभा से सम्बन्ध रखने वाला। **सामाजिकता**-(सं० स्त्री०) लौकिकता।
सामान्य-(सं०वि०) साधारण।
सामान्यतः-(सं०अव्य०) साधारण रीति से; । **सामान्यभविष्यत्**-(सं०पुं०) व्याकरण में भविष्य क्रिया का वह काल जो साधारण रूप से वतलाया जाता है। **सामान्यभूत**-(सं०पुं०) भूत क्रिया का वह रूप जिसमें क्रिया की पूर्णता होती है और भूतकालकी विशेषता नहीं पाई जाती जैसे, गया उठा, आदि। **सामान्य वर्तमान**-(सं०पुं०) वर्तमान क्रिया का वह रूप जिसमें कर्ता का उसी समय कोई कार्य करते रहना वर्णन किया जाता है; **सामान्य विधि**-(सं०स्त्री०) साधारण आज्ञा, यथा चोरी मत करो।
सामिग्री-(हिं०स्त्री०) देखो सामग्री।
सामिष-(सं०वि०) मछली मांस आदि के साथ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामी-(हिं०पुं०) देखो स्वामी, शामी।
सामीप्य-(सं०नपुं०) निकटता।
सामीर-(हिं०पुं०) समीर, पवन।
सामुझि-(हिं०स्त्री०) देखो समझ।
सामुदायिक-(सं०वि०) समुदाय सम्बन्धी
सामुद्र-(सं०वि०) समुद्र सम्बन्धी।
सामुद्रिक-(सं०वि०) समुद्र सम्बन्धी, (पुं०) फलित ज्योतिष का वह विभाग जिसमें हाथ पैर ललाट आदि स्थानों पर की रेखाओं से मनुष्य का शुभाशुभ फल जाना जाता है।
सामुहाँ-(हिं०पुं०) आगे का भाग।
सामुहें-(हिं०क्रि०वि०) सामने।
सामूहिक-(सं०वि०) समूह सम्बन्धी।
साम्प्रत-(सं०अव्य०) इस समय, अभी।
साम्प्रतिक-(सं०वि) वर्तमान कालका।
साम्प्रदायिक-(सं०वि०) संप्रदाय संबंधी।
साम्य-(सं०नपुं०) समता, तुल्यता।
साम्यता-(सं०स्त्री०) तुल्यता।
साम्यवाद-(सं०पुं०) एक पाश्चात्य सामाजिक सिद्धान्त जिसके प्रचारक यह चाहते है कि सब लोगों के पास बराबर धन हो जावे, धनवान् और द्ररिद्र का भेद न रह जावे।
साम्यावस्था-(सं०स्त्री०) समान अवस्था।
साम्राज्य-(सं०नपुं०) वह राज्य जिसके अधीन बहुत से देश हों।
सायंकाल-(सं० पुं०) सन्ध्या समय।
सायंकालीन-(सं०वि०) सन्ध्या समय का।
सायक-(सं०पुं०) बाण, तीर।
सायन-(सं०स्त्री०) सूर्यकी एक गति, जिसमें अयन (ग्रह आदि) हों।
सायास-(सं०वि०) कष्ट सहित।
सायुज्य-(सं० नपुं०) एकत्व, पांच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसमें मुक्त पुरुष ब्रह्म में लीन हो जाता है।
सारंगिया-(हिं० पुं०) सारँगी बजाने वाला।
सारंगी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का प्रसिद्ध बाजा।
सार-(सं० नपुं०) जल, पानी, धन, अमृत, जंगल (पुं०) बल, अभिप्राय, मज्जा वायु, परिणाम, फल, लकड़ी की हीर।
सार-(हिं० पुं०) पालन पोषण, रक्षा लोहा।
सारखा-(हिं०वि०) समान, सदृश।
सारगन्ध-(सं०पुं०) चन्दन।
सारंग-(सं०पुं०) हरिण, हाथी, कोयल शिव, दीपक, बाण, मेघ, ज्योति, पृथ्वी, फूल, आभरण, केश, मोर, चितकबरा मृग, बिजली, हल मेढ़क, आकाश, नक्षत्र, कौवा, छप्पय शोभा, भूमि, सारंगी नामक वाद्य यन्त्र,(वि०) सुन्दर, सुहावना, रंगा हुआ।
सारंगा-(हिं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी नाव जो एक लकड़ी की बनी होती है।
सारंगी-(सं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध बाजा।
सारणी-(सं०स्त्री०) प्रसारणी, नदी।
सारथि-(सं०पुं०) रथ हाँकने वाला।
सारद-(हिं०स्त्री०) शारदा, सरस्वती।
सारदा-(हिं०स्त्री०) देखो शारदा।
सारदूल-(हिं०पुं०) देखो शार्दूल।
सारना-(हिं० क्रि०) समाप्त करना, साधना, बनाना, संभालना, सुशोभित करना, रक्षा करना।
सारभूत-(सं०वि०) सर्वोत्तम, श्रेष्ट।
सारमेय-(सं०पुं०) कुक्कुर, कुत्ता।
साररूप-(सं०वि०) उत्तम रूप वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सारल्य-(सं०नपुं०) सरलता।
सारवस्तु-(सं०नपुं०) श्रेष्ठ वस्तु।
सारस-(सं०नपुं०) एक प्रसिद्ध सुन्दर बड़ा पक्षी।
सारसन-(सं०नपुं०) कटिबन्ध।
सारसुता-(हिं०स्त्री०) यमुना; **सारसुती**-(हिं०स्त्री०) देखो सरस्वती।
सारसैंधन्व-(सं०पुं०) सेंधा नमक।
सारांश-(सं०पुं०)संक्षेप, सार, तात्पर्य।
सारा-(हिं०पुं०) साला, (हिं०वि०) सम्पूर्ण, समूचा।
सारिउं, सारिका-(हिं०स्त्री०) मैना पक्षी।
सारिखा-(हिं०वि०) सरीखा, तुल्य।
सारिष्ट-(सं०वि०)सबसे सुन्दर, सबसे श्रेष्ठ।
सार्थ-(सं०वि०) अर्थ सहित।
सार्थक-(सं०वि०) अर्थ युक्त, सफल।
सार्थकता-(सं०स्त्री०) सफलता।
सार्थवाह-(सं०पुं०)वणिक्, बनियां; **सार्थिक**-(सं०वि०) सफल।
सार्थी-(हिं०पुं०) देखो सारथी।
सार्द्र-(सं०वि०) आर्द्र, भींगा, गीला
सार्दूल-(हिं०पुं०)देखो शार्दूल, सिंह।
सार्ध-(सं०वि०) जिसमें पूरे के अतिरिक्त आधा भी मिला हो।
सार्व-(वि०)सबसे सम्बन्ध रखने वाला
सार्वकालिक-(सं०वि०) जो सब कालों में होता हो; **सार्वजनिक**-(सं०वि०) सर्व साधारण सम्बन्धी।
सार्वजनीन(सं०वि०) सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला; **सार्वदेशिक**-(सं०वि०) सम्पूर्ण देशों का।
सार्वभौतिक-(सं०वि०) सब भूतों से सम्बन्ध रखने वाला; **सार्वभौम**-(सं०पुं०) चक्रवर्ती राजा।
सार्वराष्ट्रीय-(सं०वि०) अनेक राष्ट्रों से सम्बन्ध रखनेवाला; **सार्वलौकिक**-(सं०वि०)सब लोगों से सम्बन्ध रखने वाला।
सालई-(हिं०स्त्री०) देखो सलई।
सालक-(हिं०वि०)सालने वाला, दुःख देने वाला।
सालग्राम-(हिं०पुं०) देखो शालग्राम।
सालन-(हिं०पुं०) मास मछली या शाक भांजी की मसालेदार तरकारी।
सालना-(हिं०क्रि०) गड़ाना, छेद में बैठाना।
सालभञ्जिका-(सं०स्त्री०) गुड़िया, पुतली।
सालरस-(सं०पुं०) राल, धूना।
साला-(हिं०स्त्री०), शाला, गृह, घर, (हिं०पुं०) पत्नी का भाई।
साली-(हिं०स्त्री०) पत्नी की बहिन।
सालु-(हिं०पुं०) ईर्षा, डाह, कष्ट।
सालू-(हिं०पुं०) एक प्रकार की लाल रंग की साड़ी जो मांगलिक कार्यों में पहरी जाती है।
सालेय-(सं०पुं०) मधुरिका, सौंफ।
सालोक्य-(सं०नपुं०) पाँच प्रकार की मुक्ति में से एक, इसके मुक्त भगवान्के साथ एक लोक में वास करता है।
सालमली-(हिं०पुं०) देखो शाल्मली।
सावन्त-(हिं०पुं०)देखो सामन्त, योद्धा,
साव-(हिं०पुं०)देखो साहु, बालक, पुत्र
सावक-(हिं०पुं०) शावक, शिशु, बच्चा
सावकाश-(सं०नपुं०) अवकाश, छुट्टी, (क्रि०वि०) सुविधे से।
सावचेत-(हिं०वि०)सावधान, सचेत।
सावधान-(सं०वि०) सचेत, सतर्क।
सावधानी-(हिं०स्त्री०) सचेतता।
सावन-(हिं०पुं०) श्रावण मास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सावनी-(हिं०स्त्री०) देखो श्रावणी, (वि०) सावन महीने का।
सावयव-(सं०वि०) अवयव युक्त।
सावशेष-(सं०वि०) अवशेष युक्त।
सावित्री-(सं०स्त्री०) सोहागिन स्त्री,
साशंक-(हिं०वि०) आशङ्का युक्त।
साष्टांग-(सं०वि०) आठों अंग सहित।
सास-(हिं० स्त्री०) पति या पत्नी की माता।
सासण-(हिं०पुं०) देखो शासन।
सासित-देखो शासन।
सासना-(हिं०स्त्री०) देखो शासन।
सासव-(सं०वि०) मद्ययुक्त।
सासरा-(हिं०पुं०) देखो ससुराल।
सासा-(हिं०पुं०) श्वास, साँस,सन्देह।
सासुर-(हिं०पुं०) ससुर,ससुराल।
सास्ना-(सं०स्त्री०) गौ का गलकम्बल।
साह-(हिं०पुं०)साधु, सज्जन, महासजन सेठ।
साहचर्य(सं०नपुं०)सहगमन,संग,साथ।
साहनी-(हिं०स्त्री०) सेना, साथी, संगी।
साहस-(सं०नपुं०) बल पूर्वक कार्य करने की क्रिया, अत्याचार, क्रूरता।
साहसिक-(सं०पुं०) साहस करने वाला, निडर, हठी; **साहसिकता**-(सं०स्त्री०) निर्भीकता।
साहसी-(सं०पुं०) जो साहस करता हो,
साहस्र-(सं०वि०)सहस्र संबंधी,हजारका
साहा-(हिं०पुं०) साधु राजा।
साहाय्य-(सं०पुं०) सहायता।
साहि-(हिं०पुं०) राजा।
साहित्य-(सं०नपुं०) गद्यपद्य के उन ग्रन्थों का समूह जिनमें लोकहित संबंधी स्थायी विचार रक्षित रहते हैं, वे सब पुस्तकें जिनमें नैतिक सत्य तथा मानव भाव, व्यापकता तथा बुद्धिमानी से प्रकट किये रहते हैं। **साहित्यिक**-(सं०वि०) साहित्य सम्बन्धी।
साही-(हिं०स्त्री०) एक प्रसिद्ध चौपाया जिसकी पीठ पर नुकीले काँटे होते हैं,
साहू-(हिं०पुं०) सज्जन, महाजन, धनी; **साहूकार**-(हिं०पुं०) बड़ा महाजन, कोठीवाल। **साहूकारी**-(हिं०स्त्री०) रुपये का लेनदेन, महाजनी।
साहौ-(हिं०स्त्री०) बांह,भुजा (अव्य०) सन्मुख, सामने।
सिंकना-(हिं०क्रि०) आंच पर पकना
सिंगा-(हिं०पुं०) तुरही।
सिंगार-(हिं०पुं०) शृङ्गार, सजावट शोभा। **सिंगारदान**-(हिं०पुं०) वह छोटी पेटी जिसमें शृङ्गार की सामग्री रक्खी जाती है। **सिंगारना**-(हिं० क्रि०) सँवारना सजाना। **सिंगारिया**-(हिं०पुं०) किसी देवमूर्ति का शृंगार करने वाला पुजारी। **सिंगारी**-(हिं० पुं०) शृङ्गार करने वाला, सजाने वाला।
सिंघासन-(हिं०पुं०) देखो सिंहासन।
सिंगिया-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसकी जड़ बड़ी विषैली होती है।
सिंगी-(हिं०पुं०) सींग का बना हुआ फूंक कर बजाने का बाजा।
सिंघ-(हिं०पुं०) सिंह।
सिंघाड़ा-(हिं०पुं०) पानी में फैलने वाली एक लता जिसका तिकोना फल मीठा होता है, समोसा नामक नमकीन पकवान।
सिंघासन-(हिं०पुं०) देखो सिंहासन।
सिंघिनी-(हिं०स्त्री०) देखो सिंहिनी।
सिंघिया-(हिं०पुं०) देखो सिंगिया।
सिंचना-(हिं०क्रि०) सींचा जाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिचाई-(हिं०स्त्री०) भूमि को जल तर करने की क्रिया।
सिचाना-(हिं०क्रि०) पानी छिड़काना
सिंजित-(हिं०स्त्री०) ध्वनि,झनकार।
सिंदन-(हिं०पुं०) देखो स्यन्दन।
सिंदूरादान-(हिं०पुं०) सिन्दूर रखने की डिबिया। **सिंदूरिया**-(हिं०वि०) सिंदूरके रंग का, बहुत लाल।
सिंदूरी-(हिं०वि०) सिंदूर के रंग का।
सिंह-(सं०पुं०) मृगेन्द्र, पशुराज,सिंह-
सिंहद्वार-(सं०नपुं०) भवन आदि का प्रधान द्वार जहाँ पर सिंह की मूर्ति बनी हो। **सिंहध्वनि**-(सं०पुं०) सिंह-नाद। **सिंहरव**-(सं०पुं०) सिंह की गरज।
सिंहावलोकन-(सं०पुं०) आगे बढ़ने के पहिले पिछली बातों को संक्षेप में कहना।
सिंहासन-(सं०स्त्री०) राजाओं का श्रेष्ठ आसन. देवता को बैठाने का चौकी आदि।
सिंहिनी-(सं०स्त्री०) मादा सिंह, शेरनी
सिंहीं-(सं०स्त्री०) शेरनी, सिंघा नाम का बाजा।
सिअरा-(हिं०पुं०)छाया, परछाहीं।
सिआना-(हिं०क्रि०) देखो सिलाना।
सियार-(हिं०पुं०) शृगाल, गीदड़।
सिंगजा-(हिं०पुं०) देखो शिकंजा।
सिंकटा-(हिं०पुं०) खपड़े या मिट्टी के टूटे हुए पात्रों का छोटा टुकड़ा।
सिकड़ी-(हिं०स्त्री०) सांकल, शृंखला के आकार का गले में पहरने का गहना, करधनी, तगड़ी।
सिकता-(सं०स्त्री०) बलुई भूमि, बालू।
सिकरी-(हिं०स्त्री०) देखो सिकड़ी।
सिकली-(हिं०स्त्री०) धारदार हथियारों को मांजने और उनपर सान चढ़ाने की क्रिया।
सिकहर-(हिं०पुं०) छीका।
सिकहुली-(हिं०स्त्री०) कास या मूंज की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकार-(हिं०पुं०) देखो शिकार।
सिकारी-(हिं०वि०) देखो शिकारी।
सिकुड़न-(हिं०स्त्री०) किसी वस्तु का सिमट कर थोड़े स्थान में होना।
सिकुड़ना-(हिं०क्रि०) सिमटना।
सिकुरना-(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सिकोड़ना-(हिं०क्रि०) बटोरना, समेटना।
सिकोरना-(हिं०क्रि०) देखो सिकोड़ना
सिकोरा-(हिं०क्रि०) देखो कसोरा।
सिक्कोली-(हिं०स्त्री०) कास, मुंज, आदि की बनी हुई छोटी डलिया।
सिकोही-(हिं०वि०) गर्वीला, घमंडी।
सिक्कड़-(हिं०पुं०) देखो सिकड़।
सिक्का-(अ०पुं०)मुद्रा, छाप,मुहर।
सिक्त-(सं०वि०)सिंचित, सींचा हुआ।
सिक्ता-(सं०स्त्री०)सिकता, बालुका।
सिखंड-(हिं०पुं०) देखो शिखण्ड।
सिख-(हिं०स्त्री०) शिक्षा, उपदेश,सीख
सिखना-(हिं०क्रि०) देखो सीखना।
सिखर-(हिं०पुं०) देखो शिखर।
सिखरन-(हिं०स्त्री०) दहीमें चीनी मिलाकर बनाया हुआ शर्बत।
सिखलाना-(हिं०क्रि०)देखो सिखाना।
सिखा-(हिं०स्त्री०)देखो सिखा,चुटिया, चुंदी। **सिखाना**-(हिं०क्रि०) उपदेश देना, शिक्षा देना, पढ़ाना, बतलाना,
सिखपन-(हिं०पुं०) उपदेश, शिक्षा,
सिखावन-(हिं०पुं०) उपदेश,शिक्षा।
सिखिर-(हिं०पुं०) देखो शिखर।
सिगरा-(हिं०वि०)सम्पूर्ण, समग्र, सब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिच्छक-देखो शिक्षक।
सिच्छा-(हिं०स्त्री०) देखो शिक्षा।
सिजल-(हिं०पुं०) जो देखने में सुन्दर हो।
सिझना-(हिं०क्रि०) आंच पर पकना, **सिझाया जाना सिझाना**-(हिं०क्रि०) रींधना, उबालना।
सिञ्चन-(सं०नपुं०) सीचना, ।
सिञ्चित-(सं०वि०) सींचा हुआ।
सिटकिनी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी पतली छड़ जो किवाड़ बंद करने के लिये लगाई जाती है, चटखनी।
सिटपिटाना-(हिं०क्रि०) सकुचाना।
सिट्टी-(हिं०स्त्री०) बहुत बढ़ बढ़ कर बोलना।
सिठना-(हिं०पुं०) **सिठनी**-(हिं०स्त्री०) विवाह के समय गाई जाने वाली गाली।
सिठाई-(हिं०स्त्री०) फीकापन, नीरसता।
सिड़-(हिं०स्त्री०) उन्माद, पागलपन, **सिड़पन**-(हिं०पुं०) पागलपन, **सिड़ी**-(हिं०वि०) पागल, सनकी, उन्मत्त।
सित-(सं०वि०) श्वेत, उजला; **सितपक्ष**-(सं०पुं०) शुक्ल पक्ष।
सितमणि-(सं०पुं.) स्फटिक, बिल्लौर।
सितार-(हिं०पुं०) एक प्रकारका प्रसिद्ध बाजा जो इसमें लगे हुए तारों उँगली से झनकारने से बजता है।
सितालिका-(सं०स्त्री०) ताल की सीप, सुतुही।
सिति-(सं०वि०) कृष्ण, काला; **सितिकण्ठ**-(सं०पुं०) नीलकण्ठ।
सितुई, सितुही-(हिं०स्त्री०) सुतुही।
सितोपल-(सं० नपुं०) स्फटिक, बिल्लौर; **सितोपला**-(सं०स्त्री०) शर्करा चीनी, मिश्री।
सिथिल-(हि०वि०) देखो शिथिल।
सिद्ध-(सं०वि०) प्रसिद्ध, सम्पन्न, सफल, अनुकूल किया हुआ, लक्ष्य पर पहुँचाया हुआ, निर्णीत, जिसका तप या योग साधन पूरा हो चुका हो, जिसका अर्थ हो, जो ठीक घटा हो, जो प्रमाण द्वारा निश्चित हो, शोधा हुआ, आंच पर पकाया हुआ,
सिद्धक-(सं०वि०) काम पूरा करने वाला; **सिद्धगुरु**-(सं०पुं०) वह गुरु जिसको मन्त्र सिद्धि हुई हो; **सिद्धजन**-(सं०पुं०) सिद्ध मनुष्य; **सिद्धजल**-(सं०नपुं०) पकाया हुआ जल।
सिद्धता-(सं०स्त्री०) सिद्धि, पूर्णता, **सिद्धपक्ष**-(सं०पुं०) प्रमाणित बात। **सिद्धपथ**-(सं०पुं०) आकाश, प्रसिद्ध मार्ग। **सिद्धपीठ**-(सं०पुं०) वह स्थान जहाँ पर प्रयाण करने से शीघ्र सिद्धि प्राप्त होती है। **सिद्धसंकल्प**-(सं०वि०) जिसकी सब कामनायें पूर्ण हों।
सिद्धहस्त-(सं०वि०) जिसका हाथ कोई काम करने में मँजा हो।
सिद्धाई-(हिं०स्त्री०) सिद्ध होने की अवस्था।
सिद्धादेश-(सं०पुं०) सफलवाक्य।
सिद्धान्त-(सं०पुं०) तत्व की बात, निर्णीत विषय, किसी शास्त्र पर लिखा हुई कोई विशेष पुस्तक। **सिद्धान्तज्ञ**-(सं०पुं०) तत्वज्ञ, । **सिद्धान्ती**-(हिं० पुं०) शास्त्र के तत्व को जानने वाला।
सिद्धान्न-(सं०नपुं०) पका हुआ अन्न भात।
सिद्धार्थ-(सं०वि०) जिसकी सब कामनायें पूर्ण हो गई हों।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धि-(सं०स्त्री०) निवटारा, भाग्योदय, मुक्ति, सफलता, प्रवीणता, कौशल, भांग, पुर्णता । **सिद्ध-सिद्धिदाता**-(सं०क्रि०) सिद्धि देनेवाला । **सिद्धिमार्ग**-(सं०पुं०) मोक्षपथ ।

सिद्धौषध-(सं०नपुं०) वह औषधि जिसके सेवन करने से रोगनिवृत्त होता है ।

सिधाई-(हिं०स्त्री०) सरलता, सीधापन ।

सिधाना, सिधारना-(हिं०क्रि०) प्रस्थान करना, स्वर्गवास होना ।

सिधि-(हिं०स्त्री०) देखो सिद्धि ।

सिनक-(हिं०स्त्री०) नाककीमैल, नेटा

सिनकना-(हिं०क्रि०) नाकका मल वेग से हवा निकाल कर बाहर फेंकना ।

सिन्दूर-(सं०नपुं०) सेंदुर । **सिन्दूरदान**-(हिं० पुं०) सिन्दूर रखने की डिबिया ।

सिन्धी-(हिं०स्त्री०) सिन्ध देश की भाषा

सिन्धु-(सं०पुं०) समुद्र, सागर, सिन्ध प्रदेश ।

सिन्धुर-(सं०पुं०) हाथी ।

सिंधोरा-(हिं०पुं०) सिन्दूर रखने की डिबिया ।

सिप्पा-(हिं०पुं०) लक्ष्यवेध, युक्ति, ढँग,

सिमंत-(हिं०पुं०) देखो सीमान्त ।

सिमई-(हिं०स्त्री०) देखो सिंवई ।

सिमट-(हिं०स्त्री०) सिमटने की क्रिया या भाव । **सिमटना**-(हिं०क्रि०) सिकुड़ना, बटुरना, व्यवस्थित होना ।

सिमाना-(हिं०पुं०) सिंवाना, हद ।

सिमिटना-(हिं०क्रि०) देखो सिमटना

सिमृती-(हिं०स्त्री०) देखो स्मृति ।

सिमेटना-(हिं०क्रि०) लपेटना ।

सिम्बी-(सं०स्त्री०) फली, छीमी ।

सिय-(हिं०स्त्री०) सीता, जानकी

सियरा-(हिं०वि०) शीतल, ठंढा, कच्चा **सियराई**-(हिं०स्त्री०) ठंढापन । **सियराना**-(हिं०क्रि०) ठंढा करना ।

सिया-(हिं०स्त्री०) जानकी, सीता ।

सियाना-(हिं०क्रि०) देखो सिलवाना

सियापा-(हिं०पुं०) मृत यक्ति के शोक में कुछ काल तक वहुत सी स्त्रियों का प्रतिदिन इकट्ठा होकर रोनेकी चाल ।

सियार-(हिं०पुं०) शृगाल, गीदड़ ।

सियाल-(हिं०पुं०) देखो सियार ।

सियाला-(हिं०पुं०) जाड़े का ऋतु ।

सिर-(हिं०पुं०) शिर, कपाल, खोपड़ी, सिरा, चोटी, ऊपरी छोर ।

सिरई-(हिं०स्त्री०) चारपाई में सिर होने की पट्टी ।

सरकटा-(हिं०वि०) जिसका सिर कट गया हो ।

सिरकी-(हिं०स्त्री०) सरकंडा, सरई ।

सिरखप-(हिं०वि०) परिश्रमी ।

सिरखपी-(हिं०स्त्री०) परिश्रम, व्यग्रता

सिरचन्द-(हिं०पुं०) एक प्रकार का अर्धचन्द्राकार गहना जो हाथी के मस्तक पर पहिराया जाता है ।

सिरजनहार-(हिं०पुं०) सृष्टिकर्ता, परमेश्वर ।

सिरजना-(हिं०क्रि०) सृष्टि करना, निर्माण करना ।

सिरजित-(हिं०वि०) निर्मित, रचा हुआ ।

सिरताज-(हिं०पुं०) सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति, शिरोमणि ।

सिरत्राण-(हिं०पुं०) देखो शिरस्त्राण ।

सिरदार-(हिं०पुं०) देखो सरदार ।

सिरनेत-(हिं०पुं०) पगड़ी, पटका, चीरा

सिरफूल-(हिं०पुं०) स्त्रियों का एक आभूषण जिसको वे सिर पर पहरती हैं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिरफेंटा, सिरबन्द-(हिं०पुं०) पगड़ी, मुरेठा।
सिरबंदी-(हिं०स्त्री०) मस्तकपर पहरने का स्त्रियों का एक आभूषण।
सिरनि-(हिं०पुं०) देखो शिरोमणि।
सिरमौर-(हिं०पुं०) सिर पर का मुकुट।
सिररुह-(हिं०पुं०) देखो शिरोरुह।
सिरहाना-(हिं०पुं०) चारपाई में सिर की ओर का भाग।
सिरा-(हिं०स्त्री०) शिरा; (हिं०स्त्री०) अन्त, छोर, टोका।
सिराना-(हिं०क्रि०) ठंढा होना, अवकाश मिलना, समाप्त होना।
सिरी-(हिं०स्त्री०) श्री, लक्ष्मी, शोभा,
सिरोंना-(हिं०पुं०) इंडुरी विड़वा।
सिरोमनि-(हिं०पुं०) देखो शिरोमणि।
सिरोरुह-(हिं०पुं०) देखो शिरोरुह।
सिल-(हिं०स्त्री०) शिला, पत्थर, चट्टान पत्थर की पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसा जाता है।
सिलगना-(हिं०क्रि०) देखो सुलगना।
सिलप-(हिं०पुं०) देखो शिल्प।
सिलपट-(हिं०वि०) चौरस, बराबर नष्ट, चौपट।
सिलवट-(हिं०स्त्री०) लकीर।
सिलवाना-(हिं०क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।
सिलहिला-(हिं०वि०) फिसलने योग्य।
सिला-(हिं०स्त्री०) शिला,
सिलाई-(हिं०स्त्री०) सोने का काम या ढंग, टाँका, सीवन।
सिलाना-(हिं०क्रि०) सिलने का काम दूसरे से कराना।
सिलावट-(हिं०पुं०) पत्थर गढ़ने वाला
सिलिप-(हिं०पुं०) देखो शिल्प।
सिलीमुख-(हिं०पुं०) देखो शिलीमुख।
सिलेट-(हिं०स्त्री०) काले पत्थर की पतली पट्टी जिस पर लड़के लिखते हैं।
सिलौट, सिलौटा-(हिं०पुं०) पत्थर का चिकना टुकड़ा; **सिलौटा**-(हिं०स्त्री०) छोटी सिल।
सिल्प-(हिं०पुं०) देखो शिल्प।
सिल्ली-(हिं०स्त्री०) पत्थर की छोटी पतली पटिया, पटरी।
सिवई-(हिं०स्त्री०) गुंधे हुए मैदे के सूत के समान सूखे हुए महीन लच्छे जो दूध में पका कर खाये जाते हैं।
सिवान-(हिं०पुं०) गाँव के छोर पर की भूमि।
सिवार, सिवाल-(हिं०पुं०) शैवाल, जल में फैलने वाली एक घास।
सिवि, सिविर-(हिं०पुं०) देखो शिबि, शिविर।
सिस-देखो शिशु
सिसकना-(हिं०क्रि०) रोक रोक कर लंबी सांस लेते हुए भीतर ही भीतर रोना; **सिसकारना**-(हिं०क्रि०) मुख से सीटी के समान शब्द निकालना, लहकाना; **सिसकारी**-(हिं० स्त्री०) सिसकारने का शब्द; सिसकारी।
सिसकी-(हिं०स्त्री०) सिसकारी।
सिसिर-(हिं०पुं०) देखो शिशिर।
सिसु-(हिं०पुं०) देखो शिशु; बालक।
सिसुमार-(हिं०पुं०) सुइस।
सिहरना-(हिं०क्रि०) रोंगटे खड़े होना।
सिहराना-(हिं०क्रि०) ठंढ से कँपाना।
सिहरी-(हिं०स्त्री०) ठंढ के कारण कँपकपी।
सिहाना-(हिं०क्रि०) ईर्षा करना।
सिहारना-(हिं०क्रि०) अन्वेषण करना।
सिहिकना-(हिं०क्रि०) सूखना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिहिटि-देखो सृष्टि।
सींक-(हिं०पुं०) किसी तृण का महीन काण्ड, तिनका,
सींकिया-(हिं०पुं०) एक प्रकार का महीन कपड़ा जिसमें महीन धारियां रहती हैं।
सींग-(हिं०पुं०) शृङ्ग।
सींगी-(हिं०स्त्री०) हरिन के सींग का बना हुआ बाजा, वह पोलीसीग जिसके द्वारा दूषित रक्तको चूसकर निकाला जाता है।
सींच-(हिं०स्त्री०) सींचने की क्रिया, सिंचाई; **सींचना**-(हिं०क्रि०) पानी देना, भिगोना।
सींव-(हिं०पुं०) सीमा, सरहद।
सी-(हिं० वि० स्त्री०) समान, तुल्य, सीत्कार।
सीड-(हिं०पुं०) शीत, ठंढक।
सीकना-(हिं०पुं०) छड़।
सीकर-(सं०पुं०) पानी का बूंद, छींटा।
सीका-(हिं०पुं०) देखो छीका।
सीख-(हिं०स्त्री०) शिक्षा, परामर्श।
सीखन-(हिं०स्त्री०) शिक्षा, **सीखना**-(हिं०क्रि०) किसी से किसी कार्य करने की विधि जानना।
सीखा-(हिं०स्त्री०) शिखा, चोटी।
सीझ-(हिं०स्त्री०)सीझने की क्रिया या भाव; **सीझना**-(हिं०क्रि०) आंच या गरमी से पकाना, कष्ट सहना।
सीट-(हिं०स्त्री०) अभिमान करने के शब्द, डींग; **सीटना**-(हिं०क्रि०)डींग मारना; **सीटपटांग**-(हिं०स्त्री०) घमंड भरी हुई बात।
सीटी-(हिं०स्त्री०) वह महीन शब्द जो ओठों को गोल सिकोड़ कर नीचे को वेग से वायु निकालने पर उत्पन्न होता है, वह बाजा जिसको फूंकने से इसी पुकार का शब्द निकलता है।
सीठना-(हिं०पुं०) अश्लील, गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं;
सीठा-(हिं०वि०) नीरस, फीका।
सीठापन-(हिं०स्त्री०) फीकापन।
सीठी-(हिं०स्त्री०)खूद, निःसार पदार्थ।
सीड़-(हिं०स्त्री०) सील, तरी, नमी।
सीढ़ी-(हिं०स्त्री०) निसेनी,
सीत-(हिं०पुं०) देखो शीत, ठंढक।
सीतल-(हिं०वि०) देखो शीतल, ठंढा;
सीतलपाटी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की चिकनी चटाई; **सीतल बुकनी**-(हिं०स्त्री०) सत्तू।
सीतला-(हिं०स्त्री०) देखो शीतला।
सीताफल-(सं०नपुं०) शरीफा।
सीत्कार-(सं०पुं०) सिसकारी।
सीद-(सं०नपुं०)ब्याज पर रुपया देना।
सीदना-(हिं०क्रि०)दुःखपाना, कष्ट देना।
सीध-(हिं०स्त्री०) ठीक सामने की स्थिति।
सीधा-(हिं०वि०) जो टेढा न हो, बिना शान्त, शिष्ट, सहज, दहिना, (वि० क्रि०) सम्मुख, ठीक सामने की ओर; **सिधापन**-(हिं०पुं०)भोलापन।
सीधे-(हिं०क्रि०वि०) सम्मुख, सामने की ओर।
सीना-(हिं०क्रि०) कपड़े चमड़े आदि के टुकड़ों को डोरे से जोड़ना,
सीप-(हिं०पुं०) शंख घोंघे आदि के जाति का एक जलजन्तु, सुतुही।
सीपति-(हिं०पुं०)देखो श्रीपति, विष्णु
सीपर-(हिं०पुं०) ढाल।
सीपर-(हिं०स्त्री०) ढाल।
सीपी-(हिं०स्त्री०) देखो सीप।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीबी-(हिं०स्त्री०) सिसकारी।
सीमन्त-(सं०पुं०) स्त्रियों की माँग।
सीमन्तक-(सं०नपुं०) सिन्दूर, **सीमन्तिनी**-(सं०स्त्री०) नारी, स्त्री,
सीमा-(सं०स्त्री०) किसी प्रवेश या वस्तु के विस्तार का अन्तिम स्थान, स्थिति,
सीमातिक्रम-(सं०पुं०) सीवांन को डांकना; **सीमाधिप**-(सं०पुं०)सीमा का अध्यक्ष; **सीमाबद्ध**-(सं०वि०) रेखा से घिरा हुआ।
सीय-(हिं०स्त्री०) सीता, जानकी।
सीयन-(हिं०स्त्री०) देखो सीवन।
सीर-(सं०पुं०) हल, जोतने वाला, वैल, (हिं०स्त्री०) वह भूमि जिसको भूस्वामी स्वयं बहुत दिनों से स्वयं जोतता चला आता हो।
सीरख-(हिं०पुं०) देखो शीर्ष।
सीरवाह,सीरवाहक-(सं०पुं०) हरवाहा।
सीरष(हिं०पुं०) देखो शीर्ष।
सीरा-(हिं०पुं०)पकाकर मधुके समान गाढ़ा किया हुआ चीनी का रस, चाशनी, ।
सील-(हिं०स्त्री०)आर्द्रता, सीड़, तरी, (हिं०पुं०) देखो शील।
सीवड़ी-(हिं०पुं०) गाँव की सीमा।
सीवन-(सं०नपुं०) सीने का काम, सिलाई, सन्धि, दरार।
सीवना-(हिं०पुं०)देखो सिवाना,सीना
सीस-(हिं०पुं०) मस्तक, माथा।
सीसत्रान-(हिं०पु०)शिरस्त्राण, टोप।
सीसफूल-(हिं०पुं०)फूल के आकार का एक आभूषण जो सिरपर पहना जाता है।
सीसा-(हिं०पुं०) एक मूल धातु जो बहुत भारी होता है,जिसका रंग नीलापन लिये काला होता है।
सीसी-(हिं०स्त्री०)सीत्कार, सिसकारी
सुं-(हिं०प्रत्य०) देखो सों।
सुंघनी-(हिं०स्त्री०) तमाखू के पत्ते की महीन बुकनी जो सूँघी जातीं है।
सुंघाना-(हिं०क्रि०) सूँघने की क्रिया कराना।
सुंधावट-(हिं०स्त्री०) सोंधापन, सोंधी महँक।
सुंबी, सुंभी-(हिं०स्त्री०) छेनी जिससे लोहे में छेद किया जाता है।
सु-(सं०उप०) वह उपसर्ग जिसको संज्ञा में जोड़ने से "उत्तम, श्रेष्ठ, सुन्दर आदि अर्थ को सूचित करता है (वि०) अच्छा, उत्तम श्रेष्ठ, सर्व० वह, सो।
सुअटा-(हिं०पुं०) शुक सुग्गा।
सुअन-(हिं०पुं०)पुत्र,बेटा; देखो सुमन।
सुअर-(हिं०क्रि०) उत्पन्न होना; **सुगना**, (पुं०) सुग्गा, तोता।
सुअर-(हिं०पुं०) शूकर, सुअर।
सुअवसर-(सं०पुं०) अच्छा अवसर।
सुआउ-(हिं०वि०) दीर्घायु, दीर्घजीवी।
सुआमी-(हिं०पुं०) देखो स्वामी।
सुआर-(हिं०पुं०)सूपकार, रसोइयादार
सुआसन-(सं०पुं०) बैठने का सुन्दर आसन।
सुआसिनी-(हिं०स्त्री०) देखो सुवासिनी
सुई-(हिं०स्त्री०) देखो सूई।
सुकचाना-(हिं०क्रि०) देखो सकुचाना,
सुकड़ना-(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकण्ठ-(सं०वि०) सुरिला।
सुकथा-(सं०स्त्री०) उत्तम कथा,सूवाक्य
सुकर-(सं०वि०) सुसाध्य, सहज।
सुकरता-(सं०स्त्री०) सौकर्य,सुन्दरता
सुकर-(सं०वि०) सुसाध्य, जो सहज में किया जा सके। **सुकरता**-(सं०स्त्री०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौकर्य, सुन्दरता।
सुकर्म-(सं०पुं०) सत्कर्म, अच्छा काम।
सुकर्मी-(सं०वि०) सदाचारी।
सुकल्प-(सं०वि०)अतिनिपुण; **सुकाल्पत**-(सं०वि०) अच्छी तरह से बनाया हुआ।
सुकान्त-(हिं०क्रि०) अचंभे में आ जाना।
सुकान्ति-(सं०वि०) सुन्दर कान्तिवाला।
सुकाल-(सं०पुं०)सुसमय, उत्तम समय
सुकीया-(हिं०स्त्री०) देखो स्वकीया।
सुकी-(हिं०स्त्री०) सुग्गी, सारिका।
सुकीर्ति-(सं०स्त्री०)अच्छी स्तुति(वि०)
सुकुआर-(हिं०वि०) देखो सुकुमार।
सुकुड़ना-(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकुति-(हिं०स्त्री०) शुक्ति, सीप।
सुकुमार-(सं०वि०)जिसके अंग कोमल हों, **सुकुमारता**-(सं०स्त्री०) कोमलता
सुकुमारी-(सं०वि०) कोमलाङ्गी, कोमल अंग वाली।
सुकुरना-(हिं०क्रि०) देखो सिकुड़ना।
सुकुल-(सं०नपुं०) उत्तम वंश या कुल (वि०) जो उत्तम कुल में उत्पन्न हो।
सुकुवार-(हिं०वि०) देखो सुकुमार।
सुकृत-(सं०नपुं०) सत्कार्य, पुण्य।
सुकृतात्मा-(सं०वि०)पुण्यात्मा, धर्मात्मा
सुकृति-(सं०स्त्री०) शुभ कार्य,
सुकृती-(सं०वि०) धार्मिक, पुण्यवान्,
सुकेण-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसके बाल सुन्दर हों।
सुक्कान-(हिं०पुं०) तलवार।
सुक्ख-(हिं०पुं०) देखो सुख।
सुक्ति-(सं०स्त्री०) शुक्ति, सिप्पी।
सुक्र-(हिं०पुं०) देखो शुक्र; **सुक्रित** (हिं०वि०) देखो सुकृत; **सुक्षम**-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म।
सुखंडी-(हिं०स्त्री०) बच्चों का एक रोग जिसमें उनका संपूर्ण शरीर सूख जाता है।
सुखंद-(हिं०वि०) आनन्द देने वाला, सुखदायी।
सुख-(सं०नपुं०) आत्मा या मनोवृत्ति का वह गुण जिसकी सब को अभिलाषा रहती है, आरोग्य (हिं०क्रि०) आनन्द पूर्वक; **सुखकर**-(सं० वि०) सुख देनेवाला; **सुखजनक**-(सं०वि०) आनन्ददायक; **सुखजात**-(सं०वि०) प्रसन्न; (वि०) सुख देने वाला; **सुखदा**-(सं०स्त्री०) सुख देनेवाली **सुखदायी**-(सं० क्रि०) सुखद, सुख देने वाला;
सुखधाम-(सं०पुं०) आनन्द का घर, स्वर्ग। **सुखप्रद**-(सं०वि०) सुख देने वाला। **सुखभेद्य**-(सं०वि०) शीघ्र टूटने वाला। **सुखमा**-(हिं०स्त्री०) शोभा, छवि।
सुखलाना-(हिं०क्रि०) देखो सुखाना।
सुखवन-(हिं०पुं०) वह न्यूनता या कमी जो किसी वस्तु के सूखने पर होती है।
सुखवह-(सं०वि०) आनन्द देने वाला।
सुखसाध्य-(सं० वि०) जिसके साधन करने में कोई कष्ट न हो, सहज।
सुखाना-(हिं०क्रि०) अग्नि या धूप से किसी वस्तु का गीलापन दूर करना,
सुखानी-(हिं०पुं०) मल्लाह, माँझी।
सुखान्त-(सं०पुं०) वह जिसका अन्त सुखमय हो।
सुखारा, सुखारी-(हिं०वि०) सुख देने वाला।
सुखार्थी-(हिं०वि०) सुख चाहने वाला।
सुखाराध्य-(सं०वि०)सुख से आराधनीय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुखाला-(हिं०वि०) आनन्ददायक।
सुखासन-(सं०नपुं०) वह आसन जिस पर बैठने से सुख मिलता हो। पालकी,डोली; **सुखासीन**-(सं०वि०) सुख से बैठा हुआ।
सुखित-(हिं०वि०) सुखी।
सुखिया-(हिं०वि०) सुखी प्रसन्न।
सुखी-(हिं०वि०) आनन्दित।
सुख्याति-(सं०स्त्री०)प्रशंसा,यश,प्रसिद्धि
सुगमणक-(सं०पुं०)अच्छी गणना करने वाला।
सुगति-(सं०स्त्री०) उत्तम गति, मोक्ष।
सुगन्ध-(सं०व०) सुवासित।
सुगन्धमय-(सं०वि०) सुगन्ध पूर्ण।
सुगन्धरा-(हिं० पुं०) एक प्रकार का फूल।
सुगन्धि-(सं०पुं०) सुगन्ध, अच्छी महक,
सुगना-(हिं०पुं०) सुग्गा।
सुगम-(सं०वि०) सरलता, सहज।
सुगमता-(सं०स्त्री०) सरलता।
सुगात्र-(सं०वि०)सुन्दर शरीर वाला।
सुगाना-(हिं०क्रि०) सन्देह करना।
सुगीति-(सं०स्त्री०) सुन्दर गान।
सुगुप्त-(सं०वि०)अच्छी तरह से रक्खा हुआ।
सुगूढ़-(सं०वि०) अच्छी तरह से गुप्त।
सुग्गा-(हिं०पुं०) शुक, तोता।
सुघट-(सं०वि०) जो सहज में बन सकता हो, सुडौल, सुन्दर।
सुघटित-(सं० वि०) अच्छी तरह से बना हुआ।
सुघड़-(हिं०वि०) प्रवीण,निपुण, कुशल
सुघड़ई-(हिं०स्त्री०) निपुणता, **सुघड़ता**-(हिं०स्त्री०) सुन्दरपन; **सुघड़ाई, सुघड़ापा**-(हिं०) सुंदरता, सुडौलपन, कुशलता।
सुघर(हिं०वि०) देखो सुघड़।
सुघराई-(हिं०स्त्री०) सुघड़ाई।
सुघरी-(हिं०स्त्री०) शुभमय, अच्छा मुहूर्त, (वि०) सुन्दर, सुडौल।
सुच-(हिं०वि०) देखो शुचि, शुद्धता।
सुचतुर-(सं०वि०) अति चतुर।
सुचरित-(सं०नपुं०) सच्चरित्र।
सुचरिति-(सं०स्त्री०)पति परायणा स्त्री,
सुचाना-(हिं०क्रि०) किसी को सोचने समझने में प्रवृत्त करना।
सुचारु-(हिं०वि०)सुंदर,मनोहर,सुचाल।
सुचार-(सं०वि०) अति मनोहर, बहुत सुंदर।
सुचाल-(हिं०स्त्री०) सदाचार; **सुचाली** (हिं०वि०) अच्छी चालचलन का।
सुचि-(हिं०वि०)शुचि, (स्त्री०) सूई।
सुचिताई-(हिं०स्त्री०) निश्चिन्तता, एकाग्रता, स्थिरता; **सुचिति**-(हिं०-वि०) निश्चिन्त।
सुचित्त-(सं०वि०) स्थिरचित्त, शान्त जो किसी काम से निवृत्त हो गया हो
सुचिमंत-(हिं०पुं०) सदाचारी।
सुचिन्तित-(सं०वि०)भली भांति सोचा विचारा हुआ।
सुच्छन्द-(हिं०वि०) देखो स्वच्छन्द।
सुच्छम-(हिं०वि०) सूक्ष्म, थोड़ा।
सुजड़ी-(हिं०स्त्री०) कटारी।
सुजन-(सं० पुं०) सज्जन, भद्रपुरुष,
सुजनता-(सं०स्त्री०) सौजन्य, भलमनसी।
सुजन्मा-(सं०वि०) अच्छेकुलमें उत्पन्न।
सुजल्प-(सं०पुं०)उत्तम भाषण; **सुजस**-(हिं०पुं०) देखो सुयश।
सुजागर-(हिं०वि०) सुशोभित।
सुजात-(सं०वि०)उत्तम कुल में उत्पन्न सुंदर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुजाति-(सं०स्त्री०) उत्तम जाति या (वि०)अच्छे कुल का।
सुजातिया-(हिं०वि०) अच्छे कुल का।
सुजान-(हिं० वि०) चतुर, निपुण, सज्जन, (पुं०) पति या प्रेमी,
सुजानता-(सं०स्त्री०) सुजान होने का भाव या धर्म।
सुजानी-(हिं०वि०) ज्ञानी, पण्डित।
सुजिह्व-(सं०वि०) मधुरभाषी।
सुजोग-(हिं० पुं०) सुअवसर, अच्छा अवसर।
सुजोधन-(हिं०पुं०) देखो सुयोधन।
सुजोर-(ह०वि०) दृढ़।
सुज्ञान-(पुं०नसं०) उत्तम ज्ञान।
सुझाना-(हिं०क्रि०) दिखलाना।
सुटुकना-(हिं०क्रि०) सिकुड़ना, चाबुक लगाना।
सुठहर-(हिं०पुं०) अच्छा स्थान।
सुठार-(हिं० वि०) सुडौल, सुंदर आकृति का।
सुठि, सुठोना-(हिं०वि०) सुंदर, बढ़िया (अव्य०) पूरा पूरा।
सुडौल-(हिं०वि०)सुन्दर आकृति का।
सुढंग-(हिं०पुं०)अच्छी रीति या ढंग,
सुढर-(हिं०वि०) सुडौल।
सुढार-(हिं०वि०) सुढौल, सुन्दर।
सुतंत, सुतंत्र--(हिं०वि०) स्वतन्त्र।
सुत-(सं०पुं०) आत्मज, पुत्र, बेटा,
सुतनु-(हिं० स्त्री०) सुन्दर शरीर वाली स्त्री।
सुतनुता-(सं० स्त्री०) शरीर की सुन्दरता।
सुतप्त-(सं०वि०) अत्यन्त गरम।
सुतरां-(हिं०अव्य०) अतः निदान।
सुतरी-(हिं०स्त्री०) देखो सुतली।
सुतली-(हिं०स्त्री०) डोरी, रस्सी।
सुतवाना-(हिं०क्रि०) सुलवाना।
सुतही-(हिं०स्त्री०) देखो सुतुही।
सुता-(सं०स्त्री०)कन्या, पुत्री, लड़की।
सुतात्मज-(सं०पुं०) नाती, पोता।
सुतापति-(सं०पुं०)दामाद, जमाता।
सुतार-(सं०वि०) अत्यन्त उज्वल, उत्तम, अच्छा।
सुतार्थी-(सं०वि०) पुत्र की कामना करने वाला।
सुतिन-(हिं०स्त्री०) रूपवती स्त्री।
सुतिनी-(सं०स्त्री०) पुत्रवती स्त्री।
सुतीक्ष्ण--(सं०वि०) अति तीक्ष्ण।
सुतीच्छन-(हिं०वि०) देखो सुतीक्ष्ण।
सुतुही-(हिं०स्त्री०) शुक्ति, सीपी।
सुतेजित--(सं०वि०) सुतीक्ष्ण।
सुथरा-(हिं०वि०) स्वच्छ, निर्मल।
सुथराई-(हिं०स्त्री०) स्वच्छता।
सुदरसन-(हिं०पुं०) देखो सुदर्शन।
सुदि-(सं०स्त्री०) देखो सुदी।
सुदिन-(सं०नपुं०)शुभदिन,अच्छादिन।
सुदिवस-(सं०नपुं०) देखो सुदिन।
सुदी-(हिं०स्त्री०) शुक्ल पक्ष।
सुदीपति-(हिं०स्त्री०) सुदीप्ति।
सुदीधिति-(सं०वि०)बहुत चमकीला।
सुदीप्ति-(सं०स्त्री०) अधिक प्रकाश।
सुदीर्घ-(सं०वि०) बहुत लंबा।
सुदूर-(सं०वि०) बहुत दूर।
सुदृढ़-(सं०वि०) बहुत दृढ़।
सुदृश्य--(सं०वि०) देखने में सुन्दर।
सुदृष्ट (सं०वि)अच्छी तरह देखा हुआ
सुदेश (सं०पुं०) उत्तम देश।
सुदेस-(हिं०पुं०) स्वदेश।
सुदेह-(सं०पुं०)सुन्दर शरीर (वि०) सुन्दर।
सुदैव-(सं०पुं०)सौभाग्य,अच्छा भाग्य।
सुद्ध--(हिं०वि०) देखो शुद्ध।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुद्धि-(सं०स्त्री०) देखो शुद्धि।
सुगन्ध-(हिं०पुं०) अच्छा ढंग।
सुध-(हिं०स्त्री०) स्मरण, स्मृति, चेतना
सुधबुध-(हिं०स्त्री०) चेतना, ज्ञान।
सुधरना-(हिं०क्रि०) संशोधन होना, विगड़े हुए का बनाना; **सुधराई**-(हिं०स्त्री०) सुधरने की क्रिया।
सुधर्मी-(हिं०वि०) धर्मपरायण, धर्मनिष्ठ
सुधवाना-(हिं०क्रि०) शोधन करना।
सुधांशु-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
सुधा-(सं०स्त्री०) अमृत, बिजली, दूध, जल, पृथ्वी; **सुधाई**-(हिं०स्त्री०) सीधापन; **सुधाकर**-(सं०पुं०) चन्द्रमा
सुधातु-(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना।
सुधादीधिति-(सं०पुं०) सुधांशु, चन्द्रमा।
सुधाधर-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
सुधाना-(हिं०क्रि०) ठीक कराना।
सुधानिधि-(सं०पुं०) चन्द्रमा, समुद्र, **सुधामय**-(सं०वि०) अमृत से भरा हुआ; **सुधामयूख**-(सं०पुं०) चन्द्रमा; **सुधायोनि**-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
सुधार-(सं० पुं०) सुधारने या दोष दूर करने की क्रिया, संस्कार। **सुधारक**-(हिं०पुं०) त्रुटियों का संशोधन करने वाला, संशोधक। **सुधारना**-(हिं०क्रि०) संशोधन करना।
सुधारा-(हिं०वि०) सरल, सीधा।
सुधाव-(हिं०पुं०) संशोधन, सुधार।
सुधासिन्धु-(सं०पुं०) अमृत, समुद्र।
सुधि-(हिं०स्त्री०) देखो सुध।
सुधिति-(सं०स्त्री०) कुठार, कुल्हाड़ी।
सुधी-(सं०पुं) पण्डित, विद्वान्
सुधीर-(सं०वि०) जिसमें बहुत धैर्य हो।
सुधृत-(सं०वि०) दृढ़ता से पकड़ा हुआ।
सुन-(हिं०वि०) देखो सुन्न।
सुनकिरवा-(हिं०पुं०) एक प्रकार का हरे रंग का फतिंगा।
सुनगुन-(हिं०स्त्री०) टोह, कानाफुसकी
सुनना-(हिं०क्रि०) श्रवण करना।
सुनबहरी-(हिं०स्त्री०) श्लीपद, फीलपा का रोग।
सुनय-(सं०पुं०) उत्तम नीति।
सुनयन-(सं०वि०) सुन्दर आँखों वाला
सुनवाई-(हिं०स्त्री०) सुनने की क्रिया या भाव। **सुनवैया**-(हिं०वि०) सुनने या सुनाने वाला।
सुनसान-(हिं०वि०) निर्जन, उजाड़।
सुनहरा सुनहला-(हिं०वि०) सोने के रंग का।
सुनहर-(हिं०पुं०) श्वान, कुत्ता।
सुनाई-(हिं०स्त्री०) देखो सुनवाई।
सुनाना-(हिं०क्रि०) कर्णगोचर कराना।
सुनाम-(सं०नपुं०) यश, कीर्ति। **सुनामा**-(हिं०वि०) यशस्वी।
सुनार-(सं०पु०) सोने चाँदी का गहना बनाने वाला। **सुनारी**-(हिं० स्त्री०) सुनार का काम।
सुनावनी-(हिं०स्त्री०) परदेश से किसी सम्बन्धी आदि का मृत्यु समाचार आना
सुनिद्र-(सं०वि०) अच्छी तरह सोया हुआ। **सुनिद्रा**-(सं०स्त्री०) गहरी नींद।
सुनिरूपित-(सं०वि०) अच्छी तरह निर्णय किया हुआ।
सुनिर्मल-(सं०वि०) अतिस्वच्छ।
सुनिर्मित-(सं०.वि०) अच्छी तरह से बना हुआ।
सुनिश्चय-(सं०पुं०) दृढ़, निश्चय।
सुनिश्चल-(सं०वि०) अति स्थिर, दृढ़। **सुनिश्चित**-(सं०वि०) अच्छी तरह निश्चित किया हुआ।
सुनिषण्ण-(सं०वि०) अच्छी तरह से बैठा हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुनीति-(सं०स्त्री०) अच्छी नीति।
सुनेया-(हिं०वि०) सुनने वाला।
सुन्दर-(सं०वि०) मनोहर, अच्छा, श्रेष्ठ बढ़िया। **सुन्दरता**-(सं०स्त्री०) मनोहरता।
सुन्दरी-(सं०स्त्री०) रूपलावण्य सम्पन्न स्त्री।
सुन्न-(हिं०वि०) निर्जीव, निःस्तब्ध (पुं०) शून्य।
सुन्नसान-(हिं०वि०) देखो सूनसान।
सुन्ना-(हिं०पुं०) शून्य, विन्दु।
सुपक्ष-(सं०वि०) सुन्दर पंखों वाला।
सुपच-(हिं०पुं०) श्वपच, चाण्डाल, डोम
सुपट-(सं०पुं०) सुन्दर वस्त्र।
सुपथ-(सं०पुं०) सन्मार्ग, अच्छा मार्ग,
सुपथ्य-(सं०नपुं०) वह आहार या भोजन जो रोगी के लिए हितकर हो।
सुपद-(सं०वि०) सुन्दर पैरों वाला।
सुपन-(हिं०पुं०) स्वप्न, सपना।
सुपना-(हिं०पुं०) स्वप्न, सपना।
सुपाना-(हिं०क्रि०) स्वप्न दिखलाना।
सुपरकास-(हिं०पुं०) ताप, गरमी।
सुपरस-(हिं०पुं०) देखो स्पर्श।
सुपर्ण-(सं०पुं०) पक्षी, चिड़िया, (वि०) सुन्दर पत्तों वाला, सुन्दर परों वाला।
सुपवित्र-(सं०नपुं०) अति पवित्र।
सुपह-(हिं०पुं०) राजा।
सुपात्र-(सं०नपुं०) अच्छा पात्र, वह जो किसी कार्य के लिये उपयुक्त हो।
सुपारी-(हिं०स्त्री०) नारियल की जाति का एक वृक्ष जिसके फल टुकड़े टुकड़े काट कर पान के साथ खाये जाते हैं।
सुपास-(हिं०पुं०) सुख, सुविधा।
सुपासी(हिं०वि०) आनंददायक।
सुपुरुष-(सं०पुं०) सत्पुरुष, सज्जन।
सुपूत-(सं०वि०) अत्यन्त पवित्र।
सुपूत-(हिं०पुं०) अच्छा पुत्र। **सुपूती**-(हिं०स्त्री०) सुपूत होने का भाव,
सुपेद-(हिं०वि०) श्वेत। **सुपेदी**-(हिं० स्त्री०) सपेदी।
सुप्त-(सं०वि०) निद्रित, सोया हुआ,
सुप्तज्ञान-(सं०नपुं०) स्वप्न, सपना।
सुप्ति-(सं०स्त्री०) निद्रा, नींद, उंघाई
सुप्रकाश-(सं०वि०) उत्तम प्रकाशयुक्त।
सुप्रजा-(सं०स्त्री०) अच्छी सन्तान, उत्तम प्रजा।
सुप्रज्ञ-(सं०वि०) बहुत बुद्धिमान।
सुप्रतिज्ञ-(सं०वि०) जो अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहे। **सुप्रतिज्ञा**-(सं०स्त्री०) दृढ़ प्रतिज्ञा
सुप्रतिष्ठा-(सं०वि०) बहुत प्रसिद्ध।
सुप्रतिष्ठा-(सं०स्त्री०) प्रसिद्ध, सुनाम।
सुप्रतिष्ठित-(सं०वि०) उत्तम रूप से प्रतिष्ठित।
सुप्रबुद्ध-(सं०वि०) जिसको अच्छा बोध या ज्ञान हो।
सुप्रभ-(सं०वि०) सुन्दर।
सुप्रभात-(सं०नपुं०) मंगल सूचक प्रातः काल।
सुप्रलम्भ-(सं०वि०) सहज में मिलने योग्य।
सुप्रलाप-(सं०पुं०) सुन्दर भाषण।
सुप्रसन्न-(सं०वि०) अत्यन्त निर्मल, बहुत प्रसन्न।
सुप्रसिद्ध-(सं०वि०) अति विख्यात,
सुफल-(सं०नपुं०) सुन्दर फल, अच्छा परिणाम (वि०) सुन्दर फल वाला, कृतार्थ।
सुफेद-(हिं०पुं०) देखो सफेद।
सुबन्धु-(सं०पुं०) अच्छा मित्र।
सुवास-(हिं०स्त्री०) सुगन्ध, सुन्दर निवास।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुवासना-(हिं०स्त्री०) सुगन्ध (हिं० क्रि०) सुगन्धित करना, मँहकना।
सुबाहु-(सं०वि०) दृढ़ या सुन्दर बाहु वाला।
सुबिस्ता,सुबीता-(हिं०पुं०) देखो सुभीता
सुबुद्धि-(सं०वि०) बुद्धिमान्, (स्त्री०) उत्तम बुद्धि।
सुबोध-(सं०वि०) उत्तम ज्ञानयुक्त, अच्छी बुद्धि वाला।
सुबोधिनी-(सं०स्त्री०) अच्छी ज्ञान वाली
सुभ-(हिं०वि०) देखो शुभ।
सुभग-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर, भाग्य वान्,। **सुभगा**-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जो पति की प्यारी हो।
सुभट-(सं०पुं०) बड़ा योद्धा, अच्छा सैनिक
सुभड़-(हिं०पुं०) शूर, वीर।
सुभद्र-(सं०पुं०) कल्याण, सौभाग्य,
सुभाइ,सुभाउ-(हिं०पु०) देखो स्वभाव, (क्रि०वि०) स्वभावतः, सहज भावसे।
सुभाग-(हिं०पुं०) सौभाग्य, भाग्यवान्।
सुभागी-(हिं० वि०) भाग्यवान्, भाग्यशाली।
सुभाना-(हिं०क्रि०) शोभित होना।
सुभाय-(हिं०पुं०) स्वभाव।
सुभाव-(ह०पुं०) स्वभाव।
सुभाषण-(सं०पुं०) सुन्दर भाषण।
सुभाषित-(सं०वि०) अच्छी तरह कहा हुआ; **सुभाषी**-(हिं०वि०) मधूर बोलने वाला।
सुभिक्ष-(सं०पुं०) ऐसा समय जिसमें भोजन प्रचुर मिले और अन्न प्रचुर हो।
सुभीता-(हिं०पुं०) सुगमता, सुयोग।
सुभीम-(सं०वि०) बहुत डरावना।
सुभीरु-(सं०वि०) बड़ा डरपोक।
सुभुक्त-(सं०वि०) अच्छी तरह खाया हुआ।
सुभुज-(सं०वि०) सुन्दर भुजाओं वाला।
सुभूति-(सं०स्त्री०) उन्नति।
सुभूमि-(सं०स्त्री०) अच्छी भूमि।
सुभूषण-(सं०नपुं०) उत्तम अलंकार।
सुभेषज-(सं०नपुं०) उत्तम औषधि।
सुभोज-(सं०नपुं०) उत्तम भोजन।
सुभौटी-(हिं०स्त्री०) शोभा।
सुभ्र-(सं०पुं) देखो शुभ्र।
सुभ्रु-(सं०स्त्री०) सुन्दर भौंह।
सुमति-(सं०पुं०) सुबुद्धि, अच्छी मति, (वि०) अत्यन्त बुद्धिमान्।
सुमन-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुमन-(सं०वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुमनस्क-(सं०वि०) प्रसन्न, सुखी।
सुमनोहर-(सं०वि०) बड़ा सुन्दर।
सुमन्त्रित-(सं०वि०) अच्छी तरह से मन्त्रणा किया हुआ।
सुमन्त्री-(सं०पुं०) कुशल मन्त्री।
सुमन्द्र-(सं०पुं०) मधुर ध्वनि।
सुमरन-(हिं०पुं०) देखो सुमरनी।
सुमरना-(हिं०क्रि०) स्मरण करना।
सुमरनी-(हिं०स्त्री०) नाम जपने की छोटी माला।
सुमार्ग-(सं०पुं०) उत्तम मार्ग।
सुमिरण-(हिं०पुं) देखो स्मरण।
सुमिरना-(हिं०क्रि०) नाम जपना।
सुमुख-(सं०पुं०) सुन्दर मुख (वि०) सुन्दर, मनोहर।
सुमुखी-(सं०स्त्री०) सुन्दर स्त्री।
सुमुहूर्त-(सं०पुं०) (नपुं०) शुभ समय
सुमृति-(हिं०स्त्री०) देखो स्मृति।
सुमृत्यु-(सं०पुं०) अच्छी मृत्यु।
सुमेध,सुमेधा-(सं०वि०) बुद्धिमान्।
सुम्मी-(हिं०स्त्री०) धातु में ठोक कर छिद्र करने का अस्त्र।
सुयश-(सं०वि०) अति यशस्वी. (पुं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुकीर्ति, अच्छा यश।
सुयोग-(सं०पुं०) अच्छा अवसर।
सुयोग्य-(सं०वि०) बहुत योग्य।
सुर-(सं०पुं०) देवता, ऋषि, मुनि; **सुरकना**-(हिं०क्रि०) वायु के साथ धीरे धीरे ऊपर की ओर खिंचना।
सुरक्ष-(सं०वि०) अच्छी तरह रक्षा किया हुआ। **सुरक्षण**-(सं०पुं०) रखवाली; **सुरक्षित**-(हिं०वि०) अच्छी तरह से रक्षा किया हुआ।
सुरग-(हिं०पुं०) स्वर्ग।
सुरगी-(हिं०पुं०) देखो स्वर्गीय, देवता
सुरगी नदी-(हिं०स्त्री०) गंगा।
सुरगुरु-(सं०पुं०) वृहस्पति।
सुरगैया-(हिं०स्त्री०) कामधेनु।
सुरंग-(हिं०स्त्री०) भूमि या पहाड़ खोद कर बनाया हुआ मार्ग, सेंध।
सुरज-(हिं०पुं०) देखो सूर्य।
सुरजन-(सं०पुं०) देवताओंका समूह, मज्जन, चतुर।
सुरझन-(हिं०स्त्री०) देखो सुलझन।
सुरझना-(हिं०क्रि०) देखो सुलझना।
सुरत-(हिं०स्त्री०) ध्यान, याद।
सुरता-(हिं०स्त्री०) चिन्ता, ध्यान, चेत, सुध।
सुरतान-(हिं०स्त्री०) स्वर का अलाप।
सुरति-(हिं०स्त्री०) स्मरण सुध, चेत;
सुरती-(हिं०स्त्री०) तमाखू के पत्तों का चूरा जो पान के साथ खाया जाता है।
सुरथान-(हिं०पुं०) स्वर्ग।
सुरदीर्घिका-(सं०स्त्री०) आकाशगंगा, मन्दाकिनी। **सुरदुन्दुभि**-(सं०स्त्री०) देवताओं का नगाड़ा।
सुरदेश-(हिं०पुं०) देवलोक, स्वर्ग।
सुरद्रुम-(सं०पुं०) कल्पवृक्ष।
सुरपथ--(सं०नपुं०) आकाश।
सुरवृच्छ-(हिं०पुं०) देखो सुरवृक्ष।
सुरबेल-(हिं०स्त्री०) कल्पलता।
सुरभवन-(सं०पुं०) सुरपुरी, अमरावती।
सुरभान-(हिं०पुं०) इन्द्र, सूर्य।
सुरभि-(सं०नपुं०) सुगन्ध, (वि०) सुगंधित, सुन्दर।
सुरभित-(सं०वि०) सुगंधित।
सुरभूप-(सं०पुं०) इन्द्र, विष्णु।
सुरभोग-(सं०पुं०) अमृत।
सुरभौन-(हिं०पुं०) देखो सुरभवन।
सुरमणि-(सं०पुं०) चिन्तामणि।
सुरम्य-(सं०वि०) बहुत सुन्दर।
सुरयान-(सं०पुं०) देवताओं का रथ।
सुरद्रुम-(हिं०पुं०) कल्पवृक्ष।
सुरलासिका-(सं०स्त्री०) वंसीकी ध्वनि
सुरलोक-(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुरलोकसुन्दरी-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुरवाणी-(सं०स्त्री०) संस्कृत भाषा।
सुरवास-(सं०पुं०) देवस्थान, स्वर्ग।
सुरवाहिनी-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
सुरविटप-(सं०पुं०) कल्पवृक्ष।
सुरस-(सं०वि०) स्वादिष्ट, सुन्दर, रसीला
सुरसती-(हिं०स्त्री०) देखो सरस्वती।
सुरसिन्धु-(सं०पुं०) गंगा।
सुरसुत-(सं०पुं०) देवपुत्र।
सुरसुन्दर-(सं०वि०) अत्यन्त सुन्दर।
सुरसुन्दरी-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुरसुरभी-(सं०स्त्री०) कामधेनु।
सुरसुराना-(हिं०क्रि०) खुजली होना।
सुरसुराहट, सुरसुरी-(हिं०स्त्री०) खुजली, गुदगुदी।
सुरसेना-(सं०स्त्री०) देवताओंकी सेना।
सुरहरा-(हिं०वि०) सुरसुर शब्द से युक्त
सुरही-(हिं०स्त्री०) सोलह चित्ती कौड़ियां जिससे जुआ खेला जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुरा-(सं०स्त्री०) मद्य, जल, पानी।
सुराई-(हिं०स्त्री०) शूरता, वीरता।
सुराग-(हिं०पुं०)सुन्दर राग,अत्यंत प्रेम
सुरगाय-(हिं०स्त्री०) एक प्रकारकी जंगली गाय जिसकी पूंछ का चमर बनता है; सुरागार, सुरागृह-(सं०नपुं०) मद्यगृह।
सुराङ्गना-(सं०स्त्री०) अप्सरा।
सुराचार्य-(सं०पुं०) बृहस्पति।
सुराज-(हिं०पुं०) देखो स्वराज्य।
सुराज्य-(सं०पुं०)वह राज्य या शासन जिसमें प्रजाको सुख और शांति मिले
सुराधिप, सुराधीश-(सं०पुं०) इन्द्र।
सुरानीक-(सं०पुं०) देवताओंकी सेना
सुरापान-(सं०पुं०) मद्य पीना।
सुरापगा-(सं०स्त्री०) गंगा नदी।
सुरासार-(सं०पुं०) मद्यसार।
सुरासुर-(सं०पुं०) देवता और दानव।
सुरीला-(हिं०वि०) मीठे सुरवाला।
सुरुख-(हिं०वि०) सदय, अनुकूल।
सुरुचि-(सं०पुं०) उत्तम रुचि, अत्यन्त प्रसन्नता।
सुरुचिर-(सं०वि०) अतिमनोहर।
सुरजमुखी-(हिं०पुं०) सूर्यमुखी।
सुरूप-(सं०वि०) सुन्दर, विद्वान्
सुरूपता-(सं०स्त्री०) सुन्दरता।
सुरूपा-(सं०वि०) सुन्दर रूप वाली।
सुचेन्द्रचाप-(सं०नपुं०) इन्द्रधनुष।
सुरैत-(हिं०स्त्री०) रखेली, उपपत्नी।
सुरैतिन-(हिं०स्त्री०) रखनी, रसेली।
सुरोचि-(हिं०वि०)सुन्दर, मनोहर।
सुरौकस-(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुर्ती, सुर्मा-देखो सुरती, सुरमा।
सुलक्षण-(सं०वि०) शुभ लक्षणोंसे युक्त भाग्यवान्।
सुलगना-(हिं०क्रि०) प्रज्वलित होना, दहकना। सुलगाना-(हिं०क्रि०)प्रज्वलित करना, जलाना, दुःखी करना।
सुलग्न-(सं०नपुं०) शुभ, मुहूर्त।
सुलच्छ-(हिं०वि०) सुन्दर।
सुलझन-(हिं०स्त्री०)सुलझाने की क्रिया या भाव। सुलझाना-(हिं०क्रि०) उलझन दूर होना। सुलझाव-(हिं०पुं०) सुलझने की क्रिया।
सुलभ-(सं०वि०) सहज में मिलने वाला, सुगम। सुलभता-(सं०स्त्री०) सुगमता।
सुलभेतर-(सं०वि०) दुर्लभ, कठिन; मँहगा।
सुलभ्य-(सं०वि०)सहज में मिलनेवाला
सुललित-(सं०वि०) अत्यन्त सुन्दर।
सुलाना-(हिं०क्रि०) सोनेमें प्रवृत्त करना;
सुलिखित-(सं० वि०) अच्छी तरह लिखा हुआ।
सुलेख-(सं०पुं०) सुन्दर लिखावट।
सुलेखक-(सं० पुं०) अच्छा लेख या निबन्ध लिखने वाला।
सुलोक-(सं०पुं०) स्वर्ग।
सुलोचन-(सं०वि०) सुन्दर आँखोंवाला
सुलोचनी-(हिं०वि०) सुन्दर नेत्रवाली
सुवक्त्र-(सं०वि०) जिसकी छाती सुन्दर और चौड़ी हो।
सुवदन-(सं०वि०) सुन्दर मुख वाला।
सुवना-(हिं०पुं०) सुग्गा।
सुवर्ण-(सं०नपुं०) सोना, कांचन;
सुवर्णकर्ता, सुवर्णकार-(सं० पुं०) सोनार;
सुवर्तुल-(सं०वि०) एकदम गोल।
सुवर्त्म-(सं०नपुं०) सीधा पथ।
सुवसन-(सं०नपुं०) उत्तम वस्त्र।
सुवा-(हिं०पुं०) सुग्गा।
सुवाक्य-(सं०पुं०) मधुर भाषा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुवास-(सं०पुं०) अच्छी गन्ध, सुन्दर घर
सुवासित-(सं०वि०) सुगन्ध युक्त।
सुवासिनी-(सं०स्त्री०) सधवा स्त्री।
सुविक्रम-(सं०वि०) अत्यन्त साहसी।
सुविचक्षण-(सं०वि०) बहुत प्रसिद्ध।
सुविख्यात-(सं०वि०) बहुत बुद्धिमान्।
सुविचार-(सं०पुं०) उत्तम विचार।
सुवितत-(सं०वि०) अच्छी तरह फैला हुआ।
सुविदग्ध-(सं०वि०) बहुत चतुर।
सुविदित-(सं०वि०)अच्छी तरह जाना हुआ।
सुविधा-(हिं०स्त्री०)देखो सुभीता।
सुविधान-(सं०नपुं०) अच्छा नियम।
सुविनीत-(सं०वि०) अत्यन्त नम्र।
सुवेश-(सं०वि०)सुन्दर वेशसे सुसज्जित
सुवैया-(हिं०वि०) सोने वाला।
सुवो-(हिं०पुं०) शुक, सुग्गा।
सुव्यक्त-(सं०वि०) बहुत स्पष्ट।
सुव्यवस्थित-(सं०वि०)जिसकी व्यवस्था अच्छी तरह से की गई हो।
सुव्याहृत-(सं०वि०) अच्छी तरहसे कहा हुआ।
सुशरीर-(सं०वि०) सुडौल शरीरवाला।
सुशासित-(सं०वि०) अच्छी तरह से शासित।
सुशिक्षित-(सं०वि०) उत्तम रूप से शिक्षित।
सुशील-(सं०वि०) विनीत, नम्र, सरल, सीधा। **सुशीलता**-(सं०स्त्री०)नम्रता।
सुशोभन-(सं०वि०) अत्यन्त शोभा युक्त, दिव्य; **सुशोभित**-(सं० वि०) अत्यन्त शोभायमान।
सुश्रुत-(सं०वि०) प्रसिद्ध।
सुश्रुखा-(हिं०स्त्री०)देखो शुश्रूषा।
सुश्रुत-(सं०वि०) प्रसिद्ध।
सुश्रूषा-(हिं०स्त्री०) देखो शुश्रूषा।
सुश्लिष्ट-(सं०वि०) अति दृढ़।
सुष-(हिं०पुं०) देखो सुख।
सुषमा-(सं०स्त्री०)परम शोभा, अत्यन्त सुन्दरता।
सुषमाशाली-(सं०वि०) जिसमें अधिक शोभा हो।
सुषुप्त-(सं०वि०) गहरी नींद में सोता हुआ; **सुषुप्ति**-(सं०स्त्री०)गहरी नींद हुआ; **सुषोपित**-(सं०स्त्री०)गहरी नींद **सुषोपति**-(हिं०स्त्री०)देखो सुषुप्ति।
सुष्ठुता-(सं०स्त्री०) सौभाग्य, कल्याण, सुन्दरता।
सुसकना-(हिं०क्रि०) देखो सुसुकना
सुसंग-(सं०पुं०) उत्तम संगति।
सुसंगति-(सं०वि०)सत्संग,अच्छी संगत।
सुसङ्गृहीत-(सं०वि०)अच्छी तरह से संग्रह किया हुआ।
सुसज्जित-(सं०वि०) अच्छी तरह से सजाया हुआ।
सुसताना-(हिं०क्रि०) श्रम मिटाना।
सुसर, सुसुर-(हिं०पुं०) देखो ससुर।
सुसराल-(हिं०स्त्री०)ससुर का घर।
सुसरित्-(हिं०पुं०)मन्दाकिनी,गंगा।
सुसा-(हिं०स्त्री०) स्वसा, बहन।
सुसाध्य-(सं०वि०) जिसका साधन सहज में किया जा सके।
सुसाना-(हिं०क्रि०) सिसकना।
सुसिकता-(सं०स्त्री०) उत्तम बालू।
सुसीभ-(हिं०वि०) शीतल, ठंढा।
सुसुकना-(हिं०क्रि०) देखो सिसकना।
सुसूक्ष्म-(सं०वि०) अति सूक्ष्म।
सुस्थ-(हि.वि.) नीरोग, स्वस्थ। **सुस्थता**-(सं०स्त्री०) आरोग्य, आनन्द।
सुस्थित-(सं०वि०)अविचल, दृढ़, स्वस्थ, नीरोग। **सुस्थिति**-(सं०स्त्री०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आनन्द। **सुस्थिर**-(सं०वि०) प्रसन्नता अविचल, दृढ़।
सुस्वन-(सं०वि०) उत्तम शब्द या ध्वनि
सुस्वप्न-(सं०पुं०) शुभ स्वप्न।
सुस्वर-(सं०पुं०) उत्तम स्वर,सुरीला।
सुहंगम-(हिं०वि०) सहज, सरल।
सुहटा-(हिं०वि०) सुन्दर, सुहावना।
सुहड़-(हिं०पुं०) सुभट, शूर, वीर। **सुहाग**-(हिं०पुं०) स्त्री की सधवा रहने की अवस्था, सौभाग्य। **सुहागिन**-(हिं० स्त्री०) सधवा स्त्री। **सुहागिनी, सुहागिन**-(हिं० स्त्री०) सुहागिन।
सुहाना-(हिं०क्रि०)शोभा देना, अच्छा लगना।
सुहाल-(हिं०पुं०) मैदे का बना हुआ एक प्रकार का नमकीन पकवान।
सुहाव-(हिं०वि०) सुन्दर, सुहावना।
सुहावन, सुहावना-(हिं०वि०) सुन्दर, रमणीक।
सुहास, सुहासी-(हिं० वि०) सुन्दर मुस्कान वाली।
सूह-(सं०पुं०) उग्रसेन के एक पुत्र।
सुहृत्, सुहृद्-(सं०पुं०) मित्र, बन्धु, सखा (वि०) अच्छे हृदय वाला।
सुहृदय-(सं०वि०) सहृदय, स्नेहशील।
सुहला-(हिं०वि०) सुखदायक, सुन्दर,
सूं-(हिं०अव्य०) तृतीया और पंचमी विभक्ति का चिह्न, सों, से।
सूंघना-(हिं०क्रि०) मँहक लेना।
सूंधा-(हिं०पुं०) भेदिया।
सूंड-(हिं०पुं०) हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती है और भूमि तक लटकती रहती है, शुण्डादण्ड, शुण्ड।
सुंडा-(हिं०पुं०) हाथी का सूँड।
संस-(हिं०स्त्री०) एक बड़ा जल जन्तु।
सूंह-(हिं०अव्य०) सन्मुख, सामने।
सूअर-(हिं०पुं०) शूकर।
सूआ-(हिं०पुं०) बड़ी सूई, सूजा,सुग्गा,
सूई-(हिं०स्त्री०) महीन काँटा, कपास अनाज आदि का अँखुआ,सूई के आकार की कोई वस्तु।
सूक-(हिं०पुं०) देखो शुक, शुक्र।
सूकना-(हिं०क्रि०) सूखना।
सूकर-(सं०पुं०) शूकर, सूअर।
सूकरी-(सं०स्त्री०) शूकरी, सुअरी।
सूका-(हिं०पुं०) चार आने के मूल्य की मुद्रा, चवन्नी।
सूक्त-(सं०वि०)अच्छी तरह कहा हुआ (पुं०) उत्तम कथन, उत्तम भाषण।
सूक्ष्म-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म।
सूक्ष्म-(सं०वि०) बहुत महीन (पुं०) परिमाण, । **सूक्ष्मकोण**-(हिं०पुं०) समकोण से छोटा कोण।
सूक्ष्मदर्शक यन्त्र-(सं० नपुं०) अणुवीक्षण यन्त्र, वह यन्त्र जिससे सूक्ष्म पदार्थ बड़े देख पड़ते हैं;
सूक्ष्मदर्शिता-(सं०स्त्री०) सूक्ष्म बातों को सोचने समझने का गुण; **सूक्ष्मदर्शी**-(सं०वि०) सूक्ष्म बातों को समझने वाला। **सूक्ष्मदृष्टि**-(सं०स्त्री०) वह जो सूक्ष्मता समझता हो; **सूक्ष्ममति**-(सं० वि०) तीक्ष्ण बुद्धि; **सूक्ष्मवस्त्र**-(सं०नपुं०)महीन कपड़ा।
सुखना-(हिं०क्रि०)गीलापन हट जाना, रसहीन होना, नष्ट होना, दुर्बल होना
सूखा-(हिं०वि०) जिसमें जल का अंश न रह गया हो, तेज रहित, कठोर, केवल, (पुं०) पानी का न बरसना, दुर्बलता, जलहीन स्थान,
सूचक-(सं०वि०) सूचना देने वाला, ज्ञापक, बोधक, गुप्तचर, भेदिया,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूचना-(सं०स्त्री०) विज्ञप्ति, ज्ञापन। **सूचनापत्र**-(सं०पुं०) विज्ञापन, विज्ञप्ति; **सूचनीय**-(सं०वि०) सूचना करने योग्य।

सूचि-(हिं०वि०) पवित्र, शुद्ध। **सूचिक**-(सं०पुं०) दरजी; **सूचिका**-(सं० स्त्री०) सूई।

सूचित-(सं०वि०) ज्ञापित, बतलाया हुआ

सूचिभेद्य-(सं०वि०) बहुत घना। दृष्टि, भेदिया। **सूचीकर्म**-(सं०पुं०) सिलाई का काम; **सूचीपत्र**-(सं०पुं०) तालिका।

सूच्छम, सूच्छिम-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म

सूच्याकार-(सं०वि०) सूई के आकार का लंबा और नुकीला।

सूछम-(हिं०वि०) देखो सूक्ष्म।

सूजन-(हिं०स्त्री०) शोथ, फुलाव।

सूजना-(हिं०क्रि०) शोथ होना।

सूजा-(हिं०पुं०) मोटी बड़ी सूई।

सूजी-(हिं०स्त्री०) गेहूँ का दरदरा आंटा

सूझ-(सं०स्त्री०) दृष्टि, उद्भावना; **सूझना**-(हिं०क्रि०) देख पड़ना, ध्यान में आना।

सूत-(सं०पुं०) सारथि, बढ़ई, सूत्रकार

सूत-(हिं०पुं०) कपड़ा बुनने का धागा, तार, तन्तु, तागा,

सूतक-(सं०नपुं०) वह अशौच जो सन्तान होने पर परिवारवालों को होता है, मरणा शौच जो परिवार में परिवार में किसी के मरने पर होता है; **सूतकी**-(सं०स्त्री०) जिसको सूतक लगा हो।

सूतधार-(हिं०पुं०) बढ़ई।

सूतना-(हिं०क्रि०) निद्रा लेना, सोना।

सूता-(हिं०पुं०) तन्तु, सूत, (स्त्री०) वह स्त्री जिसने बच्चा जना हो।

सूतिका-(सं०स्त्री०) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो; **सूतिकागार, सूतिकागृह**-(सं०नपुं०) प्रसव गृह, सौरी।

सूतिगृह-(सं०नपुं०) देखो सूतिकागार

सूती-(हिं०वि०) सूत का बना हुआ

सूत्र-(सं०नपुं०) तन्तु, सूत, तागा, जनेऊ, व्यवस्था, नियम, कारण, मूल, पता, थोड़े, अक्षरों या शब्दों में कहा हुआ ऐसा पद या वचन जो बहुत अर्थ प्रकट करता हो। **सूत्रकार**-(सं. पुं०) सूत्रों की रचना करने वाला, बढ़ई; **सूत्रग्रन्थ**-(सं०पुं०) मूल सूत्र में रचित ग्रन्थ; **सूत्रधार**-(सं०पुं०) नाटचशाला का व्यवस्थापक या प्रधान नट।

सूथनी-(हिं०स्त्री०) स्त्रियों के पहरने का पायजामा, सुथना।

सुथार-(हिं०पुं०) बढ़ई, सुनार।

सूद-(सं०पुं०) सूपकार, रसोइयादार।

सूदक-(सं०वि०) नाश करने वाला।

सूदशाला-(हिं०स्त्री०) रसोई घर।

सूदन-(सं०नपुं०) वर्गीकार करने की क्रिया, वध, नाश।

सूदना-(हिं०क्रि०) नाश करना।

सूदशाला-(सं०स्त्री०) पाकशाला; **सूदी**-(सं०नपुं०) पाकशास्त्र।

सूदी-(हिं०वि०) व्याजपर लिया हुआ।

सूधा-(हिं०वि०) सीधा, सरल, **सूधे**-(हिं०क्रि०वि०) सीधे से।

सून-(सं०नपुं०) प्रसव, फल, पुत्र (वि०) फूला हुआ, विकसित, उत्पन्न।

सूनसान-(हिं०वि०) निजन।

सूना-(हिं० वि०) जनहीन, (पुं०) निर्जन, स्थान; **सूनापन**-(हिं०पुं०) एकान्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूनु-(सं०पुं०) सूर्य, पुत्र, बेटा।
सूनृत-(सं०वि०) सत्य और प्रिय, दयालु; **सूनृता**-(सं०स्त्री०) सत्य और प्रिय भाषण, सत्य।
सूप-(सं०पुं०) पकी हुई दाल, रसदार तरकारी, वाण, तीर; **सूप**-(हिं०पुं०) अनाज फटकने का सींक का डगरा।
सूपक-(हिं०पुं०) रसोइयादार।
सूपनखा-(हिं०स्त्री०) देखो शूर्पणखा।
सूपशास्त्र-(सं०पुं०) पाकशास्त्र; **सूप-स्थान**-(सं०नपुं०) पाकशाला।
सूपा-(हिं०पुं०) शूर्प, सूप।
सूभर-(हिं०वि०) शुभ्र, सुन्दर, सफेद।
सूरज-(हिं०वि०) सूरवीर; **सूरकन्द**-(सं०पुं०) जमीकन्द, सूरन।
सूर-(हिं०पुं०) सूर्य।
सूरजमुखी-(हिं०पुं०) एक पौधा जिसमें पीले रंग के बड़े फूल लगते हैं, सूर्यास्त के समय यह फूल नीचे को झुकजाता है और सूर्योदय होने पर फिर से उठने लगता है।
सूरण-(सं०पुं०) जमीकन्द, ओल।
सूरता,सूरताई-(हिं०स्त्री०) देखो शूरता
सूरति-(हिं०स्त्री०) स्मरण, सुध, सूरत
सूरन-(हिं०पुं०) जमीकन्द, ओल।
सूपनखा-(हिं०स्त्री०) देखो शूर्पनखा
सूरि-(सं०पुं०) पण्डित, विद्वान्, सूर्य।
सूरी-(सं०स्त्री०) पंडिता, विदुषी।
सूरुज-(हिं०पुं) देखो सूर्य।
सूर्प-(सं०पुं०) शूर्प, सूप।
सूर्य-(सं०पुं०) रवि ग्रह, सूरज; **सूर्य-कमल**-(सं०पुं०) सूरजमुखी का फूल; **सूर्यकान्त**-(सं०पुं०) सूर्यमणि; **सूर्य-पत्नी**-(सं० स्त्री०) छाया। **सूर्य-पाद**-(सं०पुं०) सूर्य की किरण। **सूर्यमण्डल**-(सं०नपुं०) सूर्य का घेरा **सूर्यरश्मि**-(सं०पुं०) सूर्य की किरण। **सूर्यवल्लभा**-(सं० स्त्री०) कमलिनी-**सूर्यवार**-(सं०पुं०) रविवार। **सूर्यास्त**-(सं०नपुं०) सूर्य के डूबने के समय। **सूर्योदय**-(सं०नपुं०) सूर्य के निकलने का समय, प्रातःकाल।
सूल-(हिं०पुं०) बरछा, भाला, कोई चुभनेवाली नुकीली वस्तु, भाला चुभने के समान पीड़ा। **सूलना**-(हिं-क्रि०) भाल से छेदना या छिदना, पीड़ित होना।
सूली-(हिं०स्त्री०) प्राणदण्ड देने की एक प्राचीन रीति जिसमें अपराधी नुकीले डंडे के ऊपर बैठा दिया जाता था और उसके मस्तक पर चोट दी जाती थी, फाँसी।
सूवना-(हिं०क्रि०) बहना।
सूवा-(हिं०पुं०) शुक, सुग्गा।
सूस, सूसमार(हिं०पुं०) शिशुमार।
सृंखला-(हिं०स्त्री०) देखो शृंखला।
सृङ्ग-(हिं०पुं०) देखो शृंग।
सृक-(सं०पुं०) माला।
सृगाल-(सं०पुं०) सियार, गीदड़।
सृगालिनी, सृगालीनी-(सं० स्त्री०) सियारिन, लोमड़ी।
सृजक-(हिं०पुं०) सृष्टि करने वाला,
सृजन-(हिं०पुं०) सृष्टि करनेकी क्रिया
सृजनहार-(हिं०पुं०) सृष्टिकर्ता।
सृजना-(हिं०क्रि०) सृष्टि करना।
सृष्टि-(सं० स्त्री०) निर्माण, रचना, जगत की उत्पत्ति, संसार। **सृष्टि-कर्ता**-(सं० पुं०) संसार की रचना करनेवाले ब्रह्मा, ईश्वर। **सृष्टि-विज्ञान**-(सं०पुं०) वह शास्त्र जिसमें सृष्टि रचना आदि का विचार हो।
सेंक-(हिं०स्त्री०) भूनने या सेंकने की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रिया या भाव। **सेंकना**-(हिं०क्रि०) आंच के समीप अथवा आग पर रख कर भूनना।
सेंगरा-(हिं०पुं०) वह मोटा डंडा जिस-पर लटका कर भारी पत्थर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।
सेंत-(हिं०स्त्री०) कुछ व्यय न होना, पास का कुछ न लगना।
सेंथी-(हिं०पुं०) बरछी, भाला।
सेंदुर-(हिं०पुं०) देखो सिन्दूर।
सेंध-(हिं०स्त्री०) चोरी करने के लिये भीत तोड़कर बनाया हुआ छेद
सेंधा-(हिं०पुं०) सैन्धव, लाहौरी नमक
सेंधिया-(हिं०वि०) भीत में सेंध लगाने वाला।
सेंधुर-(हिं०पुं०) देखो सेंदुर, सिन्दूर।
सेंवई-(हिं०स्त्री०) मैदे के सुखाये हुए सूत के समान महीन लच्छे जो घी में तल कर तथा दूध में खीर बनाकर खाये जाते हैं।
सेंहुड़-(हिं०पुं०) थूहर।
से-(हिं०) करण और अपादान कारक का चिह्न, तृतीया और पंचमी की विभक्ति, (हिं०वि०) समान, सदृश, (सर्व०) वे, (स्त्री०) सेवा।
सेउ-(हिं०पुं०) देखो सेब।
सेक-(सं०पुं०) जल सिञ्चन, सिंचाव,
सेकतव्य-(सं०वि०) सींचने योग्य
सेखर-(हिं०पुं०) देखो शेखर।
सेचक-(सं०वि०) सींचनेवाला, (पु०) मेघ, बादल। **सेचन**-(सं०नपुं०) सिंचाई, छिड़काव। **सेचनीय**-(सं० वि०) सीचने योग्य। **सेचित**-(सं० वि०) सींचा हुआ।
सेज-(सं०स्त्री०) शय्या, पलंग, बिछौना।
सेझना-(हिं०क्रि०) दूर होना, हटना।
सेटना-(हिं०क्रि०) समझना बूझना,
सेठ-(हिं०पुं०) महाजन, साहूकार।
सेत-(हिं०पुं०) देखो सेतु, श्वेत।
सेतफी-सेतवाह-(हिं०पुं०) चन्द्रमा।
सेतु-(सं०पुं०) बाँध, मेड़, पुल, सीमा, मर्यादा, व्यवस्था, टीका। **सेतुकर**-(सं०त्रि०) पुल बनाने वाला।
सेद-(हिं०पुं०) देखो स्वेद, पसीना।
सेनप-(सं०पुं०) सेनापति।
सेना-(सं०स्त्री०) युद्ध की शिक्षा पाये हुए अस्त्र शस्त्र से सुसज्जित मनुष्यों का समूह, (हिं०क्रि०) सेवा टहल करना, लिये बैठे रहना, चिड़ियों का अंडे पर बैठना। **सेसाजीवी**-(सं०पुं०) सैनिक, योद्धा। **सेनाधिप**-(सं०पुं०) सेनापति। **सेनानायक**-(सं-पुं०) सेनापति। **सेनापति**-(सं०पुं०) सेना नायक।
सेनि-(हिं०स्त्री०) देखो श्रेणी।
सेन्द्रिय-(सं०वि०) जिसमें इन्द्रियां हों, सजीव।
सेम-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की फली जिसकी तरकारी खाई जाती है।
सेर-(हिं०पुं०) सोलह छटाँक की तौल, मन का चालीसवां भाग, सिंह।
सोरही-(हिं०स्त्री०) वे सोलह कौड़ियाँ जिनसे जुआ खेलाता है।
सेराना-(हिं०क्रि०) ठंढा होना, तृप्त होना।
सेल-(हिं०पुं०) भाला, बरछा।
सेलखड़ी-(हिं०स्त्री०) खड़िया मिट्टी।
सेलना-(हिं०क्रि०) मर जाना।
सेला-(हिं०पुं०) रेशमी चादर या दुपट्टा, साफा।
सेली-(हिं०स्त्री०) छोटा भाला, बरछी,
सेल्हा-(हिं०पुं०) देखो सेला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सेल्ही-(हिं०स्त्री०) छोटा डुपट्टा, गांती।
सेवइं-(हिं०स्त्री०) गुँथे हुए मैदे के सूत के समान लच्छे जो घी में भून कर तथा दूधमें खीर की तरह पका कर खाये जाते हैं।
सेव-(हिं०पुं०) सूत के रूप का बेसन का बना हुआ एक पक्वान्न।
सेवक-(सं०पुं०)भृत्य, भक्त,उपासक।
सेवकाई-(हिं०स्त्री०)सेवा, टहल।
सेवड़ा-(हिं०पुं०) एक प्रकारका मोटा सेव।
सेवति-(हिं०स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवती-(सं०स्त्री०) गुलाब का एक भेद जो सफेद होता हैं।
सेवन-(सं०नपुं०) सीना, आराधना, पूजन, उपभोग, प्रयोग, सेवा परिचर्या।
सेवना-(हिं०पुं०) देखो सेना।
सेवनी-(हिं०स्त्री०) सूची, सूई टांका, दासी।
सेवा-(सं०स्त्री०) टहल, चाकरी, आराधना,पूजा; **सेवाजन**-भृत्य; **सेवाटहल**-(हिं० पुं०) परिचर्या, शुश्रूषा।
सेवाती-(वि०स्त्री०) देखो स्वाती।
सेवाधारी-(हिं०पुं०) पुजारी।
सेवापन-(हिं०पुं०) दासत्व, टहल।
सेवार,सेवाल-(हिं०स्त्री०) बालों की लच्छों की तरह पानी में फैलने वाली एक प्रकार की घास, शैबाल।
सेवावृत्ति-(सं०स्त्री०) दासत्व।
सेवित-(सं०वि०) परिचर्या या सेवा किया हुआ, आराधित,। **सेवितव्य**-(सं०क्रि०) सेवा के योग्य
सेवी-(सं०वि०) सेवा या आराधना करने वाला
सेव्य-(सं०वि०) आराधना करने योग्य,
सेस-(हिं०वि०) देखो शेष।
सेसनाग-(हिं०पुं०) देखो शेषनाग।
सेसर-(हिं०पुं०) छल कपट।
सेसरिया-(हिं०पुं०) छल से दूसरे का धन अपहरण करने वाला।
सेहथना-(हिं०क्रि०) झाड़ना, बुहारना
सेहरा-(हिं०पुं०)विवाह का मुकुट,मौर।
सेहुंआ-(हिं०पुं०) एक प्रकार का चर्म रोग जिसमें शरीर पर भूरे चिह्न पड़ जाते हैं।
सेहुंड़-(हिं०पुं०) थूहर।
सैंतना-(हिं०क्रि०) संचित करना, बटोरना।
सैंतालिस-(हिं० वि०) जो संख्या में चालीस और सात हो (पुं०) चालीस और सात की संख्या **सैंतालीसवाँ**-(हिं० वि०) जिसका स्थान सैंतालीस पर हो।
सैंतिस,सैंतीस-(हिं०वि०) जो संख्या में तीस और सात हो (पुं०) तीस और सात की संख्या ३७; **सैंतीसवाँ**-(हिं०वि०) जिसका स्थान सैंतीस पर हो।
सैथी-(हिं०स्त्री०) भाला।
स-(हिं०स्त्री०) तत्व, सार, शक्ति लाभ, वृद्धि, बढ़ती, (पुं०) शत, सौ।
सैकड़ा-(हिं०पुं०)सौ का समूह; **सैकड़े** (हिं०क्रि०वि०) प्रतिशत; **सैकड़ों**-(हिं०वि०)कई सौ, गिनती में बहुत।
सैन-(हिं०स्त्री०) संकेत, इंगित, चिह्न
सैनपति-(हिं०पुं०) सेनापति।
सैना-(हिं०स्त्री०) सेना; **सैनानीक**-**सैनिक**-(सं०पुं०)सेना का सिपाही, (वि०) सेना संबंधी।
सैनू-(हिं०पुं०)एक प्रकार का बूटेदार कपड़ा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सैन्धव-(सं०पुं०) सेंधा नमक।
सैन्य-(सं०नपुं०)सेना, शिबिर, छावनी (वि०) सेना संबंधी; **सैन्यनायक**-(सं०पुं०) सेनापति।
सैयाँ-(हिं०पुं०) स्वामी,पति।
सैल-(हिं०पुं०) देखो शैल, जल की बाढ़, स्रोत, बहाव।
सैला-(हिं०पुं०) लकड़ी का छोटा डंडा, मेख, गुल्ली, मुंगरी, चैला।
सैलानी-(हिं०वि०) आनन्दी, मनमौजी।
सैली-(हिं०स्त्री०) छोटा सैला, टोकरी।
सैसव-(हिं०पुं०) देखो शैशव।
सैहथी-(हिं०स्त्री०) शक्ति, बरछी।
सों-(हिं०अव्य०) देखो सौंह, (क्रि० वि०) संग, साथ, (सर्व०) सो; (प्रत्य०) द्वारा, से।
सोंच-(हिं०पुं०) देखो सोच।
सोंचर नमक-(हिं०पुं०क्ल) काला नमक।
सोंटा-(हिं०पुं०) मोटा डंडा, लाठी,
सोंठ-(हिं०स्त्री०) सुखाया हुआ अदरख,
सोंधा-(सं०वि०) सुगन्धित,
सोंपना-(हिं०क्रि०) देखो सौंपना।
सो-(हिं०सर्व०) वह अव्य अतएव, इस लिये।
सोऽहम-(सं०) संस्कृत का एक वाक्य जिसका अर्थ "वही मैं हूँ"
सोअना-(हिं०क्रि०) निद्रा लेना।
सोई-(हिं०स्त्री०) वह गड्ढा जहांपर बरसात या बाढ़ का पानी रुक जाता है, डाबर (सर्व०) वही, (अव्य०) देखो सो।
सोक-(हिं०पुं०)देखो शोक; **सोकना**-(हिं०क्रि०) देखो सोखना; शोक करना।
सोखन-(हिं०वि०) सोखने वाला; **सोखना**-(हिं०क्रि०) रस खींच लेना, चूस लेना; **सोखाई**-(हिं०स्त्री०)सोखने की क्रिया या भाव।
सोगन-(सं०स्त्री०) सौगंद, शपथ।
सोगनी-(हिं०स्त्री०) शोककरने वाली,
सोगी-(हिं०पुं०) चिन्ता, दुःख, पश्चात्ताप; **सोचना**-(हिं०क्रि०) चिन्ता करना, विचार करना, दुःख करना।
सोटा-(हिं०पुं०) देखो सोंटा।
सोढर-(हिं०पुं०) मूर्ख।
सोढव्य-(सं०वि०) सहन करने योग्य।
सोणत-(हिं०पुं०) रुधिर।
सोत-(हिं०पुं०) देखो श्रोत, सोता।
सोता-(हिं०पुं०) जल की निरन्तर बहने वाली छोटी धारा, झरना, शाखा सोति।
सोदर-(सं०पुं०) सहोदर, सगाभाई।
सोदरा,सोदरी-(सं०स्त्री०) सगी बहिन
सोद्वेग-(सं०वि०) विचलित, चिन्तित।
सोधक-(हिं०पुं०) शोधने वाला; **सोधन**-(हिं०पुं०) ढूंढ़; सोधना (हिं०क्रि०)शुद्ध करना, दोष हटाना, **सोधाना**--(हिं०क्रि०) शुद्ध कराना।
सोनहला-(हिं०पुं०) देखो सुनहला।
सोना-(हिं० पुं०) सुवर्ण, अत्यन्त बहुमूल्य वस्तु, बहुत मँहगी वस्तु, (हिं०क्रि०) नींद लेना।
सोनार-(हिं०पुं०) देखो सुनार।
सोनित-(हिं०पुं०) देखो सुनार।
सोनित-(हिं०पुं०) देखो शोणित, रुधिर
सोपम-(हिं०पुं०) सुविधा, सुख का प्रबंध।
सोमप-(सं०वि०) उपमा युक्त।
सोपान-(सं०नपुं०) सीढी।
सोपि-(सं०अव्य०) वही, वह भी।
सोफता-(हिं०पुं०) एकान्त या निर्जन स्थान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोभ-(हिं०पुं०) देखो शोभा; **सोभन**-(हिं०पुं०) देखो शोभन;- **सोभना**-(हिं०क्रि०) शोभित होना।

सोभा-(हिं०स्त्री०) देखो शोभा।

सोम-(सं०नपुं०)स्वर्ग, आकाश, (पुं०) सोमवार, चन्द्रमा, अमृत, **सोमकान्त** (सं०पुं०) चन्द्रकांतमणि; **सोमक्षय**-(सं०पुं०) अमावस्या।

सोमल-(हिं०पुं०) संखिया विष का एक भेद।

सोमवार-(सं०पुं०) चन्द्रवार।

सोमवारी-(हिं०स्त्री०) सोमवार संबंधी

सोय-(हिं०सर्व०) सो, वही।

सोर-(हिं०स्त्री०) मूल, जड़।

सोरठा-(हिं०पुं०)अड़तालीस मात्राओं का एक छन्द।

सोरह-(हिं०वि०) देखा सोलह।

सोरही-(हिं०स्त्री०) सोलह कौड़ियों से खेला जाने वाला जुआ।

सोरा-(हिं०पुं०) शोरा।

सोरी-(हिं०स्त्री०) पात्र में महीनछेद जिसमें से होकर पानी टपक कर बह जाता है।

सोलह-(हिं०वि०) दस और छ की संख्या का (पुं०) दस और छ की संख्या १६; **सोलहवाँ**-जिसका स्थान पन्द्रह के बाद हो।

सोलाना-(हिं०क्रि०) देखो सुलाना।

सोल्लास-(सं०वि०) आनन्द पूर्वक।

सोवना-(हिं०स्त्री०) निद्रा लेना।

सोवाना-(हिं०क्रि०) देखो सुलाना।

सोवैया-(हिं०पुं०) सोने वाला।

सोहन-(हिं०वि०) शोभन, अच्छा लगने वाला।

सोहन पपड़ी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरे के रूप में बनाई जाती है; **सोहन हलवा**-(हिं०पुं०) एक प्रकार की मेवा आदि पड़ी हुई कतरे के रूप में बनी हुई मिठाई।

सोहना-(हिं०क्रि०) शोभित होना, सजना, खेत में उगी हुई घास को काट कर अलग करना, निराना।

सोहनी-(हिं०स्त्री०) झाड़ू, 'बुहारी' खेत में की घास निकालने की क्रिया।

सोहर-(हिं०पुं०)एक प्रकार की गीत जिसको स्त्रियां घर में बच्चा पैदा होने पर गाती हैं।

सोहराना-(हिं०क्रि०)शरीर पर हाथ फेरना।

सोहला-(हिं०पुं०)मांगलिक गीत,सोहर,

सोहाइन-(हिं०वि०)सुहावना, सुन्दर।

सोहाई-(हिं०स्त्री०)निराने का वेतन।

सोहाग-(हिं०पुं०) सुहाग, सौभाग्य।

सोहागा-(हिं०पुं०) टंकण क्षार।

सोहागिनी,सोहागिन-(हिं०स्त्री०)देखो सुहागिन।

सोहाता-(हिं०वि०) सुहावना, अच्छा।

सोहाना-(हिं०क्रि०) शोभित होना, सजना,

सोहारद-(हिं०पुं०) देखो सौहार्द्र।

सोहाल-(हिं०पुं०) देखो सुहाल।

सोहिनी-(सं० स्त्री०) शोभायमान, सुन्दर।

सोंहीं,सोहैं-(हिं०क्रि०)सन्मुख, सामने

सौं-(हिं०स्त्री०) (प्रत्य०) सौ, सा।

सौंचना-(हिं०क्रि०)मल त्याग करना, हाथपैर धोना।

सौंतुख-(हिं०पुं०) प्रत्यक्ष, सन्मुख, (क्रि०वि०) आँख के सामने।

सौंदना-(हिं०स्त्री०) कपड़ों को रेह के पानी में भिगोना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सौंदर्ज-(हिं०पुं०) देखो सौन्दर्य
सौंदर्य-(हिं०पुं०) सुन्दरता ।
सौंपना-(हिं०क्रि०) सहेजना ।
सौंर-(हिं०पुं०) देखो सौरी ।
सौंराना-(हिं०क्रि०) सँवारना ।
सौंह-(हिं०पुं०) शपथ, सौगन्ध ।
सौ-(हिं०वि०) नव्वे और दस की संख्या का (पुं०) नव्वे और दस की संख्या ।
सौकर्य-(सं०नपुं०) सुवधा, सुकरता ।
सौकुमार-(सं०नपुं०) सुकुमारता, कोमलता ।
सौख्य-(सं०नपुं०) सुख, सुखता ।
सौगन्द-(हिं०स्त्री०) शपथ ।
सौगन्ध-(सं०नपुं०) सुगन्ध ।
सौगम्य-(सं०नपुं०) सुगमता ।
सौगात-(सं०स्त्री०) इष्ट मित्रों को देने के लिये परदेश से लाई हुई वस्तु,
सौच-(हिं०पुं०) देखो शौच ।
सौचिक-(सं०पुं०) दरजी ।
सौज-(हिं०स्त्री०) उपकरण, सामग्री, (वि०) वलवान् ।
सौजन्य-(सं०नपुं०) सुजनता, भलमनसी
सौजन्यता-(हिं०पुं०) देखो सौजन्य ।
सौत-(हिं०स्त्री०) किसी स्त्री के पति या प्रेमी की दूसरी स्त्री या प्रेमिका ।
सौतुक-(हिं०पुं०) सन्मुख, सामने ।
सौतेला-(हिं०वि०) सौत से उत्पन्न,
सौदामिनी-(सं०स्त्री०) विद्युत् बिजली ।
सौधना-(हिं०क्रि०) नाना ।
सौनिक-(सं०पुं०) मास वेंचने वाला, वहेलिया ।
सौन्दर्य-(सं०नपुं०) सुन्दरता ।
सौपना-(हिं०क्रि०) देखो सौंपना ।
सौभागिनी-(हिं०स्त्री०) सोहागिन ।
सौभाग्य-(सं०नपुं०) अच्छा भाग्य, सुख, आनन्द, स्त्री का सधवा होना, सुन्दरता, ऐश्वर्य,
सौभाग्यवती(सं०वि०) वह स्त्री जिसका पति जीवित हो, अच्छे भाग्य वाली ।
सौभाग्यवान्-(सं०वि०) अच्छे भाग्य वाला ।
सौरी-(हिं०स्त्री०) प्रसूतिका गृह ।
सौलभ्य-(सं०पुं०) सुलभता ।
सौशील्य-(सं०नपुं०) शुद्ध स्वभाव, साधुता ।
सौश्रय-(सं०पुं०) ऐश्वर्य, विभव ।
सौष्ठव-(सं०नपुं०) उपयुक्तता, सुन्दरता ।
सौहं-(हिं०स्त्री०) शपथ, (क्रि०वि०) सामने, आगे ।
सौहार्द्र-(सं०नपुं०) मित्रता, मैत्री ।
सौहृद-(सं०नपुं०) मित्रता, (वि०) मित्र संवंधी ।
स्कन्दफला-(सं०स्त्री०) खजूर ।
स्तन्दित(सं०वि०) पतित, गिरा हुआ,
स्कन्दी-(सं०वि०) उछलने कूदने वाला ।
स्कन्ध-(सं०पुं०) ग्रन्धा, वृक्ष का तना,
स्कन्धपथ-(हिं०पुं०) पगडंडी ।
कन्धचाप-(सं०पुं०) वहंगी जिस पर कहार वोझ ढोते हैं ।
स्खलित-(सं०वि०) गिरा हुआ, विचलित, फिसला हुआ ।
स्तन-(सं०पुं०) स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिस में दूध रहता है, कुच; **स्तनदात्री**-(सं०स्त्री०) छाती का दूध पिलाने वाली; **स्तनय**-(सं०पुं०) दूध पीता वच्चा; **स्तनपान**-(सं० नपुं०) स्तन में का दूध पीना; **स्तनपायी**-(सं०वि०) जो माता के स्तन से दूध पीता हो ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्तन्यप-(सं०पुं०) दूध पीता बच्चा।
स्तब्ध-(सं०वि०)स्तम्भित, स्थिर, दृढ़, धीमा अभिमानी,हठी। **स्तब्धकर्ण**-(सं०क्रि०) बहरा; **स्तब्धता**-(सं० स्त्री०) स्थिरता, दृढ़ता, बहरापन।
स्तम्बक-(सं०पुं०) गुच्छा।
स्तम्भ-(सं०पुं०) खंभा, थूनी, प्रतिबन्ध, जड़ता, पेड़ का तना, **स्तम्भता**-(सं०स्त्री०) जुड़ता; **स्तम्भन**-(सं० नपुं०) अवरोध, रुकावट।
स्तम्भिका-(सं०स्त्री०) छोटा खंभा, खंभिया।
स्तम्भित-(सं०वि०) जड़ीभूत, निश्चल, स्थिर, **स्तम्भी**-(सं०वि०)रोकने वाला
स्तर-(सं०पुं०) तह, तबक, परत, शय्या, सेज; **स्तरण**-(सं०नपुं०) फैलाने की क्रिया, बिछौना; **स्तरणीय**-(सं०वि०) फैलाने योग्य।
स्तव-(सं०पुं०) स्तोत्र, स्तुति, गान।
स्तवक-(सं०पुं०) फूलों का गुच्छा, स्तोत्र, ढर, समूह, पुस्तक का अध्याय, परिच्छेद।
स्तवन-(सं०नपुं०) स्तुति। **स्तवनीय**-(सं०वि०) स्तुति करने योग्य।
स्तवितव्य-(सं०वि०) प्रशंसा के योग्य।
स्तविता-(सं०वि०) स्तुति करने वाला।
स्तव्य-(सं०वि०) स्तुति करने के योग्य
स्तिमिति-(सं०वि०) निश्चल, स्थिर।
स्तीर्ण-(सं०वि०)विस्तीर्ण,फैलाया हुआ
स्तुत-(सं०वि०) प्रशंसित; **स्तुति**-(सं० स्त्री०) गुणकीर्तन, प्रशंसा; **स्तुतिपाठक**-(सं०पुं०) चारण, भाट; **स्तुतिवाद**-(सं०पुं०) गुणगान।
स्तुतिवादक-(सं०वि०) प्रशंसा करने वाला, प्रशंसक।
स्तुत्य-(सं०वि०) प्रशंसनीय।
स्तूप-(सं०पुं०) मिट्टी आदि का ढेर, ऊँचा टीला,
स्तेय-(सं०पुं०) चौर्य, चोरी।
स्तेयी-(सं०पुं०) सुनार, चूहा, मूसा।
स्तयो-(सं०व०) थोड़ा, कम।
स्तोतव्य-(सं०वि०) स्तुति के योग्य।
स्तोता-(सं०वि०) स्तुति करने वाला।
स्तोत्र-(सं०नपुं०) कविता रूप से किसी देवता का वर्णन, स्तुति; **-स्तोत्रीय**-(सं०वि०) स्तोत्र संबंधी।
स्त्री-(सं०स्त्री०)नारी, पत्नी; **स्त्रीगुरु**-(सं०पुं०) दीक्षा देने वाली स्त्री। **स्त्रीघातक**-(सं०क्रि०) स्त्री की हत्या करने वाला; **स्त्रीचौर**-(सं०पुं०) स्त्री को चुराने वाला। **स्त्रीजननी**-(सं०स्त्री०)वह स्त्री जो केवल कन्या उत्पन्न करती है; **स्त्रीधनं**-(सं०नपुं०) वह सम्पत्ति या धन जिस पर स्त्री का पूर्ण अधिकार हो; **स्त्रीधर्म**-(सं०पुं०) स्त्री का रजस्वला होना, **स्त्रीराज्य**-(सं०पुं०) वह देश जहाँ स्त्रियों का राज्य हो; **स्त्रीलिंग**-(सं०नपुं०) व्याकरण में स्त्री वाचकशब्द, **स्त्रीव्रत**-अपनी पत्नी के अतिरिक्त दूसरी स्त्री से कामना न करना।
स्त्रैण-(सं०वि०) स्त्री संबंधी।
स्थ-(सं०प्रत्यय०) उपस्थित, स्थित निवास तथा लीन अर्थ में शब्दों के अन्त में जोड़ा जाता है।
स्थकित-(सं०वि०)शिथिल,थका हुआ।
स्थगित-(सं०वि०) गुप्त, रोका हुआ।
स्थगु-(सं०नपुं०) पीठ पर का कूबड़।
स्थाण्डिल-(सं०नपुं०) यज्ञ के लिये स्वच्छ की हुई भूमि।
स्थगित-(सं०पुं०) भवन निर्माण कला में निपुण, रथ हाँकने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थल-(सं०नपुं०) भूभाग, भूमि स्थान, पुस्तक का अंश या परिच्छेद; **स्थलचर**-(सं०वि०) स्थल पर रहने या विचारने वाला। **स्थलयुद्ध**-(सं० नपुं०) भूमि पर होने वाली लड़ाई; **स्थलविहंग**-(सं०पुं०) भूमि, पर विचरने वाला पक्षी।

स्थली-(सं०स्त्री०) जलशून्य, भूमि स्थान; **स्थलीय**-(सं०वि०) स्थल संबंधी।

स्थविर-(सं०पुं०)वृद्ध, बुड्ढा, भिक्षुक

स्थविरा-(सं०स्त्री०) बुड्ढी स्त्री।

स्थाई-(हिं०वि०) देखो स्थायी।

स्थाणु-(सं०पुं०) वृक्ष का तना, खंभा, थूनी;

स्थान-(सं०नपुं०) भूमिभाग, मैदान, ठौर, वेदी, डेरा, पद, राज्य, देश, अवसर, अवस्था; **स्थानक**-(सं०नपुं० नगर पेड़ का थाला,; **स्थानच्युत**-(सं०वि०)अपने स्थान से गिरा हुआ, अपने पद से हटाया हुआ।

स्थानान्तर-(सं०पुं०) दूसरा स्थान।

स्थानापन्न-(सं०वि०) दूसरे के स्थान पर स्थायी रूप से काम करने वाला।

स्थानीय-(सं०वि०) स्थान संबंधी।

स्थापक-(सं०वि०) रखने या खड़ा करने वाला, संस्थापक।

स्थापत्य-(सं०पुं०)अन्तःपुर का रक्षक (नपु०) भवननिर्माण।

स्थापन-(सं०नपुं०) प्रतिपादन,निरूपण, नया काम आरंभ करना, खड़ा करना, बैठाना; **स्थापना**-(हिं०स्त्री०) प्रतिष्ठित करना, बैठाना; **स्थापनीय**-(सं०वि०) स्थापित करने योग्य; **स्थापित**-(सं०वि०) निर्दिष्ट, व्यवस्थित।

स्थायित्व-(सं०नपुं०) स्थिरता, दृढ़ता,

स्थायी-(सं०वि०) ठहरने वाला। विश्वस्त। **स्थायी समिति**-(हिं०पुं०) किसी सभा का संचालन करने वाली दो अधिवेशनों के बीच में होने वाली कार्यकारिणी सभा।

स्थाल-(सं०नपुं०) थाल, परात,थाली।

स्थाली-(सं०स्त्री०) मिट्टी की कटोरी हँड़िया;

स्थावर-(सं०नपुं०) पर्वत, धनुष की डोरी, अंचल सम्पत्ति, (वि०) एक ही स्थान में रहने वाला, स्थायी।

स्थित-(सं०वि०) ठहरा हुआ, टिका हुआ, विद्यमान, बसा हुआ, स्थिर

स्थितधी-(सं०क्रि०) जिसका चित्त सर्वदा स्थिर रहे।

स्थितप्रज्ञ-(सं०क्रि०) आत्मसन्तोषी।

स्थिति-(सं०स्त्री०) अस्तित्व, स्थिरता, अवस्था, नियम,निवास, अवस्था, दशा। **स्थिरचित्त**-(सं०क्रि०) जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो; **स्थिरच्छाय**-(सं०वि०) निश्चल, छाया युक्त; **स्थिरता**-(सं०स्त्री०) दृढ़ता-धैर्य; **स्थिरबुद्धि**-(सं०क्रि०) दृढ़चित्त; **स्थिरमति**-(सं०स्त्री०) स्थिर बुद्धि।

स्थिरा-(सं०स्त्री०) पृथ्वी।

स्थिरायु-(सं०पुं०) चिरंजीवी।

स्थूणा-(सं०स्त्री०) खंभा, थूनी, निहाई

स्थूल-(सं०वि०)पीवर, मोटा, **स्थूलता**-(सं०स्त्री०) मोटापन, भारीपन;

स्थूलपट-(सं०पुं०नपुं०) मोटा कपड़ा;

स्थूलपाद-(सं०पुं०) फीलपाव रोग वाला।

स्थैर्य-(सं०नपुं०) स्थिरता।

स्थौल्य-(सं०पुं०) स्थूलत्व, स्थूलता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्नपित-(सं०वि०) नहाया हुआ।
स्नात-(सं०वि०) नहाया हुआ। **स्नातक**-(सं०पुं०) वह जिसने ब्रह्मचर्य व्रत के समाप्त होने पर स्नान करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश किया हो।
स्नान-(सं०नपुं०) शरीर को जल से धोना अथवा जल की बहती हुई धारा में प्रवेश करना। **स्नानगृह**-(सं० नपुं०) जिस कोठरी में स्नान किया जाता है; **स्नानीय**-(सं०वि०) नहाने योग्य; **स्नानोदक**-(सं०नपुं०) स्नान करने का जल।
स्नायी-(सं०वि०) स्नान करनेवाला।
स्नायु-(सं०स्त्री०) शरीर में की वायू वाहिनी महीन महीन शिरा, नाड़ी।
स्निग्ध-(वि०) चिकना, तैलयुक्त; **स्निग्धता**-(सं०स्त्री०) चिकनापन;
स्नुषा-(सं०स्त्री०) पुत्रवधू।
स्नेह-(सं०पुं०) प्रेम, प्यार, चिकना पदार्थ।
स्नेहपात्र-(सं०पुं०) जिससे प्रेम किया जाय।
स्नेही-(हिं०पुं०) मित्र, बन्धु, (वि०) स्नेहयुक्त।
स्पन्द-(सं०पुं०) किसी वस्तु का धीरे धीरे हिलना या काँपना, शरीर का फड़कना; **स्पन्दी**-(हिं०वि०) काँपने वाला।
स्पर्धा-(सं०स्त्री०) ईर्ष्या, साम्य; **स्पर्धी**-(सं०वि०) स्पर्धा करने वाला।
स्पर्श-(सं०पुं०) वर्गाक्षर, छूना, व्याकरण में उच्चारण भेद से 'क' से लेकर "म" तक के पचीस व्यंजन वर्ण। **स्पर्शकोण**-(सं०पुं०) रेखागणित में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच में बनता है; **स्पर्शजन्य**-(सं०पुं०) स्पर्श से उत्पन्न; **स्पर्शन**-(सं०नपुं०) छूने की क्रिया; **स्पर्शनेन्द्रिय**-(सं०नपुं०) छूने की इन्द्रिय, त्वचा; **स्पर्शमणि**-(सं०पुं०) पारस पत्थर; **स्पर्शरेखा**-(सं०स्त्री०) गणित में वह सीधी रेखा जो किसी वृत्त की परिधि के किसी एक विन्दु को स्पर्श करती हुई खींची जाय।
स्पर्शी-(हिं०वि०) छूने वाला।
स्पर्शेन्द्रिय-(सं०नपुं०) वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है, त्वचा। **स्पर्शोपल**-(सं०पुं०) पारस पत्थर।
स्पष्ट-(सं०वि०) जिसके समझने या देखने में कोई कठिनता न हो। **स्पष्टता**-(सं०स्त्री०) स्पष्ट होने का भाव; **स्पष्टवक्ता**-(सं०पुं०) ठीक ठीक बात कहने वाला। **स्पष्टवादी**-(सं०पुं०) बिना संकोच क बोलने वाला। **स्पष्टिकरण**-(सं०नपुं०) स्पष्ट करने की क्रिया।
स्पृश्य-(सं०वि०) स्पर्श करने या छूने योग्य।
स्पृष्ट-(सं०वि०) स्पर्श किया हुआ।
स्पृहणीय-(सं०वि०) वांछनीय।
स्पृहा-(सं०स्त्री०) वांछा, कामना।
स्पृही-(सं०वि०) अभिलाषा करनेवाला
स्फटिक-(सं०पुं०) बिल्लौर, सूर्यकान्त मणि।
स्फटिका-(सं०स्त्री०) फिटकिरी।
स्फटी-(सं०स्त्री०) फिटकिरी।
स्फार-(सं०वि०) विपुल, विकट, प्रचुर।
स्फाल-(सं०पुं०) स्फूर्ति, तीव्रता।
स्फीत-(सं०वि०) समृद्ध, फूला, हुआ,
स्फीति-(सं०स्त्री०) वृद्धि, बढ़ती।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्फुट-(सं०वि०) प्रकाशित, स्पष्ट,
स्फुटित-(सं०वि०) विकसित, खिला हुआ।
स्फुटीकरण-(सं०पुं०) प्रकाशन।
स्फुट, स्फुरण-(सं०पुं०)अंग का फरकना
स्फुरति-(हिं०स्त्री०) देखो स्फूर्ति।
स्फुरित-(सं०वि०)हिलने या फड़क ने वाला।
स्फुल-(सं०नपुं०)तंबू;
स्फुलिंग-(सं.नपुं.)आग की चिनगारी।
स्फूर्ति-(सं०स्त्री०) स्फुरण, हिलना
स्फोट-(सं०पुं०) फोड़ा, फुन्सी, किसी वस्तु का फूटना। **स्फोटन**-(सं०नपुं०) विदारण, फाड़ना।
स्मय-(सं०पुं०) गर्व, अभिमान
स्मर-(सं०पु०) कामदेव, स्मरण।
स्मरण-(सं०नपुं०) स्मृति, किसी बात की याद,। **स्मरणपत्र**-(सं०पुं०) वह पत्र जो किसी को कोई बात याद दिलाने के लिये लिखी जावे। **स्मरण-शक्ति**-(सं०स्त्री०) स्मरण करने की शक्ति। **स्मरणीय**-(सं०वि०) याद करने योग्य।
स्मरना-(हिं०क्रि०) याद करना।
स्मर्ण-(हिं०पुं०) देखो स्मरण।
स्मर्तव्य-(सं०वि०) स्मरण करने योग्य।
स्मशान-(सं०पुं०) देखो स्मशान।
स्मारक-(सं०व०) स्मरण कराने वाला, (पुं०) वह पदार्थ या वस्तु जो किसी की स्मृति बनाय रखने के लिये बनाया जावे।
स्मार्त-(सं०वि०) स्मृति सम्बन्धी।
स्मित-(सं०नपुं०) मन्दहास, धीमी हँसी, (वि०) विकसित, खिला हुआ।
स्मृति-(सं०स्त्री०) संस्कारजन्य ज्ञान, चिन्तित ध्यान, धर्मशास्त्र, **स्मृति-कार**-(सं०पुं०)धर्मशास्त्र बनानेवाला।
स्मृतिभ्रम-(सं०पुं०) स्मरण शक्ति का नाश,
स्मृतिविभ्रम-(सं०पुं०) स्मरण शक्ति का नाश, धर्मशास्त्र के विपरीत।
स्मृतिशास्त्र-(सं० नपुं०) धर्मशास्त्र।
स्मृतिसम्मत-(सं०वि०) धर्मशास्त्र से अनुमोदित।
स्पन्द,स्पन्दन-(सं०पुं०नपुं०) टपकना, चूना, पसीजना, निकलना।
स्पन्दनिका-(सं०स्त्री०) छोटी नदी, नहर।
स्यात्-(सं०अव्य०) कदाचित्।
स्याद्वाद्-(सं०पुं०) जैन दर्शन।
स्यान-(हिं०वि०) देखो स्याना।
स्यानपन-(हिं०पुं०) चतुरता।
स्याना-(हिं०वि०) चतुर, धूर्त, वयस्क, जो बालक न हो, **स्यानापन**-(हिं०पुं०) चतुराई, धूर्तता।
स्यामता-(हिं०स्त्री०) देखो श्यामता।
स्यामलिया-(हिं०वि०) साँवले रंगका
स्यामा-(हिं०स्त्री०) देखो श्यामा।
स्यार-(हिं०पुं०) शृगाल, गीदड़, सियार; **स्यारपन**-(हिं०पुं०) भीरुता
स्यारी-(हिं०स्त्री०) शृगाली, सियारिन
स्याल-स्यालक-(सं०पुं०) पत्नी का भाई, साला।
स्यों, स्यो-(हिं०अव्य०)सहित, समीप, पास
स्रंस-(सं०पुं०) भ्रंश, नाश।
स्रक्-(सं०पुं०स्त्री०) फूलों की माला,
स्रग्धर-(सं.वि.) माला पहरनेवाला
स्रज-(हिं०स्त्री०)माला; **स्रजना**-(हिं० क्रि०) देखो सृजना।
स्रद्दा-(हिं०स्त्री०) देखो श्रद्धा। **स्रम**-(हिं०पुं०) देखो श्रम। **स्रमित**-(सं०वि०) देखो श्रमित।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्रवण-(सं०नपुं०) पसीना, गर्भपात। **स्रवन**-(हिं०पुं०)देखो श्रवण; **स्रवना**-(हिं०क्रि०) बहना, पटकना।
स्रष्टा-(सं०पुं०) सृष्टि करने वाला।
स्रापित-(हिं०वि०) देखो शापित।
स्राव-(सं०पुं०) क्षण, झरना। **स्रावक**-(सं०नपुं०) चूने या टपकने वाला।
स्रावित-(सं०वि०) टपक कर निकाला हुआ। **स्रावी**-(सं०वि०) रसने वाला
स्राव्य-(सं०वि०) बहने योग्य।
स्रिय-(हिं०स्त्री०) देखो श्रिय।
स्रुत-(हिं०वि०) देखो श्रुत, बहता हुआ।
स्रुति-(सं०स्त्री०) देखो श्रुति।
स्रुवा-(सं०स्त्री०) हवन करने की लकड़ी की बनी हुई छोटी करछी।
स्रेनी-(हिं०स्त्री०) देखो श्रेणी।
स्रोत-(सं०पुं०) पानी का झरना या सोता।
स्रोनित-(हिं०पुं०) देखो शोणत।
स्व-(सं०पुं०) धन, (पुं०), आप, निज, जाति, बन्धु। **स्वक**-(सं०वि०) निजी।
स्वकर्म-(सं०नपुं०) अपना काम।
स्वकर्मी-(सं०वि०) स्वार्थी।
स्वकामी-(सं०वि०) केवल अपने लिये काम करने वाला।
स्वकुल-(सं०नपुं०)अपना वंश। **स्वगत**-(सं०नपुं०) अपाही आप, अपने आपसे। **स्वगृह**-(सं० पुं०) निज का घर।
स्वच्छ-(सं०वि०) उज्वल, निर्मल, पवित्र। **स्वच्छता**-(सं०स्त्री०) निर्मलता।
स्वच्छन्द-(सं०वि०) स्वाधीन, स्वतन्त्र, **स्वच्छन्दचारी**-(सं०वि०) मनमौजी।
स्वच्छन्दता-(सं०स्त्री०) स्वतन्त्रता।
स्वच्छना-(हिं०क्रि०) निर्मल करना।
स्वच्छी-(हिं०वि०) स्वच्छ।
स्वज-(सं०पुं०) पुत्र, बेटा, पसीना, (वि०) आप से आप उत्पन्न।
स्वजन-(सं०पुं०) सम्बन्धी, आत्मीय जन। **स्वजनता**-(सं०स्त्री०) जाति सम्बन्ध। **स्वजन्मा**-(सं०वि०)अपने आप से उत्पन्न। **स्वजात**-(सं०वि०) पुत्र, बेटा। **स्वजाति**-(सं०स्त्री०) अपनी जाति। **स्वजातीय**-(सं०वि०) अपनी जाति का, एक ही जातिका;
स्वतन्त्र-(सं०वि०)स्वेच्छाचारी, भिन्न, पृथक्; **स्वतन्त्रता**-(सं०स्त्री०) स्वाधीनता; **स्वतन्त्री**-(सं०वि०) स्वाधीन।
स्वतः-(सं०अव्य०) अपने आप।
स्वत्व-(सं०नपुं०) अधिकार।
स्वत्वाधिकारी-(सं०पुं०) अधिकारी।
स्वदन-(सं०नपुं०) चखना।
स्वदेश-(सं०पुं०) मातृभूमि; **स्वदेशी**-(सं०वि०) अपने देश का, अपने देश में उत्पन्न या बना हुआ।
स्वधीत-(सं०वि०) अच्छी तरह पढ़ा हुआ।
स्वन-(सं०पुं०) ध्वनि, शब्द।
स्वनाम-(सं०नपुं०) अपना नाम।
स्वनामा-(सं०पुं०) जो अपने नाम से प्रसिद्ध हो।
स्वनित-(सं०नपुं०) शब्द।
स्वनिष्ठ-(सं०वि०) अपना काम स्वयं करने वाला।
स्वनिष्ठित-(सं०वि०) उत्तम रूप में किया हुआ।
स्वपन-(हिं०नपुं०) निद्रा, नींद।
स्वपूर्ण-(सं०वि०) जो आपही पूर्णहो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वप्न-(सं०पुं०) निद्रा, निद्रावस्था में वस्तु दर्शन, नींद।
स्ववरन-(ह०पुं०) देखो सुवर्ण।
स्वभाउ-(हिं०पुं०) देखो स्वभाव।
स्वभाऊ-(सं०पुं०) मन की प्रवृत्ति, प्रकृति, बान; **स्वभावज**-(सं०वि०) प्रकृति से उत्पन्न, सहज; **स्वभावतः**-(सं०अव्य०) स्वभाव से। **स्वभाव सिद्ध**-(सं०क्रि०) स्वाभाविक, सहज,
स्वभूमि-(सं०स्त्री०) अपनी भूमि।
स्वयं-(हिं०अव्य०) आप से आप, आप ही। **स्वप्रमाण**-(सं०वि०) जिसके लिये दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो। **स्वयंभू**-(सं०वि०) जो अपने आप उत्पन्न हुआ हो। **स्वयंवर** (सं०पुं०) भारतवर्ष की एक प्राचीन रीति जिसमें विवाह योग्य कन्या कुछ उपस्थित व्यक्तियोंमें से अपना वर चुन लेती थी। **स्वयंवरा**-(सं०स्त्री०) अपने लिये स्वयं वर चुनने वाली स्त्री। **स्वयंसिद्ध**-(सं०वि०) जिसकी सिद्धि के लिये दूसरे तर्क प्रमाण आदि की आवश्यकता न हो,। **स्वयंसेवक** (सं०पुं०) वह जो बिना किसी पुरस्कार या वेतनके कोई कार्य करता हो।
स्वयम्-(सं०अव्य०) आप, आप आप ही।
स्वयमधिगत-(सं०वि०) स्वयं प्राप्त। **स्वयम्भुव**-(सं०पुं०) ब्रह्मा, शिव, वेद आदि। **स्वयम्भू**-(सं०पुं०) विष्णु, शिव, कामदेव, काल।
स्वयमेव-(सं०क्रि०वि०) आप ही आप।
स्वर्-(सं०पुं०) स्वर्ग, आकाश परलोक,
स्वर-(सं०पुं०) वह ध्वनि जो किसी प्राणी के मुख से अथवा किसी पदार्थ पर आघात पड़ने से उत्पन्न हो, व्याकरण में वह वर्णात्मकशब्दजिसका उच्चारण आप सेआप होता है। **स्वरभंग** (सं०पुं०) गला बैठने का रोग। **स्वरभंगी**-(सं०पुं०) जिसका गला बैठ गया हो।
स्वरस-(सं०पुं०) फल फूल पत्ती आदि को कूट पीसकर निकाला हुआ रस।
स्वराज्य-(सं०नपुं०) वह राज्य जिसमें, उसी देश के निवासी स्वयं अपने देश के सब प्रबन्ध करते हैं।
स्वरान्त-(सं०वि०) जिसके अन्त में कोई स्वर हो।
स्वरापगा-(सं०स्त्री०) मन्दाकिनी, गंगा
स्वराष्ट्र-(सं०नपुं०) अपना राज्य।
स्वरित-(सं०पुं०) स्वर का वह उच्चारण जो न बहुत तीव्र हो और न बहुत धीमा।
स्वरुचि-(सं०पुं०) स्वेच्छा, अपनी इच्छा।
स्वरूप-(सं०नपुं०) आकृति, आकार, मूर्ति या चित्र, स्वभाव।
स्वरूपवान-(सं०वि०) सुन्दर।
स्वरूपी-(हिं०वि०) स्वरूप युक्त, जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।
स्वरोदय-(सं०पुं०) वह शास्त्र जिसमें स्वर द्वारा शुभाशुभ फल बतलाया जाता है।
स्वर्ग-(सं०पुं०) देवलोक, सुरलोक,
स्वर्गद-(सं०वि०) स्वर्ग देने वाला।
स्वर्गवधू-(सं०स्त्री०) अप्सरा। **स्वर्गवाणी**-(सं०स्त्री०) आकाशवाणी
स्वर्गवास-(सं०पुं०) स्वर्गमें रहना, मरना। **स्वर्गवासी**-(सं०क्रि०) मृत, जो मर गया हो।
स्वर्गी-(सं०वि०) स्वर्गगामी।
स्वर्गीय-(सं०वि०) स्वर्ग सम्बन्धी,
स्वर्णकाय-(सं०पुं०) गरुड़।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वर्णकार-(सं०पुं०) सुनार।
स्वर्णदीधिति-(सं०पुं०) अग्नि।
स्वर्णनिभ-(सं०वि०)सोनेके समान।
स्वर्णमुद्रा-(सं०स्त्री० सोनेकी मुद्रा।
स्वर्णाकर-(सं०पुं०) सोने की खान;
स्वर्धुनी-(सं०स्त्री०) गङ्गा।
स्वर्लोक-(सं०पुं०) स्वर्ग।
स्वर्वधू, स्वर्वेश्या-(सं०स्त्री०) अप्सरा
स्वल्प-(सं०वि०)अत्यल्प, बहुत थोड़ा, **स्वल्पकेशी**-(सं०पुं०) जिसको बहुत कम बाल हो; **स्वल्पदृश**-(सं०वि०) बहुत कम देखने वाला; **स्वल्पशरीर**-(सं०क्रि०) छोटा शरीर।
स्ववरन-(हिं०पुं०) देखो सुवर्ण।
स्ववश-(सं०पुं०) जितेन्द्रिय।
स्वश्लाघा-(सं०स्त्री०) आत्माभिमान।
स्वसम्भव-(सं०वि०) जो अपने से उत्पन्न हो।
स्वसा-(सं०स्त्री०) भगिनी, बहन।
स्वसिद्ध-(सं०वि०) स्वयं सिद्ध।
स्वसुर, स्वसुराल-(हिं०) देखो ससुर, ससुराल।
स्वस्ति-(सं०अव्य०) एक आशीर्वाद का शब्द, कल्याण हो, (स्त्री०) कल्याण, मंगल, सुख।
स्वस्तिमुख-(सं०पुं०) स्तुति पाठक, **स्वस्तिवाचन**-(सं०वि०) मांगलिक कार्यों के आरंभ में किया जाने वाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य; **स्वस्तिवाद**-(सं०क्रि०) आशीर्वाद।
स्वस्थ-(सं०वि०) रोग विमुक्त, सावधान। **स्वस्थचित्त**-(सं०वि०)शान्त चित्त।
स्वांग-(हिं०पुं०) सवांग; **स्वास**-(हिं० स्त्री०) देखो साँस।
स्वाक्षर-(सं०पुं०) अपना हस्ताक्षर।
स्वाक्षरित-(सं०वि०) अपना हस्ताक्षर किया हुआ।
स्वाख्यात-(सं०वि०) अच्छी तरह कहा हुआ।
स्वागत-(सं०नपुं०) अगवानी; **स्वागत कारिणी सभा**-(सं०स्त्री०) स्थानीय जनों की वह सभा जो किसी बड़ी सभा या सम्मेलन में आने वाले प्रतिनिधियों का स्वागत, ठहरने तथा भोजन आदि का प्रबन्ध करने के लिये संघटित होती है; **स्वागतकारी**-(सं०वि) अगवानी करने वाला
स्वागत-(सं०पुं०) अभिनन्दन।
स्वाङ्ग-(सं०नपुं) अनुकरणलीला।
स्वाङ्गी-अनुकरण करने वाला, बहरूपिया।
स्वातन्त्र्य-(सं० नपुं०) स्वतन्त्रता।
स्वात्मवध-(सं०पुं०) आत्महत्या।
स्वाद-(सं०पुं०) रसानुभूति, इच्छा।
स्वादक-(सं०पुं०) विवेकी, वह जो भोज पदार्थों के तैयार हो जाने पर चखता है।
स्वादित-(सं०वि०) चखा हुआ।
स्वादिष्ट-(सं०वि०) जो खाने में अच्छा जान पड़े।
स्वादी-(सं०वि) स्वाद चखने वाला, रसिक।
स्वादु-(सं०वि०)मीठा, मधुर, सुन्दर।
स्वाद्य-(सं०वि०) स्वाद लेने या चखने योग्य।
स्वाधीन-(सं०वि०) स्वतन्त्र, किसी का बन्धन न मानने वाला; **स्वाधीनता**-(सं० स्त्री०) स्वतन्त्रता।
स्वाध्याय-(सं०पुं०) वेदों का नियम पूर्वक अध्ययन किसी विषय का अनुशीलन, अध्ययन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वाध्यायी-(सं०पुं०) वेदपाठक।
स्वान-(सं०पुं०)शब्द, घड़घड़ाहट।
स्वानुभव-(सं०पुं०) अपना अनुभव।
स्वानुरूप-(सं०वि०) अपने समान।
स्वाप-(सं०पुं०) निद्रा, नींद, स्वप्न;
स्वापक-(सं०वि०) नींद लेने वाला।
स्वाभाविक- (सं० वि०) नैसर्गिक प्राकृतिक।
स्वामि-(हिं०पुं०) देखो स्वामी।
स्वामिता, स्वामित्व-(सं०) प्रभुत्व।
स्वामिन, स्वामिनी-(हिं० स्त्री०) मालकिन।
स्वामी-(हिं०पुं०) मालिक, प्रभु, पति, ईश्वर, राजा।
स्वाम्य-(सं०नपुं०)स्वामित्व, मालिकपन
स्वायत्त-(सं०वि०) जिस पर अपना अधिकार हो; **स्वायत्त शासन**-(सं०पुं०) स्थानिक स्वराज्य।
स्वाराज्य-(सं०नपुं०)वह शासन प्रवन्ध जिसका संचालन अपने ही देश के लोगोंके हाथ में हो।
स्वारी-(हिं०स्त्री०) देखो सवारी।
स्वार्थ-(सं०पुं०)अपना उद्देश्य, अपना लाभ; **स्वार्थत्याग**-(सं०पुं०) किसी अच्छे काम के लिये अपने हित या लाभ का विचार छोड़ देना; **स्वार्थत्यागी**-(सं०वि०) दूसरे के भले के लिये जो अपने हितको निछावर कर देने वाला; **स्वार्थपर**-(सं०वि०) जो केवल अपना ही स्वार्थ देखता हो **स्वार्थपरता**-(सं० स्त्री०) स्वर्थपन।
स्वार्थसाधन-(सं० नपुं०) अपना अर्थ साधना।
स्वार्थान्ध-(सं०वि०) वह जो अपने हित या लाभ के सामने और किसी की बात पर विचार नहीं करता।
स्वार्थी-(सं०वि०) अपना ही अर्थ देखने वाला।
स्वास-(हिं०पुं०) देखो श्वास, साँस।
स्वासा-(हिं०स्त्री०) श्वास, साँस।
स्वासीन-(सं०वि०)सुख से बैठा हुआ।
स्वास्थ्य-(सं०नपुं०) नीरोगता, आरोग्य।
स्वास्थ्यकर-(सं०वि०)आरोग्यवर्धक।
स्विन्न-(सं०वि०)सीझाहुआ,उबाला हुआ
स्वीकरण-(सं०नपुं०) अंगीकार।
स्वीकरणीय-(सं०वि०)मानने योग्य।
स्वीकार-(सं०पुं०)अंगीकार, प्रतिज्ञा-वचन।
स्वीकृत-(सं०वि०) अंगीकृत।
स्वीकृति-(सं०स्त्री०) सम्मति।
स्वीय-(सं० वि०) स्वकीय, अपना, निजी।
स्वेच्छा-(सं० स्त्री०) अपनी इच्छा, **स्वेच्छाचार**-(सं०पुं०)मनमाना काम करना, जो जी में आवे वही करना; **स्वेच्छाचारी**-(सं०वि०)अपनी इच्छानुसार चलने वाला; **स्वेच्छासेवक**-(सं०पुं०) विना किसी पुरस्कार या या वेतन के अपनी इच्छा से कोई काम काम करने वाला।
स्वेद-(सं०पुं०) धर्म, पसीना; **स्वेदज**-(सं०वि०) पसीने से उत्पन्न होने वाला जीव; **स्वेदजल**-(सं०नपुं०) पसीना।
स्वेदाम्बु-(सं०नपुं०)स्वेदजल, पसीना।
स्वै-(हिं०वि०)अपना, निजी।
स्वैर-(सं०वि०) ऐच्छिक, पथेच्छ।
स्वैरगति-(सं०क्रि०) स्वाधीनगति।
स्वैरता-(सं०स्त्री०) स्वच्छन्दता।
स्वैरी-(सं०वि०) स्वतन्त्र, स्वाधीन।
स्वोपार्जित-(सं०वि०) अपना कमाया हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ह

ह-संस्कृत तथा हिन्दी वर्णमाला का तेइसवां व्यञ्जन, उच्चारण विभाग के अनुसार यह ऊष्म वर्ण कहलाता है, इसका उच्चारण स्थान कण्ठ है।

ह-(सं०पुं०) मंगल, शुभ, आकाश,

ह-(सं०अव्य०) क्रोध का शब्द।

हँक-(हिं०स्त्री०) देखो हाँक, पुकार।

हँकड़ना-(हिं०क्रि०) ललकारना।

हँकरना-(हिं० क्रि०) दर्प के साथ बोलना। **हँकवाना**-(हिं०क्र०) हांक लगवाना,।

हँकवैया-(हिं०पुं०) हांकने वाला।

हँका-(हिं०स्त्री०) ललकार, डपट।

हँकाई-(हिं०स्त्री०)हांकने की क्रिया या भाव।

हँकना-(हिं०क्रि०) पशुओं को चिल्लाकर हटाना या एक ओर ले जाना।

हँकार-(हिं०स्त्री०) पुकार कर बुलाने की क्रिया, (पुं०) ललकार।

हँकारना-(हिं०क्रि०) पुकारना।

हँकारा-(हिं०पुं०) पुकार, बुलाहट।

हँकारी-(हिं०पुं०)बुलाकर लानेवाला, दूत।

हँगामा-(फा०पुं०)उपद्रव, कोलाहल।

हँड़ना-(हिं०क्रि०) घूमना, फिरना।

हँडिया-(हिं०स्त्री०) मिट्टी का लोटे के आकार का चौड़े मुँह का पात्र, हाँड़ी, इस आकार का कांच का पात्र जिसमें मोमबत्ती जलाई जाती हैं।

हँडी-(हिं०स्त्री०) देखो हंड़िया।

हँथौरा-(हिं०पुं०) देखो हथौड़ा।

हंस--(सं०पुं०) एक प्रकार का जलचर पक्षी, सूर्य, शुद्ध आत्मा, परब्रह्म,

हंसगति-(सं०स्त्री०) हंस के समान सुन्दर धीमी चाल। **हंसगामिनी**-(सं०स्त्री०) हंस के समान मन्दगति से चलने वाली स्त्री।

हसन-(हिं०स्त्री०) हँसने की क्रिया या भाव; **हँसना**-(ह०क्रि०) खिलखिलाना, आनन्द मानना ठिठोली करना,

हँसनादिनी-(सं०स्त्री०) मधुर भाषिणी

हँसनि,हँसिनी-(हिं०स्त्री०) देखो हँसी

हँसमुख-(हिं०वि०) प्रसन्न वदन, जिसके मुख से प्रसन्ता झलकतीहो,विनोदप्रिय।

हँसली-(हिं०स्त्री०) गरदन के नीचे और छाती के ऊपरकी धन्वाकार हड्डी, गले में पहरने का एक मण्डलाकार गहना।

हँसाई-(हिं०स्त्री०)उपहास, लोकनिन्दा।

हँसाना-(हिं०क्रि०) दूसरों को हँसने में प्रवृत्त करना।

हँसिया-(हिं० पुं०) एक धारदार अर्ध चन्द्राकार लोहे का अस्त्र जिससे खेत की उपज काटी जाती है, गरदन के नीचे की हड्डी।

हँसी-(हिं०स्त्री०) ठिठोली, विनोद पूर्ण उक्ति, निन्दा।

हँसुआ, हँसुवा-(हिं०पुं०) देखो हँसिया

हँसोड़-(हिं०वि०) ठिठोलिया।

हँसौआ-(हिं०वि०) थोड़ा हँसता हुआ, हँसी से भरा हुआ।

हँहो-(सं०अव्य०)सम्बोधन, दर्प, घमंड।

हई-(हिं०स्त्री०) आश्चर्य, अचरज।

हऊँ-(हिं०सर्व०) देखो हौं।

हकबकाना-(हिं०क्रि०) घबड़ाना, **हकलाना**-(हिं०क्रि०) बोलने में अटकना।

हकार-(सं०पुं०) 'ह' अक्षर या वर्ण।

हकारना-(हिं०क्रि०) पाल तानना, झंडा उठाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हक्काबक्का-(हिं०क्रि०) घबड़ाया हुआ,
हक्कार-(सं०पुं०) पुकार।
हगना-(हिं०क्रि०) मल त्याग करना,
हचकना-(हिं०क्रि०) धक्के से हिलना डोलना।
हचका-(हिं०पुं०) धक्का, झौंका।
हचकाना-(हिं०क्रि०) झोंका देकर हिलाना।
हचना-(हिं०क्रि०) देखो हिचकना।
हज्जाम-(हिं०पुं०) हजामत बनाने वाला नाई, ।
हटकन-(हिं०स्त्री०) चौपायों के हांकने की छड़ी। **हटकना**-(हिं०क्रि०) निषेध करना, मना करना।
हटना-(हिं०क्रि०) एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान में जाना।
हटवया, हटवा-(हिं०वि०) हाट में बैठ कर सौदा बेचने वाला, दूकानदार।
हटवाई-(हिं०स्त्री०) क्रय विक्रय।
हटवाना-(हिं०क्रि०) हटाने का काम दूसरे से से कराना।
हटाना-(हिं०क्रि०) एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना, खिसकाना।
हटुआ-(हिं०पुं०) दूकानदार, अन्न तौलने वाला, बया।
हट्ट-(सं०पुं०) हाट, दूकान।
हट्टाकट्टा-(हिं०वि०) हृष्टपुष्ट, मोटा ताजा।
हट्टाध्यक्ष-(सं०पुं०) हाट का अध्यक्ष।
हट्टी-(हिं०स्त्री०) दूकान।
हठ-(सं०पुं०) दुराग्रह, टेक, दृढ़, प्रतिज्ञा,
हठधर्म-(सं०पुं०) दुराग्रह कट्टरपन।
हठधर्मी-(सं०स्त्री०) अपने मत या सम्प्रदाय पर अड़ने की प्रकृति। **हठना**-(हिं०क्रि०) दुराग्रह करना। **हठकर**-(हिं०क्रि०वि०) दुराग्रह से।
हठशील-(सं०वि०) हठी।
हठात्-(सं०अव्य०) हठ पूर्वक, दुराग्रह से, अवश्य।
हठी-(हिं०वि०) हठ करने वाला
हटीला-(हिं०व०) अपनी प्रतिज्ञा का पक्का।
हड़कना-(हिं०क्रि०) व्याकुल होना।
हड़गीला-(हिं०वि०) व्यग्र, घबड़ाया हुआ।
हड़ताल-(हिं०स्त्री०) किसी बातपर असन्तोष प्रकट करने के लिये दूकान बंद करना अथवा काम करने वालों का काम बन्द करना।
हड़प-(हिं०वि०) निगला हुआ, अनुचित रीति से लिया हुआ; **हड़पना**-(हिं० क्रि०) दूसरे की वस्तु को अनुचित रूप से ले लेना।
हड़फूटन-(हिं०स्त्री०) शरीर की भीतरी व्यथा, हड्डियों में पीड़ा।
हड़वड़-(हिं०स्त्री०) उतावलापन, आतुरता
हड़बड़ाना-(हिं०क्रि०) आतुर होना।
हड़बड़िया-(हिं०वि०) उतावला।
हड़बड़ी-(हिं० स्त्री०) उतावलापन,
हड़हड़ाना-(हिं० क्रि०) उतावलेपन से दूसरे को व्यग्र करना।
हड़हा-(हिं०पुं०) जंगली बैल (वि०) अति दुर्बल, जिसके शरीर में केवल हड्डी रह गई हो।
हड़ाबल-(हिं०स्त्री०) हड्डी का ढाँचा।
हड़ीला-(हिं०वि०) जिसमें हड्डी हो।
हड्डा-(हिं०पुं०) भिड़, बर्रे।
हड्डी-(हिं०स्त्री०) अस्थि, वंश।
हण्डा-(हिं०स्त्री०) जल आदि रखने का बड़ा पात्र।
हण्डी-(सं०स्त्री०) हाँडी।
हत-(सं०विं०) वध किया हुआ, मारा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ, पीड़ित, ग्रस्त, लगा हुआ, गुणा किया हुआ, बिगाड़ा हुआ, आशाहीन।

हतज्ञान-(सं०वि०) ज्ञान शून्य, अचेत

हतदैव-(सं०वि०) भाग्यहीन, अभागा।

हतना-(हिं०क्रि०) वध करना, मार डालना।

हतप्रभ-(सं०वि०) प्रभा रहित; **हतबुद्धि**-(सं०वि०) बुद्धि हीन, मूर्ख; **हतभाग्य**-(सं०वि०) अभागा; **हतवाना**-(हिं०क्रि०) वध कराना। **हतवीर्य**-(सं०वि०) शक्तिहीन, बलहीन

हतादर-(सं०वि०) जिसका आदर घट गया हो।

हतादर-(सं०वि०) जिसका आदर घट गया हो।

हताश-(सं०वि०) आशारहित, निराश

हताहत-(सं०वि०)मारे गये और चोटैल।

हति-(सं०स्त्री०) व्याघात, हत्या।

हतोत्साह-(सं०वि०)जिसको कुछ करने का उत्साह न रह गया हो।

हतौजस-(सं०वि०) तेजहीन, दुर्बल।

हत्था-(हिं०पुं०) किसी यन्त्र का वह भाग जो हाथ से पकड़ा जाता हो, मूठ।

हत्थे-(हिं०क्रि०वि०) हाथ में।

हत्या-(सं०स्त्री०) बध, झंझट, बखेड़ा,

हत्यारा-(हिं०पुं०) हत्या करनेवाला।

हत्यारी-(हिं०स्त्री०)हत्या करने वाली, हत्या करने का पाप।

हथ-(हिं०पुं०) "हाथ" शब्द का संक्षिप्त रुप, समस्त पदों में इसका व्यवहार होता है; **हथकंडा**-(हिं०पुं०) हस्तलाघव; **हथकड़ी**-(हिं०स्त्री०) कैदियों के हाथों में पहराने का लोहे का कड़ा; **हथकल**-(हिं०पुं०) पेंच ढीली करने या कसने का एक अस्त्र; **हथकोड़ा**-(हिं०पुं०) युक्ति; **हथछुट**-(हिं०वि०) जिसको तुरंत किसी को मार देने का अभ्यास हो; **हथधरी**-(हिं०स्त्री०) सहारा लेने की लकड़ी-**हथनाल**-(हिं०पुं०) वह तोप जो हाथी की पीठ पर रखकर चलती है, गजनाल।

हथनी-(हिं०स्त्री०)मदा हाथी,हथिनी।

हथफूल-(हिं०पुं०) हथेली के दूसरे ओर पहरने का एक प्रकार का गहना; **हथफेर**-(हिं०पुं०) चुपचाप किसी का माल हरण करना।

हथवाँसना-(हिं०क्रि०) व्यवहार में लाना;

हथसार-(हिं०स्त्री०) हाथी रखने का स्थान।

हथाहथी-(हिं०अव्य०)हाथोहाथ,झटपट

हथिनी-(हिं०स्त्री०)मादाहाथी,हथनी।

हथियाना-(हिं०क्रि०) हथ में लेना या पकड़ना, धोखा देकर दूसरे की वस्तु लेना।

हथियार-(हिं०पुं०) अस्त्र शस्त्र।

हथुई रोटी-(हिं०स्त्री०) गीले आटे की लोई को हथेलियों से दबाकर बनाई हुई रोटी।

हथेरी-(हिं०स्त्री०) देखो हथेली।

हथेली-(हिं०स्त्री०) करतल।

हथोरी-(हिं०स्त्री०) देखो हथेली।

हथौटी-(हिं०स्त्री०) हस्त कौशल।

हथौड़ा-(हिं०पुं०) ठोंकने या गढ़ने का लोहे का एक अस्त्र, मारतौल; **हथौड़ी**(हिं०स्त्री०) छोटा हथौड़ा।

हथ्यार-(हिं०पुं०) देखो हथियार।

हनन-(सं०नपुं०)वध, मारण, आघात, गुणा करने की क्रिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हनना-(हिं०क्रि०) वध करना, मार डालना; **हनवाना**-(हिं०क्रि०) हनने का कार्य दूसरे से कराना। **हननीय**-(सं०वि०) वध करने योग्य।
हनु-(सं०स्त्री०) हनु, ठुड्ढी।
हन्त-(सं०अव्य०) संभ्रम, विषाद, हर्ष आदि सूचक शब्द।
हन्तव्य-(सं०वि०) मारने योग्य।
हन्ता-(हिं०पुं०) मारने वाला, हत्यारा
हप-(हिं०पुं०) मुँह में झट से लेकर ओठों को बन्द करने का शब्द।
हपटाना-(हिं०क्रि०) हाँफना।
हबकाना-(हिं०क्रि०) खाने या काटने के लिये झट से मुख खोलना।
हबर हबर-(हिं०क्रि०वि०) हड़बड़ी से,
हबराना-(हिं०क्रि०) देखो हबड़ाना।
हब्बा डब्बा-(हिं०पुं०) बच्चों की पसली चलने का रोग।
हम-(हिं०सर्व०) उत्तम पुरुष बहुवचन सर्वनाम, "मैं" का बहुवचन का रूप, अहंकार, अभिमान।
हमता-(हिं०पुं०) अहंकार।
हमरा-(हिं०सर्व०) देखो हमारा।
हमारा-(हिं०सर्व०) 'हम' का सम्बन्ध कारक का रूप।
हमाहमी-(हिं०स्त्री०) अहंकार।
हमे-(हिं०सर्व०) "हम' का कर्म और सम्प्रदान कारक का रूप, हमको।
हमेव-(हिं०पुं०) अभिमान,अहंकार।
हमै-(हिं०सर्व०) देखो हमे।
हयना-(हिं०क्रि०) हत्या करना, वध करना।
हयनाल-(हिं०स्त्री०) घोड़ों से खींची जाने वाली तोप। **हयमेध**-(सं०पुं०) अश्वमेध यज्ञ। **हयविद्या**-(सं०स्त्री०) अश्वविद्या। **हयवैरी**-(सं० पुं०) भैंसा। **हयशाला**-(सं०स्त्री०) अश्वशाला, घुड़साल। **हयारोह**-(सं०पुं०) अश्वारोही, घुड़सवार।
हयालय-(सं०पुं०) अश्वशाला।
हर-(सं०पुं०) शिव, महादेव, गणित में किसी संख्या का भाजक, भिन्न में नीचे की संख्या, (वि०) छीनने या लूटने वाला।
हरएँ-(हिं०अव्य०) धीरे धीरे।
हरक-(सं०वि०) हरण करने वाला।
हरकना-(हिं०क्रि०) देखो हटकना।
हरकारा-(हिं०पुं०) सन्देश अथवा चिट्ठी पत्री ले जाने वाला।
हरख-(हिं०पुं०) देखो हर्ष। **हरखना**-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना। **हरखाना**-प्रसन्न करना।
हरट्ट-(हिं०वि०) हृष्ट पुष्ट।
हरण-(सं०नपुं०)) लूटना, छीनना, भाग देना, विभाग करना। ले जाना, **हरणीय**-(सं०वि०) हरण करने योग्य छीनने लायक।
हरता-(हिं०वि०) देखो हर्ता।
हरताली-(हिं०वि०) उपद्रवी।
हरदिया-(हिं०वि०) हल्दी के रंग का पीला।
हरदी-(हिं०स्त्री०) हरिद्रा, हल्दी।
हरना-(हिं०क्रि०) छीनना, लूटना, हटाना, दूर करना, नाश करना।
हरना-(हिं०पुं०) देखो हिरन।
हरनी-(हिं०स्त्री०) मादा हरिण, मृगी।
हरनौटा-(हिं०पुं०) हरिण का बच्चा।
हरफा-(हिं०पुं०) कटा हुआ, चारा रखने का घर।
हरफारेवडी-(हिं०स्त्री०) एक प्रकार का छोटा खट्टा फल।
हरबर-(हिं०क्रि०वि०) शीघ्र।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरबराना-(हिं०क्रि०) देखा हड़बड़ाना
हरबीज-(सं०नपुं०) पारद, पारा।
हरबोंग-(हिं०वि०) गँवार, अक्खड़, मूर्ख।
हरबल-(हिं०स्त्री०) हलवाहों को बिना व्याज के दिया हुआ धन।
हरवाहन-(सं०पुं०) शिव की सवारी, बैल।
हरवाहा-(हिं०पुं०) हल चलानें वाला श्रमिक। **हरवाही**-(हिं०स्त्री०) हलवाहे का काम या वेतन।
हरष-(हिं०पुं०) देखो हर्ष, प्रसन्नता।
हरषना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना।
हरषाना-(हिं०क्रि०) प्रसन्न होना।
हरषित-(हिं०वि०) हर्षित, प्रसन्न।
हरसना-(हिं०क्रि०) हरखना, प्रसन्न होना।
हरसिंगार-(हिं०पुं०) पारिजात, पारजाता।
हरहाई-वह नटखट गाय जो इधर उधर भागती फिरती है।
हरांस-(हिं०पुं०) मन्द ज्वर।
हरा-(हिं०वि०) हरित, घास या पत्ती के रंग का, प्रसन्न, प्रफुल्ल, जो सूखा या मरा न हो, फल फूल जो पका न हो।
हराभरा-(हिं०वि०) प्रफुल्ल, नवीन।
हराई-(हिं०स्त्री०) हार की स्थिति, हार।
हराना-(हिं०क्रि०) पराजित करना, थकाना।
हरापन-(हिं०पुं०) हरे होने का भाव।
हरि-(सं०पुं०) विष्णु, सिंह, सुग्गा, सर्प, सिंह, बन्दर, घोड़ा।
हरिअर-(हिं०वि०) हरित, हरा।
हरिअरी-(हिं० स्त्री०) हरापन, हरियाली। **हरिआली**-(हिं०स्त्री०) घास पेड़ पौधां आदि का विस्तार।
हरिचर्म-(सं०पुं०) व्याघ्र, चर्म।
हरिचाप-(सं०पुं०) इन्द्रधनुष।
हरिजन-(सं०पुं०) ईश्वर का भक्त, अछूत।
हरिण-(सं०पुं०) मृग, कुरङ्ग, हरना, सूर्य, भूरा रंग, (वि०) भूरे रंग का।
हरिणनयना-(सं०स्त्री०) हरिण के समानं सुन्दर आँखों वाली स्त्री।
हरिणलाञ्छन-(सं०पुं०) चन्द्रमा।
हरिणाक्ष-(सं०वि०) हरिण के समान आँखों वाला। **हरिणाक्षी**-(सं० वि०) हरिण के समान नेत्र वाली स्त्री।
हरिणी-(सं०स्त्री०) मृगी, मादा हरिन।
हरित्-(सं० वि०) कपिश, भूरे या बादामी रंग का।
हरितमणि-((सं०पुं०) मरकतमणि, पन्ना।
हरिदिन-(सं०स्त्री०) एकादशी।
हरिद्रा-(सं०स्त्री०) हल्दी।
हरिधनुष-(सं०पुं०) इन्द्रधनुष। **हरिधाम**-(सं०पुं०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ।
हरिन-(हिं०पुं०) हरिण, मृग।
हरिनाम-(सं०पुं०) भगवान का नाम
हरिनी-(सं०स्त्री०) मादा हरिन।
हरिन्मणि-(सं०पुं०) मरकतमणि, पन्ना।
हरिपद-(सं०पुं०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ।
हरिपुर-(सं०पुं०) विष्णु लोक, वैकुण्ठ
हरिप्रबोधनी-(सं०स्त्री०) कार्तिक शुक्ला एकादशी।
हरियर-(हिं०वि०) हरे रंग का, हरा।
हरियाई-(हिं०स्त्री०) हरियाली।
हरियाली-(हिं०स्त्री०) हरे हरे पेड़ पौधों का समूह या विस्तार।
हरिलोक-(सं०पुं०) विष्णुलोक, वैकुण्ठ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हरिशयनी-(सं०स्त्री०) आषाढ़ शुक्ला एकादशी।

हरिस-(हिं०स्त्री०) हल की वह लंबी लकड़ी जिसके एक सिरे पर फाल वाली लकड़ी जड़ी होती है।

हरीतिकी-(सं०स्त्री०) हड़, हर्रे।

हरीरा-(अ०पुं०) दूध में सूजी, चीनी, इलायची आदि डाल कर पकाया हुआ एक पेय पदार्थ जो विशेष कर प्रसूता स्त्री को पिलाया जाता है।

हरीस-(हिं०स्त्री०) देखो हरिस।

हरुअ, हरुआ-(हिं०वि०) देखो हलका

हलकई-(हिं०स्त्री०) हलकापन, तुच्छता

हलकना-(हिं०क्रि०) हिलना, डोलना।

हलका-(हिं०वि०) जो तौल में भारी न हो, गहरा न हो, सहज, ओछा, थोड़ा, जो चटकीला न हो, प्रफुल्ल, महीन, छूंछा, घटिया, मन्द।

हलकाई-(हिं०स्त्री०) हल्कापन, ओछापन। **हलकाना**-(हिं०क्रि०) हिलोरा देना।

हलकापन-(हिं० पुं०) तुच्छ बुद्धि, ओछापन।

हलकारा-(हिं०पुं०) देखो हरकारा।

हलकोरा-(हिं०पुं०) पानी की लहर।

हलचल-(हिं०स्त्री०) अधीरता, व्यग्रता, हिलना डोलना, कम्प (वि०) डगमगाता हुआ, डोलता हुआ।

हलजीवी-(सं०वि०) हल चला कर खेती करने वाला किसान।

हलड़ा-(हिं०पुं०) देखो हलरा।

हलदण्ड-(सं०पुं०) हल का लंबा डण्डा, हरिस।

हलदी-(हिं०स्त्री०) एक छोटा पौधा जिसकी ग्रन्थिमय जड़ मसालों में व्यवहार की जाती है।

हलधर-(सं०पुं०) हल धारण करने वाले बलराम जी।

हलन्त-(सं०पुं०) वह शुद्ध व्यञ्जन जिसके उच्चारण में स्वर न मिला हो।

हलना-(हिं०क्रि०) हिलना, डोलना, धँसना।

हलफा-(हिं०पुं०) हिलोरा, लहर।

हलबल-(हिं०पुं०) देखो हलचल।

हलबी, हलब्बी-(हिं०वि०) हलब देश का, (कांच) बढ़िया (कांच)।

हलभली-(हिं०स्त्री०) शीघ्रता।

हलमुख-(सं०पुं०) हल का फार।

हलराना-(हिं०क्रि०) हिलाना, डुलाना, हाथ पर झुलाना।

हलवाइन-(हिं०स्त्री०) हलवाई की स्त्री। **हलवाई**-(हिं०पुं०) मिठाई बनाने और बेचने वाला।

हलवाह, हलवाहा-(हिं०पुं०) हल चलाने का काम करने वाला या नौकर।

हलहल-(हिं०पुं०) किसी वस्तु में भरे हुए जल को हिलाने पर उत्पन्न शब्द। **हलहलाना**-(हिं०क्रि०) कँपाना, हिलाना।

हलाहल-(सं०पुं०) बहुत तीव्र विष।

हलुवा-(सं०पुं०) देखो हलवा।

हलेरना-(हिं०क्रि०) हिलाना, डुलाना मथना।

हलोरा-(हिं०पुं०) देखो हिलोरा।

हल्का(हिं०वि०) देखो हलका।

हल्दी-(हिं०स्त्री०) देखो हलदी।

हल्ला-(हिं०पुं०) कोलाहल, चिल्लाहट

हवन-(सं०नपुं०) होम, किसी देवता के निमित्त अग्नि में घृत, तिल, जव आदि डालने की क्रिया, अग्नि, अग्निकुण्ड।

हवनीय-(सं०वि०) हवन के योग्य (पुं०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(पुं०) वह पदार्थ जो हवन करने में अग्नि में डाला जावे।

हवाचक्की-(हिं०स्त्री०) आटा पीसने की हवा की शक्ति से चलने वाली चक्की।

हवि-(सं०पुं०) वह द्रव्य जिसकी आहुति अग्नि में दी जावे।

हविर्दान-(सं०नपुं०) यज्ञ में घृत आदि की आहुति।

हविर्भुज-(सं०वि०) अग्नि देवता।

हविष्य-(सं०वि०) जिसकी आहुति दी जाने वाली हो।

हविष्यान्न-(सं०नपुं०) वह अन्न जो यज्ञ के समय प्रयोग किया जाय।

हव्य-(सं०नपुं०) वह वस्तु जिसकी आहुति अग्नि में दी जावे।

हसन-(सं०नपुं०) परिहास, विनोद।

हसिक-(सं०वि०) हँसी ठिठोली करने वाला।

हसित-(सं०नपुं०) उपहास, हँसी, ठट्टा, (वि०) विकसित, खिला हुआ।

हस्त-(सं०पुं०) हाथ, हाथी का सूंड, चौबीस अंगुल की नाप, हाथ की लिखावट, गुच्छा, समूह, एक नक्षत्र। **हस्तक**-(सं०पुं०) संगीत का एक ताल, ताली बजाना।

हस्तकार्य-(सं०पुं०) हाथ का काम।

हस्तकौशल-(सं०पुं०) काम करने में हाथ की कुशलता।

हस्तक्षेप-(सं०वि०) किसी काम में हाथ डालना।

हस्तगत-हाथ में आया हुआ, प्राप्त।

हस्ततल-(सं०पुं०) हथेली। **हस्तत्राण**-(सं०नपुं०' हाथ में पहिरने का कवच। **हस्तलाघव**-(सं०पुं०) हाथ की चतुराई। **हस्तलिखित**-(सं०वि०) हाथ का लिखा हुआ। **हस्तलिपि**-(सं० स्त्री०) हाथ की लिखावट। **हस्तसूत्र**-(सं०नपुं०) हाथ में बाँधने का मंगल सूत्र।

हस्ति-(सं०पुं०) गज, हाथी।

हस्तिनी-(सं०स्त्री०) मादा हाथी, हथिनी। **हस्तिप**-(सं०पुं०) महावत।

हस्ते-(हिं०अव्य०)हाथ से।

हहर-(हिं०स्त्री०) कँपकँपी, थरथराहट। **हहरना**-(हिं०क्रि०) काँपना, थर्राना। **हहराना**-(हिं०क्रि०) कँपाना

हहा-(हिं०स्त्री०) हँसने का शब्द, ठट्टा, बिनती।

हां-(हिं०अव्य०) स्वीकृति अथवा सम्मति सूचक शब्द।

हांक-(हिं०स्त्री०) चिल्लाकर पुकारने का शब्द, चिल्लाहट, ललकार।

हांकना-(हिं०क्रि०) चिल्लाकर पुकारना, घोड़े बैल, ऊँट आदि से गाड़ी चलवाना, चौपायों को किसी स्थान से हटाना, पंखा झलना।

हांड़ना-(हिंकृवि०) व्यर्थ इधर उधर घूमने वाला।

हांड़ी-(हिं०स्त्री०) बटलोही के आकार का मिट्टी का पात्र।

हाँपना, हांफना-(हिं० क्रि०) दौड़ने परिश्रम करने या रोग के कारण साँस का वेग से चलना।

हांसना-(हिं०क्रि०) हँसना।

हांसी-(हिं०स्त्री०) उपहास, निन्दा।

हांहां-(हिं०अव्य०) वह शब्द जिसको बोलकर किसी काम को करने से तुरह रोकते हैं।

हा-(सं०अव्य०)शोक या दुःख सूचक शब्द (पुं०) बध करने वाला, मारनेवाला।

हाइ-(हिं०अव्य०) हाय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाई-(हिं०स्त्री०) अवस्था, दशा ढंग।
हाऊ-(हिं०पुं०) बच्चों को डराने का शब्द।
हाट-(हिं०स्त्री०) दूकान, बाजार, बाजार लगने का दिन।
हाटक-(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना।
हाड़-(हिं०पुं०) अस्थि, हड्डी।
हाथ-(हिं०पुं०) किसी पदार्थ को पकड़ने या छूने का अवयव, हस्त, चौबीस अंगुल की मनाप, ताश, जुएँ आदि के खेलने में एक आदमी के खेलने की बारी, किसी कार्यालय में काम करने वाले मनुष्य।
हाथकण्डा-(हिं०पुं०) देखो हथकण्डा।
हाथपान, हाथफूल-(हिं०पुं०) हथेली के पीछे की ओर पहरने का एक आभूषण।
हाथा-(हिं०पुं०) किसी अस्त्र की मूंठ।
हाथी-(हिं०पुं०) हस्ती।
हान, हानि-(सं०स्त्री०) नाश, क्षय, अभाव, बुराई, क्षति, घाटा।
हानिकर-(सं०वि०) अनिष्ट करने वाला। **हानिकारक, हानिकारी**-(सं० वि०) बुरा परिणाम उपस्थित करने वाला।
हाफु-(हिं०पुं०) अहिफेन, अफीम।
हामी-(हिं०पुं०) स्वीकृति, स्वीकार
हाय-(हिं०प्र०) पीड़ा अथवा दुःख सूचित करने का शब्द, आह, (स्त्री०) पीड़ा, दुख, कष्ट।
हायहाय-(हिं०अव्य०) शोक, दुख या शारीरिक कष्ट सूचक शब्द, झंझट।
हार-(हिं०पुं०) सोने चाँदी या मोतियों की माला, अंक गणित में भाजक, (हिं०स्त्री०) पराजय, हानि, क्षति।
हारक-(सं०पुं०) चोर, गणित में भाजक, हार, माल, हरण करने वाला।
हारना-(हिं०क्रि०) पराभूत होना, थक जाना, निराश होना, लड़ाई जुए आदि को न जीतना, गँवाना, छोड़ देना।
हारा-(हिं०प्र०) प्राचीन हिन्दी का एक प्रत्यय जो "वाला" अर्थ में शब्दों में प्रयोग होता था।
हारी-(सं०वि०) चुराने वाला, नाश करने वाला, जीतने वाला, मोहित करने वाला।
हार्दिक-(सं०वि०) हृदय से निकला हुआ, सच्चा।
हाल-(हिं०स्त्री०) लोह का वह बन्द जो पहिये के घेरे पर चढ़ाया जाता है।
हालना-(हिं०क्रि०) हिलाना, डुलाना
हालरा-(हिं०पुं०) हिलोरा, झोंका।
हालहूल-(हिं० स्त्री०) हल्लागुल्ला, हलचल।
हालाहल-(संक्र०पुं०) देखो हलाहल।
हाली-(हिं०अव्य०) शीघ्र, जल्दी से।
हाव-(सं०पुं०) आकर्षण करने वाली चेष्टायें।
हावभाव-(सं०पुं०) पुरुषों का चित्त आकर्षण करने वाली स्त्रियों की चेष्टा।
हास-(सं०पुं०) हँसी, उपहास, निन्दा
हासक-(सं०पुं०) हँसने वाला।
हासकर-(सं०वि०) हँसाने वाला।
हासी-(हिं०वि०) हँसने वाला।
हास्य-(सं०नपुं०) हंसी, हँसी ठट्ठा, उपहास। **हास्यकर**-(सं०वि०) हँसाने वाला।
हाहन्त-(सं०अव्य०) अत्यन्त शोकसूचक शब्द।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हाहा-(हिं०पुं०) हँसने का शब्द, गिड़गिड़ाने का शब्द।

हाहाकार-(हिं० पुं०) घबड़ाहट, चिल्लाहट, युद्ध में का कोलाहल।

हाहाठीठी-(हिं०स्त्री०) हँसी ठट्ठा।

हाही-(हिं०स्त्री०) कुछ पाने की उत्कट इच्छा।

हाहू-(हिं०पुं०) कोलाहल, हलचल।

हि-(सं०अव्य०) हेतु, कारण, निश्चय तथा संभ्रम अर्थ में इस शब्द का प्रयोग होता है। हिन्दी की एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले सभी कारकों में होता था, परन्तु बाद में इसका प्रयोग ("को" अर्थ में) कर्म और सम्प्रदान में ही होने लगा।

हिंडोरा-(हिं०पुं०) देखो हिंडोला।

हिंडोल-(हिं०पुं०) हिंडोला।

हिंडोला-(हिं०पुं०) पालना, झूला।

हिंदी-(स्त्री०) भारतवर्ष की बोली, हिंदुस्तान की भाषा।

हिंदुस्थान-(हिं०पुं०) देखो भारतवर्ष।

हियाँ-(हिं०अव्य०) यहाँ।

हिंसक-(सं०वि०) घातक, हत्यारा।

हिंसा-(सं०वि०) वध, हत्या, कष्ट

हिंसाकर्म-(सं०नपुं०) किसी को मारने या कष्ट देने का काम।

हित-(सं०वि०) उपकारी, लाभदायक, अनुकूल, प्रिय, अच्छा व्यवहार करने वाला, पथ्य, (पुं०) लाभ, कल्याण, मित्र संबंधी, अनुकूलता, (अव्य०) निमित्त, वास्ते, लिये, प्रसन्नता के लिये। **हितकर**-(सं०वि०) उपयोगी स्वास्थ्यकर। **हितकर्ता**-(सं०पुं०) भलाई करने वाला। **हितकारक**-(सं० वि०) लाभ पहुँचाने वाला, स्वास्थ्य-कर, **हितकारी**-(सं०वि०) उपकार या कल्याण करने वाला। **हित चिन्तक** (सं०पुं०) भला चाहने वाला; **हित चिन्तन**-(सं०पुं०) उपकार की इच्छा। **हितवादी**-(सं०वि०) उप-कार या लाभ की बात कहने वाला।

हिताई-(हिं०स्त्री०) सम्बन्ध, नाता

हिताना-(हिं०क्रि०) अनकूल होना।

हितानुबन्धी-(हिं०वि०) भलाई चाहने वाला, **हितार्थी**-(सं०वि०) हित या भलाई चाहने वाला।

हिती, हीतू-(हिं०वि०) भलाई चहाने वाला, मित्र, सम्बन्धी, स्नेही।

हितेच्छा-(सं०स्त्री०) उपकार का ध्यान।

हतेच्छु-(सं०वि०) कल्याण मनाने वाला।

हितैषिता-(सं०स्त्री०) कल्याण चाहने की वृत्ति। **हितैषी**-(सं०वि०) भला चाहने वाला (पुं०) मित्र।

हितोक्ति-(सं०स्त्री०) भलाई का उप-देश।

हितोपदेश-(सं०पुं०) भलाई के उप-देश।

हिनती-(हिं०स्त्री०) देखो हीनता।

हिन्दुस्तान-(हिं०पुं०) भारतवर्ष।

हिन्दू-(सं०पुं०) आर्यावर्त वासी, वर्णा-श्रम धर्मी।

हिमन्त-(हिं०पुं०) देखो हेमन्त।

हिम-(सं०वि०) शीतल, ठंडा, (नपुं०) पाला, जाड़े का ऋतु, **हिमउपल**-(सं०पुं०) ओला, पत्थर। **हिम कण**-(सं०पुं०) पाले का महीन टुकड़ा।

हिमपात-(सं०पुं०) पाला पड़ना।

हिमवारि-(सं०नपुं०) ठंढा पानी।

हिमवृष्टि-(सं०स्त्री०) पाला गिरना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हिमाचल-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत
हिमाद्रि-(सं०पुं०) हिमालय पर्वत।
हिमि-(हिं०पुं०) हिम, पाला।
हिमोदक-(सं०नपुं०) ठंढा पानी।
हिय, हियरा-(हिं०पुं०) हृदय, मन, छाती।
हियाँ-(हिं०अव्य०) यहाँ, इस जगह।
हिया-(हिं०पुं०) हृदय, मन, वक्षःस्थल।
हियाव-(हिं०पुं०) साहस, दृढ़ता।
हिरकना-(हिं०क्रि०) पास में जाना, सटना। **हिरकाना**-(हिं०क्रि०) पास में ले जाना, सटाना।
हिरण-(हिं०पुं०) हरिन, मृग।
हिरण्य-(सं०पुं०) सुवर्ण, सोना, धन, चाँदी। **हिरण्यकार**-(सं०पुं०) सुनार।
हिरदय-(हिं०पुं०) देखो हृदय।
हिरन-(हिं०पुं०) हरिण, मृग।
हिरस-(हिं०पुं०) ईर्षा।
हिरांना-(।ह०क्रि०) खो जाना, दूर होना, भूल जाना।
हिलदा-(हिं० पुं०) मोटा ताजा मनुष्य।
हिलकी-(हिं०स्त्री०) हिचकी, सुसकी।
हिलगोर, हिलकोरा-(हिं०पुं०) तरंग, लहर! **हिलकोरना**-(हिं०स्त्री०) पानी को हिलाकर लहरें उठाना।
हिलग-(हिं०स्त्री०) संबंध लगाव।
हिलगत-(हिं०स्त्री०) टेव। **हिलगाना**-(हिं०क्रि०) अटकना, लगना।
हिलगाना-(हिं०क्रि०) परचाना।
हिलना-(हिं०क्रि०) डोलना, सरकना, ढीला होना, कँपना, थरथराना, झूमना, लहराना, उद्योग करना।
हिलाना-(हिं०क्रि०) डुलाना, झुलाना कँपाना, परचाना,
हिलोर, हिलोरा-(हिं०पुं०) तरंग, लहर।
हिलोरना-(हिं०क्रि०) हिलाना, डुलाना लहराना। **हिलोल**-(हिं०पुं०) देखो हिलोर।
हिवँर, हिवाँर-(हिं०पुं०) पाला।
हिसका-(हिं० पुं०) ईर्ष्या, डाह, स्पर्धा।
हिसाबचोर-(हिं०पुं०) वह जो हिसाब किताब लिखने में चोरी करता हो।
हिसाब बही-(हिं०स्त्री०) वह पुस्त जिसमें लेनदेन का ब्योरा लिखा जाता हो।
हिसिषा-(हिं०स्त्री०) ईर्ष्या, स्पर्धा,
हिहि-(सं०अव्य०) हँसने का शब्द।
हींग-(हिं०स्त्री०) एक छोटे पौधे का जमाया हुआ गोंद जो मसालों में व्यवहार किया जाता है।
हींछा-(हिं०स्त्री०) इच्छा।
हड़ीना-(हिं०क्रि०) पछताना।
हीहीं-(सं०स्त्री०) हँसने का शब्द।
ही-(सं०अव्य०) वह शब्द जो प्रभाव डालने के लिये अथवा स्वीकृति परिमिति, निश्चय, अल्पता, शून्यता, आदि सूचित करने के लिये प्रयोग किया जाता है।
हीअ-(हिं०पुं०) देखो हिय, हृदय।
हीक-(हिं०स्त्री०) हिचकी, हलकी गन्ध।
हीचना-(हिं०क्रि०) देखो हिचकना।
हीछना-(हिं०क्रि०) इच्छा करना।
हीज-(हिं०वि०) आलसी, मट्ठर।
हीठना-(हिं०क्रि०) पास में जाना।
हीन-(सं०वि०) अल्प, तुच्छ, कम, दीन, वंचित, ओछा। **हीनकर्म**-(सं० वि०) बुरा काम करने वाला। **हीन**-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हीनकुल-(सं०वि०) नीच कुल का; **हीनचरित**-(सं०वि०) जिसका आचरण बुरा हो। **हीनज**-(सं०त्रि०) नीच जाति से उत्पन्न। **हीनजाति**-(सं०त्रि०) नीच जाति या वर्ण।
हीनता-(सं०स्त्री०) क्षुद्रता,नी चता। **हीनबल**-(सं०त्रि०) शक्तिहीन। **हीनबुद्धि**-(सं०त्रि०) जड़, मूर्ख। **हीनमति**-(सं०त्रि०) बुद्धिशून्य। **हीनमूल्य**-(सं०पुं०) कम दाम
हीनवर्ण-(सं० पुं०) नीच जाति या वर्ण।
हीय, हिया-(हिं०पुं०) हृदय, हिया।
हीर-(हिं०पुं०) सार, गूदा, शक्ति, बल
हीरा-(हिं०पुं०) एक रत्न जो कड़ाई और चमक के लिये प्रसिद्ध है, अति उत्तम वस्तु।
हीरामन-(हिं०पुं०) सुग्गे की एक कल्पित जाति जो सोने के रंग का माना जाता है।
हीही-(हिं०स्त्री०) हीही करके हँसने की क्रिया। **हीहीकार**-(सं०पुं०) हीही शब्द।
हुं-(हिं०अव्य०) स्वीकृति सूचक शब्द, हाँ
हुंकार-(हिं०पुं०) ललकार, गरज।
हुंकारना-(हिं० क्रि०) ललकारना, गरजना।
हुंकारी-(हिं०स्त्री०) "हुं" करने की क्रिया। एक स्वीकृति सूचक शब्द।
हुंडार-(हिं०पुं०) वृक, भेड़िया।
हुंडी-((हिं० स्त्री०) रुपया उधार लेने की वह रीति जिसमें लिखने वाले को १६) का साल भर में २०') का २५) देने पड़ते हैं
हुंत-(हिं०प्रत्य०) प्राचीन हिन्दी की तृतीया और पंचमी विभक्ति, द्वारा वास्ते, लिये।
हु-(हिं०अव्य०) अतिरिक्त, और भी
हुआना-(वि०क्रि०) सियार की तरह हुआँ हुआँ बोलना।
हुकना-(हिं०क्रि०) विस्मृत होना।
हुकर पुकर-(हिं०स्त्री०) व्यग्रता, अधीरता।
हुकरना-(हिं०क्रि०) देखो हुंकारना।
हुंकार-(सं०पुं०) ललकार, गरज।
हुड़कना-(हिं०क्रि०) बच्चे का रो रोकर व्याकुल होना।
हुड़का-(हिं०पुं०) किसी प्रिय व्यक्ति के अचानक वियोग से होने वाली मानसिक व्यथा। **हुड़कना**-(हिं०क्रि०) ललचाना।
हुड़दंगा-(हिं०पुं०) उपद्रव।
हुड़क-(हिं०पुं०) एक प्रकार का छोटा डोल।
हुत-(सं०वि०) हवन किया हुआ।
हुता-(हिं०क्रि०) प्राचीन अवधी हिन्दी में "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप।
हुताश, हुताशन-(सं० पुं०) अग्नि, आग।
हुंते-(हिं०अव्य०) ओर से, द्वारा।
हुतो-(हिं०क्रि०) "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हुदकाना-(हिं०क्रि०) उसकाना।
हुदना-(हिं०क्रि०) स्तब्ध होना, रुकना।
हुदरना-(हिं०क्रि०) रस्सी पर लटकाना।
हुन-(हिं०पुं०) सुवर्ण, मुद्रा, सोना
हुनना-(हिं०क्रि०) आहुति देना।
हुन्न-(हिं०पुं०) देखो हुन।
हुमकना-(हिं०क्रि०) उछलना, कूदना
हुलकना-(हिं०क्रि०) वमन करना।
हुलना-(हिं०क्रि०) लाठी से ठेलना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुलसना-(हिं०क्रि०) आनन्द से फूलना
हुलसीं-(हिं०स्त्री०) आनन्द, हुलास,
हूला-(हिं०पुं०) लाठी की नोक या छोर।
हूलाना-(हिं०क्रि०) लाठी से ठेलना
हूलाल-(हिं०स्त्री०) तरंग, लहर।
हुलास-(हिं०पुं०) आनन्द की उमंग, उत्साह।
हुलासी-(हिं०वि०) उत्साही, आनन्दी
हुल्लड़-(हिं०पुं०) उपद्रव, ऊधम।
हुश-(हिं०अव्य०) अनुचित बात बोलने पर रोकने के लिये यह शब्द कहा जाता है।
हूं-(हि०अव्य०) स्वीकार सूचक शब्द 'है' का उत्तम पुरुष एक वचन का रूप।
हूंठा-(हिं०पुं०) साढ़े तीन का पहाड़ा
हूंस-(हिं०स्त्री०) ईर्ष्या, डाह, टोक, कोस, फटकार।
हूंसना-(हिं०क्रि०) फटकारना, कोसना
हूक-(हिं०क्रि०) हृदय की पीड़ा।
हूकना-(हिं०क्रि०) पीड़ा होना।
हूचक-(हिं०पुं०) युद्ध, लड़ाई।
हूटना-(हिं०क्रि०) हटना, टलना।
हूठा-(हिं०पुं०) भट्टी या गँवारू चेष्टा, ठेंगा।
हूड़-(हिं०वि०) असावधान, उजड्ड।
हूनना-(हिं०क्रि०) आग में डालना।
हूरना-(हिं०क्रि०) चुभाना, गड़ाना।
हूल-(हिं०स्त्री०) लासा लगा हुआ चिड़िया फँसाने का बाँस, भाले, डंडे छुरे आदि की नोक से भोंकने की क्रिया (स्त्री०) कोलाहल।
हूलना-(हिं०क्रि०) लाठी भाले आदि के नोक को धँसाना।
हूला-(हिं०पुं०) शस्त्र आदि से हूलने की क्रिया।
हूश-(हिं०वि०) अशिष्ट, असभ्य, गँवार
हूह-(हिं०स्त्री०) युद्धनाद, कोलाहल।
हूहू-(सं०पुं०) एक प्रकार के गन्धर्व।
हूहू-(हिं०पुं०) अग्नि के जलने का शब्द, धांय धांय।
हृच्छूल-(सं०नपुं०) हृदय का शूल, रोग;
हृत्-(सं०वि०) हरण किया हुआ।
हृत्कम्प-(सं०पुं०) हृदय का कंप,
हृदय-(सं० नपुं०) वक्षःस्थल, अन्तःकरण, मन, विवेक, बुद्धि, हृदयग्राही (सं०वि०) मन को लुभानेवाला हृदयंगम-(सं०नपुं०) मन में बैठा हुआ। हृदय प्रिय, हृदय वल्लभ-(सं०पुं०) प्रियतम, प्रेमपात्र। हृदय विदारक-अत्यन्त करुण, शोक अथवा दया उत्पन्न करने वाला। हृदयस्पर्शी (सं०वि०) हृदय पर प्रभाव डालने वाला।
हृदयालु-(सं०वि०) सहृदय, सुशील।
हृद्दाह-(सं०पुं०) कलेजे की जलन।
हृद्रुज-(सं०स्त्री०) हृदय की पीड़ा।
हृद्रोग-(सं०पुं०) हृदय का रोग।
हृषित-(सं०वि०) विस्मृत, पुलकित, प्रणत।
हृषीकेश-(सं०पुं०) विष्णु, श्रीकृष्ण, हरिद्वार के पास का एक तीर्थ स्थान।
हृष्ट-(सं०वि०) हर्षित। हृष्टपुष्ट-(पुं०वि०) मोटा, ताजा। हृष्टरोमन्-(सं०त्रि०) रोमाञ्चित, पुलकित।
हे-(सं०क्रि०) संबोधन का शब्द जो पुकारने में या नाम लेने के पहिले बोला जाता है।
हेंहें-(हिं०पुं०) धीरे धीरे हँसने का शब्द।
हेंगा-(हिं०पुं०) वह चौड़ा पाटा जिससे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जुते हुए खेत की मिट्टी बराबर की जाती है। हेंगी--(हिं०स्त्री०) छोटा हेंगा।
हेकड़-(हिं०वि०) उजड्ड, अक्खड़।
हेकड़ी-(हिं०स्त्री०) प्रचण्डता, उग्रता,
हेठ-(हिं०पुं०) बाधा, पीड़ा।
हेठा-(हिं०वि०) तुच्छ, नीचा।
हेठापन-नीचता।
हेठा-(हिं०स्त्री०) मानहानि, अप्रतिष्ठा
हेड़ा-(हिं०पुं०) माँस।
हेत-(हिं०पुं०) देखो हेतु, कारण।
हेतु-(सं०पुं०) प्रयोजन, कारण।
हेतुमान-(हिं०वि०) जिसका कोई हेतु या कारण हो।
हेतुवाद-(सं०पुं०) तर्क, विद्या, नास्तिकता।
हेतुविद्या, हेतुशास्त्र-(सं०स्त्री०) तर्क-शास्त्र।
हेम-(सं०नपुं०) सुवर्ण, सोना।
हेमकर्ता-(सं०पुं०) सुनार। हेमकार-(सं०पुं०) सुनार।
हेमन्त-(सं०पुं०) अगहन और पूस के महीने।
हेय-(सं०वि०) त्याज्य, छोड़ने योग्य, निकृष्ट, बुरा।
हेर-(हिं०स्त्री०) ढूंढ़-(हिं०क्रि०) खोजना, जाँच पड़ताल करना।
हेरफेर-(हिं०पुं०) चक्कर, घुमाव, उलटफेर।
हेरवा-(हिं०पुं०) खोज, अन्वेषण।
हेरवाना-(हिं०क्रि०) ढुंढ़वाना।
हेराना-(हिं०क्रि०) नष्ट होना, लुप्त हो जाना, मन्द पड़ना।
हेराफेरी-(हिं०स्त्री०) अदल बदल।
हेरिक-(सं०पुं०) भेद लेने वाला दूत।
हेरी-(हिं०स्त्री०) पुकार।
हेल-(हिं०पुं०) घनिष्ठता, मेलजोल।
हेलना-(हिं०क्रि०) क्रीड़ा करना, विनोद करना, हँसी उड़ाना।
हेलमेल-(हिं०पुं०) घनिष्ट संबंध, संग साथ।
हेला-(हिं०पुं०) पुकार, चिल्लाहट, आक्रमण, ठेलने का काम। (हिं०पुं०) मेहतर।
हेलिन-(हिं०स्त्री०) डोमिन।
हेली-(हिं०स्त्री०) सहेली, सखी।
हेहे-(सं०अव्य०) सम्बोधन सूचक शब्द।
हेवंत-(हिं०पुं०) देखो हेमन्त।
हैं-(हिं०अव्य०) एक आश्चर्य सूचक शब्द, असम्मति सूचक शब्द (क्रि०) "होना" क्रिया के वर्तमान रूप "है" का बहुवचन।
हैं-(हिं०क्रि०) "होना" क्रिया के वर्तमान काल का एक वचन का रूप।
हैकड़-(हिं०वि०) देखो हेकड़।
हैकल-(हिं०स्त्री०) हुमेल।
हैजम-(हिं०स्त्री०) खड्ग, तलवार।
हैबर-(हिं०पूं०) अच्छा घोड़ा।
हैहै-(हिं०अव्य०) हाय।
हो-(हिं०क्रि०) "होना" क्रिया का सम्भाव्य काल का बहुवचन का रूप।
होंठ-(हिं०पुं०) ओष्ठ, ओंठ।
हों-(सं०पुं०) पुकारने का शब्द, विस्मय-(हिं०क्रि०) "होना" क्रिया का सम्भाव्य काल का तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल रूप, है, था।
होड़-(हिं०स्त्री०) स्पर्धा, बराबरी, हठ
होड़ा वादी, होड़ा होड़ी-(हिं० स्त्री०) लागडाँट।
होत-(हिं०स्त्री०) सामर्थ्य, सम्पन्नता।
होतब-(हिं०पुं०) होनहार, होने वाला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होतव्य-(हिं०पुं०) भवितव्य,
होतव्यता-(हिं०स्त्री०) भवितव्यता
होता-(हिं०पुं०) यज्ञादि में आहुति देने वाला।
होत्री-(हिं०पुं०) देखो होता।
होनहार-(हिं० वि०) भावी, अच्छे लक्षणों का।
होना-(हिं०क्रि०) अस्तित्व रखना, उपस्थित रहना, भुगतना, घटित किया जाना।
होनी-(हिं०स्त्री०) उत्पत्ति, होने वाली घटना, वृत्तान्त।
होम-(सं०पुं०) आहुति देने का काम,
होमना-(हिं०क्रि०) हवन करना, छोड़ देना, नष्ट करना।
होर-(हिं० वि०) ठहरा हुआ, रुका हुआ।
होरमा-(हिं०पुं०) एक प्रकार की घास।
होरसा-(हिं०पुं०) पत्थर की गोल चिकनी चौकी जिस पर चन्दन रगड़ा जाता है अथवा रोटी बनाई जाती है चौका।
होरहा-(हिं०पुं०) चनों का हरा दाना
होरी-(हिं०स्त्री०) देखो होली।
होलक-(हिं०पुं०) आग पर भूनी हुई हरे चने मटर आदि की फलियाँ।
होला-(सं०स्त्री०) होली का त्यौहार
होलाष्टक-(सं०पुं०) होली के त्यौहार के पहले के आठ दिन।
होलिका-(सं०स्त्री०) होली का त्योहार, लकड़ी घास फूस आदि का ढेर जो होली के दिन जलाया जाता है,
होली-(हिं०स्त्री०) हिन्दुओं का एक त्यौहार जो फाल्गुन की पूर्णिमा को मनाया जाता है।
होस-(हिं०पुं०) चेतना।
होहो-(अव्य०वि०) सम्बोधन का शब्द।
हौं-(हिं०सर्व०) वृजभाषा में "मैं" के लिये प्रयोग होता है (क्रि०) हूँ।
हौंकना-(हिं०क्रि०) आग सुलगाना।
हौ-(हिं०अव्य०) स्वीकृति सूचक शब्द हाँ, "होना" क्रिया का भूतकाल का रूप, था।
हौआ-(हिं०पुं०) लड़कों को डराने लिये एक भयानक प्राणी का नाम।
हौका-(हिं०पुं०) प्रबल लोभ या तृष्णा
हौद-(हिं०पुं०) कुण्ड, छोटा जलाशय, नाँद
हौरा-(हिं०पुं०) हल्ला, कोलाहल।
हौली-(हिं०स्त्री०) मदिरा उतारने तथा बेचने का स्थान।
हौले-(हिं०क्रि०वि०) मन्द गति से, धीरे धीरे से।
हौस-(हिं०स्त्री०) चाह, इच्छा, अभिलाषा, प्रबल इच्छा।
ह्यां-(हिं०अव्य०) यहाँ, इस स्थान पर
ह्रद-(सं०पुं०) बड़ा तालाब या झील।
ह्रस्व-(सं०वि०) छोटे परिमाण का नाटा, छोटे आकार का, कम, थोड़ा, नीच, तुच्छ (सं०नपुं०) साग, व्या-व्याकरण में वे स्वर जो बहुत खींचकर नहीं बोले जाते। **ह्रस्वत्व**-(सं० स्त्री०) अल्पता, लघुता।
ह्राद-(सं०पुं०) शब्द, ध्वनि, मेघ की गर्जना।
ह्रीमान्-(हिं०वि०) लज्जाशील।
ह्लाद-(सं०पुं०) आनन्द।
ह्लादक-(सं०वि०) प्रसन्न करने वाला
ह्लान-(सं०पुं०) आनन्द।
ह्लादक-(सं०वि०) प्रसन्न करने वाला।
ह्वान-(सं०नपुं०)) आह्वान, बुलावा।
ह्वा-(हिं० अव्य०) वहाँ, उस स्थान पर।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अर्थ प्रबन्ध, करविभाग, विनिमय, शिक्षा, स्वास्थ्य, विज्ञान, राज-नियम, विधान तथा शासन कार्य संबंधी विविध शब्दों की सूची-जिनके यथोचित अंग्रेज़ी के पर्याय भार्गव कन्साइस एङ्गलो हिन्दी डिक्शनरी में दिये गये हैं

अ

अंक–हिन्दसा।
अंकगणित–इल्म हिसाब।
अंग–अजो।
अंगरखा–लबादा, अचकन।
अंगीकरण–एकरार।
अंगीकार–इकबाल, कबूल, मन्जूर।
अंचल–दामन, हाशिया।
अंश–जुज, सुलस, हिस्सा।
अंशदान–चन्दा।
अंशिका–फातिमा।
अकर्मण्य–नातवाँ।
अकार्य–बेदरद।
अकाल–कहत
अकीर्तिकर–किल्लती।
अक्षमता–नाकाबिलियत।
अक्षर–हरफ़।
अखण्डनीय–लाकलाम।
अक्षम्य–नागवार।
अगोचर–नादीद।
अग्निकुण्ड–आतिशदान।
अग्निचूर्ण–बारूद।
अगण्य–बेशुमार।
अग्रिम–औवल अगला कब्ल।
अग्रक्रयाधिकार–हकशफा।
अग्रमन्यता–तरजीह।
अग्रसोची–दूरंदेश।
अग्रिम–पेशगी, मोकद्दम।
अग्रिम प्रदान–बयाना।
अग्निबाण–बमगोला।
अग्निदाह–मकांसोजी।
अग्न्यस्त्र–तोप बन्दूक वगैरह।
अङ्गविकृति–फालिज।
अङ्गीकरण–मन्जूरी।
अचल–नारवाँ।
अचानक–नागहानी।
अचेत–बदहवास, बेहोश।
अजेय–गैर मगलूब।
अज्ञान–अनजान।
अज्ञान–जहालत।
अचल सम्पत्ति – जायदाद गैरमन कूला।
अण्ड–अंडा।
अणुवीक्षणयन्त्र–खुर्दबीन।
अतिक्रम–पहला हमला।
अतितृप्ति–आसूदगी।
अतिथि–महमान।
अतिथि सत्कार–मेहमानदारी।
अतिदुष्टता–शरारत।
अतिभयावह–बड़ा खौफनाक।
अतिरिक्त–फाजिल, मजीद, अलावा।
अतिरिक्त कर–फाजिल महसूस।
अतिशयोक्ति–मुबालगा।
अत्यधिक–बेहद्द।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्याचार–जुल्म।
अत्याचारी–जुल्मी, शैतान।
अत्यार्द–शरावोर।
अत्युक्ति–मुवालगा।
अत्युत्तम–नफीस।
अदमनीय–गैर मगलूब।
अदम्य–हठी।
अद्भुत–अजीब।
अद्भुत कथा–अफसानादास्तान।
अधम–जलील, कमीना।
अधिक–जायद, खूबा वालाई।
अधिकता – इफरात, इन्तेहा, ज्यादती।
अधिकृत्य–मजाज।
अधिकार–अख्तियार दखल, कब्जा।
अधिकारपत्र–वसीका।
अधिकारी–हाकिम।
अधिकारक्षेत्र–अमलदारी।
अतिकारच्युत–बेदखल।
अधिकारपत्र–सनद।
अधिकार भोग–कब्जा, नवैयत।
अधिकारतन्त्र–नौकरशाही हुकूमत।
अधिकांश–कसरत राय।
अधिकोष–बैंक।
अधिनायक–सरदार।
अधिनियम–मसविदा आईन।
अधिवास–दखल।
अधिपति–अफसर।
अधिराज्य–सलतनत।
अधिवेशन–इजलास।
अध्यक्ष–मीर मजालिस।
अधीनता–मातहती।
अध्यक्षमण्डल – मुदव्विरों की मजलिस।
अध्यादेशक–सिपहसालार।
अध्यापक–मोअल्लिम।
अध्यापकी–मुदर्रिसी।
अध्याय–बाब।
अध्यात्मशास्त्र–इलाहीयात।
अधःपतन–इब्तिजाल।
अनधिकार प्रवेश–मुदाखेलम बेजा।
अनजाने–इत्तेफाकन।
अनशन–फाका।
अनभिज्ञ–नावाकिफ।
अनभिज्ञता–नावाकफियत।
अनलचूर्ण–बारूद।
अनाथ–यतीम।
अनाथालय–यतीमखाना।
अनादर–बेइज्जती।
अनावश्यक–गैर जरूरी।
अनामक–गुमनाम।
अनावृष्टि–खुश्कसाली।
अनिश्चित–नागहाँ, मशकूक।
अनियम–खिलाफ दस्तूर।
अनिमित–बेजाप्ता।
अनिष्ट–बेजा।
अनिर्णीत–बेफैसला।
अनिष्ट–नापसन्द।
अनिष्टशंका–खौफ।
अनुकरण–नकल।
अनुकूल–माकूल।
अनुग्रह–इनायत, मेहर्बानी।
अनुगामी–रफीक।
अनुचित–बेजा, नाजायज, बेमुनासिब।
अनुचिन्ता–बाद का ख्याल।
अनुत्पादक भूमि–ऊसर।
अनुपपन्न–नामाकूल।
अनुपरीक्षा–जिरह।
अनुनय–चापलूसी।
अनुपस्थित–गैरहाजिर।
अनुपस्थिति–अदम हाजिरी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुपयुक्त–नावाकिफ।
अनुपात–तनासुब।
अनुप्रास–रदीफ।
अनुबन्ध–तितिम्मा।
अनुभव–तजुर्बा।
अनुमतिपत्र–परवाना।
अनुमान–कयास।
अनुमानपत्र–बजट।
अनुमोदन–ताईद, मंजूरी।
अनुयायी–मुलाजिम।
अनुरूप–माफिक।
अनुरोध–साजिश, शिफारिश, मंजूरी।
अनुवाद–तर्जुमा।
अनुशासन–नजीर।
अनुसन्धान–तर्बियत, तबीह।
अनुसार–अजरूए, माफिक।
अनुमान–अन्दाजा, तखमीना, कयास।
अनुबन्ध–मुवाहिदा।
अनुयायी–फर्माबरदार।
अनुचित–बजा।
अनुपति–मुसन्ना।
अनुरूपता–मुशाहेबत, ताल्लुक।
अनुसार–बलिहाज।
अनन्त–बेहद।
अन्त–खत्म।
अन्तिम–आखरी।
अनर्थक–नामाकूल।
अन्तर्भूतलाभ–वासलात।
अन्वेषण–तलाशी।
अन्य–दीगर, गैर।
अन्योन्य–इस्तराकत।
अन्याय–बेइन्साफी।
अन्यायी–सितमगर।
अनैतिकता–बददियानती।
अपकार–नुकसान।
अपकीर्ति–बदनामी।
अपकर्ष–घाटा।
अपने आप–खुबखुद।
अपभाषा–खराब उर्दू।
अपमान–बेइज्जती, तौहीनी।
अपवाद–इस्तसना।
अपवित्र–नापाक।
अपर–मजीद।
अपराध–कुसूर, जुर्म, गुनाह।
अपराधी–गुनहगार, मुजरिम।
अपराध संबंधी–फौजदारी।
अपराधपत्र–फर्जजुर्म।
अपराधमुक्ति–रिहाई।
अपराधारोपण–जुर्मलगाना।
अपराधमूलक–मुजरिम।
अपवाद–तोहमत, नालिश।
अपव्यय–फजूलखर्ची।
अपस्मार–मिरगी।
अपक्षपाती–बेतरफदार।
अपहरण–जप्ती, आदमदुन्दी।
अपरिपक्व–खम, नातमाम।
अपरिष्कृत भूमि–ऊसर।
अपव्यय–फजूलखर्ची।
अपहरण–खयानत।
अपर्याप्त–नाकाफी।
अपूर्ण–नामुकम्मल।
अपूर्व–नादिर।
अपूर्वभूत–बेनजीर, बेमिस्ल।
अपेक्षा–बनिस्बत।
अपेक्षाकृत–दूरतर।
अपुत्र–लावल्द।
अप्रकाश्य–पोशीदा।
अप्रकट–अन्दरूनी।
अपहृति–जप्ती।
अप्रसन्न–नाखुश।
अप्रचलित–मसरूक।
अप्रच्छन्द–दरपरदा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अप्रतिष्ठा—बेइज्जती।
अप्रायक्ष—पोशीदा।
अप्रमाणिक—खोटा।
अप्रमाणित—बातिल।
अप्रयोज्य—नामुवाफिक।
अप्रिय—नापसन्द।
अबाधित—गैरमशरूत।
अभद्रता—नाशायस्तगी।
अभयवचन—इतमीनानी।
अभाव—कमी।
अभिधान—लकब।
अभिकर्ता—मुमाश्ता।
अभिनन्दन—तसलीम।
अभिनय—अमल।
अभिन्न—एकसाँ।
अभिप्राय—इरादा।
अभिभव—कमी।
अभिभाषक—वकील।
अभिमत—मनजूर।
अभिमन्त्री—वजीर।
अभागा—कमबख्त।
अभियोग—नालिश, फर्याद, इलजाम, मोकदमा।
अभियोगपत्र—फर्दजुर्म।
अभियुक्त—मुलजिम।
अभियोगी—मुस्तगीस, फर्यादी।
अभ्यास—मश्क, आदत।
अभिमान—गरूर, शेखी।
अभिमानी—शेखीबाज।
अभिरूचि—पसन्दगी।
अभिवादन—तसलीम।
अभिप्राय—मन्शा, इरादा, मकसद, गरज।
अभिनन्दन—मुबारकबादी।
अभियोक्ता—मुद्दई।
अभिशाप—बददुआ।
अभियोग्य—नालिशदार।
अभिलाषा—ख्वाहिश।
अभेद्य—गैर वाजिब।
अभ्यस्त—रेवाजी।
अभ्युदय—तरक्की।
अमार्जित—गन्दा।
अम्लता—खट्टापन।
अमूलक—बेबुनियाद, खामख्याली, वहमी
अयोग्य—नाकाबिल।
अयोग्यता—नाकाबिलियत।
अमोघ—बहुतायत।
अरक्षित—बेमहफूज।
अराजकता—बदअमली।
अरुचिकर—नापसन्द, गन्दा।
अराजकता—बदअमली।
अर्थ—माइने।
अर्थदण्ड—जुर्माना, तावान।
अर्थनीति—किफायतशारी।
अर्थवैपरीत्य—मुबारजत।
अर्थविवाद—मोकदमा, नालिश।
अर्थव्यवस्था—महासिल।
अर्थप्रबंधक—महासिल का दीवान।
अर्थसमिति—खिराज मजलिस।
अर्थशास्त्र—इल्मसियासत।
अर्थसदस्य—वजीर मुहासिल।
अर्थविभाग—मोहकमा खिराज।
अर्थागम—आमदनी।
अर्थी—उम्मैदवार।
अलंकारशास्त्र—इल्म कलाम।
अरुणोदय—फज्र।
अलंकार—आराइश।
अलंघनीय—लाकलाम।
अलौकिक—फैकुल मखलूकात।
अल्पकालिक—चन्दरोजः।
अल्पकालीन—मुवाफिक वख्त।
अल्पजन सत्ताराज्य—हुकूमत उमरा
अल्पबुद्धि—नादान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अल्पवयस्क–कमसिन, नावालिग।
अलंक्रिया–आराइश।
अवकाश–फुरसत।
अवकाश साहाय्य–वजीफा।
अवज्ञा–हुक्म उदूली।
अवगुण–खराबी।
अवच्छेद–वकफ।
अवज्ञाकारी–नाफर्मावर्दारी।
अवतरण–तमसील।
अवधारण–इतमीनान।
अवधि–मीयाद, मोहलत, इन्तेहा।
अवनति–तनज्जुली।
अवरोध–रुकावट।
अवयव–अजजा।
अवश–मजबूर।
अवशिष्ट–बकाया।
अवर्षा–गर्की।
अवलम्बन–सहारा।
अवसर–मौका।
अवसर प्राप्त–वर्खास्त। गोशानशीनी।
अवस्था–उम्र, हालत।
अवहेलना–खफगी।
अविश्वास–गैर एतबारी।
अवस्थाप्राप्त–बालिग।
अविकल–लफ्जी।
अविश्वसनीय–बेइमान, गैरएतवार।
अविभाज्य–गैरतकसीम।
अविभक्त–कोरा।
अविवेकी–बेलेहाज।
अवैतनिक–बिना तनख्वहका।
अवैध–नाजायज, खिलाफ,कानून।
अवैधकार्य–नाजायम फेल।
अवैधता–नामशरूई।
अनख–जरूर।
अव्यवस्था–आईन शिक्ती।
अव्यवस्थित युद्ध–जंग खफीफ।
अविश्वास–बेइतबारी।
अशान्त–बेकरार।
अशासनीय–सरकश।
अशुद्धीकरण–मिलावट।
अश्रद्धा–बेअदबी।
अशिक्षित–जाहिल।
अशिष्ट–गुस्ताख बेहूदा।
अशिष्टता–गुस्ताखी, बदतमीजी।
अश्लील–फहश, गलीज।
अशुद्धि–गलती।
अश्वसज्जा–ओहार (घोड़ेका।)
अश्वारोही–घुड़सवार।
असंख्य–बेशुमार।
असंगत–मुखालिफ।
असंगति–इखतिलाफ।
असंदिग्ध—यकीनी।
असंबद्ध–गैरमुनजमिद।
असन्तोष–बेबसी।
असत्य–झूठा।
असत्यता–जेहालत झूठ।
असार–नाचीज।
असंभव–नामुमकिन।
असंयम–नापाकदामी।
असंयमी–बदपरहेजी।
असंशोशनीय–गया गुजरा।
असन्तोष–बेसब्री।
असफल–नाकामयाब।
असभ्य–नशाइस्ता, देहकानी, वहशी।
असम्मत–नामन्जूर।
असमंजस–हैस वैस।
असहमति–मुखालिफत।
असहयोग–नाइत्तेफाक।
असह्य–गैरबर्दाश्त।
असाधारण–गैरमामूली।
असामयिक–बेवख्त।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

असार–फजूल।
असावधान–वेइहतेयात। वेखवर।
असावधानी–गफलत।
असाध्य–लाइलाज।
असीम–वेहद, लाइन्तेहा।
असीमशक्ति–कूवत इन्तेहा।
असीमित–वेइन्तेहा।
असुविधा–दिक्कत, तरद्दुद, खलल।
असुविधाजनक–नामाफिक।
अस्पष्ट–मुहमिल, मशकूक।
अस्त्र–हथियार।
अस्त्रागार–सिलहखाना।
अस्त्रचिकित्सक–जर्राह।
अस्त्रोपचार–जर्राही।
अस्थि–हड्डी।
अस्तव्यस्त–वेतरतीब।
असि–तलवार।
अस्तित्व–वजूद।
असहिष्णुपता–नाचश्मपाशी।
अस्वाभाविक–खिलाफ तवियत।
अस्थावर धन–माल मनकूला।
अस्वस्थ–नासाज, अलील।
अस्वीकार–नामंजूर।
अस्वीकृति–इनकार।
अस्थायी–आरजी।
अल्पव्यय–किफायतशारी।
अर्थसचिव–दीवान मालगुजारी।
अस्थायी–चन्दरोजा।
अस्खलित–टिकाऊ।
अस्तमित–पोशीदा।
अस्तव्यस्त–डावाँडोल।
अस्थानिक–नागहानी।
अस्थावर–गैर मनकूला।
अस्थिरता–बेकरारी।
अस्वतन्त्र–मातहत।
अहक–ख्वाहिश।
अहरन–निहाई।

आ

आँक–निशान, हरूफ।
आँकड़ा–गिनती।
आँगन–सहन।
आँच–तपिश।
आंशिक–जुज के मुताबिक।
आकर्ष–खिचाव, तनाव।
आकर्षण–कशिश।
आकस्मिक–इत्तेफाकी।
आकस्मिक आक्रमण–नागहा हमला।
आक्रमक–हमला करने वाला।
आक्रमण–धावा, हमला।
आक्रमणकारी–हमला आवर।
आक्रमणात्मक–हमला करने वाला।
आकृति–सूरत, हुलिया।
आकस्मिक आवश्यकता–जरूरत नागेहानी।
आकस्मिक दुर्घटना–वाकुआ।
अकालिक व्यय–आरेजा खर्च।
आकालिक–इत्तेफाकी।
आकाश–आसमान।
आकाशदीप–मीनार पर की रोशनी।
आकाशयान–हवाई जहाज।
आकाशवाणी–आसमानी आवाज।
आकुल–हैरान।
आँक्षेप–वदनामी।
आखेट–शिकार।
आख्यात–मशहूर।
आख्याति–नामवरी।
आगन्तुक–पाहुन, इत्तेफाकन आया हुआ।
आगम–आमदनी।
आग्नेयवाण–आतशी वान।
आग्येयास्त्र–आतशी औजार।
आग्रह–दृढ़, कट्टरपन।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आग्रही–कदर, जिद्दी।
आगापीछा–पशोपेश।
आगामीकाल–आइन्दा जमाना।
आघात–जख्म, जरर।
आङ्गण–सहन।
आचरण–अमल, तरीका।
आचार–रिवाज।
आचारभ्रष्ट–बेदीन।
आचारशास्त्र–इल्मइखलाक।
आचारपत्र का शुल्क–तलवाना।
आचार्य–मोअल्लिम, मोअज्जिम।
आच्छादन–चंदवा।
आच्छादित–पोशीदा।
आजन्म–जिन्दगी भर।
आज्ञप्त–हुक्म दिया हुआ।
आज्ञा–हुक्म, इजाज़त।
आज्ञाकारी–तावेदार।
आज्ञानुसार–मुताविक हुक्म।
आज्ञापत्र–पर्वानगी, फर्द एहकाम।
आज्ञा पालन–फर्मावरदारी, तामीली।
आज्ञा भंग–हुक्म उदूली।
आजीवन वृत्ति– सालाना बजीफा।
आजीवन सम्पत्ति–हीनहयाती।
आडम्बर–शेखी, फख्र।
आतंक–हौल।
आतंकवाद–खौफ।
आतंकवादी–हैवतकार।
आततायी–रहजन, खूंखार।
आत्म–खास, खानगी।
आत्म गौरव–शेखी।
आत्मत्याग–खुद तफाज।
आत्मरक्षा–खुद की हिफाजत।
आत्मसंयम–जप्त।
आत्म समर्पण–खुद कुर्वानी।
आत्मसम्मान–खुद इज्जत।
आत्महत्या–खुद कुशी।
आत्माभिमानी–शेखीवाज।
आत्मावलंबी–खुदतकवियत।
आत्मीयता–मशाहेवत।
आत्मैकाधिपात्र–खुदहाकिमी।
आदर–खातिर, तवाजो।
आदर्श–वानगी, नमूना।
आदेश–हुक्म फर्माइश।
आदरणीय–बुजुर्ग।
आदेशात्मक–हासिल इलतिमास।
आधा–निस्फ।
आधार–नीव।
आधार नियम सभा के–कानून मजलिस।
आधारभूत–बुनियादी।
आधिक्य–ज्यादती।
आधिपत्य–दखल, कब्जा।
आधिराज्य–मतहत मुल्क।
आधीकृत–रेहन किया हुआ।
आधुनिक–हालका, नया।
आध्यात्मिक–इलाहियाती।
आनन्द–लुत्फ, मौज।
आनन्दात्मक–मौजी।
आनन्दमग्न–मस्त।
आन्तरिक–अन्दरूनी।
आन्तरिक प्रेरणा–जाती अक्ल।
आन्दोलन–मुवाहसा, झमेला।
आनन्दध्वनि–हशमत फीरोजी।
आनुपूर्वी–सिलसिलेवार।
आनुषांगिक–इत्तेफाकी।
आपण–दूकान, बाजार।
आपत्ति–आफत, उज्र।
आपत्तिकाल–आफत का वख्त।
आपत्तिजनक–एतराजी।
आपूप–सूखी कड़ी रोटी।
आभरण–जेवर।
आभा–चमक।
आभारी–एहसानमन्द।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आभूषण–जेवर।
आम–अम्बा।
आम–सर्व सामान्य।
आमर्ष–बेचैनी–गुस्सा।
आमूल–बुनियादी।
आमोद–खुशी।
आमोदी–खुश मिजाज।
आय–आमदनी।
आयकर–आमदनी पर रसूम।
आयव्यय अनुमानपात्र–बजट।
आयव्यय निरीक्षक–मुहासिब।
आयव्ययिक–मुहासिल हिसाब।
आयात–दर आमद।
आयातकर–चुंगी।
आयात निर्यात कर–महसूल।
आयु–उम्र।
आयुध–हथियार।
आयुधागार–हथियार घर।
आयोजन–तैयारी।
आरब्ध–जारी।
आरम्भ–इब्तेदा।
आरोग्य–तन्दुरुस्ती।
आरोग्यभवन–शफाखाना।
आराजी–भमि, खेत।
आरोग्यरक्षा–शिफा।
आरोग्यालय–शिफाखाना।
आरोग्यजनक–काबिल इलाज।
आरोप–इलजाम।
आरोपपत्र–फर्दजुर्म।
आरोपित–आयद।
आर्त–तकलीफ जदा।
आर्थिक–जर नसब, नगदी।
आर्थिक कल्याण–किफायती खैर वाफियत।
आर्थिक विषय–किफायती मामला।
आर्थिक स्वराज्य–किफायती सलतनत।
आर्थिक सहायता–जरमदद।
आर्थःप्रयोग–कदीम इबारत।
आलसी–काहिल, सुस्त।
आलिन्ब–ओसारा।
अलेख–मसविदा।
आलेखचित्र–फोटो की तस्वीर।
अलोचना–नजरसानी।
आवरण–परत, जिल्द।
आवरण पृष्ठ–जिल्द।
आवर्त–भँवर।
आवर्त क्षति–कमी बाजगर्द।
आवश्यक–वाजबी, जरूरी।
आवश्यकता–जरूरत।
आवास–डेरा, खेमा।
आविर्भाव–जहूर।
आविर्भूति–पैदा।
आवाभगत–इज्जत।
आविष्कार–ईजाद।
आविष्कर्ता–इजाद करने वाला।
आवेदन–दरखास्त।
आवृत्ति–दोहराव।
आवेश–जोश।
आवेशपूर्ण–जोशीला।
आश्रय–पनाह।
आश्रयस्थान–पनाहगाह।
आश्रित–तावेदार।
आविर्भूति–गालिब।
आशय–मनशा, गरज, मुराद।
आशा–उमौद।
आश्चर्य–ताज्जुब, हैरत।
आशीर्वाद–दुआ।
आश्रय–सहारा।
आश्रित–मुलाजिमा।
आश्वासन–हिमायत, तकवियत।
आसक्ति–मोहब्बत।
आसन्न–नजदीक, आमद।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आशा–उम्मेद।
आह्वान–पुकार।

इ

इनारा–चाह।
इकता–अकेला।
इकताई–अकेलापन।
इकाई–एकाङ्ग।
इक्का–अकेला।
इक्षु–ईख, गन्ना।
इङ्गित–जाहिर मन्शा।
इच्छा–इरादा, ख्वाहिश।
इच्छित–पसन्दीदा मजसूत।
इच्छुक–खाहिशमन्द।
इतिमात्र–सिर्फ।
इतिवृत्ति–कहानी, तवारीख।
इत्यादि–वगैरह।
इतिहास–तवारीख।
इन्द्रकोष–वालाखाना।
इन्द्रजालिक–बाजीगर।
इन्द्रजाल–बाजीगरी।
इन्द्रिय–अजो।
इन्द्रिय निग्रह–परहेज गीरी।
इष्ट–चाहा हुआ।
इढा–हठ, जिद्द।
ईषत्–चन्द, थोड़ा।
ईर्षा–हसद डाह।
ईश्वर–खुदा।
ईश्वरकृपा–नियामत।
ईश्वरनिन्दक–काफिर।
ईश्वरस्तुति–इबादत, भजन।
ईषदुष्ण–गुनगुना, नीमगम।

उ

उऋण–जो कर्जदार न हो।
उकटा–एहसान फरोश।
उक्ति–इजहार
उगलना–क्रय करना।
उग्रतावादी–मुखालिफ।
उचित–वाजिव, मुनासिव, लाजिम, जायज।
उच्चपीठ–चौकी।
उच्चजनतंत्र–हुकूमत उमरा।
उच्चारण–लहजा, तलफ्फुज।
उच्चासन–कुर्सी।
उच्छिष्ट–जूठा, दूसरे का इस्तेमाल किया हुआ।
उच्छृंखल–सरकश।
उच्छ्वासित–खिला हुआ।
उचड़ना–सूख जाना।
उजड्ड–नाशाइस्ता।
उजागर–मशहूर।
उजाड़–वीरान।
उजाला–रोशनी, चमक।
उड्डयन–उड़ाना।
उठंगना–सहारा लेना, टेकना।
उठना–उभड़ना, शुरू होना।
उठाईगीरा–उचक्का, चोर।
उठान–उरूज।
उड़नखटोला–हवाई जहाज।
उड़ाऊ–ज्यादा खर्च करने वाला।
उतारू–कीमत कम होना।
उतारू–मशगूल।
उतावल–घवड़ाहट।
उतृण–देखो उऋण।
उत्कट–सरगर्म।
उत्कण्ठा–हौंसला।
उत्कर्ष–तरजीह, सबकत।
उत्कर्षता–तरक्की, नफासत।
उत्कृष्टग्रन्थ–बेहतरीन किताव।
उत्कृष्टरचना–इल्मी तहरीर।
उत्कोच–रिश्वत, घूंस।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उत्क्रान्ति–उभाड़, फैलाव।
उत्तम–नफीस, उम्दा, बेहतर।
उत्तमता–खूबी।
उतप्त–गरम।
उत्तर–जवाब।
उत्तरकालीन–आइन्दा जमाने का।
उत्तरक्रिया–दफनाना, मुर्दा जलाना।
उत्तरजीवन–बाद में जीना।
उत्तरजीवी–पसजिन्दा।
उत्तरदाता–जवाबदेह।
उत्तरदान–वक्फ।
उत्तरवाद–वकालत।
उत्तरदायित्व–जवाबदेही, जिम्मेदारी।
उत्तरदायी–जवाबदेह, शफी।
उत्तरदायी शासन–जवाबदेह सलतनत
उत्तरपत्र–वसीयतनामा।
उत्तरभोगी–वारिस।
उत्तरवादी–मुद्दालेह।
उत्तरवाद–उज्र।
उत्तरहा–शिमाली।
उत्तराधिकार–वपौती,।
उत्तरार्ध–बादका निस्फ हिस्सा।
उत्तरोत्तर–सिलसिलेवार।
उत्ताप–हरारत।
उत्तेजक–वर्गलाने वाला।
उत्तेजना–तरगीब।
उत्थान–तरक्की, उठान।
उत्पात–हलचल।
उत्पत्ति–पैदाइश।
उत्पादन–पैदाइश, उत्पादनशाला–कारखाना।
उत्पादनकर–सौदागरी चीजपर महसूल।
उत्सव–त्योहार।
उत्साह–उमंग।
उन्मुक–खाहिशमन्द।
उदंत–खबर।
उदय–बढ़ती, तरक्की।
उदर–शिकम।
उदार–सखी।
उदारता–फैज़।
उदास–रंजीदा।
उदासीन–बेरहम।
उदाहरण–मिसाल।
उद्दण्ड–बखेडिया, ढीठ।
उद्देश–मसलहत, मनसब।
उद्यान–बाग।
उद्योग–परिश्रम।
उद्यान विद्या–बागवानी।
उद्योगिता–कार्रवाई।
उद्विग्न–फिक्रमन्द।
उन्नति–तरक्की।
उन्मत्त–पागल।
उन्मत्तगृह–पागलखाना।
उन्मूलन–मनसूखी।
उत्पीड़न–जब्र।
उत्पीडित वर्ग–दलितजाति।
उत्सर्ग–मखसूलियत।
उत्सर्ग मूल्य–कीमत तफवीज।
उद्धत–ढीठ।
उद्धरण–जिक्र।
उद्भिज शास्त्र–इल्म नवातात।
उद्धार–रिहाई।
उपकण्ठ–नजदीक।
उपकरण–सामान, इहलाक।
उपकार–मदद, एहसान।
उपहारी–फायदेमन्द।
उपक्रम–शुरूआत, हाजरी।
उपक्रमणिका–दीवाचा।
उपचय–तरक्की।
उपचर्या–खिदमत।
उपचार–दवा, तदवीर।
उपदेश–सलाह, तम्बीह।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपदेशक–मुदारीस।
उपद्रव–हलचल।
उपद्रवी–शरीर, खुराफाती।
उपधा–फरेब।
उपधान–मसलन, तकिया।
उपधारा–दफा (कानूनकी)।
उपनाम–लकब, उर्फ।
उपनियम–मखसूस कायदा।
उपनिवेश–नयावाद।
उपनिवेश वासी–नयावाद बाशिन्दा।
उपनिर्वाचन–दुवारा चुनाव।
उपनेत्र–चश्मा, ऐनक।
उपन्यास–अफसाना किस्सा।
उपपत्ति–कयास।
उपपत्नी–रखनी।
उपभोक्ता–मुसरिफ।
उपभोग–बजा, रोश।
उपमा–तशबीह।
उपमान–मुकाबिल।
उपमाता–दूध पिलाने वाली धाय।
उपयुक्त–वाजिब, बरमहल।
उपयोग–इस्तेमाल।
उपयोगवाद–आसूदगी।
उपयोगिता–जरूरत।
उपप्लव–बेदखली, बला।
उपयोगी–कारआमद, माफिक।
उपयोगिता–आसूदगी।
उपविभाग–तकसीमसानी।
उपर्युक्त–बयान किया हुआ।
उपलब्ध–हासिल, मयस्सर।
उपलब्धि–समझ, अन्दाज।
उपवेतन–तनखाह।
उपशासक–छोटे लाट।
उपभूमि–नीचे की जमीन।
उपप्रधान–नायब, सर्दार।
उपमन्त्री–नायब दीवाना।
उपशिक्षक–नासिह।
उपसचिव–नायब कारपरदाज।
उपसभापति–छोटा मीर मजलिस।
उपसमिति–जमात खुई।
उपस्थित–हाजिर, मौजूद।
उपस्थिति–हाजरी।
उपहास–मजाक।
उपहार–तोहफा, सौगात।
उपाख्यान–अफसाना।
उपाङ्ग–तितिम्मा।
उपाधि–खिताब, लकब।
उपाय–तदबीर, हिकमत।
उपालम्भ–ओलहना।
उपार्जित–हासिल।
उपायरहित–लाचार।
उपेक्षणीय–बेलिहाज।
उपेक्षा–चश्मपोशी।
उल्लंघन–खिला-फवर्जी।
उबाल–जोश।
उमंग–हौसला।
उर्वरक–खाद।
उर्वरता–जरखेजी।
उर्वरा–जरखेज।
उल्का–दुमदार सैयारा।
उल्कापात–शहाब।
उल्लंघन–शिकस्त, अटकाव।
उलूखल–ओखली।
उल्लेख–हवाला।
उष्णता–तपिश।
उष्णवात–सूजाक।
उष्णीश–पगड़ी।
ऊपरी–खाम, बाहरी।
ऊष्माँग–गर्मी।
ऊर्ध्वपातन यन्त्र–डेग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऋजु–मुवाफिक।
ऋण–कर्ज।
ऋणकर्ता–कर्ज लेने वाला।
ऋणग्रस्त–मकरूज।
ऋणपत्र–तमस्सुक।
ऋणमुक्त–विलाकर्ज।
ऋणशेष–वकाया कर्जा।
ऋणशोधन–अदायगी कर्ज।
ऋणांश–वकाया।
ऋण–कर्ज मन्द।
ऋतु–मोसिम।
ऋद्ध–दौलतमन्द।
ऋद्धि–तरक्की, बढ़ती।
ऋनी–कर्जदार।

ए–ऐ

एकसाँ–इत्तेसाल।
एकत्रित–एक मुश्त।
एकत्रीकरण–इन्जिमाद।
एकत्रीभूत–ढेरी किया हुआ।
एककेन्द्र–हममर्कज।
एकत्व–बराबरी।
एकदेशीय–ममलुकत।
एकपक्षीय–एकतरफा।
एकभाव–हमजिन्स।
एकभूत–शामिल, मिला हुआ।
एकरूप–एकसाँ।
एकरूपता–हमवारी।
एकला–तनहा, बाहिद।
एकाधिकार–तनहा अख्तियार।
एकीकरण–आयोजिश।
एकतन्त्र–खुदमुख्तार।
एकविषयी–हमपेशा।
एकाकी–तनहा।
एकांग–इकाई।
एढ़काधिपति–खुदसर।
एकाधिकारी–इजारादार।
एकान्त–पोशीदा।
एकाश्रमी–मुकामी।
एकीकरण–मिलान।
एकमत्य–एकराय।
ऐक्य–वन्दिश।
ऐतिहासिक–तवारीखी।
ऐच्छिक–इख्तयारी।
ऐश्वर्य–इकबाल, इरामत।
ऐहिक–दुनयवी।

ओ–औ

ओछा–नाकिस।
ओठ–लब।
ओगल–परती जमीन।
ओजस्वी–आलीशान।
ओप–चमक।
औत्सुक्य–शौक।
औगुन–ऐब।
औपनिवेशिक राज्य–नयावादी सलतनत
औचित्य–मुनासेबत।
औद्योगिक–तिजारती।
औद्योगिक अन्वेषण–तिजारती तहकीकात।
औपचारिक–जाहिरी।
औपनिवेषिक–शहर बदर।
औषधि–दवा।
औषधिविद्या–इल्मतबाबात।
औषधालय–दवाखाना।

क

कंकण–कंगन।
कंकाल–ठठरी।
कंगाल–गरीब, भिखमंगा।
कंगाल–मुफिलिस।
कंडु–खुजली।
कंचुक–अंगरखा।
कचहरी–अदालत।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कच्चा–खाम।
कंटक–जहमत।
कंजूस–वखील।
कठोर–सख्त।
कक्ष–कमरा।
कक्षा–दर्जा।
कछार भूमि–दर्याबरार।
कञ्चुकी–कनाजर।
कट्टर–जिद्दी।
कट्टरपंथी–दीनदार।
कटाक्ष–तिरछी नजर।
कटाह–कड़ाहा।
कटिवसन–जंघिया।
कटिबन्ध–कमरबन्द।
कठवैद्य–नीमहकीम।
कठिन–सख्त, मुश्किल।
कठिनता–संगदिली।
कठिनाई–तरद्दद, मुश्किल।
कठोर–सख्त, संगदिल।
कठोर कारावास–सख्त कैद।
कण–जर्रा।
कदाचित–शायद।
कनौड़ा–ऐबी।
कथन–इजहार, बयान।
कथा–किस्सा, कहानी।
कथित–कहा हुआ।
कदर्थ–फजूल।
कन्द–गोल जड़ पौधे की।
कन्दरा–कहफ।
कन्या–बेटी, दुख्तर।
कपट–फरेब, दगा।
कपटनय–फरेबी।
कपटी–दगाबाज।
कपालविद्या–इल्म कासाएमर।
कफ–बलगम।
कमनीय–खूबसूरत।
कमनैत–तीरन्दाज।
कमी–निहाई, तकफीफ।
कम्पन–घर्राहट।
कम्बल–लोई।
करंड–टोकरी।
कर–महसूल खेराज।
करचैल–रूमाल।
करग्राह–कलक्टर।
करतब–फर्ज।
करदाता–महसूल देने वाला।
करम–नसीब।
करमुक्त–माफी।
करमुक्तभूमि–माफी आराजी।
करमुक्ति–हकमाफी।
कररहित–लाखे राज।
करसंधान–महसूल बैठाना।
कर संबंधी प्रस्ताव–तसरीह मुत्तसिल महसूल।
करनिर्धारण–तशखीश खेराज।
कर संबंधी आन्दोलन–मोवाहसा निरज खेराज।
कराल–खौफनाक।
करियाद–दर्याई घोड़ा।
करुण–मेहर्वानी।
कर्कटक–परकाल।
कर्कश–सख्त, बेहरम।
कर्णधार–माझी।
कर्त्तव्य–फर्ज।
कर्त्तव्यपालन–अदाय फर्ज।
कर्पट–रूमाल।
कर्पास–रूई।
कर्मचारी–मुलाजिम, अहलकार।
कर्मचारीगण–अमला।
कर्मचारीतंत्र–नौकरशाही इन्तजाम
कर्महीन–कम्बख्त।
कर्मिष्ठ–मशगूल।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कलंक–तोहमत, इलजाम।
कलंकित–बदनाम।
कलकल–झगड़ा।
कलह–तकरार।
कलहप्रिय–झगड़ालू।
कला–हुनर।
कलाप्रिय–हुनर का शायक।
कलाभवन–हिकमती मदरसा।
कलाविभाग–कावलियत हुनर।
कला विद्यालय–मदरसा हुनर।
कलेवा–नाश्ता।
कल्पना–कयास।
कल्पित–कयासी, फर्जी।
कल्पितकथा–झूठी कहानी।
कल्याण–मुबारक।
कवच–जिरा बख्तर, तावीज।
कविसम्राट्–बादशाही शायर।
कवि (लेखक) का उपनाम लकब।
कष्ट–दिक्कत, तवालत, सदमा।
कष्टकर–तकलीफदेह।
कष्टदायक–दिक्कत तलब।
कहालत–मसल।
क्रम–सिलसिला, तरतीब।
क्रमिक–तरतीबी।
क्रन्दन–कुहराम, रोवापीटी।
क्रमानुगत–सिलसिलेवार।
क्रय–खरीद।
क्रयधन–रकम खरीद।
क्रयपत्र–बयनामा।
क्रयविक्रय–खरीद फरोख्त।
क्रान्ति–इनकिलाब।
क्रान्तिकारी–गर्दिशी, तबदीले सलतनत
क्रान्तिविद्रोह–गर्दिश, इनकिलाब सलतनत।
क्रिया–अमल।
क्रियाशील–मशगूल।
क्रेता–मुश्तरी, खरीदार।
क्रोध–गुस्सा।
क्रूर–जालिम।
क्षणिक–चन्दरोजा।
क्षणिकसन्धि–चन्दरोजा सुलह।
क्षति–हरजाना।
क्षतिपूर्ति–मोआवजा।
क्षमता–लियाकत।
क्षम्य–माफ करने लायक।
क्षमा–माफी।
क्षमाप्राप्त साक्षी–सरकारी गवाह।
क्षमायाचना–उज्र ख्वाही।
क्षमाप्रदान–आम माफीनामा।
क्षय–बर्बादी।
क्षेत्र–आराजी, खेत।
क्षेत्रखाद्य–खादा।
क्षेत्रपुस्तक–खसरा।
क्षेत्रफल–रकबा।
क्षेत्रमिति–इल्म पैमाइश।
क्षेपक–तकल्लुवी लफज।
क्षोभ–इतितिरार।
काचकूपक–बोतल।
काचकोष–लालटेन।
काकपक्ष–जुल्फ।
कागजी मुद्रा–कागजी सिक्का।
काण्ड–बाब।
कामना–मुराद।
कातर–नामर्द, डरपोक।
कामातुर–आशिक।
कामचरिता–आशनाई।
कायर–बुजदिल।
कायिक–जिस्मानी।
कारण–सबब।
कारागार–कैदखाना।
कारावास–कैद।
कार्य–कारोबार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यकर्ता–कारोवारी।
कार्याकारिणी–कारगुजारी।
कार्यकाल–मियाद।
कार्यक्रम–याददाश्त वही।
कार्यक्षम–कारसाज।
कार्यक्षेत्र–हल्का।
कार्यदक्षता–तासीरगरी।
कार्यनिर्वाह–कारगुजारी।
कार्यमापक–पैमाइशकदी।
कार्यवाही–अमर, फेल।
कार्यविधि–तजी अमल।
कार्यशील पूंजी–सरमाया।
कार्य साधक संख्या–करनजाम की गरोह।
कार्यस्वतंत्रता–आजादी कार अमल।
कार्याध्यक्ष–रजिस्ट्रार।
कार्यालय–कारखाना।
कार्यावली–देखो कार्यक्रम।
काल–वख्त।
काल व्यतिक्रम–इखतिलफ वख्त।
काला–स्याह।
काल्पनिक–कयासी।
कालोचित–वरवख्त।
कालकोठरी–स्याह चाह।
काष्ठफलक–तख्ता।
किंवदन्ती–गौगा।
किसान–काश्तकार।
कीटपाल–थानेदार।
कीर्ति–श्तेहरत।
कोलिका–आलपीन।
कुक्कुट–मुर्गी।
कुटुम्ब–खानदान।
कुंजिका–ताली।
कुण्ड–हौज।
कुनबा–गृहस्थी।
कुत्सित–ऐवी।
कुप्रतिनिधित्व–तवविस।
कुपित–खफा।
कुप्रबन्ध–वद इन्तेजामी।
कुप्रसिद्ध–वदनाम।
कुरूप–वदनुमा।
कुवाच्य–वदजवान।
कुल–खान्दान।
कुलपति–मीर मुनसिफ।
कुलपरंपरा–वपौती।
कुलाधिप–रिसालदार।
कुलीन–खान्दानी।
कुव्यवस्था–वद इन्तेजामी
कुवाँ–चाह।
कुशल–होशियार, माहिर।
कुशासन–वदअमली।
कुपक–मस्तूल।
कुष्ठ रोग–कोढ।
कुसीधक–सूदखोर।
कुसुम–फूल।
कुसुम गुच्छ–फूलों का गुच्छा।
कूटनीति–फितरत, हिकमत।
कूटनीतिज्ञ–हिकमती।
कूटप्रबन्ध–जाल साजी।
कूटपरीक्षा–जिरह;
कूटयुक्ति–साजिश।
कूटसंसर्ग–वन्दिश।
कूप–चाह।
कूर्मपृष्ठ–गुम्मद।
कुड्प–वटन।
कूचिका–कुंची बुरुस।
कृतघ्न–नमकहराम।
कृतज्ञ–नमकहलाल, एहसानमन्द।
कृतज्ञता–एहसान।
कृत्रिम–मसनुई बनवटी, नकली।
कृपा–इनायत, मेहर्वानी।
कृपालु–मेहर्वान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृषक–काश्तकार।
कृषकदल–किसान लोग।
कृषि–जराअत।
कृषि विभाग–मोहकमा जराअत।
कृषिःविज्ञान–इल्म जराअत।
कृषि संबंधी–जराअती।
कृष्णाङ्ग–हबशी।
कृपापात्र–मरगूब।
केन्द्र–मरकज।
केन्द्रशासन–नाफ हुकूमत।
केन्द्रीभूत–हममर्कज।
केन्द्रीय–दर्मियानी।
केन्द्रीय धारा सभा–खास कानूनी मजलिस।
केवट–मल्लाह।
केवल–महज।
केशसम–बाल के समान।
कोई–फलाँ। कोट–किला।
कोटपाल–जिलदार। कोमल–मलायम
कोमलस्थि–चवनी हड्डी।
कोण–गोशा।
कोलाहल–शोरगुल।
कोष–खजाना, लोगत।
कोषाध्यक्ष–खजानची।
कोष्टक–ब्राकेट।
कोष्ट–खान्त।
कौतुक–ताज्जुब।
कौतुकागार–अजायबघर।
कौतूहल–अचरज।
कोमार्य–लड़कपन।
कौर–लुकमा।
कौशल–हुनर, करामात।
कौशेय–रेशमी कपड़ा।
क्वाथ–दोशांदा।
क्लिष्ट–दिक्कत तलब।
क्लैव्य–नामर्दी।

ख

खंडकालिक–हिस्सावख्त।
खंडन–इन्फेकाक, मनसूखी।
खंडनीय–रद्द, वासिल।
खद्योत–जुगनू।
खनि–खान।
खनिकविद्या–इल्म मादन।
खपत–तलफ।
खट्टा–तल्ख।
खाद्य–गिजा।
खद्योक–जौहर गिजा।
खाद्यपेयगृह–नाश्ताघर।
खाद्यसामग्री–खाने का समान।
ख्याति–शोहरत।
ख्यापन–इत्तेला।
खिंचाव–तनाव।
खेती–काश्त, जराअत।
खेद–अफसोस, गम।
खेदजनक–गमगीन।
खेदयुक्त–गमगीन।
खोजपड़ताल–सुराग।

ग

गंत्री–गाड़ी।
गंधक–गोगिर्द।
गंभीर–सन्जीदा।
गँवार–देहकानी।
गण–मजलिस, अदालत।
गणक–मुहासिब।
गणतंत्र–जहूरी सलतनत।
गणना–शुमार, तादाद।
गणनीय–काबिल शुमार।
गढ़–किला।
गढ़पति–किलेदार।
गणितकार–हिसाबदाँ।
गत–गुजश्ता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गतमास–गुजश्ता माह।
गतसंज्ञ–बेहोश।
गति–हरकत, रफ्तार।
गति अवरोध–मुहलिक।
गतिहीनता–नारवानी।
गतिशील–जुंबिशगर।
गदका–छोटा डंडा।
गन्ना–ऊख।
गर्भपात–इकसात हमल।
गर्भित–पोशीदा।
गर्व–फख्र, मगरूर।
गर्भित शक्ति–मकफी हुकूमत।
गर्भवती–हामेला।
गम्भीर–संगीन।
गलस्तन–गले का लटकता हुआ गोश्त।
गलफड़ा–जबड़ा।
गल्प– किस्सा।
गलाघोंट–कसाव, कातिल।
गहनता–गहराई।
गाढ़ा–दबीज।
गाथा–आल्हा।
गारा–रेखता।
गिरहकट–जेबकतरा।
गरुड़–उकाब।
गुच्छ–गुलदस्ता।
गुटबंदी–आमेजिश।
गुट्ट–जमात।
गुण–वस्फ,सिफत।
गुणागुण विवेचन–तशखीस।
गुणानुक्रम–सिलसिला।
गुणी–हुनरमन्द।
गुप्त–पोशीदा, खुफिया।
गुप्तचर–जासूस।
गुप्तधन–पोशीदा दौलत।
गुप्तप्रधान–पोशीदाराय।
गुप्तलिपि विज्ञान–पोशीदातहरीर।
गुप्तविनाश–पोशीदा पायमाली।
गुप्तसंघ–पोशीदाजमाव।
गुप्तसभा–पोशीदा मजलिस।
गुप्तहत्या–पोशीदा कत्ल।
गुफा–कहफ।
गुरुत्वाकर्षण–कूवत जाजिवा।
गूढत्व–पोशीदगी।
गृह–इमारत।
गृह उद्योग–घरेलू धंधा।
गृहकार–मेमार।
गृहदाह–मकान सोजी।
गृहनिर्माण–मीमारगीरी।
गृहपति–इमाम, मुजतहिद।
गृहयुद्ध–अन्दरूनी मुखालफत।
गृहरक्षकदल–हिफाजत मकान की करने वाले लोग।
गृहव्यवस्था विज्ञान–इल्म खानगी इन्तेजाम।
गृहस्थी–कुनवा।
ग्रन्थ–किताब।
ग्रन्थकर्ता–मुसन्निफ।
ग्रन्थप्रिय–किताबों का शौक।
ग्रन्थपूजा–किताबों की इबादत।
ग्रन्थ विक्रेता–किताब फरोश।
ग्रन्थ विज्ञान–किताबों का इल्म।
ग्रन्थागार–कदीम नविश्ता खाना।
ग्रन्थमणि–कमाल किताब।
ग्रन्थि–गाँठ।
ग्रहणीय–पसन्दीदा।
गोमाँस–गायगोश्त।
ग्राम–मौजा।
ग्राममूर्ख–देहकानी।
ग्रामसंबंधी–देहाती।
ग्रामसुधार–तरक्की देहात।
ग्राम्य–वहशी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रामीण–देहाती।
ग्रामोत्थान–तरक्की देहात।
ग्रास–लुकमा।
ग्राहक–खरीदार।
ग्राह्य–काबिल।
ग्राह्यता–दाखिली।
गोवध–गोकुशी।
गोचरभूमि–चरागाह।
गोचर–नुमायां।
गोत्रज–खान्दानी।
गोदाम–जिन्स खाना।
गोपन–रूपोशी।
गोपनीयता–पोशीदगी।
गोशाला–दूधघर।
गौण–जेरहुक्म।
गौरव–शान, नामवरी।

घ

घटक–दलाल।
घटक–जुज।
घटना–वकुआ, इत्तेफाक।
घटनास्थल–मौका।
घटी–तशफीफ।
घटित होना–वाका होना।
घनीकरण–वस्तगी।
घरफूकनीति–हिकमत अमली घर फूंकने की।
घर–इमारत।
घर्षण–घिसाव।
घरेलू धंधे–घरेलू रोजगार।
घातक–कातिल।
घातक नीति–तरकी खुदकुशी।
घृणा–नफरत, हिकारत।
घाव–जख्म।
घुमाव–गर्दिश।
घेरा–नाका।
घोर, अपराध–संगीन जूर्म।
घोषणा–एलान।
घोषणापत्र–इजहारनमा।
घोषविक्रय–नीलाम।
घोर प्रमाद–गफलत, वेलेहाजी।

च

चंगुल–पंजा चिड़िये का।
चंचा–विजगाह।
चंडावल–फौज का पीछे का हिस्सा।
चंपत–गायव।
चँपना–शर्माना।
चउहर–चौरहा।
चकवक–घबड़ाया हुआ।
चकला–मुहल्ला।
चंदवा–शामियाना।
चकवेधा–खेराज वसूल कुनिन्दा।
चक्र–गोल चीज।
चक्रनायक–गरोह का सर्दार।
चक्रवृद्धि–सूद दर सूद।
चक्रकार–गोल।
चखचख–झगड़ा।
चतुष्पथ–चौक।
चत्वर–चबूतरा।
चञ्चल–चुलबुला।
चटपट–फौरन।
चटशाला–मदरसा।
चतुर–होशियार।
चतुराई–होशियारी।
चतुरंग–शतरंज।
चन्द्रिका–चांदनी।
चपरासी–अर्दली।
चपलता–चुलबुलाहट।
चमक–रौशनी।
चमत्कार–करामात।
चरण–पाँव।
चरचा–जिक्र।
चरम–आखरी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चरवाक–होशियार।
चलचित्र–चलती तस्वीर।
चलसम्पत्ति–जायदाद मनकूला।
चलायमान–जारी।
चरित्र–खासलत।
चरित्रालय–दुरुस्तीखाना।
चर्चा–अफवा, रतेहात।
चर्या–कार्रवाई।
चरमसीमा–आखरी हद्द।
चलदरुणाकार–मुतहर्दिक शफाखाना।
चसक–हलकी दर्द।
चसका–बुरी आदत।
चारुलेखन कला–हुनर खुशखत।
चारु–खूबसूरत।
चाण्डालक–लेहँगा।
चाटुकार–खुशामदी।
चाटुकारिता–खुशामद।
चालू–रायज।
चाल–फरेब।
चिकवा–कसाई।
चिकित्सक–हकीम, तिब्बी।
चिकित्सा–इलाज।
चिकित्सा संबंधी–मुतल्लिक शफा।
चिकित्सा विज्ञान–इल्म इलाज, हिकमत।
चिकित्सा शास्त्र –इल्म तिब्बी।
चितेरा–मुसव्वर।
चित्र–तस्वीर।
चित्रकला–मुसव्वरी।
चित्तभ्रम–सिर घूमना।
चिन्तन–ख्याल।
चिन्ता–फिक्र, तरद्दद।
चिन्ताकुल–फिक्रजदा।
चिरस्थायी–दायमी।
चिरायु–ज्यादा उम्रका।
चिह्न–निशान, अलामत।
चीनी–शक्कर।
चुंगी–शहर के भीतर माल आने का महसूल।
चुरना–पकना।
चुलबुल–नटखट।
चुल्ली–अंगीठी।
चुकौती–कर्ज की अदायगी।
चूड़ामणि–सदीर, सब से आला।
चेतावनी–अगाही, तंबीह।
चेष्टा–कोशिश, जिस्म की हालत।
चोंचला–खुदनुमाई।
चैतन्यता–होश।
चुनाव–इन्तखाब।
चौकन्ना–होशियार।
चौधरी–सर्दार।
चौपट–बर्बाद।
च्युत–बर्खास्त, खारिज।

छ

छद्मवेश–नकल।
छन्द–मीजान नज्म।
छवि–शबीह, आब।
छल– फरेब, दगा।
छली–दगाबाज, फरेबी।
छांह–साया।
छात्रावास–वजीफा।
छात्रावास–तालीबिल्म के रहने का घर।
छिनार–फाहशा।
छाद्मिक–नीम हकीम।
छायाचित्ररोपणयन्त्र–कैमरा।
छिद्र–सूराख।
छिद्रपूर्ण–जालीदार।
छिद्रान्वेशन–नुख्ता चीनी।
छुटकारा–रिहाई।
छुट्टी–तातील।
छोटा–खफीफ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज

जंगम–मनकूला।
जंगल विज्ञान–इल्म जंगलात।
जंगली–वहशी।
जंजाल–उलझन।
जंतर–तावीज।
जटिल–पेचीला।
जटिलता–पेचीदगी।
जंतु–जानवर।
जगत–दुनियाँ।
जड़–बेजान।
जड़बुद्धि–बेवकूफ।
जड़ता–बेहोशी, जहालत।
जजमान–मेजवान।
जनकल्याण– अवाम की खैरवाफियत।
जनगणना–मर्दुम शुमारी।
जनचोरी–आदम दुजदी।
जनता–आवादी।
जनता चिकित्सालय–शफा खाना आम।
जनता चिकित्साध्यक्ष–सिविल सर्जन।
जनन–पैदाइश।
जनप्रवाद– गौगा।
जनमत ग्रहण–अव्वाम राय
जनरहित– फैज आम।
जनलिप्त–नाकिस।
जनजागति–बेदारी।
जनतंत्र विरोधी–सल्तनत आम के खिलाफ।
जनता–अव्वाम।
जनमनोवृत्ति–इल्म रुह अवाम।
जनपदीय–मुतल्लिक सूवा।
जनश्रुति–मशहूर।
जयघोष–नारा।
जयपत्र–फतवा।
जय स्मारक–निशान फतह।
जन समर्थक–तकवियत आम।
जन संख्या–आवादी।
जन सम्पर्क–आम इन्तेसार, रिस्ता अव्वाम।
जन समूह–मजमा।
जन साधारण–आम लोग।
जन्म–पैदाइश
जन्म जात–पैदाइशी।
जन्म पत्री–जायचा।
जन्म सिद्ध अधिकार–पैदाइशी हक।
जन शिक्षा–तालीम मजमुआ।
जय पत्र–फतह का परवाना।
जल निष्कासन प्रणाली–परनाला।
जलपान–नाश्ता।
जल प्रणाली–नहर।
जल प्लवन–शैलाव।
जल प्लावन–तूफान।
जल यान–जहाज।
जल सेना– समुद्री फौज।
जल सेनाध्यक्ष–समुद्री फौज का अफसर
जल सेना नायक–मीर बहर।
जलावर्त–गिर्दआब।
जलश्रोत–चश्मा, फौआरा।
जलवायु–आव हवा।
जलाशय–तालाव।
जलीय–आबी।
जाति–कौम।
जाति–बहिष्कार–बिरादरी से खारिज।
जाति बहिष्कृत–मरदूद।
जाति विद्वेष–जाति नफरत।
जाँच– तशखीश, तहकीकात।
ज्वर—बुखार।
ज्योतिष फलित–इल्म नजूम।
ज्वाला–आग की लपट।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञान–इल्म।
ज्ञानवान–दानिरामय।
ज्ञापन–इस्तकरार।
जानकार–वाकिफ।
जाना–गुजरना।
जारज संतति–हरामज़ादा।
जाली–बनावटी।
जिज्ञासा–तहकीकात।
जिलाधीश–जिले का मालिक।
जीव–फतह।
जीवविज्ञान–जानवरों का इल्म।
जीवनशास्त्र–इल्म हैवानात।
जीवन–जिन्दगी।
जीवहत्या–कत्ल।
जीवस्तर–अन्दाजा गुजर बसर।
जीवनसूत्र–मुहरिक।
जीविका–पेशा।
जिह्वा–जबान।
जुगुप्सा–शिकायत।
जृम्भा–जम्हाई।
जोड़–मीजान।

झ

झंझट–बखेड़ा।
झगड़ालू–हुज्जती।
झट–फौरन।
झब्बा–कलावत्तू का गुच्छा
झांक–ताक।
झाड़ी–छोटा पौधा।
झुंड–गरोह।
झूट–लगो।
झेंप–शरमिन्दगी।

ट

टंकण–सुहागा।
टंकी–पानी की हौज।
टंच–कंजूस, चालाक।
टई–तरकीब।
टकसाल–सिक्का ढालने का कारखाना।
टका–रुपया पैसा, दौलत।
टटका–ताजा।
टप्पा–पुराने का हिस्सा।
टलहा–खोटा सिक्का।
टिप्पणी–शरह तफसीर।
टिपका–पानी का बूंद।
टोला–मुहल्ला।
टोली–छोटी बस्ती।

ठ

ठंठ–खुश्क, सूखा।
ठंठपाल–गरीब।
ठकुरसोहाती–शिफारिस।
ठगिया–चालबाज।
ठठोली–हंसी, दिल्लगी।
ठस–सख्त।
ठसक–शेखी।
ठसका–फख्र।
ठिंगना–नाटे कद का।
ठिठोलिया–दिल्लगी बाज।
ठूंठ–बिना शाक और पत्ती का दरख्त
ठेठ–खिलजी।

ड

डंगर–चौपाया।
डंडवार–नीची दिवार।
डगना–जुम्बिश होना।
डगर–रास्ता।
डमरू (भू) मध्य–खाकनाए।
डर–खौफ।
डाबर–तालाब।
डाकू–रहजन।
डकैती–रहजनी।
डामल–जला बतनी।
डिल्ला–कोहान।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढ

ढंग–तरकीब।
ढंगी–होशियार, चालाक।
ढकोसला–खुद नुमाई।
ढब–उपाय।
ढारस–तसल्ली, दिलासा।
ढिग–नजदीक
ढिनोरा–मुनादी।
ढूंढ–तहकीकात।
ढोंग–नखरा।
ढोंगी–मक्कार।

त

तठस्थ–मुसावी, वेपरवाह।
तठस्थ शक्ति–मुसावी ताकत।
तटावरोध–किस्ती चलाने की मनाही।
तंदल–चावल।
तत्काल–फौरन।
तत्क्षणिक–एक लहमें में किया हुआ।
तत्वज्ञान–अक्लदोस्ती, फलसफा।
तत्पर–मुस्तैद।
तत्वपरीक्षा–खुदोगीरी, नुख्ताचीनी
तथ्यविषय–असलियत।
तनाव–खिंचाव।
तर्क–दलील, मुबाहसा –
तन्तुवाय–जोलाहा।
तर्क-वितर्क–बहस।
तमाल–तंबाकु।
तरण–तिरेंदा,पीपा।
तरणशीलता–तिराव।
तन्तुकील–ढरकी।
ताम्बूल–पान।
तरकाचिह्न–तार का निशान।
तरुण–जवान।
तरलीकरण–पतला करना।
तल्पगृह–सोने का कमरा।
तापमानयन्त्र–थरमामीटर
तालिका–फहरिस्त।
ताराग–तंवीह।
तारुण्य–जोवन।
तिमिंगल–व्हेल मछली।
तिथिहीन–बिना तारीख का।
तिरस्कृत–नाकंदा।
तीक्ष्ण–तेज।
तीक्ष्णधार–चोखा।
तीर्थयात्रा–सियाहत।
तीव्रभर्तस्ना–तंवीह।
त्रास–खौफ।
त्रिकोणमिति–इल्ममुस्सलस।
त्रिचक्री–तिनपहिया गाड़ी।
त्रुटि–ऐब।
तुच्छ–नाचीज, खफीफ।
तुच्छता–नाचीजी।
तुमुलोत्सव–जसन।
तुलना–मोकावला।
तुलनात्मक–मुकावले से तजवीज किया हुआ।
तुलनात्मक, अध्ययन–मुकावले की तालिबिल्मी।
तुल्ब–मसावी ,मिस्ल।
तुल्यवय–हम उमर।
तुल्यभार–हमवजनी।
तुला–तराजू।
तूलीपट–रजाई।
तुलिका–तोशक।
तृप्त–मसरुर।
तैलान्त–तेलहन।
तोरण–मेहराव, गुम्मज।
त्याग–तर्क, परहेज।
त्यागपत्र–इस्तीफा।
तितंत्री–सितार।
त्वरा–आभादगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थ

थमना—रुकना।
थवई—मेमार।
थना—पुलिस की बड़ी चौकी।
थानैत—किसी जगह का मालिक।
थाली—तश्तरी।
थोक—एक मुश्त।
थोक उत्पत्ति—एक मुश्त तैयारी माल।
थोथा—नाचीज।

द

दम्भ—शेखी, फक्र।
दंभी—मक्कार।
दक्ष—कारगुजार।
दक्षिनि—जनवी।
दण्ड—सजा।
दण्डविधान—जाप्ता फौजदारी।
दण्डविषयक—फौजदारी के मुतल्लिक।
दण्ड संबंधी—फौजदारी।
दण्डविधि—जाप्ता फौजदारी।
दण्डनीय—सजा तलब।
दण्डनीय मनुष्य वध—कत्ल की गुनाहगारी।
दण्डाज्ञा—फतवा।
दण्डात्मक—ताजीरी।
दण्डात्मक विधि—ताजीरी तरकीब।
दण्डात्मक कर—ताजीरी टिकट।
दत्तक—मुतबन्ना।
दत्तक विधान—तबन्नी।
दमन—रोक, दबाव।
दया—रहम, शाफीकत।
दयालू—मेहरवान, सलीम।
दयावान्—रहमदिल।
दयालुता—मेहरवानी।
दयापूर्ण व्यवदर्पण—इनायत।
दर्पण—आइना।
दर्शक—तमाशबीन।
दरार—शिगाफ।
दरिद्रता—गरीबी।
दधि—दही।
दंत विज्ञान—दांत का इल्म।
दशा—कैफियत, रंगत।
दल—गरोह।
दलपति—सरगना।
दलदूत—गरोह का अगुआ।
दलबंदी—फितना गरोह।
दल समिति-मजलिस गरोह।
दलाल—दरमियानी शख्स।
दलपरिवर्तन—तवदील जिन्स।
दलित—जाति—जलील कौम।
दक्षिणा—बखशीश, इनाम।
दान—खैरात, डिब्बा
दानगृहीता—लेनेवाला।
दानपात्र—हिब्बा नामा, वसीयत नामा।
दानशील—फैयाज।
दायित्व—जिम्मेदारी।
दार्शनिक—फैलसूफ।
दास—गुलाम।
दासता—गुलामी।
दासत्व—गुलामी।
दासी—लौंडी।
दाह—सोंजिश।
दाहक—जलानेवाला।
दिव्य—विहिश्ती।
दिग्दर्शकयन्त्र—कम्पस।
दीक्षान्तोत्सव—मसलिस इजितमा।
दीर्घकालीन—दवामी।
दीर्घकालीन अवकाश—दवामी छुट्टी।
दीर्घ जीवन—उम्र दराजी।
दीर्घसूत्री—सुस्त, काहिल।
दीपक—चिराग।
दीपगोलक—रोशनी का कुब्बा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दीपशलाका–दियासलाई।
दीप्ति–रौनक।
दुग्धशाला–दुध घर।
दुर्ग–किला।
दुर्गनिर्माण–किला बन्दी।
दुर्गति–आफत।
दुर्गन्ध–बदबू।
दुर्गन्धदार–बदबूदार।
दुर्घटना–हादसा।
दुराचरण–बदचलनी।
दुर्जन–बदजात।
दुर्दम्य–सरकश।
दुर्बल–कमजोर।
दुर्बलता–कमजोरी।
दुर्बलमति–नातवां।
दुर्बोध–वायदुलफहम।
दुर्भाग्य–बदवख्ती।
दुर्भाव–बदखोही, बदनीयती।
दुर्भिक्ष–कहत।
दुर्मुख–बदजबान।
दुरुपयोग–बदसल्की।
दुराग्रह–जिद।
दुराचारी–बदतमीज, शोहदा।
दुर्लभ–नापेद।
दुर्वृत्ति–बदचलन।
दुर्व्यवहार–बदचलनी।
दुष्कर्म–बद अमल।
दुष्ट–काफीर।
दुष्टप्रोत्साहन–जुर्म में तरगीब।
दूत–एलची।
दूतावास–एलची के रहने का मकान
दूध–शीर।
दूरध्वनि प्रेषक–रेडियो।
दूरदर्षकयन्त्र–दुरबीन।
दूरदर्शिता–दूरन्देशी।
दूरदर्शी–दूरदेश।
दूराकर्षक यन्त्र–टेलीफोन।
दुष्ट–मरदूद, शरारती।
दुष्टता–शरारत, शैतानी।
दुष्टविचार–बदनीयती।
दुष्ट स्वभाव–बदमिजाज।
दुष्ट निर्णय–बुरा फैसला।
दुःख–तकलीफ, रंज।
दुःखात्मक नाटक–नक्ल गम।
दुःसहायक–जुर्म में तगरीब।
दृढ़रोग–कड़ा रोग।
दृढ़–मजबूत, चुस्त।
दृढ़वचन–एकरारी।
दृढ़ता–चुस्ती।
दृढ़वाक्य–एकरार।
दृढ़गत–मजमूनी।
दृढ़ीकरण–ताईद।
दृष्टान्त–नजीर, मिसाल।
दृष्टि–नजर।
दृष्टिबिन्दु–अंदाजा।
दृढ़ोक्ति–एकरार।
देनी–चन्दा।
देय–वाजिबुल अदा।
देयपत्र–रुक्का।
देवदूत–फिरश्ता।
देवस्थान–परिर्शतसगाह।
देवालय–परिर्शतिसगाह।
देश–मुल्क।
देशज–वतनी।
देशद्रोही–बादशाह का दुश्मन।
देशनिर्वासन–जलावतन।
देशान्तर–रिवाज।
देशान्तरवास–गैर मुल्क में बसना।
देशी–वतनी।
दैनिकपत्रिका–रोजनामचा।
दैवयोग–इत्तफाक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दवात्—इतिफाकन।
देवाधीन—खोदानखस्ता।
दोष—खराबी, रोव, इलजाम।
दोषपूर्ण—नाकिस।
दोषमुक्ति—छुटकारा।
दोषदर्शी—नुख्ता चीनी।
दोषारोपण—नालिश, इलजाम।
दोषी—कसूरवार।
दौत्यकर्म—एलचीगिरी।
दौत्यकार्य्य—एलची का काम।
द्वार—दरवाजा।
द्वारपाल—दरवान।
द्वारबंदी—दरवाजा वंदी।
द्वारा—बजरिये, मार्फत।
द्विगुण—दोचन्द।
द्विचक्री—पैरगाड़ी।
द्विपाद—दो पैर वाला।
द्विपृष्ठविमान—दो पंख का हवाई जहाज।
द्विवार्षिक—दोसाला।
द्विशासन—दो वादशाहों की सल्तनत।
द्वेष—नफरत।
द्वेषी—दुश्मन।
द्वैधशासन—देखो द्विशासन।
द्वैभिषक—दो जवान का।

ध

धन—जर।
धनविनियोग—जर लगाना।
धनागार—वंक।
धनाढ्य शासन—सल्तनत उमरा।
धनी—मालदार।
धनुराकार—मेहरावदार।
धमकी—तहदीद।
धन्यवाद—शाबाशी।
धनुर्धारी—तीरंदाज।
धर्म—महजव।
धर्मगुरु—खादिमेदीन।
धब्बा—दारा।
धरन—शहतीर।
धर्म परिवर्तन—तकलीव।
धर्म प्रचारक—मुल्ला।
धर्मवीर—शहीद।
धर्मशाला—सराय।
धर्मशास्त्र—इल्म इलाही।
धर्मादाय—वखफ।
धर्मांध—मुल आस्सिव।
धर्मोन्माद—तास्सुव।
धातुपरीक्षा—धात की आजमाइश।
धातुनिर्माणशाला—कारखाना ढलाई का।
धातुमुद्रा—नकदरोकड़।
धातुविद्या—समाया।
धान्य—गल्ला अनाज।
धान्यभाण्ड—खत्ती।
धामाई—हमशीर।
धारणा—ख्याल।
धार्मिक—मजहवी।
धारा—दफा।
धारालेखनी—रोशनाई भरी हुई कलम।
धारा शास्त्र—इल्म फिख।
धारा सभा—इजतिहादी मजलिस।
धारा संबंधी—मुत्तसिल कानून।
धिक्कार—फतवा।
धी—कानूनी।
धुरीराष्ट्र—खास रियासत।
धूर्त—मक्कार, मुतफन्नी।
धूर्तता—चालवाजी।
धूम्रकेतु—सायरा। धूम्ररथ्या—रेलगाड़ी
धृष्ट—शोख, वे अदव, गुस्ताख।
धृष्टता—गुस्ताखी।
ध्यान—तवज्जह।
ध्वजा ' ण—झंडा फहराना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्वनि–आवाज।
ध्वनिक्षेपकयन्त्र–रेडियो।
ध्वंस–पायमाली।
ध्वजा–झंडा।
ध्वनिवर्धक यन्त्र–लाउडस्पीकर।
ध्वनिशास्त्र–इल्म आवाज।

न

नखशिखान्त–सर से पैर तक।
नगर–शहर।
नगर निर्माण योजना–शहर की तरक्की की तजवीज।
नगर भवन–शहर की आम इमारत।
नगरवासी–शहर का वाशिन्दा।
नगरशुल्क–चुंगी।
नगरसभा–मर्दुमइजलास।
नगर समिर्ति–शहर जमाल।
नगराध्यक्ष–किलेदार।
नद्विनी–आलपीन।
नपुंसक–नामर्द।
नभश्चर–उड़ाका।
नरपति–बादशाह।
नरपशु–शैतान।
नरमदल का सदस्य–मुतवास्सित।
नरहत्या–मर्दुमकुशी।
नलिकामुख–बंदूक या तोप का मुँह।
नमस्कार–सलाम।
नवनियुक्ति–नई भरती।
नवसैनिक–नया सिपाही।
नागरिक–शहरी।
नागरिक रक्षक–शहर रखवाल।
नागरिक अधिकार–शहरी हुकूमत।
नागरिकता–शहरी हुकाक।
नागरिक शास्त्र–इल्म जमात।
नागरिक स्वतंत्रता–शहरी आजादी।
नाटकगृह–नकलखाना।
नापित–हज्जाम।
नाम परिवर्तन–दाखिल खारिज।
नाममात्र–फकत नाम का।
नामावली–फिहरिस्त।
नामान्तर–उर्फ।
नामान्तर करना–दाखिल खारिज।
नारंगी–नारंज।
नारंज–नारंज।
नारिकेल–नारियल।
नाव–किश्ती।
नाविक–मल्लाह।
नाविकशक्ति–समुद्री ताक़त।
नाश–बरबादी, तबाही।
नास्तिक–काफिर।
निकट–नजदीक।
निकटवर्ती–मुत्तसिल।
निकुंज–झाड़ी।
निक्षेप–अमानत, इरसाल।
निक्षेपग्राही–सजावल।
निक्षेपग्राहक–अमानतदार।
निक्षेपी–सुपुर्द करनेवाला।
निगूढ़–पोशीदा।
निघण्टु–लुगत।
नित्य–दायम।
निचोल–बुर्का।
निन्दा–तोहमत, शिकायत, मलामत।
निन्दात्मक–शिकायती।
निन्दात्मक प्रस्ताव–राय शिकायती।
निन्दात्मक लेख–मलामतनामा।
निजी–रवानगी, खुद का।
निजी खेती–खुद काश्त।
निन्द्य–मलामत तलब।
निपुण–हिकमती, कामिल।
निपुणता–होशियारी।
निबंध लेख–रिसाला।
निमित्त–मुराद।
निमेष–आँख मिचाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निम्नलिखित–हस्बजैल ।
निम्न व्यवस्थापक सभा–जरीन अदालत
नियताहारी–कमखोर ।
नियंत्रक–अमीन ।
नियंत्रण–जप्त ।
नियमकालिक–गर्दशी ।
नियम–कायदा, शरायत, आईन, दस्तूर
नियमतंत्र–इन्तेजाम, बन्दोबस्त ।
नियमनिष्ठा–तबियत ।
नियम पूर्वक–कायदे के माफिक ।
नियमबद्ध–मुत्तफिक ।
नियमभंग–कानून शिकनी ।
नियमरहित–बेकानून ।
नियमविरुद्ध–खिलाफ कानून ।
नियमहीन–बेकायदा ।
नियमित–मुन्हसिर ।
नियामक–नाजिर ।
नियुक्त–मुकर्रर ।
नियुक्त समिति–मुकर्रर पंच ।
नियुक्ति–मुकररी, तकरुर ।
नियोगी–मृतकालेही ।
नियोजत्व–पेशकारी ।
नियोजित–नामजद ।
निर्दिष्ट सहायता–दादरसी ।
निरंकुश शासन–जुल्म ।
निरंतर–इस्तमुरार, लगातार ।
निरक्षरता–जिहालत ।
निरगमन–निकास ।
निरपराध–बेगुनाह ।
निरपेक्ष–हलीम ।
निरस्त्र नगर–हथियारों से खाली नगर।
निरसन–इखराज, मंसूखी ।
निरस्त्रीकरण–बेसिलह करना ।
निरर्थक–फजूल ।
निरर्थकता–फजूलियत ।
निराकरण–मौकूफी ।
निराकुलता–इतमीनान ।
निराकृति–इनकार ।
निराधार–बेबुनियाद ।
निरीक्षक–निगरा ।
निराश–नाउम्मैद ।
निरीक्षण–निगरानी, मोआइना ।
निरपेक्ष–वाकई, सरीरह ।
निरोध–हिरासत ।
निरोधक–मुजाहिम, निरुपण, तशखीस
निरोधकदल–मुजाहिम गिरोह ।
निरुपद्रवी–बेगुनाह ।
निर्गमन–रवानगी, कूंच ।
निर्णय–फैसला, तसफिया, तजवीज ।
निःशेष–बेबाक ।
निर्जीव–नाखूद ।
निर्णायक–तअय्यन ।
निर्णयकर्ता–फैसला करने वाला ।
निर्णय प्रश्न–तनकीह ।
निर्णायकमत–कोल एकाती ।
निर्णीत–तयशुदा ।
निर्णीतधनी–डिगरीदार ।
निर्णेता–पंच ।
निर्दय–खूंखार ।
निर्दयी–जालिम।
निर्दिष्ट–मकसूद ।
निर्देश–हिदायत ।
निर्देशक–मुवर्हन ।
निर्दयता–बेरहमी, संगदिली ।
निर्देशक प्रधान–रहनुमा खास ।
निर्दोष–बेऐब ।
निर्दोषी–बेकसूर ।
निर्धारण–तयशुदा कीमत ।
निर्धारित–तयशुदा ।
निर्धारित कर–कायम किया हुआ खिराज ।
निर्धारित पूंजी–तयशुदा सरमाया ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निर्धारित भाग–हिस्सा, बखरा ।
निर्बल–कमजोर ।
निबटारा–सुलह ।
निर्बुद्धि–बेअक्ल ।
निर्मल–साफ, मुसफी ।
निर्मल मति–कुशादा दिल ।
निर्माण–तामीर ।
निर्बन्ध–अदद ।
निर्माण कला–इल्म तामीर ।
निर्माण विध–दस्तकारी ।
निर्मूल–नेस्तनाबूद ।
निर्मूल्य–मुफ्त ।
निर्मोही–संगदिल ।
निर्यात–मुल्क से बाहर माल भेजना ।
निर्यात कर–माल भेजने की चुंगी ।
निर्लज्ज–बेगैरत ।
निर्वाचन–चुनाव, इस्तखाब, पसंदीदगी
निर्वंश–लावल्द ।
निर्वाचनक्षेत्र–चुनाव की जगह ।
निर्वाचनपद–चुनाव का अख्तियार ।
निर्वाचनसमूह–चुनने वाले लोग ।
निर्वाचनअधिकारी–चुनाव का आफिस
निर्वाचित–चुनाव शुदा ।
निर्वाचित समिति–चुनी हुई कमेटी ।
निर्वासन–शहर बदल ।
निर्वाह–जारा ।
निर्विवाद–गैर मुतनाजा ।
निर्विवादयजि–बेफरेब ।
निर्देश–इजहार ।
निर्देशसूची–फेहरिस्त ।
निर्विरोध समझौता–गैर इतराज ।
निर्विवाद–बेमुबहसा ।
निर्हस्तक्षेप–दस्तंदाजी न करना ।
निर्दिष्ट क्षेत्र–मकसूस जगह ।
निर्णयकर्ता–सालिहस ।
निर्धारित मुद्रा–तमशुदा सिक्का ।
निर्विवाद–बिला शक ।
निर्वाह–गुजारा । निर्लज्ज–बेशर्म ।
निर्लज्जता–बेशर्मी ।
निर्वासित–जलावतन ।
निर्विवादी–बेमुबाहसा ।
निवारक–रोकने वाला ।
निवास स्थान–सकूनत ।
निवासी–बाशिन्दा ।
निवेदन–दरख्वास्त, फरियाद ।
निवृत्ति–तवक्कुफ ।
निवृत्ति पुरस्कार–बकशीश ।
निषेध–मुमानियत ।
निषेधक–मुजाहिम ।
निषेधाज्ञा–हुक्म इम्तिनाई ।
निषिद्ध–नाजायज ।
निषेधात्मक–इम्तिनाई ।
निष्क्रय प्रतिशोध–सत्याग्रह ।
निषेधार्थक–इनकार के मीना का ।
निष्कपट–कुशादा दिल ।
निष्कासन–बेदखली ।
निष्कृति–रजामन्दी ।
निष्पत्ति–इजरा ।
निष्पादन–तामील, अन्जाम ।
निष्ठा–बादशाह के लिये वफादारी ।
निष्ठुर–तेज तल्ख ।
निष्पक्ष–बेतरफदार ।
निष्पक्षता–बेतरफदारी ।
निष्पत्ति–इनफिसाल ।
निष्फल–बातिल ।
निश्चय–यकीन ।
निश्चयात्मक–मुकर्रर ।
निश्चित–कायम, मोख्येम ।
निःशस्त्र–बेहथियार ।
निश्चिता–बेफिक्र ।
निःशेष–बेबाक ।
निःशुल्क–माफी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निःशुल्क व्यापार–मुफ्त का रोजगार।
निःशुल्क शिक्षा–मुफ्त तालीम।
निःसंक्रमण–बीमारी हटाना।
निःसंदेह–बेशक।
निस्तार–छुटकारा।
नीति–अखलाक।
नीतिज्ञ–अहले आईन।
नीति विरुद्धता–खिलाफ आईन।
नीरस–बदजायका।
नृवंश विज्ञान–इन्सानी कुनबी का इलाज।
नृपहत्या–कत्ल बादशाह।
नृशंस–शहीद।
नृशंसता–बड़ा गुनाह।
नेतृत्व–सरदारी।
नेता–सरगना।
नैतिक घोषणा–जाहिर अखलाक।
नैतिक–अखलाकी।
नैतिक चरित्र–इल्म अदब।
नैतिक पतन–बदइखलाक।
नैमित्तिक व्यय–नामुकर्रर।
नैसर्गिक–कुदरती।
नैसर्गिक मृत्यु–कुदरती मौत।
नैसर्गिक साधन–कुदरती तरकीब।
नौका–किश्ती।
नौकाध्यक्ष–कप्तान जहाज।
नौकाभङ्ग–जहाज का टूटना।
नौकुल–जहाजों का बेड़ा।
नौसंचालन–जहाजी इल्म।
न्याय–इन्साफ।
न्याय विरुद्ध–खिलाफ कायदा।
न्यायव्यवहार–कानूनी सलूक।
न्यायशासन–कानून का इन्साफ।
न्यायशुल्क–अदालती रसूम।
न्यायसभा–अदालत।
न्यायसमिति–जूरी।
न्यायसंगत–जायज, वाजिब।
न्यायसहकारी–असेसर।
न्यायानुकूल–इन्साफनुमा।
न्यायाधिकार–इख्तियारेअदलगुस्तरी।
न्यायाधीश–काजी, मुन्सिफ।
न्यायभवन–दारूल अदालत।
न्याय्य–वाजिब।
न्यायासन–मसनद इन्साफ।
न्यायाधीश समूह–काजियों की जमात।
न्यायालय–कचहरी, अदालत।
न्यायसर्वोच्च–अदालत आला।
न्याय लघुवाद संबंधी–अदालत खफीफा
न्याय सम्पत्ति विषयक–अदालत दीवानी
न्याय दण्ड विषयक–अदालत फौजदारी
न्याय राजत्व विषयक–अदालत माल
न्याय पंचोंका–अदालत सालसी।
न्यायासन–तख्त कानून।
न्यास–अमानत।
न्यासधारी–अमानतदार।
न्यासरक्षक–अमानतदार।
न्यून–कम।
न्यूनता–कमी, तकफीक।
न्यूनतम–बेहद्दकमी।
न्यूनाधिक्य–ऐकरारी।
न्यूनीकरण–तकफीक।

प

पंख–डैना।
पंखेरू–चिड़िया।
पंगत–कतार।
पंच–सालिस।
पंचायत–इनफेसाल।
पंचायती–सालसी।
पंजारा–धुनिया।
पंजिका–जरीदा। सिजिल।
पंजीकार–सरिश्तेदार।
पंडित–अक्लमंद। पंक्ति–कतार।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंथ–राह, चलन ।
पँसवरिया–डचोढ़ीदार ।
पंसारी–बनिया ।
पक्का–तजुर्बेकार, होशियार ।
पकड़–गिरफ्त ।
पक्ष–शरीक, जानिब ।
पक्षकार–फरीक ।
पक्षधारण–वकालत ।
पक्षनिवेदन–मुबाहसा, तकरार ।
पक्षपात–हिमायत, तरफदारी ।
पक्षपातपूर्ण–मुफायसद ।
पक्षपाती–तरफदार, मुतस्सिब ।
पक्षसमर्थक–वकील ।
पक्षसमर्थन–पैरवी ।
पक्षधाम–लकवा ।
पक्षावलंबी–तरफदार ।
पक्षी–चिड़िया ।
पक्षीशाला–चिड़ियाखाना ।
पगडंडी–पतला रास्ता ।
पगतरी–जूता ।
पछतावा–नदामत ।
पट–कपड़ा, तख्ता ।
पटकन–तमाचा, छोटा डंडा ।
पटका–कमरबन्द ।
पटकार–जुलाहा ।
पटकुटी–तम्बू ।
पटच्चर–पुराना कपड़ा ।
पटसन–पटुआ ।
पटह–नगाड़ा ।
पटुता, पटुत्व–होशियारी ।
पटोल–गाँव का चौधरी ।
पट्टिश–संगीन ।
पट्टा–तमस्सुख ।
पट्टेदार–मुस्तजीर ।
पट्ठा–नौजवन । पड़ोस–कुर्वत ।
पण–वाजी ।

पताका–झंडा ।
पति–शौहर । पद्धति–तरीका ।
पत्रकार–अखबार नवीस ।
पत्रकार कला–अखबारनवीसी का हुनर
पत्रप्रकोष्ठ–कदीन नविश्ता खाना ।
पत्रप्रतिनिधि–अखबार का शवीह ।
पत्रव्यवहार–खतकितावत ।
पत्रवाहक–चिट्ठीरसाँ ।
पत्रसंग्रह–मिसिल ।
पत्रस्थान–डाकघर ।
पत्रिका–रोजनामा ।
पथप्रदर्शक–पेशरौ, राहनुमा ।
पथदर्शन–राहनुमाई ।
पद–फिकरा, मर्तबा, ओहदा ।
पदच्युत–बर्खास्त, खारिज, मौकूफ ।
पथभ्रष्ट–गुमराह ।
पथिक–मुसाफिर ।
पदचिह्न–हुर्मत का निशान ।
पदच्युति–बर्खास्तगी ।
पदत्याग–इस्तीफा ।
पदाधिकारी–ओहदेदार ।
पदाभिलाषी–उम्मेदवार ।
पद्धति–तरकीब ।
पनडुब्बी–समुद्र में गोता लगाकर चलने वाला जहाज ।
परख–तशखीश ।
परचुन–फुटकर सौदा ।
परमानन्द–कमाल आसाइश ।
परमसुखद–फाहदवक्स ।
परम्परा–रियायत । परन्तु–लेकिन ।
पराकाष्ठा–उरुचु ।
परकार्यसाधक–मुख्तार ।
पराङ्मुखता–तनफफूर ।
पराधिकार ग्रहण–दस्तदराजी ।
पराजय–शिकस्त ।
पराधीन–मातहत ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पराधीनता–मातहती ।
परामर्श–मशविरा ।
परामर्शदाता–सलाहकार ।
परायण–मायल ।
पराश्रयी–मुतवक्किल ।
परिक्रमण–गर्दिश ।
परिक्रमा–गिर्दावरी ।
परिगणित जातियाँ–फर्दी कौम ।
परिचय–जान पहिचान ।
परिचित–वाकिफ ।
परिच्छेद–फिक्रा ।
परिणति–तबदील ।
परिणाम–नतीजा ।
परिताप–सियासत ।
परित्याग–तर्क ।
परिधि–दायरा ।
परिधिस्थ–लश्करी ओहदेदार ।
परिपक्वता–तैयारी ।
परिपाक–तहलील, हजम ।
परिपाटी–रस्मेरेवाज ।
परिभ्रमण–सैर ।
परिमाण–मिकदार ।
परिमित साधन–तंगदस्त ।
परिवर्तन–तबादला ।
परिवर्तन विरोधी–हिफाजतगर ।
परिवर्तनशील–मुतहर्रिक ।
परिवर्तनीय–मुमकिन तबदील ।
परिवर्धित करना–फैलाना ।
परिशोधन–दुरुस्तगी । परिवार–खानदान ।
परिश्रम–मशक्कत ।
परिश्रमी–मशक्कती ।
परिशिष्ट–तितिम्मा ।
परिशोधन–बेवाकी ।
परिषद–दीवानेखास ।
परिस्थिति–हालत ।
परिहास–हंसी, दिल्लगी ।
परिहास्य–मजाक ।
परिक्षक–मुसाहिब ।
परीक्षण–मुलाहजा ।
परीक्षा–आजमाइश, तहकीकात, इम्तहान ।
परीक्षाकाल–इम्तेहान का जमाना ।
परीक्षात्मक–आजमानेवाला ।
परीक्षार्थी–मुमतहिल ।
परोपकारी–खैरखाह, फैयाज ।
पर्यंक–पलंग ।
पर्यटन–सैर ।
पर्यवेक्षण–तहकीकात ।
पर्याप्त–काफी ।
पलायन–भगदड़ ।
पवित्र–पाक, मुकद्दस ।
पवित्रता–फाकीजीग ।
पशु–मवेशी ।
पशुपूजा–परस्तिश मवेशी ।
पशुवाटिका–मवेशीखाना ।
पशुधन–मवेशी ।
पशुचिकित्सा–मवेशियों का इलाज ।
पशुपालन–मवेशियो का पालना ।
पश्चाताप–तोबा ।
पश्चिमी–मगरबी ।
पहिचान–शिनाख्त । पहिले–कब्ल ।
पहुँच–रसाई । पाकशाला–बबर्चीखाना
पाखण्ड–मक्र, फरेब ।
पाखण्डी–मक्कार ।
पाठशाला–मदरसा ।
पाठ्यक्रम–पढ़ाने की पुस्तकों की फेहरिस्त ।
पाण्डित्य–लियाकत ।
पाण्डुलिपि–मसविदा ।
पाण्डुलेख–दस्तनविश्ता, मसविदा ।
पात्र–बर्तन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाप सहाय–गुनाह का साथी।
पारस्परिक–वाहमी।
पारस्परिक संबंध–हमनिस्वत।
पारितोषिक–इनाम।
पारिभाषिक–लुगती।
पारिभाषिक कोष–रिसाला कनून।
पारिश्रमिक–मेहनताना।
पार्थक्य–अलगाव।
पाश्चात्य–पश्चिमी।
पालक–निगरा।
पालन–पर्वरिश।
पिंगल शास्त्र–इल्म अरुज।
पितृहत्या–कत्ल वालिद।
पित्त–सफरा।
पित्तल–पीतल।
पिशुन–चुगलखोर।
पीठ–पुश्त।
पीड़ा–दर्द।
पुण्यात्मा–फैयाज।
पुतला–शवीह।
पुत्री–दुख्तर।
पुनर्ग्रहण–वाजयाफ्त।
पुनर्जनन–वाज पैदाइश।
पुनर्जागृति–फिर से तरक्की।
पुनर्निर्माण–दुबारा तामीर।
पुनर्निर्वाचक–दुबारा चुनाव।
पुनरुक्ति–तकर्रुर।
पुनर्लाभ–वाजयाफ्त।
पुनर्विचार–तजवीज सानी।
पुनर्विचार की प्रार्थना–अपील।
पुनरुत्पत्ति–अजसरनौ पैदाइश।
पुनरुद्धार–हालत, मुजद्दद।
पुनरुत्पादन–दुबारा पैदाइश।
पुनर्निर्माण–पैदाइश अस्सरनौ।
पुनर्नियोग–दस्तूर साबिक।
पुनर्निवेदन–अपील।
पुनर्प्राप्ति–वाजयाफ्त।
पुनरावृत्ति–नजरसानी।
पुनःसंगठन–दुबारा बनावट।
पुनः प्रेषण–फिर भेजना।
पुनः स्थापन–बाददेही।
पुर–शहर। पुर्नर्निर्णय–तजवीज आसा
पुनः संस्थापन–बहाल।
पुरस्कार–इनाम।
पुराणकथा–तवारीख।
पुराणपंथी–हाफिज।
पुरातत्व–कदामत। पुराना–कदीम।
पुरातत्व विभाग–इल्म कदामत।
पुरावृत्त–तवारीख।
पुरुष–शख्श।
पुरोहित–पादड़ी।
पुष्ट–मजबूत।
पुष्टि–मजबूती। पुष्कर–पोखरा।
पुष्प–गुल।
पुस्तक विज्ञान–किताबों का इल्म।
पुस्तक विक्रेता–किताब फरोश।
पुस्तकालय–कुतुबखाना।
पुस्तिका–छोटी किताब।
पूंजी–सरमाया।
पूजन–इबादत। पूपशाला–तन्दूरशाला।
पूंजीपति–सरमायादार। पूजा–इबादत
पूतिनाशक–सड़ना रोकनेवाली।
पूरक–तितिम्मा।
पूर्ण–मुसल्लम।
पूर्णत–पूरीतौर से।
पूर्णता–तमामी।
पूर्णस्वामित्व–पूरा हक।
पूर्ती–तमामी।
पूर्ण हड़ताल–पूरी हड़ताल।
पूर्व कथित–पहले से कहा हुआ।
पूर्व कल्पना–पेशबन्दी। पूर्वकालिक–कदीमी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वक्रम–तफसील ।
पूर्वज–मूरिस । पूर्वकृत–पेशरफ्त ।
पूर्वधारण–पेशबीनी ।
पूर्व पीठिक–दीबाचा ।
पूर्ववत –पेशसै ।
पूर्वविधान–पहले का इंतिजाम ।
पूर्व सेवा वृत्ति–पेन्शन ।
पूर्वाधिकार–बेशकदरी ।
पूर्वाधिकारी–मुकद्दम ।
पूर्वानुकूलता–पेश मायल ।
पूर्वाभिनय–मुकर बयान ।
पूर्वीय–पूरबी ।
पूर्वोक्त–मजकूर, सावक जिक्र ।
पृथक्–अलग ।
पृथकत्व–अलहदगी ।
पृथकत्ववाद–अकीदा मुतफर्रिक
पूंजीवाद–मालदादी मायल ।
पूंजीपति–सरमायादार ।
पृष्टवंश–रीढ़ ।

प्र

प्रकट–जाहिर ।
प्रकरण–सिलसिला इबारत ।
प्रक्रिया–रफ्तार ।
प्रकाश–रोशनी ।
प्रकाशक–मुश्तरी ।
प्रकार–किस्म, नवैयत ।
प्रकाशगृह–रोशनी घर ।
प्रकाशन–तशनीफ ।
प्रकाशित–मुश्तहर ।
प्रकृति–तबियत, मिजाज ।
प्रक्षेप–तकल्लुफो ।
प्रगट–जाहिर ।
प्रगति–तरक्की ।
प्रगतिशीलता–रफ्तार ।
प्रगल्भ–शोख ।
प्रचलित–जायज़ रवां ।
प्रचलन–निफाज ।
प्रचंडता–शिद्दत ।
प्रचार–इजरा, गर्दिश ।
प्रचार कार्य–इन्तशार ।
प्रचुरता–ज्यादती ।
प्रच्छन्न–पोशीदा ।
प्रजा–रैयत ।
प्रजातंत्रराज्य–सल्तनत औवाम ।
प्रणाम–बन्दगी ।
प्रणाली–शिरिस्ता ।
प्रताप–इकबाल ।
प्रतीपी–आलीशान ।
प्रतारक–धोखेबाज ।
प्रतिकार–मुजहियत ।
प्रतिकूल–बरखिलाफ ।
प्रतिग्रहण–बाजदावा ।
प्रतिमाद्य–मजाज ।
प्रतिघात–मुदाफत ।
प्रतिज्ञा–कौल एकरार ।
प्रतिज्ञापत्र–मुचलका।
प्रति द्वंदिता–मुखालफत ।
प्रतिनिधि–कायम मुकाम, कारिंदा ।
प्रतिनिधि पत्र–मुख्तार नामा।
प्रतिनिधि सभा–जमात आम ।
प्रतिपक्षी–फरीकसानी ।
प्रतिपादक–रवादार ।
प्रतिबंध–गर्त ।
प्रतिबिंब–अक्स ।
प्रतिभा–जेहन ।
प्रतिभू–जमानत ।
प्रतिभूति–फिलतनामा ।
प्रतिमा–बुत ।
प्रतिरूप–नमूना ।
प्रतिरोधक–कज्जाक ।
प्रतिरोधी–मुखालिफ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रतिवाद–तरदीद ।
प्रतिवादी–मुद्दालेह ।
प्रतिविधान–तरतीब ।
प्रतिष्ठा–रुतवा, हश्मत ।
प्रतिष्ठित–मोअज्जज ।
प्रतीक्षा–इन्तजारी ।
प्रत्यक्ष–जाहिर ।
प्रत्यक्षदर्शी–चश्मदीद ।
प्रत्यय–एतकाद ।
प्रत्यागत–वापस ।
प्रत्याशा–सबकत ।
प्रतिपक्षी–बनाम ।
प्रतिपत्र–मुसन्ना ।
प्रतिपुरुष–वकील ।
प्रतिवादी–मुद्दालेह ।
प्रथानुसार–बदस्तूर ।
प्रदर्शन–दिखाव ।
प्रदर्शनी–नुमाइश ।
प्रदेश–सूबा ।
प्रदेशवासी–गैर मुल्क का बाशिंदा ।
प्रधान–खास ।
प्रधान मंत्री–वजीरे आज्म ।
प्रधानाचार्य–मुदर्रिश आलम ।
प्रधान स्थान–सरल मुकाम ।
प्रधान न्यायालय–हाईकोर्ट ।
प्रधान सचिव सभा–दीवान खास ।
प्रबन्ध–बन्दोबस्त, इन्तजाम ।
प्रबन्धक–मुन्तजिम ।
प्रबल–जोरदार ।
प्रभाव–असर, तासीर ।
प्रभावशाली–जोरावर ।
प्रमत्त–बावला ।
प्रमाण–सबूत ।
प्रमाणपत्र–सनद, दस्तावेज ।
प्रमाणयुक्त–हकीकी ।
प्रमुख–औवल ।
प्रतिलिपि–मुसन्ना ।
प्रतिलिपिक–नकल नवीस ।
प्रतिसाद–जवाबदेही ।
प्रतिशोध–मुवादला ।
प्रतिरोध–इन्कार ।
प्रतिस्पर्धा–हमसारी ।
प्रफुल्ल–खुश दिल ।
प्रयास–कोशिश ।
प्रयोग–आजमाइश ।
प्रयोजन–सरीकार ।
प्रयोजनीय–जरूरी ।
प्रलोभन–लालच ।
प्रलय–तबाही ।
प्रवर्त–कारगर ।
प्रवंचन–दगा ।
प्रवर्धन–इम्पेतेदाद ।
प्रवाह–बहाव ।
प्रविष्ठ–दाखिल ।
प्रवीण–हुनरमन्द ।
प्रकृति–विधान ।
प्रवेश–दरामद । दाखिली ।
प्रवेशकार–पेशकार ।
प्रशंसा–सिफारिश ।
प्रशांत–मुसावी ।
प्रश्न–सवाल ।
प्रष्टव्य–जवाबदेह ।
प्रसंग–मौका ।
प्रसन्नता–खुशी ।
प्रस्ताव–मसविदा ।
प्रसिद्धी–शोहरत ।
प्रस्तावना–दीबाचा ।
प्रस्तुतिपत्र–रूपकार ।
प्रस्थान–रवानगी ।
प्रहार–हमला ।
प्राकार–शहर पनाह ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राकृतिक,–कुदरती ।
प्राचीन–कदीम ।
प्रातकाल–फज्र ।
प्राप्य–वाजिबुल वसूल।
प्राधान्य–बुजुर्गी ।
प्राप्त–हासिल ।
प्राप्त, यौवन–बालिग ।
प्राप्ति,–याफ्तनी ।
प्रायः–अमूमन
प्रारंभिक–इब्तदाई ।
प्रार्थना–इस्तदा अर्जी ।
प्रार्थी–सालय ।
पृष्ठ–पुश्त ।
प्रासंगिक–माकूल ।
प्रोत्साहन–हिमायत ।
प्रौढ़–बालिग ।

फ

फक्किका–गलत वहस ।
फटकार–तंबीर ।
फटन–दरार ।
फहर–नामाक़ूल ।
फुहावा–इत्तिफाक ।
फुफ्फुस–फेफड़ा ।

ब

बंदीगृह–कैदखाना ।
बंधक–रेहन ।
बंधुत्व–भाईचारा ।
बधिक–जल्लाद ।
बलप्रयोग–जुल्म ।
बलात्कार–जिनाबिल जब्र ।
बलिदान–कुर्बानी ।
बहुतायत–इफरात ।
बहुधा–अकसर ।
बहुमत–कसरत राय ।
बहुनाम–ताजीम ।
बहुमूल्य–बेशकीमती ।
बाधा–खलल ।
बाहुल्य–इफरात ।
बाहुयुद्ध–कुश्ती ।
बुदबुद–बुल्ला ।
ब्यौरा,–तफसील ।
बेचीपत्र–इन्तखाबनामा ।

भ

भंगुर,–नाजुक ।
भगोड़ा–अवारा ।
भंडार–खजाना ।
भंजन–इबादत ।
भत्ता–मशाहरा ।
भय–खतरा, खौफ ।
भयध्वनि–गोहार ।
भयंकर–बेकरार ।
भयप्रद–खतरनाक ।
भवन–महल ।
भविष्यकथा–पेंचबन्दी ।
भर्त्सनम–मलामत ।
भंडार–जिन्सखाना ।
भरोसा–इतबार ।
भाग्य–किस्मत ।
भारतीय दंडविधि,–जाब्ता फौजदारी ।
भार युक्त–वजनी ।
भावात्मक–दिक्कत अंगेज ।
भविष्य वाणी–पेशगोई ।
भाषणकला–जबान आवरी ।
भाग–तकसीम ।
भागदान–हिस्सा रसदी ।
भागा हुआ–फरार ।
भागी–हिस्सेदार ।
भाषणस्वतंत्रता–बोलने की आजादी
भूगर्भशास्त्र–इल्म तरतीब जमीन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भिक्षुक–फकीर ।
भिन्न–जुदा मुख्तलिफ ।
भीड़–गजमा ।
भीत–दीवार ।
भूखण्ड–आराजी ।
भूतपूर्व–गुजश्ता ।
भूमण्डल–गोला ।
भूमापन–पैमाइश जमीन ।
भूमि–आराजी जमीन ।
भूमिकर–मालगुजारी ।
भूमिका–दीबाचा ।
भूमिखण्ड–आराजी ।
भूमिगृह–तहखाना ।
भूमिप्राप्त–नमहसूला जमीन ।
भूर्जपत्र–भोजपत्तर ।
भूमिहितघ्न–तहखाना ।
भूल–गलती ।
भूसम्पत्ति–जमींदारी ।
भूमिस्वत्व–आराजी ।
भूमि संबंधी–जिरायती ।
भूमिसिंचन–आबादही ।
भूस्वामी–जमींदार ।
भेंट–नजराना ।
भेदात्मक कर–जुजियात महसूल ।
भेद्य–जख्म पजीर ।
भेद–अनवाय ।
भेदिया–मुखबिर ।
भोगाधिकार—फरागद ।
भोज–जाफत ।
भोजन विज्ञान—इल्म गिजा।
भोजनालय–होटल ।
भौतिक–जिस्मानी ।
भौतिक मूल्य—जरूरी कीमत ।
भौतिकवाद–इनकारेरुह ।
भौतिक विज्ञान–इल्म हिकमत ।
भ्रम–शुबहा ।
भ्रमणशील–खानाबदोश ।
भ्रममूलक–गुमराही ।
भ्रष्टाचार–बदजाती ।
भ्रष्टता–खराबी ।
भ्रान्तवर्णन–खिलाफ बयान ।
भ्रान्ति–गलतफहमी, भुल ।
भ्रान्तिपूर्ण–फरेबदेह ।
भ्रातृक–बेरादराना ।
भ्रूण–हमल ।
भ्रूणहत्या—कत्ल हमल ।

म

मक्का–भुट्टा ।
मठ–खानकाह ।
मठवासी–दर्वेश ।
मण्डप–शामियाना ।
मण्डल–हलका ।
मण्डलेश्वर–मजिस्ट्रेट ।
मंत्रिमंडल–वजीर लोग ।
मंच–चबूतरा ।
मत–राय ।
मतदाता–रायदेहन्दा ।
मन्त्री–वजीर ।
मन्त्रीका कार्य विभाग–मोहकमा वजीर
मजदूर दल–फिर्का मजदूर ।
मजदूर संगठन–मजदूर की जमानत ।
मत–राय ।
मत एकत्री करण–आजमाइश राय ।
मत गणक–राय गिननेवाला ।
मत गुटिका–राय देने का कुर्रा ।
मतग्रहण–राय लेना ।
मतभेद–इखतिलाफराय ।
मतसंग्रह–राय इकट्ठा करना ।
मताधिकार–राय देनेका हक ।
मतिभ्रम–फितूर अक्ल ।
मताधिकार प्रदान–मखलसी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतैक्य–इत्तेहाद ।
मदिरालय–शराबखाना ।
मधुसेकन–शराबखोरी ।
मधुतृण–ईख ।
मद्याक–दुरुस्त शुदा शराब ।
मध्यम–मामूली ।
मध्यम प्रमाण–औसद ।
मध्यवर्ती–दर्मियानी ।
मध्यमान–औसद ।
मध्यस्थ–सालिस ।
मध्यस्थतानिर्णय–फैसला सालिस ।
मध्यस्थ राज्य–दर्मियानी रियासत ।
मन भावना–पसंदीदा ।
मनुष्य गणना–मर्दुमशुमारी ।
मनुष्यता–आदमियत ।
मनुष्यद्रोही–इन्सान दुश्मन ।
मनुष्यभक्षी–आदमखोर ।
मनोनीत–नामजद ।
मनोगम्य–मुतसौवर ।
मनोनीत करना–नामजद करना ।
मनोयोग–तवज्जह ।
मनोरंजन–दिलपसंद ।
मनोभंग–दिलशिकनी ।
मनोमालिन्य–रंजीदगी ।
मन्दमति–कुन्दजेहन ।
मनोविज्ञान–इल्म दिमागी ।
मनोवैज्ञानिक–इल्म दिमागी का जानकार ।
मनोहर–दिलचस्प, हसीन ।
मन्त्रणा–मशवरा, सलाह ।
मरणोपरान्त–वादवफात ।
मरणोत्तर शवपरीक्षा–बाद वफात मुर्दे की जाँच ।
मंत्री–वजीर ।
मंत्रीदल–विजारत ।
मंत्रीसभा–दीवान खास ।
मरणोत्तर–वादवफात ।
मर्मभेदी–कुरीन ।
मर्यादा–मनसब, अशमत ।
मर्यादित–महदूद ।
मल्लभूमि–अखाड़ा ।
महत्वशाली–बड़ा, आलीशान ।
महाकाव्य–दिलेराना बयान ।
महाजन–कोठीवाला ।
महापराध–बड़ा कसूर ।
महान प्रश्न–बड़ा सवाल ।
महाप्रान्त–बड़ा सूबा ।
महामात्र–महाफिज दफ्तर ।
महामात्र मंडल–खलवतखाना ।
महाविद्यालय–कालिज ।
महासंख्यानक–मुनीम, आला ।
महासभा–जमात मजलिस ।
महिमा–बुजुर्गी ।
महिला–औरत ।
माँग–तलवी ।
माँगनेपर–इन्दुलतलब ।
माँस–गोश्त ।
माँसाहारी–दरिन्दा गोश्तखोर ।
माङ्गलिक–मुबारक ।
माँडलिक राज्य–जमीदारों की सल्तनत ।
मार्ग–राह, रास्ता ।
मार्दव–नजाकत ।
माण्डलिक–जागीरदारी ।
मार्गकर–रास्तेकी चुंगी ।
मातृत्व–बालिदापन ।
मानदण्ड–पैमाना ।
मानसिक–दिमागी ।
मानहानि–हतकइज्जत ।
माध्यम–विचला ।
माध्यमिक शिक्षा–दर्जाखानी तालीम ।
मानचित्र–नकशा ।
मानपत्र–पैगाम खास ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मान मर्दन–खिलाफ़त ।
मानव जाति–इनसानियत ।
मानव वंश विज्ञान–कौमी कारिसल ।
मानव हितकर–इनसान का भला ।
मादक वस्तु निषेध–शराब की मुमानियत
मानसिक संकट–दिमागी तरद्दुद ।
माप–पैमाना ।
मापन–पैमाइश ।
मायावान–उल्फती ।
मायावाद–उल्फती ।
मानहानि–हतक इज्जत ।
माया–धोका ।
मार्ग–रास्ता ।
मार्गकर–रास्ते का रसूम ।
मार्गव्यय–रास्ते का खर्च ।
मार्जनी–झाड़ू ।
मासिक पत्रिका–माहवारी अखबार ।
मितव्यय–किफायती ।
मिताचार–परहेजगीरी ।
मिताचारी–मुतदिल ।
मिताहारी–कमखोर ।
मित्र–दोस्त ।
मित्रता–दोस्ती ।
मित्रपक्ष–दोस्तलोग ।
मिथ्या–गलत ।
मिथ्याग्रहण–गबन ।
मिथ्याक्षेप–तोहमत ।
मिथ्या चर्चा–झूठी बात ।
मिथ्यादोषारोप–झूठा इलजाम ।
मिथ्या प्रशंसक–चापलूस ।
मिथ्याभिभोक्ता–झूठी तोहमत लगाने वाला ।
मिथ्यावाद–बेहूदा, हुज्जत ।
मिथ्या शपथ–झूठी गवाही ।
मिथ्या प्रशंसा–खुशामद ।
मिश्रण—मिलावट ।
मिश्रधातु–मिला हुआ धातु ।
मिथ्या लेख–गलत इन्दराज़ ।
मिलाप–आमेजिश ।
मिश्रित–मुरक्कब ।
मिश्रित–बरी ।
मीठा–शीरीं ।
मुक्त व्यापार–रोजगार बिना रोककर।
मुक्ति–रिहाई ।
मुक्ति सेना–मखलासी फौज ।
मुख्य–खास ।
मुखिया–सरदार ।
मुख्याध्यापक–पीर मुदर्रिस ।
मुदित–खुश ।
मूत्रपाथ–पेशाबखाना ।
मुद्रण–छपकर मशहूर होना ।
मुद्रण नियन्ता–छापे की रुकावट करने वाला ।
मुद्रण स्वातन्त्र्य–छापेखाने की आज़ादी
मुद्रणाधिकार–छापी किताब में हक मसन्निफ़ ।
मुद्रणालय–छापाखाना ।
मुद्रा–मुहरा, सिक्का ।
मुद्राकरणप्रवृत्ति–मुतल्लिक सिक्का ।
मुद्राधिकार–देखो मुद्रणाधिकार ।
मुद्रानीति–मुरव्वज रुपया पैसा ।
मुद्रा संबंधी–मुतल्लिक सिक्का ।
मुद्राशास्त्र–इल्म सिक्का ।
मुद्रालय–टेकसाल ।
मूंगफली–चिनिया बादाम ।
मूढ़–अहमक । मूर्ख–बेवकूफ ।
मूर्खता–बेवकूफी ।
मूर्छा–गश, बेहोशी ।
मूर्ति–बुत ।
मूर्ति पूजक–बुतपरसा ।
मूर्तिपूजा–बुतपरस्ती ।
मूर्ति ध्वंसक–बुत शिकनी ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूत्राशय–मसाना।
मूत्र–पेशाव।
मूल–अस्ल, बुनियाद।
मूल उद्योग–बुनियादी रोजगार।
मूल निवासी–पुराना वाशिन्दा।
मूल पुरुष–बुजुर्ग।
मूलभूत–मूलधन, जर असल।
मूलमूर्ति–अजीम।
मूलरूप–नमूना।
मूर्तिशास्त्र–इल्मे बुत।
मूल साक्षी–खास गवाह।
मूलाक्षर–हरफ।
मूलोच्छेदन–इस्तसाहा।
मूल्य–कीमत।
मूल्य नियंत्रण–कीमत पर रोक।
मूल्य निर्धारण–तख्मीना कीमत।
मूल्यवान्–बेशकीमती।
मूल्य वृद्धिअधिदेय–महंगी का भत्ता।
मूल्याङ्कन–कीमत।
मूल्यानुसार–कीमतके माफिक।
मृत्युदण्ड–फांसी की सजा।
मृतदेह–लाश।
मृत्यु–मौत।
मृत्युपत्र–वसीयतनामा।
मृत्युदानपत्र–वसीयतनामा।
मृत्युपत्रदानभागी–वसीयतनामा।
मृत्युपत्रप्रमाण–वसीयतनामों को साबित करने का हक।
मेखला–कमरबन्द।
मेल मिलाप–रजामन्दी।
मेल–इत्तेफाक।
मैत्री–दोस्ती।
मोक्ष–नजात।
मोचन–इनफिकाक।
मोदक–लड्डू।
मौखिक–जबानी।
मौखिक परीक्षा–जबानी इम्तेहान।
मौन सम्पत्ति–खामोश राय।
मौलिक–अस्ली।
मौलिकता–असालत।
मौलिक शिक्षा–बुनियादी तालीम
मौलिक सिद्धान्त–बुनियादी उसूल।

य

यत्न–तदबीर।
यदाकदा–वख्तन फवख्तन।
यथाक्रम–तरतीववार।
यथापूर्व–साबिका।
यथायोग्य विभाग–तकसीम।
यथार्थ–वाजिब, असल।
यथाशक्ति–हत्तलइमकान।
यथाविधि–वाजाप्ता।
यथार्थवाद–हकीकत।
यंत्र–आला।
यंत्रकार–आलासाज।
यंत्रगति–हरकत अंजन।
यंत्रशास्त्र–इल्म संवत।
यंत्रस्थपति–कारसाज।
यवनिका–पर्दा।
यक्ष्मा–तपेदिक।
याजकीय–इयस्तबागी।
यातना–सिज़त।
यातायात–बारबरदारी।
यातायातकर–गैर मुल्क में भेजने के माल पर कर।
यातायातप्रतिबन्ध–किश्ती खोलने या बांधने की रोक।
यात्रानुमति–पर्वाना राहदारी।
यात्रीगृह–सराय।
यथायोग्य–काबिल।
यथोचित–मुताबिक।
याचक–सायल।
यान–सवारी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्रा–सफर।
यावज्जीवन–हीन हयात।
यद्यपि–बावजूद।
यथार्थदर्शी–कायल राय।
यथेष्ट–काफी।
यदि–अगरचे।
यान्त्रिक–कारीगर।
युग–जमाना।
युक्ति–तदवीर।
युक्तियुक्त–माकूल।
युक्तिसंगत–मुनासिब।
युक्तिहीन–गैर मुनासिब।
युद्ध–जंग।
युद्धकारी–जंगावर।
युद्धकौशल–जंगीफन फरेब।
युद्धपोत–लड़ाई का जहाज।
युद्धप्रवृत्ति–जंगी रुझान।
युद्धयन्त्रश्रेणी–मोरचा।
युद्धरीति–तर्कीबी जंग।
युद्धविद्यार्थी–पलटन में बिना तनख्वाह काम करने वाला।
युद्धविरति–जंग की मौकूफी।
युद्धशील–लड़ाका।
युद्धसामग्री–फौज के सामान।
युद्धाभ्यास–कवायद।
युद्धोपकरण–जंगके सामान।
युद्धोपरान्त–जंग के बाद।
युयुत्सु–लड़ाका।
युवराज–शाहजादा।
योग–शमुल।
योग्य–मुनासिब, काबिल।
योग्य मूल्य–वाजिब कीमत।
योग्यता–लियाकत, सलीका।
योजना–तरकीब।
योजनाकार–तदवीर गर्दा।
योजना (चित्रकार)–नक्शा बाँधनेवाला
योधन–जंगी।
योधा–लड़ाका।
यौवन–जवानी।

र

रंगभूमि–तमाशे का गोलघर।
रक्षक–निगाहबान।
रक्षा–हिफाजत।
रक्षादल–बदरिका।
रचना–बनावट।
रचनातत्व–कारीगरी।
रचनात्मक–तामीर के मुताबिक।
रत्थी–जनाजा।
रथ–बहाल।
रणशील–जंगावर।
रणशीलता–जंगी, झगड़ालूपन।
रमणीय–दिलचस्प।
रम्यता–फरहत।
रसायनशास्त्र–कीमिया।
रसायनशाला–कारखाना, कीमियागर।
रसायनिक–कीमियागर।
रसायनिक विद्या–कीमिया।
रसायनिक प्रयोगशाला–कीमियागर का कारखाना।
रहस्य–पोशीदा बात।
रहस्यवाद–तसव्वुफ।
राजकर–महसूल।
राजकर चोर–महसूलचोर।
राज कर्मचारी–सरकारी मुलाजिम।
राजकीय–सरकारी।
राजकीय अभियोक्ता–सरकारी फरयादी।
राजकीय आन्दोलन–इन्तजामी हरकत
राजकीय ऋण–कर्ज सरकारी।
राजकीय समाचारपत्र–सरकारी गजट।
राजकोष–सरकारी खजाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रमजक्षमा–शफकता ।
राजघोषणा–फरमान ।
राजचिन्ह–बादशाही लवाजमात ।
राजदूत–एलची ।
राजदूतावास–एलची का मकान ।
राजद्रोह–बग़ावत ।
राजद्रोही–बग़ावती ।
राजधानी–दारुलसल्तनत ।
राजनीति–इल्म सेआसत ।
राजनैतिक–तदबीरे सल्तनत ।
राजनीतिज्ञ–इल्मसियासतदाम ।
राजनीतिक–मन्सूबावाज ।
राजनैतिक–मुतल्लिक इल्मरियासत ।
राष्ट्र सेना–कौमी फौज ।
राष्ट्रीय आन्दोलन–कौमी तहरीक ।
राष्ट्रीय आय–सरकारी आमदनी ।
राष्ट्रीय क्रान्ति–कौमी इन्कलाव ।
राष्ट्रीय ऋण–सरकारी कर्ज ।
राष्ट्रीय गीत–कौमी गीत ।
राष्ट्रीय संस्था–कौमी कयाम ।
रिक्त–खाली, उफवादा ।
रिक्त पद–खाली जगह ।
रिक्त स्थान–खाली जगह ।
रिक्त पत्र–वसीयत ।
रीति–दस्तूर, तरीका ।
रुचि–रुझान ।
रुधिर–खून ।
रुचिकर–पसन्द ।
रुधिर क्षय–खून की कमी ।
रूठ–राइज़ ।
रूक्ष भाषण–खरी बात ।
रूपक–तमसील ।
रूपकरण–गरदान ।
रूपकालंकार–इस्ते आरा ।
रूपरेखा–ढांचा ।
रूपवान–हसीन ।
रेचक–मोलैयन ।
रूपान्तर–सूरत वदल ।
रेखा दण्ड–रोकड़, नगद ।
रोकड़ बाकी–वकाया ।
रोकड़िया–खजाञ्ची ।
रोग–मर्ज ।
रोग निदान–तरखीस ।
रोग नाशक–शिफा वख्श ।
रोगी–मरीज ।

ल

लंपट–शोहदा ।
लंपटता–शोहदापन ।
लक्षणालंकार–मजाजे मुरशल ।
लक्ष्य–मकसद ।
लघुता–कमी ।
लघुन्यायालय–खफीफा ।
लघु पुस्तक–कितबिया ।
लघु शब्दकोष–फेहरिस्त ।
लय–काफिया ।
ललितकला–फनूने लतिफा ।
लंघि–तहसील ।
लाघव भावना–कमतरी मुरक्कब ।
लाभ–फायदा, नफा ।
लाभकर–मुफीद ।
लाभांश–बोनस ।
लाभदायक–मुफीद ।
लाभजनक–फायदेमन्द ।
लालसा–अरमान ।
लालायित–शफ़कत ।
लालित्य–जलवा ।
लाहल–कोयला ।
लिखित–तहरीरी ।
लिखितपत्र–दस्तावेज ।
लिखित प्रश्न–तहरीरी सवाल ।
लिपि–नविश्ता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिपिकार–अहलमद ।
लुप्त–गायब ।
लेखन सामग्री–लिखने का सामान ।
लेखन साहित्य–लिखने का सामान ।
लेख प्रमाणाधिकार–साहिब तहसीक ।
लेख स्थान–नबिस्ताखाना ।
लेखरहित–खाली, सादा ।
लेप–मरहम ।
लोक–अवाम ।
लोकतन्त्र–कौमी हूकूमत ।
लोकनिन्दा–अवाम शिकायत ।
लोक निर्माण कार्य–सरकारी इमारत ।
लोक नियन्त्रण–सरकारी रोक ।
लोकप्रदर्शन–दलील अवाम ।
लोक प्रवृत्ति–अवाम की रुकान ।
लोक प्रतिनिधि सभा–मजलिस कानून साज ।
लोकप्रिय–हरदिल अजीज ।
लोकप्रियता–अवाम दोस्ती ।
लोक कल्याण–फायदे अव्वाम ।
लोकमत–अव्वाम की राय ।
लोकमार्ग–आम रास्ता ।
लोक रचना विभाग–मोहकमा इमारत अव्वाम ।
लोक राज्य–सल्तनत अव्वाम ।
लोकशासन–सल्तनत अव्वाम ।
लोक शिक्षण–औवाम तालीम ।
लोक शिक्षण निर्देशक–मुतशिर तालीम अव्वाम ।
लोक सभा–कौमी मजलिस ।
लोक समूह–गरोह ।
लोक सेवा–कौमी खिदमत ।
लोकाचारहीन–गैर माहूद ।
लोप–मौकूफी ।
लौकिक–दुनियादार ।
लोभ–हिर्स ।
लौकिक–दुनियावी ।

व

वंशक्रम–सिजरा ।
वंशज–वारिसान ।
वंश परंपरा–विरासत ।
वंशवृक्ष–सिजरा ।
वंश सुगत–वरासती ।
वंशावली–शजरा ।
वंशीय–खान्दानी ।
वक्तव्य–इस्तिफसार, बयान ।
वक्तृता–तकरीर ।
वक्ता–खरीब ।
वक्तोक्ति–फेरवा की बात ।
वक्त प्रपंच–तूल कलामी ।
वचन–मंजूरी ।
वचनदाता–मुकिर ।
वंजायस–फौलाद ।
वध–कत्ल ।
वधवेदी–कुन्दा ।
वन कविता–देहाती गीत ।
वनस्पति–नवातात ।
वनवासी–गोशानशीन ।
वयस्क–वालिग ।
वय–उम्र।
वयस्कता–अव्द सरियत ।
वयस्क मताधिकार–वालिगों के चुनने का हक ।
वयस्काल–जवानी ।
वरण्ड–वरामदा ।
वरदान–बख्शीश ।
वर्गयुद्ध–जाती झगड़ा ।
वर्गीकरण–तकसीम ।
वर्णन–बयान, तजकिरा ।
वर्णशंकर–दोगला ।
वर्चस–इज्जत ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्तमान–जमाना हाल।
वस्तु स्थिति–असलियत।
वशीभूत–फरेफ्ता।
वस्त्रकोष–पोषाक की आलमारी।
वसन–लिवास।
वस्तुतः–दर असल।
वस्तु–शय।
वस्त्रालय–खेमा।
वस्त्रकार–जोलाहा।
वाक कील–वकील।
वाकशैली–मोहावरा।
वाक स्वतंत्रता–आजादी तकरीर।
वाक्य खंड–फिकरा।
वाग्दण्ड–तंवीह।
वाग्धारा–मोहावरा।
वागीष्टर–बारिस्टर।
वाङ्मनालय–कुतुबनामा।
वाचाल–बातूनी।
वाणिज्य–तिजारत।
वाणिज्य–तिजारत।
वाद–मोकदमा।
वादविवाद–बहस।
वादपत्र–अर्जीदावा।
वादी–मुद्दई।
वादहेतु–तनकीह।
वादाविवाद–दलील।
वायुयन्त्र–हवाई चक्की।
वायुभारयन्त्र–बैरोमीटर।
वायुयान–हवाई जहाज।
वायुयान वाहक पोत–हवाई जहाज ले जानेवाला जहाज।
वायुयान विश्राम स्थान–हवाई अड्डा।
वर्तालाप–गुफ्तगू।
वार्धक्य–जईफी।
वार्षिक–सलाना।
वार्षिक वृत्ति–वजीफा।
वार्धक्य संबंधी–जईफी के मुताल्लिक।
वास्तवमें–हकीकतन
वास्तविक–वाकई, असली।
वास्तविकता–असलियत।
वास्तु विद्या विशारद–इंजीनियर।
वाहक–वारबरदार, कासिद।
वाहक संख्या–कोरम।
वाहन–सवारी।
विकत्थन–डींग।
विकाश–इन्कलाव।
विकाश कण–मजलिस तरक्की।
विकास–नमूद।
विकास समिति–जमात तरक्की।
विक्रय–फरोख्त।
विकृति–तवदीली।
विक्रयकर्ता–बेंचनेवाला।
विक्रयपत्र–बयनामा।
विख्यात–मशहूर।
विख्याति–शोहरत।
विगत–गुजश्त, साविक।
विघ्न–खलल।
विचार–ख्याल, इरादा, गौर, तजबीज।
विचारकर्ता–मुनसिफ।
विचाराधीन–जेरे बहस।
विचारण–तजबीज।
विचारणीय–काबिल लेहाज़।
विचारणीय विषय–तनकी।
विचरपूर्वक–दीदोदनिस्ता।
विचारधारा–ख्यालवन्दी।
विचारपति–जज़।
विचारपूर्ण–अक्लमन्द।
विचारविमर्ष–गौर।
विचारशील–दूरन्देश।
विचार स्वातन्त्र्य–खयाल करने की आजादी।
विचारहीन–गैर तजबीज।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विचारालय–खयालत खाना ।
विचित्र–अजीब ।
विचित्रता–खूबी ।
विचित्रालय–अजायबघर ।
विच्छेद–इनफेकाक ।
विच्छिन्न–मौकूफ ।
विजय–फतह ।
विजयी–फतहमन्द ।
विजन्मा–हरामजादा ।
विजातीय–गैर जात का ।
विज्ञापन–इश्तेहार ।
विज्ञप्ति–इश्तहार ।
विज्ञान–इल्म ।
विज्ञानवेत्ता–इल्मी ।
वितरण–तकसीम ।
विदित–जाहिर, मालूम ।
विदूषक–मसखरा ।
विदेश गमन–सफर ।
विदेशी–गैर मुल्की, बेगाना।
विदेशीय–गैर मुल्की ।
विद्यमान–मौजूद ।
विद्यालय–मदरसा ।
विद्युत–बिजली ।
विद्युत कुंजिका–स्विच ।
विद्युत ज्योति–बिजली की रोशनी ।
विद्रोह–गदर, फसाद ।
विद्रोही–बागी ।
विद्वत् परिषद्–आलिमों की मजलिस ।
विद्वान्–आलिम ।
विद्वेष–हसद ।
विधवा–बेवा ।
विधान–कानून ।
विविध–तरीका ।
विधि–विरुद्ध–नाजायज ।
विविधसंग्रह–आइन का मजमुआ ।
विधिशास्त्र–फिकर ।
विधि सम्मत–जायज ।
विधायक–तामरिस ।
विधान–दस्तरुल अमल ।
विधान परिषद्–कानून बनाने की मजलिस ।
विधान (शासन) ह्रस्वे कानून ।
विध्वंस–बरबादी ।
विध्वंसक–मुनहदीम ।
विध्वंस करना–गारद करना ।
विनाश–तल्फी, बरबादी ।
विनिमय–तबदील ।
विनिमय पत्र–राशन कार्ड ।
विनिमय साध्य–अहदे वजीर ।
विनोदकर–तफरी का टैक्स ।
विन्यास–गुमराह ।
विपक्षी–मुखालिफ गरोह ।
विपत्ति–आफत ।
विपरीत–मुखालिफ, बरखिलाफ
विपाणि–नाश्ता करने की जगह ।
विपुलता–बढ़ाई ।
विप्लव–गदर, बलवा ।
विभक्त–मुमकासिमा, अलग ।
विभाग–महकमा ।
विभाजन–तकसीम बँटवारा ।
विभाजनपत्र–कुर्रा ।
विभिन्न–अलहदा ।
विभिन्नता–अलहदगी ।
विभ्रम–फितूर दिमाग ।
विमल–रोशन ।
वियोग–जुदाई ।
विरति–मुहलत ।
विराट् सभा–बड़ा जलसा ।
विराम–रुकावट ।
विरुद्ध–मुखालिफत, बरखिलाफ, बनाम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विरुद्ध मत–खिलाफ राय ।
विरूप–बदशकल ।
विरेचन–जुलाब ।
विरोध–इखतिलाफ ।
विरोधी–मुखालिफ ।
विरोधी अधिकार–कब्जा मुखालफाना ।
विरोधी दल का नेता–मुखालिफों का अगुवा ।
विरोधी प्रस्ताव–खिलाफवर्जी ।
विरोधी स्वार्थ–खिलाफ दिलचस्पी ।
विलंब–तवक्कुफ, मौकूफी ।
विलंब शुल्क–डिमरेज ।
विलंबित–मुल्तवी । विलाप–मातम ।
विलास सामग्री-ऐशो आराम का सामान ।
विवरण–कैफियत, सराहत, तफसील ।
विवश–लाचार, मजबूर ।
विवरण पत्रिका–नकशा ।
विवाद–मुबाहसा ।
विवादग्रस्त–मुमकिने-लु-बहस ।
विवादी–हुज्जती, मुद्दई ।
विवाह–शादी ।
विवाह-विच्छेद–तलाक ।
विवाहतवस्था–निकाह ।
विविध–फुटकर, मुतफर्रिक ।
विवेक–तमीज, परेशानी ।
विवेकपूर्ण–तमीजदार ।
विवेचना–एहतियात ।
विशेषता–खासियत, तुर्री, खूबी ।
विशारद–आलिम । विशिष्ट–खास ।
विशुद्ध आय–खालिस ।
विशेष–मुकसिल, मकसूस ।
विशेष आज्ञा–मुफासिल, मकसूस ।
विशेष आज्ञा–आइन-ऐ-सार ।
विशेषक–फरीक । विशेषज्ञ–माहिर ।
विशेषाधिकार–पेश-खरीद ।
विश्राम–फुरसत । विश्रान्ति–आराम ।
विशेष अनुग्रहता–तरफदारी ।
विश्लेषण–तसरीह ।
विश्वकोष–ममुजआए उल्म ।
विश्वशनीय–खुशादा दिल ।
विश्वविद्यालय–यूनिवर्सिटी ।
विश्वसनीय–एतबारी, इमानदारी ।
विश्वव्यापी–आलमगीर ।
विश्वसनीयता–इतमीनान ।
विश्वशान्ति–अमन दुनिया ।
विश्वसंघ–अंजुमन दुनिया ।
विश्वस्त–एतबारी ।
विश्वहितवाद–अहले जदाकी ।
विश्वास–यकीन, एतबार ।
विश्वासघात–खयानत, दगाबाजी ।
विश्वासघाती–दगाबाज ।
विश्वासजनक–सबूत से कैल ।
विश्वासपात्र–सनद ।
विशिष्ट विवरण–तसख्सुश ।
विश्राम–आराम ।
विश्रामवृत्ति–पेन्शन ।
विष –जहर ।
विषम संधि–चन्दरोजा सुलह ।
विषय–अभ्र, मजमून ।
विषयक–वायस ।
विषयासक्त–ऐयाश ।
विषय में–बाबत ।
विषादजनक–मुताल्लिक नक्ले गम ।
विष विज्ञान–इल्म जहर ।
विष संबंधी–मुतल्लिक जहर ।
विषय समिति–मजमूनी कमेटी ।
विष्टा–मल ।
विसूचिका–हैजा ।
विस्तार–गुंजाइश ।
विस्तृत वर्णन–तफसील ।
विस्फोटक–फूटने वाला बारूद ।
विस्मय–ताज्जुब ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विस्मयाकुल–हैरत जदा।
विस्मरण–भूला।
विस्मृति–चूक।
वीर–बहादुर, दिलेर।
वीरता–दिलेरी, बहादुरी।
वृक्ष–दरख्त।
वृक्ष विज्ञान–इल्म नबातात।
वृक्षारोहण–दरख्त लगाना।
वृक्षावच्छेदन–दरख्त काटकर गिराना।
वृत्त–दायरा।
वृतान्त–वाकया।
वृतान्त पत्र–बुलेटिन।
वृत्ति–वजीफा।
वृथा अहंकार–झूठी शेखी।
वृद्ध–जईफ।
वृद्धि–उरूज, इनाफा, तरक्की।
वृहतकाय–कद्दावर।
वेतन–तनख्वाह।
वेतनक्रम–दरजा, ग्रेड।
वेतनभोगी–तनख्वाह पाने वाला।
वेत्ता–माहिर।
वेदी–कुर्बानगाह।
वेश्यालय–चकला।
वेष्ठन–गिलाफ।
वैकल्पिक–इख्तियारी।
वैज्ञानिक–इल्मी।
वैदूर्य–फीरोजा।
वैदेशिक मन्त्री–गैरमुल्की वजीर।
वैदेशिक राजदूत–एलची।
वैदेशिक विभाग–गैरमुल्की दफ्तर।
वैध–कानूनी।
वैधराजतन्त्र–महदूद सलतनत।
वैधशाला–मर्शद।
वैधानिक–हस्ब जाब्ता।
वैमानिक आक्रमण–हवाई हमला।
वैमानिक शक्ति–हवाई कूवत।
वैयक्तिक–जाती।
वैरागि–फकीर, दर्वेश।
वैवाहिक–मुतल्लिक शादी।
व्यंग–जाना।
व्यंगचित्र–सवाँग।
व्यतिक्रम–गुमराही।
व्यक्त–सरीह।
व्यक्ति–शख्स।
व्यक्तिगत–जाती, खास।
व्यक्तिवाद–वाहिदशय।
वृत्ति–वजीफा।
वृथा अहंकार–झूठी शेखी।
व्यक्तिगत–जाती खास।
व्यक्तिवाद–वाहिदशय।
व्यग्र–मशगूल।
व्यतीत–गुजश्ता।
व्यतीतकाल–वक्त गुजश्तर।
व्यभिचार–जिना।
व्यय–खर्च।
व्यर्थ–नाकिस, बातिल।
व्यर्थ विवाद–हुज्जत।
व्यवधान–मुफासला।
व्यवसाय–रोजगार, पेशा।
व्यवसायसंघ–रोजगारियों की जमात।
व्यवसायिक–रोजगारी।
व्यवसायी–सौदागर, कारबारी।
व्यवस्था–कायदा, जाप्ता।
व्यवस्थापक–मुन्तजिम।
व्यवस्थापक सभा–मजलिस कानून साज।
व्यवस्थापन–बन्दोबस्त।
व्यवस्थापिका–कानून साज़।
व्यवहार–सलूक, अमल बरामद
व्यवहारशास्त्र–कानून।
व्यवहारसूत्र–कहावत।
व्यवहारपद–नालिश।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यवहारिक राजनीति–अमलीइल्मसियास
व्यवहारी–मुवक्किल ।
व्यवहारोपयोगी विज्ञान–इल्म अमली ।
व्यवहार्य–कारदानी ।
व्यस्तता–ब तरतीबी ।
व्याकुल–बेहाल ।
व्याकुलता–हैरानी, हैरत ।
व्याख्या–तफसील ।
व्याख्यात्मक–बयानी ।
व्याख्याता–सुखनसाज ।
व्यापक–घेरनेवाला ।
व्यापार–तिजारत ।
व्यापारमण्डल–तिजारतघर ।
व्यापारिक संरक्षण–तिजरती हिफाजत ।
व्यापारी–सौदागर ।
व्यायाम–वर्जिश, कसरत ।
व्यायामशाला–वर्जिशगाह ।
व्युत्पत्ति–इस्तकोल ।
व्यूह–मोर्चा ।
व्यूह विद्या–इल्म जंग ।
व्योमयान–हवाई जहाज ।
व्यौरेवार–मुफस्सिल ।

श–ष

शंका–वहम, खामख्याली ।
शंकुला–सरौता ।
शकट–गाड़ी ।
शंखवाद–बिगुल ।
शक्ति–कूवत, ताकत ।
शक्ति समतुलन–ताकत का हमवजन ।
शक्ति एकत्रीकरण–हरकत पजीरी ।
शठ–बदमाश ।
शठता–बदमाशी ।
शठपट–टाट, किरमिज ।
शतघ्नी–तोप ।
शताब्दी–सदी ।
शत्रु–दुश्मन ।
शत्रुता–अदावत, दुश्मनी ।
शपथ–हलफ़ ।
शपथपत्र–हलफ़नामा ।
शपथपूर्वक परित्याग–हलफ़ लेकर छोड़ना ।
शब्द–लफ्ज ।
शैनगृह–ख्वाबखाना ।
शैयासक्त–चारपाई से सटा हुआ ।
शरण केन्द्र–पनाहगाह ।
शरीर–बदन ।
शरीर परिच्छेद–तसरीह, जिस्म ।
शरीर विज्ञान–इल्म मौजूतात ।
शरणार्थी–पनाहगीर ।
शरणार्थी शिविर–खेमा मवासी ।
शल्यक्रिया–जर्राही ।
शव–लाश ।
शवस्थान–मकबरा ।
शवयान–जनाजा ।
शवाधार–ताबूत ।
शस्त्र–हथियार ।
शस्त्रागार–शिलहटीखाना ।
शस्त्रशाला–शिलहखाना ।
शस्त्रालय–हथियारघर ।
शान्त–खामोश, संजीदा ।
शाँति–आमन, राहत ।
शाँतिजनक–सालिम ।
शांतिप्रिय–हलीम ।
शांति भंग–पहला हमला ।
शांतिवाद–आसयश ।
शांति सम्मेलन–अमन सभा ।
शान्ति स्थापन–सुलहसाज़ी ।
शाक भाजी–सब्ज़ी ।
शाखा–शाख ।
शाखा कार्यालय–मातहत दफ़्तर ।
शाप–बद दुआ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शारीरिक–जिस्मानी ।
शारीरिक गठन–जिस्म की गठन ।
शारीरिक दण्ड–शराहजिस्मानी ।
शारीरिक शिक्षा–जिस्मानी तालीम ।
शारीरिक श्रम–जिस्मानी मेहनत ।
शारीरिक स्वतन्त्रता–जिस्मानी आज़ादी
शाश्वत–दायमी ।
शासक–हुक्काम ।
शासकवर्ग–हाकिम ।
शासकीय–सरकारी ।
शासन–अमलदारी, हुकूमत ।
शासनकाल–वख्त हुकूमत ।
शासन चतुर–सल्तनत दाँ ।
शासन पद्धति–अमलदारी ।
शासन प्रणाली–हुकूमत ।
शास्त्रज्ञ–जानकार, इल्म।
शिक्षक–उस्ताद ।
शिक्षण–तालीम ।
शिक्षा–तालीम नसीहत ।
शिक्षा परिषद्–मजलिस तालीम ।
शिक्षामंत्री–दीवान तालीम ।
शिक्षार्थी–तालिबिल्म ।
शिक्षा विभाग–मुहकमा तालीम ।
शिक्षा सचिव–दीवान तालीम ।
शिक्षा शुल्क–तनख्वाह मुदर्रिस ।
शिखर–सिर, चोटी ।
शिथिल–सुस्त ।
शिथिलता–सुस्ती ।
शिथिलीकरण–थकाव ।
शिरच्छेद–सिर काटना ।
शिरस्त्राण–टोप (वख्तर) ।
शिलाजीत–नफ्त ।
शिलामुद्रण–लिथो ग्राफी ।
शिल्पकार–कारीगर ।
शिल्पशाला–कारखाना ।
शिल्पशिक्षा–हिकमती तालीम ।
शिल्प विज्ञान–फ़नूननामा ।
शिल्प विषयक–इल्मी ।
शिल्पशास्त्र–फ़नून नामा ।
शिल्प संबंधी–इस्तिलाही ।
शिल्पी–कारीगर ।
शिष्ट मंडल–डेपूटेशन ।
शिष्यजन सत्ता राज्य–सल्तनत उमरा
शिष्य–शागिर्द ।
शिष्टता–तहजीव, शाइस्तगी ।
शिष्टाचार–तक़ल्लुफ़ मुदारात ।
शिष्यकारू–हुनर सीखने वाला ।
शिष्टाचार–तकल्लुफ ।
शीकर–फौआरा ।
शीतकरण–सर्दी ।
शीघ्र–जल्द, फौरन ।
शीतज्वर–जड़ैया ।
शीतल–सर्द ।
शीर्षण्य–टोप ।
शुक्ल–सफेद ।
शुक्लता–सफेदी ।
शील संकोच–मुरौवत ।
शुद्ध लाभ–मुनाफा खास ।
शुद्धिपत्र–गलती का सफा ।
शुद्ध–सही, पाकीज़ा ।
शुद्धी–दुरुस्तगी।
शुभदस्त्र–खुशहाली ।
शून्य–सिफर ।
शून्यवाद–छुच्छापन ।
शुभपत्र–मुबारकवादी ।
शुश्रूषा–देखभाल ।
शुल्क–रसूम, उजरत ।
शुल्क स्थान–चुंगीघर ।
शोकजनक–गमगीत ।
शोधन–दुरुस्ती ।
श्यामपट–काला तख्ता ।
शेष–समाप्ति ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुल्क सूची–निर्ख चुंगी ।
शृंखला–जंजीर ।
शोषकपत्र–सोख्ता ।
शैत्य–सर्दी ।
शैली–तरीका ।
शेष संग्रह–लितिफा ।
शेष–बकाया ।
शोभा–रौनक, बहार ।
शोक–गम, अफसोस ।
शोक समाचार–मातम की खबर ।
श्यामता–स्याही ।
शोधन–सेहत ।
श्रम–मेहनत ।
श्रद्धा–एतकाद ।
श्रमजीवी–मज़दूर ।
श्रमजीवी अधिकारवाद–मज़दूरी का हक
श्रमजीवी सत्तावादी–कम्यूनिस्ट ।
श्रमनीति–मेहनत की कारगुजारी ।
श्रम विनिमय–मेहनत का अदल बदल ।
श्रम विभाग–मेहनत की बाँट ।
श्रमशक्ति–मेहनत की कूपन ।
श्रमिक–मजदूर ।
श्रमिकसंघ–मज़दूर लोग ।
श्रुतलेख–लिखाना ।
श्रेणी–दरज़ा ।
श्रेष्ठ–आला ।
श्रेष्ठता–तरक्की।
श्लेष्म स्राव–जुकाम ।
श्रोतागण–समाअत ।
श्लीपद–फीलयान ।
षट्कोण–छपहल ।
षड्यन्त्र–सिह्नकारी, जादूगिरी ।

स

संकट–खतरा, जोखिम ।
संकट काल–वक्त मुसीबत ।
संकटकालीन अधिकार–खतरे के वक्त का अधिकार ।
संकल्प–कस्द ।
संकीर्ण–महदूद, तंग ।
संकीर्ण बहुमत–कमराय ।
संकुचित–चुस्त ।
संकेत–इशारा ।
संक्रमण–रफ्तनी ।
संक्रमणक–वक्त रफ्तनी ।
संक्रामक–उफूनती ।
संकीर्ण–मुतफर्रिक ।
संकोच–पशोपेश ।
संक्षिप्त–सरसरी, मुख्तसर ।
संक्षिप्त व्यौरा–मुख्तसर बयान ।
संक्षिप्त सूची–मुख्तसर फहरिस्त ।
संक्षिप्त लेखन विद्या–मुखतसर नवीसी ।
संक्षिप्त हस्ताक्षर–मुख्तसर दस्तखत ।
संक्षेप–इख्तेसार, इन्तखाब, मुख्तसर ।
संख्या–अदद, तादाद ।
संख्यानक–मुनीब ।
संख्यान लेखा–हिसाब ,किताब ।
संख्यावल–शुमारी ताकती ।
संगत (न्याव)–मुनासिब ।
संगठन–जाप्ता ।
संगठनकर्ता–तरकीबी ।
संगठित–बनाया हुआ ।
संगीत काव्य–गजल, कसीदा ।
संग्रह–मजमुआ खुलासा ।
संग्रह पुस्तक–किताब मजमुआ ।
संग्रहविधि–जाप्ता ।
संघ–अंजुमन, जमात ।
संघ नियम–कायदा जमात ।
संघाटक–अहदी ।
संघीय–अहद मनसून ।
संघटन–तरकीब ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संचय–मज़मा, ढेर।
संचयी–तहसीलदार।
संचालक–मोहतमिम।
संघर्ष–रगड़।
संचित–मजमुआ।
संघवाद–कायदा जमात।
संघातिक–कातिल।
संघीय न्यायालय–अहद मन्सूबी अदालत।
संभ्रम–शोरगुल।
संज्ञापन–वाकफियत।
संदिग्ध–मशकूक।
संतोष–सब्र।
संबंध–ताल्लुक, रिश्ता, वास्ता।
संबंधी–नातेदार, रिश्तेदार।
संयोग–इत्तेफाक।
संयोजन–वाक़या।
संयोजनीयता–हमवारी।
संशोधन–दुरुस्ती।
संश्लेषण–जमाव।
संरक्षक–सरपरस्त।
सगोत्रता–करावती।
सचिव–कारगुजार।
सचिवालय–दफ्तर दीवान।
संदर्भ–हवाला।
संदर्भ ग्रन्थ–हवाले की किताब।
संतान–औलाद।
संतुलन–हमवजन।
संतोषजकनत–इतमीनानी।
संदिग्धता–मुश्तवा।
संदेश–खबर।
संदेह–शंका, अन्देशा।
संधि–सुलह।
संधिपत्र की पाण्डुलिपि–सुलहनामे का मसविदा।
संनिपात–सिकुड़न।
संप्रदाय–फिरका।
संप्रदाय संबंधी–मजहबी।
संपर्क–रिश्ता।
संपूरक–तितिम्मा।
संभावना–इहतिमाल।
संयम–जब्त, परहेज।
संयुक्त–मुश्तरका, मुसावी, शामिल।
संयुक्त कुटुंब–खान्दान शिराकत।
संयोग–आमेजिश इन्तेसाल।
संयुक्त मंत्रिमंडल – इत्तेफाकी वज़ारत।
संयोजक–इकट्ठा करने वाला।
संरक्षक–सरपरस्त, वली, महाफिज।
संरक्षण–हिफाजत।
संरक्षित राज्य–हिमायती सल्तनत।
संलग्न–उफूनती।
संलाप–गुफ्तगू।
संवाददाता–खबर भेजनेवाला।
संवाद परिचालन–खबर फैलाना।
संवादशील–फैयाज़।
संवादयंत्र–टेलीफोन।
संविधान सभा–अमली मजलिस।
संवीक्षक–नाजिर।
संवेदन–हवास।
संशयवादी–मुनकिरेवही।
संशोधन–तरमीमा, इस्लाह।
संशोधित विधान–सेहत कर्दा कानून।
संश्लेषण–आयोजिश।
संसर्ग–ताल्लुक, राहस्य।
संसर्ग प्रतिषेध स्थान–क्वारनटाइन्।
संसत्–औवायम मजलिस।
संस्करण–छापा।
संस्कार–नक्श।
संस्कृति–आरास्तगी, तरक्की।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

संसार–जहान ।
संस्पर्श–इत्तिसाल ।
संस्था–जमात ।
संस्थापक–वानी ।
संस्थापन–तकुर्ररी ।
संस्थापित–कायम ।
संस्पर्श–उफूनत ।
संस्मरण–यादगार ।
सकला पराधमुक्ति–अमन माफीनामा ।
सचेत–होशियार ।
सजातित्व–करानत ।
सगोत्री–करावती ।
सगोत्र–हमखून ।
सतत्–लगातार ।
सत्ता–हुकूमत ।
सतीत्व भंगीकरण–ज़िना ।
सतर्कता–दुरंदेशी ।
सन्तोष–रजामन्दी ।
सत्याग्रह–तसकीन ।
सत्वर शैन्य–तेज फौज़ ।
सदस्य–अहलम जलिस ।
सदाचार–नेकचलनी ।
सद्भाव–नेकनीयती ।
सन्दिग्धता–मुश्तवहा ।
सन्दर्भ–सिलसिला ।
सन्निकर्ष–अन्दाजा ।
सन्देश–पैगाम ।
सन्देह–मुश्तमा ।
सन्तति–औलाद ।
सन्धि–सुलह ।
सन्निहित–मुत्तसिल ।
सन्निधान–इत्तेसाल ।
सदृश–माफिक ।
सपरिश्रम विकास–सख्त कैद ।
सप्ताह–हफ्ता ।
सफल–कामयाब ।
सफलता–कामयावी ।
सभा–मजलिस ।
सभागृह–महफिलखाना ।
सभाग्रणी–मजलिस पैराये ।
सभानेता–महरी खिलाफत ।
सभापति–मीर मजलिस ।
सभापति होना–सदर नशीन होना ।
सभाप्रधान–मीर मजलिस ।
सभाभवन–महफिलखाना ।
सभासद–अहल मजलिस ।
सभा सचिवालय–महाफिजखाना ।
सभ्य–तहजीव ।
समकालीन–हमवख्त ।
समझौता–राजीनामा ।
समतल–सतह ।
समता–हमसरी ।
सम नामधारी–नामरासी ।
समन्वय–मिलान ।
समभूमि–हमवर जमीन ।
समय निष्ठ–नुकता साज ।
समयानुरोधी–जमानासाज ।
समयोपयुक्त–बरवख्त ।
समयोचित–काबिल वख्त ।
समर्थ–लायक ।
समर्थक–ताईदी ।
समर्थन–ताईद ।
समर्थन करना–ताईद करना ।
समर्पण–सुपुर्दगी, हवाला ।
समर्पणपत्र–सुपुर्दगी का पर्चा ।
समष्टि–मजमुआ ।
समस्या–मस्ला ।
सम्पत्ति–रकम-दौलत ।
सम्पत्ति संबंधी–दीवानी ।
संपत्ति हरण–तर्क ।
संपर्क–इत्तेसाल ।
सम्प्रदाय–फिरका ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्प्रदायिक–फिरके का ।
सम्पादक–मुअल्लिफ।
सम्पादन–कारगुजारी ।
सम्पादनकर्ता–अखबार नवीस ।
सम्पूर्ति–रसद ।
सम्बद्धीकरण–मिलाना ।
सम्बद्ध–मिलाया हुआ ।
संबंध–रिस्ता ।
सम्बन्ध–विच्छेद–तिलाक ।
सम्भावना–मुमकिन ।
सम्भाषण–गुफ्तगू, बातचीत ।
सम्पत्ति–दौलत ।
सम्मति–राय, मंजूरी, रजामन्दी ।
सम्मान–नवाजिश, इज्जत ।
सम्मान चिन्ह–इज्जत की निशानी ।
सम्मिश्रण–मिलावट ।
संमिलित मंत्रिमंडल–वजीरों की जमात ।
सम्मेलन–जलसा, मुबाहिसा ।
समकक्ष–गुट्ट ।
समागम–भेंट, मुलाकात ।
समुद्रतट–लबेदर्या ।
समुदाय क्रय–कुल खरीद ।
समाचारपत्र–अखबार ।
समाचार समिति–शिरकत अखबार ।
समाज–मुशायरा ।
समाज विज्ञान–इल्म मुशायरा ।
समाधान–तसफिया ।
समान गौरव–हममर्तव ।
समानाधिकारी–पट्टीदार, हिस्सेदार ।
समाधिशिला–कब्र ।
समानता–बराबरी ।
समाप्त–खतम, रफा ।
समाप्ति–तमामी, मौकूफी ।
समालोचक–नुख्तादाँ ।
समालोचना–नुख्ताचीनी ।
समासादन–रसवाई ।
समिति–जमात ।
समीकरण–जुटाव ।
समीप–नजदीक ।
समुत्थान–उभाड़ ।
समुदाय–औवाम ।
समुन्नति–सर्फराजी ।
सम्पर्क–निस्बत ।
सम्पन्न–लायक ।
सम्मेलन–जलसा ।
सम्मोह–घबड़ाना ।
सर्ग–बाब ।
सर्वग्राहमुद्रा–सरकारी नोट ।
सर्वदल सम्मेलन–जलसा औवाम ।
समूह–गरोह ।
सरलता–आसानी ।
सर्वप्रधान पत्र व्यवस्थापक–पोस्ट मास्टर जनरल ।
सर्वसत्ताधारी शासन–खुशदार हुकूमत ।
सहशायी–हम बिस्तर ।
सहभागी–पट्टीदार ।
सह विद्यार्थी–हम तालीम ।
सहानुभूति–हमदर्दी ।
सहायक–इमदादी, मददगार ।
सहायता–मदद, दादरसी ।
सहायतार्थदान–जरमदद ।
सहभागी–साझीदार ।
सहिष्णुता–तहम्मुल ।
सह्य–बरदास्ती ।
सांकेतिक–अलामती ।
सांकेतिक मुद्रा–निशानी सिक्का ।
साक्षरता–इल्मियत ।
साक्षी–गवाह ।
साक्षी प्रमाण–तसदीक ।
साक्षेप का–छोटा रसूम ।
साक्ष्य–शहादत ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साख–भाम, इमान ।
सांघातिक–कातिल ।
साथ–हमराह ।
सादृश्य–मुशावेहात ।
साधन–वसीला ।
साधारण–मामूली, अदना ।
साधित (गौण)–मसदूर ।
साधुता–नेकी, खूबी ।
साध्य–होने के लायक ।
साध्यता–इमकान ।
सान्त्वना–तसल्ली ।
सापराध–मुजरिम ।
सामंजस्य–इसफेसाल ।
सामयिक विधान–आइनेशर ।
सामर्थ्य–इमकाम ।
सामरिक–फौजी ।
सामरिक क्षेत्र–इलाका जंग ।
सामाजिक–कौमी ।
सामान्य–आम, अदना ।
सामान्य जन–अव्वाम ।
सामुद्रिक–समुचरी ।
सामूहिक–मजमुआ ।
साम्प्रदायिक–फिरके वारान ।
साम्यवादी–सिद्धान्त ।
साम्राज्य–वादशाही ।
साम्राज्य संबंधी–शाहंशाही ।
साम्राज्यवादी–शाही मुतवस्सिल ।
सार–मजमुआ ।
सारसंग्रह–मजमुआ ।
सारहीन–बैजहार ।
सारांश–खुलासा ।
सारिणी–नकशा ।
सावधान–होशियार ।
सावधान !–खबरदार ।
सावधानी–होशयारी ।
सांसारिक–दुनियाई ।
सांस्कृतिक–जिरात ।
साहस–जुर्रत, दिलावरी, हिम्मत ।
साहसिक–जुर्राती, जोखिमी ।
साहसी–हिम्मती ।
साहित्य–इल्मियत ।
साहित्यिक–इल्मी ।
सार्वजनिक–आम ।
सार्वजनिक आलोचना–आवाम खुर्दा-वीनी ।
सार्वजनिक ऋण–कर्ज अव्वाम ।
सार्वजनिक त्रास–नुक्स अव्वाम ।
सार्वजनिक दोषारोपण–तोहमत ।
सार्वजनिक नियंत्रण–आम चुनाव ।
सार्वजनिक शान्ति–अमन अव्वम ।
सार्वजनिक स्वास्थ्य–आम सहत ।
सार्वजनिक स्वास्थ्याधिकारी–अफसर सेहत ।
सार्वजनिक हित–अवाम का फायदा ।
सार्वभौम–शाहंशाह ।
सिद्ध–साबित ।
सिद्ध नियम–कानून ।
सिद्धान्त–उसूल ।
सिद्धान्त ज्योतिष–इल्म हैयात ।
सिद्धान्तवादी–फियासी ।
सिद्धान्तमत–कियास ,वसूल ।
सिद्धि–तकमील ।
सिंचाई–तकमील ।
सिंचाई–आवश्यक सीमा–हद,
सीमाकर–सरहद का महसूल ।
सीमाकरण–तकसीम ।
सीमाचिन्ह–सरहद का निशान ।
सीमित संघ–लिमिटेड कम्पनी ।
सुकुमार–नाजुक ।
सुखाधिकार–हकराफा ।
सुखसाध्य–आसान ।
सुगन्ध–खुशबू ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सुगम–आसान ।
सुजन–नेक ।
सुजनता–भलमन्सी ।
सुधार–दुरुस्ती ।
सुधारक–मुसहिल ।
सुधारवादी–बेहतर करनेवाला ।
सुधारशाला–दुरूस्त करने की जगह ।
सुनीति–अदल इन्साफ ।
सुन्दर–हसीन ।
सुपाठ्य–साफ लिखा हुआ ।
सुप्रकट–साफ ।
सुयोग्य–होशयार ।
सुरक्षा–सलामती ।
सुरक्षा परिषद–सलामती मजलिस ।
सुरक्षित–महफूज ।
सुरक्षित कोष–हिफाजती खजाना ।
सुवर्ण पिण्ड–सोने की ईंट ।
सुविधा–सहूलियत ।
सुशील–नेक ।
सुशीलता–मुरौअत ।
सुश्यवस्थित–वाकायदा ।
सुसम्पन्न–अमीर ।
सुसंस्कृत–साफ किया हुआ ।
सुस्वर–खुश आवाज ।
सुषुप्तशक्ति–छिपी ताकत ।
सुक्ष्मता–वारीकी ।
सूक्ष्म–वारीक ।
सूखा–खुश्क ।
सूचन मंत्री–दीवान इत्तिला ।
सूचन सदस्य–अहले महफिल इत्तिला ।
सूचना विभाग–मोहकमा इत्तिला ।
सूचनापत्र–इत्तिलानामा ।
सूची,–फिहरिस्त ।
सूत्र–मकूला ।
सूत्रकोष–सूराज ।
सूत्रधार–ओवरसियर ।
सूत्रपात–आवाज तालीम ।
सूत्र संचालक–उसकाने वाला ।
सूप–शोरवा ।
सूक्ष्म अनुसंधान–नशखोस ।
सेतुबन्ध–पुल -
सेनी–लश्कर
सेना–फौज ।
सेना भंग–फौज की बर्खास्तगी ।
सेनामुख–पलटन ।
सेना विभाग–तुमान ।
सेंध–नकब ।
सेवा–खिदमत ।
सेवक–खिदमत करने वाला ।
सेवा पुरस्कार–मेहनताना ।
सेवा विवरण पुस्तिका–तकसीर नौकरी की किताब ।
सैद्धान्तिक–कयासी ।
सैनिकागार–वैरेक ।
सैनिकदल–पल्टन ।
सैनिक सेवा–फौजी नौकरी ।
सैनिक न्यायालय,–फौजी अदालत ।
सैनिक ब्यूह,–इल्म जंग ।
सैन्य–फौजी ।
सैन्य शिक्षण–फौजी तालीम ।
सैन्य निरास–सदर ।
सैन्य दलपति–कर्नल ।
सैन्य भरती–फौजी भरती ।
सांच–गौर,
सौजन्य–भरती ।
सौंदर्य–हुस्न, खूबसूरती ।
सौजन्य मीमाँसा–इल्म हुस्न ।
सौभाग्य–खुशनसीबी ।
सौहार्द्र–मिहर्बानी ।
स्थगत–मुस्तवी ।
स्थगित करण–मुल्तवी करना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थगित करना—मोवत्तिल करना ।
स्थगित प्रस्ताव—रोकने का मकसद ।
स्थगित वार्षिक वृत्ति—रूका हुआ वसीला
स्थल—जगह, मौका ।
स्थान—जगह ।
स्थानान्तर—तवादला ।
स्थानान्तर होना—तवादला होना ।
स्थानान्तरगामी—दूसरी जगह जाने वाला
स्थानापन्न—एवजी, जानशीन ।
स्थानिक रोग—किसी जगह की बीमारी ।
स्थानीय—मुकामी ।
स्थानीय भूगोल—सखितुलसावाद ।
स्थानीय स्वराज्य—मुकामी सलतनत ।
स्थापत्य—इनजिनियरी ।
स्थापित—कायम दायर ।
स्थापित्व—कयाम ।
स्थायी—दयामी, मुस्तकिल, पोख्ता ।
स्थायी प्रबन्ध—दवामी वन्दोवस्त ।
स्थानीय—मुकामी ।
स्थावर—गैर मनकूला ।
स्थिति—नौवत हैसियत ।
स्थिर—कायम ।
स्थिरदान—वक्फ ।
स्थूल—कद्दावर ।
स्थूल दर्शन—सरसरी नजर ।
स्पर्श जन्य—छुतही (बीमारी) ।
स्पष्ट—बाजा, साफ, जाहिर ।
स्पष्टीकरण—तशरीह ।
स्पर्धी—हमसर ।
स्फीति—नफख ।
स्मरण—यादगार ।
स्मरण लिपि—यादाश्त ।
स्मरणार्थक बही—दफ्तर ।
स्मारक—यादगार ।
स्फुट—जाहिर ।
स्मृति—यादगार ।
स्मृतिकार—मुजसहिद ।
स्मृतिचिन्ह—यादगार की जीचज ।
स्मृतिशास्त्र—आईन ।
स्वकीय—खानगी ।
स्वीकार—कबूल ।
स्वीकृति—कबूलियत ।
स्वच्छ—साफ ।
स्वच्छता—सफाई ।
स्वच्छन्द शासक—जालिम बादशाह ।
स्त्रोतोञ्जन—सुरमा ।
स्वतञ्च—आजाद ।
स्वतन्त्र—आजादी ।
स्वतन्त्रता—आजाद शख्स ।
स्वतःसिद्ध—वदीह ।
स्वत्व—इस्तहाक हक ।
स्वत्व ज्ञान—छुटकारा ।
स्वत्व प्रस्तुति—दावा ।
स्वत्व त्याग—तर्के हक ।
स्वत्व समर्पण—तहरीर हाजिरी ।
स्वत्व सूची—फिहरिस्त हकूक ।
स्वदेशभक्ति—हुब्बुल वतन ।
स्वदेशी—हमवतन ।
स्वनिध्वंस—पाएमाली ।
स्वयंभू—खुदरो ।
स्वयं—अजखुद, असालतन ।
स्वयंसेवक—अजखुद खिदमती ।
स्वर्ग—विहिश्त ।
स्वर्गीय दूत—फिरिश्ता ।
स्वर विज्ञान—इल्म आवाज़ ।
स्वर संक्रम—लाहजा ।
स्वर संगति—लय, सभा ।
स्वविरोधी—वर खिलाफ ।
स्वराज्य—खुद मुख्तारी ।
स्वस्थता—आसूदगी ।
स्वस्थ—तन्दुरुस्त, चंगा ।
स्वशिक्षण—खुद तालीम ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वहस्त लेख–दस्तखत ।
स्वाद–लज्जत ।
स्वभाव–खसालत ।
स्वाभाविक–स्वायत, खुदमजाज ।
स्वादिष्ट–मजेदार । लजीज ।
स्वायत्त शासन–खुद मुख्तारी ।
स्वीकृति–तसलीम, रजामन्दी ।
स्वीकार–मंजूर, कबूल ।
स्वीकृत–मंजूर ।
स्त्रीधन–महर ।
स्त्रीमताधिकार–औरतों को राय देनेका हक ।
स्वमताग्रह–तआस्सुव ।
स्वागत समिति–मेहमानदारी की मजलिस ।
स्वाधिकारच्युत–वेदखल ।
स्वाधीनता–आजादी ।
स्वामित्व–मिल्कियत ।
स्वामित्व परिवर्तन–तबदीली मालकाना
स्वामिभक्त–वफादार ।
स्वामिभक्ति–वफादारी ।
स्वामी–मालिक ।
स्वायत्त शासन–स्वराज्य ।
स्वार्थ–खुदगरज ।
स्वार्थी–खूदगरजी ।
स्वावलम्बन–अपना भरोसा ।
स्वाश्रयी–खुद परवरिश ।
स्वार्थत्याग–खुदकुर्बानी ।
स्वास्थ्य–आसूदगी ।
स्वास्थ्यकर–तन्दुरुस्ती देह ।
स्वास्थ्यकर प्रभाव–तन्दुरुस्तीका असर ।
स्वस्थ चित्तता–दुरुस्ती जेहन ।
स्वास्थ्य रक्षा–तन्दुरुस्ती ।
स्वास्थ्य विज्ञान–इल्म सेइत ।
स्वास्थ्याधिकारी–सेहत अफसर ।
स्वीकारोक्ति–मंजूरी ।
स्वीकार–एकरार ।
स्वीकृत–मंजूर ।
स्वीकृत सिद्धान्त–हकीकत ।
स्वीकृति–तसलीम, मंजूरी, रजामन्दी ।
स्वेच्छापूर्वक–अपनी खुशी से ।
स्वेच्छाचारी–सरखुद ।
स्वेच्छाचारी–खुद हाकिम ।

ह

हठधर्मिता–खुदराय ।
हठधर्मी–झक्की ।
हठात्–जबरदस्ती ।
हठी–कट्टर ।
हड़तालभंजक–हड़ताल तोड़नेवाला ।
हत्या–कत्ल ।
हत्याकांड–कत्ले आम ।
हथकंडा–तरीका ।
हरा–सब्ज ।
हलचल–दहशत ।
हरण–गबन ।
हँसोड़–मसखरा ।
हस्तकला शिक्षण–दस्तकारीकी तालीम
हस्तक्षेप–दस्तंदाजी ।
हस्तक्षेप के अयोग्य–दस्तंदाजी न करने लायक ।
हस्तक्षेप योग्य–आजमाने लायक ।
हस्त पत्रक–रुक्का, पुरजा ।
हस्त प्रहार–मुक्की ।
हस्तलिपि–हाथ की लिखावट ।
हस्ताक्षर–दस्तखत ।
हस्ताक्षर करना–दस्तखत करना
हाट–बाजार ।
हाथ बही–पासबुक ।
हाथापाई–झगड़ा ।
हानि–नुकसान, हर्ज ।
हानिकर–नुकसानदेह, मुजिर ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हानिकारक–मुजर्रत ।
हावभाव–नखरा ।
हास्यकर चित्र–हँसानेवाली तस्वीर ।
हास्यकर–दिल्लगीबाज ।
हिंसा–कत्ल ।
हिंसात्मक–जालिम ।
हितकर–मुफीद ।
हितचिंतक–नेक अन्देश ।
हिताधिकारी–मातहत ।
हृदयग्राही–फरेफ्तगी ।
हृदय–सीना, दिल ।
हृदयस्पर्शी–दिलसोज ।
हृन्नादसूचक यंत्र–स्टेथस्कोप ।
ह्रास–कमी ।
हेत्वाभास–निकाफ ।
हेतु–वाइस ।
हेतुवाद–बदला ।
होड़–शर्त, बाजी ।
हृदयंगम–जहन नशीन ।

———

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुहावरे और लोकोक्तियां

अ

अङ्क देना–आलिंगन करना, गले लगाना।

अकड़ दिखाना–अभिमान करना, गर्व करना

अक्ल का पुतला–बड़ा बुद्धिमान पुरुष।

अक्ल पर परदा पड़ना–बुद्धि नष्ट होना, अक्ल मारी जाना।

अक्ल के घोड़े दौड़ाना–नाना प्रकार के विचार करना।

अक्ल चकराना–बुद्धि न काम करना, समझ में न आना।

अक्ल मारी जाना–बुद्धि भ्रष्ट होना।

अक्ल का दुश्मन–नासमझ, बुद्धिहीन, बेवकूफ।

अक्ल चरने जाना–बुद्धि का काम न करना

अक्ल पर पत्थर पड़ना–भले बुरे का ज्ञान न होना। मतिभ्रष्ट या विवेक रहित होना।

अखाड़े में आना–(उतरना)–मुकाबला करना।

अखाड़ा मारना–विजय प्राप्त करना।

अखाड़े से भागना–हारकर चले जाना।

अखाड़ा जमाना–आमोद प्रमोद के लिये एकत्रित होना।

अगर मगर करना–तरह तरह के बहाने करना।

अंग अंग ढीला होना–बहुत थक जाना।

अंग अंग ढीला करना–अति शिथिल कर देना। चे

अंग अंग मुस्कराना–अति प्रसन्न होना, बहुत खुश होना।

अंग न लगना–भोजन का पुष्टिकारक प्रभाव शरीर में न आना, काफी खाना खाने पर भी दुबला होना।

अंगारे सिर पर धरना–बड़ी आपत्ति को सहन करना।

अंगारों पर लेटना–बहुत व्यग्र होना, बहुत घबड़ाना।

अंगारे बरसाना–धूप बड़ी तेज होना, सूर्य का तीव्र आतप होना।

अगाड़ी पिछाड़ी बाँधना–सब तरह प्रबंध करना।

अंगुलियाँ उठाना–बदनाम होना, अपकीर्ति प्राप्त करना।

अंगुलिया उठाना–बदनाम करना, अपकीर्ति फैलाना।

अंगुलियों पर नाचना–तंग करना, परेशान करना।

अंजर पंजर ढीला करना–बहुत मारना पीटना।

अंटी पर चढ़ना–अधिकार में आना।

अजीर्ण होना–कष्टसाध्य होना।

अड़ंगा अड़ाना (देना)–विघ्न डालना, तरकीब लगाना।

अटकल पच्चू–बिना सोच विचार किये हुए।

अठखेलियाँ करना (सूझना)–उपहास करना।

अड़ंगे पर चढ़ना–आधीन होना।

अड़ंगे पर चढ़ाना–वशीभूत करना।

अड्डा जमाना–अधिकार करना।

अड्डा जमना–एकत्रित होना, इकट्ठा होना।

अण्डा सिखावे बच्चों को चीं चीं न कर–छोटे का अपने बड़ों को उपदेश देना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अण्डे सेवे और कोई लेवे दूसरा कोई—कोई करे और उसका फल दूसरा कोई उठावे।

अण्डे होंगे तो बच्चे बहुत होंगे—मूल धन बना रहेगा तो सूद बहुत मिलेगा।

अंतड़ियों में बल पड़ना—हँसते हँसते पेट में पीड़ा होना।

अन्त करना—जान से मार डालना, समाप्त करना।

अन्त पाना—गुप्त भेद को जान लेना।

अन्त बुरे का बुरा—बुरा काम करने का अन्त बुरा ही होता है।

अन्त समय—मृत्युकाल, मरण का समय

अन्तड़ियाँ टटोलना—भेद या रहस्य का पता लगाना।

अन्धा क्या चाहे, दो आँखें—आवश्यक वस्तु यदि सहज में मिल जाय तो कैसा अच्छा हो।

अन्धा बनाना—धोखा देना।

अन्धा बन जाना—धोखे में आ जाना, धोखा खा जाना।

अन्धाधुन्ध उड़ाना—बिना सोचे विचारे धन खर्च करना।

अन्धी पीसे कुत्ता खाय—परिश्रम करके धन कोई कमावे और उसका उपभोग कोई दूसरा ही करे।

अन्धा बाटे रेवड़ी फिर फिर अपने को दे—अधिकार मिलने पर अपने ही वंश जाति आदि के लोगों का उपकार करना सामान्य बात है।

अन्धे के हाथ बटेर लगना—किसी को किसी वस्तु का सहज में मिल जाना।

अन्धे को अन्धा कहने से बुरा मानता है—कटु वचन सच्चे होने पर भी सभी को बुरे लगते हैं।

अन्धे को अन्धेरे में बड़ी दूर की सूझी—किसी मूर्ख का दूरंदेश की बात कहना।

अन्धे की लकड़ी—एकमात्र आश्रय।

अन्धेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—अर्थ स्पष्ट है। जहाँ अव्यवस्था है वहाँ भले बुरे एक समान।

अन्धेर मचाना—अन्याय करना।

अन्न जल उठ जाना (पूरा होना)—एक स्थान से दूसरे स्थान में जाना मर जाना।

अन्धा क्या जाने बसन्त की बहार—जिस मनुष्य ने किसी वस्तु को नहीं देखा वह उसका महत्व नहीं जान सकता।

अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ता—अकेला मनुष्य किसी बड़े काम को नहीं कर सकता।

अन्धा बगला कीचड़ खाय—मूर्ख के लिये क्षुद्र वस्तु भी अमूल्य है।

अधजल गगरी छलकत जाय—ओछे मनुष्य बड़ा आडंबर करते हैं।

अति भक्ति चोर का लक्षण—बड़ा आडंबर करने वाला मनुष्य छली होता है।

अपना सा मुंह लेकर रह जाना—लज्जित होना।

अपना उल्लू सीधा करना—अपना मतलब सिद्ध करना।

अपना घर समझना—किसी तरह का संकोच न करना।

अपना हीर ग अलापना—स्वार्थ साधन की बात कहना।

आन के धन पर लक्ष्मीनारायण—दूसरे की कमाई हुई सम्पत्ति पर अधिकार होना।

अपनी खिचड़ी अलग पकाना—निराले विचार का होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी नाक कटे तो कटे दूसरे का सगुन तो बिगड़े—नीच लोग अपनी हानि करते हुए भी दूसरों की हानि करते हैं।

अपनी पगड़ी अपने हाथ—अपनी प्रतिष्ठा अपने ही हाथ होती है।

अपनी दही को कोई खट्टा नहीं कहता—अपनी वस्तु को कोई बुरा नहीं कहता।

अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना—अपने मुंह से अपनी शेखी करना।

अपने पावों पर आप कुल्हाड़ी मारना—अपने ही हाथों से अपनी हानि करना।

अपने हाथों पापड़ बेलना—जान बूझ कर कष्ट उठाना।

अपने मार्ग में काँटे बोना—ऐसा काम करना जिसमें अपने को हानि पहुँचे।

अमर हो जाना—चिरस्थायी यश प्राप्त करना।

अंगारे उगलना—क्रोध में आकर कठोर वचन बोलना।

अंगुली उठाना—हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना।

अंगुलियों पर गिना जाना—संख्या में बहुत कम होना।

अंगुलियों पर नचाना—वशीभूत होना।

अंगूठा दिखलाना—चिढ़ाना, साफ जवाब देना।

अंगूठा चूमना—बड़ी विनती करना।

अग्नि में घी डालना—तकरार बढ़ाना।

अच्छे दिन देखना—आनन्द से जिन्दगी व्यतीत करना।

अंचरा पसारना—भिक्षा माँगना।

अण्डे सेना—बेकार बैठे रहना।

अन्धे को अन्धेरे में बड़ी दूर की सूझी—अपने धन में लगे रहने से मनुष्य को अनोखी बात सूझती है।

अल्पाहारी सदा सुखी—थोड़ा खाने वाला रोगी नहीं होता।

अच्छा किया खुदा ने, बुरा किया बन्दे ने,—ईश्वर अच्छा ही करता है, बुरा काम मनुष्य करता है।

अच्छे घर बना देना—अपने से अधिक बलवान से शत्रुता करना।

अक्ल बड़ी कि भैंस—शरीर पुष्ट होने से बुद्धि नहीं बढ़ती।

अटका बनिया देय उधार—दबा हुआ मनुष्य सब कुछ कर सकता है।

अति का भला न बोलना, अति की भली न चूप, अति का भला न बरसना अति भली की न धूप—किसी बात का अति का होना बुरा होता है।

अपना पैसा खोटा तो परखैया का क्या दोष—अपने ही कुटुम्ब के लोग बुरे हों तो दूसरे को क्यों दोष देना।

अपना वही जो आवे काम—सच्चा मित्र वही है जो समय पर सहायता दे।

अपना खाना अपना कमाना—परिवार से अलग होकर रहना।

अपना घर दूरसे सूझता है—अपना फायदा सभी को देख पड़ता है।

अपनी करनी पार उतरनी—जैसी करनी वैसा फल।

अपनी अपनी डफली अपना अपना राग—एक साथ मिलकर कोई काम न करने की विधि।

अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है—कमजोर भी अपने स्थान पर बलवान होता है।

अस्सी आमद चौरासी का खर्च—आमदनी से अधिक व्यय करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आ

आँख उठाना—हानि पहुँचाने का प्रयत्न करना. बुरी निगाह से देखना।
आँख बचा जाना—सन्मुख उपस्थित न होना।
आँख मिलाना—किसी के सामने देखना
आँख रखना—किसी से प्रेम करना, देखते रहना।
आँख में शील न होना—निर्लज्ज होना।
आँख का तिल खो देना—अंधे हो जाना।
आँख मारना—संकेत करना, सैन करना।
आँख की पुतली फिर जाना—मरणासन्न होना।
आँख न लगना—नींद न आना।
आँख कान खोलकर चलना—अति सावधान रहना।
आँख मैली करना—बेमुरौवत होना।
आँख मटकाना—सैन चलाना, आँखों से संकेत करना।
आँख भर आना—आँखों में आँसू आ जाना।
आँख फोड़ना—धोखा देना।
आँख मुंदना—मृत्यु को प्राप्त होना।
आँख मूंदना—विचार पूर्वक काम न करना करना।
आँख ठंडी होना—शान्ति मिलना, तृप्त होना।
आँखें चढ़ना—नशे में आँखे लाल होना।
आँख में काटा होना—असह्य हो जाना।
आँखों का पानी गिर जाना-निर्लज्ज होना
आँख लगना—आसक्त होना।
आँखें उठना—देखना।
आँखे फेरना—प्रतिकूल होना।
आँखें फिरना—बेमुरौवत होना।
आँखों से गिरना—मान का नाश होना।
आँखें चढ़ना—क्रोध करना।
आँखें दिखाना—डाँटना, धमकाना।
आँखों में धूल झोंकना—धोखा देना।
आँखों में खटकना—बुरा जान पड़ना।
आँखें बैठना—अन्धा हो जाना।
अनकूल न होना, पसन्द न आना।
आँखें बिछाना—प्रेम सहित आदर करना
आँखें झुक जाना—नींद आना।
आँखों में समा जाना—बहुत प्रिय होना।
आँखें जमीन में लग जाना—अति लज्जित होना।
आँखों की पट्टी खुलना—सचेत हो जाना
आँखों पर पट्टी बाँधना—असावधान होना
आँखों तले आना—वशीभूत होना।
आँखों के सामने नाचना—याद आना।
आँखों के सामने नाचना—याद आना।
आँखों में चरबी छा जाना—बड़ा अभिमान होना।
आकाश के तारे तोड़ना—कठिन कार्य करने में उद्यत होना।
आकाश पाताल एक करना—बड़ा अन्वेषण करना, बड़ी जाँच पड़ताल करना।
आकाश में थेगली लगाना—बड़ी चतुराई करना।
आकाश में छेद हो जाना—अधिक वृष्टि होना।
आग लगाकर पानी को दौड़ना—उपद्रव आरंभ करके शान्त करने का प्रयत्न करना।
आग लगने पर कुवाँ खोदना—आपत्ति आ जाने पर उसका उपाय सोचना।
आग में पानी डालना—क्रोध को शमन करना।
आग में झोंक देना—नष्ट कर देना, आपत्ति में डाल देना।
आग लगाना—झगड़ा खड़ा करना, उत्तेजित करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आँख उठाकर भी न देखना–ध्यान तक न लगाना।
आँख ऊँची होना–प्रतिष्ठित होना।
आँख आना–आँख लाल होकर दुखना।
आँख ठहरना–रुचिकर होना, पसन्द आना।
आँख और कान में चार अंगुल का फक है–देखी हुई बात को सब कोई मानता है, परन्तु सुनी हुई बात पर कोई विश्वास नहीं करता।
आँख तरसना–देखने की बड़ी लालसा होना।
आँख के अन्धे नाम नयन सुख––कलम पकड़ने का शऊर नहीं लेखक बनते हैं।
आँख भर रोना–आँखों में आँसू आ जाना।
आँख ऊँची न होना–शर्मिन्दा होना, लज्जित होना।
आँख चीर चीर कर (फाड़कर) देखना–उत्सुक होकर देखना, घूरना।
आँख न दीदा काढ़े कसीदा–किसी कार्य करनेके समर्थ न होकर उस कार्य को करने की चेष्टा करना।
आँख न ठहरना–चकाचौंध लगना।
आँख चुकी माल दोस्तों का–अपनी वस्तु यदि सावधानी से न रखोगे तो चोर चुरा ले जायेंगे।
आँख से दूर दिल से दूर–दूर देश में रहने से प्रेमभाव बहुधा कम हो जाता है।
आँख से ओझल न करना–सर्वदा अपने सामने रखना।
आँख बन्द करना–असावधान होना।
आँख लगना–आसक्त होना।
आँख जाना–अन्धा होना।
आँख बदलना–बेमुरोवत होना।
आँख चुराना–लज्जा के कारण सामने न देखना।
आँखें खुलना–सावधान होना।
आँखों में चुभना–बुरा लगना।
आँखें खुल जाना–आश्चर्य होना।
आँख तले न लाना–तुच्छ समझना।
आँखे पथरा जाना–आँखों का निमेष रहित हो जाना।
आँखों पर ठीकरी धरना–निर्लज्ज होना
आँखें चार होनेसे मुहब्बत आ जाती है–अर्थ स्पष्ट है।
आँखें फटना–आश्चर्ययुक्त होना।
आँखों में पालना–अत्यन्त प्रिय रखना।
आँखों के सामने छा जाना–शून्य दिखलाई पड़ना।
आँखों में फिरना–बारंबार याद आना।
आँखों में खटकना–बुरा लगना।
आँखों से काजल चुराना–बड़ी चालाकी करना।
आँखों में खटकना–बुरा लगना।
आँखों में खून उतर आना–अति क्रुद्ध होना।
आँखों में जगह मिलना–प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
आँखों में जगह देना–प्रतिष्ठा करना।
आँखों आँखों में उड़ा देना–देखते देखते चुरा लेना।
आँखों में हलका होना–प्रतिष्ठा कम होना
आँधी के आम–बड़ी सस्ती वस्तु।
आँसू एक नहीं कलेजा टूक टूक–पाखंड, दिखावटी रुलाई।
आँत भरी तो माथ भरी–आँतों में विकार विकार होने से सिर में पीड़ा होती है।
आई तो रोजी नहीं तो रोजा–आमदनी होने पर सुख से बीतते हैं नहीं तो उपवास ही होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आग लगना—क्रोध आना।
आग लगाकर तमाशा देखना—झगड़ा आरंभ करके प्रसन्न होना।
आग बबूला हो जाना—अत्यन्त उत्तेजित होना।
आग में कूदना—आफत में पड़ना।
आग में इन्धन डालना—क्रोध बढ़ाना।
आग पानी से गुजरना—सब तरह के कष्टों का सहन करना।
आगा रोकना—मुकाबले पर आना।
आगा पीछा करना—दुविधा में पड़ना, हिचकिचाना।
आगा पीछा न सोंचना—अपने फायदे नुकसान का ख्याल न करना।
आगे नाथ न पीछे पगहा—किसी संबंधी या संरक्षक का न होना।
आगे आगे हो लेना—किसी काम का सहज हो जाना।
आँच अजिक खा जाना—अधिक पक जाना।
आँच खाना—हानि उठाना।
आँच न आने देना—कष्ट को रोकना,
आँट रखना—शत्रुता करना।
आज कल करना—टालमटोल करना,
आटे दाल का भाव मालूम होना—सब प्रकार के कष्टों का अनुभव होना।
आठ आठ आँसू रोना—अति विलाप करना।
आठो पहर शूली पर रहना—सर्वदा कष्ट ही कष्ट भीजगान।
आठ अठारह कर देना—अित कष्ट देना।
आड़े आना—आश्रय लेना, सहारा लेना।
आड़े हाथ लेना—भला बुरा कहना।
आड़ी देकर बैठना—जम जाना।
आड़े समय काम आना—विपत्तिकाल में सहायता देना।
आत्मा ठंढी होना—शान्ति प्राप्त करना
आत्मा मसोसना—दुःखी हो ज.न.
आदमी बनना—शिष्टाचार जानना।
आदमी जाने बसे, सोना जाने कसे—संसर्ग से मनुष्य चरित्र का पता लगता है, यथा सोने की परीक्षा कसौटी पर कसने से होती है।
आदमी मुश्किल से मिलता है—सच्चे और ईमानदार मनुष्य जल्दी नहीं मिलते।
आदमी की पेशानी दिल का आयना है—मनुष्य के चेहरे से उसके हृदय के भावों का पता चल जाता है।
आदि अन्त सोचना—पूरी तरह से विचार करना।
आधा तीतर आधी बटेर—अस्त व्यस्त, गड़बड़, अधूरा, अपूर्ण।
आधी छोड़ सारी को धावे, आधी रहे न सारी पावे—अधिक लालच करने से सर्वथा हानि होती है।
आन निभाना—अपने निश्चय पर अटल रहना।
आन की आन में—अति शीघ्र, तुरत।
आना कानी करना—बहाना करना।
आप काज महा काज—किसी कार्य को स्वयं ही करना ठीक होता है।
आप बीती कहना—अपने ऊपर बीते हुए कष्ट को दूसरे से कहना।
आप आप करना—अति शुश्रूषा या विनती करना।
आप भला तो जग भला—भला मनुष्य संसार में सभी को सज्जन समझता है।
आपको आसमान पर खींचना—अपने को बहुत बड़ा जानना।
आप ही मियाँ माँगते द्वार खड़े दरवेश—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो स्वयं सहायता चाहता है, वह दूसरे को क्या सहायता दे सकता है।

आपस में गिरह पड़ना–आपस में मन-मुटाव होना।

आपको खींचना–स्वयं अलग हो जाना

आपा न संभलना–अपना ही निर्वाह न हो सकना अपनी शरीर अपनें अधिकार में न होना।

आपा खोना–अभिमान त्याग करना।

आपे में आना–होश संभालना।

आपे से निकल पड़ना–अति व्यग्र होना। **आपेसे बाहर होना**–क्रोध में आकर बड़े गर्व से बोलना।

आब आब कर मर गये सरहाने रक्खा पानी–किसी से ऐसी भाषा बोलना जिसको वह न समझता हो।

आब देना (चढ़ाना)–चमकाना, पालिश करना।

आ बला गले लग–आपत्ति में जानबूझ कर पड़ना।

आबरू खाक में मिलना–मान मर्यादा खो बैठना, बेइज्जत करना।

आम के आम गुठली के दाम–किसी कार्य में दुगुना फायदा होना।

आम खाने से काम कि गुठली गिनने से काम–मनुष्य को अपने मतलब का काम करना चाहिये किरर्थक न करना चाहिए।

आम, ईख नीबू बणिक गारे ही रस देता–अर्थ स्पष्ट है।

आसमान पर चढ़ना–बड़ी प्रशंसा करना।

आसमान देखना–हार जाना।

आँसुओं की झड़ी लगाना–अति विलाप करना।

अयं आयँ करना––बे मतलब बोलना।

आयी को रोकना–मौत से बचाना।

आयी गयी करना–समाप्त करना, खतम करना, माफ करना, छिपाना।

आया है सो जायगा, राजा रंक फकीर–जो उत्पन्न हुआ है वह एक दिन अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

आयु का पट्टा लिखवा कर लाना–सर्वदा जीवित रहने की इच्छा करना–

आये की खुशी न गये का गम–सर्वदा सन्तुष्ट रहना।

आये थे हरि भजन को ओटन लगे कपास–किसी बड़े काम को करने लगे थे परन्तु तुच्छ कार्य करने लगे हैं

आया कुत्ता खा गया तू बैठी ढोल बजा–सामने से सब लुट गया तू देखता ही रह गया।

आरती उतारना–प्रतिष्ठा करना। इज्जत करना।

आरे चलना–अति दुःखी होना।

आर्द्र नेत्र होना–शोकाकुल होना।

आल्हा गाना–जगह जगह समाचार फैलाते फिरना।

आब देखना न ताब देखना–सोच विचार कुछ भी न करना।

आव भगत में स्वाहा करना–नीरस व्यवहार करना।

आवभगत करना–अतिथि आदि का सत्कार करना।

आवाज कसना–मर्मभेदी बात कहना।

आवें का आवाँ बिगड़ना–संपूर्ण कुटुम्ब का दुश्चरित्र होना।

आसमान दिमाग पर चढ़ना–बड़ा गर्व करना।

आसमान पर सिर उठाना–बहुत शोर-गुल करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इ

इकते इक माई के लाल पड़े हैं—संसार में एक से एक गुणी और विद्वान् पड़े हैं।

इधर उधर करना—गप हाँकना।

इधर उधर देखने लगना—निरुत्तर हो जाना।

इधर उधर लगाना—चुगलखोरी करना।

इतना नफा खाओ जितना दाल में नोन—थोड़ा ही मुनाफा करना चाहिये।

इन तिलों तेल न होना—मिलने की आशा न होना।

इतनी सी जान और गज भर की जबान—छोटा सा मुंह और बड़ी बड़ी बातें।

इन्हीं पावों जाना—तुरत चले जाना।

इज्जत गवाँना—मान भंग होना।

इज्जत बिगाड़ना—अप्रतिष्ठित करना।

इज्जत दो कौड़ी की न रहना—प्रतिष्ठा खो बैठना।

इति श्री करना—समाप्त करना,

इति श्री होना—समाप्त होना,

इधर उधर करना—बहाने बाजी करना।

इधर की उधर हाँकना—व्यर्थ की बकवाद करना,।

इधर उधर देखना—हिचकिचाना।

इधर का न उधर का—निरर्थक, व्यर्थ, बेफायदा।

इधर की उधर लगाना—कलह उपस्थित करना।

इस कान से सुना उस कान से निकाल दिया—किसी की बात पर ध्यान न देना।

इने गिने—गिनती में बहुत कम, केवल काम चलाने योग्य।

ई

ईश्वर की माया कहीं धूप कहीं छाया—संसार में सर्वत्र भाग्य की विचित्रता देख पड़ती है।

ईंट से ईंट बजाना—नाश होना।

ईंट का घर मिट्टी कर देना—धन और संपत्ति का नाश कर देना।

ईश्वर को प्यारा होना—थोड़ी उमर में मर जाना।

ईंट की लेनी पत्थर की देनी—बदला चुकने चुकाने की विधि, दुष्ट के साथ दुष्टता का व्यवहार।

ईंधन हो जाना—शक्तिहीन हो जाना।

ईद का चाँद होना—बहुत दिनों बाद प्राप्त होना।

ईंटों से निकल कर कीचड़ में पड़ना—एक आपत्ति से छुटकारा पाया और दूसरी आपत्ति में जा गिरा।

उ

उखड़ जाना—स्वीकार न करना।

उखड़ी बातें करना—हृदय से न कहना।

उखाड़ देना—बिगाड़ना, नष्ट करना।

उगल देना—रहस्य या भेद को प्रकाशित करना।

उछल पड़ना—अति प्रसन्न होना।

उठ जाना—मृत्यु को प्राप्त होना। व्यय होना, समाप्त होना।

उठा न रखना—कोई कसर न छोड़ना।

उड़ती चिड़िया पहचानना—मन की भावना को जान लेना।

उड़ा जाना—खा जाना, व्यय कर देना।

उड़ा ले जाना—चुरा लेना, अपहरण करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उतर जाना–भाव मन्दा होना, तेज न रहना।

उतार चढ़ाव देखना–अनुभव होना, तजुर्वा होना।

उतारू होना–प्रस्तुत होना, तय्यार होना।

उतावला होना–शीघ्रता करना, जल्दीबाजी करना।

उथल पुथल करना – उलट पलट होना।

उदर निमित्तं बहुकृत वेशः–पेट के लिय मनुष्य सब कुछ (भलेबुरे) काम करता है

उत्तम खेती मध्यम बान, नीच चाकरी भीख निदान–अर्थ स्पष्ट है।

उधार खाये बैठना–प्रतीक्षा करते रहना।

उधार न छोड़ना–कसर रखना।

उधार का खाना और फूस का तापना बराबर है–जिस प्रकार फूस की आग बहुत जल्द बुत जाती है इसी तरह से उधार खाना भी ज्यादा दिनों तक नहीं चलता।

उधार दिया गाहक छोड़ा–उधार दी हुई वस्तु का दाम माँगने पर गाहक उसके पास फिर नहीं आता।

उधेड़ डालना–फाड़ डालना।

उन्नीस बीस का फर्क–बहुत थोड़ा अन्तर।

बिलगाहीं–किसी मनुष्यकी सब सन्तान एक प्रकृति की नहीं होती।

उफ न करना–आपत्ति आदि को चुपचाप सह लेना।

उबल पड़ना–क्रुद्ध होना।

उभार पर होना–वृद्धि को प्राप्त होना, बढ़ना।

उलट फेर होना–परिवर्तन होना, उलट पलट होना।

उखली में सिर दिया तो मूसल का क्या डर–जब किसी कठिन कार्य करने में लगे तो आपत्तियों से क्या डरना।

उछल कर चलना–अभिमान दिखलाना अपनी शक्ति के बाहर काम करना।

उछल कूद दिखलाना–शेखी हाँकना।

उड़कर पड़ना–बड़ी लालच करना।

उड़ती खबर पाना–अफवाह मिलना।

उड़ा लेना–हर लेना, ठग लेना।

उड़ा देना–खो देना, गड़बड़ी करना।

उधेड़ बुनमें लगना–चिन्ता फिक्र करना।

उभारा देना–उत्तेजित करना, उभाड़ना साहस बढ़ाना।

उभारा लेना–संभालना।

उमंगे मिटना–उत्साह कम होना।

उलटी बातें कहना–असंगत वार्ता कहना।

उलटा चोर कोतवाल को डांटे–अपना दोष स्वीकार न करके पूछने वाले पर क्रोध दिखलाना।

उलटा बाँस बरेली को–विपरीत कार्य करना।

उलटी गंगा बहाना–विपरीत कार्य करना।

उलटी पट्टी पढ़ाना–उचित मार्ग से विचलित करना।

उलटी साँस लेना–मरणासन्न होना।

उलटी माला फेरना–किसी का अनिष्ट चाहना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उलटी सीधी सुनाना—भला बुरा कहना।
उलटे पाँव जाना—लौट जाना।
उलझ पड़ना—लड़ पड़ना।
उल्लू बनाना—मूर्ख बनाना।
उल्लू बोलना—किसी स्थान का उजाड़ होना।

ऊ

ऊँचा सुनना—कम सुन पड़ना, कुछ बहरा होना।
ऊँची जगह पाना—प्रतिष्ठा प्राप्त करना।
ऊँट के गले में बिल्ली बाँधना—बेमेल का काम करना।
ऊँट किस करवट बैठता है—क्या स्थिति उपस्थित होधी है।
ऊँट के मुंह में जीरा—आवश्यकता अधिक होने पर अल्प मात्रा देना।
ऊँट की चोरी और झुके झुके—छिप कर बड़ा काम करने का उद्योग।
ऊँच नीच का भेद न रखना—सब के साथ समान व्यवहार करना।
ऊँचा बोल बोलना—श्लाघा करना, अभिमान करना।
ऊँची दुकान फीका पकवान—बहुत सा आडंबर हो परन्तु तत्त्व कुछ न हो।
ऊट पटाँग हाँकना—बेमतलब की बातें हांकना।
ऊधम मचाना—उपद्रव करना।
ऊपर पड़ना—दुःख उठाना।
ऊधों का लेना न माधो का देना—स्वार्थ-परायण रहना, निश्चिन्त रहना।
ऊसर में बीज डालना—बिना मतलब का काम करना।

ए

एक अनार सौ बीमार—आवश्यकता से अधिक माँग।
एक और एक ग्यारह होते हैं—एकता में बड़ा सामर्थ्य है।
एक आँख से देखना—समान व्यवहार करना।
एक रस रहना—किसी प्रकार का विकार न होना।
एक टक लगाना—निगाह जमाकर देखना
एक बात होना—सहज होना।
एक ईंट के लिये महल गिराना—जरासी बात के लिये अनर्थ मचाना।
एक तन्दुरुस्ती हजार नियामत—आरोग्य रहना सर्व प्रधान है।
एक को एक खाये जाना—आपस में द्वेष करना।
एक हो जाना—मिल जाना।
एक पर से सौ कौवे बनाना—थोड़ी सी बात को बहुत बढ़ा देना।
एक तो चोरी दूसरे सीनाजोरी—एक तो काम बिगाड़ना दूसरे क्रोध दिखलाना।
एक होना—अद्वितीय होना, भेद भाव न रखना।
एक ही साँचे में ढलना—समान विचार के होना।
एक न चलना—कुछ न कर सकना।
एक तो तितलौकी दूसरे नीम चढ़ी—एक तो स्वयं नीच दूसरे नीचों का संग।
एक से तीन बनाना—अनुचित लाभ उठाना।
एक थैली के चट्टे बट्टे—एक समान, सब के बराबर होना।
एक तरफा डिगरी देना—पक्षपात दिखलाना, अपूर्ण न्याय करना।
एक दम में हजार दम—एक मनुष्य से हजारों की पर्वरिश।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क टाँग से फिरना—बहुत इधर उधर घूमना।
एक न सुनना—कुछ न मानना।
एक एक रग जानना—अच्छी तरह से परिचित होना।
एकसौ चौवालीस लगाना—बोलना बन्द कर देना।
एक न शुद दो शुद—आपत्ति पर आपत्तियाँ आना।
एक पंथ दो काज—किसी एक उद्योग से अन्य कार्य का सफल होना।
एकादशी का खाया द्वादशी को निकालना—एक दिन का दिया हुआ दूसरे दिन लौटाना पड़े।
एक मछली सारे जल को गन्दा करती है—एक व्यक्ति की नीचता से सारे समाज को लाञ्छन लगता है।
एक सूत्र में बाँधना—संगठित करना।
एक हाथ से ताली नहीं बजती—अकेले मनुष्य के लिये कोई कार्य नहीं होता।
एक म्यान में दो तलवार नहीं रहती—एक ही स्थान पर दो शक्तिशाली मनुष्य नहीं रहते।
एंड़ी चोटी पसीना एक करना—बड़ा कठिन परिश्रम करना।

ऐ

ऐंचा तानी में पड़ना—झगड़े में फंसना।
ऐंठ दिखाना—गर्व करना, अभिमान दिखाना।
ऐंठ जाना—असन्तुष्ट होना।
ऐंठ लेना—ठग लेना।
ऐंठ निकलना—गर्व दूर हो जाना।
ऐंठ ढीली करना—गर्व हटाना।
ऐब करने को भी हुनर चाहिये—बुरा काम करने के लिये भी चतुराई की आवश्यकता होती है।
ऐंड़ा बेंड़ा चलना—कुपथ पर चलना।
ऐसा वसा समझना—सामान्य मनुष्य जानना।
ऐसी तैसी करना—सब भला बुरा उपाय रचना।
ऐसे जीने से मर जाना अच्छा—अधिक कष्ट मिलने पर मनुष्य मरण को अच्छा समझता है।

ओ

ओछे की प्रीति बालू की भीति—ओछे मनुष्य की मित्रता स्थायी नहीं होती।
ओखली में सिर देना—जानबूझ कर अपने को आपत्ति में डालना।
ओर छोर न मिलना—भेद का पता न चलना।
ओले पड़ना—आपत्तियाँ आना।
ओस चाटे प्यास नहीं जाती—आवश्यकता अधिक होने पर थोड़ी वस्तु से सन्तोष नहीं होता।
ओढ़नी की बतास लगना—स्त्री के प्रेम में फंसना।

औ

औकात पर आना—असली बात प्रकट करना।
औकात पर रहना—शक्ति के अनुसार चलना।
औकात बसर होना—निर्वाह करना।
औघट घाट बचा कर चलना—विपत्तियों से सावधान रहना।
औदक होना—भय के कारण चौंक उठना
औंधी खोपड़ी—परम मूर्ख मनुष्य।
औंधे मुंह गिरना—हार जाना।
और बात खोटी सही दाल रोटी—जीवन निर्वाह ही सबसे बढ़कर व्यवसाय है।
औन पौन करना—छल कपट का व्यवहार करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क

कंगाली (मुफलिसी) में आँटा गीला—एक आपत्ति रहते हुए दूसरी आपत्ति आ पड़ना।

कच्ची गोलियाँ खेलना—पूरा अनुभव प्राप्त करना।

कच्चा चिट्ठा—पोल, गुप्त बात।

कढ़ाई से गिरा चूल्हे में पड़ा—एक आपत्ति से छूटा दूसरे में गिरा।

कचूमर निकालना—बुरी अवस्था करना।

कञ्चन बरसना—अधिक धन की प्राप्ति

कटे पर निमक छिड़कना—दुखी मनुष्य को और भी दुखी बनाना।

कण्ठगत करना—खा लेना, याद कर लेना

कतर ब्योंत करना—काट छांट करना।

कतरा के जाना—बच कर भागना।

कदम बढ़ाना—चले जाना, तेज चलना, अग्रसर होना।

कन्धा लगाना—सहायता देना, सहारा देना।

कमर कसना—उद्यत होना, तत्पर होना।

कमर टूटना—निराश होना, उत्साह भंग होना।

कमर सीधीकरना—थकावट दूर करने के लिये लेट जाना।

कमान हो जाना—झुक जाना।

करम फूटना—अभागा होना।

करम हीन खेती करे मरे बैल या सूखा पड़ें—
भाग्य हीन पुरुष को किसी कार्य में सिद्धि नहीं होती।

कल ऐंठना—चित्त के भाव में परिवर्तन करना।

कल पड़ना—चैन मिलना।

कलम तोड़ना—विलक्षण बातें लिखना।

कलई खुलना—रहस्य उद्घाटन होना। भेद खुलना।

कलई खोलना—गुप्त बातों को प्रगट करना।

कलेजा धक धक होना—व्यग्र होना, घबड़ाना।

कलेजा निकाल कर धर देना—मर्म की बातों को कहना।

कलेजा खाना—परेशान करना।

कलेजा ठंडा होना—शान्ति मिलना।

कलेजा फटना—अत्यन्त दुख होना।

कसर निकालना—बदला लेना।

कसौटी पर कसना—परखना, अन्वेषण करना।

कहा सुनी हो जाना—झगड़ा फसाद होना।

कागज काले करना—व्यर्थ की लिखा पढ़ी करना।

कागजी घोड़े दौड़ाना—समाचार फैलाना केवल पत्र व्यवहार करते रहना।

काँटे बोना—हानि पहुँचाना।

काँटे से काँटा निकालना—शत्रु का नाश शत्रु से कराना।

काँटों पर पाँव रखना—दुःख या आपत्ति में पड़ना।

काँटों में हाथ पड़ना—आपत्ति में फंसना

काँटों में घसीटना—अति लज्जित करना

काट खाने दौड़ना—भयानक रूप धारण करना।

काटो तो बदन में खून नहीं—अति भयभीत होने की दशा।

कान काटना—बड़ी चालाकी करना। धोखा देना।

काम न होना—ग्रहण न करना।

कान खुलना—होश में आना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कान खोलना—सावधान करना।
कान पकड़ना—किसी बुरे काम को न करने का निश्चय करना।
कान खड़े होना—सावधान होना।
कान में फूंकना—चुपके से सुना देना।
काना फूसी करना—भेद की बात धीरे से कान में कहना।
कानी कौड़ी पास में न होना—अति दरिद्र होना।
कानों में तेल डालना—किसी बात को सुनने की इच्छा न होना।
कानोंकान खबर न होना—अत्यन्त गुप्त रखना।
कागज की नाव नहीं चलती—बेइमानी अधिक दिन तक नहीं चलती।
काम निकालना—अभीष्ट सिद्ध होना।
काम तमाम करना—जान से मार डालना
काम को काम सिखाता है—अभ्यास से काम करना आ जाता है।
काला अक्षर भैंस बराबर होना—निरक्षर मूर्ख होना।
कालिख लगना—बदनाम होना।
किनारा करना—अलग हो जाना।
किनारे लगना—पूरा होना, समाप्त होना
किताब का कीड़ा—अधिक पढ़ने वाला मनुष्य।
किस खेत की मूली—तुच्छ व्यक्ति।
किसी गिनती में न होना—कुछ महत्व न रखना।
कींच उछालना—नीचता करना।
कींच में पत्थर फेंकना—नीच पुरुष से झमेला करना।
कुआँ खोदना—हानि करने का उद्योग करना।
कुत्ते की मौत मरना—दुर्दशा में पड़कर मृत्यु होना।
कुत्तेकी नींद सोना—अचेत होकर न सोना
कुप्पा होना—मोटा ताजा हो जाना।
कुलबुला उठना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
कुल्हियाँ में गुड़ फोड़ना—गुप्त रूप से कोई काम करना।
कुएं में भांग पड़ना—सब की अक्ल मारी जाना।
कूप मण्डूक बनना—अपने अल्प ज्ञान की श्लाघा करना।
कैंड़ा बदलना—ढंग बदलना।
कोख उजड़ना—सन्तान का मरण।
कोख की आँच—सन्तान के वियोग का दुःख।
कोख खुलना—प्रथम सन्तान का जन्म।
कोदो देकर पढ़ना—अच्छी तरह पढ़ना लिखना न जानना।
कोर कसर—बेशी कमी।
कोरा टालना—कुछ भी न देना।
कोरा जवाब देना—निराशाजनक उत्तर देना।
कोरी पटिया पर लिखना—कोई नया काम आरंभ करना।
कोसों दूर भागना—अरुचि या घृणा होना
कोल्हू का बैल—दिन रात काम करने वाला मनुष्य।
कौड़ी काम भी न होना—किसी के काम का न होना।
कौड़ी के तीन होना—बड़ा सस्ता होना, विपत्ति में पड़ना।
क्रोध पी जाना—क्रोध को दबा लेना।

ख

खटपट होना—लड़ाई झगड़ा होना।
खटका लगा रहना—डर बना रहना।
खटाई में पड़ना—अनिश्चित अवस्था में होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खड़े खड़े बुलाना–थोड़े समय के लिये बुलाना।
खप जाना–नष्ट होना।
खबर लेना–सजा देना।
खरी खोटी सुनाना–साफ साफ बात कहना, भला बुरा कहना।
खग जाने खग ही की भाषा–जिसकी सोहबत में जो रहता वह उसके विचार से परिचित रहता है।
खाने को दौड़ना–अति क्रुद्ध होना।
खार खाना–द्वेष करना, कुढ़ना।
खाक छानना–भटकते फिरना।
खाक डालना–छिपा रखना दबा देना।
खानेके और दिखानेके दाँत और होते हैं–ऊपर से तो शिष्टाचार करना और मन में कपट करना।
खिल उठना–प्रसन्न होना।
खिल खिलाकर हंसना–ठट्ठा मारकर हंसना।
खसक जाना–चुपके से भाग जाना।
खिसियानी बिल्ली खंभा नोचे–लज्जित होने पर क्रोध दिखलाना।
खींचातानी में पड़ना–झगड़े में फंसना।
खुले आम–सबके सन्मुख, सबके सामने
खुले दिल–उदार हृदय से।
खूटे के बल बछड़ा कूदे–दूसरे के भरोसे बल दिखलाना।
खून के घूंट पीना–बड़ा कष्ट सहन करना
खून का प्यासा–हत्या करने के लिये उद्यत।
खून की नदी बहाना–बहुतेरों की हत्या करना।
खून उबलना–(खौलना)–क्रोध उत्पन्न होना, गुस्सा आना।
खेल बिगाड़ना–बना बनाया कार्य नष्ट कर देना।
खोकर सीखना–हानि उठाकर तजुर्बा होना।
खोद खोद कर पूछना–तर्क वितर्क करना।
खोपड़ी खाना–बहुत बकवाद करके परेशान करना।
खोपड़ी रंगना–सिर फोड़ कर लोहू बहाना।
खोया जाना–नष्ट होना, बरबाद होना।

ग

गंगा नहा लेना–किसी काम से निवृत्त होना।
गंगाजली उठाना–हाथ में गंगाजल लेकर कसम खाना।
गंगालाभ होना–देहान्त होना।
गट कर जाना–जल्दी से पी जाना।
गठरी मारना–माल चुरा ले जाना।
गड़े मुरदे उखाड़ना–बीती हुई बातों को कहकर वैमनस्य जागृत करना।
गढ़े में पड़ना–पतित होना, नष्ट होना
गत बनाना–दुर्दशा करना।
गड़ जाना–लज्जा से झेंप जाना।
गधे पर चढ़ाना–बेइज्जत करना।
गधे चराना–मूर्ख बने रहना।
गधों को हलवा खिलाना–नीचों का सत्कार करना।
गप्प मारना–बेफायदा की बातें करना। झूठ बोलना।
गम खाना–शान्ति धारण करना।
गया गुजरा जानना–तुच्छ समझना।
गया वख्त फिर हाथ आता नहीं–समय पर चूकना अच्छा नहीं होता।
गरम होना–क्रोध करना।
गरदन नापना–गरदनियाँ देकर हटा देना।
गरदन पर सवार होना–पीछे पड़ जाना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गरदन काटना–कष्ट पहुँचाना, हानि पहुँचाना।

गरदन पर छुरी फेरना–अत्याचार करना

गला काटना–अत्याचार करना, पीड़ा पहुँचाना।

गला सूखना–प्यास लगना।

गला घोंटना–अत्याचार करना, बड़ा कष्ट देना।

गली गली मारे फिरना–दुर्दशा होना।

गले का हार होना–बड़ा प्यारा बनना, चिपट जाना।

गले मढ़ना–इच्छा के विरुद्ध कोई काम किसी को सौंपना।

गले पड़ना–ऊपर आ जाना।

गले से लगाना–प्यार करना।

गहरी चाल चलना–बड़ा छल करना।

गाजर मूली समझना–तुच्छ जानना।

गाँठ काटना–बहुत महंगा बेचना, जेब काटना।

गाँठ खुलना–झंझट दूर होना।

गाँठ में बाँधना–अच्छी तरह याद रखना

गाँठ लेना–अपन पक्ष में कर लेना।

गाँठ पर गाँठ पड़ना–झंझटें बढ़ जाना।

गाँठ का पूरा–बड़ा अमीर।

गाड़ी चल पड़ना–कार्य का आरंभ होना

गाड़ी रुक जाना–चलता काम बन्द होना।

गाढ़ी छानना–बड़ी मित्रता होना।

गाढ़ी कमाई–परिश्रम से कमाया हुआ धन।

गीत गाना–प्रशंसा करना, तारीफ करना।

गुट बाँधना–दलबन्दी करना।

गुड़ गोबर कर देना–काम को बिगाड़ देना।

गुल खिलना–विचित्र घटना होना।

गुल खिलाना–विचित्र घटना उपस्थित करना।

गुलछर्रे उड़ाना–आनन्द मचाना।

गोरखधंधे में पड़ना–झंझट में पड़ना।

गोद में लड़का शहर भर में ढिंढोरा–पास में वस्तु रहते हुए चारों ओर खोजना।

गौं निकलना–स्वार्थ सिद्ध होना।

घ

घड़ों पानी पड़ना–अत्यन्त लज्जित होना।

घनचक्कर में पड़ना–आफत में पड़ जाना।

घर उजड़ना–संपूर्ण संपत्ति का नाश।

घर की खेती–सहज में मिलने वाला पदार्थ।

घर की मुर्गी साग बराबर–घर की वस्तु का विशेष आदर नहीं होता।

घर करना–पति बनाना।

घर का रास्ता लेना–भाग जाना।

घर के घर रहना–लाभ हानि बराबर होना।

घर घर पूजा होना–सर्वत्र प्रतिष्ठा होना।

घर बैठे गंगा आना–अनायास धन मिलना।

घर बैठे–बिना बाहर गये।

घर बसना–विवाह होना, घर में स्त्री का आगमन।

घर का आदमी–अपना ही संबंधी।

घर का न घाट का–कहीं का भी न होना

घर खीर तो बाहर खीर–घर में धन है तो बाहर भी प्रतिष्ठा होगी, झूठा आडंबर रचना।

घर के पीरों को तेल का मलीदा–घर के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोगों के साथ तो बुरा व्यवहार किया जाय और बाहर की बड़ी प्रतिष्ठा।

घर बनना—आर्थिक स्थिति सुधरना।

घर फूंक तमाशा—संपत्ति का नाश करके आनन्द मचाना।

घर घर यही लेखा—सभी परिवार में समान स्थिति नहीं रहती है।

घर में चूहे कूदना—अति दरिद्र होना।

घर से बाहर न निकलना—संसार का अनुभव न प्राप्त होना।

घर सिर पर उठाना—बड़ा कोलाहल मचाना।

घर में दिया तो मसजिद में दिया—बाहर की फिक्र करने के पहिले अपने घर की स्थिति संभालों।

घर में डाल लेना—पत्नी बनाना।

घर तक पहुँचाना—पूर्ण करना।

घर का भेदिया लंका ढाहे—आपस में बैर का बुरा परिणाम होता है।

घाट घाट का पानी पीना—सब तरह के अनुभव प्राप्त करना।

घात में रहना—अर्थ सिद्ध करने के लिये ताक में रहना।

घात लगाना—नुकसान पहुँचाने के लिये मौका ढूंढ़ना।

घाव हरा होना—बीते हुए कष्ट का स्मरण होना।

घाव पर नमक छिड़कना—दुःखी को और भी कष्ट देना।

घास काटना (खोदना)—व्यर्थ के काम में समय गवाँना।

घास खा जाना—पागल होना।

घिग्घी बंधना—बहुत डर के कारण मुख से शब्द न निकलना।

घी कहाँ गया खिचड़ी में—अपनी वस्तु अपने प्रयोग में आना।

घी के दीपक जलाना—हर्ष और आनन्द मचाना।

घी भी खाओ और पगड़ी भी रक्खो—मनुष्य को इतना धन खर्च करना चाहिये कि बाहर मान मर्यादा बनी रहे।

घुट घुट कर मरना—बड़ा कष्ट भोग कर शरीर छूटना।

घुटने टेक देना-आधीन होना, विनीत भाव दिखलाना, आत्म समर्पण करना।

घुन लगना—किसी भीतरी रोग से अति दुर्बल हो जाना।

घुमाकर नाक पकड़ना—अपने अभिप्राय को लपेट की बातमें प्रकट करना।

घुमाफिरा कर बात करना—साफ साफ बात न कहना।

घुलघुल कर बात करना—घनिष्टता से प्रेमपूर्वक बातें करना।

घुल जाना—बड़ा दुर्बल होना।

घोड़े बेंचकर सोना—निश्चिन्त होकरसोना

घोड़ा घास से यारी करे तो खाय क्या—व्यापार में मुनाफा न लेने से काम नहीं चलता।

घोड़ा घुड़साल में ही बिकता है—जहाँ की वस्तु वहीं बिकती है।

घोलकर पी जाना—किसी प्रकार की चिन्ता न करना।

च

चंग पर चढ़ाना—उत्तेजित करना।

चंग में फँसना—परवश हो जाना।

चंदन की चुटकी भली, गाड़ी भरा न काठ—उत्तम वस्तु थोड़े मात्रा में भली होती है, बुरी वस्तु अधिक भी भली नहीं होती।

चंडूखाने की गप—झूठी बात।

चकमा देना—धोखे में डालना।

चक्कर में पड़ना—धोखे में आ जाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चक्की पीसना—बड़ा परिश्रम करना।
चचा बन जाना—अधिक चालाक होना।
चट कर जाना—जल्दी से खा जाना।
चटनी हो जाना—खूब पिस जाना।
चट्टे बट्टे लड़ाना—इधर उधर की बातें कह कर झगड़ा खड़ा करना।
चढ़ा जाना—पी जाना।
चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय—बड़ा कृपण होना।
चबा चबा कर बातें करना—साफ खोल कर न कहना।
चल बसना—मर जाना।
चरका देना—धोखा देना।
चम्पत हो जाना—भाग जाना।
चरण छूना—विनती करना, प्रणाम करना।
चरबी बढ़ाना—मोटा ताजा होना।
चलता करना—रवाना करना।
चलती गाड़ी में ओट लगाना—काम में विघ्न डालना।
चहल पहल मचना—रौनक होना।
चाँदी का जूता मारना—घूस देना।
चाँद पर थूकना—किसी की निन्दा करके स्वयं दूषित होना।
चाँदी होना—अधिक लाभ होना।
चादर उतार डालना—बेशर्म होना।
चादर तान कर सोना—निश्चिन्त हो जाना।
चादर के बाहर पैर फैलाना—आय से अधिक व्यय करना।
चादर देख कर पाँव फैलाना—शक्ति के अनुसार काम करना।
चाकरी में नाकरी क्या—नौकरी करनेपर कुछ इनकार नहीं हो सकता।
चार आँसू गिराना—शोक करना।
चार चाँद बढ़ाना—इज्जत बढ़ाना।
चार दिन की चाँदनी फिर अंधेरी रात—सर्वदा सुख के दिन नहीं रहते।
चार दिन—थोड़े दिन तक।
चारपाई से लग जाना—रोग से अति दुर्बल हो जाना।
चार बातें सुनाना—खरी खोटी सुनाना
चार पैसे हाथ में होना—आर्थिक स्थिति अच्छी होना।
चाल चलना—धूर्तता करना, दगाबाजी करना, कपट व्यवहार करना।
चाल पड़ना—रिवाज होना, फर्क आना।
चाल में आना—धोखे में पड़ना।
चारों खाने चित्त आना—बुरी तरह से हारना।
चिकना घड़ा—जिस पर किसी शिक्षा का प्रभाव न पड़े।
चिकनी चुपड़ी बातेंकरना—मीठा बोलकर धोखा देना।
चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता—बेहया पर किसी बात का प्रभाव नहीं पड़ता।
चिड़िया फँसाना—किसी मालदार आसामी को धोखा देकर अपने वश में करना।
चित करना—हानि पहुँचाना, हराना।
चित पर चढ़ना—मन को भला लगना।
चिराग गुल होना—मृत्यु होना।
चिराग तले अंधेरा—न्याय के स्थान में अन्याय होना।
चिराग ठंढा होना—पुरुषार्थ का अन्त होना।
चुटकियों में—अति शीघ्र, तुरत।
चुटकियों में उड़ाना—दिल्लगी में टालना
चुटकी लेना—मर्मवेधी बातें कहना।
चुल्लू भर पानी में डूब मरना—लज्जा-वश मुंह न दिखलाना।
चूड़ियाँ पहरना—कायर बनना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चूल्हा न जलना—भोजन न मिलना।
चेहरा उतरना—उदास होना।
चेहरे पर हवाइयाँ उतरना—भयत्रस्त होना।
चैन की छनना (वंशी बजाना)—आनन्द से जीवन व्यतीत करना।
चोचले दिखलाना—इतराना।
चोर की दाढ़ी में तिनका—चोर को सदा सन्देह बना रहता है कि वह कहीं पकड़ा न जावे।
चोर चोर मौसेरे भाई—एक ही स्वभाव और व्यवसाय वाले मनुष्य परस्पर मेल रखते हैं।
चोरी का माल मोरी में—बुरी तरह से कमाया हुआ धन बुरे कामों में खर्च होता है।
चौकन्ना होना—सावधान होना।
चौकस रहना—सचेत रहना।

छ

छटा हुआ—प्रसिद्ध, मशहूर।
छक्के छुड़ाना—परास्त करना।
छत्र छाया में रहना—आधीन रहना।
छप्पन टके खर्चा होना—ज्यादा खर्च होना।
छप्पर पर रख देना—त्याग देना, छोड़ देना।
छप्पर फाड़ कर मिलना—अनायास प्राप्त होना।
छाती पर साँप लेटना—ईर्ष्या करना, डाह करना।
छाती जलना—दुःख देना।
छाती ठोकना—दिल कड़ा करना।
छाती ठंडी करना—चित्त सन्तुष्ट करना
छाती पर पत्थर रखना—कष्ट सहना।
छाया तक न पड़ना—कुछ प्रभाव न पड़ना।
छू मन्तर हो जाना—भाग जाना।
छोटे मुंह बड़ी बात—बढ़ बढ़ कर बातें करना।

ज

जंगल में मंगल होना—निर्जन स्थान में आनन्द का उत्सव होना।
जगह करना—मकान बनाना, स्थान देना
जड़ उखाड़ना—नाश करना।
जड़ छोड़ना—जम कर बैठना।
जबान देना—प्रतिज्ञा करना, वचन देना।
जबान में लगान न होना:—अशिष्ट वचन बोलना।
जमीन में गड़ जाना—बड़ी लज्जित होना।
जल में रह कर मगर से बैर—जिसके अधीन रहे उसी से शत्रुता करना।
जल जल कर भस्म होना—क्रोधवश दुःख पाना।
जली भुनी कहना—कठोर शब्दों का प्रयोग करना।
जले पर नमक छिड़कना—दुखी को और दुख देना।
जहर का घूंट पीना—क्रोध के आवेश को रोकना।
जहर लगना—बुरा मालूम होना।
जबरा मारे न होने दे—निर्बलको बलवान् सदा कष्ट देता है।
जबरदस्त का ठेंगा सिर पर—निर्बल सदा बलवान के अधीन रहता है।
जब तक जीना तब तक सोना—जिन्दगी भर संसारी झंझटें बनी रहती हैं।
जागते को जगाना—समझदार को शिक्षा देना।
जादू डालना—अपने मतलब में फंसाना
जा धमकना—अकस्मात् पहुँच जाना।
जान पर आ बनना—जान जान का डर होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जान पर खेलना–अपने को संकट में डालना।
जान चुराना–काम करने से जी चुराना।
जान खोना–अधिक कष्ट सहना।
जान खाना–बहुत परेशान करना।
जान से हाथ धोना–मृत्यु प्राप्त करना।
जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी–जिसकी जैसी भावना रहती है उसको देवता की वैसी ही मूर्ति देख पड़ती है।
जान का जंजाल हो जाना–अरुचिकर होना।
जाके पाँव न फटी बेवाई सो क्या जाने पीर पराई–जिसने स्वयं कष्ट का अनुभव नहीं किया है वह पराये की पीड़ा को क्या जाने।
जान मार कर काम करना–अपने भरसक पराक्रम करना।
जान में जान आना–सन्तोष मिलना।
जानसे जाना–मरना।
जान छुटना–आपत्ति से छुटकारा पाना।
जान छुड़ाना–आपत्ति से बचना।
जान भारी होना–जिन्दगी दुखमय होना
जान के लाले पड़ना–जीवन की चिन्ता होना।
जान सूखना–भयभीत होना।
जान का गाहक बन जाना–प्राण लेने के लिये उद्यत होना।
जान बूझ कर मक्खी निगलना–अपने हाथों से अपना अनिष्ट बुलाना।
मान डालना–उत्साहित करना, जोरदार बनाना।
जामे से बाहर होना–बड़ा कुपित होना।
जाल फैलाना–षड्यन्त्र रचना।
जाल डालना–धोखा देना।
जाल में फँसना–धोखे में आ जाना।
जिस हांड़ी में खाना उसी में छेद करना–उपकार के बदले अपकार करना।
जिसकी छाया में बैठना उसी की जड़ काटना–जो अपना हित करे उसका अपकार करना।
जिसकी बंदरिया वही नचावे–जिसका काम वही कर सकता है।
जितनी मुंह उतनी बात–भिन्न भिन्न मनुष्यों के पृथक् विचार होते हैं।
जिस डाल पर बैठे उसी को काटे–जो आश्रय दे उसी से अपकार करना।
जिह्वाग्र होना–अच्छी तरह से याद होना।
जिसके हाथ लेई उसका सब कोई–धनी मनुष्य की सब लोग खुशामद करते हैं।
जी उचट जाना–मन न लगना।
जीभ जली पर स्वाद न आया–अच्छा काम किया पर फल उलटा मिला।
जी काँपना–डर लगना।
जी काँपना–हिम्मत हारना।
जी छोड़ना–सुस्ती करना।
जी छूट जाना–हताश होना।
जी का बोझ हलका होना–चिन्ता से छुटना।
जी छोटा करना–उदास होना।
जी जलाना–दुःखी करना।
जी टंगा रहना–खटका बना रहना।
जी टूट जाना–उत्साह हीन होना।
जी दहल जाना–व्यग्र होना, घबड़ाना।
जी न भरना–तृप्त न होना।
जी पक जाना–तंग आ जाना।
जीभ चलते रहना–बकवाद करते रहना।
जीभ पकड़ना–बोलने से रोकना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जीभ संभाल कर बोलना–शिष्टता से वार्तालाप करना।
जी में जी आना–धैर्य युक्त होना।
जीवन की घड़ियाँ गिनना–मृत्यु समीप आना।
जी से उतर जाना–अच्छा न लगना।
जी हुजूर बनना–अफसर बनना।
जुल देना–धोखा देना, उभाड़ना।
जुए को कन्धे से उतारना–स्वतंत्र हो जाना।
जूड़ी आना–कष्ट जान पड़ना।
जूता चाटना–चापलूसी करना।
जूता लगना–लज्जित होना।
जूता लगाना–अपमान करना।
जूतियाँ चटकाते फिरना–बुरा काम करने में व्यग्र रहना।
जूते की नोक पर मारना–अति तुच्छ समझना।
जूते से बात करना–अपमानित करना।
जेब से जाना–खर्च होना।
जैसा देश वैसा भेष बनाना–स्थिति के अनुसार चलना।
जैसा दाम वैसा काम–जैसी मजदूरी वैसा काम।
जैसे साँपनाथ वैसे नागनाथ–एक समान होना।
जोड़े न होना–अद्वितीय होना।
जोड़तोड़ करना–उपाय निकालना।
जोर डालना–दबाव डालना।
जौहर खुलना–परीक्षा होना।
जौहर दिखलाना–गुण प्रकट करना।
ज्यों ज्यों भीजे कामरी त्यों त्यों भारी होय–कर्ज अदा न करने पर वह बढ़ता ही जाता है।

झ

झख मारना–व्यर्थ की बकवाद करना। विवश हो जाना।
झगड़ा मोल लेना–जानबूझ कर कलह करना।
झटक लेना–ठग लेना, अपहरण करना।
झटक जाना–शरीर दुर्बल होना।
झड़ी लगा देना–अधिक संख्या या परिमाण में उपस्थित करना।
झण्डा गाड़ना–अधिकार स्थापित करना
झपट लेना–छीन लेना।
झांसा देना–धोखे में डालना।
झांसे में आना–धोखे में पड़ना।
झाड़ पड़ना–डाटा जाना।
झाड़ू फेरना–नष्ट कर देना।
झाड़ू मारना–तिरस्कार करना।
झूठ सच कहना–निन्दा करना।
झूठे का मुंह काला सच्चे का बोल बाला–सच्चे का विजय होता है झूठा हार जाता है।
झूठे के पाँव नहीं होते–झूठे मनुष्य को साहस नहीं होता।
झोंपड़ी डालना–कुछ देर तक ठहरना।
झोपड़ी में रहे महलों का ख्वाब देखे–बड़ी बड़ी आकांक्षा करना।

ट

टकटकी बाँधना–पलक न झिपना।
टकराते फिरना–इधर उधर खोजते फिरना।
टका सा जवाब देना–स्पष्ट शब्दों में अस्वीकार करना।
टकसाल हो जाना–प्रधान स्थान होना।
टकराते फिरना–इधर उधर खोजते फिरना, भटकना, दुःख उठाते रहना।
टकसाली बात कहना–प्रामाणिक बात कहना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

टक्कर खाना—नुकसान उठाना।
टक्कर का होना—समान होना।
टक्कर लगना—नुकसान पहुँचाना।
टका पास न होना—पास में धन न होना
टका सा मुंह लेकर रह जाना—शर्मिन्दा होना।
टके का सब खेल है—धन से ही संसार में सब काम होता है।
टट्टी की आड़ में शिकार करना—धूर्तता से छिप कर कार्य साधना, छिपकर पाप करना।
टपक पड़ना—अकस्मात् आ पहुँचना।
टरका देना—टालना, विना कुछ दिये वापस करना।
टस से मस न होना—विनती और शुश्रूषा का प्रभाव न पड़ना।
टाँक लेना—लिख लेना।
टरटर करना—बेफायदा बक बक करना।
टाँका देना—सिलना।
टाँके खोलना—गुप्त बातों को प्रकट करना।
टाँग अड़ाना—विघ्न डालना, हस्तक्षेप करना।
टाँग तले से निकल जाना—पराजय स्वीकार करना।
टाँग तोड़ना—बेकार घूमते फिरना।
टाँग पसार कर सोना—चैन से कालक्षेप करना।
टाँगें रह जाना—चलते चलते शिथिल हो जाना।
टाँय टाँय फिस होना—उद्योग करने पर असफल होना।
टाट उलटना—दीवालिया बन जाना।
टापते रह जाना—कुछ हासिल न होना।
टाँय टाँय करना—व्यर्थ बकबक करना।
टालमटोल करना—बहानेबाजी करना।
टिप्पस लगाना—अपना मतलब साधने के लिये ढंग रचना।
टीका टिप्पणी करना—किसी विषय की समालोचना करना।
टीका भेजना—कन्या पक्ष का वर पक्ष के घर पर विवाह स्थिर होने के निमित्त फल, मिठाई, वस्त्र आदि भेजना।
टीपटाप दिखलाना—गौरव दिखलाना।
टीस होना—शरीर में कहीं पर पीड़ा होना।
टुकड़े लगाना—खाने पीने के लिये किसी के आश्रित होना।
टुकड़ा तोड़ना—किसी के आश्रित होकर रहना।
टुकड़ा माँगना—भिक्षा माँगना।
टुकड़गदाई—वह जो भोजन मिलने की आशय से अड़ा रहता है।
टुटपुंजिया—अल्प धन वाला मनुष्य।
टूट पड़ना—आक्रमण करना।

ठ

ठकुरसुहाती कहना—शुश्रूषा करना।
ठठरी होना—अति दुर्बल हो जाना।
ठंढक लगना—सरदी लगना।
ठंढा पड़ जाना—क्रोध चला जाना, उत्साह हीन होना।
ठंढा हो जाना—मृत्यु को प्राप्त होना।
ठंढी साँस लेना—सोच विचार कर उदास हो जाना।
ठाठ बदलना—आडंबर करना।
ठिकाना कराना—प्रबंध करना, विवाह करना।
ठिकाने लगाना—अन्त कर देना।
ठिकाने न रहना—स्थायी न रहना।
ठिकाने की बात कहना—उचित वार्ता कहना।
ठीक कर देना—सजा देना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठी ठी करना–हंसना।
ठोंकना बजाना–जाँच करना, परीक्षा करना।
ठोकर खाते फिरना–बेकार भटकते फिरना।

ड

डंक मारना–तकलीफ देना।
डंका बजाना–शोहरत होना, विस्तार होना।
डंडी मारना–कम तौलना।
डकार जाना–किसी की वस्तु अपहरण करना।
डट जाना–स्थिर होना।
डाँवाडोल होना–स्थिर न रहना।
डटकर भोजन करना–खूब पेट भर खाना।
डाढें मारना–चिल्लाते हुए रोना।
डुगडुगी पिटना–ठिंढोरा पीटना, प्रसिद्ध करना।
डोर पर लगाना–सीधी राह पर लगाना
डेरा डंडा कूच करना–प्रस्थान करना।

ढ

ढब पर चढ़ना–वश में होना।
ढर से बातें करना–बड़े ढंग से बोलना।
ढर्रे पर लगाना–अनुकूल बनाना।
ढब निकालना–उपाय ढूंढ़ना।
ढब पर लाना–उचित मार्ग पर लाना।
ढाक के वही तीन पात–सर्वदा सामान्य स्थिति में रहने वाला।
ढाई दिन की बादशाहत पाना–थोड़े दिनों की बादशाहत पाना, अधिकारी बनना।
ढील ढाल करना–देर करना।
ढंढ़ कर लड़ाई मोल लेना–जान बूझकर झगड़ा खड़ा करना।
ढेर कर देना–मार डालना।
ढेर लगा देना–मार डालना।
ढेर लगा देना–अधिक संख्यामें इकट्ठा कर देना।

त

तकदीर आजमाना–भाग्य की परीक्षा करना।
तकदीर फूट जाना–किस्मत बिगड़ जाना।
तकदीर चमकना–भाग्य में उन्नति करना
तकदीर ठोंकना–भाग्य का दोष देना।
तकदीर बनना–किस्मत अच्छी होना।
तकदीर सो रहना–बुरे समय का आना
तख्ता उलटना–भाग्य का विपरीत होना।
तन जाना–परस्पर वैमनस्य उपस्थित होना।
तन कर चलना–गर्व से चलना।
तपस्या निष्फल होना–मेहनत बेकार होना।
तकाजे का हुक्का भी नहीं पिया जाता–उधार ली हुई वस्तु बुरी होती है।
ताल ठोंकना–लड़ने भिड़ने के लिये तैयार होना।
तालियाँ बजाना–दुर्नाम करना।
तालू से जीभ न लगना–बराबर बकते रहना।
ताव खाना–क्रुद्ध होना।
तिनका भी न रहना–कुछ भी शेष न बचना।
तिनके की ओट में पहाड़–संसार में सब कुछ देखते हुए भी मनुष्य अन्धा बना रहता है।
तबेले की बला बन्दर के सिर–किसी का अपराध दूसरे के सिर पर ठोंकना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिल धरने की जगह न होना—बड़ी भीड़ होना।
तिलाँजलि देना—सब संबंध तोड़ देना।
तीन तेरह करना—इधर उधर करना।
तीनों लोक देख पड़ना—भयंकर स्थिति होना।
तीर बन जाना—दौड़ कर भाग जाना।
तीसमार खां बन जाना—मिथ्याभिमान दिखाना।
तुल जाना—तत्पर होना।
तू तू मैं मैं करना—गाली गुपाड़ा मचाना।
तूती बोलना—प्रसिद्ध होना, विख्यात होना।
तूफान खड़ा करना—उपद्रव मचाना।
तू डाल डाल मैं पात पात—चालाक व्यक्ति से बराबरी की चालाकी करना।
तेल जल चुकना—शक्ति पूरी हो जाना।
तेवर बदल जाना—बेमुरौवत होना।
तेवर बिगड़ना—क्रुद्ध होना।
तोताचश्मी करना—बेमुरौवती दिखलाना।
तोते की तरह आँखें फेरना—बेमुरौवती बन जाना।
तोते की तरह पढ़ना—बिना समझे पाठ याद करना।
त्योरियाँ पर बल पड़ना—क्रुद्ध होना।
त्योरी चढ़ाना—क्रोध करना।
त्राहि त्राहि करना—सहायता के लिये पुकारना।
त्रिशंकु बन जाना—कहीं का भी न रह जाना।

थ

थरथरी लगना—काँपने लगना।
थर्रा जाना—डर जाना।
थाली का बैगन—किसी ओर न रहने वाला।
थाह मिलना—भेद का पता लगाना।
थांग लगाना—अन्वेषण करना।
थूक कर चाटना—अपनी प्रतिज्ञा से डिग जाना।
थू थू करना—घृणा करना।
थूक लगा कर छोड़ देना—नीचा दिखलाना
थैली का मुंह खोलना—अंधाधुंध खर्चा करना।
थोड़ा होना—उदास होना।
थुड़ी थुड़ी करना—तिरस्कार करना।

द

दंड कमंडल उठाना—अपनी सामग्री उठाकर रवाना हो जाना।
दक्षिण भुजा उठाना—सहायक बनना।
दबक जाना—ठिठक जाना, छिप जाना।
दबाव डालना—लाचार करना।
दम उलटना—जी घबड़ाना, अन्तिम साँस लेना।
दम खाना—(लेना)—सुस्ताना।
दम खींचना—साँस रोकना।
दमड़ी की घोड़ी छ पसेरी दाना—हैसियत से ज्यादा खर्च।
दम फूलना—साँस फूलना।
दम घोट घोट कर मारना—बड़ी दुर्दशा करके हत्या करना।
दम घोंटना—गला दबा करके हत्या करना।
दम तोड़ना—अन्तिम श्वास निकल जाना, मरना।
दम पर आ बनना—आफत में पड़ना।
दम साधना—साँस रोकना।
दम देना—दिलासा देना, बड़ा प्रिय जानना।
दम में दम आना—जीवित रहना।
दम फूलना—हाँफना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दम चुराना—मुरदे के समान बन जाना।
दम लेना—आराम करना।
दम नाक तक आ जाना—बहुत व्यग्र हो जाना।
दम निकलना—आफत पड़ना, मरना।
दम टूटना—थक जाना।
दर्जी की पुसुई कभी ताश में कभी टाट में—कामकाजी मनुष्य कभी बेकाम नहीं रहता।
दर्यादिल बनना—उदारता दिखलाना।
दर्पन में मुख देखना—अपने ऐब पर ध्यान देना।
दलदल में फँसना—आफत में पड़ना।
दाँत तले अंगुली दबाना—अचरज दिखलाना।
दाँत तले तिनका दबाना—विनीत भाव दिखलाना।
दाँतों में पसीना आ जाना—बहुत मेहनत करना।
दाँव चुकाना—बदला लेना।
दाँव चूकना—हाथ से मौका जाने देना
दायें बायें करना—इधर उधर छिपाना
दाल न गलना—विवश हो जाना, लाचार होना।
दाल रोटी में खुश—सामान्य रीति से जीवन निर्वाह।
दाल में काला होना—सन्देह होना।
दाहिने आना—अनुकूल होना।
दिन ईद और रात शबरात—सर्वदा आनन्द में बीतना।
दिन आना—अन्त समय आ जाना।
दिन दूनि रात चौगुनी बढ़ना—अच्छी तरक्की होना।
दिन भारी हो जाना—जीवन दुःखपूर्ण होना।
दिन दहाड़े—दिन में, सबके जागते हुए।
दिन काटना—कष्ट से जीवन बिताना।
दिन फिर जाना—भाग्योदय होना।
दिमाग बिगड़ना—गर्व करना।
दिमाग लड़ना—बहुत सोचना।
दिमाग सातवें आसमान में होना—बड़ा घमंड करना।
दिल फटना—घृणा होना।
दिल की दिल में न रहना—मन की मन में रहना।
दिल जमाना—किसी काम के करने में मन लगाना।
दिल मिलना—प्रेम करना।
दिल छीन लेना—प्रेमासक्त होना।
दिल खुलना—संकोच हट जाना।
दिल दहलना—भयत्रस्त होना।
दिल खिलना—प्रसन्न होना।
दिल का मैला—कपटी मनुष्य।
दिल न मिलना—प्रेम न होना।
दिल बढ़ाना—उत्साह बढ़ाना।
दिल टूटना—निराश होना, हताश होना।
दिल की दिल में रह जाना—अभिलाषा पूर्ण न होना।
दिल में चुभना—चित्त को बुरा लगना।
दिया लेकर खोजना—इधर उधर ढूंढ़ना
दिल में गड़ जाना—अच्छा लगना।
दिल पसीजना—दयायुक्त होना।
दिल फीका रह जाना—मन हट जाना।
दिल चुराना—मोहित करना।
दिल में रखना—गुप्त रखना, प्रिय जानना।
दिल से दिल की राहत होना—घनिष्ट प्रेम होना।
दिल लगाकर करना—मन लगाकर कोई काम करना।
दिल पक जाना—अत्यन्त पीड़ित होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिल दुखाना–कष्ट पहुँचाना।
दिल की लगी बुझाना–मानसिक कष्ट शान्त करना।
दीपक में बत्ती पड़ना–संध्या होना।
दुनिया की हवा लगना–संसार के प्रपञ्चों में पड़ना।
दुम दबा कर भाग जाना–तेजी से भाग जाना।
दुह लेना–धन का अपहरण करना।
दुरदुर होना–तिरस्कार किया जाना।
दुकान बढ़ाना–दुकान बन्द करना।
दुखड़ा रोना–अपना दुख दूसरे को सुनाना।
दुपट्टा तान कर सोना–निश्चिन्त रहना।
दुहाई देना–न्याय की प्रार्थना करना।
दूज का चाँद–जो कभी नजर पड़ जावे।
दूध का दूध पानी का पानी–सच्चा न्याय होना।
दूध के दाँत न टूटना–बाल्यावस्था, अनुभव हीनता।
दूध की नदियाँ बहाना–धन का विभव दिखलाना।
दूम की लेना–शेखी करना।
दूर रहना–अलग रहना।
दूर की बात–बुद्धिमानी की बातचीत।
दूसरा रंग न चढ़ना–स्थिर रहना, बातें न बदलना।
दूसरे का मुंह देखना–दूसरे से मदद चाहना।
देख भाल कर पाँव उठाना–सावधानी से काम करना।
देखते रह जाना–चकित होना।
देते ही बनना–लाचार होकर देना।
देना थोड़ा दिलासा बहुत–अर्थ स्पष्ट है
दो कौड़ी का हो जाना–अपमानित होना।
दो दो बातें करना–थोड़ी सी बातचीत करना।
दो दो दानों को तरसना–अति दुर्दशा में होना।
दो नाव पर पैर रखना–दो पक्षों का समर्थन करना।
दोनों तरह से मौत–हर तरह से आपत्ति होना।
दोनों हाथोंमें लड्डू होना–सब तरह की मौज होना।
दोस्ती में लेन देन बैर का मूल–अर्थ स्पष्ट है।
दृष्टि से गिरना–मान मर्यादा की हानि।
द्वार झांकना–सहायता की प्रार्थना करना।
द्वार खुल जाना–उपाय निकलना।
द्विविधा में पड़ना–सन्देह युक्त होना।

ध

धक् से (कलेजा) होना–यकायक घबड़ा उठना।
धक्का लगना–नुकसान होना, कष्ट मिलना।
धक्का खाते फिरना–दुर्दशा होना।
धक्का देना–तिरस्कार करना।
धड़का खुलना–भयहीन होना।
धता बताना–तिरस्कार करना, धूर्तता से टाल देना।
धमा चौकड़ी करना–इकट्ठा होकर शोरगुल मचाना।
धर दबाव–हराना, जमीन पर पटक देना।
धर लेना–पकड़ लेना।
धर पकड़ करना–गिरफ्तार करना।
धर रह जाना–व्यर्थ होना।
धर्म निभाना–अपने कर्तव्य का पालन करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धाक देना—फंसा देना ।
धांधली मचाना—बेकार झंझट करना ।
धाक बाँधना—प्रभाव होना ।
धार चढ़ाना—शस्त्र आदि की धार तेज करना ।
धारोधार रोना—बहुत आँसू बहाते हुए रोना ।
धींगा धींगी करना—व्यर्थ का झगड़ा करना ।
धुकधुकी बंधना—डर जाना ।
धुन बांधना—चित्त लगाना ।
धुन सवार होना—किसी विषय के लिये पीछे दौड़ना ।
धुरें उड़ाना-लजाना, टुकड़े टुकड़े कर देना
धुन का पक्का—अपने सिद्धान्त का पक्का ।
धूनी रमाना—किसी जगह गड़कर बैठना।
धूल में मिल जाना—नष्ट होना ।
धूल में मिलाना—नष्ट कर देना ।
धूल डालना—छिपा देना ।
धूल फांकना—बुरे काम में लग जाना ।
धूल उड़ाना—चेहरा फीका होना, रौनक जाती रहना ।
धोखे की टट्टी—भ्रम में डालनेवाला पदार्थ ।
धोती ढीली होना—डर जाना ।
धो देना—मिटा देना ।
धोयेहू सौ बार के काजर होय न सेत—नीच मनुष्य की नीचता कभी नहीं जाती ।
ध्यान से उतरना—भूल जाना ।

न

नंगे बड़े परमेश्वर से—नीच मनुष्य से सब लोग डरते हैं ।
न इधर के रहे न उधर के रहे—निराश्रय होना ।
नकेल डालना—वश में करना ।
नकेल हाथ होना—वश में होना ।
नक्कू बनना—बदनाम होना ।
नख सिख वर्णन करना—अद्योपान्त वर्णन करना ।
नजर लगना—कुदृष्टि का प्रभाव पड़ा ।
नजर गिरना—बुरा प्रभाव होना ।
नजर में जँचना—पसन्द आना ।
नजर पर चढ़ना—प्रिय बनना ।
नजरोंसे गिरजाना इज्जत बिगड़ना ।
नदी नाव संयोग—संयोग से भेंट होना ।
नथुने फुलाना—क्रोध दिखलाना ।
नटखटी करना—दुष्टता दिखलाना ।
नपी तुली कहना—ठीक ठीक बात कहना
नमक खाना—नौकरी कर लेना ।
नमक मिर्च लगाना—बढ़ाकर बातें कहना ।
नमक (कटे पर) छिड़कना—बड़ी तकलीफ देना ।
नमस्कार करना—त्याग देना, छोड़ना ।
नया गुल खिलना—विलक्षण घटना होना ।
नरक भोगना—दुर्गति होना ।
नस नस में—संपूर्ण शरीर में ।
नसीब न होना—प्राप्त न होना ।
नसीब लड़ाना-भाग्य का अनुकूल होना ।
न तीन में न तेरह में—किसी गिनती में न होना ।
नाक भौं सिकोड़ना—नाखुश होना ।
नाक में दम करना—बहुत परेशान करना ।
नाक कटना—बदनाम होना ।
नाक रगड़ना—अधीन होना ।
नाक का बाल होना—अति प्रिय होना ।
नाक में दम करना-बहुत परेशान करना।
नाक कटना—बेइज्जत होना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाक पर हाथ धरना—स्वीकार करना।
नाक रह जाना-प्रतिष्ठा स्थापित रहना।
नाक न होना—निर्लज्ज होना।
नाक रखना—प्रतिष्ठा स्थापित रखना।
नाक रगड़ना—शुश्रूषा करना।
नाकों चना चबाना-बहुत परेशान करना।
नाच नचाना—दिक करना, परेशान करना।
नाक कटी पर घी तो चाटा-बेहया का चिन्ह होना।
नादिरशाही होना—बड़ा अत्याचार होना।
नानी याद आना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
नानी मर जाना—शर्मिन्दा होना।
नाम लेना छोड़ देना—बिलकुल भूल जाना।
नाम चलना—प्रसिद्ध होना।
नाम कमाना—यश प्राप्त करना।
नाम लेना—याद आना।
नाम खोना—कलंकित होना।
नाम निकल जाना—कलंकित होना।
नाम कर जाना—प्रसिद्ध हो जाना।
नाम डुबोना—यश खो बैठना।
नाम का—केवल कहने मात्र का।
नाम चमकना—यश का फैलना।
नाम लगाना—अपराधी बनाना।
नाम बिकना—अति प्रसिद्ध होना।
निगाह चढ़ना—रुचिकर होना, पसन्द आना।
निगाहें मोटी करना—अनबन हो जाना
निगाह में जँचना—पसन्द आना। लालच में पड़ना।
नींद हराम होना—निद्रा न आना।
नीचा दिखाना—लज्जित करना।
नीव डालना—किसी काम को आरंभ करना।
नौ दो ग्यारह होना—भाग जाना।
नौबत बजना—आनन्द के बाजे बजना।
नौका डूबना—काम बिगड़ जाना।

प

पंजे में करना—वश में करना।
पंजा मारना—झपटना।
पक्का पोढ़ा करना—निश्चय करना।
पगड़ी उतारना—बेइज्जत करना।
पगड़ी की लाज रखना—मान मर्यादा बनाये रखना।
पगड़ी संभालना—इज्जत बचाना।
पगड़ी की लाज गंवाना—इज्जत खो बैठना।
पट हो जाना—नष्ट हो जाना।
पटरा हो जाना—बहुत हानि पहुँचना।
पढ़े तो हैं पर गुणा नहीं—व्यावहारिक ज्ञान न होना।
पट्टी में आना—किसी के बहकाने में आना।
पट्टी पढ़ाना—बहकाना।
पत्ता खड़कना—कुछ आहट पा लेना।
पत गँवाना—मान मर्यादा का नाश होना।
पत्थर की लकीर बन जाना—दृढ़ होना।
पत्थर का कलेजा करना—दृढ़ होना, निठुर हो जाना।
पत रखना—लाज रखना।
पत्थर से पारस होना—निर्धन से धनी बनना।
पत्थर पड़ना—आपत्ति आना।
पत्थर पसीजना—कठोर हृदय मनुष्य में दया होना।
परलोक यात्रा—मरण, मृत्यु।
पराई आग में कूदना—दूसरे के कष्ट में पड़ना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परदा डालना—किसी बात को गुप्त रखना ।
पराये हाथों पड़ना—विवश हो जाना । परिश्रम करना ।
पल्ला छुड़ाना—छुटकारा पाना ।
पल्ला भारी होना—किसी दल का बलवान होना ।
पल्ला पसारना—किसी से कुछ माँगना ।
पलक लगना—नींद लगना ।
पसीना बहाना—बड़ी मेहनत करना ।
पहाड़ टूटना—आफत आना ।
पर्वत से राई करना—बड़े से छोटा बना देना ।
प्रथम ग्रास में मक्खी पड़ना—आरंभ में ही विघ्न होना ।
पाँव पूजना—इज्जत करना ।
पानी पानी करना—बहुत लजा देना ।
पानी पानी होना—लज्जित हो जाना ।
पानी फेरना—निर्मूल करना, मिटा देना
पापड़ बेलना—बड़ी विपत्ति सहन करना
पार उतार देना—काम दूरा करना ।
पार लगाना—पूरा कर देना ।
पाला पड़ना—संपर्क होना, वास्ता पड़ना
पासा फेंकना—किसी प्रकार का उद्योग लगाना ।
पिंड छूटना—पीछा छूट जाना ।
पीछा छुड़ाना—छुटकारा पाना ।
पीठ दिखाना—युद्ध में भाग जाना ।
पीठ ठोंकना—साहस बांधना ।
पुल बाँधना—(बातों का)—बातों को बढ़ाकर कहना ।
पूछ होना—आदर होना ।
पूत आपनो सबको प्यारो—अपनी सन्तान सबको प्यारी लगती है ।
पेट का पानी न हिलना—भेद को गुप्त रखना ।
पेट की मार देना—भूखों मारना ।
पेट में घुसना—रहस्य का पता लगाना ।
पेट से होना—गर्भवती होना ।
पेट काटना—पूरा भोजन न देना ।
पेट में बात न पचना—रहस्य को छिपाकर न रखना ।
पेट की आग बुझाना—भोजन करना ।
पेट में चूहे दौड़ना—भूख लगना ।
पेट पीठ एक हो जाना—अति दुर्बल होना ।
पेट में पैठना—भेद का पता लगाना ।
पेट पालना—जीवन का निर्वाह ।
पैतरे बदलना—छल करना ।
पैर उखड़ जाना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना ।
पैर आगे न पड़ना—साहस कम होना ।
पैर जमना—अधिकार करना ।
पैर के नीचे से निकल जाना—अति व्यग्र होना ।
पैसे के तीन अधेले भुनाना—बड़ी कंजूसी दिखलाना ।
पैर उखड़ना—हार कर भाग जाना ।
पोथे के पोथे रंगना—बहुत सी पुस्तकें लिख डालना ।
पोल खोलना—गुप्त बातों को प्रकाशित करना ।
पौ फटना—प्रातःकाल होना ।
पौ बारह होना—अच्छा मुनाफा होना ।
पौने सोलह आने ठीक—प्रायः दुरुस्त
प्यार के छिलके उतारना—भेद खोलना ।
प्रेम में नेम कहाँ—प्रेम में कोई नियम नहीं रहता ।
प्रकाश डालना—स्पष्ट करना ।
प्रभुता पाय काहि मद नाहीं—अधिकारी बनने पर सबको अभिमान हो जाता है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रशंसा करते मुंह सूखना—बड़ी शुश्रूषा करना।
प्राण खाना—बड़ा परेशान करना।
प्राण निकलना—मृत्यु को प्राप्त करना।
प्राण सूख जाना—बहुत डर जाना।
प्राण दंड देना—फांसी देना।
प्राण हारना—जान मार डालना।
प्राणों पर बीतना—आफत में पड़ना।
प्राण दान देना—जान बचाना।
प्राणों में प्राण आना—मन सावधान होना।
प्राण पखेरू उडना—मृत्यु को प्राप्त होना।

फ

फंदे में पड़ना—छला जाना।
फटे पड़ना—अभिमान करना।
फटा मन फटा दूध नहीं मिलता—अर्थ स्पष्ट है।
फड़क उठना—प्रसन्न होना।
फबतिया उड़ना—हँसी दिल्लगी करना।
फल पाना—बदला मिलना।
फलना फूलना—मनोरथ सिद्ध होना।
फाग खेलना—आनन्द मचाना।
फाड़ खाने को दौड़ना—भयंकर क्रोध दिखलाना।
फांसी लगना—बड़ा कष्ट होना।
फूंक से पहाड़ उड़ाना—थोड़ी सी शक्ति से बड़े काम करने का उद्योग करना।
फांड़ा बाँधना—तैयार हो जाना।
फांके पड़ना—भूखो मरना।
फूंक डालना—बरबाद करना।
फिर जाना—साथ छोड़ देना।
फूटी आँख न सुहाना—अच्छा न लगना।
फूट डालना—शत्रुता बढ़ाना।
फूल टहनी में ही अच्छा लगता है—सभी वस्तु अपनी जगह पर ही अच्छी लगती है।
फूट फूट कर रोना—बहुत विलाप करना
फूल जाना—बहुत खुश होना।
फूल बोना—भलाई करना।
फूल कर कुप्पा हो जाना—बहुत खुश होना।
फूल सूंघ कर रहना—अनशन करना, कुछ न खाना।
फूल कर बैठना—अपने बढ़े अभिमान में रहना।
फूला न समाना—बहुत खुश होना।
फूले अंग न समाना—अति प्रसन्न होना।
फेरे में आ जाना—धोखे में पड़ जाना।
फेरे पड़ना—व्याह होना।

ब

बगलें बजाना—खुशी दिखलाना।
बगुला भगत होना—पाखंड दिखाना।
बकरे की माँ कब तक खैर मनावेगी—जिसका नाश होना हो वह नहीं बच सकता।
बचकर खेलना—सचेत होकर काम करना
बछिया का ताऊ—परम मूर्ख व्यक्ति।
बटन खोल देना—उदार बन जाना।
बट्टा लगना—बेइज्जत होना।
बड़ा बोल बोलना—शेखी हाँकना।
बड़े घर की हवा खाना—बन्दी गृह में जाना।
बढ़ बढ़ कर बातें करना—गर्व दिखलाना
बड़ी बड़ी बातें करना—शेखी दिखलाना
बतीसी गिनना—सब दातों का टूट जाना
बंटाधार करना—नाश करना।
बने रहना—जीवित रहना।
बड़ी मछली छोटी मछली को खा जाती है—बलवान् सदा निर्बल को कष्ट देते हैं।
बन्द बन्द अलग करना—टुकड़े टुकड़े करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बन्द बन्द जकड़ जाना—सम्पूर्ण शरीर में पीड़ा होना।
बन्दर घुड़की—झूठा भय दिखाना।
बड़े बोल का सिर नीचा—बहुत बड़े अभिमानी का अवश्य नाश होता है।
बराबर करना—अन्त करना।
बन्दर के हाथ आइना—जो जिस वस्तु का गुण नहीं जानता वह उसको देना।
बड़े मियाँ तो बड़े मियाँ छोटे मियाँ तो सुभान अल्लाह—छोटे का बड़े से गुण आदि में बढ़कर होना।
बली चढ़ाना—अपना प्राण देना।
बल निकालना—अभिमान दूर करना।
बन गये के लालाजी और बिगड़ गये तो बुद्धू—काम बन जाने पर सभी वाहवाही देते हैं और बिगड़ जाने पर मूर्ख बनाते हैं।
बनिये की सलाम बेगरज नहीं होती—बनिये बड़े स्वार्थी होते हैं।
बहती गंगा में हाथ धोना—सुधरी हालत में अच्छे काम करना।
बहार लूटना—आनन्द लेना।
बहुत से जोगी मठ उजाड़—काम करने वाले अनेक परन्तु उसका फल कुछ न होना।
बाँबी में हाथ तू डाल मंत्र मैं पढ़ूं—किसी दूसरे को आपत्ति में डालना और स्वयं बचे रहना।
बाँसों उछलना—बहुत प्रसन्न होना।
बाँह पकड़ना—आश्रय देना।
बाँयें हाथ का खेल—अति सहज कार्य।
बाई पच जाना—शान्त होना।
बाग उठाना—घोड़े को हाँकना।
बाग ढीली करना—किसी विषय में शिथिलता दिखाना।
बाजार गर्म होना—किसी पदार्थ की अधिकता।
बाजार मन्दा पड़ना—बेंचा बिक्री का कम होना।
बाजी मारना—कार्य का सिद्धि होना।
बात पर चढ़ना—बहकाने में आ जाना।
बात का बतंगड़ करना—थोड़ी सी बात को बढ़ा देना।
बात पकड़ना—किसी के कथन में दोष निकालना।
बात की बात में—तुरत, फौरन।
बात पी जाना—बात सुनकर चुप रह जाना
बात टालना—ठीक जवाब न देना।
बात जाना—इज्जत खोना।
बात न पूछना—सम्मान न करना।
बात रख लेना—इज्जत बचाना।
बात का पूरा होना—दृढ़ संकल्प होना।
बात न पूछना—उपेक्षा करना।
बात काटना—बीच में बोल उठना।
बात में आना—किसी के कहने को मान लेना, धोखे में पड़ना।
बात पक्की होना—निश्चय होना।
बात बढ़ाना—झगड़ा बढ़ाना।
बात तक न पूछना—किसी की इज्जत न करना।
बात खुल जाना—भेद मालूम हो जाना।
बात बनाना—झूठ बोलना।
बातों में उड़ाना—टाल मटोल करना।
बातपर न जाना—विश्वास न करना।
बानगी दिखाना—नमूना दिखलाना।
बाप दादों का नाम डुबोना—कुल की मर्यादा को नष्ट करना।
बाधवाई फिरना—इधर उधर मारे मारे फिरना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारह पत्थर बाहर करना—शहर बाहर निकाल देना।

बाल की खाल निकालना—बड़ी छानबीन करना।

बाल न बाँका होना—किसी प्रकार का कष्ट न पहुँचाना।

बाल बाल बचना—बेलाग बच जाना।

बाल सफेद होना—वृद्ध होना।

बाल बालमोती पिरोना—बड़ी सजधज करना।

बासी कढ़ी में उबाल आना—वृद्धावस्था में जवानी का उमंग।

बालू की भीत—शीघ्र नष्ट होनेवाला पदार्थ।

बावन तोले पाव रत्ती—एकदम ठीक।

बिगड़ बैठना—अप्रसन्न होना।

बिगड़ जाना—धनहीन हो जाना।

बिजली गिरना—बड़ी विपत्ति आ पड़ना

बिलग बिलग कर रोना—बड़ा विलाप करना।

बीड़ा उठाना—किसी बात का दृढ़ निश्चय करना।

बीच बचाव करना—झगड़ा तय करना।

बीच में पड़ना—हस्तक्षेप करना।

बुखार निकालना—दुश्मनी निकालना।

बुत बने रहना—चुपचाप बैठे रहना।

बुत्ते देना—धोखा देना।

बूढ़े तोते को पढ़ाना—बूढ़े को शिक्षा देना

बेगार टालना—चित्त लगाकर काम न करना।

बेड़ा पार करना—कार्य समाप्त करना।

बेतुकी हाँकना—व्यर्थ की बातें करना।

बेदाग बचना—किसी तरह का नुकान न होना।

बेपेंदी का लोटा—बिना किसी सिद्धान्त का मनुष्य।

बेवक्त की शहनाई बजाना—बेमौके की बातें करना

बे सिर पैर की हाँकना—बे मतलब की बातें करना।

बैठे बैठाये—बिला किसी वजह के।

बोझ उठाना—किसी काम की जवाबदेही अपने ऊपर लेना।

बोझ हलका होना—चिन्ता कम होना।

बोल जाना—टूट जाना, मर जाना।

बोल बाला होना—इज्जत बढ़ना।

बोलती बन्द करना—चुप कर देना।

भ

भंग खाना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

भँवर में नाव फँसना—विपत्ति में पड़ जाना।

भंडा फोड़ना—भेद खोलना।

भड़क उठना—क्रुद्ध होना।

भनक पड़ना—सुन पड़ना।

भन्ना उठना—उत्तेजित होना।

भबकी देना—धमकाना।

भभूत रमाना—सन्यासी बन जाना।

भर पाना—मिल जाना, प्राप्त करना, बदला मिल जाना।

भरम गँवाना—मान मर्यादा खोना।

भरम घुलना—रहस्य का प्रगट होना।

भरी थाली में लात मारना—मिली हुई संपत्ति को त्याग देना।

भरे को भरना—धनवान को धन देना।

भरें में आना—किसी के कपट में पड़ जाना।

भाड़ेका टट्टू—पैसा लेकर काम करने वाला।

भांफ लेना—जान लेना।

भाग्य खुलना—अच्छे समय का आना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग्य का पलटा खाना—भाग्य में परिवर्तन होना।
भाग्य चमकना—भाग्योदय होना।
भाड़ में जाना—नाश होना।
भाड़ झोंकना—नीच कार्य करना।
भारी बनके बैठना—बड़ा अभिमान करना करना।
भीगी बिल्ली बन जाना—डर से दब जाना।
भीतर ही भीतर—चित्त में।
भुजा उठाना—प्रतिज्ञा करना।
भुजा टूटना—भाई की मृत्यु।
भीष्म प्रतिज्ञा करना—कठिन प्रतिज्ञा ठान लेना।
भुरकुस निकालना—खूब मारपीट करना
भूत चढ़ना—क्रोध आना।
भूत झाड़ना—अभिमान हटाना।
प्रातःकाल हुआ और पेट भरने की चिन्ता लगी।
भूलभुलैया में पड़ना—व्यग्र होना, घबड़ा जाना।
भेड़ियाधसान मचाना—बिना सोचे विचारे पीछा करना।
भैंस लगी पगुराय—मूर्ख के आगे बुद्धिमानी की बातें कहना, निष्फल होता है।
भौंर न छाड़े केतकी तीखे कंटक जान—अनेक आपत्तियों के होने पर भी प्रेमियों का प्रेम नहीं हटता।

म

मन मैला करना—उदास होना।
मन रीझना—चित्त प्रसन्न होना।
मन मानी घर जानी करना—जो कुछ इच्छा हो उसको करना।
मर मिटना—किसी काम के करने में बड़ा कष्ट उठाना।
मरता क्या न करता—मृत्यु की आशंका होने पर मनुष्य सभी काम करता है।
मरने पर वैद्य बुलाना—काम खराब हो जाने पर सुधारने का प्रयत्न करना।
मरम्मत करना—मारना।
मल मल कर पैसा देना—बड़ी कृपणता दिखलाना।
मलय गिरि की भीलनी चन्दन देत-जराय—जहाँ पर कोई वस्तु बहुतायत से होती है वहाँ उसकी कदर नहीं होती
मल्लार गाना—आनन्द मचाना।
मसकजाना—जीर्ण वस्त्र का दब कर फट जाना।
महाभारत होना—लड़ाई झगड़ा होना।
माँग उजाड़ना—विधवा होना।
माँगी मौत भी न मिलना—अभिलषित वस्तु का प्राप्त न होना।
मागे हरड़ दे बहेड़ा—बुद्धि विपरीत होना।
माता का दूध लजाना—डरपोंक होना।
माथा रगड़ना—सन्देह उत्पन्न होना।
माथा रगड़ना—विनती करना।
माथा खाली करना—बहुत बकवाद करना।
माथा पटकना—व्यर्थ का प्रयत्न करना।
मान न मान मैं तेरा मेहमान—इच्छा के विरुद्ध होना।
मार के आगे भूत भागे—मार से सभी डरते हैं।
मारा जाना—बड़ी तकलीफ पहुँचना
मानो तो देव नहीं पत्थर—विश्वास ही फलदायक होता है।
मार मार कर वैद्य बनाना—जबरन योग्य बनाने का प्रयत्न करना।
माल उड़ाना—धन का अपव्यय करना।
माल मुफ्त दिल बेरहम—दूसरे का धन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उड़ाने में संकोच नहीं रहना।

मिजाज न मिलना—बड़ा अभिमान करना।

मिट्टी हो जाना—नष्ट होना।

मिट्टी पलीद करना—दुर्दशा करना।

मिट्टी देना—शव को गाड़ना।

मिट्टी खराब करना—बेइज्जत करना।

मिट्टी में मिल जाना—नष्ट हो जाना।

मिरचा लगना—बुरा लगना।

मीठा दर्द—हलकी पीड़ा।

मीठी मार मारना—भला बनकर बुराई करना।

मीठी छुरी—मित्र बनकर हानि पहुँचाने वाला।

मियां बीबी राजी तो क्या करेगा काजी—दोनों पक्ष को यदि अभिमत है तो झगड़ा काहे का।

मुंह खराब करना—गाली बकना।

मुंह काला होना—कलंकित होना।

मुंह की खाना—कठोर उत्तर मिलना।

मुंह पकड़ना—बोलने न देना।

मुंह देख की मुहब्बत—झूठा प्रेम।

मुंह चाटना—खुशामद करना।

मुंह चढ़ाना—ढीठ बनाना।

मुंह ताकना—कुछ पाने की अभिलाषा करना।

मुंह में पानी भर आना—लालच उत्पन्न होना।

मुंह पर हवाई उड़ना—चेहरा फीका पड़ जाना।

मुंह मीठा करना—मिठाई खिलाना।

मुट्ठी गरम करना—घूस देना।

मुट्ठी में आना—वशीभूत होना।

मुहर्रमी सूरत—रोनी सूरत।

मोछों पर ताव देना—शेखी दिखलाना।

मैदान मारना—विजय प्राप्त करना।

मृदंग बजाना—आनन्द करना।

मेढे लड़ाना—झगड़ा खड़ा करना।

मोची का मोची रह जाना—मूर्ख का मूर्ख बने रहना।

मोम हो जाना—मृदु होना।

मोरचा मारना—विजय प्राप्त करना।

मौत के दिन पूरे करना—दुःख से जिन्दगी बिताना।

म्याऊँ का ठौर कौन पकड़े—भय के स्थान में कौन जावे।

म्यान के बाहर हो जाना—क्रोधवश होना।

य

यज्ञ में आहुति देना—क्रोध भड़काना, अच्छे काम में लगना।

यज्ञ सफल होना—अच्छा काम पूरा होना

युग बीत जाना—बहुत काल व्यतीत होना

यथा नाम यथा गुण—जैसा नाम वैसा गुण।

यमपुर जाना—मृत्यु को प्राप्त होना।

यमपुर भेजना—मार डालना।

योग देना—सहायता देना।

र

रंग उड़ना—मुख फीका पड़ जाना।

रंग जमना—प्रभाव होना।

रंग भंग होना—मजा बिगड़ जाना।

रंग लाना—प्रभाव दिखलाना।

रंग चढ़ना—नशे में चूर होना।

रंग बाँधना—प्रभाव दिखलाना।

रंग देखना—नतीजा देखना।

रकाब में पैर रखना—तैयार हो जाना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रग रग जानना—अच्छी तरह से पहिचानना।

रस्सी जल गई ऐंठन न गई—नाश हो जाने पर भी हठ न गया।

रक्त की नदी बहाना—बड़ा युद्ध होना।

रफू चक्कर होना—भाग जाना।

रसातल को पहुँचा देना—सर्वनाश करना।

रहा सहा—बचा हुआ।

रह रह करके—थोड़ी थोड़ी देर बाद।

रस्सी का साँप बनाना—बेमतलब की झंझट खड़ा करना।

रा का पर्वत करना—छोटी सी बात को बहुत बढ़ाकर कहना।

राई रत्ती से जानकारी—पूरी तहर से जानकारी।

रात दिन एक करना—निरन्तर परिश्रम करना।

रामकहानी कहना—अपना दुखड़ा रोना

रामराज्य—सुखपूर्ण राज्य।

राम राम करके प्राण बचाना—बड़ी कठिनाई से जान बचाना।

राम राम जपना पराया माल हड़पना—देखने में सीधा हृदय का कुटिल होना।

राह ताकना—इन्तेजारी करना।

राह पर लाना—सुधारना।

रूपया ठीकरी करना—इन्तेजारी करना।

राह पर लाना—सुधारना।

रुपया परखे बार बार आदमी परखे एक बार—मनुष्य एक ही बार जाँचा जाता है, रुपया कई बार परखा जाता है।

रोज कुवां खोदना रोज पानी पीना—रोज कमाना रोज खाना।

रोटी तोड़ना—बिना मेहनत के जीविका चलाना।

रोकड़ मिलाना—आय व्यय का हिसाब करना।

रोजगार चमकना—रोजगार में लाभ होना।

ल

लंगड़ लड़ाना—झगड़ा खड़ा करना।

लंगोटिया यार—बाल्यावस्था का मित्र।

लँगोटी बाँध देना—दरिद्र कर देना।

लंगर डालना—हिम्मत हारना।

लंगर उठाना—जहाज को चालू करना।

लंगोटी पर फाग खेलना—दरिद्रता में आनन्द मचाना।

लंबी चौड़ी हाँकना—शेखी हाँकना।

लकीर पीटना—समय चूकने पर वृथा उद्योग करना।

लकड़ी के बल बंदरिया नाचे—भय दिखला कर काम कराना।

लकीर का फकीर होना—पुरानी बातों को को ढोना।

लग्गा लगाना—उपाय सोंचना।

लगे हाथ करना—सिलसिले में कोई काम कर डालना।

लटके रहना—अनिश्चित अवस्था में रहना।

लपेट में आना—विपत्ति में फँस जाना।

लंबी तानना—सो जाना।

लम्बी चौड़ी हाँकना—शेखी की बातें कहना।

लगाव रखना—संबंध रखना।

लल्लो चप्पो करना—विनती करना।

लहू के घूंट पीना—बड़ी आपत्ति सहन करना।

लहू पसीना एक करना—बड़ी मेहनत करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लहू सूख जाना—बड़ा भयभीत होना।
लहू लगाकर शहीदों में भरती—थोड़ा सा काम करके नामवरी चाहना।
लहू चूसना—बहुत परेशान करना।
लातों के भूत बातों से नहीं मानते—नीच मनुष्य बिना मार खाये सीधा नहीं होता।
लाख का घर खाक होना—बड़ी संपत्ति का नाश होना।
लागडाँट करना—शत्रुता करना।
लाल झंडी दिखाना—काम में रुकावट डालना।
लात मारना—तिरस्कार करना।
लासा लगाना—धोखे में फसाना।
लीपापोती करना—ऐब छिपाने का प्रयत्न करना।
लुटिया डुबोना—काम बिगाड़ना।
लेने के देने पड़ना—लाभ के बदले हानि होना।
ले मरना—आफत में डालना।
लोटपोट हो जाना—अति प्रसन्न हो जाना
लोहा लेना—युद्ध करना।
लोहा मानना—किसी के पराक्रम को स्वीकार करना।
लोहे के चने चबाना—परिश्रम का काम करना।
लौ लगना—धुन लगाना।

व

वकीलों के हाथ पराये जेब में—वकील लोग दूसरे से धन लेने का सर्वदा प्रयत्न करते हैं।
वचन तोड़ना—अपनी प्रतिज्ञा से हट जाना।
वज्र बहिरा—बिलकुल बहिरा।
वसन्त की खबर न होना—जानकार न होना।
वह गुड़ नहीं जो चींटी खाय—हम बड़े सचेत हैं, दूसरा हमको ठग नहीं सकता।
वहम की दवा लुकमान के पास नहीं है—सन्देह की कोई औषधि संसार में नहीं है।
वार देना—न्यौछावर करना।
वाहवाही करना—प्रशंसा करना।
विभीषण बनना—घर का भेदिया होना
विष उगलना—विपरीत बोलना।
विषके घूंट पीना—कटु वचन सहन करना
वीर गति प्राप्त करना—वीरता से लड़कर मरना।
वेदवाक्य समझना—प्रामाणिक मानना।
वैकुण्ठवास—मृत्यु।

श

शरीर में बिजली दौड़ना—उत्तेजित होना
शस्त्र ढीले होना—साहस टूट जाना।
शरीर में आग लगना—क्रोध उत्पन्न होना।
शह देना—उभाड़ना, भड़काना।
शहद लगाकर चाटना—बेकाम समझ कर रख छोड़ना।
शान दिखलाना—गर्व करना।
शिकंजे में पड़ना—आफत में पड़ना।
शिकार हाथ लगना—असामी मिल जाना।
शिकार होना—फन्दे में पड़ना।
शीशे में उतरना—वश में करना।
शेखी बघारना—अभिमान दिखलाना।
शेर और बकरी को एक घाट पानी पिलाना—बिना पक्षपात का न्याय करना।
शेर के मुंह में हाथ डालना—साहस का काम करना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शैतान के कान काटना—भेद का पता लगाना।

श्रीगणेश करना—किसी कार्य को आरंभ करना।

ष

षड्यन्त्र रचना—छिप कर किसी भयंकर कार्य को करने का उद्योग करना।

षट्राग में पड़ना—आपत्ति में पड़ना।

षड्रस भोजन करना—आनन्द से समय विताना।

षोडश शृंगार करना—खूब सिंगार पटार करना।

स

सइंया भये कोतवाल अब भय काहे का—किसी को उच्च पद मिल जावे तो उसके आश्रित निश्चिन्त रहते हैं।

सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब—अर्थ स्पष्ट है।

संकल्प विकल्प करना—सोच विचार में पड़ना।

सठिया जाना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

सत्तू बाँध कर पीछा करना—बुरी तरह से परेशान करना।

सच्चे का बोलबाला, झूठे का मुंह काला—सच्चा सर्वत्र पूजित होता है, झूठे का कोई विश्वास नहीं करता।

सदा की नींद सोना—मृत्यु को प्राप्त करना।

सदा कागज की नाव नहीं बहती—छल सर्वदा फलीभूत नहीं होता।

सनक सवार होना—बुद्धि भ्रष्ट होना।

सन्नाटे में आ जाना—मूक होना, डर जाना।

सब धान बाइस पसेरी—भले बुरे को समान जानना।

सब गुड़ गोबर हो जाना—किया कराया काम बिगड़ जाना।

सब रामायण सुन गये सीता किसका नाम—सब समझ कर भी अनजान बनना।

सब्ज बाग दिखलाना—झूठी आशा दिखलाना।

सब शकल लंगूर की एक दुम की कसर है—बदसूरत मनुष्य के लिये प्रयोग होता है।

सफेद झूंठ—ऐसा झूठ जिसमें सच्चाई का लेशमात्र भी न हो।

सफाई देना—निर्दोष सिद्ध होने का उद्योग।

सर करना—जीतना, विजय पाना।

साँप को भी दूध पिलाना—दुष्ट के साथ उपकार करना।

साँप छछुंदर की गति होना—द्विविधा में पड़ना।

साँप भी मरे और लाठी भी न टूटे—काम बन जाय और कोई हानि भी न हो।

साँस पूरे होना—मृत्यु होना।

साँस तक न लेना—चुप रह जाना।

साई देना—किसी काम के लिये कुछ पेशगी देना।

साढ़े साती आना—अभाग्य का समय आना।

सात पाँच करना—छल कपट करना।

साये से भागना—बड़ा कदर होना।

सारे जमाने की बातें सुनना—दुनिया में बुरा कहा जाना।

सिक्का जमना—प्रभाव फैलना।

सिक्का जमाना—धाक बैठाना।

सिर उठाकर चलना—अभिमान दिखाना

सिर आँखों पर बैठाना—अति प्रिय होना

सितारा चमकना—भाग्यवान् होना।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिर उठाना—उपद्रव खड़ा करना।
सिंहासन डिगना—भयभीत होना।
सिटपिटा जाना—घबड़ा उठना।
सितम ढाना—बड़ा क्लेश देना।
सिर ऊँचा होना—इज्जत होना।
सिर काटना—बड़ो तकलीफ देना।
सिर चढ़ाना—ढीठ करना।
सिर झुकाना—प्रतिष्ठा करना।
सिर देना—बलिदान करना।
सिर धुनना—पछताना।
सिर पटक देना—बड़ा उद्योग करना।
सिर पकड़ कर रोना—बहुत पश्चात्ताप करना।
सिर पर आना—पास आना।
सिर पर मौत आना—मृत्यु पास होना।
सिर पर हाथ रखना—सहायक होना।
सिर पर खड़ा होना—बहुत पास आना।
सिर पर भूत सवार होना—बुद्धि भ्रष्ट होना।
सिर पर खून सवार होना—हत्या करने के लिये उतारू होना।
सिर पर कोई न होना—अनाथ होना
सिर गरम होना (फिर जाना)—पागल होना।
सिर परसे तिनके उतार लेना—थोड़ा उपकार करना।
सिर पर लेना—अपने जिम्मे में लेना।
सिर पर आ पहुँचना—नजदीक आ जाना।
सिर होना—व्यग्र होना।
सिर मारना—बड़ा उद्योग करना।
सिर मौर बनाना—अधिक प्रतिष्ठा करना
सिरहाने का साँप—पास का शत्रु।
सिर हिलाना—अस्वीकार करना।
सीधा बनाना—गर्व हटाना।
सीधी नजर से देखना—शिष्टता का व्यवहार करना।
सीधे मुंह बात न करना—घमंड दिखलाना
सुई के नीक से निकालना—बड़ी तकलीफ देना।
सुर्खाब का पर लगाना—विशिष्टता होना।
सुरमा बना डालना—बहुत महीन पीसना
सुहाग लुट जाना—विधवा होना।
सूख कर काँटा हो जाना—बड़ा दुर्बल होना।
सूखा जवाब देना—बिना कुछ दिये टाल देना।
सूरज धूल डालने से नहीं छिपता—नीचों की दुष्टता से भले आदमियों का गुण नहीं छिपता।

ह

हँस खेल कर मारना—प्रेम दिखलाते हुए कष्ट देना।
हक्का बक्का रह जाना—अचरज में पड़ना।
हजम करना—हर लेना।
हजामत बना देना—ठग लेना।
हजारों टाँकी सहकर महादेव बनते हैं—कष्ट बिना उठाये महत्व नहीं मिलता।
हड़बड़ा उठना—घबड़ा जाना।
हड़प लेना—ठग लेना।
हथियार रख देना—आधीन हो जाना।

॥ समाप्त ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh